वंशभास्कर

श्रीबुन्दीशाश्रित महाकवि मिश्रण

सूर्यमल्ल

विरचित

चतुर्थभाग

शाहपुरा के पोलपात्र श्रीमान् मरुधराधीशों के आश्रित तथा
राजराजेश्वर मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहजी बहादुर के
पितृपक्ष महाराजधिराज कर्नल सर श्रीप्रतापसिंहजी
के कृपापात्र शोदा बारहठ

कृष्णसिंहजी
विरचित उदधिमंथिनी
टीका सहित

जिसको

कविराजाजी श्री मुरारिदानजी की
सहायता से
दाधीच आसोपा पंडित बलदेवात्मज पंडित
रामकर्ण-श्यामकर्ण शर्मा ने
शोधकर

॥ ओ३म् ॥

॥ भूमिका ॥

मूकं करोति वाचालं, पङ्गुं लंघयते गिरीम् ॥
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥ १ ॥

क्या महिमा है उस जगदाधार, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की कि जो अपनी कृपा से मूक (गूंगे) को वाचाल और पंगु (पांगले) को पर्वत लांघनेवाला कर देता है, उस परमात्मा को नमस्कार करता हूं. अन्य विद्वान् इसके उदाहरण में "वाल्मीकि मुनि" और सूर्य के सारथि "अरुण" को मानते हैं, परन्तु इस स्थान पर मैं तो मुझही को उदाहरण रूप मानता हूं कि जिसकी कृपा से पक्षाघात जैसी असाध्य बीमारी आदि विघ्नों रूपी अग्नियों को लांघकर, इस वंशभास्कर रूपी समुद्र के पार लगा चाहता हूं, यह उसी सर्वशक्तिमान् दयालु परमेश्वर की दया का फल है कि मेरे जैसा अल्पज्ञ पुरुष ऐसे कठिनतम ग्रन्थ की टीका में पार लगसके, इसीकारण उपरोक्त श्लोक में मैंने अपनेतई उदाहरण माना है ॥

अभी इस ग्रन्थ के पांच चरित्र, जिनमें डेढ राशि पर टीका बनाना बाकी है, इस अवस्था में अपने को कृतकार्य मान लेना अनुचित है, परन्तु साढे छ राशि पर टीका बन चुकी जिसमें अनेक विद्या विषय और अनेक अप्रयुक्त गूढ इतिहास आचुके, जिनका यथार्थ विवरण और उचित समालोचना करके यथाशक्ति टीका कर दी गई, अब आगे के पांच चरित्रों में कोई कठिन विषय नहीं है, केवल रामसिंह चरित्र में वेदान्तादि कुछ विद्या विषय अवश्य हैं परन्तु वे अतिगहन नहीं हैं, और इतिहास में भी समीप का समय होने के कारण भ्रम नहीं है, इसकारण से आगे की डेढ राशि को विद्वान् लोग सुगमता से समझ सके हैं, इसीकारण मैंने अपने को कृतकार्य माना है. इसमें इतना कथनीय अवश्य है कि आगे के पांच चरित्रों में "बुधसिंह चरित्र" और "उम्मेदसिंह चरित्र" इन दोनों में शब्दालंकार अधिक होने के कारण शब्दार्थ में कठिनता अवश्य है, इसी शब्दालङ्कार के कारण राजपूताना भर में ये दोनों चरित्र अधिक फैलेहुए हैं, जिनके समझने की सब ही का उत्कंठा है, परन्तु अनेक भाषाओं के अनेक अप्रचलित शब्दों के प्रयोग होने से उनके अर्थ समझने में पाठक फलीभूत नहीं होते, और शब्दों का यमक अत्युत्तम होने के कारण औपरसज्ञ होकर छोडना भी नहीं चाहते, इसकारण से हमारा भी विचार है कि स्वास्थ्य ठीक रहा और कोई अन्य बडा विघ्न उपस्थित नहीं हुआ तो इस ग्रन्थ के अन्य भागों की अपेक्षा इन दो चरित्रों की टीका विस्तारपूर्वक रचेंगे कि जिसके कारण किसी पाठक को किसी प्रकार

की काठिनता बाकी नहीं रहै, और काव्यरसज्ञों को पूर्णानन्द मिलने के कारण हम भी अपने परिश्रम को फलीभूत मानैं ॥

यहां पर हम को थोड़ी सी टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की रचीहुई मिलगई है जिसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके ज्यों का त्यों यहां पर लिखदेते हैं, इसमें किसी किसी शब्द के अर्थ को ग्रन्थकर्ता ने सुगम समझकर छोडदिया है, जिनके अर्थ लिखने की आवश्यकता दिखाई देती है परन्तु जितने शब्द इसमें रहगये हैं उनके अर्थ ऊपर की टीका में आचुके हैं अथवा आगे की टीका में आजावेंगे, इस कारण इस टीका में किसीप्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करना ही उचित समझकर " मक्षिकास्थाने मक्षिकां पातयतु " ही किया है. इस टीका के रचेजाने की कई किम्वदन्तियें प्रसिद्ध हैं, जिनमें प्रबल कथा यह मानी जाती है कि, जयपुर राज्य में पीपलिया नामक ग्राम के ठाकुर राजावत फूलसिंह ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) का अत्यन्त कृपापात्र था जिसने एक दिन ग्रंथकर्ता से निवेदन किया कि, कवरसियापन से तो मुझको बुधसिंह चरित्र अत्यन्त प्यारा लगता है, परन्तु अर्थ में समझ नहीं पड़ने के कारण आनन्द नहीं आता, इस कारण आप कृपा करके इस पर टीका बनादेवें, इसीकारण ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई है इस प्रसिद्धि का कुछ कारण भी मिलता है, अर्थात् जयपुर राज्य के हणूंत्या नामक ग्राम के पालावत शाखा के चारण बालाबक्स को यह टीका पीपलिया के ठाकुर फूलसिंह राजावत के घर से ही मिली है जो कि स्वयं ग्रन्थकर्ता के घर में भी नहीं है, इस टीका के अपूर्ण रहने का कारण भी यही प्रतीत होता है कि जब तक फूलसिंह की प्रेरणा रही तभी तक ग्रन्थकर्ता ने यह टीका बनाई, और जब फूलसिंह की प्रेरणा मिटी तभी टीका का बनना छूटगया, इसीसे थोड़े से ग्रन्थ पर टीका बनकर अपूर्ण रहगई, यहां पर इतना सन्देह अवश्य होता है कि यदि टीका केवल फूलसिंह के कारण से ही बनती थी तो शब्दों के जितने प्रमाण इसमें दिये गये हैं इनके देने की क्या आवश्यकता थी और संस्कृत श्लोकों के अर्थ संस्कृत भाषा में लिखेगये हैं सो क्यों लिखेजाते क्यों कि फूलसिंह संस्कृत पढाहुआ नहीं था सो हमारे इस सन्देह का समाधान अभी तक नहीं हुआ है इसके उपरान्त यदि संस्कृत में टीका बनाई भी गई थी तो उसके नीचे फूलसिंह के समझने के लिये उसका भाषानुवाद भी कर देते सो नहीं है ॥

परन्तु इसमें संदेह नहीं कि यह टीका स्वयं ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की बनाईहुई है, इसकारण सर्वथा माननीय है, इसीकारण इसमें किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करके हमारी रचीहुई टीका के बीच में इसको स्थान देते हैं, आगे जहां पर यह टीका समाप्त होवेगी तहां लिखादिया जावेगा कि ग्रन्थकर्ता की रची

हुई टीका यहां पर समाप्त होती है, इस बुधसिंह चरित्र के मंगलाचरण के श्लोक की ग्रन्थकर्ता ने संस्कृत में टीका की है परन्तु फिर ग्रन्थकर्ता ने ही मूल श्लोक के शब्दों को बदलदिये इसकारण उक्त श्लोक की वह टीका छोडकर इसका भाषानुवाद हमने किया है बाकी टीका ज्यों की त्यों लिखीजाती है यदि होसका तो संस्कृत श्लोकों की टीका संस्कृत में रचीहुई है जिसका सुगमतार्थ भाषानुवाद करदेवेंगे जिसको हस्ताक्षेप नहीं समझना चाहिये यह टीका हमको हणूंत्या के पालावत चारण बालाबख्स द्वारा मिली उस समय इस ग्रन्थ पर टीका करने का हमारा विचार नहीं था इसकारण उक्त टीका का पुस्तक देख कर पीछा बालाबख्स के पास भेज दिया था परन्तु फिर आवश्यकता होने पर वही पुस्तक सीकरराज्य के चंदपुरा नामक ग्राम के रतनू शाखा के चारण रामनाथ द्वारा पुनः प्राप्त हुआ. इन दोनों महाशयों का अत्यन्त उपकार मानकर धन्यवाद के साथ इस टीका का लिखना प्रारम्भ करते हैं ॥ विक्रमाब्द १९५८ द्वितीय श्रावण बदि २ शुक्रवार तारीख२ अगस्त सन्१९०१ ईसवी को प्रारम्भ किया ॥

ओ३म्

बुधसिंह चरित्र का सूचीपत्र

उम्मेदसिंहचरित्रका सूचीपत्र ॥

—※०※—

॥ ओ३म् ॥

अजितसिंहचरित्रका सूचीपत्र ॥

॥ विष्णुसिंहचरित्रकासूचीपत्र ॥

॥ ओ३म् ॥

॥ रामसिंहचरित्रका सूचीपत्र ॥

"यहां पुनरुक्ति होकर कथा का क्रम बिगड़ता है परन्तु इस काव्य के कर्ता मुरारिदान के पास से लिखाहुआ जैसा पुस्तक हम को मिला वैसा

चोथी४चंद्राउति गर्भदंग, इम चंद्रकुमरि१९७१४परन्यौं अभंग ॥
इन४में पहिली१के इक१सुताहि,उम्मेदकुमरि१जग कहत जाहि१५
इहनिके रनबिच बुद्धि एह, बुधसिंह१९७१२दपी जयसिंह गेह ॥
चोथी४तियके दूजी२सुता सु, इह रूपकुमरि२मृत सिसुहि आसु१६
इन चउ४न माँहिं तीजी३निवारि, पतिसंग जरी पटु निखिल३नारि
अनुजा दुव२दुव२खिल अनुज उक्त,हुव जे चउ४बालहि कालभुक्त

॥ दोहा ॥

अनुजा कुसलकुमारि१९७१अरु, कल्पानादि कुमारि१९७१२ ॥
अमर१९७१३बिजय१९७१४तिम नृप अनुज, चवे सिसुहि मृत च्यारि४
भावी सानुज भूपकी, व्याह १ प्रजा२दिकवत्त ॥
वर्त्तमान२पहुराम२०३१४बिधि, अब जानहु अनुरत्त ॥ १९ ॥

॥ पद्धतिका॥

इम लियउ बुद्ध पट्टाभिषेक्क, थपि राज्यअंग बासि हुकम एक ॥
सितरोमगुच्छ ढरि दुश्दिस सीस, कनकातपत्र भूषित महीस २०
आवाप१तंत्र२चिंतन उपेत, सुभ बल१बिदग्ध२धीसख३समेत ॥
पटुसंधि१यान२बिग्रह३बिलास, द्वैधा४ऽऽसन५आश्रय६गुनप्रकास
प्रभु१मंत्र२शक्ति उत्साह३पूर, सम चतु४रुपायसामर्थ्य सूर ॥ 　रे

इमलियउ इति ॥ बुद्ध बुधसिंह. राज्यअंग राज्य के अंग. सित श्वेत. रोमगु- न च्छ चामर ॥ " चामरो रोमगुच्छप्रकीर्णक " मितिहैमः ॥ द्विदिस दोऊ२ दि- र शा. भूसित शोभित. महीस मही पृथ्वी ताको ईश ॥२०॥ आवापतंत्रइति॥ व आवाप१शत्रु वश करिबे को चिन्तवन. तन्त्र२अपने देश की वृद्धि को चिन्त- ई वन ॥ "तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तन" मितिहैमः ॥ बल सेना. त तामें धीसख मंत्री. तिन सहित. संधि१, यान२, विग्रह३, द्वैध४, आसन५,आ- र श्रय६ ए छ गुण हैं। तिनके प्रकाश के विलास में पटु चतुर ॥२१॥ प्रभु इति॥ए, प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, उत्साहशक्ति इनमें पूर पूर्ण. सम सहित। चतुरुपाय- क, साम१, दाम२, दंड३, भेद४, ए च्यारि उपाय तिन करिके. लुप्त तृतीया है प्रग इन सहित. सामर्थ्य में सूर. सविचार विचार सहित. व्यसन सप्तक७-
[illegible]

सबिचार व्यसन सप्तक७निषेधि, बानैत बान बिन लेत वेधि २२

बिधि च्यारि हेति कोविद बिनोद, चतु४रंग चक्र साधन समोद ॥

जुत धर्म्म१नीति२अवसर जमाय, लोकानुराग नयरीति लाय २३

इत्यादि रागगुन जोर जग्गि, बुधसिंह बढिय जनु अनिल अग्गि

हुव बिदित क्रित्ति दिसदिसन हाक, अकिबकि अराति रुकि बद-
न वाक ॥ २४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहबुन्दीपट्टाधिवेशन १ बुधसिंहविवाहत त्संततिकथनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदित एकोनचत्वारिंशदुत्तरद्विशततमः ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जयसिंह नृप, रानाँ अर्यमबंस ॥
तास बास तनुजा चतुर, भई इंदिरा अंस ॥ १ ॥

दु: ७५ाव यह सप्त७॥ लुप्त द्वितीया कहता है। बान बाण. लुप्त तृतीया ता करिके. विन बुन्दी पत्नी. तिनकों. द्वितीया बहुवचन में नकार ॥ या प्रकार सर्वत्र बोध्यम् ॥२२॥

विधि च्यारि इति ॥ विधि च्यारि ४ च्यार विधि के शस्त्र. मुक्त चक्रादि १, मम्बाअमुक्त खड्गादि२, मुक्तामुक्त कुन्तादि३, यन्त्रमुक्त बाणादि४, ए च्यार वि- बुन्दीधि के. हेति शस्त्र ॥ "हेतिः प्रहरणं शस्त्र" मितिहैमः॥ तिनके विनोद में कोवि- के पद चतुर ॥ प्राकृत में प्राय अविभक्तिक शब्द प्रयोग होते हैं। तहां अन्वय योज- महारनी विभक्ति सर्वत्र कर लेनी॥ चतुरंग४-हस्ती१,हय२,रथ३,पदाति४, ए अंग ति- नवारी. चक्र सेना ताको साधन रहै. नय न्याय ॥ २३ " राग इति ॥ राज राज्य. लाई जग्गि चमत्कृति व्हैकैं. जनु मानौं. अनिल पवन ताकरि. अग्गि अग्नि. क्रित्ति कीर्ति ॥

अहा अराति शत्रु. "अरातिमारातिमथ" द्विरूपकोशे॥ वाक वाणी ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति रावराबुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का बुंदी के सिंहासन पर बैठना १ बुधसिंह के. ४"यहां विवाह और सन्तानों के कथन का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि कर्ता से दो सौ उनचालीस २३९ मयूख हुए ॥

नेर नगर. अर्यम सूर्य के वंश में. तास ताके वास. गेह तनुज पुत्री इंदिरा ल-

हुव मंजु सुता रानाँ निकेत, उम्मेदकुमरि सुभ गुनउपेत ॥
बय रंच पंच५हायन बिधान, सौंदर्य्य रूप गुनगन समान ॥ २ ॥
लखि ताहि भूप जयसिंह आप, उद्वाह करण चिंतामवाप ॥
लग्गिय बर बिक्खन सब निहारि, बिधिसहित कनी व्याहन बिचारि
दिय दूत देसदेसन पठाय, जंघाल चतुरसति चउ४उपाय ॥
मरु१मालव२डाहल३शाल्व४अंग५, कट६ केरल७कुंतल८मगध९
बंग१० ॥ ४ ॥
जालंधर११तर्जिक१२कासमीर१३, कर्णाट१४द्रविड़१५मैथिल१६
सुबीर१७ ॥
इत्यादि बिषय उत्तम अपार, तिनमाँहिँ रान पठये स्व चार ॥ ५ ॥
कहि हेरहु बर मम वच प्रमानि, जामातृ बर्यपद योग्य जानि ॥
भूपाल१तथा भूपतिकुमार२,इन सूर राजगुनजुत उदार ॥ ६ ॥
दस१०अब्द ताव बय१रूप२देखि, बर बरन खबरि आनहु बिसेखि॥
अनिरुद्ध पट्ट बुंदिय सु थान, कुब्बहिँ सुनियत गुन रूपवान ॥ ७ ॥
तासौंहु रूप१गुन२अधिक भूप, कोउ होय ताहि हेरहु अनूप ॥
सुनि बानि चलिय दिसदिसन दूत, खोजिय असेस नृपकुल सपूत।८।
कथितादि देस लखि नृप कुमार, बुंदीपुरीहु चरचय चचार ॥

ी ॥१॥ हुवइति ॥ मंजु सुन्दर. निकेत गेह. उपेत युक्त. रंच अल्प. हायन वर्ष. सौन्दर्य सुन्दरता. गन समूह ॥२॥ लखिइति ॥ उद्वाह विवाह. करण करिवेकी. चिंता चिन्ता. अवाप पात भयो. यहां संधि कर दीनी है. लक्खन देखन बरहि बरकौं. कनी कन्या ॥३॥ दिय दूतइति ॥ जंघाल वेगवान्. चउ उपार च्यार उपायों में चतुर ॥ ४ ॥ इत्यादि इति ॥ विषय देश. रान राना नें. स्व अपने. चार दूत ॥ ५ ॥ कहि इति ॥ वच वचन. जामातृ जमाई तिनमें. वर्य श्रेष्ट. ताके पद के योग्य ॥ ६ ॥ दसेति ॥ अब्द वर्ष. ताव तावत् "तातावौ जावौ तावयावतो" इति प्राकृतप्रकाशे ॥ विशेखि विशेष करिके ॥ ७ ॥ तासौं इति ॥ सपूत पुत्रन सहित ॥ ८ ॥ कथितेति ॥ कथित कहे. तदादि देशन में. कुमार राजकुमार. चर दूत. चचार जात भये. प्रकृति राज्य के अङ्ग-स्वामी १ अमात्य २ मंत्री ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग ६ सेना ७ ए सप्त अंग

लखि प्रकृति सप्त७ अति सावधान, बुधसिंह राज्यपति बंसभान९
बुध१धर्म२निपुन१खुरली२बिनोद,हय हत्थि चढन सह वह समोद॥
रनबीर१दान उत्सव उदार२, लावण्य ललित मारावतार॥ १० ॥
इम बुधसिंह लखि बितर्जि वैर, सानंद गये चर उदयनैर ॥
सब कहि उदंत प्रतिदिस देस, बुधसिंह कित्ति पुनि किय बिसेस११
कहि हमहु लखिय जनपद अनेक, बुंदीस सम न अन्पल एक ॥
कुमरी वरत्व लायक स एव, तत्रैव रचहु संबंध देव ॥ १२ ॥
बुंदींद्र कित्ति सबसौं बिसेस, इम ससुख श्रवन सुनि सुनि नरेस॥
संबंध चिंति तत्रहि विचार, आत्मीय पुरोहित किय तयार ॥१३॥
संतोखराम नामा सु बिप्र, तिहिं कहिय तत्र गंतव्य छिप्र ॥
दिय संग भर्म लांगलि मढाय, सासज चतुष्क४हय सत१००सुभाय
बर विबिध बस्त्र१रत्न२न समाज, मृगनाभि१चंद्र२घुसृण३दि साज
इत्यादि तिलक मंगल असेस, द्विज संग दये लखि काल १देस२
श्रीकृष्णनाम इक१गणकराज, समधीत त्रि३विधज्योतिष समाज

भान भानु (सूर्य) ॥ ९ ॥ बुधेति ॥ खुरली शस्त्राभ्यास. हत्थी हस्ती. लावण्य सुन्दरता ताकरि. मार मदन. "मदनो मन्मथो मारः" इत्यमरः॥ ताको अवतार ॥ १० ॥ इमेति ॥ नैर नगर. उदयपुर गये यह अर्थ. उदंत वृत्तान्त ॥ ११ ॥ कहीति ॥ जनपद देश. लायक योग्य. स सो. एव ही. यहां संधी करी है. देव संबोधन ॥ १२ ॥ बुन्दीन्द्रेति ॥ ससुख सुख सहित. आत्मीय अपनों ॥ १३ ॥ संतोखेति ॥ सु सो (पुरोहित). तिहँ ता प्रति. गंतव्य जावतो. छिप्र त्वरित "लघु क्षिप्रमरं द्रुत" मित्यमरः॥ "क्षस्य खछझाः" इति प्राकृतसूत्रेण क्षस्य छः॥ "संयोगादेर्लोपः" इति प्राकृतसूत्रेण कलोपः॥ भर्म सुवर्ण तासों. लांगली नालिकेर. "नालिकेरस्तु लांगली" तिहेमचन्द्रः॥ यहां इकारको विवक्षा वशसों ह्रस्व कियो है. सासज हस्ती. "शुंडालः सामजो नागः" इति धनंजयः॥ चतुष्क च्यारि ४. सुभाय सु श्रेष्ठ- भाय भावनावारे ॥ १४ ॥ बरेति ॥ समाज समूह. मृगनाभि कस्तूरी. "मृगनाभिर्मृगमदः" इति हैमः॥ चन्द्र कपूर. "घनसारः सिताभ्रश्च चंद्रः" इतिहैमः ॥ घुसृण केसर. "काश्मीरजन्मा घुसृणः" इतिहैमः ॥ साज सामग्री. तिलक मंगल तिलक संबंधी मंगल वस्तु. असेस संपूर्ण ॥१५॥ श्रीकृष्णेति ॥ गणक ज्योतिषी तिनमें. राज राजा. समधीत सं अधीत. सं स-

दाधीचजनन भव जो द्विजेन, दिय सोहि पुरोहित संग तेन॥१६॥
अरु कहिय उभय२तुम बुद्धिमान, बुंदींद्रनिकट बिरचहु प्रयान ॥
मिलि भाखहु आसिखअस्मदीय,सविनयउदंतपुनिकहिस्वकीय १७
सब वस्तु सगज१हय२लहि सुबेर५, करि तिलक निवेदहु नालिकेर
स्वीकार करहिं जो तिलक बिप्र, तो लखहु लग्न तत्रैव छिप्र१८
जो लग्न प्रथम आगामि होइ, स्वीकार अत्र लिखिदेहु सोइ ॥
यह सुनि द्विजबुंदिय आजगाम, जाहिरकिय आसिख पद ललाम१९
सुनि सचिव द्विजागम सावधान, सनमानिय साधन खानपान ॥
पुनि तदनु घस्र कतिपय बिहाय, बुंदींद्र रचिय सद बुद्धराय॥२०॥
संतोखराम लिय बुल्लि तास, दाधीच बहुरि श्रीकृष्णनाम ॥
तिन पूछि अनामय दिय असीस, इन्ह बंदिय दो२ऊ बिप्र ईस॥२१॥
लहि मिसल बैठि कहि सबन सार, बिधि सुनहु सभा सगपन बिचार,
चीतोर मोर जयसिंहरान, तिन गेह लेह तनया सुजान ॥ २२ ॥

स्यक्, पक्षा. होरा १, गणित २, संहिता३ ऐसे तीन भेद की ज्योतिष को समाज. जनन, वंश. "अन्वयो जननं वंशः" इतिहैमः॥ तामें. भव भये. जो वह. द्विजेन द्विजनमें इन स्वामी. "स्वराणां स्वरे परे प्राकृतिलोपसंधंवः" इति प्राकृतसूत्रेण संधिः॥ तेन वा राजा नें ॥ १६ ॥ अरु कहेति ॥ आशिख वैभव वृद्धि को वचन. अस्मदीय हमारो. सविनय विनय सहित. उदन्त वृत्तांत. स्वकीय अपनों ॥ १७ ॥ सगज गज सहित. स्वीकार अंगीकार. विप्र संबोधन. लखहु देखहु. तत्रैव तहांही. छिप्र.त्वरित ॥ १८ ॥ जों लग्नेति ॥ आगामि आयबेवारो. अत्र यहां. सोय सोही. आजगाम आयो. ललाम सुंदर ॥ १९॥ सुनेति ॥ तदनु तापीछे. घस्र दिन. कतिपय कितेक. विहाय व्यतीतकरि. सद सभा. "आदातमानुस्वारलोपा व्यञ्जनस्ये" ति प्राकृतसूत्रेण सकारलोपः॥ राय राजा. "क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुगि" ति प्राकृतसूत्रेण जलोपः ॥ ततः "अवर्णपरोऽद्धतस्वरो यत्वमेती" ति प्राकृतसूत्रेण यकारः ॥ २० ॥ संतोखेति ॥ बुल्लि बुलाय. तास तहां. अनामय कुशल. असीस आशिष. इन्ह इन नें ॥ २१ ॥ लहीति ॥ मिसल बैठबेको स्थान. सबन सबसों. सार तत्व. सगपन संबंध. लेह लेख. ताकरि लुप्ततृतीयाके. तनया पुत्री. सुजान सुज्ञान ॥ २२॥

बुंदियनरेस कँहँ वह बिबाहि, संबंध रचन सीसोद चाहि ॥
तुरकान सिंधु बिच जे सरोज, तिन गेह उचित संबंध मोज॥२३॥
भट१सचिव२सबन सुनि यह सुमंत, हिय हुलसि कह्यो उचितहिं उदंत ॥
लवजनन वहै उज्वल लसात, ज्यौं जनन यहै चंडासि जात।२४।
स्वीकार सबहि बुल्लिय सुबानि, मानस अपुव्व आल्हाद मानि॥
संतोखराम इम लहि सुवेर, करि तिलक निवेदिय नालिकेर २५
वर बरिय बहुरि निज अनुज जोध२, राणानुज कन्या१कहि सुबोध
दुव२बंधुन करि संबंध एम, देख्यो मुहूर्त्त सुभ प्रथित प्रेम ॥ २६ ॥
संबत द्वि पंच ऋषि इंदु१७५२ मान, मेचक तपस्य नवमी बिधान ॥
गणकन बिचारि सुभ लग्न तत्थ, इक१मास अवधि अंतर समत्थ
करि सीख तबहि द्विजबर सुजान, कोटाप्रति सत्वर किय प्रयान ॥
चहुवान राम कोटाधिईस, भुज भेटि बंदि तिन दिय असीस॥२८॥
अरु कहि लघुपुत्री हेत रान, तुमरो सुत मान्यौं संप्रदान ॥
चहुवान राम यह सुनि सचाह, उपयम अपत्य कीनौं उछाह ॥२९॥

बुंदीति ॥ चाहि चाह्यो. सिंधु समुद्र. जे वे(राना).सरोज कमल. वा पानीसों अलिप्त यह अर्थ. मोज रीझ ताकरि ॥ २३ ॥ भटेति ॥ सुमंत सुमंत्र. उदंत वृत्तान्त. लवजनन लव को.वंश. सूर्यवंश यह अर्थ. चंडासि चहुवाण. तज्जात तासों भयो ॥ २४ ॥ स्वीकारेति ॥ अपुव्व अपूर्व. "परस्य द्वित्व" मितिप्राकृतसूत्रेण रलोपः, वद्वित्वञ्च ॥ २५ ॥ बरेति॥ निजनृपको अनुज लघुभ्राता. जोध जोधसिंह नामक. राणाऽनुजकन्या राणा के अनुज की कन्या ताको. दुव बंधुन दोऊ भाईनको. प्रथित प्रत्येक प्रसिद्ध ॥२६॥ संवतेति ॥ ऋषि ७. इंदु १. सत्रहसे बावन१७५२. मान प्रमाण. मेचक कृष्णपक्ष. तपस्य फाल्गुनमास, ताकी. गणकन ज्योतिषीननें. तत्थ तहां. समत्थ समर्थ. कुयोगादि दोष रहित यह अर्थ ॥ २७ ॥ करीति ॥ सत्वर त्वरित. राम रामसिंह नामक. कोटाधिईस कोटापुर को अधिईश स्वामी ताकों. भुजभेटि भुजन करिके, भेटि मिलि. बंदि वंदित होयकें. तिन तिननें ॥ २८ ॥ अरुकहीति ॥ हेत अर्थ. रान रानानें. संप्रदान दानपात्र. उपयमअपत्य अपत्य पुत्र, ताको उपयम विवाह तामें

इम बुंदिय कोटा वरि उमंग, संतोखराम गय उदयढंग॥
सब कहि उदंत सांगोपअंग, उपयम विधान निज कृत अभंग३०
बुधसिंह बिबोढा अति उदार, बिक्रांत सुभग पटु सबप्रकार॥
तिनसौं रचि उपयम नीति बोध, दुवअनुज बरिय पुनि भीम जोध३१
अब रचहु व्याह बिधि जो अजात, अैहैं त्रि३रूच्य सुख साजि बरात
उत हुव बिबाह उपकरन एम, इत साजि बरात परिकार संप्रेम३२

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहोदयपुरसंबन्धवर्णनं द्वितीयो मयूखः॥२॥
आदितश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः॥ २४०॥

॥ षट्पात्॥

घमघमंकि घुग्घरन बाजि चल्लिय मग झंपत॥
धमधमंकि नउबत्ति बजत अतलादिन कंपत॥
तमतमंकि गजराज सुंडि सुरपथ फटकारत॥
झमझमंकि भूखनन रोचि रवि रोचि बिगारत॥
बानैत बिहित खुरली रमत क्रमत बीर बिरुदन बलिय॥

॥ २९ ॥ गय गयो. उदयढंग उदयपुर. "संयुक्तपूर्वोपि लघु क्वचित्स्यादि" तिवाणीभूषणवचनात् सर्वत्र न छंदोभंगः॥ उदंत वृत्तान्त. सांगोपअंग सांगोपांग. उपयम विवाह ॥ ३० ॥ बुधसिंहेति ॥ बिबोढा वर. लोकमें दुलह. बिक्रांत सूरवीर. सुभग सुन्दर. उपयम विवाह. दुवअनुज बुधसिंह के छोटे भाई. बरिय वर.(अंत के इकार-ईकार-एकार देशी प्राकृतमें इय होय. उकार-ऊकार-औकार उव होय). भीम भीमसिंह. कोटा के राजा को पुत्र. जोध जोधसिंह. बुंदी के राजा को पुत्र. ए दोऊ बुधसिंह के अनुज भये ॥३१॥ अबेति ॥ अजात नहींभये ऐसे. अैहैं आय हैं. त्रि तीन ३. रूच्य दुलहा. "रूच्यो वरयिता धवः" इतिहैमः॥ उपकरन सामग्री. एम यों ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बून्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के उदयपुर सम्बन्ध होने के वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥ और आदि से दो सौ चालीस २४० मयूख हुए॥
घमघमंकेति॥ मग मार्ग. नउबत्ति भेरी. अतलादि अतल वितलादि लोक. ति-

बुधसिंह बिदित बुंदिय नृपति सजि सानुज दुल्लह चलिय ॥१॥

॥ दोहा ॥

बुल्लि बिदित कवि बिबुध लिय, भूसुर चारन भट्ट ॥
अगुनहु त्याग उमंग धारि, अनाहून चलि थट्ट ॥ २ ॥
सेवक जाति सिरोहिया, भाख्यो भट्ट प्रताप ॥
उदयनैर मम हेय नृप, लै न चल्लहु सँग आप ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

कवि प्रताप यह कवहु पत्त कुल भट्ट उदैपुर ॥
राजसिंह१जँहँ रान१ईर१दासहु धीसख२धुर ॥
इक रानी अभिलाप पटकि पट्टप१कुमारपर ॥
तदनु मरायो ताहि कुमति वहिकाइ रान कर ॥
तस अनुज कुमर सरदार२तिम मंतुविनुहि लै विष मर्यो॥
तिहिँ अघ प्रताप जावन तजि रु पुरहि उदैपुर परिहर्यो॥४॥
इक्कसमय यह भट्ट उदयपत्तन संपत्तो ॥
राजसिंह तिन दिनन रान राजत छक रत्तो ॥
पट्टप पुत्रहि रान रुट्ठि मारन मन धार्यो ॥
मैंहु जनक हनि भूप रहौं यहँ हेतु बिचार्यो ॥
अनई न यहँ आन्यो जनक तव कुमार तत्काल भजि ॥
सरनागत भट्ट प्रतापके अभय मंगि हुव प्रनति सजि ॥५॥

नकों. कंपत कंपात. सुरपथ आकाश. रोचि कांति. खुरली शस्त्राभ्यास "खुरली तु श्रमो योग्याभ्यासः" इतिहैमः ॥ क्रमत·चलत. विरुद विरुदवंदीजन के स्तुति करि ॥ १ ॥ बुल्लिइति ॥ भूसुर विप्र. भट्ट भाट. अनाहूत विना बुलाये. ॥ २ ॥ सेवकोति ॥ प्रताप प्रताप नामक. हेय छोरिवे योग्य. आप तुम ॥ ३ ॥ कवेति ॥ पत्त प्राप्त. धीसख मंत्री. अभिलाप मिथ्यादोप. तदनु तापीछे. मंतु अपराध ॥ ४ ॥ इक्केति ॥ भट्ट भाट. संपत्तो संप्राप्त भयो. रान रानानें. जनक पिता, ताको. हेत कारन. मैं पिता कों हनि राजा बन्यों ज्यो यंहहु राजा बनै

रान जानि यह बत्त आय द्रुत भट्ट पटालय ॥
जचिय पुत्र तब भट्ट कहिय यह देहु अनामय ॥
अंगीकृत करि भट्ट कथित निज सुत लै आयउ ॥
अनय बिरंचि पुनि तनय अनागस मारि गिरायउ ॥
यह सुनि प्रताप अति सोक किय लिय संधा ताही छनक ॥
जो कबहु धरों मुख रानजल तो न भट्ट मामक जनक ॥ ६ ॥

(दोहा)

जलहु उदैपुरको तजन, बंदी जँहँ पन बंधि ॥
कह्यो सत्य मम भट्ट कुल, सत्यबचन यह संधि ॥ ७ ॥
वह कथ चिंति प्रताप तँहँ, न चलन अरज उचारि ॥
नृपति कह्यो हम लै चलहि, आपुन देसज बारि ॥ ८ ॥
हठ पूरब यह हुकम करि, लिय निज संग प्रताप ॥
भरि सकटन निज देस भव, रिरी करीरन आप ॥ ९ ॥
कोटाकीहु बरात बनि, मिलि मग संक्रमि संग ॥
पहुँचे दुल्लह उदयपुर, महसह उदित उमंग ॥ १० ॥

(पद्धतिः)

अतिमोद रान सनमुक्ख आइ, बिधिजुत जामाता लिय बधाइ ॥
दल उतरि द्रंग ढिग सर समीप, द्रुति वहिग आरती कलस दीप
पधराय समय महलन सप्रेम, तनि सुचित उचित उपहार तेम ॥
बुधसिंह१९७१हिं व्याहिय रक्खि रीति,बिंदा बय बाल्य सु प्रथित

यह अर्थ. अनई अन्याई ॥ ५ ॥ रानेति ॥ पटालय डेरा. यह याको. अनामय कुशल. अनागस बिना अपराध. संधा प्रतिज्ञा. मामक मेरो ॥ ६ ॥ जलेति ॥ बंदी भाट. संधि प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ वहेति ॥ कथ कथा. आपुनदेसज अपने देश को. बारि जल ॥ ८ ॥ हठेति ॥ रिरी पीतल. "रिरी च रीतिः" इतिहैमः॥ ताके करीर कलस. "कुटः कुम्भः करीरश्च" तिहैमः ॥ तिनमें आप जल ॥ ९ ॥ कोटेति ॥ संक्रमि चलकर. मह उत्सव ॥ १० ॥ अतिमोदेति ॥ जामाता लोके जमाई. दल सेना. द्रंग नगर. सर तड़ाग. समीप निकट ॥ ११ ॥ पधरायइति ॥

प्रीति ॥ १२ ॥

परिनाइ सोदरहु जोधनाम, पुनि भीम पितृव्यक रामजाम ॥
मुहुकम्मवंस भट बंधुबर्ग, परिनाइ नाम सालम कुसर्ग ॥ १३ ॥
इत्यादि रान बर बरि अनेक, अष्ठ८ रु सत१००ब्याहे लग्न एक ॥
बुंदीन्द्र संग बिधि उचित साजि,दुल्लह सप्तोत्तरसत१०७बिराजि१४

(दोहा)

छप्पनदेस नरेसकी, तनया ब्याही रान ॥
प्रेमरीति अंतरप्रिया, सोही रानिय सुजान ॥१५॥
ताके उर सुंदर सुता, हुव उम्मेदकुमारि ॥
सो दुलहनि बामांग बिधि, बुधसिंह अवधारि ॥ १६ ॥

(षट्पात्)

कुमरी जेठो कुमर नाम उम्मेदसिंह१९८।१जिंहिं ॥
प्रिय रानिय सुत जानि रान लगि राजदैन तिंहिं ॥

उपहार सामग्री. बिंदा लोके बींद ॥ १२ ॥ परिनाइ इति ॥ सोदर अपनों स-होदर भाइ. लोके सगो भाई. भीम भीम नामक. पितृव्यकरामजाम पितृव्य-क पिता को भाई लगतो होय तासूं काका बाबा कहे है यातें हमनें कह्यो. ऐसो कोन रामसिंह नामक कोटा को राजा ताको जाम जायो. यह अर्थ. मुहु-कम्म कुमर गोपीनाथ को पुत्र, राव शत्रुशाल को भाई ताके वंश में भयो ऐसो सालमसिंह नामक.कुसर्ग कुत्सित है प्रजा जाके. ऐसो याके पुत्र व्है हैं जे स्वामी बुधसिंह को शत्रु व्हैहैं यातें कुसर्ग कह्यो ॥ १३ ॥ इत्यादीति ॥ सप्तोत्तरं सत १०७ एक सो सात और दुल्लह और एक बून्दी को इन्द्र ए एकसो आ-ठ भये. या लग्न पर राना जयसिंह नें एक सो आठ १०८ कन्या अपनी अरु बंधु वर्गन की इकट्ठी करके ब्याही तहां तीन दुलहा तो बूंदीसों गये दोऊ भाई और एक सालमसिंह अरु एक कोटा सों ऐसे औरहू देशन के राजा तथा राजकुमार तथा उमराव वा लग्न पर एक सो आठ १०८ बिवाहे इत्यर्थः ॥ १४ ॥ छप्पनेति ॥ छप्पन बागड़ देश के समीप देश विशेष. ताको नरेस चहु-वान यह शेष. ताको तनया पुत्री, अंतर मन. तामें ॥१५॥ ताकेति ॥ अवधारि धारी ॥ १६ ॥ कुमरीति॥ कुमरीजेठो. कुमरीसों जेठो. ज्येष्ठ बडो. यह अर्थ.

सत्रुसल्ल नंदिनिय नाम गंगा गुन गाई ॥
भावसिंह भगिनी सु पुब्ब रानहिँ परिनाई ॥
अमरेस कुमर ताके उदर प्रथम भयो कुल पट्ट पति ॥
तुरकान तेज़ संगति प्रबल घरघर हिंदुन अनय रति।१७॥
लखि यह अमरकुमार राज लघुबंधव पावत ॥
कुप्पि अनय उप्फनिय जनक उप्पर भुव जावत ॥
हानि धरम हिंदून लाय घरघर इम लग्गैं ॥
अणुके सम्मित अनय भिदुर गृह पब्बय भग्गैं ॥
अमरेस उदित आहव रचन बल बिसेस धनाबिनु कठिन ॥
यह सोचि आय मातुल निलय बुंदिय गढ तिहिँ मंत्र खिन।१८।
यह भाऊ१९५।१अधिराज देत अनई न कपर्दन ॥
तीनलक्ख३०००००तब दम्मं पाय निट्ठहि मातुल सन ॥
अर कुमार अमरेस आय बेघमपुर ओसरि ॥
राउत अनुपमसिंह पग्घ पलटि रु धीसख करि ॥
बखसीस चयारि४चामर बिरचि संगर उचित अनीक साजि॥

यह कुमरी सों वहुत वर्ष पहिलैं भयो हो. जिह जाकों तिह ताकों. तव यह शेष. नंदिनिय पुत्री. पुव्व पहिलैं ॥ १७ ॥ लखीति ॥ बंधव भाई. जनकउप्पर पिता.उप्पर. भुव भू. अनय अन्याय. सोही भिदुर वज्र. ताकरिकैं "कुलिशं भिदुरं पवि" रित्यमरः ॥ गृहपव्वय गृह घर. सोही पव्वय पर्वत. भग्गें नष्ट होत. आहव युद्ध. वल सेना. मातुलनिलय मातुल मांमा. ताको निलय स्थान. तिहँमंत्रखिन वा युद्ध करिबेके मंत्र के. खिन क्षण में ॥ १८ ॥ यहेति ॥ भाऊ भावसिंह. अनई अन्याई. यानैं पितासों लरिबेकों मांगी यह अन्याय की यातें. कपर्द लोके कोडी. न नहीं. दम्म द्रम्म [illegible] रूपय्या. सव सों. अर शीघ्र. बेघम बेघम नामक नगर. ओसरि पीछो फिरकैं. रावत है अनंटक पद जाको ऐसो अनुपमसिंह अनोपसिंह नाम करि बेघमको पति ताकों. मेवार के उमराव रावत बहुत बजे हैं. पग्घ शिरोवेष्टि लोके पाघ. ताकों पलटि बदलि. उनकी पाघ इननें यह अर्थ. मूढ लोक याकों आधुनिक समय में मित्रताको चिन्ह गिनै हैं यातें. रु अरु. धीसख मंत्री. अनीक सेना. "चक्रं चानीकमस्त्रिया" मित्यमरः ॥ पुरउदय उदयपुर. बृंहित गजशब्द. हेसा हयशब्द.

पुरुउदय जाय घेरिय प्रबल बृंहित हेषा निनद बजि ॥ १९ ॥
सु सुनि रान जयसिंह पुत्र लघु सहित पलायो ॥
किल्ला कुंभिलमेरु बसि रु वह काल बितायो ॥
सुत हल्ला लखि सत्य मात गंगा सकोप मन ॥
खेटक खग्ग उचाय आय ठढ्ढी गृह तोरन ॥
पठई कहि अनुपमसिंह पहँ तुम भटवर धारत धरम ॥
समुझावहु कुतनय बिनयसन जो चौंडाघर तुम जनम २०
यह सुनि अनुपमसिंह सुमिरि निज पुव्वपितामह ॥
प्रथम मिल्यो चलबुद्धि अब सु बदल्यो डर दुस्सह ॥
साजि अप्पनों अत्थ समुख प्रतिभट व्है धायो ॥
चोसर चत्वर उदयनैर लुट्टन नहिँ पायो ॥
समुझाय कुमर अमरेसकहँ तुल्य सुभट ए ... ॥
कुल धरम थंभि सुत जनककैं सुनय साम किन्नों बहुरि२१

॥ दोहा ॥

रहैं तखत जयसिंह नृप, तोलौं अमरहिँ अप्पि ॥
राजसमुद तड़ाग तट, राजनगर गढ थप्पि ॥ २२ ॥
इम गंगा पहिले समय, पुराय पतिव्रत पाय ॥
भेदि सु अनुपमसिंह भट, लिय स्वपुत्र समुझाय ॥२३ ॥
गंगासम गंगा कही, सुधरम सतिय सुजान ॥
भीखमसम कैसैं कहौं, अनई अमर अमान ॥ २४ ॥

निनद शब्द. ॥१९॥ सुसुनेति ॥ सु सो. पुत्र उम्मेदसिंह नामक. सुत अपनों पुत्र अमरसिंह नामक ताकों. मात माता. खेटक ढाल. तोरन बाहिर को द्वार. कुतनय कुपुत्र. पितासों लरिबे आयो यातें याकों. सन सों. हेतु में पंचमी. तुम तुमारी. इतो यह शेष ॥ २० ॥ यह इति ॥ पुव्व पूर्व. ताकों चूँडा कों. यह अर्थ. समुख सामने. चोसर चार चार पंक्तिवारे चत्वर. जामें ऐसो ॥ २१ ॥ रहेति ॥ अमरसिंह कुमार कों पंच उमरावननें यह शेष. अप्पि देकैं. थप्पि थापों. ॥ २२ ॥ इमेति ॥ यह स्पष्ट ॥२३॥ गंगाइति ॥ सतिय सती (पतिव्रता) यह

लहि प्रसंग कछु यँहँ कहौं, चौंडाकी नय बत्त ॥
जाहि सुमिरि अनुपम भयो, गंगाबच अनुरत्त ॥ २५ ॥

॥ षट्पात ॥

इक१समय चीतोर रान लखपति खेतल सुत ॥
तरुन कुमर इक तास नाम चौंडा नय जय जुत ॥
नृप रनमल्ल रठ्ठोर गेह तनया मंडोवर॥
चौंडासौं संबंध करन आये तस कग्गर ॥
सुनि पत्र रानलखपति कहिय तरुननकौं हेरत जगत ॥
यह जनक बैन सुनि सुनि कुमर किय मन तिहिँ व्याहन बिरत२६
कहि चौंडा करजोरि सुनहु मरुबर सुज्ञाता ॥
व्याह पिताको रचहु वहै कन्या मम माता ॥
यहु सुनि मरुबासीन कह्यो लिखिदेहु अप्प कर ॥
रठ्ठोरनको भागिनेय चीतोर पट्ट पर ॥
यह सुनत लिखित निजहत्थ करि मरुबासिन सौंप्यो कुमर
लखपतिहु रान व्है मंदमति व्याहलइय वह वृद्धबर ॥२७॥
तुच्छ दिननके अंत गरभ रठ्ठोरि ग्रहन किय ॥
समय अंत सुत जनम, नाम सुक्कल बिप्रन दिय ॥
लखपति अज तिनदिनन काल कंठीरव मार्यो ॥
चौंडासौं रठ्ठोरि रूठि पीहर बल धार्यो ॥
बुलवाय तात रनमल्ल पुनि जोधभ्रात चीतोरगढ ॥

वृत्तान्त बहुत वर्ष पहिलैंको यहां कहि दीनों है ॥२४॥ लहि इति ॥ यँहँ यहां ॥ २५ ॥ इक्कइति ॥ तास ताको. कग्गर पत्र. तिहँ ताकों. व्याहन व्याहिबेकों बिरत बिरक्त (उदासीन) ॥२६॥ कहि इति ॥ मरुबर मरुदेश के बर श्रेष्ट. सचिवादि यह संबोधन. अप्पकर अपनें करसों. भागिनेय लोके भानेज. वह रठ्ठोर राजा रनमल्लकी कन्या. वृद्धवर बूढे बरनें॥२७॥ तुच्छेति॥ जनमि जन्म्यों. सुक्कल मोकल. लोके मोकल. अज बकरा. काल मृत्यु. सोही कंठीरव सिंह तानैं.

तिन हत्थ द्वार कुंचिय अरपि किल्ला करिय प्रपंच दढ२८
नारिबुद्धि रठोरि संमुक्किनहिं परिग फलाफल ॥
तब सुख रनमल कहिय तजैं चौंडा जब यह थल ॥
यह सुनि चौंडारान जुत्ति निकस्यो भीसम धुर ॥
मुलक छोरि मेवार गयो मालव मंडूपुर ॥
मारवन दाव लाग्यो तबहि जोधा रनमल मंत्र जपि ॥
करि भागिनेय मुक्कल कदन थिरहि लैन चीतोर थपि २९
इक्क१रान अनुचरिय नेह मंड्यो जोधासम ॥
इक१दिन आसवपान जोध बुल्ल्यो मतिविभ्रम ॥
मुक्कलकों अब मारि दुग्ग दल देस कोस हरि ॥
इक्क१मासके अंत तोहि भजिहैं रानी करि ॥
यह बत्त डोरि दासिय दई मुक्कलकी माता श्रवन ॥
सुनि सोचि तबहि रठोरिकों चौंडा आयउ चिंतमन ॥३०॥
पत्र मंडि प्रछन्न दूत मंडुव पठवायो ॥
सुनि चौंडा सजि सेन अद्ध रजनी गढ आयो ॥
करि हल्ला चढि कोट धस्यो बीराधिबीर बल ॥
कुमर जोध भजि कढिग मारिलिन्नौं नृप रनमल ॥

तात पिता. जोधभ्राता जोधसिंह नामक भाई. द्वारकुंचिय दरवाजेनकी कूं-ची. अरपि दैकैं. दढ दृढ ॥२८॥ नारिबुद्धिरिति ॥ परिग परचो. थल स्थल.(स्थान). रान राना. जुत्ति ताके जुपिकैं. भीसमधुर भीषमकी धुरकै. जा धुरकै भीषम जुप्यो ताके यह अर्थ. मारवन मरुवासीनके. कदन नाश. थपिको अन्वय मंत्र सों है ॥ २९ ॥ इक्कइति ॥ अनुचरिय दासीं. तानैं. क्रम यासौं. दासिय दासी नैं. माताश्रवन माताके कान में ॥ ३० ॥ पत्रइति ॥ सेन सेना कों. बल सेना. मुक्कलहिं मोकल कों. अरपि दैकैं. तटस्थ भिन्न. हिंदवान हिंदुस्थान. यहां वर्णाश्रम धर्म वारे या कुमारिका क्षेत्र के वासी जन हैं तिनकों म्लेच्छ लोग तो हिन्दू कहैहैं. यह हिन्दू शब्द या क्षेत्र में जवननको राज्य भये पीछे बहुत प्रकट व्हेकैं देशीप्राकृत में गयो यातें देशीप्राकृत जानिकें हमने वर्तमान कारनतें कह्यो है. अन्यथा या शब्द को अर्थ तो बुरो ही होत है; क्योंकि म्लेच्छ

मुकुलहिँ पट्टगद्दिय अरपि रहि तटस्थ जग जस लियउ ॥
हिँदवान बत्त धारहु हृदय करहु जेम चौंडा कियउ ॥३१॥

दोहा—यह चौंडा करि चिंतमन, अनुपम धरम बिचारि ॥
कियो साम सुत जनककौं, निज पुर लूट निवारि ॥३२॥
रान अनय मन ठानिकैं, राज दैनलगि जाहि ॥
ताकी बर सोदर स्वसा, बुड्ढ नरेसहिँ व्याहि ॥ ३३ ॥
तीजी३रानीकी सुता, भीमहिँ दइय बिचारि ॥
भ्रात भीमकी नंदनी, जोधसिंह अवधारि ॥ ३४ ॥
मुहुकमहर सालम अरथ, सुभट सुता परिनाय ॥
बहुरि सीख डेरन दई, सबहिन मोद सुनाय ॥ ३५ ॥
दुल्लह डेरन आय किय, बिहित नित्य सुचि होय ॥
गोरन असन निमंत्रकौं, रहे रान मग जोय ॥ ३६ ॥
रान कैफ मंडत बहुत, आतआत अलसाय ॥
गोरन दिवस अतीत व्है, समय निसीथ सु आय ॥३७॥

॥ षट्पात् ॥

लोग तो इनकों अच्छे कहैं नहीं तिन मतानुकूल उत्तम आर्य जनों को आ
करिकैं कहनों परत है कि तिन हिंदुनको स्थान है. ताके अनुस्वार कों "
स्वारो बहुलं" या प्राकृतसूत्रसों अनुनासिक कियो. जेम ज्यों ॥ ३१ ॥ व
ति ॥ साम प्रथम उपाय. निजपुर रानाको पुर (उदयपुर) ताकी [illegible] जनं
ति ॥ स्वसा भगिनी. लोके बहिनि: "जामिस्तु भगिनी स्वसे" [illegible] ॥ रान
बहिन भाईसों बहुत वर्ष पीछैं भई. व्याहि व्याही ॥ ३३ ॥ तीजी [illegible] ॥ यह
महिं कोटा के राजा को पुत्र भीमसिंह. ताकों. दइय दई. भ्रातकी [illegible] भी
यसिंह को भाई भीमसिंह. ताकी. नांदिनी पुत्री. अवधारि धारी ॥ ३४ ॥ [illegible] ज
हुकमेति ॥ हर देशीप्राकृत में वंश वारे कों कहत हैं. तातें मुहुकम वंशी य
अर्थ भयो ॥ ३५ ॥ दुल्लहइति ॥ नित्य सन्ध्यादिक कर्म. सुचि पवित्र. गोरन
विवाह के दूजे दिन कों लोक में गोरन कहै. ताके. असन भोजन के. निमंत्र
बुलावाको. रानमग राना के मार्ग कों. जोय देखि. जोय को अन्वय रहे सों
है ॥ ३६ ॥ रानइति ॥ कैफ नशा. निसीथ अर्धरात्रि ॥ ३७ ॥ सुपट्टइति ॥ सु

सु पहु रान जयसिंह मन्नि मादक सराग मन ॥
भंगि अरक भुञ्जैं सु प्रमित दुव बीस२२पहीसन ॥
प्रिय रानिय छप्पनिय भौंन पगधारि नित्य भल ॥
असन अप्प अहरहिं मेर खट६रितुहि अंबफल ॥
इम मत्त मातुलानिय अरक दसमी१०निस ससिके उदय॥
चहुवान सिबिर सीसोद चलि मातुहारि गोरन समय।३८।
मिलि उपेत सनमान राव रानाँ अनंद रजि ॥
चढि गयंद चहुवान स्वसुर महलन प्रयान सजि॥
परिकर सह परि पंति असन किन्नौं अधिराजन ॥
अति सुख डेरन आय सयन मंडिय प्रमोदसन॥
जयसिंह रान तजि३दिवस जनक द्वार मेटन जहर ॥
परताप भट्ट डेरानप्रति मुदित आय मंडिय महर ॥ ३९ ॥

(दोहा)

अग्गैं रानाँ राजसौं, रुट्ठो भट्ट प्रताप ॥
अब जयसिंह प्रसन्न किय, आय पटालय आप ॥४०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे सप्तोत्तरशतावृन्दसहितबुधसिंहोदयपुरविवाह

सो. पहु प्रभु राजा. मन्नि मानिकैं. मादक नशे की वस्तु. तासौं. सरागमनरा- [illegible] प्रीति [illegible]सहित मनकौं. भंगि भंगा. ताको. अरक सार. भुंजैं खावै. सु [illegible]सो. प्र[illegible]त प्रमान. भौन गेह. पगधारि जायकैं. अंब आम्र. लोके आंवा. तिनके फल[illegible]सौं रुचि बहुत ही यातैं बारह मास राखते. मातुलानिय भंगा. ताके. चहुवा[illegible] बुधसिंह के. सिबिर रचना विशेषसौंफोज के डेरा. तिनप्रति. सीसो- [illegible] रा[illegible] ॥ ३८ ॥ मिलिइति ॥ उपेत युक्त. राव बुंदीनृप. राजि शोभित व्हैकैं. [illegible] सहित. असन भोजन. सन सौं. जहर विष. महर कृपा ॥ ३९ ॥ अगेति॥ [illegible]राजसौं राजसिंह नामकसौं. पटालय डेरा ॥ ४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर में एक सौ सात दुलहों सहित बुधसिंह के विवाह के वर्णन का तीजा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इकता-

वर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदित एकचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४१ ॥

षट्पात्—दिन चउत्थ४ दीवानं बुल्लि रघुपतिय पुरोहित ॥
अरु चारन आनंद भट्ट परताप बुद्धबित ॥
च्यारिलक्ख४०००००निज चलन द्रम्म खज्जूर संगदिय ॥
हय बर इक्कहजार१०००दोयदस१२मत्त दंतिय ॥
सिरुपाव उच्च द्वादस सहँस१२०००कति बिधि भूखन संग किय॥
मंगनन भाग धनपति मनहुँ दैन त्याग इम हुकमदिय ॥ १ ॥
दिन पंचम२दुव२नृपन सजिय चीतोर समागम ॥
पिक्ख्यो दुग्ग सु प्रथित समर जँहँ हुव अकबर सम ॥
पुरिणम१५दिन करि गोठि फाग कौतुक किल्लापर ॥
होरिय उच्छव ठानि बहुरि आये पत्तन बर ॥
अतित्याग उफ्फल सुनिसुनि सुजस हरखि रान जयसिंह जिय॥
बिधिउचित पुज्जि बरबरनि छबि रहि रस बुंदिय सिक्ख दिय॥२॥
चलि बरात प्रतिपंथ भीम करजोरि आत धुर ॥

लीस २४१ मयूख हुए ॥

दिनइति ॥ चउत्थ चतुर्थ. चौथे दिन यह अर्थ. दीवान बुधसिंह. बुल्लि बुलाय कैं. रघुपतिय रघुपति नामक. यहां स्वार्थ में क प्रत्यय आन्यो. ताके व्यंजनको लोप करिकैं प्राकृत के मतसों यकार कियो. यह रीति सर्वत्र ऐसे प्रयोग आवैं तहां जानलेनी. आनंद आनंदराम नामक. अपनी पोळि को चारण हरिणा नाम ग्राम को स्वामी हमारे पितामह बदनसिंह को प्रपितामह यह शेष. भट्ट भाट. बुद्धिबित बुद्धि परखबे वारो."विद्ज्ञाने"धातु है. ताको वित् भयो. ताके तकारकों प्राकृतसों सस्वर कियो. द्रम्म रुप्पैया. खज्जूर खजूर रूपा. ताके. कति कितेक. धनपति कुबेर. त्याग दान. विवाह में मंगननकों दान होत ताकों त्याग कहे हैं ॥ १ ॥ दिनइति ॥ पिक्ख्यो देख्यो. दुग्ग दुर्ग. किला. सु सो. (चित्तोर). हुव भयो. समा सों. पुरणम पूर्णिमा. ताके दिन. गोठ रीति विशेषसों भोजन. पर ऊपर. होरिय यहां हुतासनि की. जाकों अग्नि में जारिये सो लेनी ॥ पत्तन नगर. तिनमैं बर श्रेष्ठ ॥ उदयपुर यह अर्थ भी होत है ॥२॥

कोटापति किय सिक्ख अप्प आयउ बुन्दीपुर ॥
दिय मिलान सब सैन जैतसागर तड़ाग तट ॥
दइवजोग निस समय अग्गि लग्गिय डेरन पट ॥
सर सेतु मध्य गृह पिहित इक१अजि रु तत्थ वर बरनि रहि ॥
हुव छार हसम डेरन सहित मनुज तुरंगहु कछुक दहि ॥ ३ ॥
इहिँ दारुन उतपात दान सत दोय२०० सविधि दिय ॥
सुद्ध समय निज नगर द्वार उत्तर प्रवेस किय ॥
पुरजन मंगलपुव्व विविध उच्छाह बधारे ॥
हट्टा चत्वर चोक सउध प्राकार सिँगारे ॥
बिधि निगम साधि वर बरनि इम नीराजित गृह गमन किय॥
कछुदिनन अंत जवनेसके चरन आय फरमान दिय ॥ ४ ॥
दिल्लियपति अवरंग४०।३तपत इक१छत्र तीन३दिस ॥
दक्खिन दव्वनकाज चढिग अतिवल अतीव रिस ॥
पहिलैं रेवापार नाम निज नगर बसायो ॥
बहुत बरस रहि तत्थ कछुक अरि अमल उठायो ॥

चलिति॥ भीम कोटानृपपुत्र. आतधुर भाइनमें मुख्य. सरसेतु तड़ागकी तट. लोके पालि. पिहित गुप्त. तत्थ तहां. छार भस्म. हसम वैभव. यह हसम शब्द देशीप्राकृतमैं है. ताको उदाहरण. "हसम हय गाय देश अति"॥ यह दोहाको चरन पृथ्वीराजरासेमें महुव्वा खंडमैं है. अरु और ठौरहु रासे में बहुत प्रयोग हैं अरु मुसलमान कहै हैं कि हमारे वैभवको नाम हशमत् है ताको यह भयो है, परन्तु यामें तकार नहीं है यातैं देशीप्राकृत ही मान्यों. मनुज मनुष्य. दहे जरे ॥३॥ इँहिँइति ॥ दारुन भयंकर. सविधि विधि सहित. उत्तर उत्तर दिशाके. हट्टा बनिकन के विक्रयको स्थान. चत्वर चुहट्ट. चोक बाजार. सउध देशीप्राकृतमें सउध, सौंध, लोके महल ॥ "सौधोऽस्त्रीराजसदन" मित्यमरः ॥ प्राकार लोके कोट. निगम वेद ताकी. नीराजित आरती उतारे भये. चरन दूतन. फरमान लिख्यो हुकम ॥ ४ ॥ दिल्लियपति इति ॥ रिस रोससों. मेकलजा नर्मदा "रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यके" त्यमरः॥ नामनिज अपनें नामको. तुरक मुसलमाननमें रूढ शब्द देशीप्राकृत है ॥ तहांके वासी ही तुरक

हाजरि समस्त हिंदुव तुरक जोन अवर दिस सुक्कल्यो॥
तुरकान तहर जालम जहर लोपि लहर काहुन ऋल्यो॥५॥

॥ दोहा ॥

काबल सूबा काल बस, सुनि अनिरुद्ध जरूर ॥
अब सेवन अंतर समुझि, बुल्लिय बुद्ध१९७।१हजूर ॥६॥
अहदी तब अवरंग४०।३के, अतिजव बुंदिय आय ॥
सिरधरि साहन बंदगी, चलहु कह्यो हित चाय ॥ ७ ॥
जाय समुख फरमानकैं, करि सलाम लिय झेलि ॥
उपज्यो चलन प्रपंच अब, देत हुकम को पेलि ॥ ८ ॥
सुनि कग्गर परिकर सबहि, मिलि इक्कत किय मंत ॥
स्वामि बाल सेवा कठिन, आलोचहु मतिअंत ॥ ९ ॥
इहिं अंतर अवरंग४०।३सुत, जेठो आलमसाह४०।३ ॥
बंदीगृहतैं कढिचल्यो, चिंति आगरा चाह ॥ १० ॥

(पज्झटिका)

हुव पुत्र पंच५अवरंग धाम, सुलतानमुहुम्मद४१।१प्रथम जाम ॥
सुत दूजो आलमसाह ४१।२ एह, सुत तीजो आजम ४०।३ पितु सनेह ॥ ११ ॥
सुत चोथो अकबर ४१।४ नामधार, हुव कामबखस ४१।५ पंचम कुमार ॥
जेठेसुत द्वैरमनकरि उदास, बंदीगृह डारे बिसम बास॥१२॥

बजत हैं ते यहां नहीं लैनें ॥ तहर प्रताप. जालम जुलम करिबेवारो. यह यावनीभाषा के शब्द हैं. लहर वा जहरके असर को झोला. काहु काहूसों ॥५॥ काबलसूबेति ॥ जरूर त्वरित. अंतर विक्षेप. बुध बुधसिंह ॥ ६ ॥ अहदीति ॥ साहन पातशाहनकी ॥ ७ ॥ जायइति ॥ पेलि टारि ॥ ८ ॥ सुनिइति ॥ इक्कत एकत्र. आलोचहु विचारहु. मतिअंत बुद्धिपर्यंत ॥ ९ ॥ इँहिइति ॥ चाह इच्छा॥१०॥ हुवइति॥ जाम जन्म. एह यह. जो आगराको चल्यो सो॥ पितुसनेह पिताके स्नेहवारो ॥ ११ ॥ सुतइति ॥ यह स्पष्ट ॥ १२ ॥ सुलतानइति ॥

सुलतानमुहुम्मद४।१मरियतत्थ,आलमवच्योसु४।१२आयुहिसमत्थ
याकैहु पुत्र हुव प्रथम च्यारि४, आयैं बय जुव्बन कैद डारि ॥१३॥
कैदहिमैं पाय पलित केस, अपमानित दीनहुसौं बिसेस ॥
बरसावधि पावैं दगल इक्क१, परि दुसह दहैं जूका रु लिक्क १४
नहिं बपनन्हान नहिं असन इष्ट, जूकान जनित सहियत अरिष्ट ॥
इकसमय हुक्ख अरजी कराय,जो महर नयो मिलि दगल जाय१५
अवरंग४०।३हुकम पठयो अनेह, उलटा करि धारहु दगल एह ॥
इक समय मिल्यो सरदा बिसारि,तिंहिं छेदन छुरिका हित उचारि१६
पुनि कहिय साह भरि कोप भार, सिरसैं दै फोरहु नहिं हथ्यार ॥
इम कुपित साह सुत सीस आहि,इक समय सभासौं कहिय चाहि१७
जो मिलहिं हमारे हुकम आज, तो पावहि आजम४०।३साह राज॥
जो मिलहिं खुदाके हुकम पाय, लहिहैं तो आलम साह आय १८
सुनतहि इम आजम कहिय एहु, बंदीगृह बासी सोहि देहु ॥
यह सुनत साहहिय बढि बिखाद, कोपारुन आजम प्रति जगाद१९
सुत जेष्ट ममायस धरत सीस, वह कैदी अरु तुम तखत ईस ॥
यह कहि बुलाय आलम उदास,निकस्यो तजिकारागृह निवास२०
करि गुसल बपन मंजुल कराय,अति दिव्य बसन धरि आम आय॥
लखि साह छिप्र हियसौं लपेटि,भुज हुव२गहिलीनौं भुजन भेटि२१

तत्थ तहां (कारागृहमेंही). डारि डारयो ॥ १३ ॥ कैदहिमेंइति ॥ पलित जरासूं स्वेत. जूका यूका. लोके जौं. रु अरु. लिक्क लिक्षा. लोके लीक ॥ १४ ॥ नहिंइति ॥ बपन चौरकर्म. इष्ट चाह्यो. महर कृपा होयतो ॥ १५ ॥ अवरंगेति ॥ अनेह विना स्नेहसों. सरदा उष्णकालमें फल विशेष. विसरि भूलिकैं. जानिकैं तो वाकौं कौन देतो एसो पिताको कोप हो. छेदन फारिवेकौं. उचारि कही ॥ १६ ॥ पुनिइति ॥ हथ्यार शस्त्र. नहीं है ॥ १७ ॥ जोइति ॥ यह स्पष्ट ॥ १८ ॥ सुनितेति ॥ एह यह. बिखाद खेद. जगाद कहतभयो. यह संस्कृत शुद्ध क्रियापद है ॥ १९ ॥ सुतजेष्टेति ॥ ममायस मेरो हुकम ॥ २० ॥ करीति ॥ गुसल स्नान. यह यावनी शब्द है. आम जामैं सब पहुंचै ऐसी बडी

चिरकाल कंठ गदगद बढात, दुवघाँ हुव अश्रुन अधिक पात ॥
तहँ दियउ रीझि अवरंगसाह, अकबरपुर सूबा जुत उछाह ॥ २२॥
बारहहजार१२०००मनसुब लिखाय, दिय सीखं आगरा हित बढाय
लहि सीख चलन मन करि बिचार, हुत चढिग साह आलम कुमार
रेवा उलंघि अतिदल अमान, पुर आय अवंती दिय मिलान ॥
अग्गैं अवंति सूबा पधारि, कछुकाम पीर अर्चन उचारि ॥ २४ ॥
हुत कैद जोग वह रहिय सेस, अब करिय आय पूरन सुदेस ॥
खैरात बंटि बसु बिबिध नाम, क्रमि मग्ग अग्गरापुर जगाम ।२५।
नृप बिष्णुसिंह आमेर नाथ, निज बंस सुभट हरिसिंह साथ ॥
अवरंग हुकम जो लहि जरूर, हुव आय साह आलम हजूर।२६।

॥ दोहा ॥

अग्गैं इक अवरंगको, सीस समीप बिचारि ॥
बिष्णुसिंह नृपसौं हुकम, हुव मारन जटवारि ॥ २७ ॥
बिष्णुसिंह नृप सुभट निज, लिय हरिसिंह बुलाय ॥
कियउ बिदा जटवारि पर, संगर सेन पठाय ॥ २८ ॥

॥ पट्पात्॥

हरियसिंह कछवाह जाय जटवारि बिंटिलिय ॥
बहु जट्टन सिर कट्टि खनित खड्डन प्रविष्ट किय ॥
वह लंबापुर नाथ बंस खंगार संग साजि ॥
सेवन आलमसाह आय कूरम नरेस राजि ॥
दै दल मिलान जमुना पुलिन संचरि आम सलाम करि ॥

सभा तासैं. यहहु यावनी शब्द है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ रेवाइति ॥ रेवा नर्म-दा ताकों. पधारि पधारे हे तब ॥ २४ ॥ हुतकैदइति ॥ सुदेश वाही देशमें. खैरात पुण्यदान. यावनी. बसु द्रव्य. क्रमि चलि. अग्गर आगरा. जगाम जावतभयो ॥ २५ ॥ नृपइति ॥ स्पष्ट ॥ २६ ॥ अग्गैंइति ॥ हुकम पदको अन्वय अवरंग पदसों है. जटवार जाटनको देश ॥ २७ ॥ २८ ॥ हरीति ॥ खनित खोदे-

हरिसिंह सहित ठट्ठ मिसल रचि अंजलि आदाव धरि॥२९॥

॥ दोहा ॥

हरिसिंहहिं आलम दये, रीझि खिलत१ हयराय२ ॥
कूरम पतिके कथन करि, जट्ट कदन हित लाय ॥ ३० ॥
इम आलम कढि कैदसन, अकबरपुर हुत आय ॥
कूरम निज तावीन करि, वासर कछुक बिहाय ॥ ३१ ॥
यह उदंत भट सचिव सुनि, नृपहिं अलप बय जानि ॥
अरु दक्खिन अवरंगको, सेवन दूर प्रमानि ॥ ३२ ॥
आलमप्रति पुरआगरा, पठई अरज लिखाय ॥
लेहु हमहिं कहि साहसौं, निजसेवन मन लाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे प्रत्तोदयपुरदानबुधसिंहबुन्द्यागमन१, बुधसिंहाह्वानावरंगालसदुर्जनप्रेषण२, अवरंगपुत्रपञ्चकालमशाहकारानिवसन ३, कारामुक्तालमशाहाकबरपुराधिकारप्रापण ४, यवनेन्द्रसूनुनिदेशामैरराजविष्णुसिंहजट्टजनपदविजयनं चतुर्थो मयूखः॥४॥
आदितो द्विचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४२ ॥

हुए. खड्डुन खाडनमें. पुलिन तट ॥ २९ ॥ हरिसिंहेति ॥ आलम आलम शाहजादानें. खिलत सिरुपाव ॥ ३० ॥ इमइति ॥ वासर दिन ॥ ३१ ॥ यहइति ॥ उदंत वृत्तान्त ॥ ३२ ॥ आलमइति ॥ निजसेवन तुम्हारे सेवनमें ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह का उदयपुर में त्याग देकर बुंदी में आना १ बुधसिंह के बुलाने को अहदी भेजना २ औरंगजेब के पांच पुत्रों का और आलमशाह के कैद में रहने का वर्णन ३ आलमशाह का कैद से छूटकर आगरे के सूबे पर जाना ४ शाहजादे की आज्ञानुसार आंमेर के राजा विष्णुसिंह का जाटों के देश को विजय करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियालीस २४२ मयूख हुए ॥

॥ मुक्तादाम ॥

यहै बिनती सुनि आलम तत्त, पिताप्रति दै अरजी लिखि पत्त ॥
इहाँ नृप कूरम ज्यों भटभाव, रहैं मम संगहि बुंदिय राव ॥ १ ॥
यहै सुनि साह पठाय निदेस, रहो तुम संगहि बुद्धनरेस ॥
दयो तब आलम पत्त पठाय, स्वसंग बलापति बुद्ध बुलाय ।२।
भयो दल बंचि समस्तन मोद, बढ्यो लखि लग्न प्रयान बिनोद ॥
दये बहु दान विधानन रीति, प्रवासिन हेय तजे नय रीति ।३।
मनीं कुलदेविय पूजन मोद, नमे हरि पायन लै चरनोद ॥
किये सबिधान प्रवासिक कर्म, लखे सुभ साकुन लग्न सधर्म।४।
किते भट मंत्रिन आयस अप्पि, इहाँ गृह राज निबाहन थप्पि ॥
दये तिन्ह ग्राम पटा गज बाजि, दयो भुजभार बिचार बिराजि ॥५॥
सजी तब बुद्ध बलापति सेन, दिपैं भट तारक अप्प द्विजेन ॥
रहे निज आलय सोदर जोध, चल्यो दल होत प्रभंजन रोध ॥ ६ ॥
खुले उडि कुंभिन कंध निसान, तिरोहित व्है रविरेखुवितान ॥
हरोलन हांक नकीबन छोह, बडे गज खैंचत लंगर लोह ॥ ७ ॥
रही झुकि पीत पताकन पंति, मरातब माहिय भासिग भंति ॥

मुक्तादाम॥ यहइति॥ तत्त तहां. पत्त पत्र ॥ १ ॥ यहैइति ॥ निदेश हुकम. स्वसंग अपनें संग. बलापति बुंदी को पर्वत. जो पारियात्र अचल ताकों लोकमें मला कहै हैं ॥ २ ॥ भयोइति ॥ दल पत्र. बंचि पढिकैं. प्रवासिनहेय प्रवासी जो प्रस्थान करिवेवारे तिनके छोरिवे योग्य तीनरात्रि पहिले क्षौरकर्म. रात्रि पहिले दुग्ध. ऐसे हेय त्याज्य होत ॥३॥ मनींइति ॥ मनी मनाई. चरनोद चरनको उद जल ॥ ४ ॥ कितेइति ॥ आयस हुकम. अप्पि दैकैं. तिन तिनकों. विराजि शोभित व्हैकैं ॥ ५ ॥ सजीइति ॥ तारक नक्षत्र. द्विजेन द्विजनको इन स्वामी चंद्र. निजआलय अपने घर. प्रभंजन पवन ताको. रोध रूकनों ॥६॥ खुलेइति ॥ कुंभिन कुंभी हस्ती. तिनके. तिरोहित गुप्त ॥७॥ रहीति ॥ मरातिब माहिय, ए दोऊ बादशाहनें अपनी कृपा जनायबेकों दीनें ऐसे चिन्ह विशेष तिनमें मरातिब छोटे गंडवाके आकार. अरु माही मत्स्यी के आकार. अरु ध्व-

अकव्बरपुत्र दयो लहि काज, बज्यो वह राजत दुंदुभिराज ॥८॥
मलंगत फाँद तुरंगन जूह, चले उडि नोवति नाद दुरूह ॥
चल्यो दरकुंचन यौं चहुवान, दये मथुरापुर जाय मिलान ॥ ९ ॥
दई सतइक्क सग्रष्टक१०८गाय, समानहि हाटक हून१०८मिलाय॥
विधीरित यौं बहुधा करि दत्त, अकव्बरपत्तन आय प्रपत्त ॥१०॥
मिले क्रम आलम साह हजूर, कियो सनमान कह्यो हित पूर ॥
हन्यौं हम कृष्ण अवंतिय जेन, रह्यो तुमरौ हममैं हक तेन॥११॥
करे पलटा हमहू तसमात, लहो हमकौं भजि रिद्धिन व्रात ॥
करी सुनि यौं अरजी नरनाह, भली करिहै सब ज्यानपनाह ॥१२॥
१नाह१पनाह२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
परस्पर प्रीति उभै२सनमान, रहे इम कूरम श्रो चहुवान ॥
उहाँ दिन वित्तत के अवरंग, सुनी सुत आलम किति अभंग १३
इते बिच सोर सुन्यो मुलतान, वढे सिख लुप्पत साहन आन ॥
तबैं सुत आलमको जवनेस, दई मुलतान सम्हारि सु पेस ॥१४॥
यहै सुनि आयस आलम साह, सजे दल हिंदुव मिच्छ सिपाह ॥
भयो बिधिसौं चतुरंग पयान, भये दरकुंच धरा मुलतान ॥ १५ ॥
कुबिग्रह मेटि रच्यो नय राज, भजे सिख तित्तिरि ज्यौं डर वाज॥
दफैकरि देस प्रजा दुख दंद, रहैं इम आलम तत्त अनंद ॥ १६ ॥
रहैं दुवरभूपनसौं अति प्रीति, सबै दलकों सुख आदर नीति ॥

र लुप्त तृतीया कहता है. पुव्व पहिले राव सुर्जन को दये हे. राजत रजत रूपा तत्संबंधी ॥८॥ ९.॥ समान गायन के प्रमानहि. विधीरित विधिसें कऱ्यो. दत्त दान. प्रपत्त प्राप्तभयो ॥ १० ॥ मिलेइति ॥ कृष्ण कृष्णसिंह कुमर तुम्हारो पितामह. अवंतिय उज्जीनमें. जेन जाकारनसों ॥ ११ ॥ करेइति ॥ व्रात समूह. पनाह रक्षक. यावनी ॥ १२ ॥ परस्परेति ॥ उभै उभय. केक कितेक॥१३॥ इतेइति ॥ मुलतान पंजाबका देश ताकों. सिख वा देश के जमीदार. सु सो. पेस अधीन ॥ १४ ॥ यहैइति ॥ मिच्छ म्लेच्छ. ज्यों वे इनकों हिंदू कहैं त्यों ए आर्य उनकों म्लेच्छ कहैं ॥ १५ ॥ कुविग्रहेति ॥ दफै नाश. यावनी ॥ १६ ॥ र-

करैं दिन इक्क नदी जल कोलि, चले चढि नाव प्रवाहन पोलि १७
रजू दुव२भूपति सेवन लार, सजैं जलकुक्कुट बंधि सिकार ॥
कही तँहँ कूरमसौं सुतसाह; करो हमसौं दुहिता निज व्याह १८
कही तब कूरम यौं करजोरि, बनैं दुहिता जब होय बहोरि ॥
सुता इक१आहि सु तो करि नेम, दई बुधसिंहहिँ पुव्वक प्रेम १९
कही बुधसिंहहिँ आलम तत्त, करी तुमसौं इन व्याहन बत्त ॥
कही तब बुन्दिय राव सहास, कही इन जो सु भई कथ तास २०
यहै सुनि जंपिग आलमसाह, ततो हमही करिहैं तव व्याह ॥
करी सुनि यौं बुधसिंह सलाम, कह्यो निज आयस है सिरकाम २१
यहै सक चोवन सत्रह१७५४साल, नई कथ व्याह बनीबसि काल
भई बय द्वादस हायन१२बुद्ध, सजैं खुरली नय साधन सुद्ध २२
दयो लखि बुद्धहिँ बीर सिपाह, परग्गन टौंक सु आलमसाह ॥
कही तब यौं करि बुद्ध सलाम, लह्यो पुर टौंक बढ्यो मम नाम २३
परंतु कह्यो हमरो इक सेस, ततो करिये पुरपट्टनि पेस ॥
गई यह पट्टनि पूरबकाल, बढ्यो जब जट्टन बैर कराल ॥२४॥
सुनी अवरंगहु खून पुकार, कियो सुत आजमको सुत त्यार ॥
दये सँग बुंदियतैं अनिरुद्ध, बन्यौं समयो गुनगोरि प्रबुद्ध ॥२५॥
रहे तिहिँ कारन द्वैदिन गेह, न काबलपैं पहुँचे तियनेह ॥

हैइति॥ पोलि लंघि ॥ १७ ॥ रजूइति ॥ रजू अनुकूल. यावनी शब्द. दुहिता पुत्री. निज अपनीकों ॥ १८ ॥ कहीति॥ आहि है. सु सो. नेम नियम. पुव्वकप्रेम प्रेम पूर्वक ॥ १९ ॥ कहीति ॥ तत्त तहां. सहास हास सहित. तास वा विवाहकी ॥ २० ॥ यहैइति ॥ जंपिग कही ॥ २१ ॥ यहैइति ॥ स्पष्ट ॥ २२ ॥ दयोइति ॥ टौंक टोंक नाम नगरके ॥ २३ ॥ परंतुइति ॥ पेस अधीन. यावनी॥२४॥ सुनीइति ॥ सुत आजम सुतत्यार अपनों छोटो पुत्र आजम नामक ताकों तयार सज्जीभूत. गुनगौरि चैत्र शुक्ल तृतीया. प्रबुद्ध सबनें जान्यों. लोकमें ख्यात यह अर्थ ॥२५॥ रहेइति ॥ तिंहकारन वा गुनगौरिके कारन तुरसी क्रोध. या-

भई तुरसा इहिँ कारनआय, समा सर बेद रु सत्रह१७४५पाय२६
लई तब पट्टनि साह उतारि, दई नृप रामहिँ काम बिचारि ॥
छुटी तबकी अब सेवन पाय, दई इन आयस साह मँगाय।२७।
जयों निज टौंक परग्गन राज, बच्यो मँहँदीपुर इक्क१अकाज
लरे मँहँदीपुरके कछवाह, तजी सुरतान पिनातिन राह ॥२८॥
भई मँहँदीपुर तोपन मार, लये सब जीति कियो गढ छार ॥
रजू इम टौंक जिला करवाय, रहैं सुलतान सु बुंदियराय।२९।

॥ दोहा ॥

दुव२भूपनकौं बरस इक१, गयो रहत सुलतान ॥
सेवत आजमसाहकौं, इम कूरम चहुवान ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे यवनेन्द्रकुमारालमसेवाबुधसिंहगमन१ औरंगजेबाज्ञानुसृतिकुमारालममुलतानाशिक्खविजयन२ आलमशाहस्य टौंकपट्टनिप्रान्तद्वयबुधसिंहप्रदानवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥
आदितस्त्रिचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४३ ॥

बनी. समा वर्ष. "हायनोऽस्त्री समाब्दे" त्यमरः ॥ सर ५ पंच. बेद ४ च्यार. रु अरु. सत्रह १७ सप्तदश. सत्रहसै पैंतालीस १७४५ यह अर्थ ॥ २६ ॥लईइति॥ रामसिंह कोटा के राजाको. इन आलमशाहनें. आयस आदेश. यावनी सैं. जयोंइति ॥ महदीपुर महँदवास नामक नगर. सुरतानपिनातिन सुरतानके.पिनाती वंश के सुरतानोत कछवाहे तिननें. राह रीति ॥ २८ ॥ भईइति ॥ रजू अधीन. यावनी ॥ २९ ॥ दुव इति॥ दुव बुंदी १आमैर २ के दोऊ ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह का शाहजादे आलम की सेवा में जाना १ औरंगजेब की आज्ञा के अनुसार शाहजादे आलम का मुलतान के शिक्खों को विजय करना २ आलमशाह का बुधसिंह को टौंक और पाटण दिलाने के वर्णन का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से दो सौ तियालीस मयूख हुए ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

इकानबाब अमीरखाँ, अग्गैं कहि अवरंग ॥
थप्यो दै भुजभार निज, सूबा काबल संग ॥ १ ॥

॥ तोटकम् ॥

इतनैं वह खान अमीर मरयो, अवरंग यहै सुनि सोक परयो ॥
कहि साह उमीर रहयो जितनैं, हम भोग लहे अब दुक्ख घनैं २
लहि काबल साह यहै समयो.उत दिल्लिय राज सु दब्बि लयो
तब साह हिये तस त्रान वसी, धरकाबल आलमकों बखसी ३
इनहू मुलतान जमाय जिला, लियं काबल काम कमान चिला
ऋतु सारद बारद नष्ट भये, सरिता समि पद्धति पंक गये ॥४॥
सर बान तुरंगम इंक१७५६समा, सुत साह चढयो इसमास अमा
अति आरव भेरिनके गरजैं, पविपात कि पब्बय दै.दरजैं॥५॥
खुलि दंड पताकन पंति लसी, रसना जनु कालियकी निकसी
बढि कोसन फोज हरोल चली, बहु जंग उछाह सिपाह बली६
चहुवान रु कूरम संग चलैं, बरवीर पठान गुमान झलैं ॥
मनमैं बल मोद रजू रनमैं, उरझात सदागति सेलनमैं ॥ ७ ॥
धनु पट्टिस खेटक खग्ग कसैं, बपुद्दान हिये तृनमान बसैं ॥
इम हिंदुव मिच्छ चले रनकों, छबि निंदत भद्दवके घनकों ।८।

दोहा ॥ इक्कइति ॥ अग्गैं पहिले समयमैं ॥ १ ॥ इतनें इति ॥ इतनैं इतने अंतरमैं. कहि कहयो ॥२॥ लहिइति॥ त्रान रक्षा. धर धरा. आलम आ-लमशाह (अपनों बडो पुत्र)ताकों. बखसी दई ॥ ३ ॥ इनइति ॥ काम कार्य. सोही कमान धनुष. ताको चिल्ला लोकै पिनच. बारद मेघ. यहां बार शब्द हलंत है ताकों प्राकृतसों सस्वर कियो. सामि सर्मी समित भई. पद्धति मार्ग. तिनके ॥ "सरणी पद्धती पधे"त्यमरः ॥ ४ ॥ सरइति सर५. बान६. तुरग७. स-मा वर्ष. इसमास लोकै आसोज मास. अम अमावास्या. आरव शब्द. पवि व-ज्र. ताके पात परिवेसों, कि किधों. दरजैं दरारैं ॥ ५ ॥ खुलि इति ॥ यहस्पष्ट ॥ ६ ॥ चहुवानेति ॥ गमान गर्व. सदागति पवन ॥ ७ ॥ धनुइति ॥ पट्टिस कटा-

सननंकिय प्रोथन बात बहैं, हननंकिय हींस दिगीस दहैं ॥
रननंकिय कोच करी करकैं, फननंकिय नाग फटा लरकैं ॥९॥
गननंकिय गैंन धरा धमकैं, छननंकिय नेउर हेछमकैं ॥
भननंकिय पक्खर भार भिरैं, खननंकिय नालन अग्गि खिरैं १०
ठननंकिय कुंभिन घंट घसैं, मननंकिय भेरिय हूर हसैं ॥
बजि आरव आरब कूह चली, बहुभाँति अनीक रमैं खुरली ११
भट केक त्रिभागन दाव अरैं, कमनैत बिहंगन बेध करैं ॥
भपटाय तुरंगन बाह बचैं, असि मग्ग उदग्ग कितेबिरचैं ।१२।
भट केक बँदूकन लच्छय लहैं, बहुवार कटार गदा निबहैं ॥
करटीन नवीन घटा बहुधा, बरछीन अनीन अकास सुधा १३
खुरतालन खेह बितान जुरयो, नद तालन पंकिल नीर घुरयो
इलसे इम काबलकी धरपैं, दल आलमके जय संगरपैं ।१४।

॥ षट्पात् ॥

अटक सरित उल्लंघि कटक आलम बढि धायो ॥
काबलपति प्रति पत्र प्रथम लिखवाय पठायो ॥
मरतहिँ खान उमीर छिद्र तुम तकत निहारयो ॥

र. खेटक ढाल. हान त्याग ॥ ८ ॥ सननंकियइति ॥ सननंकिय यह घोरे के श्वासको अनुकरण है ॥ ऐसे आरहु लिखे ते अपनें अपनें शब्दन के अनुकरन जानों. प्रोथ हयनासा. तिनमें. बात पवन. हींस हयशब्द दिगीस दिग्पाल. कोच कवच. तिनकी. फटा फन ॥ ९ ॥ गननंकिय इति ॥ गैंन गगन. है हय तिनके. नाल खुरताल. तिनकरि ॥१०॥ ठननंकियइति॥ आरव वाद्यविशेष. आरव शब्द. ताकी. कूह कोलाहलता ॥ ११ ॥ भटइति ॥ केक कितेक. त्रिभागे भाले. तिनकरि. दाव शस्त्रके वार. तिनसों. असि खड्ग ताके. उदग्ग उदग्र. उछलते हैं अग्रभाग जिनमें ऐसे. यह मार्गको विशेषन है ॥ १२ ॥ भटइति ॥ लच्छया लक्ष्य. करटी हस्ती. तिनकी घटा समुदाय. अकास आकाश. सुधा वृथा. भयो यह शेष ॥ १३ ॥ खुरतालइति ॥ पंकिल पंकवारो. दल कटक. संगर युद्ध. तापैं ॥ १४ ॥ षट्पदी ॥ अटकइति॥ अटक अटक नामक. पहुमी पृथ्वी. ल-

दिल्लिय थानाँ खंडि अमल अप्पन उपचार्यो ॥
अब छोरि पहुमि अवरंगकी करन जोरि लग्गहु चरन ॥
दिल्लीस सेन जानहु दुसह इक इक लक्खन लरन ॥ १५ ॥
काबलपति दल बंचि समय बलवान सोधि मति ॥
रहि अप्पन निज गेह सेन पठयो आलम प्रति ॥
आय सेन अति बेग भिरन तुरकन मन बट्ठे ॥
लटाबंध अभिधान अद्रि घाँटा रुकि ठट्ठे ॥
इत उमगि साह आलम चमू सीमा संगर सीम हुव ॥
तिन्न दिनन भाल दिल्लीसकै बिधि मंड्यो जयपत्त ध्रुव ॥१६॥
इत तोपन जुरि पंति इक्क१तोपन उत रक्खैं ॥
इत परिमित आहार इक्क१बक्कर उत चक्खैं ॥
इत लाखन बहुरंग उत सु अयुत१००००हि इकरंगी ॥
इत बल बुद्धि अपार उत सु बपुजोर अभंगी ॥
दिल्लिय सुहाग इत भार परि उत गर लग्गी गज्जनिय ॥
दुवदलन जुद्ध जालम जुरिग परिग रोर पात कि पविय१७
गिरिनि चूर हयखुरन मग्ग उब्बट धर पद्धर ॥
खुंदि कमठ खुप्परिय उरग फनमाल थरत्थर ॥
दिक्पालन उर संक कंक गिद्धन पर बज्जैं ॥
गहकि चिल्ल गोमायु भार भीरुन गन भज्जैं ॥

रन लरिबेवारे ॥ १५ ॥ काबलइति ॥ दल पत्र. अभिधान नाम. अद्रि पर्वत ताको. सीमा अपनी अमलदारी की. तहां. संगर युद्ध. ताको. भाल ललाट तापैं. पत्त पत्र. ध्रुव ध्रुव निश्चय ॥ १६ ॥ इतइति॥ इत दिल्लीकी सेनाकी तरफ. उत काबल की सेना की तरफ. परिमित अल्प. अयुत १०००० दशहजार. सुहाग सौभाग्य. गजनविय यह पहले वा देशकी राजधानीको नगर. जालम जुलम करिबेवारो. यावनी शब्द. पात परिबेसों. कि किधों. पवि वज्र. ताकै पविको अन्वय पात शब्दसों है ॥ १७ ॥ गिरन इति ॥ उब्बट विना मार्ग की. धर धरा तामैं. पद्धर सीधे. यह मार्ग को विशेषन है. खुंदि मर्दित भई. उरग सर्प. यहां सामान्य नाग नामक कह्यो. परन्तु फनमाल के योग से शेषही ले

दुव दलन वीर बंत्थन बिलगि मनहु मित्र चिरकाल मिलि॥
बिधि च्यारि४हेति उड्डत बिसम्म धारन धार प्रहार झिलि१८
बाजि आयुध रन रीठ फूटि हड्डिन पल छुट्टैं॥
कवच खंड अलि करक्कि तरक्कि अंत्रावलि तुट्टैं॥
सरन सोक सननंकि परत झरि दंड पताकन॥
झुकत बीर घनघाय मनहुँ पामर मद छाकन॥
इम बिरचि मुक्त आयुध कलह अब अमुक्त गहि छोरि हय॥
करि हल्ल दुदल गिरिसिर चढिग जुरि जुरि जंपत जयति जय१९

॥ दोहा ॥

बुंदिय पति आमैर पति, ठट्ठे हय असवार॥
आलम गज आरूहि रह्यो, उत्तरि अंबर चपार॥२०॥
उत इततैं नहिं बढिसके, इत उततैं नहिं कम्म॥
इक्क१पहर वह गिरि रह्यो, बाजागरको द्रम्म॥२१॥

॥ षट्पात्॥

तब दुव२दिस तजि हयन चढिग गिरि सिखर महाभट॥
कहि करीम रब तुरक होत हरि हर हिन्दुन रट॥
बुद्ध नृपतिको बंधु राजसिंहह कुल जायो॥
नाम सु अनुपमसिंह तबहि मधुसुवन चलायो॥
दससहँस१००००सेन निज संग करि नृप पिल्ल्यो गिरि बिकट पर॥
मिलि बत्थ लुत्थि कटि कटि परत मनहुँ बिश्वंधव बंटि घर॥२२॥

नों.थरत्थर यह धूजिबेको अनुकरन है. कंक पक्षी विशेष लोकें करगस. चिल्ह लोकें चील्ह. गोमायु लोकें स्याल. भीरु कातर तिनकें. गन समूह. विधिच्यारि च्यार ४ विधिके. हेति शस्त्र ॥ १८ ॥ बजेति ॥ रीठ घने जोरको लगवो. सोंक शब्द विशेष. कलह युद्ध. दुदल दोऊ दल ॥ १९ ॥ २० ॥ उतइति ॥ द्रम्म द्रम्म. लोके रुपय्या ॥ २१ ॥ षट्पदी ॥ तबेति ॥ करीम ओर रब ए दोऊ यावनीमें परमेश्वर के नाम हैं. बंधुवर्ग लोके भाई कुटुंबी. राजसिंहह राजसिंह. कुमर गोपीनाथ को पुत्र ताके हकार प्राकृतमें सर्व विभक्ति के स्थान में होत है. यहां प

॥ दोहा ॥

बुंदिय दल आमैर दल, पब्बय चढिग रिसाय ॥
कलह भिरे भट काबली, उततैं बढि अतिकाय ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहर इक्क१दिन सेस बहुरि आलम दल पिल्ल्यो ॥
दुदिस छोह छकि लोह बीर बत्थन बल ठिल्ल्यो ॥
उडत फुट्टि नागोद जंत जावक सम लोहित ॥
धपि धावत बिनु मत्थ होत अच्छरिगन मोहित ॥
बाहुल सिरस्क कंकट कटत फटत मुंड भेजन भरकि ॥
खिलखिलत मिलत जुग्गिनि जटिय किलकिलात कालिय करकि
घटिय दोय२दिन रहत जोर दिल्लिय दल जित्यो ॥
कट्यो कटक काबलिय बिसम प्रलयानल बित्यो ॥

छी के अर्थमैं जानिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २३ ॥ षट्पात्॥ पहरइति ॥ बल सेना. नागोद उदर की सिलह "नागोदमुदरत्राण" मितिहैमः। लोहित रुधिर. लोकें लोही. बाहुल हाथकी सिलह. लोके दस्ताना "बाहुत्राणं बाहुलं स्या"द्धैमः ॥ सिरस्क मस्तक की सिलह. लोके टोप. "शिरस्कं शीर्षकं च त" द्धैमः ॥ कंकट कवच "सन्नाहो वर्म कंकटः" इतिहैमः॥ जटीय जटी(शिव) ॥ २४ ॥ घटिय दोय इति ॥ काबलिय काबल संबंधी. यहां काबली प्रयोग होय तो षट्पदी को लच्छन बनैं नहीं क्योंकि षट्पदी के पूर्व में च्यार चरन हैं तिनमें एक एक चरन प्रति पहिले एक एक षट्कलगन. पीछे ४ चतुष्कलगन. पीछे एक द्विकलगन. ऐसे छै ६ गन होत हैं. तिनमें छठी सप्तमी दशमी ग्यारहीं बारहीं चौदवीं पंद्रवीं अठारवीं उन्नीसवीं बाईसवीं तेईसवीं मात्रा मिलकर दीर्घ होय नहीं ऐसे चौबीस २४ मात्रा के मिलकर दीर्घ होय नहीं. ऐसे चोबीस मात्रा के च्यारि४ चरन होय. पीछै सामान्य अठाईस मात्रा के दोय चरन उल्लालय के होय तिनमें गन का नियम नहीं. तथाहि "षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरगं परिमन्तनु ॥ शेषे द्विकलं कलय चतुष्पदमेवं संचिनु॥ छन्दः षट्पदनाम भवति फणिनायकगीतं ॥ रुद्रे ११ विरतिमुपैति नृपतिमुखकरमुपनीतम्॥उल्लालयुगलमन्ते भवेदष्टाविंशतिकलमितं॥शृणु पंचदशे विरतिस्थितं पठिते पंडितजनहितम् ॥" इति नागराजानुगवाणीभूषणे. यह यहां लिखिदीनों सो सर्वत्र जानिये. प्राकृत के प्राचीन कविननैं ऐसे षट्पदी, दोहा-

गोपीनाथ वतंस परयो अनुपम मधुनंदन ॥
माधवहर गुम्मान दोय२हड्डे हनि दुज्जन ॥
इत्यादि बहुत आलम चमू पब्बयपर कटि कटि परिय ॥
करि तत्थ बहुरि अप्पन अमल काबल दल हनि बिजय कियर२५
इम आलम लहि बिजय सीम काबल करि पद्धर ॥
बिष्णुसिंह बुधसिंह सहित रहि तँहँ वहु बच्छर ॥
सुनि सुतको जय सुजस साह अवरँग सुख किन्नौं ॥
नाम बहादुरसाह रीझि आलमकँहँ दिन्नौं ॥
इम जीति बहादुरसाह वह रसि काबल सूबा रह्यो ॥

दिक छंदन के लच्छन किये ते बोध बिनबनायेतैं अशुद्ध जानिये॥ तथाहि "अंगद जिमअङ्कुरयो॥" तथाहि "सुर मरन संगली" ॥तथाहि "सुतसोमेश्वर वडो" इत्यादि पृथ्वीराजरासे में बहुत हैं॥ तथा "बचै न बडी सबीलहू॥" तथा "लोयन बडी बलाय" तथा "गांठैं भरी मिठास" इत्यादि बिहारीसतसई में. ऐसे बहु ग्रंथन में है ॥ अरु षट्पदी दोहा को शुद्ध लच्छन यह है सो जानिये ॥ SSS. S. SI.IS. S. SSS. S. ॥ आदि में षट्कल ताके तेरह १३ भेद ॥ पुनि द्वि२कल ताके दोय २ भेद. पुनि त्रिकल ताके तीन ३ भेद. पुनि त्रि३कल ताके तीन३ भेद. पुनि द्वि २ कल ताके दोय २ भेद. पुनि षट् ६ कल ताके तेरह १३ भेद. पुनि द्वि२कल ताके दोय भेद. ऐसे एक १ चरनके भेद भये. शेष तीन चरन भी याही प्रकार गिनिये ॥ अरु अंत में उल्लालय छंद के द्वै चरन होवैं S. SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. S. ॥ ऐसे षट्पदी छंद को शुद्ध लच्छन जानिये ॥ दोहा यथा ॥ SSS. S. S. I. S. SSS. S. S. I. आदि षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि द्विकल. पुनि लहुनेमिक. पुनि द्विकल. षट्कल. पुनि द्विकल. पुनि गुरु. लहु नेमिक॥ ऐसे दोहा के एक चरन को क्रम॥तदानुकारही द्वितीय २ चरन को जानिये ॥ प्रलयानल प्रलय को सो अनल अग्नि. वा युद्धमें भयो हो सो. गोपीनाथवतंस गोपीनाथ के वंश को वतंस शिरको भूषण विशेष॥ "वतंसः शिरसः स्रजी" तिहैम॥ माधवहर माधववंशी. माधवसिंह कुमर गोपीनाथ को छोटो भाई. ताके वंश को गुमान नामक. अनुपमसिंह अरु गुम्मानसिंह ए द्वै हाडे चहुवानवा लराईमें. दुज्जन शत्रुओंको. हनि मारिकैं परे. इत्यादि इनकों आदि लेकैं अवरहु यह अर्थ ॥२४॥ घटियइति॥ यह स्पष्ट ॥ २५ ॥ इमइति ॥ लहि पाय. बच्छर वत्सर वर्ष. आलम आलम

चहुवान बहुरि कूरम दुहूँ प्रेम परस्पर निब्बह्यो ॥ २६ ॥
खट रु पंच हय इक्क१७५६साल आगम सक बिक्रम ॥
झुकि जुब्बन कछु झलक बुद्ध भूपति बय उत्तम ॥
बुंदियतैं बुलवाय अप्प अंतहपुर लिन्नौं ॥
साहबहादुर संग जंग जित्तन जस किन्नौं ॥
सुलतान सुता सगपन भयो तबतैं नृप आमैरपति ॥
बुधसिंह हिंतु मंडत बिनय गिनतसिद्ध जामात गति॥२७॥

(दोहा)

खरव कबंध सुताहु यह, ब्याह्यो पूरब काल ॥
संतति त्रिक३ताकै भयो, ढुंढाहर धरपाल ॥ २८ ॥
पुब्ब प्रसव पुत्रिय प्रकटि, नाम सु अमरकुमारि ॥
जयसिंह२सु दूजे२प्रसव, तीजे बिजय३बिचारि ॥ २९ ॥
कन्या अरु पट्टप कुमर, अंतर हायन तीन३॥
नृप आयस दोऊ२रहत, पुरआमैर प्रबीन ॥ ३० ॥
विजयसिंह लघुपुत्र अरु, कछु पातरिगन संग ॥
इम काबल आमैरपति, रहत बुद्ध रस रंग ॥ ३१ ॥

शाहकों. ॥ २६ ॥ खटइति ॥ हय७ सस. सत्रहमैं छप्पन १७५६ के सालके.सक विक्रम राज के सकमैं ॥ या ग्रंथमैं सर्वत्र स्थल विक्रमादित्यको ही शक राख्यो है शालिवाहनको शक नहीं राख्यो॥ अप्प अपनैं. अंतहपुर जनाना. सगपन संबंध. हिंतु सों. सिद्धजामाता अबाहि अपनीं पुत्री बुधसिंह कों विवाही नाहिं तथापि जैसे बिवाह किये पीछै गिनैं तैसैं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ खरव इति ॥ संतति संतान ताको. त्रिक ३ त्रय ढुंढाहर अपनों देश ताकी. धर धरा. ताके पाल पालक. वे संतान. अथवा ढुंढाहर धरा को पालक राजा विष्णुसिंह तासों भये यह अर्थ करिये ॥ २८ ॥ पुब्ब प्रसव इति ॥ पुब्ब पहिलैं. प्रसव प्रसूति काल मैं. बिजय विजयसिंह नामक ॥ २९ ॥ कन्याइति ॥ कन्या के अरु पट्टप ताके पाटवी. बडो कुमर जयसिंह ताके. हायन वर्ष. लुप्त षष्ठीक. कन्या सों तीन वर्ष पीछै.जयसिंह भयो यह अर्थ. नृप अपनों पिता. ताके. आयस हुकम सों. दोऊ कन्या और बडो कुमर ॥ ३० ॥ विजयसिंहेति ॥ बुद्ध बुधसिंह सों. रसरंग अनुकूल ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे काबलाधिकारकुमारालमायत्तीभवन १, काबलामीरसेनाबिजयनहत्वालमशाहार्थयवनेन्द्रप्रसादबहादुरशाहनामप्रपणं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितश्चतुश्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः॥ २४४ ॥

(षट्पात्)

प्रीति स्वसुर जामात साल जामिप मंडत अति॥
गृहबिधि दुव अवनीस जात आवत डेरन प्रति॥
कूरम पतिके संग पान आसव नृप लग्गो॥
नच्चन वादन गान मान तानन मन पग्गो॥
जिनदिनन पातसाहन सभा जात न सायुध इक्क१जन ॥
लैजात सबहि केवल फलक विनु बुंदिय हिंदुव जवन १
अग्गैं अकबर बेर राव सुरजन यह रक्खी ॥
कसि कटार इहिंहेतु रहैं बुधसिंह समक्खी ॥
बसु सायक हय इंदु१७५८जेठ ग्रीखम रन रत्तो ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में काबल का सूबा शाहजादे आलम के आधीन होना १ काबल के अमीर की सेना से विजय पाने के कारण आलमशाह को बादशाह की ओर से बहादुरशाह नाम पाने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चवालीस २४४ मयूख हुए ॥

षट्पात् ॥ प्रीतिइति ॥ श्वसुर बिष्णुसिंह. जामात बुधसिंह. साल शालक. लोके साला. (विजयसिंह). जामिप जामि भगिनी ताको पति बुधसिंह. लोके बहिनोई. "जामिस्तु भगिनी स्वसे" तिहैमः ॥ पग्गो आसक्त भयो. सायुध आयुध सहित. फलक ढाल"फलकोस्त्री फलं चर्मत्सरः विनुबुंदिय यहां लच्छन लच्छनासों बुंदी के राजा बिना यह अर्थ करनों॥१॥ अग्गैं. इति ॥ बेर समय. यह एक आयुध जाने की. हेतु कारन. ताकरि. समक्खी समक्ष. यावनी में रूबरू. बसु ८ अष्ट. सायक ५ पंच. हय ७ सप्त. इन्दु १ एक. सत्रह सै अट्ठावन१७५८के साल. जेठ ज्येष्ठमास. ग्रीखम ग्रीष्म ऋ

साह बहादुर धाम आम अवसर नृप पत्तो ॥
जवनिका द्वार लंघे जुगल२तीजे द्वार समीप भुव ॥
पहुँचत नरेस बुधसिंहप्रति जवन इक्क१भटभेर हुव ॥ २॥
वहै जवन अति दर्प्प साहआलमको किंकर ॥
सहसा भिरन प्रसंग बक्यो अप्रिय कुबाद पर ॥
सुनि कुबैन संभरिय कुप्पि मारिय कट्टारिय ॥
कालखंज हिय चक्खि अधप पहुँची अनियारिय ॥
रीढक विदारि निकसी चुवत मनहुँ बिज्जु मानिक बमत॥
कै तिय सहीय परकीयको बातायन कर जावरत ॥ ३ ॥
पट बेणुक प्राकार अयुत१००००हत्थन चतुरायत ॥
सात फेर संपुटित चित्र तोरन बनि चायत ॥
कृत बिछाति कुंकुमिय नीर जलजंत्रन नच्चैं ॥
उडि उसीर आमोद राग गायक बहु रच्चैं ॥

ामैं. धाम स्थान. आम वडो दरीखांनां ताके.अवसर समय.नृप बुधसिंह.पत्तो प्राप्तभयो.जवनिका लोके कनात.तथा सिरायचा.ताके.युगल२द्वै॥२॥वहैइति॥ दर्प अभिमान.सहसा अचानक.कुवाद खोटे वाद मैं.पर तत्पर.संभरिय संभरी बुधसिंह तानैं. राजा माणिक्यराज१३४ चहुवाननैं बहुत वर्ष पहिले संभर नामक नगर जहां लोन की खान है तहां राज्य कियो हो यातैं वाके वंश के चहुवान संभर तथा संभरी तथा संभरीक कहे जाते हैं. कालखंज कलेजा. हिय हृदय. अधप विना धापी (भूखी) यह अर्थ. रीढक पृष्ठिवंश. लोके वांसे को हाड ताको"रीढकः पृष्ठिवंशः स्या"दितिहैमः॥ बिज्जु बिजुरी. बमत वमन करते उगलते यह अर्थ.कै अथवा.तिय स्त्री.सुहीय सुहृदया.-चतुर ऐसी. परकीय परकीया नायिका को. बातायन गवाक्ष. लोके भरोखा तासैं. कर हाथ. जाव जावक. ताकरिकैं रत्त रक्त. लोके लाल. जैसे रजस्वला परकीया अपनें जारकों अपनी दशा दिखायकैं संकेतसैं वाको जावनों बरजिबेकों चुवते जावकको हाथ वातायनमैं निकासैं तैसैं यह अर्थ. इहां चेष्टा जन्य ध्वनि है ॥३॥ पटबेणुइति॥ वेणु वंश. लोके वांस. स्वार्थेकः॥ तिनमय. प्राकार कोट. बाहिर मैंवासमें राजनके कनात को ही कोट रहतो हो सो कोटहू कैसो. अयुतहत्थ दशहजार हाथ को. चतुरायत चोतरफ विस्तारित. तब एक दिशा को कोट२॥अढाई ह-

मोहत गुलाब मल्लिय महकि इंद्र बिभव सोहत अजब ॥
दिल्लीस सुवन जहँ थित मुदित तहँ नृप यह डारिय गजब॥४॥
जहँ जमीन जोजनन सेन संकुलि नहिं सुज्झत ॥
तीन सहँस३०००तुक्खार परिधिचोकिय बढि बुज्झत ॥
सहँस१०००तोप सावात जाल चहुँदिस जंजीरित ॥
झंडन केतु झपेट पौंन क्रंदत पथ पीरित ॥
असवार अहोनिस पंचसत५००प्रतितोरन जामिक राहँग ॥
बुंदिय नरेस बुधसिंहकी तहँ प्रकुप्पि पट्टिस बहिग ॥ ५॥
चूक चूक चहुँकोद कूक कढ्ढत कटार परि ॥
बहत भीरु चलबिचल गिरत तुरकान गरब गरि ॥
मारि जवन इम राव चुवत पट्टिस ढकि ठड्ढो ॥
साहबहादुर संक गंजि चाहत रन गड्ढो ॥

ज़ार हाथ को भयो सो एक कोस के षोड़शांश १६ सहित एक कोस के चतुर्थांश ४ प्रमान भयो. यथा—"यवोदरैरंगुलमष्टसंख्यैर्हस्तोऽङ्गुलैः षड्गुणितैश्चतुर्भिः॥ हस्तैश्चतुर्भिर्भवतीह दंडः क्रोशः सहस्रद्वितयेन तेषाम् ॥" इति भास्कराचार्यः ॥ सोहू कैसो सात फेर संपुटित ऐसे प्राकारके सात गिरद लगे तहां यह कह्यो ता प्रकारको कोट बाहर ही बाहरको जानिये. ताके गिरदके माहि उचित अंतराय सों छै ६ प्राकार और जानिये ऐसें सात भये तब सातही७द्वार जानिये. तोरन बाहिर को द्वार ॥ "बहिर्द्वारं तु तोरण" मितिहैमः॥ चायन चाय(मोद). ताके बढायबेवारे. कुंकुमिय कुंकुम के रंगको.उसीर लोकें खस ताके. "उशीरं वीरणीमूल" मितिहैमः ॥ आमोद अति मनोहर गंध. "आमोदः सोऽतिनिर्हारी" त्यमरः॥ मल्लिय मल्ली. लोकें मोगरा. अजब अद्भुत ॥ ४ ॥ जहँइति ॥ जमीन पृथ्वी. यावनीशब्द. तुक्खार घोरे. यहां उदात्त लच्छनासूं घोरेन के असवार जानिये.परिधिचोकी सेना की परिधि की चोकी के पहरायत. लोकें छबीनां. सावात बारूद ताके जालवारी. जंजीरित खींचिबेको जंजीरन सहित. झंडन झंडे(ध्वजा). तिनकी केत पताका. तिनकी झपेटसों. पोंन पवन. क्रंदत कूककरत. अहोनिस दिनरात्रि.प्रतितोरन तोरन तोरन प्रति. जामिक पहरायत पट्टिस कटारी ॥ ५ ॥
चूकचूकइति ॥ बहत कटारके बहतैं. भीरु कातर. गिरत या जवन के गिरतें.

सुत साह हिंतु भाखी सबन आनि अरज उप्पर अरज ॥
कुणपहि सदोस आलम कह्यो गुनह आप्पि हेरिय गरज ६

(दोहा)

कहि आलम सागस हन्यौं, नहिं बुंदियपति दोस ॥
खलक इलाही कुबच सुनि, को नहि रंगत रोस ॥ ७ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

औरङ्गिरेवम्प्रविचार्य्य कृत्यं बुन्दीन्द्रमाहूय समक्षमाशु ॥
आश्वास्य नीचाऽनुजतो जिगीषुर्द्दिल्लीभरम्भूपभुजे बबन्ध॥८॥

(शालिनी)

भोजाचारं रत्नसेवान्तथैव दिल्लीशत्रं शत्रुशल्यञ्च भावम् ॥

संक भय ताकों. गंजि अनादर करिकैं. सुतसाहहिंतु साह बादशाह औरंगजेब ताके सुत आलमशाहसों. कुणप मृतक. "कुणपःशवमस्त्रिया"मित्यमरः॥ सदोस दोष सहित. गुनाह अपराध. यावनी शब्द ॥ ६ ॥ दोहा॥ कहीति॥ सागस आगस अपराध ता सहित. खलक संसार.इलाही परमेश्वर,यावनी ताकोहू. कुबच खोटे वचन. को कौन ॥७॥ गीर्वाणभाषा ॥ इद्रवज्रा ॥ औरंगि औरंग पुत्रः"अत इञ्" इतीञ्॥ जित्वा इत्यर्थः। कृत्यम् निरपराधत्वात्प्रतिष्ठाकरणरूपं समक्षं प्रत्यक्षं. आशु शीघ्रं. आश्वास्य विश्वास्य, नीचाऽनुजतः नीचो यः पितुः प्रेष्टत्वाद्राज्यलिप्सुः स्वीयोऽनुजः आजमसाहनामातं द्वितीयार्थे तसि॥ भरं भारं बुधसिंहभुजे बबंध बंधितवान् ॥ ८ ॥ शालिनी ॥ भोजाचारमिति॥ भोजः अकबरसाहसमये योऽभूत्स सुर्जनपुत्रस्तस्याचरणं सुरतिपुराधिराजमारणांतःकरणेनाकबरशाहसेवनम् । रत्नसेवा तद्भोजपुत्रो यो रत्नसिंहःतत्कृताकबरशाहपुत्रजहांगीरशाहसेवनम्। दिल्लीशत्रं दिल्लीशो जहांगीरशाहस्तत्त्रा

॥ भाषानुवाद ॥

इन्द्रवज्रा ॥ नीच छोटे भाई को जीतने की इच्छावाले औरंगजेब के पुत्र (बहादुरशाह) ने इसप्रकार कार्य का विचार कर बुन्दी के इन्द्र (बुधसिंह) को शीघ्र रूबरू बुलाकर विश्वास देकर दिल्ली का भार राजा के भुजों में बांधा ॥ ८ ॥ शालिनी॥ राव भोज का आचार, इसीप्रकार रत्नसिंह की सेवा, दिल्लीश की रक्षा करनेवाले शत्रुशाल और भावसिंह, कृष्णसिंह को उज्जैन में छलघात से मारने का स्मरण करके औरंगजेब के पुत्र(बहादुरशाह)ने शुद्धभाव धारण किया

कृष्णं छद्मनाऽवन्तिकाप्राप्तमृत्युं स्मृत्वौरङ्गिः शुद्धभावं दधार९

(प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

यह उदंत दिसदिस उडिग, जस बुंदियपति जग्गि ॥
इम काबल सूबा अवनि, लगन स्वामि भट लग्गि ॥ १०॥
कूरम पतिको लघु कुमर, बिजयसिंह रुचि रंग ॥
जावत अवसर आमके, स्वजनक जामिप संग ॥ ११ ॥
बालबेस कौतुक बिरचि, लगि छोनिय कछु लाह ॥
प्रथक पाय हिंडोनिपुर, सेवत आलमसाह ॥ १२ ॥
कूरमपति तत्थहि मरिय, लघुसुत रहिय समीप ॥
पट्ट लहिय जयसिंह नृप, पुर आमेर प्रदीप ॥

(हरिगीतम्)

लहि पट्ट नृप जयसिंह यौं बय अब्द द्वादस१२मैं तहाँ ॥
भट मंत्रि बर्ग बुलायकैं कहि कोन मंत्र अबैं यहाँ ॥
करिकैं समस्तन मंत्र भाखिय काल देस प्रमानिये ॥
अवरंग साह समीप सेवनमैं सबैं सुख जानिये ॥ १४ ॥
यह थप्पिकैं जयसिंह लै दल देस दक्खिनकौं गयो ॥
दरगाह साह सलाम कै मिल थान अप्पनपै ठयो ॥

हंज्यहांनामा तद्गणकमेतादृशं रत्नसिंहपौत्रं शत्रुशल्यनमानं च पुनः भावम्
औरंगशाहनिदेशेन स्वजुवानगरादियुद्धविजेतारं शत्रुशल्यपुत्रं भावसिंहनामा
नम्। कृष्णं कृष्णसिंहं भावसिंहभ्रातृभीमसिंहपुत्रं । आत्मनैवालमशाहेन छद्म-
ना कपटेन अवन्तिकापूर्यां प्राप्तो मृत्युर्येन तं तादृशं शुद्धभावं चित्तशुद्धिं कपट-
राहित्यामिति यावत् । दधार धारयतिस्म ॥ ९ ॥ प्रा०कृ०प्रा०सि०॥ दोहा॥ यह
इति ॥ उदंत वृत्तांत. लगन प्रीति. स्वामी बहादुरशाह के. अरु भट उमराव.
बुधसिंह ताके ॥१० ॥ कूरमेति ॥ आम बडी सभा ताको. स्व अपनें. जनक वि-
ष्णुसिंह. जामिप बुधसिंह. तिनके ॥ ११ ॥ बालबेसेति ॥ बेस अवस्था तासें
पृथक् जुदो. हिंडोनिपुर हिंडोनि नाम नगर ॥ १२ ॥ कूरमपतिरिति ॥ तत्थ त-
हाँ. काबल के सूबा में. प्रदीप दीपक ॥ १३ ॥ हरिगीत ॥ लहिइति ॥ अब्द वर्ष-

बुलवाय साह समीप श्रो जुवरहत्थ अंजलि संग्रह्यो ॥
करिहै कहा अब जेर तू इम व्याज कोपित ह्वै कह्यो१५
जयसिंह यह सुनि उच्चरयो मम भाग आज उदोतहैं ॥
कर इक्क थंभत साह जो नर सर्ब उप्पर होतहैं॥
अवरंग यह सुनि मोद मन्नि रु छोरि आयस अप्पयो ॥
नृप मानके कुल मानसो जयसिंह भूपतिहू भयो ॥१६॥
बय बाल अरु बच बृद्ध तो नृप मानसौंहु सिवायहैं ॥
यह सिवाइजयसिंह नृप अब नाम एह कहायहैं ॥
यह बत्त अंक रु बान सप्त रु इक्क१७५९संबतमैं भई ॥
पहुमी न इक्कहिं रत्त अब कछु होत जात नई नई॥ १७ ॥

(दोहा)

हिंदुनकी पहुमी प्रिया, भोगी तुरकन आय ॥
ज्यहाँगीरं जारहि मरत, रतिरस अब न अघाय ॥ १८ ॥
कछु अवरंगहु तरुनपन, भोगी सकति निहारि ॥
अब यह जरठ जईफ बो, नित्यनई यह नारि ॥ १९ ॥

(पट्पात्)

सर ससि हय इक१७१५साल भ्रात दारा हनि जिठ्ठो ॥

यहइति॥ यद्यपि यह मंत्र करिकैं. थानअप्पनपैं अपनें खरो रहिबे के स्थान पैं. ठयो रह्यो. साह औरंगजेबनैं. श्रो अरु. जुवहत्थअंजालि दोऊ हाथनतैं अंजालि करि राख्यो सौं. व्याजकोपित झूठैं ही कोप करिकैं ॥ १५ ॥ जयसिंह इति ॥ या छंद के दूजे चरण के वाच्यार्थ सों मेरे दोऊ हाथ गहे हैं, यातैं मैं सबनतैं विशेष बढिहों यह व्यंग्यार्थ पायो. आयेस हुकम. अप्पयो दीनों ॥ १६ ॥ बय बालइति ॥ बय अवस्था. बच वचन तामैं. बृद्ध बडो. अंक नव ९. बान पंच ५. सत्रह से गुनसाठि १७५९ के संवत् मैं. इक्कहि एकसौं. रत्त आसक्त ॥ १७ ॥ दोहा ॥ हिंदुनकीइति ॥ ज्यहांगीरजारहि जहांगीरशाह अकब्बरशाहको पुत्र राजनीतिमैं कुशल हो ताके ॥ १८ ॥ कछुइति॥ जरठ बृद्ध. जईफ बृद्ध. बा वनी. बृद्धपदको प्रयोग द्वै बेर कियो यातैं अतिबृद्ध जानिये ॥ १९ ॥ पट्पात्॥ सरइति ॥ सर पंच५. ससि एक १. हय सप्त ७. सत्रह से पंद्रहके साल१७१५

जित्ति धोलपुर समर तखत अवरंग बइट्ठो ॥
बसु रु वेद४८मित बरस पातसाही निरवाही ॥
गुन खट हय ससि१७६३ साल आय अब समय इलाही ॥
इकदिन बुलाय सुत आजमहिं करि रहस्य अवरंग कहि ॥
जंपत निमाज समासिर अलग करहु पुल तरवारि गहि२०

॥ दोहा ॥

भुग्गि जरा बय साह अब, लयो मृत्यु निज जोय ॥
जान्यों दिल रबमें रहैं, जो निमाज बध होय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि आजम यह सकुचि बत्त मन सोधि विचारिय ॥
इहिं उद्यम संधान होत संदेह जियन हिय ॥
कहत साह कछु ओर करत कछु ओर दुरासय ॥
यह दृढ करि उच्चरिय होय मोसों न यह नय ॥
जो चहत अप्प मम सुख जनक तो यह हुकम अलीक करि॥
दिल्लिय समेत अकबरनगर सूबा अप्पहु महर धरि ॥२२॥

॥ दोहा ॥

सुनत साह अवरंग इम, प्रिय सुत आजम बैन ॥
अकबरपुर दिल्लिय अरपि, सूबा मुनसुब सैन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरस. यावनी. दारा दाराशाह नामक. जिट्ठा ज्येष्ठ. (बडो). बसु अष्ट८. अरु वेद च्यार ४. ऐसें ४८ अठतालीस तिनके. मित प्रमानवारे. गुन तीन३. खट ६ छै. हय ७ सप्त. ससि १ एक. ऐसें सत्रह सै त्रेसठि १७६३ के साल वर्ष. यावनी. तासैं. रहस्य एकांत मंत्र. जंपत पढत. निमाज यावनी धर्मपुस्तक. अलग भिन्न ॥ २०. ॥ दोहा ॥ भुग्गिइति ॥ भुग्गि भोगिकैं. जोय देखि. दिल मन. यावनी. रब परमेश्वर. यावनी. मैं तामैं ॥२१॥ षट्पात् ॥ सुनिइति॥ सँधान युक्त करिबो. तासों. दुरासय दुर्गम है आशय हृदय विचार जाको, ऐसो. नय न्याय. अलीक मिथ्या. अप्पहु देहु. महर कृपा. यावनी॥२२॥ दोहा॥ सुनत इति ॥ अरपि दये. सैन सेना ॥ २३ ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ संगर युद्ध

किय आजम यह मंत्र साह मरिहै अब जीरन ॥
मैं दिल्लियपुर जाय बैठि गद्दिय प्रपंचपन ॥
साहबहादुर सुत अजीम संजुत हनि संगर ॥
कामबखस पुनि अनुज मारि इकछत्र तपों धर ॥
यह सोचि सीख दिल्लिय लई आजम उचित अनीक सजि
चढि चलिय चाहि गद्दिय गरज तब अवरंगाबाद तजि २४
साहबहादुर सुत अजीम अभिधान नेक नर ॥
पूरब पुर पटनाँ सु रहत हुकम अवरंग बर ॥
कछुक काज तिन दिनन साह बुल्ल्यो अजीम वह ॥
बंचि पितामह पत्र चल्यो दक्खिन दरकुंचह ॥
खट६मिजल रक्खि अकबर नगर मैंनपुरी सु अजीम रहि ॥
उत समय पाय आजम चल्यो दिल्लिय आयस साह लहि२५
प्रथम साहकै पुत्त भयो सुरतान मुहुम्मद१ ॥
कारागृह संकटिय मरयो दुखपाय मितंबद ॥
दूजो आलमसाह२ सोहु कारागृह डारयो ॥
जब आजम जच्चयो सु तबहि द्रुत साह निकारयो ॥
आजम३यहै सु तीजो तनय ताहि साह हित करि चहै ॥
सुत कामबखस४चोथो सु पै साह हुकम अति निब्बहै २६
तुरकनकैं नहिं बरन अवधि चंडाल इक्क लव ॥

तामैं. अनुज छोटो भाई ताकों. दिल्लिय दिल्लीकी. अनीक सेना. गरज सुख इच्छा. देशीप्राकृत ॥ २४ ॥ साहबहादुरइति॥ अजीमअभिधान अजीम नामक. नेक धार्मिष्ठ. यावनी. पूरबपुरपटना पूर्व दिशाको सूबा पटना. या पुर को नाम. तहां. सु सो(अजीम). हुकम आज्ञा. यावनी. बुल्लयो बुलायो. दरकुंच नित्यही कूँच करिकैं. हकार.यहां तृतीयाके बहुबचनमैं है. अकबरनगर आगरा. मैनपुरी चहुवाननको नगर विशेष॥ २५ ॥ प्रथमेति॥ साहकै अवरंगजेबकै. संकटिय संकटवान होयकैं. मितंबद थोरो बोलिबेवारो. कारागृह बंदीखाने. जच्चो मांग्यो. सु सो (आलमशाह). तनय पुत्र ॥ २६ ॥ तुरकनकैइति ॥ बरन ब्राह्मक्षत्रियादि अवधि चंडाल पर्यंत. लव अंश. गणिका वेश्या. ताके. पिंड उदर

काम बखस यह कुमर भयो गणिका पिचंड भव ॥
याहि साह करि रोक्क धरा दक्खिन सूबा धुर ॥
भागनगर अप्पो रु बहुरि दिन्नौं बीजापुर ॥
पंचमौं पुत्र अकबर प्रकटि अति जुब्बन उद्धत वह्यो ॥
परघरन तक्कि मंडत अनय कुप्पि साह बध्यहि कह्यो २७

॥ दोहा ॥

अकबर मारक जनक सुनि, भजि मारवधर आय॥
रट्ठोरन ढाकि रक्खयउ, पुनि भय गयउ पलाय ॥२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आलमसाहप्रकोष्ठदुर्वचनभाषियवनबुधसिंहहनन १ आमेराधीशविष्णुसिंहकनिष्ठसूनुविजयसिंहहिण्डोनपुरप्रापण २ आमेराधीशविष्णुसिंहस्वर्गवासपट्टपपुत्रजयसिंहपट्टासादनसमसवाईपदाधिगम ३ पितृवधास्वीकारिकुमाराजमार्थयवनेन्द्रौरंगजेबाद्दिल्ल्यकबरपुराधिकारद्वयवितरण ४ औरंगजेबसूनुपंचककनिष्ठाकबरस्य तातविरोधितया पलायनवर्णनं सप्तमो मयूखः ॥७॥ आदितः पञ्चचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४५ ॥

मैं " पिचंडो जठरोदरे " इतिहैम: ॥ भव भयो. ऐसो याही कामबखसकों. साह अवरंगजेबनें. धुर मुख्य. अप्पो दयो. उद्धत निरंकुश. बध्य मारिबेयोग्य. ॥ दोहा ॥अकबरइति ॥ मारवधर मारवारि धरामें. ढकि छिपाय ॥२८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में आलमशाह की ड्योढी पर बुधसिंह का दुर्वचन कहनेवाले एक यवन को मारना १ आमेर के राजा विष्णुसिंह के छोटे पुत्र विजयसिंह को हिंडोनपुर मिलना २ आमेर के राजा विष्णुसिंह का देहांत होने पर पाटवी पुत्र जयसिंह का गद्दी बैठकर सवाई पद पाना ३ पिता को मारने का अस्वीकार करनेवाले शाहजादे आजम को बादशाह औरंगजेब का दिल्ली और आगरे के दो सूबों का देना ४ औरंगजेब के पांच पुत्रों में लघु पुत्र अकबर का पिता के विरुद्ध होकर भाग जाने के वर्णन का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से दो सौ पैंतालीस मयूख हुए ॥ २४५ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

अनुष्टप्युग्मविपुला ॥

सिंहावलोकिनी गाथा प्रबन्धेषुप्रबध्यते ॥
योजनीयोऽन्वयो वाक्यमहावाक्यावसानयोः ॥ १ ॥

द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ तथा कथयामि न कोप्यऽभूज्जगति शाहनिदेशपराङ्मुख ॥
स्वशरणं सविचार्य्य यथा मनागकबरो गतवानपि धन्वनि ॥२॥

प्रायःप्राकृती मिश्रितभाषा ॥पज्झटिका

अग्गैं नरेस जसवंत नाम, उज्जैन जंग तजि भजिग धाम ॥
हुव जनक रुक्कि अवरंग साह, तब जाय मंद संग्यो गुनाह॥ ३ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टप्युग्मविपुला ॥ सिंहावलोकनीति ॥ सिंहावलोकनी भूत्वा पुनरवशिष्टवृत्तान्त वक्तुं प्रवर्तनी गाथा वाग्विशेषः। वाक्यं एकतिङ् महावाक्यं वाक्य समूहः। तयोरवसानयोरतयो रित्यत्रे तरेतरयोगो द्वन्द्वः। द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं संबध्यते इति संबंधः ॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ इति ॥ अथ शब्दो वक्ष्यमाणवृत्तान्तप्रारंभ द्योतकः।तथा तेन प्रकारेण कथयामि वर्णयामि। तथा कथं यथा. शाहनिदेशपराङ्मुखः शाह औरंगजेब स्तदाज्ञाविमुखः कोपि नाभूत्. कश्चिदपि नासीत्। तथा च मनाक ईषत्. स्वशरणं विचार्य. ज्ञात्वा स शाहस्य पंचमपुत्रोऽकबरनामापि धन्वनि मरुदेशे "समानौ मरुधन्वानौ" वित्यमरः॥ गतवान् जगाम। धन्वनीत्यधिकरण विवक्षायां सप्तमी। कथिधातोरेतद्वाक्यार्थकर्मकत्वं ज्ञेयम् ॥ २ ॥ पज्झटिका ॥ अग्गैइति ॥ अग्गै पहिले. सत्रह से चउदह १७१४ के सालमैं. जनक पिता ताकों. रुक्कि रोक (कैद करिकैं). शाहको अन्वय दूसरों है. गुनाह अपराध. या

भाषानुवाद—ग्रन्थों में सिंहावलोकनी (सिंह जिस प्रकार पीछे देखता हुआ चलता है तिस प्रकार) कथा बांधी जाती है सो महावाक्य (विस्तार पूर्वक वर्णन की हुई कथा) के अंत में वाक्य (आगे संक्षेप से वर्णन कियेजाने वाली कथा) का अन्वय लगाना चाहिये अर्थात् छोटी कथा को उसकी बड़ी कथा से मिलकर पुनरुक्ति नहीं जानना ॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अब आगे उसी प्रकार से कहता हूं कि इस पृथ्वी में बादशाह औरंगजेब की आज्ञा के विरुद्ध कोई नहीं हुआ, जिससे किंचित् अपने शरन योग्य विचार कर अकबर मारवाड़ में गया ॥ २ ॥

खजुवापुर संगर साह कीन, सूजा भजाय निज आर्त दीन ॥
तत्थहु कबंध तजि स्वामि प्रीति, अवरंग हमम लुट्टिय अनीति ४
धन कोस जनाँनन लूट ठानि, मरुधर भाजि आयउ तास मानि
तब साह मरुस्थल लियउतारि, जसवंत निमज्जिग बिपति बारि
बहु अब्द मरुस्थल बिनु बिहाय, पुनि दुखिन आय लगि साहपाय
सकुटुंब रचि दिल्ली निवास, बहुकाल खंचि सेवा बिसास ॥ ६ ॥
दै साह बहुरि धर धन्व राज. काबलधर पठयो तान काज ॥
नहि साहु सची सूबा सम्हारि, बहुकाल रह्यो उद्यम बिसारि॥७॥
दिस बिदिस परन दब्बी जमीन, सुनि अलस कोप पुनि साह कीन
रनवास हुतो दिल्ली सु साह, अटक्यो जरि फोजन इहिं गुनाह॥८॥
इक रानी धारत गर्भ आस, हुव अजितसिंह जनि जठर जास॥
दल साह हवेली फिरि दुरंत, अंतहपुर घेर्यो न दुख अंत ॥ ९ ॥
रानिन पहँ पठयो हुकम साह, सुत जन्म सुन्यो नृपकै उछाह ॥
सो देहु सौंपे जा मुल्क चाह, लेहैं बिसासि अब वाहिं साह१०
जसवंत जोधपुर जोग्य नाँहि, सुत देहु भयो जो अत्र आँहि ॥
रनवास सबहि सुनि यह निदेस, उमराव बुलाये निज असेस ११
आहूत सबहि रट्ठार आय, करि मंत्र तत्थ रानिन कहाय ॥

वर्ना ॥ ३ ॥ खजुवापुरइति॥ खजुवा नामक नगर को युद्ध. साह ओरंगजेवनैं. सूजा शुजाशाह नामक. निज अपनों. तत्थ तहां. कबंध रट्ठोर राजा जसवंत सिंहनैं. स्वामि जो ओरंगजेब तासों. हमम वैभव. देशीप्राकृत ॥ ४ ॥ धनकोसइति॥ कोस भंडार. जनानन जनानेनको. निमऽजग बूड्यो. बारि जल तामैं. बहुअब्दइति ॥ अब्द वर्ष. बिहाय बिताय. खंचि काढि ॥ ६ ॥ दैसाहइति ॥ धन्व मरुदेश. तान रचा. सची बनी ॥ ७ ॥ दिसदिसइति ॥ परन शत्रुन. अलस आलस्य. या जसवंतसिंहकों यह शेष. हुतो हो. सु सो. जरिफोजन जरिके गागसों फोजन के जंजीर रूप; वा कटक रूप जानिये ॥ ८ ॥ इकरानीइति जनि जन्म "जनिरुत्पत्तिरुद्भवः" इत्यमरः ॥ जठर उदर जासों. जाके रानिनइति ॥ सो पुत्र. चाह चाहहै ता ॥ १० ॥ जसवंतइति ॥ अत्र यहां. आँहिं हैं. निदेश हुकम. असेस सब ॥ ११ ॥ आहूतइति ॥ आहूत बुलाये. तत्व

पठये नृप काबल दै स्वधाम, सोपै न सुधारत साह काम ॥१२॥
सुत जो भयो सु नहि गुप्त अत्थ, अब ताहि साह मंगत समत्थ ॥
भाखत इहिं देहों धन्वराज, अरु कोप लखत दरसन अकाज १३
तत उचित नांहि तुरकन बिसास, छल होन लगे बहु आसपास॥
अब काढ़ि कुमर जिहिं तिहिं उपाय, कछुवृत्ति जिआवहु धन्वजाय
प्रछन्न जन्यो अप्पन अपत्य, तसमात कहहु भो यह असत्य ॥
तँहँ भट्टिय भट गोइंददास, कापालिक बनि लिय कुमर पास।१५।
भट्टिय रघुनाथ सु पति लवेर, मजि दुर्गदास रट्ठोर फेर॥
ए बान सहाय हुव२भट अमान,कुमरहि निकासि गय इष्ट थान१६
किय जंग अवर सुभटन अछेह, लरि हड्डो रानिय तजिय देह ॥
इम भावसिंह भगिनी सुभाय, निरबाहि पतिव्रत स्वर्ग पाय ॥१७॥
जसवंत कुमर कसि कंठदेस, लहिं काल कढे वे बदलि बेस ॥
तिन छत्र साहसों धन्व जाय, इक बिप्रगेह रक्ख्यो छिपाय ॥१८॥
मरुधर रह्यो न रट्ठोर राज, द्विजगेह कुमर बसि दुख दराज ॥
देल्लीसों साहन हुकम पाय, मरुधर रनवासहु अवर आय॥१९॥
तहिं मिलत मात सुत बिपति बास, तप उग्र सहत अवरंग त्रास॥
इहिं अंतर नृप जसवंत अंत, बसि काल भयो काबल बसंत ।२०।
जसवंत सुवन तबहू बुलाय, इन कुपित जान रक्ख्यो दुराय ॥
नृप अजितसिंह जसवंत जाम, प्रछन्न रहे इम बिप्र धाम ॥२१॥
गजसिंह जनंन यँहँ नास होत, भट दुर्गदास रक्ख्यो उदोत ॥

सिद्धांत. स्वधाम जोधपुर ॥ १२ ॥ सुतजोइति ॥ अत्थ यहां. लखत देखनैं ॥१३॥ ततउचितेति.॥ तत ताकरनसों. कछुवृत्ति कोऊ जीविकासों. धन्व मरुदेश ॥ १४ ॥ प्रछन्नइति ॥ अपत्य पुत्र. भट्टिय भाटी जातिको चत्रिय. कापालिक व्यालग्राहरू ॥ १५ ॥ भट्टियइति ॥ लवेर लवेरा नामक ग्रामको. इष्ट प्रिय थान स्थान:॥ १६ ॥ कियइति॥स्पष्ट ॥ १७ ॥ जसवंतइति.॥ वे दोऊ भार्टी और रट्ठोर तीनों ही ॥ १८ ॥ मरुधरइति ॥ दराज बडो. साहन बादशाहको. अवर हाडी रानी विना ॥ १९ ॥ तहीति ॥ बसिकाल॥ कालवसि ॥ २० ॥ जसवंतइति ॥ जाम जन्मवारी ॥ २१ ॥ गजसिंहइति ॥ जनंन वंश. हुत ३ तीन. सत्र-

नव गुन रु सप्त इक १७३९अब्द मान, जसवंत भूप किय देह हान ॥
तिन दिनन यहै अकबर कुमार, मरुदेस गयो भय साह भार ॥
रट्ठोर नहिंन ऐसे समत्थ, अवरंग खूनि रक्खैं सु अत्थ ॥ २३ ॥
तब तिनहु दयो अकबर निकारि, ईरान गयो वह बल बिचारि ॥
अकबर सु मरयोएरु इस्पहान, सुतज्येष्ठ मरयो प्रथमहि सयान ॥
अवरंग पुत्र अब जियत तीन३, धर काबल पट्टपके अधीन ॥
हुव कामबखस दक्खिन नरेस, पुर दिल्ली आजम लिन्न पेस ॥

॥ दोहा ॥

साहबहादुरके प्रथम, मोजदीन हुव पुत्त ॥
अनय ऐस आलस निलय, जवनी जठर प्रसुत्त ॥ २६ ॥
रूप नगर रट्ठोर नृप, तनया ताके गेह ॥
साह बहादुरकों प्रथम, व्याही अवनि सनेह ॥ २७ ॥
ताकै उदर अजीम भो, दूजो सुवन सिपाह ॥
पूरबधर पुर पट्टनां सूबा जिहिं दिय साह ॥ २८ ॥
सुत रफील आदिक कदर, यह तृतीय अभिधान ॥
अखतर आदि बुलंद पुनि, यहै चतुर्थ अमान ॥ २९ ॥
आलमके च्यारि४ सुत, तिनमैं चतुर अजीम ॥
मोजदीन सबसों बडो, दिल्ली तरुको दीम ॥ ३० ॥
तीन पुत्र निज जनक तट, पुर पटनां सु अजीम ॥
सो आवन हुन साह ढिग, कछु बिसेस नय नीम ॥ ३१ ॥

इ से गुनतालास १७३९ के. मान प्रमान के. अब्द वर्ष से. हान त्याग ॥ २२ ॥ तिनदिनेनि ॥ खूनि खूनी. यावनी. अत्थ यहां. (था समयमैं) ॥ २३ ॥ तबति नइति ॥ तिन रट्ठोरन. अग्र बडो. सुरतान मुहम्मद नामक ॥ २४ ॥ २५ ॥ दोहा ॥ साहेति ॥ जवनी जवन जातिकी स्त्री. ताके. जठर उदरसों ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ताकैइति ॥ अजीम अजीमशाह नामक. शाह पितामह ओरंगजेबनैं ॥ २८ ॥ सुतइति ॥ रफीलके आदि कदर यह अर्थ. अखतरके आदि बिलंद अखतरबिलंद नामक ॥ २९ ॥ आलमके इति ॥ दीम लोकें उदेई. (दीवलि) ॥ ३० ॥ तीनपुत्रइति ॥ निज अपनों. जनक पिता आलमशाह ताके. तट काब

आजमकै इक सुत भयो, बखस अंत दीदार ॥
जो हाजरि निज जनक जुत, साह निकट गिनि सार ।३२।
आजम पुव्व लिखी सु करि, दिल्लिय लोभ चलाय ॥
पुर अवरंगाबादतैं, पंचकोस परि आय ॥ ३३ ॥
इहिं अंतर अब देखिये, करत सही नवरंग ॥
सक गुन खट६३फागुन असित, तजिग देह अवरंग ॥३४॥

॥ षट्पात् ॥

सत्रुसल्ल नृप समय साह अवरंग उपज्जिय ॥
हनि अग्रज पितु तरजि छिन्निलिन्नी निज गहिय॥
मरहट्ठन सुनि फैल गयो दक्खिनधर दब्बन॥
बहुत बरस रहि तत्थ रच्यो निज नामक पत्तन ॥
गुन खट तुरंग ससि१७६३साल बनि विक्रम सक फग्गुन असित॥
अवरंग मरिग दक्खिन अवनि अब मरहट्ठन दिन उदित।३५।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे तातत्रासमरुगतौरंगजेबपञ्चमपुत्राकबरप्रसंगयोधपुरभूपयशवन्तसिंहपूर्वोदन्तस्मारणं १, बहादुरशाहपुत्रचतुष्कगणनानन्तरौरंगजेबनिधनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

लके सूबा. नाम मूल ताको ॥ ३१ ॥ आजमकैइति ॥ बखसअंतदीदार दीदार बखस नामक ॥ ३२ ॥ आजमेति ॥ पुव्व पहिलैं ॥ ३३ ॥ इहिंइति ॥ गुन ३तीन. खट ६ छै. ताके ६३ त्रेसठि भये तहां सत्रह अनुवृत्तिसों सत्रह से त्रेसठि १७६३ के साल यह अर्थ करिये. असित कृष्णपक्ष ॥ ३४ ॥ षट्पात् ॥ सत्रुसल्लेति॥ अग्रज बडे भाई. पितु पिता ताकों. तरजि तरजना करिकैं. लोके दपटायकैं. पत्तन नगर. गुन ३ तीन. खट ६ छै. तुरंग ७ सप्त. ससि १ एक. यातैं वही सत्रहसे त्रेसठि १७६३ को साल आयो. तामैं ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में औरंगजेब के पांचवें पुत्र अकबर का पिता के त्रास से मारवाड़ में जाने के प्रसंग से जोधपुर के राजा जशवंतसिंह की पूर्वकथा का स्मरण कराना१ बहादुरशाह के चार पुत्रों की गणना के अनंतर औरंगजेब के मरने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छि-

आदितः षट्चत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

साह मरत आजम सज्यो, यह सुनि वत्त अजीस ॥
मैंनपुरीसौं आगरा, आयो ठहै भट भीम ॥ १ ॥
आय कटकजुत आगरा, किल्ला सजिग सम्हारि ॥
जनकहुसौं पहिलैं रह्यो, आजमपैं हक धारि ॥ २ ॥
उत आजम बुल्ल्यो उमँगि, साह मरन सुनि वत्त ॥
दिल्लीपर दावा रचन, मन्नि फिरयो मयमत्त ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मरन सुनि सजव फिस्यो आजम सुत संजुत ॥
पुर अवरंगाबाद जाय किन्नौं प्रपंच उत ॥
सब घर हसम सम्हारि खरच धन कोस खुलाये ॥
नृप नबाब रचि आम विहित इतमाम बुलाये ॥
कहि इम पठाय सहँसन पदग रेवा तट रुकहु सकल ॥
पहुँचैं न बहादुरसाह प्रति साह मरन अब मंत्र बल ॥ ४ ॥
अतना इम पिल्ली रु सबहि रुक्के रेवा मग ॥
नृप नबाब बिसवासि कह्यो मंडहु प्रपंच पग ॥
अब दिल्लिय अप्पनिय हनहु रन साहबहादुर ॥
पाय पटा द्विगुनत रु ऐस मंडहु रस आतुर ॥
सुनि यहहि मिच्छ हिंदुन सबन धरिग लुब्भि गणिका धरम॥

यालीस २४६ मयूख हुए ॥

॥ १॥ २॥उतइति ॥ मय मद. ॥३॥ षट्पात् ॥ साहेति ॥ सुत दीदारबख्स. उत चा तरफ वा खितर्कमैं. हसम वैभव. देशीप्राकृत. आम बड़ी सभा. विहित योग्य. इतमाम[ ]पदग पैदल सिपाह. रेवा नर्मदा. साहमरन शाह के मरने की खबरि ॥ ४ ॥ अतनाइति ॥ पृतना सेना. "पृतनानीकिनी चमूः" इत्यमरः ॥ पिल्ली भेजी. मग मार्ग. ऐस आराम. लुब्भि लोभ पायकैं. गणिका वेश्या ताकों. भुग्गवै भोगै. जाहि वा वेश्याकों. स्वपच चांडाल. सधन धन स-

भुग्गवैं जाहि स्वपचहु सधन कुल न जास सुकृत न सरम ॥५॥

॥ दोहा ॥

कोटापति नृप रामसौं, कहि आजम कथ सुद्ध ॥
पुर पट्टन तुमसौं लयो, आलमके बल बुद्ध ॥ ६ ॥
अब तुमकौं बुंदिय दई, रचहु जंग नृपराम ॥
सुनि यह हुकम किसोरसुत, किय करजोरि सलाम ॥७॥
बिनु बुंदिय अरु जोधपुर, लिय सब सेन सम्हारि ॥
इतर भूप हाजरि अखिल, इक्क उदैपुर टारि ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

आमैर भूप जयसिंह पेस, चहुवान राम कोटा नरेस ॥
दतिया पति दलपति नाम सज्जि, नरउर नरेस गजसिंह गज्जि॥९॥
सोपुर महीप गोड़ावतंस, सीसोद रामपुर चन्द्र बंस ॥
चहुवान सिरोही पति सु चंड, ऑंडिच्छ आदि बुंदेल खंड ॥१०॥
हाजरि हुव बीकानेर राय, मालव नरेस रट्ठोर आय ॥
इम भट्टिय जैसलमेर ईस, इत ईडर छप्पन भुव अधीस ॥ ११ ॥
खिच्चिय भदोर जद्दव बघेल, इत्यादि बहुत सजि मंत्र मेल ॥
निज भट समस्त हाजरि नबाब, हुव बिबिध फौज गणना हिसाब१२
सजि कटक लक्ख सप्तक७०००००सम्हारि, हुव लक्ख२०००००
बाजि पक्खर प्रसारि ॥
सजिसहँसपंच५०००मत्त मतंग, पादातिलक्खपंचक५००००० प्रसंग

हित. जास जा चांडाल के. सरम लज्जा ॥ ५ ॥ दोहा॥ कोटेति ॥ सुद्ध सुद्ध. पट्टनि वा पुर को नाम जो बुधसिंहनैं आलम दयो हो ॥ ६ ॥ ७ ॥ बिनु बुंदिय इति ॥ इहां बुंदी जोधपुर कों लच्छन लच्छना सैं करिकैं दोऊनके राजा. ऐसैं सर्वत्र जानिये ॥ ८ ॥ ९ ॥ सोपुरइति ॥ चंद्रवंश चंद्रसिंह सीसोदिये के वंशके चंद्रावत सूर्यवंशी. औंडिच्छ नाम नगर तदादिक दतियासौं इतर औ-रहू बुंदेल जानिये ॥ १० ॥ हाजरि इति ॥ राय राज ॥ ११ ॥ खिच्चियइति॥ छप्पन देश. ईडर नगर. गणना गिनती ॥ १२ ॥ सजिइति ॥ पादाति पयादे

दुवसहँस२००० तोप जंगी दुरूह, सहँसन निसान फहरत समूह॥
फटि असिन बाढ झरि सान फूल,दल रंगरंग बानां दुकूल॥१४॥

॥ मुक्तादाम ॥

सजी अब आजम संगर फौज,पटा गज बाजि करी हित मोज॥
खरे खुरसानन चुंबत खग्ग, चिरैंफटि धारन बाढ उदग्ग ॥१५॥
ग्रहग्रह तंतनि, सिंधुव सोर, घुरे भजि भेरिन भद्दव घोर ॥
दये बहु आयुध आजम बंटि,सलस्तन बंदि लये सिर संटि॥१६॥
कसैं बहु बाहुल कंकट टोप, कसीसत कंद कमानन रोप ॥
उदायुध कोक घसैं सिर गैंन, नचैं रनपैं कहुँ आरुन नैंन ॥१७॥
सनंकत सान अहो निस लोह, परैं झरि फूल हुतासन छोह ॥
तपैं असिधावक पावक ताव, मनौं तरु तिंदु चिनंगिय दाव ॥१८॥
करैं बहु बीर बिधानन दान, मनौं रन इष्ट बधावन मान ॥
भई रजसौं तमसौं मिलि संधि,रह्यो कहुँ सत्व बिसेस न बंधि॥१६॥
करैं रन आगम बीर उछाह, मनौं नर नायकबेस बिबाह॥
रचैं प्रति बासर आजम आम, रहैं इक आहव आहव नाम॥२०॥
बन्यौं दल द्वादसकोस१२बिथार, भ्रमी पहुमी नर बाजिन भार ॥
धरैं उर अच्छरि संग उमंग, करैं भट के भट कुंकुम रंग ॥ २१ ॥
बन्यौं नर आकर दक्खिन भाग, मनौं सुर दच्छ प्रजापति जाग ॥

शिपाही ॥ १३ ॥ दुवइति ॥ ऊह तर्क. तामें न आवै. निसान पताका. असि खड्ग तिनको. सान खुरसान तिनतैं. फूल लोके चिनगी. दुकूल वस्त्र ॥ १४ ॥ मुक्तादाम ॥ सजीइति ॥ पटा आमनके. मोज रीझ ॥ १५ ॥ ग्रहग्रहइति ॥ यह बाजे को अनुकरण. सिंधुव रागविशेष. भद्दवके मेघकी घोर. बंदी बंदन करि ॥ १६ ॥ कसेति॥ बाहुल दस्ताना. कंकट बकतर. रोप बान. "पत्री रोप इषुर्द्वयोः" इत्यमरः ॥ ऊँचे किये हैं आयुध जिननैं. ऐसे सुभट ॥१७॥ सनंकेति ॥ असिधावक सिकलीगर" अस्थासक्तोऽसिधावकः" इतिहैमः॥ तिंदु वृक्षविशेष. ताकी दाव वनमैं अग्नि लगै तामैं "दवो दावो वन्यवन्हि" रितिहैमः ॥१८॥ करैइति॥ मान सत्कार. बासर दिन. आहवयुद्ध. रज रजोगुन. तम तमोगुन. तिनसौं दोऊ यह अर्थ. कहुँ कोऊक ठोर. सत्व सत्व गुन रह्यो ॥१९॥करैंइति॥नायकबेस जोबन अवस्था ॥ २० ॥ २१ ॥ बन्योंइति ॥ आकर खानि. जाग याग (यज्ञ) "यज्ञो

गये रुकि मेकलजा नदि मग्ग, चल्यो अब आजम जग उदग्ग॥२२॥
मही फटि नालन देत दरार, दबैं भर भोगिय भोग हजार॥
प्रकंपत चिक्करि दिग्गज अट्ठ८, मचक्कन घुम्मत कोल कमट्ठ॥२३॥
मच्यो रव कल्प प्रभंजन मान, मनौं पयसागर फेर मँथान॥
चली चढि संग चरक्खन तोप, लगैं बिरचैं गढ पब्बय लोप॥२४॥
किती इक सिंह मुखी बिकराल, करी अहि नक्क मुखी अरिकाल॥
रजैं लिपि नागज आनन रत्त, करैं सिर छाँहँ पताकन छत्त॥२५॥
जुते बृष अैंचत के करि हल्ल, बडे गज पिट्ठि लगावत टल्ल॥
गिलैं अयपिंड घटी दुव ग्रास, चरारत चक्क चरक्खन चास॥२६॥
रहैं प्रतिइक्क बतीस३२जवान, परैं लागि गोलक कोस प्रमान॥

ध्वरो लवो याग:" इत्यमरः॥ मेकलजा नर्मदा. "मेकलकन्यके" त्यमरः॥ २२॥ महीफटिइति॥ भोगिय भोगी (सर्प). "उरगःपन्नगो भोगी" त्यमरः॥भोग फन. कोल वराह॥ २३॥ मच्योइति॥ रव शब्द. कल्प प्रलयकाल के. प्रभंजन पवन के. मान प्रमान. पय दुग्ध. चरक्ख शकटविशेष. देशी प्राकृत॥ २४॥ कितीइति॥ वृक वनकुत्ता "कोकस्त्वीहावृको मृगः" इति हेमसूरिः॥ नक्क नक्र विशेष. रजैं सोहैं. लिपि चित्र रचना विशेष. नागज सिंदूर. "सिंदूरं नागजं नागरक्तं" इतिहैमः॥ आनन मुख. रत्त लाल. छांह छाया. छत्त छत्र॥ २५॥ जुतेइति॥ जुते जुपेहुये. वृष वृषभ. लोके बैल. अैंचत खैंचत. केकेतेही. पिट्ठ पृष्ठि. टल्ल टल्ला. लोके धक्का. अयपिंड लोह के पिंड. गोला यह अर्थ. धटी तोलविशेष. छै ६ गुंजाको एक १ मासक. अष्टादश १८ मासकको एक १ पईसा. चालीस पईसा को एक १ सेर. पंच ५ सेर की १एक धटी. तैसी दुव २ दोय धटीको. चरारत यह चक्रके शब्दको अनुकरण है. चक्क लोके पहिया. चरक्ख तोप के आधार शकट विशेष. चास खबरि. चरक्खन के चक्र कें शब्द ही सों खबरि परै कि यह तोपन को ही शब्द है ऐसी॥ २६॥ रहै इति॥ प्रतिइक्क एक तोप प्रति. जवान यौवनवारे. ३२. यहां जवान सामान्य अवस्था वाचक है परन्तु तोपन के योगसों पुरुष ही जानिये. गोलक गोला. ललक्कत चरक्खन के चक्र द्वारा ललकार करत. लार संग. हली चली. डाकिनि तोप. यहां साध्यवसानासों आरोप विषय तोप तिनको निगरण करिकैं आरोप्यमाण डाकिनि शब्द को प्रयोग कियो यातैं डाकिनिनके कहे तोप जानिये. यहांहु तोप डाकिनि दोऊ शब्दनमैं प्रथमा के जस

ललक्कत आजमके दल लार,हली इम डाकिनि दोयहजार२०००
चली गज पंचसहँस५०००न पंति, भयंकर कज्जल पब्बयभांति
लगैं मग निठ्ठि करेनुन लोभ, डगैं डग डाकन छक्कत छोभ ।२८।
मरोरत साखिन जुत्थप मत्त, परीखत व्याल हिसावन रत्त ॥
बडे बपु भद्र मृगादिकें वंस, सजे गुड साजन अंतक अंस ॥२९॥
बहैं फटकारत सुंडिन व्योम, प्रभा परि पक्क जुव्वन जोम ॥
अहारत इच्छित पै न अघात, जनैं जलपीवनकों घटजात ॥३०॥
उडैं जिम कंदुक अंदुक पाय, जरे त्रिपदीन झुले सम जाय ॥
घुमावत जे सिर बीतन घाव, पयप्रति मंडत अंगद पाव ॥३१॥
कसे मखतूल कपालक कंध, बरत्तन नद्ध हवह्न बंध ॥
जरी कुथ जेवर जोति चमक्क,उयो असिताचलपैं मनु अक्क३२
करैं पथ पंकिल दान पवाह, लगैं नन तोमर भुक्कत राह ॥

मध्यम को लोप जानिये ॥ २७ ॥ चलीइति ॥ पंति पंक्ति. भंति तुल्य. मग मार्ग. निठ्ठि कष्टसां. करेनु हस्तिनी. तिनके. डगैं चलें. डग एक १ पैंड. डाकन डाक. याकों कुद करिकें शत्रुको अल्प प्रहार करनों तिनकरि. छक्कतछोभ चोभ लोके छोभ. तासैं. छक्कत तृप्त होत ॥२८॥ मरोरतेति ॥ साखी वृक्ष. तिनकों. जुत्थप जुत्थ [यूथ] पति हस्तीनके समूह. तिनके पति. परिखत तिरछी घात करिबेवारे हस्ती. व्याल दुष्टहस्ती. "तिर्यग्घाती परिघातो गजो व्यालो दुष्टगजः"इतिहैमः॥ गुड हस्तीकी सिलह. तिन करि "गुडकं हस्तिसन्नाह" मितिमेदिनी ॥ अंतक जमराज. ताके. अंश श्यामतामें तथा क्रोध में ।२९। बहैइति ॥ बहै चलै. सुंडिन सुंडादंडनतैं. पक्क हस्तीके जुव्वन अवस्थामें बिंदु निकसैं ते "बिन्दुजालं पुनः पद्म" मितिहैमः॥ अहारत आहार करत. इच्छित चाह्यो. अघात तृप्त होत. जनैं उत्पन्न किये. बिधाताने यह शोष. घटजात अगस्त्य ॥ ३० ॥ उडैंइति ॥ अंदुक जंजीर "शृङ्खला निगडोऽन्दुकः" इतिहेमचन्द्रः॥ त्रिपदी डगबेरी. तिन करि "त्रिपदी गात्रयोर्बन्धः" इतिहैमः॥ बीत सहाचतनको पगनको झूलनों. तिनके ॥३१ ॥ कसेति ॥ मखतूल रेसम. कपाल कला-वे. बरत्त रस्से. तिन करि. "नध्री वध्री वरत्रा स्या" दितिहैमः ॥ कुथ झूल. उयो उदय भयो. अक्क अर्क ॥ ३२ ॥ करैंइति ॥ पंकिल पंकवारे. दान मद. रा-ह चालिबेकी रीति. सिरी मस्तक को भूषण. देशीप्राकृत. हाटक सुवर्ण. भर्म

सिरी मनि हाटक मंडित सीस, मनौं ग्रह मंडल भर्म गिरीस ३३
करैं नभचारन चंचल चोट, उहैं फटि फेट कपाट रु कोट ॥
घटा घन मद्दवके अनुकार, हले गिरि जंगम पंचहजार५०००।३४।
जुरे हय झंपत जामलल्लक्ख२०००००,तरारन निंदत मारुततक्ख
जरे वर जेवरं पक्खर तीन, तरोगति नीर कि मंडत मीन ॥३५॥
धपैं धरि धोरित आदिक धाव, परैं छिति पातुरिकी गति पाव ॥
प्रदज्जत लासन नासनपौंन, बटा नटके जिम गुंफत गोन ॥३६॥
बनावत नालन भुम्मि बिभाग, मनोगति मप्पन मप्पत माग ॥
उडैं गजगाह मलंगत अच्छ, प्ररोहिग जानि अपाकृत पच्छ॥३७॥
चलैं निज छाँह जक्कत चित्त, घलैं वर घुम्मर भान समित्त ॥
पटीपर पूर लगावत लीह, मनौं मत गोतम पाठक जीह॥३८॥
थरक्कन घुम्मत नीर कि थाल, फलंगत चित्रकतैंबढि फाल ॥
ललैं गलपालन लाल उदोत, सुचंदन चाप कि पन्नग पोत ३९
उठैं झुकि नद्ध तुतंगन अंग, कमानन डारत कंठ कुरंग ॥
कहैं छपि हत्थिनमैं धपि धाव, बनैं जनु बारिद बिज्जु सलाव ४०

सुवर्ण ताके. गिरीस गिरिराज (सुमेरु) तापैं ॥ ३३ ॥ करैइति ॥ नभचार प-क्षी. तिनपैं. घटा हस्तिनके समूह. जंगम चलते ॥ ३४ ॥ जुरेइति॥ जामल दो-य २. तरार उड़ान. तिन करि. मारुत पवन. तक्ख तार्क्ष्य (गरुड़)ताकों. तरोग-ति वेगगति. कि मनों ॥ ३५ ॥ धपैं इति ॥ धोरित गति विशेष. धाव गति. लास लास्य (नृत्य) तिनमैं. नास नासिका. तिन करि. गोन गमन ॥ ३६ ॥ बनावनइति॥ नाल खुरताल. तिनकरि. मप्पन मापिवेकों. माग मार्ग. प्ररोहिग अंकुरित भये. अपाकृत काटे॥३७॥ चलैइति॥ जक्कत चमकत. घुम्मर मंडलनृत्य. भान वक्र मात्रिक विशेष दोरनों. लीह लीक. मत गोतमको न्यायशास्त्र ताके पाठक की. जीह जिव्हा॥ ३८ ॥ थरक्कतइति ॥ थाल छिन्न विचित्रित गुंफित शिखाके तैल तिनकी. सुचंदन श्रेष्ठ चंदन के. चाप धनुष ताएैं. कि मनों. पोत बालक. अच्छे चंदन के चाप के रूप घोरन के स्कंध कहे. सुचंदनसों पन्नगनकी प्रीति विशेष है. अरु चाप नहीं कहते तो स्कंधन की आकृति नहीं आवती. सुचंदनसों. हेतु अलंकार ही जानिये ॥३९॥ उठै इति ॥ झुकि नमिनामिकैं. नद्ध

बहैं छिति छेकत बत्थन घल्लि, कसीसत कंधर ऐंड उझल्लि ॥
कुसानुग जे पटकैं जित जाय, रहैं लखि लोभ पतंगहु पाय ४१
घमंकिय पक्खर घुग्घर नद्द, छमंकिय नेउर भेकाकि भद्द ॥
दिसा बिदिसा बढि हिंसत हेस, सजैं जिन आसन आस सुरेस४२
दुरैं पलटैं कुलटा जिम दिट्ठि, चलैं चरज्यौं परि पत्रिय पिट्ठि ॥
खलीनन लेहनमैं अनुरत्त, सदा जयसूचक जे जव जत्त ॥ ४३ ॥
बनैं चकरी सकरी बिसिखान, महागति द्रौपदिके पट मान ॥
बडे तरु साखन ह्वै कढिजात, बगच्छिनपैं उडि लंघत बात ॥४४॥
भिरैं खुर भोगिय भू भटभेर, फिरैं गज फेटनतैं चकफेर ॥
सजे इम आजमके दलसंग,तरोमय जामल लक्ख२०००००तुरंग
क्रमेलक जुव्वन वेग बिसेस, बनैं जिनतैं घर देस बिदेस ॥
बजावत गल्लन हल्ल बितंड, चलैं धरि पव्वय पिट्ठि प्रचंड ॥४६॥
भरे सल जे दल डेरन भार, हले जुरि घुम्मत सट्ठिहजार६००००
सजे बर बेसर बीस हजार२००००,
तथा सकटावलि तीसहजार३०००० ॥ ४७ ॥
जनाँननके जन वाहन जुत्त,
सजे सिबिका रथ इक्क अयुत्त १००००॥

घंधे ॥ ४० ॥ बहैंइति ॥ कंधर कांधे. ऐंड जगल्ली. तासैं. कुसानुग कुसा चाल ताके. अनुग कह्यो करिवेवारे. पतंग सूर्य ॥ ४१ ॥ घमंकियइति॥ भेक मेंडक लोंके मैंडक. भद्द भाद्रपद. तातैं. हेस हींस. ताको. आस इच्छा॥ ४२ ॥ दुरैंइति॥ चर दास. खलीन लगाम तिनको. लेहन चाटनों तामें. सूचक दिखायदेवारे.जव वेग. तामैं. जत्त बंध ॥ ४३ ॥ बनैंइति ॥ बिसिखा गली तिनको. बात पवन. ॥ ४४ ॥ भिरैंइति॥भोगिय सर्प. अरु भू पृथ्वी. यहां भू के भोगसों सर्प शेष ही जानिये. तरोमय वेगमय. जामल दोय २ ॥ ४५ ॥ क्रमेलकइति ॥ क्रमेलक ऊंट. गल्ल गाल तिनकों. बितंड वेतंड हस्ती ॥ ४६ ॥ भरेइति ॥ सल उष्ट्र. लोके ऊंट. "शलो भोलिर्मरुप्रियः" इतिहैमः ॥ बेसर खच्चर. "वेसरोऽश्वतरो वेगसरः "इतिहैमः ॥४७॥ जनाननके वाहन निबाहिवेकों. जुत्त जुक्त. सिबिका पा-

चली भुव डोरिन सप्पत फौज, उदै हुव आम प्रवीरन ओज ॥४८॥
हजारन होरिय हेति समान, दिसा विदिसा फहराय निसान ॥
　सहस्रकपंच ५००० नकीब जलेब,
　चली पृतना रचि जेवर जेब ॥ ४९ ॥
समात न सेलनके गन गैन, छई भुव पक्खर लक्खन लैन ॥
बिभागन बंटत सत्रुन बंस, उमीरन बीरन के अवतंस ॥५०॥
हरोलन चंड नकीबन हाक, करैं मग लुट्टन बाक कजाक ॥
चले इम दिल्लियपैं रचि दाव, उमंगन आजम औ उमराव ॥ ५१ ॥

(दोहा)

इत आजम इम सजि कटक, प्रभु बनि किन्न प्रयान ॥
उत आलम सुनि उज्झल्यो, सावन मुदिर समान ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दिल्लीपट्टाधिवेशनाभिप्रायौरंगजेबकनिष्ठपुत्राजमशाहस्य दक्षिणदेशाद्दिल्ल्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥
आदितः सप्तचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २४७ ॥

(षट्पात्)

आलमसाह वकील हुते अवरंग निकट जिन ॥
समय साह अवसान पत्र लिखि छन्न प्रपंचिन ॥
जतु गुटिका बिच रक्खि दूत करि बेस दिगंबर ॥

लकी. ओज तेज ॥ ४८ ॥ हजारनइति ॥ हेति शिखा. तांके झार ॥ "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रिया" मित्यमरः ॥ जेब शोभा. यावनी ॥४९॥समातेति ॥ गन समूह. गैन गगन तामें. लैन पंक्ति. उमीर वडे वैभवके स्वामी. यावनी. तस ७. भूषण विशेष ॥ ५० ॥ ५१ ॥दोहा॥ इतइति ॥ मुदिरमेघ ॥ ५२ ॥ यह श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में ... ति ॥ ... बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के पाट बैठने के अभिप्राय से ... भूत हुआ. पुत्र आजमशाह का दक्षिण में सेना सझकर दिल्ली पर जा... हत्य. छुमाया नवमा९मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ सैंतालीस. यारूद. तासैं. षट्पात् ॥ आलमसाहेति॥ जतु लाखकी. गुटिका गोली. ता

काबल धर पुक्कलिय आनि अटकिय रेवापर ॥
उनमत्त होय सरिता उतरि गति सबेग काबल गयो ॥
निद्रित जगाय अद्धिय रजनि आलम प्रति दल अप्पयो॥१॥
बुल्लो दै कग्गरहिँ छत्र भग्गत सुव भग्गी ॥
अब निवारि निंदरिय पिक्खि पव्वय दव लग्गी ॥
घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥
आजम अनय सिचान परत दिल्लिय पारावत ॥
बंधहु प्रपंच मंडहु बिहित यह न बेर फिरि आयहै ॥
बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कलप दिखायहै ॥२॥

[निःशाणी]

अद्धीके घरियारपैं चर पत्र लगाया ॥
धूजि थरत्थर नाजरूँ अवरोध चलाया ॥
साहबहादुर सैनसैं बरजोर जगाया ॥
जिन खंधैं सुख निंद ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥
जिनकी बाहर चाहते तिन धाट बनाया ॥
अब उट्ठैही अप्पनाँ नहिँ छत्र पराया ॥
यौंसुनि बेगम अप्पनी कर ऐंचि उठाया ॥
जाकौं कंत कहावते वह बासर आया ॥ ४ ॥
लाय सिलग्गी भक्खराँ तुम निंद लुभाया ॥
यौं सुनि आलम जग्गिकैँ अवरोध उठाया ॥
कग्गर बंचि प्रपंचकैँ बुधसिंह बुलाया ॥

[illegible] "इतिहैमः ॥ रेवा नर्मदा. दल पत्र. अप्पयो दयो ॥१॥ बुल्लयोइति ॥ भग्गत नष्ट [illegible]त. निंदरिय निद्रा. सिचान लोकमें बाज. पारावत कपोत. "पारावतः कलरवः" इतिहैमः ॥ बिहित योग्य ॥ २ ॥ निःशाणी ॥ अद्धीकेइति ॥ अद्धी अर्धरात्रि देशीप्राकृत. ताके चर दूत. (नाजर) पावनी. अंतःपुर में जायवे योग्य नरवेलधा[illegible]री नपुंसक तिननैं. अवरोध अंतःपुर तामैं. "शुद्धान्तश्चावरोधश्चेत्यमरः ॥ [illegible]न सयन. तासौं. निंद निद्रा ॥३॥ जिनकीइति॥ बाहर सहाय. धाट लोकमें धाड़ा. बासर दिन॥४॥लाय सिलग्गीइति॥ भक्खर पर्वत. देशीप्राकृत.

नैंन मिलाया नेहसैं भुज भार झिलाया ॥ ५ ॥
वंस सताके बीर तू कहि यों बिरुदाया ॥
हिंदू भूप हराम हैं सब फेरि मिलाया ॥
दिल्लीके कुच कुंभपैं कर आजम लाया ॥
जोर जनानैं जारका नहिं जात पचाया ॥ ६ ॥
अब तेरे भुजदंडपैं रसबीर बढाया ॥
बाजीमैं ओर न रह्या पण माथा लगाया ॥
डारैं भुग्गन हूर हैं जितैं जस माया ॥
यों सुनि राव उछाहकैं कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥
मुछि सम्हारी संभरी रस सत्त ७ उडाया ॥
थाई बीर रउद्दका इक्कैं छक छाया ॥
ज्यों कंदल कनउज्जके भट संजमजाया ॥
कै गोरी सुरतानपैं सजि कन्ह धकाया ॥ ८ ॥
ज्यों जंभासुर जंगपैं सतसत्त सुहाया ॥
कै द्रोणाचल लैनकों कपिराज कसाया ॥
पीवन पारावार कै घटजात घुमाया ॥
कै वन सुत्ता बिंटिकैं मृगराज जगाया ॥ ९ ॥
कै काकोदर चंपतैं फनफैल बनाया ॥

तिनमैं. अवरोधउठाया दूर किया. कग्गर पत्र. फेकारिकैं. बुधसिंह बुंदी के स्वामीकों. झलाया दिया॥५॥ वंसइति॥ सताके शत्रुशल्यके. जोर पराक्रम. पचाया पाचन किया. दिल्ली मेरे भोगने योग्य स्त्री रूप है;ताके कुच कुंभपैं आजम हस्तक्षेप कियो चाहत है यातैं जनानेके जार आजमका जोर मेरे पाचन नहीं होता ॥ ६ ॥ अबइति ॥ बाजी खेल तामैं. पण दाव. भुग्गन भोगिबेकों. हूर अप्सरा. यावनी. माया वैभव ॥ ७ ॥ मुछिइति ॥ खङ्गधी यह शेष. सत्त सप्त ७. थाई स्थाईभाव. वीररउद्दका वीररस रौद्ररस का उत्साह अरु क्रोध यह अर्थ. गोरी सुलतानपैं. कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काका ॥ ८ ॥ ज्योंइति ॥ सतसत्त सतसत्र. (इन्द्र) शुद्धप्राकृत. कपिराज हनुमान. कसाया सज्जीभूत हुआ. पारावार समुद्र. ताकों. घट कलस. तासों. जात जन्मै ऐसे अगस्त्य. घुमाया उत्साह जुक्त भया ॥९॥ कैइति ॥ काकोदर सर्प. ताकों. साबात यारूद. तामैं.

सोर किधौं साबातमैं दव डुंग मिलाया ॥
जमका शृंखल जानिकैं कहि पाव दबाया ॥
यौं सुनि बत्तैं संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥
सोक सिलग्गा साहका कहि वैन समाया ॥
सो सिर जोलौं कंधपैं सुख अप्प कुमाया ॥
गही ज्यानपनाहकी हम बीर सिवाया ॥
धर्मइरामी सेर ह्वै कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥
अग्गैं पंडव जित्तिकैं कुरुवंस नसाया ॥
रावन किन्नी रामसौं सोही फल पाया ॥
पापन पक्की होनदै दल होहु सिवाया ॥
ऐंचौं आजम कंठमैं धरि चाप अघाया ॥ १२ ॥
यौं सुनि साह सिराहकैं तजबीज लगाया ॥
सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥

॥

बड्डे प्रात पयानकौं फरमान चढाया ॥ १३ ॥
जंग नग्गरौं नद्द ह्वै धर काबल छाया ॥
सिंधू राग रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥
डेरौं डेरौं सज्ज ह्वै नर बाजि कसाया ॥
जालग तीजे जामका घग्घार बजाया ॥ १४ ॥

डुंग दमंग (चिनगी). जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सोकइति ॥ सिलग्गा प्रज्वलित भया. समाया समित किया. सोसिर सेरो मस्तक. कंधपैं कांध पर. तोलों यह शेष. कुमाया संचय किया. ज्यान प्राण. सबनके तिनके. पनाह रक्षक. ऐसे आप. तिनकी है यहशेष. ज्यान पनाह ए दोऊ यावनी लब्ज हैं. सिवाया सबसों सिवाय. सेर सिंह. यावनी ॥ ११ ॥ अग्गैंइति ॥ पक्की प्रारब्धकी सिद्धि. दल सेना. होहु यह भू धातु को लोट् लकार के प्रथम पुरुषके भवतु प्रयोग को प्राकृत है. अघाया अतृप्त ॥ १२ ॥ योंइति॥ सिराह प्रशंसा ताकों. कै करिकैं. आम बडी सभा. तजबीज देशीप्राकृत. प्रारब्धकी रचना विशेष. सेनानी सेनापति. संभर बुधसिंह. फरमान हुकम ॥१३॥ जंगइति ॥ रनंकिया यह शब्द को अनुकरण. कसाया सज्जभया. जाम प्रहर ॥ १४ ॥ केइति ॥ घेरों घेरे इ-

के गज घेरौं घल्लिकैं घेरौं गरदाया ॥
काहू व्याज प्रपंचकैं बिरुदाय मिलाया ॥
अंग रुमालों संजिकैं रजरंग उडाया ॥
दै दै मनके मानके संजाव खिलाया ॥ १५ ॥
के जल देगों पायकैं सुख लोभ लगाया ॥
अग्गैं रक्खि गजीनकों विसवास बढाया ॥
झंपि महाउत कंधपैं गति बंदर आया ॥
जंगी होदन मंडिकैं गुड नद्ध बनाया ॥ १६ ॥
धाय धरयारी घोरज्यौं घलि घंट झिलाया ॥
चाप तुपक्कों आदिकैं सब हेति सजाया ॥
बंधि बरत्तों सज्जकैं बड बाक लगाया ॥
फौजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
यौं कहि कंधा थप्पिकैं रन रंग रचाया ॥
जंगी अंदुक डारिकैं आलान छुराया ॥
वारी बाहिर बाकतैं रचि डाक डगाया ॥
केक मतंगों तुंगके भुजदंड झुकाया ॥१८॥
मेघाडंबर के कसे सिर अंबर लाया ॥
केक हवद्दों सज्जऽहै गल गज्ज मचाया ॥
यौं नभ अंबर अर्श भू १०००परिमान गिनाया ॥

स्ती के अनुचर तिननें. व्याज कपट. रुमाल वस्त्र के खंड विशेष. तिनकरि. संजाव सव्याव. लोके सीरा. तथा हलवा. खिलाया भक्षणकराया ॥ १५ ॥ केइति॥ देग देशीप्राकृत. बहुत बडे पात्र विशेष तिनकों. गजी हस्तिनी तिनकों. गति तरह. बंदर वानर ताकी. गुड हस्ती की सिलह तिनकरि. नद्ध बंध ॥१६॥ धायइति ॥ हेति आयुध. बरत रस्से तिनकरि. बड बडे. बाक वचन ॥ १७ ॥ यौंइति ॥ अंदुक जंजीर. आलान बंधबेकोखूंटा. तथा खंभा "आलानं बंधनस्तंभः" इतिहैमः ॥ वारी हस्तीको ठान ताके "वारी तु गजबन्धभूः" रितिहैमः॥ तुंग ऊंचे ॥ १८ ॥ मेघइति ॥ मेघाडंबर छायावारे होदा. लोके अंबावाडी.

हत्थी आलमसाहके रन एह सजाया ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००तुरंगौं लैनपैं वर साज बनायर ॥
देत खलीनौं दोरपैं नचि कंध नमाया ॥
जंग पलानौं डारिकैं कसि तंग मिलाया ॥
घोर घमंकी पक्खरौं छोनीतल छाया ॥ २० ॥
रंग बिरंगे राह के गजगाह लगाया ॥
छोरि दुबग्गौं ठानतैं चर बाहिर लाया ॥
तुक्कि मलंगौं तुंगपैं रवि रुक्कि लुभाया ॥
तोप हजारा१०००तीरकैं चहकात चलाया ॥ २१ ॥
डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥
साहबहादुर सज्ज ह्वै अब बाहिर आया ॥
बारनपट्ट अरोहिकैं फरमान लगाया ॥
कूंच नकीबो बुल्लिकैं हल्लल्ल बढाया ॥
एते मान बिहानका घरियार बजाया ॥
पाय रकाबौं अंडिकैं चढि बीर चलाया ॥
छोनि मचक्की भारकैं फन नाग डगाया ॥
चौंके दिग्गज चिक्करैं उर कल्प भमाया ॥ २३ ॥
ध्यान समाधी छोरिकैं मन चित्र बढाया ॥

के क्रितेफनपैं. नभ शून्य०.अंबर शून्य०.अभ्र शून्य०.भू एक१. ऐसे हजार१००० ॥ १९ ॥ लक्खइति ॥ लैन पंक्ति. तिनपैं. खलीन लगाम तिनकों ॥ २० ॥ रंगइति ॥ राह रीति. तिनकरिकैं. दुबागों दोऊ तरफ बंधके अगारी के रस्से तिनकों. तुक्कि तुलितुलिकैं. तुंग ऊंची. तिनपैं. तोपहजारा तोपनको हजार. हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकैं तीर. उनको निवाला बारूदकी थैली अरु गोला सो उनमें डारिकैं. चहकात चहकनौं. चरखनके शब्दको अनुकरन।२१॥ डारिइति ॥ दवाली मेखलाकों. देशीप्राकृतमैं. बारनपट्ट मुख्यबारन. हस्ती तापैं ॥ २२ ॥ एतेइति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यानइति ॥ समाधि समाधि

तहिन धूरि बितानके घन भान पिधाया ॥
सारद पुण्यिमका ससी जिम बारद छाया ॥
दब्बि धरित्ती पक्खरौँ इक ओघ लखाया ॥ २४ ॥
सेलौँ अंबर ढंकिया नभचार रुकाया ॥
झंडे बात झपेटकैं फीलौँ फहराया ॥
तारा उत्तरि पोदकी सुभ सौँन बताया ॥
दक्खिन भारद्वाजनैं हुत लाभ दिखाया ॥ २५ ॥
यौँ दरकुंच अनीकनैं लाहोर निराया ॥
पंजाबी दल बुल्लि कैं कछु तत्थ मिलाया ॥
आलमसाह सिपाह यौँ सजि सेर सिवाया ॥
दिल्लीके सिर दावपैं करि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे दूतद्वाराबहादुरशाहान्तिकौरंगजेबपञ्चत्वोदन्तप्रापणम् १, सेनापतीकृतबुधसिंहससैन्यबहादुरशाहलवपुरागमनवर्णनं दशमो मयूखः ॥१०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततमः ॥२४८॥

वारे. तिननैं. चित्र अभिरज. पिधाया अन्तर्ध्यान हुआ. पुण्यम पूर्णिमा. वा दिवस. बारिद मेघ. ओघ समूह ॥ २४ ॥ सेलोंइति ॥ नभचार पक्षी. बात पवन. फीलों फील[हस्ती].यावनी. तिनपैं. तारा वाम दिशसे दक्षिण दिशा काली चिरी आवै ताकों कहिये. पोदकी काली चिरी. सौंन शकुन. भारद्वाज लोके रूपारेल तथा सुलाल्हा सौंनचिरी ॥ २५ ॥ यौंइति ॥ निराया निकटलिया. पंजाबी पंजाबका. दल कटक. बुल्लि बुलाया. तत्थ तहां. सेर सिंह. यावनी. चाव चाह [उत्साह] ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में दूत द्वारा बहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित बहादुरशाह के लाहोर आने के वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अड़तालीस २४८ मयूख हुए ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

लाहोरनामपुरतोऽपि कृते प्रयाणे,
मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा ॥
आयातमाशु दलमीप्सितमागरातो
ऽजीमस्य भूतयुतभाविविदः स्वसूनोः ॥ १ ॥

[उपजातिः]

श्रुत्वाऽवरङ्गं कृतकायहानं, मया समागत्य मनोजपुर्याः ॥
तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्ता दुर्गं च सज्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥
स्वास्थ्यं गृहाणेति विचार्य वप्तर्जहीहि चाचार्जितचक्रचिन्ताम् ॥

गीर्वाणभाषा ॥ वसंततिलका ॥ लाहोरेति ॥ मेघानुकारकबहादुरशाहचम्वा मेघाऽनुकृतवत्या बहादुरशाहसेनया लाहोरनामकपुरीसकाशात् प्रयाणे कृते सति आगरात आगरानामकनगरसकाशात् भूतश्रुतभाविविदः अतीतभविष्यद्भानवतः अजीमस्य रूपनगरराज्ञा भागिनेयस्याजीमनाम्नः स्वसूनोः स्व शब्देन बहादुरशाहबोध्यस्तस्य सूनोः पुत्रस्य संबंधि आत्मन ईप्सितं दलं पत्रं आशु शीघ्रं आयातं प्राप्तम् ॥ १ ॥ उपजातिः ॥ श्रुत्वेति ॥ अवरंगं सतिपिता महं कृतकायहानं त्यक्तशरीरं 'ओहाक् त्यागे' इत्यस्मात् भावे ल्युट् ॥ 'युवोरनाका' वित्यनादेशः ॥ मया कर्त्रा मनोजपुर्याः लोके मैनपुरी तस्याः सकाशात् आगरापुरं समागत्य संप्राप्य तत्रत्या तत्र भवा या द्रविणादिभूतिः द्रव्यादिकमैश्वर्यं आत्ता गृहीता तस्या दुर्गं च सज्जीकृतं सन्नद्धीकृतम् ॥ २ ॥ स्वास्थ्यमिति ॥ वप्तः हे पितस्त्वं इति मल्लिखितं विचार्य स्वास्थ्यं स्वस्थतां गृहाण अङ्गीकुरु. चाचार्जितचक्रचिंतां चाचा लघुपितृव्यक आजमशाहनामा तेन आर्जितं संचितं यच्चक्रं सेना तच्चिन्तां । जहीहि त्यज । अत्र युद्धार्थे मया अपि प्रयत्नो वि-

---

॥ भाषानुवाद ॥

लाहोर नाम नगर से मेघ का अनुकरण करनेवाली बहादुरशाह की सेना प्रयाण करते ही आगरा नामक नगर से भूत भावि को जाननेवाले अपने पुत्र अजीम का चाहा हुआ पत्र शीघ्र आया ॥ १ ॥ अवरंग के शरीर की हानि सुनकर मैंने मैनपुरी में आकर यहां का वैभव धन आदि ले लिया और आगरा के गढ को भी सज्जीभूत कर लिया है ॥ २ ॥ हे पिता! इस मेरे लिखे हुए को विचार कर निश्चिन्तता धारण करो और मेरे काका आजमशाह की एकत्र कीहुई सेना की चिन्ता को छोडो । यहां मैंने भी युद्ध का उपाय रच-

विरच्यतेऽत्रापि मया प्रयत्नः प्रलक्ष्यते चाऽऽजमशाहपन्था: ॥ ३ ॥

[इन्द्रवज्रा]

आगम्यतां द्रागभवतापि विद्वन् सेनाभृता बुन्दिनृपेण साकम् ॥
न्यस्यात्र शुद्धांतमुखां विभूतिं जाल्मो रिपुर्जाजवसीम्नि जय्यः॥४॥

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(गीतिः)

इअ पत्तं सोऊणं अईमलिहिअं जयायमेण समम् ॥
साहबहादुरजोहा हरिससमड्ढा जिईसवो हूआ ॥ ५ ॥
जह सुससाखित्ते बुट्ठो मेहो पव्हडसालिम्मि ॥
अहव दिणयरो उइओ निसाडिमामुड्डविहलपहिअगणे ॥६॥
वा रोअम्मि असज्झे मिलिओ धन्नंतरी सुहाइसमम् ॥

रच्यते क्रियते. च पुनः आजमशाहपन्थाः आजमशाहस्य मार्गः प्रलक्ष्यते विलोक्यते ॥ ३ ॥ इन्द्रवज्रा ॥ आगम्यतामिति ॥ हे विद्वन् पितः! भवता अपि बुन्दीनृपेण बुधसिंहेन सेनाभृता सेनापतिना सार्धं सह द्राक् शीघ्रं आगम्यताम् विभूतिं श्रीजनानादिकपरिकरं न्यस्य स्थापयित्वा जाल्मः अविचार्यकारी एतादृशः रिपुः आजमशाहः जाजवसीम्नि जाजवनामनगरसीमायां जय्यः जेतुं शक्यः ॥ ४ ॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ गीतिः ॥ इअ इति ॥ इति पत्रं श्रुत्वा अजीमलिखितं जयागमेन समम्॥ साहबहादुरयोधा हर्षसमृद्धा जिगीषवो भूताः॥५॥ यथा शुष्यमाणक्षेत्रे वृष्टो मेघः प्रवृद्धशालिके॥ अथवा दिनकर उदितो निशि दिङ्मूढविह्वलपथिकगणे॥६॥ वा रोगे असाध्ये मिलितो धन्वन्तरिः सुधया समम्॥

॥ भाषानुवाद ॥

लिया है और आजमशाह का मार्ग देखता हूं ॥ ३ ॥ हे बुद्धिमान पिता! आप भी बुंदी के राजा सेनापति बुधसिंह सहित शीघ्र आओ. जनाना आदि वैभव और जीवन आदि परिकर को यहां रखकर अविचारी (दुष्ट शत्रु (आजमशाह) को जाजव नामक नगर की सीमा में जीतने को समर्थ है ॥ ४ ॥ अजीम का लिखाहुआ यह पत्र सुनकर जय के आगम के साथ बहादुरशाह के वीर हर्ष से पूर्ण जीतने की इच्छावाले हुए ॥ ५ ॥ जैसे बढ़ेहुए धान्य के सूखते हुए खेत पर वर्षा होवे तैसे वा रात्रि के दिशा भूले हुए व्याकुल पथिकों के समूह में सूर्य उदय हुआ॥ ६ ॥ अथवा रोग के असाध्य होने पर अमृत के साथ धन्वन्तरि मिले. वा मुरदा के शरीर में आश्चर्य करनेवाले प्राण फिर आये ॥ ७ ॥

अहवा कुणवसरीरे अब्बो पच्चागया असुखो ॥ ७ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[षट्पात्]

किय उछाह इम साह बंचि कग्गर चूरामस ॥
बुल्लि नृपति बुधसिंह कह्यो तदुदंत बिहित क्रम ॥
इक्क१इक्क१संजोग होत जिहिँबिधि एकादस११ ॥
इम अजीम सठ होत दइव दीसत अप्पन बस ॥
अल्लाह महर सूचक यहै अब न बीच अरि भय अटक ॥
आगरा ओर पद्धति उचित क्रम सबेग हंकहु कटक ॥८॥
यह प्रपंच अनुकूल पिक्खि बुधसिंह चमूपति ॥
किय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन बिदग्ध मति ॥
सेन मध्य सुरतान हक्क नरनाह हरोली ॥
सुवन साहके तीन३बाम दक्खिन चंदोली ॥
जयसिंह अनुज कूरम बिजय लघुवय लखिनृप संग लिय॥
इहिँ क्रम उपेत दब्बत अवनि चलि सबेग चतुरंगिनिय॥९॥
काकोदर कलक्कलत फनन फुंकारि पलटावत ॥
कद्रू हिय अकुलात लखत पुत्तहिँ लचकावत ॥
त्यौँ बिनता उर तिक्ख पुब्ब चिंतत दासीपन ॥
यह कोतुक अदभूत फैलि कस्यपघर फोजन ॥
संकर समाधि तजि तजि सहज कारन लखत बिचार करि॥

अथवा कुणपशरीरे अहह प्रत्यागता असवः ॥७॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ षट्पात् ॥ कियइति ॥ चूरामस साम सहित. बुल्लि बुलाय. तदुदंत वा अजीम को वृत्तान्त. ओर तरफ. पद्धति मार्ग. "सरणी पद्धती पद्ये" त्यमरः ॥ ८ ॥ यहइति ॥ व्यूह रचना विशेष. सुवन पुत्र. मोजदीन १ रफीलकदर२ अख्तरचिलंद ३. उपेत सहित ॥ ९ ॥ काकोदरइति ॥ काकोदर यहां शेष. कद्रू नागमाता. बिनता गरुडमाता. पुब्ब पहिलो दासीपनों. कद्रूनें याकों दासी करीही वह भाव. नवमालहेतु नवीन मुंडमाला को कारन. इनहिं इनकों शिवकों. गहकि सों बोलिकैं. गधरि पार्वती१०

नवमाल हेतु कहि कहि इनहिं गहक्कि मोद बाढत गवरि ॥१०॥
मिजल इक्क१साहसन अग्ग चोकी त्रिसहस्सन ॥
अरिन छन्न उपचार प्रबल बिस आदि परक्खन ॥
निधि तृन अन्न निवान मग्ग मैदान सुकामिक ॥
खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जामिक ॥
प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुँ बज्र भुव फोरिहँ ॥
पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्र हद छोरिहँ।११।
कमठ भंग गिलि अंग प्रान नारिन परि ब्रुड्डिय ॥
भिरि इमल्ल भुव भार पिट्ठि पावक्क घसि उड्डिय ॥
झगि दमंग बढि झाल जात कच्छप पतंग जरि ॥
दरित टारि दंतुलिय टिकत सूकर तुंडाकरि ॥
आतंक सुरन उतपात इहिं कंपत जग कारन कहिय ॥
सुधसिंह मनहुँ आगम बिजय अकूपार आहूति दिय ॥१२॥
अहि कच्छप भूदार द्रुहिन दिग्गज दिगपालक ॥
भूलोक रु तिम भुवर बहुरि सुरलोक बिसालक ॥
इम समस्त अतलादि तिमहि सागर इत त्रासहिं ॥
इक्कहिं परि आयास अवर आतंक उपासहिं ॥

मिजलइति ॥ अग्ग अगारी. त्रिसहस्सन. तीन हजारन ३००० की. अरिन शत्रुनके. छन्न गुप्त. मैदान चोगान. यावनी. सुकामिक सुकाम संबंधी. खग पक्षी. मृग पशु. उद्यान वन. पापिननिदान पापी बहुत बढे तिनके कारन सों. कि मनों. हद सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाडिनसें. पतग कीट पतंग तुल्य. यहां जात ऐसो वर्तमान प्रयोग क्रिया यातें एक कच्छप जरत छिधाला दूजो बनावत सो जरत तीजो बनावत ऐसे जानिये. दरित भीत. "दरितश्चकितो भीतः"इतिहैमः॥ सूकर वराह. अकूपार कच्छपराज. "अकूपारः कूर्मराजे महोदधौ" इतिमेदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष. कच्छप भूमिस्तंभक. भूदार वराह. "क्रोडो भूदार इत्यपि" इत्यमरः ॥ द्रुहिण ब्रह्मा. "धाताब्जयोनिर्द्रुहिणः" इत्यमरः ॥ भुवर भुवरलोक. अतलादि अतलकों आदि देकैं सातों ही तैले लोक. इक्कहिं इनमैंसों एकको ब्रह्माको तो. आयास अं-

उच्चर्यो जंबुक[1] ज्यों अरिसिंह मराड मयंदरन भोगैं कितीमहि॥१३

॥ घनाक्षरी ॥

रैनैपच्छी[2] झाला देलवारापति राघोदेव२,
आदिक उहाँ हे किते तेहु सो सुनत आइ ॥
बोले धूर्त्त चुंडाउत अर्जुन[3] जुवति बेस,
मारे होइ मोघ[4] तौ[5] लेहु हमरे कटाइ ॥
ह्वो ईरि[6] खिज्यो ९ ऊ सिर ठोकर महार पायो२,
सौनखागो सपथ[7] उदैपुरको अपनाइ ॥
ताके[8] मित्र आइ तँहँ संध्याके सुभट सूची,
होत प्रभु कोप क्यों अनागस[9]पैं हाइ हाइ ॥१४॥
साँझके अंतरही[10] अर्जुन उदर सूल,
चालन लगे अति असाध्य न रुके बिचारि ॥
दानादिक कृत्य अवसानके सब कराइ,
जठर तदीय हम दाँतनसौं[11] राख्यो जारि ॥
जाम[12]हु गई न राति और सब ठाँ निज बैं,
द्याहिहु चुके तब मृषा[13] तो लेहु सिरदारि ॥
स्वामिनीके[14] सोदरतो सूतेसमै संभवत,
मद्यछाके कोऊ गो निसीथैं[15] पीछैं खल मारि ॥ १५ ॥
हाकामो जहाँलौं सब ताँके[16] पास हे हमहु,
दासहीके डेराहै पर्यो सो कछु सेसदम्भ ॥
भाँनबिनु[17] लोटत रह्यो सो सबराति भुव,

१सिंहों को मराकर ॥१३॥ २रत्नसिंह के पत्तवाले ३अर्जुनसिंह ने स्त्री का वेस करके ४झूठ होवे तो ५ हमारे मस्तक कटवा लो ६ क्रोध किया हुआ सिंह था और ७ सौगन ८ अर्जुनसिंह के मित्र ने ९ दोष रहित पर ॥ १४ ॥ १० अन्त समय के ११ दांतुलियों से १२ अप १३ झूठ होवे तो मस्तक कटा लो १४ आपकी स्त्री के भाई को तो १५आधी रात पीछे ॥१५॥ १६अर्जुनसिंह के पास १७ बिना चेत

भूलिहु न आनौं नाथ हेलनमैं तास भ्रम ॥
राम२०१४ प्रभु ऐसैं व्है निरागस बचिहु रह्यो,
संहरि सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
भार उपकारकेसों स्वामीकौं नमाइ भयो,
बंचकता१ बीरता२मैं तैसो को पुरोगतम ॥ १६ ॥
ईस अरिसिंह सीस अवेदयो आगसँ न,
बित्त जो लयो सो दयो दंडमैं डरि बिसेस ॥
ऐसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुंडाउत्त,
पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
राघव१ सु मार्यो जसवंत२ सु बिडार्यो रान,
आदर्यो सलूमरि१ कुरावड़२ जुग२हि एस ॥
पीछैं रान मार्यो सो अजा१९१२नैं यौं उदैपुरमैं,
वर्त्तमानमैं है अब हम्मीराख्य वसुधेस ॥१७॥
दंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
बनि न सकी सो जसवंतसौं उचित बात ॥
सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
सूची कूरमनसौं दुहुँ२घाँ हित दरसात ॥
जैपुरपैं दिष्टनैं प्रकोप करिराख्यो जब,
यातैं माँहिं माँहिं मचे पंचनमैं उतपात ॥
नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ बंचक तो,
क्यों न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाला १० कुन्दी के पति अजितसिंह ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥१७॥ १२ भाग्य १३ ठग

सघन विगारिवेकौं राजगढवारो सोहि,
चोर१कौं लगावैं गृहस्वामि२कौं जगावैं चाहि ॥
ऐसी कछु मोहिनी मचाई कुहकेस[3] उहाँ,
जाहि बहिकावैं सो स्वकीय करि मानैं जाहि ॥
फोरि बहुरे[1]१कौं बखतावर२पैं डारैं फंद,
बंधि हित ता१सौं बहुरे२को गहिवो निबाहि ॥
रानी१कौं रुठाईं नाथाउत्त२न निकारैं नीच,
तिन१सौं प्रतारैं चुंडाउत्त२न मन मुधाहि ॥१९॥
मित्र बहुरे१सौं जसवंत२की मति मुराइ,
ताहि द्वार ता१सौं नृपमाता२की मुराइ मति ॥
गूढलै निदेस[6] ता१को बिप्र२ गहिवेकौं गढ,
माँहि रहिवेकौं गाढ कूरम बुलाइ कति ॥
राजागाँर द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
राजाउत्त तीन३हि जलेबचोक सज्ज राखि,
जंपी कहि ज्यों न जाइ यों रहो प्रबुद्ध अति ॥ २० ॥
जिनमैं प्रबीर धूलाधीस[11] रघुनाथ१ जानौं,
नंदन[12] दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
सारसोप ईस दूजो२ विक्रम[13]दिनेस२ सज्ज,
नाँती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

---

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशालीराम पहोरे को फोड़कर झलाय के कुमर बखतावरसिंह पर ४ अप्रसन्न करके ५ नाथावतों से चुंडावतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९ ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सब ओर के द्वार ८ बन्द कराकर ९ नगर के द्वार १० सावधान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दलेलसिंह का पुत्र और लछमणसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

तीजो३ बखतावर३ झलायको कुमर तत्थ,
मानों लय३ लैकैं सावधान अपनें मनुज ॥
रुद्धकरि राइकों जलेबचोकमैं ए रहे,
दीसे घोर भूसुर[२]के रोकिवेकों सुदनुज[२] ॥२१॥
रीति सोही स्वीकरि [३]प्रतापके पढाये रहे,
नाथाउत्त [४]संसदके अंतर धवल धाम ॥
इनमैं पुरोगं[५] रत्नासिंह१ पुर चोमूँ ईस,
दूजो२ पुर सामोदेस[६] नाम सुरतान२ नामँ ॥
भिन्न मत केते भनें इनकों तटस्थ इहाँ,
कोऊ चुंडाउत्तन बुलायो सूचि इहिं काम ॥
बिद्यागुरु भट्ट१कों निर्मित्त राखि नारव२नैं,
रूठि पकरायो यों बहोरा कुसहालीराम ॥
पीपलदा काका सत्रुसालकों दयो लै पुव्व,
चित्त सु बिरोध बखतावर कुमर चाहि ॥
मारिबे लग्यो व्हाँ द्विजको सो छलघात मंडि,
दुर्वचन[९] पावक प्रयोग पाती उर दाहि ॥
बिक्रमदिनेस तब कुमर निवारयो बदि,
मंत्री सब जानैं मर्म अबहि नमारो याहि॥
मंत्र३।१ कोस४।२ दुर्ग६।३नको यासों सब पाइ मर्म[१०],
मारिहैं सहज पीछैं कोउक बिधि समाहि ॥ २३ ॥
माधव महीप जब जाट[११]तैं समर जीत्यो,

---

१ ब्राह्मण के कैद करने को २ भूमि के दैत्य ॥ २१ ॥ ३ प्रतापसिंह के सिखाये ४सभा के भीतर महलों में रहे ५ अग्रणी ६ सामोद का पति ७ प्रसिद्ध तथा क्रोधी तथा निंदायुक्त ८ कारण ॥ २२ ॥ ९ खोटे वचनों रूपी अग्नि से हृदय रूपी पत्री को जलाकर १० यह ब्राह्मण मंत्री सब मर्म जानता है जिससे ॥ २३ ॥ ११ भरतपुर के जाट से

जैपुरके जोध परे धूलापति आदि जब ॥
राव१ रु बहादुर२ उभै२ पद मिलित राखि,
एह *उपटंक पायो बिक्रम तरनि तब ॥
बिप्र कुसहालीराम तामैं भो निमित्त बुध,
यातैं वीर बिक्रम सो चिंति उपकार अब ॥
मृत्युमुख पैठो यौं निकास्यो द्विज मंत्री कुल१,
धर्म२ सुद्ध व्है जो भूलिजाइ उपकार कब ॥ २४ ॥
पीछैं राजकाज पूछिबेकी बात बंध करि ,
देवगढ वासिनकौं मंतु कछु दै दबाइ,
भाखी जो रहो तो लहो अपनैं पटाकौ भोग,
आहु न बुलायैं बिनु अंगजाकौं अपनाइ ॥
रानीको पितासौं पूछिबोहू करि तस रुद्ध,
भाख्यो पिछिद्वार न बुलावहु जनक१ भाइ२॥
सूनु दुव२ रावरे न राखहु निज समीप,
संसद रहन देहु पंचनमैं पधराइ ॥ २५ ॥
ऐसो फंद डारिकैं नरूका रहि दूर आप,
राजकाज बाहिर जे भेदिक समस्त भट ॥
भाख्यो भूप माधव जो मंत्री निज कीनौं मुख्य,
बिप्र कुसहालीराम साधैं काम नीति बट॥
राजाउत्त वंचकनैं भेदिकैं पिहितैं रानी,
मल्लिनाग मंत्रमैं जो ह्वंत पकरयो प्रकट ॥
यातैं अंधकारमैं न रहिबौं उचित अहो,
नगरतैं निकासि निवारैं द्विज भै१२ निपट ॥२६॥

---

*राव बहादुरकी पदवी१ विक्रमादित्यने पाई२ कारण॥२४॥३ दोष४ पुत्रीको५ पूछना६ बंध करके७ पिता को और भाई को खिड़की पर मत बुलाओ८ सभामें॥२५॥९ नरूका प्रतापसिंह१० ठगों ने११ गुप्त१२ चाणक्य के मन्त्र में (नीति में) १३ ब्राह्मणका भय ॥२६॥

राजाउत्त१ नाथाउत्त२ चुंडाउत्त३ महिँराखि,
सेसन सिखाइ यौँ खुलाइ पुरके अररं[1] ॥
बाहिर निकसि स्वीयस्वीय[2] घरतैं बुलाइ,
सेससेस[3] सुभट प्रताप रहि अग्रसर॥
रानीसौं कहायो राजाउत्त जे चहत राज्य,
तिनको भरोसा न करो ए गिनौं सत्रुतर ॥
बिप्र नयपंडित[4] जो रावरो हितहि वंछैं,
ताहि निकसावहु नतो हैं हम पापपर ॥ २७ ॥
भेज्यो जो बिदग्ध[5] मरहट्ट१न समुह भूप,
भेज्यो जोहि मिच्छ२नके सम्मुह दै सुजभार ॥
भेज्यो अंगरेज३नके सम्मुह उचित भाखि,
तूही यह राजपद राखिबे अति उदार ॥
राजा१ भट२ सचिव३ प्रजा४ कौं थिर राखिबेको,
जाकै पन ताहि रोकैं जे जनैं पिहित[6] जार ॥
यातैं बुध[7] बिप्रकौं छुराइ करो मंत्री आप,
हाहा नहितो व प्रतिकूल भासैं होनहार ॥ २८ ॥
फीरोजाभिधान[8] सु महावत बुलाइ फिरि,
मिच्छ राजाउत्तन रखायो राजकाज माँहि ॥
बिप्र पकरायो सो बिरोध बिसराइबेकौं,
आप टरिबैठे अब रानीतैं प्रनत[9] आँहिं ॥
बंचक कहाइ द्विज कारातैं निकासिबेकी,
नारव प्रताप इत कृत्यमैं रहत नाँहिं ॥

---

१ कपाट २ अपने अपने ३ पार्श्व के उपयोगी (उचित) सुभटों को बुलाकर प्रतापसिंह अग्रणी रहा. ४ नीति चतुर ॥ २७ ॥ ५ चतुर ६ छिपेहुए जार से उत्पन्न है ७ पंडित ब्राह्मण को ॥ २८ ॥ ८ फीरोजखां नामक ९ नम्र है.

लोभिनकौं प्रेरिकैं उपद्रव करन लाग्यो,
जितजित जाके जोध लूटिबेकौं चढिजाँहिं ॥ २९ ॥
बिप्र गहिबेकी पहिलैं जो लिखी बंचकनैं,
रानीपास अरजी१ हुती सो बेग निकराइ ॥
एक१ लिखि पत्र निजनामको नवन उभै२,
पत्र कछुव्याज पुर बाहिर दये पठाइ ॥
यौं लिख्यो उदंत तुमहीकौं बंचिं बंचकनैं,
बिप्र पकरायो लेहु प्रत्यय लिखित पाइ ॥
हेरि हित यातैं पुर पैठहु प्रताप हनि,
बिप्रहिं कढाइदैहैं इत हम भद्रभाइ ॥ ३० ॥
सेखाउत्त१ खंगारुत्त२ आदि कछवाह सूर,
बाहिर हुते जे पत्र ते दुव२ लखि बिचारि॥
सेनानी हमीरदेव बंसी राजसिंह१ सान२,
उत्तेजक सूर१ सस्त्र २ पैनैं करे धक धारि ॥
बोल्यो करी कुहक प्रताप सो लखहु बीर,
डाँकी कढिजैहैं अब राज्यपैं गजबपारि ॥
तातैं तुम संग हम अज्जहि अनेहतकिं,
मित्रन विरोधी महा अधमकौं डालैं मारि ॥ ३१ ॥
पत्र सु महावतकौं बाहिरके पंचनमैं,
आतहि विचार्‌यो घात नारवपैं क्रुद्ध अति ॥
पत्र राजाउत्तन पठाइ इहिं अंतरमैं,

॥ २९ ॥ १ वृत्तान्त २ ठग ने ठग कर ३ इस लिखावट को लेकर विश्वास पाओ ४ राजगढ के नरूका प्रतापसिंह को मारकर ५ कल्याण की रीति से ॥ ३० ॥ ६राजसिंह ने सान से प्रेरेहुए शूर और शस्त्रों को तीक्ष्ण किये ७भक्षण करनेवाला (पापी) ८ गजब पटक कर ९ समय देखकर ॥ ३१ ॥

नोरवकौं नीचन जनाइ दीनी गूढ गति ॥
दूर कछु भेजि यातैं आपुनैं पिहित दूत[2],
पीछे बुलवाये ख्यात दोरतजे आपप्रति ॥
आइ तिन भाखी राजगढकौं लगे अहित,
राखिहो मही तो इहाँ धरिहै नृपहु रति[3] ॥ ३२ ॥
सोहि सुनि लैकैं मुख्य मुख्य उपहार[4] संग,
ओर प्रसरेही[5] राखि डेरन सहित एह ॥
कुंचकरि ताही निस चढिकैं प्रताप कढि,
छद्मघात[6] भीत छद्मी गो निज कथित गेह ॥
अयुत१०००० अनीकको अधीस राजसिंह १ अरु,
सेखाउत१।२ खंगारोत्त२।३ है मिलि हढ सनेह ॥
ताँकतेही[7] तदपि रहे छद्मघातक त्यौं,
पारदलौं[8] कढिगो प्रताप लै सु बिधि[9] लेह ॥ ३३ ॥
बाहिरके पंचन प्रताप कढिगो बिचारि,
सर्प१ हि गुमाइ लेखा[10]२ कूटिबेकौं सज्ज बनि ॥
मार१लूट२ घाँघाँ[11] तिन अधिक मचाई बिप्र,
सचिव निकासिबेकौं जोरकी मरोरैं[12] जानि ॥
आये पुर चाहैं तिन्ह राजाउत्त रोकि अध्व[13],
पैठन नदै ए प्रतिकूल पच्छभाव भनि ॥
व्है तदपि व्याकुल प्रजा सब पुकारी हाइ,
क्यौं न द्विज काढहु रे तुम१ हम२ भद्र[14] तनि ॥ ३४ ॥

---

१ प्रतापसिंह को २ छिपहुए दूत ३ जयपुर का राजा भी प्रीति करेगा ॥ ३२ ॥ ४ सामग्री ५ फैलेहुए ६ छलघात के डर से राजगढ चलागया ७ देखते ही रहे ८ पारा के समान ९ ब्रह्मा के श्रेष्ठ लेख ॥ ३३ ॥ १०रेखा (लकीर) ११ दिशा दिशा (ठाम ठाम) १२ मरोड़ (घमंड) करके१३मार्ग १४तुम्हारा हमारा कल्याण फैलाकर ॥ ३४ ॥

हाहाकार सुनि सु पिताके मत बाहिर०ह्वै,
हेरि अवकास भगिनी[1]को गूढलै हुकम ॥
सूनु लहुरो[2] जो जसवंतको गुपालसिंह,
लैगो निज आलयसों विप्रहिँ छुराइ छम[3] ॥
ताहि सतकारसौं कितेक दिन राखि तत्थ,
ताके गेह पीछैं पहुँचायो जाइ सूरितम[4] ॥
विप्लव[5] निवारयो तब बाहिरके पंचनपै,
पुरमैं न पैठनदै राजाउत्त सत्रुसम ॥ ३५ ॥
अररं[6] न खोलैं ए भलायके कुमर१ आदि,
औवो चहैं नारव प्रतापको बहुरि अत्र ॥
जाइ घर नारव न आयो देस१ काल२ जानि,
पापिनैं जदपि बुलायो दै प्रचुर[7] पत्र ॥
वेला तिहिँ प्रत्युत[8] प्रतापको प्रताप बढ्यो,
लेख जवनेसके लहे छिति१ चमर२ छत्र३ ॥
नालकी४ नृपत्व[9]५ त्रिहजारी३००० उपटंक आदि,
ऐसैं घर बैठैं भयो भूपति अघ अमत्र[10] ॥ ३६ ॥
पहिले समय कोपि बीकानेर भूप पर,
जोर डारि माँगे साह सैंहसके[11] दम्म जब ॥
रुप्पय कतिक लक्ख दैकैं अवसेस रहे,
तिनमैं प्रमेयँ[12] दयो बंदी इक१बंधु तब ॥
देयँ[13] सेस बहुरि दये न कछु व्याज[14] करि,
कोल टरिबेतैं यो वलिष्ट रुकिजात कब ॥

१ बहिन का छाने हुक्म लेकर २ रावत जसवन्तसिंह का छोटा पुत्र ३ समर्थ ४ अत्यन्त चतुर ५ राज्य का उपद्रव ॥ ३५ ॥ ६किवाड़ नहीं खोले ७बहुत पत्र देकर ८ उस समय उलटा प्रतापसिंह का प्रताप बढा और बादशाह की लिखा वट से ९ राजापन लिया १० पाप का पात्र ॥ ३६ ॥ ११ दंड के रुपये १२प्रमाण (रुपयों के प्रमाण में) १३ देने योग्य बाकी के रुपये १४ मिस करके

नाम नहिँ जान्यौं पै *कबंध जो जवन करयो,
सो नजीब खान सुत मान्यौं सौंपि गेह सब ॥ ३७ ॥
बीकानैर नृपको सनाभि[1] जो तजि स्ववंस,
कष्ट लहि कारामैं[2] कबंध बजिबो बिहाइ ॥
कथित नजीबखान नामक नवाव करयो,
पुत्र जाकौं अंकथित साहको हुकम पाइ ॥
या समय ताको उहाँ चलन बढयो अधिक,
अयुत१०००० तुरंगनसों वाहिनीकों अधिकाइ[3] ॥
जैपुरके जीतिबेकों साहको लै सासन सो,
अज्जपॅन[4] लज्ज छोरि सज्ज भयो अनखाइ ॥३८॥
केते कहैं सो सुत नजीबको नजब नाम,
सूचैं के नजीबसोही नाँ यह जनकँ[5] नाम ॥
दाबे देस दिल्लीके छुराइबेकों सज्जि दल,
प्रस्थित भयो सो जेर जैपुर करन काम ॥
साहसों लिखाइ दै कह्यो जो अधिकार सब,
नारव नरेसकों बुलाइ तानैं सह सांम[6] ॥
दिल्ली छितिँ[7] दाबी जाटसो तिहिँ अधिक दैकैं,
अमल प्रतापको[8] करायो तहाँ अभिराम ॥ ३९ ॥
संबतके एकऊन बीसम१९ सतक१०० समै,
कतिक गये१ रु भये२ देखो नये२ राज्य कति[9] ॥
पुरायापुर१ राघोगढ२ सोपुर३ नलपुरा४दि,

---

*जिसका नाम नहीं मालूम हुआ उस राठोड़ को यवन किया ॥३७॥ १सपिंडी (सात पीढ़ी के भीतर का भाई) २कैद में राठोड़ बजना छोड़कर ३सेना को बढ़ाकर ४आर्यपन की लज्जा छोड़कर ॥३८॥ ५ पिता का यह नाम नहीं है ६मिलाप के साथ नरूके राजा प्रतापसिंह को बुलाकर ७ भूमि ८ प्रतापसिंह को ॥३९॥ ९ उन्नीस सौ के शतक में कितने ही राज्य चलेगये और कितने ही नये हो

संकित बिनास सुज्जत सकल चकित चेत भूतन भजिय ॥
प्रिय जिय इतेन नारिन परिग भटन नेह नारिन तजिय१३

इम अनीक दरकुंच आय उत्तरि बृंदाबन ॥
संभरपति बुधसिंह मंत्र मंडिय प्रपंच मन ॥
रानिय रानाउति आदि अप्पन अंतेउर ॥
कामबिपिन ब्रज बीच तत्थ रक्खिय जुह्वातुर ॥
सजि कुंच वहुरि आलम सहित नृपति आय अकबर नगर॥
मिलतहि अर्जास संबोधि मुद जटित पिक्खि बीरन जगर॥१४॥

तेरीबेर अर्जास न्याय रह्टोरि सहिय दुख ॥
तेरीबेर अजीम थाल पज्ज्यो सु सबन सुख ॥
तेरीबेर अर्जीम पट्ट दिल्लिय चढिपानी ॥
तेरीबेर अर्जीम जन्यो ओर न तुरकानी ॥
इम इहिँ गिराहि छुंदिय अधिप सब दल दुग्ग सम्हारि लिय॥
मिलि सुतहिँ साह मंडिय महर कहि तुम बिजय प्रपंच किय१५

कछुक काल रहि तत्थ सेन पिक्खिय सेनापति ॥
दल सारध दुवलक्ख२५०००० तोप हज्जार१००० बिबिध तति ॥
सवालक्ख१२५००० तुक्खार जंग पक्खर जिन्ह डारिय ॥
दुवर्द्दीनन बर बीर बखसि गज गाम वढारिय ॥

म. प्रजा फेर बनायवेकों. अवर ओर. (आज्ञा विना). भूतन देहधारीनकें. भजिय भाजे. जिय जीव. इतनैं इत. ये कहे तिनके. नारिन नाडनमैं. परिग परे. नारीन नारी स्त्री. तिन संबंधी ॥ १३ ॥ इमइति ॥ अंतेउर अंतःपुर. कामबिपिनैं कामवन. जुह्वातुर अंतेउरको विशेषन. संबोध्यो. मुद मोदसों. जटित जरे. जगर कवच. "जगरः कवचोऽस्त्रियाम्" इत्यमरः॥ १४ ॥ तेरीइति ॥ रह्टोरि रूप नगरके राजा मानसिंहकी बेटी. तेरी माता तानैं. दुःख गर्भ संबंधी. चढि चल्यो. वही रह्टोरि तुरककों दई. यातैं कह्यो. महर कृपा. यावनी ॥१५॥ कछुकइति ॥ सेनापति बुधसिंहनैं. सारध (सार्द्ध) अर्ध सहित दुव लक्ख २५०००० अढाई लाख यह अर्थ. बिबिध अनेक प्रकार. तति पंक्ति. तुक्खार घोरे. जिन्हैं

ऐसैं बडे१ छोटे२ घनैं विगरे प्रमत्त अति ॥
लवपुर१ अलपुर२ ज्योंही टोंक३ जावरा४ रु,
पट्टनि५ पुरोग यों नये के भये भूमिपति ॥
उक्त काल नारव प्रताप इनहीमैं एह,
मिच्छनकों बंचिकैं महीप बन्यों छद्ममति ॥ ४० ॥
अल्प ग्रास याकै पहिलैं हो मंचहेरी६ आदि,
तानें देस१ काल२ छल३ बल४के सहाय तब ॥
जोर लहि छोटे१ बडे२ बावन५२ गढन जीति,
स्वीय कीनो दिल्ली सन दक्खिन२।३ प्रदेस सब ॥
अलपुर१ राजगढ२ तिमहि तिजारा४ आदि,
याके बसबर्ती भये सहर अनेक अब ॥
कर्मध्वज मिच्छ वा प्रतापकों सुहृद कीनों,
जैपुरकी जीतिलैन नजब रुक्यो न जब ॥ ४१ ॥
दाबे कछवाहन जितेक उत दिल्ली देस,
जीति तिन्ह जैपुर भूं जीतिबो नियत जानि ॥
मित्र वहुरातैं भेदि सचिव महावतकौं,
मित्र राजाउत्तन नयो जो लयो उर मानि ॥
संग तस दैकैं सब वैभव मुसाहवको,
तीनलाख३००००० मुद्रा दै उपायनकौं नय तानि ॥
पठयो जवन सो प्रतारक जवन पास,
भाख्यो जाइ टारो भय व्हैहैं नतो छिति हानि ॥ ४२ ॥
रानी१को निदेसलै सहाय जसवंत२ राखि,

गये१लाहोर२अलपुर३झालरापाटन आदि४यवनों को ठगकर ॥ ४० ॥५ मांचेड़ी ६अलपुर ७ आधीन ८ कमधज (राठोड़) से यवन होनेवाला ९ मित्र बनाया ॥ ४१ ॥ १० जयपुर की भूमि निश्चय ही जीतना जानकर ११ नजर करने को, नीति फैलाकर १२ताड़ना करनेवाले यवन के पास इसयवन महावतको भेजा॥४२॥

तब राजाउत्तन महावत यौं भेज्यो ताम[1] ॥
प्रीतिपत्र भेज्यो संग यौं लिखि प्रतापप्रति,
करिये नरेस[2]१को रु मित्रन२को यह काम ॥
जैबोहु न भावतो महावतके गेह जाको,
सो अब समुह आइ साधिवेकौं छल साम ॥
मिलि उरलाइ एक१ गजपैं महावतसौं,
बाम२ अध[3] बैठि लैगो मीन१ ज्यौं बंडिस[4]२ बाम ॥४३॥
बस्त्रालय[5] आइ तास आसन अधर[6] बैठि,
पीछैं जाइ संग लै जवनकौं[7] जवन पास ॥
आन्यौं उपहार[8] उक्त भेट सु१ कराइ इभ२,
अस्व३न समेत रु दिखाइ आगमन आस ॥
पीछे आइ भाखी यौं महावत प्रतापप्रति,
दाबे देस जैपुरके छोरहु जिम स्वदास ॥
लेहु नित्य मुद्रा सतपंद्रह १५०० नृपालयतैं[9],
ठहैन जिम हे प्रबुद्ध आपुनैं मिलत हास ॥४४॥
जोरि तँहँ बंचक[10] प्रतापनैं कपट जाल,
घर बिधि ठानि घोर करन बिसासघात ॥
लोभी उक्त मानि ताकौं आगरानगर लाइ,
पिहितैं[11] उपाय करयो ताहीको पुनि निपात[12] ॥
तोप१ गज२ बाजि३ द्रव्य४ आदिक बिभव ताको,
दाबि सब राख्यो प्रतिकूलता दृढ दिखात ॥

---

१ तहां २ जयपुर के राजा का ३ नीचे बैठकर ४ कांटा मच्छी को पकड़ी लेजावै जैसे ॥ ४३ ॥ ५ डेरे में ६ गादी के नीचे बैठकर ७ महावत को उस नवाब के पास लेगया ८ सामग्री लाया था सो ९ राजा के घर से, जिस में हे चतुर अपने मिलने की हसी नहीं होवे ॥ ४४ ॥ १० ठग ने ११ छिपेहुए उपाय से १२ उस महावत को मारडाला

ऐसेही प्रकार सेखाउत्तनके देस इत,
ओज[1] फैल्यो तिनको मनोहरनगर आत ॥ ४५ ॥
तिनकों दबावन[1] फबावन सचिवता[2] रु,
राजाउत्त कुमर चबावन[3] ठहै[1] जमराज ॥
पन्नन मिलाइ निज मोचक सुहि गुपाल,
कीनों खुसहालीराम वहुरा लखहु काज ॥
रानीकों मनाइ बखतावर इनन रीति,
टाटीकोसो ओट सेखावाटीको बिरचि ब्याज[3]॥
बाहिरके बीर भेजिबेकों पुरमैं बुलाइ,
सीखदैन तिनकों सज्यो अब कपट साज ॥४६॥
नाथाउत्त[1] निखिल समज्ज्यसद्म[1] राखे सज्ज,
चक्रपति[2] खंगारोत[3] ए थित जलेबचोक ॥
कुमरको काका[4] वेग तबहि बुलायो वह,
घातक बिचारि इन्द्र पास राख्यो ताही ओक[6] ॥
राजद्वार बाहिर बजारमैं सकल सेना[5],
राखी करि सज्ज काढिजाइ तो रचन रोक ॥
सरदकीडोढी पंथ राउत्त[6] पठायो सद्म,
लैन बाँधिराखी दुहुँ[2]घाँ भरि प्रबल लोक ॥ ४७ ॥
पुरमैं अवाई यौं मनोहरपुर[1] पुरोग,
पीछे लये थान सेखाउत्तन खिनैं[10]हिं पात ॥
यातैं सेखावाटीपैं इहाँके भट[1] ओ अनीक[2],

१प्रताप ॥४५॥२कुलाय के कुमर के चबाने को ३काल ॥४६॥४सब नाथाउतों को सभा के मकान में सज्जित रक्खे ५ सेनापति ६ उसी स्थान में ७ जयपुर के महलों की डोढी का नाम ८दराउत्त जसवन्तसिंह को उसके घर भेजा ॥४७॥६ आदि १० समय पाते ही ११ सेना, सेखावतों को विजय करने को मीकुलेने

आये सीखलैन उहाँ जय करिवेकौं जात ॥
जासमैं कुमार[1] व्है कुमारं[2] नृपकी हजूर,
सीखलै बिगत संक आपुनी हवेली आत ॥
संसदं[2] निकेत हुते तिनतैं बिधेयं[3] साधि,
सीमातैं नृजान बैठि निकस्यो अकसमात ॥ ४८ ॥
आवत जलेबचोक अंतर कुमर एह,
कटकं[4]अधीस राजसिंह यौं दिय कहाइ ॥
आपतैं न छानी[5] हम जात अवही पै इहाँ,
रावरो रहस्य कछु इच्छत करहु आइ ॥
कुमर कहाइ तुम क्रमहु[6] हवेली होइ,
एतेमैं हरोल[7] ओक देख्यो लोक उफनाइ ॥
बाहिर बजारकीहु सुद्धि[8] पहुँची व्हाँ सुनौं,
कुसलपिनाती[9] आज कुसल न जान्यों जाइ ॥ ४९ ॥
बेनीतिक[10] आपुनौं मुराइ सो सुनत बेर,
बोल्यो टेरि आवत मैं मंत्रकरिहैं अबहि ॥
चोक[1] बिच चोकी[1]सिकताको[11] कोट छाती सम,
लोक बहु ताके द्वार मारनकों सज्ज लहि ॥
कोटतैं नृजानैंहिं भिराइ[12] यह पैठो कूदि,
ओरनकों छोरि ढिग लीनो राजसिंह अहि[13] ॥
पूगे संग पंद्रह१५ तदीयं[14] भट ताही पंथ,

आई है॥ १ जयपुर के बालक राजा से २ सभा के मकान में ३ उचित रीति साधकर ॥ ४८ ॥ ४ सेनापति राजसिंह ने ५ एकान्त चाहता हूं ६ हवेली होकर जाना ७ आगे के स्थान पर लोक बढता हुआ देखा ८ खबर ९ आज कुशलसिंह के पोते (कुमर बख्तावरसिंह) का कुशल नहीं दीखता ॥४९॥ १० विना नीतिसे अपना पीछा फेरना सुनते ही "डिंगलभाषा में नीति को नीत कहते हैं" जिसके साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय करने से नीतक हुआ है ११ धूलकोट १२ यी को भिड़ाकर १३ राजसिंह रूपी सर्प को पास लिया १४ उस कुमरके वीर

कुमर सुनाई कटकेस अब देहु कहि ॥ ५० ॥
काका सत्रुसाल ढिग देखि पूछ्यो आये कब,
भाख्यो तिहिँ याहीबेर आयो हुत हेमतीज ॥
राजसिंह भाख्यो आप क्यों यह बिगारो राज्य,
बाँर कब खात हाहा खेतमैँ फलित बीज ॥
दिवस१ बिभावरी२ घटावत चलन देखो,
सोतो रन रावरी खटावत खलन खीज ॥
परगनौं दाबे आठ अयुत८००००प्रमेय धर-
नीसके निदेस बिनु को करैँ यों हठ धीज ॥ ५१ ॥
बल्लनादि गाम१ तीन अयुत३००००को दाव्यो दंग,
सोपै भाखि भोजनकौं चाकरी बिनुबिचारि ॥
पिप्पलदा संटैं पंच अयुत५०००० प्रदेस पुनि,
सासन बिनाँहि दाबे सासनसम सम्हारि ॥
कीलिँ बहुराकौं१ दुष्ट नारव२कौं मित्त कीनौं,
मित्र कीनौं जानैं सो महावत सचिव मारि ॥
वैभव धनीको दाबिराख्यो स्वीय सम्मतिसौं,
को फल लहोगे अहो पापिनमैं बंट पारि ॥ ५२ ॥
बैन कटकेसको यहै सुनि कुमर बोल्यो,
अबहि सुधारो आप बिरच्यो हम बिगार ॥
काकाकी कटारी बही पीठिपैं इतेक बिच,

१ हे सेनापति ॥ ५० ॥ २ शीघ्र ३ खेत के फलेहुए बीज को थाड़ कब खाती है, दिन ४ रात में राज्य को घटाने का आप का चलन देखो आपकी यह खीज दुष्टों पर युद्ध में खटाती है ५ अस्सी हजार के प्रमाण वाले परगने राजा की विना आज्ञा दवाये हैं ॥ ५१ ॥ ६ विना ही आज्ञा उदक के समान रख लिया है ७ बहोरा को कैद करके ८ नरूका प्रतापसिंह को ॥ ५२ ॥ ९ सेनापति का वचन

क्रोड़[1] बखतावरको भेद्यो सहसा दुसार ॥
भिद्रवत[2] माननलै जैपुर चमूँप जब,
तीजे३ पैंड पूगि ताकैं महँत[3] करयो प्रहार॥
कुमर कटारी राजसिंह हिय भेदि कढी,
प्रमदा[4] कटाक्ष जैसैं छैल्लनके[5] उरपार ॥ ५३ ॥
क्रोड़ कटकेसको विदारि पारि यौं कुमर,
बैठो चढि ऊपरं निजासन[6] तिहिं बनाइ ॥
रंगि सत्रुसोनितसौं सूछनकौं भारूयो राज्य,
जात बिगरयो जो यौं सुधारयो भलो अपनाइ ॥
ऊरध१अधर२ ऐसैं दुहुँ[7]न बिहाय असुँ,
आयतिउदर्क[8] जथा उद्यम जस जनाइ ॥
सत्रुसाल पारदलौं[9] सिटकि सिटाइ स्यार,
मारि याकौं ताहीखिन गेह गो सुँर[10] मनाइ ॥ ५४ ॥
त्यौं भट पचीस२५ इत१ उत२के परे तँहँ,
सपिंड१ असपिंड२ रु सगोत्र३ असगोत्र४ संग ॥
द्विगुन ५० समीप संख्य[11] घायल भये दुदिस,
आयुबल केते बचे तिनमैं अबस अंग ॥
बनिक धनिक राखि नाव धनकाज बोरि,
जियनचहैं ज्यौं मूढ नाविक पकरि मंग[12] ॥
बिद्ध[13] बखतावर यौं पहुँचि पर्लावत[14]कौं,

१भुजान्तर(छाती) २जयपुरका सेनापति प्राणलेकर भागा तब ३नाश करनेवाला ४स्त्री के कटाक्ष ५छैलों (रसिकों) के ॥५३॥ ६राजसिंह को अपना आसन बनाकर ७इसप्रकार ऊपर नीचे दोनों ने प्राण छोडे ८आनेवाले समय का फल ९पारे के समान १०देवताओं को मनाकर "हम ऊपर लिखआये हैं कि संस्कृत में देवता शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोकरूढि के कारण पुल्लिंग लिखते हैं" ॥५४॥ ११संख्या (गणना) १२नाव का मस्तक पकड़कर नावड़िया (खेवटिया) रहै तैसे १३वेधन किये हुए (घायल) कलाय के कुमर बखतावरसिंह ने १४युद्ध में आगते हुए राजसिंह को

रंग१ राजसिंह२ राख्यो सूँछ१ न कुपित रंग२ ॥ ५५ ॥
पीछैं खंगारोत्त१ न उपेत नाथाउत्त२ननैं,
चुंडाउत काढे अधिकार अपनों बिचारि ॥
राख्यो मुख्यमंत्री बहुरा सो खुसहालीराम,
धीधन जो जाके पच्छ सोही दच्छ हिय धारि ॥
रानीके प्रकोष्ठ निज जामिक सुभट राखि,
रैन१ सुरतान२ सज्ज सस्त्र अपनैं सम्हारि ॥
पित्थल१ नरेस सह सोदर प्रताप२ पोतें,
माँहिं१तैं निकासि माँहिं२ राखे अन्य मद मारि ॥५६ ॥
पावै नाहिं मिलन प्रसूँ१ सुत२ परस्पर ज्यों,
आपुनैं भटन बीच भ्राता राखि यों उभय२ ॥
करनलगे ए बिप्र सम्मतिसों राजकाज,
राजाउत्त काढे सेस बाजी जिम हीन रँय ॥
तापैं इन नारव प्रतापकौं मिलाइ तब,
घोसा१ पुर लूटयो दोरिं अनयमैं जानि अय ॥
नगर निवाई१।२जो झलायके भटन जाइ,
जेर निज कीनों ठानि ग्राम२।३न समेत जय ॥ ५७ ॥
कीर्त्तिसिंह सासक झलायको जरठ काय,
कुटिल हुतो जो अंध तैसे महापाप कारि ॥
सूनु बखतावरसो सोयो सूरसज्जा सुनि,
अंधता बढाई अब रोइरोइ बोधं आरि ॥
बेगहि मरयो सो लोभतैं निम कुल त्रिगारि,

॥ ५५ ॥ १ बुद्धिमान २ डोढी पर अपने पहरायत ३ बालक भाई प्रतापसिंह सहित ॥ ५६ ॥ ४ माता और पुत्र ५ वेग रहित घोड़ा निकाला जावै जैसे ६ अनीति में अपना भाग्य जानकर ॥ ५७ ॥ ७वृद्ध शरीरवाला ८बखतावरसिंह जैसा पुत्र ९ ज्ञान का शत्रु

ताहूके पिनाती उनमत्त भयो पापपरि ॥
जाहि प्रभु जानौं मर्‌यो आपुनें समयमाँहिं,
सासक झलायसो बहादुर भो नै बिसरि ॥ ५८ ॥
पीछैं कतिवर्ष खोइ हाथतैं झलायपुर,
आलंबनैं हीन लह्यो दीनलौं दुख अछेह ॥
ईरखातैं तबहु झलायपुरवारे द्विज,
दीन बहु मारे१ करिडारे बहु व्यंग देह२ ॥
केही भ्रष्ट पारे जवननतैं मुख थुकाइ३,
गेरी तिनकी तिय जनंगमं जनन गेह४ ॥
मनुजको मारिबो कुतूहल पतित मान्यौं,
ऐसो भयो प्रथित बहादुर कथित एह ॥ ५९ ॥
भावी१ सो उदंत बर्तमान२ अब भाख्योजात,
रुष्ट खुसहालीराम इनकौं बिगारि इम ॥
दाबे बखतावर जे दाबे पुनि दंग१ देस२,
बिद्यागुरु भट्ट१ बहुरा ए जुरे एक१ जिम ॥
दोउ२नके नामके चलाये व्यवहार दल,
कूरम कितेकनकै न रुची तथा प्रतिमं ॥
पंत्ति१नमैं राखे हैं२ बरूथ दादूपंथि२नके,
सैंादि१नमैं राखे दुव२ दक्खिनी२ अनीक सिंमं ॥ ६० ॥

१उसका पोता२ऐ प्रभु रामसिंह उसको अपने समय में मराहुआ जाना ३ वह झलाय का पति बहादुरसिंह नीति को भूलनेवाला (मूर्ख] हुआ ॥५८॥४बिना आधार५ हीननासिका नकटे करदिये६चांडाल मनुष्यों के घरों में७उस नीच ने मनुष्यों का मारना खेल समझलिया था ८ वह बहादुरसिंह ऐसा प्रसिद्ध हुआ ॥ ५९ ॥ ९ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है १० क्रुद्ध [क्रोधयुक्त] ११ पत्र १२अपने सदृश होना नहीं रुचा१३पैदलों में१४सेना१५सवारों में१६समान॥६०॥

इंगलिया अंबा१ सातसहँस७००० तुरंगनतैं,
कीनौं निज आश्रित फिरंटन विजय काज ॥
दक्खिनी चालुक्य जसवंतराव२ नाम दूजो,
बाउलावजत सोंपे सप्तिन इते७००० समाज ॥
सूचित पदाति१ सादी तंत्र निज राखि तिन,
काढि राजाउत्तनकौं लरि रु लुपाइ लाज ॥
गेरि भय पीछे लै निवाई१ भगवंतगढ२,
जैपुरको अमल जमायो रामर२०१४ नरराज ॥ ६१ ॥
पित्थलनरेसहिँ चढाइ ए सचिव पीछैं,
बिद्यागुरु भट्ट१ अरु बहुरा२ बैंल बनाइ ॥
संग भट नाथाउत१ खंगारोत२ आदि सजि,
जाल जरि बिंट्यो मनोहरपुर१हिँ जु जाइ ॥
पहिलैं मनोहरपुराधिप सगतसिंह१,
नाथ२ निज अँगज उपेत छोनि छक्र छाइ ॥
दर्प कछु कीनौं ज्येष्ठभाव६ कहि जैपुरतैं,
माधव महीप समैं दायाँदत्व७ दरिसाइ ॥ ६२ ॥
तबही सगतसिंह१ नाथ२ ए पिता१ तनय२,
माधवनरेस काढे दोउ२नको मदमारि ॥
अमरसर१ रु मनोहरपुर२ थान उभैर२,
सीमा सब सहित छुराये छर्म डर डारि ॥
वर्तमानमैं बलि उभैर२ ए आइपैठे अब,
राजाकौं चढाइ लाइ मंत्रिननैं रचि रारि ॥

---

१ मरहठा जाति विशेष २ इतने ही घोड़ों के समूह से ३ हे राजा रामसिंह ॥ ६१ ॥ ४ सेना बनाकर ५ अपने पुत्र सहित ६ जयपुर से पाटवी होना कहकर ७ भाईपन दिखाकर ॥ ६२ ॥ ८ बडा भय डालकर

दै भय पिता१ सुत२ वे पीछे निकसाइ दये,
अमल जमायो पीछो आपुनों जस उबारि ॥ ६३ ॥
पित्थल नरेसकी सवित्री इत ब्याधि पाइ,
जैपुर असाध्य भई ताकी सुद्धि जानतहि ॥
मंत्रीद्वै२हि तासों द्वै२हि पुत्रन मिलैबो मानि,
लाये मोरि भूपतिकों प्रत्यह३ प्रयान लहि ॥
अंतेउर आपुनों प्रबंध करि द्वै२ही पुत्र,
मातासों मिलाये कहि आये लाये जीति महि ॥
तीजे३ दिन तासों तज्यो ढुंढाउति काय तिम,
साधारन रीति भयो कृत्य पिछलो सबहि ॥६४॥
जाट१ जवनन२कै मच्यो यों पुर डिग्ध जुद्ध,
पूगो ह्वै तटस्थ तँहँ नारव पतो१ नृपहु ॥
जैपुरके तंत्र दक्खिनी जो जसवंत२राव,
बाउलासो चालुकहु गो तह सदर्प बहु ॥
मंत्र करि बिजन पता१ रु जसवंत२ मिलि,
करट कनीनिकालौं द्वै२घाँ बनिसूचकहु ॥
मायापटु जट्ट१नतैं पिहित२ मिलाइ मन,
मिच्छ१नतैं प्रकट२ मिलेही रहे मंत्र महु ॥ ६५ ॥
मंत्री बहुरानैं तब जाइ तँहँ मिच्छनसौं,
कामाँपुर पीछो लयो मंग्यो बसुं भेट करि ॥
बचन कैलंबन प्रतापको हृदय बेधि,
आयो बिप्र जैपुर यौं लै जस दबात आरि ॥

॥ ६३ ॥ १ राजा पृथ्वीसिंह की माता २ प्रतिदिन गमन करके ३ जनाने में ॥ ६४ ॥ अलवर का राजा ४ नरूका प्रतापसिंह ५ बहुत घमंड से ६ एकांत में ७ काक पक्षी के नेत्रों की पुतली के समान ८ जाटों से छाने मन मिलाकर ९ मधु[मीठे]मंत्र से ॥६५॥१० मांगा जितना धन देकर ११ वचनों रूपी बाणों से

इभ सहँस इक१०००ऐंचन निगड बहु निसान फहरानि बनि ॥
इन सब सम्हारि लुंदिय नृपति प्रति जवनेस प्रयान भनि ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अंतहपुर धन आदि सब, राज विभव रखि तत्थ ॥
अंबक डक वज्जिग बहुल, संगर पढत समत्थ ॥ १७ ॥
अप्पन दल रु अजीम दल, सब एकत्त सम्हारि ॥
करिय कुंच तजि आगरा, रोपन आजवरारि ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अध्वरक्षितवृन्दावनबुधसिंहावरोधबहादुरशाहाकबरपुरागमनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदित एकोनपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २४९ ॥

दोहा—मेचक फग्गुन साह मरि, इन सुनि मधु अवदात ॥
आवत विते मास दुव२, अब आषाढ प्रभात ॥ १ ॥
आजम कछुक विलंब किय, साहबहादुर भाग ॥
दल निवाहि आनप दिनन, आवत भुव अनुराग ॥ २ ॥
तपन जेठ दिनकर दुगह, आजम कटक दुरंत ॥

जिनवैं. दुवदीनन दोऊ दीन हिंदू मुसलमान. तिनके. इभ हस्ती. निगड जंजीर. फररान फरकनों ॥ १३ ॥ दोहा ॥ अंतहपुरइति ॥ तत्थ तहां [आगरामैं] अंबक वाद्यविशेष. बहुल घने. संगर युद्ध ताको ॥१७॥ अप्पनइति ॥ स्पष्ट ॥१८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में मार्ग में बुधसिंह के जनाने को वृंदावन में रखकर बहादुरशाह के आगरे आने के वर्णन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ उनचास २४९ मयूख हुए ॥

मेचकइति ॥ मेचक कृष्णपक्ष. फग्गुन फाल्गुन मास संबंधी तामैं. साह औरंगजेब. मरि मरयो. इन या आलमशाहनें. सुनि सुन्यो. मधु चैत्रमास ताके अवदात शुक्ल पक्षमैं ॥ १ ॥ २ ॥ तपनइति ॥ दुरंत कष्टसों गयहैं अंत जाको ऐसो. पंगु जयचंद्र. कन्यकुब्ज नगरको राजा राठोर, पृथ्वीराज चोहानको प्रतिपक्षी, अग्गैं बारहसै अडतालीस १२४८ के साल विद्यमान हो सो जानिये

खीजि इत जुज्झत नवाब सु नजबखान,
डिग्घगढ पैठो जाइ भाजिगये जट्ट डरि ॥
सूनु लहुरो जो रविमल्ल१को नवलसिंह१।२,
जट्टराज सोतो पहिलैं गो काल ज्वाल जरि ॥ ६६ ॥
पाकपन केसरी३।१ तदीय सुत पायो पट्ट,
काका रनजीत२।३कौं न भायो यह नीति क्रम॥
भावीकाल याहीतैं भयो रन भरतपुर,
दूजी२ बेर दीनों जो छुराइ अंगरेज छसैं ॥
पीछो जयनैर इत नारव पता प्रैबिसि,
सूझ्यो पुनि मायावी समस्तनकौं सुह्र सम ॥
वंचककौं भायो सो दुवायो पटा विप्रननैं,
पित्थलसौं भाख्यो स्वामि सेवक पता परम ॥ ६७ ॥
जाससैं पताको भाग्य ऐसो अनुकूल जान्यौं,
ठानैं प्रतिलोम१ जोजो सोसो अनुलोम२ ठाइ ॥
प्रत्युत प्रमान दिल्ली१ जैपुर२ भरतपुर,
भूमि इन तीननकी लौं सुहि सुहृद भाइ ॥
मान्यौं सोहि दिल्लीको वकील द्विज मंत्रिननैं,
जंपी मिच्छ कामाँ पहिलैं ज्यौं जिन पैठिजाइ ॥
साक दंत धृति १८३२तैं सुपर्व धृति १८३३ संवतलौं ॥
ऐसे मचे जैपुर अनेक उपद्रव आइ ॥ ६८ ॥
मंत्री दुव२ बहुरि चढाइकैं महीपतिकौं,
दाबी छिति लैन गये साकंभरद्रंगैं दिस ॥

१ ल्होड़ा [छोटा] पुत्र ॥ ६६ ॥ २ वृद्धावस्था में ३ समर्थ प्रतापसिंह ने ४ प्रवेश करके ॥ ६७ ॥ ५ उलटी वार्ता कार्य करता था सो ६ सुलटी होती थी ७ उलटा ८ मित्र ९ कामा नगर में ॥६८॥ १० सांभर नगर की ओर

मान[1]वंस खंगारोत कतिक रहे सुरारि,
वेढ तिन्हँ बिखम रचाइ रारि धारि रिस ॥
कूरम लरे न तहाँ प्रभुके बिजय काज,
नारव मिलाइबेकी ईरखा धरैं अनिसैं[2] ॥
यातैं भ्रम राखि मंत्री लै नृप निलय आये,
मान घटिबेकी जानि दोरहु ठानि कोहु मिस ॥ ६९ ॥
जैपुरको चाकर कह्यो जो जसवंतराव,
बंसमैं चा[3]लुक्य मरहट्ट बाउला बजत॥
बिप दम्म लक्खन चढाइ ताके वेतन[4]मैं,
लेखकरि मालपुरा१ टोडार२ द्वै२ दये लजत ॥
ग्राम है भेंटनकै जे दोउरनकी सीमगत,
राखितिनकै ते कह्यो टारि इनकौं रजत[6]॥
सेस सब ग्रामनतैं लेहु कर सासक[7]है,
भूपतिकौं राखि सिर स्वामिधर्मतैं भजत ॥ ७० ॥
जानी जसवंतराव साँसना यहै जदपि,
मानी इम मानी हम दिल्ली दायभागी मानि ॥
बापुरे ए करि न सकैं कछु अधिप बजे,
याहीतैं करैं ए ओट आश्रित हमहिं आनि ॥
मालपुरा१ टोडार२ असे मंदसों सम्हारि सठ,
चालुकनके जेते हमारे यह पहिचानि ॥
अबहु अधीस कीनौं मैंहि इन२को अधिप,
करिहै मदीयैं[10] बस ग्रामनके मेरी कानि ॥ ७१ ॥

---

१ राजावत २ निरंतर ॥ ६९ ॥ ३ सोलंखी ४ तनख्वाह में ५ उमरावों के ६ रूपा (हांसिल के रुपये) ॥ ७० ॥ ७ यह हुक्म है तो भी ८ दिल्ली के दावीदार [बरट] करानेवाले ९ गर्व से १० मेरे आधीन ॥ ७१ ॥

दर्प्पसह दक्खिनी बिचार मन ऐसो बांधि,
मालपुर१ टोडा२ वस जे हे तिन कूरमन ॥
निकट बुलाइ कह्यो मैं हे तुमरोतो नृप,
जेहो तुम टोडा१ मालपुर२के निवासिजन ॥
बत्त यह सुनत न भाई मन बिप्रनके,
पक्करन लागे याहि टारनको एक पन ॥
यातैं पुर टोडासौं प्रमत्त जसवंत आइ,
[1]सम्मद बलित भाख्यो एह हमरो सदन[2] ॥ ७२ ॥
औनै[3] चालुकनको सदासौं यह टोडा आँहि[4],
ऐसी कहि अंद्रिपैं बनैबे लग्यो दुर्ग इक१ ॥
मालपुर१ टोडा२के प्रदेसबासी कूरमन,
अटकि सुनाइ भू हमारी तुम आधुनिक[6] ॥
जैपुरतैं चक्कहु बुलायो जो प्रबल जानि,
करि तब सज्ज भेज्यो संग२ भट दै कतिक ॥
आयो चक्क यापर बसंतको बिडंबक ह्वै,
केतु१ [9]सहकार२ पीलु[10]१ पब्बय२ नकीब१ पिकं[11]२॥७३॥
काढ्यो जसवंतराव आतहि प्रघात[12] करि,
बदन बिगारि गयो लुट्टत सरनि[13] ग्राम ॥
बनिक१ बिरोधी प्रतिमल्ल[14]२हिं जिम बिहाइ,
कोप बालकनपैं करैं सफल कछु काम ॥

१हर्ष से घिरा हुआ२हमारा घर ॥७२॥३ सोलंखियों का घर४है ५पर्वत के ऊपर ६ अभी के आयेहुए हो ७ सेना ८ वसन्त ऋतु का भ्रम करानेवाली होकर ९ सेना में ध्वजा है सोही आम्र वृक्ष है १० हाथी है सोही पर्वत है ११ नकीब है सोही कोयल है ॥ ७३ ॥ १२विशेष बात करके १३ मुख बिगाड़ कर मार्ग के ग्राम लूटता गया १४ जैसे, बनियां मुकाबला [सामना] करनेवाले को छोड़ कर बालकों पर अपने कोप को सफल करैं तैसे

ऐसैं प्रतिबसथ झलाइ१पुर आदिनके,
इंद्रगढ२ कोटा३के रु सोपुर४के धन१ धाम२ ॥
लूटत गयो सो दुष्ट बुंदेलन देस लग,
तक्कूको भतीज बापू१ भेग्यो तँहँ२ जाइ तामैं ॥ ७४ ॥
ताहिसंग लैकैं आइ दोउ२न बहुरि तैसैं,
देस लूटि सोपुर१ करोली२के गढाइ दल ॥
दिल्लीकेर चाकर भए ए जाइ पीछैं फेरहि,
खीजे अब जैपुरपैं बिग्रह बिथारि खल ॥
वेद गुन अष्ट इंदु १८२४ संवतके सुचि३ बीच,
मिच्छन मिले रु पीछैं जैपुरपैं बंधि बल ॥
हिंडोनि१ रु द्योसा२ खोहरी३के बनैं हाकिम ए,
छीनिलीनैं तीन३हि प्रदेस केही गेरि छल ॥ ७५ ॥
तीस धृति १८३० संबततैं हायन सअर्द्ध३½ त्रय३,
जैपुरके देस रहे ऐसे बहु बिघ्न जब ॥
दयाराम पाईतैं पुरोहित इतेक दिन,
ताकत खिनहिं काढे जैपुर४ अतंत्र तब ॥
बिद्यागुरुभट्ट१ बहुरा२ इन उभैं२ बुधन,
उचित बिचारि आदिरीति व्यवहार अब ॥
भूसुरके संगहि पठायो मिथोहित८ भाखि,
सज्ज करि टीकाको बिधेय उपहार सब ॥ ७६ ॥
बेद गुन सिद्धि ससि १८३४ संबतके भाद्र६ बिच,
ऐसैं व्यवहारी जन जैपुर१तैं बुंदी२ आइ ॥

१ ग्राम २ तहां॥७४॥ ३ आषाढ मास में ॥ ७५ ॥ ४ साढे तीन वर्ष तक ५राज्य कार्य की चिन्ता से रहित होकर जयपुर में रहा अथवा किसी के आधीन नहीं रहकर समय देखता रहा ६ पंडितों ने ७ ब्राह्मण दयाराम के साथ ही ८ परस्पर का हित कहकर ९ उचित सामग्री ॥ ७६ ॥

एक१ दंती एक१ मनिभूखन तुरंग उभै२,
लीनैं सिरुपाव उभै२ संसदं३ निवेदे लाइ ॥
बालक नरेसकों दिखाइ ए कथित विप्र,
स्वीकृत कराये रीति सचिवकों समुझाइ ॥
आन्यों व्यवहार ताकों अर्व१ सिरुपाव२ अर्प्पि,
दीनी सीख जैपुर दुहूँ२घाँ प्रीति दरिसाइ ॥ ७७ ॥
विष्णुसिंह२००।२ भूप जब बुंदीके तखतबैठो,
तबतैं पुरोहित गयोहो जयनैर तिम ॥
ऐसे बहु विघ्ननतैं अबलों रह्यो सो उहाँ,
अविच्छिन्न बात यातैं भाखी उतकीहि इम ॥
प्रीतिको लिखाइ पत्र जैपुर महीपतितैं,
जा द्विजनैं लाइकैं निवेद्यो टीका संग जिम ॥
पीछे जुर्यो नेह पहिलैं ज्यौं दुहुँ२ओर पुनि,
साधक सुबुद्धिनतैं स्वामि हिय होत हिम ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम लाइ द्विज, सब टींकाको साज ॥
बुंदी१ जैपुर२ दुहुँ२न विच, किय पीछो हित काज ॥ ७९॥
अति विलंब हुव ताहि इम, सूच्यो कारन सोहु ॥
अब क्रमकारि सुनिये उचित, पहु६ उदंत पहिलोहु ॥ ८० ॥
श्रीजित किय जात्रा सफल, ज्यौं बदरी बन जाइ१॥
प्रभु७को प्रथम विवाह पुनि, सुनिये कहत सहाइ ॥ ८१ ॥

१ सुन्दर २ सभा में नजर किये ३ टीका लानेवाले को एक घोड़ा ॥ ७७ ॥ ४ निरन्तर ५ हृदय ठंढा होता है ॥७८॥७९॥ ६ हे राजा अब क्रम से पहिला वृत्तान्त सुनो ॥ ८० ॥ ७ प्रभु (विष्णुसिंह) का ॥ ८१ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे गृहीतसैन्यमेदपाटसुभटसलूम्बरेशराउत्तकुरावडेशराउत्तदेवगढ गमनस्वपराजयप्रत्यागमन १ कुरावडेशार्जुनसिंहमाधजीसिंध्याश्याल कच्छलघातहनन २ राजगढनारुकप्रतापसिंहच्छद्मजयपुरखुशाली रामकारानिपातनखुशालीरामवधप्रवृत्तझलायेशकुमारबखतावरसिं हतात्पितृव्यशत्रुशल्यवारण ३ जयपुरनिष्कासितदेवगढेशजसवन्तासिं हनारुकप्रतापसिंहभट्टविद्यागुरुकारामोक्षण ४ फीरोजखांनाधोरण द्वाराराज्ञीमेलितसेखाउतादिज्ञातच्छलघातनारुकप्रतापसिंहप्रच्छन्नप लायन ५ आक्रान्तदिल्लीजयपुरभरतपुरप्रान्तच्छलितयवनप्राप्तराज पदनारुकप्रतापसिंहालवरराज्यस्थापनतत्समयकतिपयराज्यध्वंसक तिपयनवीनराज्यस्थापनसूचन ६ नारुकप्रतापसिंहजयपुरागतमन्त्रि हस्तिपकफीरोजखांछलघातमारणबहोरखुशालीरामझलायेशकु—

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, मेवाड़ के उमराव सलूमर के रावत, व कुरावड़ के राउत का सेना लेकर देवगढ जाना और वहांसे हारकर पीछा आना १ कुरावड़के राउत अर्जुनसिंह का माधजी सिन्धिया के साले को छलघात से मारना २ राजगढ के नरूका प्रतापसिंह का जयपुर में ठग विद्या फैलाकर बहोरा खुशहालीराम को कैद करना और झलाय के कुमर बखतावरसिंह का खुसहालीराम के मारने से काका शत्रुसाल का रोकना ३ नरूके प्रतापसिंह का देवगढ के राउत जसवन्तसिंह को जयपुर से निकलवा कर भट्ट विद्यागुरु को कैद से छुडाना ४ फीरोजखां महावत द्वारा राणी के मिलाएहुए सेखावत आदि से छाने नरूका प्रतापसिंह का छलघात से बच कर राजगढ भागना ५ नरूका प्रतापसिंह का दिल्ली, जयपुर, भरतपुर के परगने दबाकर यवनों को छलकर अलवर का राज्य स्थापन करना और राजा का खिताब पाना, तथा इस समय कई राज्यों के नष्ट होने और कई नये राज्य स्थापन होने की सूचना करना ६ नरूके राजा प्रतापसिंह का जयपुर से आयेहुए मंत्री महावत फीरोजखां को छलघात से मारना और बहोरा खुशालीराम का जयपुर में झलाय के कुमर बखतावरसिंह को छलघात से मरवाना ७ बहोरा खुशालीराम का जयपुर में दादूपं-

ठानि पंच५ वासर मुकाम तिहिँ पुराय ठाम,
साधे न्हाँन१ दान२ श्राद्ध३ आदिक विधि सुहाइ ॥२१॥
चंद्र२ सित१ राध२की चउत्थी४ दिन व्हाँ तैं चढि,
मग्गविच तीर्थ भीम ओंडारक२० नाम मानि ॥
साधि तँहँ न्हान१ दान२ थान तिहिँसौं समीप,
उचित मुकाम दीनों करखडी२१ ग्राम आनि ॥
श्रीनगर भूपति प्रमार जो ललितसाहि,
ताको हो अमल तिहिँ ठां वह मुकाम ठानि ॥
कुंच करि व्हाँतैं रहे जाइ तिम हृषीकेस२२,
रथ१ हय२ आदि राखे जत्थहि उचित जानि ॥ २२ ॥
व्हाँतैं नेरजान बैठि तपोवन२३ तीर्थ होइ,
गंगा न्हान१ दान२ करि रहे शिवपुरी२४ ग्राम ॥
व्हे डुंगरगाढ२५ ग्राम२५ त्यों ब्रह्मनकोटी२६ होइ,
कीनें बदियाकीकोह२७ नाम ठाँ निज मुकाम ॥
आयो एक१ कोस सन संगमैं सलिल उहाँ,
छेटी करि व्हाँतैं जानि सैलन सरौंनि छाम ॥
संगी जन यातैं दूरदूरलौं चलाय सब,
श्वेत१ राध२ दसमी१० जहाँ दिन रहत जाम ॥ २३ ॥
प्रद्योतन१ वार चढि अद्रि सनभंग२८ पर,
कोस तीन३ अंतर मुकाम राजाखाल२९ किय ॥
पंद्रह१५ दिवस राखि तत्थहि मुकाम पुनि,
ज्येष्ठ वदि२ दसमी१० जहाँतैं चंद्र२कों चलिय ॥
त्रिपथगा धारा३० एक१ झूला करि लंघि तिम,

१ दिन ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ पालखी पींजस में ३ पर्वत लंग रस्ते में ॥ २३ ॥ ४ रविवार ५ गंगाकी

दूरकछुधारादुव२ संगम३१ मिलानें दिय ॥
सोही देवआदिक प्रयागनाम तित्थ सुभ,
सेयो दिन तीन३ रह्यो श्रीजित त्हाँ पुण्य प्रिय ॥२४॥
नाम दुव धारन भागीरथी१ अलकनंदा२,
ऐसैं रहि दोउ२नके संगम३१पैं तीन३ अह ॥
मुंडन१ रु न्हान२ दान३ आदिक सबिधि मंडि,
तित्थगुरु केसोराम कीनों धन पात्र४ तह ॥
पीछैं लंघि सुक्र३ वदि२ भूत१४ गुरु५ वार पर,
उक्त जो अलकनंदा३२ झूला करि त्हां असह ॥
रानीबाग३३ नाम ग्राम बिरचि मुकाम रहे,
श्रीनगर सासक सो जानी बात जान जह ॥२५॥
सो नृप ललितसाहि आवत सम्मुख सुनि,
इततैं कहाइ आइहोतो हम मिलि हैं न ॥
तानैं तब आपुनों अमात्य जो परमपति१,
नित्यानंद२ सेनानी२ ए भेजे अभिमुख ऐन ॥
सेना द्वैहजार२००० उभै२ इम जु सम्मुख आइ,
श्रीनगर३४ लेगये निहोरन सिविर सन ॥
श्रीजित कहाई इम श्रीनगर सासकसौं,
तबहि मिलैं जो नृप मानि मिलो हमतैं न ॥ २६ ॥
अभ्यागमँ१ अभ्युत्थान२ आदि करिबो न कहि,
श्रीनगर भूप पहिलैंतो लई मानि सब ॥
श्रीजित पधारत नृजानकों तजत समैं,
जत्थहि मिल्यो सो आइ भूपति प्रमार जब ॥

१ मुकाम २ देवप्रयाग ३ तीर्थ ॥ २४ ॥ ४ दिन ५ ज्येष्ठ ॥ २५ ॥ ६ मार्ग में सन्मुख भेजे ॥ २६ ॥ ७ सन्मुख आना ८ ताजीम देना

संसद[1]मैं जात एक१ आसन[2] प्रसभ साह्यो,
तदपि न मानि भिन्न बैठो निज पीठ[3] तब ॥
अधिप प्रमार पुनि श्रीजित सिविर आयो,
सोहि तब साधि रु उहाँतैं भयो कुंच अब ॥ २७ ॥
सुक्र३ सुदि२ दूजी२ तिथि चाले श्रीनगर३४ सन,
सो३२ अलकनंदा३५ आई बहुरि जँवी[4] सलिल॥
ताकौं लंघि झूला करि पार गये श्रीजन तो;
ओलीतीर[5] स्वीय संगी पुरुख रहे अखिल ॥
तिनकी हरोलवारे झूलापैं चढे तबही,
तूटी इक१ घाँकी तांति[6] नर्छ्रिंन बचीन तिल ॥
पै जे लई पकरि समीपके नरन संघ,
यातैं जन आरोही कहे जे बचे उक्त किंल ॥ २८ ॥
अध्व[11] वह छोरि ओर झूलातैं उदकै[12] ओघ३५,
अन्य पंथ उत्तारि दये मिलान भरदार३६ ॥
क्रमठहे मलयकोटि३७ चंद्रपुर३८ गुप्तकासी३९,
कुंड४० तस न्हाइ१ दै२ रु ठहे सिवदरस कार३ ॥
नारायनकोटि४१ रहि पुनि ठहे गनेसकोटि४२,
संग भेजि झलमलपटना१ मग सुढार ॥
त्रियुगीनारायन४३के दरसन काज तह,
अल्प सत्य आप जाइ पूजे उक्त उपचार ॥ २९ ॥
वृष्टि करकान कीनी जत्थहु जलद[13] बढि,

---

१ सभा में २ एक गद्दी पर बैठने का हठ किया ३ अपने आसन पर ॥ २७ ॥ ४ वेगवाले जल के ५ वरली तीर (इधर के किनारे) ६ पंक्ति (डोरी) ७चमड़े की डोरी ८ मनुष्यों के समूह ने ९ झूला पर चढेहुए पुरुष १० निश्चय ॥ २८ ॥ ११ मार्ग १२ जल के समूह को ॥ २९ ॥ १३ मेघ ने

तातैं रहि तत्थहि त्रिलोक स्वामीके सरन ॥
प्रस्थित ह्वै प्रात झलमलपटना ४४पहुँचि,
लंघे मात झूलाकरि अन्य स्रोत४५ आवरन ॥
मुंडकटे४६ नाम पूजि गनपति सग्गसैं रु,
सैल ढिग गोरीकुंड४७ जाइरहे स्वाचरन ॥
और संगी श्रीकेदार पूजिकैं बहुरि आये,
तोलौं रहे तत्थहि निवाहत सबै नरन ॥ ३० ॥
पीछैं बुधवार४ जुत ज्येष्ठ३ वदि२ तेरसि१३पैं,
मंडे भीमओडारक४८ जाइ अपनैं मुकाम ॥
श्रीकेदारगंगा४९ विच दूजे२ दिन१४ न्हान साधि,
लंघि स्रोत५० झूलाकरि अग्गहु क्रिया ललाम ॥
ताही दिन श्रीकेदार५१पहुँचि जथा बिधितैं,
धीरधी प्रनमि पूजे प्रभुकौं उचित धाम ॥
हो तँहँ बरफ रासि ढिगहि हिमालयको,
ताम मरे जाइ जन सत्र६१७ प्रमिति तामैं ॥ ३१ ॥
भिन्न भिन्न तामैं जन पंद्रह१५ खपत भये,
बरजत सबके न मानी तिन नैंक बात ॥
पै इक१ उदैपुरके रानाको सगोत्र१ पुनि,
दूजो२ बुंदीसीमगत वंसीपुरको द्विजात२ ॥
जदपि निवारे इन दोउन२ तदपि जाइ,
पानि निज जोरि तँहँ कीनो सइँ देह पात ॥
जोलौं परे दीठि तोलौं जातहि लखाये जुग२,

---

१ झूला से ढके हुए प्रवाह को २ अपने आचार से अथवा अपने चरणों से चलकर ॥ ३० ॥ ३ धैर्य की बुद्धिवाला ४ बरफ का समूह ५ तहां ॥३१॥ । ७ साथ ही

चलत पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातल दव्वंत ॥ ३ ॥
इम पत्तो ग्वालेरपुर, आजम विभव उपेत ॥
सजि किल्ला बनितादि सब, रक्खिय तत्थ निकेत ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥
ताकी तनया व्याहि लई आजम अभिमानी ॥
यह अग्गैं इकबेर पकरि बंधी मरहट्टन ॥
तब अनिरुद्ध नरेस जिति आनी भुजदंडन ॥
बीदारबखस जाके उदर ताहि नगर ग्वालेर धरि ॥
उततैं उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥
अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालेरनगर उन ॥
ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥
इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थैं ॥
रहि मुकाम वह राति कलह उग्गतरवि कत्थैं ॥
दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु बीचिन भरिग॥
बद्दल उदीचि आवाचिके प्रबल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

याके सेन पङ्गुतही. असी लाख घोरे हे, यातैं सेनाके बाहुल्यमैं याकी उपमा दीनी. दव्वत दाबंत ॥ ३ ॥ इमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपेत सहित. किल्ला ग्वालेरपुरको. बनिता स्त्री. तिनकों आदि देकैं सब वैभव. निकेत स्थान ॥४॥ षट्पात् ॥ अग्रजइति ॥ अग्रज बडा भाई. अवरंगीय अवरंगशाहको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध बुंदीको राजा बुधसिंहको पिता तातैं. ताहि वा अपनी स्त्रीकों ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहनें. उन आलमशाहनें. ए बहादुरशाहकी सेनावारे. रु अरु. वे आजमशाहकी सेनावारे. सु पादपूर्णार्थ है. आरुन संसारुन. जाजव आगरा अरु ग्वालेरके बीचमैं ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध. कत्थैं कहैं. प्रपात पहाव. बीचिन बीची (तरंग) तिनकरि. भरिग भरयो. बद्दल मेघ. उदीचि उदीची (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. वात पवन ताकरि. कि मनों ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सकइति ॥ जुग च्यार ४. खट छै ६. सत्रहसैं चौसठि १७६४. असित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥ दैदलइ-

कैसी विधि जानें कोन गारिकैं गिरत गात ॥ ३२ ॥
दोहा—इस् तँहँ श्रीजित ताहि अहे, करि अर्चित केदार५१ ॥
पच्छों करिय मुकाम पुनि, आइ भीम ओडार१।५२ ॥३३॥
गिरि टहरी१ गढवाल२को, श्रीकेदार५१ सु थान ॥
दिय पच्छो मुरि दाहिनैं, चलन अग्ग चहुवान ॥३४॥
आइ भीमओडार१।५२तैं, पुनि झलमल पटना२।५३सु॥
अग्ग झूला३।५४ ऊतरे, अखिल निबाहत आसु ॥३५॥
हित मग राजाकोटि५५ व्है, धामाँकोटि५६ सु धीर ॥
कल्यानादिककोटि५७ व्है, संगिन मग क्रम सीर ॥ ३६ ॥
पुन्य गुप्तकासी५८ परसि, ओखीमठ५९ तिम आइ ॥
दरस१ आदि केदारको६०, बिरचिय अंजन२ बनाइ ॥३७॥
उहाँ भोग उपहारके, प्रथित द्रम्म पंचास५० ॥
करि अंजलि प्रभु भेट करिं, अग्गैं प्रस्थित आसँ ॥३८॥
हुलकर खंडूनारि हुव, निपुन अहल्या१ नाम ॥
तास धर्मसाला६१ तहाँ, कीने जाइ मुकाम ॥ ३९ ॥
धँव पीछैं वह पुन्य धिर्य, करतभई सुभ काज ॥
विबुँधालय१ ठाँठाँ बिदित, सहित सदाव्रत साज ॥४०॥
व्हाँ तैं मग तुंगेस६२व्है, विधि क्रम भेट विधाइ ॥
ब्रह्मनकोटी६३ व्है बहुरि, अलकनंदिका६४ आइ ॥४१॥
तिहिं झूला करि उत्तरि रु, पित्थलकोटि६५ पधारि ॥
सनि७अष्टमि८सित१सुक्र३की, किय मुकाम सुखकारि ४२
नवमि९ गरुड़गंगा६६ नदी. मज्जन करिं तिहिं माग ॥

॥ ३२ ॥ १उस दिन ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ पूजन ॥ ३७ ॥ ३ हाथ जोड़कर ४ गमन हुआ (किया) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ५ पति के पीछे ६पवित्र बुद्धिवाली ७ मंदिर ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ८ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४२ ॥

ठहे जोसीमठ६७ जात हुव, मविदित विष्णुपयाग ॥४३॥
अलकनंदिका६८ उत्तरे, पुनि झूलाकरि पार ॥
अग्ग स्रोत लंघे उभय२, ध्रुव छुरिका१।६९ असिधार२।७०
सित१ तेरसि१३ गुरु५ शुक३ठहे, कल्यानादिककोटि७० ॥
अलकनंदिका७१ उत्तरे, जँहँ पुनि झूलाजोटि ॥ ४५ ॥
वाहि१३ दिवस संध्या समय, बिकिख१ रु जजि२ बदरीस ॥
तँहँ किय पंच मुकाम तब, श्रीप्रभु धारत सीस ॥ ४६ ॥
आर३ द्वितीया२ सुचि४ असित, पच्छो करि प्रस्थान ॥
कल्यानादिक कोटि१।७२ किय, मुरतहु प्रथम१ मिलान४७
षट्पात्—असित१ तीज३ करि अप्प पंडकेश्वर२।७३ पूजादिक ॥
मग जोसीमठ३।७४ बलि गुलाबकोटी४।७५ सुभ बादिक ॥
ठहे पीपलकोटि५।७६ इदगरुड़गंगा६।७७ ठहे संगत ॥
बैरागीकोटि७।७८ बलि होइ पैद्धति अप्रतिहत ॥
रहि प्रात लंघि भागीरथिय८।७९करन प्रयाग९।८०हु न्हान करि॥
शिवकोटि१०।८१होइ लंघिय सहज श्रीजित राजा बाग सरि॥४८॥
दोहा—देवीमहड़ा११।८२ गिरि दुगम, क्रम मग चढि चउ४कोस ॥
सुचि४ बदि२ चउदसि१४श्रीनगर१२।८३, आयो बहुरि अदोस४९
मिलि पहिलैं तस महिप सन, आये पुनि पँटभौन ॥
महमानी किन्नी महिप, दूजे२दिन सहसैन ॥ ५० ॥
सित प्रतिपद१ नृपनिज सदन, बिच आराम बुलाइ ॥
महमानी पुनि किय मुदित, अंह तीजे३ उमँगाइ ॥ ५१ ॥
चोथे४ अह ठहाँतैं चढ़ि रु, रानीबाग१३।८४ पधारि ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ २मंगलवार ३ आषाढ बदि ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में ५ विना रुकावट ६ चलकर ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ७ डेरों में ८ सेना सहित ॥ ५० ॥ ९ बाग में १० तीसरे दिन ॥ ५१ ॥

देवप्रयाग१४।८५ मुकाम हुव२, स्नान१ दान२ विधि सारि॥५२॥
रहिय बहुरि भागीरथि१५।८६य, उत्तरि झोला आप ॥
राजखाल१६।८७ विश्राम रचि, पंचमि५ सित१ दिन पाप ॥५३॥
करि व्हाँतैं दरकुंच क्रम, सुचि४ नवमी९ सित१ सत्थ ॥
हृषीकेश१७।८८ आये हुलसि, त्यक्त[2] मिले सब सत्थ ॥५४॥
रच्छक जन१ हय२ रथ३ करभ[3]४, जीवत रक्खे जत्थ ॥
तहाँ पहुँचि लै संग तिन्ह, मंडिय गमन समत्थ ॥ ५५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुचि४ दसमी१० पक्ख सित१ कुंच श्रीजित व्हाँतैं किय ॥
गंगालक्करघाँट गैल पटगृह[4] पठ्ठाविय ॥
गंगाद्वार१८।८९हि गमन अप्प करि सुरि तँहँ आयउ ॥
बारसि१२ न्हाइ विधेय श्राद्ध कनखल१९।९० सद्धायउ ॥
कड़खड़ीय२०।९१ग्राम विश्राम करि लक्कर घाँट२१।९२निवास लहि
सुचि मास विसद१ चउदसि१४समय गंगा२२।९३ लंघिय नावगहि५६
इक्क१ पोत उत्तरत उहाँ बारह१२ लग्गे अह[5] ॥
अधिक उपद्रव इक्खि तजिय पद्धति पहिली[6] तह ॥
सित१ सावन५ सप्तमि७य सत्थ गंगा२२।९३ उतारि सब ॥
आइ ग्राम आहार२३।९४ अप्प मंडिय मुकाम अब॥
दरकुंच विसद१ एकादसि११य आइ गुंडवारी२४।९५ अयन ॥
उत्तरे स्रोत जमुना२५।९६ उचित जथा तँरंड[7] निबाहि जन॥५७॥
करि व्हाँतैं दरकुंच होइ कामाँ२६।९७ बिसवा२७।९८हद ॥
द्योसा२८।९९ नामक द्रंग पाइ इति[8]सुख निवास पद ॥
निबसिनिवाई२९।१००नैरटौंक३०।१०१तिमसोनवाय३१।१०२टिकि

॥५२॥ १ शनिवार ॥५३॥ २ छोड़ा हुआ साथ ॥ ५४ ॥ ३ ऊंट ॥ ५५ ॥ ४ डेरा ॥ ५६ ॥ ५ दिन ६ पहिला मार्ग छोड़दिया ७ नाव से ॥ ५७ ॥ ८ इत्यादिक

अष्टमि८ भद्दव६ असित२ चढिय व्हाँतैं न मग्ग चिकि ॥
सरदारसिंह नारव नगर३२।१०३ उनियारापति करि अरज॥
पटु कियउ रत्ति रक्खन प्रसभ गदि स्वगेह पावन गरज५८
घनैं हठन दुव२ घटिय अप्प रहि नेंगर३२।१०३नगर इम॥
उपदा२ बिच सस्ल इक१ तुपक१रक्खि रु श्रीजित तिम ॥
महमानी न करन मनाइ व्हाँतैं इत हंकिय ॥
जात रत्ति इक१ जाम आइ ह्गपुर३३।१०४ रहि आंकिय॥
दरकुंच असित२नवमी९दिवस टुवलानाँ३४।१०५मग करि विदित॥
आयउ स्वकीय आश्रम३५।१०६इहाँइम श्रीजित अतिपुराय इत५९

॥ दोहा ॥

या जात्रा बिच जे उदित, गिरि१ तीरथ२ पुर३ ग्राम४ ॥
समुझहु ते मर्ग चिन्ह सब, कहुँ कहुँ कथित मुकाम॥६०॥
इम सुर धृति१८३३ सक आगमन, जत्ता उत्तर४।७ जाइ ॥
बदरीस३हिं जाजि ५मह६ बदि२,आश्रम पहुँचिय आइ ॥६१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिं चरित्रे मरहट्टाङ्गरेजसहायदिल्लीन्द्रालमशाहरुहिल्लाक्रान्तप्रस्तरदुर्गा- दिविजयनविजितामलाधीशलखनऊपतितदङ्गजासंग्रहण १ नवाब रतकालच्छुरिकाप्रहर्तृरुहिल्लसुताहनन २ भरतपुरजट्टयवनरक्षाकरण

॥५८॥ १ नगर नामक नगर में २ नजराने में ३ नैणवा नगर में ॥ ५९ ॥ ४ मार्ग के चिन्ह हैं अर्थात् ये सब मुकाम नहीं हैं; कहीं कहीं पर मुकाम कहे हैं ॥ ६० ॥ ५ यात्रा ६ पूजन करके ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंहके चरित्र में, मरहठे और अंगरेजों के बल से दिल्ली के बादशाह, शाहआलम का रुहि- ल्लों से पत्थरगढ आदि विजय करना और लखनेऊ के नवाब का आमिला के पति को जीतकर उसकी कन्या को लेना१ रतकाल में उस कन्या का नवा- ब के छुरी लगाना और नवाब का उस कन्या को मारना २ भरतपुर के जाट

जट्टाहृतडीघपुररुहिल्लरात्रिसंगरपलायन ३ जयपुरागतजसवन्तराव-बाउलाभृत्यत्वहेतुदर्शननानकमतानुयायिसिक्खपञ्चनदजनपदग्रह णुजट्टरुहिल्लदिल्लीदेशलुण्ठन ४ श्रीजिदुत्तरदिक्तीर्थयात्रानन्तरबुन्द्यागमनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितः ॥ ३५६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजित१९८ प्रस्थित जाहि सक, रुचि बदरीबन राह ॥
सुर धृति१८३३सम्मित ताहिसक, बन्यो प्रथम१नृप ब्याह॥१॥
प्रथम कृत्य श्रीजित१९८ प्रथित, सबबिधि पुब्ब सधाइ ॥
चलिय अप्प बदरीस चहि, सबन उचित समुझाइ ॥ २ ॥
सुभट भवानीसिंह१ सह, सचिव मुख्य सुखराम२ ॥
पीछैं सन महिपालको, आरंभिय उपयाम३ ॥ ३ ॥
कोटा१दिक प्रातन कलित, हुव उपदा ब्यवहार ॥
सिसु नृप संग बरात सजि, किय प्रयान मह४ कार ॥ ४ ॥
सजि पत्ते लैं भट१ सचिव२, वीकानैर बरात ॥
ससिसुत५ तेरसि१३ सुक्र३ सित१, सज्जिय लग्न सुहात॥५॥

॥ घनाक्षरी ॥

बयमैं चतुर्थ४ अब्द अंतर कुमार बर,

और यवनों का युद्ध होना और रुहिल्ले का जाट से डीघपुर लेना और रति-बाह के युद्ध में रुहिल्ले का भागना ३ जसवन्तराव बाउला के जयपुर में आकर नौकर रहने का कारण दिखाना और नानकपंथी सिक्खों का पंजाब लेना तथा रुहिल्ले और जाटों का दिल्ली के देश में लूट मार करना ४ श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का उत्तर दिशा की तीर्थ यात्रा करके पीछे बुन्दी में आने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीन सौ छप्पन ३५६ मयूख हुए॥

१ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का ॥ १ ॥ २ ॥ २ विवाह ॥ ३ ॥ ३ प्रारंभ ४ उत्सव का कार्य ॥ ४ ॥ ५ बुधवार ६ ज्येष्ठ सुदि ॥ ५ ॥

बीकानैर भूप गजसिंह सुता तुल्य बय ॥
नाम पन्नकुमरि२००।१ बिबाही पट्टरानी१ नृप,
निपुन कुमार सुरतेसकी स्वसा सुनय ॥
देय बसु जात दैकैं कविन प्रसन्न करि,
सुभट१ अमात्य२ नैं लै सुजस तथातिसय ॥
ब्याहि यौं महामहसौं स्वामीकौं प्रथम ब्याह,
बाल महिपाल आन्यौं बुंदीपुरी बीत भय ॥ ६ ॥
बेद गुन अष्ट इंदु १८३४ संवत लगत बेर,
मधु सित१ अष्टमी८ प्रयान सुमता मिलाइ ॥
गम्य गिनि रामेश्वर श्रीजित१९८ कियउ गौन,
दक्खिन२।३ के तीरथ समस्त सेव्य दरिसाइ ॥
पट्टनि१ प्रथम१ पूजि केसव२ पैपपयोज,
पत्तन बिसाला३ जाइ ईसको दरस पाइ ॥
सिप्रा५ न्हाइ गम्य भू परिक्रमि बिरचि श्राद्ध,
देय दैकैं द्विजन दयो बहु जस बढाइ ॥ ७ ॥
राखि डेरा दत्तके अखारे बिच आप रहे,
जात्रा होइ सफल जितेक दिन श्रद्धा जानि ॥
बैरागी हजार च्यारि४०००सायुध इतेक बिच,
आत सुनि न्हाके भीत संन्यासी पुकारे आनि ॥
बोले जे सदातंन हमारै१ उनकैं२ है बैर,
मत्त जे प्रगल्भ हम थोरे यह छिद्र मानि ॥
आहव रचैं तो आप करहु सहाय आज,

१ वहिन २ धन समूह ३ अतिशय (अत्यन्त) ॥ ६ ॥ ४ चैत्र सुदि ५ जाने योग्य ६ सेवन ७ चरण कमल पूजकर ८ उज्जैन ॥ ७ ॥ ९ आयुध सहित १० सदैव ११ युद्ध

[illegible]खताम्नरसिंहजयपुरच्छलघातहनन ७ खुशालीरामजयपुरदाढू
पन्थिमरहट्टसेनासंग्रहणसेखावाटीमनोहरपुरेशदमन ८ जयपुरेशपृ-
थ्वीसिंहमातृमरणडीगजट्टयवनरणाकरण ९ जसवन्तरावबाउलार्थ
जयपुरभृत्यामालपुराटोडाप्रदानश्रुततदुर्गनिर्माणतन्निष्कासन १०
लुण्टितजयपुरप्रान्तजसवन्तरावबाउलाबापूमरहट्टप्रान्तत्रयग्रहणजय
पुरटीकाबुन्द्यागमनवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥ आदितः ॥३५५॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तातैं सक चोतीस३४ तक, बंदि जैपुरकी बात ॥
अब बत्तीसम ३२ अंतमैं, जुंहि क्रम बरन्यो जात ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

उक्त दुव२ कामनमैं एक१ करि बिप्र आयो,
तोलौं इकतार उतकोंहि बरन्यो उदंत ॥
यातैं कह्यो जात सुरि पिछलो उदंत अब,
ऐसैं साकै ३ंत धृति १८३२ हायनको होत अंत ॥
व्याधि तिहिंबेर सुखरामकै कछुक बढयो,
सो मिटयो तहाँलौं रहि श्रीजित परम संत ॥

थियों की और मरहठों की सेना का नौकर रखना और सेखावाटी में मनोहर पुरवालों को दंड देना ८ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह की माता का और डींग में जाटों और यवनों का युद्ध होना ९ जशवन्तराव बाउला को जयपुर की तरफ से तनखाह में मालपुरा और टोडा देना और उसको वहां गढ बनवाते देखकर निकालना १० जशवन्तराव बाउला और बापू मरहठे का जयपुर के राज्य को लूटकर तीन परगने दबाना और जयपुर से बुन्दी टीका आने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पचावन ३५५ मयूख हुए ॥

१ कह कर २ यही बुन्दी का इतिहास ॥ १ ॥ ३ वृत्तान्त ४ विक्रम के शाक के

चैत्र१ बदि छट्ठी६ दिन आश्रमतैं आप चढ्यो,
अच्युत बदरिकेस अर्चनकों मतिमंत ॥ २ ॥
जैपुर नगर जात तुल्यपंन रीति जिम,
पित्थल नरेस आइ सम्मुह अवधि पर ॥
भोन निज लैगो तहाँ अंजिनपैं बैठो भिन्न,
श्रीजित निहारेहू तपस्वीनमैं अग्रसर ॥
पच्छिम३।५ मयानमैं निबाही जैसे जोधपुर१,
ऐसैं सब रीति इहाँ न्यारी साधि जैनगर२ ॥
कास तास साखापुर बदनपुरेमैं रह्यो,
पीलु१ हय आदिकन राख्यो उपदा प्रकार ॥ ३ ॥
केइबेर पित्थल१ प्रताप२ तैं मिलाप कीनों,
ओज अधिकार रह्यो वृत्ति राजसी रहित ॥
आपुनों पुरोहित हुतो तहाँ दयाराम वह,
आयो अरु ज्यौं बन्यौं सुनायो हित१ओ अहित२ ॥
संवत बिबुध धृति१८३३ सम्मित लगत समा,
सानुकूल राखि मन सबको कृपासहित ॥
चैत१ सित २ छट्ठी६ दिन बदनपुरा१ तैं चढि ॥
संबसथ कूकस२ मुकाम बिरच्यो महित ॥ ४ ॥
बंस बलभद्रकेमैं कूरम जहाँ बिदित,
अबिदित नाम अचलोर१ दंग अभिधान ॥
कीनैं तँहँ श्रीजित मुकाम अरु कूरमकी,
भेटमैं कटारी एक१ राखी होत हठ भान ॥

॥ २ ॥ १ बराबर की २ मृगचर्म पर जुदा बैठा ३ नगर के बाहर का पुरा ४ हाथी ५ भेट का समूह ॥ ३ ॥ ६ रजोगुण की (राजाओं की) वृत्ति बिना ७ सम्वत् ८ ग्राम ॥ ४ ॥ ९ जिसका नाम नहीं मालूम है

सुद्धि तँहँ आई यौं रुहिल्लन निकर सज्जि,
मग्गमैं उपद्रव मचाइराख्यो मनमान ॥
पहिलैं नजीबदौला मंत्री सुत वारे पच्छ,
पत्थरगढहिँ लै तहां ए लरे अतिप्रान ॥ ५ ॥
भूतकालमैं तब रुहिल्लनसौं साह भीत,
पुरुषा१ लखनेऊ२ कलकत्ता३को सहाय पाइ ॥
बिरचि मघात अतिपात सस्त्र व्रातनके,
जीत्यो साह आलमनैं पत्थरगढ सु जाइ ॥
जाबितै१खाँ नामक रुहिल्ला व्है पराजित जो,
उक्त गढ छोरि पर्यो साहके पयन आइ ॥
उक्तगढ १ आमिला२ बरैली ३ ए रुहिल्लनके,
लीनैं लखनेऊपति साहसौं मन सुराइ ॥ ६ ॥
पै जो लखनेऊ पति आमिला२ जबहि१जीत्यो,
कैद तस सासक रुहिल्लाको कुटुंब करि ॥
ताकै इक१ कन्या ही सु बलसौं पकरि तब,
डारि निज गेह परलोकतैं न नैंक डरि ॥
कन्यानैं मिलन काल राखि छुरिका कितहु,
धार खर१ जारकै धकोई बस्तिदेस धरि ॥
सोतो हनी तबहि रुहिल्लेकी सुता रु सठ,
मास तीन३ पीछैं सो नबाबहु गयोहि मरि ॥ ७ ॥
राम२०१४ प्रभु देखो कुलनारिनकी कैसी रीति,
जैसी अहो आधुनिक नरन न राखीजात ॥
जोवन गिन्यौं न१ गिन्यौं एक१ पतिभौन२जानैं,

१ रुहिल्लों का समूह सजकर ॥ ५ ॥ २ शस्त्रों के समूहों के ॥ ६ ॥ ३ पति (हाकिम) ४ तीक्ष्ण धारवाली ५ नलों (पेड़ू) में ॥ ७ ॥ ६ इस समय के

जीवन गिन्यो न३ ज्यों बिलासिबो बिभव ज्ञात४ ॥
माता१ पिता२ दै जिहिँ सुहि पति उचित मानि,
औरनकौं इंद्रलौं बिडारैं सील अधिकात ॥
वाह जवनीकौं फैजाबाद१ लखनेऊ२ ईस,
गांजि हु गिरायो पै न रंजि हु भिरायो गात ॥ ८ ॥
बांधी लखनेऊ१ राजधानी तजि फैजाबाद२ ॥
नारीहंत कथित नबावकेर सोहि सुत ॥
बैठो वा पिताके पाट पै न तैसो भाग्य बल,
जासौं नई दाबी सो गई भू१ छूटि कीर्त्ति२ जुत ॥
दाब्यो पहिलैं जो पुर कासिका१ प्रमुखं देस,
आयो पहिलैं सो अंगरेजनके हाथ उत ॥
यातैं पर्‍यो मंद लखनेऊको प्रताप अब,
लागो पुनि लुंटक दुहिल्लनको दाव द्रुत ॥ ९ ॥
जीवतहो नोलसिंह जट्टन अधीस जब,
खीजि तब साह मीरबखसी नजीबखान ॥
जूझि जिहिँ मुगल स अर्द्ध६ समा जट्टनतैं,
पँट्टन७ छुराइलयो आगरा बल प्रधान ॥
जट्ट नोलसिंह१ मरयो भ्राता तब रनजीत२,
काका ब्रजेन्द्रादिकबहादुर३ गहि कृपान ॥
नोलसुत केसरी कुमार बय ठानि नृप,
हंकि पुर डिग्घ१आये कुंभेर२ को करि हान ॥ १० ॥

१ समूह २ मुसलमानी राजधानी फैजाबाद और लखनेऊ के पति को मार कर प्रीति से शरीर को नहीं भिड़ाया उसको वाह (प्रशंसा) है ॥ ८ ॥ ३स्त्री के मारनेवाले ४ काशी आदि देश ५ लुटेरे ॥ ९ ॥ ६ डेढ वर्ष ७ पत्तन [पुर] ८ ब्रजेन्द्रबहादुर ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सक्क चउ४खट सत्रह१७६४समय, असित तीज३आषाढ ॥
दिय मुकाम हुव दलन इम, मिलि जाजव गहि गाढ॥७॥

(पद्धतिका)

दै दल मुकाम बुंदिय नरेस, किय मंत्र पिक्खि अरि दल बिसेस
रतिवाह बाह गेकन बिचारि, निज दल प्रबंध बंधिय निहारि ।८।
पखरैत महँस द्वादस१२०००प्रबीर, सजि थप्पि सेन बाहिर सधीर
निज भट रनपंडित जैत नाम, तिनमाँहिँ मुख्य करि रक्खि ताम।९।
यह बैरिसल्ल कुल भव अभंग, निज बंधु जैत लिय सोधि संग ॥
कहि नेह वचन सनमानकीन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०
जो रचहिँ मत्रु रतिवाह जाल, तो झेलि चास भेजहु उताल ॥
इम भाखि छवीनाँ किय तयार, इय जैतसंग द्वादसहजार१२०००
दल परिधि जाय तिन चक्क दिन्न, क्रम इम प्रबंध चहुवान किन्न॥
पुनि कहिय नीति साहहिँ प्रबोधि, सुख सैंन करहु अब काल सोधि ॥ १२ ॥
निस जाम रहत निंदहिँ निवारि, पिक्खहु बिहान रन भट प्रचारि॥
सुनि साह सैंन मंडिय सतोस, भूपाल बुद्ध भुज दुव भरोस ॥१३॥
सब साह हसम डेरन सम्हारि, नृप मिविर आप कटिपट निवारि

ति ॥ रतिवाह रात्रि समय अचानक आय लरैं सो युद्ध. ताके. बाह बार त-धा प्रकार. प्रबंध रचना विशेषसों फोजको राखनों. बंधिय बंध्यो. निहारि दे-खिकैं ॥ ८ ॥ पक्खरैतइति ॥ जैतनाम जैतसिंह नामक. बैरीशल्लोत हाडा फलो-धी नगरको अधिराज. तिनमाँहि वे छवीनाके बारह हजार १२००० पक्खरैत सेनाके बाहिर गिरदकी चोकी फिरबेकों भेजे तिनमें. ताम तहां ॥ ९ ॥ यहइ-ति ॥ यह जैतसिंह. भव भयो. बंधु सपिंड कुलमें. सोधि विचारिकैं ॥ १० ॥ जोरचहिंइति ॥ रतिवाह रात्रिको युद्ध. ताको. चास खबर ॥ ११ । दलइति ॥ परिधि गरद [चक्र मंडल फिरनों]. सैन सयन [सोवनों] ॥ १२ ॥ निसइति । जाम एक प्रहर. निंदहिं निद्राकों. बिहान प्रातःकाल. सैन सयन. सतोस सो-स प्रसन्नता ता सहित ॥ १३ ॥ सबइति ॥ हसम वैभव. देशभाकृत. सिपर

कुंमेर१हिं भेज्यो गढ डिग्घ २ सन पीछैं काढि,
पंचननैं जट्ट रनजीत जानि द्रोह पर ॥
तब हो रुहिल्ला१एक जट्टनके आश्रितहु,
ताको चढ्यो मासिक परयो सो बहु कोल तर ॥
जानि बहिकावत रुहिल्लानैं पलटि जब,
निज बस कीनौं जीति डिग्घ तिनको नगर ॥
एक तस दुर्गमैं सक्योन करि सो अमल,
तामैं हुते जट्ट जे रहे ते रुपि धीर धर ॥ ११ ॥
काढ्यो डिग्घतैं१ जो रनजीत१ सोहो कुंमेर१हि,
तासौं मिल्यो बाउला जो जसवंतराव२ तब ॥
वा खिन रुहिल्लापैं अचानक दुहु२न आइ,
दीनौं रतिवाह दल गेरि दलपैं गजब ॥
दुर्गकेहु जट्टननैं ताही खिन दाव देखि,
आइ गढ बाहिर चखाये आसि बाढ अब ॥
भीत दुहुँ२घातैं छोरि सकल रुहिल्ला भज्यो,
संगी भट तीनसै३०० बचे जे भजे संग सब ॥ १२ ॥
लीनों जसवंत जो रुहिल्लाको बिभव लूटि,
पंचदस१५ पील्लु१ सैप्ति२ अठ्ठतीस अग्ग सत ॥
सस्त्र३ वस्त्र४ भूखन५ खजानौं६ तोपखानौं७ सब,
जट्टन जहर जारि सो सही मतौ३नुमत ॥
सो तिन बिडारि दयो बाउला छली समुझि,
आइ तब जैपुर रह्यो वह गरूर५ गेत ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १ हाथी २ एकसौ अड़तीस घोड़े ३ एक दूसरे की सलाह के साथ अर्थात् अभिप्राय और अनुज्ञा सहकर ४ निकाल दिया ५ घमंड रहित

मालपुर१ टोडा२ ताहि वेतनमैं पीछैं मिले,
बात इतनीसी रही पहिले प्रसंग बेत ॥ १३ ॥
सो खिल कही अब रुहिल्लन प्रसंग संग,
इत सिख जट्ट बढे नानक मत अधीन ॥
आजि तिन जीति लवपुर१ मुलतान२ आदि,
कोटि रिपु कही पंज ५ आवमैं अमल कीन ॥
जाबितखां जो कह्यो रुहिल्ला तानैं अब जाइ,
आनैं सिख जट्ट इत लूटनके लोभ लीन ॥
दिल्लीके समीपलग पच्छिम३।५ दिसाको देस ॥
निखिल दबाइ लयो तिननैं तब नवीन ॥ १४ ॥
जट्ट१ रु रुहिल्ला२ मार१ लूट२हिं मचाइ जब,
पंथ प्रसरावत उपद्रव खिनहिं पाइ ॥
क्रेता रुकिबैठे व्यवहारक बनिजकार,
क्रेयनलैकैं कोहू जोर रहित सकैं न जाइ ॥
श्रीजितनैं सो सब उदंत अवलोर ३ सुन्यों ॥
ताके पति कुम्भहु दयो यह सब जताइ ॥
जन अवरोधक लै संग न उचित जैबो,
अैननमैं चैन न उपद्रवन अधिकाइ ॥ १५ ॥
श्रीजित कह्यो नाँ अवरोधजन मुख्य संग,
लाये कछु दासीजन तित्थन समुझि लाह ॥
पीछो अब तिनकों पठैबो व्है न लैलै पनैं,
चिंति जिन्हैं आइ तिन्हँ साधिबो धरत चाह ॥

१ तनखाह में २ पहिले प्रसंगवाली वार्ता में ॥ १३ ॥ ३ युद्ध ४ लाहोर ५ पंजाब में ॥ १४ ॥ ६ खरीददार ७ बेचने की वस्तु ८ वृत्तान्त ९ जनाने के लोक १० मार्गों में ॥ १५ ॥ ११ तीर्थों का लाभ १२ नियम ले लेकर

*उज्झीहै न बरन अहंता तीजे३ आश्रममैं,
रैहै रन व्हैहैं सिर१ देहरनकै दुव२ राह ॥
पीछैं पर सत्थ इष्ट साधहु अभय पाइ,
अब तँहँ कोन गोन करिहै सह उछाह ॥ १६ ॥
ऐसैं मधु१ मासकी वलच्छ१ दसमी१०के अंह,
श्रीजित प्रयान कीनौं उक्त अचलोर३ सन ॥
पंथ दरकुंचन मनोहरपुर४ पधारि,
भामरा५ प्रयागपुर६ लंघत भो धीरधन ॥
कोटफूतली७ त्यौं साहजिहांपुर८दै मुकाम,
राह रहि चोबारा९ रु रेवाड़ी१० प्रबीनपन ॥
रैाध२ बदि२ चोथी४ रविबार१ कौं रह्यो सो बहा-
दुरगढ११ जाइ लंघि बीचको बिखम बन ॥ १७ ॥
मिलन बहादुरगढेस११ ताजमुहुम्मद१।३,
एक१ कोस अवधि नवाव जो समुह आइ ॥
निष्कपटता१ सौं नम्रता२ सौं त्यौं निहोर३नसौं,
पहिलैं प्रसन्न लैगो स्वीय सद्म पधराइ ॥
भूति अनुरूप वस्तु बिबिध निवेदे भेट,
श्रीजित न राखे नृप राखैं यहै दरिसाइ ॥
ताहूनैं कह्यो तब उपद्रव निचिंत ऐन,
दासीजन यातैं इहाँ राखहु हित दिखाइ ॥ १८ ॥
ईस अचलोर३ को कह्यो जो तिहिं कूरम२सौं,
पहिलैं कही सौं त्यौं ह्यां नवाब मित्र प्रकटि ॥

---

*वर्ण(क्षत्रिय)पन का अहंकार नहीं छोड़ा है१वानप्रस्थपन में२मार्ग में युद्ध होगा तो मरेंगे ॥१६॥३चैत्र सुदि४दिन५वैशाख वदि ॥१७॥ ६अपने घर ७ अपने ऐश्वर्य के सदृश८राजा होवै सो रखते हैं अर्थात् हम वानप्रस्थ हैं९मार्ग में व्याप्त॥१८॥

वाला जट्ट के गढ१२ मुकाम पंचमी५ बिरचि,
अर्कजा लवाई१३ घट्ट छठी६ रह्यो गम्य[1] अटि ॥
राधर२ बदि२ सप्तमी७ कलिंदतनयाकौं[2] राति,
पारजात सहसा तैंपद्भुत[3] तुसार पटि ॥
अर्ध्वसौं डिगाई नाव बढिकैं सलिल[4] ओघ,
एक१ कोस अवधि रुकी जो निछि निछि रटि[5] ॥ १९ ॥
उच्च थल बालुकाको[6] नाव अँवरोध अरि,
श्रीजित बिताई रत्ति सकल उहांहि यह ॥
प्रात निज संगिनमैं पेलीतीर१४ पूगि रहे,
तद्दिन मुकाम कीनौं अष्टमी८ अनेह तह ॥
करत प्रयान चढि प्रातहि नवमि९ काल,
जलद अकाल कीनी बुट्ठि करकानैं जह ॥
यातैं सेंढकोस[11]हि लुवारी१५ लौं पहुँचि आप,
ताही ग्राम रहे तब संगिन समाज सह ॥ २० ॥
दसमी१० दिवस ह्हांतैं जाइरहे जावदल१६,
एकादसी११ चोस रहे सामलीसहर१७ आइ ॥
हीरासिंह नाम सिखको जह अमल हुतो,
पंथ मिलि तासौं तह आदर उचित पाइ ॥
ज्वालापुर१८ होइ रैंधर[12] असितर चउद्दसि१४ ज्यौं,
इंदुसुत[13]४ बीर गये गंगाद्वार१९ उमगाइ ॥

१ जाने योग्य स्थानों में गमन करके २ जमुना नदी के परली तरफ जाते समय ३ धूप से बरफ पिघलकर पानी से नदी भरगई ४ लार्ग से ५ पानी का समूह बढकर ॥ १९ ॥ ६ रेत के ऊँचे स्थल पर ७ लग कर नाव रूपी ८ समय ९ मेघ ने बिना समय १० ओलों की वृष्टि की ११ डेढ कोस ॥ २० ॥ १२ वैशाख बदि १३ बुधवार

दीनबंधु बिरुद पुरातन जो पहिचानि ॥ ८ ॥
सुनत पुकार सज्ज श्रीजित१९८। *स्वचक्र सह,
उनकौं अभै दै रहे आपही लरन अग्ग॥
बैरागी यहै सुनि पराजय निज बिचारि,
मुररि कढे जे बाम दक्खिन पकारि मग्ग ॥
फैल्यो जस जाको खंड भारत अमित्त फीत१,
लसत हिमालय१ सौं दक्खिन उदधि२ लग्ग ॥
ऐसी बिधि जाइ पूजे रामेस्वर नाम ईस१,
अतुल उदार दैदै बिप्रन बसु उदग्ग ॥ ९ ॥
जात्रा यह कीनी ताको प्रतिदिन अध्व२क्रम,
लिखित न जान्यौं यातैं बरन्यौं समास३ लाइ ॥
दक्खिन२।३ दिसाके इम तीरथ कारि असेस,
आश्रमपैं आये मास तेरह१३ मैं पुराय पाइ ॥
पृथ्वीसिंह१ भूप इत जैपुर तजत प्रान,
अनुज प्रताप२ कीनौं भूपति भटन आइ ॥
बान गुन अष्ट इंदु१८३५ संवत तखत बैठो,
मास राध४ असित२ चउत्थि४ पैं मह मचाइ ॥ १० ॥
भूपति प्रताप यह जैपुर बिदित भयो,
गानमैं रसिक राखि गायक५ गहिर गान ॥
याके नृप होत अवरोधतैं६ फितूर उठयो,
मान्यौं जन्म लीनौं पृथ्वीसिंहके कुँवर मान७ ॥
साच१ झूँट२ ताकी निहचै न भई पै सबन,
आदरयो न देखत प्रतापको जस उफान ॥

॥८॥*अपनी सेना सहित १ बहुत विकसित[प्रफुल्लित]अथवा समृद्ध ॥९॥२ मार्ग का ३ संक्षेप से ४ वैशाख वदि ॥ १० ॥ ५ कलावँत, गहरे गानेवाले ६ जनाने से ७ मानसिंह नामक

वृंदावन यातैं चिरकाल वह मान वस्यो,
प्रभुके प्रताप पेख्यो जात्राके समय जान ॥ ११ ॥
जैपुर तखत बैठो भूपति प्रताप जोलौं,
अब्दे प्रति जान्यौं बुधसिंह१ऽ७।१नृपतैं उदंत ॥
बान गुन अठ इंदु १८३५ संवत अगारी बात,
अब्द प्रति लिखित न जानी या १९ सतक१०० अंत ॥
यातैं अब भाखीजात बिच बिच छोरि अब्द,
भेकफाल न्याय जो जनाई कथा भगवंत ॥
लेखालय सकल लिखायो प्रभु आपलेख,
जैसैं पुब्ब लिखात न आये उक्त परजंत ॥ १२ ॥
नगर करोली नाह तुरसमपाल तनै,
मानिक्यादिपाल१ अभिधान हुतो महिपाल ॥
ताकै ही तनूजा नाम अमृतकुमारि २००।२तास,
बरें बर मानि तास बुंदी अधिराज बाल ॥
हुन अधीस बय तेरहम१३ हायनमैं,
व्याहन बुलायो गो बरात सजि सो बिसाल ॥
संवत नयन बेद वसु भू १८४२ असित२सहौं९,
कलित उछाह साध्यो बारसि१२को लग्नकाल ॥ १३ ॥

१ हे प्रभु रामसिंह आप के प्रताप से तीर्थयात्रा को गया तब मैंने भी उसको देखा था ॥ ११ ॥ बुन्दी के राजा बुधसिंह से लेकर जयपुर की गद्दी पर प्रतापसिंह बैठा वहां तक २ प्रतिवर्ष(हरसाल)का वृत्तान्त हमने जाना है परन्तु आगे की वार्त्ता ३ प्रतिवर्ष की इस उन्नीस सौ के शतक के अन्त तक की नहीं मिली इस कारण बीच बीच के ४ वर्ष छोड कर ५ मेंडक के फदकने के न्याय से भगवन्तसिंह ने कही सो लिखी है ६ हे प्रभु रामसिंह, दफ्तर से सब लेख आपने ही लिखवाया है सो ७ कहे हुए समय पर्यन्त का लेख, पहिले के लेख समान नहीं आया ॥ १२ ॥ ८ माणिक्यपाल नामक ९ पुत्री १० अक्टूबर ११ मृगशिर बदि में प्राप्त ॥ १३ ॥

श्रीजितके सम्मत विवाह यह दूजो२ ठयाह,
आप१ घन१ पूरि *वसु१ विदुरन कविन अैन ॥
बुंदी पुटभेदन स्वकीय विधि काल बिस्यो,
देय सुख निखिल पितामह सुखनें दैन ॥
सक गुन वेद अठ भू १८४३ मित समा समय,
राजा गजसिंह मर्यो बीकानैर सिर रैन ॥
सूनु तस जेठे गंजि तीसरो३ सुरतसिंह,
पीछैं भो महीपति बिसारि नय१ धर्म२ बैन ॥ १४ ॥
पहिलैं इरानको बन्यो स्वबल पातसाह,
नादिर स नाम जान दिल्लीकौं करी कतल ॥
ताकौं मारि ताहीके भरोसाके प्रधान भट,
खूब अपनायो राज्य अहमदसाह खल ॥
मथुरा कतल मंडि जानैं करि दिल्ली१ जेर,
मारि मरहट्ठन बिडारे परि हीन बल ॥
साह आलीगोहर४९के जे भट मिले सभय,
ते जवन ताहीके अधीन कीनैं छोरि छल ॥ १५ ॥
सत्रह मतंगज भू १८१७ संवत प्रथम समैं,
अहमदसाह रन जीति तव दिल्ली आइ ॥
दिल्लीपति मंत्री लखनेऊ ईस१ उक्त दूजो,
प्रबल रुहेला जो नजीबुद्दोला२ नाम पाइ ॥
दिल्ली काज तंत्रै इनकै करिगयो जो देस,
जावितखाँ पुत्र भो नजीबुद्दोला गेह जाइ ॥
सूनु जा रुहेलाकै भयो गुलामकादिर सो,

* आपने मेघ रूप होकर धन रूपी बुन्दों से १ कवियों के घरों को पूर्ण किये २ पुर में ३ प्रवेश हुआ ४ आदि को ५ रत्नसिंह का पुत्र ॥१४॥१५॥ १ आधीन

दिल्लीलूटिबेकौं आयो या समैं छल दुराई ॥ १६ ॥
पहिलैं ख बेद धृति १८४० संवत अनेह पर,
दिल्ली साहआलम५० नै दुर्बलव्है पाइ दुख ॥
माहजि सनाम तामैं संध्याकौं सबल मानि,
मंत्री निज कीनौं सो पटैल बज्यो लोकमुख ॥
वाके बल स्वैरस्थ बेद बेद धृति १८४४ साक अब,
सो गुलामकादिर चलायो लैन लूट सुख ॥
साह हत लाह ताहि राहमैं न रोकिसक्यो,
रोकि अब दिल्लीद्वार पैठिबेकी जानि रुख ॥ १७ ॥
जाके द्वैहजार २००० जंगी कामके सिपाह जानि,
रोक्यो तस ऐबो साह आलम५०।५ प्रमत्त रहि ॥
अलैयार१ सुलैमान२नाजर३ प्रमुखैं इहाँ,
बोले करजोरि हे रुहेला स्वीय धर्म बहि ॥
उज्झि भय भाखत भरोसाके जनन ऐसैं,
सो गुलामकादिर बुलायो सह सेन सहि ॥
आइ तानैं साह दिय पट्टसौं उतारि अरु,
क्रुद्ध बनि मंगिय खजानौं मनि मुख्य कहि ॥ १८ ॥
कूर पछिताइ साह बापुरे नजर कीनौं,
मनि गन आदि वित्त व्रात जो हो ख्यात मन ॥
तदपि न तृप्तिव्है बहोरि खिल मंग्यो तत्थ,
धूजि मुगलेस भाख्यो ऐसो अब तो न धन ॥
साहकौं इतीक सुनि मारन लग्यो जो मूढ,

॥ १६ ॥ १ समय २ तहां ३ चिन्ता रहित होकर ४ दिल्ली के द्वार बंद किये ॥ १७ ॥ ५ आदि ६ भय छोडकर ॥ १८ ॥ ७ धन का समूह जो मन में प्रसिद्ध था ८ बाकी का धन मांगा

सोतो जिन आन्यो तिन रोक्यो नतिभाव संन ॥
तोहू अति क्रुद्ध हाथ छुरिका[2] निकासि तिहिं,
पूरे खल दीनौं साह आलम५०। कौं अंधपनं[3] ॥ १९ ॥
केते अधिकारी मुगलेसके कतल करि,
ठानि कछु काल दिल्ली आपुनौ अमल ठाम ॥
पीछैं मरहट्ठ सेना आइबेकी संक पागि,
हाथ जो लग्यो वसु[4] सो लै भज्यो भजि हराम ॥
ताको पलटाहु दीनौं दिष्टैं[5] त्वरिततम[6],
बेर दुव२[7] आयो पकस्यो यह बुंधन वाम ॥
पीछैं कीलि[8] राख्यो घोर कष्ट सूलपंजरमैं[9],
छेदि छेदि थोरो यौं रुहेला हन्यौं छल छाम[10] ॥ २० ॥
साहजि वजीर इम जाबितखाँ सूनु[11] मारि,
आनि साहआलम५० ही वैठास्यो तखत अंध ॥
तंत्रै[12] निज कीनौं सब मुलक परन्तु ताको,
वाहिनी बडी वल वसुंधरा[13] विरचि बंध ॥
साक सर वेद इभ अवनि१८४५ अनेह इत,
भो पता अनसुं[14] भूप कृष्णगढको कमंध ॥
ता सुत कल्यान गुरुमानी[15] पट्ट बैठो तास,
[16]रामसि२०१४ प्रभु मातुल जो रावरो सिथिल संधं[17] ॥२१॥

१ नम्रता से २ हाथ से छुरी निकालकर ३ अंधा कर दिया ॥ १९ ॥ ४ धन ५ भाग्य ने ६ अत्यन्त शीघ्र ७ उलटा चतुरों से पकड़ा हुआ आया ८ कैद करके रक्खा ९ लोहे के कांटों के पींजरे में १० छल में समर्थ छली को मारा ॥ २० ॥ ११ जाबिदखाँ के पुत्र को १२ आपने (बादशाह के) आधीन १३ पृथ्वी की बड़ी सेना से बंधन किया १४ राजा प्रतापसिंह प्राण रहित हुआ १५ बडे घमंडवाला कल्याणसिंह १६ हे प्रभु रामसिंह वह आप का मामा १७ ढीली प्रतिज्ञावाला अथवा प्रतिज्ञा में ढीला हुआ ॥ २१ ॥

तर्क वेद अष्ट ससि१८४६ संवत समय तामैं,
ईस जयनैरको प्रताप नृप बुन्दी आइ ॥
आम ईस७ सुभ्र१ बुध४ पंचमी५ लगन साधि,
दीपसिंह१९८।६ तनया बिबाह्यो सुखमां दिपाइ ॥
नामकरि दुलही बिचित्रकुमरी१६९।१ जो निज,
अनुज तनूजा व्याही श्रीजित महँ अघाइ,
पत्नी हीन आप यातैं दीपसिंह१९८।६पानि करि,
कन्यादान कीनौं बिधि गेहतैं खिल वनाइ ॥ २२ ॥
गढ१ तैं अवधि लैकैं बुन्दीपुर गोपुर२लौं,
मनुज न माये जे जिमाये ते वजार बीच ॥
होत जन भोजन चली वाहि तरंगिनी व्हाँ,
सर्कँरासो रेत२ ही करि आज्य१ जल२ भक्त१कीच ॥
अनुजकी तनूजा प्रतापकौं बिवाहि ऐसैं,

॥

आची सीख जैपुर१ अलोर२कै भयउ आँजि,
सीमापर संकुलि मचावत मैरक मीच ॥ २३ ॥
जाबदूके७।११ वंस बर सांवतका७।११।१ बार जानि,
श्रीजितनैं पहिलैं प्रतापकों दयो सुभट ॥
सीस रनमैं सो अभिधा करि बिनयसिंह१,
इहाँ काम आयो पायो अच्छरीन जो प्रकट ॥
सुहुकमसिंहउत्त२७।३१ जाके बोल देत सुरि,

---

१ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की २ अत्यन्त शोभा ३ अपने [छो]टे भाई की पुत्री को ४ उत्सव से तृप्त होकर ॥ २२ ॥ ५ नगर के द्वार [त]क ६ नदी ७ उस नदी में खांड [शक्कर] ही रेत ८ घृत ही पानी और ९ [भ]त [चावल] का ही कीचड़ हुआ १० छोटे भाई की पुत्री जयपुर के राजा [प्रत]ापसिंह को ११ युद्ध हुआ १२ भरकर (अवकाश रहित) १३ मरी रोग के [सम]ान मारकर ॥ २३ ॥ १४ नामवरी (यश) करके कछवाहे के पास

लिय सबहि फौज नायब बुलाय, समुझाय कहिय आगम सुनाय१४
अग्गैं प्रमाद समुपेत सुत्त, पांडव दल मार्‍यो द्रोन पुत्त ॥
निस सुत्त साहगोरिय अनीक, कइमास इक्क किय कांदिसीक १५
तसमात असन अल्पहि विधाय, सज्जहि समस्त सोवहु सुभाय ॥
करि तीन३ स्वस्व परिकर बिभाग, कहहु त्रि३ जाम जय रक्खि
राग ॥ १६ ॥
गज हयन देहु बिश्राम बंधि, श्रम पिक्खि अल्प आहार संधि ॥
वपु मंजि सजहु हय गज बहोरि, जंगा पलान संधान जोरि ॥१७॥
निस रहत जाम तजि तजि निकाय, पृतना सु रक्खन देहु पाय ॥
बुल्लिय बिदग्ध तोपन चलाक, कहि बिंटि दलहिं मंडहु कजाक
पंद्रहहजार १५००० पायक तुरंग, आरोपि साह तोरन असंग ॥
इम मंडि व्यूह जालिक अनूप, चहुवान असन किन्नौं चमूप॥१९॥
इन पुनि अग्गहि हैवर दिवान, संबाहिग फिरि किन्नौं सावधान ॥
इम सिबिर पिक्खि निज थान आय, सुख सयन किन्न नग बल
सुभाय ॥ २० ॥

रचना बिशेषनों आनी सेना कौ डेरा नहीं. कहिय कमरबंधा. निधान त्याग करि. नायब साहिब. यावनी. आगम आगे ॥ १४ ॥ अग्गैइति ॥ प्रमाद गाफिलता करि. समुपेत सहित. सुत सुप. जांके सुतो. द्रोणपुत्र अश्वत्थामा नामैं. साहगोरिय गोरी जाति को पठान गजनवीकौ पादशाह सहाबुद्दीन नामक ताकों. कयमास पृथ्वीराज चहुवानको मंत्री नामैं. कांदिसीक अपनों भाजिवेवारो. "कांदिशीको भयद्रुत." इत्यमरः ॥ १५ ॥ तसमात्इति ॥ असन भोजन. अल्पहि थोरोही. बिधाय करिकैं. सज्जहि सज्जितहुजहो. स्वस्व अपने अपने परिकरके. त्रिजाम तीन प्रहर. जय विजय तासैं. राग प्रीति ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ निसइति ॥ जाम इक प्रहर. निकाय स्थान "निकाय्यो भवनं कुटः" इत्यमरः ॥ बुल्लिय बुलायें. विदग्ध चतुर ॥ १८ ॥ पंद्रहइति ॥ पायक पयादे. तुरंग असवार. यहां उपादान लक्षणासों यह अर्थ जानिये. आरोपि खर रक्खे. तोरन बाहिरको दरवज्जा तहां. व्यूह रचनाबिशेष. ताकरिकैं. जालिक पहरायत. असन भोजन. चमूप सेनापति. यहां चहुवानको बिशेषन ॥ १९ ॥ हैवर हय. दिवान बुधसिंहको उपपद ॥ २० ॥ यहइति ॥ थप्पि थापि. निसान

मंगल२ स नाम वीर आयो काम वीरबट ॥
जैपुर विनय राख्यो श्रीजितनैं भाखि जैसो,
पूजि तैसी कूरमपैं वाहमैं रह्यो निपट ॥ २४ ॥
संबत तुरग बेद बारन अवनि १८४७ समैं,
पोकरनि वारेनैं बिरोध बाँध्यो छल पारि ॥
जोधपुर दुर्ग नाती भीमकौं तखत जोरि,
याको तात तात भूप विजय दयो उतारि ॥
कोप बस चंपाउत पहिले कुसलसिंह,
कीनौं बखतेस जोधपुर वैं अनयकारि ॥
ताकै अंत पाट बैठो बिजय तनूज ताको,
मान्यो उपकार भार तापै जैत मदमारि ॥ २५ ॥
आउवा अधीस जैत१ कुसल तनूज अरु,
देवसिंह२ पोकरनिवारो चंपाउत दोरहि ॥
केसरी तृतीय३ ईस आसोपको कुंपाउत,
रासिपति ऊदावत केसरी४ सनाम सोहि ॥
चीनि पहिलैं ए अपनैं मत चलत च्यारि,
राज परिखदमैं इन्हैं नृप विजय रोहि ॥
पकरि पठाइ कारा मारे दुख दैदै पूर,
बरस अनेक बीते जोपै रह्यो वैर जोहि ॥ २६ ॥
देवसिंह चंपाउत कहतो असह दर्प,

१प्रशंसा में रहा ॥२४॥ पोकरण के ठाकुर सबाईसिंह ने छल करके विरोध किया, जोधपुर के गढ पर२पोते भीमसिंह को बिठाकर पिता के पिता अर्थात् पितामह (दादा) ३विजयसिंह को उतार दिया ४ अनीति करके बखतसिंह को जोधपुर का पति किया था ५ उस बखतसिंह का पुत्र विजयसिंह पाट बैठा ६ जैतसिंह का ॥ २५ ॥ पहिले इन चारों को अपने मत पर (स्वतंत्र) चलते७देखकर राजा विजयसिंह ने इनको राज्य की सभा में ८ रोक कर ९ कैद में भेजकर

मो कटार कोसपुट जोधपुर दुर्ग माइ ॥
सोतो कीलिं मार्यो भो तनै तस सबलसिंह,
परिगो दगासौं सो पै तुपक प्रहार पाइ ॥
ताको हुतो तनय सवाईसिंह नाम तह,
जानै धरि बैर अब उक्त समै ढिग जाइ ॥
आराध्यो विजय भूप ऊपरकी प्रीति सौं यौं,
भूलि कृत भोरो जैसैं धीजिगयो मन भाइ ॥ २७ ॥
कथित गुलाबराय जाटिनी खवालि करि,
रानिनको छोगा करिराखी जो विजयराज ॥
राखी बँधवाइ तापैं भगिनी कहत रह्यो,
कुटिल सवाईसिंह निबहन इष्ट काज ॥
तेजसिंह नामक खवासिकै हतो तनय,
विस्फोटक रोग भयो ताकै सो बढत बाज ॥
तामैं न्हान आदि काम नियत असेस तजि,
साँचो भ्रात भास्यो भगिनीकौं सो उचित साज ॥२८॥
बिस्फोटक मिटिगो तथापि पटुता न वनी,
चँपाउत भाख्यो भगिनीसौं यह हेतु चहि ॥
मंडोउर जाइ पूज्य देवन मनाइ रचो,
पूजन बढैं ज्यों बाल जामिंज अरोग रहि ॥
दंपति२ पधारि सब भटन समेत द्रुत,

१मेरी कटारी के म्यान के भंडारे में जोधपुर का गढ समा सकता है २ उसको तो कैद करके मारडाला ? सवाईसिंह के पिता और पितामह के साथ कई प्रकार के कार्य किये थे जिनको भूलकर जैसे भोले स्वभाव का मनुष्य धीजे तैसे धीज गया ॥ २७ ॥ ४ उस जाटनी को बहिन कहता रहा ५ खोटे दिल-वाला ६ पुत्र ७ शीतला (चेचक) ८ शीघ्र पढा ९ सचा भाई दीखा ॥ २८ ॥ १० भाणेज ११ स्त्री पुरुषों का जोड़ा अर्थात् गुलाबराय जाटनी (पासवान)

अभय करो यौं तेजसिंह ग्रस्यो रोग अहि ॥
सो सुनि गुलाबराय स्वामीकौं सब समेत,
मानिमत मंडोउर लैगई बिसास लहि ॥ २९ ॥
आपुनौं दिखाय ऐसैं चंपाउत पैठि डर,
रीझत स्वैसाज्यौं बस कीनी सो गुलाबराय ॥
ताकै परतंत्र हो महीपति बिजय तैसैं,
कहती वहै सो करतो मन१ बचन२ काय३ ॥
पीछैं जो मरयो सुत तज्यो व्हाँ अन्न दंपति२नैं,
चंपाउत तबहु लिवायो अन्न हित चाय ॥
काहूमिस ऐसैं उक्त १८४० संवत नृपहिं काढि,
लैगो पुरबाहिर पूर बाहिर लगाय लाय ॥ ३० ॥
स्वीय भट सर्व राखि पुरमैं सवाईसिंह,
संग व्है अकेलो काढि स्वामी समुपेत सब ॥
गोपुर जुराइ पुर पाछो पैठि गढगति,
जेठो नृप नाती भीमैं कारातैं निकासि जब ॥
आप संत्रीपनको करार करि ताकौं आनि,
आनसौं सभाके सौधं गद्दी बइठारि तब ॥
नालीगन उच्छवके सूचक दगाइ नैर,
अखिल दुहाई फेरी भीमकी नवीन अब ॥ ३१ ॥
भूपति बिजयकै सुनैं ए सुत सात७ भये,
फतैसिंह१ जालम२ रु भोमसिंह३ नाम फाबि ॥

और महाराजा विजयसिंह ॥ २९ ॥ १ वहिन प्रसन्न होवै तैसे २ पासवान और राजा दोनों ने ॥ ३० ॥३बाहर पूर्ण लाय लगाकर राजा को शहर बाहर लेगया ४ अपने भट ५ विजयसिंह सहित सबको ६शहर के दरवाजे बंध करवाकर ७ राजा के बड़े पोते भीमसिंह को ८ कैद से निकालकर ९रचा से १० सभा के महल में ११ तोपें ॥ ३१ ॥

त्योंही सरदार४ सेरसिंह५ रु गुमान६ तह,
सामंतादिसिंह७ नाम सप्तम७ को छाइ छबि ॥
तेजसिंह१८ नामक खवासिके भयो तनय,
होइ सुत जेठे सम जासौं रहे सर्व दबि ॥
भूखन१ बसन२ सस्त्र३ बाहन४ अतुल भासैं,
शोचमान[1] जाको बपु ज्यौं जगमगात रवि ॥ ३२ ॥
भोम[2]३ सुत भीम११ रु गुमान[3]६ सुत मानसिंह१२,
सप्तम७ के सूनु[4] भयो सूरसिंह१३ नाम सह ॥
भूपको बडो१ सुत कुमारहि अँनसु[5] भयो,
ताके पुत्र सौन्यो[6] भीम भोमको तनूज तह ॥
बाहिरहो जालम१ जो जनँक प्रसाद बल,
जालिपुर मानहो२ गुलाबराय इष्ट जह ॥
और सुत नाती जिते जियत हुते ते आप[9],
कारा कीलिराखेहे बिचारि घरमैं कलह ॥ ३३ ॥
कारातैं निकासि ऐसैं भीमकौं नृपति कर्यो,
सो सुनि बिजयसिंह आन्यो उर कष्ट अति ॥
रानी सम मानी सो खवासिहु गुलाबराय,
मारिडारी चोरैं भेजि घातक सदंभ मति ॥
कुटिल सवाई पुरबाहिर बिजय काढ्यो,
गोकुलस्थ[10] गुरुन मिलापहिं कहत कति ॥
कैसैं कछु होहु पैं खवासिकौं हनि रु काक,

१प्रकाशमान(कान्तिवाला)शरीर॥३२॥२भोमसिंहका पुत्र भीमसिंह३गुमानसिंह का पुत्र मानसिंह४सामन्तसिंहकेपुत्रशूरसिंह५राजा का बडा पुत्र(फतहसिंह)तो कुमारपन में ही मरगया६जिसके भीमसिंह को गोद लिया७पिताकी प्रसन्नता के बल से जालमसिंह कैद बाहर था८मानसिंह जालोर था ९ विजयसिंह ने कैद कर रक्खे थे ॥ ३३ ॥ १० कितने ही लोक गोकुल में गुरुओं से मिलना कहते हैं

बाहिरलै विजय दयो दुख गरूर गति ॥ ३४ ॥
सेस भट संगहे बुलाइ तिनकौं विजय,
रंकपन लैं कह्यो सभामैं इम रोइ रोइ ॥
मैं जरठ[1] कोलौं अब रहिहौं जियत मंद,
पंचनको जो मत कहो वह लछन पोइ ॥
पोखरिनवारेसों कहाई तब पंचननैं,
खीज बस क्यों यह कलंक लेहु जस खोइ ॥
यौं तिहिं कहाई मो[1]कों भीम[2]कों मिलैं अभय[1],
होहु तुम बीच[2] तो इहां बिजय भूप होइ ॥ ३५ ॥
आँट कछु बासर[3] रही यह उभय[2] ओर,
जोरि छल गूढ जो महीपति बिजय जानि ॥
सबनके आगैं निज इष्टके करत सौंहँ,
इनकौं बुलायो मिल्यो चंपाउत दुष्ट आनि ॥
बोल्यो पंच करहु करार दस[10]कोस बट्टैं[4],
जूझि पहुँचैबो भीम[1] मो[2]जुत जियत जानि ॥
तुम सहधर्म यह बचन निबाहो तोतो,
बिजयकौं गादीतैं निकासौं भीम हठ बानि ॥ ३६ ॥
बायस[5] सवाई लै यों पंचन बचन बीच,
जोधपुर आइ भाख्यो भीमसौं जस जनाई ॥
एक दुव अब्द भूप रहिहैं जियत अब,
जाके अंत नियत[6] तुम्हारो पट्ट क्रित जाइ ॥
लीजे रत्न दुलभ खजानाँ खोलि संग सब,

॥३४॥१ बुड्ढा २ सवाईसिंह ने कहलाया कि मुझको और भीमसिंह को अभय मिलजावै ॥ ३५ ॥ ३ कुछ दिन ४ मार्ग में युद्ध करके दश कोस पहुंचाने का ॥ ३६ ॥ ५ सवाईसिंह काक ने ६ निश्चय

कीजे कछुकाल वास मोघर[1] यों वहिकाइ ॥
भीमहिँ उतारि त्यों सवाईसिंह पाप भट,
चाल्यो कोस[2] लूटि पीछो नृपकों[3] गढ चढाइ ॥ ३७ ॥
जात गढऊपर छली नृप पकरि जोर,
धक्कि उर कोप तोप मुच्छनपैं पानि धरि ॥
जोजो निज मंत्रही[4] चमूसो पठई जवनक[5],
जवन१ गोकुलस्थ२ जालम३ ए मुख्य करि ॥
भीम१ रु सवाईसिंह२ दोउरन कै[6] तोरि१ भट,
आनहु कैं[7] पकरि२ अधर्मी अति सीम अरि ॥
ऐसी कहि वाहिनी पठावत वचनवारे[8],
भीमहिं बचावन मिले उतकों धर्मभारि ॥ ३८ ॥
चूकत करार भूप बिजय[9] अधर्म चहि,
झेलि अघ सेना पठई सो पहुँची झँवर[10] ॥
ठहाँके जाट चंपाउत देवैं[11] पकरायो हुतो,
तास नाँती[12] वाको कुल संहर्यो असेस तर ॥
कोल जिन कीनों उत ठहै तिन मुरन कह्यो,
बिजय अनकि[13] तोहू मुरिबो न मानि वर ॥
खूब असि झारत दुहूँओरके सुभट खिरे,
पेरयो कछुकालसो सवाई१ भीम२ पीलुँपर[14] ॥ ४० ॥

---

१ मेरे घर में २ खजाना लूट कर ३ राजा विजयसिंह को ॥ ३७ ॥ ४ अपनी सलाह में थे उनकी सेना को ५ शीघ्र ही यवन, गोकुली गोस्वामी और जालमसिंह इन तीनों को ६ दोनों के मस्तक तोड़कर ७ अथवा पकड़ कर लाओ ८ सवाईसिंह को अभय का वचन देनेवाले ॥ ३८ ॥ ९ विजयसिंह ने १० झँवर नामक ग्राम में ११ देवसिंह चांपावत को गले में फन्दा डालकर पहिले पकड़ा था उसके १२ पोते और उसके सब कुलको मारा १३ विजयसिंह की सेना को पीछा फिरना कहा परंतु तोभी उस सेना ने वापिस लौटना श्रेष्ठ नहीं माना १४ सवाईसिंह और भीमसिंह को हाथी पर देखे ॥ ४० ॥

जोधपुर राजकी सभा ही होते सून्य जह,
आपुनँ जे जूझे तिनके दृग बचाइ अब ॥
पीलुतैं उतरि भीम१ संजुत पिहित पापी,
जो२ करभ बैठि लग्यो पोखरनि पंथ जब ॥
काके आगैं लरत इतैं इनतैं काहू कह्यो,
ते जे कछु सेस सून्य वारन निहारि तब ॥
कुग्रापँन जारि गये ऊबरे निज निकेत,
सेस इतके जे पहुँचे ते नृप पास सब ॥ ४१ ॥
साक बसु वेद नाग भू १८४८ मित समा समय,
जैपुर१ अवंती२के बिरोध बढ्यो क्रोध जगि ॥
तुंगापुर खेत आयो माहजि प्रसँभ तानि,
लक्ख दुव२००००० लै बल अहंबल आयासँ लगि ॥
कूरम सचिव दोला आधोरँ राज्य दैन कहि,
पर जो नवाब हमदानी आन्यौं प्रीति पगि ॥
ऊबर्यो अनीक जोधपुरको सहाय आयो,
दोहू२ ओर घोर अँवमर्द मच्यो तोप दगि ॥ ४२ ॥
क्रोधबस जोधँ१ गयँ२ हय३ मैंय४ नासकाल,
पेखत खरे दुव२ चमूँ परि गजन पीठि ॥
गोलालगि एतेमैं करीतैं हमदानी गिर्यो,

१भीमसिंह सहित हाथी से उतर कर, वह पापी (सवाईसिंह)२ऊंट पर बैठकर ३ हाथी को खाली देखकर ४ मुरदों को जलाकर ५ युद्ध से बचे सो अपने अपने घर गये ॥ ४१ ॥ ६ उज्जैन के ७ हठ फैलाकर ८ सेना ९ अहन्ता (मेरे समान कोई नहीं)का१०श्रम करके११भँवर के युद्ध से बचीहुई सेना१२युद्ध ॥४२॥ क्रोध के वश१३वीर१४हाथी, घोड़े और१५ऊंटों का नाश होते समय हाथियों की पीठ पर राजा प्रतापसिंह और हमदानी दोनों खड़ेहुए सेना को देख रहे थे इतने में गोला लगकर हमदानी हाथी के ऊपर से गिरा और जयपुर की

आकुलता होत जयनैरके कटक ईठि ॥
भ्रात हमदानीको तदीय गज लज्जभयो,
कूरम कह्यो यौं निज ओरके टकत नीठि ॥
दोला यह गोला मम अंग लगतो तो देर,
दैन असु नैकहु न होती यौं परत दीठि ॥४३ ॥
भनत इतीक दोला बनिक कह्यो हे भूप,
स्वामीके निदेस बिनु आधोराज्य दैन पहि ॥
आन्यौं सो मरयो तो अब रावरो रह्यो अखिल,
भागधेयं प्रभुको बलिष्ट भास्यो लभ्य लहि ॥
भूपति प्रतापकै इतमैं लघुबाधा भई,
चिंत्यो भूमि उत्तरन छोरिबो मतंग चहि ॥
बोल्यो दै दुसाला मंत्री याबिच हरहु बाधा,
नाँतो गज सून्य देखि टिकिहै अनीक नहि ॥ ४४ ॥
तैसैंही करत परदलके प्रबीर तह,
आगैं बढि आवते लखे रजगुन उफान ॥
हेतिं झारि सेना जोधपुरकी दसहजार१००००,
समुख भिरी ह्हाँ ठानि सत्रुनको अंवसान ॥
काटि मरहट्ठ करवालनसौं संपरांय,

सेना में घबराहट की १ इष्टि(इच्छा)हुई २ राजा प्रतापसिंह ने दोला नामक अपने मंत्रि से कहा कि ऐ दोला इधर(सेना की ओर)दृष्टि होने से ऐसी इच्छा होती है कि हमदानी के लगा सो यह गोला मेरे लगता तो ३ प्राण देने में कुछ देरी नहीं होती अर्थात् अब निर्लज्जता से भागने की अपेक्षा यह शीघ्र मरजाना अच्छा था४आपके प्राप्त राज्यको लेने से अर्थात् हमदानी को आधा राज्य नहीं दियेजाने के कारण आपका भाग्य बलवान् दीखता है क्योंकि सब राज्य आपके ही रहा ५ लघुशंका (मूत्र करने) की पीड़ा हुई इससे ६हाथी को छोडकर नीचे उतरना चाहा ७ सेना नहीं ठहरेगी ॥ ४४ ॥ ८ शत्रु की सेना के वीर ९ शस्त्र चलाकर १० नाश करके ११ युद्ध में तरवारों से काटकर

माहजि भजायो करयो कूरमको जय मान ॥
भँवर[1] बचे जो खेत तुंगा[2] के अखिल झरे,
जोधपुर रच्छक रहे सिसु नहि जवान ॥ ४५ ॥
जय जो कबंधनके जोर यौं प्रताप[2] पायो,
या १८४८ ही उक्त संवतमैं दक्खिन प्रदेस इत ॥
टीपूसुलतान अंगरेजनके त्रास टरि,
जुद्ध पहिले हीमैं भज्यो सठ कहाइ जित ॥
हैदरअली जो महसूर नृप मंत्री हुतो,
हो [3]जनक टीपूको सु स्वामीको बिगारि हित ॥
आप [4]बरजोर महसूरको बन्यौ अधिप,
चाल्यो [5]मनमग्ग [6]त्यौं गिनैं न उचिताऽनुचित ॥ ४६ ॥
[7]किंवदंती जानैं किरस्तान पक्करे कहत,
छअयुत६०००० प्रान तिनमैं [8]लव चतुर्थ१५००० [9]छोरि ॥
क्रूर खिल पैंतालीस सँहस४५०००करे कतल,
बैरी सम भास्यो जो दयाकौं [10]अंघसिंधु बोरि ॥
ताकै सुत टीपू भो कहायो सुलतान तिम,
जो श्रीरंगपट्टनमैं राजधानी निज जोरि ॥
सो सु सक उक्त१८४८बहिकायो फरासीसनको,
सत्रु कंपनीको सिट्यो [11]मृधतैं तुरग मोरि ॥ ४७ ॥
नेर बुंदी त्यौं इत हमीरसिंह नाथाउत,
विष्णुसिंह२००१२ नृपकी खवासी बैठि एक [12]अँह ॥
मंत्री बनि स्वामीको [13]पितामहसौं मारि मन,

---

१ सप ॥ ४५ ॥ २ जयपुर के राजा प्रतापसिंह ने ३ टीपू का पिता था ४ बल पूर्वक जबरी से ५ मन चाहे मार्ग ६ उचित और अनुचित नहीं गिना ॥ ४६ ॥ ७ जनश्रुति (दन्तकथा) है ८ चौथा अंश (भाग) ९ बाकी के १० पाप के समुद्र में डुबोकर ११ युद्ध से घोड़ा मोड़कर ॥ ४७ ॥ १२एक दिन१३श्रीजित

भाख्यो आप भूपति१स्वतंत्र२बलि३ओज सह४ ॥
ईस कोटा जालम अमात्य कहिबेको आज,
इच्छत बिवाही सुता आपकों मचाइ मेह ॥
व्है स्वसुर बंदगी बनाइबे उचित होइ,
जासौं संधि राखत सितारा१ दिल्ली२ आदि जह ॥४८॥
बात यह नृपहिं मनाइ यौं करी विदित,
श्रीजित निवारयो उक्त सगपन होत सुनि ॥
सूचकन सिच्छ१ वय जोबन उफान२ बस,
चाह करि व्याह कीनौं अंगीकृत लाह चुनि ॥
भाख्यो सुनि श्रीजित बडे हमहु आज भये,
गेह हमरेमैं ऐबो झालीको अलभ्य गुनि ॥
मान्यो बरजोर तोहू सगपन सो महिप,
पिसुन१ कहा न करै लागो प्रभुकान२ पुनि ॥ ४९ ॥
साहसी जो चंपाउत्त इतकों सवाईसिंह,
आपुने सदन ढंग पोखरनि भीम आनि ॥
दूजे२ अब्द लैगयो बिवाहन अजलं देस,
जैसलसहित मेर भाटिन उचित जानि ॥
व्याहिकैं सुन्यौं तँहँ महीपति मरयो बिजय,
ठीक लखि दुल्लहकों खल सैल पीठि ठानि ॥
जोधपुर लायो अर्धरजनी समय जोही,
पाए जुरे अंररर न खोले इन्हैं पहिचानि ॥ ५० ॥

उम्मेदसिंह से १ उत्सव ॥ ४८ ॥ २ सूचना करनेवालों की शिक्षा से ३व्याह करना स्वीकार किया ४ उस सम्बंध को जबरी से स्वीकार किया ५ चुगल क्या नहीं करता ॥ ४९ ॥ ६ अपने घर पोकरण नगर में भीमसिंह को लाकर ७ निर्जल देश ८ जैसलमेर में ९ ऊंट की पीठ पर चढाकर१०कपाट॥५०॥

यह सुनि अनीक व्यूहन बिवेक, आजमहु थप्पि जामिक्क अनेक
इम किय मुकाम दुवदल अमान, दुवघाँ निघात बज्जत निसान२१
रन माहताब उड्डित दुरओर, चकि चौंकिपरत जिन लखि चकोर
बढि दुरदल चंद्रजोतिनबिकास, पुरिणम मयंक बहुबिफ्फुरिपास२२
दुहुँओर बाजि गज रव दुरंत, दुवसेन उच्च डेरन दिपंत ॥
दुहुँओर सूर जामिक्क दुरूह, सजि सजि अनेक बिचरत समूह।२३।
दुहुँओर लखत पछन्न दूत, दुव दल नकीब आरव अभूत ॥
झंडन झपेट मच्चत दुरओर, सिंधुव अलाप दुवदिस सजोर॥२४॥
दुहुँओर करत जामिक्क दुराव, दुहुँओर छबीनाँ लखत दाव ॥
दुहुँओर बाजि फाँदत दुरबंध, दुहुँओर दंति गज्जत मदंध ॥ २५ ॥
दुहुँओर सुद्ध सेलन चमक्क, दुहुँओर घंट पक्खर घमक्क ॥
दुहुँओर सूर हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥
दुहुँओर सुतर जंघाल जात, दुहुँओर चास पल पल दिखात ॥
दुहुँओर करंत बहुरीति दान, दुहुँओर होत बिधिजुत बिधान।२७।
गुन३जाम रत्ति हुव इम अतीत, गहकिय सु जंग आरंभ गीत ॥
निंदहिं निवारि बुंदिप नरेस, करि नित्य बंदि पभु द्वारिकेस।२८

वाद्यविशेष ॥ २१ ॥ रनइति ॥ माहताब यावनी. हवाई विशेष. जाको प्रकाश चंद्रिका के माफिक होत है सो. दुरओर दोऊ तरफ. दुरदल दोऊ दलनसैं. चंद्रजोतिन चंद्रज्योति नामक हू हवाई विशेष होत है. तिनको विशेष प्रकाश. पुरिणम पूर्णिमासी ताके. मयंक मृगांक(चंद्रमा). बिफ्फुरि बिस्फुरित भये. पास समीप ॥ २२ ॥ दुहुओरेति ॥ रव शब्द. दिपत सोहत. दुरूह ऊहा तर्कना तामैं दुखसों आवैं ऐसे ॥ २३ ॥ दुहु०लखतइति ॥ प्रच्छन्न गुप्त. आरव शब्द. अभूत अद्भुत॥२४॥दुहु०करतइति॥दुराव पैलेनको न दीखैं ऐसो गुप्त चोकीमैं छिपनो. बाजी घोरे. फांदत कूदत. दुबंध दोऊ अगारी पिछारीके बंधन छतैंहू. दंति दंती[हस्ती]॥२५॥ २६ ॥ दुहु०सुतरइति ॥ सुतर ऊँट. यावनी.जंघाल अति वेगवान्. "जंघालोऽतिजवस्तुल्य"इत्यमरः ॥चास खबरि ॥२७॥ गुनइति ॥ गुन तीन३. जाम प्रहर. रत्तिरात्री. अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥२९॥ सुनिइति ॥ उवाच

जाइ उपद्वार[1] जब साहसी सवाईसिंह,
वित्त दे अधिक पटा दैवेको करार[2] कहि ॥
जामिक तहाँके फोरि बारी खुलवाइ जाइ,
गादी धरयो भीमहिं डुराए चौंर बाँहँ गहि ॥
तबहि अचानक बधाईकी चलत तोप,
कोलाहल माँच्यो ढंग जोधपुर त्राहि कहि ॥
बाहिर हो जालमैं[3] रह्यो सो पुर बाहिरही,
मारे सेस रुद्ध राजबीजी[4] भीम लेत महि ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

अंक वेद बसु चंद्र १८४९ इह, नियमित संबत नाम ॥
अर्क१चतुर्दसि१४ सुचि४ असित२,तज्यो बिजय बपु ताम५२
तदनंतर रट्ठोर तह, अष्टमि८ सित१ आषाढ४ ॥
भट चंपाउत भीमकोँ, बिजय पट्ट दिय बाढ ॥ ५३ ॥
बय त्रिसट्ठि६३ हायन बिजय, तज्यो कलेवर तत्र ॥
बय[7] छब्बीस२६सम भीम बलि, छितिप बन्यों धरि छत्र॥५४॥
पहिलैं सूचिय जोधपुर, नाम अजित नरनाह ॥
तनय भए बाईस२२ तस, अभय[8]१ आदि रज राह ॥ ५५ ॥
सुत जोरावर१ खेमसर१, स्वामी अंक[9] समप्पि ॥
पुत्र देवं[10]२ इत पोखरनि२, ईस अंक थिर थप्पि ॥ ५६ ॥
कछुक दये इम भटनकोँ[11], सुत अंकस्थ सुभाइ ॥
भजे सेस बखतेस[12] भय, हन्यों अजित तब हाइ ॥ ५७ ॥

---

१ खिड़की पर २ पहरायतों को ३ जालमसिंह ४ राजवंशियों (राजवियों) को ॥ ५१ ॥ ५ आषाढ वदि ६ विजयसिंह ने तहां शरीर छोड़ा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वर्ष ॥ ५४ ॥ ८ अभयसिंह आदि ॥ ५५ ॥ ९ गोद देकर १० पोकरण के ठाकुर देवसिंह के ॥ ५६ ॥ ११ उमरावों को, पुत्र गोद दिये १२ बख़तसिंह ने, पिता अजितसिंह को मारा तब बाकी के सब भागगये ॥ ५७ ॥

देव सु इम काकाहु दमि, भूपति विजय भतीज१ ॥
कीलि हन्यौं न गिनैं कुहक, बंधुभाव नृपबीज२ ॥ ५८ ॥
प्लवङ्गमम्-सु इम सवाईसिंह पितामह३ बैर पर,
दुख बिजयहिं अति दे रु करयो सब राज्य कर४ ॥
मग्ग खवासि मराइ अजस१ अघ आदरिय ॥
अब भीमहिं पुनि आनि कथित१८४९ सक भूप किय५९

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे बुन्दीपतिविष्णुसिंहविक्रमपुरविवहनश्रीजिद्दक्षिणयात्राकरणं १ जयपुरेशपृथ्वीसिंहपरासुतातदनुजप्रतापसिंहसिंहासनासादनपृथ्वीसिंहसंदिग्धसुतमानसिंहवृन्दावननिवसनं २ एकोनविंशतिशतकसंबन्धिशकक्रमकथाऽपरिज्ञानसूचनविष्णुसिंहकरौलीविवहनं३ विक्रमपुरपतिगजसिंहपञ्चत्वतदनुजसुरतसिंहपट्टाक्रमणं ४ लुण्ठितदिल्लीकरुहिल्लयवनगुलामकादिरशाहालमान्धीकरणश्रुतदिल्लीशामात्यमाहजिसिंधियागमनकांदिशीकरुहिल्लकारामरणं ५ कृष्णग

इस कारण देवसिंह काका था जिसको १ भतीजे राजा विजयसिंह ने कैद करके मारा २ राज्य वंशवाले सम्बन्ध को नहीं गिनते ॥ ५८ ॥ ३दादा देवसिंह के बैर पर विजयसिंह को दुःख देकर ४ राज्य को अपने हाथ में किया ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में बुन्दी के पति विष्णुसिंह का बीकानेर विवाह करना और श्रीजित् का दक्षिण की यात्रा करना १ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह का देहान्त होकर छोटे भाई प्रतापसिंह का गद्दी बैठना और पृथ्वीसिंह के सन्देह युक्त पुत्र मानसिंह का जन्म होकर उसका वृन्दावन में रहना २ उन्नीस सौ के शतक में सम्वत्वार कथा नहीं जानने की सूचना करना और विष्णुसिंह का करौली विवाह करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का देहान्त होकर छोटे पुत्र सुरतसिंह का पाट बैठना ४ रुहिल्ला यवन गुलामकादिर का दिल्ली को लूटकर शाहआलम को अन्धा करना और दिल्ली के वजीर माहजी सिंधिया का आना सुनकर भागे हुए रुहिल्ला का कैद होकर मारा जाना ५ किशनगढ के

ढाधीशप्रतापसिंहकलेवरहानतत्पुत्रकल्याणसिंहगद्दिकोपविशनजयपुरेशप्रतापसिंहबुन्दीविवाहकरण ६ मरुदेशसामन्तपोकरणठकुरसवाईसिंहस्वपितामहदेवसिंहघातकयोधपुरेशविजयसिंहराज्यच्युतिसमयतत्पौत्रभीमसिंहपट्टप्रदापनपुनाराजसिंहासनारूढविजयसिंह–कँवरग्रामयुद्धपलायितभीमसिंहपोकरणग्रामनयन ७ तुंगाग्रामयोधपुरेशानीकसहायजयपुराधीशप्रतापसिंहावन्तीपतिमाधजीसिंधियासमरविजयनाङ्गरेजसमरटीपूसुलतानपलायन ८ योधपुरेशविजयसिंहमरणचांपाउत्तसवाईसिंहभीमसिंहपट्टोपवेशनभीमसिंहस्वबन्धुमारणं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितः ॥ ३५७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूडालदोहा ॥

इत बुंदिय वय तरुन अब, विष्णुसिंह२००।२वसुधेस बिराजत॥
गज१हय१विद्या सत्त्व३गुन, श्रुति४पुराण५इतिहास६काव्य७रत॥१॥
असह बेग बेधत उडत, बाजीन बल बरछीन बराहन ॥

राजा प्रतापसिंह का देहान्त होकर उसके पुत्र कल्याणसिंह का गद्दी बैठना और जयपुर के राजा प्रतापसिंह का बुन्दी विवाह करना ६ मारवाड़ के उमराव पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का, अपने दादा देवसिंह को मारनेवाले जोधपुर के राजा विजयसिंह को छल से गादी से उतार कर उसके पोते भीमसिंह को गादी पर बिठाना और फिर विजयसिंह को गद्दी पर बिठाकर कँवर ग्राम के युद्ध से भागकर भीमसिंह को पोकरण लेजाना ७ तुंगा नामक ग्राम में जयपुर के राजा प्रतापसिंह का जोधपुर की सेना की सहायता से उज्जीण के पति माधजी सिन्धिया के युद्ध में विजय करना और अंगरेजों के युद्ध से टीपू सुलतान का भागना ८ जोधपुर के राजा विजयसिंह का देहान्त होने पर चांपाउत सवाईसिंह का भीमसिंह को गद्दी बिठाना और भीमसिंह का अपने बान्धवों को मारने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से तीनसौ सत्तावन ३५७ मयूख हुए ॥

१ भूपति ॥ १ ॥ २ घोड़ों के बल से ३ सूवरों को

प्रदर१तुपकर२करि मृगपतिन, सहज हनिहु सबुकैं सु सराहन॥२॥
कवि१बुध२भट३आदर करन, सचिव४न संसद२ मान प्रसारन ॥
पंच५अंग मंत्र१हिँ परखि, बलि प्रगल्भ हित२ वेर३ विचारन ॥३॥
रामभक्त कपिराजकोँ, मन्निय इष्ट सु दिष्ट महीपति ॥
भुज्जत जिहिँ सब धाटिधर१, अरि२मेवास३अनिष्ट लहैं अति॥४॥
नृप सगपन हुव नांनता, कोटामंत्रिय झल्ल कनी सन ॥
सो श्रीजित चाह्यो न सुनि, पालतँ पहु प्रतिमल्ल धनीपन ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक ख पंच वसु सोम १८५० असित२ सुक्र३ग सप्तमि७ अह ॥
इंद्रसिंह२०१।१अभिधान तनय जह्योनि जन्यों तह ॥
प्रथम कुमर भव पर्व तास उच्छव अति तानिय ॥
बिष्णुसिंह २००।२ बुन्दीस दये नानाविध दानिय ॥
करि जातकर्म१ आदिक क्रिया लहि अवसर जग जस लयो ॥
श्रीजित तटस्थ भावहु सुनि सु भावत मह बिरचत भयो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

नाथाउत चालुक हमीर पलटायो नृप[11],
भावी बस सो मरयो रु मनोहर१ताको भ्रात ॥
कृष्णासिंह२ तनय उभै२ही राज काज करैं,
ए काका१ भतीज२ दोह श्रिजितपैं उफनात ॥

१ तीरों से ॥ २ ॥ २ सभा में ३ मंत्र (सलाह) के पाँच अंगों "कर्मणामारम्भोपाय, पुरुषद्रव्यसम्पत्, देशकालविभाग, विनिपातप्रकार, कार्यसिद्धि" की परीक्षा करनेवाला और बुद्धिमान् ॥ ३ ॥ ४ हनुमान् को इष्ट माना श्रेष्ठ भाग्यवाले राजा ने ५ धाड़ा डालनेवाले ॥ ४ ॥ ६ झाला जालमसिंह की कन्या से ७ वह राजा अपने दादा से शत्रुता और स्वामीपन की पालना करता अर्थात् उम्मेदसिंह के विरुद्ध था और उसकी आज्ञा में नहीं था ॥ ५ ॥ ८ ज्येष्ठ वदि ९ जन्म समय १० आपकी ओर का, वा रुचि पूर्वक उत्सव ॥६॥ ११ विष्णुसिंह को

संवत कहे १८५० मैं तिनहीनैं सुचि[1]४ मास सित,
देवगुरु[2]५ वार दसमी१० कों लग्न दरसात ॥
जालमकी तनया बिवाह्यो नृपकों लै जाइ,
अजबकुमारि २००।३ नाम तीजी३ रानी क्रम आत॥७॥
जालम स्वसुर तदनंतर समय जानि,
आपओर आन्यौं मोरि जामाता[3] धराधनिक[4] ॥
हेरनमैं[5] नानाबस्तु कीने भेट साधि हित,
मैंगल[6]१ तुरग२ सस्त्र३ बस्त्र४ हेम५ त्यों मनिक[7] ६ ॥
मोदसों पठाइ बुंदी निकट महीपतिकै,
फैली[8] जन जूह राखे आपुने जथा फनिक[9] ॥
उक्त १८५० सकहीमैं इत कालख नगर आंजि,
वीर दोला जैपुरको मंत्री सो मर्‍यो वनिक ॥ ८ ॥
संवत अवनि पंच अष्ठ इक१८५१ मान समैं,
मत्तपनतैं करदलाके चोक जंग[10] मचि ॥
भागपुर नरेस१ रु माहजि कुमर२ मिरे,
लगत प्रहार भागे जवन सभीकें लचि[11] ॥
कंपनीकी सेना सम निपुन कवायदमैं,
रारि तँहँ नौरिन[12]की पलटनि दोइ२ रचि ॥
भागपुर लेगई नवावकों निवहि भोन,
सन्ध्याके सिपाहनके वेढ[13]तैं बचाइ बचि ॥ ९ ॥
लीनौं अंगरेज७न मलाका१ उपद्वीप इत,
बर्मा१ मास२ तैं जो लग्यो दक्खिन२।३ दिसा बिथैं[14]रि ॥

---

१ आषाढ सुदि २ बृहस्पतिवार ॥ ७ ॥ ३ जमाई ४ राजा को ५ दहेज में ६ हाथी ७ जवाहिरात ८ फैल फरनेवाले मनुष्यों का समूह ६ सर्पों के समान १० युद्ध में ॥ ८ ॥ ११ भय सहित १२ गाघरा पलटन १३ घेरे से या युद्ध से ॥ ९ ॥ १४ फैलाव (विस्तार)

द्वैरही लघु टापू और तासौं लगतेहि दावे,
सिंहपुर१ नाम रुपि नाँग२ नाम अग्रसरि ॥
अच्छे जल१ पवन२ बनावत सुखद इहाँ,
कालापानी कहत प्रजामैं इन्हैं रूढि परि ॥
क्रूर अपराधी इनहीमैं बसिवेके काज,
कीलिकैं पठावत न ऐवेको प्रबंध करि ॥ १० ॥
पुण्यापति पेसवा नाम बिप्र,
जाति चितपावन जो अपनैं न सुत जानि ॥
अंक निज लेतभो तनै गिनि अमृतराव१,
औरसभो पीछैं तास बाजेराय२ सुत आनि॥
रीति कहि पीछैं टारि पंचन अमृतराव१,
बाजेराय२ बैठास्यो पिताके पट्ट मह मानि ॥
उक्त१८५१ सकहीमैं कहे ए भये उदंत उभै२,
कढिकैं अमृतराव१ कीनौं द्रोह तजि कानि ॥ ११ ॥
पुण्याको प्रदेस सब लूट्यो इहिं दुष्ट पीछैं,
बादी खल बिप्र१ गाइ आदिक हनैं बहुत ॥
पीछैं जिहिं कासी आइ लाखन खरच पारि,
द्विजनकी दुस्थतां दबाई व्है उदार हुत ॥
पाप१ मैं रु दान२ मैं दु२ घाँ जो अतिसीम पायो,
सो१ इम बिडारि राख्यो२ इमहिं तदपि सुत ॥
भोग बसु पुण्या बाजेरावहु कुपुत्र भयो,
देसहि गुमाइदैहैं जो पुनि प्रमाद जुत ॥ १२ ॥
संबत नयन बान बारन अवनि१८५२ समा,
बुन्दी इत श्रीजित नरेसतैं भये बिमन ॥

१ कैद करके ॥ १० ॥ २ गोद ३ कुलवंती विवाहिता स्त्री से ॥ ११ ॥ ४दरिद्रता ॥ १२ ॥ ५ विष्णुसिंह से उदास हुए.

पेच पिसुनके उपायतैं अवस पाइ,
जात्रा जगदीसकी करी पुनि सभक्त जन ॥
आपुनैं परिग्रह समेत जाइ आश्रमतैं,
पूजि उपचारन१ दै उपदा२ उदार पन ॥
जात१ अरु आत२ पहिलैं१ जे परसे न जानैं,
तीरथ समस्त परसे ते सुद्ध भाव सन ॥ १३ ॥
सोलंखिन१ नागर२न दै इत नृपहिं सीछा,
कासी आत श्रीजित कहाई यह रोध करि ॥
आवहु न देस अब रहहु उहाँहीं आप,
भेट सतपंच५०० दम्म प्रतिदिन लेहु भरि ॥
एक१ संग विक्रम१।१ हो थाँनाँपतिको अनुज,
धीर दूजो२ भूरा२ महासिंह१.९४१९ वंसी धर्म धरि ॥
सामंतके७।१।१संगी च्यारि४भैरव१।३विनयसिंह२।४,
सूर खुसहाल३।५ ज्ञानसिंह४।६ हुते संग सँरि ॥१४॥
संगी दुहितासुत कबंधज नवलसिंह१।७,
सोमानी प्रधान खुसहालीराम१।८ पुत्र२।९ सह ॥
संकर१।१० रु विनय२।११ तृतीय३ तैसैं शिवदान३,
तीन३ संगी चारन बुलाये तिनकौंहु तह ॥
कृष्णराम१।१३ धात्रेय रु भोप२।१४ तिम कोटवाल,
श्रीजितके राज्य संग कोटवाली उज्झि वह ॥
कायस्थहु केसोराम१।१५ सालिग्राम२।१६ वैस्य संगी,
विष्णुदास१।१७ नाजर हे इत्यादिक सार्थ वह ॥ १५ ॥

---

१ चुगलों के २ पूजा ३ भेट ॥ १३ ॥ ४ राजा विष्णुसिंह को शिक्षा देकर ५ श्रीजित का बुन्दी में आना रोककर कहलाया ६ हाड़ों की एक शाखा का नाम है ७ धजकर ॥ १४ ॥ ८ दौहित्र ९ छोड़कर ॥ १५ ॥

स्वीय गुरु कुसल१।१८ भतीज तथा सुरतान१।१९,
जाइ जगदीस द्वै२ मिले ये पीछे आत जिम ॥
कापरनि हठन पठायो सुरतान १।१९ कह,
आयो कछवाहनके रामपुर व्याहि इम ॥
जानैं तास सामंत२० रु सगत २००।२ तनूज जुग,
कापरनि आयो सुरतो नायो गुरु मानि किंम ॥ १६ ॥
श्रीगुरु१ सहित जे१हे हाजरि तिनहिं सभा,
श्रीजित बुलाइ भाख्यो जाहु सवही सदन ॥
जानि तिम बिन्नति करी तिन करन जोरि,
जातबेर आपुन अयोध्या सुन्यो पाप पन ॥
बुंदीके उदंतमैं अनिष्ट जिम पीछैं बन्यौं,
सूनु सरदार१९९।४ जैसैं छोरि बास दुक्ख सन ॥
जेठे१ सुत ईश्वर२००।१ समेत गयो जैपुर जो,
सुरनकी भाखी तब आप सो चही न मन ॥१७॥
नैर लखनेऊ१ फैजाबाद२के नवाबहुनैं,
आपतैं कहाइ कहो बंदगी बताइ आरि ॥
मामके पितामह१के रावरे पिता२सौं मेल,
हो यौं मिलि जाहु कालिह मो घर पवित्र कारि ॥
सोपै प्रभु मानी नाँ नवाबकी ह्वाँ भेजि सेना,
नाँती सम्रुझायो क्यौं न अन्यद्वारा जाक्ष जरि ॥
नाथाउत कृष्ण१ अरु छाऊलाल२ नागरहि,
भूप पलटायो जोर जालमके पाप भरि ॥ १८ ॥
पीछे न पधारे१ लखनेऊ न पधारे२ पुनि,

॥ १६ ॥ १ अपने अपने घर जाओ ॥ १७ ॥ २ मेरे दादा से ३ इस कारण ४ पोते को ५ जालमसिंह झाला के जोर से ॥ १८ ॥

जाइ जगदीस सुरि आत इहाँ सर्बजुत ॥
कासी रहिबेहीकोँ कहाइ अब आप कहो,
आसय कहाहे बनैं पाले१ जेहि सत्रु२ उत ॥
भाख्यो तहाँ श्रीजित यौं बरजत मोहि भूप४,
सर्ब तुम जावहु सम्हारहु स्वनारि१ सुत ॥
रहिहौं इहाँ मैं बानप्रस्थन३ उचित रीति,
इच्छा उनकीतैं पाइ कासी बसिबो प्रस्तुत ॥ १९ ॥
ऐसो सुनि सासन कितेक जन छोरि आये,
श्रीगुरु१ कह्यो ह्हाँ मैंतो रहिहौं संतत२ संग ॥
श्रीजित कह्यो नहि निबाहनकोँ स्वापतेय३,
मंगिखैहौं मैं द्विज कह्यो गुरु१ धरि उमंग ॥
विक्रम सुभट कह्यो तिमहिँ न चाहि बसु४,
इत्यादिक कतिक रहे ढिग ज्यौं निज अंग ॥
जालम५ स्वसुर इत बुंदी राखि स्वीय६ जन,
भेद बल भूपकोँ रचायो अपनेंही रंग ॥ २० ॥
धाइभ्रात मंत्री सुखरामपै दंम धमाइ,
लाख१००००० द्रम्म नृपपैं लिवाये जंपि जालमहि ॥
जाकरि गनेसघाँटी१ कोट१ दरवाजे२ जुत,
तारागढ तैसैं बडटाँका२ वर सिल्प वहि ॥
कलाधारी हरिको निकेत३ रु पृथुल कोस४,
श्रीजितके सम्मत रचे ए ४पीछैं मेल रहि ॥
पै अब कथित काल झालानै फरक पारि,
जनहु स्वकीय राखे बुंदी१ अरु देस२ चहि ॥ २१ ॥

१ बुन्दी का राजा मुझे बुन्दी आने को रोकता है ॥ १९ ॥ २ निरन्तर ३ धन ४ धन ५ जालमसिंह झाला ने ६ अपने वीर ॥ २० ॥ ७ दंड ८ मन्दिर ॥२१॥

तारागढ एक१ टरयो झालाके प्रबंधनतैं,
नाथाउत१ नागर२ सु पै निज करन सीर ॥
तारागढ लै चले नरेसहिँ सिखाइ तिम,
बंट्टतैं कहाई पहु आतहों लै क्रति वीर॥
सरवर हुतो दुर्गपति सीसोलेस अरज,
कराइ तानै आप आवहु गुन गहीर ॥
जालमके पच्छको इहाँ न ऐहैं कोऊ जन,
श्रीजितको सासन यों है हम धरहु धीर ॥ २२ ॥
देसके सिपाह तिम छसत६००छुराइ दये,
कामपर राखे तँहँ खारीतटके कबंध ॥
मुख्य रनसिंह तिनमैं करि निज सु मान्यों,
दुर्गपति आवन दये न ऐसैं मदअंध ॥
नाथाउत१ नागर२ व्हाँ भाखन लगे नृपहिँ,
श्रीजित न छोरयो राज्य आप रहे हत संध ॥
जाकी आन सीस रहै स्वामी सो कहायो जात,
रावरे निदेसमैं न जोरकी गिनहु गंध ॥ २३ ॥
स्वामीकों इहाँ इम सुराइराख्यो सूचकन,
खीजबस यातैं रह्यो पन्नगलों बलखाइ ॥
कासीपुर आत इहिँ कारनतैं रोध क्रम,
बरजि कहाइ रहिये तँहँ बिधि बनाइ ॥
श्रीजितहु भाखी रहिबेकी जब एह सुनि,
छोरि तब आये घनैं आयतन मोहँ छाइ ॥
मंगिहों न कछु साधिलैहों दासभाव मैंही,

१ मार्ग से २ सीसोला ग्राम का पति ॥२२॥ ३खारी नदी के किनारे के राठोड़ ४ विष्णुसिंह को कहने लगे ५ प्रतिज्ञा छोड़नेवाले ॥२३॥६ घरोंसे ७स्नेह करके

जामिकन साह आलम जगाय, बुधसिंह तबहि द्रुत लिय बुलाय
कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहि बिलंब हुव सब असेस२९
सुनि नृप उवाच नय कछु सनर्म, अब होत जंग विधि बिधि अधर्म
बहु तोप करत दूरहि बिनास, बीरहु सकैं न यह टारि तास ।३०।
लैजात सबन धरि सिस्त घोर, मनमाँहि रहत सुभटन मरोर ॥
तसमात अप्प दल पिछि दूर, रहि छन्न काल कट्टहु जरूर ।३१।
इम सुभट जुद्ध पंडित हरोल, बिधि सब निबाहि नय धर्म बोल ॥
मथि दल समुद्र भुज मंदराग, निज बल कृपान रचि चंड नाग।३२
जयरत्न कहि जत्तन जरूर, ठहै ख्यात निवेदहिं निज हजूर ॥
इहिंनीति छन्नसाहहिं निकासि, बल सजिय अप्पहिय जय बिकासि
दल चढन बेग दै निज निदेस, बिधि करि बिहान संध्या बिसेस
सजि उनहु चढन आयस प्रसारि, नर गज तुरंग कलकलनिहारि३४

॥ दोहा ॥

दुवदल इम खलभल परिग, गहकि नफीरिय गान ॥
किलक नकीबन हुव कहर, पहर पलान पलान ॥३५॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रत्ती, बजे बंब भेरी बडी हल्ल बत्ती ॥
दुहूँ ओर ठहै सुद्ध के नित्य मंडैं, दुहूँ ओर संसारतैं प्यार छंडैं।३६।
दुहूँ ओर गंगोद कैं अंग मंजैं, दुहूँ ओर गीतादि गीतादि रंजैं ॥
दुहूँ ओर बानैत नागोद बंधैं, दुहूँओर के टोप सन्नाह संधैं ।३७।

कहत भयो. सनर्म नर्म लोकं ठट्ठा. तासहित ॥ ३० ॥ लैजातइति ॥ सिस्त ता-
कं ॥ ३१ ॥ इमइति ॥ मंदराग मंदर नामक अग पर्वत. ताकरि. नाग वासुकि.
॥ ३२ ॥ जयइति ॥ यहनीति या नीतिसों. बल सेना ॥३३॥दलइति ॥ निदेस
हुकम. उन आलमशाहनैं. कलकल कोलाहल ॥३४॥ दोहा ॥ दुवइति ॥ नफीरी
वाद्य विशेष. देशीप्राकृत ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जगीइति ॥स्पष्ट ॥३६॥ दुहूँ
गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकरि.गीतादि भगवद्गीतादिक. पुनः गीतादि
गान तदादि करि. नागोद लोकमें पेटी ॥ ३७ ॥ दुहू०जालीइति ॥ जाली लोके

ऐसी बदि बिक्रम[1] रह्यो उहाँ प्रसभं पाइ ॥ २४ ॥
श्रीगुरु कुसल[1] भट बिक्रम[2] दुवरहि संगी,
साँचेमनसोँ ए रहे स्वामी पास प्रीति सन ॥
सेनमैं थोरेसे मध्यभावतैं रहे सुनत,
ओर बहु छोरिआये मोह जोरि मोरि मन ॥
सबकोँ परखि ऐसैं कासीतैं उचित साधि,
आपहु प्रयान कीनो आजमके आँयतन[2] ॥
मग्ग बिच रोकन अनेक नृप दूत मिले,
पै तिन्ह रुक्यो न नैंक श्रीजित समर्थपन ॥ २५ ॥
माधोपुर आत योँ कहाई कछवाह[3] मनि,
जैपुरतैं मनुज भरोसाके पठाइ जह ॥
आश्रम पधारहु व्है जैपुर प्रथम आप,
ऐहो जो न तो मैं आइ लाइहोँ सो पुराय[4] अह ॥
माधवपुरहि जाइ झालाके सचिव मिले,
अरजकरी योँ है न मंतु हमरो असह ॥
वय अनुसार नाँती रावरे प्रबल बनैं,
मानैं काहूकी न जानैं भोगनमैं नित्य मह ॥ २६ ॥
मंतु न तुमारो इम श्रीजित तिन्ह मनाइ,
जालमलोँ जैहरि[6] कहायो नर्म[7] गालिजुत ॥
जैपुरधनीको इत ऐबोही नियत[8] जानि,
आपहि पधारे सोधि जामाता[9] अभीष्ट उत ॥
समुह प्रताप आइ लैगयो उचित साधि,

---

१ हठ करके ॥ २४ ॥ २ स्थान में ॥ २५ ॥ ३ जयपुर के राजा ने ४ पवित्र दिन ५ हमारा अपराध नहीं ॥ २६ ॥ ६ जालमसिंह भी जयसिंह कहलाने लगा अर्थात् जैसे जयसिंह ने बुधसिंह से बुन्दी छीन ली थी तैसे यह भी छीनना चाहता है ७ हसी (मसखरी) ८ निश्चय ९ जमाई का

पुब्ब जिम बैठो भिन्न अजिन तहाँ प्रनुत ॥
जामाता कह्यो यौं निज संग मम लेना जाइ,
देस१ जुत बुन्दी२ करैं रावरे अधीन हुतें ॥ २७ ॥
श्रीजित कह्यो यूँ आहि नांती लरिका सुपहु,
बात घरकीहै इहां हैं नहिं कछु बिचार ॥
जात अब ह्वाँ मो समुझायैंतैं समुझि जैहैं,
आप जिन आनों नैंक संसय मन उदार ॥
ऐसैं कहि जैपुरतैं बिरचि प्रयान इत,
आए निज आश्रम पढावत जस प्रसार ॥
बुन्दी कहि भेजी प्रभुरंगके चरन बंदि,
कासी पुनि जैहैं रहिबो चहि सब प्रकार ॥ २८ ॥
ऊपर१ की बात ऐसैं कासीतैं कहत आए,
आप ढंग जैपुरह्वै आश्रम स्वकीय इत ॥
अंतर२की नैंक न जनाई बात दोहू२ ओर,
हित हित१केन अहित२ न जो गिनि अहित ॥
सुभट१ अमात्य२ गये बुन्दीके सबै समुह,
नाथावत कृष्ण१ कों निहारि कह्यो आहि कित ॥
मो दृग जँरातैं होतजात अब ऐसे मंद,
ऐसी सुनि ओरन दिखायो कृष्ण१ सो बिदित ॥ २९ ॥
कृष्णको बिबाहिबो समीप हो सो जानि कही,
आयु तनुमैं बै है न व्याह करिबो उचित ॥
पीछैं तुम बुंदीके मुसाहब सु मंत्र पटु,

१ शीघ्र ॥ २७ ॥ २ बुन्दी के इष्टदेव का नाम रंगनाथ है ॥ २८ ॥ ३ किधर है ४वृद्ध अवस्था के कारण ॥२९॥५अब अल्प आयु में (कृष्णसिंह को मरवावेंगे इस कारण उसके विवाह करने को अनुचित कहा)

करिहो बिचारि काज मानिबो स्वबुद्धि मित ॥
सबको कुसल पूछि दे पुनि सवन सीख,
थान निज केदारेस पास वन्यौं तत्र थित ॥
थोंस कछु अंतर पितामह१ रु नप्ता२ है२हि,
जालमको पच्छ जोपै जानतहो मंत्रजित ॥ ३० ॥
एकदिन श्रीजित श्रीरंगके निलय आय,
आप रहते ज्यौं रहे उत्तर४।७ त्रि३दर ओर ॥
दक्खिन२।३ त्रि३दर दिसा बैठे नरनाह नाती,
ठानैं बुधउत्तर४।७ त्यौं दक्खिन२।३ भटनें ठोर ॥
नप्ताको कृपानलै निकासि लखि पानि लयो,
तबतो सिटाइ संकि पलटे सबन तोर ॥
तोहू धीर श्रीजित सो दै नृपहिं भाख्यो तूहि,
मोहि हनि१ औरनपैं क्यौं हनात२ कुलमोर ॥ ३१ ॥
सो सुनि सिटाइ भूप भूमिकों लखन लग्यो,
पीछो दयो आप सो कृपान लयो कोस करि ॥
कछु न कह्यो गो न मिलाइ दीठि जोरि कर,
भीत आत व्हीत नैंन हेतैं लेत लेत भरि ॥
जंपी पच्छपातिन[11] कुपुत्रहु प्रजा[12] जदपि,
पितर दयालु होत तदपि दया प्रसरि ॥
उठि तदनंतर निजाश्रम सिधारे आप,
सो पहु खिसानु[13] पछिताइवेके कष्ट परि ॥ ३२ ॥

१ पोता ॥ ३० ॥ २ मन्दिर में ३ उत्तर दिशा के तिवारे में ४ पोता विष्णुसिंह ५ श्रीजित की ओर पंडित और राजा की ओर उमराव बैठे ६ पोता की तरवार लेकर ७ वह खड्ग विष्णुसिंह को देकर कहा कि हे कुल के मुकुट मुझे दूसरों से क्यों मरवाता है तू ही मार ॥ ३१ ॥ ८ वह खड्ग म्यान में कर लिया ९ लज्जित १० स्नेह से ११ राजा के पक्षवालों से श्रीजित ने कहा कि १२ सन्तान कुपुत्र होजावै तो भी १३ राजा लज्जित हुआ ॥ ३२ ॥

करत कितोक काल संसय[1] विघात[1] करि,
कीनौं बिसवास जानि श्रीजितकौं सानुकूल[2] ॥
बीच नृप जानी पिसुननकी कपटबाजी,
मानी मन सुद्धि पहिचानी प्रीति सुख मूल ॥
याही हेतु पीछैं कृष्णसिंह१ रु मनोहर२ ए,
बाग रंग[3] आदिक बिलासमैं फवत फूल ॥
मंत्र[4] मिस भोजनादि सालामैं[5] बुलाइ मारे,
सीढीनपैं आत परयो मनोहर प्रोत[6] सूल ॥ ३३ ॥
गयो भजि कोटा भीत छाऊलाल नागर हु,
जोपै कुँहकेस[7] मरतो पै तज्यो बिप्रजानि ॥
सेसहु भजे कति रहे कति उदास सम,
महिप कह्यो मैं रह्यो पितामह पूज्य मानि ॥
नेर इत कोटा नाम महिप[8] गुमान मर्‍यो,
सम्मत त्रि सर अष्ट अवनी १८५३ प्रमित आनि ॥
पायो तास तनय उमेदसिंह ताको पट्ट,
जालमके[9] तंत्रहि रह्यो जो होत हित हानि ॥ ३४ ॥
आसफउद्दोला लखनेऊको नबाब इत,
हो जो अतिसीम दानी पै गुन परख हीन ॥
ताकै हो तनै[10] न यातैं एक जवनीको तनैं,
बालक दलिद्रहु लख्यो रुचिर१ त्यों प्रवीन१ ॥
ताहि सुत मानि अंगरेजन मनाइ तानैं,
कुलहिं मनाइ वह पट्टधर[11] पुत्र कीन ॥

१ सन्देह मिटाकर २ प्रसन्न ३ रंगविलास बाग में ४ सलाह करने के मिससे ५ भोजनशाला में ६ बरछी में पोया हुआ ॥ ३३ ॥ ७ ठगों का पति ८ राजा गुमानसिंह ९ जालमसिंह झाला के आधीन ॥ ३४ ॥ १० उसके पुत्र नहीं था ११ पाटवी पुत्र किया

जनकं अनंतर वजीरअली नाम जोही,
अवधि नवाब भो करे जिहिं सब अधीन ॥ ३५ ॥
जाको नाम जगमैं सश्चादतअली सुनत,
दाइभागी याको भो पितृव्य सुत बहि दोरि ॥
दंग कलकत्ता अंगरेजन कातिक देस,
जैवो लिखि भाख्यो देहु मोकहँ तखत जोरि ॥
तबतो बिकाल यह बिन्नति लगी न ताकी,
हाकिम वजीरअली चाहत सब निहोरि ॥
पै यह नवाब पीछैं मत्त बै तरुन पाइ,
करन अनीति लग्यो साहसी व्है बिधि कोरि ॥ ३६ ॥
नीच सुनि पाइ जोहि पुरमैं रुचिर नारि,
हठन बुलाइ सोही बिलसी अभय होइ ॥
पीछैं तो पिताहुकी जनीं जे अवरोध पाई,
बिलसि सबल तेहु तरुनी जस निगोइ ॥
दंग१ अवरोध२ रु कुटुंब३ बल४ मंत्री५ देश६,
सबन कुपुत्र समुझायो पै खलत्व खोइ,
तानैं नाँहिंमानी व्हाँ बडे नबाबकी तियन,
अंगीकृत एह न यौं रंकलौं कहिय रोइ ॥ ३७ ॥
भावी तब तैसो अंगरेजनको चाह्यो भयो,
वेग कलकत्ता जो सश्चादतअली बुलाइ ॥
वासूँ लिखवाइ देस अद्ध औ द्रविणं आदि,
जोहि बइठारयो लखनेऊके तखत जाइ ॥

---

१ पिता के मरे पीछे ॥ ३५ ॥ २ काका के बेटे ने ३ बिना समय ४ तरुण अवस्था पाकर ॥ ३६ ॥ ५ पिता की स्त्रियां ६ जनाने में पाई उनको बल पूर्वक (जबरीसे) भोगी ७ दुष्टपन से उनका समझाना खोकर ८ अंगीकार करके ॥ ३७ ॥ ९ धन आदि

कामी जो नबाब सब सम्मतिसौं दूरकीनौं,
सौंपे अधिकारी अंगरेज[1]हिं तँहँ नराइ ॥
उक्त१८५३ सकईमैं *सकलत्रसौं वजीरअली,
भाजि आयो जैपुर प्रतापको सरन भाइ ॥ ३८ ॥
नृपसौं कह्यो इम सभाबिच मिलि नवाब,
सरन सहाय सुन्यौं बिरुद तुमारे बंस ॥
अत्र जो रहौं तो राखिलेहो[1] सौंपि देहो[2] आप,
द्रव्यकी न हानि देहु ज्यौं मिटैं अरिन·दंसे ॥
राम[2०]१४ नरनाह यौं जनश्रुति सुनतरहैं,
इष्ट वसु[3] लैकैं कह्यो रामवंस अवतंस ॥
अर्थ लगिहै सो जो लगाइबे कहत आप,
धाम तुमरो तो रहो को करि सकत ध्वंस[6] ॥ ३९ ॥
यौं पहु प्रताप राख्यो सरन वजीरअली,
जैपुरको जानि अंगरेजन यह उदंत ॥
आइ इष्ट महुर उँपायनको लोभ[1] आनि,
मंग्यो जो नवाब कछु ओरहु नियम[2] मंत ॥
सूचि यौं नवाब मुहिं चोरैं छोरि सत्र सह ॥
अरिन दिखैहो तोहु दुरित न पैहो अंत ॥
सोहु ताकी न सुनि अहो तजि बिरुद स्वीय,
कीलि अंगरेजनकौं सौंप्यो लखनेऊकंत ॥ ४० ॥
मानि इन कातिर प्रतापहिं कनकैं[11]मुद्रा,

---

* स्त्री सहित ॥ ३८ ॥ १दन्त २ हे राजा रामसिंह ऐसे दन्तकथा (जबानी बात) सुनते हैं ३ चाहा हुआ (इच्छानुसार) धन लेकर ४ रामचन्द्र के वंश के मुकुट ने ५ धन ६ नाश ॥३९॥७ मोहरें भेट होने का लोभ करके ८ तोभी मुझको सौंप देने का तुम्हें पाप नहीं लगैगा ९ कैद करके ॥ ४० ॥ १०कायर ११ सुवर्ण की मुहरें प्रचार (चलन) की तो नहीं दीं मोहरों का प्रचार सुवर्ण

रीतिकी[1] न दीनी दीनी रीतिकी[2] कनकरंग ॥
आश्रम विसिख अष्ट भू१८५४ समा सक अनेह,
अधिप प्रताप यौं कलंक सु लगायो अंग ॥
पीछैं पछितायो आरकूटकी महुर पेखि,
सो लग्यो रहन गूढ लैं त्रपा[3] कुजस संग ॥
प्रान जोलौं कील्यो बहु सूल लोह पंजरमैं,
तोलौं अंगरेजन वजीरअली अति तंग ॥ ४१ ॥
पट्ट लखनेऊको सहादतअलीहु पाइ,
स्वीय मतमाँहिं खिल दीनौं सबकौंहि सुख ॥
पीछैं व्है प्रगल्भ[4] नयपाटव अतुल पाइ,
देसतैं मिटैबो चाह्यो कंपनी निदेस दुख ॥
जानैं गजउत्तर[5] अगाऊ लिखि केहि[6] जानैं,
मोरे अधिकारी सब लंधनके स्वामि मुख ॥
हुतहि इहाँको होतो छम सु इजारदार,
पै न फल पायो कछु दिष्टके[7] बडे कलुख[8] ॥ ४२ ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं तकू हुलकर ईस इत,
विग्रह[9] विहात भो मलार नाती काल वस ॥
इंदउर दंग जसवंतराव एकं[10]ढग,
तनय खवासिको[11] तदीयं बैठो पट्ट तस ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं भीम[12] जोधपुर ईस इत,

का है सो तो नहीं दीं और सुवर्ण के रंग की १ पीतल की मुहरें दीं २ पीतल की मुहरें देखकर ३ लज्जा लेकर गुप्त रहने लगा ॥४१॥ ४ बुद्धिमान् अथवा जबरदस्त और नीति की चातुरी ५ विस्तार पूर्वक उत्तर ६ जाने (ज्ञात) हुए ७ आदि ८ भाग्य के बडे पाप से अथवा बडे पाप के भाग्य से ॥ ४२ ॥ ९ शरीर छोड़ा (मरा) १० कांणा ११ तक्कू के खवास का पुत्र उसके पाट पर बैठा १२ भीमसिंह ने.

जाँलपुर सेना भेजि बेढ्यो दुर्ग खोइ जस ॥
पंद्रह१५ समा बयमैं मानसिंह तास पति,
पायो नाँ पराजय रचायो खूब रारि रस ॥ ४३ ॥
संबत कलंब भूत अष्ट अवनी१८५५समय,
तामैं इत बुन्दी दूजो२ जादवी जन्यो तनय ॥
बाल २०।१२ वह नाम संसकार विधिलौं न बच्यो,
इंद्रसिंह२०।१। अग्रज ज्यौं बालहि न पाइ अयं ॥
आश्विन७ के असित२ त्रयोदसि१३ जनमि इहै,
दूजो२ हू कुमार न रह्यो ज्यौं रविलौं उदयं ॥
बुद्धि धन पहिलैं१ बधाइ मैं उभय२ बेर,
प्रसरयो अकाल पीछैं२ भावीठहै बिसिष्ट भय ॥ ४४ ॥

॥

॥

॥

॥ ४५ ॥

उक्त१८५५ सकहीकै काल संहननं सन्ध्या उंज्झि,
माहजि वजीर मर्यो उज्जइनी ईस इत ॥
राज्य तस पट्ट बैठो दौँलतसहितराव,

१जालोरपुर में सेना भेजकर गढ को घेरा २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ॥४३॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्मों का फल नहीं पाकर ४ सूर्य के समान उदय होनेवाला वह दूसरा कुमार नहीं बचा ॥ ४४ ॥ यहां एक छंद की त्रुटि है ॥ ४५ ॥ ५ शरीर ६ छोडकर ७ दौलतराव

हुलकर सीरी व्है हु जित तित जंग जित ॥
उक्त १८५५ सकहीमैं इत दक्खिन प्रथुल देस,
आँजि कोही हारि अब मंद व्है जो मूढमित ॥
अंतकी लराई रुपि टीपू अंगरेजनसौं,
दिष्ट प्रतिकूल भिरयो साहसी इहाँ विदित ॥ ४६ ॥
सहिखट अग्र६६ मृत १ घायल२ भये सुभट,
सेस कंपनी१के सूर अच्छत रहे समर ॥
ज्यौंही द्वैहजार२०००मृत२ घायल२ अखिल जानैं,
भीलुक पलानैं खिल टीपू२ के अनीक भर ॥
ताही रनमाँहि मारि टीपूकौं बलिष्ट तब,
जेनरल विलजली जई इम बढ्यो जबर ॥
सो श्रीरंगपट्टनमैं ताको अवरोध सोधि,
लूटिकैं खजानौं१ ईला२ लेतभो२ असेस अर ॥
अंग सर नाग भूमि१८५६ संवत अनेह इत,
----लखवाद्विज पटैलको भट निदान ॥
जैपुरसौं आंट कछुकारन उरझि जात,
आयो देस ढुंढाहर लुट्टत बल अमान ॥
जो भेल्यो प्रताप पहु कूरम सम्मुख जाइ,
घोर पुरलंबाके समीप मच्यो घमसान ॥
सेना मरहट्ठनतैं अधिक हुतो पै संग,
एक विनु दोलाके लह्यो न सांचो अवधान ॥ ४८ ॥

१ पडे देश में२युद्ध३अब वे मूर्ख के समान मंद होगये ४विरुद्ध भाग्य से लड़ा ॥४६॥५युद्ध में बिना घत(घाव)रहे६पाक्षी के कायर भागगये७भूमि८शीघ्र॥४७॥ ९सज्जैन के पति पटैल का उमराव लखवा नामक ब्राह्मण१०युद्ध११एक दोला नामक मंत्री के बिना १२सच्ची सावधानी नहीं सधी तथा मनोवांछित नहीं सधा॥४८॥

स्वामी राम२०१४ सुनहु जनश्रुति जनावत ज्यौं,
दक्खिन२१३ अनीक लच्यो पहिलैं बिदूर हुत ॥
पै कछु समय अंत जैपुरके चक्र पर,
भाग्य प्रतिकूल भयो जीत१ टारि हरि२ जुत ॥
कूरम सभीऊ४है अचानक भज्यो कहत,
आइ खरे पीछे खेत पाइ मरहट्ठ उत,
भूप सु कितेनके निवारतहु ऐसो भज्यो,
जैपुरमैं जात तामैं धाम दुर्‌यो धीर धुत ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

बत्त जनश्रुति इम बदत, आँयुअवधि नृप एह ॥
कबहु न पुनि बाहिर कढ्यो, नय१ रु धर्म धरि नेह ॥५०॥
उक्त जु लखनेऊ अधिप, सौंपि वजीरअली१ सु ॥
लखवासन भजि२ लज्जमैं, बूड्यो जदपि बली सु ॥ ५१ ॥
इम जीवत मृत भो अधिप, पुर जयनैर प्रताप ॥
रोचि रहित बिमना रह्यो, अपजस बिस्तरि आप ॥५२॥
संबत हय सर अष्ट ससि१८५७, इत बुंदिय नरनाह ॥
पुर सोपुर पर्‌यौ प्रथित, बिहित चतुर्थ४ बिबाह ॥५३॥
गिनहु लग्न साध्यो गनित, सुचि४ सित१ छट्ठी६ सोम ॥

१ हे स्वामी रामसिंह २दन्तकथा ऐसी सुनते हैं कि पहिले तो ३बहुत दूर तक दक्षिण की सेना भागगई परन्तु थोड़े समय पीछे जयपुर की सेना पर भाग्य उलटा हुआ जिससे विजय को छोडकर ४ जयपुर का राजा प्रतापसिंह भय युक्त होकर अचानक घोड़े सहित भागा जिसपीछे मरहठे उस क्षेत्र को पाकर आ खड़े हुए ५तहां धीरता को छोडकर मकान में छिपगया ॥ ४९ ॥ ६ जीवन पर्यंत ॥ ५० ॥ ऊपर कहेहुए लखनेऊ के पति वजीरअली को ७ अंगरेजों को देकर और लखवा से भागकर वह राजा ८ बलवान् था तो भी लज्जा में डूबकर ॥ ५१ ॥ ९ क्रान्ति रहित उदास रहा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥१०आषाढ सुदि

दुहूँओर जाली दवालीन डारैं, दुहूँओर धाराल धाराल धारैं ॥
दुहूँओर सिंधून उच्छाह जग्गैं, दुहूँओर बाजीनपैं जीन लग्गैं ।३८।
दुहूँओर भ्रंडाल सुंडाल गज्जैं, दुहूँओर हिंजीर जंजीर बज्जैं ॥
दुहूँओर उच्चूल नेजा फरक्कैं, दुहूँओर के जोर छोनी मचक्कैं ।३९।
दुहूँओर धानुक्ख टंकार पूरैं, दुहूँओर देखैं लगी लोभ हूरैं ॥
दुहूँओरमैं दूत ठट्टै भूत भिल्लैं, दुहूँओर बेताल खेताल खिल्लैं।४०।
दुहूँओरके भीरु उद्राव मंडैं, दुहूँओरके बीर बानैत तंडैं ॥
दुहूँओर बंदीनको सोर बढ्ढैं, दुहूँ ओर तोपैं दराबीन चढ्ढैं ॥४१॥
धरैं कुंत बंदूक तुल्लैं बरच्छी, हुलैं हंकि हत्थी खुलैं सज्ज कच्छी
चढी सेन दोऊ बढी जंग चाहैं, अवाची उदीची घटा ज्यौं उमाहैं४२

॥ दोहा ॥

बुंदिपपति सन्नद्ध बनि, नय निकासि निज साह ॥
दल सारध दुवलक्ख२५००००लै, चढ्यो तुरग जय चाह।४५।
उत आजम आरोहि गज, लै दल सम्मुह आय ॥
मुल्लक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत्त उफनाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अकबरपुरप्रस्थितबहादुरशाहगोपाद्रिपुरप्रास्थि

जिरह. "जालिका त्वंगरक्षणी।" तिहैमः ॥ धाराल अच्छी धारावाले. धाराल खड्ग ॥ ३८ ॥ दुहूँ०भ्रंडालइति ॥ भ्रंडाल भंडोंवारे. सुंडाल हस्ती. ॥ "सुंडालः सामजो नागः" इतिधनंजयः॥हिंजीर हस्तीके जंजीर. जंजीर हस्ती बिना और पाखर तोप आदिके जानिये. उच्चूल ऊपर मुख वढे फूंदावारे॥"अस्योच्चूला-वचूलाख्यावूर्द्धाधोमुखकूर्चका" वितिहैमः ॥ ३९ ॥ दुहूँ०धानुक्खइति ॥ धानुक्ख धानुष्क. कमनैत॥"तूणी धनुष्मान् धानुष्कः" इत्यमरः॥ भिल्लैं मिलैं. खेताल क्षेत्रपाल ॥ ४० ॥ दुहूँ०केभीरु ॥ उद्राव भाजनों. तंडै गर्जनाकरै ॥४१॥४२॥ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में आगरा से बहादुरशाह और ग्वालेर से आजमशाह का

कविन त्याग वसु आढ्य करि, बिथरि किन्नि छिति व्योम५४
कन्या भूप किसोरकी, सरदकुमारि२०।४ सुभ सील ॥
स्वसा राधिकादासकी, सो पहु ऊढ सैलील ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहपुत्रजननश्रीजिद्विरुद्धविष्णुसिंहझल्लजालमसिंहकनीपाणिग्रहणं१ कालखनगरसमरजयपुरमन्त्रिदोलावैश्यपरासुभवनकरदाग्रामभागनगरनबाबमाहजीसुतसंग्रामनबाबपलायन २ पेशवाबाजेरावविरुद्धामृतरावपुण्यपत्तनप्रान्तलुण्टनकुपुत्रबाजेरावराज्यच्युतिसूचन ३ विष्णुसिंहविरक्तश्रीजिज्जगदीशयात्रागमनविष्णुसिंहश्रीजिद्बुन्द्यागमननिषेधन ४ रङ्गनाथदर्शनव्याजश्रीजिद्बुंदीप्रत्यागमनविष्णुसिंहकरसमर्पितकृपाणश्रीजित्स्ववधसूचनविष्णुसिंहव्रीडासमासादन ५ कोटापतिगुमानसिंहमरणतत्सुतोम्मेदसिंहझल्लजालमसिंहायत्तीभवन ६ स्वजनन्यादिव्यभिचारहेत्वंगरेजनिष्का–

१ धन से धनवान् ॥ ५४ ॥ २ बहिन ३ लीला सहित व्याहा ॥ ५५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में, बुन्दी के पति विष्णुसिंह के पुत्र प्रकट होना और श्रीजित से विरुद्ध होकर जालमसिंह झाला की कन्या से विवाह करना १ कालख नगर के युद्ध में जयपुर के मंत्री दोला वैश्य का माराजाना और करदा में भागनगर के नवाब और माहजी के पुत्र से युद्ध होकर नवाब का भागना २ पेसवा बाजेराव से विरुद्ध होकर अमृतराव का पूना का देश लूटना और कुपुत्र बाजेराव से राज्य छूटने की सूचना करना ३ बुन्दी में विष्णुसिंह से उदास होकर श्रीजित का जगदीश की जात्रा जाना और विष्णुसिंह का श्रीजित को पीछा बुंदी आने से मना करना४ रंगनाथके मिस से श्रीजित का पीछा बुन्दी आना और पोते को खड्ग देकर अपने को मारने की सूचना करने से विष्णुसिंह का श्रीजित से लज्जित होना५ कोटा के पति गुमानसिंहका मरना और उनके पुत्र उम्मेदसिंह का झाला जालमसिंह के वशीभूत होना ६ लखनेऊ के नवाब आसिफुद्दौला के दत्तक पुत्र वजीरअली का, उसकी माता आदि से व्यभिचार करके अंगरेजों से उसका निकाला जाना और सहादतअली का नवाब होकर वजीर

सितलखनेऊपत्यासिफुद्दौलादत्तकपुत्रवजीरअलीजयपुरशरणग्रहण
शहादतअलीनबाबपदप्राप्रण ७ स्वर्णद्रम्मप्रत्ययगृहीतरीतिमयद्रम्म
जयपुरेशप्रतापसिंहस्वशरणागतवजीरअल्याख्यांगरेजायत्तीकरण
नबाबशहादतअल्याख्यांगरेजविरोधन ८ इन्दोरेशहुलकरतक्कूमरणत-
द्दासीपुत्रजसवन्तरावपट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहजाबालिपुरदुर्ग
मानसिंहसमावरण ९ अवन्तीपतिमाधजीसिंधियामरणसिंहासना
रूढदौलतरावकतिपययुद्धपराजयनांगरेजरणटीपूसुलतानहनन १०
लावानगरावन्तीसामन्तलखवाविप्रयुद्धजयपुरेशप्रतापसिंहपलायन-
बुन्दीपतिविष्णुसिंहसोपुरविवाहकरणवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥
आदितः ॥ ३५८ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत काबल ईरानके, उरझी प्रथम अनेह ॥
बन्यौं तबहि रनजित बली, इन लवपुर सिख एह ॥१॥
नानकमत अनुगत नियत, अवसर उचित उपाय ॥

अली का जयपुर शरण आना ७ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का धोखे से पीतल की मोहरें लेकर अपने शरणागत वजीरअली को अंगरेजों के आधीन करना, नवाब सहादतअली का अंगरेजों से विरुद्ध होना ८ इन्दोर के पति हुलकर तक्कू का मरना और उसके पासवानिये पुत्र जशवन्तराव का पाट बैठना, जोधपुर के राजा भीमसिंह का जालोर के गढ में मानसिंह को घेरना ९ उज्जैन के पति माधजी सिंधिया का मरना और दौलतराव का उसके पाट बैठकर कई युद्धों में हारना और अंगरेजों की लड़ाई में टीपू सुलतान का मारा जाना १० लांवा नामक पुर में उज्जैन के उमराव लखवा नामक ब्राह्मण से लड़ कर जयपुर के राजा प्रतापसिंह का भागना और बुन्दी के पति विष्णुसिंह का सोपुर विवाह करने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ अट्ठावन ३५८ मयूख हुए ॥

१ पहिले समय में २ लाहोर में ॥ १ ॥ ३ नानक मत के साथ चलनेवाला

अप्प सुनहु प्रभु राम२०१४यह, नृपति भयो जिहिँ न्याय॥२॥

॥ घनाक्षरी ॥

जातिकरि जट्ट रनजीतकौं पितामह जो,
सो चरितसिंह नाम जानौं पहिलै समय ॥
जंबू आदि आढ्य पुर लूटे बहुवेर जानैं,
वित्त बहु जोस्यो दोस्यो धारि धारि मध्य बय ॥
ताकै भो तनूज महासिंह अभिधान तैसे,
जिततित दोस्यो जोहु धाँटि मेल खाटि जय ॥
सो रह्यो अधिक काल पत्तन अमृतसर,
ताकै यह बीर रनजीत प्रकट्यो तनय ॥ ३ ॥
विस्फोटक रोगमैं गयो तस नयन वाम२,
पै जिहिँ पिता छत सपूती प्रकटाइ पूर ॥
सजातीय जाति चहुँ४ओरके सिख समूह,
स्वजनक पीछैं बढ्यो सीमासौं अधिक सूर ॥
साह पुर कावलकौ जवहि जमानसाह,
आयो लंघि अटक दिखायो जै इतहु दूर ॥
तानैं यौं सुनी तँहँ ईरानपति सेना तानि,
जित्तन हिरात आत रित्तँ न मुरैं जरूर ॥ ४ ॥
सो सुनत पीछो भज्यो सजव जमानसाह,
ताकी रही बूडि के बितस्ताके सलिल तोप ॥
पूगि घर तिन रनजीतकौं दयो यौं पत्र,
नालीगन भेजहु निकासि अधिकात ओपं ॥

॥२॥१धनवान् २ महासिंह नामक पुत्र हुआ ३ धाड़ायतियों से मिलकर जय संपादन किया ॥ ३ ॥ ४ शीतला के रोग से ५ अपनी जातिवालों को ६ सेना का विस्तार करके ७ खाली नहीं मुड़ेगा ॥ ४ ॥ ८ अटक नदी के पानी में ९ तोपें १० शोभा से

तोप आठ८ भेजी रनजीतनैं कढाइ तब,
औरहु अनेक साध सासन हित अलोप ॥
व्है प्रसन्न यातैं साह काबल दयो हुकम,
लवपुरँ छीनिलेहु करि रन कालकोप ॥ ५ ॥
साहबादिसिंह१ चेतसिंह२ रु महुरसिंह३,
देस१ काल२ मूढ हुते हाकिम ए लवद्रंग ॥
जट्ट रनजीतनै मिलाय द्वारपाल जिन,
सज्जि यह गो तब कपाट खोले छल संग ॥
सो लाहोर लीनौं इम पहिले अनेहँ सिख,
जीत्यो बहु भूपनके दुर्ग१ देस२ जय जंग ॥
सो अब भुजग पंच बारन अवनि१८५८ साक,
उद्धत चलायो मुलतानपैं धरि उमंग ॥ ६ ॥
हाकिम मुजप्फरखाँ नाम मुलतान हुतो,
तानै सुनि आत गढमैं बल अतुल तानि ॥
तोपैं करि सज्ज रह्यो अंतर१ लरन तोर,
बाहिर निकसि भन्यौं बाहिर२ बिनति बानि ॥
मंडि महिमानी१ त्यौं उपायन२ बिबिध मंजु,
मनिगन आदि दये स्वामीलौं महत मानि ॥
तब रनजीत मुलतानकौं दुगमैं ताकि,
आयो मुरि गेह दया छलमैं प्रकट आनि ॥ ७ ॥
उक्त १८५८ सकही इत कबंध१ कछवाह२ईस,
पुष्करमैं भीम रु प्रताप२ मिले प्रीति पर ॥
द्वै२ही भूप दुलही बिबाहे दुव२ घाँकी दुव२,
जोधपुर१ जैपुर२ सगाई सोधि तुल्यतर ॥

१ हुकम २ लाहोर ॥ ५ ॥ ३ समय में ॥ ६ ॥ ४ सुन्दर भेट ५ दुर्गम देखकर ॥ ७ ॥ ६ दोनों ओर की (परस्पर, ७ अत्यंत बराबर पन देखकर

जेठी१ सुता आनंदादिकुमरि१ प्रतापकी जो,
ब्याह्यो कछवाही इतैं कमधज भीम२ वर ॥
भीम अनुजा भगिनी३ तिम अर्बुदनामधेया४,
भूप परताप२ परनी यौं उभै५ पत्तं घर ॥ ८ ॥
नैर इत कोटा झल्ल जालम निपुन७ नीति,
भूपति उमेद निज तंत्र६ कीनौं मंत्र भरि ॥
देसकाल कोविद बढ्यो सो प्रभुराम२०१४देखो,
कीर्तिराखे हाकिम समैके जिहिं दाव करि ॥
जानैं निज ओर जाहि दिल्लीके सबै जवन,
पेसवा२ प्रमानैं हमैं चाहत त्यौं छद्म९ हरि ॥
हुलकर३ सन्ध्या४ गिनैं जालम हमारो हितू,
अंगरेज५ मानैं झल्ल आपुनौं ध्रुवत्व१० धरि ॥ ९ ॥
नीतिवल जानैं देस१ काल२ की दसा निरखि,
जैपुर जैई११ जो विप्र लखवा१ रहत जानि ॥
दुरजनसाल २ खीची राखि ए अधीन द्वै२ ही,
मासिक१२ मैं लाखनदै जंगहि उचित मानि ॥
वनत विरोध दुव२ यौं कछु निमित्त वस,
पेलि पृतना१३कौं उदैपुरपैं अनख आनि ॥
जाजपुर लीनौं भीम१४ रानातैं कलह जीति,
पच्छिम३।५ छितीक करी कोटाके अधिप पानि ॥१०॥
मेवारन राख्यो स्वीय स्वामीतैं सुराइ मन,

---

१ आनन्दकुमरि २ कमधज (राठोड़) भीमसिंह ३ भीमसिंह की छोटी बहिन ४ जिसका नाम मालूम नहीं है ५ राजधानियों में प्राप्त हो हो कर ॥ ८ ॥ ६ अपने वश में ७ चतुर ८ कैद कर रक्खे थे ९ छल मिटाकर १० निश्चयपन धरकर ॥ ९ ॥ ११ जयपुर को जीतनेवाले ब्राह्मण लखवा को १२ तनखाह में १३ सेना भेजकर १४ महाराणा भीमसिंह से ॥ १० ॥

प्रधन[1] मरे न जानैं नामी इम जालमपुर ॥
भिल्लहड़ापुरलौं भई बस कथित[2] भूमि,
धारत दुहाई महारावकी प्रधान धुर ॥
इतको अमल रह्यो सोलह१६ समा[3] अवधि,
अबल[4] सिटाइ रह्यो रानाँ कष्ट पाइ उर ॥
भाखे १८५८ सकही यौं झल्ल जालमके नीति धरे,
पेचनतैं कोटाको प्रताप बढिगो प्रचुर[5] ॥ ११ ॥
पंडितोपट[6]की मरहट्ठ लाल कोटापुर,
काल पटु[7] संध्या को पठायो रह्यो लैन कर ॥
मित्र कीनौं ताकौं झल्ल जालम उचित मानि,
दोउ२नके एक१ चित्त मिटिगो कितोक डर ॥
बिप्र लखवा१ रु खीची दुरजनसाल२ बलि,
उक्त लाभ लै तिम छुराइ दये एहु अर ॥
प्रभुके कुलादि भट देसके निबल पारि,
प्रबल अनीक परदेसी राखे प्रीति पर ॥ १२ ॥
उक्त १८५८ सकहीसौं कछु पहिले समय इत,
जेनरल बिलजली मिलापमैं सुख जनाइ ॥
लेख जुत पेसवातैं मित्रता चहन लागो,
संध्यानैं दयो तब सो बाजेराव बहिकाइ ॥
तासूँ प्रतिकूल जसवंतराव भो तबहि,
पेसवा मिल्यो ऽहाँ जेनरलसौं भयहिं पाइ ॥
दैकैं[8] कंपनीकौं बुंदेलनको अखिल देस,
आपुनौं इलाका तज्यो कोलके नियम आइ ॥ १३ ॥

---

१ इस कारण युद्ध में नहीं मरे २ कहीहुई (मेवाड़ की) भूमि ३ वर्षतक ४ निर्बल ५ बहुत ॥ ११ ॥ ६ पंडित खितायवाला ७ समयचतुर ८ शीघ्र ॥ १२ ॥ १३ ॥

बात यह संध्याकौं न भाई यातैं छेद्म बस,
नागपुर नृप१तैं पटैल तब मेल पारि ॥
काठमाँडू नृप२कौं स्वपच्छमैं बहोरि करि,
रुचिसैं मनाइ अंगरेजनसौं लैन रारि ॥
ज्यौंही लसवारी१ डीघ२ दिल्ली३ मुखँ अंग जीति,
संध्या१कौं हरायो बिलजली२नै जु मद मारि ॥

॥ १४ ॥

अंक सर नाग भूमि १८५९ संवत समय अब,
हारि इम दो२उन निरंतर निबल होइ ॥
संध्या१नैं समस्थलिका२ देस कंपनीकौं दयो,
घौंसल्या१नै ओडीसा२ दयो घन धन धिजोइ ॥
उक्त १८५९ सक्कहीमैं अंगरेजननैं आगरा१रु,
दिल्ली२पुर द्वै२ही लये दक्खिन२।३को खैल खोइ ॥
जेनरल उक्त जो असाँई रन उक्त जीत्यो,
दुःखित हराये संध्या१ घौंसल्या२ तबहि दोइ२ ॥ १५ ॥
पास बिलजलीके व्हाँ हुतो दैल सहस पंच५०००,
दोउ२नके पास व्हाँ हुतो हजार तीस३०००० दल ॥
तोहू बिलजलीनैं झारि सतत असह तोप,
बज्र गति गोले गेरि कीनैं सत्रु हीन बल ॥
आगरा१ रु दिल्ली२ होत कंपनी अधीन इत,
दीनौं मेटि दोउन२तैं संध्याको सब दखल ॥

---

१ छल के वश २ आदि ॥ १४ ॥ ३ दक्षिणियों (मरहठों) का दुःख मिटाकर ४ नगर का नाम है ॥ १५ ॥ ५ सेना ६ निरन्तर

कैदी ज्यौं हुतो जु साह आलम४९ सु अंध काढि,
मुद्रा[1] लाख १००००० मासिक कराइ दीनों साम्रकल[2] ॥
प्राची[3]१के समुद्र१तैं लगाइ सीमा दिल्लीपुर,
कोस सतसप्तक ७०० लौं कंपनी यौं राज्य कारि ॥
हाकिम पुरातन[4] इहाँके सब गंजे हंत.
एक१ जसवंतराव१ मान्यौं बरजोर अरि ॥
जट्ट सिख दूजो२ रनजीत२सो इतो न जब,
चढन लग्यो ही जो मही[5] तिय नवीन बरि ॥
जित्वर[6] अजेय अब लंधन[7] सबन जान्यौं,
जे भये अधीन दीन अंतर विरोध जरि ॥ १७ ॥
संबत ख तर्क वसु भूमि १८६० सित सावनमैं[8],
जैपुर प्रताप मर्‍यो[9] भूत१४ तिथि काल जाम ॥
सूनु[10] तब ताको मत्त उद्धत जगतसिंह,
वित्रप[11] नरेस भयो रीतिसौं संतत[12] बाम ॥
जीवत प्रताप मान्यौं मारिबो उचित जाको,
नाँहिं सुत दूजो२ हो बचायो यौं[13] रहन नाम ॥
उक्त १८६० सकहीमैं भीम[14] जोधपुर भूप इत,
बाहुल[15]८की बिसद१ चउत्थी४ तज्यो वपु ताम ॥ १८ ॥

१ रुपये २ लाख रुपयों के ऊपर कुछ अंश ॥ १६ ॥ ३ पूर्व दिशा के समुद्र से लेकर ४ पहिले के ५ पृथ्वी रूपी स्त्री को ६ अन्य को जीतनेवाला और आप नहीं जीतने में आवै ऐसा ७ लंदन नगर को ॥ १७ ॥ ८ श्रावण मास के शुक्लपक्ष में जयपुर का महाराजा प्रतापसिंह मरा ९ जहां १० उस प्रतापसिंह का पुत्र उद्धत बुद्धिवाला और ११ निर्लज्ज (जगतसिंह) राजा हुआ सो १२ रीति से निरंतर विरुद्ध था १३ इस कारण नहीं मारा १४ भीमसिंह ने १५ कार्ती सुदि चौथ को तहां शरीर छोड़ा ॥ १८ ॥ वहां सूर्य सवाईसिंह ने.

मातंगी करंडपैं दुसाला तब डारि मूढ,
काढी सा[1] सवाईसिंह चंपाउत छद्म कारि ॥
जात अवरोधतैं[2] दिखाइ त्यों घने जनन,

१(*)चंडालिन (भंगिन) स्त्री के टोकरे पर दुशाला डालकर २उस चांडालनी को निकाली और ३ जनाने से जाती हुई बहुत मनुष्यों को दिखाई और

(*)जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धोकलसिंह की उत्पत्ति का कारण दिखाने के लिये सवाईसिंह का यह फरेब रचना ग्रंथकर्ता ने लिखा परंतु जोधपुर की ख्याति में यह वृत्तांत जिसप्रकार लिखा है वह नीचे लिखाजाता है ॥

महाराजा मानसिंह जालोर थे जहां फौजमुसाहिब सिंघी इंद्रराज किले के घेरा लगाये हुए था इस अरसे में महाराज भीमसिंह ने अदीठ के फोड़े से तीन दिन तक बीमार रहकर सं०१८६० में कार्तिक शुक्ला ४ को शरीर छोडा तब धाय भाई शंभुदान, भंडारी शिवचंद और मूंणोयत ज्ञानमल जो जोधपुर का काम करते थे इन तीनोंने फौजमुसाहिब इन्द्रराज को जालोर लिखभेजा कि महाराजा भीमसिंह का तो देहांत होचुका परंतु राणी देरावरजी को गर्भ है और यहांके प्रधान पोकरन के ठाकुर सवाईसिंह पोकरन हैं जिनको बुलानेको कासिद भेजा है सो उनके आने पर सलाह करके जब तक आखिरी हुक्म तुमारे पास न भेजाजावे तवतक जालोर के किले का घेरामत उठाना. यहपत्र इन्द्रराज के पास कार्तिक शुक्ला५ को पहुंचा तो उसने विचारा कि अब महाराज विजयसिंह के वंश में केवल मानसिंह ही बच रहे हैं अगर राणी देरावरजी को गर्भ होता तो साद बंटने वगैरह का उत्सव जरूर होता परंतु ऐसा न होनेसे पायाजाता हैकि गर्भ का तो केवल तोत ही खड़ा किया है इसलिये अच्छा हो कि महाराज मानसिंह को जोधपुर पहुंचा कर गद्दी बैठावें यह विचारकर उसने उनसे बातचीत करके मृगसिर वदि ७ को उन्हें जोधपुर के किले में दाखिल किया इधर पोहकरन ठाकुर सवाईसिंह ने जोधपुर आकर महाराज भीमसिंह की राणी देरावरजी को गाम चांपासणी भेज दी और महाराज मानसिंह से अर्ज की कि राणी देरावरजी को गर्भ है यह सुनकर महाराज मानसिंहने लिखावट करदी कि यदि उनके लड़का होगा तो हम वापिस जालोर चलेजावेंगे और लड़की होगी तो उदयपुर या जयपुर ब्याह देंगे परंतु सुनते हैं कि उनको गर्भ होनेका बिल्कुल फरेब रचागया है सो उनको किले में दाखिल करदो ताकि सचझूट निकल आवे यह लिखावट करके महाराज मानसिंहने चांपासणी के गोस्वामी को देदी. तब सवाईसिंहने यह विचारकर कि देरावरजी को गढ में दाखिल करने से फरेब खुलजावेगा इसलिये उन्हें तलहटी के महलों में भेजदी और वहां राज्य के तर्फ से पहेर खड़े होगये तब सवाईसिंह पिछली रातको उमराव सिरदारोंके सौ सवा सौ घोड़े इकट्ठेकर तलहटीके महलोंके नीचे गया और वहां से बाजार में हो, दरवज्जा खोल मेड़तिये दरवाजेके रास्ते शहरके बाहिर निकल गया और सब घोड़ों को इधर उधर बिखेर दिये और दूसरे दिन सुबह को यह प्रकट करादिया कि रात्रिको भीमसिंह की राणी देरावरजी के पेट से बालक हुवा, सो उन्होंने छबड़े में रखकर ऊपर से नीचे उतार दिया जिस लड़के को उसका मामा भाटी छतरसिंह खेतड़ीलेकर चलागया ॥

प्रकट कही यौं कैदयौं१ कैंगयो अत्र परि२ ॥
ऐसो दाव बिरचि पठाये पीछैं दूत इत,
लैबे जहाँ जालपुर घेरा रह्यो मान लरि ॥
भीमकी चमूके जहाँ हल्ला बहुबेर भये,
झगत अमाप तोप गोले रहे बज्र झरि ॥ १९ ॥
सेनापति सिंघी बनराज आदि व्हाँ सुभट,
कही जोधपुरके ऐसे कैमन आये काम ॥
त्यौं इत कालमैं नष्ट संग्रह सकल ताकि,
धारयो कढिजैबो मानसिंह सोपै तजि धाम ॥
काहू सिद्ध जोगी बन काहूसौं मिलत कह्यो,
तीन३ दिन लंघितहू मान टिकिजैहै ताम ॥
जोधपुर पैहै छत्र छादित इहाँतैं जैहै,
निजन बढैहै पट्टलैहै जग व्हैहै नाम ॥ २० ॥
कानफटा लिंगी तहां देवनाथ नाम करि,
दुर्गमाँहिँ जातो भीखमाँगिबे पिहितद्वार ॥
भाखी सिद्ध जो सो जानि मानसौं कहतभयो,
स्वप्नमैं कह्यो यौं मोसौं जलंधरनाथ सार ॥
ताके बिसवास मान लंघन सहत तीजो३,
जालपुर दुर्ग जो रह्यो रुपि भुकति भार ॥
तिमहिं जु भीम मरिबेकी ध्रुव सुद्धि आई,
लैबे पुनि आये भट१ मंत्री२ मुख्य बहु लार ॥ २१ ॥

प्रसिद्धि में यह कहगया कि यहां यह कैद पड़ी हुई थी, यह दाव करके जिस पीछे १ जालोर में घेरा के भीतर २ मानसिंह लड़ रहा था उसको लेने को दूत भेजे ॥ १९ ॥ ३ अन्य भी सुंदर वीर काम आये ४ लंघन (उपवास) करके भी ॥ २० ॥ ५ खिड़की के छिपे द्वार से ६ तत्व (सिद्धान्त) ७ भीमसिंह के मरने की निश्चय खबर आई ॥ २१ ॥

ताजमशाहरणहेतुजाजवनगरान्तिकस्कन्धावारनिवेशनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

(दोहा)

सक चउ खट सत्रह१७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥
असित पक्ख उग्गत अरक, बढि दल विजय बिलास॥१॥

(मुक्तादाम)

बढे दल तोपनकौं करि अग्ग, मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥
इतेबिच कौतुक जंग अछक्क, उयो उदयाचलके सिर अक्क ॥२॥
लख्यो रवि दोउन बंदि बिसेस, भयो तब तोपन पुब्ब निदेस ॥
पलट्टनि पिक्खि रुमालन सैंन, लगी दुहुँओर अलातन दैंन॥ ३॥
मिली तँहँ तीनहजार३०००न अग्गि, बढी अफलैत दुहूँदिसदग्गि
भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दृग मीचन देव बिमान ॥४॥
परे अय गोलक बिद्युत पात, जुरे नर गैंवर है उडिजात ॥
उगछ्छत फैरहिँ फेर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥ ५ ॥
भुजंगमके सिर नच्चत भुम्मि, धरैं फनतैं फन धायन घुम्मि ॥
नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनैं इम छोनिय तंडव बंध ॥६॥
लगे डगमग्गन अद्रिन सृंग, गिरैं जिनतैं मृग भ्रामित भृंग ॥

चलकर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुकाम करने के वर्णन का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख हुए॥

सकइति॥ चउत्थि चतुर्थी. ४ सुचि आषाढ. असित कृष्ण॥मुक्तादाम॥बढेइति॥ अछक्क अतृप्त. उयो उदयभयो. अक्क अर्क (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पया दे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलैत तोपनके तीर करायबे की क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परैंइति ॥ फैरहि फैर अवाज प्रति अवाज. मित प्रमान. भुजंगमइति ॥ भुजंगम शेष. ताके. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालीनाग

बाहिरके सस्त्रहीन दुर्गमैं कति बुलाइ,
मानि नीठि सपथ[1] भरोसाके दिवाइ मान ॥
पीछैं छत्र१ चामर२ चलाइ जाइ जोधपुर,
बैठो पट्ट छट्ठी६ मग्ग९ मेचक२ सह बिधान ॥
जालपुर चाकरी बिपत्तिहुमैं कीनी जिते,
सकल बढाये ते बुलाइ दुक्ख[3] अवसान ॥
कानफटा सोंपे देवनाथ गुरु मुख्य कीनौं,
थापि तँहँ दीनो महामंदिर बिरचि थान ॥ २२ ॥
उक्त१८६० सकहीके मग्ग९ मेचक२ चउत्थि४ इत,
बुन्दी नरनाह बिष्णुसिंह२००१२ कै स्वदिष्ट[4] बस ॥
तीजी३ मंकुवानी रानी उदर प्रसूता तँहँ,
तनुजा भई सो मरी मानहु परयो न तस ॥
इंदु खट बारन भू१८६१ संवत अनेह इहां,
आमय असाध्य देखी श्रीजितके अंतदस ॥
आश्रमतैं लाये महलनमैं बिहायो अंग,
जानैं मग्ग९ मेचक२ चउत्थी४ पैं उबारि जस ॥ २३ ॥
होती बुद्धि सुद्धि तो न आगमैं महल होतो,
पै निज पितामह अचेत आनैं जाइ पँहु,
याँस दुव२ अंतर कहे समय छोरयो देह,
नाती नरनाह बिधि राह दये दान वहु ॥
अब्द पहिलेतैं दुरभिच्छहु हुतो असह,
लोक इत आये देसदेसके बिसेस लँहु ॥

१ सौगन दिलाकर २ मृगशिर वदि छठ के दिन ३ दुःख के अंत में ४ अपने भाग्य के वश ५ भाली रानी के उदर से ६ कन्या हुई सो ७ रोग ८ अन्तदशा में ९ मृगशिर वदि ॥ २३ ॥ १० बुद्धि और चेत होता तो महलों में आना नहीं होता ११ राजा विष्णुसिंह ने १२ पोते विष्णुसिंह ने १३ लघु (शीघ्र)

तेहु सब भोजे द्वादसाह१२मैं असन तानि,
भूखे जन लूट्यो सेस दूजे२ दिन भोजनहु॥ २४ ॥
भाखे१८६१ सकईके मास फागुन१२ बिसद१भाग,
सोधित द्वितीया२ कर्मवाटी लग्न अघसर ॥
भाटिननैं डोला आनि बुन्दी परिनायो भूप,
कन्या रत्नसिंहकी अनन्या सील जोरि कर ॥
नाम लाडकुमरि२००।५ ललाम गुन१ रूप२ निज,
पंचमी५ सु रानी आनी कित्तिके प्रसार पर ॥
सालम हरालीकी हवेली माँहिं लग्न साधि,
बिलस्यो बिलासननैं बरनी१ उपेत वर२ ॥ २५ ॥
उक्त १८६१ सकईके समैं पत्तन करोली इत,
जो मानिक्यपाल भूप छोरत भो देह जब ॥
नाम हरिपाल भो तदीय सुत छोटो नृप,
तातके तखत बैठि उचित अनेह तब ॥
संबत नयन तर्क नाग भू१८६२ प्रमित समैं,
अंध साहआलम४९।१नैं दिल्ली तज्यो देह अब ॥
पहिलैं कहायो आलीगुहर ४९।१ स नाम पीछैं,
साह भयैं लागे साहआलम ४९।१ कहन सब ॥ २६ ॥
सो आलमगीर ४८।१ दूजे२ को सुत कथित समैं,
बुद्धिदृगं सुद्धि ऐसैं दिल्ली भयो काल बस ॥
तैसैं अभिधानैं करि अकबर ५०।१ दूजो२ तहाँ,
तात पट्ट बैठो पै गिरिसी फिरी आन तस॥
जोधपुर१ जैपुर२ उदैपुर३ बढ्यो जहर,

१ जिमाये ॥ २४ ॥ २ तिथि ३ परम ४ दुलहन सहित ॥ २५ ॥ ५ उसका पुत्र ॥ २६ ॥ ६ प्रज्ञाचक्षु (अन्धा) ७ अकबर नामवाला

राम २०१४ प्रभु सुनहु रह्यो ज्यों माँहिंमाँहिं सर ॥
मार्यो अरिसिंह रान रावरे पितामहनैं,
जिततित छायो त्यौं बढायो वीरभाव जस ॥२७॥
जेठो१ अरिसिंहको तनूभव हमीर जब,
बैठो विधिके बस पिताके पट्ट बाल वय ॥
वेगहि मर्यो सो रान हायन अलप बचि,
दूजे२ तस भ्रात भीम३ पायो राज्य अभ्युदय४ ॥
भीम रानकै भई तनूजा इक ताको भयो,
सगपन जोधहंग भीमसौं५ गये समय ॥
पुद्गल६ बिहायो जोधपुरके अधीस पीछैं,
पट्ट तस पायो मान आपुनें बलिष्ठ७ अय ॥ २८ ॥
कन्याकी सगाई तब मानसों करन फेर,
जोधपुर भेजे विलवासके स्वकीय जन ॥
माननृप तबतो नट्यो तस महत्व मानि,
जदपि निहोर्यो इत९ उत२के किते जनन ॥
कन्याकी सगाई जयनैर९ तब रान करी,
पेखि जगतेसकों समान१० कुल रूच्यरूपन ॥
होतहि सगाई तदनंतर कुपित होइ,
चंपाउत भाख्यो देत कन्या पहिले१ बचन ॥ २९ ॥
पहिलैं मरत भीम चंडाली करंडै११ पर,
दुष्टनै दुसाला डारि काढी अवरोधै१२ द्वार ॥

॥२७॥१बडा पुत्र हमीरसिंह २ थोड़े वर्ष राजा रहकर ३हमीरसिंह के छोटे भाई भीमसिंह ने ४ समृद्धिवाला राज्य पाया ५ जोधपुर में भीमसिंह से ६ भीमसिंह ने पीछे शरीर छोड़ा ७ शुभफल देनेवाले भाग्य के बल से ॥ २८ ॥८उत्तम कन्या की अवस्था बडी समझ कर ९ जयपुर १० तुल्य(?)पन बराबर का देखकर ॥ २९ ॥ ११टोकरे पर १२ जनाने द्वार से

राजा मानकों श्रब अधीन निज राखिबेकों,
बिरच्यो सवाईसिंह बायस यह बिचार ॥
जानि यह मान लागो रहन स्वतंत्र जिम,
आनि तिम जोरतें प्रधान ताको अधिकार ॥
भाख्यो यौं हमारे अधिराजकी सगाई भूलि,
कूरम लहैं सो कोन दुलही प्रथम[1] दार ॥३०॥
बिरचि प्रबंध यौं लै पंचन प्रपंच बिच,
सूची नृप मानसौं सवाईसिंह काक सम ॥
रावरी बधूटी बरिबेकौं कछवाह रंक,
होइ सिर जैहैं मरिजैहैं जब सब हम ॥
भूप तुम कैसें रह्यो बित्रप[1] चकित[2] भाव,
जान कब देहैं कछवाहकौं कबंध जम ॥
आप सिर सारी धारि लीनी तो धरहु और,
पट्टप उचित कोऊ धर्म ज्यौं रहै परम ॥ ३१ ॥
बचन प्रतोद[3] ऐसें दैदै नृप मान बुद्धि,
फेरी फेरू[4] चंपाउत के करि कपट फैल ॥
जानि स्वान छोर्‌यो इक बिप्र मख छाग[5] जैसें,

१ जिसके साथ पहिले सगाईहुई उसी की स्त्री है ॥ ३० ॥ २ निर्लज्जपन ॥ ३१ ॥ ३ वचन रूपी चाबुक ४ गीदड़ रूपी चांपावत सवाईसिंह ने जैसे एक ब्राह्मण ने धूर्तों के कहने से यज्ञ के ५बकरेको(*)कुत्ता जानकर छोड़ दिया तैसे

(*)यह कथा हितोपदेश में इसप्रकार है कि एक ब्राह्मण यज्ञ के अर्थ एक बकरा लेजाता था उसे देख कर ४ धूर्तों ने यह विचारा कि इस ब्राह्मण से यह बकरा छुडालेना चाहिये यह सलाह करके वे चारों रस्ते पर दूर दूर बैठ गये जब ब्राह्मण निकला तो उसे पहिला बोला कि तू ब्राह्मण होकर यह कुत्ता कंधे पर क्यों लिये जाता है. यह सुनकर वह ब्राह्मण आगे चला तो उस दूसरे धूर्त ने भी ऐसे ही कहा और ज्यों ज्यों वह ब्राह्मण आगे चला त्यों त्यों तीसरा और ऐसे ही चौथा धूर्त भी मिला और पहिले ने कहा वैसे ही कहनेलगे तब वह ब्राह्मण यह जानकर कि इन चारों ने जो कहा वही सत्य है और मेरी दृष्टि में फर्क है, स्नान करके उस बकरे को छोड़ अपने घर चला आया, और उन चारों धूर्तों ने उस बकरे को मारखाया.

ऐसैं बहुतनके कहेसौं एह गहि गैल ॥
ऐंचि कर मुच्छ भूप मानहु पलटि अब,
सोहि मत भाख्यो कोन लंघहिँ कैनकसैल ॥
ऊँच पहिले२ कै जो सुवासिनी३ बरन रीति,
छीनि हम लैहैं व्याहि गंजि तो अपर छैल४ ॥ ३२ ॥
पत्र ऐसो इतहु लिखाइ भेज्यो रान प्रति,
कै इत बिबाहहु५ कै मारहु कैनी कुटिल ॥
क्यौं तुम बिरोध पारयो जैपुर सगाई करि,
कूरम नैपोतेकों बिनासहिँ कबंध किलँ ॥
रंडा रहिजैहैं हनिहोतो कहि भेजी रान,
वारन नमाइहै पिपीलिकाके छुद्र बिल ॥
अबहु कनीकौं हमरे मत बरहु एक१,
खोलि रन झंडे अरि जीति रहो जोहि खिल ॥ ३३ ॥
ऐसी रीति दुरदिस लगाइ लाय चंपाउत,
कोऊ कुल बालककौं भीमको तँनूज करि ॥
जाको नाम धौंकल प्रसिद्धिमैं अब जनाइ,
पास बिसवासके प्रबीर राखे बीच परि ॥
मान महिपालकौं अधीन अँपनैं न मानि,
अट्ठहि८ मिसल आदि भटन स्वपच्छ भरि ॥
जैपुरलौं आप समुझावनके व्याज जाइ,
कूरमसैं मिलिगो स्वमुच्छ करसौं कतरि ॥ ३४ ॥

---

१ सुमेरु का उल्लंघन कौन करेगा २ दुलह ३ पिता के घर रहनेवाली कन्या ४ दूसरे रसिक को मारकर ॥ ३२ ॥ ५ कन्या को ६ नप्ता से यह शब्द नपोता हुआ ७ निश्चय हीं. कछवाहे जगतसिंह को मारोगे तो कन्या रांड रहजावेगी परन्तु कीड़ी के ९ छोटे बिल मेंं८हाथी नहीं समावेगा १०शत्रु को मारकर जो बाकी रहै सोही कन्या को विवाहो ॥३३॥ ११ किसी कुल के बालक को भीमसिंह का पुत्र बनाकर ॥ ३४ ॥

मिलि जगतेससौँ कह्यो इम रहस्य¹ मत,
स्वामी हम सर्व चहि धौंकल जो भीम सुत ॥
आप चलि ताहि जोधपुरको करहु ईस,
द्रम्म नवलक्ख ९००००० दैहैं¹ होतहि अभीष्ट हुत ॥
रावरो उदैपुर बिबाह¹ कोऊ रोकिहैं न२,
नामकरि ऐसैं सब भूपनमैं होहु नुत ॥
मान सठ आपकौं निवारे सो कवन मद,
जाहि गहि आनहुं गहाइदैहैं वित्त जुत ॥ ३५ ॥
सुनत इतीक निज बुद्धिके जनन सह,
मत्त ³वारुनीमैं जगतेस धारि अभिमान ॥
भाख्यो लिखिदेहु¹ भट अड८हि मिसल आदि,
धौंकलकी फैंला लेहु२ टारिदेहु ⁵पवधान ॥
कग्गर लिखाइ इम तबहि कबंधनको,
इष्ट धर्म सौंहन सवाईसिंह अघवान ॥
सौंप्यो जगतेसकौं करारमैं सबन साखि,
पाघ बिनु ⁶हैंवे¹ पै बिपत्ति दैबे प्रभु मान२ ॥ ३६ ॥
पापी इम पत्र इत भेज्यो मान भूपप्रति,
खूब समुझायो पै न मानै कछवाह खल ॥
यातैं अब जुद्धको बिलंब न करहु आप,
करहु चढाइ जीति लै है प्रभुके सकल⁷ ॥
कोन कोन ठाम जीते कूरम कबंधनसौं,
बाहिर करहु डेरा यातैं वेग बाँधि बल ॥
मत्त यह⁸ धौंकल बुलाइ मिलि तुल्य मानि,

१एकान्त में २ स्तुतियोग्य ॥ ३५ ॥ ३ मद्य में मस्त ४ भीमसिंह के पुत्र धूंकलसिंह का उच्छिष्ट खाओ और उससे ५ अन्तर छोडदो ६ अपने स्वामी मानसिंह के माथ को ॥ ३६ ॥ ७ सब आपके ही हैं ८ जगतसिंह

एक१ पट्ट बैठत इहाँतो मत है अचल ॥ ३७ ॥
पूछे नृप मान तहँ संसद२ बुलाइ पंच,
चंपाउत पत्रहु दिखायो मत लैन चहि ॥
ते सब पिहित३ मिले धौंकल सिसुहि ताकि,
गाढे हठ लोभी लेख द्विगुन पट्टान गहि ॥
जो लिखी सवाईसिंह सोही करतव्य४ जंपि,
बाहिर करहु डेरा सूची अतिदर्प बहि ॥
माननृप चार५ रु बिचार२ द्ग द्वैही मींची,
कीनो कह्यो तिनको भरोसातैं प्रयान कहि ॥ ३८ ॥
मद्य मदमत्त इत जैपुर अधीस मानी,
जंग उपहार६ सबै कीनैं सज्ज जगतेस ॥
तोहू इक१ बेरतो रुक्यो जो आनि कानि त्रपा,
बुंदी प्रभु बिष्णुसिंह२००१२ बरज्यो जब बिसेस ॥
पै जहँ सवाईसिंह दमनक स्यार पास,
आस मानिबेकी तहँ कैसी लग्यो कान एस ॥
डाँकदार जैसैं मत्त बारनकों देदे डाँक,
ऐसे कछवाह काढयो बाहिर विधि असेस ॥ ३९ ॥
लाखन खरचि दम्म राखि दल तीन लाख ३०००००,
सज्जि पहु बीकानैर१ आदि बहु मित्र संग ॥
भीमसुत११ धौंकलकों जोधपुर दैन१ भाखि,

१यहां तो एक गद्दी पर बैठने का निश्चल विचार है ॥ ३७ ॥ २ सभा में ३ छांने धूंकलसिंह से मिलेहुए थे क्योंकि कृत्रिम(फरेबी) बालक ने दुगुने पट्टे देने के लेख सब को कर दिये थे ४ करने योग्य कहकर ५ हलकारे और विचार ये दोही राजा के नेत्र हैं जिनको बंध करके ॥ ३८ ॥ ६ युद्ध की सामग्री ७लज्जा ८ दमनक नामक गीदड़ पास था ९जैसे सांटमार मस्त हाथी को क्रोध दिलाने के १०छोटे घाव लगावै तैसे ॥३९॥ ११भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धूंकलसिंह को

आप बोलि ब्याहन उदैपुर२ बय उमंग ॥
कोटादिक दंडि पै[2] लगावन३ बिचार करि,
जोधपुर हंक्यो पहिलैं जय करन जंग ॥
श्रावक[3] सचिव रायचंद बहुवेर रोक्यो,
तदपि रुक्यो न बढ्यो पंथन करत तंग ॥ ४० ॥
सेना यह राखि लायो अधिक जितीक सज्ज,
ओरनकै नीं[4] सुनी तितीक तिहिँ काल इम ॥
पायो पै[4]१ हरोलिन ब्हाँ चंदोलिन पायो पंक[5]२,
अध्वके[6] अरण्य तरु तूट भये चोक तिम ॥
साक दुव तर्क अष्ट इंदु १८६२ के शिशिर[7] समै,
जामैं हुव ग्राम नाम गिंघोली मुकाम जिम ॥
उततैं स्वसंगलै[8] अनीक सब मान[9] आयो,
कपटमैं जानैं जयलोभी रुकिजाय किम ॥ ४१ ॥
अध्वबिच आत कृष्णगढके छली अधिप,
राज्य निज लेबो जानि मायाको प्रपंच रचि ॥
स्वीय भूमि लैबे करकेरीवै[10] अमरसिंह,
संग पहु कूरमके हो तस सहाय सचि॥
मिथ्या पिसुनत्वै[11] जगतेसको मुराइ मन,
मरवायो जो दगासौं——पाप ताप तचि[12] ॥
जैपुरको आप बनिबैठो सुभचिंतक ज्यौं,
जोधपुर छोरि जोरि याहीतैं प्रसाद[13] जचि ॥ ४२ ॥
द्वैरही मिले ऐसैं ग्राम गिंघोली समीप दल,

---

१ पुनि २ चरणों में लगाने का विचार करके ३ सरावगी वैश्य ॥ ४० ॥ ४ नीर ५ कीचड़ ६ मार्ग के वन के वृक्ष ७ जहां ८ अपने साथ सेना लेकर ९ मान सिंह ॥ ४१ ॥ १० करकेड़ी के पति अमरसिंह ११ झूठी चुगली करने से उस अमरसिंह को मारडाला १२ पाप की अग्नि से जलकर १३ प्रसन्नता ॥ ४२ ॥

जोधपुर१ जैपुर२ बनै जे चित्त बरजोर ॥
बाजिन उठाइबेकी बेरमैं कबंध कुल,
आये टरि टरिकैं सबही कछवाह ओर ॥
मान यह देखत बिचार्यो करसौं मरन,
नीठिन निवारि सोंपै संगके दुसह दोर ॥
जोधपुर जाइ लरिबेकी थापि टेकी लागे,
मानकौं निकासिकैं भजे लै च्यारि४ भटमोर ॥ ४३ ॥
ऊदाउत अर्जुन १ स नाम रायपुर ईस,
नाह त्यौं कुंचामनिको मेरतिया सिवनाथ२ ॥
भद्राजनि१ लाडनौं२ के जोधे द्वै२ कबंधभट,
साथ बखतेस१।३ अरु मंगल२।४ ए क्रम साथ ॥
लछमन१।५ मान२।६ हुकमेस३।७ ए त्रय३ हि लार,
सोदर कनिष्ट शिवनाथके प्रथनपाथ ॥
काकासुत भ्राता सिवनाथ१ अरु मंगल२के,
संगी सारदूल१।८ पता१।९ सक्रमगदितगाथ ॥४४॥
ए नव९ बिदित नव९ अबिदित नाम ऐसैं,
अष्टादस१८ मान भजे मानकौं लैं असवार ॥
भूँरि धूरि पूरि ख भई इम तिमिर भरि,
आपुनैं न भासे कर आपकौं लखन लार ॥
मानवारे डेरनमैं आवत न मग्ग मिलि,
बाजि कछवाहनके उरझे जव बिहार ॥
जौंहीकरि मानको पलायन सबन जान्यौं,

१मानसिंह ने अपने हाथ से मरना विचारा॥४३॥२छोटे भाई३युद्ध के अर्जुन४क्रम सहित कहीहुई कथा से॥४४॥५जिनके नाम नहीं जाने गये६प्रमाण(गणना)वाले ७ बहुत धूल ८ आकाश में भरकर अंधेरे में अपना ९ हाथ आपको नहीं दीखा १०कछवाहों के घोड़ों का गमन रुका ११जिससे१२मानसिंह का भागना जाना

पैठो जगतेस चित्त जाको *दर्प गतपार ॥ ४५ ॥
†संभर नरेस बरज्यो बलि जगतसिंह,
बुन्दीतैं पठाइ दूत दूजीर[२] बेर नीतिबल ॥
सो जब नमानी चढ्यो कूरम तबहि सज्जि,
द्वै सहँस २००० भेज्यो हल्लु जोधपुर भीर दल ॥
भूपालादिसिंह[१] मुख्य धोवरेस संग भट,
बनिक प्रधान त्यों गनेसराम[२] धीबिमल्ल ॥
दोइ[२] तिम तोप संग पल्टनि दोइ[२] दै रु,
भेज्यो कपतान नाम भीखम[३] सजैं सकल ॥४६॥
इन तब सूधी आइ मानसौं[३] पलायनमें,
रावरे निदेस बस हैं हम रचहिं रारि ॥
कीजै आप गोन रजपूतनके देखि कर,
जैपुर समुख जंग पच्छिलैं हमहिं पारि ॥
मानन्नृप भाख्यो इहाँ व्यर्थ तुमरो मरन,
जीतिबो[१] रह्यो पै बचिबो[२] न बनै बिष जारि ॥
आहु मम संग यातैं देहु न अनर्थ असु,
जोधपुर जाइ रचिहैं रन पैर प्रचारि ॥ ४७ ॥
जोरिकर ऐसैं तब बुन्दीके भटन जंपी,
आपकौं न निंदैं मिल्यो सत्रुनसौं चक्र इम ॥
सुरि हम सज्ज सब भूपहिं दिखाँहि सुख,
कथन तदीय टारि सम्मर्द बिथारि किम ॥
जातैं आप जोधपुर लरहु सबेग जाइ,

---

* अपार घमंड ॥ ४५ ॥ † बुन्दी के चहुवाण राजा ने १ सेना २ निर्मल बुद्धिवाला ॥ ४६ ॥ ३ भागते समय मानसिंह से कहा ४ वृथा प्राण मत दो ५ शत्रुओं को ललकार कर ॥ ४७ ॥ ६ आपकी सेना शत्रु से मिलगई इस कारण ७ उनका कहना छोडकर ८ हर्ष

निवानन आकुलि तुट्टत नीर, पर्‍यो इक आतप ग्रीखम पीर ।७।
तजैं बढि बीचिन सागर सीम, भ्रमैं मलयानिलमैं जिम भीम ॥
जुर्‍यो दिन दब्बि कुहू तम जग्गि, अलात लगैं जनु प्रेतनअग्गि८
परैं दृग वे उत सोर प्रकास, लखैं इनहू इत फेर उजास ॥
दुहूँदिस यौं लखि मारुत दाव, भयो दुहुँघाँ इम सोर भ्रमाव ॥९॥
सज्यो बढि धूम सुरालय संग, अजौं नभ बद्दल राजिहिं रंग ॥
गिरैं बिच गोलक गोलक फेट, मनौं पबितैं पबि चंडचपेट ॥१०॥
गिरैं गजमत्थ छिनच्छिन छूट, कटैं पबि पात कि अद्रिन कूट ॥
गिरैं गज झुंडहु गोलन गोन, गिरैं तरु ताल कि पब्बय पोन ११
लख्यो रवि उग्गत ज्यौं तम लाल, किते अब भुल्लत आन्हिक काल ॥
बिहानहु कोकन लग्गि बियोग, बिनाँ नर जानत जामिनि जोग
परैं गज गंडन गोलक पात, करैं जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥
परैं दुहुँ ओर तुपक्कन पंथ, मच्यो रव भ्राष्ट्रक ज्यौं हरिमंथ ॥१३॥
चहूँदिस चंड चढ्यो रज चूर, पर्‍यो रजताचललौं उडि पूर॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ तजइति ॥ भीम भयंकर. कुहू चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि ताके. सो तम अंधकार " ८ ॥ परैंइति ॥ वे पेली सेनाके. उत वातरफके. सोर बारूद. ताके प्रकाशतैं दीसै. इन ओली सेनावारेनकों. इत यातरफके. लखैं देखैं ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक. ताकों. अजौं अबभी नभ आकाश. बद्दल मेघ. ए स्याम. जिहरंग वा धुंवांके रंगसों है. पहले या रंगके न हे. गोलक गोलासों. पबि बज्र ॥१० ॥ गिरैंइति ॥ गोन गमन. तासों. तरुताल तालवृक्ष. कि मनों. पब्बय पर्वतसों. पोन. पवन करिकैं ॥ ११ लख्योइति ॥ तम अंधकार. तामैं. लाल माणिक्य. बिनानर मनुष्य रहित. और प्राणीमात्र. जामिनि रात्रि.ताको ॥ १२ ॥ परैंइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजातिवारेनके. ख्यात प्रकट. भद्रजाति हस्तीनके मस्तकसों मोती निकसै हैं यातैं. रव शब्द. भ्राष्ट्रक लोके भाड़. तामैं. हरिमंथ चना॥"चणको हरिमंथकः"इतिहैमः॥ चहूंदिसइति ॥ रजताचललौं रजताचल कैलास पर्वत तहां लागि. जहीं शिव

जुरि हम ठाडे इहाँ इकधाँ तटस्थ जिम ॥
चाहि हमपैं जो बढिहैं तो करिहैं ज्यौं चित्त,
पँहुँचहु आप हम आडे आपगा प्रतिम ॥ ४८ ॥
ऐसी कहि एक ओर बुन्दीको रख्यो सु बल,
सत्रुनको भार टारयो तोपनके वार साजि ॥
मान महिपाल मंड्यो जोधपुर जाइ जंग,
भाख्यो कछ्वाहन सभीक गयो सत्रु भजि ॥
बुन्दी इत आयो राखि गौरव अधीस बल,
त्यौं गो जगतेस उत गम्य दुर्ग संक तजि ॥
जाल दल१ तोपन२ को दंग गरदाइ जोर्‌यो,
जंगतैं न रोर्‌यो चित्त झोक्यो वित्त इष्ट जजि ॥ ४९ ॥
जोधपुर सीम पैठो जबतैं जगतसिंह,
तबतैं चमूके लोक लाये गहि लभ्य तिय ॥
तिनके निकेतके विनम्र लैन आये तब,
दोइ२ दोइ२ पैसे लै रु पीछी तिन्हैं सौंपि दिय ॥
जोधपुर घेर्‌यो जगतेस मत्त ऐसैं जाइ,
केते काल पीछैं जीति दंगहु स्वतंत्र किय ॥
दुर्ग एक मानके अधीन रहिगो दुर्गम,
जैसैं सब देहमाँहिं आयुके अधीन जिय ॥ ५० ॥
जंत्रविच इच्छू जिम बिच्छू जिम मंत्र विच,
रसना रदन बीच ऐसे कष्ट मान रहि ॥

---

१ एक तरफ२नदी के समान हम आडे हैं ॥४८॥३भय सहित होकर४जाने योग्य (जोधपुर)गढ पर५इष्ट की पूजा करके धन लगाया॥४९॥६जो मिली उन स्त्रियों को पकड़ लाये ७ उन स्त्रियों के घरवाले अधिक नम्र होकर ८ नगर को भी अपने स्वाधीन करलिया ॥ ५० ॥ जैसे ९ घांणी (चरखी) में गन्ना (सांठा) १० वा दांतों के बीच में जीभ ११ मानसिंह रहा.

देस[१] जुत दंग[२] माँहिं अरिको अमल देखि,
कुहक सवाईसिंह पास भेजी एह कहि ॥
अर्द्ध[३] देस लेख जुत नागपुर लेहु आप,
बैठारहु धौंकल व्हां मोसौं तुल्य[४] भाव वहि ॥
इज्जत हमारी बिगरावहु क्यौं सत्रु आनि,
गेहमैं समुझिलेहु नेहमैं सु लेह गहि ॥ ५१ ॥
मानको बिनय लेख सोहु न बिनय[६] मान्यो,
चंपाउत[१] मीन[२] बैन[१] स्रोत[२] प्रतिकूल चढि ॥
दिन बिपरीत यातैं दुष्टहिं सुगम दीस्यो,
मान गहिलैबो[१] गढलैबो[२] घमसान मढि ॥
पच्छी कहि भेजी यौं सवाईसिंह मान प्रति,
करहु न देर जोधपुरतैं वैं जाहुकढि ॥
सीसपैं अधीस धारि धौंकल करहु सेवा,
पावहु उचित पटा प्रभुके अधीन पढि ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

कहिपठई पच्छी कुहक, चंपाउत इम चैंकि[१२] ॥
कोल सपथ[१३] नागोरकी, फरद लिखी वह फैंकि ॥ ५३ ॥
इम परिगो संकट असह, महिप जोधपुर मान ॥
लुट्यो मुलक सब सीमलग, न मिटयो द्रोह निदान[१४] ॥५४॥

---

१ पुर में २ इन्द्रजाली ३ आधे देश सहित नागोर लिखावट सहित ले लो ४ मुझसे बराबर पन लेकर अर्थात् धौंकलसिंह को मेरे बराबर कर दो ५ लिखावट (लेख) ॥ ५१ ॥ मानसिंह की इस विशेष नम्रता को ६उस अनीतिवाले सवाईसिंह ने नहीं मानी सवाईसिंह रूपी मच्छ, वचनों रूपी ७प्रवाह में उलटा चढा ८मानसिंह का पकड़ लेना ९ युद्ध करके १०अब ११धूँकलसिंह की ॥ ५२ ॥ १२ क्रोध करके १३ सौगन ॥ ५३ ॥ १४द्रोह का कारण ॥ ५४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे काबुलाधीशसाहाय्यसिक्खरणजीतसिंहलवपुरग्रहणयोधपु-राधीशभीमसिंहजयपुरपतिप्रतापसिंहपरस्परविवाहसंबन्धकरणं १ समात्तजाजपुरादिमेदपाटप्रान्तकोटासचिवझल्लजालमसिंहकोटाप्र-तापवर्द्धन २ विजितपेशवाबुन्देलखण्डपराजितसिंधियाहुलकरगृही तोड्डीशान्तर्वेदजनपदस्वायत्तीकृतदिल्ल्यागरापत्तनशाहलमार्थनियती कृतवार्षिकवसुलार्डविल्जल्यासमुद्रस्वराज्यस्थापन ३ जयपुरपति प्रतापसिंहमरणजगत्सिंहतत्पट्टासादनयोधपुराधशिभमिसिंहदेहपात जालपुरसेनासमावेष्टितमानसिंहयोधिपुरपट्टप्रापणं ४ परिहृतबुन्दी राज्यवानप्रस्थश्रीजित्सुरसद्मसमासादनबुन्दीपतिविष्णुसिंहपाणिग्र हणकरोलीनृपमाणिक्यपालपरासुताकालहरिपालगद्दिकोपविशन ५ दिल्लीन्द्रान्धशाहालमप्रेतत्वपुत्राकबरपट्टसमासादन६ उदयपुराधी

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, काबल के अमीर के बलसे लाहोर लेकर सिक्ख रणजीतसिंह का बढना और जोधपुर के राजा भीमसिंह व जयपुर के राजा प्रतापसिंह का परस्पर विवाह करना १ कोटा के सचिव झाला जालमसिंह का मेवाड़ के जाजपुर आदि प्रान्त लेकर कोटा का प्रताप बढाना २ लार्ड विल्जली का पेसवा से बु-न्देलखंड लेकर सिंधिया और हुलकर को पराजय देकर अन्तरवेद, ओडीसा देश लेकर आगरा और दिल्ली विजय करना और शाह आलम को पिनसन देकर पूर्व समुद्र से दिल्ली तक अपना राज्य जमाना ३ जयपुर के राजा प्रता पसिंह का देहान्त होकर जगतसिंह का पाट बैठना और जोधपुर के राजा भीमसिंह का देहान्त होकर जालोर में सेना से घिरेहुए मानसिंहका जोधपु-र के पाट बैठना ४ बुन्दी का राज छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाले श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का देहान्त होना और बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का विवाह करना, व करोली के राजा माणिक्यपाल का देहान्त होकर हरिपाल का गद्दी बैठना ५ दिल्ली के अन्ध बादशाह शाह आलम का मरना और उसके पुत्र अकबर का पाट बैठना ६ उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री को विवाहने के हठसे जोधपुर के राजा मानसिंह और जयपुर के राजा जगत सिंह का सेना सजकर गींगोली नामक ग्राम में युद्ध क्षेत्र में मिलना ७ मार-

शमीमसिंहसुताकरग्रहणहेतुसज्जसैन्ययोधपुराधीशमानसिंहजयपुरपतिजगत्सिंहागिंघोलिग्रामरणाङ्गणसमायोजन ७ पोकरणठक्कुरसवाईसिंहैकमत्यमरुसामन्तजयपुरसैन्यमिलनरणाङ्गणप्रत्यावृत्तमानसिंहयोधपुरागमनकृत्रिमदायादधौंकलसिंहार्थप्रतिज्ञातमरुधराधिपत्यजगत्सिंहयोधपुरसमावेष्टन ८ कृच्छ्राक्रान्तमानसिंहकृत्रिमदायादधोंकलसिंहार्थनेममरुराज्यसहितनागपुरदानस्वीकरणपोकरणठक्कुरतदनङ्गीकरणं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदितः ॥ ३५९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पाइ कष्ट ऐसो प्रचुर, भूरि परत सिर भार ॥
मान जबहि चिन्त्यो मरन, केलि[1] करि खोलि किंवार ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सचिव दोइ२ तँहँ कारा[2] संगत, हुते कैद पहिलैं सन मन हत ॥
इंदराज सिंघी१ अधिकारिय, भनत द्वितीय२ गंग भंडारिय ॥ २ ॥
इन दिय अरज मानप्रति ऐसैं, प्रभु हम जो जैपुर भुवँ पैसैं[3] ॥
तो सुरि गेह भजैं जगतेसहु, इक्खहु[4] पति रति मतिगति एसहु॥३॥
इम सुनि मान अक्खि पठई इम, कीलित[5] तुम बिस्वास बनैं किम

वाड़ के उमरावों का, पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के छल से जयपुर की सेना में मिलजाने के कारण राजा मानसिंहका वहां से भागकर जोधपुर जाना और मारवाड़ के झूठे दावीदार धूंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर विठाने की प्रतिज्ञा से जगतसिंह का जोधपुर को घेरना ८ राजा मानसिंह का घबरा कर नागोर के साथ मारवाड़ का आधा राज्य धूँकलसिंह को देना स्वीकार करना और पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का इस बातको अस्वीकार करने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ३५९मयूख हुए ॥

१ युद्ध करके ॥ १ ॥ २ जेलखाने में ॥ २ ॥ ३ जयपुर की भूमि में घुसें तो ४स्वामी में बुद्धि पूर्वक प्रीति देखो ॥३॥ ५ तुम कैदी हो जिनका विश्वास कैसे

सूचिय तिन १ंमठां हमरे सुत, दुव२ करि कैद हमैं भेजहु द्रुत ॥

॥ वैतालीयम् ॥

इम गंग१ रु इंदराज२की, अरजीतैं तिनके तनै उभै२ ॥
कारा धरि लाज३ काजकी, दे काढि गढतैं उतारि द्वै ॥ ५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सिंघीइंद्रराज१ अरु गंगराम२ ए सचिव,
कारातैं निकासि तिनकी ठाँ पुत्र कैदकारि ॥
दुर्गतैं उतारे मान भूपन कथित द्वैरही,
धारि बिसवास आस भेजे भुजभार धरि ॥
आइ तिन अधर मिलायो छलि चंपाउत,
भाजे गिनि कैदी मत्त धीजिगो प्रमोद भरि ॥
वाजि दुव२ तासूँ लै रु आरुहि स्वबुद्धि बल,
द्रंगतैं कढे द्वै२ तिन सगुन समुद्र तरि ॥ ६ ॥
संग नृप मानकै रह्यो जो कह्यो सिवनाथ,
मेरतिया सोपै बहु गुनन बिदग्ध मति ॥
अधिप पठायो छिद्रमैं काढि निर्लय आयो,
गाढे चित्त सो इन मिलायो बुद्ध मंत्र गति॥
अल्प जीविकाके भट अखिल बुलाइ बल,
सहँसन जोरिसंग अधिकहु राखि अति ॥
छन्नैं सिवनाथ१ इंदराज२ लै उपाय छमैं,
पैठे निस मग्ग अग्ग जैपुरके द्रेसप्रति ॥ ७ ॥

कियाजावे १ हमारी जगह ॥ ४ ॥ २ इन के दोनों पुत्रों को कैद करके ३ इस काम की लज्जा तुमको है ऐसे भलामन देकर ॥ ५ ॥ ४ कैद से निकाल कर ५ नीचे आकर ६ इनको कैद से भगेहुए जानकर वह मस्त सवाईसिंह ७उससे दो घोड़े लेकर ८उन पर सवार होकर ॥६॥९चतुर १०अपने घर (कुचामन) ११ छोटी जीविकावाले उमरावों अथवा वीरों को १२ समर्थ ॥ ७ ॥

सोधि भय पीछैंको प्रमत्तहु जगतसिंह,
मंत्रिनके भाखैं गति दैवकी दुगम्म[1] मानि ॥
भेज्यो सिवलाल फोजबखसी स्वकीय ध्रुव,
जैपुर१रु देस२ आनैं[3] करन समर्थ जानि॥
फागीपुर हो जो तब लैकैं रही खिल[4] फोज,
ऐसे खिन सोंपे मत्त तीज३पे उमंग आनि ॥
अल्प भट संगी आप जैपुर सदनैं[5] आयो,
कटक असेस सेस व्हाँही राखि भय कानि ॥ ८ ॥
बीर सिवनाथ१ इंद्रराज२ त्यों पिहित[6] बट,
कितहु न हेरि रत्ति[7] फागी एक गम्य[8] कहि ॥
पहुँचि निसीथ[9] जयनैर दल सीस पर,
मारि१ बहु त्यों बहु बिदारि२ कीनी सोन[10] महि ॥
सेस असु लैलै तजि भाजे उपहार[11] सब,
लूटे इन सोधि सोधि काहूकी न संक लहि ॥
व्है अब बिदित घेरि जैपुरकी लैन हंके,
गैल इक१ कौकिनी[11]मैं नारिनकों देत गहि ॥ ९ ॥
ऐसैं गरदायो द्रंग जैपुर बलिन आइ,
तूटिपर्‌यो सर्व ढुंढाहरपैं अतुल त्रास ॥
मचिगो पलायन[12] जितैं तित जि जिनैं[13] मानि ॥
आलयँ[14] रहैतैं रही काहूको न असु आस ॥

१भाग्य की दुर्गम्य गति २रक्षा करने को ३धाकी की सेना ४ जयपुर में अपने घर गया॥८॥५छिपेहुए मार्ग से ६रात्रि में जाने योग्य फागी नगर को कहकर ७आधी रात को ८ भूमि को लाल करदी ९ धाकी के प्राण ले ले कर १० सामान छोड़ भागे ११मार्ग में जयपुर के देश की स्त्रियों को पकड़ कर छदाम(पैसे के चतुर्थांश) में उनके घरवालों को पीछी देनेलगे ॥ ९ ॥ १२ भागना १३ रहने से अपना जीना नहीं मानकर तथा जिधर मन हुआ उधर भागे १४ घर पर रहने से

स्वामी इत संगमैं हजारन सिपाहनके,
मासिक चढत सुनैं देतदेत प्रति मास ॥
मन प्रतिकूल मीरखानसे बहुत मुरे,
हठि इक लैन जगतेसको विरचि हास ॥ १० ॥
सुरभि१ निदाघ२ बरखा३ ऋतु खरच सहि,
भूप जगतेस नीठि निर्वह्यो सो दल भार ॥
चढत कितेक मास मूढ अकुलायो चित्त,
जानी इत जैपुरकौं भोगिहै दुसह जार ॥
मत्त मुरि आइबेको मंत्र जग गूढ मान्यौं,
गोगाउत संभूके खवासिके सुत बिगार ॥
ठानि चंपाउतसौं कहाई खुसहाल ठाम,
दम्म खटलक्ख६०००००की भई सो देहु सरदार॥११॥
एक दुर्ग छोरि सबठां भो तुमरो अमल,
दम्म उक्त६००००० देय यातैं चिंति स्वबचन देहु ॥
दुर्ग दै तुम्हैं रु लैहैं सेस जे त्रिलक्ख३०००००दम्म,
यौं न करिहोतो लेहैं गहिकैं बिदित एहु ॥
ऐसे कहिबेपैं दुष्ट चंपाउत टेक आनि,
गर्वसौं कहाई जाहु बापुरे व्है निजगेहु ॥
बंधिकैं हमैं जो लैहो जानिहैं तबहि बली,
नारिनके भाग न तो लाजे भौंन मग लेहु ॥ १२ ॥
ऐसी कहि साहसी सवाईसिंह चंपाउत,
जैपुरके चंक्रसौं रह्यो टरि सटेक जब ॥

किसीको प्राण की आशा नहीं रही १ तनखा लेने को ॥१०॥ २ वसन्त,ग्रीष्म ३ सेना का भार कठिनाई से निवाहा ४ सवाईसिंह से ॥ ११ ॥५कहेहुए रुपये ६ देने योग्य है इस कारण ७ ये तीन लाख भी ८ लज्जा पायेहुए स्त्रियों के भाग्य से घर का मार्ग लो ॥ १२ ॥ ९ सेना से

सूची जगतेससौं यौं जोधपुर दुर्ग स्वामी,
धौंकलकौं ठानि धन उक्त काल लेहु अघ ॥
नाँतो इम रीते बहिकाइवेमैं सार नहि,
कोलमैं यहहि मुख्य सेस करिहो सु कब ॥
लूटी मारवारि नाँतो आप बहु वित्त लीनौं,
सोही गिनि कोलमैं पधारहु लै स्वीय सब ॥ १३ ॥
उक्त करिहो न तो उदैपुर विवाह आप,
कैसैं करिलैहो हमरे छत वर कहाइ ॥
तंत्र मेरे अबहि प्रचारौं मरुदेस तोतो,
ज्यौं बनी जैथातैं त्यौं बनाइहो घरन जाइ ॥
जंपि ऐसैं चंपाउत देसके स्ववस जोरि,
मुरयो करि डेरा भिन्न कूरम मन नमाइ ॥
ओरहु जे संगी मीरखान१ से वलिष्ठ ऐसैं,
लागे जगतेस देस लूटन उलटि आइ ॥ १४ ॥
ऐसैं जे इलेसे बीकानेरके सुरत१ आदि,
जैपुर घटत जानि गर्दभकी गाज गति ॥
के घर गये१ तिम रहे मुरि तटस्थ ठैर२ के,
मानी जगतेस अब मानी बल हानि मति ॥
चंपाउत बंचकको संभवी कथन चिंति,
प्रेरयो महामात्रनको गै ज्यौं कछवाह पति ॥

१अपने सब लोकों को लेकर॥१३॥२मेड़ता के घेरे में(जया को छलघात से मरवा डाला था) जया नामक खिन्थिया से बनी लोहि ३ मारवाड़ के लोकों को अपने वश में करके ॥ १४ ॥ ४ राजा ५ सूरतसिंह आदि ६ जयपुरवालों को गधे के चीखने के समान घटते हुए जानकर "गधा भोंकता है तब तो बडे जोर से चीखता है और फिर उसकी आवाज धीरे धीरे घटती जाती है" ७ घमंडी जगतसिंह ने ८ ठग सवाईसिंह का होनेवाला कहना याद करके (छलघात से मरवा डालने को सत्य मानकर) ९ जैसे महावत का फेराहुआ हाथी फिरे तैसे

रायचंद बनिक पुरोगन निहोरैं नीठि,
मान्यौं घर जैबो मूढ अँबेसौं सलज्ज अति ॥ १५ ॥
ऐसैं पट्ट वीर सिवनाथ१ इंदराज२ इत,
दैकैं त्रास जैपुरपैं लूट्यो आढ्य अरि देस ॥
यौंही मीरखानसे अमानन मुररि आइ,
लागि लूट्यो बहुन न राखिजान्यौं कहुँ लेस ॥
चिंति भुव जैबो यौं अचानक प्रमत्त चढि,
पैठो भजि गेह लजि निंदा उग्र सहि पेस ॥
आयो ज्यौंही नाकदै कबंधनको चंपाउत१,
त्यौंही कछ्वाहनको नाक दैगो जगतेस२ ॥ १६ ॥
जोधपुर१ जैपुर२कै उरभी अधिक जानी,
भीमरान भूपति उदैपुरको भीरु इत ॥
भीरुनके भाखैं डर आनि उक्त भूपनको,
मारिडारी कन्या वह पापी गेरदै अमित ॥
साक गुन तर्क नाग भू१८६३ मित सरद४ समैं,
जैपुर अधीस भजि गो यौं गेह दिष्ट जित ॥
तदपि सँवाई मरुदेसमैं अमल तानि,

कछवाहों का पाति रूपी हाथी सचिवों (प्रधानों) का फेराहुआ पीछा फिरा "महामात्र नाम, प्रधान और महावत दोनों का है" ? आदि ॥ १५ ॥ २ शत्रु के धनवान् देश को ॥ ११ ॥ ३ कायरों के कहने से ४ जोधपुर और जयपुर दोनों राजाओं का भय मानकर ५ (*) बहुत विष देकर उस कन्या को मारडाली ६ समय का तथा भाग्य का जीता हुआ ७ तो भी सवाईसिंह ८ अधिकार फैलाकर

(*) महाराणा भीमसिंह की बाई कृष्णकुमारिको मीरखां ने उदयपुर में जाकर बडे हठ से जहर दिलवाया वह करुणामय दृश्य मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में हृदयविदारक लिखाहुआ है सो वहां देखो महाराणा ने उस कन्याको नहीं मारी थी परन्तु मीरखां के भय से उसको रोक नहीं सके सो कथा लंबी होने के कारण यहां नहीं लिखसकते.

स्वामी करिराख्यो सोहि धौंकल चमू सहित ॥ १७ ॥
रच्छकन संग दंग नागोरहि ताकौं राखि,
देसमैं दुहाई फेरि वा सिसुकी आप हुत ॥
लूटत जो मुलक इतैं उत ऐंटन[1] लागो,
साल्यो मानके उर क्लेस सबलेस[2] सुत ॥
लभ्य[3] बसु१ हस्ती२ हय३ करभ४ गवा५दि लूटे,
जोरदै[4] बिसेस कर६ देसके असेस जुत ॥
डारि डारि डाका मारवारिसु निचोरी डारि,
दीपक जरन दीनों आपके अधीन उत ॥१८॥
उक्त सक बन्हि तर्क नाग भू १८६३मनित इतैं,
बुंदीप्रभु विष्णुसिंह२००१२छट्ठो६ करयो निज ब्याह ॥
रानाउत सीसोदे अमानकी सुता रुचिर,
सो खुमानकुमरि२००१६ नाम बरी तस सराह ॥
आयो निज बुंदीनैर डोला दुल्हीको यह,
पायो तिम दुल्लह महापट्ट नरननाह ॥
सूचित[5] तपस्य१२ स्याम२ छट्ठी६ निस लग्न साध्यो,
वारही पच्छ[6] कीनों ब्याह सप्तम७ लै कविवाह ॥१९॥
भावत सनाम बंस सीसोदे उचित भाखि,
नाम नंदकुमरि२००१७ तनूजा[7] अपनी निपुन॥
भूपहिं बिबाही इहाँ नैनपुर डोला भेजि,
गर्दित तपस्य१२ काल२ एकादसी११काल गुन ॥

॥ १७ ॥ १ फिरने लगा २ बलवान् सबलसिंह का पुत्र ३ जो मिलगये सो ४ जो जो घर अपने अधिकार में थे तिन तिन में दीपक जलने दिया ॥ १८ ॥ ५ सूचना कियेहुए फाल्गुन बदि ६ उसी पक्ष में ॥ १९ ॥ ७ पुत्री ८ कहेहुए फाल्गुन बदि में एकादशी के समय

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुव कंजन पुंज लसात ॥१४॥
भज्यो ससि भीरुक भालहिँ छोरि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।
अकंज सकंज भये इम ईस, समात न साद भयो भर सीस ।१५।
महानट पाँलहि खेद समाज, निमीलत नैंन समाधिक व्याज ॥
जलंधर बंचित चंडिय अग्ग, लखैं धव संकि महाभय लग्ग ॥१६॥
भयो यह विग्रह संकरभोन, गिरैं पृतना इत गोलन गोन ॥
थरत्थर भुम्मि जथा जल थाल, बन्यों रन तोपन यों बिकराल१७
सिलग्गहिँ तज्जहिँ गज्जहिँ सोर, लरज्जहिँ बज्जहिँ सिंधु हिलोर॥
भजैं गज संगर लंगर तोरि, महावत रावत लावत मोरि ॥ १८ ॥
दिसाबिदिसा जगि जाग्त ज्वाल, मनौं कुहु ऊर्ज दसैंधन माल ॥
चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम भद्दव बिज्जुव पात ।१९।
भ्रमैं कढि सुंडि गिरैं उडि भाग, मनौं जनमेजय अध्वर नाग ॥
धरावलि गिद्धनकी परसात, जटायुक अग्रज ज्यों गिरिजात ।२०।
उडैं ध्वजदंडन खंड अकास, रचैं जिम उद्धहि केकिय रास ॥
जरैं गज पिट्ठि पताकन जूट, किधों दव लग्गिग अद्रिन कूट ।२१।

तिनकी. जट जटा ताको. जूट जूरा. पंकिल पंकवारे. जात भयो. कुवकंज कुव कुवलय. लोके गहूल. कंज कमल तिनके. "कुवेलं कुवलं कुतं" इतिहैमः ॥ १४ ॥ भज्योससिइति ॥ भालहिँ शिवके ललाटकों. छोरि त्यागिकैं. अकंज कंज चंद्रमा ताविना. कंज कमल. तिनसहित. साद पंक. "कर्दमश्च निषद्वरः शादः" इतिहैमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनटेश्वरा हरः" इतिहैमः ॥ व्याज मिससों. जलंधरबंचित जलंधर दैत्यकी ठगी. चंडिय पार्वती. धव अपनों पति. ताकों. लग्ग लग्न. तांके लग्यां ॥१६॥ १७ ॥ सिलग्गहिइति॥ तज्जहि तर्जना करै. सोर बारूद. हिलोर महातरंग ॥ १८ ॥ दिसाइति ॥ कुहू चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि तामैं. "सा नष्टेन्दुकला कुहूः" इतिहैमः॥ ऊर्ज कार्तिकमास तामैं. "बाहुलोर्जौ कार्तिकिकः" इत्यमरः ॥ दसैंधन दीपक. तिनको माल. "दशेन्धनो गृहमणि" रितिहैमः ॥ १९ ॥ भ्रमैइति ॥ अध्वर यज्ञ. तामैं. 'वितानं बर्हिरध्वरः' इतिहैमः ॥ जटायुकअग्रजज्यों संपाति गृध्रके समान॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उद्धहि जलधरकी. केकिय मयूर. रास नृत्य ।२१।

ऐसे बिधि रानी यह सप्तमी७ अधिप आनी,
साजि इत चंपाउत बाहिनी जथा सकुन ॥
इच्छु खंड जंततैं कढे जिम बिरस अंग,
ऐसें मारवारि कीनी——नौंहि जत्न उन ॥ २० ॥
पूरे कष्ट व्याकुल महीप मान जोधपुर,
देस अर्द्ध देबेकी इढाई पुनि नअपन ॥
सौंपै नहिमानी काज केवल सवाईसिंह,
धृष्ट कहिभेजी व्हैहै धौंकलही भूमिधन ॥
लेख निज दैकैं तब धर्मके सपथ लैकैं,
मित्र गूढ कीनौं मीरखानकौं मिलाइ मन ॥
ताहि अर्द्ध आसन बिभागी कहि मान्यो तुल्य,
सूची मान चंपाउत मारिलेहु छद्म सन ॥ २१ ॥
द्रव्य बहु दैनौंकरि इष्ट बिच साखी दे रु,
मिच्छ इम प्रेर्यो चंपाउतकौं हनन मान ॥
क्यौं हमहिं धीजैं सावधानीमैं कितव काक,
खोजहु निमित्त यौं पठाई कहि मीरखान ॥
सूची इम मान जोधपुरके बजार सह,
देस मम लूटहु बिसासमैं गिनि निदान ॥
नारि कहि गारि दै हमारी पै करहु निंदा,
ऐसे फंद सो खल परैगो आयु अवसान ॥ २२ ॥
स्वीय सजि सेना मीरखान तब कीनी सोहि,
लूटी मारवारि पैठि खंधावार[12] नैर लग ॥

१चरखी से गन्नेका टुकड़ा बिना रसवाला निकलै तैसे ॥२०॥ २फाग के प्रास ३ धूंकलसिंह ही राजा होवेगा ४ छिपाहुआ मित्र किया ५ आधी गद्दी पर बैठने वाला लिखकर ६मानसिंह ने कहलाया ७छल से॥२१॥ ८हमको कैसे धीजेगा ९कारण हेरो १०मानसिंहने सूचना की ११आयुके अन्त में॥२२॥ १२राजधानी के नगर तक

दैदै गारि निंद्यो नृप मानकौं तिमहिं दुष्ट,
जान्यौं सत्य इनकै बिरोध बढ्यो सब जग ॥
चंपाउत धीज्यो एह प्रथित प्रमान चिंति[1],
पत्रन विसास पारयो पहिलैं मिलाप मग ॥
सौंपै खान नागोरहि आइ इनके सिबिर[2],
मिलिगो प्रथम मिच्छ आडोदै बिसास श्रृंग[3] ॥ २३ ॥
पोखरिन नाह हित राह गो मिलन पीछैं,
जवन मुकाम ग्राम मूँडवा सनाम जब ॥
केते इहाँ तुरकैं[4] कुरान बिच दीनी कहैं,
तारकीन पीर[5] ठहाँ हो ताके करे सौंह तब ॥
केते कहैं सौंहैं तिन मानैं[6] पै न सौंहैं करे,
ऐसैं मिलिगो सो आये तास डेरा तेहु अब[7] ॥
मंत्रके निमित्त एक तंबू तिन्ह मारनकौं,
पृथक तनाइ राख्यो मिच्छनैं चहे पैरब ॥ २४ ॥
तंबूमैं बिछायो सोर सघन बिछौनैं तर,
रस्से काटिडारनकौं बाहिर सुभट राखिर[8] ॥
तापैं इक ओर बहु तोपनकौं राखी तीरि[9],
सैन निज सूचन भरोसेपै दगन भाखि ॥
बिरचि प्रबंध यौं दगाको आप नम्र बनि,
आयो तिन्ह आत सुनि साम्हैं घात अभिलाखि ॥
आवन लगे ए तहाँ मेरतिया चंदाउत,

१ प्रसिद्ध प्रमाण जानकर २ सवाईसिंह के डेरे पर ३ विश्वास का पर्वत आडा देकर अर्थात् बहुत विश्वास देकर ॥ २३ ॥ ४ यवन मीरखां का बीच में कुरान देना कहते हैं ५ पीर का नाम है ६ चांपावत सवाईसिंह ने तो मीरखां के सौगन करने मान लिये परन्तु मीरखां ने सौगन नहीं किये ७ समय ॥ २४ ॥ ८ भरकर ९ अपने इसारे की सूचना पर चलाना कहकर

इनतैं बहादुर१ टरचो इक्क सकुन साखिं ॥ २५ ॥
बैठारे कुबुद्धि इम सादर सबन आनि,
तंबू उक्त अंतर तथा जन निजहु तारि ॥
मंत्रके निमित्त राखे इनके कथित मुख्य,
संग दुव तीननसौं आप रह्यो छल सारि ॥
व्याज करि पीछैं मिच्छ ह्वै३जुत निकसि बच्यो,
एक१ बंधु रहिगो सक्यो न सु तिहिं उबारि ॥
बाहिर कहत सोर सैनसौं पटकि बन्हि,
मानके अमित्र भूँजि डारे ज्यौं चेंनक भारि ॥ २६ ॥
सोरके उडत१ गुन तंबूके कटत२ संग,
तोप३न गुबार२नके वार होत भिन्न तेर ॥
रहउर कुंपाउत बखसी प्रमुख राम१,
नाम जाको सो व्हाँ कढयो तंबू चीरि बीर नर ॥
पैंड दै समुख पारि अहित अनेक परचो,
चंडावल नाह चहे सूरनमैं अग्रसर ॥
छत्रके नरेसकै न होतो संग तोतो छंम,
भेदिजातो सोतो रविमंडल लै पुराय भर ॥ २७ ॥
सावन५तैं लगत कितीठाँ व्यवहार संक,
ऐसैं मिति भेद होत सो मत न है उचित ॥
तदपि कितेक गुन तर्क६३ मान मानैं तत्थ,
मानैं किते संबतको अग्र बेद तर्क६४ मित ॥

१शकुनों की साची से ॥२५॥२अपने लोकों को ताड़ि (निकाल) कर ३ मानसिंह के शत्रुओं को ४ भाड़ में चणों के समान भूंज डाले ॥ २६ ॥ ५ रस्से ६ अत्यन्त कटगये ७ नखसीराम ८ अनेक शत्रुओं को गिराकर ९ छत्री राजा (धोकलसिंह) के साथ नहीं होता तो १० यह समर्थ ॥ २७ ॥ ११ व्यवहार का सम्वत् १२ थोड़ा फरक

इनके सिविरं जाइ नागपुर लूटि आयो,
ऐसैं मीरखान हनि मानके सबै अहित ॥
जोधपुर भेजे काटि सीस तिनके जवन,
स्वाननकौं डारि दैन सूची इन्हैं मान इत ॥ २८ ॥
चंपाउत बीर बख्तावर बिहितै चाहि,
स्वामीकौं मनाइ वाहे मंडोवर भेजि सिर ॥
मीरखान मिल आइ मानसौं सहित मिल्यो,
चाहि समभाव बैठे एका१सन भोन चिर ॥
धोकल पलाइगो बच्यो जित जियन धारि,
जाजगढ पीछैं टिक्यो भीरु रनके अजिर ॥
मारी भीमरान वह कन्या सो करी कुनति,
याहीतैं उदैपुर कहायो चकितेस किर ॥ २९ ॥
वेद रस नाग भूमि १८६४ साक इत नैर बुंदीर,
अधिराज कीनों—— अष्टम८ बिबाह बलि ॥
मार्गशिर९ मेचकर द्वितीयार गुरु लग्न मेल,
कृष्णगढ जाइ साध्यो संभर अभीत कलि ॥
कल्यानकी भगिनी प्रताप नृपकी जो कन्या,
सो अमानकुमरि२००१८ स नाम छबि मोद छलि ॥
चरमं बिबाह बिष्णुसिंह२००१२ नरनाह चारु,
दुलही बिबाही दानी दारिद कविन दलि ॥ ३० ॥
भो जिम सम्मौढ्य देस हाडोती उचित भाग१,

---

१ डेरे नागोर जाकर लूट लिये २ राजा मानसिंह के शत्रुओं को ॥ २८ ॥ ३ उचित जानकर ४ हित सहित ५ धोंकलसिंह भगगया ६ कायरों के पोक में ७ चकितों (कायरों) का पति ८ दिल (निश्चय) ॥ २९ ॥ ९ कल्याणसिंह की बहिन १० अन्तिम बिवाह ॥ ३० ॥ ११ शोभायुक्त धनवान्

कविनके पूरन भये जिम अखिल काम२ ॥
विप्रनके गेह जिम रत्नाकर नाना वर्नं३,
जोधनके ख्यात जिम निकसे नियतं नाम४ ॥
धर्म्म१ नीति२ सफल भये५ जिम धरनि धन्य,
तत्वबोध१ भक्ति२हु भये जग प्रकट६तासैं ॥
औंदरमैं वेद भो७ सपुत्र होत जाके इम,
रावरी सावित्री एह आइ गेह प्रभुराम२०१४ ॥ ३१ ॥
व्याहे जिहिँ लग्न भूप रावरे पिता१ विदित,
कविके पिता२ हु तिम व्याहे तिहिँ लग्न काल ॥
यातैं न पधारिसके हरिना स्वकवि ऐन,
साधी तउ रीति सो पधारिबे ज्यौं छितिपाल ॥
उक्त रनजीत जट्ट लाहोराधिराज इत,
भो बलिष्ठ दुस्सह बढ्यो बलि सुविधि भाल ॥
कीनौं कंपनीसौं तानैं उक्त १८६४ सकहीमैं कोल,
वार सतलंजके न आवनको सहि साल ॥ ३२ ॥
कंपनीनै ताहि समुझावन वकील क्रम,
चारलिसमिकफ१ स नाम भेज्यो प्रीति चहि ॥
ताके समुझाइवे मैं जट्ट सु न आयो तब,
दंग लुधियाना लगे भेजी फोज दर्प दहि ॥
आकटरलोनी करनेल फोजदार उहाँ,
रारिको उपक्रम दिखायो दरजोर रहि ॥
जीतिवो न जान्यौं सर्वथाही रनजीत जब,

१ रत्नों की खान अथवा समुद्र २ वीरों के निश्चय ही नाम प्रसिद्ध हुए ३ तहां ४ वेद का आदर हुआ ५ आप (रामसिंह) की माता ॥ ३१ ॥ ६ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता ७ अपने कवि के घर हरणा नामक ग्राम में ८ लाहोर का पति ॥ ३२ ॥ ९ उपाय पूर्वक आरंभ

उक्त सीम कोल लिखिदीनौं ह्वै करंड अहि[1] ॥ ३३ ॥
सो यातैं सतद्रू स्रोत वार न प्रसारि सक्यो,
छोटे१ बडे२ छितिप[2] बचे यौं इतके बहुत ॥
ते न रहते जो अंगरेजके[3] अमल तंत्र,
जट्ट सबकी भू तो छुराइलेतो जोर जुत ॥
पै यौं रहे कंपनीको दुर्लभ सरन पाइ,
आन रही ताकी स्रोत सूचितके[4] पार उत ॥
खग्ग बल तोहू इनके उर रह्यो खटकि,
सेनाके समत्व[5] सूर सोहू महासिंह सुत ॥ ३४ ॥
साक सर अंग अष्ट अवनि १८६५ अनेहि[6] इत,
काबल वजीर दोस्तमुहम्मद नाम करि ॥
खल ह्वै हरामखोर स्वामी दूर कीनौं साह,
आप बनिबैठो साह साहको कहाइ अँरि ॥
अहमदसाह दुररानी जो कथित उहाँ,
नादरकौं मारि नाह[7] भो जो अति१ दर्प भरि ॥
जीतिलीनी दिल्ली१ करि मथुरा२कतल जानैं,
प्राचीलग लूटयो देस अर्ज्जनको[8] बाद परि ॥ ३५ ॥
रुहेला नजीबुद्दोला१ दिल्लीको वजीर राखि,
सानुकूल राखे लखनेऊ ईस२ आदि सब ॥
अहमदशाह४७१ जो कलीज[9] करयो पीछे अंध,
जवनन ईस दिल्ली साह शाख्यो सोहि जब ॥
काबल गयो जो तहाँ तबतैं तदीयं[10] कुल,

---

१ टिपारे में बन्ध कियेहुए सर्प के समान होकर ॥ ३३ ॥ २ राजा ३ अंगरेजों के आधीन ४ अटक नदी के पार ५ बराबरवाला ॥ ३४ ॥ ६ समय ७ बादशाह का शत्रु कहाकर ८ आर्यों का ॥ ३५ ॥ ९ कलीजखां ने १० उसका कुल

अधिप रह्यो सो मद्य१ प्रमदा२ प्रमाद अब ॥
कावलको सासक सुजाउलमुल्क१नाम१काढ्यो,
ताके महमूद२ नाम सोदर समेत तब ॥ ३६ ॥
ऐसैं उपटंक जाको वारकजई सो एह,
धारत भो छत्र दोस्तमुहुम्मद१ नामधेय ॥
तनय मुहुमदादि अकबर२ नाम तानैं,
आपुनों वजीर राख्यो धी१ बल२ गिनि अमेय ॥
भावी बस बत्त वह कावल अधिप भाजि,
लवपुर आयो जानि जट्टको सरन लेय ॥
हीरा कोहनूर छीनिलीनों सिख यातैं हंत,
दाम पूछिबेपैं कह्यो मोल जूती इक देय ॥ ३७ ॥
हीरा यह पायो हुतो साहजिहाँ३९१दिल्ली साह,
जोहु लैगो नादिर मुहुम्मद६४सों बरजोर ॥
नादरकों मारि भो जो अहमदसाह नाह,
ताकै रह्यो तबतैं इहाँलों भो न प्रभु ओर ॥
अहमदनाम दुररानीको पिनाती एह,
लेतभो सरन आइ जट्टको पुरी लाहोर ॥
तासों लेत हीरक पदत्र भाख्यो अर्घ तानैं,
दै सु पवि पीछे लयो कंपनी सरन दोर ॥ ३८ ॥
एक कछु भावी बर्त्तमानमैं वजीर ऐसैं,
सूचे१८६५ सकमाँहिं बन्यों कावल तखत साह॥
रूसिनसों१ जानैं मेल पावन सहाय राख्यो,

---

१ स्त्रियों के प्रमादवाला ॥३६॥ २खिताब३नाम४मुहुम्मद अकबर ५ बुद्धि में और बलमें अमाप जानकर ६ लाहोर आया ॥३७॥ ७ यहां तक इस हीरे का यवनों के सिवाय अन्य स्वामी नहीं हुआ ८ जूती ९ उस हीरे की कीमत में १० रणजीतसिंह को वह हीरा देकर ॥ ३८ ॥

राख्यो रनजीतहुसौं[2] मेल पट दैन राह ॥
अंग रस नाग ससि १८६६ संवत अनेह इन,
संध्या दोलतादिराव[1] स्वीयकौ सब सिपाह ॥
कारन कछुक पाइ जैपुर दमनें[2] कर्‌यौं,
लालच लग्यो सो लग्यो दूनी दंग[3] वेलु लाह ॥ ३९ ॥
जैपुर के निर्दय महा ठिग विसेस जन,
उनमैं कितेक हुते गोगाउतके अहित ॥
संभूसिंह भूपति प्रतापकौ रह्यो सचिव,
सोपै सुमिराइ[4] अर्थ अतुल दिखाइ इत ॥
दूनीपुरपैं यौं मोरि संध्याकौं लराइ दीनौं,
माच्यो ताप तोपनको कल्पके कृसानु[5] सित ॥
जैपुर हो संभूसुत दूनीपति चंद जब,
सद्महो[6] प्रधान सिंघी बीर जो लस्यो विदित ॥ ४० ॥
रत्नचंद्रनाम जिहिं मासनलौं रारि रचि,
टूटन दई न दूनी गोलनको सहिताप ॥
दिनमैं गिरैं जो कोट रत्तिमैं बनाइ देदै,
थोरे बलतैंहु मारी तोपनके मुख थाप ॥
अर्थदै मिलाइ[7] राख्यो संध्याको स्वसुर अंबा,
बैजाँनाम नारि संध्या व्याही तास[8] यह बाप ॥
फोज याकी इकपाँ चलात रही खाली फैर,
दुर्गमैं रुकी न आत सामग्री इम दुराप[9] ॥ ४१ ॥
सोपै इन जैपुर पुकार्‌यो चंद संभू सुत,

१ दोलतराव २ जयपुर को दंड देने गया ३ दूणी नगर के धन का लाभ ॥ ३९ ॥ ४ बहुत धन देकर स्मरण कराया ५ प्रलय की अग्नि के समान ६ घर (दूणी) में ॥ ४० ॥ ७ धन देकर अंबा नामक सिन्धिया के श्वशुर को ८ उस बैजां का यह पिता था ९ दुर्लभ ॥४१॥

ताको वह कष्ट मेटिबेको भूप जगतेस ॥
कीनो खुसहालीराम बहुरा पैतानै कैद,
ऐसौ ठाँ सहायी जयगढतैं उतारयो एस ॥
आत राजमहल रुकाई तोप१ तानैं अहो,
सिविरैं सुराई सेना२ पैठत तस प्रदेस ॥
कही लाख मुद्राँ लैन माहजिको लेख काढि,
सूची व्यर्य१ दंड२लैं हमारे देहु अब सेस ॥ ४२ ॥
सत्य अर्थ बहु राखि पटैल पिताके सिर,
दैनको दिखाये व्हाँ जितेक दम्म लेख दैल ॥
दंड१ व्यय२ लैकैं जे सक्यो न दै खिलहु दम्म,
वँदन बिगारि संध्या चढिगो उपेंत बल ॥
जैपुरहु जाइ बहुरा सु कैद भो बहुरि,
बरजि पिता१ गो सो सो कीनी पुत्र२ धीबिकल ॥
जाइपरयो संध्या ढंग ग्वालियर सीमा जब,
चढि न सक्यो सो रह्यो तबतैं तहाँ अचल ॥ ४३ ॥
ऐसैं रहि ग्वालियर संध्या सो अँवंती ईस,
दाबत भो देस इत उतके बलिष्ट अति ॥
राधिकादिदास काढ्यो सोपुरतैं गोर राजा,
तरुन पचीस२५ सँम तोहू मुँग्ध कुंठमति ॥
ताहिदै बरोदा लाख १००००० मुद्रा मित आय ताको,
सोपुर समेत सबै दाब्यो देस गढ गति ॥

---

१ राजा प्रतापसिंह ने २ डेरे में ३ रुपये ४ फौज खरच और दंड तो लो और हमारे रुपये बाकी रहे सो दो ॥ ४२ ॥ ५ धन ६ लिखाहुआ पत्र ७ बाकी के रुपये नहीं दे सका तब मुख बिगाड़ कर ८ सेना सहित ९ विकल बुद्धिवाले पुत्र (जगतसिंह) ने पिता (प्रतापसिंह)मना कर गया था सो सब किया ॥ ४३ ॥ १० उज्जैन का पति ११ वर्ष १२ भोटी बुद्धिवाला (मूर्ख)

ऐसैं बढि राघोगढ१ नरउर२ देस आदि,
काल कछु भावीमाँहिं तानैं लये दाबि कति[1] ॥ ४४ ॥
खुंडापान[2] मत्त इत जैपुर जगतसिंह,
नग्नह्वै जो नग्न रमनीं[3]नमैं लग्यो रहन ॥
लेकैं अंक[4] नारि मारि द्वार परदेपैं लात,
आयो कढि बाहर नसाबस निसा१ अहरन[5] ॥
द्वारसेवी[6] जनन धकेल्यो पीछो मीचि दृग,
जुवती[7] सतन बीच निस्त्रप[8] करैं जह न ॥ ४५ ॥
जोधपुर१ बिरूपह्वै[9] उदैपुर२ सक्यो न जाइ,
पीछो आइ तदपि जैंई[10] ज्यौं पाप दर्पपर ॥
पूरे हठ लाखन उपायमैं खरच पारि,
काम१ काम[11]अंकुस२ बढाय द्वै२हि चित्रंकर[12] ॥
सतनैं[13] सुवाइ भोगैं नारिन बिबिध संग,
आपुनी१ पराई२ गुरुलौं न गिनीह्वै अदर ॥
जाकौं रतिजंग गनिका रसकपूरि जीति,
खूब बस कीनौं जो खैंरी[14]१ ज्यौं चंडबेग खरै[15]२ ॥ ४६ ॥
याही लंजिका[16]को कृपापात्र बन्धौं बिप्र इक,
नाम सिवनारायन जो दधीचिके जैंनन[17] ॥

---

१ आगे आनेवाले समय में ॥ ४४ ॥ २ मद्य पीने के स्थान (मतवाल) में ३ नग्न स्त्रियों में नग्न होकर रहनेलगा ४ स्त्री को गोद में लेकर ५ दिन और रात में ६ डोढीदार लोकों ने ७ सैकड़ों स्त्रियों में ८ वह निर्लज्ज नांही नहीं करता अर्थात् स्त्रियों के देखते हुए रत करता ॥ ४५ ॥ ९ जोधपुर से नकटा होकर विवाह करने को उदयपुर नहीं जासका १० तो भी विजय पाया हुआ होवे तैसे ११ लिंग १२ आश्चर्य करानेवाले बढाये १३ सैसड़ों स्त्रियों को सुला (लेटा) कर अनेक प्रकार से भोगता था १४ जैसे गधी १५ भयंकर वेगवाले गधे को वश में करै तैसे रसकपूर नामक गणिका ने उस राजा को वश में किया ॥ ४६ ॥ १६ वेश्या का १७ वंश में

कहँ पुर जाजिव हो अधकोस, दग्यो चहुँघाँ तउ संगति दोस ॥
तप्यो समरंगन तोपन ताप, चढ्यो नभ जामल२जाम दिवाप ॥२२॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कौतूहल आस ॥
रवि दुपहरलौं चढि रुक्यो, तक्कन तुमुल तमास ॥ २३ ॥
इहिँ अंतर दुवदिस अतुल, घुरत तोप निर्घात ॥
साहबहादुर भाग्य सन, बज्ज्यो उत्तर बात ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दग्गिय ॥
उड्डत पिक्खि अनीक लाय सत्रुन उर लग्गिय ॥
आजम गज आरूढ हुतो निज कटक हरोली ॥
गोला लगि लैगयउ पारि दल मध्य प्रतोली ॥
इम तोप जनक आजम उडत निज दल लखिपर भर नयो
दीदारबक्खस तस सुत दुसह व्है नायक हरवल भयो ॥५२॥
आजमसुत इम कहिय मरन मंगल भट संगर ॥
करहु सोक जिन बीर धरहु पायन लज लंगर ॥
इम बिसासि सब सेन अग्ग ठह्यो आजमसुत ॥
गति अंगद पय गहि मरन मंड्यो जनूँन जुत ॥
दै पुनि निदेस तोपन दगन नृप नबाब हक्कारि सब ॥
दीदारबक्खस सज्ज्यो दुजन गुमर टेक मंडत गजब ॥ २६ ॥

कहैंपुरइति ॥ जामल उभय. दिवाप दिवापति (सूर्य) ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इमइति ॥ तक्कन देखत. तुमल संकुलितयुद्ध ताको ॥ २३ ॥ इहिंअंतरइति ॥ बात पवन ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ पलटतइति ॥ हरोली फोजके अग्रभाग. प्रतोली बीथी. लोके गली, "रथ्या प्रतोली विसिखा" इतिहैमः ॥ तस ताको ॥ २५ आजमसुतइति ॥ संगर युद्धमैं रहेहुये. भट सूरवीर को. मंगल उत्सव होतहैं तातैं. जनून. धावनी. क्रोध ॥ २६ ॥ दतियापतिइति ॥ इतेन इतनें सहित. इनमंत्र

वैहासिक जैसैं अंतरंग[1]है मिथुन[2] बीच,
मिश्र यह तैसैं बढ्यो दोउ[2]नके जोरि मन ॥
याही गनिकाको भयो भ्राता वीतलज्ज[3] यह,
पाँनि[4] बंधवाइ राखी पायो प्रभु[5] सालपन ॥
सोही करयो मंत्री तहाँ भीमसौं[6] पिसुन सूचि,
धीसख[7] गहायो रायचंद लैबे भाटि धन ॥ ४७ ॥
उक्त १८६६ सकमैं यौं रायचंदहि कितेक अंह[8],
कैद राखि पीछैं हनिगेरयो बिनु दाह करि,
भूपको सकार[9] मिश्र मारनमैं हेतु भयो,
जारनमैं हेतु न भयो जो मोघ[10] मंतु जरि ॥
बहुरा[1] निकारहु न[1] हरदे[2] बिडारहु न[2],
मारहु न[2] रायचंद[3] यौं कहिगो तात[11] मरि ॥
सोसो करी सबही सपूती जगतेस सुत,
प्यारी गनिका[1] सह[12] सकार[2] वारे फंद परि ॥ ४८ ॥
कग्गर[13] वसन धारि नारिन सहित करैं,
बाँरि[14] फाग कौतुक दिगंबर[15] बनैं बहुरि ॥
कुल जान धारैं ताहि बहुरि बिसारैं कामी,

---

१ विदूषक (स्त्रीपुरुष को मिलानेवाला) २ स्त्री पुरुष के बीच ३ निर्लज्ज ४ उस वेश्या से अपने हाथ में राखी बन्धवाकर ५ स्वामी (जगतसिंह) का सालापन पाया ६ भीमसिंह (जगतसिंह) से, उस चुगल ने कहकर ७ धन लेने को उस भड़वे ने मन्त्री को पकड़वाया ॥ ४७ ॥ ८ दिन ९ राजा का साला (राजा की अविवाहिता 'पासवान' स्त्री का भाई) यथा "मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः॥ सोयमनूढाभ्राता स्यालः शकार इत्युक्तः ॥" १० झूठा अपराध लगाकर उस मंत्री के मारने में कारण हुआ परन्तु वह बिना जलाया पड़ा रहा जिसके जलाने में कारण नहीं हुआ ११ पिता (प्रतापसिंह) मरते समय कह गया था १२ साले सहित प्यारी गणिका के फन्द में पड़कर ॥ ४८ ॥ १३ कागज के वस्त्र पहनकर १४ जल की फाग करता और १५ नग्न होकर

मोहैं चित्रबंध सुहि सोहैं लंक बंक करि ॥
ढंगकी सतीन तजिदीनौं अवरोध ऐवो२,
दूर के पलाई३ दुख छाई रही केक दुरि४ ॥
हीजरे किसोर वय आदरे सुनत हंत६,
जानैं कामअंध है विधाता सोहु बाद जुरि॥ ४९ ॥
मिश्र शिवनारायन स्वामीको सकार७ मंत्री,
काज बिनु लाज८ सब राजके लग्यो करन॥
सुभट१ सिपाइ२ गन गहन दुमन सबै,
सचिव३ त्रपा के गहि बैठे जित जो सरन ॥
काढ्यो वहुरा तब रहस्यमैं कितेक कहत,
धृष्ट-बल सत्थ वंथ ताहूकों लग्यो भरन ॥
भाख्यो मैं प्रसन्न तहँ भाख्यो द्विज वृद्ध भो मैं,
पुत्रहिं पठैहों बै[11] नवीन निज१ जो पर२ न ॥५०॥
औरन बुलाइ बेग विप्र कढिगो रु ऐसैं,
सचिव रहस्य केक भुकते१ बचे२ सुनत ॥
जो रसकपूरि गनिकाही तैस दर्प जीति,
मान१ मैं रु प्रान२मैं अमान प्यारी स्वामि मत ॥

१ टेढी कमर करके चित्रबन्ध आसन से सोहित करै सो ही स्त्री सुहावै "कामसूत्र में कहेहुए रतके आसनों में एक चित्रबन्ध आसन है सो स्त्री के टेढी कमर करने से होता है" २ नगर की पतिव्रता स्त्रियां ने जनाने में आना छोडदिया ३ कितनी ही स्त्रियां दूर भाग गईं ४ कितनी ही छिप रहीं ५ युवा अवस्थावाले हींजड़ों का आदर किया ६ खेदकी बात है ॥ ४९ ॥ ७ अपने मालिक का साला और मंत्री (सलाहकार) ८ लज्जा ९ एकान्त में १० साथ [अंक] में भरकर ११ नवीन अवस्थावाला है और यह भी आपका ही है अन्य नहीं है ॥ ५० ॥ १२ कितने ही सचिवों का इस एकान्त को भुगतना और कितनों ही का बचना सुनते हैं १३उस राजा जगतसिंह के घमंड को जीतकर १४ बल में अतोल

साध्यो बाजीकरन अकाल मरिबेकों सठ,
तातैं प्रतिमल्ल मोहि *हेला१ हाव२ भाव३ तत ॥
जैपुर अधीस जगतेस करिलीनों जिहिं,
बाजीगर बंदर नचावैं जिम तारि तब ॥५१॥
कामीपन हाका अजमेर नृप बीसलको,
जैसो भयो भूपनमैं तैसो इहिं बेर जग ॥
औरनको जान्यों नाहिं एही महाराज उभै२,
मत्त इहिं बेर भये जानैं छैल छैल मग ॥
जोधपुर१ भीम१ जगतेस२जु ए जैपुर२ज्यों,
एक सील१ चरित२ निलज्जताके उच्च अग ॥
कैसे भये जैसे परदेसी सुनि रोकैं कान,
देसी कहा दुष्टनमैं भायो इम एक भग ॥ ५२ ॥
एक१ काकिनीमैं पीछी दैदै गही नारि इत,
सिंघी इंद्रराज१ उक्त दूदाउत्त सिवनाथ२ ॥
गंगाराम३ संजुत ए जबहि हजूर गये,
ठहै कैं जई लै जस दिखाये आछे निज हाथ ॥
मान महिपाल जै लगाये उर पूरे मोद,
सबहि बढाये सतकारक विभव साथ ॥
दैनलागो सिंघीकों मुसाहबी उचित देखि,
नीतिसों नच्यो ठहाँ इंदराज असैं गुनगाथ ॥ ५३ ॥
जोरि कर स्वामीके समक्ष यों बनिक जंपी,
आय१के अधीन घनैं सबठाँ विधेय ठपर्य२ ॥

---

*सुरत की प्रबल इच्छा और हाव भाव से तहां मोहित करके ताड़ना देकर ॥५१॥ १ रसिकों के मार्ग में रसिक था बकरे के समान रसिक इन्हीं दोनों को जाने २ एक से स्वभाव और चरित्रवाले ३ऊँचे पर्वत ४एक योनि ही अच्छी लगी ॥५२॥ ५ छदाम में ६जीतनेवाले होकर ॥५३॥ ७ रोपरू ८ जितनी आमद होवै उतना ही

रीति यह इंद्र१ बिधि२ ईस३ हरि४ लौं जो रही,
नर तो कितेक तहाँ कैसैं बनैं छोरि नेय ॥
रीझ आदि व्ययमैं प्रमान जो प्रभु न राखे,
मोपै बनिहै क्यौं नाथ काम तो प्रबंधमय ॥
मान नृप भाख्यो हम तेरेही दिखाये मग्ग,
अबतैं चलहिं सदा तेरी मतिके उदय ॥ ५४ ॥
कैसैं व्है प्रतीति अरजी यौं इंद्रराज करी,
देवनाथ इष्ट गुरु रावरे जे बिच देहु ॥
भौर तिनकौं मैं राखौं व्हेन ज्यों नियम भंग,
व्हैतो हित हेरि अटकैं तिंहिं मिलित एहु ॥
सुधरन काज श्रीजलंधरके लै सपथ,
हानि१ लाभ२ हमकों गिनों इक१ दै निज गेहु ॥
करन बिहीन रीझ१ खीज२ न बिधेय करि,
लाह नरनाह पीछैं राहके पथिकैं लेहु ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जब प्रभुतैं करजोरि, इंदराज किय यह अरज ॥
नाथ सु तबहि निहोरि, कर्मध्वर्ज तस भीर किय ॥ ५६ ॥
सूचे सोंहन साथ, हित जिम्म बनिक प्रतीति हित ॥
नाम जलंधरनाथ, दोउ२ न अप्पन१ बीच दिय ॥ ५७ ॥
लिपि प्रभुकी१ लिखवाइ, लिपि नाथहु२ की संग लहि ॥
पुनि बिस्वासहि पाइ, काम बनिक लग्गो करन ॥ ५८ ॥
व्यय१ तब अधिक बिडारि, सिंघी रक्खिय आय२सम ॥

खरच उचित है १ शिव २ नीति ३ स्वामि का (आप का) काम ॥ ५४ ॥ ४ स्हाय ५ जलंधरनाथ के सौगन ६ उचित ७ चलनेवाले ॥ ५५ ॥ ८ कमधज मानसिंह ने देवनाथ को उसका सहायक किया ॥ ५६ ॥ ९ कहे हुए सौगनों के साथ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १० अधिक खरच था जिसको निकाल कर

नाथहिँ भीर निहारि, उचित राह आनें अखिल ॥ ५९ ॥
नृपहिँ वनिक[1] जुत नाथ[2], राह तजत अटकत रहैं ॥
सब वैभव नयँ साथ, बढन राज्य लग्गो विविध ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंहचरित्रे मानसिंहात्मघातविमर्शकारामोचितसिंघीन्द्रराजभाण्डागारिगंगारामकुचामणठकुरशिवनाथसिंहसहितजयपुरजनपदगमनफागीनगरजयपुरानीकपलायनजयपुरावरणं १ सेनाव्ययव्याकुलजगत्सिंहचम्पाउत्तसवाईसिंहविरसताहेतुस्वराष्ट्रनाशभीतजगत्सिंहजयपुरदिगभिमुखपलायन २ राजयुग्मभीतराणाभीमसिंहस्वसुतागरलप्रयोगमारणसवाईसिंहमरुधरालुण्टन ३ बुन्दीशविष्णुसिंहविवाहद्वयकरणार्द्धगद्दिकोपवेशनस्वीकारमित्रीकृतमीरखांयोधपुरेशमानसिंहसवाईसिंहछद्मघातमारणं ४ कृत्रिमदायादधोंकलसिंहकांदिशीकीभवनबुन्दीभूपकृष्णगढाष्टमविवाहकरणं ५ लवपुरपतिसिक्खरणजी

॥ ५९ ॥ १ देवनाथ सहित २ नीति के साथ ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंहके चरित्र में, राजा मानसिंह के आत्मघात विचारने पर सिंघी इंद्रराज और गंग भंडारि का कैद से निकल कर कुचामण के ठाकुर शिवनाथसिंह सहित फागी नगर में जयपुर की सेना को भगाकर जयपुर को घेरना १ सेना के खरच से घबराये हुए राजा जगतसिंह और पोकरण के चांपाउत सवाईसिंह से विरस होकर अपनी भूमि के जाने के भय से जगतसिंह का जयपुर जाना २ महाराणा भीमसिंह का दोनों राजाओं के भय से अपनी पुत्री को जहर देकर मारना और सवाईसिंह का मारवाड़ को लूटना ३ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का एक मास में दो विवाह करना और जोधपुर के राजा मानसिंह का मीरखां को मित्र बनाकर उसको आधी गादी पर बिठाना स्वीकार करके पोकरण के ठाकुर चंपाउत सवाईसिंह को छलघात से मरवाना ४ जोधपुर के कृत्रिम दावीदार धूंकलसिंह का भागना और बुंदी के राजा का कृष्णगढ में आठवां विवाह करना ५ लाहोर के शिक्ख रणजीतसिंह और ईष्ट इण्डिया कम्पनी से विरोध बढकर सुलह होना और काबल के वजीर दोस्त मुहम्मद का, काबुल

तेष्टइंडियाकम्पनीसंधिविधाननिःसारितकाबुलेशामीरसुजाउल्मुल्कमन्त्रिदोस्तमुहम्मदकाबुलाधिपत्यप्रापण ६ स्वशरणागतकाबुलेशामीरकोहनूराख्यवज्रसिक्खरणजीतसिंहग्रहणामीरकम्पनीशरणसमासादन ७ दूणीपुरकृतसमरदौलतरावसिंधियापुनर्दक्षिणदिग्गमनग्वालियरसमागतेतस्ततोदेशसमाक्रमण ८ मद्यपकामुकजयपुरेशजगतसिंहविवस्त्ररमणीरमणादिगर्हितकर्मनिन्दनसिंघीन्द्रराजविहितजयपुरजनपदोपद्रवहेतुत्यक्तयोधपुरावरणजगतसिंहजयपुरपलायनमानसिंहसिंघीन्द्रराजप्रधानपदप्रदानादिवर्णनं दशमो मयूखः ॥ १० ॥ आदितः ॥ ३६० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

सौराष्ट्री दोहा ॥

इंदराज अधिकार, पाइ मुसाहबको प्रथित[1] ॥
सब लखि सार असार, हेरयो हित प्रभुको हरखि ॥ १ ॥
कछुक भूत[2] इहिं काल, संगी नाथ समर्थ नमि॥
नियमहिं आनि नृपाल, कोबिदं[3] बनिक प्रधान किय ॥ २ ॥
जाके मतिगति जोर, नियम जदपि न रूच्यो नृपहिं ॥
तदपि लग्यो नय तोर, दिनप्रति चमक्यो अभ्युदय ॥ ३ ॥

के अमीर सुजाउल्मुल्क को निकाल कर बादशाह होना ६ अपने शरण आये हुए काबुल के अमीर से सिक्ख रणजीतसिंह का, कोहनूर नामी हीरा लेना और अमीर का कंपनी के शरण जाना ७ दौलतराव सिंधिया का दूणी नगर में युद्ध करके पीछा दक्षिण में जाना और ग्वालियर जाकर इधर उधर के देश दबाना ८ जयपुर के मद्यपी और कामी राजा जगतसिंह का नग्न होकर स्त्रियोंमें रमने आदि निन्दनीय कामों की निन्दा और जयपुर के देश में उपद्रव करके जोधपुर के घेरे से जगतसिंह को जयपुर में बुलानेवाले सिंघी इंद्रराज को राजा मानसिंह का प्रधान बनाने आदि वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और आदि से तीनसौ साठ ३६० मयूख हुए॥

१ विदित ॥ १ ॥ २ यह कथा कुछ गये समय की है ३ चतुर ॥ २ ॥ ३ ॥

निगम बहिर्गत¹ न्याय, पंच५ मकारक² पथ पथिक ॥
इत मत तदपि सहाय, कानफटा गुरु मान किय ॥४॥
दयो मोहि इन दान, प्रान ³उपसन खिन जोधपुर ॥
मतध्रुव इम हुव मान, किंकर कानफटेनको ॥ ५ ॥
इम नाथहिं बिच आनि सिंघी हुव प्रभुको सचिव ॥
मानहिं बहुमत मानि; न मुसाइब होतो नतो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जैपुरके जोरतैं भज्यो जब महिप मान,
आपुनौं अनीक देखि बैरपैं बन्यौं अहित ॥
पाइ निज देस१ जगतेसहिं मुराइ पुनि,
संगी रहे जे भट बढाये सबही सहित⁶ ॥
उक्त सिवनाथसिंह१ मेरतिया दूदाउत,
मानि हित चिंतक दै लाख१००००० को पटा महित ॥
ओरनतैं अधिक समर्पि ⁸द्रम्म सिक्का१ आदि,
राख्यो सविसेस ताहि ओरन तुला रहित ॥ ७ ॥
सूचे तीन३ संगी सिवनाथवारे सोदरन,
सहँस पचीस मुद्रा तुल्य¹⁰ दै पटा सबन ॥
नींबी१।२ मुख्य थान लछमन१।२ कौं दयो नृपति,
मान२।३ हित दीनों मान भट्टलिया२।३ तुष्ट मन ॥
स्वामी कर्यो थान धनकोली३।४ को हुकमसिंह३।४,
सूँप्यो सारदूलता१।५ कौं पिप्पलाद१।५ प्रीति सन ॥
द्रम्म पंच अयुत५०००० पटासौं पहिलैं तो दयो,

१वेद मार्ग से बाहिर २ वाम मार्ग में चलनेवाला है तो भी उस कनफटा को मानसिंह ने गुरु किया ॥ ४ ॥ ४ प्राण नाश होते समय ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ शरीर पर शत्रु बना अर्थात् आत्मघात करने लगा ६ हित सहित ७ पूज्य (आदरणीय) ८ रुपये का सिक्का ९ बराबरी रहित ॥ ७ ॥ १० बराबर ११मन से प्रसन्न होकर

*भावीकाल देहैं बलि बूड़सू२।५ पुरी भवन ॥ ८ ॥
ऊदाउत बंसमैं प्रधान उक्त अर्जुन१।६ कौं,
अयुतन आय ग्राम बारह१२ दये उचित ॥
भद्राजनि ईस बखतावर१।७ जो जोधा१ भन्यौं,
द्रम्म लाख१००००० मानी पट्ट ताकौं दयो हेरि हित ॥
जंप्यो लाडनूँ पति क्षितीप२ जोधा२ मंगल जो,
मान नृप ताहूकै बढाइ पटा लाख१००००० मित ॥
पंच अयुता५००००ऽऽये तास बंधव पता१।३।९कौं पट्ट१,
यो दयो त्रिसत३०० सादी स्वामिता२ उपेत इत ॥ ९ ॥
अल्पाजीव हे ए८ सब एक१ टारि अर्जुन१ कौं,
ऊदा कुल पट्टपति सोतो रायपुर१ ईस ॥
आठ८ मिसलनमैं सिरायत हो आदिहीतैं,
अष्टादस१८ संगी यौं बढाये मान अवनीस ॥
तिनमैं कुचामनि१रु भद्राजनि२ लाडनूँ३तो,
बढे लाख१०००००लाख१०००००के पटाकी ठानि बखसीस ॥
ऊदाउत मूलहीतैं औसो सो बढ्यो अधिक,
जानैं जंग जैसे बढे संगी हीन द्विक२ बीस१८ ॥ १० ॥
औसैं भूत१ कालमैं बढे ए बंदगीतैं अरु,
इंद्रराज१ मंत्री भयो नृपकौं नियम आनि ॥
बर्त्तमान२ मैं अब बुरो यह लगन लग्यो,
मानी मानवारे मन ६व्ययमैं अटक मानि ॥
सौंह लै जलंधर१के साखी देवनाथ२ सह,
तापैं पछिताइ हरैं छलतैं सचिव हाँनि ॥

* आगे आनेवाले समय में देवेगा ॥ ८ ॥ १ पचास हजार की आमद का २ तीन सौ सवारों की स्वामिता सहित ॥ ९ ॥ ३ ये थोड़ी जीविकावाले थे ४ राजा मानसिंह ने ५ दो कम बीस ॥१०॥६खरच रोकने से ७ सचिव को मारन [

हाहा काहूकै न ऐसो कपटी अधिप होहु,
पापी लोमस[1] अंचक जो मारे स्वीय पहिचानि ॥ ११ ॥
संवत तुरंग अंग संजुत भुजंग ससि१८६७,
इंदउर ईस जसवंतराव छोर्‍यो अंग ॥
जोलौं रह्यो स्वास हुलकरकै नियति[2] जोर,
तोलौं त्रास रह्यो अंगरेजनकै बल तंग ॥
हंकि अरि तोपनपैं जानैं बहुबेर हय,
ढंकि छिति[3] दीनी रुंड मुंडनके करि ढंग[4] ॥
पृथ्वीराज पीछैं बीर तैसो यह जान्यौ पर्‍यो,
जाकौं वाह व्याहसो उछाह रह्यो सब जंग ॥ १२ ॥
साहस१ उपाय२ बुद्धि३ विक्रम४ रु बिद्या५सिद्ध,
एक१ अध्वें[5][6] अध्वग ए अंगरेज आइ इत ॥
होनलागे हाकिम इहाँको देस१ काल हेरि,
हेरैं हेरे क्रमतैं बढाते निज लाभ हित ॥
एक१ प्रतिभटतैं दुरे न बहुबेर आजि,
मोरे महसूर१ मकसूदाबाद२ से अँमित ॥
जोध कंपनीके जे मुराये बहुबेर जानैं,
बीर एक१ ऐसो जसवंतराव भो विदित ॥ १३ ॥
संकटमैं एकसमैं बलको[8] बुरज बंधि,
तोप दुव२ तामैं चटकारिनं[9] मित चलात ॥
अंगरेज६ दक्खिन२।३ तैं उत्तर४।७ लरत आये,
काजहु करत आये पाउस३ सलिल[10] पात ॥

१ सुनते ही वाल (रोम) खड़े होजावैं ऐसा ॥ ११ ॥ २ भाग्य के बल से ३ पृथ्वी को ४ ढेर (समूह) ५ एक मार्ग में चलनेवाले ६ युद्ध में ७ अद्भुत ॥ १३ ॥ ८ सेना की ९ चुटकी बजने के समान १० वर्षा का जल पड़ने में

नीठि नीठि लंघि कृत्य[1] कोबिद मिली[2] नदिन,
गंगापर ठ्है गये बढेक्रम निदहि गात ॥
लरत उहाँलौं गयो हुलकर पीछैं लागि,
बलको बुरज पै न बिगरयो जिनहि जात ॥ १४ ॥
असे अंगरेज अतिसीम बुध१ बीर२ अहो,
ऐसैं एक काल दुर्ग भरतपुराख्य अरि ॥
बाहिरतैं बेढिकैं करयो रन कछुक काल,
टेक बल लेकनैं अनेकनमैं एक१ टरि ॥
माँहि१के प्रघात जट्टराज रनजीत मारे,
काढे जसवंतराव बाहिर२के पातकरि ॥
हारि न मुरे जे१सुरे तबतो कछुक हेतु,
लैकैं१ दयो जट्टनको पीछैं उक्त दुर्ग लरि ॥ १५ ॥
ऐसे बज्रफेट जैसे अंगरेज६ आहवमैं,
हुलकरराज जे भजाये बहुबेर हनि ॥
एकबेर आवत दरेको करि रुद्ध द्वार,
माँहिं अंगरेजन लै कोटाके प्रधान नमि ॥
चम्मलि उतारि काढी सुखसौं कथित चमूं,
तातैं रंच रुद्ध जसवंत पीछैं प्रीति तनि ॥
माँहिं नतिसौं[12] लै धरि रोधन जु कारा[13] माँहि,
बज्र कोप झेल्यो झल्ल जालमनैं नम्र बनि ॥ १६ ॥

---

१ कार्य में चतुर २मार्ग में मिली हुई नदियों को लांघकर ॥ १४ ॥ ३अत्यन्त चतुर और वीर ४ भरतपुर नाम के ५ घेर कर ६ अंगरेजों के सेनापति का नाम है ७ बाहर के प्रहारों से ८ कुछ कारण से अंगरेजी सेना पीछी फिरी ९ कहा हुआ गढ (भरतपुर) ॥ १५ ॥ १० युद्ध में ११ कोटा के राज्य में पर्वतों के बीच के मार्ग का नाम, दरा जिसको रोककर १२ नम्रता से १३ कैद में ॥ १६ ॥

दतियापति राउत्त नाम दलपति बुंदेलह ॥
नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह समेलह ॥
रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥
लगि बुंदियधर लोभ गिनत भोरो न कालगति ॥
सचिवन इतेन आजमसुवन गजारूढ हरवल्ल गहि ॥
इनमंत्र अबहि आजम उडयो सुचन स्वास अवसेस रहि ।२७।
इम आजम उड्डतहि सुवन ठड्डो चढि सिंधुर ॥
दगत तोप दुहुँओर उवत बीरन रस अंकुर ॥
इहिँ अंतर जयसिंह नगर आमैर नरेसुर ॥
निज नकीब मुकलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥
गूढ़बिधि कहाय प्रछन्न गय जामिप तुम ए खल्ल जवन ॥
कुल स्वसुर टारि मंडहु कलह होत तोप सालक हवन॥२८॥

[दोहा]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउत्तर पठवाय ॥
घर अप्पन संबंध घन, पैँहँ रन दंड उपाय ॥ २९ ॥
तातैं तुम साहस तजहु, बय नय समग बिचारि ॥
बचहु बाम दक्खिन बदलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥
इम कहाय बुंदिय अधिप मंडयो तोपन जंग ॥
इहिँ अंतर दूतन कह्यो, भो आजम असु भंग ॥ ३१ ॥
बलहिँ प्रचारत भटन बिच, हो हत्थिय आरूढ ॥
गोला लागि दोजख गयो, महा अनय रत मूढ ॥
तब ताको सुत सज्जहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके संगसों ॥ २७ ॥ इमइति ॥ उवत उदयहोत. रस वीररस ताको. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अपनं ॥२९॥ तातैंतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असुभंग प्राणभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंइति ॥ दोजख. यावनी. नरक ॥ ३२ ॥

कृष्णगढ१ आदि केक संबंधिन ताही काल,
जोध कछु भेजे भीर बुंदी यह बिघ्न जानि ॥
आहव रह्यो जो कछु ऊनचउ४ मास अंत,
खरचि खजानौं परे होत न रजत खानि ॥
भूखन१ अमत्र२ आदि बेतनमैं जात भूरि,
पूर वसु कष्ट परयो देत न रुकत पानि ॥
कष्ट ऐसो जदपि सह्यो पै बलवंत२००।कूँहूँ,
तदपि निकासिदीनौं बुंदीभूप बल तानि ॥ ३८ ॥
लासदै निकास्यो बलवंत२००। नैनवातैं तासौं,
३अहन कितेन आदि मेचक२ तैंपस्य१२ मास ॥
द्रंग बुंदी चोथी४ गोरि रानीकैं द्वितीय२ दिन,
तीजो सु तनूज बलदेवसिंह२०१।३ नाम तास ॥
जेठे द्वै२हि कुमर बचे न इम ताके जन्म,
बुद्धि धन दुर्गत दसाहुमैं जस बिकास ॥
कित्ति प्रसराइ आप जिततित नाम कीनौं,
धामकीनौं धवल खजानौं खोलि खिल खास ॥ ३९ ॥
कुमर तृतीय३ एह जनम्यो तदनुँ कढ्यो,
अल्पहि दिनन अंत भीत होइ भ्रात यहँ ॥
बुंदीको निसान फहरानौं नैनैनैर बलि,
बिजय पताकाके बिसेस बिधि लै निवह ॥
जोर अंगरेज७नको फैल्यो प्रतिघस्र जहाँ,
द्रोही दल२ दक्खिनके होत मग्न लोभ द्रह ॥
केतुं कंपनीको अपनौंढिग बढत आयो,

१ पात्र २ धन का पूर्ण कष्ट ॥ ३८ ॥ ३ कितनेक दिन पहिले ४ फाल्गुन वदि ५ दरिद्र दशा में ही ६ याकी का खजाना खोलकर ॥ ३९ ॥ ७ जिसपीछे ८ बलवन्तसिंह ९ फिर नैणवा नगर में १० प्रतिदिन ११ कंपनी का झंडा

एक१ऐैन पथिक प्रमाद हीन रत्ति१ अह ॥ ४० ॥
भ्रात बलवंत२००। नैनपुरतैं निकसि भीत,
मालिक अधीन भयो जोरि हाथ नम्र मन ॥
तबहि दयालु विष्णुसिंह२००।२ नरनाह ताहि,
³सासि न मिल्यो पै ग्रामच्यारि४ दये नीति सन ॥
दूजे२ अब्द तासौं सबदेसके सुदिष्ट दिन,
अंतिम८ प्रियाके ⁵गर्भ प्राची१ गर्भ ज्यों ⁶तपन ॥
भूप भोज१९१।२रतन१९२।१सता१९४।१के पुराय सँभव भो,
भूमि तबहीतैं भासी सोभामय संहनन ॥ ४१ ॥
सो भुजंग अंग रु मतंग ससि १८६८ संवतके,
बिसद१ सहस्य१० मास उत्तमके बुध४ वार ॥
तीज३ तिथि घटिका छबीस२६ पल आकृति२२ त्यों,
एकबिंसी२१ ताराख्द३२ छप्पन५६ क्रम उदार ॥
योगध्रुव१२ तेरह१३ ओ अडतीस३८ तैतिल त्यौं,
उत्कृति२६ द्विनेत्र२२ इष्ट पंच द्वै२५ छपंच ५६ पार ॥
लवचउ४ जात धनु९ रविके मिथुन लग्न,
ताही काल रांम२०१४ प्रभु रावरो भो अवतार॥ ४२ ॥

१एक मार्गके चलनेवाले प्रमाद रहित २रात दिन॥४०॥ ३तरवार सहित नहीं मिला ४ श्रेष्ठ भाग्य के दिन से राजा विष्णुसिंह की अंतिम रानी के गर्भ से राजा भोज. रत्नसिंह और शत्रुशाल के पुराय से पूर्व दिशा में ६ सूर्य उदय होवै तैसे ७ बालक (रामसिंह) का ७ जन्म हुआ तभी से भूमि शोभा के ८ शरीर वाली दीखने लगी ॥४१॥ ९ पौष सुदि तीज बुधवार छबीस घड़ी बाईस पल, और इक्कीसवां (उत्तराषाढा) नक्षत्र बत्तीस घड़ी छप्पन पल, ध्रुव नाम योग तेरह घड़ी अड़तीस पल, तैतिल कर्ण छब्बीस घड़ी बाईस पल, इष्ट घटी पचीस और छप्पन, धन के सूर्य के चार अंश जाकर मिथुन लग्न के समय में १० हे प्रभु रामसिंह आप का जन्म हुआ ॥ ४२ ॥
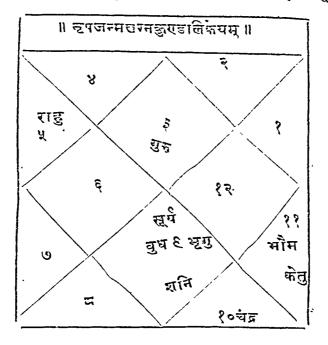
भास्यो तनुभावमैं बृहस्पति५ मिथुन३ भोगी,
तीजे३ भोन सिंह५ को बिधुंतुद८ प्रविष्ट तह ॥
रवि१ कवि६ मंद७ बुध४ सप्तममैं धन्वी९ रहे,
अष्टम८ मैं इंदु२ मकर१० स्थित प्रकासि मह ॥
आर३ अरु आहिक९ ए कुंभ११के नवम९ ग्रैन,
ऐसो ग्रह जोग आत उक्त१० मास उक्त३ अह ॥
रानी अष्टमी८सौं आप जनम अधिप राम२०१४,
सबके सुदिष्ट१ इष्ट२ विद्या३ नीति४ धर्म५ सह ॥ ४३ ॥
स्वामी विष्णुसिंह२००१२ महिपालके सदन प्रभु,
बालके प्रसवं जन जालं के मिले मुदित ॥

लग्न में मिथुन का बृहस्पति, तीसरे भवन में सिंह का राहु, सातवें भवन में धन राशि में सूर्य शुक्र शनि और बुध, आठवें भवनमें मकर का चन्द्रमा स्थित होकर उत्सव प्रकाश करता है और मंगल और केतु नवम स्थानमें कुंभ राशि के हैं ॥ ४३ ॥ १घर में २ जन्म ३ समूह

आयो समै थानाँ कलिकालके उठावनको,
रोध रिपु ढालके ह्वै सालके रह्यो रुदित[2] ॥
गालके बजात चंद्रभालके[3] निहाल गति,
मालके मिलाप तंगहालके तज्यो तुर्दित ॥
बुंदीपुर सूचे काल थालके बजत बाल,
बालके बिकासी अंक भालके भये उदित ॥ ४४ ॥
सारघं[5]१ सुवर्ण२ सुखं[6] दै सुख१ कही सराँनि[7],
साधि जातकर्म्म२ बंस बिपन जिमाइ सब ॥
रत्नाकर रीझके दये तिन्ह बिबिध दान,
कबिहु निहाल कीनैं५ अंहति[9] उफान अब ॥
अंमतैं[10] असेस गायकनके निलय[11] भरे६,
पुरमैं बधाई बटी चहुघाँ चहे[12] पैरब७ ॥
भावी सुखमूल होत सौंनँ[13] अनुकूल भये,
बातकैं[14] बधूल तूल पातक पहार तब ॥ ४५ ॥
धर्म धुर धोरी बेद रथके धुरंधरजे[15],
आदि मनु१ आदि गये कृत[16]१मैं बहुत बाम ॥
त्रेता२मैं निबाह्यो राम२आदिक नृपन तैसैं,
द्वापर३मैं कंकादिनँ[17]३ लीनो भर जो ललाम ॥

---

१ कलियुग का थाणा उठाने का समय. शत्रुओं की ध्वजा को रोकनेवाला तथा शत्रुओं को रोकने के लिये ढाल और शाल होकर उनको २ रुलानेवाला ३ गाल बजाने से शिव निहाल करदेवै तैसे, धन के मिलने से दरिद्रीपन ४ दुःख से भागा ॥ ४४ ॥ ५ शहद और सुवर्ण ६ मुख में देकर ७ कहेहुए सुख्य मार्ग को साधकर जातकर्म किया ८ रीझ के समुद्र ने ९ दान के उफान से १० सुवर्ण से ११ कलाँवँतों के घर भर दिये १२ उस चाहेहुए समय पर १३ शकुन १४ पापों के पर्वत बघूले के पवन की रूई के समान हुए ॥ ४५ ॥ १५ वेद रूपी रथ के धुर को खैंचनेवाले १६ सत्ययुग में १७ युधिष्ठिर आदि ने सुंदर भार लिया सो

आज कलि४मैं तो ह[1]रि४।१ विक्रम४।२ [2]प्रमुख अहो,
धारि धारि जो धुर गये तजि उचित धाम ॥
सोहि धुर जानि करतारनैं बहुरि सूनौं,
रूप रावरेतैं अवतार लीनौं प्रभु राम२०१४ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डवती [3]अय उदित हुव, इम प्रभु जन्म [4]अनेह ॥
[5]हेमादिक वितरन भये, गेहगेह मह गेह ॥ ४७ ॥
सक नव खट वसु चंद्र१८६९सम, मन जिन अमल उमाहि॥
अँगरेजन बानिज्य इत, सब मेटयो [6]नय साहि ॥ ४८ ॥
जिहिं सक१८६९ सप्तम७ जेनरल, आयो अप्पन देस॥
अटक्यो प्रभुपनँ मन्नि इहिं, अब बानिज्य असेस ॥ ४९ ॥
[8]चविहैं पुनि प्रभुके चरित, जेनरलहु सब जोरि ॥
नेपालन मंड्यो अमल, बढि इन तबहि बहोरि ॥ ५० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे योधपुरेशमानसिंहविपत्समयसेवारतसेवकोचितजीविकाप्रदान १ इन्दोरेशहुलकरजसवन्तरावबलवत्त्वदर्शनतद्देहान्तसमयसूचन कामुकमल्लाररावतत्पट्टासादन२ स्वपितृव्यजबलवन्तसिंहशत्रुभाव-

१ भर्तृहरि २ आदि ॥ ४६ ॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्म फल ४ आप के जन्म समय घर घर में और इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के घर में ५ सुवर्ण आदि का दान हुआ ॥ ४७ ॥ ६ नीति ग्रहण करके अंगरेजों ने सोदागर पन छोडा ॥ ४८ ॥ ७ इस देश का स्वामीपन मानकर वाणिज्य छोडा ॥ ४९ ॥ ८ रामसिंह चरित्र में सब जनरलों को जोड़ कर कहेंगे ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, जोधपुर के राजा मानसिंह का आपत्काल में अपनी सेवा करनेवाले सेवकों को जीविका देकर बढाना १ इन्दोर के हुलकर जशवंतराव का बलवान पना बताकर उस के देहान्त की सूचना करना और उसके पाट पर भोगों में आसक्त मल्लारराव का बैठना २ बुन्दी के राजा के काका के बेटे भाई

नयनपुराक्रमणसोढानेकापद्विष्णुसिंहतन्निष्कासन ३ बुन्दीरावराड्रामसिंहप्रादुर्भवनस्पक्तवाणिग्भावेष्टइंडियाकम्पनीभारतवर्षनृपत्वसूचनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥ आदितः ॥ ३६१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ।

सक नभ हय बसु ससि १८७० समय, इत नेपालिन आइ॥
नगरकोट लग अमल निज, किन्नो बल अधिकाइ ॥१॥
तनया¹ दै रनजीत तब, सिख करि स्वीय सहाय ॥
नगरकोट तब तास नृप, रक्ख्यो सह बलश्राय ॥२॥
प्रतिबल इम नेपालके, बढत उहाँ लग जानि ॥
जयकारि सप्तम७ जेनरल, प्रद्रुत² किय असि पानि ॥ ३ ॥
तिनके रक्ख्यो पुब्ब³तट, काली सरिता⁴ केर ॥
पच्छिम३।५ तट लग कंपनी, जित्ते सब करि जेर ॥ ४ ॥
संसारादिकचंद⁵ सो, नगरकोट नरनाह ॥
जो इम सिख रनजीतको, स्वसुर बन्यो अ-सिपाह ॥ ५ ॥
इत लखनेऊ याहि १८७० सक, अलीसहादत⁶ अंत ॥
तस लघु सुत बैठो तखत, पहुँचि थान परजंत ॥ ६ ॥
आगामीर स नाम इक, हो तस हुक्काभृत्य ॥
करि दृढ मन ताके कहँ, किय दोउ२ न यह कृत्य ॥ ७ ॥

बलवन्तसिंह का अपने स्वामी का हरामी होकर नैणवापुर लेना और अनेक आपत्तियें उठाकर विष्णुसिंह का उसको निकालना ३ बुन्दी के रावराजा रामसिंह का जन्म और ईष्टइंडिया कम्पनी का व्यापारीपन छोड़कर हिन्दुस्थान के पति होने की सूचना का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ इकसठ ३६१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ रणजीतसिंह को अपनी पुत्री देकर ॥ २ ॥ २ हाथ में खड्ग लेकर भगाये॥३॥३ पूर्व का किनारा ४ काली नदी का ॥ ४ ॥ ५ संसारचन्द्र ॥ ५ ॥ ६ सहादत अली मरा ॥ ६ ॥ ७ ॥

अंगरेज रक्खे उहाँ, राजद्वार सब रुंद्ध ॥
चढिग जेए तउ कोट चढि, पहुँचे अवधि प्रबुद्ध ॥ ८ ॥
तरजि साह वहि तेग गहि, आगा मंत्र अधीन ॥
हैदर अंत अधीस हुव, दिपत गाजियुद्दीन ॥९॥
उक्त १८७० सकहि प्रभु सुनहु इत, जोधनैर१ जयनैर२ ॥
धरनि उभै२ नृप परसपर, बनैं सुहृद तजि बैर ॥ १० ॥
ए निज निज सीमा अवधि, द्वै२ संक्रमि कुल दीप ॥
रूपनगर१ मान१ सु रह्यो, मरवा२ जगत२ महीप ॥ ११ ॥
सुरहिकुमरि१ तँहँ निज सुता, व्याहि मानें बसुधेस ॥
अप्प स्वसुर व्है आदर्यो, जामाता जगतेस ॥ १२ ॥
निज भगिनी जगतेस नृप, चंद्रकुमरि२ हित चाहि ॥
मरवाँ बुल्लि सु मानकौं, बिहित काल दिय व्याहि ॥ १३ ॥
पति रट्ठोरन मान पहु, भयो स्वसुर१ अरु भाम२ ॥
जामाता१ सालक२ जगत, कूरम हुव हित काम ॥ १४ ॥
अँहँ अष्टमि८ भद्दव६ असित२, व्याह्यो मान बहोरि ॥
नवमी९ दिन कछवाह नृप, जगतसिंह पट जोरि ॥ १५ ॥
मान सिविर कूरम गयो, थित एकासन थान ॥
तँहँ बैठार्यो तुल्य गिनि, मीरखान गहि मान ॥ १६ ॥
तदनंतर आतहि तहाँ, कृष्णगढ पैं कल्यान ॥
बैठार्यो जगतेसगहि, एकासन अति मान ॥ १७ ॥
इक्क१ तखत बैठे चउ४ हि, ए तुवर२ सम्मुह अत्थ ॥

---

१ रोककर २ जीते ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ मित्र बने ॥ १० ॥ ४ गये ॥ ११ ॥ ५ राजा मानसिंह ने ६ जमाई जगतसिंह का आदर किया ॥ १२ ॥ ७ मानसिंह को ८ नात का चतुर१२ [illegible] ॥ १३ ॥ ८ बहिनोई ९ जगतसिंह ॥ १४ ॥ १० [illegible] कर ५ इच्छानुसार भेट देकर ॥ १७ ॥ [illegible] ने मीरखाँ को बराबर जान कर के वाहर के मार्ग से ॥ १८ ॥ ८ दरवाजे जुड़े जान कर ९ वंश्य न १०अपराध ११ वर्तमान दिन में १२ खाई कितनीक है जिसको १३ जूतियों से भर दो

न रुच्यो पै कूरम नृपहि, जेवन तुल्यपन जत्थ ॥ १८ ॥
पत्तो कूरम सिविर पुनि, मीरखान जुत मान ॥
तखत न रक्ख्यो कुम्म तँहँ, बैठे इतर बिधान ॥ १९ ॥
सक उक्त१८७० हि बुन्दीसकै, पंचम५सुत गोपाल२०।१।५॥
सप्तम७ रानीकै भयो, इसँ७ सित१ तेरसि१३ काल ॥ २० ॥
जातक्रियादिक रीति जह, सब सद्दिय नरनाह ॥
दान१ बधाई२ बहुल दिय, रोचक उच्छव राह ॥२१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत जैपुर ससि हय बसु इक १८७१ सक, छलि जगतेस भूप उद्धत छक ॥
रसकपूर गनिका अति मानी, रानिन मुख्य करी जो रानी॥२२॥
ताहि महारानी१ पद दीनौं, अधरँराजनि२ उपटंकहु कीनौं ॥
किते कहत याही १८७१ सक अंतर, पच्छिम ३ बढे गोरखे बल पर ॥ २३ ॥
तिनकौं जीति कंपनीके दल, काली नदी उतारे इत बल ॥
उक्त१८७१ सकहि लरि इत अंग्रेजन, लंकाद्वीप अमल किय अप्पन ॥ २४ ॥
बिक्रम राजसिंह अभिधाको, त्रासित करि काढ्यो नृप ताको॥
तह कोलँब राजधानी पुर, धरयो स्वीय हाकिम थंभन धुर २५
इत संबत दुव मुनि अष्टादस १८७२, बनि नृप मान जोधपुर परबस ॥
इंदराज जिम राज्य अवेर्‌यो, हित नय आय१उचित व्यय हेर्‌यो२६

१ मीरखां का बराबर पन जगतसिंह को नहीं रुचा ॥ १८ ॥ २ हाथ में खड्ग लेकर भगा ॥ १९ ॥ ३ आश्विन सुदि ॥ २० ॥ बूंदी का ॥ ४ ॥ ५ संसारचन्द्र ॥ ५ ॥ ६ सहादत अली मरा ॥ ६ ॥ ७ ॥

ऐसो नीति पाटव[1] दिखायो जिम रीझैं एह,
हो तबहु पाउस[2]३ पै हेरी नाँहिं बित्त हति ॥
दलही[3] पटन ढाँक्यो भीजे करवाइ दूर,
तंबू जे नवीन पीन तिनकी तनाइ ताँति[4] ॥
दैकैं उपदामैं[5] इष्ट जो रह्यौ जितेक दिन,
मंडि महिमानी दीखि अपुनैंसे तास मति ॥
रोकै मूढ रोधक तो ऐसी कहि राजी राखि,
काढ्यो जसवंतराव ऐसे खेलि दाव कति ॥ १७ ॥
एकबेर ऐसेही परयो जो पुर बुंदी आइ,
गोपुर[6] जराए नृपनैं ह्याँ कछु हेतु गहि ॥
रंचहु न भेजि महिमानीकी न ठानी रीति,
सोहु हित हानी मानी यानी रह्यो तोहु सहि ॥
श्रीजितको केदारेस आश्रम निवास सुनि,
स्वल्प पत्ति संगी चल्यो तिनसौं मिलाप चहि ॥
जो लैं बाह्यपंथ[7] गिनतीके जन दरवाजा,
ऊपरतैं झारी एक१ तुपक तहाँतैं रहि ॥ १८ ॥
जाकों हो न सासन पै गोपुर जटित[8] जानि,
एक मूढ ऊरुज[9] सो आगस[10] करयो असह ॥
पीछो आइ तबहि निदेस दीनों सेनापति,
लेहु१ गढ१ बुंदी लूटि२ आजके प्रवृत्त[11] अह ॥
परिखा[12] कितीक जो पैदत्रनतैं[13] देहु पूरि,
ताको कृतताको होत सासन इतोक वह ॥

१ नीति की चतुराई २ वर्षा ३सेना को वस्त्रों से ढकी ४पडे डेरों की पंक्ति तना कर ५ इच्छानुसार भेट देकर ॥ १७ ॥ ६ नगर के द्वार बन्ध कराये ७ नगर के बाहर के मार्ग से ॥ १८ ॥ ८ दरवाजे जुड़े जान कर ९ वैश्य ने १०अपराध ११ वर्तमान दिन में १२ खाई कितनीक है जिसको १३ जूतियों से भर दो

बाहिरकी *बुंदी१ साखापुर२न समेत वेग,
जबहि लुटीसी दीसी साखी हीन साख जह ॥ १९ ॥
पत्तनके कोट१पैं रु दुर्ग२पैं प्रसारि पंति,
तौरि दीनी तोपनकौं मोरि मोरि सिस्त मुख ॥
लैलै तूल भार बहु खातिका भरन लगे,
शाहकौं धरन लगे निश्रेनिन चाह रुख ॥
निजन निहारैं नीठि बुंदीके बचावनकौं,
श्रीजितके आतहि सो सास्हैं आइ पाइ सुख ॥
तंबू पधराइ उपालंभनको ओघ तानैं,
——अनखाइ दीनौं तदपि मिटाइ दुख ॥ २० ॥
नौंती जिन दिनन प्रतीपह्वो पितामहसों,
तीव्र बल आयो इहाँ हुलकरराज तब ॥
याही तैं बिलंबि पीछैं श्रीजित सहाय आयो,
जान्यौं सह सचिव१ महीप२ को प्रमाद जब ॥
लुंटक पिटात१ बरजात२ के सरनि लखे,
उक्त बिधि ह्वैरही मिलि बैठे स्वस्वे थान अब ॥
सूचे उपालंभ जसवंतके असेस सुनि,
पीछो दयो उत्तर यौं श्रीजित लहे पैंरब ॥ २१ ॥
मातुल मलार कुल तू भयो कुपुत्र मूढ,
बुंदीपति मूढ भयो२ मो कुल कुपुत्र बंत ॥

---

* शहरपनाह जैसे बाहिर का शहर जिसको जूनी बुन्दी भी कहते हैं १शाखा हीन वृक्ष के जैसी ॥ १६ ॥ २ भरीहुई ३रूई के बोरे लेकर ४खाई को भरने लगे ५ उरहनों (ओलंभों) के समूह से ॥२०॥ ६ पोता (विष्णुसिंह)७लुटेरों को ८ मार्ग में देखे ९ अपने अपने स्थान पर १० समय पर ॥ २१ ॥ ११ मामा मलार के कुल में (उम्मेदसिंह के पिता बुधसिंह की राणी कछवाही ने मल्लार के राखी बांधी थी इस कारण उसको मामा कहता था) १२ खेद है

नरउरपति दुनिया नृपति, कोटा पति इक कीन ॥३३॥

[षट्पात्]

सुनत एह बुंदीस मंत्र निजदल सह मंडिय ॥
धारि आसन उड्डनहिं लग्गन तमसुत हरोल लिय ॥
अरक जाम अवसेस तोप चल्लत त्रिजाम गय ॥
अब हय देहु उठाय जानि इम्मिद्ध जयाजय ॥
इम कहि नरेस सुभट्टन उचित हयन हंकि सम्मुह हल्लिय ॥
नीरद उर्द्धचि दिसनैं मनहु चंड पवन दक्खिन चल्लिय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जाजवनगरान्तिकबहादुर [आलम] शाहाजमशाहनाल्लीयन्त्रक्रियामरणाजमशाह१ पितृस्थानस्थिताजमसूनुवेदारबख्तमरणवर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥

[नाराचम्]उठाय जंग यों तुरंग बुद्धसिंह उप्परयो ॥
मची कजाक हक्क हाक वीर बाक वित्थर्यो ॥
महा गभीर धीर बीर नीर छीर ज्यों मिले ॥
हमल्ल झोक भुम्मिझांक खंड खंड ह्वै खिले ॥ १ ॥
झणंकि नाल सिंधवी अलाप राग झुक्कयो ॥
रणंकि जीन पक्खरीन पौंन गौंन रुक्कयो ॥
खणंकि धार ह्वै प्रहार अग्ग भंग उल्लटैं ॥
सणंकि व्याल सेसकी फनालि फुंकरैं फटैं ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥
श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जाजव नगर के नजदीक बहादुरशाह [आलमशाह] और आजमशाह में [illegible] आजमशाह का मारा जाना १ आजम के पुत्र बेदारबख्त का पिता के स्थान में खड़ा होकर लड़ने के वर्णन का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इक्यावन २५१ मयूख हुए॥
नाराच ॥ पद्द राष्ट ॥ १ ॥ झनंकिइति ॥ पद्द राष्ट ॥ २ ॥ छनंकिइति ॥ इत्यादि

अंग अपनेकों अहो काटन लग्यो तू[1] आप,
मंडन लग्यो त्यों भूप[2] इतको प्रतीप[3] मत ॥
दोउन[2]को सत्रु कारि तुपक भज्यो जो दुष्ट,
ताहि खोजि लावनकों भेजे जन जूह[4] तत ॥
अखिल कुटुंब मेरो आत मरिवेको इहाँ,
मारि[1] तिनको उबारि[2] निज[1]तैं निज सुरत ॥ २२ ॥
श्रीजितके बैन ऐसे हुलकरराज सुनि,
नीचे करि नैन दये लुंटक[4] सब निवारि ॥
आश्रम पधारे इम तूटो हित जोरि आप,
धीरपन पीछैं नृप आइ मिल्यो हित धारि ॥
स्वागत वलिष्टको बन्यो जिम सबहि साध्यो,
बांवासौं बहोरि मिलि मंत्रिनको मद मारि ॥
पीछैं चढि गो जो पर्वतनपैं करत पंथ,
सूचे सक सोंपे[5] जसवंत मरयो जयकारि ॥ २३ ॥
भूत[1] बत्त भाखी अब ताकी वर्तमान[2] अब,
बैठो तास आसहु मलारहि[6] स नाम बलि ॥
नाम कहिवेको सो[1] बडर[2] सो बल धाम नहि,
इंदँउर[1][7] पुष्प[2]पैं भो तोहूसो[1] प्रसक्तअलि[2] ॥
हाकिमपनोंतो जसवंतहीकी गैल गयो,
छैल गयो छौनिको[8] वहैही विप्रलंभ[9] छलि ॥
कंटक कढ्यो जो अंगरेजननै मानि कीनों,
उच्छव अपार कोऊ रोधक न जानि कलि[10] ॥ २४ ॥

१ विरुद्ध २ मनुष्यों का समूह ३ क्या तू जाता ॥ २२ ॥ ४ लूटनेवालों को रोक दिये ५ श्रीजित से ॥२३॥ ६पुनि७इन्द्वोर रूपी पुष्प पर आसक्त भ्रमर८भूमि का रसिक ९ वियोग कर गया १० युद्ध में रोकनेवाला कोई नहीं जानकर ॥ २४ ॥

एक१ वलहीसो जई कलि४ मैं सुनत आये,
जाकैं सुन्यौं धीबल२ न ताकैं सुन्यौं वीर जस३ ॥
आयो कलि४ देखो प्रभुराम२०१।४ आपनीही ओर,
ओरनकैं आये कृत५ त्रेता२ विधि कर्म वस ॥
देस१ काल२ बुद्धि३ विद्या४ पाइकैं नवीन ढ६,
रमनी महीको लेन लागे अंगरेज७ रस ॥
औैन भद्र इननैं बिचारि गहिलीनो एक१,
टेकसौं टरैं न तासौं अध्वनीन नित्य तस ॥ २५ ॥
उक्त१८६७ सकहीके मास बाहुल८ असुअ२ इत,
दीपमालिका३० की आदि तेरसि १३ निसा२ दुसह ॥
भूप बिष्णुसिंह२००।२ को पितृव्यज कनिष्ठ भ्रात,
मोरि मन स्वामीसौं हरामीपन मानि मह ॥
ईस गोठपत्तनको नाम बलवंत२००। अहो,
द्रोहबस बूडिबेकौं पापके अगाध द्रह ॥
निश्रेनी लगाइ सहसाही पैठि नैनपुर१०,
दाबिकैं दगासौं बनिबैठो जो अधीस जह ॥२६॥
श्रीजितके जीवतरहे जे कहे तीन३ सुत,
अग्रज अजितसिंह१९९ तिनमैं लह्यो तखत१ ॥
दूजे स्वामिधर्मी वीर अंगज बहादुर१९९। कौं,
गोठद्रंग दीनो जाको मान उक्त आदि गत ॥

१ कलियुग में युद्ध में एक सेना से ही जीतते सुने हैं २जिसको बुद्धि का बल है उसको वीरता का यश नहीं है "दानाच प्रभवा कीर्तिः शौण्डीरप्रभवं यशः" दान से कीर्ति होती है और वीरतासे यश होता है ३हे प्रभु रामसिंह ४सत्ययुग ५ शुभदायक मार्ग ६ इन मार्ग चलनेवालों से वह कल्याण अलग नहीं होता ॥ २५ ॥ ७ कार्तिक वदि में ८ काका का बेटा छोटाभाई ९ गोठड़ा का पति १० नैणवा नगर॥२६॥११वह बहादुरसिंह इस कही हुई कथा से पहिले ही मरगया अथवा उस गोठड़े की आमद का प्रमाण गयेहुए पहिले कथन के अनुसार है

दीनों सुत तीजे३ सरदार १९९। हित दुर्ग पुर१,
कापरनि४दीप१९८।कों जो लक्ख१०००००को पटाकहत
ओसरपैं दाय भेद हेतु१ कहिआये आदि,
तत्र कहि आये उक्त तीन३ न प्रजों२ हु नत ॥ २७ ॥
तीन३ सुत तिनमैं बहादुर१९९।के आयुवली,
जेठो१ बलवंत२०-।१ मध्य२ दलपति२००।२ नाम जुत॥
सेरसिंह२००।३ तीजो३ तिम द्वै२ही इत आँयुसगी,
ईश्वरी१रुदेवी२आदिसिंह२००।१,२००।२सरदार१९९सुत॥
ताहीके खवासिके पहार१ रु स्वरूप२ तनै,
उक्त दायभागी—— दीप१९९। के तनूज उत ॥
अत्र आयुवारे सुरतान१९६।१ रु सगतसिंह१९९।२,
॥ २८ ॥

इनमैं बहादुर१९९।२ तनूज बलवंत२००। उग्र,
वीर खल सील पसु सिंहकी तुला बहत ॥
केही भूत१ भावी२ जिहिं सत्रुन समर करे,
मंडिल१ रु बिंझोली२ से दुर्ग लैनके महत ॥
बिगरे उपायजेतो निश्रेनी लगत देर,
नँगर१ नरूकनतैं लैहीलयो पै लहत ॥
तामैं वेग आइपैठो भीमको कटक तातैं,
आयो कढि पीछो लूटि वैभव जो अप्रहत ॥ २९ ॥
कलह अनेक ऐसे भूत अरु भावी करे,
केही रन जित्ति कित्ति वीरता करी विदित ॥

१उम्मेदसिंह के छोटे भाई दीपसिंह को दिया था सो२तीनों की सन्तान यहाँ कह आये हैं ॥२७॥३आयुवाले४ईश्वरीसिंह और देवीसिंह ॥२८॥५पशुके समान दुष्ट स्वभाववाला६पराक्रममें सिंहकी बराबरी करनेवाला७नगर नामकपुर॥२९॥

एक धर्म्महीकौं पीठि दैबेतैं दुरित१ ओडि,
हंत अपकित्ति२हु लै हेर्‌यो एक लोभ हित ॥
बाम२ अंध्व पथिक सपंचक३ निरंत बुद्धि,
ईससौं बदलि सूचे १८६७ वर्त्तमानसों व इत ॥
पैठिकैं दगासौं घरहीके दुर्ग्ग नैनपुर,
आसु अपनायो जोध अंतरके ठानि जित ॥ ३० ॥
सो सुनि सकोप बिष्णुसिंह२००१२ नरनाह सज्ज,
चित्यो आप चढन निवार्‌यो सो भटन न्याय ॥
बोले हम आगैं बलवंत२००१को कितोक बल,
छीनिगढ१ लैहैं अरि ह्वैहै कैद हत छाय ॥
धोवरेस१ भूपाल रु बिक्रम२ सु खीनार२ धनी ॥
अग्रज१ तदीय बिरुदेस२ ———— आय ॥
नाथाउत चालुक सता४ तिम पगारौं४नाह,
चंद५ कोरमौं५ को पति कूरम चरित चाय ॥ ३१ ॥
इत्यादिक सामंतन नीठिन निवारे ईस,
काल१ देस२ धर्म्म३ नय४ अर्थं५ को जनाइ जय ॥
यौंही सचिवनमैं प्रधेस प्रभु त्युँही आइ,
मंत्री तुलाराम१ द्विज नागर सु नीतिमय ॥
नंदराम२ भट्ट रु प्रधानहु गनेस३ निज,
सेनापति चंद४ कृष्णधात्रेयहु जोरि सैय ॥
सज्जकरि सेनाकौं पठातभये नैनपुर,
नामी नरनाहसो बिराजत रह्यो निलयँ ॥ ३२ ॥

---

१ पाप फल कर २ बाम मार्ग में चलनेवाला ३ पंच मकार में ४ निग्रुक्त बुद्धिवाला ५ नैणवापुर को शीघ्र अपना किया ॥ ३० ॥ ६ छाया (आश्रम) रहित ॥ ३१ ॥ ७ शुभ भाग्य को ८ प्रधानों का ईश ९ हाथ जोड़ कर १० घर विशेष शोभायमान होता रहा अर्थात् राजा बुन्दी में ही रहा ॥ ३२ ॥

पैठत दगासौं बलवंत२०० इत नैनपुर,
गुज्जर गुमान१ दुर्गपति जो रन गरूर ॥
जंप्यो अनिरुद्ध नृपकै भो देव धावरजो,
साखापुर देवपुर१ सासक अतुल सूर ॥
हाकल प्रभेद यह ताके कुल जात हुतो,
तीर१ तुपक२नके प्रहारनमैं गुनपूर ॥
मंडै बीर गोलिन१ की माला बटपत्र२ माँहि,
दैदै पैत्रबाइ१ पैत्रबाह२ खंडैं दूरदूर ॥ ३३ ॥
अंग१ बय२ जोर क्रमनैतनको सोर यह,
स्वामिधर्म साधक बिबाधक बिपच्छ बल ॥
जाके असुभाव छत कोऊ परिपंथक२ जो,
छीनिहु सकैं न पैठि छन्नहु पसारि छल ॥
पै यह गुमान धाइभाई दुर्गपैठनमैं,
खोलि बसु ताहीके बिसासवारे मोरि खल ॥
डरतैं अडर एह तिनपैं हनाइ डास्यो,
पार उर गोली भेदि जावत लग्यो न पल ॥ ३४ ॥
ऐसैं बिसवासवारे माँहिके अधर्मिननैं,
गोलीदै गढेसं मारयो गुज्जर वह गुमान ॥
किल्लाके सिपाह भेदि१ केक हनि२ केक काढि३,
थापि अपने गढ अधीन कीनौं थान थान ॥
सामंतके११।७१ संकर१ स नाम भुजनैरी स्वामि,
स्वामीको लजाइ लोन छैंमी होन अवसान ॥

१ गूजरों की जाति विशेष २ वट वृक्ष के पत्ते में बंदूक की गोलियों की माला रच देता था ३ तीरों से ४ पत्थियों को ॥ ३३ ॥ ५ शत्रुओं के बल को मिटाने वाला ६ जीवित रहते समय ७ शत्रु ८ धन देकर ९ उनसे उस धाय भाई को मरवाडाला ॥ ३४ ॥ १० क़िल्लादार ११ अन्त में दुर्बल होकर

दुर्ज्जन लै दुर्जनक्कौं पैठो जिम बुंदी दुर्ग,
पैठो बलवंत२००१क्कौं लै नैनवा यह प्रधान ॥ ३५ ॥
बुंदी भट मुख्यनमैं सुहुकमसिंह१९४१५ वंसी,
नैनपुर रच्छक हो दूजो२ फतैसिंह२ नाम ॥
इत्यादिक ओर सुनि मरन गुमान सोर,
आये सुख ढंकि व्है पलायन रन अकाम ॥
बुंदीके बरूथ इततैं वाहि गढ सु वेड्यो,
तत्थ अर्द्ध बाहुलंतैं भो रन तुमुल तास ॥
बीजैं सुहि पाइ हाइ देस१ काल२ दिष्ट३ बस,
राज्य यह बुंदी तत्र दुर्गत भो प्रभुराम२०१४ ॥ ३६ ॥
जाके रन नाथाउत चालुक सता१से जोध,
महासिंह१९४१९ वंसी बंधु छग्गन१।२ मगन१।२से ॥
के अरि बिदारि रारि झारि असि आये काम,
नट्ठे केक कातर जु लघुत्वमैं नेगनसे ॥
श्रीजितके जेठो१ इंदुकुमरि१ खवासि सुता,
सूनु तस हत्थी१ आदि घायल सैंगनसे ॥
आयुबल ऊवरे१ मरे२ के लघु हीसौं इहाँ,
भाजि केक भीरु भये भीकरि भैंगनसे ॥ ३७ ॥

१जैसे दुर्जनसिंह शत्रु को लेकर बुन्दी में घुसा था तैसे ॥३५॥ २भागकर ३सेना ४आधे कार्तिक से तहां भयंकर युद्ध हुआ ५ इसी कारण से ६ भाग्य के वश ७ हे राजा रामसिंह बुन्दी के आधीनवाला राज्य दरिद्री होगया ॥ ३६ ॥ ८ भागे कितने ही कायर लघुपन में ९ नगण के समान होकर (नगण में सर्व लघु होते हैं तैसे होकर) १० सगण के समान घाव लेकर (सगण में अंतगुरु होता है तैसे प्रारंभ में छोटे और अंत में बढनेवाले घावों से) ११ भय से भगण के समान हुए (भगण में आदिगुरु होता है) सो प्रारंभ में तो बडे वीर दीखे परन्तु अंत में लघु के समान कायर होकर भागगये ॥ ३७ ॥

सो प्रबंध नृपकौं न सुहायो, अक्खिय इम मरनहि मम[1] आयो॥
इंदराज सत्तुन तव अक्खिय, सिंही हम हनिहैं प्रभु सक्खिय२७
भूप कह्यो यौंतो नहिं भावहिं, मीरखान प्रति सूचि मरावहिं॥
तव किय मीरखान प्रति सूचन, जंपिय जवन कहहु नृप मो-
सन१॥ २८॥
कै लिखि[2]देहु हनैं तव तो हम,सुतो नृपहिं न रुची बंचक सम॥
देवनाथ गुरु करि संकोचित, सपथ करे पहिलैं तिम सोचित२९
छत्रसिंह निज कुमर भेजि तँहँ, मारन सचिव कहाई तापँहँ॥
मिच्छ सु सुनत लैन मासिक[3] मिस, दुर्गमाँहिं पठये भट नृप
दिस॥ ३०॥
रोकि द्वारकीनौं तिन कलकल[4], छितिप सचिव पठयो तव तिँहि छल
रोक्यो[5] गुरु नृप तउ हठ रंगहि, सिंघी जात नाथ लिय संगहि३१
मोतीमहल माँहिं तिन मिच्छन, जातहि दुवरहि अमंतु[6] हनैं जन॥
बचे मिच्छ अंतर नृप मत[7] बल,चिर[8] करि जियत गये अपनैं दल३२
धर्म सपथ इम लोपि धराधव[9], भाखि अलीक[10] बिगारयो निज भव[11]
छन्न रह्यो न मान कृत[12] यह छल,चल्यो प्रकट जिततित ह्वै चंचल३३
दै बिस्वास सपथ मारे दुव२, हाहाकार जोधपुर इम हुव॥
ओरमग्ग भास्यो न नृपहिं अब, तकि कपट उनमत्त बन्यौं तब३४
इक्क कोन रहिवो निज आदरि, कुंहक[13] वेस तैसोहि लग्यो करि॥

१राजा मानसिंह दानी बहुत था सो उनका हाथ रुकने से कहा कि मेरा मरन आया॥२७॥२मीरखां ने कहा कि यातो राजा हम से रोवरू कहै या लिख दै तब मारैं॥ २८॥ २९॥ ३ तनखाह लेने के मिष से राजा की ओर वीर भेजे॥ ३०॥४ कोलाहल किया ५ देवनाथ को जाने से रोका॥ ३१॥ ६विना अपराध मारे ७ राजा के मत के बल से ८ विलंब करके अपनी सेना में गये॥ ३२॥ ९ भूपति १० झूठ बोलकर ११ अपना जन्म बिगाड़ा १२ मानसिंह का कियाहुआ यह छल छिपा नहीं रहा॥३३॥३४॥ १३ उस छली ने

जानि यहहि पंचन निहचै जिय,कुमर छत्रसिंह सुतव नृप किय३५
किय कतिकन पुहवीस परिच्छा, दीसी तदपि गहिलेपन दिच्छा॥
सर्पहु तँहँ छोरे कति सूचत, गहि लिय तेहु डर्यो नहिँ छलगत३६
अधिक बिपन्न रह्यो नृप अैसैं, परिजन मुख्य कोउ न तँहँ पैसैं ॥
जो प्रभुकी सस्सू तस रानी, सेवत रही सोहि भटियानी ॥३७॥
पै तानैहु न आसय पायो, इह छल अैसो वेस दुरायो ॥
सुभट प्रताप बूड़सू सासक, यह हो जदपि अधीस उपासक॥३८॥
जानैं तदपि तथा जड़ जानिय, खेटक१ खग्ग२ उठाइ रु आनिय।
दुवरहि करे पुनि कुमर निवेदन, भट सब मिले रह्यो इम भेद न
कतिकन परनारिन रस कहि कहि, चपलकुमर मोर्यो उत चहि चहि ॥
उपदंसादि रोग प्रकटे इम, कामुक चिर वैभव बिलसैं किम॥४०॥
भनैं १८७२ सकहि प्रभुके कवि भूबर, पायो भंव असितारदि१उँज्ज८ पर ॥
कवि जैनकहु श्रद्धोचित मँह किय, दान द्विजादि बुधन समुचित दिय ॥ ४१ ॥
इत बुंदिय सक गुन हय बसु इक १८७३, असितर सँहस्य१० मास तिथि आदिक१ ॥
सरसरंग नामक खवासि सुव, बिनयसिंह१बुंदीस कुमर हुव॥४२॥

॥३५॥१राजा की परीचा की २ बावलेपन की क्रिया ॥ ३६ ॥ ३ विपद्ग्रस्त ४ पास के अपने मनुष्य ५ रावराजा रामसिंह की सासू और मानसिंह की राणी ॥३७॥३८॥६ढाल तरवार ॥३९॥७ गरमी (आतशक) आदि ८ कामी होवै सो बहुत समय तक वैभव कैसे भोगै ॥ ४० ॥ ९ हे भूपति कहे हुए सम्वत् (अठारह सौ बहत्तर) में आप के कवि (सूर्यमल्ल, इस ग्रन्थकर्ता) ने ११ कार्तिक बदि एकम को १० जन्म पाया १२ सूर्यमल्ल के पिता (चंडीदान) ने श्रद्धा के उचित १३ उत्सव किया १४और ब्राह्मण आदि पण्डितों को दान दिया॥४१॥ १५पौष बदि ॥ ४२ ॥

इहिँ १८७३ सक इत पुरापापुर अंतर, बाजेराय पेसवा *भूवर ॥
अंग्रेजनको अमल उठावन, इच्छा करि भू सब अपनावन ॥४३॥
तत्थ रजीडंटी डेरन तक, अनल¹ लगायो प्रेरि अचानक ॥
समर रच्यो कंपनी सिपाहन, इत उत बहुत भरे उच्छाहन॥४४॥
दोलतरावहु बैर दिखावन, पठयो दल नेपाल मेलपन ॥
पत्र किमहु ते इँन पकराये, अंग्रेजन गोचँर² तब आये ॥ ४५ ॥
आश्रम इय वसु ससि १८७४ सक अंतर, सब दिस जित्ति कंप-
नी संगर ॥
लिय अजमेर गंजि मरहट्टन, पायउ तजि लाहोर जईपन ॥ ४६ ॥
खानकपूर१ रु मीरखान२ द्वुव२, हुलकर भट तासौं बदलत हुव॥
तिनमैं मीरखान इहिँ अंतर, सजि तोपन जैपुर किय संगर ॥४७॥
ताको छिन्नि तोपखाना तब, अंग्रेजन नस मद मेट्यो अब ॥
पुनि इतउत लुंटॆक⁴ जे पाये, ते सब ओरहि वृत्ति लगाये ॥ ४८ ॥
संध्याकेहु मेटि मद१ साहस२, निखिल⁵ करे रजवारे निज बस ॥
लार्ड मारकिस हेस्टिंगज१।७जँहँ, क्रम सप्तम७जेनरल हुतो तँहँ ४९
तिहिँ पठयो रजवारन अंतर, टाड१ नाम पहिलो१ अजंट बँर ॥
कोटा तिहिँ भल्लँ सु सासित किय, जाजपुरहु रानहिँ दिवाइ दिय५०
पहिलै सक अट्ठावन५८ अंतर, भीम रान रनतैं भजाइ अरं ॥
भिल्लहड़ा लग जित्तिलई भुव, तबतैं जाजपुर सु इनको हुव ॥५१॥
सोलह१६अब्द अमल कोटा किय, अब जालम रानहिँ पच्छोदिय
कोटाके धन करि पहिले क्रम, इंदुंदा बंधिय गढ उत्तम ॥ ५२ ॥
तँहँ भट विष्णुसिंह सगताउत, जालम रक्ख्यो निचितं चक्र जुत ॥

---

* भूपति ॥ ४३ ॥ १ अग्नि लगाई॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों ने ३देखने में आये ॥४५॥
॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४ लुटेरे ॥ ४८ ॥ ५ सब ॥ ४९ ॥ ६ श्रेष्ठ ७ झाला जालमसिंह
को ८ दंड दिया ॥ ५० ॥ ९ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० पूर्ण सेना सहित

मारे जिहिँ सहँसन रन मैनैँ, पारे कुंठ रहे नहिँ पैनैँ ॥ ५३ ॥
इम तागढ जुत जाजपुर सु अब, रान तंत्र हुव सहित साज सब ॥
उक्त १८७४ सकहि चितपावन द्विज इन, बाजेराय पेसवा भय जित ॥ ५४ ॥
पुराया तजि अंग्रेजन पय परि, धी अब ब्रह्मावर्त्त रहन धरि ॥
पाइ द्रम्म बसुलक्ख८०००००अब्दप्रति,रह्यो बिठूर फेलिं भोजन रति
जिहिँ चाकर हुलकर१ संध्या२ सम, पिंसन लहि सु रह्यो इम अप्रेम ॥
हारि महीदपुरहि हुलकर बल,इनके बस हुव इंग्या कि बिना अल५६
महिप नागपुरको तजि निज मह्हि, गो भजि सरन जोधपुर भय गहि
मान नृपहिँ कछु प्रबल न मान्यौँ, पै अंग्रेजन नँय पहिचान्यौँ ॥ ५७ ॥
वाको मुलक बहुत लहि अप्पन, थिर कछुमैं तस कुल किय थप्पन ॥
सक उक्त १८७४हि नवमी९ पोस१० असित२, ईन जैपुर जगतेस मरयो इत ॥ ५८ ॥
गनिका उक्त आदि तरुनी तह, हुव चालीस४२ जरी नृप बसु सह ॥
उक्त १८७४ सकहि लाहोर ईस इत, सिख रनजीत अरिन करि सासित ॥५९॥
नाम मुजफ्फरखान महामति, प्रधन हनि सु मुलतान दुर्गपति ॥
ताके पुत्रहु मारि घनैं तब, अमल कस्यो मुलतान दुर्ग अब॥६०॥
ताकौं मिल्यो प्रचुर[12] धन तामैं, सिख इम बढ्यो अधिक सुखमामैं[13]

१ वे मैने ओटे-होगये तीक्ष्ण नहीं रहे ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ ब्रह्मावर्तदेश में रहने की बुद्धि करके ३ उच्छिष्ट भोजन में प्रीति करके बिठूर में रहा ॥ ५५ ॥ ४ समान ५ उत्कर्षता रहित ६ मानों बिना डंक का बिच्छू ॥ ५६ ॥ ७ नीति ॥ ५७ ॥ ८ जयपुर का पति जगतसिंह ॥ ५८ ॥ ९ रसकपूर नामक वेश्या आदि १० दंडित ॥ ५९ ॥ ११ युद्ध में ॥ ६० ॥ १२ बहुत १३ परमशोभा में

छनंक्कि बान लै उडान आसमान छद्दयो ॥
ठनंक्कि घंट जंग जोम नाग तोम नद्दयो ॥
तनंक्कि रंच खंचतैं प्रतंच चाप टंकरैं ॥
भनंक्कि पच्छ भूरि भच्छ गिद्धनी झरप्फरैं ॥ ३ ॥
चली भली कृपान खानखुद्द राव बुद्धकी ॥
अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥
मच्यो अनीक संभरीक आजमीक अंगम्यो ॥
चलैं कु चक्र भोगि भोगभोगपैं भ्रम्यो भ्रम्यो ॥ ४ ॥
प्रहार खग्गधार मार लुत्थि लुत्थिपैं परैं ॥
चिरैं वितंड गंड झुंड खंड खंड ह्वै झरैं ॥
दिसादिसानमैं कृपान विज्जुमान निक्खसी ॥
भिरैं गरूर पूर सूर पिक्खि हूर हुल्लसी ॥ ५ ॥
सुबाजि सोक ओकओक भीरु लोक भग्गये ॥
लरैं निघात सल्लपात इक्करीठ लग्गये ॥
झरैं ससुंड गै भुसुंड कंध बंधतैं कटैं ॥
अटैं सु रुंड गोलकुंड फाटि मुंड उच्छटैं ॥ ६ ॥
छिकैं बिछेक बान के पठान हान वित्थरैं ॥
गिरैं उलट्टि सूर पिक्खि हूर झूर झग्गरैं ॥
जमाति जुग्गिनीनकी पिबंत पेय पत्तकैं ॥

आच्छादित किये. नागतोम नाग हस्ती तिनको. तोम समूह. भूरि बहुत ॥३॥ चलीइति ॥ खानखुद्द खान खुरसान. ताकरिकैं तयार. अरीन अरिनकी. राजरंग राजनके लरिबे योग्य रंग संग्राम भूमि तामैं. रुद्धकी रोकी. आजमी आजमका पुत्र. कुचक्र भूमिचक्र. भोगिभोगभोगपैं भोगी शेष ताके भोग फन फनपैं। ४। प्रहारइति ॥ वितंड वेतंड [हाथी] तिनके. गंड कपट. विज्जुमान विज्जु प्रमान॥५॥सुबाजिइति॥सुबाजि अच्छेवाजी तिनकी ओकसों. ससुंड सुंडादंड सहित.गैभुसुंड गै हस्ती तिनके भुसुंड दंतन सहित मुख. कंधबंधतैं कलावाके बंधके स्थानतैं ॥ ६ ॥ छिकैंइति ॥ हान त्याग. झूर झुंड. पेय उनके पीबे योग्य रुधिर.

सो कसमीर हारि इक१ संगर, दूजोर२ रन तरिहै पुनि दुस्तर॥६१॥
जगतसिंह जैपुर न्रुपकै सुत, उज्झित[1] वपु न हुतो बिधि[2] अद्भुत ॥
मोह्न नाम सचिव तब नाजर, नरउर द्रंग पठाइ चतुर चर[3] ॥६२॥
नरउर न्रुपको भ्रात मनोरथ, तस सुत मान[4] बुलाइ नीति पथ ॥
जैपुर पट्ट धरयो सु मान जब, रानिनकै जान्यौं न गर्भ तब ॥६३॥
पहिलैं जालम बिबिध जत्न किय, बुंदीसहिं निजसुता व्याहि दिय
सो जब मरी तबहिसौँ जो सठ, हुव बैरी बुंदीको अतिहठ ॥ ६४ ॥
जिहिं बस रह्यो जाजपुर जोलौँ, तिहिं लुट्टी बुंदी भुव तोलौँ ॥
द्रंग सथूर१ बरोदा२ आदिक, बुंदीपुर ढिगलौँ प्रतिबादिकैं[5] ॥६५॥
कटक भेजि सब लट्टिलयो[6] कैर, पुरबिच अमल रह्यो न्रुपको[7] पर
अप्प मुदित तदपि न भय आन्यौँ, जालमसदा जथा नृत[8] जान्यौँ६६
उक्त १८७४ सकहि झल्ला वह जालम, लखि सु अंगरेजनको
आलम ॥
बुंदी सन पहिलैं वंचक[9] बढि, अंगरेज साधे छल नय पढि ॥६७॥
अधिक मुल्ल दै बहुत उपायनँ[10], पिहितँ[11] लुभाइ मिलाइ धूर्त पन ॥
जन अजान लानैं छल जैसैं, अँगरेजन अपनैं करि असैं ॥६८ ॥
बुंदीके [12]भेंट बंधु सदासौँ, इंद्रगढा१दि८ फोर उंपदासौँ[13] ॥
कोटा बस ए कुहक[14] लिखाये, सब अजंट१ मुख[15] तिमहि सिखाये६९
इंद्रगढ१ रु खातोली२ ए दुवर, लुब्धि[16] इंद्रसल्लोत भिन्न हुव ॥
बलवानि१।३ द्रंग बैरिसल्लोत सु, आंतरदा१।४मुहुकमसिंहोत सु७०

॥ ६१ ॥ १ शरीर छोडत समय २ यह अद्भुत रीति है कि ऐसे कामी के भी पुत्र नहीं था ३ हलकारे ॥ ६२ ॥ ४ मानसिंह नामक ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ५ विरोधी ने ॥ ६५ ॥ ६ हांसिल लाट लिया ७ विष्णुसिंह का अमल केवल बुन्दी नगर में ही रहा ८ जैसा झूठा था तैसा ही जाना ॥ ६६ ॥ ९ ठग ॥६७॥ १०भेट ११ छाने लोभ देकर ॥ ६८ ॥ १२ उमराव १३ भेट देने से १४ उस ठग जालमसिंह ने १५ आदि ॥ ६९ ॥ १६ लोभ करके ॥ ७० ॥

लोतसु होतसु अन्त्यानुप्रासः१॥

करबाट१।५ सु पिप्पलदा१।६।२।७ जुग जुत, ए तीन३हि फोरे हर-
दाउत ॥

बंधु सु भट जालम प्रतिबादिक, दै इच्छित फोरे इत्यादिक ॥७१॥
बुंदीतैं न मिल्यो महत्व[2] जिम, सबको बहुत बढायो तिम तिम ॥
गहि कुलोभ अैसो बंधव गन, परबस भये निबहि गनिकापन॥७२॥
आवत१ जात२ बैठत३ रु उठत४, जनम५मरन६ सेवन सुख सं-
गत ॥

सपुख्रज्ञान९ मुख[3] रीति बढावन, कोटा रहत निरय धन पावन७३
अधिक पटाहु सबन हित अप्पन३, सब पहिलैं सब देय[4] समप्पन॥
इत्यादिक अधिकार अप्पि इम, जालम स्वबस करे सब जिम
तिम ॥ ७४ ॥

कोटा बस तिनसोहु कहाइ रु, जिम अंग्रेज प्रबोधे[5] जाइ रु ॥
जालम[6] छल पीछैं यह जान्यौं, पछितैबोहि अजंट प्रमान्यौं ॥७५॥
पै इक बचन अैन इनके पर, यातैं पलटिसके नहिं अवसर ॥
इनको हितहु स्फल्ल सध्यो अति, हुलकर रोकि बचाई संहति७६
बहु उपकार ठानि यह याबिधि, निहचै इनहि स्फल्ल भाख्यो निधि॥
इम तदीय[9] छलमैं ए आये, पुनि पुनि जाति जदपि पछिताये॥७७॥
उत रहि तदपि पिक्खि नय अंसहिं, बलि दिय बंटि भूहु तस बं-
सहिं ॥

इम नतं[10] सिर जालम उपकारनं[11], अंग्रेजहु प्रबिसे रजवारन॥७८॥

१विरोधी जालमसिंह ने ॥७१॥२जैसा उन उमरावों को बुन्दी से बडप्पन नहीं मिला तैसा ॥७२॥३आदि ॥ ७३ ॥४देने योग्य ॥७४॥ ५ अंगरेजों को समझाये ६ जालमसिंह का छल ॥ ७५ ॥ ७ अंगरेजों के एक वचन निबाहने का श्रेष्ठ मार्ग है इससे ८ जसवन्तराव हुलकर को रोककर अंगरेजों के समूह को बचाया था ॥७६॥९उसके छल में॥७७॥ १०मस्तक झुकाकर११उपकारों से ॥७८॥

उक्त १८७४ सकहि बुंदी तब आये, बुंदी पहु[1] सब मान बढाये ॥
तुलाराम मंत्री द्विज नागर, प्रभु सम्मति लहिकैं नय तत्पर ॥७९॥
उपालंभ[2] दीनौं अंग्रेजन, जो सुनि रहे ठगे जिम जे जन ॥
सूचित १८७४ सक पंचमी५ माघ१०सित, अंग्रेजन सु करारँ[3] लि-
ख्यो इत ॥ ८० ॥
भाख्यो हम ठिग भल्ल अमाये, पुनि अब हेतु[4] सत्य सब पाये ॥
बुंदी नृप हमरे हित वंछक, तिहिं भल्ल सु गोपित[5] किय हम तक८१
मोदित साहब टाड महामन, सह[6] लिपि काल कियउ बुंदीसन ॥
नत करजोरि मन्त्रि महमानी, बहुदिन रहि नृप कित्ति बखानी८२
सर हय अठ इक १८७५ पुनि संबत, इत रनजीतसिंह सिख उद्धत ॥
पुर लाहोर अधिप साहस परि, करि रन जय कसमीर लयो लरि ॥ ८३ ॥
बहुरि जुज्झि पेसोर कियउ बस, तँहँ कति मरे१ भजे२ रच्छक तस
इह सेना काबल पुनि आई, लग्गि प्रसभँ[7] करि घोर लराई ८४
तब पेसोर छुराइलयो तिन, खिज्जि पुनि सु लैहैं यह लहि खिन
उक्त १८७५ सकहि जैपुर पत्तन इत, संगत राध[8] मास पैच्छ
ति[9] सित१ ॥ ८५ ॥
नृप रानी भटियानी औरस, तनय भयो जयसिंह नाम तस ॥
मास च्यारि४अरु दिवस सप्त७मित, रह्यो मानँ[10] गद्दीपर रोचित८६
लखि यह साहब अलटरलोनी, हेरन तब होनी१ अनहोनी२॥
दिल्ली सन जैपुर आयो द्रुत, सत्य किमहु करि कथित भयो सुत८७

१ बुन्दी के पति ने ॥ ७६ ॥ २ अंगरेजों को उरहना (ओलंभा) दिया ३ बुन्दी से कोलनामा हुआ ॥ ८० ॥ ४ कारण ५ छिपाये ॥ ८१ ॥ ६ लिखावट सहित ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ७ हठ ॥ ८४ ॥ ८ वैशाख मास के साथ ६ शुक्लपक्ष ॥ ८५ ॥ १० मानसिंह ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

रुप्पय पंच ५ नित्य जीवनं करि, मान सु दूर करयो मद संहरि ॥
ढुंग फेरि जयसिंह दुहाई, सुनृप करयो यह सबन सुहाई ॥ ८८ ॥
लखि सामोद नाह नाथाउत, राउल बैरीसाल बुद्धि जुत ॥
साहब ताहि मुसाहब कीनों, निज संगहि नाजर वह लीनों॥८९॥
गो पच्छो इम अकटरलोनी, छोनिपै सिसु हुव जैपुर छोनी ॥
तर्क तुरग बसु ससि १८७६ सक अंतर, इत कोटा उम्मेद धरा
बर ॥ ९० ॥
बिधि अनुगत अब देह बिहायो, दुसह सोक तस झल्ल दिखायो ॥
जीवन लहयो भूप इहिं जोलों, तखत रहयो प्रतिमा जिम तोलों९१
खाद्यहुँ झल्ल दयो सुहि खायो, पहिरयो बसन इहिं जु पहिरायो ॥
रक्खन सस्त्र दयो सुहि रक्खयो, उत्तर कछु न कबहु तिहिं अक्खयो
ऐसो नृप उम्मेद मरयो अब, तीन३ तनूर्ज हुते ताकै तब ॥
जे किसोर १ बलि बिष्णुसिंह२ जिम, तीजो ३ पृथ्वीसिंह ३ सूनु
तिम ॥ ९३ ॥
जुब्बन बय ए त्रय३ हि हुते जँहँ, तखत तदीय किसोर१ धरयो तँहँ
पहिलैं झल्ल जाजपुर दै करि, सुत हुव२सहित रान भीमहिं बरि९४
ब्याही त्रि कैंनी बुल्लि प्रबल पन, तँहँ सुरुय१जु बयसैं सु चिरंतन
नृप उम्मेद सुता रानहि दिय,क्रम पुनि ब्याह रान कुमरन किय९५
अधिप मध्य २ सुत बिष्णु २ सुता इम, रान कुमर अमरेस बरी
तिम ॥
नाम जवान रानको लघुसुत, परिनायो सु इंद्रगढ जसजुत ॥९६॥

१मानसिंह के जीवन पर्यन्त ॥८८॥८९॥२जयपुर की भूमि पर, वह बालक भूपति हुआ३राजा उम्मेदसिंह ने॥९०॥४विधि के साथ शरीर छोडा५झाला जालमसिंह ने ६ मूर्ति के समान ॥ ९१ ॥ ७ खाना (भोजन) ॥ ९२ ॥ ८ पुत्र ॥ ९३ ॥९ उस उम्मेदसिंह के तखत पर ॥९४॥१०तीन कन्या विवाहीं११पुरानी (बुड्ढी)॥९५॥९६॥

इंद्रगढेस नाम सिवदान सु, तत्थ एह ब्याह्यो भगिनी तसु ॥
बलकरि बुल्लि रान कुमरन सह, जालम झल्ल बिवाहे इम जह ९७
बपु पीछैं कोटेस बिहायो, पुत्र किसोर१ पट्ट तस पायो ॥
महाराव होतहि यह मानी, करतभयो जग कुजस कहानी ॥९८॥
जिहिं कछु साध्य असाध्य न जान्यो, पट्टु जिम रहन स्वतंत्र प्रमान्यो
जवनी इक जालम खवासि किय, जठर तास सुत इक्क १ जन्म लिय ॥ ९९ ॥
हुव गोवर्द्धनदास नाम तस, सो बदलाइ किसोर२ करयो बस ॥
मुख्य सचिव तिंहिं करन मनायो, इनसैं मुरि गोवर्द्धन आयो।१००।
त्रय ३ भ्रात रु यह झल्ल १ यउ ४ हि तब, स्वबस करन चाहन लग्गे सब ॥
पै जालम बल जाल अपूरब, कछु नय बिनु इन्ह तंत्र होइ कब१०१
सैफअली अभिधान अजीठन, पलटायो सु अप्पि बलपति पन ॥
जालम इनहिं पुत्र माधव जुत, हठमत कै पकरहिं बलकारि द्रुत१०२
पिहित मंत्र किन्नों यह पंचन५, मिच्छ१ झल्ल२सोदर त्रय३।५इकमन
सोदर मध्यम बिष्णुसिंह सुनि, प्रकट रह्यो इनके सम्मत पुनि१०३
चित्त मुरि सुं जालमकौं चाहत, बैठन पट्ट स्वबुद्धि निबाहत ॥
सैफअली अक्खिय अब सासन, देहु लखहु बुद्धि१रु बल दासन१०४
नृप किसोर१ अक्खिय अबही नन, पुनि बिचारि लहहिं स्वतंत्रपन॥
संबतमुनिहयअट्ठइंदु१८७७सम,कारिबिलंब पैंहिलैंनरच्योक्रम॥१०५॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ उस यवनी के उदर से ॥ ९९ ॥ २ गोवर्धनदास ३ महाराव किसोरसिंह ने उसको जालमसिंह से बदला कर अपने वश में किया ॥ १०० ॥ १०१ ॥ ४ नाम ५ सेनापतिपन से ॥ १०२ ॥ ६ पांचों जनों ने यह गुप्त सलाह की ७ एक तो सैफअली यवन, दूसरा झाला जालमसिंह का पासवानियां पुत्र, और महाराव सहित तीनों भाई, ये पांचों एक मन होकर॥१०३॥ ८ वह विष्णुसिंह ९ आज्ञा ॥१०४॥१०पहिले कहा हुआ क्रम नहीं रचा ॥१०५॥

पुनि कहि सैफअली नृप प्रेर्‌यो, अति भर पै सु किल्यो१न अवेर्‌यो
जालम हो पुरढिग बाहिर जब, तिम माधव कोटा *अंतर तव१०६
द्वार जरन सासन नृप देतहि, †लघु कढि निजन हाजरी लेतहि ॥
‡अरर जरत कछु बिधि मिस आग्रह, भ्रात मध्य भजिगो जालम जह
जुज्झन द्वार हवेलीके जुरि, माधव सज्ज रुप्यो पुरमैं सुरि ॥
गोपुर जुरन सुद्धि सुनि संकित, आयो सजव जरठ जालम इत१०८
मिलि मग विष्णुसिंह मुजराकिय, लखि तिंहिं बस जालम स्वसंग लिय ॥
सूरजपोरि आइ इम अक्खिय, खुल्लहु द्वार रोध किहिं रक्खिय१०९
इन अक्खिय प्रभुको आदेस न, अहो अरर खुल्लन खिन एस न ॥
तबहि कुठारन अरर तुराये, इम झल्ल रु तस भट पुर आये११०
इक्खयो स्वसुत हवेली आवत, माधव सकुसल जंग मचावत ॥
तब जालम तजि सोक ससाहस, गहि कर मुच्छ घोर पकरी गैंस ॥ १११ ॥
बडी तोप दुव२ तँहँ बुंदीकी, लैगो भीम हुती तबहीकी ॥
प्रथित धूरिधानी१ बहु पूजी, दुस्सह करकबिज्जुली२ दूजी ॥११२॥
इनके गोलंदाज बुल्लिँ अर, कह्यो प्रहार करहु महलन पर ॥
इत सुनतहि जालम पुर आयो, पगि भय सैफअली सु पलायो११३
तस संगहि नेठे संगी तस, बल रंचक रहिगो नृपके बस ॥

* जालमसिंह का पुत्र माधवसिंह कोटा के भीतर था ॥ १०६ ॥ † शीघ्र अपने लोगों की हाजरी लेता हुआ ‡ कपाट जुड़ते समय महाराव किशोरसिंह का मध्यम भ्राता (विष्णुसिंह) जहां जालमसिंह था तहां भाग गया ॥ १०७ ॥ १ शहर के द्वार जुड़ने की खबर सुनकर २ बुड्ढा जालमसिंह शीघ्र आया ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ३ स्वामी का हुक्म नहीं है ४ किवाड़ खुलने का यह समय नहीं है ॥ ११० ॥ ५ अपने पुत्र माधवसिंह को ६ गांठ (आंट) ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ७ शीघ्र बुलाकर ८ भागा ॥ ११३ ॥ ९ उसके साथवाले

जब किसोर १ नृप अल्प भटन जुत, दुरयो जाइ महलन अंदर द्रुत ॥ ११४ ॥
पृथ्वीसिंह अनुज नृप पासहि, सस्त्रनको न हुहु२न अभ्यासहि॥
गन प्रासाद गिरत लखि गोलन, झुल्ला जिम हल्लत गढ कोलन ॥ ११५ ॥
ताजि अवरोध१ सस्त्र२ धन३ तत्थहि, सके न लै गज४ हय५ कछु सत्थहि ॥
धन कछु इक१ सिबिका अंतर धरि, तरि चम्मलि लै इक्क मिली तरि ॥ ११६ ॥
पयचर६ निकसि भज्यो सानुज पहु, बलि मगमैं जिहिं छोरिगयेबहु ॥
इम व्याकुल नृप बुंदी आवत, पै प्रबहन कछु मग्ग न पावत॥११७॥
रामलाल लछमीपुर सासक, सुन्यो हड्ड६६ बुंदीस उपासक ॥
सोहु हुतो न तदपि तस तिय सुनि, पठई तिहिं निज उभय२ हयी पुनि ॥ ११८ ॥
दोउन२पैं चढि तब सोदर हुव२, ठहै स्वस्थ रु इम अग्ग बढत हुव ॥
सोदर पृथ्वीसिंह३ केर सुत, जो कोटा सासक अब छल जुत११९
सिसु बय एहु हुतो तिन्ह संगहि, अनुचर खंध बह्यो जिन्ह अंगहि
इम हुव२कोस अवधि पर आवत, समुह जाइ बुंदीस सुहावत।१२०
अति आदर आतहि ग्रह आनिय, मंडिय बिबिध उचित महमानिय॥
आक्खिय तिम तुमरो घर एसहु,देखि समय जित्तहिं निज देसहु१२१
इहाँ रहहु तोलौं निज आलय, जानहु धर्म जहाँ सु तहाँ जय ॥

उसके साथ ही भागे १ शीघ्र ॥ ११४ ॥ २ महलों का समूह ॥ ११५ ॥ ३ जनाना ४ पालखी में ५ जो मिली उसी नाव को लेकर ॥ ११६ ॥ ६ पैदल ७ छोटे भाई सहित राजा भगा ८ डौली आदि मार्ग में सवारी नहीं मिली ॥११७॥ ९ दो घोड़ियां भेजी ॥११८॥११९॥ छोटे भाई पृथ्वीसिंह का पुत्र जो इस समय कोटा का पति है वह बालक१०चाकरके कंधे पर चढा ॥१२०॥१२१॥

अप्पन लै निज मतअंग्रेजन, टारहिं१ झल्ल त्वचा जिम तेजन२ १२२
कै मारहिं२ कै करहिं सु कीलित३, कतिक वत्त खल झल्ल कु-
सीलित४ ॥
कहुँ गोपाल धनीको गोधन, अपनावत न सुने रवि रोधन५॥१२३॥
धरा स्वकर कर्षुक६ नहिं धारत, स्वामी जब तब ताहि सम्हारत ॥
कोटा इम अपनों जैहैं कित, सहबल१कोस२संग हम समुचित७१२४
पै कछु देस १ काल २ क्रम पिक्खहु, साहहु धीरज त्वरा८ न सि-
क्खहु ॥
विष्णुसिंह२००१२ भूपति इम बहु विधि, समुझायो कोटेस स्वस-
न्निधि९ ॥१२५॥
महाराव तदपि न यह मन्निय, क्रम संत्वर दिल्ली प्रयान किय ॥
इक अंग्रेज मिल्यो तह इनमैं, जालम पच्छ ओर सब जिनमैं॥१२६॥
ए जिम निकसि भजे पलटत श्रेय, गोवर्द्धन झल्लहु तिम भजिगय ॥
इत जालम अंग्रेज उपासक, सबल रह्यो कोटाधर सासक १२७

॥ दोहा ।

इत नव९ हायन वय उदित, राजकुमर मनि रांम२०११४ ॥
सिंह सिसु कि हत्थिन हनन, करैं उचित वय काम॥१२८॥
गुटिका चाप१हि पुव्व गहि, अंकुरि तस अभ्यास ॥

१ जैसे बांस की छाल (चमड़ी) निकाल देवे तैसे झाला को निकाल देवेंगे ॥ १२२ ॥ २ उस (जालमसिंह) को कैद करके ३ खोटे स्वभाव वाला ४ कर्षी पर स्वामी का गोधन ५ रोककर ग्वाल को अपनाते नहीं सुना ॥१२३॥ और करसा ६ उसकी भूमि के हासिल को धारण नहीं कर सकता, जब तब उस भूमि का स्वामी (मालिक) ही उसे सम्भालता है, ७ सेना और खजाने सहित वह हमारे ही उचित है ॥ १२४ ॥ ८ शीघ्रता मत करो ९ अपने पास ॥ १२५ ॥ १० बीच ११ सब अंगरेज जालिमसिंह के पक्ष में थे जिन में से एक महाराव किशोरसिंह में मिला ॥ १२६ ॥ १२ शुभ कर्म के पलटते ही ॥ १२७ ॥ १३ नौ वर्ष की अवस्था में १४ रामसिंह ॥ १२८ ॥ १५ उस अभ्यास में उदय

प्रात नित्य करि तदनु पटु, बिरचहिं वेध्य बिनास ॥१३०॥

॥ घनाक्षरी ॥

नित्य करि लै निज बयस्यन कुमर राम२०।४।१,
सानुज१ सुरीति खुरलीमैं खेल ख्याल करि ॥
कोहला१ मतीर२ रु दसांगुल३ कपित्थ४ बिल्व५,
क्रमतैं कितेही स्थूल बेध्यनके पात करि ॥
मंडूरक६१ मृत्तिका२ मिलाये गुरु गोल गाढे,
खातकरि जात ज्यौं बंदूकनसौं बात करि ॥
तारिदै तराके जंत्र स्वस्तिक७१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुंज२न गिलोलनकी घात करि ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

कंदुक अंभ उछारिकैं, मर्म गिलोलन मारि ॥
अनाधार रक्खत उहाँ१, इच्छित लेत उतारि२ ॥ १३१ ॥

॥ मनोहरम् ॥

छोरिकैं गिलोल१ तदनंतर सरासन१०२लै,
मित्रन अखारो मंडि छोह छिति छैतीमैं ॥
आलीढ११ रु प्रत्यालीढ१२ बैसाख१३ रु मंडल१४ त्यौं,

(खड़ा) होकर १ निसाने का ॥ १२९ ॥ २ अपनी समान अवस्थावालों को ३ छोटे भाई सहित शस्त्राभ्यास में. कोहला (कूष्मांड) मतीरा ४ खरबूजा ५ कैंत, बीला ६ लोहे के मल (कीटा) और मिट्टी के मिलाये हुए बडे और दृढ गोले खड्डे करजाते हैं ७ यन्त्र विशेष ॥ १३० ॥ ८ गेंद को आकाश में उड़ाकर ९ विना आधार वहीं पर रखकर चाहैं तब उसको नीचे उतार लेते हैं ॥ १३१ ॥ १० धनुष लेकर मित्रों के साथ अखाड़ा रचकर उत्साह से भूमि ११ये सब पैंतरे हैं जिन में दाहिने पैरको आगे बढाकर वाम पैर को समेटने का नाम आलीढ है १२ आलीढ से उलटा करना प्रत्यालीढ है १३ एक वितस्त (वेंथ, बिलस्त) के अंतर से दोनों पैरों को रखकर बाण चलाने का नाम बैशाख है १४ गोलाकार फिर कर बाण चलाने का नाम मंडल है

साधि *समपाद५ थान रीति हित ठहेतीमैं ॥
शब्दवेध आदिक समस्त विधि साधनकैं,
पूरन प्रगल्भ प्रभा पारथकौं पैंतीमैं ॥
कातर कपोला कोपे फीलन१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुंजारन कलंब कमनैती मैं ॥ १३२ ॥

॥ पादाकुलकम ॥

इत नृप विष्णुसिंह२००१२ बुंदीइन, दिष्टतंत्र सुचिष्ठपुराग्राम१५रवि
दिन ॥
छोरयो वपु तँहँ उचित रीति छत, विदित आयु दिष्टानुसार वत१३३

॥ दोहा ॥

सक नव दुव वसु इक्क १८२९ सम, असित२सहस्य१०अनेह॥
तिथि तेरसि१३ तँहँ अवतरयो, उद्भवं लहि पहु एह ॥१३४॥
व्योम त्रि वसु ससि१८३०शुक्र३वदि२, तिथि एकादसि११तत्थ
राजपासन पायो रुचिर, संभर सिशुंहि समत्थ ॥ १३५ ॥
वासर१२ दुव२ वर्जित स्वच्छ, पावत मितिनव१ पच्छ ॥
विष्णुसिंह२००१२पायो विदित, अजित१६९१२पट्ट इम अच्छ
कुलभव अट्ठ८ विवाह किय, इनमैं वय अनुसार ॥
पंच५ तनय इक१ पुत्रिका, पाये अधिप उदार ॥ १३७ ॥
तीन खवासिनमैं तनय, इक्क१ विनैय१३ लहि आप ॥

*दोनों पैरों को बराबर रखकर बाण चलाने को समपाद कहते हैं, ये ही पांच पैंतरे धनुर्विद्या जाननेवालों के हैं १ पूर्ण बुद्धिमान् २ पैंतरों (पदन्यासों) में अर्जुन के समान कांतिवाला ३ कपोलों के कायर ऐसे कोपे हुए हाथियों को फेरदेता है और तीरों से ४ चिरमियों को गिरा देता है ॥१३२॥५बुंदी का पति ६भाग्य के आधीन ७ खेद है कि आयु भाग्य के अनुसार ही होती है॥ १३३ ॥ ८ पोष वदि ६ यह राजा जन्म लेकर उत्पन्न हुआ ॥ १३४ ॥ १० ज्येष्ट मास ११ बालक पन में ही ॥ १३५ ॥ १२ दो दिन कम साढे चार मास की अवस्था में ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३ एक विना नीतिवाला हुआ

किलक्कि वीर बावनी ५२ फिरैं उमत्त रत्तकैं ॥ ७ ॥
चलैं समग्ग खग्ग के कटार पार निक्खसैं ॥
सुबीर सीस संचयी गिरीस हुल्लसैं हसैं ॥
दगारि बारिजंत्र ज्यों छुलक्कि घाय उब्बकैं ॥
अनीक नारि के छइल्ल छोह छाकमैं छकैं ॥ ८ ॥
ढुरैं बिभान मुक्कि दान कुक्कि झुक्कि के करी ॥
बजंत हेति हेतिकैं मनो कि दंड चच्चरी ॥
जुरैं बितंड पिट्ठि झुंड अद्रिकूट तालज्यों ॥
बहंत रत्त खाल के बिसाल ताल नालज्यौं ॥ ९ ॥
सिलग्गि सोर ओरओर ज्वाल जोर संक्रम्यौं ॥
भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमैं भ्रम्यौं ॥
बिधाय भानु रेनुको बितान व्योम बित्थर्यो ॥
लखे परैं न अप्प पार अंधकार यौं भर्यो ॥ १० ॥
चलच्चली मही रु सेन आजमी खलब्भली ॥
कलक्कली किलक्क झाल ज्वालकी झलज्झली ॥
गिलंत गृद्द गिद्धनी फिकारि फिक्करी फिरैं ॥
खिलंत कंक स्यार खग्ग धार धारतैं खिरैं ॥ ११ ॥
उडैं दुरओर बीर यौं तुपक्क तोप त्यौं चलैं ॥
जरैं दुकूल के हठी हकारि सम्मुहे हलैं ॥

वीरबावनी वीरनकी बावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैंइति ॥ सुबीर अच्छे वीर तिनके शीसनके संचयवारे. गिरीस शिव ॥ ८ ॥ ढुरैंइति ॥ बिभान सुधिबिना. दान मदके कितेक हेति हे तिनके शस्त्राशस्त्र करिकैं. दंडचच्चरी चर्चरीके दंड. पासरलोग फागनमैं लगावैहैं ते. ताल तड़ाग लोके तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलग्गिइति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरवस्वनाः" इत्यमरः ॥ पिधाय अंतर्धान करिकैं. भानु सूर्यको ॥ १० । चलच्चलीइति ॥ फिक्करी अंगाली ॥ ११ ॥ उडैंइति ॥ दुओर दोऊ तरफ. तुपक्क बंदूक. दुकूल वस्त्र. कालखंड कलेजा ॥ १२ ॥

बसु इय७८ सक इम छोरि वपु, पायो लोक दुराप ॥१३८॥
नाम नयनसोभा१ निपुन, मंजु पातुरिन माँहिं ॥
कथित काल नृप तनु तजत, इहाँ गर्भ तस आँहिं ॥१३९॥
पंच५मास पीछैं प्रसव, तनया प्रकटी तास ॥
रूपकुमरि जो रावरी, भगिनी प्रभु गुन भास ॥१४०॥
पोस१० असित२ तिथि प्रतिपदा१, कनी सु भावीकाल ॥
पैहैं अब उद्भव प्रथित, प्रभु जँहँ अप्प नृपाल ॥१४१॥
ए क्रमकरि खट६ अरु उभय२, प्रजा३ अठ८ नृप पाइ ॥
गदित काल परलोक गत, जग जस अतुल जगाइ॥१४२॥

॥ गीतिः ॥

छत्र महलसौं लगतहि उत्तर४।७ दिस अल्लबाट१ अभिधानी ॥
बज्रांग इष्ट थिति चहि, तिनकों प्रासाद निर्मयो नृपनैं ॥१४३॥
याहीबिधि अभिरामक७, पच्छिम३।५ दिस अर्द्ध-कोस निज पुरतैं ॥
विष्णुबिलास१।२ स नामक, उपबन प्रत्यग्र निर्मयो ऐसैं ॥१४४॥
प्रभु रावरी प्रसूं इम, पुरतैं दक्खिन२।३ समीप बहु व्ययसौं ॥
जग सुखदा निज घर जिम, चतुश्रायतैं धर्मसालिका१ बिरची१४५
निज पति इष्ट प्रमानत, ता बिच बज्रांगै मूर्ति पधराई ॥
इच्छित भोजन आनत, अब जन जाके सदाव्रत उमहे ॥१४६॥
सुंदर घट्ट१ बनायो सुंदरसोभा१ खवासि संभरकी, ॥
हरिमंदिर१ जुत ठायो, प्रासादगन२ जह तौंल तट पुरमैं ॥१४७॥

---

१ दुर्लभ लोक पाया ॥१३८॥१३९॥१४०॥१४१॥१ सन्तान २ ऊपर कहेहुए समय में ॥१४२॥४नामवाला ५ हनूमान् के इष्ट की स्थिति चाह कर ६ महल (मंदिर) बनाया ॥१४३॥ ७ सुन्दर ८ बाग ९ नवीन बनाया ॥१४४॥१० हे प्रभु रामसिंह आपकी माता ने ११ चौकोन (चौरस) ॥ १४५ ॥ १२ हनूमान की ॥ १४६ ॥ १३ चहुवान (विष्णुसिंह) की १४तलाव गाम में तथा तलाव के किनारे ॥ १४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे नगरकोटावधिनयपालागमनांगरेजतत्पुनर्निःसारणं १ अंगरेजलखनऊयोधनजयपुरयोधपुरसुहृद्भावसंबन्धकरणं २ ईष्टइंडियाकंम्पनीगोरखाविजयनलंकाद्वीपसमासादन ३ सचिवेन्द्रराजवधदोपाच्छादनमानसिंहोन्मादत्वप्रकटनयुवराजछत्रसिंहमरणं ४ ग्रन्थकृत्सूर्यमल्लजननसर्वतोविजयंगरेजाजमेराक्रमणं ५ अंगरेजप्रथमाजण्टकर्नलटाडराजपुत्रस्थानागमनझल्लजालमसिंहदण्डनपूर्वराणा-भीमसिंहार्थजाजपुरादिप्रान्तप्रापणं ६ अंगरेजगृहीतपुण्यपुरपति बाजेरावपेसवाविठूरनिवसननागपुरेशयोधपुराधीशशरणागमनतद्वंश्याथैषज्जीविकाप्रदापन ७ निःसंतानजयपुराधीशजगत्सिंहमरणनरउरागतमानसिंहपट्टाक्रमणविरोधीभूतझल्लजालमसिंहबुन्दीदेशलुण्टनपूर्वकरग्रहणं ८ छलकारितांगरेजसंधिपत्रझल्लजालमसिंहबुन्दीसा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, नेपालियों का नगरकोट तक चढ़ना और अंगरेजों का उनको पीछा हटाना १ अंगरेजों का लखनेऊ में युद्ध होना और जयपुर जोधपुर के राजाओं का मित्र होकर परस्पर सम्बन्ध करना २ ईस्ट इंडिया कम्पनी का गोरखों को जीतना और लंका नामक द्वीप को विजय करना ३ जोधपुर के राजा मानसिंह का अपने सचिव इन्द्रराज को मरवाकर उस दोष को दबाने के लिये फरेब करके बावलापन प्रसिद्ध करना और मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह का राजा होकर मरना ४ इस ग्रन्थ के कर्ता सूर्यमल्ल का जन्म होना और अंगरेजों का सब ओर विजयी होकर अजमेर लेना ५ अंगरेजों के प्रथम एजंट करनल टाड का राजपूताने में आना और झाला जालमसिंह को दंड देकर जाजपुर आदि प्रान्त उदयपुर के महाराणा भीमसिंह को दिलाना ६ पूना के पति बाजेराव पेसवा का अंगरेजों से पिनसन लेकर विठूर में रहना और नागपुर के राजा का जोधपुर में शरण आकर उसके कुल को कुछ जीविका मिलना ७ जयपुर के राजा जगतसिंह का बिना सन्तान मरने के कारण नरवर से आकर मानसिंह का पाट बैठना और जालमसिंह झाला का विरोधी होकर बुन्दी के देश को लूटकर हासिल लेना ८ जालमसिंह झाला का अंगरेजों से छलके

मन्तेन्द्रगढखातोल्यादिकोटाराज्यसंमेलन ९ पश्चादबुन्द्यंगरेजसंधि पवभवनरणजीतसिंहविजितपेशोरप्रान्तकाबुलसेनागमनतत्प्रत्यादान १० जयपुरेशजगत्सिंहराज्ञीभटियाणीजठरजयसिंहजननहेतुदत्तप्रत्यहपञ्चमुद्रमानसिंहनिष्कासनानन्तरजयपुरप्रान्तजयसिंहाज्ञाप्रवर्तन ११ कोटानृपोम्मेदसिंहमरणाकिशोरसिंहतत्पट्टासादनकोटासचिवझल्लजालमसिंहविरोधहेतुकिशोरसिंहपलायन १२ बुन्दीपतिविष्णुसिंहपञ्चत्वगमनतदनेहरचितस्थाननिर्माणसूचनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः ॥ ३६२ ॥

समाप्तमिदं विष्णुसिंहचरित्रम् ॥

साथ अहदनामा करवा कर बुन्दी के उमराव इन्द्रगढ, खातोली आदि को कोटा के राज्य में मिलाना ९ जिसपीछे अंगरेजों का बुन्दी के साथ अहदनामा होना और रणजीतसिंह के विजय किये हुए पेसोर को काबल की सेना का पीछा लेना १० जयपुर में राणी भटियाणी के उदर से राजा जगतसिंह के औरस पुत्र जयसिंह का जन्म होने के कारण मानसिंह को पांच रुपये रोज की पिनसन देकर निकाले पीछे जयपुर में जयसिंह की दुहाई फेरना ११ कोटा के राजा उम्मेदसिंह का देहान्त होकर किशोरसिंह का पाट बैठना और कोटा के सचिव झालाजालमसिंह से महाराव किशोरसिंह का विरोध बढकर कोटा से किशोरसिंह का भागना १२ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का देहान्त होना और उनके समय में बनेहुए मकानों की सूचना करने का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से तीन सौ बासठ ३६२ मयूख हुए ॥

इति विष्णुसिंहचरित्र समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ रामसिंहचरित्रम् ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्री मम राज१ सरस्वती२, बखसहु बुद्धि सु बित्त[1] ॥
कहियत राम चरित्र अब, जो इहिं ग्रन्थ निमित्त[2] ॥ १ ॥
एकादश११ दिन करि अखिल, करटा[3]१दिक विधि काज ॥
पुनि अवसर लहि राम२०।१४ प्रभु, अप्प भये अधिराज[4]॥२॥
द्विज पुर१के अरु देस२के, भोजे तद्दिन[5] असेस ॥
दान बिबिध बहुतन दये, गोगन१ पुरट[6]२ प्रदेस[7]३ ॥ ३ ॥
सजातीय[8]१ कविकुल२ सकल, जिम पुर३अखिल जिमाइ॥
ललित कित्ति मुख मुख लई, भूप सबन मनभाइ ॥४॥
नव९ अब्द रु खट६ मास मित, इहिं बय समय अधीन ॥
विधि अप्पहि दिन बारहम१२, कुल हड्ड६।१न ईन[9] कीन ।५।
संवत गज हय अष्ठ ससि १८७८, स्रावन५ वारसि१२ स्याम
गुरु५ मृगासिर५ व्याघात[10]१३ गत, तैतिल४करन सु ताम[11]॥६॥
समरकंद६ जहँ संहरयो[12], नारायन१८।७।१ नरराज ॥
भूपति तहँ अभिसिक्त भो, कथित सद्धि विधि काज ॥ ७ ॥
आसापूरनि१ अंबिका, पीतांवर हरि पाय ॥

---

१ बुद्धि रूपी श्रेष्ठ धन २ जो इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के बनने का कारण है वह रामसिंह चरित्र कहता हूं ॥ १ ॥ ३ एकादशाह आदि सब श्राद्धों के कार्य करके ४ हे राजा रामसिंह आप स्वामी हुए ॥ २ ॥ ५ उस दिन सब ब्राह्मणों को भोजन कराया ६ सुवर्ण ७ भूमि ॥ ३ ॥ ८ अपनी जातिवाले (क्षत्रिय) और चारणों के सब कुल को ॥ ४ ॥ विधि पूर्वक आपको हाडाओं का ९ पति किया ॥ ५ ॥ १० व्याघात नाम योग जाकर ११ तहां तैतिल करण में ॥ ६ ॥ जहां राजा नारायणदास ने समरकंद को १२ मारा था तहां कहाहुआ विधि पूर्वक कार्य साधकर राजा का अभिषेक हुआ ॥ ७ ॥

पूजन करि मनरूयौं सु पहु, समुचित मन्त्रि सहाय ॥ ८ ॥
पुनि पधारि महलन प्रथित, रचि अर्चित श्रीरंग ॥
पट्ट१ पंच५सिख सीस धरि, बैठो पट्ट२ अभंग ॥ ९ ॥
गुरु१बुध२कवि३भट४सचिव५गन, अतुल सभा सब आइ ॥
॥ १० ॥
॥
॥११॥
॥
॥ १२ ॥

पुनि अजंट आइउ इहाँ, साहब टाड१ स नाम ॥
सभा बहुरि दूजी२ सुपहु, रची उचित अभिराम ॥ १३ ॥
आवन५ बिसद१ चउत्थि४ सिर, पंचमि५ आगम पाइ ॥
सद्यो पुनि दसतूर सब, सूचित क्रम दरसाइ ॥ १४ ॥
टाड१ अजंटहु गज१ तुरग२, भूखन३ सस्त्र४ दुकूल५ ॥
उपदा१ किय अधिराजकौं, मुदित नम्र हित मूल ॥ १५ ॥
उत्तासँन१ सद्यो उचित, रीति सहित नति रक्खि ॥
कह्यो कहहु हमपर हुकम, सब अनुगत नय सक्खि ॥ १६ ॥
महिमानी आदरि बहुरि, करि प्रभु हुकम बिकंट ॥
तदनन्तर लै सिक्ख गो, साहब टाड अजंट ॥ १७ ॥
अवसर क्रम भावी इहाँ, व्याह१ प्रजा१०दि बखान ॥

॥८॥१मस्तक पर पांच शिखा(कलंगी)का शिरपेच धारण करके "हम ऊपर लिखआये हैं कि पांच शिखा का शिरपेच बांधना राजापन का चिन्ह है" २ किसी से भंग नहीं होनेवाला महाराावराजा रामसिंह पाट बैठा ॥९॥३पण्डित ४ चारण ॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥ ५ वस्त्र ६ राजा को भेट किये ॥ १५ ॥ नीति पूर्वक नम्रता रखकर अजंट टाड साहब७बाम ओर बैठा॥१६॥८स्वामी रामसिंह के हुक्म को निष्कंटक करके ॥ १७ ॥ समय के क्रम से भाइयों सहित राजा रामसिंह के९आगे होनेवाले व्याह और१०सन्तान आदि का वर्णन करते हैं सो

ज्ञातन जुत प्रभुको भनत, समुझहु सभ्य[1] सुजान ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

भे उपयमें[2] चउ४ अधिप प्रथम१ तिनमाँहिं जोधपुर ॥
मानें[3] सुता रट्ठोरि परनि आनी रानी धुर ॥
नाम सुरूपकुमारि२०।१।१ प्रसव जाके सु पुत्र मनि ॥
कुमर भीम२०।२।१ प्रभुकेर[4] जई जनम्यौं पाटव खँनि[5] ॥
दूजे२ बिबाह पुर झुंझनाँ सेखाउति व्याही सु बर ॥
अभिधा[6] गुलाबकुमारि२०।१।२ सु उचित स्यामसिंह तनया सघँर[7]॥१९॥

॥ दोहा ॥

गया पधारे अप्प जब, पुर नागोद पधारि ॥
तीजो३ उपयम किन्न तहँ, दारिद कविन बिदारि ॥ २० ॥
विदित सुता बलभद्रकी, गुन गन अतुल गहीर[8] ॥
चन्द्रभानु कुमरि२०।१।३ सु चतुर, व्याही रानिय वीर ॥२१॥
प्रतिहारी कुलकरि प्रथित, जाके औरस जात ॥
रंगनाथ२०।२।२ सुत रावरै, दूजो२ जस अवदात ॥ २२ ॥
ए त्रय३ रानी अरु लहे, सूनु उभय२ कुल सुद्ध ॥
चउ४ खवासि तिनकी चतुर, संतति सुनहु प्रबुद्ध ॥ २३ ॥
पट्ट सुरूपलतिका१ प्रथम१, तामैं हुव सूत तीन३ ॥
अर्जुन१ अविदित[9] नाम अरु, गोवर्द्धन३ गुन पीन ॥ २४ ॥
सदानंद२ दूजी२ सुघर, जाकै जुग२ सुत ख्यात ॥
नारायन१।४ जेठो१ कुमर, जगन्नाथ२।५ अनुजात[10]२ ॥ २५ ॥

---

१ श्रेष्ठ बुद्धिवाले सभासद जानो ॥ १८ ॥ २ राजा के चार विवाह हुए ३ जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री ४ रामसिंह के ५ चतुरता की खान ६ नाम ७ सुघड़ (चतुर) ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गंभीर ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ जिसका नाम मालूम नहीं ॥ २४ ॥ १० छोटा भाई ॥ २५ ॥

सरसरंग३ तीजी३ प्रसव, स्वीय नियति अनुसारि ॥
कन्या इक१ सुपठित भई, नाम सुभद्रकुमारि१ ॥ २६ ॥
आनंदा१दिकबेलि४ इम, चोथी४ चतुर खवासि ॥
कन्या इक१ वल्लभकुमरि१।२, भई तास गुन भासि ॥२७॥
सुत इम पंच५ रु दुव२ सुता, प्रजा खवासिन सत्त७ ॥
प्रथम१ तृतीय२ रु पंचम५ सु, त्रय३ सुत सायुस तत्त ॥२८॥
बाल वयहि वल्लभकुमरि२ धीदा व्यसु विधि धारि ॥
विद्यमान तनया बडी१, सूरि सुभद्रकुमारि१ ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभुअनुजनु गोपाल२०१५ रहठउरन गागरनी ॥
चन्द्रकुमरि२०११ रघुनाथ सुता अप्रज१ इक१ परनी ॥
अरु खवासि भव अनुज विनय१ व्याहयो उनियारा ॥
जालमजा आनंदकुमरि१ सुहु प्रसव असारा ॥
अरु रूपकुमारि१ विनया११नुजा बीकानैर नरेस सुत ॥
जीवन१हिं रक्खि आश्रित इहाँ परिनाई प्रभु प्रीति जुत ३०
काका सुत धौंकल२०११२कुमार फतमल्ल२०११उक्त दुव ॥
बीकापुर नृप अनुज अजब तनया व्याहतहुव ॥
चन्द्रकुमरि२०११ आनंदकुमरि२०११२क्रम सन अभिधाकरि
जैपुर बिरचि बिवाह बिंद सोदर आयेबारि ॥
रहि अचिरे परे पट्टनिसमरे जे जुगर जनक१पितृव्य२जुत॥

१ अपने भाग्य के अनुसार २ श्रेष्ठ पढीहुई ॥ २६ ॥ ३ आनंदबेल ॥ २७ ॥ ४ तहाँ तीन पुत्र आयुष्यवाले हुए ॥ २८ ॥ ५ पुत्री ६ मर गई ७ पंडिता ॥ २९ ॥ ८ रामसिंह का छोटा भाई ९ बिना सन्तानवाली १० बालक जनने में असार ११ विनयसिंह की छोटी बहिन १२ जीवनसिंह को बुन्दी में आश्रित रखकर ॥ ३० ॥ १३ बीकानेर के राजा के छोटे भाई १४ नाम १५ थोड़े समय रहकर १६ पाटण के युद्ध में मारे गए १७ पिता और काका सहित

अल्पायु वीज इनकेहु इम सके जनमि न सुता१न सुत२।३१।
भीमसिंह२०।३ इन्ह अनुज अप्प व्याह्यो रचि उच्छव ॥
नगर ऊमरी नाम भनित सीसोद वंस भव ॥
भीम सुता महतापकुमरि२०१।१ रूपापित अभिधाकरि ॥
पुत्री दुव२ इक१ पुत्र प्रकटहुव तास गर्भ परि ॥
तहँ अजबकुमरि१ जेठी१ सुता कृष्णाकुमरि२ दूजी२कथित॥
सुत विस्वनाथ२०२।१इनसौं अनुज विनु निकेत जो अब व्यथित३२

॥ दोहा ॥

भीम२०१।३ तनूज खवासि भव, बलदेव१ सु मृत बाल ॥
इक१ खवासि भव अंगजा, नवनंदा१ इहिं काल ॥ ३३ ॥
सेर२००तनय जयसिंह२०१।१सो, प्रभु व्याह्यो हित खुल्लि ॥
तनया देवीसिंहकी, डोला बुंदिय बुल्लि ॥ ३४ ॥
कुल भटियानी नाम करि, कहियत बदनकुमारि२०१।१ ॥
सिसु इक१ मृत व्है तस सुता१, न सके नामहु पारि ॥३५॥
राजाउतिव्याह्यो विजय२०१।२,राजकुमरि२०१।१अभिधान॥
ग्राम खजूरी धाम भव, उदय सुता मतिमान ॥ ३६ ॥
इक्क सुता याकै भई न परयो तासहु नाम ॥
अल्प आयु लहि पंच५ अह, जो परलोक जगाम ॥ ३७ ॥

॥ चूडाल दोहा ॥

संभू२०१।१ देवीसिंह२००।२सुत, दुर्गापुर पति व्याह तीन३किय ॥
इक१नारव मुहुकम सुता, चद्रकुमरि२०१।१ पुर लाव व्याहिलिय३८
तखतकुमरि२०१।२ दूजी२ बधू, चालुक्क रत्नसुता सु लई वरि ॥

---

१ अल्प आयु होने के कारण ॥ ३१ ॥ २ नाम से प्रसिद्ध ३ बिना घर (ठिकाना) ४ अघ पीड़ित है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ पांच दिन की अल्प आयु लेकर ६ परलोक गई ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कूरम सुरतानोत कुल, लघु आनंदकुमारि२०१।३ प्रीति धरि।३९।
संतति संभूसिंह२०१।१कै, पंच५ तहाँ सुत च्यारि४ सुता इक१ ॥
इक१ प्रथमा १ इक१ अंतिमा३, तनया १।५ जुत दूजी२ हु जन्य त्रिक३ ॥ ४० ॥
इन पंच५नमैं इक१ अनुज, बच्यो नाम ओंकार२०२।४आयुबल॥
इतर गये तजि तजि असुन, तनया तनय बिहाइ छोनि तल ॥४१॥
उपयम त्रय३संभू२०१।१अनुज, क्रम सूचित सिवदानसिंह२०१।२क्रिय
जेठी१ राजाउत्ति जहँ, नाम सु चंद्रकुमारि२०१।१ बरी प्रिय ॥४२॥
बरी जवाहिरकुमरि२०१।२ बलि, ताही कुल दूजी२हु दिष्ट बस ॥
जेठी१ सुव सुव इक्क१जनि, तात सुनहु सिवराज२०१।३नामतस४३
छत्रसिंह तनुजा चतुर, रठ्ठउरि तीजी३हु बरी बर ॥
ग्राम कचोले करि गमन, ब्रजकुमरी सिरदारसिंह१९९।४हर ॥४४॥
ब्याह उभय२सामंत२००।१सुत, परन्यौ इत बलदेव२०१।१कापरनि॥
सुत चतुष्क४ अरु दुव२सुता, जो सप्रज हुव तोक इते६ जनि॥४५॥
जेठी पतनी जादवी, जो आनंदकुमारि२०२।१ नाम करि ॥
सर मथुरापुर जाइ सो, लई मनोहरसिंह सुता बरि॥४६॥
रठ्ठउरि दूजी२ बधू, जो महतापकुमारि२०२।२ बरी बर ॥
कमन सुता भूपालकी, इन्द्र फतैगढ जाइ दीप१९८।६ हर ॥४७॥
त्रय३जेठी सुत सुतनमैं, हलधर२०२।१तिम हरदेव२०२।२नामहुव॥
अनुज सु बैरीसाल२०२।३ अरु, दूजी२कै सुत इक्क१ सुता दुव४८
सुत दुर्जनसल्ल२०२।४ रु सुता, राजकुमारि१ खुसहालकुमारि२जहँ
ढंग सल्हानाँ दिय बडी१, कुल कबंध तखतेस१ बिंद कहँ ॥४९॥
कृष्ण२०१।२ बिरुद २०१।३ बलदेव २०१।१ के, अनुजन इक१

१ शीघ्र ॥३९॥४०॥ २ अन्य प्राण छोड़ छोड़ कर गये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥
३इतने बालक जनकर सन्तानवाली हुई ॥४५॥४६॥४सुन्दर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

छिकैं बितंड कालखंड खान गिद्धनी धरैं ॥
गिरिंद्र स्यामकी गुफा महामुनिंद्र ज्यौं दरैं ॥ १२ ॥
मिलग्गि अग्गिअक्की सिखा चमंकि गैनलौं चढैं ॥
बिमान अच्छरीनकैं उछाय दाह यौं दढैं ॥
उडैं अलान ओकओक कोक सोक संकुलैं ॥
खुलैं समाधि ईसकी धुनी दिगीसकी डुलैं ॥ १३ ॥
उदांचि बातके प्रपात सैन आजमी चली ॥
हरोल चंड बुद्धकी कराल क्रुद्धकी हली ॥
डराल डक्क डिंडिमी डमंकि डाकिनीनकी ॥
नसैं उमंग साकिनीन नागि नाकिनीनकी ॥ १४ ॥
बिकुल घन रत्तकी छछक्कि छिछि उच्छलैं ॥
चलैं कि जंब जावकी सिखा कि पावकी चलैं ॥
हवक्कि घाव नहकैं कपोत भाय उड्डैं ॥
पलट्टि झट्टि के उलट्टि इक्क इक्कपैं परैं ॥ १५ ॥

[दोहा]

लरन लगत चहुँदिस सुभट, मिलि पय मत्त मिलाप ॥
कछु कछु तोपन दगन क्रम, धरत इक्क असि धाप ॥ १६ ॥

[षट्पात]

कोटापति बारन बढाय रस बीर अघायो ॥

मिलग्गिइति ॥ गैनलौं गगनलौं. धुनी धौंसा. दिगीस दिक्पालनकी ॥ १३ ॥ उदांचिइति ॥ डिंडिमी वाद्य विशेष. नसैं नासिकाएं. साकिनीन साकिनी अनेक बडी भयंकर आई तिन करिकैं नाकिनीनकी नाक स्वर्ग ताकी नारी जो तमासे देखवे अनेक आई तिनकी ॥ १४ ॥ विकुलइति ॥ विकुल छिदे भये. घन घाव तिनमें. जावकी जावक संबंधी. पावकी अग्नि संबंधी. कपोत भाय कपोतकी नांई ॥ १५ ॥ दोहा ॥ लरतइति ॥ पय दूध. मिष्टरस विशेष. ताकै मिलापकी तरह दाखि लडना ॥ १६ ॥ षट्पात ॥ कोटाइति ॥ निविड

इक१ ब्याह करे इम ॥
प्रथित जाइ सिवराजपुर, तकि कवंध चंदेल बंस तिम ॥५०॥
क्रमकरि नाम वधूनके, उमरावकुमरि२०१।१ कंचनकुमरि२०१।१ दुव२॥
इनमैं इक१कै अंगजा, स्यामकुमरि१ बिरुदेस गेह हुव ॥५१॥
इम अनुजन जुत रावरे, ब्याह१ प्रजा२ कम संग बखानित ॥
सब संतति उपयम सुनहु, अवसर अब प्रभुराम२०१।४प्रमानित५२

॥ षट्पात् ॥

जगतसिंह नृप जबहि प्रचुर रानिन परन्यौं पहु ॥
भट्टी जैपुर सुभट बनैं दै तब कन्या बहु ॥
जहँ राउल कुल१ देवराज कुल२ जात जथाक्रम ॥
बुंदी पठयो बिजय सुता डोला इक१ सँत्तम ॥
अरु मेघसिंह पठयो अपर२ दुव२ डोला आये बिदित ॥
पहप कुमार भीम२०२।१सु प्रगुन परिनाये प्रभु हेरि हित५३
कन्या जीवनकुमरि२०२।१ बिजय तनया पहिलैं१ बरि॥
ब्याही बांलि वर बैंरनि मेघतनया ऋद्धिकुमरि२०२।२ ॥
कथित गुलाबकुमारि२०२।३ कमन तीजी३ कुमरानिय ॥
बंसबहाला ब्याहि उचित अति जस घर आनिय ॥
रघुनाथसिंह२०२।२ तदनुज कुमर मित जीवितपाउससमय
नागोद दुंग मातुल निलयँ, वपु उज्झिय दसअब्द वय५४

१ प्रसिद्ध ॥ ५० ॥ २ स्त्रियों के ३ पुत्री ॥ ५१ ॥ ४ विवाह ॥ ५२ ॥ जयपुर का राजा जगतसिंह ५ बहुत राणियों को परना तब बहुत कन्या देकर भाटी ६ जयपुर के उमराव बनगये थे ७ सुन्दर ८ विशेष गुणवान ॥ ५३ ॥ ९ फिर १० सुन्दर दुलहिन ११ सुन्दर १२ उसका छोटा भाई १३ थोड़े समय जीवित रह कर १४ मामा के घर १५ शरीर छोड़ा ॥ ५४ ॥

जाठरि धारि सुरूपलता१ जिहिँ जामि सकारकी२ जच्चा बजी जनि
अर्जुन१ जेठो१ कुमार वहै परन्यो पहिलैं१ मह झालरापट्टनि ॥
सो मदनाँधिप झल्ल सुता महिलाँ बडी१ खूबकुमारि१ वधू मनि॥
आयो निजोचित ब्याहियहाँ हितसौँकविलोकन दारिदकौं हनि५५

॥ घनाक्षरी ॥

पीछैं जाइ तीन३हि कुमार ब्याहे जोधपुर,
अर्जुन१ द्वितीय२ वरी सूरजकुमारि२ इत ॥
त्यौं कल्यानकुमरि१।२ बिवाह्यो जगन्नाथ३।५ तहाँ,
एतो द्वै२हि भूप तखतेसकी सुता उचित ॥
सेवकीपुरेस नृप मानको खवासि सुत,
नाम सिवनाथ ताकी नंदिनी हुलास हित ॥
नामकरि राज सु कुमार१ कुमरानी निज,
मध्यम२ कुमार ब्याह्यो गोवर्द्धन३।२ साम्य६ मित।५६।
जोधपुर भूप मानसिंहकै खवासि जात७,
पुत्र लालसिंह१ नाम ढंग हरसोर पति ॥
सूनु ताको सुद्धकुलजा८ भव प्रतापसिंह१,
विहित बरातसौँ बुलाइ बुंदी मंजु मति९ ॥
ब्याकरन आदि बहु विद्यामैं प्रवीन बुद्धि,
सो सुभद्रकुमारि१ खवासि सुता रम्य रति ॥
दुल्लही बनाइ लग्नकाल तिहिँ दुल्लहको,

स्वरूपलता ने जिसको १ उदर में धारण करके २ रामसिंह के शकार (साले) की वहिन "पासवान" (अविवाहिता) स्त्री के भाई का नाम शकार है अर्थात् स्वरूपलता नामक पासवान जिसको जन कर जाचा (प्रसूता) बजी वह कुमर अर्जुनसिंह ३ राजा मदनसिंह झाला की पुत्री ४ स्त्री ५ अपने उचित अर्थात् पासवान की पुत्री विवाह कर आया ॥ ५५ ॥ ६ बराबर के प्रमाण वाला ॥५६॥ ७पासवान स्त्री से उत्पन्न८शुद्ध कुल में उत्पन्न ९ सुन्दर बुद्धिवाली

आप प्रभु कूकुंद बिवाही दै सुदायं अति ॥ ५७ ॥
राम२०१।४ प्रभु रावरे पितृव्यप्रसूनु गोठपुर,
भोमसिंह२०१।३ स्वामीके निवारैं प्रतिकूल भनि ॥
राव फतमल्ल१ उनियाराके अधीस अर्थ,
जेठी१ सुता अजबकुमारि१ व्याही मोद जनि ॥
न गई नरूकनके कन्या इतकी कबहु,
बहुत कहाई आप तदपि स्वतन्त्र बनि ॥
व्याह यह कीनौं दिष्ट तास फल दीनौं बेग,
आलय बिहीन फिरैं खीन अहि ज्यौं अमनि ॥५८॥

॥ चूडाल दोहा ॥

व्याह इक१बलदेव२०१।१सुत, हलधर२०२।१कापरनीस बिवाहिय
मेरतिया रँइयां अधिप, देवसुत ————कुमारि २०२।१ तिय५९
तस औरस प्रकटे तनय, राजसिंह२०३।१ अरु बीरसिंह२०३।२दुव॥
जो हलधर२०२।१इनको जनक, होत तरुनवय आसु अनसु हुव६०
उक्त उभय२ हलधर २०२।१ अनुज, गलथूनी कछवाह कनी दुव॥
——कुमरि२०२।१ ——कुमरि २०२।१, सह क्रम व्याहि गृहस्थ
हह्व ६१ हुव ॥ ६१ ॥
राजसिंह२०३।१ पुर कापरनि, सासक सिसु उपयाम इक१किय ॥
कछवाहनके रामपुर, ——कुमरि २०३।१ स नाम सवय तिय६२
इम सबही भावी३ इहाँ, सब बंधुन प्रभुके बिवाह१ सुत२ ॥
सब संतानन व्याह बलि, जंपिय अवसर रीति जथा जुत ॥ ६३ ॥

१ भूषण युक्त कन्यादान करनेवाले आपने २ श्रेष्ट दहेज देकर परणाई ॥ ५७ ॥ ३ काका के पुत्र ४ भाग्य ने उसका फल दिया ५ विना घर ६ विना मणिवाला क्षीण सर्प फिरै तैसे ॥ ५८ ॥ ७रियां नगर का पति ॥ ५९ ॥ ८ ताव (तप) से प्राण रहित हुआ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ९ कापरण के पति ने बालपन में एक व्याह किया ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

कारन पाइ प्रसंग कहुँ, भूत१ कथा क्रम भूप ॥
बर्तमान२ अब वर्णियत, अप्प चरित[1] अनुरूप॥ ६४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

धाइपनाँ प्रभु अप्प [2]धवाये, इम कौमार१ लंघि इत आये ॥
अवसर पर क्रीड़न क्रम आयो, बलि पौगंड[3]२ अनेह बितायो॥६५॥
दसम१०अब्द अंतर दिन[4]दुल्लह, स्वामी हुव धरि धर्म१नीति २सह॥
तबहि कालक्रीड़ा सब त्यागी, राजन रीति गही अनुरागी ॥ ६६॥
सधि सुकवि१ [5]बुधर [6]भट३न समागम, आदरि हित सझुझे सब आगम[7] ॥
श्रीगुरु आसानंद१ [8]समज्या, बरनैं आदि नृपन [9]वरिज्ज्या ॥६७॥
पुनि कवि जनक[10] चंड१खिनपावत, [11]सन्निधि रहि [12]पद्धति समुझावत॥
सह दुर्जनसल्ल१दि [13]वयस्यन, महिप [14]विधेय सुनैं सु धरैं मन।६८।

॥ दोहा ॥

बिधिसह लिन्नौं ताहि वय, बेद [15]बिहित उपवीत ॥
[16]सावित्री जप निज समय, सद्धैं पटुन प्रतीत ॥ ६९ ॥

१ आपके सदृश चरित्र का अब वर्णन कियाजाता है ॥ ६४ ॥ २ हे प्रभु (रामसिंह) आपको पना नामक धायने स्तन पान कराया (चुंखाया). ३पौगंडता का समय विताया "पांच वर्ष की अवस्था से लेकर दस वर्ष की अवस्था का नाम पौगंड है" ॥ ६५ ॥ ४ प्रतिदिन दुल्लह के समान रहनेवाला ॥ ६६ ॥ श्रेष्ठ कवि ५ पण्डित और ६ उमरावों का समागम साधकर. आदर के साथ हित करके सब ७ शास्त्र समझे ८ सभा में ९ प्राचीन राजाओं के आचरणों का वर्णन करता है ॥ ६७ ॥ समय पाने पर कवि सूर्यमल्ल के १० पिता चण्डी दान ११ समीप रहकर १२ राजाओं का मार्ग समझाता है सो दुर्जनशाल आदि १३ समान अवस्थावालों के साथ राजा(रामसिंह)१४उचित समझता है उसी को धारण करता है अथवा राजा के उचित समझता है उसीको धारण करता है॥६८॥१५वेद के कथनानुसार जनेऊ ली१६गायत्री के जप॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

पाइ दसम१० समैं पट्ठ सुपहु पटु राम२०।१४ सम्हारिय ॥
श्रुति निषेध१ विधि२ समुझि हेय३१ आदेय२ निहारिय ॥
व्याकृति१ शिक्षा२ वृत्त३ कल्प४ ज्योतिष५ निरुक्त६क्रम ॥
बदन१ नक्र२ पय३ बाहु४ नयन५ श्रुति६ निज छह६ अंग छम ॥
श्रुति चउ४ऋगादि४बिज्जादसक१०मीमांसा११पुनि तर्क१२मत ॥
स्मृति१३अरु पुरान१४चउदह१४सुपहु श्रवन किन्न बिद्या ततहु७०

॥ दोहा ॥

रचहिं नित्य संसद१२ रसिक, बुधजन दुल्लभहु बुल्लि ॥
नाँहिं लखैं व्यय१३ ओर नृप, तत्व लखन दृढ तुल्लि ॥७१॥
पहु तद्वय१४ पुच्छिय पटुन, अज्जावत्त१५ अगार ॥
कति हित मग्ग१कुमग्ग२ कति, कति अद्दग३अनुकार७२

॥ षट्पात् ॥

सूरिन१७ अक्खिय सुनहु सिसुहि पृच्छक१८ पहु सादर ॥

१दशम वर्ष में पाठ पाकर२वेदमें कहेहुए निषेध और विधिको समझकर३त्यागने और४ग्रहण करने के कर्तव्योंको देखे५व्याकरण, शिक्षा, छन्द, कल्प[श्रौतसूत्र] ज्योतिष और निरुक्त, यथा क्रमसे वेद के६मुख,७नासिका, पैर, हाथ, नेत्र और कर्ण (कान) इन छः अंगों और ९ऋग्वेद आदि चार वेद, ये दश विद्याएं और मीमांसा १०तर्क शास्त्र, स्मृति और पुराण, ये मिलकर चौदह विद्याएं ८ उस समर्थ राजा ने११वहीं (उसी अवस्था में) श्रवण कीं॥७०॥वह रसिक राजा दुर्लभ पण्डितोंको भी बुलाकर नित्य१२सभा करता है और तत्व को पहिचानना दृढ तोलकर१३खर्च की ओर नहीं देखता है ॥ ७१ ॥ १४ उसी अवस्था में राजा ने विद्वानों से पूछा कि१५आर्यावर्त स्थान में हित के मार्ग कितने हैं और कुमार्ग कितने हैं और १६[ ]के सदृश कितने हैं "यहां मूल में [अद्दग] शब्द है इसका आगे कुछ वर्णन नहीं है और न यह शब्द कहीं मिलता है इस कारण हमने इसका विवरण करना छोड़ दिया है सो पण्डित लोग विचार लेवें"॥७२॥ १७ पण्डितों ने कहा कि हे १८ पूछनेवाले बालक राजा आदर सहित सुनो अथवा पूछनेवाला बालक राजा भी आदर योग्य है सो सुनो.

श्रुति मत कहियत सरनि१ ताहि उज्झन कुसरनि२ तर ॥
मन्नहु श्रुति सु त्रि३मग्ग चरम३ खट६ भेद बिचारहु ॥
अधिकारी जन उचित धीन नानागति धारहु ॥
समुझहु त्रि३मग्ग पहिलैं श्रुतिहु जहँ कृति१पुव्व२सु अति जड़१न
मध्य२न उपास्ति२ दूजो२ महिप अद्वय३।३ तीजो३ उत्तम३न ।७३।

॥ दोहा ॥

तीजो३ मग्गहु छ६बिधि तँहँ, पहिलो१ त्रिक३ प्राकार ॥
उत्तर उत्तर त्रिक३ अपर२, सुभ फल मति अनुसार ॥७४॥
जैन १ बौद्ध२है कुपथ२ जिम, लोकायत३ गिनिलेहु ॥

१वेद का मत २मार्ग कहा जाता है और उसको ३छोड़ना ४अत्यन्त कुमार्ग है तहां वेद के तीन मार्ग जानो और ५ अंतिम के छः भेद विचारो और अधिकारी लोकों की ६ बुद्धियों के योग्य नाना प्रकार जानो. पहिले वेद के तीन मार्ग समझो. जिनमें पहिला कर्म मार्ग (कर्मकांड) अत्यन्त अज्ञानियों के लिये है और हे राजा दूसरा उपासना मार्ग मध्य (जिनको ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ और कर्मों में आसक्त हैं उन) लोकों के लिये है और तीसरा ७ अद्वैत मार्ग उत्तम लोकों के लिये है ॥ ७३ ॥ तीसरा मार्ग (ज्ञान मार्ग) छः प्रकार का है जिनमें पहिला तीन ८ प्रकार का है अर्थात् न्याय, पूर्वमीमांसा और वैशेषिक भेदवाले द्वैतवादी हैं अर्थात् जीव और ईश्वर को भिन्न माननेवाले हैं और बाकी के ९ अन्य तीन अर्थात् सांख्य, योग्य और उत्तरमीमांसा [वेदान्त] ये बुद्धि के अनुसार उत्तरोत्तर शुभ फल देनेवाले हैं ॥ ७४ ॥ १०वेद को नहीं मान नेवाले कुमार्ग छः हैं जिनमें एक तो जैन (*), दूसरा बौद्ध जो चार प्रकार का है, और तीसरा ११चार्वाक[देहात्मवादी]अर्थात् एक जैन, चार बौद्ध और छठा

(*)जैनमत का कुछ विवेचन हमने इस ग्रन्थ के चतुर्थराशि में वीसलदेव के चरित्र की टीका में लिखा है उसके उपरान्त प्रकरण वश कुछ यहां पर लिखाजाता है कि, कर्मफल को देनेवाले और जगत् का नित्यमूल कारण जो ईश्वर है उसका स्वीकार यह(जैन)मत नहीं करता. जैन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये तीन प्रमाण मानते हैं, वे आगम सर्वज्ञके शब्द हैं. मनुष्य ही उत्तम ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चारित्रसे आवरणका नाश करके सर्वज्ञ बनसकता है "जिनको जैनी सर्वज्ञ पुरुष मानते हैं वे चौवीस तो अवसर्पिणी(भूत) काल में होगये, चौवीस वर्तमान काल में हुए और चौवीस उत्सर्पिणी (भविष्यत्) काल में होवेंगे और वर्तमान काल में, पहिले ऋषभदेव, तेवीसमे पार्श्वनाथ और चौवीसमे महावीर हुए जिन्हीं का जैनियों में पूजन

होता है" जीव मात्र पर दया करने को वे मुख्य धर्म समझते हैं, इस मत में जीव और अजीव ये दो मुख्य तत्व मानेजाते हैं, ये दोनों अनादि और अनन्त हैं, कितनेएक पदार्थकी व्यवस्था नौ प्रकार की करते हैं अर्थात् जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष. इनके भी कई अवांतर भेद मानते हैं, जैनोंकी प्रसिद्धक्रिया "सप्तभंगीनय" है. यथा- "स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिचनास्ति, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्तिचावक्तव्यः, स्यान्नास्तिचावक्तव्यः, स्यादस्तिनास्तिचावक्तव्यः ॥" इन सात भंगियों को स्वीकार करने से वे स्याद्वादी कहाते हैं इनका विशेष वर्णन 'सर्वदर्शनसंग्रह' में देखो. जो जैन संसार का त्याग करते हैं वे 'यति' और जो गृहस्थाश्रम में रहते हैं वे 'श्रावक' कहाते हैं. जैनों में दिगंबर और श्वेतांबर ये दो मुख्य वर्ग हैं, इनके लक्षण और भेद विस्तार के भय से यहां नहीं लिख सकते.

बौद्धमत का दिग्दर्शन.

इस मतके आदि प्रवर्तक कपिल वस्तुके गौतम कुलके शाक्य राजा शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ हैं, इस मतमें प्रत्यक्ष और अनुमान ये दो प्रमाण मानेगये हैं, चार भावना से पुरुषार्थ की प्राप्ति मानीजाती है. यथा- "सब क्षणिक है, सब दुःख है, सब स्वलक्षण है (एक जैसा दूसरा नहीं) सब शून्य है, भावमात्र सत् भी नहीं है, असत् भी नहींहै, सदसत् नहीं है ऐसा भी नहीं है, वह अनिर्वचनीय और निस्वभावहै. एकही गुरुके एकही उपदेश पर चार शिष्योंने चार प्रकारके सिद्धान्त बांधे, यथा सौत्रान्तिक तो बाह्यवस्तु को केवल शून्य नहीं मानते परन्तु उसको अनुमेय मानते हैं. और वैभाषिक, बाह्यपदार्थ को प्रत्यक्ष मानते हैं और सविकल्प ज्ञानको अप्रमाण और निर्विकल्प ज्ञान को प्रमाण मानते हैं. योगाचार, अज्ञात के ज्ञान की प्राप्ति के लिये पूछने को "योग" और गुरु के कथित अर्थके अंगीकारको "आचार" कहते हैं, चारों भावना को निर्वाण का हेतु मानते हैं और बाह्य पदार्थ को शून्य मानते हैं परन्तु भीतर अर्थ-बुद्धि का स्वीकार करते हैं. माध्यमिक, एकही पदार्थ में भिन्न भिन्न मनुष्यों की भिन्न भिन्न कल्पना होने से पदार्थ मात्रको केवल शून्य रूप मानकर सर्व शून्यत्व का अंगीकार करते हैं बौद्धोंमें यही चार भेद हैं. जिनके सिद्धान्त ऊपर लिखे अनुसार हैं, इनका अधिक विवेचन स्थानाभाव के कारण यहां नहीं होसकता॥

॥ चार्वाक मतकी संक्षेप सूचना ॥

इस मतका आदि प्रवर्तक बृहस्पति कहा जाता है, इसमें ज्ञान साधन के लिये केवल प्रत्यक्ष प्रमाण मानाजाता है, अनुमान और शब्द प्रमाण को नहीं मानते, अतः ईश्वर और परलोक प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न होने के कारण वे इन दोनों को नहीं मानते, सृष्टिको स्वभाव से मानकर इसका कोई कर्ता नहीं मानते, आत्मा को देहसे अभिन्न मानकर देहके सुखकोही पुरुषार्थ मानते हैं और मरनेकोही मोक्ष मानते हैं, इसी मतका दूसरा नाम लोकायत है (लोक में फैलाहुआ) अर्थात् इसमें अर्थ और काम की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है और इन दोनों की कामना लोक में स्वतः और सर्वत्र देखीजाती है. इनके सिद्धान्तके कुछ श्लोक संसारमें प्रसिद्ध हैं उनमें से तीन श्लोक पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे लिखतेहैं॥

श्लोक-त्रयो वेदस्य कर्तारो भांडधूर्त निशाचराः। जर्फरी तुर्फरीत्यादि पंडितानां वचः स्मृतम् ॥ १ ॥

यावज्जीवं सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥

पतिहीना तु या नारी पत्नीहीनश्च यः पुमान्। उभाभ्यां रण्डरण्डाभ्यां न दोषो मनुरब्रवीत्॥ ३ ॥

बौद्ध२ तहाँ चउ४ भेद बलि, इम नास्तिक छ६हि एहु ॥७५॥
सौत्रांतिक१ वैभाषिक२ रु, योगाचार३हु आहि ॥
चउम४ माध्यमिक४ च्यारि४ही, सौगत सून्य समाहि ॥७६॥
लि३ प्रथम१ श्रुति कहिय तहँ, सहँसअसी८०००० श्रुति मानैं ॥
कर्म१ धर्म२हेतुक करन, पहिलो१ यह सोपानैं ॥ ७७ ॥
निजमति बोध१ रु भक्ति२ जुग२, पापहेतु प्रकटैन ॥
तिन अध्वग अंधन तरन, यह१ दिखात श्रुति ऐन ॥७८॥
कर्म उचित करतहि करत, इहिँ मग अध्वग आइ ॥
गम्य सुद्धमति ह्वै गहत, बहु भव मिजल बिताइ ॥७९॥
जे संसृति सन बिरत जन, स्वसुखहिँ जानि सकैन ॥
पथ तिन्ह मध्य२ उपासना२, प्रतिगति इमहु पकैन ॥ ८० ॥
यह अक्खत सोलहसहँस१६०००, श्रुति द्वितीय२ सोपान ॥
जन्म१ मरन२ औषध यह२हु, प्रभुदासत्व प्रधान ॥ ८१ ॥

चार्वाक है इन्हीं छहों को नास्तिक जानो ॥ ७५ ॥ सौत्रान्तिक, वैभाषिक, योगाचार और माध्यमिक ये चारों ही १ बुद्ध के २ शून्य भेद में समाजाते हैं ॥७६॥ अब वेद के उपरोक्त तीन मार्गों को कहते हैं कि प्रथम कर्मकांड पर कर्म और धर्म करने के निमित्त अस्सी हजार ३ गणनावाली श्रुतियां हैं जो यह ४ पहिली सीढी है ॥ ७७ ॥ पाप के कारण जिनकी निज बुद्धि में ज्ञान और भक्ति प्रकट नहीं होवै उन संसारी अंधे पथिकों के तिरने के लिये वेद यह मार्ग दिखाता है ॥ ७८ ॥ ५ पथिक (संसारी) इस मार्ग पर आकर उचित कर्म करते करते ७ कई जन्मों की मंजिलों को बिताकर निर्मल बुद्धि होकर ६ पहुंचने योग्य स्थान (मुक्ति) को पहुंचता है ॥ ७९ ॥ जो मनुष्य ८ संसार से तो विरक्त हैं परन्तु ९ आत्मसुख(आत्मज्ञान)को नहीं जान सकते उनके लिये बीच का मार्ग उपासनाकांड (भक्ति) है जिससे भी मुक्ति होती है परन्तु उपरोक्त मार्ग के अनुसार एक ही जन्म में १० निश्चय ही मुक्ति होवेगी ऐसा परिपक्व नहीं होता क्योंकि इसमें द्वैत भाव रहता है ॥ ८० ॥ ११ इस दूसरी सीढी को सोलह हजार श्रुतियां कहती हैं जिसमें १२ ईश्वर का दास भाव प्रधान होने से यह भी जन्म मरण की औषधि है ॥ ८१ ॥

चपारिसहँस४००० खिल श्रुति चवहिं, ब्रह्म१ जीव२ इक बोध॥
आरोहन तीजो३ यहे, रंचन जहँ थिति रोध ॥ ८२ ॥
पहिली१ सीढी कर्म१ पर, स्मृति१ पुरान२ सब सार्थ ॥
वामा१दिक भ्रामक बहुरि, पथ जिहिं निंद्य अपार्थ ॥८३॥
भक्ति२ अनन्या भाखियत, सुभ दूजो२ सोपान ॥
पंचरात्र मुख ताहि पर, तांत्रिक ग्रंथ वितान ॥ ८४ ॥
साधत यहहु उपासना२, प्रभु व्है भक्ति प्रसन्न ॥
रचत भक्त उर बोध रवि, आकृत सब करि अन्न ॥ ८५ ॥
तत्व१ बोध बिनु मुक्ति२ तियं, भोगी इतर भिरैंन ॥
सततं पुकारत बेदसिरं, बारबार यह बैंन ॥ ८६ ॥
इहिं तीजे३ आरोह पर, श्रुतिसिर१ प्रमिति असेस ॥
व्याससूत्र१ तिनपर बहुरि, योग२ सांख्य३ त्रिक३ एस ॥८७॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्र

१बाकी की चार हजार श्रुतियां ब्रह्म और जीव के एक होने का ज्ञान कहती हैं यह२तीसरी सीढी है जिसमें मोक्ष की रंच मात्र भी रुकावट नहीं है ॥ ८२ ॥ कर्मकांड रूप पहिली सीढी पर स्मृति और पुराण हैं सो तो सार्थक (सत्य)हैं. फिर जो वाम (कौल) मार्ग आदि ३ भ्रमोत्पादक मार्ग हैं सो निन्दनीय और ४ अर्थशून्य (झूठे) हैं ॥ ८३ ॥ ५ जिसमें अनन्या भक्ति [भक्त को जिसके समान संसार में कोई अन्य पदार्थ नहीं दीखता]होवे वह श्रेष्ट दूसरी सीढी है जिस पर ६ नारदपंचरात्र आदि तांत्रिक ग्रंथों का ७ विस्तार है ॥ ८४ ॥ इस उपासना के साधने की भक्ति पर ईश्वर प्रसन्न होकर आकारवाले सब पदार्थों को ९ भक्षण (नष्ट) करके भक्त के हृदय में ८ ज्ञान रूपी सूर्य को उदय करता है ॥ ८५ ॥ तत्वज्ञान के विना ११ अन्यभोगी १० मुक्ति रूपी स्त्री से नहीं भिड़सकता सो यह वचन १३ उपनिषद् १२ निरंतर (वारंवार) पुकारते हैं ॥८६॥ इस तीसरी १४ सीढी पर १५ प्रमाण युक्त सब उपनिषद् हैं और उन पर फिर व्याससूत्र (वेदान्तसूत्र) योग और सांख्य ये तीनों हैं॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह का बुंदी की गद्दी पर बैठना १

रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहपट्टोपवेशन१ ससोदररावराजाविवा
हसन्तानवर्णन २ रामसिंहश्रेष्ठशिक्षाश्रवणपण्डितसकाशधर्मवर्त्म
प्रश्नवर्णनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितः त्रिषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उत्तरमीमांसा१ इहाँ, प्रथम१ उक्त सोपान ॥
यह १ हि मुक्ति फल याहितैं, मुख्य बेद सिर मान ॥ १ ॥
बाक्य तत्वमसि१ मुख बदत, जीव१ ब्रह्म१ इक जत्थ ॥
सत१ अनंत२ चित३ बोध४ सुख५ सत्य६ असंग७समत्थ८॥२॥
सब प्राकृत३२ कल्पित असत, जिम गुन१ माँहिं भुजंग२॥
केवल यह मन कल्पना, इक१ खिल आप१ अभंग ॥३॥

षट्पात् ॥

ब्रह्म स्वसुख प्रतिबिंब१ सहित जो प्रकृति२त्रि३ गुन सम ॥
अधिष्ठान३ जुत यह२ हि ईस२ कहियत अमुधोद्यम ॥

भाइयों सहित रावराजाके विवाह और संतानों का वर्णन२ रामसिंह का श्रेष्ठ शिक्षा को सुनना और पण्डितों से धर्म मार्गों के पूछने के वर्णन का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीन सौ तेसठ ३६३ मयूख हुए ॥
यहां १ उक्त (तीसरी) सीढी पर उत्तरमीमांसा वेदान्त प्रथम है इसीसे मुक्ति रूप फल मिलता है इसी कारण से उपनिषदों में इसको मुख्य माना है ॥१॥
जहां तत्वमसि २आदि वाक्य जीव और ब्रह्म की एकता कहते हैं जिस [ब्रह्म] का स्वरूप सत्, अनन्त, चित्, ज्ञान, आनंद, सत्य, असंग और समर्थ है ॥२॥
३सब प्रकृति संबंधी पदार्थ(संसार)कल्पित है४असत (अस्थिर)है जैसे रस्सी में ५ सर्प का होना कल्पित है वैसे ही यह संसार मन की कल्पना है बाकी एक ६ ईश्वर ही अखंड है ॥ ३ ॥ स्वयं सुख रूप ब्रह्म के प्रतिबिंब सहित जो तीन गुणों की [सत्त्व रज तमकी] साम्यावस्था[एक हालत] है उसीको प्रकृति

सत्व१ विमल माया२ सु तत्थ यह बिंब२ ईस२ तिम ॥
मलिन१ अविद्या२ माँहिं जीव३ तस बस अनेक जिम ॥
माया१ उपाधि ईस्वर२ स्ववस जीव३ अविद्योपाधि२वस ॥
कारन सरीर१ ताकौं कहत अभिमंता तँहँ प्राज्ञ१ अस१।४।

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गुरूपजातिः॥

प्राज्ञ१स्य भोगाय तदीश्वरेच्छया तमःप्रधानप्रकृतेः समुत्थितम् ॥
ख१वायु२तेजों३बु४भुवः५समाख्यया शब्दादिकं५प्राकृतभूतपंचकम्५

॥ आर्या ॥

पञ्चा५नां भूतानां सत्वांशैः पञ्च ५ बुद्धिकरणानि ॥
श्रोत्र१त्वग्२दृग्३रसन४घ्राण५समाख्यानि जातानि ॥
तैः सर्वैः सत्वांशैरन्तःकरणं१ द्विधे२ति वृत्तिभिदा ॥
तत्र विमर्शात्म मनो१ निश्चयवृत्यात्मिका बुद्धिः२ ॥ ७ ॥
भूतानां५ च रजोंशैः५ क्रमेण पञ्चैव५ कर्मकरणानि ॥

कहते हैं, अधिष्ठान होने से उसीकी ईश्वर संज्ञा होती है, उस माया में उस विशुद्ध आत्मा का बिंब जैसे ईश्वर होता है वैसे ही अविद्या में मैला होकर जीव कहाता है और उस अविद्या ही के वश से वह अनेक होता है, माया उपाधि से ईश्वर स्वतंत्र है और जीव अविद्या की उपाधि से परतंत्र है, उसी को कारण स्वरूप कहते हैं, अर्थात् अविद्या में जीव की प्रथम बंधनावस्था को ही कारण शरीर कहतेहैं, जीव जब उस कारण शरीरमें अभिमान युक्त होता है तब उसको प्राज्ञ कहते हैं॥ ४ ॥ उस ईश्वर की इच्छा से प्राज्ञ शरीराभिमानी चेतन [जीव] के भोग [सुख दुःख] के अनुभव के लिये तम गुण प्रधान प्रकृति से आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी नामक तत्व और उनके क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पांच गुण उत्पन्न हुए ॥ ५ ॥ इन पांचों तत्वों के सतोगुण अंशों से क्रमशः कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक नामक पांच ज्ञानेंद्रियां उत्पन्न हुईं॥६॥ उन्हीं सतोगुण अंशों से अंतःकरण हुआ जो वृत्ति भेद से दो प्रकार का है जिनमें विचारात्मक स्थितिवाला मन और निश्चयात्मक स्थितिवाली बुद्धि है॥ ७ ॥ उक्त पंच महाभूतों के रजोगुण के अंशों

वाक्१पाणि२पाद३पायू४पस्थ५समाख्यानि जातानि ॥ ८ ॥
पञ्च५भिरेव रजोंशैरेतैः प्राणः१ स पञ्च५धा वृत्या॥
प्राणा१पान२समानो३दान४व्यानाः५ समाख्याभिः ॥ ९ ॥
धीन्द्रियपञ्चक५कृतिखशरैः५ प्राणपञ्चके५श्च तथा॥
मनसा१।१६धिया१।१७शरीरंसूक्ष्मंसप्तदशभिः१७र्लिङ्गम्॥१०॥
प्राज्ञ१स्तु तदभिमानात्तैजस२सञ्ज्ञामियात्स हि व्यष्टिः ॥
स हिरण्यगर्भ२सञ्ज्ञामेतीश्वर१ एष तु समष्टिः ॥ ११ ॥
ये ऽविद्यावैचित्र्याद्व्यष्टयव्यास्ते तु तैजसा२ नाना ॥
सर्वेषां तादात्म्यादीश्वर एकः१ समष्ट्याख्यः ॥ १२ ॥
व्यष्ट्य२भिधानां भुक्त्यै सभोग्य१भोगायतन२मनुष्ठातुम् ॥
पञ्ची५कृतमीशेन प्रत्येकं१ पञ्चकं५ खादि ॥ १३ ॥
द्विदलीकृत्यैकैक१कं१ दलमेकैक१कं विभज्य च चतुर्द्धा४ ॥

से क्रमशः वाणी, हाथ, पैर, गुदा और लिंग ये पांच कर्मेन्द्रियां हुईं॥८॥ इन्हीं रजोगुण के पांच अंशों से प्राण उत्पन्न हुआ जो वृत्ति भेद से प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान इन नामों से पांच प्रकारका है॥९॥ पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि, इन सत्रह से सूक्ष्म शरीर बना जिस का दूसरा नाम लिंग शरीर है ॥१०॥ उस सूक्ष्म शरीर के अहंकार से प्राज्ञ की तैजस संज्ञा हुई जो व्यष्टि रूप समष्टिका अंश अर्थात् एक देशव्यापीहै और वही ईश्वर हिरण्यगर्भ संज्ञा को प्राप्त हुआ वह समष्टि सर्वव्यापी है ॥ ११ ॥ जो चेतन अविद्या की विचित्रता से व्यष्टि होने योग्य हैं वे तैजस अनेक हैं और इन सबका ईश्वर से तद्रूप अभेद होने से समष्टि नामवाला ईश्वर एक है॥१२॥ व्यष्टियों[तैजसों]को भोगके अर्थ भोग्य(भोगने योग्य पदार्थ) और भोगायतन (जिससे भोग भोगेजावैं ऐसा स्थूल शरीर) बनाने के लिये ईश्वर ने आकाश आदि पांचों तत्वों का पंचीकरण किया॥ १३॥ वह पंची करण इस प्रकार से है कि पांचों प्रत्येक तत्व के आधे आधे बराबर दो दो भाग करके उनमें पांचों तत्वों के पांच आधे भागों को तो वैसे ही रहने दिये और बाकी के आधे आधे पांच भागों में प्रत्येक के चार चार विभाग करके फिर इन प्रत्येक पांचों अष्टमांश भागों को उन प्रत्येक अर्ध भागों में ऐसे

भागानपर२दलै२स्तान्संयोज्य च पञ्च पञ्चेति ॥ १४ ॥
तै५र२ण्डं तत्र च भुवन१भोग्य२भोगायतन३मसृजदीशः ॥
स्थूले३ हिरण्यगर्भो२ देहे वैश्वानर३त्वमितः ॥ १५ ॥
तैजस२सञ्ज्ञा विश्वा३भिधानमीयुर्ह्यविद्यया२ जीवाः२ ॥
सुर१नर२तिर्य३क्त्वभिदा परा२ग्द्दशोन्तर१स्वगतिमूढाः ॥१६॥
कुर्वन्ति कर्म भुक्त्यै कृत्वा कर्माऽपि भुञ्जते तत्तत् ॥
न लभन्ते स१च्चि१त्सुख१मनुयान्तो जन्मनो जन्म॥ १७ ॥
स्वस्वहृदाहितमिथ्याद्वैत२सदास्थाः सदैव तप्यन्ते॥
आवर्तादावर्तं यान्तो नद्यां यथा कृमयः॥ १८ ॥
सत्कर्मोदर्कबलाद्यो यस्तेषूपदेशमेत्य गुरोः॥
स्वयमद्वैती१भवति हि स स जीवन्मुक्त उद्दिष्टः॥ १९ ॥

मिलाये कि जिससे आधा तो एक तत्व और आधे में बाकी के चार तत्वों के चार अष्टमांश भाग मिलाकर पूरा तत्व बना दिया. जैसे आकाश तत्व के आधे भाग में बाकी चार तत्वों के अर्थात् आकाश के अष्टमांश को छोड़कर शेष वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन चारोंका एक एक अष्टमांश आकाश के उस अर्ध भाग में मिलाकर आकाश तत्व को पूरा किया इसी प्रकार के संयोग से पांचों तत्वों का परस्पर पंचीकरण किया ॥ १४ ॥ उन पंचीकृत पांचों तत्वों से ईश्वर ने ब्रह्मांड बनाया, उस ब्रह्मांड में चौदह भुवन (लोक) बनाये और उन भुवनों में भोग्य पदार्थ भोगायतन(भोगके घर)अर्थात् स्थूल शरीर बनाये इस प्रकार स्थूल शरीर होने पर हिरण्यगर्भ वैश्वानर संज्ञा को प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ स्थूल शरीरमें अविद्या के कारण तैजस नामवाले जीव विश्व नामको प्राप्तहुए; जो सुर, नर, पशु, पक्षि इन भेदोंवाले बहिर्दृष्टि होने के कारण अभ्यंतरदृष्टि (आत्मज्ञान) से मूढ हैं॥१६॥ वे जीव भोगके अर्थ कर्म करते हैं और कर्म करके उस उस फलको भोगते हैं, इस प्रकार जन्म जन्मान्तर में फिरते हुए भी सच्चिदानंद रूप परब्रह्म को नहीं पाते॥१७॥ वे जीव अपने आप हृदयमें ठहराये हुए मिथ्या द्वैत भाव में आस्था रखकर नदी के एक चक्र से दूसरे चक्र में पड़नेवाले कीड़ों के समान सदा ही दुःख पाते हैं ॥१८॥ इन में से जिन जीवों के सत्कर्मों का उदय होता है वे उस कर्मफल के बल से गुरु के उपदेश को पाकर स्वयं अद्वैत [अहंब्रह्मास्मि]होजाते हैं वे ही जीवन्मुक्त कहाते हैं ॥१९॥

श्रुतिशीर्षमहावाक्यात्तत्ता१हन्ते२ विहाय तदुपाधी ॥
स१च्चित्सुख१बोधा१त्मन्यस्मितयोना स्थितिः परमा ॥
येशस्येशनशक्तिर्नियामिका सर्ववस्तुजातस्य ॥
चित्प्रतिबिंबावेशाद्विभाति साऽचेतने चैव ॥ २१ ॥
तच्छक्त्युपाधियोगात्सद्ब्रह्मै१वेश्वरत्व२मुपयातम् ॥
कोशोपपाधिविवक्षा जीवं२ प्रत्याययति त१द्धि॥ २२ ॥
यो हि पिता१ सुत१योगात् स नप्तृ२योगात्पितामहो१प्येकः१॥
पितृ३योगेन स पुत्रः१ श्वसुरो१ जामातृ४योगेन ॥ २३ ॥
पुत्रा१द्युपाध्यसङ्गे क्व पिता१ क्व पितामहा२ङ्गजश्वसुराः४ ॥
द्वो२कोश१शक्त्यु२पाधी हित्वा तद्वन्न जीवे१शौ२ ॥ २४ ॥
ईशः२श्चिदधिष्टानं१ माया२ मायागतश्च चिद्विम्बः३ ॥
जीव१श्चिदधिष्ठानं१ लिङ्गतनु२स्तत्स्थचिद्विम्बः३ ॥२५॥

उपनिषदों [वेदान्त] के महावाक्यों [तत्वमसि] से तरे मेरे पन की उपाधियों को छोडकर सच्चिदानंद और ज्ञानमय ब्रह्म में अहंकार रहित स्थिति है वही परम मुक्ति है ॥ २० ॥ जो सब वस्तु मात्र को नियम में रखनेवाली ईश्वर की प्रभु शक्ति है वही प्रतिबिंब को पाकर चेतन स्वरूप में भासती (प्रकाशती) है ॥ २१ ॥ उसी शक्ति रूपी उपाधि के सम्बन्ध से सत् रूप ब्रह्म ईश्वर पन को प्राप्त हुआ है और वही (ब्रह्म) पंच कोशों की उपाधि (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय आत्माको आच्छादन करनेवाले ये पांच कोष हैं) योग से जीव भाव को प्राप्त हुआ है, ऐसी प्रतीति कराता है ॥ २२ ॥ जो पुत्र के संबंध से पिता है वही पौत्र के सम्बन्ध से पितामह (दादा) है और वही पिता के संबंधसे पुत्र है और जमाईके सम्बन्धसे श्वसुर है वास्तव में वह एक ही है, परन्तु संबंध भेद से भिन्न भिन्न कहाजाता है॥२३॥ यदि पुत्र आदि उपाधियां न होवें तो कहां पिता, कहां पितामह, कहां पुत्र और कहां श्वसुर है; वैसे ही कोश और शक्ति इन दोनों का त्याग किये पीछे न तो जीव है, और न ईश्वर है अर्थात् दोनों एकही है॥२४॥ चैतन्य का स्थान माया है और मायामें रहनेवाले चैतन्यका प्रतिबिंब है वह ईश्वर है और जहां चैतन्यका स्थान लिंग शरीर है उस लिंग शरीर में चैतन्यका बिंब है वह जीव है ॥२५॥ अन्न (स्थूल

अन्न१प्राण२मनो३बुद्ध्या४नन्दा५ख्येषु पञ्च५कोशेषु ॥
तैरावृत एका१त्मा स्वविस्मृतौ भ्रमति संसारम् ॥२६॥
एवं विचार्य्य विद्वान्नरस्य नानाभ्रमं सुखमवाप्य ॥
भ्रमनाशावधि दुःखमवगीर्य कूटस्थ आतिष्ठेत् ॥ २७ ॥
अस्य सचिव१सेनान्या२वात्मज्ञाना१ख्यसार्वभौमस्य॥
तौ साङ्ख्य१योग२संज्ञौ भेदत्रिक३तः सदस्यभिमतौ ॥ २८ ॥
आत्मसु भेदो१ जगति च तथ्यत्व२मथेश्वरोन्य३ इति भेदान्॥
त्यजतश्चेद्व्रजतस्तौ सम्राजा स्वेन साम्यमुभौ२ ॥२९॥
धीर्व्याकुला न येषां ये चैक्यज्ञानविस्तृतात्मानः ॥
स्वैकात्मबोध१मेष प्राप्यत इति तैः सकृत्सुखतः ॥ ३० ॥
येषां बुद्धिर्मलिनाऽनन्तकलुषकर्म्मभिर्भ्रमोदर्कैः॥

शरीर) प्राण, मन, बुद्धि, आनंद नामक इन पांच कोशों से ढका हुआ आत्मा जो एक अद्वितीय, ईश्वर से भेद रहित है वह अपने स्वरूप को भूल जाने के कारण उक्त पांच कोशों में आसक्त होकर संसार में भ्रमता है "अन्न जल से उत्पन्न और पुष्ट हुआ स्थूल शरीर अन्नमय कोश है, पांच कर्मेन्द्रियां और पांच प्राण यह प्राणमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रियां और मन यह मनोमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रियां और बुद्धि यह विज्ञानमय कोश है, और पुण्य कर्म के फल से दक्षिण अन्तर सुख हुई वृत्ति आनंदमय कोश है, ये ही पांच कोश जीव को आच्छादन करनेवाले हैं" ॥ २६ ॥ इस प्रकार विचार करके विद्वान् मानवीय सुख को नाना प्रकार का भ्रम रूप जानकर जब तक भ्रम का नाश नहीं होवे तब तक दुःख सहकर दृढ होकर रहे ॥ २७ ॥ स्वजातीय, विजातीय और स्वगत, इन तीन भेदों की निवृत्ति के वास्ते आत्मज्ञान रूपी राजा है जिसके सांख्यशास्त्र तो प्रधान और योग शास्त्र सेनापति हैं ॥२८॥ आत्माओं में भेद मानना, संसार को सत्य मानना और परमेश्वर को जीव और जगत् से भिन्न मानना, इन भेदों को यदि छोड दे तो वे दोनों सांख्य और योग इस जीव को राजा के बराबर आत्मज्ञानी करदेते हैं॥२९॥ जिनकी बुद्धि व्याकुल गड़बड़ नहीं है और जिनकी आत्मा अद्वैत ज्ञान से विस्तीर्ण है वे तुरंत सुख पूर्वक एकात्मज्ञान को पाते हैं ॥ ३० ॥ जिनकी बुद्धि भ्रम के फल रूप अनन्त कुत्सित कर्मों से मलिन है उनको प्रथम सांख्य और योग हितकारी

प्राक् तत्र सांख्य१योगौ२ हितौ यथा धीमलं हिंस्तः॥३१॥
सांख्य१सचिव२योग१चमुपबोध१नृप२स्यास्त्र१सैन्य२दुर्गादि ॥
मीमांसन१काणभुजा२ऽक्षपाद३मेतत्त्रयं सर्वम् ॥३२॥
धीनैर्मल्यविवृद्धौ केवलमन्त्यत्रिकोऽप्युपयोगोत्र ॥
प्राप्ते स्ववीर्यसाम्राज्येऽस्त्र१चमू२दुर्ग३चिन्ता का ॥३३॥
श्रुतिकोदिता तृतीया३ निर्मलतरसंविदध्वगारोह्या ॥
श्रीराम२०१४भूमिभृदियं विद्वद्भिरवाप्यते श्रेढी ॥३४॥

(इतिज्ञानकाण्डम्)

अस्या आदि१र्मध्या२ या श्रेढी सा ह्युपासनो२पाख्या ॥
सारूप्यमेति जीवो विश्रब्धोऽस्यां२ परम्परया ॥३५॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

श्रुति जिहिँ जंपित मध्य२ सो, उपासना२ अभिधान ॥
श्रेढी मध्यम२ नृप सुनहु, निखिल पै भक्ति निधान ॥ ३६ ॥
भिधान१ निधान२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हैं,क्योंकि वे बुद्धि के मल का नाश कर देतेहैं॥३१॥ जिस आत्मज्ञान रूप चक्र-वर्ती राजा के सांख्य तो सचिव और योग सेनापति हैं उसके मीमांसा, वैशेषिक और न्यायशास्त्र, ये तीनों क्रम से शस्त्र सेना और गढ हैं ॥ ३२ ॥ इन में पिछले तीनों मीमांसा, वैशेषिक, न्याय केवल बुद्धि की निर्मलता बढाने के उपयोगी हैं सो अपने पराक्रम से साम्राज्य प्राप्त कर लेने पर शस्त्र सेना और किले की फिर क्या आवश्यकता है? ॥३३॥ हे भूपति रामसिंह वेद की कही हुई निर्मल बुद्धिवाले पथिकों के चढने योग्य इस तीसरी सीढी को विद्वान् ही पातेहैं ॥३४॥ यह ज्ञानकांड समाप्त हुआ॥ अब आगे उपासनाकाण्ड कहते हैं॥ इस तीसरे सोपान से पहिले की जो उपासनाकाण्ड नामक मध्य[बीच] की सीढी है इस में भी विश्वास करनेवाला जीव परंपरासे सारूप्य मुक्तिको प्राप्त होता है ॥३५॥ वेद में जिसको उपासना१ नामक मध्यमार्ग कहा है, हे सबके पति और भक्ति के भंडार राजा रामसिंह उस(उपासनाकाण्ड)को सुनो ॥३६॥

इक१रस आप१ असंग१कौं, सूरिहु जानि सकै न ॥
सांख्य१रु योग२हुमैं समुझि, हाहा जिनकी व्है न ॥३७॥
मीमांसाऽऽदिक त्रय३ मनन, करिहु न बुद्धि रुकाइ ॥
सगुन ईस तबही समुझि, पटु निश्रेयस पाइ ॥३८॥

॥ षट्पात् ॥

नव९ विध भक्ति२ सुनियत जाहि प्रभुराम२०।१४भक्त जन॥
अबिरत कृतिं आचरहिं मोरि प्राकृत गनतैं मन ॥
श्रवन१ रु कीर्तन२ स्मरन३ अंघ्रिसेवन४ तिम अर्चनँ५ ॥
प्रनति६ दास्य७ सख्य८ पुनि नवम९ जहँ स्वात्म निवेदन९ ॥
ए भक्ति नव९हि मिलि त्रि३गुन अब सप्तबीस२७भेदन सहित
कर्ताहु भक्त१गुन३भेद करि मान त्रि३विध कहियत महित।३९।

॥ दोहा ॥

सप्तबीस२७ विध भक्ति सब, त्रि३विध भक्त करि ते२७हि॥
कहियत एकासीति८१ क्रम, जिन जिन जिम जिम जेहि४०

॥ षट्पात् ॥

एकरस और असग १ परमेश्वर को २ पंडित भी नहीं जानसकते [यहां 'आप्लृ व्याप्तौ' इस धातु से आप नाम सर्वव्यापी परमेश्वर का है] और खेद है कि सांख्य और योग में भी जिस परमात्मा की समझ नहीं है ॥३७॥ ३ मीमांसा, वैशेपिक और न्याय, इन तीनों के मनन करने से भी जिनकी बुद्धि स्थिर नहीं होती तब वे चतुर सगुण ब्रह्मको समझकर ४ मोक्ष पाते हैं ॥३८॥ हे प्रभु रामसिंह यह भक्ति नव प्रकार की है सो प्रकृति संबंधी (संसारके) पदार्थों से मन को मोड़कर भक्त लोक निरंतर भक्ति का ५ कार्य करते हैं, वह नवधा भक्ति श्रवण, कीर्तन, स्मरण ६ चरणसेवन ७ पूजन ८ वंदन९दासभाव१०सखाभाव और नवमी११अपनी आत्माको ईश्वरके अर्पण करदेना, ये नव ही प्रकार की भक्तियां तीन गुणों से सत्ताईस प्रकार की हैं और इन्हीं तीन गुणों के भेदों से १२ पूजनीय तीन प्रकार के भक्त कहते हैं॥३९॥ ये सत्ताईस भक्तियां तीन प्रकार के भक्तों के साथ मिलकर जिन जिन की जैसे जैसे होती हैं वे सब इक्यासी प्रकार की भक्तियां कहते हैं ॥४०॥

सात्विक१राजस२सुनहु भक्त तामस३ त्रय३ भूपति ॥
इन३ करि एकासीति८१ भक्ति पूर्वोक्त त्रिनव२७ भंति ॥
इह हिंसा१ दंभ२ अरु चित्त मच्छरपन३ चाहत ॥
तक्कैं भक्त तामसिय१ बलि सु कर्ता क्रोधी१ वंत ॥
जस१भोग२भुक्ति३चहि भक्त जब रचत भक्ति वह राजसिय
कर्ता१हि तत्थ कामी२कहत बहुत काम जिहिं हिय बसिय४१

॥ दोहा ॥

ईश्वरमैं कृति अप्पिकैं१, अघ नासन२ अनुरूप ॥
चाहि सठ्य प्रभु३ आचैं, भक्ति सात्विकिय३ भूप ॥४२॥
कर्ता१ कँहँ सात्विक३ कहत, सगुन भक्ति ए८१ सर्ब॥
कर्ता भक्त सकाम१ है, अब निष्काम२अखर्ब ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभु गुन सुनतहि१ पुरुष जानि अंतरजामी२ जिहिं ॥
बिनु फल३ बिनु ठ्यवधान४ ताक्कि एकाग्र चित्त५ तिहिं ॥

हे राजा वे भक्त १ सतोगुणी १ रजोगुणी और १ तमोगुणी, इन तीन प्रकार के भक्तों से पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकार की भक्ति मिलकर इक्यासी ४ प्रकार की होती है जो सुनो कि तमोगुणी भक्त हिंसा, कपट और ५मत्सरता करके भक्ति करता है सो ६ खेद है कि वह भक्ति करनेवाला क्रोधी होता है. और यश, संसार के पदार्थों के भोग और उत्तम भोजन चाहकर भक्ति करता है वह रजोगुणी भक्त है, वह भक्ति करनेवाला कामी कहलाता है कि जिस के हृदय में बहुत कामना बसती हैं ॥ ४१ ॥ हे राजा जो पापों का नाश करने को अपने उद्दश सब७कार्यों को ईश्वर में अर्पण करके ईश्वरको आराधनीय जानकर भक्ति करै वह सतोगुणी भक्ति है ॥ ४२ ॥ इसको सतोगुणी भक्त कहते हैं, ये सब इक्यासी प्रकार की सगुण भक्तियां हैं जिनका कर्ता कामना सहित है और अब आगे निष्काम(कामना रहित) भक्त कहता हूं जो सबमें ८ बड़ा है ॥ ४३ ॥ प्रभुके गुण सुनते ही उसे हिरण्यगर्भ (परब्रह्म) और अन्त र्यामी जानकर बिना फल और९आवरण रहित एकाग्रचित्त से देखें(ध्यानकरैं)

सागर१ गंगा२ सलिल३ जथा मन वृत्ति जमावहिं६ ॥
सांत१ दास्य२ रस सख्य३ रु सुचि४ वात्सल्य५ रमावहिं७ ॥
कति जन सु भक्ति निर्गुन१ कहत स्वांत बिसय इम कति सगुन२॥
कहिदेहु सकल अभिधान कछु प्रेम अतुल चहियत प्रगुन ॥४४॥

॥ मनोहरम् ॥

कहत परिच्छित१ ज्यों श्रवन१ तैं आप्तकाम,
व्याससुत२ कीर्तन२ तैं बिदित बखानिये ॥
स्मरन३ तैं दैत्यपति३ लच्छी४ पयसेवन४ तैं,
पूजन५ तैं पृथु५ से प्रतापी जिम जानिये ॥
बंदन६ तैं बिदित स्वफल्कसुतं६ पायो इष्ट,
दास्य७ तैं कपीस्वर७ प्रतीति पहिचानिये ॥
सख्य८ तैं किरीटी८ बलि९ स्वात्मके समर्पन९ तैं,
बलि९ से बिमुक्त पद प्रापित प्रमानिये ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

यह मध्यम२ श्रेढी इहाँ, भक्ति निरत हे भूप ॥

और जैसे १ समुद्र में गंगा का जल मिल जाता है तैसे मनकी वृत्तिको परमेश्वर में जमाते हैं और शान्तरस, दासभावरस, सखाभाव रस २ निर्मलभावरस और वात्सल्यरस से प्रभुको रमाते हैं. इस भक्ति को कितने ही लोग तो निर्गुण भक्ति और कितने ही इसकों ३ मनका विषय होने से सगुण भक्ति कहते हैं सो ४ नाम कुछ भी कहो परन्तु तुलना रहित ५ सरल गुणवाला अथवा प्रकृष्ट गुणवाला प्रेम होना चाहिये ॥ ४४ ॥ अब आगे नवधाभक्ति के उदाहरण दिखाते हैं कि श्रवण से राजा परीक्षित६स्वरूपानन्द से तृप्त हुआ, ७कीर्तन से शुकदेव प्रसिद्ध हुआ, स्मरण से ८ प्रह्लाद, चरणसेवन से ९ लक्ष्मी, पूजन से प्रतापी राजा पृथु, वंदन से १० श्वफल्क का पुत्र अक्रूर, दासभाव से ११ हनुमान्, सखाभाव से १२ अर्जुन, १३ फिर आत्मसमर्पण से १४ बलि दैत्य, ये इष्ट फल पाकर १५ मुक्तिको प्राप्त हुए मानो ॥ ४५ ॥ हे भक्ति में १६प्रीति करनेवाले राजा यह बीचकी सीढी है जिसमें निष्काम भक्ति से विष्णु भगवान् को प्राप्त होकर

हरि पावत निष्काम व्है, अंत मुक्ति अनुरूप ॥ ४६ ॥
तत्वबोध निरतहु तथा, भक्ति सहित हुव भूरि ॥
सिव१ बिरंचि२ सनकादि सम, प्रेम द्विधा२ रुचि पूरि ॥४७॥
दत्त१ रु कपिल२ बिदेह३ से, बहु रत केवल बोध ॥
व्यापहु भक्तिहु बोधमैं, बोधहि भिन्न बिरोध ॥४८॥

इत्युपास्तिकाण्डम् ॥

गीर्वाणभाषा आर्या ॥

भक्तेः श्रेढी प्रथमा १ यां स्वाधिष्ठाय धर्म्ममात्मीयम् ॥
आद्विजचाण्डालावधि कृत्वा कर्म्माप्नुते परमम् ॥ ४९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पात् ॥

इहाँ धर्म१ आचरन प्रथम१ श्रेढी जो भूपति ॥
सो सामान्य१ बिसेस२ गिनहु द्विरबिधरहि श्रुति संगति ॥
आदि१ बर्ण सन एह१ स्वपचँ परजंत समुद्धर ॥

१अंत में सादृश्य मुक्ति होजाती है ॥ ४६ ॥ २ तत्वज्ञान में लगकर भी शिव, ब्रह्मा, सनकादिकों के समान बहुत भक्ति सहित (भक्त) होकर रुचि पूर्वक दोनों (ज्ञान और भक्ति) में पूर्ण हुए हैं ॥ ४७ ॥ ३ दत्तात्रेय, कपिलदेव और ४ राजा जनक जैसे बहुत केवल अद्वैतज्ञान में ही प्रीति करनेवाले हुए हैं. और ज्ञान (आत्मज्ञान) में भी भक्ति होती है क्योंकि ज्ञान विरोध से भिन्न है इस कारण उसको भक्ति से भी विरोध नहीं है ॥ ४८ ॥

यह उपासनाकाण्ड समाप्त हुआ ॥ आगे कर्मकाण्ड कहते हैं ॥

भक्ति से पहिले जो कर्मकाण्ड रूपी प्रथम सीढी है जिसको पाकर अपने धर्म में स्थित होकर, कर्म करके ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल पर्यन्त परम पद (मोक्ष) को प्राप्त होते हैं ॥ ४९ ॥ हे राजा यहां अपने धर्म में चलने की जो प्रथम सीढी है वह ५ वेद से सम्बन्ध रखनेवाली सामान्य और विशेष, इन दो प्रकार की है जिनमें सामान्य धर्म का भार सब मनुष्य मात्र के ऊपर कहा है सो ६ ब्राह्मण से लेकर ७ चाण्डाल पर्यन्त का ८ उद्धार करनेवाला है और दूसरा

गहुगहु बढि वानी भटन भयानी धार धपानी मार मचैं ॥
ढालन लगि ढल्लरि के असि कल्लरि राव सु झल्लरि भाव रचैं॥
कटि हड्ड करक्कैं फिप्फ फरक्कैं तेग तरक्कैं एक उडैं ॥
चोटन असि चंडैं खंडैं खंडैं छोरि वितंडैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥
बिलु मत्थ दुवाहे संमु सिराहे चंडिय चाहे उट्ठि अरैं ॥
डोलैं गज डारे फुट्टि नगारे पत्थ हठारे बत्थ परैं ॥
गजदंत उपारैं कोप करारैं मीरन मारैं वीर बढैं ॥
कटि धार कृपानन गात सु गानन वीर बिमानन केक चढैं॥२२॥
जुग्गिनि जय जपैं कातर कंपैं बाजि बिझंपैं वेग वली ॥
लुत्थिन भुव छावैं वीर बढावैं मिच्चु न मावैं छोह छली ॥
कोटेस बिनाँ हय छंडि महा गय रुट्ठि बडे रय रारि रुप्यो॥
गज बाजि गहम्मह कूह कहक्कह ग्रंघ ग्रहल्लह लोक लुप्यो ॥२३॥

[दोहा]

कोटापति किलकत पर्यो, आलम दल सिर आय ॥
करि सु संध चंडासि कुल, तुट्यो आसिन अघाय ॥ २४ ॥

स्तु वशा वसे' त्यमरः ॥ २० ॥ गहुगहुइति ॥ धपानी धपायवेवारी. केकितेक. असि खड्ग. कल्लरि कालरेकहैकैं. राव शब्द. झल्लरिभाव देवालयमैं वाद्य विशे-ष ताकी तरह. फिफ लोकै फेफरा. तेग खड्ग. तरक्के तडाकैं. एक केवल 'एकं संख्यातरे श्रेष्ठे केवले तरथाऽपि च' तिमेदिनी॥ वितंडैं वेतंडोंके. गुडैं गुड हस्तीकी सिलह. तहां बहुवचनसैं ऐकार है ॥ 'गुडकं हस्तिसन्नाहः' इतिमेदिनी ॥ ॥ २१ ॥ बिलुइति ॥ दुवाहे दोऊ हस्तों से तुल्य प्रहार करैं ते. गजडारे गजन के पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष तिनकों. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननकों ॥ २२ ॥ जुग्गिनिइति ॥ जंपैं कहैं. बिझंपैं विशेष करिकैं खपैं. वीर वीर रस. मिच्चु मृत्यु. नमावैं नहीं मावैं. छोहछली छोभसैं उफनी हुई. यहां देशभाषासैं मिच्चुको स्त्रीलिंग कियो. गय गज. रय वेग. गहम्मह घनी भीर. ग्रहल्लह देशीय प्राकृत. लुप्यो लुप्त भयो ।२३। दोहा ॥ कोटाइति ॥ सुसंध श्रेष्ठ है संधा प्रतिज्ञा जाकै ऐसो ॥ २४ ॥ पद्मपा-

सब मनुजनके सीस भनिय सामान्य धर्म१ भर ॥
दूजो२ बिसेस धर्म१ सु वदिय अप्प बरन१ आश्रम२ उचित ॥
परधर्म बरहु साद्धि रु परत२ निंद्य१हु निज निज होत हित५०
सुनहु धर्म सामान्य१ प्रथम१ संतोष१ छमा२ पुनि ॥
सम३ बहोरि दम४ सौच५सुपहु अस्तेय६ लेहु सुनि ॥
सहित दया७ तिम सत्य८ विहित निज पठन९ विचारहु ॥
आतम१ ब्रह्म२ एकत्व१ धी१० जु दसम१० सु हिय धारहु ॥
सामान्य धर्म लच्छनँ दस१०हिं मुख्य१ इतर अनुगत२सुमति
आर्जव१ रु मैत्र२ अनसूयता३ क्रम परोपकारा४दि कति५१
दसम१० माँहिं नहि दिपत अर्थ जह तह इम अक्खहिं ॥
सम१ मन मतिजय२सद्धि रु दम१ इंद्रियजय२ रक्खहिं ॥
सौच१ न्हान सुख२ सकल बहुरि अस्तेय१ बखानत ॥
बिक्खत परधन बिजन जु गन बिष्टा सम जानत२ ॥

विशेष धर्म अपने अपने वर्ण और आश्रम के उचित कहा है जिसमें १ दूसरे का धर्म उत्तम होने पर भी उसको साधने (चलने) से गिरजाता है और अपना धर्म निन्दनीय होने पर भी उसमें चलना हित (भला) होता है ॥ ५० ॥ अब सामान्य धर्म सुनो कि प्रथम सन्तोष, फिर क्षमा, २ मनको जीतना, फिर इन्द्रियों को जीतना, शुद्धि (पवित्रता) ३ चोरी नहीं करना, दया, सत्य, ४अपने लिये जिसकी विधि होवे उसका पाठ करना ६ अपनी बुद्धि में जीव और ब्रह्म की ५ एकता को धारण करना, यही सामान्य धर्म के दश ७ लक्षण हैं सो मुख्य हैं. और हे श्रेष्ट बुद्धिवाले राजा रामसिंह ८ अन्य ९ सरलता, मैत्री (मित्रता) १० दूसरे के गुण में दोष नहीं लगाना, इस क्रम से कितने ही परोपकार आदि धर्म उपरोक्त दश लक्षणोंवाले धर्म के साथ चलनेवाले हैं ॥ ५१ ॥ ११ उपरोक्त सामान्य दश धर्मों में जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं दीखता उनकी व्याख्या करते हैं कि मन और बुद्धि को जीतना सम है, और इन्द्रियों के रोकने का नाम दम है, स्नान आदि सब पवित्रता को शौच कहते हैं, १३ एकान्त में देखेहुए भी पराए धनको विष्टा के समान जानना १२ अस्तेय है, सो इस प्रकार सामान्य धर्म के सब लक्षणों और अपने अपने विशेष

सामान्य१ धर्म्म लच्छन सकल अरु बिसेस२ निज आचरहिं
सत जन्म१००कहुँ न चुक्कहिं सु नर सत्यलोक सासनं करहिं॥५२॥

॥ दोहा ॥

आस्यज१ बाहुज३ ऊरुज३ रु, पज्ज४ प्रभेदन पंति ॥
बिरच्यो बर्ण चतुष्क४ बिधि, भूतल निवसन भंति ॥५३॥
तास अवस्था च्यारि४ तकि, चउमुख आश्रम च्यारि४॥
बटु१ गृहस्थ२ बैखानस३ रु, धरिय भिक्षु४ क्रम धारि ॥५४॥
अवर बर्ण१ आश्रम२ उचित, पहिलैं धर्म्म प्रबोधि ॥
राजधर्म पुनि रावरो, सब कहियत हित सोधि ॥५५॥
पठन१ रु पाठन२ यजन३ पुनि, ध्रुव तिम याजन४ धर्म्म ॥
बितरन५ ग्रहन६हु बिप्र१कै, किय बिधि मुख्य छ६ कर्म्म५६
स्नान१ रु संध्या२दिक सकल, इनमैं निबसत आइ ॥
बिधि को अैसो बिप्र१कै, जो इन६तैं टरिजाइ ॥ ५७ ॥

धर्म का जो आचरण करते हैं और जो मनुष्य सौ जन्म पर्यन्त कहीं नहीं चूक ते वे सत्यलोक का १ पालन करते हैं अर्थात् ब्रह्म रूप से मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥५२॥ २ मुख से ३ भुजा से ४ जंघा से और ५ चरण से उत्पन्न करके इन भेदों से भिन्न भिन्न पंक्तियां करके भूमितल को बसाने की ७ रीति से ६ ब्रह्माने चार वर्ण (यथाक्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) रचे ॥ ५३ ॥ ब्रह्माने उनकी चार अवस्था देख कर ८ अपने चारों मुखों से, ९ ब्रह्मचारी, गृहस्थ १०वानप्रस्थ११संन्यासी, ये चार आश्रम किये ॥५४॥ हे राजा रामसिंह यहां अन्य तीनों वर्णों और आश्रमों के उचित धर्म १२ समझा कर आपका (क्षत्रियों का) धर्म हितको सोधकर पीछे कहेंगे ॥ ५५ ॥ पढ़ना, पढ़ाना, १३यज्ञ करना, १४ यज्ञ कराना, १५दान देना, १६ दान लेना, ये मुख्य छः कर्म ब्रह्माने ब्राह्मणोंके रचे ॥५६॥ स्नान और सन्ध्या आदि सब इन्हीं उपरोक्त छः कामों में निवास करते हैं, ब्राह्मण के ऐसी कौनसी विधि है कि जो इन छहों कर्मों से टलजावे"संस्कृतमें विधि शब्द पुल्लिंग है परन्तु यहां लोकरूढी से स्त्रीलिंग लिखा है" ॥ ५७ ॥

प्रजात्रान१ यजन२ रु पठन३, भोग प्रसक्ति अभान४ ॥
वीरभाव५ वितरन६ विधि सु, बाहुज२ वर्ण विधान ॥ ५८ ॥
अंहति१ इज्या२अध्ययन३, कृषि४ पसुपालन५ कर्म ॥
वानिज्य६हु ए वैश्य३के, धरे सीस खट६ धर्म्म ॥ ५९ ॥
पठन१ निजोचित यजन२ पुनि, वितरन३ शिल्प विधान ॥
त्रि३बरन सेवा५ कारुता६, पज्ज४ छ६ धर्म प्रमान ॥६०॥

॥ मनोहरम् ॥

बरन चतुष्क४के ए खट६ खट६ कर्म तहँ,
तीन३ तीन३ जीवन उपाय अवधारिये ॥
खट६में सम लय३सौं विप्र१ अरु अप्रसक्तिं१,
त्रान२ सूरता३सौं जीवैं बाहुज२ बिचारिये ॥
वैश्य३ पसुत्रानं१ कृषिकर्म२ रु बनिज३तासौं,
सेवा१ शिल्प२ कारुता३सौं पज्ज प्रतिपारिये ॥
गेह१ देह२ मंडन१।२ सुवैन३ पतिसेवा४ भक्ति५,

१प्रजाकी रक्षा करना, यज्ञ करना, पढना, भोगोंमें आसक्त नहीं होना, और२ दान देना, ये छः ३ क्षत्रियों के कर्म हैं ॥ ५८ ॥ ४ दान देना, ५ यज्ञ करना, पढना, खेती करना, पशुओंका पालन करना और व्यापार करना, ये वैश्यों के मस्तक पर छः धर्म रक्खे हैं॥५९॥ पढना, ६ अपने योग्य यज्ञ करना, दान देना, शिल्प कर्म(दस्तकारी)करना, तीनों वर्णोंकी सेवा करना और७कमीणपन करना अथवा कारीगरी करना, ये छः धर्म ८ शूद्रों के हैं ॥ ६० ॥ चारों वर्णों के ये छः छः कर्म हैं जिनमें से तीन तीन कर्म ९ जीविका के उपाय के जानो. उपरोक्त छः कर्मों में से पढाना, यज्ञ कराना और दान लेना, इन तीन कर्मों से ब्राह्मण जीविका करै और १० भोगों में अनासक्ति, रक्षा और वीरता से ११ क्षत्रिय जीविका करै, इसी प्रकार १२पशुओं की पालना, १३खेती करना और व्यापार करना, इन से वैश्य जीविका करै और सेवा करना (नौकरी), शिल्प, कारीगरी वा कमीणपन से १४ शूद्र अपना पालन (जीवन) करै, घर और शरीर को शोभायमान रखना, श्रेष्ठ(मीठे) वचन बोलना, पति की सेवा करना भक्ति करना और सम्पूर्ण वस्तुओं को शुद्ध रखना, ये मुख्य छः काम स्त्रियों

बस्तुसुद्धि६ सुख्य छ८हि नारिन निहारिये ॥ ६१ ॥

॥ षट्पात् ॥

आश्रम४ धर्म्महु अखिल धरहु अब कर्णा धराधव ॥
पोते त्रि३बर्णज पाइ भनित बय परि द्वितीय२ भव ॥
अजिन१ जटा२ उपवीत३ मेखला४ दंड५ कमंडलु६ ॥
सबिधि धारि दर्भ सय ख्यात गुरु गेह बसैं खलु ॥
मंगि सु द्वि२संध्य भिक्षा मुदित आनि निवेदहिं गुरु अरथ॥
ठहै तस नियोग तो तास ठहै असन१नतो उपवास२अथ६२
इंद्रिय जित१ मित असन२ सील३ श्रद्धा४ नति संजुत ॥
पुनि गुरु इच्छा पठन६ प्रथम पठनीय निगम७ नुत ॥
पठन आदि१ अंत२ पुनि प्रनति मंडहिं श्रीगुरु पय८॥
जुग संध्या मौन९ जिम नियत सावित्री जप१० नय ॥
सायं१प्रभात१गुरु१बिष्णु२शिव३अर्क४कृसानु५उपासना११

के जानो ॥ ६१ ॥ १हे राजा रामसिंह अब आश्रम धर्म भी सब सुनो जिनमें प्रथम ब्रह्मचारी का धर्म कहते हैं कि तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के २ बालक यज्ञोपवीत लेने की कही हुई अवस्था में ३द्विजन्मा होवैं अर्थात् यज्ञोपवीत लेवैं और ४ मृगचर्म, जटा, जनेऊ ५ कटिमेखला (मौंजी अर्थात् मूंजका कटिसूत्र जिसको लोकमें करधनी वा कणगती कहते हैं) दण्ड कमण्डलु (जलपात्र) इनको विधि पूर्वक धारण करके ६ दर्भ (डाभ) को हाथ में लेकर ७ निश्चय ही प्रसिद्ध गुरु के घर में वसै और ८दोनों सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल को भिक्षा मांग कर प्रसन्नता पूर्वक गुरु की भेट कर देवै जो गुरु की ९ आज्ञा होवै तो खावै और आज्ञा नहीं मिले तो वहां उपवास ही करै॥ ६२ ॥इन्द्रियों को जीतै १०प्रमाण से भोजन करै शील, श्रद्धा और नम्रता युक्त होकर फिर गुरु की इच्छा होवै तब पढै उसमें प्रथम ११ पढने योग्य और १२स्तुति योग्य वेद पढै पढने के आदि और अन्त में गुरु के चरणों में नमस्कार करै दोनों सन्ध्याओंके समय मौन रक्खै और नियम पूर्वक १३गायत्री जप करै यही ब्रह्मचारीकी नीति(न्याय)है सन्ध्या समय और प्रभात समय दोनों समय में गुरु, विष्णु, शिव, सूर्य और १४ अग्नि की उपासना

स्रज१मधु२पल३भूखन४गंध५सह वर्जहिं नारिन बासना॥६३॥

॥ दोहा ॥

इस गुरु गृह पढि आयुको, वंटि चतुर्थ४ विताइ ॥
गुरु अभीष्ट२ दे स्वीय गृह, उपनय३ बिरचहिं आय ॥ ६४ ॥
जो असपिंडा१ जननि कुल, स्वक असगोत्रा२ सुद्ध३ ॥
क्रम सवर्ण४ ऐसी कनी, व्याहैं सु वटु६ मबुद्ध ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

बिवहिं नारि गृह बसहिं पंच७ सूना जाके जिम ॥
कघर्ट८ चुल्लि९ बहुकरिय१० आहि कंडन११ घरट्ट१२ इम ॥
पंचन मेटन पाप पंच५ मख नित्य गृही पर ॥
पाठन पठन१ मसिद्ध ब्रह्ममख१३ यह बसुधांबर१४॥
बलि सुनहु श्राद्ध तर्पन नृपति मख२ पैत्र२ रु हवनादि३मत॥
सुर१५मख३रु भूतमख४बलि सुनहु नृमख१६५अतिथि पूजन५नियत॥६६॥

॥ दोहा ॥

करे १पुष्पमाला, शहत, मांस, भूषण, सुगन्धि पदार्थ और स्त्रियोंकी संगति, इन सबका त्याग करे ॥ ६३ ॥ इसप्रकार गुरु के घर में पढने में अपनी आयुका चौथा भाग विताकर गुरु को २ मनवांछित देकर अपने घर पर आकर ३ उपनयन संस्कार (ब्रह्मचारी का विद्या की समाप्ति का संस्कार विशेष) करे ॥ ६४ ॥ जो अपनी माता के कुलकी ४ सपिण्डी में नहीं होवे (माता के कुलकी सपिंडी पांच पीढी पर्यन्त और अपने कुलकी सपिंडी सात पीढी पर्यन्त मानी जाती है) और ५ अपने गोत्रकी नहीं होवे उस शुद्ध और अपने वर्ण की कन्या को क्रम से विद्वान् ६ ब्रह्मचारी व्याहे ॥ ६५ ॥ स्त्री को व्याहकर घर में रहता है तब उस गृहस्थी के पांच ७ हिंसा होती हैं ८ जल का घड़ा ९ चूल्हा १० बुहारी ११ ऊखल और १२ घरटी, इन पांचों का पाप मिटानेको गृहस्थ पर नित्य पांच यज्ञ लगेहुए हैं तहां१४हे राजा रामसिंह पढना और पढाना यह तो १३ ब्रह्मयज्ञ है, श्राद्ध और तर्पण यह पितृयज्ञ है, यज्ञ आदि १५ देवयज्ञ है, बलि देना भूतयज्ञ है और अतिथि पूजन १६ मनुष्य यज्ञ नियत है ॥ ६६ ॥

क्रम करि करि मख पंचक५ रु, जति१ बटु२ अतिथि३ जिमाइ
ज्यौं सब निज४न जिमाइकैं, खिल३ तब दंपति२ खाइ ॥६७॥
जाम१ रहत निस नित्य जगि, धर्म१ अर्थ२ गति ध्याइ ॥
सौच१ न्हान२ संध्यादि३ सब, बिधिसह कृत्य बनाइ ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

महिला ऋतु प्रतिमास धस्र्व चउ अग्ग जु लंघत ॥
अहं बारह१२ सो अधम बालहंताहि होत वत ॥
अष्टमि८।१ भूत१४।२ अमा३०।३ रु अखिल चंद्रा१४।४ एकादसि११।५
इन्ह५।८ तजि अरु खिल२२ अहन मिलहिं तियसन बांछा वसि ॥
गर्भ१ लखि करहिं तबतैं गृही२ संस्थावधि संस्कार सब ॥ १६ ॥
गृहि२ धर्म एह लाघव गदितें अरु वैखानसं३ धर्म अब ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

आयु भाग दूजो२ सु इम, ब्याहि रु गेह बिताइ॥
पुत्रन दै सब तब बिपिनैं, जावैं दंपति२ जाइ ॥७०॥

क्रम पूर्वक ये पांचों यज्ञ करके सन्न्यासी १ब्रह्मचारी और अतिथि को भोजन कराके और वैसेही २ अपने सब लोगों को भोजन कराकर जो ३ शेष बाकी) रहै सो आप स्त्री पुरुष भोजन करै॥ ६७ ॥ एक प्रहर रात्रि बाकी रहते नित्य जगकर, धर्म और अर्थ की रीति सोच (विचार)कर फिर शौच, स्नान, सन्ध्या आदि कर्म विधि पूर्वक करै ॥ ६८ ॥ प्रतिमहीने४ स्त्री की ऋतु(रजस्वलापन)के शुद्ध हुए पीछे आगे के चार ५ दिनों को लांघ कर इसके अनन्तर बारह ६ दिन तक ऋतु काल रहता है [यहां पहले चार दिनों का इस कारण से त्याग है कि उन चार दिनों में गर्भाधान होने से बालक अधम और हिंसक पापी होता है] और अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमासी और एकादशी, इन तिथियों को छोडकर बाकी सब ७ दिनों में इच्छा पूर्वक स्त्री से मिलै और गर्भ धारण किया हुआ देखकर गृहस्थ, गर्भाधान से लेकर ८ मरण पर्यन्त के सब संस्कार करै, यह गृहस्थ का धर्म संक्षेप से ९कहा है और अब१०वानप्रस्थ का धर्म कहता हूं ॥ ६९ ॥ इस प्रकार व्याह करके आयु के उस द्वितीयभाग को घर में बिताकर सब पदार्थ पुत्रों को देकर स्त्री और पुरुष दोनों ११ बन

पत्नी व्है संतति प्रिया, जग गृह छोरैं जाहि ॥
बिपिन नतो उभय२ हि बसैं, ताक्कि आकिंचनताहि ॥७१॥

पट्पात् ॥

केवल रहन कृसानु³ उटज४ कंदर२ वा आश्रय ॥
नख१ रु रोम२ मल३निग्रहि सहै सीता१दि३ऋतु३।६न रय॥
नीवारा१दिक वन्य अन्न१ फल२ पुष्प३ कंद४६म ॥
पुरोडास⁷ चरु प्रमुख करैं सह क्रम तिनसौं तिम ॥
अवसेसको सु बिरचैं असन बेर इक्क१ सबकरि बिहित॥
नीवार१आदि४जब होइ नव चतुर तजै तब पुब्ब चित॥७२॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जो गिनि बिहितै न्हान डारैं जल१, मंजन करि खोलैं न देह मल
कृत्ति १ रु वल्कल२ दंड३ कमंडलु४, खिलैं दर्भा१दि५ रहैं धारत खलु॥ ७३ ॥

में जाकर जीवै ॥ ७० ॥ यदि स्त्री १ संतान में प्रेम करनेवाली होवै तो उसको घर में ही छोडै और वह भी संतान का स्नेह छोड देवै तो उसको २ कामना रहित देखकर स्त्री पुरुष दोनों ही वन में वास करैं ॥ ७१ ॥ केवल ३ अग्नि रखने के लिये ४ झौंपड़ी (टपरी) वा गुफा का आश्रय लेवै, नख और केश नहीं काटै, शरीर का मैल नहीं उतारै, सर्दी गर्मी आदि ऋतुओं के ५ वेग को सहन करै ६ तृणों से निकलनेवाले जंगली धान्य(सांवां, मलीचा आदि अड़क धान्य) आदि अन्न और फल, फूल, कंद, ७ जवके चूनकी रोटी, होमने के अन्न आदि से क्रम पूर्वक नित्य होम करके "यहां चरु शब्द की संगति से होमका ग्रहण है" उचित कार्य करै होमसे बाकी बचै उसको दिनमें एकबार भोजन करै और ८ जब सांवां, मलीचा, सुरट आदि वन के अन्न नवीन उत्पन्न होजावैं तब वह चतुर पहिले का संग्रह किया हुआ अन्न त्याग देवै ॥ ७२ ॥ ९ विधि समझकर शरीर पर स्नान का जल डालै परन्तु १० मर्दन (मालिस) करके पसीना नहीं उतारै अर्थात् रगड़कर शरीर का मैल नहीं उतारै १२ बाकी डाभको आदि लेकर ११ मृगचर्म, वृक्षों की छाल(भोजपत्र आदि) दंड (हाथमें रखने की यष्टि, लकड़ी) कमंडलु (जलपात्र) १३ निश्चय ही धारण करै ॥७३॥

॥ दोहा ॥

इम तृतीय३ निज आयुको, वन रहि वंट बिताइ ॥
वैखानस३ सन्न्यास४ विधि, पुनि सज्जैं खिन पाइ ॥ ७४ ॥
जोन बिरति तो वह जबहि, रचि अनसन बिधि एह ॥
तत्व२४न तत्व२४मिलाइ तंनु, छोरैं छेम लहि लाह१।२७॥७५॥
ब्रह्मचर्य१हीतैं बिरति, वा गृह१हीतैं आइ ॥
तो जुग२ आश्रम मध्य तजि, जती४ द्रुतहि होजाइ ॥७६॥
रहैं दिगम्बर १ वा धरैं, पट कौपीन पिधान२ ॥
बस्तु कमंडलु१ दंड२ बिनु, न इतर जास निधान ॥ ७७ ॥
बिधि न सिखा१ सूत्र२हु बहन, तो को बिधि खिल तास॥
मिटन अंहं१ ममता२ अवधि, अटैं असंग उदास ॥ ७८ ॥

॥ षट्पात् ॥

संगति भिच्छा समय करैं खिन वसति अटन क्रम ॥
आप१ ब्रह्म२ जग३ इक्क१ भेद बिनु पिक्खि छोरि भ्रम ॥

इसप्रकार अपनी आयु का तीसरा भाग वन में रहकर बितावै वह वानप्रस्थ समय पाकर सन्न्यास लावै ॥७४॥ यदि वानप्रस्थ अवस्था में १उपराम [वैराग्य] नहीं होजावै तो अथवा जिनको वानप्रस्थ अवस्था में ही वैराग्य होजावै तो वहीं पर २ अन्न जल का त्याग करके ४वह समर्थ तत्वों में तत्व मिलाकर लाभ के साथ३शरीर छोडै ॥७५॥ यदि ब्रह्मचर्य से वा गृहस्थ से ही ५वैराग्य उत्पन्न होजावै तो दो वा एक आश्रम बीचमें छोडकर वहींसे६शीघ्र सन्न्यासी होजावैं ॥७६॥ सन्न्यासी या तो नग्न रहै या ७ ढाकने को कौपीन (लंगोटी) रक्खै, उस सन्न्यासी के कमंडलु और दंड, इन दो वस्तुओं के विना और कोई८धन नहीं है ॥ ७७ ॥ उसको चोटी और ९ जनेऊ धारण करने की भी विधि नहीं है तो फिर बाकी की उसके लिये कौनसी विधि होसकती है अर्थात् कोई वस्तु रखने की विधि नहीं है, जहां तक १०अहंता और ममता नहीं मिटै तहां तक वह (सन्न्यासी) ११ संग रहित और उदास होकर विचरै (फिरै) ॥७८॥ १३ बसती की १२ संगति(साथ)भिक्षा मांगने के समय क्षण मात्र करै, आत्मा, ब्रह्म और

ज्ञानकांड३ जो गदित धरहिँ चर्या अवधूत सु ॥
जोजो जहँ जहँ जास पाय परसैं व्है पूत सु ॥
सुप्ति१ प्रबोध२ बिच संधिमैं जो थिति सो निज जानिकैं ॥
जो रहैं मुक्ति१ बंधन२ जुगहि मायामात्र प्रमानिकैं॥७९॥

॥ दोहा ॥

नहि निरोध१ उतपत्ति२ नहि, वर्ति न साधक३ न बद्ध४ ॥
अरु न मुमुक्षु५ न मुक्त६ इह, लब्धहि बिस्मृत लब्ध ॥८०॥
ए बरना४श्रम४धर्म१ इम, सुम सामान्य१ बिसेस२ ॥
अर्थ२ राजनय सुनहु अब, नयपटु राम२०१५ नरेस ॥८१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्र रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहार्थज्ञानकाण्डोपासनाकाण्डकर्म काण्डसहितवर्णाश्रमधर्मश्रावणं द्वितीयो मयूखः ॥२॥

आदितः चतुःषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

जगत्, इनको भ्रम छोडकर भेद भाव रहित एक जानै १ जो ज्ञानकांड में कही है उस क्रिया को धारण करै वही अवधूत (संन्यासी) है, उस संन्यासी के जहां जहां जो जो चरणों का स्पर्श करता है वह वह २ पवित्र होता है, सुषुप्ति और जाग्रत् अवस्था की ३ संधि में जो स्थिति है वही अपनी स्थिति जानकर बंधन और मोक्ष दोनों को माया मात्र मानकर रहता है ॥ ७९ ॥ नहीं तो नाश है, नहीं उत्पत्ति है ४ और न साधन करनेवाला है, न कोई बंधन है, न मुक्ति की इच्छा करनेवाला है और न मुक्ति है, जो मिलता है वह केवल विस्मृति (आत्मस्वरूप को भूलना अर्थात् अज्ञान) से मिलता है ॥८०॥ इस प्रकार सामान्य और विशेष दो प्रकार के श्रेष्ठ वर्णाश्रम धर्म हैं हे नीति चतुर राजा रामसिंह अब पुरुषार्थवाली ५ राजनीति सुनो ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह को ज्ञानकांड, उपासनाकांड और कर्मकांड सहित वर्णाश्रम धर्म सुनाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥२॥ और आदि से तीन सौ चौसठ ३६४ मयूख हुए ॥

(दोहा)

नृप१ अमात्य२ मंत्री३ रु निधि४, देस५ दुर्ग६ बल जुद्द॥
अंग सप्त७ बपु राज्य ए, स्वामी१ अब तहँ सुद्द ॥ १ ॥
सक्ति तीन३ खट६ गुन समुझि, च्यारि४ उपाय विचारि॥
नृप१ जु बहैं इन१३कों नियत, रहैं अजेय सु रारि ॥ २ ॥
निज बस१ सो उत्तम१ निपुन, मध्यम२ दुव२ बस मान॥
बिक्खहु अधम३ अमात्य बस३, स्वामी१ त्रि३ विध सु जान॥३॥

पज्झटिका ॥

ए तीन३ सक्ति सझुझहु अधीस, इन३ करि जिम गंजत सवन ईस॥
सबसिर अमोघ सासन१ बिसेस, अवनीमहेन्द्र प्रभुसक्ति१ एस॥४॥
उपजैं जहँ मंत्र५ जु पंच५ अंग, सो मंत्रसक्ति२ नृप नय प्रसंग॥
उच्छाह होइ उद्यम३ असेस, उच्छाहसक्ति३ इम सो रंसेस॥५॥
अब सुनहु मंत्रके पंच५ अंग, ॥
इक१ इष्ट काज साधन उपाय१, दूजो२ समर्थ तस व्है सहाय॥६॥

राजा, अमात्य, मंत्री, १ कोश[खजाना], देश, गढ और २ सेना ये राज्य के सात अंग जानो. जिनमें प्रथम स्वामी [राजा] का शुद्ध लक्षण कहते हैं ॥ १ ॥ कि तीन शक्ति, छः गुण और चार उपाय, इनको विचारकर जो राजा धारण करता है वह ३ निश्चय ही ४युद्ध में अजेय रहता है ॥२॥ जो राजा५ अपने ही वश में रहता है वह तो उत्तम है, और जो ६ अपने और अमात्य, दोनों के वश में रहता है वह मध्यम है, और जो केवल ७ अमात्य के ही वश में रहता है वह अधम है सो हे सुजान[रामसिंह]इसप्रकार स्वामी तीन प्रकार का जानो ॥ ३ ॥ हे स्वामी ये ही तीन शक्ति जानो. जिनसे स्वामी सब को दबाता है ८ सबके ऊपर अमोघ[पीछी नहीं फिरनेवाली] आज्ञा होवै उसका नाम९ हे राजा रामसिंह, प्रभु शक्ति है अथवा राजा की वह प्रभु शक्ति है ॥ ४ ॥ जिस मंत्र [सलाह] में १०पांच अंग उत्पन्न होवैं उसको ११ नीति के प्रसंग से राजा की मंत्रशक्ति कहते हैं. और सम्पूर्ण उद्यमों में उत्साह होवै उसको १२ राजा की उत्साह शक्ति कहते हैं॥५॥ अब मंत्रके पांचों अंगों का सुनो कि प्रथम तो अनुकूल [इच्छानुसार]कार्य साधने का उपाय है, दूसरा अंग समर्थ होने का है जो कार्य

(षट्पात्)

तजि मतंग भुव कुद्दि कड्ढि असि बर धकि कुप्यो ॥
नट मलंग नचि अंग रंग अंगद जिम रुप्यो ॥
रतन भोज रविमल्ल मग्ग उज्जल करि मानी ॥
तिलतिल धारन तुट्टि भयो अमरन अगवानी ॥
पैंतीस३५वंस सिखवत प्रकट धारत तदपि न धर्म धर ॥
चंडासि वंस रन भजि चलन नन सिक्खो पिक्खो निडर ॥२५॥
चक्ख्यो कछु चिलहनिन कछुक गिद्धिन निज किन्नों ॥
कछुक लक्ष्यो बिसकंठ कछुक कालिय लगि लिन्नों ॥
खाय कछुक खित्ताल डमरुधर ताल डकारयो ॥
भखि जुग्गिनि कछु भाग बहुत अनुराग बढारयो ॥
अटि अटि हड्डु फग्गुन उपम फटि फटि फौजन उप्फन्यौं॥
कोटा नरेस कटिकटि असिन बटिबटि बहु पोसक बन्यौं ॥२६॥

(दोहा)

कोटापति झरि भुव परत, आजम सुत अकुलाय ॥
पट्ट मतंगज पिल्लिकैं, आयो बलहि बढाय ॥ २७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे निरुद्धनालीयन्त्रशस्त्रोत्थापिताश्वबहादुरशाहसै-

---

त ॥ तजिइति ॥ पैंतीसवंसनिसखवत चहुवान विना और क्षत्रियनके पुरातन और नूतन नव आधुनिक लोक गणनामैं पैंतीस ३५ वंश हैं ते. युद्धमें बहुत ठौर भजि जावत हैं योंही उनकों भजिबो सिखावनों है ॥ २५ ॥ चक्ख्यो इति॥ बिसकंठ शिव तिननैं. खित्ताल क्षेत्रपाल. अटिअटि अटन करिकरिकैं. फटिफटि जुदी व्हैव्हैकें. अथवा फाटि फाटि बटि बटि सबनकों व्हैकैं. पोषक पोषिवेवारो ॥ २६ ॥ कोटाइति ॥ पट्टमतंगज मुख्य हस्ती ॥ २७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के स्वामी बुधसिंह के चरित्र में, तोपों का युद्ध रोक कर बहादुरशाह की सेना के घोड़े उठाने में तरवारों से युद्ध होकर कोटा के राव रामसिंह के काम आने का

बलि देस१ काल२ संगति बिचार३, है चोथो४ अवयव विघ्नहार४
सुखहै अमोघ कर्मावसान५, पंचम५ प्रतीकै सो मंत्र मान ॥ ७ ॥
नरनाह सुनहु खट६ गुनन नाम, तँहँ संधि रु विग्रह यान तामैं॥
आसन४तिम द्वैधीभाव५ आँहि, जहँ छ्ट्ठो६ आश्रय कहत जाहि।८।

॥ दोहा ॥

संधि१ मैल२ संबंधज३ रु, इतरेतर उपकार ॥
अरु उपहार४ स नाम इम, चउ४ तस भेद बिचार ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

पैलेमैं गुन पिक्खि आप गुन रँागी व्है इम ॥
छोरि लोभ छर्म संधि करैं१ मैल१ सु जानहु जिम ॥
कन्या दै रु करैं२ सु संधि संबंधज२ धारहु ॥
माँहिं माँहिं उपकार व्है ३ सु उपकार३ निहारहु ॥
पुहवि१ रु रत्न२ गज३ हय४प्रमुख दै करैं४ सु उपहार४यह
चउ४ भेद संधि१ इम अब सुनहु अठ्ठ८ भेद विग्रह असह१०

॥ दोहा ॥

साधन का सहायक है, तीसरा अंग देश काल के १ साथ विचार करने का है, चौथा अंग कार्य के २ अंगों का विघ्न मिटाना है, और अंतका पांचवां अंग कर्म[कार्य] खाली नहीं जाने का सुखकारी है; सो मंत्रके येही पांच ५ अंग मानो ॥ ७ ॥ आगे गुणों के नाम मूल में स्पष्ट हैं ४ तहां ५ है ॥ ८ ॥ प्रथम गुण संधि के चार भेद हैं. इनमें मित्रता से, संबंध से, ६ परस्पर के उपकार से और भूमि आदि देकर उपहार [नजराना] करने से होता है. जिसके लक्षण आगे के छंद में स्पष्ट कहते हैं ॥ ९ ॥ दूसरे(शत्रु) में गुण देखकर आप गुणों में ७प्रीति करके लोभ छोडकर ८ समर्थता से संधि करै वह संधि मैत्रेयज है. और कन्या देकर संधि करै उसको संबंधज संधि जानो. और परस्पर उपकार करके संधि करै सो उपकारक संधि है. और भूमि, रत्न, हाथी, घोड़ा ९ आदि देकर संधि करै उसका नाम उपहार संधि है. इस प्रकार संधि के चार भेद हैं. अब आगे नहीं सहन करने योग्य विग्रह के आठ भेद कहते हैं ॥ १० ॥

बिक्रम१ मंत्र२ सहाय३ बल४ रत्न५ दुर्ग६ आरोग्य७ ॥
इत्यादिक करि हीन व्है, जो नृप बिग्रह जोग्य ॥ ११ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अष्ट८हि बिग्रह२भेद सुनो इम, जे कामज१लोभज२भूमिज३जिम॥
मानज४अभय५इष्टज६रु मदभव७, एक द्रव्य अभिलाख८धराधव१२
स्त्रीनिमित्त१ इनमैं कामज१ सो, श्रीनिमित्त२लोभज२जानहु सो॥
भूनिमित्तभूमिज३ पहिचानौं, बिरुद निमित्त४ मानभव४ मानौं१३
बिजय निमित्त५जु अभय सु५बिग्रह, सरन निमित्त६नाम इष्टज६सह
बिद्या१धन२जुब्बन३मदिरावस, रचैं७हु बिग्रह२मदज७बीत रस।१४।

॥ दोहा ॥

माँहिंमाँहिं विग्रह२ मचैं, एक१हि अर्थ निमित्त८ ॥
एकद्रव्य अभिलाख८ वह, चिंतहु भूपति चित्त ॥ १५ ॥
मंत्री१मंत्र२ रु कोस३बल४, मित्र५हु न भजत जाहि ॥

---

१ पराक्रम, मंत्र, सहाय, २ सेना, रत्न, गढ, ३ नैरोग्यता आदि से हीन होवै वह राजा विग्रह करने योग्य है ॥ ११ ॥ इस विग्रह के आठ भेद ये हैं. काम से उत्पन्न, लोभ से उत्पन्न, भूमि से उत्पन्न, मान से उत्पन्न, भय से उत्पन्न, इष्टवांछा से उत्पन्न, मद से उत्पन्न, एक द्रव्य की अभिलाषा होने से ४ राजाओं में विग्रह होता है सो सुनो ॥ १२ ॥ ५ इनमें जो विग्रह स्त्री के कारण से होवै उसको कामज कहते हैं. और ६ लक्ष्मी (धन) के कारण विग्रह होवै वह लोभज है. ७ भूमि के कारण होनेवाला विग्रह भूमिज है. और ८ यश [स्तुति] के कारण विग्रह होवै वह मानज है ॥१३॥ विजय करने के कारण होवै जो मानभव, और किसी को शरण रखने के कारण से होवै वह इष्टज कहाता है. विद्या, धन, यौवन और मद्य के वश से जो विग्रह करै वह विना रसवाला मदज विग्रह कहाता है ॥१४॥ ९ एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह होवै वह एकद्रव्यअभिलाष कहलाता है ॥ १५ ॥ जिस राजा को मंत्री, सलाह, खजाना, सेना और मित्र १० नहीं सेवन करते होवैं अर्थात् ये जिसके नहीं होवैं और जो मनु में कहे अठारह व्यसनों में से किसी में युक्त और

ऐहैं व्यसनी१ वीरुधा२ सुही, यान३ उचित नृप आहि ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याला३इह तीजो३गुन अक्खिय, ऋपिन भेद सप्त७हि तस रक्खिय
संधानजा१ पार्ष्णिग्रोधा२ जिम, नाम मित्रविग्रहिनी३ है तिम१७
द्वंद्व२जा४ रु कुल्या५ निर्व्याजा६, शीघ्रगा७हु रंजत जिन्ह राजा ॥
श्रुति धारहु लच्छन अब सत्त७न,पहु जिन कारि पहुँ होइ प्रमत्त न१८

दोहा-पार्ष्णिग्राहसों संधि कारि, जु इतर अरिपर जात१ ॥
जो यात्रा३ संधानजा१, कहत नीति निष्णात॥१९॥
पार्ष्णिग्राहके रोध पर, जु बल रक्खि पुनि जाइ२ ॥
ताहि पार्ष्णिग्रोधा२ कहत, पटु नयआगम पाइ ॥२०॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम कलह अरि१ मित्र२न पारैं, ताहि सत्रुपर सु पुनि सिधारैं३
एह मित्रविग्रहिनी३ यात्रा, मिलि दुव२ जहँ छिन्नैं अरि मात्रा॥२१॥
जाँपर यात्रा सोहु सम्मुख जब, ताकै जाइ४ द्वंद्वजा४ है तब ॥
सत्रु बंधु लै संग सत्रुपर, जाइ५ सु है कुल्या५ बसुधाबर ॥ २२ ॥

१मद्यपी होवै वह राजा यान (चढाई) के योग्य है अर्थात् ऐसे राजा पर चढाई करनी चाहिये ॥१६॥ इस यात्रा(यान)को तीसरा गुण कहा है जिसके ऋपियों ने सात भेद कहे हैं२इन शीघ्रगासे राजा लोग प्रीति करते हैं३हे प्रभुरामसिंह अब इन सातों के लक्षण सुनो कि जिनसे ४ राजा प्रमत्त नहीं होवै ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ५ पीठ पर से चढाई करके जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो अन्य शत्रु पर जावै उसको ६ नीतिनिपुण संधानजा यात्रा (यान) कहते हैं ॥ १९ ॥ पीठ पर से चढाई करनेवाले शत्रुको रोकने के अर्थ७सेना रख कर जो अन्य शत्रु पर जाता है उसको ९नीति शास्त्रको प्राप्त होनेवाले ८चतुर पार्ष्णिग्रोधा यात्रा कहते हैं ॥ २० ॥ प्रथम शत्रु से और १० शत्रुके मित्रों से कलह कराकर फिर उस शत्रु पर चढाई करै और ११दोनों मिलकर उसका धन छीनैं उसको मित्रविग्रहनी यात्रा कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ जिस पर यात्रा करैं वह शत्रु युद्ध करनेको सन्मुख आवै उस यात्रा को द्वंद्वजा कहते हैं और १३ हे राजा रामसिंह शत्रु के सम्बन्धियों को साथ लेकर शत्रु पर जावै

स्वस्थभाव सन अरिसिर*संक्रम६, निर्व्याजा६कहियत यह उत्तम
सत्रुहिँ हनन †प्रमाद छोरि सब, ‡सहसा जाइ७सीघ्रगा७ तो तब२३

॥ घनाक्षरी ॥

आसन चतुर्थ४ गुन भेद दस१० ताके अब,
स्वस्थ१ रु उपेक्षा सन२ मार्गअवरोध३ नाम ॥
देस स्वीकरन४ रमनीय तैसैं दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० ताम ॥
अरि सब मारि राज्य अप्पन अकंटक कैं,
स्वस्थपनसौं जो रहैं१ स्वस्थासन१ सो ललाम ॥
बैरिन निबल जानि अप्पहिं प्रबल मानि,
सैदय जनावैं२ सो उपेक्षासन२ कित्ति धाम ॥ २४ ॥
तटिनी प्रवाह१ दवदाह२ आदि कारनकैं,
राह रुकैं३ आसन४०है मार्ग अवरोध३ गेय ॥
जीति अरि देसकौं करैं जो ताँहँ४ आसन४ सो,
राम२०१४ नरनाह देस स्वीकरन४ नामधेय ॥
सत्रुनकौं मारि तिन्ह नैर धन१ धान्य२ करि,

उस यात्रा का नाम क्रुल्या है ॥ २२ ॥ स्वस्थभाव से शत्रु पर*चढाई करै जिस उत्तम यात्रा को निर्व्याजा कहते हैं और, शत्रु को मारने के लिये † आलस्य तथा असावधानी को छोडकर ‡ अचानक यात्रा करै वह शीघ्रगा है ॥ २३ ॥ चौथा गुण आसन है जिसके दस भेद कहते हैं १ तहां, सब शत्रुओं को मारकर २ राज्य को निष्कंटक करके आप चिन्ता रहित होकर रहैं उसको स्वस्थासन कहते हैं यह सब से सुन्दर है और शत्रुको निर्बल और आप को प्रबल मानकर ३दया जनावै वह उपेक्षा नामक आसन कीर्तिका घर है ॥२४॥ ४नदी के प्रवाह से वा अग्नि लग जाने आदि कारणों से मार्ग रुककर मुकाम होजावै उसको मार्गअवरोध आसन ५ कहते हैं, शत्रु के देशको जीतकर वहां निवास करै उसको हे राजा रामसिंह ६ देशस्वीकरण नामक आसन कहते हैं शत्रुओं को मारकर उनके नगरको धन से और धान्य से

रम्य गिनि तत्थहि रहैं५ सो रमनीय५ श्रेय ॥
जीति दुर्ग अरिकौं तहाँसौं खिल जीतिबेकी,
अच्छी गिनि जो रहैं६ सु दुर्गासन६ है अजेयँ ॥ २५ ॥

दोहा-बल सह रिपु ढिग जाइ बलि, करन महर्घ क्रयान ॥
राज्य बिगारन तस रहैं७, वहे निकट७ अभिधान ॥२६॥
निज देसहिं गिनि दूर नृप, आयो पाउस इक्खि ॥
रचैं सिबिर८ दूरासन८ सु, सद्धत हित नय सिक्खि ॥२७॥
वैरी बस१ वा सुहृद बस२, नृप जो निकसि सकै न ॥
पराधीन९ नामक प्रथित, यह आसन४ नय ऐनं ॥ २८ ॥
कंटक जास बहु दैन कहि, रिपु गंजन रक्खैं१० सु ॥
नाम प्रलोभासन१० नृपति, सूरि दसम१० अक्खैं सु ॥२९॥
वली रिपुन वस करि निवल, कट्टिसकै जु न काल ॥
तहँ द्वैधीभाव५ तब, पंचम५ गुन छितिपाल ॥ ३० ॥
मिथ्यामन१ मिथ्यावचन२, मिथ्याकर्म३ उदार ॥
जुगर२ वेतन४ जुगर२ प्राभृतक५, पंच५हि द्वैध५ प्रकार ॥३१॥

१सुन्दर जानकर वहां रहै सो सुंदर रमणीय आसन है, शत्रु का गढ़ जीतकर वहां से ही२बाकी के देशको जीतना अच्छा जानकर वहीं पर रहै उसको ३ हे अजेय रामसिंह दुर्गासन कहते हैं॥२५॥४बलपूर्वक तथा सेना सहित शत्रुके समीप जाकर५फिर६मोल लेने की वस्तु को महंगी करने और राज्य बिगाड़ने को रहै उसका७नाम निकट आसनहै॥२६॥ जो राजा अपने देश को दूर जानकर और ८वर्षाको आया देखकर रहने को डेरे रचै और नीति की शिक्षा से हित साधन करै वह दूरासन है ॥२७॥ शत्रु के वश में होकर वा ६ मित्र के वश में होकर जो राजा नहीं निकल सकै वह ११ नीति का घर पराधीन नामक १० प्रसिद्ध आसन है ॥ २८ ॥ शत्रु को मारने के लिये १२ सेना को पहुन देना कहकर रक्खे उसको ११ पंडित लोग दसमा प्रलोभासन कहते हैं ॥ २९ ॥ बलवान् शत्रुओं के वश में होकर जो निर्बल १४ समय को नहीं निकाल सकने की अवस्था में द्वैधीभाव को देखै वह राजा का पांचवां गुण है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पादाकुलकम्

बैंनन हित मनमैं बिरोध बहि१, मिथ्यामन१ यह द्वैध५ख्यात महि
बैंननहितरु बिरोध कर्म बिधि२,बरनत मिथ्यावचन२नीति निधि३२
लघु१अरि काज करैं गुरु२लोपन३, मिथ्याकर्म३सु द्वैध५धरहु मन
इक१ सन प्रकट रु छन्न अपर२ सन, वेतनलैं ४ सु वजत जुग
वेतन४ ॥ ३३ ॥
रिपुहिं मरावन दे सु वित्त लहि, तस अरिसौंहु लहैं तिमें वित्त५हि
जुग२प्राभृतक५ नाम तस जानहु, अब छट्टो६ आश्रय६हिय आ-
नहु ॥ ३४ ॥
अप्प निबल दंम भीत अनाश्रय, आश्रय सबल लै सु गुन आश्रय
जास त्रि३भेद सदाश्रय१ जैसैं, अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ ऐसैं ।३५।
बली सत्रुकों जानि धर्मधर, निबल मिले१ सु सदाश्रय१ नय पर॥
रिपुसौंभीत बलिष्टअपर लहि, व्है तसबस अन्याश्रय२सो कहि३६
भज्जि निबल जो सबल सत्रु भय, सेवहिं दुर्ग६ है सु दुर्गाश्रय३॥

वचनों में हित और मनमें विरोध धारण करैं वह भूमि पर मिथ्यामन नामका द्वैधीभाव प्रसिद्ध है, इसी प्रकार वचनों में हित और १ कार्य(काम) में विरोध होवे उसको नीति ही है धन जिनके ऐसे विद्वान् मिथ्यावचन नामक द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३२ ॥ छोटे शत्रु से २ बडे के नाश] करानेका कार्य करना मिथ्या नाम का द्वैधी भाव है, एक से प्रसिद्ध और दूसरे से छाने ३ तनखाह लेवै उसको जुगवेतन द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ शत्रु को मरवाने को देवै सो ४ धन लेकर ५ इसी प्रकार उसके शत्रु से भी धन लेवै उसका नाम जुगप्राभृत द्वैधीभाव है. अब आगे आश्रय नामक छठा गुण कहते हैं ॥३४॥ आप निर्बल और ७ आश्रय रहित होकर ६ दंड के भय से बलवान् का आश्रय लेवें उस छठे गुण का नाम आश्रय है ॥ ३५ ॥ बलवान् शत्रु को धर्म धारण करनेवाला जानकर निर्बल उससे मिलै उसको ८ नीति के तत्पर लोग सदाश्रय कहते हैं, शत्रु से डरकर ९ दूसरे बलवान को बीच में लेकर उस शत्रु के वश में होवै जिसको अन्याश्रय कहते हैं ॥ ३६ ॥ बलवान् शत्रु से भागकर जो निर्बल १० गढ का आश्रय लेवै वह दुर्गाश्रय है. अब उपाय के चार भेद कहते हैं सो

अब उपाय चउ४ भेद सुनहु यह, साम१भेद२उपदाम३दंड४सह३७
जानहु भूप चउ४हि क्रमतैं जिम, उत्तम१मध्यम२अधम३केष्ट इम
इनच्यारि४नकेभेदमानअब, सहलच्छनप्रभुराम२०१।४सुनौं सब३८

॥ दोहा ॥

कर्णसुभग१ दैविक२ कथित, स्मारक३ लोभज४ सार ॥
बहुरि अप्प अर्पन५ बिदित, पंच५हि साम१ प्रकार ॥ ३९ ॥
पैरचित्तहिं करि प्रीति बस, हित सँलाप गहाइ ॥
साम१ ठहै जु दुहुँ२घाँ सुखद१, कर्णसुभग१ सु कहाइ ॥४०॥
सपथादिक करि परसपर, बिरचै जँहँ बिस्वास२ ॥
समुझहु दैविक२ साम१ सो, पावहिं नीति प्रकास ॥ ४१ ॥
संबंधहिं सुमिराइकैं, ठहै३ सो स्मारक३ होहि ॥
इष्ट परस्पर अप्पि ठहै४, सांत्वन१ लोभज४ सोहि ॥ ४२ ॥
मम बपु है तव अर्थ इम, जंपि रु बिरचै५ जाहि ॥
पंचम५ सांत्वन१ भेद यहु, आत्मअर्पन५ सु आँहि ॥ ४३ ॥
सिद्धिठहै न जहँ साम१सौं, तहँ भेद२हि करतंव्य ॥
जल१ पँय२ सज्जुन हंस जिम, भिन्न किये ठहै भंव्य ॥ ४४ ॥

सुनो ॥ ३७ ॥ १ अधमाधम ॥ ३८ ॥ २ अपने आपको अर्पण करना, ये साम उपाय के पांच भेद हैं ॥ ३९ ॥ ३ दूसरे (शत्रु) के चित्तको प्रीति के वश करके ४ हित के वार्तालाप से साम होवै वह दोनों ओर सुखदाई है जिसको कर्णसुभग कहते हैं ॥ ४० ॥ ५ परस्पर सौगन आदि करके विश्वास कराकर साम करै उसको दैविक साम कहते हैं ॥ ४१ ॥ ६ सम्बन्ध को याद कराकर साम करै उसको स्मारक कहते हैं ७परस्पर वांछा होवै सो देकर ८ साम करै वह लोभज साम है ॥ ४२ ॥ मेरा शरीर तेरे अर्थ है यह ९ कहकर करै वह हे राजा पांचवां आत्मसमर्पण साम१०है ॥ ४३ ॥ जहां साम से कार्य सिद्ध नहीं होवै तहां ११ करने योग्य भेद उपाय है सो जैसे हंस पानी और १२ दूधको भिन्न भिन्न करदेवै तैसे शत्रुओं को भिन्न भिन्न कर देने से१३कल्याण(शुभ) होता है ॥ ४४ ॥

त्रस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, भेद२ उचित व्है भूप ॥
रिपुगत निजजन गुप्त रहि, रचैं भेद२ अनुरूप ॥ ४५ ॥

(मनोहरम्)

प्रानभंग१ मानभंग२ वित्तभंग३ बंधक४ त्यौं,
दारलाभ५ अंगभंग६ आद२ भेद खट६ है ॥
प्रानभय दैकैं भेद२ व्है१सो प्रानभंग मान,
हानि भय दैकैं व्है२सो मानभंग२ वटहै ॥
तीजो२ वित्तभंग३ वित्तहानि भय दैकैं व्है३ सु,
कारा२ भय दैकैं व्है४ सु बंधक४ बिकटहै ॥
पच्छ दुव२ पत्नी भय दै व्है५ दारलाभ५ अंग-
भंग भय व्है६सो अंगभंग अति भेदहै ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिद्धि जो न भेदं२ सन जबहि उपदा३ प्रयोग जिम ॥
सोलह१६ बिध नृप सोहु कहत क्रमतैं अभीष्ट१ इम ॥
देश्य२ आब्द३ कर४ द्विरद५ सप्ति६ निवसथ७ पट८ सासन९
पुरट१० कनी११ पननारि१२ खानि१३ बेलाकर१४ भूखन १५
सोलहम१६ भेद प्रतिपत्तिजा१६ सु अर्थ नाम अनुसार इन ॥
नहि बोध प्रकट जिनको न पति ते क्रति कहियत सुनहु तिन ॥४७॥

डराहुआ, अनादर पाया हुआ और क्रोधी राजा भेद करने के उचित है सो अपने लोग १ शत्रुके पास जाकर अपने सदृश भेद रचैं ॥ ४५ ॥ २कैद का भय देकर करैं सो ३भयंकर बंधक नाम भेद है और दोनों पक्ष में ४स्त्री को छीनने का भय देकर भेद करैं उसका नाम दारलाभ है और शरीर के नाश का भय होवै वह अंगभंग नामक भेद है ॥ ४६ ॥ ५ भेद करने से कार्य सिद्धि नहीं होवै तब ६नजराना देनेका प्रयोग करैं सो सोलह प्रकार का है ७इनके अर्थ इनके नामों के ही अनुसार है परन्तु नामों से जिनके अर्थ का ८ ज्ञान (समझ) प्रकट नहीं होता है उनको कहता हूं सो ९ हे पति रामसिंह सुनो ॥ ४७ ॥

(पादाकुलकम्)

मँगैं सुहि देवो१ अभीष्ट१ मत, देबो देस२ सु देश्य२ कहावत॥
सह कुटुंब निवहैं जिहिं धन सन, अब्द इक्क११३वह आब्द३महामन४८
देसहिं रक्खि तास कर देवो४, कर४ नामक उपदा३ वह कैवो ॥
सप्तिदान६ जह तुरग समप्पहिं६, अरु निवसथ७ सु ग्राम जह अ-
प्पहिं७ ॥ ४९ ॥
जबलग व्है ग्राहक सपिंड जन, तबलग जो न लुपत९सो सासन॥
कांचन१० पुरट१० कनी११ कन्या११ कहि, वेश्या१२ तिम पन-
नारि१२ नाम बहि ॥ ५० ॥
रत्न१ सुवर्ण २ रंजत३ निकसैं जहँ, तिहिं देबो १३ खनिदान १३
ख्यात तँहँ ॥
जहँ वहित्र जीवन उतरैं धन, बेलाकर१४ कहियत तस बितरन५१
पीठ१ चमर२छत्रा३दि दान पहु, मान बढन१६प्रतिपत्तिज१६मन्नहु॥
गज५पट८भूखन१५अर्थप्रकटगहि, लेहुसमुझिसत्वरप्रबोधलहि ५२

जो मांगैं सोही देवैं उसका नाम अभीष्ट है, देशका देना है उसको देश्य कहते हैं. जिस धन से१एक वर्ष पर्यन्त सब कुटुम्ब का निर्वाह होजावै उस दान को बड़े लोग आब्ददान कहते हैं ॥ ४८ ॥ देश को रखकर उस देश के २ हासिल को देना है उस भेंट का नाम कर है, जिस नजराने में ३ घोड़े देवैं उसको सप्तिदान कहते हैं और जिसमें ग्राम दियेजावैं उसको निवसथ दान कहते हैं ॥ ४९ ॥ लेनेवाले के ४ सापिण्डी (सातपीढी) तक के मनुष्य रहैं तबतक नहीं लुपै उस दान को सासन कहते हैं ५ सुवर्ण देने को पुरटदान और कन्या देने को कनीदान कहते हैं, वेश्या देने को पननारि नामक दान कहते हैं ॥५०॥ जहां पर रत्न, सोना ६चांदी निकलै उसका देना खानि देना प्रसिद्ध है, जहां ७ जहाज (नाव) की उतराई के धन से जीवन होता होवै उसको ८ देना बेला कर कताहा है ॥ ५१ ॥ ९ सिंहासन, चमर, छत्र आदि मान बढानेवाला राजा का देना है उसको प्रतिपत्तिज कहते हैं और हाथी देने से द्विरद दान, वस्त्र देने से पटदान, गहना देने से भूषण दान कहाता है सो इन के १० नामों से ही अर्थ प्रसिद्ध है वह ११ शीघ्र प्रबोध लेकर समझलो ॥ ५२ ॥

सिद्ध काज जो ह्वै न दान३ सन, पंद्रह१५ भेद दंड४तहँ प्रेरन ॥
देसनास १ अरु अंगछेद २ जिम, गोग्रह३ धान्य हरन ४ बंधन तिम ॥ ५३ ॥
देसहरन६ अरु धन आदान७ हु, पुनि सर्वस्वहरन ८ पहिचानहु ॥
दुर्गभंग९सहस्थानदाह१० श्रुत, देसनिकास११सुतपातन१२जुत५४
अववसिदंड१।१३ आभिचारिक२।१४ इम, अनुचित छलघात ३।१५ जहँ अंतिम३ ॥
पहिले दम बारह१२ प्रबलनके, अग्ग तीन१निंदित अबलनके५५

॥ घनाक्षरी ॥

बेल१ बन२ छेदैं१ त्यों निवाननकों भेदैं२लूटि,
जारैं पुर१ आसन२ कों३ सोतो दंम४ देसनास१ ॥
छेदैं परपच्छिनके अंग२ वह अंगछेद२,
सर्व पसु आनैं घेरि३ गोग्रह३ दुख दुगास ॥
धान्य सब लूटैं४ धान्य हरन सु जानौं बंधैं,
धनकं कुटुंबी५ नाम बंधन५ विदित तास ॥
सत्रुकी प्रजाकों बिसवासवढैं तैसैं रहि,
आपुनी करैं६ सो देसहरन६ बलिष्ठ वास ॥ ५६ ॥
बलतैं दबाइ दंडि सत्रु धनलै७सो धन—

जहां दानसे कार्य सिद्ध नहीं होसके तहां पन्द्रह भेदवाले दण्ड की प्रेरणाकी जातीहै॥५३॥५४॥ प्रथम कहेहुए बारह दंड१प्रबल लोगोंके करनेकेहैं और२आगे (अन्त)वाले निन्दनीय तीन दण्ड निर्बलों के करने के हैं ॥५५॥ बाग को और वनको काटना, जलाशयों को फोड़ना और नगरोंको व ग्रामों को लूटना और जलाना, इस ३ दंडको तो देशनाश कहते हैं ४ शत्रुओं के अंग छेदना अंगछेद है और सब पशुओंको घेरकर लाना यह खोटी आशावाला दुःखदायक गोग्रह नामका दंडहै, सब धान्यको लूटना धान्य हरण दंडहै५धनवानों और कुटुंबियों को बांधना इसका नाम बंधन प्रसिद्ध है, शत्रुकी प्रजा का विश्वास बढै तैसे रखकर अपनी करैं उसपबलवान् वास करनेवाले दण्डको देशहरण कहतेहैं॥५६॥

दान७ सरवस्वलै८ सो जानों सरवस्वहार८ ॥
गढन गिरावैं९ दुर्गभंग९ सो त्यों *खंधावार,
सत्रुकों प्रजारैं१० सो है स्थानदाह१० नाम धार ॥
देसतैं निकासैं११ देसनिर्वासक११ नाम ताको,
जुद्धकरि मारैं१२ जुद्ध घातन१२ सो है उदार ॥
राम२०।१४ प्रभु ऐसैं बलवान होइ ताके करि-
बेके कहे द्वादश१२ ही ए तो दंड४ के प्रकार ॥ ५७ ॥

॥ प्रकृतिः ॥

निबल उचित अब दम त्रय३ भनैं, है विषदंड जु गेर करि हनैं१ ॥
आभिचारिक२जु आभिचारिसौं२, छद्मघात३तिम छल वारसौं३ ५८

(मनोहरम्)

सावधान ऐसैं प्रभुतादिक त्रि३ सक्तिनमैं,
संधि मुख छह६ गुन प्रपंच पटुता धरैं ॥
साम१ आदि च्यारि४ हु उपाय अनपाय जानैं,
भेदन सहित सप्त७ प्रकृति हिये हरैं ॥
वर्ण१ऽऽश्रम२ राज३धर्म राजनय४ नेता न्याय५,

सेना से दबाकर शत्रुको दंड देकर धन लेवैं उसका नाम धनदंड है, और सर्वस्व छीनने को सर्वस्व कहते हैं, गढ के गिराने को दुर्गभंग और शत्रुकी *राजधानी को जलावैं उसका नाम स्थानदाह है, देशसे निकालने को देशनिर्वास और युद्ध करके शत्रुको मारैं उसका नाम युद्धघात है, सो हे प्रभु रामसिंह ये बारह प्रकार के दण्ड तो बलवान् शत्रुके करने के कहे हैं ॥५७॥ अब निर्बल के करने के तीन दंड कहते हैं कि १जहर देकर मारैं उसका नामविष दंड है, और जंत्रमंत्र से मारैं उसको २आभिचारिक दंड कहते हैं ३छलके वार(पेच) से मारैं उसका नाम छद्मघात है ॥५८॥ इसप्रकार४प्रभुता आदि तीन शक्तियोंमें सावधान५संधि आदि छहों गुणों के रचने में चतुर,६नाश रहित साम आदि चारों उपायों को जानैं और भेदोंके साथ राज्य के सातों अंगोंको हृदय में धारण करैं, वर्ण धर्म, आश्रम धर्म, राज धर्म और राजनीतिको ७प्रवृत्त करनेवाला, न्यायचतुर, उदार,

निपुन उदार६ कोस[1] कुधन नहीं भरै७ ॥
ऐसो नृप आपुनैं स्वतंत्र८ आप व्है सो एक॥९,
उद्यमी१० असेस [2]अवनीकों अपनी करैं ॥ ५९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सप्त७ राज्य अंगन बिच स्वामी१, [3]नयपटु१ सूर२ होत इम नामी ॥
अंग द्वितीय२ अमात्य२ सुनहु अब, सह लच्छन शेष[4]हु प्रतीक सब६०
[5]श्रुतसंपन्न१कुलीन२धीर३सुचि४, रागद्वेष२वर्जित५आस्तिक[6]रुचि६॥
[7]वाग्मी७सम्मत८साञ्जविसारद९,नयपर्गगल्भ१०अनुकारक११नि[8]र्मद१२
आय१व्यय२पटु[11]१३सत्यसंधै[12]१४इम,सूर१५अवैर१६[13]महासत्व१७हुतिम
उपधा[14]सुद्ध१८कुलक्रम [15]एधित१९, होत सचिव२ऐसे स्वामिनहित६२
अंग तृतीय३ सुनहु मंत्री१ अब, साध्य[16]१असाध्य२बिबेक धरैं सब१॥
देस१सुक्लिष्ट२अपोहन[17]१ऊहन[18]२,निपुन३।३धीर४स्वाकारनि[19]गूहन५ ६३
स्वीय देस सं[20]भूत६ महामति७, गहैं सबन आकृति१ इंगित[21]२गति८॥

---

१ खजाने में खोटे धन को नहीं धरनेवाला २ संपूर्ण भूमि को अपनी करता है ॥ ५९ ॥ राज्य के सात अंगों में स्वामी (राजा) है वह इसप्रकार ३ नीति चतुर और वीर नामी होता है ४ बाकी के सब अंगों को भी अब लक्षण युक्त सुनो ॥ ६० ॥ ५ वेद की सम्पत्तिवाला अर्थात् वेद शास्त्र जाननेवाला कुलवान् धीर पवित्र राग द्वेष से वर्जित६परमेश्वर को मानने में रुचि रखनेवाला ७ उत्तम बोलनेवाला, सन्मानपात्र, शास्त्रों का जाननेवाला ८नीति में बुद्धिमान् ९ अपने सदृश कार्य करनेवाला१०रोग रहित ॥६१॥११आमद खरच के जानने में चतुर १२ सत्य प्रतिज्ञावाला, इसी प्रकार वीर, वैर रहित१३बड़ा पराक्रमी १४ धर्मार्थ आदि चारों पुरुषार्थों की परीक्षा करने में शुद्ध १५ कुल के क्रम से बढ़ाहुआ, ऐसा सचिव होवे सो स्वामी का हित करनेवाला होता है ॥६२॥ राज्य का तीसरा अंग मंत्री है सो सुनो १६ होनेवाले और नहीं होनेवाले सर्व कार्यों के विचार (ज्ञान) को धारण करनेवाला देश काल १७ काम क्रोध शोक आदि से व्याकुल चित्तवाले की १८ तर्कना करनेवाला, निपुण, धीर १९ अपने आकार को गूढ़ रखनेवाला ॥ ६३ ॥ २० अपने ही देश का उत्पन्न हुआ बड़ा बुद्धिमान, सब की आकृति और २१ चेष्टा से गति को जाननेवाला

प्रथित९अलुब्ध१०मंत्ररक्खनपर११,कुपथभूपप्रातिप्यसुपथकर१२ ६४
पंच५हिमंत्रअंगपरिचार्यक१३, आप्त१४कुलीन१५दूरदृग दायक१६॥
ऐसे व्है मंत्री अवनीपन१, पैरन गंजि प्रभु सुजस प्रदीपन ॥६५॥
अंग चतुर्थ४कोस४कहियत अब, संचित जह रत्ना१दि द्रव्य सब॥
पंच५ रत्न तह पुब्ब प्रमानहु, जिनमैं प्रथम१ वज्र१ मनि जानहु ६६
तास पंच५ गुन पंच५ दोस तिम, जंपिय चउ४ छाया वृद्धन जिम॥
लघु१छ६कोन२वसु८कोन३रुनिर्मल४,अग्रतिग्म५ए५तोगुनप्रातिफल
त्रास१ बिंदु२ मल३ रेख४ काकपद५, हीरकं१मैं ए पंच५दोसहद ॥
छाया स्वेत१अरुन२पीत३असित४,है क्रमतैं चउ४वर्णउचितहित६८
मनि दूजो२ मुक्ता२ सु धैराधव, तस इभ१ अहि२ किटि३ तिमि४
सिर संभव ॥
उपजत संख५ सुक्ति६बंस७न उर, धाराधर बिंदुज८अष्टम८धुर६९

१ प्रसिद्ध २ निर्लोभी, शत्रुओं से अथवा किसी अन्य से मंत्र(सलाह) की रक्षा करनेवाला, कुमार्ग में चलनेवाले ३ प्रतिकूल राजा को शिक्षा देकर सुमार्ग में चलानेवाला॥६४॥ मंत्र (सलाह) के पांचों अंगों को ४ जाननेवाला, सत्यवादी, कुलवान ५दूरदर्शी ६राजाओं के ऐसे मंत्री(सलाहकार)होवें वेही७शत्रुओं को मारकर स्वामी के यश का प्रकाश करते हैं ॥६५॥ राज्य का चौथा अंग खजाना है जिसको कहते हैं जिसमें रत्न आदि सब द्रव्य संचय रहता है तहां प्रथम पांच रत्न हैं जिनमें भी प्रथम ८ हीरे को जानो ॥६६॥ जिस हीरे में पांच गुण, पांच दोष और पांच छाया वृद्धों ने कही हैं, इनमें हलका (भार रहित) होना, छकोन, अठकोन, मल रहित और आगे का भाग तीखा होवे ये पांच तो ९ अत्यन्त फल देनेवाले गुण हैं॥६७॥त्रास(मणिदोष विशेष)अन्य रंग का छिड़का मैल,लकीर, काकचरणके समान चिन्ह१०हीरेमें ये पांच ही दोषहैं और श्वेत, लाल, पीली, काली ये चार छाया क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र११वर्ण हैं सो अपने अपने उचित हित करनेवाली हैं अर्थात् जिसवर्ण की छाया होवे वह उसी वर्ण को हित करनेवाली है ॥ ६८ ॥ १२ हे राजा दूसरा मणि मोती है जिसका जन्म १३ हाथी १४ सर्प १५ सूवर १६ मच्छ इन के मस्तकों में होता है और शंख, १७ सीप और बांस के भीतर भी उत्पन्न होते हैं और आठवीं उत्पत्ति १८ मेघ धारा के बिंदु में भी होती है ॥ ६९ ॥

गुनसर५ज्योति१वृत्तपन२गुरुपन३, अरुविमलत्व४स्निंगधता५रुपन॥
दोसदस१०हि चउ४ बडे छद् छोटे, मन्नहु तहँ पहिले चउ४मोटे७०
सिमिदंग१सुक्तिलग्गन२ अरु तीजो३, जरठ३ दीप्ति१ छायाविनुहीजो
विद्रुमकांति४ चतुर्थ४ दोस बहि, लघु छद्दोस सुनिये अब क्रम
लहि ॥ ७१ ॥
जुबलीबलित१ त्रिवृत्त१ सो तर्जित, वलि चर्पट२बर्तुलता बर्जित२
हैं मलंब३ कृसं३नाम कहावैं, पुनि जु त्रि३कोन४ त्र्यस्र४पद पावैं
खंड५नाम सपिटक अवृत्त५ खिल, कहुँक भुग्न६ कृपापार्श्व६ छ
ठो६ किलं ॥
पीत१ मधुर२ सित३ सिति ४ चउ४ छाया, इनमैं चोथी४ असुभ
अनाया ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तीजो३ मनि मानिक्य३ तहँ, गुन चउ४ औगुन अष्ट८ ॥
बहुसिता१दि धूम्रा२दि छवि, करैं तथा सुख१ कष्ट२ ॥ ७४ ॥

जिनमें १ गोल २ भारीपन (बोझल) ३ निर्मलता ४ सचिक्कणता और ५ मोटा (बडा)पन ये पांच तो गुण हैं और दश दोष हैं जिनमें पहिले के चार बडे और पिछले छः छोटे हैं ॥७०॥ ६ बडे छिद्रवाला अथवा जिसके छिद्र में कीड़ा लगा हुआ होवे वह ७ जिसमें सीप का टुकड़ा लगा होवे ८ विना छाया, जिसकी मंद कांति होवै ९ मूंगा के समान कान्तिवाला ये चार तो बडे दोष हैं और अब छः दोष छोटे हैं सो सुनो ॥ ७१ ॥ कुरियों (सलों) से घिराहुआ १० तीनें गोलाईवाला होवे सो डरानेवाला भयदायक है, फिर चपटा ११ गोलाई रहित १२लंबा होवे उसको कृश कहते हैं,१३और तीन कोनेवालेको त्र्यस्रपद कहते हैं ॥ ७२ ॥ जो खंडित होवे उसका नाम १४ सपिटक है, वह खंडित होने से बाकी का भाग गोलाई रहित होता है १५ कुछ टेढा बांका होवे उसको १६ निश्चय ही कृपापार्श्व कहते हैं, पीली १७महुवा के रंग के समान १८श्वेत १९ काली, ये चार छाया होती हैं इन में चौथी श्याम छाया अशुभ और २०पीड़ाकारी है ॥ ७३ ॥ तीसरा रत्न माणिक्य है जिसमें चार गुण और आठ औगुण हैं और श्वेत आदि व धूम्र आदि बहुत छवि हैं वे २१गुणतो सुख करते हैं और

निर्मलपन१ अतिरक्तपन२, स्निग्धछवित्व३ गुरुत्व४ ॥
गदिते च्यारि४ मानिक्य गुन, ए जिन्ह भद्र उरुत्व ॥ ७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्वि२ छवि२ दोषहैं जहँ छाया दुव२।१, व्है द्वि२रूप२ तस नाम द्वि२ पद२ हुव ॥
भिन्न जु व्है३सु दोस भेदाव्हय३,रेनुजुत४सु कर्कर निरखहुनय७६
जुपटदोस पय रंग लसुन५ जहँ, तिम जड़६ नाम रंगविनु व्है तहँ
मधु निभ कांति७सु कोमल७मानहु, धूमकांति८धूम्र८सु उरआनहु
मन्नहु इंद्रनील४ चोथो४ मनि, तहँ गुन पंच५ छ६ दोस दये तनि
छाया अष्ट८ कहिय छितिनायक, देखहु गुन५जे अब सुभदायक

॥ दोहा ॥

स्निग्धछवित्व१ सुरंगपन२, रंजन पासप्रदेस३ ॥
गुरु४ता अरु तृनग्राहिता५।१०, इहि गुन पंचक५ एस ॥ ७९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु दोस जहँ पटल११ अभ्रसम१, अभ्र१हि तस अभिधान अनुत्तम

अवगुन दुःख करते हैं ॥ ७४ ॥ निर्मलपना, बहुत लालपना, सचिक्कण छवि और भारीपन ? ये माणिक्य के चार गुण कहते हैं सो ये जिनके होते हैं उनका कल्याण होता है ॥ ७५ ॥ जिसमें दो छाया होवै उसका नाम द्विछवि दोष है २ जो दो रूप रंगवाला होवे उसका नाम द्विपद दोष है, जो माणिक्य फूटा होवे ४ उसका नाम भेद है ५ रेणु[रेत] युक्त होवे उस दोष का नाम कर्कर है ॥ ७६ ॥ ६ दूध के समान श्वेत रंग का जिसमें ७ चिन्ह होवे उसको पट दोष कहते हैं, जो विना रंग का होता है उसका नाम जड़ है ८ महुवे के सदृश जिसकी कान्ति होवे उसको कोमल नाम का दोष मानो और जिसका रंग धूम्र के समान होवे उसका नाम धूम्र दोषजानो ॥ ७७ ॥९चौथा मणि नीलम है ॥ ७८ ॥ सचिक्कण छवि, श्रेष्ठ रंग, समीप के प्रदेश को रंग युक्त करना, भारीपन १०आकर्षण शक्ति से तृण को अपने में चिपका लेना, नीलमणि में ये पांच गुण हैं ॥ ७९ ॥ जिसमें बादल के समान ११ जाला होवे उसका १२ नाम ही अभ्र है सो उत्तम नहीं है,

व्है सह रेनु२ सर्क्करीर आव्हय, द्वै जु भिन्न भ्रम३ त्रास३ सु दृढ
दय ॥ ८० ॥
भिन्न४हि व्है जु भिन्न४ तिहिं भाखत, मृदगर्भ५ जु मृत्तिका ग
र्भ५ मत ॥
अस्मगर्भ६ अस्महि जब अंतर६, बसु८छाया अब सुनहु धरावर८१
नीलीरस१ बेन्नावीसुमन२निभ, लँवलीसुम३ इंदीवर४घन५निभ॥
मननिभ१ घननिभ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सिवगल६ बिष्णुसरीर७ उमासुम८, तिनँ सन्निभ इम अट्ठ८ गिन
हु तुम ॥ ८२ ॥
सिखिगल११मधुकरपच्छ१२१०समहु तस, द्वै पुनि धरि कति कहत
कांति दस१० ॥
पयमैं नील४गेरि पिक्खहु पय, नीलहोइ सुहि नील४सत्य नय८३
मनि पंचम५ मरकत५ इम मन्नहु, पंच५हि गुन तस दोस सप्त७पहु
बसु८छबि अब पंच५हिँ गुन बरनत, सुँरागत्व१नीरेनुक२सम्मत८४
पुनि गुरुता३स्निग्धता४बिमलपन५,देखहु पैंहु सप्त७हि अब दूखन

जो१रेत सहित होवे उसका नाम शर्करी है, हे दृढदयावाले रामसिंह२फूटे हुए का भ्रम देवैं उसका नाम त्रास है ॥ ८० ॥ और जो यथार्थ में ३टूटा होवे उसको भिन्न कहते हैं, जिसके भीतर ४ मिट्टी होवे उसको मृद्गर्भ कहते हैं ५ जिसके भीतर पत्थर होवे उसको अश्मगर्भ ही कहते हैं, हे राजा अब आठ छाया सुनो ॥ ८१ ॥ नीलके रस और ६ तुलसी के पुष्प के सदृश ७ लोवीनामक वृक्ष विशेष के पुष्प ८ नीलकमल और मेघ के सदृश ९ शिव, के कंठ १०विष्णुके शरीर ११हलदी के पुष्प १२इनके सदृश आठ छाया जानो ॥ ८२ ॥ और कितने ही लोग १३ मयूर के कंठ १४ भ्रमरके पंख के समान दो छाया फिर रखकर अब दस छाया कहते हैं १५ नीलमणि को दूध में डालकर देखो सो वह दूध नीला होजावै सोही सच्चा नीलम है ॥ ८४ ॥ पांचवां मणि १६पन्नाहै उसके हे राजा पांच गुण और सात दोषहैं और आठ कान्तिहैं१७ श्रेष्ठ रंग१८विना रेणु(रेत)॥८३॥भारीपन, सचिक्कणता निर्मलपना, ये पांच तो पन्नाके गुण हैं और१९हे राजा अब इसके सात दूषण हैं सो देखो कि जिसमें

होइ रूक्षता१रूक्ष१कहावत, पिटक२नजुत सपिटक२पद पावत८५
छायाहीन३ सु मलिन३ कहीजर, अश्मगर्भ४ अश्मांहि जब अंतर ॥
रजजुत५नाम सर्करं५रक्खिय, दीप्तिहीन६—ज इम आक्खिय८६
पुनि कल्माष७जहाँ कर्बुर पन७, वसु८ छाया अब सुनहु धराधन
सुकसिसु१ केकि२ किंकीदिवि३ छद सम, काच हरित ४ सेवल
सौहल६ क्रम ॥ ८७ ॥
सिरीपसुम७खद्योतपृष्ठ८सह, इनै सन्निम वसु८ छबि मरकत यह
कृत्रिम मनिन परिच्छा कहियत, लाभ उचित निश्चे जिम लहियत

॥ षट्पात् ॥

कृत्रिम वज्र१ जु करत वज्र विद्धहि वह बिगरत१ ॥
कृत्रिम मुक्ता२केर मिटन जल१ लवन२ धोइ२ मत ॥
कृत्रिम रहे मानिक्य१।३ नील२।४ मरकत३।५ मुख तो तब॥
इन३कों घिसि१ औटाइ२ सत्य२ मिथ्या१ परखत सब ॥

---

१ रूखापन होवे वह रूक्ष कहलाता है और जो २छालों [आलों] सहित होवे वह सपिटक पद को प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ ३ हे राजा जो पन्ना कान्ति से हीन होवे उसको मलिन कहते हैं ४ जिसके भीतर पत्थर होवे वह अश्मगर्भ है ५ जो रेत से युक्त होता है उसका नाम सर्कर है ६ जिस में कांति नहीं होवे उसको दीप्ति हीन कहते हैं ॥ ८६ ॥ जिसमें ७ काबरा (रंग बिरंग पन) होवे उसका नाम कल्माषपाद है, इस पन्ने में आठ प्रकार की कान्ति होती है सो हे राजा अब सुनो ८ शुक (सुवा) पक्षी के बच्चे की ९ मयूर की १० चातक (पपीहे) की पंखों के समान, हराकाच ११ कुंगोदनी (कांजी) १२ शैवलतृण (बगता हुआ घास) के समान ॥८७॥१३ शिरीष(वृक्ष विशेष)के पुष्प के और १४ जुगनू (आगिया) की पीठके समान १५ ऊपर कहीहुई के सदृश आठ कान्ति पन्ने की हैं ॥ ८८ ॥ १६कूठा हीरा है वह तो सच्चेहीरे से वेधने पर बिगड़ जाता है और कूठे १७ मोती की शोभा(खिलत) नमक से धोने से मिटजाती है. कूठे माणिक्य १८ नीलम१९ पन्ना २०आदि रत्नों (मणियों) को घिसकर जल में उबालकर सच्चे कूठे की परीक्षा करते हैं सो औटाने से

ठहै कथित१ कुरागर२ रु घृष्ट१ मृदुर२ जे सबै कृत्रिम जानिये ॥
इह रत्न पंच५ ए मुख्य अब मनि सप्तक७ लघु मानिये८९
सूर्यकांत१ जो सूर्यकिरन लहि वँन्हि प्रकासत१॥
चन्द्रकांत२ जो चन्द्रअंस छवि स्राव उपासत२ ॥
पुष्पराग३ बैडूर्य४ स्फटिक५ गोमेद६ रु विद्रुम७ ॥
यह सप्तक७ लघु आहि सकल द्वादस१२ तक्कहु तुम ॥
गुन तीन३ सब१२हि रत्नन गिनहु कांति१ कठिनपन२ स्वच्छपन३॥
तजि पवि१गुरुत्व४गुन ग्यारहम११गुन पवि१गत लाघव४ लखन९०

(दोहा)

इन१ रत्न१न करिकैं अधिप, करैं निचित निज कोस४ ॥
हाटकैं३ सोलह१६ वर्णहै, इनमैं अंत्य१ अदोस ॥ ९१ ॥
पावक तपि न घटैं पुटर२, सोलह१६बर्ण सु जानि ॥
नवरवि१ बिज्जु२ प्रकास निभैं, अँजहिं कोस४न आनि ॥ ९२ ॥
रजत३ नागमिश्रित रुचिर, सुचि ज्वालित बिच सुद्ध ॥

१रंग बिगड़जावे और२घिसने में कोमल होजावे उसको झूठा जानो, ये पांच तो मुख्य रत्न हैं और अब सात छोटी मणियों को कहते हैं ॥ ८९ ॥ सूर्य की किरणों से जिससे ३ अग्नि उत्पन्न होजावे वह सूर्यकान्तमणि है, और चंद्रमा के किरणों से शोभा सहित ४ टपकनेलगे वह उसी की उपासना करने वाली चन्द्रकान्तमणि है ५ पुखराज, वैडूर्यमणि (लहसनिया) स्फटिकमणि, गोमेदमणि और मूँगा ये सात छोटी मणियां ६ हैं ७ हीरे को छोडकर बाकी की ग्यारह मणियों में भारीपन गुण है और एक हीरे में ही ८ हलका होना गुण है ॥ ९० ॥ ९ अपने खजाने में संग्रह करैं, इन मणियों के अंत में सोलह वर्ण का १० निर्दोष सुवर्ण इकट्ठा करैं ॥ ९१ ॥ सोलह वार अग्नि में तपाने से कुन्दन होता है वह ११सुवर्ण अग्नि में तपाने से नहीं घटै तब उसको कुन्दन जानो जो १२ प्रभात के सूर्य और बिजुली के प्रकाश के १३ सदृश होता है ऐसे सुवर्ण को खजाने में १४ संग्रह करै ॥ ९२ ॥ १५शीसा मिलाकर १६अग्नि में जलाने से चांदी शुद्ध होती है

ऐंका ससि संकासरुचि, परिचिंत करहिं प्रबुद्ध ॥ ९३ ॥
रत्न१ रु दुवर२ हाटक२।२ रजत२।३,अघटित१।२घटित२।३अलेस
कोस४ अंग चोथो४ करैं, नय चित निपुन नरेस ॥ ९४ ॥
करके च्यारि४ बिभाग करि, धर्म्म१ अर्थ२ अरु काम३ ॥
तीन३नमैं त्रय३ बंट तजि, धरै चतुर्थ४हिं धाम४ ॥ ९५ ॥
सस्त्र१ बस्त्र२ धान्यादि३ सब, संचय इतरहु सज्जि ॥
पूरन रक्खैं कोस४पहु१, गिनैं सुकरँ सब गज्जि ॥९६॥भेकप्लुतिः
मुक्त१ अमुक्त२ रु मुक्तामुक्त३, यंत्रमुक्त४ प्रहरन१ चउ४ उक्त॥
अरि१असि२सक्ति३रुसर४इत्यादि,बिक्खहुए४क्रमकरि रनबादि६७
बादर१ रांकव२ क्षौम३ बखानि, जिम कौशेय४ बसन२चउ४जानि
सूल१रु रोम२सन३सु पुनिपट्ट४, बस्त्र१न भवक्रम करि चउ४बट्ट९८
सूक१अनसु२असु३ मुरत्रय३धान्य३,सहितसजातिहुसलहमान्य॥

जिसकी क्रांति१पार्वती[गौरी]और चन्द्रमाकी उज्वलता की शंका कराती होवे ऐसी चांदीको चतुर लोग२परीक्षा(पहचान)करके संग्रह करैं ॥९३॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी,४घड़ेहुए और३बिनाघड़े इन पदार्थोंसे४राज्यकेचौथे अंग(खजाने)को नीति चतुर राजा पूर्ण करै ॥ ९४ ॥ ६हासिल के चार बंट करके तीन बंट तो धर्म, अर्थ और काम में लगावै और चौथा बंट(हिस्सा)खजाने में रक्खै ॥९५॥ अन्य संचय से भी खजाने को पूर्ण करके राजा उसको ७ सुख करनेवाला मानकर तथा उसको अपने हाथ में(स्वाधीन) किया जानकर सब पर गर्जना करै ॥९६॥ चार प्रकार के ८ शस्त्र कहे हैं जिनमें हाथ से छोडकर चलायाजावै उस चक्र आदि को मुक्त कहते हैं, और हाथसे विना छोडै चलायेजावैं उस तलवार आदि को अमुक्त कहते हैं, और हाथसे छोडकरभी चलायेजातेहैं और विना छोडे हाथ में रखकर भी चलायेजाते हैं वे भाला, बरछी आदि मुक्तामुक्त कहाते हैं, और जो यन्त्रसे प्रेरेजाते हैं उन बाण और गोली आदिको यन्त्रमुक्तकहते हैं, जिन को युद्ध में वाद [हठ] करनेवाले (वीर) ९चक्र, तरवार, बरछी और तीर आदि क्रम से देखो ॥९७॥१०सूतके वस्त्र ११ऊनके वस्त्र १२सणके वस्त्र १३रेसमके वस्त्र ये चार प्रकारके वस्त्र होते हैं ॥ ९८ ॥ १४ मुख्य करके धान्य तीन प्रकारका है, जिनमें चावल,जव, गेहूँ आदिको सूकधान्य कहतेहैं और चना,उड़द,मूँग, मोठ,

सालि१ चनक२ कोद्रव३ क्रम साहि, इनबिच सब्बुरु्ह्हु अखिल१७ उमाहि ॥ ९९ ॥
तैल१४ रु *तूल१५घृता१६ दिहु तत्थ, सोर१७ रु सीसक१८ यंत्र१९ समत्थ ॥
इति९सुखं संचय बिरचि असेस, रक्खहिं संभृत कोस४नरेस १०० दोहा–अंग पंचम५ सु देस५ अब, भनिय चतु४र्बिध सूप ॥
इक१ अनूप१ दूजो२ उचित२, नदीजीव२अनुरूप ॥ १०१ ॥
बृष्टिजीव३ तीजा३ बहुरि, जंगल४ चोथो जानि ॥
उत्तर२ उत्तर२ हैं अधम२, पूरब१ सुखद१ प्रमानि ॥१०२॥
जिहिं प्रदेश उफनाइ जल, ऊपर ऊपर आइ१ ॥
सु अनूप१ रु दूजो२ जहां, जीवननदि जल पाइ२ ॥१०३॥
जहँ जीवन लहि वृष्टि जल३, वह तृतीय३ अभिधान ॥
जंगल चोथो४ बृष्टिजल, सुसहिं ऐंच सो थान४॥ १०४ ॥

आदि को अनणु कहते हैं और कोदूं, चिणा को अणु धान्य कहते हैं, भूमि पर इनकी जाति सब्रह हैं परन्तु चावल, चणा और कोदू, इन में क्रम करके सब समझो अर्थात् शूर्क में चावल आदि जिसमें जब, गेहूं शामिल हैं और अनणु में चणा आदि जिसमें उड़द, मूँग आदि सब हैं. और अणु में कोदूं जिस में चिणा आदि युक्त हैं ॥ ९९ ॥ तेल * रूई, घृत आदि तहां सोर, सीसा बन्दूक तोप आदि समर्थ यंत्र १ इत्यादि सब संचय करके राजा इनसे अपने खजाने को २ भरकर रक्खै ॥ १०० ॥ राज्यका पांचवां अंग देश है, सो हे राजा वह चार प्रकार का कहाता है जिनमें एक जलमई, दूसरा नदी से जीनेवाला तीसरा वृष्टि से जीनेवाला और चौथा जंगल है. जिनमें पहिले सुख देनेवाले पिछले पिछले अधम हैं ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ इन में जहां भूमि के ऊपर आकर जल उफनता होवे उसका नाम अनूप देश है और जहां नदी के जल से जीवन होता होवे उस देश का नाम नदीजीवन है ॥ १०३ ॥ जिस देश में वर्षा के जल से ही जीवन होता है उसका नाम वृष्टिजीवन है और जंगल देश वह है कि जहां वृष्टि का पानी ३ शीघ्र सूखजाता है ॥ १०४ ॥

छल इहिं अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत सुरन ।३।

गज पय खंडन जोरि रचत उप्पर नर रुंडन ॥
सजि सुंडिन उच्छीस मंजु कंदुक नृप मुंडन ॥
गुड पक्खर गद्दी रु बंधि बहु अंत बरत्तन ॥
इहिं मंचक आरूढ मात कालिय अधप्प मन ॥
लै तिहिं पिसाच बाहक महत बहत उछाहक महमहत ॥
जित तित सुगंधि तित ते सजव रुहिर मिठ्ठ हेरत रहत ।४।

भटन भूत कहुँ भिरत कहुँक कातर आक्रंदत ॥
करभ कहुँक कल्लरत गिरत गज कहुँक चिक्करत ॥
कहुँक अश्व कटि परत कहुँक घायल भट घुम्मत ॥
कहुँ कबंध उठि लरत कुट्ठ कुणपन कहुँ झुम्मत ॥
कहुँ कंक मेद कवलन करत कहुँ सिचान झारत झपट॥
॥ ५ ॥

कहुँक नैंन कढि परत कहुँक कटि भौंह फदक्कत ॥
उत्तमंग कहुँ उडत गहत हर उद्ध मोदगत ॥
कालखंज कहुँ कटत बुट्टि बुक्कन कहुँ बुट्टत ॥
कहुँ फुल्लत हिय कंज मधुप मानस उडि उट्टत ॥
कर पय बिभिन्न तरफत कहुँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

तसरिवेको. छलयह या भूतनके छलसों. मिच्चु मृत्यु. सुरन सुरवो॥३॥ गजपयइति ॥ पय पद. उच्छीस उसीसा. कंदुक छोटे तकिया. गुड गजमिलह. गद्दी बिछोना. तिहँ वाकालीकों. महमहत महकत. सुगंध मीठे रुधिरको जानिये ॥ ४ ॥ भटनइति॥ करभ ऊंट. कबंध बिना मस्तक क्रियावंत सूरवीर. कुट्ठ कोष्टु. लोके स्याल. कुणपन कुणप मृतक तिनके ॥ ५ ॥ कहुंकइति ॥ उद्ध ऊर्ध ऊप रही. मोदगत मोदप्राप्त. कालखंज कलेजा. 'कालखंजं कालखंडं कालेयं कालियं यकृदि' तिहैमः ॥ मधुप भ्रमर. सोही मानस मन. उडिउट्टत वा हियकंजहिंसों. यामैं कत गत, छमत रमत, ए अंत्याऽनुपास राखे. या रीति सर्वत्र एकसों लेकैं जितनैं अक्षरनको अन्त्याऽनुप्रास रहावैं तितनैं अक्षरनको पद जुदो करिलेनों. प्राचीन भाषा के ग्रंथनमें

लें इन४सों कर आप लखि, छमहूकों कछु छोरि ॥
जोतें कृषि हल हरखि जिम, रहैं कुलोभहिं मोरि ॥ १०५ ॥
रत्न१ कनक२ अरु रजत३ के, जहँ आकर जे३ देस ॥
पोतजीवि४ जहँ पोतसों, उतरैं वसु चय४ एस ॥ १०६ ॥
अठ८हि जनपद५ मुख्य ५, महि तिम पंच५ अमुख्य ॥
उपवन१वन२गोचर३अर्ग४रु, खिल खनि५ए सब मुख्य १०७

पादाकुलकम् ॥

इन तेरह१३ देसनके आश्रित, होइ प्रजा जितनी चाहत हित॥
तस्कर१ धाटि २ आदि दुख तिनके, सकल हरैं सीमा बासिनके
तब सब देस रहैं घन बरसत, देस५ अंग पंचम५ यह दरसत ॥
अंगछठो६दुर्गा६भिधअक्खिय, ऋपिनतदीयभेदनव९रक्खिय १०९

( )

महिपति दुर्ग६सलिलमय१गिरिमय२, अस्ममय३रु इष्टामय४अत्थ
वनमय५ विदित मृत्तिकामय६ बलि, सो मरुमय७रु मर्त्यमय८सत्थ

इन देशों का जैसी आमद देखैं वैसा ही उनका हासिल लेवें और १ जो खेती करने में समर्थ होवें उनसे कुछ छोड़कर हासिल लेवें जिस कारण खेती करने वाले प्रसन्न होकर हल जोतें और खोटे लोभ को मिटाकर रहैं ॥ १०५ ॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी की जहां खानें होवें २ उस देश का नाम आकर है, और जहां उतराई का ४ धन देकर नाव से उतरते हैं उस देश को ३ पोतजीवी कहते हैं ॥ १०६ ॥ इस प्रकार चार देश तो अनूप आदि और तीन देश खानवाले और चौथा पोतजीवी ये आठ८देश तो मुख्य हैं, और भूमि के पांच प्रदेश गौण हैं जिनमें ६ बाग, वन७गउओं के चरने की भूमि ८ पर्वत और उपरोक्त तीनों ९खानों के सिवाय पार्थी की खानें ये अमुख्य हैं ॥ १०७ ॥ १० चोरों का ११ धाड़ायतियों का ॥ १०८ ॥ राज्य का छठा अंग १२ दुर्ग नामक है १३ जिसके ऋषियों ने नव भेद रक्खे हैं ॥ १०९ ॥ हे राजा ये दुर्ग जलमई, पर्वतमई, १४ पत्थरमई (पत्थरों से चुनाहुआ) १५ ईंटों से रचाहुआ, १६ निर्जल भूमिमय १७मनुष्यमई (मनुष्यों के समूह का बनाहुआ)।

बरनत नवम ९ दारुमय ९ इन ९ बिच, पहिले दुव २ उत्तम पहिचानि ॥
अग्गें छ ६ मित मध्यम२ सुवें इक्खहु, जो अंतिम९ सु अधम४ इक१ जानि ॥ ११० ॥
तहँ अन्न १ रु उदक २ रु घृत३ तैल४रु, तूल५ दारु६ गोलक ७ तिम तोप८ ॥
सीसक९ सोर१० सूत्र११ सन१२सस्त्र१३न, रक्खहि गढ६न निंचय आरोप ॥
छठो६ अंग दुर्ग६ यह छोनिप, जो छोनिप सज्जैं इहि६ जुद्ध ॥
मुदित रहैं सु बलिष्ठहुसों मुरि१, पुनि दब्बैं पर धर्वनि२ मद्धुद्ध ॥
भनित अंग सप्तम ७ बल ७ भेदहु, मनुज१ गज २ रु हय३ रथ ४ चउ४ मान ॥
मनुज१ छ६ भेद प्रथम१ तहँ मौल१सु, पीढिनतैं सु बिसास प्रधान१
दूजो२ भृत्य२ बस जु लहि बेतन२, तीजो३ मैत्र३ जु लहि मित्रत्व ॥
श्रेणी ४ सु ठहै जु समय बस आश्रित४, सो आटविक ५ बनपजा सत्व ॥ ११२ ॥

नवमादुर्ग काष्टमई कहलेहैं इनमें प्रथमकहेहुए दुर्ग[जलका और पर्वतका]उत्तमहैं १और आगे के छः दुर्ग मध्यम हैं २ ये आठ दुर्ग तो श्रेष्ट वास करने योग्य हैं और अन्तका काष्ट(लकड़ी)का दुर्ग अधम है ॥११०॥ ३जल४रूई५दलीता[ईंधन]६ शीशा ७ इन का संचय करके रक्खैं, ८ हे राजा रामसिंह राज्य के छठे अंग इस दुर्ग को जो राजा युद्ध में सज्जित करता है वह ९ बलवान से भी मुड़कर प्रसन्न रहता है और वह चतुर पराई १० भूमि को दबाता है ॥१११॥ राज्य का सातवां अंग ११ सेना है जिसके मनुष्य, हाथी घोड़ा, रथ ये चार भेद हैं इनमें प्रथम मनुष्य के छः भेद हैं, जिनमें पीढियों से १२ मोल लिया हुआ होवे वह विश्वास में मुख्य है, दूसरा सेवक वह है जो १३ तनखाह लेकर वश हुआ होवे, तीसरा मित्रता से वश हुआ होवे, चौथा सेवक जो समय के वश से आश्रित हुआ होवे उसको श्रेणी कहते हैं १५ वनके उत्पन्न हुए सत्व से जो आश्रित हुआ होवे उसको १४ आटवी कहते हैं ॥ ११२ ॥

अत्व१ सत्व२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

अरि व्है स्ववस दवायो इतरन६, सो अमित्र६ समुझहु नरनाह॥
उत्तम१त्रय३चोथो४मध्यम२ इह, पुनि अंतिम५।६दुव२ अधम३सिपाह
बल७ को अंग द्वितिय२जु वारन२, सुहु चउ४विध नामन अनुसार॥
भद्र१मंद२मृग३मिश्र४भिदाभनि, पुनि मुनि सूचित सुनहुप्रकार११३
मधुनिभ१ दंत१जघन३सूकर समं३, उन्नत३ बंस३धनुख आकार३
सुंडा४ वृत्त४ लोम५ मृदु५ संजुत, व्है गर्जित६ बारिद अनुहार६॥
रंग हरित७सुरभित७मद राजत, ओठ८रु मुख८ काकुद८ आरक्त
मत्तहु वाह्य९नयन१०मधुपिंगल१०,-–वृत्त११ग्रीवा११ सु बिभक्त
जोकरसप्त७।१२उच्छ्रित१२रुजाकै,अठारह१८।१३किबीसनखआहि
इभ२ जिहिं भूप चतुर व्है ऐंरिस, भाखत भद्र१ जाति करि जाहि
सिंह१नयन१ कच्छा२ उर२सिथिल२ रु, लंब३थूल१ पेचक३गलपेट
जास चतुर औसो इभ२ जाकै, भनि बुध करत मंद२ पन भेट ११५

१ हे राजा जो अन्य लोगों का दबाया हुआ शत्रु अपने वश में होजावै उसको अमित्रसमझो, इनमें पहिले कहेहुए तीनतो उत्तमहैं और चौथा सेवक मध्यम है और अंतके दोनों(पांचवां और छठा)अधमहैं२सेना का दूसरा अंग हाथी है सो भी नामों के अनुसार चार प्रकारका है३भेद कहकर ४ मुनियों के सूचना किये हुए प्रकार सुनो ॥ ११३ ॥ ५ दूधके अथवा महुवे के समान जिसके दांत होवैं और सूवर के समान (पुष्ट) ६जंघा होवैं और धनुष के आकार७उठी हुई पीठकी हड्डी (पांसेका हाड) होवै ८ गोल सुंड कोमल ९ केशों सहित होवै १० मेघ के समान गर्जना, हरे रंग का और ११ सुगंधिवाला जिसका मद शोभा देता होवै और जिसके होठ, मुख १२ तालुवा १३ लाल होवैं मस्त होने पर भी १४ सवारी देता होवै, जिसके नेत्र १५महुवा के समान पीले होवैं और श्रेष्ठ भाग में बंटी हुई गोल गरदन होवै ॥ ११४ ॥ जो हाथी सात हाथ १६ ऊंचा और जिसके अठारह अथवा वीस नख होवैं १७ ईदृश[ऐसा] हाथी जिस राजाकी हस्तिशालामें होवै उसको भद्रजाति कहते हैं १८जिस हाथी के नेत्र सिंह के समान होवैं कूंख और छाती १९ढीली होवै २० पूंछ का मूलभाग, गला और पेट लंबा और मोटा होवै ऐसा हाथी जिसकी गजशाला में होवैं उसको २१ मंदजाति का हाथी कहते हैं ॥ ११५ ॥

कर्ण१उदर१मेहन१पय१कंठ रु, कर१ रद१ लोम१८ह्रस्व जिहिं केर
सो मृग१जाति गज२रु मिश्रित सब, बहि लच्छन मिश्र४सु इम बेरं
बल७ कौ अंग तुरग३ तीजो३ बलि, सूचित तास भिदा बहु सूरि
बल१रय२ रूप३ आयु४ तिम बिक्रम५, पानिप६ खेत७अर्घ८क्रमपूरि

॥ षट्पात् ॥

खुरासान१ ताजिक२ तुखार३ आड़ज४क्षेत भव ॥
बहुलि बनायु५ कांबोज६ जात बाल्हिक७ उत्तम१ जब ॥
गोजिकान१ केकान२ प्रौढहर३ राजसूल ४ अव ॥
मध्य२ रु गव्हर१ सिंधुपार२ साकुंर३ कनिष्ट४ सब ॥
तिम इतर देस भव जे तुरँग नीच४ कहे पांडव नकुल१ ॥
मुनि सालिहोत्र२ पुव्वहु सुमति वाजितंत्र बरनिय बिपुल

॥ दोहा ॥

जल भव१कति कति ज्वलन भव२, बात प्रभव३कति वाजि
येन१ घूक२ भव३ क्रम इहाँ, रहत वर्ष चउ४ राजि।११८।

॥ षट्पात् ॥

कुसुमगंध१ मत्सर२ बिबेक३ द्विज१ हयकै देखहु ॥

कान पेट १लिंग चरण कंठ २सूंड दन्त और केश जिसके छोटे होवें वह हाथी मृगजाति का है और जो अपने४शरीर पर ये सब लक्षणमिलेहुए धारण करै उसको मिश्र कहते हैं. फिर सेना का तीसरा अंग घोड़ा है जिसके ५ पण्डित लोग बहुत भेद कहते हैं ॥११६॥६इन खेतों के जन्मेहुए७पुनि [फिर]८उपरोक्त देशों के पैदा हुए तो उत्तम वेग वाले होते हैं ६ उपरोक्त चार देशों के घोड़े मध्यम होते हैं१०इन दो देशों के घोड़े अधम और११अन्य देशों के उत्पन्न हुए घोड़े पांडव नकुल ने अधमाधम कहे हैं१२नकुल से पहिले ही बुद्धिमान् शालिहोत्र मुनिने १३घोड़ों के शास्त्र शालिहोत्र में बहुत वर्णन किये हैं ॥ ११७ ॥ जल से उत्पन्नहुए घोड़े मृग१४अग्नि से उत्पन्न हुए उलूक (घूघू) और१५पवन से पैदा हुए घोडे क्रम पूर्वक मंगल करनेवाले मानेजाते हैं जो चार वर्ष के रह कर शोभायमान रहते हैं ॥ ११८ ॥ १६ ब्राह्मण जाति के घोड़े के शरीर में

अगरु गंध१ रय२ ओज३ माने४ वाहुंज२ गत पेखहु ॥
सर्पिगंध१ मन सभय२ अस्व ऊरुज३ अवगाहत ॥
सठ१ तिमिगंध२ असत्वं३ चकित४ चोथो४ जु न चाहत ॥
सित१रक्त२पीत३हरित४रु असित५कपिल६संवल७ तिन्ह वर्ण क्रम
पीत१जु तुरंग२सित१नेत्र२पय३चक्रवाक१सुभ छत्र छेम॥११९
स्वेत१चरन२मुख३संप्ति अंग१जंबूफलें आकृति२ ॥
मल्लिकाक्षे२ वह महत भंद२ वर्द्धक नृप भाँ१कृति ॥
स्वेत१ अंग२ जो संप्ति स्याम१कर्ण२ सु अति सुभ फल॥
पय१।२।३।४मुख५केसर६पुच्छ७वच्छं८सित१सो वसु८मंगल४ ॥
आंगोधि चरन१अरु चउ४चरन सित१सु पंच५कल्यान हय५ ॥
ए५सुभ१रु सित२जँचउ४पयअसितं२जमदूत१सु गेरतअजय२ ॥१२०

पुष्प की सुगन्ध मत्सरता अन्यकी भलाईमें द्वेष करना और ज्ञान[विचार]होता है ३ क्षत्रिय जाति के घोड़े के शरीर में १ अगर (काष्ठ विशेष) की गन्ध वेग तेज २ पाख [पराक्रम] होता है ५ वैश्य जाति के घोड़े में ४ घृत की गन्ध और मन में भय होता है ८ शूद्र जाति के घोड़े में मूर्खता ६ मच्छी की गंध ७ पराक्रम हीन और भय युक्त होता है सो नहीं रखना चाहिये, इन घोड़ों के रंग वर्ण के क्रम से श्वेत (नुकरा) लाल (कुमैत) पीला, हरा (नीला), काला (मुश्की), ९ दो रंगका अबलख १० अनेक रंग मिला हुआ अबलख जानो और पीले रंग के घोड़े के चरण और नेत्र श्वेत होवें उस का नाम ११चक्रवाक है सो रखनेवाला वह १२समर्थ घोड़ा शुभ है ॥११९॥१३ जिस घोड़ेके चरण और मुख तो श्वेतहोवें और शरीरका रंग१४जम्बू(जामुण) के फलके समान होवें उस पुष्प घोड़ेको १५ मल्लिकाक्ष कहते हैं सो १६मंगल [शुभ] और राजा की १७ कान्ति बढानेवाला है १८ जो घोड़ा श्वेत रंगका होवै और उसके कान काले होवें वह [श्यामकर्ण] अत्यन्त शुभ फलदेनेवाला है और जिस घोड़े के चारों चरण, मुख १९ केशवाला, पूंछ २० छाती ये आठ अंग श्वेत होवें उसको अष्टमंगल कहते हैं जो शुभ हैं और जिसके चारों चरण और२१ललाट श्वेत रंगके होवें सो शुभदायक२२पञ्चकल्याणनामक घोड़ा है. इतने घोड़ेतो२३शुभहैं और २४श्वेत रंगके घोड़ेके चारोंचरण२५कालेहोवें उसको

॥ दोहा ॥

रोम१ भिन्न२०है रंगमैं, असुभ२ सु पुष्पित२ आहि ॥
भस्मबर्ण२तुरगहु भयद, तजत महीपति ताहि ॥ १२१ ॥

षट्पात् ॥

ग्रीवा१सिर२हिय३गोधि४कुक्षि५मंबिबंध६नाभि७क्रम ॥
अंसपार्श्व८त्रिक९आस्य१०गलख११पच्छति१२सुभ१२विश्रम ॥
गोधिअग्र१नासाग्र२संख३सिर४कंठ५पंच५पुनि२ ॥
अरु गल इक१ आवर्त२गदित चिंतामनि३निर्भ४गुनि ॥
जिहिं तालु१मध्य आवर्त जुग२सुक्ल४नाम सुभ४जानिये ॥
इक१बाहुमूल२थनविच१अंपर२नामबिजय५सुभमानिये१२२

॥ दोहा ॥

भाल१ उभय२ तीजो३ सिर१ सु, नाम पूर्ण६सुभ६निरय ॥
जिहिं ललाट१भ्रम जुग्म२सो, चन्द्रकोस७लुख चित्य७ १२३

जयदूत कहते हैं सो जय करता है ॥ १२० ॥ जिस घोड़े के शरीर के रंग में अन्य रंग के केश होवैं उसको १फूलाहुआ कहते हैं सो अशुभ है और भस्मी रंग का घोडा भी भय देनेवाला है ॥ १२१ ॥ अब आगे घोडों के शरीर पर बालों [केशों] की शुभाशुभ भमरियों का वर्णन करते हैं कि गरदन, मस्तक, हृदय २ ललाट, कूँख ३ अगले पगों के सुरके [गालों] पर, नाभी, ४ कन्धेका पसवाड़ा ५ कमर ६ मुख ७ गला ८ पसवाड़ेपर, इन ९ बारह अंगों पर भम रियों का होना शुभ है और फिर१०ललाट के अग्र भाग पर, नासिका के अग्र पर ११ ललाट की हड्डी के ऊपर "ललाटकी भमरियों को तीन बार बताचुके हैं जो ललाट के अवयवों का भेद जानना चाहिये" १२गले की एक भमरी को चिन्तामणि १३ कहते हैं जिस का गुण भी चिंतामणि के १४ सदृश ही है दूसरी भमरी स्तनों के बीच में होवै उसको१५विजय कहते हैं ॥१२२॥ ललाट परदो भमरी होवे और इन दो के मस्तक पर तीसरी भमरी होवे उसको पूर्ण कहते हैं जो शुभ है और जिसके ललाट पर दो ही भमरी होवैं उसका नाम १६ चन्द्रकोश है सो शुभ जानो ॥१२३॥

दक्खिन भ्रम१ जिहिं कंठ२ दुव३, इन्द्र८ नाम तस आंहि ॥
सुभ८जनपद२ वर्द्धक सदा, बामांबर्त३ वृथाहि ॥ १२४ ॥
अंसपार्श्व१ आवर्त इक१।२, पद्मलच्छन९सु पुण्य९ ॥
नक्रमध्य१ इक१ वा दुव२ सु, चक्रवर्ति१०सुभ१० गुण्य१२५
उत्तम१ ए दस१० अर्व अव, अंस१ रु गल२भ्रम आनि ॥
कुक्षि३नाभि४हिय५पार्श्व६कटि७, जे क्रम मध्यम२जानि१२६

॥ षट्पात् ॥

इक्क१ पृष्ट१ आवर्त१ असुभ१ यह भनित भयंकर१ ॥
भाल१ इक१ हु बाम२ भ्रम१ कलह द्रुत स्वामि स्वयंकर२॥
इक१ बदन१ आवर्त१ अपर२ कर्चांत१२ सु अर्दक३ ॥
जानुदेस१ भ्रम१ जोहु वाजि खल४ अध्व१३ बिमर्दक४ ॥
आवर्त१ जास सेफैं१ सु असुभ५ प्रभुनासक५पहिचानिये ॥
आवर्त१त्रि३वलि१जाकैं वहहु नृप त्रि३वर्ग हय६मानिये१२७

॥ दोहा ॥

पृष्ठ१ वंस१५ इक१ भ्रम१ असुभ७, धूमकेतु७ अभिधान ॥
नाभि१पुच्छ२गुद३त्रय३भ्रमन, सो८जमराज समान८॥१२८॥

वाली दो भमरियें होवें उसका नाम इन्द्र है सो शुभ १ है, और वे सदैव २ देश को बढ़ानेवाली हैं और वे ही भमरियें ३ वाम मुखवाली होवें तो वृथा हैं ॥ १२४ ॥ ४ कंधे के पसवाड़े पर एक भमरी होवे उसका नाम पद्म लक्षण है सो ५ शुभ है, और ६ नासिका में एक वा दो भमरियें होवें उस का नाम चक्रवर्ती है सो शुभ जानो ॥१२५॥ ७ उपरोक्त दश घोड़े तो उत्तम हैं ॥ १२६ ॥ ८पीठ की भमरी अशुभ है और ललाट पर वाममुख की एक भमरी होवे वह ९ अपने स्वामी से शीघ्र कलह करानेवाली है १०एक भमरी मुख पर और दूसरी ११कांखके अंत में होवे सो१२पीड़ाकारी है, और घुटनों पर भमरी होवे वह दुष्ट घोड़ा भी१३मार्ग में ही मारनेवाला है १४जिसघोड़े के लिंग पर भमरी होवे सो भी स्वामी को मारनेवाला अशुभ जानो और जिस घोड़े के लिंग पर तीन भमरी होवें उस घोड़े को भी हे राजा त्रिवर्ग (वृद्धि का नाश करनेवाला) जानो ॥ १२७ ॥ १५ पीठ की लंबी हड्डी पर ॥ १२८ ॥

॥ रोला ॥

अध१ ऊरधं२ आवर्त२ जुगर२ न परसैं जमदून१ सु१ ॥
ओगुन खिल अवनीस[2] सुनहु अब हय संभूत[3] सु ॥
अधिक१हीन२ रद१ अंड२असित काल्हुव[5]सुसली[6]इम ॥
वंदन५करालीळबहुरि घंटी७ शृंगी[10]त्रि[11]कर्न९तिम ॥१२९॥
सह कंकोली[12]१० द्वि२ सफ[13]११ पंचं[14]५ जट२अंजनी[15]१२हु पुनि॥
सथन[16]१४ चउद्दह १४ असुभ[17]१४गादित छ्वन स्वबुद्धि गुनि॥
इंदिंदिर[18] सम१ असित१ तालु१ व्है तो वह असुभ न ॥
सब भ्रम दक्खिन१सुभ१सव्य२[19]वर्तों कहुँ सुभ न२ १३०

॥ दोहा ॥

इम बाजि[20]न लखि सुभ१ असुभ२, समुचित संग्रहि संसि[20]॥
सह पाटव[21] रक्खैं सुही, बाढैं अरिन बिलासि ॥ १३१ ॥
कंटक[22]७ अंग तीजो३ कहिय, यह हय३ नाम उदार ॥

१ऊपर नीचे दो भमरियें होवें उसको जमदूत स्पर्श करता है २हे राजा वाकी के अवगुण भी घोड़ोंसे३उत्पन्न होनेवाले हैं सो सुनो. अधिकदंता ४और हीन दन्ता इसी प्रकार हीन अण्ड और अधिक अण्ड अशुभ है ५श्याम तालुवाला ६ सब शरीर एक रंग का और एक चरण अन्य रंगका होवे उसको मुसली कहते हैं, इसीप्रकार ७ मुखकी अशुभ भमरी विशेषवाला ८ नीचे के ओठ से बाहर दंत निकला हुआ होवे उसको कराली कहते हैं ९ वह और गले की भमरवाला जिसको कंठभंजन कहते हैं वह और १०मस्तक पर सींगका चिन्ह होवे वह ११ तीन कानवाला॥ १२९ ॥ १२ कंकोली (खोड़विशेष) सहित १३ दो खुरवाला १४ मस्तक पर केसवाली में पांच भमरियें होवें उसको पंचजट कहते हैं वह और फिर १५नेत्र के नीचे भमरीवाला १६ अधिकस्तन (चोचे) वाला इन चौदह प्रकार के घोड़ों को वृद्ध लोगों ने अपनी बुद्धि को फैलाकर अशुभ १७ कहे हैं. इन में १८नील कमल (गढ्ढल) के समान श्याम तालुवाला होवे वह अशुभ नहीं है और ऊपर कही हुई सब भमरियां दक्षिण मुखवाली शुभ और १९वाम मुखवाली अशुभ हैं ॥१३०॥२०घोड़े एकत्र करै और२१चतुराई से रक्खै सो ही शत्रुओं को रुलाता है ॥१३१॥२२सेना का

स्पंदन४ अब चोथो४ सुनहु, प्रस्तुत च्यारि४ प्रकार॥१३१॥
कर्म उचित च्यारि४ न कथित, चउ४ छ६ अठ८दस१०चक्र;
व्है चक्रन मित४।६।८।१०जुत्तहय,सुभ१सवेग४छितिसक्र१३२
रन समुचित चउ४ चक्र रथ, चउ४ हय सुखद विचारि॥
रक्खिय अरु अब रथरनहु, धरनि लुप्त कलि४धारि॥१३४॥
अंग राज्यके सप्त७ ए, मुख्य बल८अवधि मानि॥
इतरहु अंग अवस्य इम, जेहु लेहु प्रभु जानि॥१३५॥

॥ घनाक्षरी ॥

त्रयी१० त्यों अथर्व२ दंडनीति३ सांति४ पुष्टि५कर्म,
कोविद व्है एरिसै पुरोहित१ प्रमान्यों जात॥
संहिता१ गनित२ होरा३ केरल४ सकुन५ पंच५,
भेद जानैं ज्योतिष सो गणार्क३ बखान्यों जात॥
पीढिनतैं सील१ कुल२ वारो१ धीर२ बाजि१ गज२,
सस्त्र३ सास्त्र ४ विद्याबुध ३ सेनापति ३ जान्यों जात॥
वेद१ स्मृति२ कुसल औ राग३ द्वेष४ चेष्टाबुध५,

१ सेना का चौथा अंग रथ है इस २सेना के इस प्रकरण से चार प्रकार का है ३ ऊपर कहे हुए पहियें के होते हैं सो४हे पृथ्वी के इन्द्र (रामसिंह) इन रथों में जितने ४ पहिये होवें उतने ही घोड़े जुतने से शुभ वेगवाले होते हैं ॥ १३१ ॥ इनमें युद्धके ६ उचित चार पहियों का रथ ही है और चार घोड़ों का जोतना ही सुख देनेवाले विचार कर रक्खे हैं परन्तु अब ७ कलियुग में युद्ध के रथ भूमि पर मिटगये जानो ॥ १३४ ॥ राज्य के सात अंग ८ सेना पर्यन्त मानो परन्तु ९ और भी अवश्य अंग हैं वे भी हे प्रभु सुनो ॥ १३५ ॥ १०ऋक्, यजु, साम, इन तीन वेदों और मोहन, वशीकरण, उचाटन आदि अभिचार जंत्र मंत्र में ११ नीति शास्त्र, शान्ति और पुष्टि कर्म में १२पंडित १३ऐसा पुरोहित चाहिये १४ऊपर कहे हुए पांच भेद युक्त ज्योतिष को जाननेवाला ज्योतिर्वा कहाता है १५किसी में प्रीति और द्वेष नहीं करनेवाला १६ चेष्टा से अभिप्राय को जाननेवाला

अष्टकं८ दसक२१० वा यौँ न्यायकर्म४ आन्यौँ जात१३६
सर्व रनकोबिदं१ परीच्छित२रु सिद्धसस्त्र३,
हस्ती४ हय५ यंताँ४।५ दुष्टदंडक६ ठहै जोर्ध५ जोहि ॥
चो४उपायं१छ६गुनं२प्रपंची१।२ देस३ काल४बुध३।४,
मंडलेसंमान्य५ आप्त६सांधिविग्रहिक६ सोहि ॥
सर्व चयकारी१ यंत्रयोधी२ आप्तं३ स्वामीके,
दिवायेंहू मरें दैं गढ४ दुर्गपति७ ऐसो होहि ॥
आप्त१ रु अलुब्ध२सर्व भाषा लिपि वेदी३ कूट,
गनित विवेकी४ अधिकारी लेखसालाको८हि ॥१३७॥
स्मार्तकर्म कोबिद१जथा उचित दंडदाता२,
धर्मधुर धीर३ सत्यवादी४ होइ दंडधर९ ॥
सुश्रुता१दि आयुर्वेद अभ्यासी१निदानपर२,

१मनुस्मृतिमें कहेहुए क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले आठ दोष "पैशून्यं साहसं द्रोह ईर्ष्याऽसूयार्थदूषणम्॥ वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोष्टकः" ॥ २ काम से उत्पन्न होनेवाले दश दोष "मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः। तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः" ॥ इन सब के जानने में कुशल होवे ऐसा ३न्याय करनेवाला रखना चाहिये ॥१३६॥४सब प्रकारके युद्धों में चतुर ५ परीक्षा कियेहुए ६ जिनके शस्त्र खाली नहीं जावैं ऐसे ७ हाथी घोडों को उत्तम चलाने (शिक्षादेते) वाले, दुष्टों को दंड देनेवाले ऐसे ८ योद्धा (वीर) रखने चाहिये ९ साम आदि चारों उपाय १० संधि आदि छहों गुणों को रचजाननेवाला, देश काल में चतुर ऐसा ११ देशाधिप (हाकिम) मान १२ पाने योग्य और १३ यही सन्धि विग्रहका कार्य करनेवाला होना चाहिये और सब १४ संचय का करनेवाला १५ तोप आदि यन्त्रों से युद्ध करनेवाला १६स त्यवादी १७ ऐसा किल्लादार होवे, सत्यवादी १८ निर्लोभी १९ सब भाषाओं के लेखको जाननेवाला २० कूटगणित को जाननेवाला २१ दफतर का अधिकारी होवे ॥ १३७ ॥ धर्म शास्त्र का पंडित, उचित दंडका देनेवाला २२ ऐसा कोतवाल होना चाहिये २३ सुश्रुत आदि आयुर्वेद का अभ्यास किया हुआ २४ रोग का कारण पहिचानने में श्रेष्ठ,

दीदारबख्खस बुधसिंह हुव २ रसिक प्रान बाजिय रमत ।६।
रुहिर रंग बढि बहत छेद छत्तिय पिचकारिन ॥
डफ मद्दल डिंडिम्मिय तान मंडन सिव तारिन ॥
पात गुरज पुट्टल्लिय पुहप अंगार प्रकासत ॥
खग्ग खग्ग मिलि खिरत बूर अब्बीर बिभासत ॥
जुग्गिनि जमाति पननारि जिम आलापन झुकि उच्चरत ॥
दीदारबख्खस बुधसिंह हुव २ कलह फग्ग कौतुक करत ।७।
पहुमि छत्र कटि परत जरत चामर ज्वालानल ॥
बरत बीर अच्छरिय झरत हेतिन कृसानु झल ॥
कोसन कलह दुरंत बाढ असि बर इक बज्जत ॥
बहु निखंग बिक्खरत चाप तुट्टत सर सज्जत ॥
तरफत प्रमत्त हिंदुव तुरक आलम दल जालम जन्यौं ॥
नवब्रय खिलहार बुंदिप नृपति आजमसुत बढि अंगम्यौं ॥८॥

॥ तोटकम् ॥

धर संगर आजम पुत्त धक्यो, गज उप्पर लोहन छाक छक्यो ॥
दतियापति आदि करीन चढे, बहु अग्ग प्रबीर उमीर बढे ।९।
रसघोर निसानन ध्वान रच्यो, बिदिसान दिसान कृसानु मच्यो।

चित मत्त, समान निसान, प्रबीर उमीर, इत्यादिक अनुप्रास राखे सो लच्छन हीन जानिये॥यथा॥"व्यंजनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेण तु ॥आवर्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत् ॥" इतिसाहित्यदर्पणे ॥ ६ ॥ रुहिररंगइति ॥ फागसौं रूपकहै. तहां. रुहिर रुधिर. सोही रंग. छेदछत्तियपिचकारिन छातीनमें घावनके छेद तेही पिचकारी तिन करिकैं. मद्दल मर्दल. वाद्यविशेष. तारिन तालीन देकैं. पुहप पुष्प. पननारि वेश्या ॥ ७ ॥ पहुमिइति ॥ हेतिन शस्त्रन. कृसानु अग्नि. निखंग तरकस. सरसज्जत बानको संधान करत. जालम यावनी. जुलम करिबवारो. नवब्रय नई अवस्थाके. अंगम्यों अपने जोरमें लियो ॥ ८ ॥ तोटक ॥ धरइति ॥ धक्यो कुपित भयो ॥ ९ ॥ रसइति ॥ घोर भयानक. ध्वनि शब्द. तातैं. झरैं कटि कढि परैं. पर परन्तु. पै पद. एक पैंड यह अर्थ. नसुरें नहीं भजैं. तक्किय तार्किक. तर्क न्यायशास्त्र ताके पाठक).

धर्मधर३ धीर४ क्रिया कोविद५ सो वैद्य१० वर ॥
रत्न१ हेम२ रजत३ पट४ादिक विधान बुध१,
आप्त२ रु कुटुंबी३त्यों अलुब्ध४ सो११ है भांडधर ॥
लेखन कुसल१ सर्वदेसलिपि१ वानी२ बुध२।३,
आप्त४ अग्रवाची५तें२ व्है बांचक१।१२रु लेखकर २।१।३ ॥१३८॥
पीढिनतें आप्त१ स्वादुपाची२ सूदसास्त्र बुध३,
लोभहीन४ वैद्यक बिसारद५व्है सूपकार१४ ॥
मेधावी१ अलोभी२ परचिंतवेदी३ व्यक्तवाक्य४,
निर्भय५ प्रगल्भ६ सत्यवादी७व्है संदेसहार१५ ॥
स्थानेंदंडपाती१ गजसिच्छा१ हयसिच्छा२ दच्छ२।३,
सिद्धसस्त्र४ आप्त४व्है गजा१५र्व२अधिकारवार१६।१७ ॥
लोहभेद बोधी१ चित्रयोधी२ सानकर्मपटु३,
सूर४ सस्त्रसाधक५ समाश्रित६व्है सस्त्रधार१८॥१३९॥
कांन१ खंज२ वृद्ध३ कुब्ज४ वामन५ खलति६ पंगु७,

रत्न, सुवर्ण, चांदी, १वस्त्र आदि के विधान में चतुर, सत्यवादी, कुटुंबवाला २ निर्लोभीऐसा३भंडारी(भंडारका दरोगा)। सर्वदेशकीलिपि लिखनेमें कुशल, बोलने में चतुर, सत्यवादी, पढने में कहीं रुके नहीं ऐसा आगे से आगे बांचने वाला, इस प्रकार का ४ बांचनेवाला और लिखनेवाला (अहलकार, मुनशी) चाहिये ॥ १३८ ॥ पीढियों से सत्यवक्ता ५ स्वादु भोजन पकानेवाला ६ रसोई के शास्त्र में पंडित ७ वैद्यक में निपुण ऐसा ८ रसोई पकानेवाला होवै ९ बुद्धिमान् १० दूसरे के मनकी बात को जाननेवाला ११ स्पष्ट बोलनेवाला १२उपस्थित बुद्धिवाला (हाजर जवाब) १३ ऐसा दूत होवै १४ दंड के स्थान पर दंड देनेवाला, हाथियों की और घोड़े की शिक्षा में चतुर, शस्त्र विद्या में कुशल(शस्त्रों के पूर्ण अभ्यासवाला)सत्यवादी ऐसा हाथी १५घोड़ोंका अधिकारी होना चाहिये, लोहे के भेदों को १६ जाननेवाला १७ आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला, खुरशाण के कार्य में चतुर, वीर, शस्त्रों का साधन कियाहुआ १८ श्रेष्ठ रीति से आश्रित होवे वह १९ सकलीघर होना चाहिये ॥ १३९ ॥ २० काणा, २१ लोड़ा, बुड्ढा २२ कुबड़ा, ठिंगना २३खल्वाट (टाटला)पांगला, कोढी,

कुष्ट१ खैन२वारे८।९ अवरोध द्वारबासी१९।१९हि ॥
आप्त१ रु अरूप२ लोभहीन३ जितइंद्रिय४०है,
चेष्टा१ऽऽकार२वेदी५।६ अवरोध अधिकारी२०जेहि ॥
सर्वचित्तग्राही१ दर्पबर्जित२ मधुरवाची३,
रूप१ तेज२ वारे४।५ वैत्रवारे६प्रतिहार२१ तेहि ॥
औरहु अनेक राज्यवारे उपअंग ऐसैं,
जानौं प्रभुराम२०१।४ उपयोगी जे नृपनकेहि ॥ १४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंहचरित्रे राज्ञे राजनीतिश्रावणं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥
आदितः पंचषष्ठ्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६५ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तहँ ऐसैं पंडित जनन, सब मग बरनि सुरीति ॥
पुहवीपहुँ पहुराम२०१।४प्रति, प्रथित कहे सहप्रीति ॥ १ ॥
सूरि कथित सब प्रति समुझि, जोग्य१ अजोग्यहि जानि ॥
नास्तिक मग खट६तजि निर्यंत, आस्तिक मग पग आनि२॥२॥
सहित धर्म१ तिम भक्ति२ सह, आत्मबोध३ उपदेस ॥
पथ यह मन्न्यों सिसुपनहु, निज गिनि राम२०१।४नरेस॥३॥

१क्षय (थैसिस) रोगवाला, ये २ जनाने द्वार पर रहनेवाले होवें ३ चेष्टा और आकार से अभिप्राय को जाननेवाला ४ जनानी ड्योढी का दरोगा होना चाहिये ५ उपरोक्त लक्षणोंवाले छड़ीदार और ६ द्वारपाल होवैं ॥ १४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में रामसिंह के चरित्र में राजा को राजनीति सुनाने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और आदि से तीन सौ पैंसठ ३६५मयूख हुए ॥

तहां इसप्रकार पण्डितों ने ७ राजा के सब मार्गों का श्रेष्ठ रीति से वर्णन करके ८ राजा रामसिंह प्रति प्रीति सहित ९ प्रसिद्ध कहे ॥ १ ॥ १० पण्डितों के कहे हुए ११ निश्चय ही ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

दस१० सम वय इम दिपत सकल रंजनिवेप भूप सुनि ॥
दिये सभा बुध द्विजन पुंग्ट१ भू२ पट३ भूखन पुनि ॥
रक्खि निकट अनुरूप भनित कवि१ सूरि२ मंत्रि३ भट४ ॥
लग्गिय सिच्छा लेन सवन समुचित वीरन बट ॥
जगि१ ब्राह्ममुहूरत१निरप जिन करि मंगल दरसन२कथित॥
दै३द्विजन भर्म१भोजन२वदन स्वलखि आज्य भोजन४सहित॥४॥
हय१ गज२ सुरभि३ निहारि४ सौच आचरि६ सौचालय ॥
कर१ पय२ रद३ करि७ सुद्ध नियत विधि न्हाइ८ निपुन नय॥
संध्या विरचि९ समंग अष्टि१६ भेदन प्रभु अर्चन१० ॥
श्राद्ध१० रु तर्पन२ सद्धि११श्रवन सुकथा जु सपर्चन१२॥
संध्या द्वितीय२लगतहि करि१३सु पुनि सुनि१४भारत भागवत२
अध्ययंन धारि१५अप्पन उचित द्रुत अरोहि गज१हय२ द्रवत१६॥५॥
गवत१ द्रवत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इनहिं फेरि वय उचित अस्त्र अनुक्रम अभ्यासहिं१७ ॥
वैश्वदेवकरि१८ बहुरि असन मध्यान्ह२ उपासहिं१९ ॥
मंत्रिन सह रचि मंत्र२० करहिं नय मर्म विलोकन२१ ॥
सुनि व्यय१ आय समस्त२२ सद्धि खेल२३हु सखिलोकन ॥
अपरान्ह३ समय संध्याहु इम रचि२४गज१हय२ फेरत रहत२५॥

१ दश वर्ष की अवस्था में इसप्रकार शोभायमान होकर राजा ने २ अपना कर्तव्य सुनकर सभा में विद्वान् ब्राह्मणों को ३सुवर्ण, भूमि, वस्त्र दिये ४अपने सदृश ५ पण्डित ६ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते उठकर ७ ब्राह्मणों को सुवर्ण देकर ८ घृत के पात्र में अपना मुख देख कर ॥ ४ ॥ ९ कानों में श्रेष्ठ कथा का संयोग करते हैं १० अपने उचित पढने को धारण करके शीघ्र हाथी घोड़े पर चढकर ११ चलते हैं ॥ ५ ॥ १२ सखा लोकों से १३ सन्ध्या के समय भी "तीसरे पहर से सूर्यास्त पर्यन्त के समय को अपराह्न कहते हैं"

सस्त्रहु समस्त४पुनि सद्दिकैं२६लै*अचवन१भोजन२लहत२७॥६॥
बिलोकन१ खिलोकन२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

॥ दोहा ॥

जननी१ गुरु२ कुलवृद्ध३ जे, वंदि चरन तिन्ह२८ वीर ॥
मित्रन रमि२९ निद्रा समय, धरैं सयन पय३० धीर ॥ ७ ॥
ब्राह्मयमुहूरत१हीं बहुरि, ऐसैं जागि अवनीस ॥
चर्या प्रतिदिन आचरैं, श्रुति निदेस वहि सीस ॥ ८ ॥
ऐसे क्रम बुंदी अधिप, हायन दस१० वय होत ॥
सद्धि बढ्यो स्वविधेय सब, इन कि मैंकर उद्योत ॥ ९ ॥
महाराव कोटा महिप, जो इत दिल्लिय जाइ ॥
बिफल होत चिंतत बिविध, भयो विमन खिन भाइ ॥१०॥
बिष्णुसिंह२००१२नृप सिक्खविधि, चिंति सकल अब चित्त॥
पछितावत महि बिरतपनैं, बिरह पिक्खि भुव१ वित्त ॥११॥
अंगरेज अनुकूल इक१, मिल्यो तदुक्त न मानि ॥
मत्त अनुज सिखयो मुरयो, जुज्झत द्रुत बल जानि ॥१२॥
सब खिल्ल सासक समयके, अंगरेज मति इंद्ध ॥
जालम दिस अनुकूल जे, सज्ज भये बल सिद्ध ॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

करन जुद्ध कोटेस सज्जि सानुज दिल्ली सन ॥
आयो सरद४ अंनेह मन्नि देसहि स्वकीय मन ॥

---

* आचमन करके ॥ ६ ॥ ७ ॥ १ आचरण ॥ ८ ॥ २ मानों मकर संक्रान्ति का सूर्य चढे जैसे चढा ॥ ९ ॥ १० ॥ ३ बुंदी के राजा विष्णुसिंह ने पहिले शिक्षा दी थी उस सब को याद करके भूमि को ४ छोडकर उस भूमि रूपी ५ धन से विरह देखकर अब पछताता है ॥ ११ ॥ ६ उस अंगरेज का कहना नहीं मानकर ७ अपने मस्त छोटे भाई को सिखाया हुआ ॥ १२ ॥ ८ बाकी के इस समय के सब हाकिम ९ बडे बुद्धिमान् अंगरेज जालमसिंह की तरफ अनुकूल थे वे ॥ १३ ॥ १० शरद् ऋतु के समय में

कति छत्र१ रु कति मकट२ मिले बंधव माधानी ॥
इतरहु कोटा अनुग मिले इहिं क्रम जय मानी ॥
परदेस सुभट१ जिनमैं प्रचुर कहत देस सुभट२हु कतिक॥
जालम अधीन जे सब जुरे मन भूपहि मारन मतिक॥१४॥
तबहि गोठपुर तजि रु तानि साहस बलवंत२००।२हु ॥
प्रभु पितृव्य सजि सत्थ लरन जावन लग्गो लँहु ॥
पहु माता तब पत्र कलित नय भेजि कहाई ॥
लखहु कालगति लाल इक्खि आलय अधिकाई ॥
तुमरो अधीस वय बाल तिहिं सिक्ख देहु हित अनुसरहु ॥
भार जो परैं अप्पन भवन कोविद तस उपसम करहु॥१५॥
विन्नति लिखि इम विविध प्रसू प्रभुकी देवर प्रति ॥
समुझायो सुमिराइ गेह१ कुल२ कर्म१ धर्म२ गति ॥
बढत दर्प बलवंत२००।२ सोहु मन्नी न जथा सठ ॥
महाराव सन मिलि रु भयो तस भीर हेरि हठ ॥
अंग्रेज१ झल्ल२ उत ए१हि इत मंगरोलपुर ढिग मिले ॥
पटकेहि झल्ल निज स्वामिपर गुरु गोले तोपन गिले॥१६॥
इतके हंकन अर्व कहत थाके कोटेसहिं ॥
कहयो तदपि कोटेस सचिव करिहै न कलेसहिं ॥

---

१ माधवसिंह के वंश के हाडे २ और भी कोटा के सेवक ३परदेशी वीर बहुत थे ४ राजा किशोरसिंह को मारने की बुद्धि से ॥ १४ ॥ तभी बलवंतसिंह ६ रावराजा रामसिंह का काका हठ फैलाकर ५ गोठड़ा नगर को छोडकर सेना सजकर ७ शीघ्र जाने लगा तब ८रामसिंह की माता ने नीति का ९प्रसिद्ध पत्र भेजकर कहलाया १०अपने घर (बुंदी) की ११हे चतुर १२उस सभा को मिटावो ॥ १५ ॥ १३ प्रभु (रामसिंह) की माता ने १४झाला जालिमसिंह ने ॥१६ ॥ १५ इधर के वीर घोड़े उठाने के लिये कहकर थक गये १६ तोभी कोटा के पति ने कहा कि हमारा सचिव झाला जालिमसिंह क्लेश नहीं करैगा

इहिँ अंतर सहसाँहि[1] फैर जालम२००।२ तोपन फवि ॥
नृप किसोर ।२ दल निखिल[2] छोरि नँठो[3] कातर छवि ॥
सुनि फैर[4] बाजिँ न रह्यो स्ववस गहि पँसुत्व[5] इक१दिस गयो
असवार तास नृपको अनुज[6] भीत उतहि जावत भयो॥१७॥
मन ओर१हि मग सुरत अँर्व[7][8] भजिगो मग ओर२हि ॥
कुंद१कुंसा२दुहुँ२ करन जुरे इक्कत१ बरजोरहि ॥
आयुध१ हय२ अभ्यास न दिय सिक्खन जालम जिम ॥
चमकत हय हुव चकित अनुज नृपको परवस इम ॥
जालम वरूथ[9] बिच जावतहि पृथ्वीसिंह सु जानि पैँर[10] ॥
मल्लार नाम इक१ आयुधिक धर पटक्यो दै कुंत[11] धर ॥१८॥
कछु न हुतो नृपकोँहु[12] बाजि१ आयुध२ विद्या बल ॥
अर्ब[13] खर्ब आरूढ देखि तोपन बिखरत दल ॥
भाखी अब मैं भजि रु कहां दुरिहों अपजस करि ॥
अब मरनहि मम अच्छ धुँत्त[14] अरि सम्मुह पैंड धरि ॥
प्रभुके पितृव्य१ मुख[15] रनपटुन तहँ जंपिय नय तक्कि तिम ॥
इम कह्यो तब न हंके हय रु अग्ग न बिगारहु मिच्चु[16] इम१९

---

१ अचानक २ सब सेना को छोडकर ३ कायर की तरह भागा ४ तोपों के फैर सुनकर घोड़ा अपने वश में नहीं रहा और ५ पशुपना ग्रहण करके एक तरफ भागगया ६ उस घोड़े का सवार राजा का छोटा भाई डरकर उधर ही गया ॥ १७ ॥ सवार का मन तो और ही तरफ जाता था और ७ घोड़ा और ही तरफ भगगया, दोनों हाथों से ८ वाग के दोनों कोने जबरी से मिलगये ९ जालिमसिंह की सेना में जाते ही १०शत्रुओं ने पृथ्वीसिंह को जानकर शरीर में ११ भाला मारकर भूमि पर गिरादिया॥ १८ ॥१२राजा किशोरसिंह को भी घोड़े का और शस्त्र का विद्याबल कुछ नहीं था १३ छोटे घोड़े पर चढकर १४धूर्त शत्रु (जालमसिंह) के सन्मुख कदम देकर मेरा मरना ही अच्छा है १५ रावराजा रामसिंह के काका (बलवंतसिंह) आदि युद्ध के चतुरों ने कहा १६ इस प्रकार मृत्यु मत बिगाड़ो ॥ १९ ॥

कहि इम सह कोटेस दुमनं नट्ठो हड्ड५।१हि दल ॥
पथ कछु तिहिं पहुचाइ विजय करि मुरिग झल्ल बल ॥
अंधकार मचि अतुल धून तोपन अंबर१ भर ॥
कति कोसन संक्रमत भये संगत बिछुरे भर ॥
अनुजहिं न इक्खि कोटाअधिप कहिय राहियपिथ्थल३कहां॥
वढि अग्ग चलत संगिनवदिय त्वरित आहु मिलिहै तहां।२०।
नगर बरोदा निकट भूप पहुंच्यो गोरन भुव ॥
पुच्छत तहँ अति प्रसभ हन्यों अनुज सु जानंतहुव ॥
भनिय रोइ खिल भ्रात मरहु जिन तजहु संग मम ॥
जालम कोटा जाइ राज्य निज करहु मनोरम ॥
श्रीद्वार जाइ में अब सदा प्रभुको करिहों अनुगपन ॥
पन सोहि रक्खि कोटेस पुनि जाइ तत्थ किय हरि जंजन२१
पीछैं चिरंकरि पट्ट आनि रक्ख्यो जालम यह ॥
सून्य तखत तिंहिं समय तास कतिदिन रक्ख्यो तह॥
आक्खिय सुत माधवहुँ विष्णुसिंह२००।२ हिं बैठारन ॥
जालम तउ तस जनक कुमर वरज्यो कहि कारन ॥
आवन किसोर—।१कोटा अंवधि पँट्ट निकट धरि पावरी ॥

ोटा के पति सहित १ उदास होकर हाडाओं की सेना भागी २ झाला की
सेना कितने ही कोस चलने पर बिछुड़े हुए वीर १ साथ हुए ४ साथवालों ने
कहा ॥२०॥ ५ गौड़ क्षत्रियों की भूमि में ६हठ करके पूछने पर ७छोटे भाई का
मारा जाना जाना ८ थाकी के भाई मत मरो और मेरा साथ छोडदो ९ सुंदर
ाज्य करो १० विष्णु भगवान् का सेवकपन करूंगा सोही नाथद्वारे में जाकर
' विष्णु भगवान् का पूजन किया "मेवाड़ देशमें नाथद्वारा नामक तीर्थस्थान
' ॥ २१ ॥ १२ बहुत समय पीछे महाराव किशोरसिंह को नाथद्वारे से कोटे
' लाकर पीछा पाट बिठाया १३ तखत शून्य रहा उस समय जालमसिंह के
ा १४ माधवसिंह ने कहा कि किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंह को पाट
' तोभी १५ जालमसिंह ने कारण बनाकर अपने पुत्रको मना किया और १६
ःशोरसिंह के पीछा कोटे में आने पर्यन्त १७ गादीके समीप किशोरसिंह की

तिन्ह अग्ग प्रनमि किय काम तिहिँ ऐसा सकल कहि रावरी॥२२॥

॥अष्टपात्॥

मंगरोल रन मचिग समय बसु इय धृति१८७८संवत ॥
निधि हय धृति१८७९ सक नियत इतंहु सेना साजि उद्धत ॥
जुज्झन सिख रनजीत प्रबल हंकिय लवपुरपति ॥
पुर१ सदुर्ग२ पेसोर अनखि घेर्‌यो आग्रह अति ॥
चँक्र सहँस चौबीस२४०००अरिन पंचहि हजार५०००उत ॥
भयकर संगर भयउ जदिन दुहुँ२०ओर जोर जुत ॥
केलि पर्‌यो मुख्य रनजीतको भोलासिंह१ स नाम भट॥
इक सहँस१०००कतल१घायल२ इहाँ बिदित परे सिख वीरवट॥
जहँ काबल सन जित्ति प्रहत करि कथित पठानन ॥
प्रतिभट लहि पेसोर उहाँ थानाँ धरि अप्पन ॥
हुव अजेय लाहोर बाहु बस करि पंजाबहि ॥
कोउन हुव जट्ट कुल महिप दब्बत इतीक महि ॥
स्वीय सचिव इत सुपहु नैर बुन्दिय मृत नागर ॥
संभूराम स नाम जगत नय मत उज्जागर ॥
द्विज तुलाराम१ संभू२ दुव२हि भ्राता बर मंत्री भये ॥
तिनके अभाव धात्रेय तकि गेरन भँर जग दृग गये ॥२४॥

॥ दोहा ॥

पावड़ी रखकर उस (पावड़ा) के आगे प्रणाम करके १ सब भूमि आपकी है यह कहकर कोटाका काम करता रहा ॥ २२ ॥ २ निश्चय ही सेना सजकर ३ लाहोर के पति सिख रणजीतसिंहने क्रोध करके गढ सहित पेसोर पुरको घेरा ४रणजीतसिंह की सेना ५ युद्ध में रणजीतसिंह का मुख्य उमराव भोलासिंह मारागया ॥ २३ ॥ ६ कहेहुए पठानों को मारकर पेसोर को अपना शत्रु समझ कर ७ तुलाराम और शंभु, इन दोनों के अभाव (नहीं रहने) में धायभाई पर राज्य कार्य का भार डालने को संसार के नेत्र गये ॥ २४ ॥

ग्राम सूहरीको गदितं, गैंदा गुज्जर गंग१ ॥
धावर नृप उम्मेद१८=।४कै, जो हुव पुव्व प्रसंग ॥ २५ ॥
तस नेत्तीं धात्रेय यह, कृष्णाराम अभिधान ॥
तारागढको दुर्गपति, मन्न्यों नय मति मान ॥ २६ ॥
पंचनमत प्रभुकी प्रसू, अप्पहिं समुचित अक्खि ॥
सचिव किन्न धात्रेय सो, राज्य भार भुज रक्खि ॥ २७ ॥
किय मोहन१ तस ज्येष्ठ सुत, तारागढपति तत्थ ॥
सुख२ मंगल३ याके अनुज, स्वामिभक्त हित सत्थ ॥ २८ ॥
कृष्णाराम१ कोविद अनुज, रामकृष्ण२ धात्रेय ॥
दुर्ग अजितगढको हुतो, सासक जो रन श्रेय ॥ २९ ॥
तास तनय जेठो१ रतन१।४, भट सोपे प्रभु भक्त ॥
वाजि१ सस्त्र२ अभ्पास बुध, सव अधीस हित संक्त ॥३०॥
सुभटनके पुत्रहु सवय, हुव सव भूप हजूर ॥
सार्म्य जु वानन संग्रहें, सिसुपन वहें न सूर ॥ ३१ ॥

षट्पात्-कृष्णाराम धात्रेय सु इम हुव मुख्य मुसाहव ॥
सव प्रभु राज्य सम्हारि ताक्कि व्यय१ आय२ तुला तव ॥
मेटि असेस प्रमाद कोस धन१ अन्न२ रासि करि ॥

सूहरी नामक ग्राम का गैंदा गोत्र का गूजर गंगाराम उम्मेदसिंह की धाय का पति हुआ १कहते हैं ॥२५॥ २उसका पोता ॥२६॥ ३ महाराव राजा रामसिंह की माताने ४ आप (रामसिंह) को उस कृष्णराम धाय भाई का सचिव होना उचित कहकर उसको सचिव किया ॥२७॥ कृष्णाराम का छोटाभाई ५ चतुर ॥२८॥२९॥ ६घोड़े और शस्त्र के अभ्यास में चतुर ७ स्वामी के हित में आसक्त अथवा समर्थ॥३०॥ अपनी अवस्थावाले उमराओंके पुत्र राजाकी हजूरमें हाजिर हुए ८वह राजा अपने तुल्य युवा पुरुषोंका संग्रह करता है और बालकपनको धारण नहीं करता ॥३१॥ ९आमद खरच को बराबर देखकर १० सब भूलों को मेटकर (अनुचित खरचको घटाकर) खजाने में धन और अन्नका ११समूह करके

कुनय करज दूर किय भूप आलय लच्छी भरि ॥
अरु किय समाढ्यं देसहु अखिल वसुधा किय जस ख्यात बहु ॥
सुखराम सोहु वड्ढिगो सचिव पहु अप्पहिं लहि राम२०१४ पहु३२

( )

नभआंहिगजससि१८८०सकइतनिपुनन अंग्रेजनदिनदिनजय आस॥
लरत लरत हायन दुवरतैं लगि पंचसहँस५०००निज बल लहि पास
प्राची१ ओर बिलायत वर्मा आवा१पुर तस खंधावार ॥
अरु दूजो२जिहिं नाम अइन्वा२रत्नपुर३हु तीजो३रुचिकार ॥३३॥
अब तस निकट पहुँचि अंग्रेजन मंजिल दुव२पर मंडि मुकाम ॥
बढि आवा१ लैबोहि बिचारिय तोपन लास घुजावत धाम ॥
तब करि संधि चकित वर्मापति दम्म कोटि१०००००००१ बैलव्यय
हित दिन्न ॥
दूजो२ मोलमीनको जनपद२ कहि उँपदा इनके वस किन्न ॥३४॥
इत कोटा जालम बपु उज्झिय प्रतिमा तुल्य नृपहि धरि पट्ट ॥
माधव तब हुव मुख्य मुसाहब वहत जनकं जालम गत वट्ट ॥
विष्णुसिंह२००१२कोटेस मध्य२सुत जालमसौं जु मिल्यो द्रुत जाइ॥
आय लक्ख१०००००ंदम्मनपुरअनतादियताकहँमन अभयहढाइ ३५

१ राजा के घर को लक्ष्मी से भरकर सब देश को २ धनवान् कर दिया ॥ ३२ ॥ ३ लड़ने लड़ते दो वर्ष लगने पर, पूर्व दिशा की बर्मा नामक विलायत और उसकी ४राजधानी आवापुर जिसका दूसरा नाम अइन्वा और तीसरा सुंदर नाम रत्नपुर है ॥ ३३ ॥ उसके समीप पहुंच कर ५ फौज खरच के लिये क्रोड़ रुपये दिये ६ देश ७ भेट कहकर अंगरेजों के अधिकार में किया ॥ ३४ ॥ ८ मूर्ति के समान महाराव किशोरसिंह को गद्दी पर रखकर कोटा में झाला जालिमसिंह ने ९ शरीर छोडा १० मरेहुए पिता जालिमसिंह के मार्ग पर चलकर उसका पुत्र झाला माधवसिंह कोटा का मुसाहब हुआ, कोटा के पति के मध्य पुत्र विष्णुसिंह को जो जालिमसिंह से शीघ्र जा मिला था ११लाख रुपयोंकी आमदका अंता नामक पुर दिया॥३५॥

मिलि सूर झरैं पर पैं न मुरैं, जिम तक्किय सद्दिय वाद जुरैं ॥१०॥
खग धारन धार समार खिरैं, पलभोजन चोसठि संग फिरैं ॥
नटके वट व्है भट के लटके, झटकेन झरैं वटके वटके ॥ ११ ॥
किलकारत भै करि भूत मिलैं, हलकारत खित्तरपाल खिलैं ॥
उमडे असि बिज्जुव अंकनसे, घुमडे दल भद्दवके घनसे ॥ १२ ॥
गहि भैरव नर्त्तककी गतिकौं, मिलि बंचत कालियकी मतिकौं॥
करितुंड ससुंड स्वसुंड कसैं, बनि आखुग संकर अंक वसैं ॥१३॥
सुत जानि प्रचुंबन ईस सजैं, भय धारि तबैं किलकारि भजैं ॥
छह्६जोजन फोजन भुम्मि छई, अति पाउस जानि घटा उनई॥१४॥
पवमान दिगुत्तरको प्रसरयो, सु मनौं घन पोसक होय सरयो ॥
चहुघाँ तरवारिनकी चमकैं, ति दिपैं मनु बिज्जुवकी दमकैं॥१५॥
मिलि भूखन ओज इरम्मदलौं, लगि सिंजित दद्दुरके नदलौं ॥
वहु झंड सु रोहित चाप बनैं, तनितारव दुंदुभि ढाल तनैं ॥ १६ ॥

सद्दिय शाब्दिक. (शब्दशास्त्र व्याकरण ताके पाठक॥१०॥खगधारइति। समार देशीप्राकृत. अतिशय करिकैं. चोसठि यहां युद्धमैं ६४ जोगनी ऐसे सर्वत्र जानिये. वट मार्ग, झटकेन झटके, देशीप्राकृत, खड्गाऽऽघात तिन करिकैं ॥११॥ किलकारतइति ॥ भै भय. असि खड्ग. अंकनसे अंक चिन्ह तिनसों. बिज्जुरीके चिन्हनसे यह अर्थ ॥ १२ ॥ ॥ गहिइति ॥ नर्तककी नर्तक बहुरूप स्वांग आनिबेवारो ताकी. बंचत ठगत. करितुंड करि हस्ती तिनके तुंड मुख. "तुंडमास्यं मुखं वक्त्र' मितिहैमः ॥ ससुंड सुंडा सहित. स्वसुंड अपनें सुंडमैं. आखुग गणेश. आखु उंदर ताकरिकैं चलिवेवारे. "द्वैमातुरो गजास्यैकदंतौ लंबोदराखुगौ" इतिहैमः ॥ अंग लोके गोद तामैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ पवमानइति ॥ पवमान पवन, दिगुत्तरको उत्तर हिमालयकी तरफकी दिशा ताको. आजमशाह गोलासों उड्यो ताके पहिलेही पलट्यो हो सो. सरयो चल्यो. यहां प्रसर्यो सम्सर्यो ए अंत्यानुप्रास हैं. ति ते ॥ १५ ॥ मिलिइति ॥ इरम्मदलों इरम्मद मेघकी प्रभा ताके तुल्य 'मेघज्योतिरिरंमदः' इत्यमरः ॥ सिंजित भूषणको शब्द. "भूषणानां तु शिञ्जित" मित्यमरः॥ झंड झंडे. रोहित सीधे इंद्रधनुष. 'तदेव ऋजु रोहित' मित्यमरः ॥ तनितारव तनित स्तनित मेघको निर्घोष ताके तुल्य आरव शब्द 'स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोष" मित्यमरः ॥ १६ ॥ करकावलिइति ॥

मास्यो जिहिं पित्थल—१३ हनि तोमर सो वाहुजं मल्लार स नाम ॥
करि सत दुव२००सादिनको सासक छुरि गिनि ताहि दये धन१धाम
भ्रात१ भये अनतापुर अधिप रु जिहिं इक्क भ्रात हन्यो वरजोर ॥
अभय सु पै मल्लार२ वढ्यो इम कहिनसक्यो कछु भप किसोर३६
माधव अब जालम जिम मालिक अंग अखिल करि अप्प अधीन॥
देस१कोस२सेना३दुर्गादिक४कोटा सब सासन वसकीन ॥
विष्णुसिंह२००१२बुन्दीस विराजत नरपति मान जोधपुर नाह ॥
स्वसुताको प्रभुसौं किय सगपन कुमरपनहि सुनि सबन सराह॥३७।
यातैं व्याह त्वरा करिवे अब भट विक्रम१थानांपति भ्रात ॥
दूजो२ चंदकुमर विरुदेस२हु खँगारज कूरम जस ख्यात ॥
ए दुव२ तबहि जोधपुर पठये बलि आये तहँ मंडि बिवाह ॥
प्रभु वय इत हायन बारह१२पर सड्डिय सब राजन नय राह ॥३८॥

मनोहरम् ॥

खेलत खलूरिकामैं खुरली सरासनकी,
पानि धरि पाटवँ यौं राम२००१२ छितिपालके ॥
ऊंचे अभ्भ उडत पतत्रिनकौं पारिदेत,
ओर न उतारिदेत वेझा चिरकालके ॥
दीठि जो परैं तो दूर वेधनमैं हालहाल,

---

१ मल्लार नामक जिस क्षत्रिय ने भाला मारकर महाराव किशोरसिंह के छोटे भाई पृथ्वीसिंहको मारा था॥३६॥ उसको २ जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने बुंदीपति विष्णुसिंह था तब ३ अपनी पुत्री का सम्बन्ध रामसिंह से किया था ॥ ३७ ॥ ४ खंगारोत कछवाहा जो जसमें प्रसिद्ध था ॥ ३८ ॥ ५ अखाड़े में धनुष का ६ शस्त्राभ्यास करता है जहां महाराव राजा रामसिंह के हाथ ऐसा ७ चतुराई धारण करते हैं कि ८ आकाश में ऊंचे उडते हुए ९ पक्षियों को गिरा देते हैं और दूसरों के बहुत समय के ठहरे हुए १० निसाने को गिरादेते हैं और जो दृष्टि में आजावैं तो हिलते हुए केशों को केशके अंतर से

बालबाल अंतर बचै न बट *बालके ॥
केही चित्र क्रमतैं तयेमैं करि छेकछेक,
एकएक बेधैं मनि मोतिनकी मालके ॥ ३९ ॥
ऐसैं नरनायक अनेक क्रम आनि आनि,
साधि सर१ विद्या पानि तुपक२प्रमानकी ॥
फैंकि नभ निंबू वेधडारत विविध रीति,
दोलाजंल त्यौं तति उतारत वटानकी ॥
कवि रविमल्ल ।१ बुद्धि बिसन किनीक बात,
सैरिभ१मैं सहित पखाल२ कढिजानकी ॥
चोचा१दल२ चनक१ खुमा२दिनके खंडिदेत,
मोचादल मंडिदेत माला गुटिकानकी ॥ ४० ॥
यौं धनु१ तुपक२ साधि बारहैं१२ बरस आप,
कार्सू३ कुंत४ पट्टिस५ कृपान६ कला पकरी ॥
हायन छ६वारे पीन कायन लुलायनके,
कंधर कठोरन ज्यौं काटिदेत ककरी ॥

---

*केशके टुकड़े भी नहीं बचते हैं, कितनेही आश्चर्यके क्रमसे तवेमें छिद्रही छिद्र करदेते हैं तथा छिद्र करके फिर उस छिद्रको छेक देते हैं और मोतियोंकी माला का एक मणिया वेध देते हैं ॥३९॥ १हींडते हुए (झूले में झूलते हुए) २काष्ठ के गोलों (लड्डुओं) की पंक्तिको गिरादेते हैं ३ कवि सूर्यमल्ल कहते हैं कि इन कामों में बुद्धिके प्रवेश होनेकी तो क्या बात है किन्तु पखाल सहित ४भैंसे में तीर कढजाता है और ५ तेजपात, चणा और६वारिपर्णी अथवा लता विशेष के पत्तों को काटदेते हैं और ७ केलके पत्ते में गोलियों की माला रचदेते हैं 'केलका पत्ता सामान्य चोट से फटजाता है इस कारण उस में गोलियों की माला रचने में विशेषता है' तथा नील और शाल्मली (सावर) के वृक्षों के नाम भी मोचा है जिनके पत्तों में ॥ ४० ॥ ८ बरछी, भाला ९ कटारी, तरवार की १०कलाको धारण की ११छः वर्ष के पुष्ट भैंसों के कठोर कंधों को काकड़ी के समान काटदेते हैं,

साग्रगत माघहोत निस्सह निदाघहोत,
अस्त्रनको आघहोत बाघहोत बकरी ॥
टक्करी टराइ करी आवजाव अस्वनकों,
बीथी सकरी बिच चलात जैसैं चकरी ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

गत१ प्रत्यागत२ साचिगत३, पाटन४ रोध५ प्रहार६ ॥
हयारूढ सब्बे हुलसि, ए खट६ तोमर वार ॥ ४२ ॥
बाईसरहि असि मग्ग बलि, छुरली सद्धि स खेल ॥
बेधन लग्गो सबन बढि, सादी सिंहन सेल ॥ ४३ ॥
सूचित बय सवगुन गहत, बहत वृकोदर बेस ॥
प्रथित नियुद्ध१ पटैतपन२, सिक्ख्यो नृपति असेस ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सूकल१ तुरंगनकों बाहन विनीत करि,
आरोहत१ मैंगल२ मतंगन धराइ धीर ॥
काननके मैंह१ रु वराह२ खड्ग३ कंठीरव४,
फांदन फलंगैं तिनके तनु रुकैं न तीर ॥
निखिल नियुद्धमैं न समवय साम्हैं होत,
तत्त्वबोध१ भक्ति२ धर्म३ नीति४ सम साधि सीर ॥

इस शस्त्र विद्या में नहीं सहने योग्य १अग्रगत [आगे गया हुआ] पौष सहित माघ मास और इसी प्रकार नहीं सहन किये जानेवाली ग्रीष्म ऋतु में भी शस्त्रों का आघ होता है और जिनके सन्मुख सिंह बकरी के समान होता है २टक्कर से हाथियों को टलाकर ३सकड़ी गलियों में आवजाव करके घोड़ों को चकरी के समान चलाते हैं ॥४१॥४ घोड़ों पर सवार होकर ५ भालेके ॥ ४२ ॥ ६ घोड़े पर चढे हुए भाले से सिंहों को मारनेलगा ॥ ४३ ॥ ७ भीमसेन की भांति ८ बाहुयुद्ध ॥४४॥ ९अशिक्षित घोड़ों (बछेरों) को शिक्षित करके १० हाथियों पर ११ वन में जंगली (आरणे) भैंसों को १२ गेंडा, सिंह १३ इनके शरीरों में भी तीर नहीं रुकता १४ सम्पूर्ण बाहुयुद्ध में

*पाटव जितो‡ †पटु पायो पुहवीप ताहि,
‡आसु अपनायो एक बुंदी अधिराज वीर ॥ ४५ ॥
§सूरि१ सूर२ खोजनमैं आलंबन आदि१ बनैं,
सोहत सभज्यामैं सरोजनमैं गंध सम ॥
जागै जस जाको भू पचास५०कोटि जोजनमैं,
रैम्य रुचि रम्यतैं मनोजनमैं अंध सम ॥
ओजनमैं भोजन२मैं पावे पर मोजन१मैं,
फोजन२मैं को जन कहावैं वेलाबंध सम॥
॥ ४६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

अखिल हेय१ आदेय२ इम, ध्रुव धीक्रम तजि१ धारि२धराधन॥
नाम निकास्यो नृपनमैं, डग राघव मग डारि महामन ॥४७॥
जिहिं बतरावैं सोहि जन, मन्नैं मोहन मंत्र पढ्यो मति ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन,त्वरित करेनिजतंत्र पढ्यो मति४८
प्रभु पितृव्य इत गोठपुर, सुनि बाहुल८सित१अंत१५पुराय सुख
पट्टनि तीरथ न्हान पर, रुचि धारिय बलवंत२००१२ताहि रुख४९
॥ ॥
कन्या निज उपयम पहिलैं किय दुर्गापुर सासक सरदार१९६१४॥
सोपुर अधिप राधिकादासहिं बुल्लिय व्याहन सविधि विचार ॥

*चतुराई †चतुर रामसिंहने ‡शीघ्र॥४५॥ §पंडितों के खोजने में १फूलों में सुगन्ध के समान सभा में शोभित होता है २सुन्दर कांति में ३कामदेव और कामदेव के अवतार प्रद्युम्न इन दोनों की गणना करने को यहां बहु वचन में नकार का प्रयोग किया है अर्थात् रामसिंह की सुन्दरता से उन दोनों की सुंदरता भी नहीं दीखती थी ४प्रताप में और दान में भोज भी ऐसा नहीं था और फौजों में ५ आडावला नामक पर्वत के पति के समान कौन मनुष्य सुहाता है ॥४६॥ सम्पूर्ण छोडने और ६ग्रहण करने को ७बुद्धि के क्रम से निश्चय ही छोडा और धारण किया ८ रामचन्द्र के मार्ग में चरण देकर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ९रामसिंह का काका १० कार्तिक सुदि पूर्णिमा को ॥ ४९ ॥ ११अपनी कन्या का विवाह

संध्यापति ताको सह सोपुर दौलतराव लयो सब देस ॥
दठनांहित दिय ताहि वरोधा सासन वस रंचक भुव सेस ॥ ५० ॥
दुर्गापुर आयउ वह दुल्लहु तिहिं *मह गों बलवंत२००१रहु तत्थ॥
सोपुर लैन मंत्र किय तासन सूचिय हम जुज्झहिं अब सत्थ ॥
सर हुल्लकर१ संध्या संध्या२ जुग२ मालव वंटि अनीक अमान ॥
सू जितितित दब्बी वहु भूपन पटकि आस †प्रबलत्व प्रमान ॥५१॥
कूरम१ गोर२तथा खिच्चो३ कुल पुनि जद्दव४ बुंदेल५प्रमार६ ॥
गढ नरउर१सोपुर२राघवगढ३धूमि कगोलिय४ झांसिय५ धार६ ॥
संध्या लिय इनकी अवनी सब विन्नतिपर कछु रक्खि निवाह ॥
बुंदेल१न खिच्चि२न तब गहि बल दिप जुरि जुरि संध्या उर दाह ५२
जत्थहु वीर रचहिं जुज्झिय रन रन रन इक१ जयसिंघ१ नरेस॥
बहु वेरहि लक्खन अरिदल बिच इन१सन उत२काढिकाढि गयएस॥
जिहिं ईस्वर न हनैं तिहिं को जन महत वरूथ हनैं रनमांहिं ॥
इम खिच्चि२य राघवगढको ईन निर्भय भिरत मरयो कहु नांहिं॥५३॥
बहुवेरन इहिं नृप किय व्याकुल रुद्ध स्वसित सम दौलतराव ॥
तोपन ईस फिरंगिन तीन३न दहि रनरन वन जिम तप दाव ॥
जे भट मुख्य सिकंदर१ जेकम२ निडर ज्यानवत्तीस३२ स नाम॥
ए त्रय फ्रांस विलायत उद्भव तिन बल अधिप लहैं जय तामें॥५४॥
तोप१न भारि२तत तरकावहिं ए३ हरिमंथ१अरि२न रन ऐन ॥
तूनजिम गिनि जयसिंह१सु तीन३न निजबल जुरिग मिचावत नैन

॥५०॥*इस उत्सवमें बलवंतसिंह भी गया। †बलवानपन से आस पटककर॥५१॥
१ सिंधियाने इतने लोकों की भूमि छीन ली थी ॥५२॥ २सेना में उसको कौन मार सकता है ३ राघोगढ का पति लड़कर कहीं नहीं मारा गया ॥ ५३ ॥ ग्रीष्म ऋतु की अग्नि वनको जलावै जैसे४युद्ध युद्धमें जयसिंहको जलाया ५नहीं इनके बलसे॥५४॥१निरंतर तोपोंकी भाड़ में शत्रुओं रूपा ७चणों को तड़काते थे

आयु बिताय समय बपु उज्झिय राघवगढ जयसिंह१नरेस ॥
ध्रुव सुव तास नामकरि धोंकल२अंकेस्थित भुवहित हुव एस ५५
संगर सोहु जनक जिम सत्रुन व्याकुल करतभयो बहुबेर ॥
मानत असह कह्यो तिहिँ मारन दौलतराव न करि छिन देर ॥
परिचर रक्खि सिकंदर प्रमुख न धारत हुव अप्पहु अवधान ॥
चरन पठाइ कहां इम चाहत धोंकल सुद्धि सुनत व्यवधान ॥५६॥

अवधान१ व्यवधान२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

लिखि छंद तब धोंकल पठयो लघु गोठंनगर अनुचर निज गूढ ॥
तामैं लिपि सोदर उभय२ हि तुम आहव धीर१ प्रवीर२असूढ ॥
संध्या रिपु हमरी भुव१ लै सब प्रान२हु लेन चहत अब पाप ॥
हम खिची ११भ्राता तुम हड्डुँ६१।१न दलपति २००।३ देहु सहाय
दुराप ॥ ५७ ॥
दलैं यह बंचि भीर गय दलपति २००।३ जो बलवंत २००।२ सहो
दर जोध ॥
सन्ध्या सह जनजन मन सालत बालत हुव दुव२ स्वभुव विरोध॥
सुद्धि दुहुँ२न इक अँह सुनि बलसह चपल ज्यानवत्तीस चलाइ ॥
स्वल्पहि सुनि परिगह इन्ह संग रु जुगर बंधुहि बेढे तहँ जाइ ५८
मिलि सम्मुह दलपति२००।३ रन मंडिय भजि निकसन सम्मुह्न
जस भंग ॥

१उस राघवगढके राजा जयसिंहने आयु बिताकर शरीर छोड़ा, पृथ्वीके कारण निश्चय ही उसके धोकलसिंह नामक पुत्र २गोद बैठा ॥५५॥ वह भी युद्ध में ३पिता जयसिंह के समान, दौलतराव ने५सिकंदर आदिको ४सेनापति रखकर ६दौलतराव ने भी सावधानी धारण की७हलकारों को भेजकर धोकलसिंहकी गुप्त खबर सुनता था॥५६॥८धोकलसिंह ने पत्र लिखकर शीघ्र ९गोठड़ा नामक पुर में भेजा १० तुम हाडाओं के हम भाई हैं इस कारण हे दलपतसिंह ११ दुर्लभ सहाय दो॥५७॥१२यह पत्र पढकर१३एक दिन दोनोंकी खबर सुनकर॥५८॥

तुरगारूढ सब्बि भुज तोमर जुज्झत वहुत हने अरि जंग ॥
परत तुरंग पदाति अभे पन पेंड धरत हयमेध प्रभाव ॥
बारह १२ बीर हनें असि बाहत दलित तुरंग पंच५ धारि दाव॥५९॥
तुट्टत खग्ग कटार गह्यो तिम कलह कितेकन बच्छें बिदारि ॥
तिलतिल रन दलपति २००।३ वपु तुट्टिग धोंकल कढिग लरन
पुनि धारि ॥
सोदर बैर इक्क१ यह सालत बलि जाँमिप तुम अवनि विहीन ॥
सोपुर लैन१ राधिकादासहिँ दुसहन हनन२ वचन इम दीन॥६०॥
प्रथम भई सु कही दुर्गापुर भूत१हुमैं सु कथा इम भूत१॥
संगर हनन ज्यानवतीसहिँ अनुज बैर बालनँ अरि अंत ॥
सब्बि अभीष्ट राधिकादास सु भाम करन सोपुर भूपाल ॥
उभय२ कज्ज बलवंत२००।२करन इम किय रहस्य तामति तिहिँ
काल॥ ६१ ॥
अब वह बत्त सुमिरि मन अंतर इक अहि वसु ससि १८८१ संम
सक आत ॥
प्रसलें१।१सिसिर६।२भावी ऋतु खिनपर सोपुरसमरविचारियवात॥
मातुल स्वीय सवाई१ लछमन२ जदुकुल दुर्ग अमरगढ़ जत्थ ॥
तिनप्रति इम छंद लिखि सूचिय तुम सब भेदहु सोपुरगढ सत्थ६२

१घोड़े पर चढकर हाथमें भाला लेकर२घोड़ा मरने पर पैदल होकर ३ अश्वमेध के ॥५९॥४छाती फाड़कर ५एक तो छोटे भाई दलपतिसिंह का वैर सालता है, फिर तुम वहिन के पति भूमि विना हो रहे हो इसकारण सोपुर को लेने और शत्रुको मारने का बलवंतसिंह ने राधिकादास को वचन दिया॥६०॥ ६यह गये समय में भी गये समय की कथा है ७ छोटे भाई का वैर लेने और शत्रुको ८ वंश रहित करने को९बहिनोई राधिकादासको सोपुर का राजा करने का॥६१॥ १०विक्रम के शक का उक्त सम्वत आने पर आगे आनेवाली ११ हेमन्त और शिशिर ऋतुके समय१२पत्र लिखकर१३सोपुरवालोंको फोड़ो(अपनेमें मिलाओ

सुनि यह तब चिंतिय जदुबंसिन जिन संहरि दलपति २००।३
जामेय१॥

अतिबलपन दब्बिय छिति२अप्पन हुन अब छास अरिन तिन्हदेय
भनि इम भेजि पिहित जन भेदन लिय सोपुर भट कातिक लुभाइ
इहिँ अंतर बलवंत २००।२ चह्यो इत पट्टनि गमन श्रवन सुभ
पाइ ॥ ६३ ॥

जिहिँ पहिलैं बिरचहिँ बहु जंग रु निज प्रभुको दब्ब्यो हंगनेर१ ॥
जित्तिलयो बुंदीस वहै जब तिहिँ बंधिय जितातित बहु बेर ॥
लै पुर नगर२ अबस पुनि लुट्टिय चढ़ि ब्याकुल किय नागरचाल३
विंझोली४ मंडिलगढ५ बेढत बस न भये तउ चकित बिहाल६४
झल्लन पर पहुँच्यो असि झारन मंगरोल कोटापति मेल६ ॥
सत्रु करे चहुँ४ घाँ भूंधन सब खग्गन अतुल मचावत खेल ॥
इहिँ कारन पट्टनि सुनि आवत बलवंत२००।२हिँ मारन चहि वंट६॥
माधव१ झल्ल रहस्य७ मिलायउ अंगरेज कलफिल्डर२ अजंट ॥६५॥
सजि दल पिहित रुद्ध किय मग सब इक अहि बसु ससि १८८१
सम सक एस ॥

प्रस्थित तित१ बाहुल८ तेरसि१३ पर दिन तीजे३गय गंम्य प्रदेस ॥
करि तहँ न्हाँन पूजि प्रभु केसव इक आलय पट्टनि बिच आइ ॥
अप्प रह्यो राका११निसआगम इतर१२ निलय हयगन पठवाइ ॥६६॥

।६२।१भानेज दलपतिसिंह को जिन्होंने मारा है २छाने ॥६३॥३नैणवा नगर को दबाया था ४ डांगयारे के प्रान्त को ॥ ६४ ॥ ५ चारों ओर के राजाओं को शत्रु कर दिये ६बलवंतसिंह को मारकर उसकी भूमिके वंट(हिस्से)करना चाह कर ७ सलाह मिलाकर ८ अजंट का नाम है ॥ ६५ ॥ ९ छाने सेना सजकर सब मार्ग रोकदिये १०कार्तिक के तेरसके दिन प्रस्थान करके जाने योग्य स्थान (पाटन) गये ११पूर्णिमासी की रात्रिके आगम पर घोड़ों के समूह को १२ अन्य मकान में भेजकर आप(बलवंतसिंह)केशोराय भगवान् के मंदिर में रहा॥६६॥

रेक्कगन अनुचर इक निज दल स्वल्प विच सु मालिक करि संग
चलि माधव साहब बल अतिबल भेजिय करन नाम बल२००१भंग
रहत मुहूर्न उभय२ खिल रौका दुजनन ताहि लयो गरदाइ ॥
लरतरह्या स जाम[3] सप्तक ७ लग सोदर १ सुत २ भट ३ सवन
सजाइ ॥ ६७ ॥

प्रतिपद१ रत्ति निसीथ कढ्यो पुनि पारि कुंडय गृह चरम प्रतीक ॥
जानत कढत इक्क पुट्टिप जब उत झुक्किय सब मेटि अनीक ॥
सेरसिंह २००५ अभिधान सहोदर सुत धोंकल २०११ फतमल्ल
२०१२ समेत ॥
सैंतालीस४७ प्रमित भट संगर खग्गन रमत चले बिच खेत ॥ ६८ ॥
बित्तत बारि पिपासा बिकलन जल पिन्नों चम्मलि तट जाइ ॥
तुट्ट सब तिलतिल तरवारिन पुनि रुपि खेत सुजस प्रकटाइ ॥
पानिन तुपक१चाप२असि३पट्टिस४सज्जिय सब बलवंत२००१सधीर
पट्टिस फेंकि जवन इक१ जाठर बिधिसु गिराइ दयो वह बीर॥६९॥
सोदर अनुज१ उभय२ जेठे सुत अप्प१ तिमहि भटवर्ग४७ असेस
सतकन[11] हनि घायल करि सतकन गिद्ध[12]नाम अंस[13] धरि गूढ ॥

---

१ झाला माधवसिंह और कलफील्ड अजंटने बलवंतसिंह को मारने को बड़ी सेना भेजी २ पूनम की चार घड़ी रात बाकी रहते शत्रुओं ने बलवंतसिंह को घेरलिया ३ सात पहर तक लड़ता रहा ॥ ६७ ॥ ४ पड़िवा (एकम) की आधी रात को ५ घर के पिछली भीत (दीवार) के हिस्से को गिराकर निकला ६ गबनावाले ॥ ६८ ॥ पानी छूट जाने पर ७ प्यासके घबराये लोगों ने चामल नदी के किनारे जाकर पानी पिया ८ कटारी ९ कटारी १० एक यवन के पेट में लगाकर मारडाला ॥६९॥ ११(*)सैकड़ों को मारकर १२ गीधा नामक चाकर १३ अपने कंधे पर बलवंतसिंह के बालक को लेकर

(*)राजपूताना में प्रसिद्ध है कि नैणवा नगर दबा लेने आदि विरुद्ध कार्यों से बलवन्तसिंह बुन्दी का शत्रु समझा गया इसकारण रावराजा रामसिंह की सम्मति लेकर बुंदी के सचिव कृष्णराम धायभाईने झाला माधवसिंह और अजण्ट साहिब द्वारा बलवन्तसिंहको दगासे मरवाडाला।

निकस्यो लै सु स्वामिकुल १ नाम २ हिँ रक्खन सिसु वह जनन
प्रेरूढ ॥ ७० ॥
प्रभु कवि जनक रचिय तिहिँ रनपर वल २०९१२ विग्रह १ अभि
धान प्रबंध ॥
उद्धत गुंफ वीररस आलय सह वल२००१२ लरन१ मरन२हढसंध ॥
प्रकटत सुद्धि इम सु बुन्दीपुर सुनि प्रभु अप्प असह किय सोक॥
आप्लँल ठानि दई जलअंजलि अव ऋतु प्रसर्लंप्रछयो सवओक७१
सो वित्तत प्रकटयो सिसिराद्रगम जहँ प्रभु व्याह प्रथम१ मह जात॥
घरघर हरख नगर बुन्दी घन बहुजन हुलसत चलन वरात ॥
ससि पन्नग वसु इक १८८१ सूचित सक असित२ फग्गुन १२
नवमि९ अनेहँ ॥
दुव२दिस थप्पि लगनकँग्गर दिय आवन दुलह समय सुभएह७२

॥ दोहा ॥

इम नवमी९ फग्गुन१२ असित२, समें लगन थपि सुद्ध ॥
मचन लग्यो पुर१ देस२ मह, दिसदिस पटह प्रबुद्ध ॥ ७३ ॥
कृष्णराम१ धात्रेय कुल, सचिव मुख्य सब साज ॥
सज्ज करे समुचित सुमति, करन स्वामि जस काज ॥७४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम
सिंहचरित्रे झल्लजालमसिंहसमरस्वसोदरपृथ्वीसिंहमरणापलापित.

अपने स्वामी के वंश का नाम रखने को १ वह बुड्ढा छाने निकला ॥ ७० ॥
हे प्रभु रामसिंह २ आपके कवि (सूर्यमल्ल) के पिता चंडीदान ने उस युद्ध
पर उद्धत वीर रसके ४ गुंथेहुए घर रूपी बलविग्रह नामक ३ ग्रन्थ बनाया
जो बलवंतसिंह के लड़ने और मरने की दृढ ५प्रतिज्ञावाला है ६खबर ७आपने
भी स्नान करके जलांजलि दी ८ अब सब घरों में हेमंत ऋतु छाई ॥ ७१ ॥
रावराजा रामसिंह के प्रथम विवाह का ९ उत्सव हुआ १० फाल्गुन के कृष्ण
पक्षकी ११ समय १२ पत्र दिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र

करकावलि हड्डन खंड किरैं, फटि टोप उडे वकपंति फिरैं ॥
चमकैं जो इरिंगण्लौं चिनगी, उद सोनित बुट्ठि झरैं उमगी॥१७॥
रन जाजव पाउस यौं बिरच्यो, मुगलान चुहानन दाव मच्यो ॥
भट खग्गन के कटि सुंडि भ्रमैं, अहि ज्यौं जनमेजय अध्वरमैं ।१८।
करकैं कटकावलि कोच कढैं, फरकैं कढि कालिक वच्छ फटैं ॥
तरकैं तरवारिन हड्ड तुटैं, छरकैं छिति छिंछिन रत्त छुटैं ॥१९॥
लटकैं असवार तुखार लरैं, पटकैं गहि इक्कहिं इक्क परैं ॥
चटकैं कटि टोपनकी चटकैं, छटकैं भट बाजिन लोह छकैं।२०॥
गटकैं पल गिद्धनि प्रेत गिलैं, खटकैं असि खुप्परि खंड खिलैं ॥
झटकैं कि रकावन पाय अरे, भटकैं भट गज्जहि छोह भरे ।२१।
लगि कोसन जंगनकी लरसैं, वरखा नरअंगनकी वरसैं ॥
सननंकत प्रोथन प्रान सरैं, झननंकत आयुध अग्गि झरैं ॥२२॥
तननंकत तेगनकी तरकैं, थरकैं रननंकत लोह थकैं ॥
रन होत मुहूरत मान रह्यो, वलतैं वल लोह सुमार बह्यो॥२३॥

[दोहा]

वल वल लोह सुमार बढि, घोर मचिग घमसान ॥

करका लोकमें गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किरैं बिखरैं. जुइंगण खद्योत. लोकमें जिगनियांके तुल्य. 'खद्योतो ज्योतिरिंगणः" इतिहैमः ॥ यहां जकार विशिष्ट ओकारकों प्राकृत तासों ह्रस्व जानिये. यातैं सगनको ह्रास भयो नहीं यथा॥ 'इहिआरा हिंदुआरा ओग्गुब्बा. अवखांमिलिआवि लहुलहुवंजणसंजोए परं असंसं बिसविहाल" मितिपिंगलो नागराजः ॥ उद जल. यहां नग्गी सग्गी आत्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर यज्ञ तामैं ॥ १८ ॥ करकैंइति ॥ कालिक कलेजा. वच्छ लोकमें छाती. रत्त रक्त॥ १९ ॥ लटकेंइति ॥ तुखार उत्तम हय विशेष. "ताजिकाश्च खुरासाणास्तुषाराश्चोत्तमा हयाः"इति नकुलपांडवः॥ चटकैं चटक खंड ताके बहुवचनमैं ऐकार है ॥ २० ॥ गटकैंइति ॥ कि कितेक. ॥ २१ ॥लगिइति॥ लरसैं लरस. पंक्तिको वाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें ऐकार. प्रान हृदयमैं रहिवेवारे प्रान विशेष. सरैं चलैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

नाथद्वारगतकोटापतिकिशोरसिंहविष्णुपूजनसमासंजन १ नाथद्वारस्थकिशोरसिंहपादुकाज्ञयाझल्लजालमसिंहकोटाराज्यकार्यकरण २ विजितकाबुलजनपदलवपुरपतिसिखरणजीतसिंहपेसोरविजयन ३ विजितवर्माराष्ट्रांगरेजकोटिद्रम्मसहितदेशैकभागग्रहण ४ कोटासिंहासनसंस्थापितकिशोरसिंहजालमसिंहमरण ५ किशोरसिंहानुजविष्णुसिंहलक्षद्रम्मपट्टमापणझल्लमाधवसिंहकोटामहामात्यीभवन ६ सिंधियाहुलकरकतिपयलघुराज्यहरणसूचनसहितराघवदुर्गाधिपजयसिंहवीरत्वसूचन ७ बुन्दीपतिराससिंहपितृव्यबलवंतसिंहपट्टनप्रधननिधनरामसिंहप्रथमविवाहप्रारम्भसूचनं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

(उपदोहा)

में कोटाके महाराव किशोरसिंह का अपने भाई पृथ्वीसिंह को मरवाकर झाला जालमसिंह के युद्ध से भागना और नाथद्वारे में विष्णु भगवान् के पूजन में लगकर रहना १ किशोरसिंह के नाथद्वारे रहने के समय किशोरसिंह की पादुकाओं से आज्ञा लेकर झाला जालिमसिंह का कोटाका राज्यकार्य करना २ लाहोर के राजा सिख रणजीतसिंह का कावलको विजय किये पीछे पेसोरको विजय करना ३ अंगरेजों का वर्माकी वलायत को जीतकर क्रोड़ रुपयों के साथ देश का एक भाग लेना ४ महाराव किशोरसिंह को कोटा की गद्दी पर पीछा विठाये पीछे झाला जालिमसिंह का मरना५ किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंहको लाख रुपयोंका पट्टा मिलना और झाला माधवसिंह का कोटा का मुसाहिब होना ६ सिंधिया और हुलकर का कई छोटे छोटे राजाओं के राज्य छीनने की सूचना के साथ राघवगढ के राजा जयसिंह की वीरता की सूचना करना ७ बुंदीके पति रामसिंह के काका बलवंतसिंह का पाटण के युद्ध में माराजाना और रामसिंह के प्रथम विवाह के प्रारंभ की सूचना का चौथा मयूख ४ समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ छासठ ३६६ मयूख हुए ॥

हड्डवती भुव [1]सम्मद हुव, अधिपति उपयमै[2] उचित ॥
निखिल भये [3]उपहार नव, चित जन मन रुचित ॥ १ ॥
लग्गि निमंत्रन दिसन लग, द्योंस१ निस२ न मद्द [4]दुरत ॥
[5]सद्द तुमुल भेरिन सतत, [6]फैलि प्रतत जस फुरत ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सचिव भरत बेसर१न [7]मोर्लिर२ सकट३न [8]सु चित्त भर ॥
दिसदिस देस विदेस [9]व्यावहारिक क्रमि कग्गर ॥
समय अंत सब सुभट होइ हाजरि सुख संधिय ॥
हुव पूजित हेरंबं१ [10]विहित क्रम कंकनर२ बंधिय ॥
जजि माइ देव३भजि तैल४जव५फबि बरातजस सर फलिय ॥
इम अप्प बरस तेरह१३उदित चित्त मुदित व्याहन चलिय ॥३॥

(मुक्तादाम)

चढ्यो प्रभु [11]चक्क [12]विशिष्ठ बरात, सबै जन [13]कुंकुम चैल सुहात ॥
[14]करी मदमत्त चले सह केक, सजे जनु कज्जल अद्रि सटेक ॥४॥
जथाकुल भद्र१मृगा२दिक जात, झरैं मद ज्यों झरनाँ गिरिगात ॥
चले कति मकुन१उद्धत[15]व्याल२, किते [16]कलभा३भिध विक्क[17]४बिसाल ॥५॥

१ हाडोती की भूमि १ उत्सव सहित हुई २ राजा के विवाह के उचित ३ सम्पूर्ण सामग्री नवीन हुई ॥ १ ॥ दिनरात्रि उत्सव से ४ छिपते हैं ५नौबतोंका शब्द निरन्तर भरगया ६ निरंतर फैलकर यश फुरा ॥२॥ ७ खच्चरों, ८ ऊंटों व छकड़ों पर ९ व्यवहार के पत्र चले १० गणेश का पूजन होकर उचित रीति से कंकन बंधा और माईदेव (सांयां) का पूजन होकर तेलबान चढा ॥ ३ ॥१२ जानके सहित राजा की ११ सेना चढी वहां सब मनुष्य १३ केसरिया रंग के वस्त्रों सहित शोभायमान हुए १४ कितने ही मस्त हाथी साथ चले सो मानों हठ सहित कज्जल के पर्वत सज्जित हुए ॥ ४ ॥ जो हाथी भद्र, मृग आदि कुलों में उत्पन्न और पर्वत के झरनों के समान जिनका मद झरताहुआ, जिन हाथियों में कितनेही मुकने (विना दांतवाले) और कितने ही उद्धत १५ तिरछी घात करनेवाले १६ कितने ही कलभ नामके (बच्चे) १७कितने ही पक्के पट्ठे ॥ ५ ॥

महाजव जुथ्थप५ मैंगल६ मत्त७, रहैं मग इष्ट*त्रसा८।१ सुख रत्त॥
अयोमय †अंदुक लंब लगाइ, जरे हगवेरिन जेर न जाइ॥ ६॥
गहैं नर ‡वेणुक प्रेरत गैल, डिगैं डग §डाकन चैंक चरैल॥
अपट्टन घात सैंनुकुर अंग, सजे हुव हाटक होदन संग॥ ७॥
महावत वीँत घुमावत मत्थ, हठी फट कारत भोरन हत्थैं॥
परे कुथपट्ट१ जरी२ मय पिट्ठि, हवाइन हाकन नोदत निट्ठि॥ ८॥
वहैं खग सिंचत जे वमथूँन, जगैं जिन लोचन खून जनून॥
कलापक कंठ मिले मखतूल, मरोरत जौंखिन साखिन मूल॥९॥
दुरदंतन कॉंनक बंगर बेस, बजैं लगि घंटन घोर बिसेस॥
तनैं तेंलुहिंगुलु१त्यों हरिताल२.जथा ऽवर१गात२न भातजँगाल३॥१०॥

कितने ही बड़े वेगवाले यूथपति, कितने ही मदकल (मद में कलेहुए) कितनेही सामान्य मस्त * कितने ही हाथी मार्ग में हथनियों के सुख में प्रसन्न रहने वाले अर्थात् आगे हथनी होने से मार्ग में चलनेवाले जो † लोहे की लंबी जंजीरों से जड़े हैं तो भी बंधे नहीं होने के समान जाते हैं॥ ६॥ जिनके पीछे ‡ भाले लिये हुए मनुष्य प्रेरणा करते हैं और § क्रोध. दिलानेवाले छोटे घाव लगाते हैं तब वे चिड़नेवाले हाथी क्रोध करके आगे पैंड (पग). देते हैं १अंकुश के अग्रभाग की घात से २अंग को उठाकर सुवर्ण के. होदों के साथ सज्जित हुए॥ ७॥ ३महावत के हूलने (पगों की ठोकर देकर प्रेरणा करने) से मस्तक को हिलाते हैं और वे हठी ४ शुंड मस्तक के भ्रमरों को फटकारते हैं जिन पर रेशम की और जरी की ५ झूलें पड़ी हैं वे हवाइयों (बारूद के अग्नियन्त्रों) से और ललकारों से कठिनाई से ६ प्रेरणा कियेजाते हैं॥ ८॥ जो हाथी ७सुंडके जलकणों से उड़ते हुए पक्षियों को. सींचते हैं और जिनके नेत्रों में ८ क्रोध का खून जगता है "फारसी भाषा में जनून का अर्थ पागलापन है परन्तु यहां लोकरूढी से क्रोधके अर्थ में प्रयोग किया है" कंठों में १० रेशम के ९ कलावे लगे हुए हैं और ११ वृक्ष को मरोड़तेजाते हैं॥ ९॥ दोनों दंतों में १२ सुवर्ण के उत्तम बंगड़ लगे हैं और घंटाओं का विशेष शब्द होकर बजते हैं १३ जिनके शरीर पर हिंगलू और हरताल फैलायेहुए हैं और इसी प्रकार अन्य शरीरों पर जंगाल १४ शोभित है॥ १०॥

उठावत पोंगर१ दान अमान, पटावत पच्छिन लैन प्रमान ॥
बढे अँग उच्छ्रय मेचक वर्ष्या२, करैं चल सुप्प समाकृति कर्ष्या३ ॥११॥
अगड्डग वानि बले अतिकाय, चले इम सामज४ कामज चाय५ ॥
खरे रचि राजिय बाजिय६ खेल, मलंगत ताजिय७ राजिय मेल ॥१२॥
भये भुव बाल्हिक८ कच्छ वनायु, सअर्व इरान हिरातज सायु ॥
तुखार इराक रु तिब्बत चीन, किते घट कच्छ रु वंग कुलीन ॥ १३ ॥
किते सित नील हलाह९ कुलाह१०, सुनावत सादिनं११ औरन वाह ॥
नचैं बजि प्रोथन१२ आनिल१३ नाद, बढैं गति पंचक अंचक१४ वाद ॥ १४ ॥
लसैं छवि चम्मर डम्मर१५ लूम, घलैं कर मंडत घुम्मर घूम ॥
घनैं रय व्है न कसा१६ अवघात, झरैं खुरतारन अग्गि अलात१७॥१५॥
समीर१८ करैं जिनतैं अनुसार, परैं उडि पानि पचीस२५न पार ॥

अमाप मदमें १शुंडके अग्रभागको उठाते हैं सो मानों उसको पक्षियोंको लेने को भेजते हैं२वे काले वर्ण के ऊंचे पर्वत ३छाजलेकी आकृतिके कानोंको चपल करके बढे॥११॥ वे बडे शरीरवाले हाथी महावत और सांटमारों की ४ अगडग वाणी से फिरे "यह हाथी को बढाने का सांकेतिक शब्द है" ५ इस प्रकार के हाथी कामना की चाह से चले, उधर खेल करते हुए घोड़ों की ६ पंक्ति खड़ी हुई और ७ कूदते हुए घोड़ों का उस पंक्ति से मिलाप हुआ ॥ १२ ॥ ८ बा-ल्हिक शब्द से लेकर वंग शब्द पर्यन्त देशों के नाम हैं जिनमें उत्पन्न हुए घोड़े ॥ १३ ॥ कितने ही श्वेत, नीले, ९ अपलख १० कुछ पीले रंग और काले घुटनोंवाले जो दूसरों से ११सवारों की प्रशंसा सुनानेवाले १२नचतेहुए घोड़ों के फुरणों (नासिका) में १३ पवन का शब्द होता है सो मानों घोड़ों की पांचों गतियों में बढने का १४ पवन से वाद करते हैं ॥ १४ ॥ जिनका वालछा (पूंछ) चमर के १५आडम्बर से शोभा देता है सो घूमर में घूमकर हाथ में लिये चमर के समान रचता है, बडे वेग के कारण जिन पर१६चाबुक का प्रहार नहीं होसकता और खुरतालों से १७ धूम रहित अग्नि गिरती है ॥ १५ ॥ १८ पवन भी जिनके पीछे ही चलता है बराबरी नहीं करसकता क्योंकि जब ये घोड़े उडते

सजे कसि खंध *कवी मुख सञ्च, नचैं पय चातुरि पातुरि नञ्च१६
तुले समभाग †कुसा मखतूल, [1]फवैं गल चोसर हाटक फूल ॥
खरे मुख [2]आयस पक्क खलीन, जरे जरजाल बिराजत जीन॥१७॥
बनी पय नाल ठनी गजबेल, खनंकत नेउर [3]तंडव खेल ॥
गुथे घन घुम्म उडैं गजगाह, बनैं [4]स्वरगच्युत गंग प्रवाह ॥ १८ ॥
किते अहिपेचँ[5]१पटी२गति[6]३काव४, फिरैं पटु आदस[7]फूल५फिराव॥
भुजंगन [8]साव१ [9]सटा तति२ भास, करैं मनि१ ज्यों मनि[10]गुंफ२ प्र-
काास ॥ १९ ॥
लसैं वपु बोधि२[11]तरु छ्द१लोल, कनीनिय कैं[12]२गनिका दृगगोल
करैं छबि नोंक कढे जुग२कर्ण, प्रदीप सिखा१[13]किंधु केतकपर्ण२
[14]अमेय तरोगति निम्न [15]अलीक, भुलावत जे [16]सिबिका भरि भीक॥

हैं तो पवन से बीस हाथ आगे जापड़ते हैं, जिनके कंधे कसकर सजेहुए और मुख से * लगाम के सच्चे और पगोंका चतुराई से पातुर (वेश्या) के समान नाचनेवाले † रेसम की बाग में बराबर से तुलेहुए जिनके गले में १ सुवर्ण के फूलों की चोसरें शोभा देती हैं, जिनके सच्चे मुख में पक्के २ लोहे की लगामें और जरी की जालीवाले जीनों से शोभायमान ॥ १७ ॥ गजबेल (लोहा विशेष) की बनीहुई पगों में नालें लगी हुई और ३ नाचने में नेउर बजते हुए, जिनमें बहुत घूमने में गुथे हुए गजगाव उडते हैं सो मानों स्वर्ग से ४ गिरती हुई गंगाका प्रवाह है ॥ १८ ॥ कितने ही ५ नागपेच, पटी (शीघ्रदौड़) ६सर्पट तथा समान सीधी दौड़, कावा(गोलकुण्डा) ७फूलआदस (धीरीदौड़) में चतुराई से फिरते हैं ८ सर्पों के बच्चों की भांति ९ केसवाली शोभा देती है और उस केसवाली में १० गुथीहुई मणियां हैं सो ही सर्प की मणिका प्रकाश करती हैं ॥ १९ ॥ जिनके शरीर चपलता में ११ पीपल के पत्ते के समान शोभा देते हैं १२ किना गणिकाके नेत्रों के गोलेकी पुतली के समान हैं, दोनों कानों की कढी हुई नोकें दीपक की शिखाकी १३ किना केतकी के पत्ते की शोभा करते हैं ॥ २० ॥ १४ शीघ्रता की गति में अमाप १५ गहरा ललाट (बैठाहुआ तवा) जो व्हीक भरकर १६ पालखी को भुलानेवाले

महामृदु लोम[1] जथा पसमीन, बटा[2] नटके जिम झंप प्रवीन॥२१॥
अटैं झुकि बक्र हयचंछट[3] अच्छ, मुरैं[4] छक बिंजक ज्यों दक[5] मच्छ
किंधौं[6] सर्फ१ आयस कांत[7] कटोर, उडैं अति अंबर जुब्बन जोर२२
थरक्कहिं[8] अक्कहिं संभ्रम थप्पि, बहैं सुख बग्गहिं मग्गहिं मप्पि ॥
जवाधिक[9] रैथ्थ[10] किते जुग जुत्त, मनोरथ पानिय१ पावक२ पुत्त२३
सुहात चले इम अंब्ब[11] सजूह, जथा सुख संद न स्पंदन[12] जूह ॥
बरप्रधि[13]१ नाभि२ संकूबर[14]३ चक्र[15]४, बनें जुग[16]५ चंदन संभव बक्र२४
प्रभाकर[17] जे जर जाल पिनद्ध[18], बहैं धुर[19] उंडुर६ रेसम बद्ध ॥
लगे अनुकर्ष[20]७ बरूथ[21]८ विधेय, रजे पथ यों रथ३।१ गोरथ[22]३।२ गेय २५
चली बहुधा सिबिका३।१ सुखपाल३।२, चलेबहु मोलि[23]१ बजावत गाल
क्रमें सह जन्य४ सु धन्य कुलीन, हजारन दान१ कृपान२ न हीनें[24]२६

और पसमीना के समान बड़े कोमल १ केशोंवाले २ नटके पट्ठे [छोकरें] के समान कूदने में चतुर ॥ २१ ॥ उत्तम झुकेहुए टेढे ३ कन्धे से फिरते हैं और छक को ४ जनानेवाले ५ जल में मच्छी के समान पलटते हैं किंवा ७सुंदर लोहेवाले कटोरों रूपी ६खुरों से यौवन के जोर से आकाश की तरफ उडते हैं ॥ २२ ॥ ८ सूर्य को भ्रम कराकर ठहरते हैं और बागों में मार्ग को मापकर चलते हैं ९ अधिक वेगवाले कितने ही दो दो घोड़े १० रथों में जुते सो मानों वेग में जल और अग्नि के पुत्र हैं ॥ २३ ॥ इस प्रकार ११ घोड़ों के समूह शोभित होकर चले और तिसी प्रकार बडे सुखवाले १२ रथों के समूह चले जिनके उत्तम १३ पूठियें, नाही और १४ पीनशी सहित १५ पहिये हैं १६चंदन के बनेहुए जूवे (जूड़े) ॥ २४ ॥ १७कान्ति करनेवाली जरीकी जालियों [खोलियों] से १८ बंधे हुए, १९रथ का अग्रभाग और जूवा रेसम की रस्सी से बंधेहुए, जिनमें उचित २०औंदण [रथके नीचे का आधार भूत काष्ट] और २१ रथ कवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की जालीयुक्त खोली) लगेहुए इस प्रकार के रथ मार्ग में शोभायमान हुए और कहेहुए २२ बैलों के रथ भी चले ॥ २५ ॥ बहुतसी पालखियें और सुखपालें भी चलीं और २३ बहुत ऊंट गाल बजातेहुए चले और धन्यता योग्य कुलवान हजारों जानेती(बराती) साथ चले जो तरवारों से और दान से २४ हीन हैं ॥ २६ ॥ और ज्योतिवाले

भरैं नग भूखन जोति जराय, कसैं सब हेतिं गिनैं तृन काय ॥
भले भुज१हत्थिन ठिल्लनहार२, अहो कर१आसुग२पाय१पहार२७
नहार१ पहार२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥
कहें अृत तूटिपरो किन सीस, निहारत इक्क१ वकारत बीस२० ॥
सजे कछवाह१कमंधज२सत्थ, तृना१हित तार२व जादव३तत्थ२८
मिले वडगुज्जर४ झल्ल५पमार६, हिले गहिलोत७तथा प्रतिहार८॥
उमंगत चालुक९ के चहुवान१०, स जावल११ सैंगर१२ बैस १३
सुजान ॥ २९ ॥
वली धनुउत्कट१४ गोर१५ रु बिंद१६, महारन सत्रु गइंद मइंद॥
रमैं खुरली पटु सद्धि कृपान, वढे विंन वेधत के नभवान२ ॥३०॥
लहैं कति लच्छ्य तुपक्क३न तक्कि, छजैं कति कुंत४न संगि५न छक्कि
कटार६ गदा७ इलिका८छुरिकादि, वढे रमते इम सस्त्रन वादि३१
चले झपटावत वाजि नचाय, किते उडि लंघत हत्थिन काय ॥
टरैं झपटावत है पलटाइ, जैवी कति हत्थिनपैं कढिजाइ ॥३२॥
सजे इम सूर चले प्रभु संग, बन्यौं वर भूँवर ओप अनंग ॥
सजी सिर कुंकुम पुंजित पग्घ१,नव९ग्रंह गो५सिखपट्ट२अनग्घ३३
महामनि पंच५सिखी तिम मोर३, जर्यो तुर्रा४१ रु किलंगि५१२
य जोर ॥

नगों के जड़ेहुए भूषणों से भरेहुए १सब शस्त्रोंको कसेहुए २शरीर को तृण के समान जाननेवाले और उत्तम भुजोंसे हाथियों को हटानेवाले ३आश्चर्य कराने वाले पवन के समान शीघ्रता करनेवाले हाथ और पर्वत के समान अचल ४ चरणोंवाले ॥ २७ ॥ ५ सत्य ही कहते हैं ६ अकेले होने पर भी बीसों शत्रुओं को ललकारनेवाले ७ तृण रूपी शत्रुओं को लजानेवाला अग्नि रूपी ॥२८॥२९॥ ८चापोत्कट [चावड़ा] ये सब क्षत्रियों के वंशोंके नाम हैं बडे युद्धमें शत्रु रूपी हाथियों के ९ सिंह १० बाणों से आकाश में पक्षियों को वेधन करनेवाले ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ११ कितने ही वेगवाले ॥ ३२ ॥ १२ भूपति १३ केसर के रंग की पाग १४ नव रत्नों का जड़ाहुआ पांच कलंगीका १५अमूल्य शिरपेच ॥ ३३ ॥

लगी मृगनाभि त्रि३ रेख६ ललाट, लसैं श्रुति२ कुंडल२।७ स्त्र तलाट ॥ ३४ ॥
हसैं मनि पंच५ प्रपंचक हार८, दिपैं भुज२ अंगद२।९ ओज अपार
बनैं मनिबंध२ अनर्घ अवाप२।१०, छजैं करसाख १० सहोर्मिक१ छाप ॥ ३५ ॥
रह्यो फबि कंचुक१२ जांगुड रंग, सटी सैमलंक कस्यो अधिकंग१३
धरयो सित१सानघुष्यो ईक१धार,कस्यो निज पैंत्तनजात कटार३६
बन्यौं बर खेटक१६ पिट्ठि बिसाल, मनौं कनकाचलपैं घनमाल ॥
सु शृंखल२।१७ सोहिर्रं गोहिर२ संग, अलंकृत१८ अंघ्रि२नं अंगु लि१० अंग ॥ ३७ ॥
छयो मनिमंडित दंडित छत्र१९, मैंबीजित चामर२।२०बेंहर२।२१पतल
चल्यो बनि ऋूप इभेंद्र अरोहि, सु ज्यों सतसर्ल घनद्विपं सोहि ३८
समै सिसिरोद्त्तर पक्कत सस्य,तपा११गत कल्प र गम्य तपस्य१२॥
नकीबन संकुल लग्गि ललक्क, चल्यो इम राम२०।१४धराधवचक्क

१कस्तूरी २कानों में कुंडल ३गालों के नीचे तक ॥३४॥ ४ भुजबन्ध ५पूँचें ६कड़े (कंकण)७अंगुलियोंमें ८बड़ी अंगूठियां ॥३५॥१०केसर के रंग का ९जामा(वागा) शोभायमान होरहा है ११सिंहके जैसी कमर पर "लटा विद्यते यस्य स लटी" १२कमरबंधा बांधा साण से घिसाहुआ तीक्ष्ण १३ खांडा (खड्ग विशेप) धारण किया १४ अपने पुर (बुंदी) का बनाहुआ कटार बांधा ॥ ३६ ॥ १५ सुंदर बड़ी ढाल बांधी सो मानों १६ सुमेरु पर्वत पर मेघमाला है १९पगों के गिरियों पर १७सुन्दर पगसांकले १८ सुवर्ण के लंगर शोभित हैं २० चरणों की दस ओं अंगुलियां भूपण युक्त हैं ॥१७॥ चमर २२मोरछलों से२१पवन होता हुआ, बड़े हाथी पर सवार होकर २३ दुल्लह चला सो मानों २४ इन्द्र २५ ऐरावत पर सवार होकर शोभा युक्त हुआ ॥३८॥ २६शिशिर ऋतु के उतरते २७ खेती के पकते २८ माघ मास के उतरते और गमन करने योग्य ३० फाल्गुन मास के २९समय छड़ीदारों से३१भरीहुई ललक लग कर इसप्रकार३२भूपति रामसिंह

दिसा१ विदिसा२न निसानन[1] नद्द, बजे सिर भेरिन[2] कोन[3] बिहद्द ॥
दुघाँ२दल अग्ग१रु पिठ्ठि२दिपात, बनैं अति ओपन तोपन[4] व्रात ॥४०॥
नटी[5]नट१भंड[6]२नटी३बहु[7]रूप४, भये गन गैल रिझावन भूप ॥
अधीसहुं दे तिन्ह इष्ट अछेह, महा वसु[8] विंदुन छुट्टत मेह ॥४१॥

॥ षट्पात् ॥

प्रतिसुकाम क्रम मंचुर सुकवि पंडित सनमानिय ॥
सह बरात महं सुलह दिपत प्रास्थित तह दानिय ॥
पंणव[9]१ स दुंदुभि२ पटह३ मुरज४ ढक्का५ गोमुख६ मुंख[10] ॥
वृंहित[11]१ हेसा[12]२ विविध तुमुल घन तनित[13] रनित रुख ॥
रुचि भाग राग गायक रचत भनत बंदि भोगोवलिय[14] ॥
मोरीच[15] हिरद आतहि महिप चतुर रूच्य व्याहन चलिय ॥४२॥
फुट्टि फुट्टि हय खुरन गिरिन पाखान गरद मिलि ॥
छुट्टि छुट्टि छितिसंधि सिथिल भोगीस[16] सीस झिलि ॥
तुट्टि तुट्टि तरु दुगम पृथुल पैंद्धति[17] हुव पद्धर ॥
कुट्टि कुट्टि बैंत[18] बज्ज कोन गत गज्ज दिगंतर ॥
वित्थरि वखानं[19] जस दिस१विदिस२विदित वत्त हुव नर नरन
बुंदीस बिंद पहु जोधपुर क्रमत अज्ज उपयम[20] करन ॥४३॥

की सेना चली ॥ ३९ ॥ १ नगारों का शब्द २ नोबतों के ऊपर बेहद ३ डंके [डाके] बजे ४ तोपों का समूह ॥ ४० ॥ ५ नट विशेष ६ भांड ७ स्वांग लानेवाला ये सब नटों के भेद हैं ८ बडे धन की बुंदों से ॥ ४१ ॥ ९ वंद्धत १० ये सब बाजों के भेद हैं ११ आदि १२ हाथियों की गर्जना १३ घोड़ों का हींसना १४ मेघ गर्जना के समान १५ भाट लोग स्तुति करते हैं १६ पाटवी (राजा की सवारी के) हाथी के होदे पर आते ही ॥ ४२ ॥ १७शेष नाग १८सीधे मार्ग होगये १९ डाकों से कूट कूट कर नोबतों का बजना और हाथियों की गर्जना दिशाओं में गई २० दिशा दिशाओं में यश के वाखाण [व्याख्यान] होकर, २१ विवाह करने को जोधपुर के राजा के घर जाता है ॥ ४३ ॥

[१]गजन फरकि [२]वैहरक थरकि गन गगन विराजत ॥
छोनी [३]वैमथुन छिरकि झर कि भद्दव घन साजत ॥
बरकि दक्ख बाराह लरकि फनमाल नाग [४]ईन ॥
धरकि धरकि भय धुज्जि दरकि उर असह [५]अरातिन ॥
गढ गढन संक अंतर उपजि करत मंत्र मंत्रिन कतिक ॥
कुलरीति गीति इहु[६]१न कहत समिति१ब्याह२उच्छाह इक१॥४४॥
गरद [७]अंक अच्छादिय सरद घन जरद [८]सोम जिम ॥
तो[९]म गगन तोमरन [१०]मंदर पुंखन कलाप तिम ॥
भजत भजत बनजंतु कटक अंतर थकि छुट्टत ॥
कति कमनैतन करन सरन [११]विकिरैन वपु फुट्टत ॥
इभ पिट्ठि अप्प विरुदन सुनत भनत दैन रंकन विभव ॥
[१२]सुरनाह राह अतिछबि अटत रटत जलेब [१३]नकीब रैव ॥४५॥
उलटि उलटि [१४]दैल ओट पवन मंडत [१५]प्रैत्यागम ॥
सुगम हरोल१न सलिल दुगम [१६]चंदोल१न कैर्दम२ ॥
आसपास [१७]इहिं चैास त्रास [१८]मेवासन पत्तिय ॥
[१९]हेतुंन हास हुलास बास [२०]सेतुंन गुन वत्तिय ॥

१हाथियों पर२ध्वजाओंके समूह उडकर३हाथियोंकी शुंडके जलकणोंसे भूमि छिड़की जाती है सो मानों भादवाका झड़ सजता है४शेष नागके फणोंकी माला झुकती है५शत्रुओंके हृदय फटकर६युद्धका और विवाह का उत्सव एकसा ही होता है॥४४॥ जैसे शरद ऋतु के बद्दल ८चन्द्रमाको जड़ देवें तैसे रजने७सूर्यको ढक दिया और जैसे १०बाणों के पंखों से भाथा भरजाता है तैसे भालों के ९समूह से आकाश भरगया ११बाणों से पक्षियों के शरीर फूटते हैं १२इन्द्र के मार्ग से १३नकीब शब्द करते हैं ॥ ४५ ॥१४सेना की ओट से १५उलटा गमन करता है १६ सेना के पिछले भाग को कीचड़ मिलता है १७इस खबर से १८ लुटेरों और चोरों के घरों में त्रास पहुंची १९ मित्रों को प्रसन्नता पूर्वक हास्य होता है और रामसिंह के गुणों की वार्ता का वास २० मर्यादा पर्यंत होता है अर्थात् भूमि की मर्यादा (सीमा) समुद्र है वहां तक गुणों की वार्ता होती है.

आजमसुत अंधार भो, चंडाकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

घटिय दोय २ रवि रहत प्रथित आजम सुत पिल्ल्यो ॥
नरउर दतिया नृपति ठानि हरवल दल ठिल्ल्यो ॥
कुक्क परिग चहुँकोद टुक्क टुक्कन दल तुट्टत ॥
हग्गन मोह हुलास छोह सूरन असु छुट्टत ॥
निज साह भाग रनगति नव प्रबल नीति फल पक्कयो ॥
बुंदिय नरस पावक विसम तृन आजम दल तक्कयो ॥२५॥

(मुक्तादाम)

घटानिभ फोजन भो घमसान, उतैं जवनेस इतैं चहुवान ॥
बजैं असि हड्डन अड्ड बिदारि, किधौं तरु कट्टहिं कूर कबारि ॥२६॥
अरयो दतियापति सम्मुह आय, पर्‌यो झरि वीर लयो फल पाय ॥
रुप्यो गजसिंहहु कूरमराज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥२७॥
बढी बुध भूपतिकी हतबाह, कटे भट ओर भज्यो कछवाह ॥
धग नग्ग नगार संकुलि धुंधि, लयो नृप आजमको सुत रुंधि ॥२८॥
रुपे इस जाजव द्वे दल रारि, रकैं असि झल्लरिलौं झनकारि ॥
महानट नच्चत मुंडन मोह, करैं किलकारत कालिय कोह ॥२९॥
झुकैं विहसैं चउसट्ठि६४न झुंड, रचैं असिवार नचैं बहु रुंड ॥
अरैं इकतैं इक बत्थन आय, परैं गज पव्वय ज्यौं पवि पाय ॥३०॥
थरत्थर भुम्मि चलच्चल थान, लग्यो अहिभोगनकौं लचकान ॥
कुलालक चक्र भयो भ्रमि कच्छ, बरक्कत सूकर दड्ढ विलच्छ ॥ ३१ ॥

प्रबलइति ॥ अंधार अंधकार. चंडाकिरन सूर्य ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ घटियइति॥ प्रथित विख्यात ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटाइति ॥ कबारि कबारी बनकट ॥ २६॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ रुपेइमइति॥ महानट शिव. कोह कोलाहल ॥ २९ ॥ झुकैंइति ॥ असि खड्ग ताके. वार प्रहार. रुंड बिना मस्तकके क्रियावान सुभट "रुंडकबन्धौ त्वपशीर्षे क्रियायुजि". इतिहैमः ॥ पवि वज्र ताको ॥ ३० ॥ थरत्थइति ॥ भोग फन तिनकों. कच्छ कच्छप ॥ ३१ ॥ लगेइति ॥ त्रिविष्टप स्वर्ग. सूचत सूच-

सुनि धन्य धन्य सूचक सुजस जन्य जनन अति मोद इत॥
प्रति ग्राम गाम बंधत कलस धाम धाम मंगल मंहित।४६।
भागधेय भोमिकन निकर लेले प्रताप नत ॥
उपहित अंजलि आत नात सिर भेट निवेदत ॥
कहत नाथ किंकरन पूत करि ओदन१ पानिय२ ॥
मंडहु उचित मुकाम मन्नि स्वीकृत महमानिय ॥
विसवासि मिष्ट वैनन वरहु मन्नी इम सूचत मुदित ॥
मगजाल जुरत आवरि मनुज होत निछावरि परम हित।४७।

॥ दोहा ॥

प्रतिमुकाम सचिवन प्रकर, गोनिन रुप्पय१ गेरि ॥
पट२ भूखन३ हय४ मय५ प्रचुर, हाजरि रक्खत हेरि ॥४८॥
जहँ मिश्रन प्रभुकवि जनक, चारन मनि कवि चंड ।१॥
भट्ट रतन२ वंटत भये, ए दुव२ त्याग अखंड ॥ ४९ ॥
इच्छित धन इम कविकुलन, मिलत मुकाम मुकाम ॥
सुनत त्याग जस संक्रमिय, कूंच मुकुटप्रभुराम२०१।४।५०

॥ घनाक्षरी ॥

प्रथम१ पगारा१ दिय देवली२ मुकाम दूजो२,
केकरी३ तृतीय३ सरवार४ चोथो४ जसकाम ॥
रामसर५ श्रीनगर६ कावरि७ यों वीच रहि,

---

१ पूजनीय तथा वडा मंगल होता है ॥४६॥ प्रताप से नम्र होकर भोमियों के समूह २ हासिल (खिराज) लेलेकर आते हैं और ३ हाथ जोड़कर (अञ्जलि सहित) मस्तक नमाकर नजर करते हैं ४ अन्न जल ५ पवित्र करके मनुष्यों के समूह की ६ आवलि (पंक्ति) जुड़कर ॥ ४७ ॥ ७ गोणियों में रुपयोंका समूह डालकर ८ ऊंट ॥ ४८ ॥ हे प्रभु रामसिंह आपके कवि सूर्यमल्ल के पिता ९ मीशण शाखा का चारण चंडीदान ॥ ४९ ॥ १० चले ११ दूल्हों के मुकुट रामसिंह का यश सुनकर॥ ५० ॥

अष्टम८ सु पुष्कर८ मो न्हान दान अभिराम[1] ॥
अल्हनादिआवास[2]९ रु मेरता१० निवसि ऐसैं,
बोरुंदा११ पीपाड़१२नैर बीसलपुर१३स नाम ॥
अध्व[3] इम खंधावार तेरह१३ बिरचि आप,
धन्यता धुरंधर निरायो नृप मान[4] धाम ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

किय मग विच कासार[6] इक्क १ रानिय सेखाउति ॥
आवन सम्मुह अवधि सौंहि निश्चित उक्ति१ रु श्रुति२[7] ॥
अब तासौं बढि अधिक पैंड संख्या असीति८० पर ॥
सम्मुह आइ नृप स्वसुर मिल्यो मान सु बसुधावर ॥
नालकी जान आरूढ नृप जुग२ हि कुलक्रम रीति जिम ॥
बिरचित बिधेय[8] मोदित मिलि रु आये गंम्य[9] निकेत इम ५२

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

प्रथित जोधपुर पास, राईको उपवन[10] रहत ॥
नृप बल जन्य निवास, किय तिहिं सिबिर[11] प्रबंधकरि ॥ ५३ ॥
महलन गो नृप मान, सिक्ख बहुरि करि मग्ग[12]सन ॥
अंबरघर[13] चहुवान, व्है कृत दान प्रविष्ट हुव ॥ ५४ ॥
मिले स्वसुर१ जामात[14]२, सूचित क्रम जवतैं सरनि[15] ॥
तबतैं द्विग्गुन दिपात, जर स्फर बुठो इंद्र जिम ॥ ५५ ॥
महुर१ द्रम्म अति मान, ऐसे बिधि नभ उच्छलिय ॥

१ सुंदर २ आल्हणयावास ३ इसप्रकार मार्ग में तेरह मुकाम करके ५ राजा मानसिंह के धाम ४ राजधानी (जोधपुर) को समीप ली ॥ ५१ ॥ ६ तलाव ७ निश्चय ही कही और सुनी है ८ उचित रीति करके ९ जहां जाना था वहां आगये ॥ ५२ ॥ १० बाग ११ राजाकी सेना और जान के लिये डेरों का प्रबंध किया था वहां निवास किया ॥ ५३ ॥ १२मार्ग में से १३ डेरों में ॥ ५४ ॥ १४जमाई १५ मार्ग में ॥ ५५ ॥

देखि पिहित जिम दान, कर लिय झोलि अजाचकहु ५६॥
इत संध्यादिक अंग, नित्य क्रियाके विरचि नृप ॥
पावत समय प्रसंग, सज्ज भयो पुर संक्रमन ॥ ५७ ॥
भरि जो लग अति भीर, रुच्च सदन बाहिर रही ॥
पाई संकट पीर, जिम तरउप्पर लब्ध जन ॥ ५८ ॥
इम मारीच अरोहि, पहु सज्जित अब समय पर ॥
मनमन जनजन मोहि, चल्यो बिवाहन लग्न चहि ॥ ५९ ॥
जत्थ रिझावन जानि, सामग्री समुचित सहित ॥
अभिमुख मंडिय आनि, नट१न गान२ पातुरि निकर ॥६०॥
पट्पात्तु-पृथुल दारु पट्टिरिय कमन चित्रित लिपिकारिन ॥
अंसे नरन थित अटन नच्च उप्पर पननारिन ॥
तंडव पट्टु वय तरुन झोक रागन झुम्मावत ॥
चंडातके चल चरन घेर घुम्मर घुम्मावत ॥
श्रुति१ जाति२ ताल३ वादन४ कुसल मोहत नत गीतन सुमति ॥
आरोह ग्राम अंतिम३ अवधि ग्राम प्रथम१ अवरोह गति६१

१गुप्तदान२याचना नहीं करनेवालों ने भी लेलिया ॥५६॥५७॥३दुलह के डेरे से बाहर॥ ५८ ॥ ४राजा की मुख्य सवारी के हाथी का नाम मारीच है जिस पर चढ़कर ॥५९॥ ५ सन्मुख आकर ६ पातुरियों के समूह ने ॥६०॥ ८ काष्ट की ७ बडी पटड़ी (तखते) १० चितेरों की ९ सुंदर चित्राम की हुई ११ मनुष्यों के कंधों पर चलती है उस पर १२ वेश्या का नाच हुआ १३ नृत्य करने में चतुर और तरुण वेश्या झोक के साथ राग को झुकाकर चपल चरणों से घूमर में १४ लहँगे के घेर को घुमाने लगी और तीव्रा से लेकर छोहनी पर्यन्त तक के१५स्वरों के बाईसों ही भेदों में राग की जाति ताल और वाद्य बजाने में कुशल वह वेश्या अंतिम ग्राम तक आरोह करके प्रथम ग्राम पर उतारने लगी [सात स्वरोंमें षड्ज, मध्यम और गान्धार, ये तीन ग्राम हैं यथा—"षड्जग्रामो भवेदादौ मध्यमग्राम एव च। गांधारग्राम इत्येतद्ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥" इनमें मतान्तर से गांधार के स्थान में पंचम को भी ग्राम मानते हैं] ॥ ६१ ॥

घुरि नेउरि घंटकिन झमकि सिंजित झहनावत ॥
बिधि क्रम ताल बढाइ बहुरि प्रतिलोम बनावत ॥
मिलि संक्रम मुर्च्छन[३]न मोद निकसंत नाद मय ॥
कंदुक१ अहि२ गति क्रमन चढत उतरत अलाप चय ॥
आनद्ध१ वितत२ बादन उचित मादन[६] मुदित नरेस मन ॥
बसि बास आइ सायकविसम निज निवास गावन१नटन६२

॥ नाराच ॥

तहाँ अलाप जाल बाल रुद्रतालतैं तन्यौं ॥
अदोस घोसैं तोस पोस मालकोसर उप्फन्यौं ॥
भुजंग जाइ ज्यौं धुनाइ ऊँह छाइ थंभयो ॥

नूपुरों की १ घूघरियें बजकर २ भूषणों का शब्द हुआ, विधि पूर्वक क्रम से ताल को दुहरी, तिहरी, चोहरी यथाशक्ति बढाकर फिर चोहरी, तिहरी, दुहरी इस क्रम से प्रतिलोम बनाने लगी, जिसके ३मूर्छना पर मिलकर चलने से शब्दमय मोद निकलता है "सप्त स्वरों में उत्तर मंद्रा से लेकर ज्वाला पर्यन्त इक्कीस मूर्छना हैं" अलापका ४समूह कंदुक और अहिगतिसे चलकर चढता है, उतरता है अर्थात् गेंद की गति से आरोह, स्थिति और अवरोह, तथा अहि-गति से आरोह, स्थिति और अवरोह करती है; तहां ५चर्म से मढे हुए (मृदंग आदि) वाद्य विस्तृत होकर तांत के वाद्य (सारंगी आदि) उदित हुए जिन ६ मदन (कामदेव) सम्बन्धी कार्यों से राजा का मन प्रसन्न हुआ और ७ विषम सायक(कामदेव)ने नृत्य और गान रूपी अपने निवास के स्थानों में वास किया ॥ ६२ ॥ वहां पर उस नायिका ने अलापों के ८ समूह ९रुद्र ताल से उस राग को फैलाया "रुद्र ताल का यह लक्षण है कि जिसमें छठा ताल सम पर होवै और आगे के पांच ताल विषम होवैं जिनके आगे के पांच स्थान शून्य होवैं फिर पांच ताल विषम होवैं इस क्रम से ग्यारह ताल होवैं उसको रुद्रताल कहते हैं" यह १०निर्दोष शब्दवाला और सन्तोष के साथ पोषण किया हुआ मालकोश नामक राग बढा "मालकोश राग की ऋतु शिशिर है और विवाह भी शिशिर ऋतुमें ही हुआ इसकारण मालकोश राग का ही वर्णन कियाहै" भुजंग की स्त्री [नागिनी] जावै जैसे जाकर, धुजाकर ११ ऊपर छाकर ठहराया

पिकारवा पं५ टारि उच्चरयो छ६ में अंचभयो ॥ ६३ ॥
बढाइ मंजु मुच्छनैं मिलाप माप विस्थरयो ॥
अधीन ग्राम तीन३ पीन इक्क१ इक्क१ उक्करयो ॥
झनंकि जंत्र तंत्र गोन झारि कौन३ झंझटैं ॥
अलीन आवलीन लीन मीनकेतु उप्पटैं ॥६४॥
स१ रे२ ग३ मे४ध५।६नेह।७निवेस छक्क६ छक्क संचरयो ॥
पकार६५ दीन भो प्रखीन पंतिहीन ज्यों परयो ॥
स्वरच्छटाऽनुलोम१ व्है विलोम२ तान संकरी ॥
भिदा अपोह सोहनी समस्त मोहनी भरी ॥ ६५ ॥
स्वलोकघाँ दिपात छात जात राग श्रेणिका ॥

कोयल के समान शब्द करनेवाली उस वेश्या ने १ पंचम स्वर को टाल [छोड] कर बाकी के छः स्वरो में उच्चारण किया [मालकोश राग छः स्वरोंवाला ही है] यह अचंभा [आश्चर्य] है क्योंकि "कोकिलो रौति पंचमम्" कोयल पंचम स्वर में बोलती है तो पिकारवा अर्थात् पिकके समान आरव (शब्द)वाली पंचम स्वरको छोडकर गाई यही आश्चर्य है और मालकोश राग में पंचम स्वर नहीं है ॥६३॥ २ सुन्दर मूर्छना मिलाकर उनके मिलाप से राग के मापको फैलाया, एक एक स्वर के साथ तीन तीन ग्राम हैं सो निकाले और ३ कोण (नजराव) से तारों को झंजटे वह सखियों की ४ पंक्ति में अन्तर्गत होकर ५ कामदेव बढा ॥६४॥ संगीत शास्त्र में स षड्ज, रे ऋषभ, ग गांधार, मे मध्यम, प पञ्चम, ध धैवत, नी निषाद, ये सात ही स्वरों की संज्ञा है जिन में पञ्चम को छोडकर बाकी के छहों रागों का छठे राग [मालकोश] में प्रवेश करके चला, वहां ६ पञ्चम स्वर दीन और अत्यन्त खीन होकर पंक्ति बाहर होवे जैसे पड़ा रहा और स्वरकी शोभा अनुलोम और विलोम तानों से चली ७ अपोहनी नाम से शोभा देनेवाली अथवा अपोहनी आदि भेदों से शोभा देनेवाली सबको उस मोहनी (नायिका) ने भरदी ॥ ६५ ॥ रागों की पंक्ति है सो ८ अपने लोक [गन्धर्व लोक] की ओर शोभा देती जाती है और तीनों ग्रामों की रेख तथा मद्र, मध्य, तार, इन तीनों स्वर भेद की रेख

त्रिक३ प्ररोह रेल तीन३ मेलज्यौं त्रि३ वेणिका ॥
घुरंत पाय घुम्मरी घमंकि घोर[2] घंटिका ॥
उपंग[3] चंग[4] के वजैं मृदंग३ अंग अंटिका[4] ॥ ६६ ॥
तथुंग[5] थुंग तत्त थेइ थेइ लेइ तालपैं ॥
क्रमैं मतानु[6] चुक्कि मान पैं[7] विधान कालपैं ॥
वनाव हाव भावमैं रनंकि हत्थ वंगरी ॥
किधौं पिकादि चंप झंप रोर सोरकी करी ॥६७॥
लती मुखेंदुतैं[10] कढैं सती[11] सिंगार तारसी ॥
ढरी विनिद्र[12] कंजतैं मनों मरंद[13] ढारसी ॥
पलट्टि अंग के झुकैं लचक्क लंकपैं परैं ॥
उरोज[14] भार निट्टि जो वली त्रि३वंध उद्धरैं ॥६८॥
क्रमैं अधोदु[15]कूल फेर घुम्म घेर केरिका[16] ॥
अपांग[17] गोल लोल ज्यौं विछोह टोल एणिका[18] ॥
उरोज अग्रचार हार इंदछंद[19] उच्छटैं ॥

त्रिवेणी के मेल के समान १ अंकुर [खड़ी] हुई २ घूघुरों का शब्द ३ वाद्य विशेष ४ नक्खी [नजराय] अर्थात् वीणा आदि वाद्य बजाने की वस्तु॥ ६६ ॥ ५ ये सब शब्द नृत्य के अनुकरण के हैं ६ राग के मत के साथ चलती है ७ पगों को उचित प्रमाणसे नहीं चूककर समय पर, हावभाव के बनाव में हाथ की बंगड़ी [भूषण विशेष] बजती है सो मानों कोयल आदि पक्षियों ने ८ चम्पे के वृक्ष की शाखा ले, शब्द करने की ९ केलि [क्रीड़ा] की है ॥ ६७ ॥ १० मुख रूपी चन्द्रमा से स्वरों की पंक्ति ११श्रेष्ठ शृंगार रसके तारजैसी निकलती है सो मानों १२प्रफुल्लित कमल पर मकरन्द[पुष्परस] की ढाली जैसी है पलटने कई अंग झुककर कमर पर लचक पड़ती है१४कुचोंका भार कठिनाई से पेटकी त्रिवलि[तीनसल]उठाती है ॥६८॥१५चलनेसे लँहँगेका विस्तार घेर[वर्तुल अर्थात् गोलाई] घूमर में १६छोटे डेरे के आकार होता है और उस वेश्याके १७नेत्रों के कोये और गोले टोले से विछुड़ी हुई १८हिरणी के सदृश हैं, कुचों के आगे चलनेवाला १९ इन्द्रछन्द नामक हार "जिस हार में१००८ लूँगे होवैं उसका नाम

अगार इक्क१ थान क्यों न तान संगही अटैं ॥ ६९ ॥
लुठंत पिट्ठि केसपास आस रासमें लगी ॥
पसारि गत्त जानि मत्त केलिपत्त पन्नगी ॥
छुटी अलक्क अंसपें लसैं अतीव तच्छटा ॥
रहे कि लुब्भि कालनाग बाल रागकी रटा ॥ ७० ॥
सु नीर छाँहँ बक्कह्वै रचैं दुर चक्क रंगसौं ॥
मही रहैं समीप हत्थ इक्क१ उत्तमंगसौं ॥
समीर चक्क नच्चमैं लखैं समस्त सम्मुही ॥
सु चित्त माधुरी भरैं स्मरेच्छु जंत्र व्है सुही ॥ ७१ ॥
जु अंग जास दिट्ठिगो सु देवें अंकव्है जुरयो ॥
अलाप आनके उफान पंच५ बान अंकुरयो ॥
धुन्यौं घुमाइ टोडिका१दि पंच५ नारिको धनी ॥
त्रि३ अंग उत्तमा१दि संग इक्क१ लै तती तनी ॥ ७२ ॥

इन्द छन्द है" उछटता है १जिसका घर और स्थान एकही है अर्थात् तानभी गले में रहती है और हार भी गले में रहता है इस कारण वह हार तान के साथ क्यों नहीं चले, अर्थात् तानका वियोग नहीं सहने के कारण साथ ही अटन करता है ॥ ६९ ॥ २ चोटी ३ नृत्य की आशा में लगी हुई पीठ पर लेटती है सो मानों, मस्त हुई सर्पिणीने ४ अपने शरीर को केलके पत्ते पर फैलायाहै ५ कंधे पर अलक छुटी हुई दीखती है ६ जिसकी अत्यन्त शोभा दीखती है सो मानों उस स्त्री के रागकी ध्वनि पर काले सर्प ७ लुभारहे हैं ॥ ७० ॥ श्रेष्ठ नीर में जैसी छाया टेढी दीखै तैसी वक्र होकर रंग[रस]पूर्वक चुचक्र नाच नचती है जिस में ८ मस्तक से भूमि एक हाथ रहजाती है ९ पवन के चक्र के जैसी अर्थात् गोलाकर नाच में इतनी शीघ्र फिरती है कि सबको सम्मुख ही दीखती है १० उस कामदेव के यंत्र (चरखी) में चित्त रूपी गन्ना मिठास को टपकाता है ॥७१॥ जो अंग जिसको दीख गया वह उसके आगे ११अटल होगया अर्थात् उसको वही दीखता रहा और अन्य अलापों के उफान से कामदेव उदय हुआ, टोडी, खंभावती, गौरी, गुनकली और ककुभ, इनके पति मालकोशको धुना, तहां उत्तमा आदि तीनों अंगोंमें लयकी एक१२पंक्ति

धरैं प्रतीति यौं न तान कोन थानतैं धपी ॥
करैं पिधानें गान जानि बानि पानि कच्छपी ॥
निखंग१ चाप२ आदि हेति रूप मंडती नचैं ॥
विलोकिवे त्रिलोक ओक नैन कोनके वचैं ॥ ७३ ॥
स्वरावली समुद्रमैं तिरैं निसंक सुंदरी ॥
तरंग तान रंग वीणा तुंबिका धरी तरी ॥
जु मंद्र१मैं सु मध्य२मैं जु मध्य२मैं सु तारमैं ॥
सजे तथापि भिन्नदेत सारमैं सु मारमैं ॥ ७४ ॥
तँजैं कुझैं कुझैं कुतत्थ धित्थ धित्थ तंडई ॥
छटा अनुद्रुतादि१तैं प्लुत५ प्रमानलौं छई ॥
ग्रह१ प्रकास अंस२ न्यास३ व्है विलास गानमैं ॥
तुलैं न इक्क इक्कसौं असंख्य कूट तानमैं ॥ ७५ ॥

तणाई ॥ ७२ ॥ यह प्रतीत नहीं हुई कि तान किस स्थान से १ चली है वह वेश्याकी वाणी है सो मानों २ छिपा हुआ गान ३ सरस्वती की वीणा कर रही है ४ शस्त्रों का रूप रचती हुई अर्थात् इनको चरणों के न्यास से रचती हुई नचती है जिसको देखने के लिये ५ तीनों लोक के स्थानों में किसके नेत्र बचैं ॥ ७३ ॥ ६ स्वरों की पंक्ति रूपी समुद्र में वह सुन्दरी रस की तानें रूपी तरंगों में वीणा के तुंबों रूपी ७ नाव करके निशंक तिरती है जो रस मन्द्र स्वर में है वही मध्य स्वर में है, और जो रस मध्य स्वर में है ८वही तार (उच्च) स्वर में है, तोभी तार (वीणा आदि के तार) में और ९कामदेव में आनन्द भिन्न भिन्न देता है ॥ ७४ ॥ १० ये सब शब्द नृत्यके अनुकरण के हैं ११ अनुद्रुत से लेकर प्लुत पर्यन्त शोभा छागई अर्थात् अनुद्रुत, द्रुत, द्-विराम, लघु, ल-विराम, गुरु और प्लुत, ये सातही तालकी कलाके अंग हैं, जिन सब में शोभा छागई १२ जिस स्वरसे राग उठावै उसको ग्रह कहते हैं और स्वर में रागको स्थिर करै उसको अंश कहते हैं तैसे ही जिस स्वर में राग की समाप्ति करै उसको न्यास कहते हैं, जिनका प्रकाश और विलास गानेमें हुआ और १३कूटतान(मूर्छना आदि के क्रम विना तान होवै उसको कूटतान कहते हैं) असंख्य हैं जो एक एक से नहीं मिलती ॥ ७५ ॥ उसकी क्षीण कमर का

विंतस्ति दोइ१ मध्य लीन मध्य खीन यों बन्यों ॥
तुटैं घुटैं रुटैं मुटैं छुटैं प्रवाद यों तन्यों ॥
क्रम प्रमान ध्वान यों अनोट१ फुल्लरी२ करैं ॥
उदार मार चट्टसार भा प्रकार उद्धरैं ॥ ७६ ॥
दुकूल ओट भास्य आस्य लास्य यों कढैं१ दुरैं२ ॥
विछंद कंद फंद ज्यों अमंद चंद विप्फुरैं ॥
कढेपरैं उरोज पीन चीन अंगिका कसे ॥
फसैं सरोज पत्त रोक मत्त कोक ज्यों फसे ॥ ७७ ॥
पलट्टि ताल तालमैं अनेक कालमैं प्रमा ॥
बढैं१ घटैं२ घटैं१ बढैं२ तुलैं तुलो तुलैं समा ॥
श्रुती दुवीस२२ तीव्रका१दि छोहिनी२२ बैसानलों ॥
मिली स१।१मैं म४।२मैं प५।३मैं तिचैं चारि४चपारि४मानलों ॥७८॥
रि३।१मैं ध६।२मैं त्रि३ऊ वि३द्वै२रु द्वै२ग३।१मैं नि७।२मैं रहैं॥

रहय दो१ (बित(विलस्त) के२भीतर बनगया३वह कमर तूटती है इधर उधर घुटती [घूमती]है, रुकती है, मुड़ती है, परन्तु उसमें लय आदिका किसीको कोई प्रवाद (बहस)नहीं रहा. इसप्रकार वह राग अथवा नृत्य फैला ४उसके चालने के क्रम के प्रमाण से अणवट और फोलरी (भूषण विशेष) शब्द करते हैं सो ५ उदार कामदेव की पाठशाला की कान्ति के प्रकार निकलते हैं॥७६॥ वस्त्रकी आडसे ६उसके मुखकी कान्ति७नृत्यमें निकलती और छिपती है सो मानों ८बादलों के फंदके आधीन होकर मंदता रहित चंद्रमा कढता छिपता है, उस नायिका के पुष्ट कुच ९ झीणी कंचुकी में कसे हुए निकले पड़ते हैं सो मानों कमल के पत्रकी रोक से १० मस्त दो चकवे फसे हैं ॥ ७७ ॥ ताल ताल के साथ पलट कर अनेक समय में ११ उस रागका निश्चय ज्ञान चढने उतरने से बढता और घटता तथा घटता और बढता है परन्तु लय रूपी १२ तराजू में बराबर तुलना है १३ तीव्रका को आदि लेकर १४ छोहनी के अन्त तक बाईस श्रुतियें हैं, सो षड्ज में, मध्यम में, पंचम में, १५ ते(वे) श्रुतियें, चार चार के प्रमाण से मिली (रहती) हैं ॥ ७८ ॥ वे (श्रुतियां) ऋषभ में, धैवत में क्रम से

बिचारि जो पं१५ टारि नारि तास च्यारि४ क्यों वहैं ॥
रु जाति पंच५दीप्तिका१दि१अंत५मध्यमा५ रजैं ॥
श्रुतित्व जाति२ संग प्रान राग अंग उप्पजैं ॥ ७९ ॥
चलाहि१ उच्चलाहि२द्वै२हि अल कोशिकोश्चिता ॥
समाइदेत भिन्न भिन्न रुद्रताल सम्मिता ॥
समस्त चित्त१ भान२ कान३ नैन४ बैन५ संग्रहे ॥
रुके निनाद ब्रह्ममैं प्रलै जड़त्व लैरहे ॥ ८० ॥
अलंक्रिया१ कपाल२ प्रास३ आमका४ दि अंगजे ॥
समाप्ति५ सूड६ मेल७ बर्ण८ भाग९ रागसंगजे ॥
स्वरूप१ वै२ रु काल३ नाम४ लिंग जाति५ सूचनी ॥
मुनीन धीनके अधीन भिन्न भिन्न जोभनी ॥ ८१ ॥
सुतो बिचार रागलार बुद्धिफार साध्यहै ॥
बिगूढ ऊढ बादरूढ मूढ उक्ति बाध्यहै ॥

तीन तीन और गान्धार में, निषाद में, दो दो रहती हैं सो विचार पूर्वक १ पंचम को टालकर वह वेश्या पंचम की चार श्रुतियों को कैसे धारण करे अर्थात् पंचम की श्रुतियों को छोडदी और राग की पांच जातियां हैं जिनमें आदिमें दीप्तिका और अन्त में मध्यमा शोभायमान है, श्रुति और जाति ये दोनों राग के प्राण और अंग हैं सो यहां उत्पन्न होती हैं ॥ ७९ ॥ पांच जातियों में यहां चला और उच्चला ये दोनों २ मालकोशकी उचित स्त्रियें हैं जिनमें सब ग्यारह तालों को भिन्न भिन्न समा देती हैं, सब के चित्त १ ज्ञान कान नेत्र और वचन रोक लिये सो ४ शब्द रूपी ब्रह्म में रुककर प्रलय के समान जड़पना लेरहे ॥ ८० ॥ ५ अलंक्रिया को आदि लेकर भाग पर्यन्त राग के अंग हैं ६ स्वरूप से लेकर लिंग पर्यन्त रागकी जाति है, इनकी सूचना मुनियों की बुद्धि के आधीन भिन्न भिन्न कही है ॥ ८१ ॥ वह विचार तो राग के साथ ७ बुद्धि के फैलाव से साध्य है अथवा बुद्धि के समूहवाले (विद्वानों) से साध्य है, विशेष गुप्त [छिपेहुए] को धारण करनेवाले और ८ यथार्थ बोध की इच्छावाले वचनोंपर चढेहुओं(विद्वानों)से मूर्खोंकी उक्तिका बोध होता है

लगे अतलादिक कंपन लोक, इतैं अकुलात त्रिविष्टप ओक ॥
रमैं पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनित संग ॥ ३२ ॥
चढ्यो गज आजमपुत्त सचाव, धप्यो नृप सम्मुह उद्धत धाव ॥
कमानन ऐंचत कानन कानि, तक्यो इम मारत बानन तानि ॥३३॥
लगैं सर छत्तिन व्है इम लीन, मनों बिल सप्प कि संबर मीन ॥
सजैं बजि पत्तन सायक सोक, उडैं सलभा जिम अंबर ओक ॥३४॥
चलैं असि कुंत बगच्छिन चोट, असूर दुहुँ बहु हत्थिन ओट ॥
उडैं बहु अंबर अग्गि अलात, जरी गिरि गिद्धनि चिल्हनि जात ॥३५॥
फिरैं रचि फेरव फेरन फाल, निबुल्लत कंक उडैं बिकराल ॥
कमान फटैं रु हटैं कमनैत, पलान कटैं उलटैं पखरैत ॥ ३६ ॥
हरैं कहुँ मान लरैं कहुँ हक्कि, जरैं कहुँ मुच्छ परैं कहुँ जक्कि ॥
बरैं कहुँ हूर भरैं कहुँ बाढ, गिरैं कहुँ भीत धरैं कहुँ गाढ ॥३७॥
रुलैं कहुँ मत्त खुलैं कहुँ गात, हुलैं कहुँ हत्थि डुलैं कहुँ होस ॥
बकैं कहुँ प्रेत छकैं कहुँ बीर, धकैं कहुँ ज्वाल हकैं कहुँ धीर ॥३८॥
चढैं कहुँ बाजि बढैं कहुँ चाव, पढैं कहुँ बंदि कढैं कहुँ पाव ॥
धमैं कहुँ स्वास नमैं कहुँ धून, भ्रमैं कहुँ गिद्ध रमैं कहुँ भूत ॥३९॥
मचैं कहुँ रोठ जचैं कहुँ मुंड, रचैं कहुँ साम मचैं कहुँ रुंड ॥
बजैं कहुँ प्रोथ सजैं कहुँ बाह, तजैं कहुँ भीत भजैं कहुँ लाह ॥४०॥
स्वसैं कहुँ घुम्मि हसैं भट संग, त्रसैं कहुँ रोस करैं कहुँ संग ॥

सा करत. सोनितसंग रुधिरके संगकी ॥ ३२ ॥ चढ्योगजइति ॥ कानि अवधि ॥ ३३ ॥ लगैंसरइति ॥ संबर जल तामैं. पत्तन अपनैं पत्तन करिकैं ॥ ३४ ॥ चलैंइति ॥ असूर आतर. अलात अंगारे. जरी दग्ध भई. ॥ ३५ ॥ फिरैंइति ॥ फेरव शृगाल. "फेरुः फेरवः शिवा" इतिहैमः ॥ फेरन फेराफिरकैं ॥३६॥ ३७॥ रुलैंकहुंइति ॥ रुलैं रमैं. हत्थि हस्ती ताको. होस ज्ञान ॥ ३८ ॥ चढैंकहुंइति ॥ बंदि बंदीजन. धमैं धमन करैं ॥ ३९ ॥ मचैंकहुंइति ॥ जचैं मांगैं. साम उपाय विशेष. प्रोथ हयनासा. बाह प्रहार. लाह लाभ ॥ ४० ॥ स्वसैंकहुंइति ॥ त्रसैं

सुरिंद विंद संक्रम्यो नरिंद मान नैरमैं ॥
बढे अपार तोप वार फार फेरफेरमैं ॥८२॥
चलें दुरपास व्है प्रकास चंद्रभास१ भैंचपार२ ॥
छई प्रभा सु द्योंसलौं दई छिपाइ सो छपा ॥
अयास दोर ओरओर निष्क१ द्रम्म२ उच्छरैं ॥
किते बिहाल व्है निहाल माल जाल चैं करैं ॥ ८३ ॥
बदैं निहारि अंग नारि लौन वारि बिंदपैं ॥
अहो निकाम कोटि काम राम२०१४छोनिइंदपैं ॥
अहो सु धन्य दुल्लही लहो बिसिष्ट इष्टकौं ॥
दहो अनिष्ट रिष्ट त्यौं बहो अभीष्ट दिष्टकौं ॥ ८४ ॥
नरेस यौं सुरेस रूप देत रीझ नृत्यपैं ॥
प्रयान सुख्य वारलौं करयो विवाह कृत्यपैं ॥
कसा प्रहार रूप द्वार रीति लौकिकी करी॥
उहां अपार फैर हेम१ तार२शुद्धि उच्छरी ॥ ८५ ॥

(दोहा)

सुपहु बिंद मारीच सन, कारि लौकिक मत कज्ज ।
इंभ सन तोरन उत्तरिय, श्रुतिमत साधन सज्ज ॥ ८६ ॥

इस प्रकार इन्द्र के समान दुल्लह रामसिंह २ महाराजा मानसिंह के नगर (जोधपुर) में १ गया तहां तोपों के ४ समूह के ३ अपार फैर चले ॥ ८२ ॥ दोनों ओर प्रकाश होकर चन्द्रज्योति और भैंचपे आदि अग्निक्रीड़ा (आतश बाजी) चलने से दिन के समान ५ कान्ति छागई और उस ६ रात्रि को छिपादी ७ मोहरें और रुपये उछलने से चारों ओर परिश्रम से दौड़ दौड़ कर कितने ही विहाल होते हैं और कितने ही निहाल होकर धन के समूह का ८ संचय करते हैं ॥ ८३ ॥ ९ पृथ्वी के इन्द्र रामसिंह पर १० दुलहन धन्य है सो विशेप वांछित फल को लो ११ विना इच्छावाले दुःखोंको १२ इच्छानुसार भाग्य को धारण करो ॥ ८४ ॥ १३ तोरण पर चावुक मारना आदि १४ समूह १५ चांदी ॥८५॥ १६ सवारी के हाथी से १७ कार्य १८ हाथी से १९ वेद का मत ॥८६॥

॥ पद्धतिः ॥

इम दुल्लह तोरन मुख्य आइ, बंदन१ नीराजन क्रम बनाइ ॥
मंडप थल जावनहुव समोद, बिष्टर२रु पाद्य३ बनि बिधि बिनोद८७
बिष्टर६रु अर्घ७अँचवन८बहोरि, जहँ मधुपर्क९रु गोहान१०जोरि ॥
कन्याऽऽगम ११ व्यवहित बसन १२ काम, बर१ बरनि २ परस्पर
तिलक१३ ताम ॥ ८८ ॥
बलि प्रवर१ गोत्र२ आख्या१४ बिधान, बर पूजन१५ भूषन१ बस्त्र
२ दान१६ ॥
कन्या करग्राहन समय किन्न १७, दै कनक १८ दक्खिना १९
तदनु दिन्न ॥ ८९ ॥
क्रम गो प्रदान२०तांबूल कर्म२१, पुनि दंपति२सयमेलन२२ सधर्म
बरमाला२३ अंचल गंठि२४बंध, खिन तदनु धरन दंककुंभ खंध२५
बर१ बरनि१ मिथो दरसन२६ बिधेय, पुनि अग्नि परिक्रम२७
सद्धि श्रेय ॥
पावक सन पँश्चा३।५ऽऽसन प्रविष्ट२८, आचार्य बरन२९ कुंसकंडि
३० इष्ट ॥ ९१ ॥
क्रम बिहित होम तहँ चउ४प्रकार, धुर१तत्थ राष्ट्रभृत१।३१नामधार

१ आरती २ आसन और पैर धोना ॥ ८७ ॥ ३ आचमन ४ दधि मधु घृत मिली हुई वस्तु का निवेदन करना ५गोदान "यहां हान शब्द को दान के अर्थ में ग्रन्थकर्ता ने विचार पूर्वक लिखा है परन्तु गोशब्द के योग में यह प्रयोग करना दोष है" ६ वस्त्रों से छिपी हुई कन्या का आना ७ दुलहे दुलही (बींद बिंदनी) का ८ तहां पर परस्पर तिलक करना ॥ ८८ ॥ ९ हथलेवा जोड़ना १० जिस पीछे सुवर्ण की दक्षिणा दी॥८९॥ ११ फिर गोदान करके बीड़ी चबाना १२ स्त्री पुरुष का हाथ मिलाना १३ वस्त्र गंठ (गंठजोड़ा) करना १४ जल का घड़ा ॥ ९० ॥ १५ परस्पर दर्शन कराना १६ अग्नि से १७पश्चिम दिशा के आसन पर बैठना १८ होम के प्रारम्भ की विधी ॥ ९१ ॥ ८ ये विवाह

सुजया२।३२ रु प्रणीता२।३३ नाम सत्थ, तिम लाजहवन ४।३४
हुव चउम४ तत्थ ॥ ९२ ॥

बहुरिहु करग्राहन३५ विधि विलास, दुलही पय दक्खिन१ उपल
२ न्यास३६ ॥

बनि गाथा गावन३७तहँ विधेय, करि अग्नि परिक्रम३८पुनिहु प्रेय
सालक संतुष्टि३९ रु होम शिष्ट४०, पुनि सप्त७पदी विधि४१
क्रम प्रदिष्ट ॥

इह कन्या निविसन वाम३अंग४२, अभिसेचन घटजल करि ४३
अभंग ॥ ९४ ॥

क्रम हृदयाऽऽलभन४४ रु तिलक कर्म४५, चढ़ि बैठन वृखभव
अरुन चर्म४६ ॥

किय तिम ध्रुवदरसन४७ रत्ति काल, वलि अप्पिय गुरु हित
बसुँ४८ बिसाल ॥ ९५ ॥

इत्यादि वेदविधि भजि असेस, नववय विशिष्ट व्याहिय नरेस ॥
दै इष्ट नेग नेगिन उदार, फैलाइ दयो जस दिसन फार ॥९६॥

॥ दोहा ॥

जोरी लखि अवरोध जन, कहन लगे वलि कज्ज ॥
रुचि दंपति२ पर काम१ रति१, वारैं कोटिन अज्ज ॥९७॥
निस वित्तत रहि नालकी, गत प्रच्छद पटगूढ ॥
पट गेह जन्य निवास प्रति, आये दंपति२ ऊढ ॥ ९८ ॥

के समय होनेवाले चारों होमों के नाम हैं १ संस्कार किये हुए चावलों का होम ॥ ९२ ॥ १ दुलही के दहिने पैर नीचे पत्थर रखना ॥ ९३ ॥ ३ यहां कन्या का वर के पास ओर बैठना ॥ ९४ ॥ ४ हृदय का स्पर्श करना ५ बैलके लाल रंग के चर्म पर बैठना ६ रात्रि के समय ७ धन ॥९५॥ ८ समूह ॥९६॥ ९ जनाने के लोग ॥ ९७ ॥ १० नरयान विशेष ११ वस्त्र से ढकीहुई १२ जानके डेरों में १३ व्याहे हुए ॥ ९८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम सिंहचरित्रे रामसिंहप्रथमविवाहवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥
आदितः सप्तषष्ठ्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६७॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥
हेम१ रजत२ मय वुट्ठि हुव, इम जन्यालय आत ॥
धन्य धन्य जय जय ध्वनित, खुलि ठाँठाँ हुव ख्यात ॥१॥
वैदिक१ लौकिक२ सद्द विधि, वहि सम्मति निर्बाद ॥
पिता जनन दुलही सु पुनि, पधराई प्रासाद ॥२॥
संग सखिन दासिन सतन, नंद१ जीव२ छम३ नद्द ॥
भो तिम सहचरि भूखनन, सिंजित कलकल सद्द ॥ ३ ॥
पधराई दुलही पिहित, इमि जो जनक अगार ॥
पति दासी जन बिबिध पटु, लगे सतन गन लार ॥ ४ ॥
॥ षट्पात् ॥
इत डेरन खिन इक्खि अतुल आरंभि त्याग अब ॥
कृष्णाराम इत कहिय मुख्य नरनाह सुसाहब ॥
चतुर मुकुट कवि चंड१ जनक कविके बुलाइ जब ॥
बंदी रतन१ बहोरि पुच्छि संभव लोडन पहँ ॥
कहिय त्याग व्यय कतिक कतिक परिमान कविन कहँ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में रामसिंहके चरित्र में राजा रामसिंहका प्रथम विवाह होने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीनसौ सड़सठ ३६७ मयूख हुए ॥

१जानके डेरे आते ही सोने चांदी की वर्षा हुई २ ठामठाम प्रसिद्ध हुआ ॥१॥ ३ बाद रहित ४ पिता के वंशवालों ने दुलही को महलों में पधराई ॥ २ ॥ ५ सैकड़ों ६ जीवको आनन्द देनेवाला ७ समर्थ शब्द हुआ ८ साथ जानेवाली स्त्रियों के भूषणों के बाजे का ९ कोलाहल शब्द हुआ ॥३॥ १० पिता के घर में ॥ ४ ॥११समय देख कर १२ ग्रन्थकर्ता के पिता चंडीदान को १३त्यागका खरच

नृप मान कृपापात्रहु कतिक मुख्य सुकवि इह मानियत ॥
कारियत तदीय सतकार किम जिम अच्छुत जस जानियत५

॥ दोहा ॥

कवि अक्खिय चउ४ मुख्य कवि, अतिसय प्रीति अमत्र ॥
मानैं जे नृप मानके, अतुलित वैभव अत्र ॥६॥

॥ षट्पात् ॥

प्रथम प्रतोलीपात्र अवनिपति वृत्ति उपासक ॥
नाम जास अवनाड़१ सु पुर सुंध्याहर१ सासक ॥
कथित जाति रोहड़िक पट्ट पंचायुत५०००० पावत ॥
इहिं५००००प्रमान पति अधिप सुभट बहु तंत्र सुहावत ॥
इम लक्ख१०००००अधिप चारन यह रु छिदतर्जति नृप उदय छत॥
आउवा मरयो जवतैं अक्खय बीसरुसत१२० सासक वजत॥७॥
वलि द्वितीय२ कवि बंक२ धीर सव गुनन धुरंधर ॥
अयुतक१०००० सासन ईस विदित छक्षगिरा गनिका वर ॥
वानि सु न्याय१ व्याकरन२ सर३।१ रु साहित्य१ समुद्रहि॥

कितना है और कवियोंका प्रमाण कितना है १और राजा मानसिंहके कृपापात्र कितने हैं २उनका सत्कार कैसे करना चाहिये जिससे अछूता यश जानाजावै. [इस छप्पय में एक चरण अधिक है सो भूल से बनाया जाना पाया जाता है और यह भूल भी अधिक मद्य पानके कारण जानी जाती है] ॥५॥ ३ अत्यन्त प्रीतिपात्र ॥६॥४पोलपाल "गोपुरं हि प्रतोल्यां तु नगरद्वारयोरपीति महीपः॥" महीप कोश में नगर के द्वार का नाम प्रतोली लिखा है जिससे ग्रन्थकर्ता ने यहां सामान्य दृष्टि से द्वार मात्र का ग्रहण किया है ५ राजा की वृत्ति की उपासना करनेवाला ६ सूंध्याड़ नामक पुरका पति ७ रोहड़िया शाखा का चारण ८ स्वामी (राजा) के उमरावों के आधीन ९ राजा उदयसिंह के समय आउवा पुर में चारणों ने धरणा दिया तब १० उसमें अखयसिंह मरा जब से रोहड़िया चारणों को चारणों की एक सौ वीस शाखा के ११ पति कहते हैं ॥७॥ १२ पुनि १३ बांकीदास १४ छः भाषा रूपी गणिकाओं का पति

जो यह*आसिक्क जाति बत्त कलि भूत रूयाति वहि ॥
†जगतेस१‡मान२किय मेल जब बुध यह हुव सब जग बिदित॥
कछवाह बिप्र भाखा सुकवि जो पदमाकर किन्न जित॥८॥
महादान३ महहू तृतीय३ जो भूप कृपाजुत ॥
जुरत मान१ जगतेस२ बन्यों कमँध्वज विद्रुत ॥
रिपु हुव सब रट्ठोर काव्य तिनको महहू किय ॥
सूचनबिनु निज सदन निखिल मेरव भट निंदिय ॥
सो कवि बुलाइ मेवार सन तिहिं उत्थान१ नृजान२तह ॥
दियमानअयुत१००००आयकद्रविनसासनसोढावास३सह॥९॥
भीम जोधपुर भूप आजि दूजो२ आरंभिय॥
जुरत मान जालोर दइव अनसन बिपत्ति दिय ॥
सो चारन बनसूर जुगत१ नामक आश्रित जब ॥
अप्पतहुव तँहँ आनि स्वतियँ भूखन समेत सब ॥
पहु मान ताहि लहि जोधपुर जहँ उत्थान१ नृजान२ जुत ॥
दिय तिथि सहस्र१५०००सासन दिपत प्रथित पाडलाऊ३मँजुत॥१०॥

॥ दोहा ॥

इन४मैं आदि१ सु आदितैं, सूचित विभव समत्थ ॥

---

* आशिया शाखा का चारण † जयपुर के राजा जगतसिंह और ‡ जोधपुर के राजा मानसिंह मिले थे तब १ पदमाकर को विजय किया ॥ ८ ॥ जगतसिंह और मानसिंह जुड़े जब २ राठोड़ भाग गया ३ मानसिंह की बिना ही सूचना किये ४ अपने घर पर काव्य बनाया और सब ५ मारवाड़ के उमरावों की निन्दा की ६ ताजीम ७ पालखी ८ धनकी आमदनी वाला ॥ ९ ॥ ९ भीमसिंह १० युद्ध ११ भाग्यने मानसिंह को निराहार रहनेकी विपत्ति दी तब वणसूर शाखा के १२ जुगता नामक चारण ने १३ अपनी स्त्री के भूषण सहित सब धन मानसिंह को लाकर दिया १५ विशेष स्तुतियोग्य ॥ १० ॥ १५ सूंधियाड़ का पति तो पहिले से ही कहेहुए वैभव सहित है और बाकी के

भाखे हेतुन करि भये, ए त्रय३ प्रविदित अत्थ ॥ ११ ॥
अभिउत्थान१ नृजान२ इभ३, संजुत त्रय३हि सुवाद ॥
वढि इनमैं दुव२ वंक१नैं, पाये लक्ख१००००० प्रसाद ॥१२॥
पटूपातु-इनच्यारि४नहितउचितग्राम१इक१इक१इक१इक१गज२॥
पंचसहँस५००० प्रत्येक विहित वितरन मुद्रा३ब्रँज ॥
खास विभूखन४ खिलत५ सुल्वपत्रकं६ लिपि सासन ॥
पठवहु च्यारि४न पास स्वल्प अक्खि रु पटुता सन ॥
ए च्यारि४ मुख्य तिनकै इहाँ क्रम जानहु यह मुख्य१करि॥
वंलि सेस कृपाभाजन वहुत पच्छहु मध्य२ कनिष्ठ३परि १३
पट१हय२कुंडल३कटक४पंचसत५००द्रम्म मध्य२ प्रति ॥
सेप्ति१कटक२पट३दुसत२००गनित मुद्रा४कनिष्ठ३गति ॥
इम नृप सेवी अत्र सुकवि द्वैसत२००पावहिं सव ॥
सोतो अधिक न सुनहु अधिक वसु व्यय निदान अव ॥
सोरठ१कच्छ२गुज्जर३सहित मरु४जंगल५ए पंच५ मति ॥
कुल खानिदेस पौलानिकन इम अयुतन अेकत्र प्रति ॥१४॥
दुलह हड्ड६१ लुन्दीस इहाँ व्याहन वलि आवत ॥
लक्खन उप्पर लग्गि मिले कुल कविन नमावत ॥

तानों १ ऊपर कहे हुए कारणों से यहां प्रसिद्ध हुए हैं ॥ ११ ॥ २ ताजीम ३ श्रेष्ठ वचनों से ४ वांकीदास ने ५ लाखपसाव ॥ १२ ॥ ६ दान के रुपयों का ७ समूह ८ ताम्र पत्र पर लिखेहुए उदक ग्राम ९ इनको न्यून कहकर अर्थात् आप के योग्य नहीं है ऐसा कहकर चतुराई से भेजो १० फिर वाकी के कृपापात्र भी वहुत हैं ॥ १३ ॥ मध्य श्रेणी के चारणों को वस्त्र, घोड़ा, मोती, कड़े और पांच सौ रुपये और कनिष्ट श्रेणी के चारणों को ११ घोड़ा, कड़ा, वस्त्र (सरपाव) और दोसौ रुपये, इस प्रकार प्रति मनुष्य देना चाहिये १२ अधिक धन के खरच का कारण सुनो १३ ऊपर कहे पांच देश चारणों के कुल की खान हैं इस कारण हजारों इकट्ठे हुए हैं ॥ १४ ॥

राजाढिग नहिँ रहत तदपि वैभव सम्रद्धितर[1] ॥
सहँसन[2] कर सासनिक सतन मित इत अग्रेसर ॥
उपबसथ[3] नाम मंथान[4]१इक तीन अयुत३००००कर दम्म तहँ॥
अैसे अनेक सासन अतुल जनपद[5] पंच५ प्रपंच जहँ ॥१५॥
बंदी[6]३।२।१पूरब१ बंस सूत[7]१।२संतति पच्छिम३।५ सब ॥
अैसैँ पृथु अवतार तिनहि दिय देस बंटि तब ॥
यातैं भट्ट२।१ न अधिक तदपि चारन१।२अतिसयतम[8] ॥
तिहिँ निदान[9] करि त्याग कठिन भासत वंटन क्रम ॥
पहु सत्रुसल्ल१।९४।१उदयादिपुर परे अग्ग कछु वाद पर
रूप्पय छलक्ख६०००००वंटि रु रसा अद्भुत जस किन्नौं अमर॥१६॥
तितो मुलक१ धन२ ताँम[10] अब न अप्पन अँगार[11] इम ॥
श्रद्धा१ छिति[12]२अनुसार कराहि क्रम तो सु बनैं किम ॥
धीर सचिव धात्रेय जानि मत कविन एह जब ॥
कह्यो कछु न भय करहु सुकवि बढि करहु तुष्ट[13] सब ॥
बुंदिय१ कुबेर पुरतैं बिथँरि त्वरित जोधपुर२ द्वार तक ॥
सहपंति जोरि रूप्पय सकट[15] सरनि[16] बंधि देहौं सड़क ॥१७॥
सहँसपंच ५०००सिरूपाव१सहँस१०००हय२दुरद३सत्तसय७०० ॥
दुल्लहसँता[17]१।९४।१अग्ग दिय रानघर[18] लक्खछ६००००० रूप्पय४॥

१अत्यन्त वैभववाले हैं २ सालाना हजारों रुपयों के हासिल के उदकग्रामवाले यहां सैकड़ों हैं ४मथाणिया नामक ३ग्राम ५ऊपर कहे पांचों देशों में ऐसे तुला रहित अनेक सांसण हैं ॥१५॥६भाट लोगों का वंश पूरब देश में और ७ चारणों का वंश पश्चिम में है ८ चारण अत्यन्त अधिक हैं ९ इस कारण त्याग का देना कठिन दीखता है ॥ १६ ॥ १० तहां उतना देश और धन ११ अपने घर में अब नहीं दीखता १२ श्रद्धा भूमि के अनुसार है १३ सब श्रेष्ठ कवियों को बढकर प्रसन्न करो१४कुबेर के पुर रूपी बुंदी से फैलाकर१५रुपयों के छकड़ों की पंक्ति जोड़कर १६ मार्ग में ॥१७॥ १७ दुलह शत्रुशालने आगे १८ राना के

तब ओरहु पहु तत्त पत्त बनि बिंद उदैपुर ॥
पहुँचे तोरन पिहित धुत्त छलसौं चढि सिंधुर ॥
छम चढि तुरंग जानि सु छत्तह गम्य बलज हड्डेस८१ गय॥
अक्ख्यो सु बार बारन उचित हरि चारन तहँ निंदि यह२।१८॥
कुंजर थित रचि कपट इतर दुल्लह नृप आवन१ ॥
दूखन बिनु हरिदास बिफल तस सत्व बनावन२ ॥
हेरि सता१९४।१ हुव२ हेतु रोकि रोधक हठ रानाँ ॥
तिम बढि बंटिय त्याग खुल्लि अलकेस खजाना ॥
तैसो इहाँ न संभव तुलत बनिहु जाइ तो टेक बस ॥
प्रभुराम२०।१४आन दैहौं पलटि सत्रुसल्ल१९४।१संचित सुजस १९
सचिव बैन इम सुनत कविन सादर सराह करि ॥
नृप भाऊ१९५।१कृत नियत घने नेगन चिंतन धरि ॥
थैलिन बिच कर थप्पि पसिय निज निज भरि रुप्पय ॥
इक१ इक१ महुर उपेत लये दोउ२न जन्यालय१ ॥
इम बीरमुट्ठि नामक यहै दुल्लह कवि२ लहि नेग हुत ॥
क्रम संग त्याग उपहार करि पहिलैं पुर प्रविसे प्रनुत॥२०॥
धारित क्रम अभिधान कथितै रौहड़१ आसिक२कुल ॥

घर (उदयपुर) में दिये थे वहां अन्यराजा भी बिंद बनकर आये वे धूर्त हाथियों पर चढकर १ छाने आये और समर्थ हाडों का पति शत्रुशाल घोड़े पर चढकर जानेवाले (राना के) २ द्वार पर गया तब ३ हरिदास नामक चारण ने घोड़े पर चढने की निन्दा करके कहा कि यह द्वार हाथी के उचित है ॥ १८ ॥ ४ हरिदास ने अपना बल बताने के लिये ५अधिक खरच करने से रोकनेवाले राणा के हठ को रोककर ६ कुबेर का ७ शत्रुशाल के संचय कियेहुए यश को पलट कर लादूंगा ॥ १९ ॥ भाऊ के समय में ८ निश्चय किये हुए बहुत नेगों को घर में याद करके रुपयों की थैली में हाथ रखकर ९ मोहर सहित १० जान के डेरे में बीरमूंठ नामक नेग दुल्हह के कवियों ने लिया ११ त्याग की सामग्री १२ विशेष स्तुतियोग्य ॥ २० ॥ १३ ऊपर कहेहुए क्रम से,

सहमहडू३वनसूर४ मिले च्यारि४न हित मंजुल ॥
पंचसहँस५००० प्रत्येक अग्ग रुप्पय१ इक१ इक१ इभ२ ॥
सासनपत्र३ समेत निखिल रक्खे पद सन्निभ ॥
भूखन४ पटा५दि जे लखि भये सब प्रसन्न सूचित सुजस ॥
नृप सत्रुसल्ल११४।१नत्तिय दुलह क्यौंन धरहिं जस गृह कलस२१
चित्त सबन हुव चाह धन सु आदान करन ध्रुव ॥
भूप मान दिय विभव हृदय सोपै चिंतितहुव ॥
लैवे मंगि निलज्ज धनी हेरि सु कर्मध्वजँ ॥
नलये च्यारि४न नटि रु ग्राम१ पट२धन३भूखन४गज५॥
क्रम सोहि मान सेवी कविन लखि ईतर न काहु न लयो॥
तकि मित्त चित्त ललचैं तदपि द्वैहिसत२००न उत्तर दयो२२
दृढ साहसदानीय निखिल कवि जदपि निहोरे ॥
ललचि मनन धन लैन जनन तदपि न दृग जोरे ॥
साहस बस प्रभु सुकवि जतन बहु प्रेरिचुके जब ॥
इन जन्यालय[11] आइ सचिव[12] संबोधि कह्यो सब ॥
नृप मान कृपाभाजन निखिल लचे मनहु त्याग न लहत ॥

रोहड़िया, आशिया, महडू और वणसूर इन चारों कुलों के चार चारणों से सुन्दर हित के साथ मिले १ हाथी २ तांबापत्रों के ३ सदृश सामग्री अपने अपने पदोंके सदृश उनके समीप रक्खी ४ उन चारों ने कहा कि यह दुलहा शत्रुशाल का पोता है सो अपने घर पर यश का कलश क्यों नहीं धरे अर्थात् धरना उचित ही है ॥ २१ ॥ ५ धन लेने की चाहना हुई परन्तु ६ राजा मानसिंह ने जो वैभव दिया था उसको सोचा कि ७राठोड़ जैसा स्वामी होने पर दूसरों का दान लेना निर्लज्जता है ८राजा मानसिंह की सेवा करनेवाले अन्य कवियोंने भी किसीने नहीं लिया ॥ २२ ॥ तोभी दृढ दानी (रामसिंह) ने ९ सब कवियों को त्याग लेने के अर्थ वारम्वार निवेदन किया १०परन्तु उन्होंने उनसे नेत्रही नहीं मिलाये ११ जानके डेरे आकर १२ सचिव कृष्णराम (धायभाई) को समझाकर सब कहा

चढैं कहुँ सोन घटैं कहुँ चेत हटैं कहुँ पिक्खि रटैं कहुँ हेत ॥४१॥
बढैं कहुँ संगि रढैं कहुँ बैर, खढैं कहुँ भिंटि चहैं कहुँ खैर ।
चबैं कहुँ उट्ठ फबैं कहुँ चोट, अबैं कहुँ भिच्छ ढबैं कहुँ ओट ॥४२॥
झिलैं कहुँ धार खिलैं कहुँ झुम्मि, मिलैं कहुँ घुम्मि मिलैं कहुँ भुम्मि।
लगैं कहुँ मोह बगैं कहुँ लोह, दगैं कहुँ तोप जगैं कहुँ द्रोह ॥ ४३ ॥
गिनैं कहुँ घाय बनैं कहुँ गाय, हनैं कहुँ दागि भनैं कहुँ हाय ॥
चिपैं कहुँ सोन लिपैं कहुँ चैल, छिपैं कहुँ भज्जि दिपैं कहुँ छैल ॥४४॥
तनंकत चाप प्रपंचन तुट्टि, खनंकत खग्ग सु मुट्ठिन खुट्टि ॥
सनंकत बानन प्रानन संकि, झनंकत पक्खर गात्र झमंकि ॥४५॥
बढे पणवानक नद्द बिहद्द, महाबल युद्ध रच्यो अवमद्द ॥
परयो अरि सेन उपक्कम पूर, सज्यो इम संभर पुंगव सूर ॥ ४६ ॥
थेइत्थेइ नच्चहिं उट्ठि कबंध, मलप्पहिं दै कर ताल मदंध ॥
निसादिन जादिन छिन्न अनंत, भिरैं गजतैं गज मत्त भ्रमंत ॥४७॥
अरैं बहु बीति बिनाँ असवार, उलट्टहिं खुट्टहिं जीन अपार ॥
गिरैं इभपालक दारित गत्त, मनौं तरुतैं कपि निंद प्रमत्त ॥ ४८ ॥

आम पावैं. सोन रुधिर ॥४१॥ बढैंकहुंइति ॥ चढैं यह पदरुभांति प्राकृत. रढत नासौं लरैं. भिंटि मिलिकैं. खैर यावनी. कुशल. उट्ठ ओष्ठ. लोके होठ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ गिनैंकहुंइति ॥ घाय घाव तिनकों. सोन शोणित. चैल वस्त्र, "चैलं चेलं वस्त्रमस्त्र" मित्यमरकोशकारः ॥ छैल यहां सेनामुखमैं रसिक जानिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ बढेइति ॥ पणवानक पणव वाद्य विशेष. आनक ढोल तिनके. बिहद्द घनें अप्र. अवमद्द अवमर्द, लोकें कचरघाण ॥ "अवमर्दस्तु पीडनः" इतिहैमः ॥ उपक्कम पलायन. "उपक्रमस्समुत्प्रेभ्योद्राव" इतिहैमः ॥ संभरपुंगव संभर तालक चहुवानमैं श्रेष्ठ ॥ ४६ ॥ थेईथेईइति ॥ ए दोऊ नृत्यके अनुकार शब्द हैं ॥ यहां थकार विशिष्ट दोऊ एकारनकों प्राकृत नासौं पहिलो लिख्यो. या नागराजके वचनसौं ह्रस्व जानिये. निसादिन निसादी हाथीनके असवार तिन करिकैं. "हस्त्यारोहे सादियन्ता महामात्रनिसादिनः" इतिहैमः ॥ जादिन यादिनमैं. छिन्न हीन. अनंत अपरिमित ॥ ४७ ॥ अरैंइति ॥ वीति अश्व. "गंधर्वो वाजी" वीतिरितिहैमः ॥ इभपाल लोके महावत. "गजाजीवे इभपालकाः" इतिहैमः ॥ दारितगत्त दारित फाटे गत्त गात्र जिनके ऐसे. निंद निद्रा ॥ ४८ ॥ पता॰

न विरत्त तोहु सबके नयन स्वामि स्वसुर कानिहिं कहत२३

प्रभु आसय मानप्रति हुनहि सचिव सु जमाइ दिय ॥
मनविनु अच्छिय मान लेहु तदपि न तिनतो लिय ॥
प्रभुके सुकविन प्रसभ जानि नाइक जंपिय जव ॥
द्वैसत२०० लेहुन देम इहाँ ग्राहक अयुतन अब ॥
इम अक्खि भिन्न पटगेह इक थिर बहु थंभन थंभयो ॥
तहँ वैठि स्वामि स्वकविन अतुल अब वितरन आरंभयो ॥२४॥

सतन स्वीय कवि१ सचिव२ लिखन सब दिस पठये लहु ॥
जे वटि वटि वसु८ जाम वनें जामिक लेखन बहु ॥
आवन लग्गे अमित पत्र लिपिकृत चित पुस्तक ॥
हुव अर्हति आरंभ सोम वसु धृति१८८१संगत सक ॥
अंतर तपस्य१२दसमी१०असित२गोरन अंह तह मेघ गति॥
रचयो अजस्र भर रुप्पयन त्याग प्रगुन सब देय तति॥२५॥

जाचक अनुचरें जनन दम्म पंचास५० अवधि दिय ॥
सतजुग२००सोलह सहँस१६०००कविन उपहारैं एथा किय ॥
मुंद्रा१ लक्खन प्रमित वसन२ अयुतन मित विस्तारि॥
क्रम सहँसन मित कटकें३ सतन सम्मित कुंडल४ करि ॥

१सबके नेत्र विरक्त नहीं हैं तोभी ॥२३॥ २ रावराजा रामसिंह का त्याग देने का आशय. रामसिंह के कवियों ने मानसिंहके कवियोंका हठ जानकर कहा कि तुम दोसौ चारण भले हो ४ दान मत लो यहां और हजारों लेनवाले हैं, इसप्रकार कहकर बहुत थम्भोंवाला ५ डेरा तनाकर ६ त्याग देने का आरंभ किया ॥२४॥ ७शीघ्र लेख(निमन्त्रण पत्र)भेजे ८दानका आरंभ हुआ ९फाल्गुन वदि१०गोरख के दिन मेघ की भांति रुपयों का ११ निरन्तर झड़ [illegible] विशेष गुणवाला त्याग सब पंक्तियों को दिया ॥२५॥१२चारणोंके चाकरों को प्रत्येक मनुष्यको पचास रुपयों तक दिये और प्रत्येक चारण को दोसौ लेकर सौलहसौ रुपये१३भेट करनेका कार्य प्रसिद्ध किया जिसमें१४लाखों रुपयां१५ हजारों शिरोपाव१६सैकड़ों कड़े१७कानोंमें पहिननेके सैकड़ों मोती और इसी

ताही प्रमान हय५ मेघ६ वितरि सब देसन तर्कुक२ सकल॥
किन्नैं निहाल सादर कथन बादर३ पथन स्वबुद्धि बल॥२६॥

(दोहा)

इविंन बुद्धि बिधि इम दुलह, प्रस्तरि त्याग प्रवाह ॥
उभय२ घटी मित रहत अह, चढयो स्वसुर गृह चाह॥२७॥

[उपदोहा]

जिततित सब जाचक जनन, सुजस स्व संचित सुनत ॥
गोरन भोजन स्वसुर गृह, चल्यो नगर सर चुनत॥२८॥
कर्मध्वज हकारे क्रम, लघु१ गुरु२ मानव लहत ॥
महासुभट१ सचिव२न मिलित, चल्यो स्वसुर मन चहत२९

(पद्धतिका)

प्रभु दुलह जोधपुरके प्रवेस, अधिरूप१ कमनँ२पन लहि असेस॥
साखापुर१ बहुविध लखि समत्थ, तंकि भरत१ कुसीलव२ भंट३ न तत्थ ॥ ३० ॥
बुट्ठत स्वबुद्धि मघवों बनाव, भूपाल लखत मग सदन भावँ३ ॥
दौलाअरैंघट्टक४ कहुँ दिपात, पावत तिन प्रेरक वसुनें व्रात॥३१॥
गावत कहुँ बंसि५न धमि गवार, पावत प्रसाद धन प्रकटि प्यार॥

प्रमाणसे घोड़े१ऊंट देकर२याचकों को आदर के साथ कथन करके३मेघके सदृश वृष्टि के बल से निहाल करदिये ॥२६॥४इसप्रकार धनकी वर्षा करके और त्याग का प्रवाह फैलाकर दो घड़ी दिन बाकी रहने ॥२७॥ अपना संचय किया हुआ यश सुनकर गोरण के दिनका भोजन करने को ॥२८॥ राठोड़ राजा मानसिंह के ५ बुलाने के क्रम से ६ छोटे बड़े सब मनुष्यों को साथ लेकर ॥ २९ ॥ अधिक रूप और सब ७ सुन्दरपना धारण करके शहर के बाहर के पुरे सब देखकर तहां ८ नाटक करनेवाले नटों और ६ कत्थक (नटविशेष) १०भाट तथा नट विशेष को देखकर ॥ ३० ॥११ इन्द्र के समान धनकी वर्षा करता हुआ १२ मार्ग में सबका भाव (अभिप्राय) देखता हुआ १३कहीं डोलराँहिंदे शोभा देते (थाईं जिनके प्रेरणा करनेवाले (झुलानेवाले] १४ धनका समूह पाते हैं ॥ ३१ ॥

वहुचिन्ह६ भांड१ नर्तक२ बनाइ, लावत वसु पावत प्रमद लाइ३२
मंदिरमहा१हि उदयादि२ मान७, निरखत स्वसुरार्चित नय निधान
कचुवाटि८न कहुँलघु मनुज१लीन,पिक्खत प्रसन्नवर वहुप्रवीन३३
मालिक१०न सुमन उपहार मेल, हाटक चय बुट्ठत गनित हेल॥
कंजर११न कहुँक तंडव प्रकार, दुहरी१ तिहरी२ तिन्ह रचत दार ॥ ३४ ॥

जोजोहि रिझावत जिम जथाहि, सोसोहि स्वसंगत१३तिम तथाहि
कहुँ कहुँ खेट१ इंधन२ निचय कार, प्रहिलैंहि पटकि बरंदल प्रसार ॥ ३५ ॥

लै रीझ१४बहुरि लेबे लँबार, पावत धन१५करि अति लुति प्रसार
जुरि फिरिफिरि सन्मुह नट१६न जूह, सु रिझाइ लेत बहु बसु समूह ॥ ३६ ॥

गन निपं१ कुंमारि१७न बसु गिराइ, पुनि कहुँ बागुरिकं१८न मृग२न पाइ ॥
दैबहुवसु१वखसततिन्ह निदेस,अबसोंन करहु तुम कर्मऐस२॥३७॥

१बहुरूपिया, भांड[सुवर्ण भंडाई करनेवाले]नाचनेवाले अपने बनावों से २धन लेकर३हर्ष प्राप्त करते हैं ॥ ३२ ॥ ४ महामंदिर ५ उदयमंदिर दोनों अपने ६ स्वसुर [मानसिंह] के पूजन किये हुए स्थानों को ७ नीतिनिपुण [रामसिंह] ८ छोटी बगीचियों के छोटे मनुष्य ९ बहुत चतुर दुल्लहको लीन होकर देखते हैं ॥३३॥१०मालियों के पुष्प भेट करने पर ११ सुवर्णका समूह १२ खेल के समान देता है कहीं कांजर १३नाचते हैं और कहीं पर इनकी स्त्रियां दोदो तीन तीन कुलाटें लेती हैं॥३४॥ कहीं पर १४खड़(घास) और १५बलीता संचय करनेवाले १६ दुल्लह की सेना में डालकर ॥ ३५ ॥ रीझ लेकर फिर लेने के लिये वे १७ लापर(झूठे) नम्रता करके धन पाते हैं १८नटों का समूह राजा से धन का समूह लेता है ॥ ३६ ॥ कुंआरियों के १९ कलशों के समूह में धन डालकर २० मृग पकड़नेवाले बागरियों (व्याध विशेषों) को २१ धन देकर आज्ञा देते हैं कि २२ ऐसा काम फिर मत करो अर्थात् मृगों को मत पकड़ो ॥ ३७ ॥

इम देत जनन धन घन अछेह, प्रविस्यो पुर *गोपुर उचित एह॥
नृप गोपुर पाल१न करि निहाल, बिक्खत पुर२ जन जुव१ वृद्ध२ बाल३ ॥ ३८ ॥
कहुँ नट३न‡नटन उछुन‡कुरंग, भजि कहुँ§नरेन्द्र४दिखवत भुजंग॥
कहुँ द्यूत द्यूतदेवि५न निकार,समपन२कहुँ जय३कहुँ रय प्रसार३९
प्रवहत कुल्ल्याजल२कहुँ दुपास, मरुछितिहुलसतजिसभाद्रमास॥
बैतालिक१७ चाक्रिक२८ बिबिध भात, जय१ जीव२ जल्प सन्दि-रुद३ सुनात ॥ ४० ॥
नच्चत बहु द्वारन बारनारि९, पटु धाव१ हाव२ भाव३न प्रसारि ॥
कहुँ सान क्रमासक्त१०न सनंकि,स्फारत फुलिंग सख्न स्फनंकि११
बिरहुँदिसिन असीसत द्विज११न बौर, स्वेहासम पावत वसु प्रसार
कहुँ उघरि चित्रसालन कपाट,बिक्खत तिय१४बिंदहिं नयन बाट४२
उत्तारन उह१३हि कहुँ करंत, बलि१४ करन प्रान हित बित्थरंत॥

*नगर के द्वार में प्रवेश किया जहां पर नगर के द्वारपालों को निहाल करके, पुर के जवान, वृद्ध और बालक को देखता हुआ नगर में गया ॥३८॥ तहां कहीं पर तो ‡ हिरणों के समान नट † नृत्य करके उछलते हैं और कहीं पर § विष वैद्य (कालबेलिये) सर्प दिखाते हैं और कहीं द्यूत खेलनेवाले द्यूत देवी को निकाल कर कोई तो बराबर का दाव लगाते हैं, कोई जीतते हैं और कोई अपना वेग फैलाते हैं ॥३९॥ कहीं पर दोनों ओर विशेष मार्ग में १जलकी नहरें हैं जिनसे २मारवाड़ की भूमि भाद्रपद मासमें प्रसन्न होती है "वहतः पान्थे" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ३ स्तुति करके राजा को जगानेवाले भाट और ४ घंटा बजाकर राजाकी स्तुति करनेवाले भाट विशेष "वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः" इत्यमरः॥ जय होओ, जीवो, बढो ऐसा ५ कह कर स्तुति करते हैं ॥ ४० ॥ ६ घरों के बहुत द्वारों पर ८ चतुर दौड़ से हाव भाव करके ७ वेश्यायें नचती हैं ९ कहीं पर सकलीगर शाण पर शस्त्रों को झणकाकर १० अग्नि कण झाड़ते हैं ॥४१॥ ११दोनों ओर ब्राह्मणों का १२ समूह आशीर्वाद देता है जो १३ अपनी इच्छानुसार धनका फैलाव पाता है ॥ ४२ ॥ १४ कहीं पर ऊपर से ही नोछावर करते हैं १५ पुनि प्राण नोछावर करने का हित

बिखरत नोछावरि वसु१५ बजार, अति रंक होत तिन्ह लहि उ-
दार१६ ॥ ४३ ॥

प्रभु१ आदि जन्य जन२ गजन पिट्ठि, द्रुत परत निछावरि द्रविन
दिट्ठि१७ ॥

सोसो आंधोरन१सुख२समेटि, मग गेरिदेत१८दुख दुखिन मेटि४४

समेटि१ नमेटि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

कहुँ अन्नरासि१९ नाना प्रकार, मप्पत२० द्रोणों१दिन बिनु सुमार
कहुँ आढक२ प्रस्थ३न मपन कर्म२१, मुसियत अधमर्ण२१न पि-
हित मर्म ॥ ४५ ॥

रचि व्रीहि सुगंधिक१ कुलथ२ रासि२३, पावत कहुँ बिक्रय१ क्रय२
प्रकासि२४ ॥

जव३ सुमन४ मदन५ हरिमंथ६ जात, अरमुद्ग७ राजमुद्ग८न बि-
भात२५ ॥ ४६ ॥

जवनाल९ बीजपुष्पि१०न जया२६हि, अति रासिन इतिसुख सीर्ष
आहि२७ ॥

फैलाते हैं, बजार में नोछावरका धन बिखरता है जिसको लेकर रंकभी उदार होते हैं ॥४३॥ दुलह रामसिंह आदि १बरात के लोग हाथियोंकी पीठके ऊपर नोछावर का २ धन पड़ाहुआ देखते हैं उसको ३ महावत आदि शीघ्र सिमेट कर दुखी मनुष्यों का दुःख मिटाने को मार्ग में गिरादेते हैं ॥ ४४ ॥ कहीं पर नानाप्रकार के अन्न के ढेर (समूह) होरहे हैं जिनको ४ द्रोण (बत्तीस सेरके तोल का नाम द्रोण है) आदि तोलों से ५गणना रहित तोल रहे हैं और कहीं पर ६ आढक (लीलावती में द्रोण के चतुर्थ भाग अर्थात् आठ सेरको आढक लिखा है) और ७ प्रस्थों [आढकके चतुर्थ भाग का नाम प्रस्थ है] से नापने का काम होता है और कहीं पर ८ ऋण लेनेवालों को छिपेहुए कामों से बहोरे लोग न ठगते हैं ॥ ४५ ॥ कहीं पर १० धान्य में ११ चावल १२ कुलथों [धान्य विशेष] की राशि करके प्रसिद्ध १३ बेचते और १४ मोल लेतेहुए पाते हैं और कहीं पर जव १५ गेहूँ १६ उड़द १७ चणा १८ मूँग १९ मोठ तथा चँवला ॥ ४६ ॥ २० जवार २१ बाजरा २२ इत्यादि २४धान्य के २२समूह

भासत कहुँ हट्ट२८न भ्रमर भीर २९, पीतन १ कपूर२ मृगमद३ पटीर४ ॥ ४७ ॥

कहुँ कुसुम निकर३०नाना प्रकार, अधिपतिपर वारत३१विविध बार
नृप करत रीझि मालि३२न निहाल, चलत१ खिन रहि२ खिन सिथिल२ चाल३३ ॥४८॥

प्रभु द्विरद अग्ग बहु दारुपट्ट३४, वहि१ढवत२कहारन अंस वट्ट ॥
गनिका जन३६ तिनपर नटन१ गान२, बज्ज३न सह विरचित३७ बहु विधान ॥ ४९ ॥

उनपैंहु महुर१रुप्पय२उछारि३८, छुट्टहिं जन जन्य कि भाद्र वारि॥
तहतह तिन्ह बांदक लोभ तानि, लचिलेतें ३९ होत लय ताल हानि४० ॥ ५० ॥

अधिकारी तिनके तिन्ह उतारि४१, पुनि इतर चढावत४२न खिन पारि ॥
बिखरत ४३ पट्टन सन द्रविनं व्रात, बहु लुट्टत ४४ बहु धप रज्ज दबात४५ ॥ ५१ ॥

पुरलोकबहुरिजिन्हवुंढि४६पात, बनिबिविधगये बहु आढ्य४७व्रात
विक्खतकहुँइत१उत२मनिनबार४८,क्रमविविधअर्घ४९नानाप्रकार५०

शोभा देते हैं, कहीं पर दुकानों में भ्रमरों की भीड़ होरही है और कहीं पर १कुंकुम तथा हरताल तथा आमला, कपूर २ कस्तूरी, चंदन ॥ ४७ ॥ ३पुष्पोंके समूह ४समूह ५क्षण मात्र ठहर जाते हैं और क्षण मात्र धीरी चाल से चलते हैं ॥ ४८ ॥ दुल्लह के हाथी के आगे कहारों के ७कंधे पर रक्खा हुआ ६ काष्ठ का बडा तखता है उस पर वेश्याओं का ८ नाचना गाना होता है सो वे वेश्याएं बाद्य के साथ अनेक विधान रचती हैं ॥ ४९ ॥ ९ बरात के मनुष्य भाद्रवाके जलके समान मोहर और रुपये वर्षते हैं तहां उन वेश्याओंके१०बाद्य बजानेवाले लोभ करके ११ झुककर उनको लेते हैं जिससे लय और ताल चूकजाते हैं ॥ ५० ॥१२ धन का समूह ॥ ५१ ॥ १३ धनवानों के समूह होगये १४मणियों के समूह को देखते हैं १५ मूल्य के विविध क्रम से ॥ ५२ ॥

पवि१ नील२ मुक्तिभद३ पद्मराग४, वैडूर्य५ बहुरि चउ४१९ खिल विभाग५१ ॥

दुहुँ२ओर बहुल कहुँ पट८५२दिपात, जे राङ्कव१बादर२क्षौम३जात५३ कौसेय४ सहित इम चउ४ प्रकार, विक्खत५३ दु२ओर बर विविध बार ॥

कहुँ कुंकुम१ मृगमद२ सुम३ प्रकीर्ण५४, सब ठाम अगुरु४ चंदन ५ विशीर्ण५५ ॥ ५४ ॥

दुल्लह सुगंध प्रथम१हि दिपात५६, पुनि२ नगर जनन सौरभ खि-पात५७ ॥

फग्गुन१२ खिन उच्छत्र फाग५८ फोरं, कति विध तस खेलन ५९ मरु प्रकार ॥ ५५ ॥

प्रभु दृगन कहुँक कर्पूर पूर, हितपुव्व डारि६० रिझवत हजूर ॥ वलिवलिसुगंधमपद्रव्य६१ज्ञात, जनप्रीतजननजन्यनजमात६२।५६। वंचि अक्खि२न डारत६३ सुरभि बारि, नृप दुल्लह हित सह अति निहारि ॥

जागुड१ मृगनाभि२न जानि जानि, प्रभु जन्यन सिंचित ६४ हित प्रतानि ॥ ५७ ॥

दुहुँ२ओर नारि१नर२लखि दुरूह,आनत६५अनेक विध सुजसऊह कहुँगंधिनि१मालिनि२बहुप्रकार, फैलावत६६वरसिरसुरभिफार५८

---

१ हीरा २ नीलम ३ मोती ४ माणक ५ पाची के चार प्रकार के रत्न ६ वस्त्र ७ ऊन ८ सूत ९ सण से उत्पन्न ॥५३॥ १० रेशम सहित चार प्रकार के ११ केसर १२ कस्तूरी १३ पुष्प १४ फैले हुए १५ अगर, चंदन १६ विखरे हुए ॥ ५४ ॥ १७ फाग का समूह ॥ ५५ ॥ १८ फिर फिर (बारंबार) १९ परात के लोगों को प्रीति जनाते हैं ॥ ५६ ॥ २० नेत्र बचाकर २१ गुलाबजल आदि सुगंधि का जल डालते हैं २२ केसर, कस्तूरी ॥ ५७ ॥ २३ कठिनाई से तर्कना में आवैं ऐसे दुल्लह को २४ तर्कना करते हैं ॥ ५८ ॥

बहु कहत६७ अम्ह नृप मति बिचार, सुभ विधि गय६८ बुंदिय सबुध्दि सार ॥
यह जोग दुलह१ दुलहिन२ अपुब्ब, बिरचिय६९ कांध दै दहि१ र दुब्ब२ ॥ ५९ ॥
कहुँ कहत७० स्वपत गिंधोलि खेत, दुल्लह जनक न जो भीर देत
होतो७१ अनर्थ तो हाइहाइ, पै हुव७२सुभ दुलहिनि१दुलह२ पाइ६०
इम लखत७३ नगर सोभा असेस, पहु पत्त७४ मुख्य तोरन प्रदेस
इम दुल्लह लोहापोरि१ अंत, बुट्ठतगो७५ बसु चय सुम बसंत ।६१
मृगमद१पटीर२कुंकुम३मिलाप,छिरक्यो७६वर फग्गुन समयछाप॥
बुट्ठिय७७ पहु तह बहु बसु बिसेस, अंदर लिय७८ सह विधि सुवर एस ॥६२॥
बहुबिध बहुदासि१न सखि२न बार, किय ७९ पुनि नीराजन सह प्रकार ॥
त्रिक १ नाड़िनै जावत रजनि जत्थ, पहुँच्यो ८० मह दुल्लह स्व-पुर पत्थ ॥ ६३ ॥
पहुमान आइ पहिले१पैंउट्ठ, ताकिय८१मिलि सम्मुह अधिक तुट्ठ॥
जावत घटिका चउ ४ रजनि जाम, किय ८२ सभिति फतैमहल सु१प्रकाम ॥ ६४ ॥

---

१ हमारे राजा (मानसिंह) की बुद्धि का विचार ॥ ५९ ॥ गींधोली के खेत में॥ २ हमारे स्वामी को दुल्लह का ३ पिता सहायता नहीं देता तो ॥ ६० ॥ दुल्लह ४ मुख्य द्वार के स्थान पर गया ५ वसंत ऋतु में पुष्पों की वर्षा होवे जैसे लोहापोल (जोधपुर के गढ पर महलों के मुख्य द्वार का नाम है) पर्यन्त धन के समूह की वर्षा करता गया ॥ ६१ ॥ वहां दुल्लह पर कस्तूरी ६ चंदन और केसर मिलाकर फागुन मास का समय होने से छिड़का वहां भी राजा ने विशेष धन की वर्षा करी ७ इस श्रेष्ठ घर को ॥ ६२ ॥ ८ आरती की ९ तीन घड़ी रात्रि जाने पर ॥ ६३ ॥ १०प्रथम सीढी पर आकर ११अधिक तुष्ट (प्रसन्न) हुआ १२ जहां पर १३ फतहमहल में सभा की ॥६४॥

कापरनि ईस सामंत काज, दिय गहि आदि८३ रट्ठोरराज ॥
वैठारयो ८४ नृपदिस इम सु वीर, ध्रुव वैठे८५ सम थित दुव २
हि धीर ॥ ६५ ॥
ईसान ८ नृपन मुख दुहुँ २ न आस ८६, सामंत अनिल दिस
मुख ८७ सुभास ॥
थित सव्य १ मान २ दाहिन१ थिरेसै२, इम हुव ८८ समाजं कछु
काल एस ॥ ६६ ॥
रहि इक मुहूर्त संसद८९ रसेसं, पुनि परिग९० पंति भोजन प्रदेस
पश्चिम ३।५ मुख वैठे ९१ तहँ नृपाल, थित पट्टन चउ ४ विध
असन९२थाल ॥ ६७ ॥
जुरि पंतिन९३ पंचम५ पेयं५ जुत्त, विस्तरिय९४ मिधा सूदन बहुत्त
जल२ थल२ भव दुव २ विध अन्न ९५ जात, पल ९६ त्रि३विधि
खेचर३ जुत विधि दिपात ॥ ६८ ॥
प्रतिथाल साकगन ९७ दस १० प्रकार, विस्तरि पुनि तेमन ९८
विविध वार ॥
इम वरि परिवेमन ९९ द्रुत असेस, रस छ ६ जुत पत्तहुव१००दुव२

१दोनों राजा बराबर स्थित होकर बैठे।६५। २दोनों राजाओं का मुख ईशान दिशा को हुआ और सब उमरावों के मुख वायु कोण में प्रकाशित हुए वहां राजा मानसिंह वाम हाथ को और ३ राजा रामसिंह दहिना बैठा ४ कुछ समय यह सभा हुई ॥६६॥ ५भूपति के दो घड़ी तक सभा में रहे पीछे भोजन के स्थान पर पांत (पांतिया) हुई ६ चार बाजोटों पर विधि पूर्वक ७ भोजन के थाल रक्खेगये ॥ ६७ ॥ ८ पांचमी पंक्ति मद्य सहित जुड़ी जहां ९ रसोई पकाने वालों ने बहुत भेद फैलाये जिनमें जलसे और स्थल से पैदा हुए दो प्रकार के अन्न (जल से उत्पन्न चावल आदि और स्थल से उत्पन्न गेहूं आदि) और ११ पक्षियों सहित तीन प्रकार के१०मांस (एक तो बकरे आदि ग्रामपशु, दूसरे सूवर आदि वनपशु और तीसरे पक्षियों का) ॥ ६८ ॥ और थाल थाल प्रति दश प्रकार के शाकों के अनेक प्रकार के १२ समूह के१३तीवणों (व्यंजनों) की श्रेष्ठ १४ परूसगारी हुई.

रसेस ॥ ६९ ॥
जहँ *चसक१ †चसक २ मनुहारि जात१०१, प्रभु‡रूच्य नट्यो १
सनियम दिपात ॥
रतपान बुंद्ध दिय १०३ हारि राज्य, तस सुत उम्मेद सु कियउ
१०४ त्याज्य ॥ ७० ॥
बर १ अक्खिय १०५ स्वसुर १ हिं इम प्रवीन, सामंत तदपि किय
पान सीर१०६ ॥
धुनि लहि अदेस सब असन पाइ १०७, उट्ठिय १०८ लहि वीटक
जल अचाइँ ॥ ७१ ॥
कछुखिन रहि १०९ संसद हित प्रकाम, तब दिय११० सब जन्यन
सिक्ख ताम ॥
पधराइ प्रभुहिं अवरोध१११प्रीत, गावत गन बंदिन विरुद गीत ७२
कुलदेवि कबंधन नागनेचि, पूजाइ ११२ प्रभुहिं सुम निकर सेचि
सज्जा पोढाये११३ नृप स्वगेह, अभिलाखिन सुरतरु रजनि एह७३
इह बर स्वासुर कुल तियन आइ, लहि कछुक काल अतिहित
लडाइ११४ ॥
लखि समय कियउ दंपति २ मिलाप ११५, इहिं काल लुट्ठि बहु
हुव ११६ अलाप ७४

॥ ६९ ॥ जहां * मद्यकी † चुसकी की मनुहार हुई तहां ‡ दुल्लह ने इनकार किया और यह इनकार १ नियम के साथ दिखाया कि २ बुधसिंह ने मद्य पीने में प्रीति करके बुंदी का राज्य गुमा दिया था उसके पुत्र उम्मेदसिंह ने मद्य पीने का त्याग कर दिया ॥ ७० ॥ तो भी ३ उमरावों ने मद्य पीने में ४ सीर (सामिल हुए) किया ५ आदेश (आज्ञा) लेकर भोजन किया ६ पान बीड़े लेकर ७ आचमन किया (आचमन लेने से पहिले पंक्ति में पान बीड़े देनेका राजपूताने में कायदा है) ॥ ७१ ॥ ८ तहां बरातवालों को सीख दी ९ दुल्लह को जनाने में पधराया ॥ ७२ ॥ १० फूलों के समूह चढाकर ॥ ७३ ॥ ११ इस समय श्वसुर के कुलकी स्त्रियोंने आकर ॥ ७४ ॥

पताकिन होत सदंड पपात, बडे तरु ताल सकीस कि बात ॥
किरैं बहु मस्तक लस्तक काढ, गिरैं गुन तुट्टि फिरैं धनु फट्टि।४९।
खिरैं बिखरैं सर छोार निखंग, जथा बिलतैं बहु भीम भुजंग ॥
इली असिधेनुन बुद्धि अपार, किधौं मलयाचल नागकुमार॥५०॥
बहैं परिघातन कुंत सबेग, त्रिसीमक संगि रु पट्टिस तेग ॥
अरैं कति अश्वन मंडि नियुद्ध, करैं तुमुलाहव के भट क्रुद्ध॥५१॥
परैं फटि दुंदुभि भोरन पूर, गरज्जहिं के नर मंडि गरूर ॥
परैं झरि बग्ग कबी रुलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कान॥५२॥
रची इम संभर जाजव रारि, हनी अारे सेन घनी हलकारि ॥
घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत्त निराय ।५३।
भयो जबही असु आजम भंग, सबै नृप तत्थ टरे तजि संग ॥
भज्यो इक १ भूप रु द्वै २ हनि भिंटि, लयो अब आजमको सुत भिंटि ॥ ५४ ॥

किनइति ॥ पताकिन पताकी पताका बरवबवारे. लांके निसानबरदार. तिन के. सदंड ध्वजा दंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस कीस बानर तासहित "कपिः कीसः प्लवंगमः" इतिहैमः ॥ कि मनों. बात पवन सों. किरैं बिखरैं. लस्तक धनुषकी मुष्टी. "ल्हाणनो लस्तकोस्यांत "रितिहैमः ॥ गुन प्रत्यंचा. ॥ ४९ ॥ खिरैंबिखरैंइति ॥ सर तीर. भीम भयंकर. इली लांके छुरी॥ "स्यादिली करवालिके" तिहैमः ॥ असिधेनु छुरी. "छुरिका चासिधेनुका" इत्यमरः ॥ ॥ ५० ॥ बहैंइति ॥ परिघातन परिघ लांके लोहांगी. "परिघः परिघातनं" इत्यमरः ॥ त्रिसीमक त्रिसूल. "सर्वला तोमरे शल्यं शंकौ शूलं त्रिशीर्षक" मिति हैमः । अरैं लरैं. अश्व घोरेनकों. नियुद्ध भुजयुद्ध. "नियुद्धं बाहुयुद्धं स्या" दित्यमरः ॥ तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफटिइति ॥ पूर समूह. गरूर देशीप्राकृत गर्व. बग्ग घोरेनकी बाग. कबी लगाम. हयच्छद घोरेनके स्कंध. "हयस्कंधा हयच्छदे" तिद्वारावली ॥ ५२ ॥ रचीइमइति ॥ घटागजमध्य हस्तीनकी घटाके बीच. "बहूनां घटना घटे" तिहैमः ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयोइति ॥ असु प्राण. आजम जुत्तफरटीक. नृप आर्यराज. इक नरवरको राजा गजसिंह कछवाह भज्यो. रु अरु. द्वै२ कोटाको महाराव रामसिंह अरु दतियाको राजा दलपतिसिंह बुंदेला २ ए दोऊ तिनकों. भिंटि मिलिकैं. भिंटि घेरि ॥ ५४ ॥

बहुगति चतुर वर रचि विधेय ११७, सज्जिय सब लौकिक ११८
सहित श्रेय ॥
रहि ११९ सुख सह वितत उचित रत्ति, घन गानाजीविन द्रविन
घत्ति१२० ॥ ७५ ॥
नृप आइ १२१ प्रात निज पटनिकाय, राजस सुख बिलसत हड्ड
६१ राय ॥
तिम निवासि१२२ दिवस बावीस २२ सत्थ, सब तर्कुक जन करि
बसु समत्थ१२३ ॥ ७६ ॥
बहु अप्पि हरनं १२४ सबविधि विसेस, नृप मानं तुष्टकरि१२५
वर निसेस ॥
ग्रामक१ उपेत केकींन्द्र२ढंग, पुनि मान सुता हित हित प्रसंग७७
अतिकृति सहस्र २५००० मित दम्म आय, दे १२६ दुव२ लडाइ
पठये१२७ सदायं ॥
रइयाँ पुरेस सिवनाथसीह१, मेरतियन मालिक बल अबीह॥७८॥
रुचिभाजन नाजर अमृतराम२, तिन दुहुँ२न सिक्ख दिय १२८
संग ताम ॥
लक्खन मित सबसैन१ धन२ लुटाइ१२९, भूखन३ गैंय४ हय५
भैंय६ दान भाइ१३० ॥ ७९ ॥
सब चुकिसके न तब कति स्वसंगें, आयो लें१३१ जाचक छवि
अनंग ॥

---

१ गान से जीवन करनेवाले कलावत आदि को धन देकर ॥ ७५ ॥ २ अपने डेरे में जाकर ३ याचक लोगों को धनवान् करके ॥७६॥ ४ बहुत दहेज देकर ५ राजा मानसिंह ने वरको पूर्ण प्रसन्न किया ६ ग्रामों सहित ७ केकीन्द्र नामक नगर ८ राजा मानसिंह ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री को दिया ॥ ७७ ॥ दुलह दुलहनका प्यार करके ९ दहेज सहित भेजे १० निर्भय ॥ ७८ ॥ ११ प्रीतिपात्र १२ धन्ओं सहित १३ हाथी १४ ऊंट रीति पूर्वक दिये ॥ ७९ ॥ १५ कितने ही

मधु१ असित२ आदि१ तिथि१ चढि१३२ महीप, दरकुंचन प्रस्थित १३३ वंसदीप ॥ ८० ॥

मीनाऽर्क बिसनं पुर न सुभ मानि१३४, पटगृह केदारेश्वर प्रतानि इह करि१३६ बनीयकन खिलन आढय, संसद बुलाइ१३७ सब जस समाढय ॥ ८१ ॥

सह मह१ आस्वासन२ तिन्ह सराहि, दिय१३८ सिक्ख सबन दारिद्र दाहि ॥

निवसन करि बहुदिन तह नरेस, आरंभिय१३९अवसरपुर प्रवेस८२

॥ दोहा ॥

आमराँध२ गत पक्ख सित२. तिथि——दिन तत्थ ॥८३॥
प्रविसे१४० दिन पच्छिम४ पहर, सहर सकल बल सत्थ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ रामसिंहचरित्रे महारावराजरामसिंहयोधपुरविवाहानन्तरबुंदीपुरप्रवेशनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितः अष्टषष्ठ्युत्तरद्विशततमः ॥ ३६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

याचकों को अपने साथ ले आया १ चैत्र बदि एकम के दिन ॥ ८० ॥ मीन संक्रांति के सूर्यमें पुरमें २प्रवेश करना अशुभ मानकर केदारेश्वर शिवके स्थान पर ३ डेरे लगाये, इसी स्थान पर सब ४ याचकों को धनवान् किये और उनको ५ सभा में बुलाकर सबसे आप यशयुक्त (यशसे धनवान्) हुआ ॥ ८१ ॥ ६ उत्सव सहित उन (याचकों) का आश्वासन करके प्रशंसा के साथ सब का दरिद्र जलाकर सीखदी ॥ ८२ ॥ ७ वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तीसरे पहर पीछे ८ सब सेना सहित पुर में प्रवेश किया॥८३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र में, महारावराजा रामसिंह का जोधपुर में विवाह करके पीछा बुंदी आनेका छठा मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीनसौ अड़सठ ३६८मयूख हुए ॥

पुर प्रविसन पुरजन प्रचुर, स्वामि लखन हित संग ॥
कहिहु करत दरसन किते, *अय१ चुंबक२ विध अंग ॥१॥
अटत जाय बन ताल तट, दिपत †उदीची४।७द्वार ॥
विसि ‡गोपुर निरख्यो सु वर, पुर निज विविध प्रकार॥२॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

उदीची४।७दिसा द्वार यों भूपआयो, प्रवेस्यो पुरी सज्ज सेना सुहायो
दिप्यो आप्पनोंढंगशृंगारसज्ज्यो, लखैं इंद्र१को श्रीद२को नैरलज्ज्यो ३
पइट्ठो तहाँ ढंग यों जेव पायो, अकस्मात ज्यों कायमैं प्रान आयो ॥
कहीँ वप्र१प्राकार२सोहैं सुधारें, कहाँ कंगुरे३मंजु ऊंचे अटारैं४।४।
कहाँ ग्रावपैं टंक सों मंजु मंडैं५, कहाँ भान चक्री धरैं चक्र भंडैं६॥
कहाँ सार ७पोंकारके कूटवज्जैं७, कहाँ वर्णचंचूनके लेख८रज्जैं५
कहाँ वर्द्धकी स्यंदनाली सुधारैं९, कहाँ कंदुजीवी हवी कंदु डारैं१०
कहाँ चेल चंगे वनें तंतुवाई११, कहाँ उव्वटे अंग अंतावसाई१२।६।

*लोहे और चुंबक के मिलने की भांति ॥ १ ॥ †उत्तर दिशा के द्वार से ‡नगर के द्वार में घुसकर अपने पुर को नाना प्रकार का देखा ॥ २ ॥ इसप्रकार वह राजा उत्तर दिशाके द्वारसे आया और सुहावनी सजीहुई सेनासे प्रवेशकिया वहां अपना नगर शृंगार किया हुआ ऐसा दीखा जिससे इन्द्र की पुरी (अमरावती) और २ कुबेर की पुरी(अलका) लज्जित हुई ॥ ३ ॥ राजा भीतर घुसा उस समय वह नगर ऐसी शोभा को प्राप्त हुआ कि जैसे मृतक शरीर में अचानक प्राण आया, जिसमें कहीं तो २ कच्चा कोट कहीं ३ पक्का कोट सुधारा हुआ शोभायमान है, कहीं पर कांगरे और कहीं सुन्दर छतें हैं ॥ ४ ॥ ४ पत्थर पर टांकी से ५ लक्ष्मी की सुंदर मूर्तियें मांडते हैं और कहीं घरों में ६ कुंभार चाक पर भांड (मिट्टी के पात्र) घरते हैं, कहीं लोहे पर ७ लुहार के घण बजते हैं और कहीं पर ८ चित्रकारों (चितेरों) के लेख (चित्राम) शोभा देते हैं ॥ ५ ॥ कहीं पर ९ सुथार रथों की पंक्ति को सुधारते हैं और कहीं पर १० कंदोई कड़ाह में घृत डालते हैं ११ कहीं पर जुलाहे उत्तम वस्त्र बुनते हैं १२ कहीं पर नाई शरीर पर उपटन मालिस करते हैं ॥ ६ ॥.

अश्मासक्त[1] मंजैं कहों हेति१३भारी, धरैं सान झंझान फुलिंग[2] धारी
वढे वस्त्रजोरैं कहों तुंन्नवाई१४, छमंकैं कहों पिंजरी तूल[4]१५छाई॥७।
कहों सूत[5]१ कांसी[6] २ चित्तीभूत[7] चोरैं१६, कहों सीस३ कत्थीर४ के
जाल जोरैं१७ ॥
कहों चित्र आवास[9] मंडैं चितारे १८, कहों स्तोत्र बंदी पढैं नव्यं१९
न्यारे ॥ ८ ॥
कहों के करैं मालिनी माल्य[11] भंगैं२०, कहों रंगरेजावली[12] चैल रंगैं २१
कहों व्री[13]हि१गोधूम२के गंज२२भारी, कहों राशि मप्पैं२३गहैं द्रोन[15]
१ खारी२ ॥ ९ ॥
कहों रक्क[16]१ री[17]तीर२नके गंज डारे२४, कहों नैर नाना रुपय्ये३ वि
थारे२५ ॥
कहों स्वर्णकारावली[18] हेम४तुल्लैं२६, कहों ग्राम[19] गंधीनके गंध५खुल्लैं
कहों थंभ६संबंद्ध[20] तुल्लैं तराजू२८, कहों हेम हिंडोल वंधे दुरवाजू२९
कहों निकसैं नीर कुल्या[21]१ प्रणाली[22]२।३०, कहों स्वच्छ सोहैं वनें

१कहीं पर सिकलीगर उत्तम शस्त्र मांजते हैं और साणको फेरनेवाला२अग्नि कणों को धारण करता है ३ कहीं पर तूनगर कटेहुए वस्त्रों को जोड़ते हैं और कहीं पर ४ रूई से छाई हुई पींजण बजती है ॥ ७ ॥ कहीं पर ५ पारा ६ कांसी के ७ समूह चोड़े पड़े हुए हैं और कहीं पर ८ सीसा और कथीर के समूह को जोड़ते हैं, कहीं चितेरे ९ मकानों को रंगते हैं, कहीं पर भाट लोग जुदेही १० नवीन स्तुति पढते हैं ॥ ८ ॥ कहीं पर कितनी ही मालनियें ११ मालाओं के भेद करती हैं १२ कहीं रंगरेजों की पंक्ति वस्त्र रगती है १३कहीं पर धान्य के १४ गेहूँ के बडे ढेर लगे हुए हैं सो १५द्रोण और खारी नाम के तोलों से राशियों को नापते हैं [बत्तीस सेर का एक द्रोण और सौलह द्रोण की एक खारी होती है] ॥ ९ ॥ कहीं १६ तांबा १७ पीतल के समूह पड़े हैं और कहीं पर नगर में अनेक शिक्कों के रुपये फैलाये हुए हैं १८ कहीं पर सुनारों की पंक्ति सुवर्ण तोल रही है और कहीं गंधियों के १९समूह गंध खोल रहे हैं॥१०॥ कहीं पर थंभों से२०बंधीहुई तराजू से तोल रहे हैं और कहीं दोनों ओर सुवर्ण के झूले(हिंडलाट) बंधे हैं २१कहीं नहरों और २२नालियों से पानी बहता है

आलवालो३१ ॥ ११ ॥

कहोंके घटीजंत्र चल्लैं चठहैं३२,कहों नीतिकी प्रीतिधी भीतिनहैं३३
खलूंरी कहों खग्गके मग्ग सद्दैं३४, कहों तोंब२के राहमैं लाह
लद्दैं३५ ॥ १२ ॥

कहोंवान२संधानपंच्छीन पारैं३६,कहों भारि बंदूक४गुंजा उतारैं३७
पटेवाज के ढालतैं वारपेलैं३८, कहों मल्लविद्या बढे दावमेलैं३९ १३
कहों वालं१ हुल्लासकै रास रच्चैं४०, कहों भट्ट१ बुल्लैं४१ कहों न
ट२ नच्चैं४२ ॥

कहों खंजरी१ झज्झरी२ ढोल३ गज्जैं४३, कहों डिंडिमी४दुंदुभी५
चंग६ बज्जैं४४ ॥ १४ ॥

कहोंतंति७की पंतिपैं कोनलग्गैं४५,कहों वारनारीनचैं द्वारअग्गैं४६
कहोंसुद्धशृंगार१की धार चल्लैं४७,कहों हास२उल्लासआभाउभल्लैं४८
मचैं४९ क्कांपि कारुएय३ के उग्र४ मंडैं५०, कहों वीर५ आतंक ६
अक्खैं५१ अखंडैं ॥

बनैं५२ क्वापि बीभत्स७के चित्र८ बल्लैं५३, कहों सांत९मैं कांत

१कहीं पर थांवले बने हुए वृक्ष शोभा देते हैं ॥ ११ ॥ कहीं कितनी ही घरटियें चलती हैं और कहीं नीति की प्रीति से २ बुद्धिका भय नष्ट होता है अर्थात् नीति की चरचा होती है ३ कहीं पर अखाड़े में खड्ग के मार्ग साधते हैं और कहीं ४ माला फेरने के मार्ग में लाभ प्राप्त करते हैं ॥१२॥ कहीं पर बाणों का सन्धान करके ५ पक्षियों को गिराते हैं और कहीं बंदूक चलाकर ६ चिरमी उडाते हैं ॥ १३ ॥ कहीं पर ७बालक हर्ष करके ८ नाचते हैं ॥ १४ ॥ ९कहीं पर तांतके वाजों पर नजराफ[नकर्खा]लगती है और कहीं द्वार पर वेश्यायें नचती हैं कहीं पर शुद्ध शृंगार रसकी धार चलती है और कहीं प्रसन्नता से हास्य रसकी कांति बढती है ॥१५॥१०कहीं पर ११करुणारस मचता है और कहीं १२ रौद्ररस रचते हैं, कहीं पर वीर रस और कहीं पर पूर्ण १३भयानक रस उचार ते हैं, कहीं पर बीभत्स रस बनता है और कहीं १४ अद्भुत रस कहते हैं और कहीं पर१५सुन्दर निर्वेद है स्थायीभाव जिसका ऐसा शांत रस प्रकाशित करते हैं "निर्वेदस्थायिभावोस्ति शान्तोपि नवमो रसः" बहुधा आचार्य रस आठ

निर्वेद खुल्लैं५४ ॥ १६ ॥

कहाँ भारती१ सात्वतीरवृत्ति आनैं५५, कहाँ कौसिकी३ आरभ-
टी४ बखानैं५६ ॥

कहाँ नाटक५१ प्रक्रियाे६२ भाणा७३ कहैं५७,

ही मानते हैं तहां कोई कोई ऋषियों का मत है कि वैराग्य है स्थायीभाव जिसका ऐसा शान्त भी नवमा रस है ॥ १६ ॥ अब यहां भारती से लेकर भाणिका पर्यन्त नाटक वृत्तियें(नाटकोंके भेद)हैं जिनके लक्षण साहित्यदर्पण के मतानुसार लिखते हैं सो जिनको इनका विस्तार देखना होवै वे साहित्यदर्पण में देखैं १ जिसमें प्रायः संस्कृत के वचनों का व्यापार होवे और वह स्त्री के आश्रित नहीं किन्तु पुरुष के आश्रय होवै उसे भारती वृत्ति कहते हैं. जिसका सविस्तर वर्णन साहित्यदर्पण की २८५कारिका से देखो. १महानुभावता शौर्य, दान, शक्ति, दया और सरलता से पूर्ण, हर्ष सहित, अल्प शृंगारवाली, शोक रहित और आश्चर्य सहित होवे उसको सात्वती वृत्ति कहते हैं. जिसके अधिक भेद देखने की इच्छावाले ४१६ वीं कारिका से देखैं ३ नायिकाओं के भूषणों का मनोहर वर्णन जिसमें होवे उसको कौशिकी वृत्ति कहते हैं. जिसका पुरा वर्णन ४११ वीं कारिका से है. ४ माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध और घबराना आदि चेष्टाओं से युक्त, तथा वध और बन्धन आदि से उद्धत वृत्तिका नाम आरभटी है, इसके चार भेद हैं सो साहित्यदर्पण की४२०वीं कारिका से देखो. ५ जिसका वृत्तान्त प्रसिद्ध होवे, मुख आदि पांच संधियां होवैं, विलास और ऋद्धि आदि गुणवाला होवे, नानाप्रकारकी विभूतियों से युक्त होवै, सुखदुःख की उत्पत्ति से नानाप्रकारके रसों से परिपूर्ण होवे, इस में पांच से लेकर दस तक अंक होते हैं, प्रसिद्ध वंशवाला राजऋषि, धीर, उदार, प्रतापी, दिव्य, अथवा दिव्य गुणवान् नायक होता है अंगी रस एकही होता है [illegible] अथवा वीर रस प्रधान होता है, अन्य रस अंगभूत होते हैं, निर्वहण [illegible] संधियें, उद्धत रस होते हैं, चार मुख्य कर्म करनेवाले नट होते हैं [illegible] पुच्छ के अग्र के समान जिसकी रचना हो उसको नाटक कहते हैं ६ प्रक्रिया नामका कोई जुदा भेद नहीं है परंतु प्रकरण को प्रक्रिया माना है सो इसका लक्षण ५११ की कारिका में है कि वृत्तान्त लौकिक और कविकल्पित होवै, शृंगार अंगी, नायक ब्राह्मण अथवा बनियां होवै, जो धर्म अर्थ काम आदि सकाम साधन में परायण होवै उसको प्रकरण कहते हैं ७ जिस में धूर्त नायक का चरित्र होवै, धीच

प्रहासा४रूप डिंबा५रूप व्यायोग६ पहँ५८ ॥१७॥
समावादिकारात७ को कोपि सदें५९, कहों अंक८ वीथी९नसों

पांच में अनेक प्रकार की अवस्थायें बदलती रहें, एकही अंक होवे, निपुण और पण्डित विट एकही पात्र होवे, अनेक अनुभव किये हुए अथवा अन्यके अनुभव किये हुए पदार्थ को रंग भूमि में प्रकाशित करै, संबंध और उक्ति प्रत्युक्ति आकाश की ओर मुख करके करै, शौर्य और सौभाग्य के वर्णन से वीर और शृंगाररस को सूचित करै, इतिहासकल्पित होवे, मुख और निर्वहण नामक दो संधियां होवें और दशों लास्य[नृत्य]अंग होवें जिसको भाण कहते हैं. १ भाण के समान संधि, संधियों के अंग, लास्य के अंग, और अंक से जिस की रचना होवे, निंदनीय पुरुष का जिस में वृत्तांत होवे, और कविकल्पित होवे, जिसको प्रहास [प्रहसन] कहते हैं. इसका अधिक वर्णन देखना होवे तो ५३४ की कारिका से देखें. २ जिसमें माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, घबराना आदि चेष्टायें और सूर्य चन्द्र के ग्रहण विशेष कर होवैं, जिस में पुराण आदि से प्रसिद्ध इतिहास होवे, अंगी रौद्र रस होवै और अन्य रस अंग होवैं, चार अंक होवैं, विष्कम्भक और प्रवेशक न होवैं देवता गन्धर्व यक्ष राक्षस बडे सर्प भूत प्रेत पिशाच आदि उत्पन्न उद्धत सोलह नायक होवैं वृत्तियों में से कौशिकी नहीं होवै, संधियों में से विमर्ष संधि न होवे, हास्य शांत शृंगार रसों को छोडकर बाकी के छः रस उज्वल होवैं जिसका नाम डिम है ३ जिस में प्रसिद्ध इतिहास होवै, स्त्रीजन अल्प होवैं, गर्भ और विमर्ष संधि न होवै, बहुतसे मनुष्य होवैं, एक अंक होवै, युद्धका उदय स्त्री के निमित्त बिना होवै, कौशिकी वृत्ति नहीं होवै, प्रख्यात नायक होवै, वह राजऋषि, दिव्य व धीर उद्धत होवैं, हास्य शृंगार और शांत इन रसों को छोडकर अन्य रस अंगी होवैं, जिसको व्यायोग कहते हैं ॥ १७ ॥ ४ समव है आदि में जिस के और कार है अंत में जिसके ऐसे "समवकार" का लक्षण यह है कि देवता और दैत्यों के आश्रित प्रसिद्ध वृत्तान्त होना है, विमर्ष रहित सन्धियां होती हैं तीन अंक होते हैं उनमें से पहिले अंक में दो सन्धियां होती हैं और पिछले दो अंकों में एक एक सन्धि होती है. प्रसिद्ध देवता और दानव उदात्त बारह नायक होते हैं इसका सविस्तर लक्षण ५१५ की कारिका में देखो. ५कहीं पर ६ जिस में उत्सृष्टिक नाम अंक होवै प्रयोग करनेवाले मनुष्य सामान्य होवैं, करुणरस स्थायी होवैं, बहुत सी स्त्रियों का रुदन होवैं, प्रसिद्ध वृत्तान्त को कवि अपनी बुद्धि से बढावै, भाण के समान सन्धि वृत्तान्त और

नैर नहैं६० ॥
कहौं कोक ईहामृगैं१० अच्छ आनैं ६१, बढे पंक्ति१० संख्याहि एकैं बखानैं६२ ॥ १८ ॥
कहौं रूपकैं अंतलै यौं उपादी, बदैं अंग संख्या समाक्षेप वादी ॥ सुखे१ नाटिका२ भाणिका१८ अंतर२ मप्पी, थिरा पंक्ति१०ओ अष्ट ८ ए सर्व१८ थप्पी ॥ १९ ॥

अङ्क होवैं, हार जीत होवैं, वाणी से युद्ध होवै, और बहुत दुःखोत्पादक वचन होवै उसे अङ्क कहते हैं. जिस में एक अङ्क होवै, नायक चाहे सो कल्पनाकर लियाजावै, विविध प्रत्युक्ति का आश्रय लेकर आकाशभाषित के वचनों से अधिकतर शृंगार को और कुछ और रसोंको भी सूचित करै, मुख और निर्वहण ये दो सन्धियां होवैं, और समग्र पाँचों ही बीज आदि अर्थप्रकृतियोंका प्रयोग होवै, नगर को बांधते हैं अर्थात् ऊपर कही हुई वृत्तियों से नगर को बांधते हैं. १जिसमें मिश्रित वृत्तान्त होवै, चार अंक होवैं, मुख प्रति मुख और निर्वहण ये तीन सन्धियां होवैं, नायक और प्रतिनायक प्रसिद्ध और धीरोद्धत मनुष्य तथा दिव्य होवै परन्तु यह नियम नहीं कि नायक अमुक ही होवै और प्रतिनायक अमुक ही होवै, नायक प्रतिनायक के सिवाय दूसरा एक अनुचित कार्य करने वाला होवै, यह इच्छा रहित दिव्य स्त्री को हरण करने आदिसे चाहता है इस कारण इसका शृंगाराभासभी कुछ कुछ दिखायाजावै, इत्यादि विशेष विस्तार ६१८ की कारिका में देखो. २पंक्ति नाम का कोई भिन्न भेद नहीं मिलता परन्तु आगे के २०के छंद से रूपक को ही पंक्ति मानना लिखा है ॥ १८ ॥ इन सबको रूपक (दृश्यकाव्य) कहते हैं जिनमें ३ समाक्षेपवादी, मुख, नाटिका, भाणिका को अन्त में लेकर उर्लाके अंग कहते हैं. इनमें मुख का लक्षण यह है, जिस में नानाप्रकार के अर्थ और रसकी उत्पत्ति होवै, बीजकी उत्पत्ति होवै, प्रारम्भ होवै. नाटिका का लक्षण है कि वृत्तांत कल्पित होवै, पात्र प्रायः स्त्रियां होवै, चार अंक होवैं, नायक प्रसिद्ध धीरललित राजा होवै, नायिका अन्तःपुर से संबंध रखनेवाली, संगीत में तत्पर, नवीन अनुरागवाली, राजवंश से उत्पन्न कन्या होवै. इसका विशेष वृत्त ५३९ की कारिका में देखो. भाणिका का यह लक्षण है कि जिसमें उत्तम सामग्री होवै मुख और निर्वहण संधि होवै, कौशिकी और भारती वृत्ति होवै, एक अंक होवै, उदात्त नायिका होवै, नायक हीन होवै, इसके उपन्यास आदि सात अंग हैं ॥ १९ ॥ साहित्य में दश प्रकार के रूपक हैं

लिखी पंक्ति१०हाँ रूपकाख्या प्रमानी, जथा अष्ठ भू१८ ते उपा-
व्याहुजानी ॥

कहीं स्तंभ१ प्रस्वेद२ रोमांच३ कत्थैं६३, स्वरामोट४ लै६४ अश्रु५
वैवर्ण्य६ सत्थैं ॥ २० ॥

कहीं कंप७ केठां प्रलै८भाव भासैं६५, कहीं पीठमर्द१ प्रहासी२
विलासैं६६ ॥

सजैं६७कापि संगीत१कालानुसारी,भनेबत्तिके जातके भेदभारी२१

मचे ह्हाँ श्रुती बेद बाईस२२मोहैं६८, सै१मैं चो४ मे४मैं चो४ पे५मैं,चो
४हिं सोहैं६९ ॥

गिनै७० रे२ रु धे६ त्रि३ त्रि३ द्वै२ ग३ नी७ मैं, सुलै१तीव्रिका१
छोहिनी२२ अंत२२ श्रीमैं ॥ २२ ॥

लसैं७१ पंच५ही जाति दीप्ता१दि लैकैं, छटैं७२ जे जथा भाग सों
राग छैकैं ॥

मचे मोद त्रि३ ग्याम खड्जा१दि मंडैं७३, मिली७४ मूर्छना इक्कबीसी
२१ अखंडैं ॥ २३ ॥

क्रिया१ गीत्य२ लंकार३ औ गामका४ऽऽदी, वदै७५ रम्यता त्रुट्ट
के पुष्ट वादी ॥

कहीं सैंधवी१ कंम्म आलाप आनैं७६, सुखारी२ कहीं गौड़३

क्रियागया है सो यहां पर ग्रन्थकर्ता ने इसी रूपक को पंक्ति लिखा है १ स्वर भंग 'यहां पर स्तम्भ आदि सब हाव हैं जिनके अर्थ प्रसिद्ध हैं इस कारण इन की भिन्न भिन्न टीका लिखना अनावश्यक है'॥२०॥२कहीं पर समय के अनुसार संगीत सजते हैं ॥ २१ ॥ ३ षड्ज में चार ४ मध्यम में चार ५ पंचम में चार ६ ऋषभ में तीन ७धैवत में तीन, गांधार में और निषाद में दो दो श्रुतियां हैं सो तीव्रा को आदि लेकर छोहनी के अन्त तक शोभा देती हैं ॥ २२ ॥ दीप्ति आदि लेकर राग की पांचों ही जातियां शोभा देती हैं, षड्ज को आदि देकर तीनों ग्राम रचते हैं और इक्कीस ही मूर्छना त्रुटि रहित मिली हुई हैं ॥ २३ ॥ ८ गमक आदि ९ सुन्दरता से युक्त हैं १० यहांसे लेकर छब्बीस के छंद तक

सालंग४ मानैं७७ ॥ २४ ॥

कहों राग घंटा५ रमा६ टक्क७ कहैं७८, पहाडी८ बिहंगा९ख्य सा
मंत१० पहैं७९ ॥

कहों कोकिलैं ११ कोकिलालाप कूजैं८०, प्रगाता कहों कर्णाटी
१२ मारु१३ पूजैं८१॥२५॥

कहौं नाट१४ कल्यान१५ गौरी१६ कुरंगी१७, स सौदामिनी १८
कौमुदी१९ चक्रि२० संगी८२ ॥

बराली२१ कहों एल२२ पट्टार२३ऽऽदि बंधैं८३, सबैठाँ ग्रह१ न्यास २
अंसा३दि संधैं८४ ॥ २६ ॥

अहो एकसो अग्ग बावीस१२२ ऐसैं, पुरी मुख्य रागावली प्रान
पैसैं८५ ॥

निबद्धा१ निबद्धा१ऽऽख्य द्वै भेद न्यारे८६, अनुमासलैं८७ आदि१
मध्यान्त३ वारे ॥२७॥

गहैं८८ क्वापि व्हाँ पंक्ति१० संख्या गुणा१०ऽऽली, सजैं ८९ क्वापि
त्रेता३ प्रबंधा३ऽऽख्य साली ॥

कहों ताल चंचत्पुटैं१ लै क्रमावैं९०, कहों चाचसौं लै पुटैं२ लीन
लावैं९१ ॥ २८ ॥

कहौं षट् पितापुत्र३ उद्घट्ट४ कहैं९२, बनैं मार्ग१ तालाख्य यों
सर्ब बहैं९३ ॥

कहौंतालदेशीय२लैमैंक्रमावैं९४,लखोजेजथासंभवीछंदलावैं९५।२९।

कहौंतालश्रीरंग१लैसैंनिकासैं९६,भलेमंठिके२चच्चरी३मंठभासैं९७

रागनियों के नाम हैं ॥ २४ ॥ १ कोयल की अलाप से शब्द करती है ॥२५॥ ॥ २६ ॥ २ रागों की पंक्ति में ॥ २७ ॥ ३ चञ्चुपुट से लेकर इकतीस के छंद पर्यन्त तालों के नाम हैं जिनके लक्षणों का संगीतरत्नाकर के तालाध्याय में सविस्तर वर्णन है सो वहां देखो. यहां इनकी अत्यन्त विस्तारवाली व्याख्या नहीं की जासकती ॥ २८ ॥ २९ ॥

चढ्यो गजढो अन हारि बिचारि, रचो सुत आजम बानन रारि ॥
सु संभर हेति सबै वरसाय, दयो अरि निब्बल पारि दबाय॥५५॥
हुती हय७लक्ख चमू हमगीर, भयो अवसान न इक्कहु भीर ॥
रच्यो जिहिँ बिग्रह भुग्गन राज, बचैं वह तित्तिरि क्यौं लहि बाज॥५६॥
फितूर दफै करि मंडल फेरि, घनी निज सेन लयो गज घेरि ॥
कियो तउ बानन जंग कराल, कहाँलग जोर करैं लहि काल ॥५७॥
अधर्म न होत सहायक अंत, लगे बुध आयुध मर्म मिलंत ॥
भयो सुत आजम मोहि बिमान, चल्यो समतंगहि लै चहुवान५८

(दोहा)

घटिय इक्क खिल रवि रहत, घल्लिय संभर घत्त ॥
आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥
इभ समेत लै तिहिँ अधिप, उमँडि मुकामन आय ॥
साहबहादुर ढिग सजव, पत्र विजय पठवाय ॥ ६० ॥
सरिता इक ढिग सजतहो, सफरन बडिस सिकार ॥
आयो डेरन विजय सुनि, कहत सुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आजममधनानन्तरमनेकार्यराजाजमसेनापृथ-

---

चढ्योइति ॥ सु सो (दीदारबख्श). संभर बुधसिंहने. हेति शस्त्र ॥ ५५ ॥ हुती इति ॥ हय सात ७ लाख. अवसान अंत समय. भीर सहाय. भुग्गन भोगिबे कों ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर यावनी. झूठा गर्व. लुप्तद्वितीयाक. दफै यावनी नष्ट. तउ तथापि. काल मृत्यु ताहि ॥ ५७ ॥ अधर्मइति ॥ अंत अवसानतासैं. मोहि मूर्छित व्हैकैं. बिमान बिना मान. समतंग सहित मातंग वाको च हती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष. लोके बाकी. घत्त घात इभपालसह महावत सहित ॥ ५९ ॥ इभसमेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह). सजव वेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकों. बडिस वनसी लोके कालिया ताकरिकैं ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

कहौं मल्लिकामोद५में मोद कहैं९८, पगे पूर्या६ कंकाल७ त्यौं मल्ल८ पट्टैं९९ ॥ ३० ॥

कहौं झुम्मरी९ हंस१० झंपा११ क्रमावैं१००, सु लै स्कंद१२ त्यौं सिंह१३ घत्ता१४ समावैं१०१ ॥

तथा चित्र१५ कुंता१६रुप१०२ लै एकताली१७, मचैं१०३ ब्रह्म १८ ज्यौं रुद्र१९ त्यौं विंदुमाली२० ॥ ३१ ॥

कहौं इक्क१ लै२सर्वही ताल सद्दैं१०४, बिधा व्याहके राहके वाह१ लद्दैं१०५ ॥

ठनैं देव आगार घंटा१ठनंकैं१०६, कहौं झल्लरी२ *कंबु३झंझा४ झनंकैं१०७ ॥ ३२ ॥

कहौंधामऔरामआमोद१खुल्लैं१०८,कहौंदारुकेलोलहिंडोल झुल्लैं१०९

कहौं द्वार१ बाजार२ हट्टा३ कँवारी४, सुढारी सजी११०चित्रकारी १११ सँवारी ॥ ३३ ॥

कहौं कुट्टिमागार५ भंडार६ भासैं११२, नये ओक७ बोसोक ८ के सोक नासैं११३ ॥

कहौं संधिला९ मग्ग १० शृंगाट११सोहैं११४, कहौं चत्वरा१२ऽऽली मिली चित्त मोहैं११५ ॥ ३४ ॥

कहौं गोख१३ जाली १४ लगे ११६ तोखकारी, कहौं ११७ सौधं १५ संधानिका१६ चित्रसारी१७ ॥

कहौं सुभ्र११८संद्दानिनी१८हस्तिसाला१९.कहौं मंदुरा२०वीतिमाला

॥३०॥३१॥*शंख ॥३२॥कहीं पर घरोंमें और १ बागों में सुगंधि खोलते हैं "दूर तक जानेवाली सुगंधि का नाम आमोद है" २काष्टके चपल हिंडोले ॥३३॥कहीं पर ३छोटे घर और कहीं पर भंडार शोभा देते हैं ४कितने ही नवीन घर और ५शयन घर शोकका नाश करते हैं ६ कहीं गुप्त मार्ग(सुरंग)और कहीं ७चौहटे शोभा देते हैं ८चबूतरोंकी मिली हुई पंक्तियां मनको मोहती हैं ॥३४॥९संतोष कारी १०राज सदन (महल) ११मदिरा गृह १२ गौशाला १३हयशाला में घोड़ों

विसाला११९ ॥ ३५ ॥
कहों भित्ति२१लै किति बेदी२२बिलासैं१२०, कहों अंगना अङ्ग-
ना२३भा प्रकासैं१२१॥
कहों पुण्यप्रासाद २४ खुल्लैं १२२ पताका२५, रजैं १२३ हेमके
कुंभ२६ज्यों चंद राका ॥ ३६ ॥
कहों राजती देहली२७ गेह पक्की१२४, कहों अर्गला २८ ताल २९
खासा१२५ खडक्की३० ॥
सुधामैं सने धामके थंभ३१ धारैं१२६, बने तीव्र ३२ गोपांनसी ३३
भा बिथारैं१२७ ॥ ३७ ॥
कहों१२८ दंत३४ प्रग्रीव३५ अट्टी३६ अलिंदी३७, मिधौं सर्वतोभद्र
३८ लौकैं बिछिंदी१२९ ॥
भनैं सिल्पि सोभा१३० कहों सालभंजी३९, कहों अंजली कारि-
का४०रंगरंजी१३१ ॥३८॥

की विशाल पंक्तियां हैं ॥ ३५ ॥ कहीं पर दीवारें और १ चबूतरियां बड़ी कीर्ति लेकर प्रकाश करती हैं "विलासः प्रकाशे" इति शब्दार्थचिन्तामणिः॥ कहीं पर घर के आंगन (चौक) में २ स्त्रियां कान्ति प्रकाश करती हैं ३ सुन्दर महलों पर ध्वजायें खुली हैं और जैसे शरद ५ पूर्णिमासी में चंद्रमा शोभा देवै तैसे श्वेत महलों पर ४ सुवर्ण के कलश शोभा देते हैं "शरद की पूर्णिमा की रात्रि में जल बिंब के कारण चंद्रमा का रंग लाल होता है" ॥ ३६ ॥ कहीं घर की पक्की देहलियां ६ शोभा देती हैं तथा चांदी की पक्की देहलियां हैं ७ आगल (भागल) ताले और उत्तम खिड़कियां हैं ८ चूना में भीगे हुए ९ तीर "तीव्र नाम तीर का है और देश भाषा में सीधे लंबे काष्टको छेतीर कहते हैं इसकारण यह शब्द वलींडेके अर्थमें प्रतीत होता है" १० मियालें(छादनाधार वक्र काष्ट) शोभा देती हैं ॥ ३७ ॥ ११ खूंटियां १२ झरोखे १३ महलों के ऊपर की अटारियां १४ द्वार के बाहर का चौक १६ चौमुखा (चौपाड़) १५ नामवाले स्थान से लेकर १७ अभिलाषा युक्त परमेश्वर के मंदिर पर्यन्त १८ हाथी दांत आदि की रची हुई पुतलियां १९रंग से रंगी हुई लज्जा युक्त पुतलियां ॥३८॥

रजे१३२कापि सोपान४१ श्रेढी४२ निसैंनी४३, नटैं१३३ नट्टसाला
·४४ कहौं कंजनैंनी ॥

कहौं कैंशिका४५।१ थूल४६।२ उल्लोच४७।३कच्छे१३४, कहौं
पीठ४८।४पल्लपंक४९।५आस्तीर्ण५०।६अच्छे१३५॥३९॥

कहौंविप्रमंडैं१३६कथावेद१वादी,कृतीकापिअद्वैत२अप्पैं१३७अनादी
कहौं सत्थ साहित्य३के अंत्थ कहैं१३८, कहौं न्याय४की कोटिपैं
चाय चहैं१३९॥ ४० ॥

दिपैं१४० द्यूतविद्या५ कहौं अक्षदेवी, कहौं मोहमाया६ करैं १४१
सौठ्यसेवी ॥

कहौं १४२ वापिका१ कुंड२ कासार ३ कूपी४, रुचे नीर नारी भरैं
१४३ आनुरूपी ॥ ४१ ॥

धरे१४४ गैलौ१ कहौं घीरैं२ त्यों गंधधूली३, फबैं१४५ केतकी ४।१
मल्लिका५।२ कापि फूली ॥

कहौं धूप धूमावली६।३जाल कहैं१४६, चहे सेवती७।४ तंब रोलंब
चहैं१४७ ॥ ४२ ॥

कहौं ब्रह्मचारी१ क्रमैं१४८रीति रागी, कहौं दान अप्पैं १४९ गृही

१पत्थरोंके रचेहुए जीने (पगथिये) २ काष्टके रचेहुए जीने और नीसरनियां, ये सब पदार्थ शिल्पियों (कारीगरों) की शोभा बताते हैं और कहीं नृत्य शालाओं में ३ कमलनयनी स्त्रियां नृत्य करती हैं ४ कहीं पर छोटे डेरों ५ बडे डेरों और ६ चंदवों (सामियानों) के समूह हैं ७ सिंहासन तथा बाजोट, ढोलिये (पिलंग) और उत्तम ८ बिछोने हैं ॥ ३९ ॥ ९ कहीं पर पण्डित लोग वेदांत के अनादि अद्वैत मत का उपदेश करते हैं. १० साहित्य का अर्थ निकालते हैं ॥ ४० ॥ कहीं पर द्यूत करनेवाले द्यूत करते हैं ११ छली मनुष्य अविद्या की माया फैलाते हैं १२ तालावों में १३ अपने अपने सदृश पानी भरते हैं ॥ ४१ ॥ कहीं १४ कपूर १५ कुंकुम १६ कस्तूरी रक्खीहुई है १७ बेला १८ सेवती के गुच्छों पर भ्रमर चढते हैं ॥ ४२ ॥ १९ मुक्ति में प्रीति

पंच ५ पागी ॥
जुरे अग्निहोत्री जुहूअग्नि अंचैं१५०, सुधी के कहीं नव्य धन्याष्टि संचैं१५१ ॥ ४३ ॥
कहीं आल१ जंगाल२ सिंदूर३ केरे१५२, कहीं हेम१ हीरे २ सके रासि हेरे१५३ ॥
कहा नील३ गारुत्मती ४ चैं प्रकासैं १५४, भले पद्मरागा५रूप मुक्ता६रूप भासैं१५५ ॥ ४४ ॥
प्रवाली१।७ रसोनी२।८ कहीं रंग पहैं१५६, कहीं पुष्पवंता२ऽऽदिकां तां२ तउ३।९।४।१०कहैं१५७ ॥
कहीं १५८ तैल १ छीरा २ दि लै स्फाटिका ५।११।६।१२ऽऽरूपाः सगोमेद७।१३ इत्यादि केही समाऽऽख्या१५९ ॥४५॥
सुहाये कहीं सिठ्ठ बानिज्य साजैं१६०, रचे चे कहीं हुंन्न१ निष्कौ२ दि राजैं१६१ ॥
कहीं लै कैला१ नीवि २ बित्तैं बढावैं १६२, प्रभा क्रेय१ क्रेय्या२ऽऽ वली क्वापि पावैं१६३ ॥४६॥
कहीं बोहरे१ क्वापि छोरैं१६४ धुरेरकौं, कहीं केऽन रक्खैं १६५ स्वधौं बाहुरेरकौं ॥

करनेवाले ब्रह्मचारी फिरते हैं १ होम की अग्नि का पूजन करते हैं २ कितने ही श्रेष्ठ बुद्धिवाले ३ नवीन विलक्षण यज्ञ का संचय करते हैं ॥ ४३ ॥ ४ पन्ना १५ माणक नामक ॥ ४४ ॥ मूँगा और ६ लहसनियां ७ पुखराज आदि सुन्दर ८ इत्यादि कितने ही नामवाले रत्नों से ॥ ४५ ॥ शोभायमान ९ सेठ वणज करते हैं १०कहीं पर संचय कियेहुए मोहर और ११ रुपये "निष्कः व्यवहाररूपके" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः॥ आदि शोभा देते हैं, कहीं पर १२ ब्याज (सूद) लेकर १३ मूलधन को बढाते हैं और कहीं पर मोल लेने और १४ बेचने की वस्तुओं की पंक्तियां शोभा पाती हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही वहोरे धुरको १५सूद छोडते हैं और कहीं पर कितनेही वहोरे १६अपनी ओर अधिक

परार्द्ध१०००००००००००००००००ऽऽदिके गराय गोपे प्रकासैं१६६,
कहौं श्रेढि१ त्रैराशिकौ२ भंति भासैं१६७ ॥ ४७ ॥
कहौं चैल चो४ भेद चैं चैलकेता, जथा हट्टसोभा रचैं१६८लाभ जेता
उर्म१ पट्ट२ कार्पास३ रोमा४दि वारे, वनैं यों चतुर्द्धा४ कहौं के
बिथारे १६९ ॥ ४८ ॥
लसैं१७० आम्र१ मोचा २ कहौं द्वार लग्गे, प्रभा दारिमी३ निंबु४
नारंग५ पग्गे१७१ ॥
कहौं लांगली ६ पूर्ग ७ एंला८ निकाईं १७२, छजै १७३ छत्रिका
गोस्तनी९ लौंग१० छाई ॥ ४९ ॥
झरैं१७४केकहौंसौरभीबिंदु११झीनैं,भरैं१७५केकहौंदूरदोंआमोदभीनैं
दुरघाँ [13]कूंचपै द्रव्य१ यों के उतारैं१७६, कहौं गोखतैं पुष्प२ के
डीनें डारैं१७७ ॥ ५० ॥
रहे रीझि वारे१७८ कहौं लोन१ राई२, कहौं विक्खिके बिंद बंटैं
१७९ वधाई ॥
लसैं१८० मग्ग गेरे दही१ दुग्ध२ [15]लाजा३, रिझावैं१८१ सिंचे सौर
भी वारि४ राजा ॥ ५१ ॥

आये हुए धनको पीछा देते हैं १ परार्ध आदि छिपी हुई गिनती का प्रकाश करते हैं २ लीलावती में कहा हुआ गणित विशेष ॥ ४७ ॥ ३ वस्त्र मोल लेने वाले चार भांति के वस्त्रों का संचय करके दुकानों की शोभा बढाते हैं और उनसे होनेवाले जितने लाभ हैं वे रचते हैं, वे चार प्रकार के वस्त्र ४ सण ५ रेसम, सूत और ऊनके बनते हैं जिनको फैलायेहुए हैं ॥ ४८ ॥ कहीं द्वार पर लगेहुए सुन्दर ६ केल ७ नारियल ८ सुपारी ९ इलायची १० दाख छाये हुए शोभा देते हैं ॥ ४९ ॥ कहीं पर सुगंधिवाले बारीक बारीक बुंद गिरते हैं और कहीं दूर जानेवाली १२ सुगन्धि के भीगे हुए ११ चूर्ण भरते हैं सो दोनों ओर से इसप्रकार के द्रव्य १३ दुल्हह पर डालते हैं १४ फूलों के पुड़े डालते हैं ॥ ५० ॥ १५ पके हुए चावल "दही, दूध और पके हुए चावलों का डालना मंगलीक मानते हैं" और सुगंधि के जल से सींचकर राजा को प्रसन्न

बिरुयो भूप बुंदीपुरी इक्खि ऐसी, कहीजाइ जोंलाइ सामस्त्य कैसी
बिधा बैदिकी१ लौकिकी२योग्य लद्दी, सबै भूप जे प्रीतिकी रीति
सद्दी ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

परिकर द्विरंदपतोलितैं, सबिधि भिन्न हुव सर्ब ॥
जंपति२ अंचलपर्ब जुत, पेठे सद्दत पर्व ॥ ५३ ॥
उपयमं देव१न अर्चि इम, वलि गुरु२जन पय वंदि ॥
अंचल छुटि निज निज अयन, आये उभय२ अनंदि ॥५४॥
निज परिकर सब हित निरत, वलि प्रासाद बुलाइ ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन, खिन दिय सिक्खखुलाइ ५५
करि भोजन नर्तन क्रिया, लखि कछुकाल ललाम ॥
इम अवसर सद्धिय सयन, राजराज प्रभु राम२०१४ ॥५६॥
जग्गि समय सूचित जथा, नित्य१ असन२ करि नाह ॥
बुध१कवि२भट३सचिव४नबिलासि, लिय संसद रसलाह५७

॥ षट्पात् ॥

सुनि१लखि२संसद सुपहु काव्य१ नर्तन२ आदिक क्रम ॥
रायं बिबिध दै रीझ रायं बढि चाय मनोरम ॥
सभा अनंतर सबन कानि लोकन व्यवहितं करि ॥

करते हैं ॥ ५१ ॥ १ उस सब पुरी का वर्णन कैसे किया जासकता है "यहां लेखक दोष से सामर्थ्य के स्थान में सामस्त्य होजाना पाया जाता है जिसका अर्थ है कि उस पुरी का वर्णन किस शक्ति से कहा जावै अर्थात् इस के वर्णन की शक्ति नहीं है" ॥ ५२ ॥ परगह के लोग २ हाथीपोल से जुदे हुए ३ पति पत्नी दोनों ४ वस्त्र के गठजोड़े सहित ५ समय साधकर भीतर प्रवेश हुए ॥ ५३ ॥ ६ व्याह के देवताओं का पूजन करके ॥ ५४ ॥ फिर हित में ७ नियुक्त होकर अपनी परगह के सब लोगों को महल में बुलाकर ८पंडित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ९ सभा के रस का लाभ लिया ॥ ५७ ॥ १० धन ११ राजा को सुन्दर उत्साह बढ़कर ५ अदृश (संकोच) वाले लोगों को दूर करके

सकलवयस्यन सहित सकल गुन पठन समुद्धरि ॥
वलि इम प्रदोस संध्या३विरचि रत्ति कछुक २वयस्य रहि॥
लहि असन जाइ जननी निलयँ जोग्यसयन विलसैंजुग२हि
इत धात्रेय अमात्य कृष्णाराम सु बढते क्रम ॥
रचि सिवनाथ१रु अमृतराम२२ सम्मद संभव सम ॥
पंतिन सह आपानं१असन२ विहरन३ आखेट४न ॥
सर१उपवन२ प्रासाद३ सुळप दिखवन फ्रुकाइ मन ॥
सब स्वीय अधिप परिकर सहित प्राघुनँ गन इम घस्र प्रति
विलसन बढाइ रक्खे विविध कति प्रासन करि लाड कति॥५९॥
रूपराम१ सरदार२ विप्र१ ऊरुज२ अमात्य विय२ ॥
स्वंसुता दायज सत्थ देय पँहु मान संग दिय ॥
तिनहिं हुल्लि धात्रेय सुमति सिवनाथ१अमृत२सह ॥
किय पट्टा लिपि कीलित महारानिय हित अति मह ॥
पुर हिंडल्ली१नवगाम२ पुनि इत पुर वच्छोला३दि इत ॥
कर अयुत पंच५००००सह ग्राम कतिसचिवनतिन्हअप्पियसहित६०
उन मंडिय तह अमल पट्ट रानिय१ सासन पगि ॥
इत प्राघुनँ गन अखिल लोक मँरव सम्मद लगि ॥
प्रभु भट१ सचिव२न प्रथित लाड अतिसीम लडाये ॥
कतिक पँच्छ इम कह्हि प्रीति मरुपुर पहुँचाये ॥
इत भूप सकल गुन सभ्य सन उन्नति लहि प्रत्यँह अधिक

१समान अवस्थावालों सहित२अपनी समान अवस्थावाले३माता के स्थान में ॥५८॥४धायभाई ५हर्ष उत्पन्न होने से ६पानगोष्टी (मतपान)७पाहुनों के समूह को ८ प्रतिदिन ॥ ५९ ॥ ९ वैश्य १० अपनी पुत्री के साथ ११राजा मानसिंह ने दहेज में भेजे थे १२पट्टा लिखकर विदित किया ॥६०॥ सब १३पाहुने लोग १४ मारवाड़ियों ने १५ कितने ही पक्ष ऐसे निकालकर १६ जोधपुर में १७ प्रतिदिन

बुधपन वयस्य[1] गनतँहु बढि सब पटु हुव मति साहसिक ६१

करन अग्घ बुध३ कविन२ बहुत हित पटु२न विवेचन ॥
स्वगुन सिद्ध भट४ सचिव५ सह्हि हित रस अभिसेचन ॥
माधव[2] इम गत महत सुक्र[3] आगत समाज सह ॥
उचित समय उपहार[4] विभव विलसत दिन दुल्लह ॥
प्रति जन वदान्य रीझत मगुन सुंष्ट सगुन मन घन मुदित[5] ॥
इम अस्थिपाल अन्वय[6] अरुन उँदय अद्रि बुंदिय[7] उदित ६२

घनाक्षरी॥ सेखाउत्त स्यामसिंह जुंझुन नगर नाह,
कूरम कुहक्क[8] छुरुप भ्रात१ रु भतीज मारि ॥
आप पाइ पत्तन वसाऊ गल अंगमि रु,
धिग्गु[9] चित धीठ भयो धूतन छुरहिँ धारि ॥
ही गुलाबकुमरि२०२१२ तनूजा तास ज्ञात गुन[10],
सगपन ताको कर्‌यो प्रभुसौं[11] हित पसारि ॥
जोधपुर जाइ वर विदालै सिधारे सुनि,
बुल्ले गृह व्याहिबे बडे जब सेंह निथारि ॥ ६३ ॥
तब सुचि[12]४ सुक्र६ मध्य२ रिक्ता९ पैं सुमह तानि,
व्याह पुंब्ब[13]१ बरने सबै बिधि सधाइ सिवँ[14] ॥
केदारेस थान ढिग श्रीजित रचित कैम्ब[15],
आव्हय सिकार अट्ट[16]१ निवासि सुरेसँ[17] इव ॥

---

१ समान अवस्थावालों से ॥ ६१ ॥ २ वैशाख मास गया ३ ज्येष्ठ मास आते ही ४ सामग्री ५ अपने गुणों से सब के मन चुराकर ६ अस्थिपाल के कुल का सूर्य ७ बुंदी रूपी उदयाचल पर उदय हुआ ॥ ६२ ॥ ८ ठग कछवा हे ने ९ धिक्कार योग्य १० गुणों को जाननेवाली उसकी पुत्री का ११ उत्सव बढाकर ॥ ६३ ॥ १२ आषाढ सुदि १३ पहिले विवाह में वर्णन किये हुए सब १४ मांगलिक कार्य १५ सुन्दर १६ जिसका सिकारबुरज नाम है वहां निवास किया १७ इन्द्रकी भांति

कज्ज विधि साधि प्रात बहुरि विधेय कारि,
*चक्र लै चलत देखिबेकों जुरे देव †दिव ॥
थैलिन खुलाइ ताही थानसों ‡प्रसुन छुट्टि,
सिंचे कवि कृष्णाराम सुमति महासचिव ॥ ६४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ रामसिंह चरित्रे विहितयोधपुरविवाहरामसिंहबुन्दीपुरप्रवेशसमयबुन्दीवर्णन सेखावाटीविसाऊविवाहार्थप्रयाणवर्णनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ आर्या ॥

विधि सब साद्धि विवेकी, किय सिव केदार पात दल पहिलो१ ॥
कविजन घन१ जनु केकी२, लसि सम्मदं रीझ लैन लगे ॥ १ ॥

बेतालः ॥ केदार ईस निकेत प्रभु कहँ सब विधेय सधाइ ॥
धात्रेय कृष्ण अमात्य धुरधर मह अमेय मचाइ॥
पौगंड१ जात किसोर२ प्रकटत अर्ह सब उपहार॥
वय तुल्लि तुल्लि दिखाइ बहु विधि देय दैन उदार ॥ २ ॥

---

* सेना लेकर चलते समय † आकाश में ‡ धन पांटकर॥६४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में रामसिंह के जोधपुर विवाह करके पीछे बुंदी में प्रवेश होते समय बुन्दी के वर्णन का और सेखावाटी में बसाऊ विवाह करने के अर्थ प्रयाण करने के वर्णन का सातवां ७मयूख समाप्त हुआ॥७॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ६९ मयूख हुए ॥

१ सेना का पहला पड़ाव किया २ मेघ से मयूरों के ३समान कविलोग हर्ष युक्त होकर रीझ लेने लगे ॥१॥ ४केदारेश्वर नामक शिव के स्थान में ५अनाप उत्सवकरके, पौगण्ड अवस्था (पांच वर्ष से लेकर दश वर्षकी अवस्था का नाम पौगण्डहै)जाकर६किशोर अवस्था(दश वर्षसे लेकर सौलह वर्ष पर्यन्तकी अव. स्थाका नाम किशोरहै)के प्रकटहोने पर७पूजनीय तथा योग्य सामग्रीकरके८दान

बहुरीति इम वसु बिंद बुद्धिन पात्र जन मन पूरि ॥
रचि भो द्वितीय२बिबाह बिरचन लज्जहुव सब सूरि ॥
बुध बिप्र१ सूत२ रु मागध३न ब्रैज सुमति वंदि४न सत्थ ॥
इह दे अनेक निधान उल्लसि इक इक्कहिं अत्थ ॥ ३ ॥
निज रठ्ठ जोलग संक्रमैं नृप चाहि तोलग चित्र ॥
पिक्खाइ भाइ अनेक पाँटव मान चाटव मित्त ॥
बुंदीपुरी सन त्याग बंटत संक्रम्यों पहु सूरि ॥
मग लैनहारन तर्कुकन मचि भीर जस रैव भूरि ॥ ४ ॥
जसलेत देत अनेक बिध वसु संक्रमें तिम जन्य ॥
इन१ भिदा ईन२ छत्र१ चामर२ अंकै अंकन अन्य ॥
सब वस्त्र१बाहन२भूखना३दिन और रीति समान ॥
करते चले प्रभु व्याह कौतुक कित्ति कानन कान ॥ ५ ॥
जे सूत१ मागध२ बंदि३ लै वैसु१ सिक्खर२ गेहन जात ॥
उनतैं अतीव प्रसार ओरन अँध्वमैं अधिकात ॥
नमि सेस जाचक जति बाचक पंथ होत निहाल ॥
प्रतिपाँत यौं वैसुव्रात पूरन संक्रम्यों छितिपाल ॥ ६ ॥
मैय१ के चले हय२ के चले गय३ के चले बय मत्त ॥
पहिलैं कहे मैय१ अंग उन्नत जंगली जयपत्त ॥

॥ २ ॥ १ पण्डित २ चारण ३ मगुधा भाट ५ स्तुति करनेवाले भाटों सहित ४ चले ॥ ३ ॥ ६ अपने राष्ट्र (राज्य) में चले तहां तक ७ चतुराई से ८ मान और मित्रता के प्रिय वचन बोलकर, याचकों की भीड़ होकर यश का बहुत ९ शब्द हुआ ॥ ४ ॥ इन बरातवालों की भिन्नता दिखाने के कारण १० राजा छत्र, चमरों के ११ चिन्हों से चिन्हित रहा ॥ ५ ॥ १२ धन लेकर १३ मार्ग में १४ मुकाम मुकाम प्रति १५ धन का समूह देता हुआ ॥ ६ ॥ अवस्था में मस्त १७ कितने ही १६ऊंट, घोड़े और हाथी चले जिनमें प्रथम कहेहुए ऊंचे शरीरवाले जंगल (बीकानेर के) देशके पैदाहुए जय को प्राप्त करानेवाले १८ऊंट

ग्भवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरणापलायन २ दतियाभूपदलपति सिंहमरण ३ आजमात्मजदीदारबख्समूर्छितदशाग्रहणं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५३ ॥

(दोहा)

आजम दल अवलग बज्यो, पृथक लोभगति पाय ॥
अब हरिटारि सब उत्तरे, आलम दल बिच आय ॥ १ ॥

(षट्पात्)

चरमाचल रवि चढत चित्त प्रमुदित निसचारन ॥
आजम सुत तजि मोह बहुरि बुल्ल्यो थित वारन ॥
को जिरयो दल कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥
जिरयो आलमसाह कटक वाको तुम कीलित ॥
दीदारबख्स यह सुनि दुचित होदासौं सिर हनिमरिय ॥
अति लोह छकित इभपालहू परि प्रमत्त असु परिहरिय॥२॥

[दोहा]

जिहिँ उप्पर आजम सुवन, मरिग फोरि उतमंग ॥
वारन वह सोनित वमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

सेना से जुदा होना १ नरवर के राजा गजसिंह कछवाहे का युद्ध से भागना २ दतिया के राजा दलपतिसिंह बुंदेले का मारा जाना ३ आजम के पुत्र दीदारबख्स का मूर्छित दशा में पकड़ेजाने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ त्रेपन २५३ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अवलग अद्यावधि. पृथक् जुदो ॥ १ ॥ षट्पात् ॥ चरमेति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर. "अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ" दित्यमरः ॥ प्रमुदित प्रमोदित लोभकारि. मोह मूर्च्छाको. सु सो. इन बुधसिंह के सुभटों में. कुसीलित यह संबोधन है. खोटे सीलवारे तें. कीलित बद्ध. ताके कैदी प्रमत्त मोहित. असु प्रान. परिहरिय तजिय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जिहँउप्परइति ॥ सोनित रुधिर. वमत उगलत ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ जेवर यावनी आभूषण.

कतिवेग पूर चलाक वासर इक्क१में सत१००कोस ॥
परिविष्ट दुंदुभि सिष्ठ मस्तक अच्छदे सिरपोस ॥ ७ ॥
जुगर कन्न पावन वाह पावन छन्न जेवर जाल ॥
थल उच्च नीचहु नाँ ढरैं जिनपैं भरे जलथाल ॥
गोधेर आनन तिक्खता गुन पीत अंजलि अंभ ॥
थकिवो न जानत ढानँ तानत वाहु देउल थंभ ॥ ८ ॥
आरूढ अंक लगाइ मस्तक जाइ वान उडान ॥
मिलि अग्गि सोर घने चले जनु वान इक्क दिस मान ॥
मग सूचनी ललि बाहु वजत तार घुग्घरमाल ॥
वहु दूर जानत जावते तिन्ह वेग धाव विसाल ॥९॥
लघु लूम संहित यों लसैं परि पट्ट रज्जुव पास ॥
अटक्यो समीर कि ताहि अैंचत अध्व पहुँच्चन आस ॥

वेग से पूर्ण १ एक दिन में सौ कोस चलनेवाले जिनकी पीठ पर नगारे २ बन्धे हुए और मस्तक ३ श्रेष्ट शिरपोशों से ४ छायेहुए ॥ ७ ॥ जिनके दोनों ५ छोटे कान प्रशंसा पाने योग्य जेवर से ढके हुए, जिन ऊंटों पर ऊंचे नीचे स्थलों पर भी थाल में भराहुआ जल नहीं गिरता ६ जो गोह (गोहिली) के समान तीखे मुखके गुण से अञ्जली (धोवा तथा खुबाचिया) में पानी पी लेते हैं ७ जो हाथ (ऊंट की शीघ्र चाल विशेष) को फैलाकर थकना नहीं जानते वे मंदिर के थंभों के समान भुजोंवाले ॥ ८ ॥ ८ सवार की गोद में मस्तक लगाकर तीर के समान उडे जाते हैं और जैसे बारूद का भराहुआ बाण ९ अग्नि के मिलने से एक दिश में जावे तैसे जाते हैं मार्ग की सूचना करनेवाली १० ललित (सुन्दर) घूघरमाल भुजों में ११ ऊंचे स्वर से बजती हैं, वे ऊँट विशाल वेग की दोड़ से जाते हुए दूर जाकर नजर आते हैं ॥९॥ १३रेसम की डोरी से बंधी हुई छोटी १२ लूम (तंग के पास बंधा हुआ रेसम या ऊन का गुच्छा) ऐसी शोभा देती है कि मानों ऊंट को १५ मार्ग में पहुँचने की आशा से रुका हुआ १४ पवन उसको खैंचता है [ऊंट जब वेग से जाता है तब लूम पीछे को रहती जाती है सो मानों ऊंटसे पीछे रहजानेवाला पवन उसको पकड़कर उसके सहारे से ऊंटकी बराबर होना चाहता है इसीसे वह लूम पीछे रहती है] भूमि पर ऊंटके चरणों के चिन्ह होते जाते हैं सो मानों अपनी कोमल और छोटी

मृदु ह्रस्व पायतलीन मंडत छोनि[3] मप्पन छाप ॥
अति लोल वाजिन लज्ज आनत आवजाव अमाप ॥ १० ॥
उपविष्ट इड्डर१ बाहु२ अंगन मध्य के अवकास ॥
भूस धावते कढिजाइ सूलिक मोक खंदुक भास ॥
लगि पट्ट लूम दुर्पास लंबित गुंफ के गजगाह ॥
प्रतिपास पब्बयके कि रैंजित वारि चपारि४ प्रवाह ॥ ११ ॥
मढि तौर[12]१ पिट्ठि पलान दारव२ कृत्ति३ कंबल४ मेल ॥
ककुदंग ले बिच जे कसे [16]रेखतूल तंगन मेल ॥
कृत कांति रांजत नक्कईलें१न राजती [19]कटि कान ॥
पगि बंध पट्ट बिचित्र रस्सिन जे इचे अतिमान ॥ १२ ॥

जमेल१ नमेल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गन घंटिका[21] बजि तौर[22] हार१ [23]हमेल२ शृंखल३ ग्रीव ॥

१पगतलियों से २ भूमि को नापने की छाप लगाना है कि यहां तक की भूमि नापली गई, वे ऊंट असाप आवजायमें अत्यन्त३चपल घोड़ों को लज्जित करते हैं ॥ १० ॥ ४ आलण में और ईडर व भुजों के बीच में जिनके अवकाश (छेटी) है अर्थात् जिनकी पीठ के आलण लम्बे और भुजों व ईडर के बीचका भाग छेटा बाजा है और जैसे ७ बिलको छोडकर ६ खरगोस निकलें तैसे शोभायमान होकर ५ शीघ्र दौड़ते हुए निकलजाते हैं ९ जिनकी पीठ पर दोनों ओर लटकती हुई ८ रेशम की लूमें और कितने ही १० गुंथेहुए गजगाह लटकते हैं सो मानों ११ पर्वत के दोनों ओर जल का प्रवाह गिरता है ॥ ११ ॥ १३ काष्ठ १४ कोमल चर्म और कंबल के मेल से बने हुए १२ चांदी के पलानों से जिनकी पीठ ढकीहुई है, वे पलान १५ डुंभी (मोरों के ऊपर के मांसपिंड) को बीच में लेकर १६ रेशम के तंगों के मिलाप के साथ कसे हुए हैं और नाकों में १७ चांदी की १८ नकेलें (मुरखाएं) और कानों में चांदी की १९ कड़ियां शोभा देती हैं, वे बडे बलवान (ऊंट) २० रेशम की विचित्र रस्सियों से कसेहुए जाते हैं ॥१२॥ गले में २२ उच्चस्वर से २१घूघरे बजते हैं और गरदन में हार, २३ हालरा (हारविशेष) और सांकलियां बजती

सह भेक१ झिल्लिन्न जोर सोर कि ओरओर अतीव ॥
जिनपें सु वाजिनके चढाकनके लुभे मन जाइ ॥
छम हाल कौतुक काल चाल अनेक चित्रन छाइ ॥ १३ ॥
पृथुभाल१ वेग२ बिसाल उच्छ्रित अच्छिकूट३ प्रदेस ॥
वतरात गात दिपात वातन वाततेंहु विसेस ॥
वलमैं क्रमेलक यों चले कति जान छुट्टत बान ॥
बिलसंत वाहन दब्बि वाहन भुम्मि१ व्योम२ बिमान ॥१४॥
कति भारवाहक धार लाहक पार गाहक पंथ ॥
नहि लारवाहक ओरनाहक जे सहैं गति ग्रंथ ॥
मुख मध्य१ मेंल्लन फुल्ल गेल्लन आनि बाहय२ मेंतिक ॥
घटना कवर्ग१ चतुर्थ४की घन ठानि गज्जत ठीक ॥ १५ ॥
धवली करैं अँवली अटे धर लुट्ठि फेनन वौर ॥

हैं सो मानों चारों ओर १ मेंडक और झिल्लियों का अत्यन्त कोलाहल होता है, जिन ऊंटों पर चढनेको२घोड़ों पर चढनेवालों के मनजाते हैं ३उनकी समर्थ हाल में क्रीड़ा के समय की चाल से अनेक आश्चर्य छाते (होते) हैं ॥ १३ ॥ ४ जिनके बडे ललाट, बडा वेग और ५ नेत्रों के गोलों का स्थान ऊंचा उठा हुआ है उनके शरीर वतलाने से शोभा देते हैं (मस्त ऊंट को वतलाने से वह गर्जना किया करता है) और चलने में ६ पवन से भी विशेष हैं "वा गतिगंधनयोः" इस धातु से वात शब्द का अर्थ चलना है. उस सेना में कितने ही ७ ऊंट ऐसे चले ८ मानों वाण छूटा, वे ऊंट भूमि के वाहनों को और आकाश के विमानों को दबाकर विशेष शोभायमान हुए ॥ १४ ॥ उन ऊंटों में कितने ही ९ लाभ धारण करनेवाले भारको उठानेवाले और मार्ग के पार होने के १० ग्राहकी ११ जिनके साथ में कोई नहीं चलसक्ता, वे चलने में गुथे (लगे) हुए १२ वृथा प्रेरणा को नहीं सहन करते और मुख में १३ दांतोंके भीतर १४ गालोंको फुलाकर १५ शरीरके अवयव (गालों के एक हिस्से) को मुखके बाहर लाकर कवर्ग के १६चौथे अक्षर 'घ' की घटना कर के गाजते हैं(घ घ शब्द करके, और उस अंगका आकार भाग घ के समानही होता है)॥१६॥ जिस भूमि में उन ऊंटों की१७पंक्ति चलती हैं उसको मुखके झागों के१८समूह

अनखे लगैं मग उट्ठि अप्पहि पिट्ठि धारि पैहार ॥
जिनके दुरपास कसे सलीतन भार छिंदत जाइ ॥
असुमंत तोलत अल्प अद्रिन ज्यों तुला अधिकाइ ॥ १६ ॥
उँरुचारमें गुरुभार उच्छलि यों लगैं प्रतिअंग ॥
करि१ कुम्म२ पच्छन लै तुले परखैं कि राजपतंग ॥
परपटी१ कनात२ बितान३ थूल४रु कोठिका५ चिक६आदि
बिनु १०बिंट्ठि पिट्ठि लहैं रहैं रय नाद उद्धत नादि ॥ १७ ॥
लहि मंच१ आदि१ सँसूहनी२ लग२ अध्वके उपहार ॥
लदवाइ सर्व अँखर्व गर्व तजैन स्वामिन लार ॥
जिन संगको खिनैं कुंचके तिनकोहु क्यों रहिजाइ ॥
बहिजाइ अतिभर१ श्रांतपत्त२नैं ततो बाहय बनाइ ॥१८॥
जिनतैं बसैं पुर रत्ति पाँत सु प्रातलों उठिजाँहिं ॥
बसि सोहिसोहि बहोरि मंगल होत जंगलमाँहिं ॥

की वर्षा करके श्वेत कर देते हैं २ पीठके ऊपर पर्वत रूपी बोझको धारण करके १ क्रोधित होकर आपसेआप उठकर मार्ग लगजाते हैं, उन ऊंटों के दोनों ओर कसे हुए सलीतों का भार छींदता जाता है सो मानों ३ प्राण धारण करनेवाला तराजू पर्वतों को तोलता है ॥ १६ ॥ ४ लांघी (शीघ्र) चाल में उनके ऊपर लदा हुआ बड़ा भार उछलकर ऐसा शोभा देता है मानों हाथी और कच्छपको अपनी पांखों में लेकर ५ पक्षिराज (गरुड़) उनकी परीक्षा करता है [वाल्मीकि रामायण में यह एक कथा है कि लड़ते हुए एक हाथी और कछुएको, गरुड़ अपनी पांखों में लेकर उड़गया था] ६ पड़दा ७ ७ चंदवा (सामियाना) ८ बड़ा डेरा ९ छोटा डेरा आदि को १० भार उठा ने के बिना ही क्लेश के उस भार को पीठ पर उठाकर वेग में उद्धत ११शब्द करते रहते हैं ॥ १७ ॥ मांचा (पिलंग) से आदि लेकर १२ बुहारी तक १३ मा र्ग की सामग्री १४ बड़ा गर्व करते हैं १५ कूंच करने के समय १६ तृण भी पा छे पड़ा नहीं रहता१७ये ऊंट श्रम युक्त होने पर भी अत्यन्त भारको उठाकर बाहर नगर बनादेते हैं ॥ १८ ॥ १८ रात्रि का पड़ाव होने पर जिनसे पुर बस जाता है और प्रभात तक वह पुर उठजाता है १९ वही पुर बारंबार बस कर

वहु यों चले मय१नारवाह१ रु भारवाह२ दुर भेद ॥
पहु त्यों चले हय२ मानके पवमानके छकछेद ॥१९॥
धट१ अंग२ वंग३ कलिंग४ गुर्जर५ कच्छ६ जंगल७धाम ॥
कंबोज८वाल्हिक९पारसीक१० वनायु११ भवँ जवकाम ॥
तातार१२चीन१३तुखार१४ताजिक१५अर्व१६रूम१७इरान१८
खुरसान१९रूस२०फिरंग२१खेत भये नये वय भान॥२०॥
जिनतैं प्रयोजन भिन्न४है जयधार पंचक५धाव ॥
आखेट१ आहव२ अद्रि३ वन४ मग५ साध्य सिद्धिप्रभाव ॥
मुख वेजू गुंफित केसरावलि भिन्न भिन्न समान ॥
इक१६है अधोगत लंब अहि मनिमंत वहुफन मान ॥२१॥
समान१ नमान२ अंत्यानुप्रासः १॥
जिनके७प्रफुल्ल सुरे वहिर्नुत नासिकाग्र जनात ॥
मनु ८हीत९है जित ताहिमैं घुसिजात वातं नमात ॥
क्रम पल तिच्छन कर्तरी कि करैं गंतागन कर्ण ॥
मनवेग कट्टत जानि सत्रुहिं ठानि सत्व मँहर्ण ॥२२॥
नुत पाइ नाइ १२हयच्छटा कृत जेरवंध निरत्थ ॥
सिथिल१३त्व धारत सिंजनी१४ जनु उत्तरे धनु सत्थ ॥
जर गुंफ नेत्र पिधा१५निका ति३हरी लसैं छवि जुत्त ॥

जंगल में मंगल होजाता है, इस प्रकार के १मनुष्यों को और भार को लेजाने वाले दो तरह के ऊंट चले और इसी प्रकार पवनके घमंडको काटनेवाले राजा के २ वलवान घोड़े चले ॥ १९ ॥ ३ इन देशों के जन्मे हुए ॥ २० ॥ ४ पांचों गतियों में जयको धारण करनेवाले ५ हीरों आदि से गुथी हुई केसवालियां ६ मणि युक्त वहुत से फणोंवाले सर्प के समान ॥२१॥ वाहर झुके और ७ फूलेहुए फुरणों के अग्रभाग जनाते हैं ८ लज्जित होकर ९ पवन नम्र होकर घुसता है १० तीखी करतणी के पानों के समान कान गतागत करते हैं ११ पराक्रम का समुद्र ॥ २२ ॥ स्तुति योग्य १२ कंधे को नमाकर १३ ढीलापन १४ जरबंध रूपी प्रत्यंचा १५ नेत्रों के ढंकने का वस्त्र (उजाळी)

[1]जवनीनके छिद्रकतैं करे जनु [2]गेंलकी हरि जुत्त ॥ २३ ॥
[3]पँवि गंड१ मंडरन भा करैं नत१ हृत्त२ गोर्धि प्रदेस ॥
[5]जयलेख पट्ट कि जानि जो [6]उपदा धरैं मन एस ॥
जिन्ह छिट्ठ हिंदत जेबदै लरलूम मुत्तिय जाल ॥
मनु मूर्तही जव द्वार [7]अर्थिन बद्ध वंदनमाल ॥ २४ ॥
बप जोर तोर मरोर मंडत मात खंधन [8]श्याम ॥
छक्क जानि जुग्गनकों भरैं बढि पारि प्रतिमल्ल छोम॥
जिन्ह पास पट्ट [10]कुंसा लसैं भृकुटी भिरी अधिजीन ॥
खर पक्व [11]आयस शृंखला सह लास्य [12]आस्य खलीन॥ २५ ॥
[13]कलनों बिसाल [14]कुलौंल चक्र कि हैरहि पुट्ठन दौर ॥
अधिपिट्ठि [15]सन्नतें मध्य आसन जेब भासन जोर ॥
नतभाव यों सहजैं लसैं तस ज्यों तुरंगन [16]नँद्ध ॥
पसमीन पीन अधीन बैठक लीन जीन प्रबद्ध ॥ २६ ॥
बढि ठपोम झंपत होत चामर नाचि [17]साँचि बिसेस ॥
गति अच्छके गुनज्यों उडैं चउ४ पच्छके [18]पंतगेस ॥
[19]चँल [20]वेरैं नच्चत बेर नच्चत तुम्म भार चउक्क४॥

---

१ तीन पड़दों की ओट में २ शालिग्राम विष्णु सहित ॥ २३ ॥ कपोलों के ऊपर ३ हीरों के कलश और ४ ललाट के झुके हुए भाग पर भूषण का गोलाकार पत्र शोभा देता है सो मानों मनके वेग को जीतकर मन के ६ भेट कियेहुए ५ विजय पत्र को धारण करते हैं, जिसके नीचे मोतियों की जाली शोभा देकर झूलती है सो मानों वेगने मूर्तिमान् होकर ७ याचकों के अर्थ वंदनमाल बांधी है ॥ २४ ॥ ८ गरदन पाथ में नहीं समाती ९ समर्थों को दुर्बल करके १० रेशम की बाग का मस्तक जीण के ऊपर भिड़ाहुआ ११ पक्के लोहे की सांकलियां सहित १२ मुखमें नृत्य करती हुई लगाम ॥ २५ ॥ १४ कुम्भार के चाककी मोटाई की १३ गणना के समान जिनके दोनों पुट्ठोंका फैलाव १५ पीठके ऊपर आसण का मध्यभाग झुकाहुआ १६ बंधा हुआ ॥२६॥ १७ विशेष वक्र होता है १८ चार पांखोंवाला गरुड़ उड़ता है २० नचने के समय चारों गजगाहों के भार सहित १९ चपल शरीर भी नचता है

मंतजानि सिक्खत नक्को जड एहु आनि मउक्ने ॥ २७ ॥
प्रतिफाल केकि कलाप फुल्लन बालहस्त मसार ॥
फबि के रहे छबि के गहे बनि तेहु चामर फार ॥
खुर पक्क लोह कटाहसों खर यों भिरी खुरताल ॥
किमु सत्रुके सुत मंद१ कों तम२नैं ग्रस्यो ततकाल ॥२८॥
इम लग्गि अंघ्रि छुवैं इला जिम अग्गि दज्झत जात ॥
वाजि होत त्यों चपलत्व निर्जित चंचला१ मन२ बात३ ॥
जित सत्थि सूचन ह्वै मुरैं तित नत्थि देर जनाइ ॥
जब मग्ग ठानत बग्गकों सिथिलत्व आनन जाइ ॥ २९ ॥
चपलत्व चंक्रमके चलैं चिरैं बातचक्र१ चलाव ॥
धरनी छुजावत धारि केचन नागपेच२न धाव ॥
लसि के कुविंदन बान मान अटैं अटरनि३ लेत ॥
वयपैं चढे जयपैं बढे कति भीरु४ क्रम संमवेत ॥ ३० ॥
भरि फूलआदस ५ के१ तिरैं धर२ ज्यों फिरैं सेर१ भंग२ ॥
इम लै पटो६ कति ऐनें श्रीसेन देन दीसन अंग ॥
कतिझंप७ धारन लै तरारन जात वाँरन कुद्दि ॥
जिन्ह वेग मारुत जोर दिठ्ठिहु दै महावत मुद्दि ॥ ३१ ॥

१कथन किये हुए संगीतक समय को लेकर मानों ये जड़ गजगाव भी नृत्य को सीखते हैं "यहाँ म'संगब्रोक्ता और उक्त कथन किये हुए का बाधक है" ॥२७॥ २मवंग मयांग प्रति मयूर पुच्छके समान ३ मालती फूलता है ४चमरों के समूह के समान बनकर ५ पक्के लोहे की खुरताल, मानों अपने शत्रु (सूर्य) के पुत्र शनैश्चर को ६ राहुने पकड़ा है ॥ २८ ॥ ७ भूमिको चरण ऐसे छूते हैं मानि चपलता में विद्युत्, मन और पवन पराजित होते हैं ८ देरी नहीं जनाते ॥ २९ ॥ पवन के गोटे (बघूलिये) के समान १० चपलता के कारण इधर उधर फिरते जाते हैं ११ कितने ही नागपेचों से दौड़ते हैं १२ जुलाहे [वस्त्र बुनने वाले] के तीर के समान अटेरने फिरते हैं १३ मिले हुए ॥ ३० ॥१४तूटे हुए तीर के समान फूलआदस फिर कर भूमि को तिरते हैं १५ हिरणों की १६शोभा से १७ हाथियों को कूद जाते हैं १८ जिनके पवन के जोर से महावत के नेत्र मिच

खुरतार मारन ग्राव[1] बारन खेरि फार[2] फुलिंग ॥
प्रकटात तास प्रकास पास प्रदेस भासन पिंग[3] ॥
पखराल चातुरि देत के नखराल पातुरि पाय ॥
कति साचि कह्हत तेगकीगति वेगकीगति काय ॥३२॥
पलटाति छाइ छटा करैं कुलटा[4] कँडच्छ[5] प्रमान ॥
मिटिजाइ जो लखि मीन१ दर्पन बिंब२अंबक३ मान ॥
सननंकि नत्थत दम्पलौं[6] फबि फुल्लि पोथन स्वास ॥
कर कँन्ह[7] नत्थित याल जाल कि काल व्याल प्रकास३३

प्रमान१कमान२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

निकर्कों[8] नमाइ कितेक उह्हत ऐंड[9] अंग तुरंग ॥
कमनैत कित्ति गिनैं न जिन्ह जब रोकि रंक[10] कुरंग ॥
हरते[11] हिंडोरन हाँसदोरन ओर घोरन दाहि ॥
गति एक मंडत केक डाँकर[12] टेक भाँकर गाहि ॥ ३४ ॥
इत१ की मुरी इत२ मानवे तन आन देतन अंखि ॥
पटु मग्ग अग्गल जान देतन प्रान[13] एतन पंखि ॥
मन साँदिके[14] जित जात छुट्टि गुलाल मुट्ठिय मान ॥
उततैं तथा इत वाह अंचित आत बात उडान ॥ ३५ ॥

जाते हैं ॥ ३१ ॥ १पत्थरों के समूह से २अग्नि कणों का समूह खेरते हैं जिनकी क्रांति से समीर का प्रदेश ३ पीला दीखता है ॥ ३२ ॥ ४ कटाक्ष के समान ५ नेत्रों का घमंड ६ जैसे नाथने के समय वृषभ (बैल) की नासिका बोले तैसे फूलेहुए फुरणों में स्वास बोलता है ७ कृष्ण के हाथ से नाथेहुए काली नाग के समान ॥ ३३ ॥ ८ कमर को झुकाकर ९ शरीर के घमंड से १० जिनके वेग से दीन हिरणों को रोकने में कमनैत कुछ कीर्ति नहीं गिनते ११ कूदने में हठ करके १२ कंगूरों को दबाते हैं ॥ ३४ ॥ शरीर के इधर से उधर मुड़ने में नेत्रों को भी नहीं आने देते अर्थात् उनका मुड़ना दीखता ही नहीं और वे चतुर घोड़े मार्ग में किसी को आगे नहीं जाने देते और पक्षियों के प्राणों का १३ निसासा लेते हैं १४ जिधर सवार का मन जावै उधर ॥ ३५ ॥

विधि वग्ग मोर्टन व्योम जात दिखात त्रोटन वट्ट॥
पटरी सहायक ह्वै टरी नटरी कि उद्दव लट्ट ॥
जिन्ह भेट लग्गत फेट चक्कित केट गे रहि जाइ॥
जिनकी कटीपर पै पटी पर जे छदित्त जनाइ ॥ ३६ ॥
कति लेत कच्छिय मोर मच्छिय बेर बरच्छिस ग्राम ॥
प्रतिधाव आवत पाव जे धरि पाव चिन्हन धाम ॥
जुरिजात ह्वैर कति ज्यौं कि सद्दिय१ संग तक्किय२ जीह ॥
जिन्ह लाह हानत होइ आनंत अक्क१ सक्केर हु ईहैं ॥ ३७ ॥
बिसि चक्र संकट जात बीथिन चेंक संक्रम सिद्ध॥
इम केक बट्ट विवेक ठेकत छोनि छेकत इद्ध ॥
मृधमें मतंगन पिट्ठि अंगन आनिकैं असवार ॥
हनि ते निषादिनैं बच्छ जे छुरिका बहावन हार ॥ ३८ ॥
क्रमके बढे जयके पढे भटभेरदै ततकाल ॥
सरकात जे रथके चढे जयके चढे हढसाल ॥
कति तोप गोलन संगकैं परखे स्वधावैं प्रमान ॥

आकाश में जाते समय १ वाग मोड़ने में पक्षियों की भांति दीखते हैं २ मानों ऊपर को नटनी उलटती है ३ हाथी पीछे (नीचे) रह जाते हैं ४ शीघ्रता की दौड़ में जिनके चरण हाथियों की कमर पर ५ छायेहुए दीखते हैं ॥ ३६ ॥ ६ कितने ही घोड़े मच्छी के समान मुड़कर दो बाछियों के अंतर को फांदकर ७ विश्राम लेते हैं, प्रत्येक दौड़ में जहां चरण चलते हैं उन्हीं चिन्हों पर फिर चरण रखते हुए दौड़ते हैं और कितने ही घोड़े ऐसे जुड़जाते हैं जैसे ८ शाब्दिक (व्याकरणवाले) के साथ ९ तार्किक न्यायशास्त्रवाले की जिव्हा जुड़ जाती है और जिनके लाभ पर नम्र होकर सूर्य और ११ इन्द्र भी १२ इच्छा १० लाते हैं ॥ ३७ ॥ सेना की १३ सकड़ी गलियों में घुस कर १४चकरी के समान फिरना सिद्ध करते हैं १५ मार्ग में विचार पूर्वक कूदकर बड़ी भूमि रोकते हैं १६ युद्ध में १७ हाथियों की पीठ पर १८हाथियों के सवारों की छाती में ॥ ३८ ॥ १९ वेग के २० अपने दौड़ने का प्रमाण

छरखे बढ़ैं करके गढ़ैं सिथिलत्व संक्रम हान ॥ ३९ ॥
सित१ के उड़ैं जिम सूत२ नालन धाव पावक संग ॥
हिमबालुका३ जित आलुका किंतु ५है अनावृत अंग ॥
मनि नील१ सच्छविके उड़ैं मिलवे कि व्योम२हि मिल ॥
कति बालवायुज१ रंग क्रीड़न पोन१ मित्र पवित्र ॥ ४० ॥
कति पद्मराग१ सराग भिंटन ज्यों रजोगुन२ काज्ज ॥
सुरराज१ सच्छवि केक पीवल२ सत्रु जीवल लज्ज ॥
द्विक२ बाजि रूप चउक्क२ सच्छवि मेलमित्र नदैन ॥
इम जे बिनीत बिनीत क्रीड़त अैनके क्रम अैन ॥ ४१ ॥
जलजात१ के कति बन्हिजात२ किते प्रभंजन जात३ ॥
द्विज१ आदि वर्ण त्रई२ जई पन तत्तई सुदिपात ॥

१चलनेमें शिथिलता की हानि करके ॥३९॥ नालों और ३पत्थरोंके संगसे अग्नि उत्पन्न होकर कितने ही श्वेत रंग के घोड़े २ पारे के समान उडते हैं ४. उडने में कपूर को जीतनेवाले ५ मानों एलवालुक (गन्धद्रव्य विशेष) को जीतनेवाले बिना छिपेहुए शरीर से उड़ने हैं अर्थात् कपूर तो छिपाहुआ उड़ता है और ये दीखते हुए शरीर से उडते हैं ६ नीलम मणिके समान (नीले) रंगवाले घोड़े मानों अपने मित्र आकाश से मिलने को उडते हैं "आकाश का रंगनीला है जिस में मिलने को" कितने ही ७ वैडूर्य मणि के समान रंगवाले घोड़े मानों अपने पवित्र मित्र पवन से क्रीड़ा करने को उडते हैं ॥ ४० ॥ कितने ही ८ माणक के रंगवाले (कुमैत) घोड़े अपने समान रंगवाले रजोगुण से मिलने के कार्य करते हैं "रजोगुण का रंग लाल है" कितने ही पन्ना के समान रंगवाले १०और शत्रुओं के जीव लेनेवाले ९ पीवर (पुष्ट, ताजा) सजे ११ शिक्षा पाये हुए विशेष नम्र घोड़े १३ मार्ग में १२ हिरणों के क्रम से क्रीड़ा करते हैं ॥ ४१ ॥
१४ पवन(*) से उत्पन्न

(*)उम्मेदसिंह चरित्र से लेकर रामसिंह चरित्र के इस स्थान पर्यन्त युद्ध घोड़े हाथी संगीत और वेदान्त आदि के प्रकरणों पर सविस्तर टीका कर दी गई परन्तु यहां से आगे इन्हीं प्रकरणों के वर्णन फिर फिर आते हैं जिन पर सविस्तर व्याख्या करना पिष्टपेषण के सिवाय निरर्थक विस्तार बढ़ता है इस कारण विस्तार वाली टीका करना छोड़कर कठिन शब्दोंकी संक्षेपसे टिप्पणी ही करेंगे जिसको पाठक लोग त्रुटिनहीं समझैं और फिर भी कोई विशेष वर्णन आवेगा वहां पर टीका कर दी जावेगी परन्तु पीसेको नहीं पीसेंगे॥

आजमसुत मृत सुनि अधिप, इभ्य सु सम्हारिय आनि ॥
कोटि इक्क१०००००००जेवर कढिय, पृथक सु धरिय प्रमानि।४।
स्वचर भेजि निज साह ढिग, कथ सब बिदित कहाय ॥
आजमसुत गत असु भयो, प्रभु अप्पन जय पाय ॥ ५ ॥
कोटि इक्क१जेवर कढ्यो, सो थित फील समेत ॥
आयस बसि प्रात कि अबहि, आऊँ सबन उपेत ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

सुनि बुद्धोदित साह खास निज दास खिनायो ॥
मंडि बिबिध सलुहारि कथित अति नम्र कहायो ॥
बल तेरे बुंदीस उमँडि आजम पर आये ॥
काबल जेतैं कहिय बैन करि सत्य बताये ॥
अब परिय रत्ति तुम श्रमित अति बपु बिसल्य करि बिधि बिहित॥
सेना सम्हारि मंडहु सयन आवहु प्रात नरेस इत ॥ ७ ॥

[दोहा]

तब यह सुनि सन्नाह तजि, निज बपु सल्य निकारि ॥
किय बिधान भिसकन कथित, सब दल प्रथम सम्हारि॥८॥
भीम निसा आगम भयो, इहिंतर तिहिंतर औन ॥ ९ ॥
क्रम सब सायंकृत्य करि, संभर मंडिय सैन ॥

॥ तोटकम् ॥

छपि भानु छपा सु जिहान छई, मिलि कंज बिरंजहु सोक मई ॥

स्वचरइति ॥ स्व अपनें चर दास. गतअसु गतप्राण ॥ ५ ॥ ६ ॥ षट्पात् ॥ सुनिबुद्धोदितइति ॥ बुद्धोदित बुधसिंहको कह्यो. बिसल्य बिना शाल. शस्त्रनके शल्य रहे होय तिनकों निकासिकैं यह अर्थ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तबयहइति ॥ सन्नाह कवचोंको. विधान क्रिया. भिषक वैद्य. कथित तिनको कह्यो ॥ ८ ॥ क्रमसबइति ॥ सायंकृत्य सायंकालको कर्म. सैन सयन. भीम घोर भयंकर. औन अयन स्थान ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिइति ॥ छपा क्षपा. रात्री. जिहान

कति पंच५ मंगल अष्ट८ मंगल मल्लिकाख्य३ कहाइ ॥
कति चक्रवाक४ कजाक मंडत मान पान न माइ॥ ४२ ॥
मनिबंध१ नाभि२ रु गुच्छ३मस्तक४आस्य५गोधि६रु अंस ७
त्रिक८ देस कंठ९ पिचंड१० रंध्र११ न भद्र भ्रम अवतंस ॥
आवर्त ए दसइक्क११ उत्तम भिन्न दै अभिधान ॥
तहँ इंद्र१ पद्म२ रु चक्रवर्तिक३ चिंतितार्थ प्रतान४ ॥ ४३ ॥
विजया५ रुप शुक्ल६ रु चंद्रकोसक७ आदि जे इहिं वट्ट ॥
पगि पुष्प१ चंदन२ आज्य३ गंधक राज्य संधक पट्ट ॥
चउ४ दक्ष बारह१२ दंत२ सु स्थित रोचि मेचक चारु ॥
कठिनत्वमैं प्रभुता तनात वनात बज्जहिं कारु ॥ ४४ ॥
मुख१ मान सत्त रु वीस२७ अंगुल कान२ मान छ६ मान॥
सत१० मान अंगुल उच्च विग्रह३ पिट्ठि४ जिन२४ अवसान
ललितत्व उल्लसि कंधरा५ वसुवेद४८ लंब ललाम ॥
तिहिं मान४ लून६ रु मध्य७ ल त्रय३० संख्य अंगुल ताम।४५।
इह च्यारि४ स्निग्ध१ रु च्यारि४ लोहित२ च्यारि४ सन्नत३ अंग ॥
सुभ च्यारि४ उन्नत४ च्यारि४ सुच्छम५ च्यारि४ ह्रस्व६ प्रसंग॥
इम भव्य आयत च्यारि४ आयत७ पाइ मंजु प्रतीक ॥
तन१ नैन२ चोर मरोर मंडत ठानि संगति ठीक ॥ ४६ ॥.
अब स्निग्ध१ आदि गुनत्व अंगन सूचना क्रम आनि ॥
मुख१ बाहु२ केस३ निगाल४ देस प्रलंब१ता गुन मानि ॥
क्रम सेफ१ ओठ२ रु जीह३ काकुद४ लोहितत्त्व लसाव॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ मुख का प्रमाण (माप) २ छः अंगुल का माप है ३ शरीर ४ गरदन ५ पालछा ६ कमर "यहां घोड़े के शरीरके अवयवों के नामों के आगे अंक रक्खे हैं वही उन अंगोंके मापके प्रमाण(माप)के अंगुल हैं अर्थात् वह अंग इतने अंगुलों का होना उत्तम है" ॥ ४५ ॥ ७ अंग ॥ ४६ ॥ ८ गला. ये चार अंग लंबे ९ लिंग १० तालुवा. ये चार अंग लाल

भरि कक्ष१कुक्षि[२]२रु जानु३पिछि४प्रतीक[३] सन्नत३भाव॥४७॥
सफ[४]१ भालकोसिर२ प्रोथ३ पायु४ समुन्नत४त्व समान ॥
पय१ को[६]र्व२ बालधि३[७]कर्ण४सोभित सुच्छम५त्व प्रमान ॥
श्रुति[९]१।२ औ तदंतर[१०]२ बं[११]स३ आसन४ बा[१२]मन६त्व प्रसिद्ध ॥
नलकलि[१३]१ बंक्रि[१४]२ रु खंध३ आनन[१५]४ ए विसं[१६]कट७इद्ध॥४८॥
कहुँ वै बिसेस जवान१ नच्चत जै बिसेस जनात ॥
कहुँ जोर दोर किसोर२ तंडव[१७] मोरतैं अधिकात ॥
स्वच्छं[१८]दपत्ति१न मान सादि[१९]२नैं मेल ठानत श्रेय ॥
इभ[२०] मानलो उडिजान उंद्ध[२१] दिपात सादिन[२२] देय ॥ ४९ ॥
प्रभु१को वयस्य[२३]२नैं दान१ सोदित२ दान सूचक२ पाइ ॥
असवार१कौं बहि स्वामि२ अंति[२४]कै देय देत दिवाइ ॥
सुचि[२५]४मास घर्म प्रकासके करि सेक बारि सुगंध ॥
प्रभुसौं अभीष्ट[२६] प्रसाद पावत स्वामिधर्मित संध ॥ ५० ॥
क्रम[२७]१सैं गहे गुन[२८]हैं २ रुहे अब [२९]गै३ लहे अवकास ॥
व[३०]र बै१ लहे तन जै[३१] २ लहे रन रै३ लहे पन बास ॥
स[३२]म्वेत उत्तम खेत[३३] संभव जे तनै जस जूह ॥

१ कांख २ तार. ये चार ३ अंग झुके हुए ॥ ४७ ॥ ४ खुर ५ गुदा, ये उठे हुए ६ पगों के नाले ७ बालछा ८ छोटे होवें ९ कान १० दोनों कानों के बीच का अंतर [छिटी] ११ बांसे की हड्डी १२ ये छोटे होवें १३नली १४मड्डू १५मुख इन का १६ लंबा होना उत्तम है ॥ ४८ ॥ १७ बछेरे नृत्य करते हैं १८ स्वतंत्र पैदलों का १९ घोड़ों से २० हाथी के बराबर २१ ऊपर २२ सवारों को ॥ ४९ ॥ २३समान अवस्थावालों २४समीप २५आषाढ मास की गरमी में २६वांछित ॥५०॥ २७ क्रम के अनुसार २८ घोड़ों के गुण कहे "इस छन्द के प्रारंभ में प्रथम ऊंटों फिर घोड़ों और जिस पीछे हाथियों का चलना कहा, उसी क्रम से प्रथम ऊंटों का वर्णन करके फिर घोड़ों का वर्णन किया" और अब २९ हाथियों के वर्णन ने अवकाश लिया ३० श्रेष्ठ अवस्थावाले ३१ शरीर से जय लेनेवाले ३२युद्ध में वेगवाले ३२ मिले हुए (साथ)

दिपती छटा जिनकी घटा घुमड़ी घटा कि दुरूह[1] ॥ ५१ ॥
चलि भद्र१मंद२मृगा३ख्य मिश्रक४ जात जात चउक्क४ ॥
श्रम अच्छके परपच्छके गेय जे करैं[2] मेय सुक्क ॥
मधुरोचि१ दंत२ वराह१ जघन२ रु चाप१ रीढक१ मान ॥
द्युति१में हरित्व२ स्फुरित्व सालि३सुगंध सोभित४दान५ ५२
मधुमास१ पिंगल२ नैन२ ओ मृदु१ लोम२ अंग३ ललाम ॥
तिम तास आनन१ ओठ२ आकुद३ रोचि रोहित४ ताम ॥
सम१ वृत्त२ पीवर३ कंधरा४ कर५ मेघ१ वृंहित२ सद्द॥
नख१वीस२०।२कै धृति१८।३नेम ५है कर१सत्त७।२उच्छ्रय३हद्द॥५३॥
जिन्ह मत्थ१ मुत्तिय२ जुद्ध१में जय२ ओ सदा१अनुकूल२॥
इम भद्र१ लच्छन सूचना अब मंद२ बोधन मूल ॥
गज१ कुक्षि२ पेचक३ थूल४लंबित५दिढि१इट्ठि मृगेस२ ॥
पुनि कच्छ१वल्ल२उभैर२ कहे सिथिलत्व जुत्त३ प्रदेस ॥५४॥
मृग३कै वडे१हग२तत्थ ए वसु८ अंग१ खर्व२ प्रमान ॥
कर१दंत२अंघ्रि३पिचंड४मोहन५कंठ६लोम७ रु कान८॥
सब चिन्ह१ मिश्रित२ मिश्र४ जाति चउक्क४यौं गज३ सज्ज॥
गति मेघ१विग्रह२विज्जु१ भूखन२ गाढ गर्ज्जित१ सज्ज५५
अरि राहु१के सनि२केक सोदर ध्वांत३के धवअंग ॥
प्रसरे तमोगुनके कुटुंब कि अन्य जुग्म२ प्रसंग॥
पथ सेकैं[12] पूरत निर्झरैं वपुसौं प्रवृत्ति प्रवाह ॥
लसि ज्यौं मनोरंम अद्रि जंगम[13] श्रोत संगम लाह ॥ ५६ ॥

---

[1]कठिनाई से तर्कना में आनेवाली ॥५१॥ शत्रुओं के १ मदको छुड़ानेवाले २ हाथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ४ भद्र जाति के हाथी के ५मन्द जाति के हाथी के लच्छण मानो ॥ ५४ ॥ ६ मृग जाति के हाथी के ७ मिश्र जाति के हाथी के ८ मेघ के समान शरीर और९बिजुली के समान भूषणोंवाले ॥५५॥१०शनैश्चर के सगे भाई ११ अंधेरे के पति १२ मार्ग को सींचते हुए१३चलते हुए पर्वतों के ॥५६॥

तृनसान[1] दै मग तुंग साखिन[2] बाम दक्खिन तोरि ॥
मनके बिचारत डिग्घ डारत मेरुशृंग[3] मरोरि ॥
घन कुंभि[4]के उर दाह घल्लत राइ[5] चल्लत रोहि ॥
जब ओघ मोघ जनाइ सत्तिन[6] हत्थ कत्तिन सोहि ॥ ५७ ॥
हढ दंभि के खिन थंभि दोरत व्है समग्र हरोल ॥
लवहू लगात न सत्रु सातनँ[7] तोप गोलक लोल ॥
पय लंब लंगर पाइ जंग रचाइ चित्र[8] प्रतीति ॥
रद[9] हेम वंगर[2] रोचि दै ससि[10] सूर[2] संगर रीति ॥ ५८ ॥
मचलै हमल्लन भू हलावत के चलावत मग्ग ॥
चटि[11] लेत उव्वट[2] उज्झि के असु आनि अंकुस अग्ग॥
उलटान इच्छत अभ्रमके[12] इभ फौंकि सुंडिन उद्ध ॥
रय औंड उद्धर के कढैं तिरछे उपाय अरुद्ध[13] ॥ ५९ ॥
चल केक बान[1] रु भैचपा[2] चिरखी चटच्चट चैंकि ॥
बहुधा बिचित्र तनैं गैतागत[14] बीति रीति बनैं कि ॥
छिरकैं पतत्रिनि[16] के बली बमथून[17] व्योम रूपाइ ॥
उलटे कै[18] बुट्ठन जानि सिक्खत मेघ मेचक आइ ॥ ६० ॥
मचिजात अंदुक[19] अग्ग अैंचत मग्ग[1] जंगल मग्ग[2] ॥
दिपि बिंदुपत्रक[20][1] ज्यौं जरे बपु पद्मरागें[21][2] उदग्ग ॥

१तृण के समान २ ऊंचे वृक्षों को ३ सुमेरु के शिखरों को मरोड़ना ४ऐरावत के उर में ५ घोड़ों के वेगको निरर्थक जनाकर ६ सुण्डों में तरवारें शोभायमान हैं ॥ ५७ ॥ ७ शत्रु के मारने में ८ आश्चर्य युक्त युद्ध करके ९ दांतों में सुवर्ण के बंगड़ १० सूर्य चन्द्रमा के युद्धकी रीति से ॥ ५८ ॥ ११उव्वट लगना छोडकर मार्ग लेते हैं १२ ऐरावतको उलटाना चाहते हैं १३ नहीं रूककर ॥ ५९ ॥१४विचित्र आवजाव करके मानों १५ घोड़े की भांति चलते हैं १७ सुण्डके जलकणों से ढककर १६पक्षियों को छांटते हैं सो मानों काले मेघ उलटा १८जल वर्षाना सीखते हैं ॥ ६० ॥ १९ जञ्जीर खैंचने से २१माणिक्य के समान शरीर पर २० बिन्दुजाल (चीरघंट) जड़े हैं .

कति मग्ग लग्ग वहैं करे बस अग्ग लग्ग *करेनु ॥
बहु मत्त१ †डाक लगेर२ वहैं बहुगत्त१ वेधत ‡वेनुर२ ॥ ६१ ॥
जरि रत्न §सीस१भिरी सिरी२ उदयाद्रि ज्यों उडुजोल ॥
त्रि[2] ३पदी जरे त्रि३पदी तथापि चलैं अनर्गल चाल ॥
मचलैं महावत वीत पावत के घुमावत मत्थ ॥
जनु छुत्त अंबर छत्ति२कों विखरात ओ घसि जत्थ ॥६२॥
मखतूल झूल१ कपाल२ मंडित जो अखंडित जोर ॥
मृधमल्ल खंडित खोर्म पंडित जोम तोमं सरोर ॥
कैंर कुंडली करि लंब अंबर क्रुद्ध के फटकारि॥
वट लेत अंखिन देत पंखिन वेग वेतं विडारि ॥६३॥
जंगाल१ हिंगुलु२तांल३ जालित सीस१सुंडि२सुहाइ ॥
बुध१ आर२ जांवं३ कि चारवक्रन आक्रम्यो सनि१ आइ ॥
कुंथ रत्त१ पैं गुड कांत आयस२ हेम३ रत्न४अमुल्ल ।
फनि ज्यों रहे रवि१गोद मंदं२ रु चैंक्र३ लै उडु४फुल्ल ॥६४॥
बहुधा सुखासन१ पिट्ठि सोहत नद्ध पट्ट वैंरत्त ॥

---

* हथनियों को आगे करने से वश में होकर चलते हैं † क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगने से ‡भालों से शरीर को वेधने से ॥ ६१ ॥ रत्नों से जड़ीहुई सिरी (मस्तक भूषण) § मस्तक से भिड़ीहुई है सो मानों सुमेरु पर्वत पर १ नक्षत्रों का समूह है २ तीनों पैर डगमगे़डा से बंधे हैं तोभी ३ विना रुकावटकी चाल से चलते हैं ४ महावत के हूलने को पाकर मस्तक घुमाते हैं सो मानों ५ आकाश रूपी छाते को मस्तक से घिसकर विखेरते हैं ॥ ६२ ॥ ६ रेसमकी ७ युद्ध के मल्ल ८ बुरजों को गिराने में चतुर ९ बल के समूह की मरोड़वाले १० सुंड की कुण्डली करके ११ आकाश में पक्षियों के वेग को विखेर देते हैं ॥ ६३ ॥ १२ हरताल के समूह से रंगाहुआ मस्तक और सुंड शोभित हैं सो मानों बुध १३ मंगल और १४ बृहस्पति ने शनैश्चर को १५ घेरा है १६ लाल झूल पर सुवर्ण और रत्नों से जड़ीहुई सुंदर १७लोहे की खिलत लगीहुई है सो मानों सूर्य की गोद में१८शनैश्चर और १९ शिशुमार चक्र में तारे फूलरहे हैं ॥ ६४ ॥ २० रेशम के रस्सों से बंधेहुए

कति झंड१झुंडन अग्ग संक्रमि मग्ग छेकत मत्त ॥
सब हेतिं होदन मज्झ१ बंज्झ२ असंज्झ स्वोचित सज्ज ॥
करिबे निसादिन वीर बादिन सर्बथा जय कज्ज ॥६५॥
बढिकै महावत बोलदे जिम जाति लै बिरुदाइ ॥
जवमें हठी तिम सत्ति१ पत्ति२न पंति पिल्लत जाइ ॥
मनधाव ज्यौं चलभाव दोरनमैं सु घोरनमैं न ॥
प्रतिकाल१ चाल२ बिभिन्नता इम ओघ ओरनमैं न ॥ ६६ ॥
घोरनमैंन१ ओरनमैंन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गंभीरबेदि१ कितेक मैंगल२ केक परिह्रात३ गाढ ॥
कति ठेयाल४ चाल अँराल करि करि बेग धारतबाढ॥
कति फीतिं बाइक नीत कलिपत५ बीतिं अंकुस१बीतिं२ ॥
उपबाह्य६ के कति दंतईषिक७ दंतिपंति अतीतिं॥६७॥
आटोप के अहिभोगँ सन्निभ उद्ध पोगँर आनि ॥
पलटा गता१गत२ के करैं मतके प्रभान प्रमानि॥
लघुनैन१ दिग्घ निहारिबे२ करि के रचैं गति लीहिं ॥
आगामि१ गामि२ प्रकार आनत जे अनर्गल ईहिं ॥ ६८ ॥
पटु पालकाप्य प्रणीत तंत्रन हत्थिपालक हुल्लि॥

१ सब शस्त्र २ बंधेहुए ३ असह्य [नहीं सहने योग्य] ४हाथियों के सवारों के ॥ ६५ ॥ ५ घोड़ों और पैदलों की पंक्ति को हटाते जाते हैं ॥ ६६ ॥ ६ भाले आदि के घाव को नहीं माननेवाले ७मदकल [मस्त] ८पकेहुए दढ ९हुष्ट हाथी १०टेढी चाल से वेग को धारण करते हैं १२अंकुश की प्रेरणा और १३महावत के पैरों के छूलने से ११ प्रसन्न होकर चलनेवाले साजित हाथी १४ कितने ही राजाकी सवारी के, कितने ही लंबे दांतोंवाले १५ दांतों की पंक्ति १६व्यतीत होगई ऐसे [झुकने] हाथी ॥ ६७ ॥ १७ सर्प के फणके सदृश १८सुंडके अग्रभाग को ऊपर करके छत्र करते हैं १९दौड़ने की लकीर रचते हैं २० आना और जाना २१ बिना रोक टोक वाली इच्छा से करते हैं ॥ ६८ ॥ पालकाप्य मुनि के बनाये २२ शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद) में चतुर महावत कूटबोली [दगदग आदि]

विरुदाइ लाइ अनीक विस्मय झुल्ल कूटिकझुल्लि॥
जिम जाइ जितजित आनि इतइत वानि१ अंकुस२बोध ॥
बलजेघटात रिझातविंदहिं जुद्धजें जिम जोध ॥ ६९ ॥
इभपाल१ आसन२ पैं प्रभा इक१ सम्मुहे न लखाइ॥
जनु पिट्ठि जे थित वीर तेहि निसंक पिल्लत जाइ ॥
इभपाल अंगन व्हैं न भूखन रो³चि जो अभिराम ॥
तो उक्त⁴ अर्थ प्रबोध व्हैं तिनके चढाकन⁵ ताम ॥७०॥
झननंकि शृंखल ज्यों बजैं तिम पिट्ठि विस्मित झंकि ॥
अति सेन संकट अग्ग सादि⁶य बट्ट बिक्खत संकि ॥
मारीचगजँ१ ढिग के मतंगज२ यों निषादन आनि ॥
प्रभु पानि रीझ दिवान पिल्लत जात किल्लित जानि ॥७१॥
कति हत्थि होदन भौंर संक्रम गेत्त पत्तनगोपि ॥
अति लासँ कज्जल भास आनत औसनावधि ओपि ॥
गज२ यों अनेक ¹²अनीक संगत देत खेत दिपाइ ॥
रथ४।१के सजे पथके मनो¹³रम जे मनो¹⁴रम जाइ ॥७२॥
कति पारियानि¹⁵कर२ कोक पुं¹⁶परथा३रुप वैना¹⁷यिका४रुप ॥

बोलकर सेना में लाते हैं ॥६९॥ उन हाथियोंके ऊंचे कुंभस्थलों के कारण सामने से महावतों की १ कान्ति नहीं दीखती सो मानों पीठ ऊपर के सवार ही उनको २ चढाते जाते हैं, महावत के शरीर पर भूषणों की सुन्दर ३ कान्ति नहीं होवे तो ५ तहां उन पर चढनेवालों का ४ऊपर कहे हुए अर्थ का ही बोध होता है ॥ ७० ॥ ६ घोड़ों के सवार ७ राजा की सवारी के हाथी के समीप ॥ ७१ ॥ कितने ही हाथियों के होदों में ८ भ्रमर चलकर अपनी पांखों से ९ सवारों के शरीरों को छिपा देते और १०नृत्य करते हुए ११आसन की अवधि पर्यन्त शोभित होकर अत्यन्त कज्जल की शोभा को लाते हैं १२सेनाके साथ १३ मार्ग में सुन्दर चलनेवाले १४ मन में रमते जाते हैं ॥ ७२ ॥ १५ चौतरफ से खुलेहुए रथ १६ विना युद्ध (हवाखोरी) के रथ १७ शस्त्राभ्यास करने के रथ, जिनके पहिये

अरिनेमि[1]२अक्ष३रु पिंडिका४अरिंग्‌[2] ५पेसलत्व प्रथारुप ॥
सम्पा६धुरा७जुग८श्रो जुगंधर९गुप्ति१० आदि सुहात ॥
सबही प्रतीकन[11] सज्ज स्पंदन यों बढे बहु व्रात[12] ॥७३ ॥
हुव सज्ज आरुहि पट्ट हत्थिय इष्ट सत्थिय अप्प ॥
द्युति देखि दुर्लभ देवकी[13] दुरिजात दर्पक[14] दप्प॥
उष्णीष[15]१ सीस२ कुसुंभ अर्चित स्वीय बंध सुघट्ट ॥
सह सालप[16]२नालप किरीट३सेखर[17]४पंच५रत्नक पट्ट[18] ॥ ७४ ॥
लगि द्युत्ति अच्छत१धीर२चंदन३चंद्र४छाड ललाट२ ॥
तिम रत्न कुंडल१।२ कर्ण३ जामल२ लाल गल्ल तलाट ॥
हद रोचि गुंफित रत्न पंच५क कंठ४ हिंडत हार१ ॥
बहुधा बिचित्र अनेक आवलि जो जै[19] ओज बिथार ॥७५॥
लहा ललाम सु काय५कंचुक[20]१ बिप्फुरैं जर वान२ ॥
सायंतनारुण[21] अभ्र१ सीम कि बिज्जु२ पंति बितान ॥
कटिबंध१ मध्य५ लसैं कस्यो पगि पग्घ राचि२ प्रकास ॥
केयूर[22]१।१कटक१।२अवाप[23]१।३भुज७।१कर८।२भ०पभनि९।३मनिभास
बहु मुद्रिका१बहुरत्न वेष्ट२दु२पंच५।१०पल्लव[24]१० पाइ ॥
अहिद्वै२ कि कर फनपंच५ पंच५ उरुत्व[25] मानि अधिकाइ ॥

१पुठियां २पाचरं ३ नाभी (नाही) ४ आरों के ऊपर लगाने के काष्ठ (आंवल) ५ सुंदरपन में प्रसिद्ध हैं ६ जूए की कील (सोल) ७ आोदण ८ जूआ (जूड़ा) ९ जूआ बांधने की जगह १० रथकवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की खोली) आदि से शोभायमान है, इस प्रकार रथ के सब ही ११ अंगों को सज्जित करके रथों के बहुत १२ समूह बढे ॥ ७३ ॥ १३राजा की कान्ति देख कर १४कामदेव का घमंड छिपता है १५ कसूमल रंग की पाघ १६बड़ा मोड़ (मुकुट) १७ शिखाबंधन (लटकण) १८पांच रत्नों का शिरपेच ॥७४॥ १९ जय को और प्रताप को फैलाते हैं ॥ ७५ ॥ २० जामा (भगा) २१ संध्या समय के लाल बादलों के समान किंवा बिजुली की पंक्ति के फैलाव के समान २२ भुजबंध २३ पूँचां तथा कोई अन्य कर भूषण विशेष ॥७६॥२४दसों अंगुलियों में२५मणियों

कटिद्दा१ १सान सुद्ध कृपान१पट्टिस२कत्तिका३छुरिका४ऽऽदि
चउ४पुप्प अंकुन१अष्ट८चंद्रक पिंछि१२ दिढि मसादि ॥७७॥
उपवीत१प्रतिपंथ१३मेखला१इत रत्न रोचिर२अपुव्व ॥
उर१३देस१जानि अगाध अर्णव२ एस१ वेस कि उँव्व२ ॥
सह धोत१ आवृत अंघ्रि१४ कंचुक२ लंब आघुट३ साजि
वनि जुग्म२ गोहिर१५रत्नशृंखल१२नेम हेम विराजी ॥७८॥
अभिरूप यों वर भूप प्रस्थित पट्ट पीलुं अरोहि ॥
सहचार जन्य वयस्य सत्थिय संक्रम्यों तिम सोहि ॥
नृपनाग१के चहुँ४ओर जोर मरोर मंडत नागर२ ॥
परिवेस१ भेसर२ संवेस प्रस्थित वेस१ देसर२ विभाग ॥ ७९ ॥
इभ व्यूह१ वाह्य समूह२ अर्वन ऊह यों अधिकात ॥
जनु पच्छछेद अभेद अद्रिन वेढि सख्य जनात ॥
गजव्यूह१में गजपट्ट२कों गन पंत्ति२ के गरदाइ ॥
प्रभुके प्रसाद प्रसन्न प्रस्थित चक्र चंक्रम पाइ ॥ ८० ॥
सिर रूचयके सह रत्न१ हाटक२ आतपत्र१ सुहाइ ॥
जनु रत्नसानु२हि भानुको तव ताप टारत जाइ ॥

से वड़प्पन बढाते हैं १ कटारी २ चार फूलोंवाली ढाल ॥७७॥ ३ जनेऊ ४ उदर पर ५ कांची (करधनी, कणगती) ६ उदर के प्रदेश को अगाध समुद्र जानकर यह वेस मानों ७ वड़वाग्नि है ८ धोवती से ढकेहुए चरण ९ दोनों गिरियों (चरण ग्रंथियों) पर सुवर्ण के पगसांकले ॥ ७८ ॥ १० सुंदर ११पाटवी हाथी पर चढ़कर, समान अवस्थावाले घरातियों के १२ साथ शोभित होकर चला १३ राजा की सवारी के हाथी के चारों ओर १४ सूर्य के चारों ओर कुण्डली होवे जैसे ॥७९॥ हाथियों के व्यूह के १५ बाहर घोड़ों का समूह है जिनकी ऐसी १६तर्कना होती है कि मानों विना पंख कटेहुए पर्वतों को घेर कर वे घोड़े१७मित्रता जनाते हैं १८पैदलों का समूह१९सेना इधर उधर चलती है ॥ ८० ॥ दुल्हा के मस्तक पर रत्नों का जड़ाहुआ सुवर्ण का २० छत्र ऐसा सुहाता है मानों २१ सुमेरु पर सूर्य के ताप को बचाता जाता है,

दुहुँ२ओर बीजत सोमगुच्छ कि रोमगुच्छ१।२ दिपात ॥
पुरटाद्रि सूचित छत्र ज्यों पगि द्वैध गंग निपात ॥ ८१ ॥
इम अर्द्द१र्बर्हइ२।३अगर्ह५ बीजत बित्थरे दुहुँ२ओर ॥
मनु चोर१ अभ्र२ अदभ्र३ मोदित मंडि तंडव७ मोर ॥
द्विसती२०० नकीबन दंड१ प्रेरित हत्थ हाटक८ दंड२ ॥
अतिसीम अर्णव फौज बाडव ओज२ जानि अखंड ॥८२॥
पहु पत्त यों दरकुंच जैपुर मंडि चैक्क मुकाम ॥
तह भूप सिसु जयसिंह१तैं नन रीति सद्दिय ताम ॥
इह बैरिसल्ल१ स नाम राउल कुम्म नाथकुलीन ॥
कछवाह भूप प्रधान व्हाँ सतकार स्वोचित कीन ॥८३॥
तँहँ भूप कूरमकेर मुख्य प्रकोष्ठ पालक ताम ॥
प्रति द्वारपालन जीर्न११ जैन२ स्वरूपचंद्र१ सनाम ॥
जिहिं भेजि राउल भूप१ द्वार स्वरूप२ बाल्य जनाइ ॥
भनि ऐन१२ सद्दिय बैन स्वागत ऐन आगत भाइ ॥ ८४ ॥
इम जैन जो प्रभुविंद तोरन१३ दूर वाहन उज्झि ॥
वय अब्द१५ सत्तरि७० लंघि औरन मंदलोचन बुज्झि ॥
कहि बुल्लि मुख्य प्रकोष्टपालक१६ हड्ड६१ भूपति केर ॥
अवधान१७ हानि दिखाइ अप्पन बाढ स्वागत बेर ॥ ८५ ॥

१दोनों ओर चन्द्रमाकी किरणों रूपी चमरों से पवन होता जाता है सो मानों ऊपर सूचना कियेहुए छत्र रूपी२सुमेरु पर्वतसे गंगाकी दो धारें पड़ती हैं ॥८१॥ इसी प्रकार ३ पूजनीय ४ मयूरपंखों (मोरछलों) से दोनों ओर ५ अनिन्दनीय पवन होता है सो मानों चमरों रूपी बादलों से ६ प्रफुल प्रसन्न होकर मयूर ७ नाचते हैं ८ सुवर्ण की छड़ियां हैं सो मानों सीमा रहित सेना रूपी समुद्र में बड़वाग्नि है ॥ ८२ ॥ ९ सेना का मुकाम किया ॥ ८३ ॥ १० कछवाहे राजा का मुख्य द्वारपाल ११ वृद्ध जैनी १२यह आप का घर है ऐसा कहकर वचनों से स्वागत किया ॥ ८४ ॥ १३ बाहर के द्वार से १४ वाहन छोड़कर १५ सित्तर वर्ष की अवस्था और मंद दृष्टिवाला दूसरों से पूछकर १६ हाडा राजाके द्वारपाल को १७अपने आने के समय अपनी सावधानी की

बिबुधालय झल्लरि घंट बजे, सुरभीन स्ववच्छन मेलसजे ॥ १० ॥
दिन मूकन घूकन हूक दई, चित चक्कन चौंकि तजी चकई ॥
चिलकारिन पिंगलिका चहकी, निधिसी निसचारन धारनकी ॥ ११ ॥
चहुँओरन चोरन चाप चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥
छिनचार भपार अगार छुये, फटि ब्योम नछत्रन चिद्र फुरे ॥ १२ ॥
जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुल्हिन हेति दगी ॥
रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥ १३ ॥
रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥
भय मुग्ध नवोढन चित्त भर्यो, ह्रिय छुच्छय मध्यन बोध हर्यो ॥ १४ ॥
बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥
छमि आगस धीरन नाह छले, चहि चाव बिदग्धन दाव चले ॥ १५ ॥

यावनी संसारमैं. निरंज बिना रंज. बिबुधालय देवालयमैं ॥ १० ॥ दिनमूक- इति॥ चिलकारिन चीत्कारी याके शब्दजो अनुकरण है. "चिलीतिसान्ते चि- लीलिति:" दीप्तवसंतराजः॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कहीं नहीं अन्त्यानु- प्रास है ॥ ११ ॥ चहुँइति ॥ भपार अपवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व- लित व्हैकैं. दीप दीपक. निवासन घरसैं. भास कांति. "भाश्छविद्युतिर्दीप्तयः" इत्यमरः॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकैं. चुल्हिन चुल्ही चुल्ही लोके चूल्हा. रसोई पकायवेके तिनमैं. हेति ज्वाल. "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियां" रि- त्यमरः ॥ गोरियगान गोडी रागिनीको गान. हनुमान कपिराजके मतमैं तथा आधुनिक गायकनके मतमैं गोडीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगस अपने पति ॥ "भुजंगो गणिकापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय प्रिय. अपनों परिणीत. अपनों परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तामैं. स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय. रजे रंजित भये. मुग्धनवोढान मुग्ध मुग्धा. नवोढन नवोढा तिनके. ह्रिय ह्री लज्जा तानैं. 'मंदाक्षं ह्रीस्त्रपा ब्रीडा" इत्यमरः ॥ छुच्छय काम तानैं "विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः" इतिहै- मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ बसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रौढा नायि- कानैं. केलिवस व्हैकैं. त्रपा लज्जा कों. क्रुध क्रोध कों. अधीरन अधीरा नायि- कानैं. छमिआगस आगस अपराध ताकों. छमि क्षमाकरिकैं. धीरन धीरा नायिकानैं. नाह नायक. बिदग्धन बिदग्धा परकीया नायिका विशेष तिननैं. वाक्बिदग्धा १, क्रियाबिदग्धा २ ए दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायककों

जिम भूप वालग प्रमाद ह्वै तिम सर्व देर जनाइ ॥
आहूत हड्ड[1] इलेस[2] अंतिक एस एकक[3] आइ ॥
[4]सयजोरि अक्खिय एह विन्नति बैरिसल्ल[5] संमुक्त ॥
जो कल्हि ह्वै रहिवो ततो बनिजाइ स्वागत[6] जुक्त ॥ ८६ ॥
क्रम सज्ज संसँद[7] ह्वै मिलाप[8] उभै अधीसन केर ॥
विधि सद्दि दो उन नेहसों सहभुक्त[8] ह्वै मह वेर ॥
धात्रेय[9] मुख्यन ह्वाँ कही नरनाह[10] सम्मति धारि ॥
सम मंग[11] या परिमान जानहु लग्न विन अनुसारि ॥ ८७ ॥
इम ह्वैना लग्ग विलंब[1] भो इम ह्वै हठी[2] इत आत ॥
वनि अग्ग ह्वै कछवाह[1] कै पह लाह नाह[2] वरात ॥
प[12] अंधकल्प चल्यो यहै[13] संचियादि सूचित जानि ॥
व[14]तिहाँरसाँ इतकेन अक्खिय जाहु लै गहि पाँनि[15] ॥ ८८ ॥
रह[16]हि जो अनर्महुँ[1] नर्म[2] बुल्लिय जैन[17] जो हित चोर ॥
आमेरनाथ गह्यो यहै कर को गहैं तिहिँ ओर ॥
जड दंभ[18] खानि हसाइ हड्ड[1]न जाइ यौं उत जैन ॥
आकूत[19] अक्खिय ऐन[20] सत्वर ह्वैन थंभन ऐन[21] ॥ ८९ ॥
इम जात व्याहन ईस भो जयनैर एह उदंत[22] ॥
दरकुंच हंकिय जुज्झनाँ[1] दिस सज्ज जन्य सुमंत ॥

---

१ बुलवाया हुआ २ हाडा राजा के समीप ३ यह अकेला आया ४ हाथ जोड़कर ५ रावत बैरीसाल की कहीहुई बिनती ६ आपका आदर सहित ॥ ८६ ॥ ७ सभा में ८ सामिल भोजन ९ धायभाई आदि १० राजा रामसिंह की सम्मति देखकर ११ मार्ग के प्रमाण के साथ ॥ ८७ ॥ १२ अंध के सदृश १३ सचिव आदि का कहाहुआ जानकर १४ बुंदीवालों ने अपने द्वारपाल से कहा १५ इस का हाथ पकड़ कर ले जा ॥ ८८ ॥ १६ यह हँसी नहीं थी तोभी इसको हँसी मानकर १७ यह हित का चोर जैनी बोला १८ कपट की खान १९ अभिप्राय कहा २० मार्ग की शीघ्रता से २१ आपने घरमें (यहां) ठहरना नहीं होसकता ॥ ८९ ॥ २२ वृत्तान्त

पुर *गम्य अंतिक जात अंतर कोस द्वै२ परिमान ॥
तह कुम्म †सेखकुलीन सम्मुह संजुरे वलतान ॥ ९० ॥
सब मुख्य सेखनमैं मनोहरढंग१ ‡बै हनुमंत२॥
सहसत्थ तहँ खंडेल२ वै१।२ सुत२ वातदा जुहि संत ॥
बखतेस३ कूरम खेतरी३पति बाहबाहन बुद्ध ॥
इक१ खंजपैहु बिपर्यलखन४ सीकरेस४अलुद्ध ॥९१॥
प्रभु रूप्यके स्वसुरत्व उन्नत स्याम५जुज्झनपाल ॥
जिहिँ दुष्ट भ्रात१ भतीज२ मुख्य दसद्दिय७ अघजाल ॥
सहदंत६ रामगढा७दि इम सब कुम्भथकुलीनकुलीन ॥
करिकैं महामद बिंद सम्मुह आइ स्वन्नित कीन ॥ ९२ ॥
उँपदा१ निछावरि२ सहि सादर संग जे सब आइ
प्रभुकों पटालय मुख्य अंतर प्रीतिसों प्रविसाइ॥
लहि सिक्ख अप्पन ऐन संकमि आत अंतिक ल॥
मिलि सर्व मंडपके महामहँ मोद अर्णव मग्न ॥ ९३ ॥
चहुवान इंद्रहिँ लैचले पधराइ व्याहन प्रीत ॥
गजपट्ट आरुहि हहु६१ हंकिय होत मंगल गीत ॥
सुचि४ मासके सुचि१ पक्ख द्वै अहि अब्द भू१८८२ ॥
दसमी१०दिपी पैंतनी जहाँ पति मंद७ छंद मिलाक॥
निज लग्न पुव्व अनेह यों तहँ संकल्पों नरनाह ॥

* जिस पुर में जाना था उसके समीप † सेखावत ॥ ९० ॥ ‡ प (राति) १ घोड़े को चलाने (फेरने) में चतुर २ एक पैर से खोड़ा ३ विपरीत लक्षण वाला ४ निर्लोभी ॥ ९१ ॥ ५ जूंझनों का पति श्यामसिंह ६ दांता नामक पुर के पति सहित ॥ ९२ ॥ ७ नजर ८ डेरे में ९ लग्न के समीप आने पर अपने घर गये १० उस बडे उत्सव में सब सांढावाले ११ हर्ष के समुद्र में डूबे ॥ ९३ ॥ १२ आषाढ मास के १३ शुक्लपक्ष की दशमी रूपी १४ स्त्री शोभायमान हुई तहां १५ शनैश्चर वार रूपी पति स्वतंत्र होकर मिला ॥ ९४ ॥

चउ४दंत१ पै मघवा२ कि सोभित व्है सची[2]हित चाह ॥
इचि अग्ग तोप१न पंति ओपन कंति भंति अनेक ॥
वहि तास पिठ्ठि निसान धारन इंठि[3] वारन२ केक॥ ९५ ॥
तिन पिठ्ठि गाहन व्यूह व्याहन३ लै तरारन तत्थ ॥
चहुँ४ ओर व्है तिन दोर चंक्रमें[4] जोर संक्रम सत्थ ॥
तिनमध्य पत्ति४न[5] व्यूह तक्खिनं[6] व्है सहस्रन संग ॥
इनमध्य हत्थि५न व्यूह सत्थिन जूह ऊह उमंग ॥९६॥
तिनमैं तथा परिवेसँ[7] पत्ति६न व्है बिसेस प्रतान ॥
बिच१ यों लस्यो वरनाग[8]२ मेरु२ कि द्वीप जंबुव२मान ॥
गज अग्ग व्है कछु चोक ता बिच नञ्च१बादन२ गेय[9]३ ॥
पननारि१ सज्ज भई कहार२न खंध पट्ट३न प्रेय ॥ ९७ ॥
वनि अग्ग१थेंई[10]२तथुंग३धुंकट१धृंक२पिठ्ठि३ बिभाग ॥
रस प्रीति वास बिलास मंडिय मेघ[11]१ मंजुल राग ॥
सा१रंभ मूर्छन ता१हिसों ग्रह१ अंस२न्यास३गृहीत ॥
गं[12]३१नि७२हीन ओडव३जो अहोबल१वज्रवपु२मत गीत९८
संगीत[13] आदिक पारिजातक१ग्रंथमैं सुर२ प्रसिद्ध ॥
वरखा३ समागममें मनोज्ञ करैं [14]मरासुग विद्ध ॥

---

२ इन्द्राणी के हित की चाहसे मानों १ऐरावत पर इन्द्र शोभायमान हुआ ३ इष्टि (अभिलाष) युक्त कितने ही हाथी चले ॥ ९५ ॥ ४ इधर उधर दौड़ना ५ पैदलों का समूह ६ उस समय ॥ ९६ ॥ ७ पैदलों के घेरे में ८ राजा की सवारी का श्रेष्ठ हाथी ऐसा शोभित हुआ जैसे जंबूद्वीप में सुमेरु पर्वत ९ गाना ॥ ९७ ॥ १० ये सब नृत्य और वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं ११ सुन्दर मेघराग ने "यह विवाह आषाढ मासमें हुआ इसकारण इसी समय के मेघरागका वर्णन किया है॥" आरंभ सहित जो मूर्छना उसी से ग्रह, अंश, और न्यास ग्रहण किये १२ गंधार और निषाद से हीन(ये दोनों स्वर मेघराग में नहीं लगते हैं) जो अहोबल और हनुमानके मतसे औडव[पांच स्वरवाला]राग है वह गाया ॥९८॥ १३ संगीतपारिजातक नाम ग्रन्थमें १४ कामदेवके बाणोंसे वेधन करता है

रागार्णवा१दिक तंत्र गत संपूर्णा१ आदि२ जु राग ॥
बपु रूप धंद्रयइ३ उत्तरायत१ मूर्छना२ प्रविभाग ॥ ९९ ॥
सत बैजविग्रह१को प्रमानत बर्तमान बिशेष ॥
इम पुब्ब१ उक्त२ हि उँद्दरयो सबिलास लासित श्रेय ॥
दिपि नीलउत्पल१ आभ बिग्रह२ इंदु१गोर२दुँकूल३ ॥
सपिपासं चातक१यक्षयमान२ सु मत्त जुव्वन१मूल॥१००॥
पीयूष१ मंदस्मिता२ऽऽर्द्रपल्लव ओठं३ अंबुद१ ऐन२ ॥
गन धीर बीर१न जुट्ठ२ तुट्ठत३ बारि१ बुट्ठत गैन२ ॥
कलकेक केकिं१ रूँचा२ रचावन३ व्है नचावनहार४ ॥
इहिरूप राग लयो उठाइ सु सर्वराग अगार ॥ १०१ ॥
मल्लारका१दिक पंच५ तिय पति उप्फन्यों बय मत्त ॥
अतिमोद ठानत रूँच्प१ आदिन रीझमैं अनुरत्त ॥
श्रुति१ जाति२ग्राम३रु मूर्छना४ सब थप्पि संभव थान ॥
तिय मंजु माप अलाप मंडिय ब्रह्मताल५ प्रतान ॥ १०२ ॥

१रागार्णव आदि ग्रन्थों में यह राग सम्पूर्ण(सात स्वरवाला) और आदि रागहै जिसके शरीरकारूप ॥९९॥२[ ]वर्तमानमें गानेवाले बहुत लोग१हनुमानके मतको ही प्रमाण करते हैं ५श्रेष्ठ नृत्यमें ऐसी मेघरागको ४उठाया, इस रागका शरीर६ गहून (रात्रिविकाशी कमल)के समान और चन्द्रमा जैसे श्वेत ७ वस्त्र हैं, ऐसे यौवनवाले मुख्य मेघराग की याचना करनेवाला ८ प्यासयुक्त चातक(पपीहा) है ॥ १०० ॥ ९ अमृत रूपी जिसका मंदहास्य १० गीले पत्तों रूपी ओठ और मेघ ही जिसका घर ११ धीर वीरों के समूह से युक्त, प्रसन्न होकर आकाश में जल बरसानेवाला १३ मयूरों को १२ मधुर ध्वनि की १४ इच्छा कराकर नचानेवाला, इस रूप के मेघराग को उठाया जो सब रागों का १५ घर है ॥ १०१ ॥ १६ मल्लार, भूपाली, टंक, सारंग और गूजरी, इन पांच स्त्रियों का पति यौवन में मस्त होकर बढा १७ दुल्लह आदि को रीझ में प्रीति कराकर हर्ष कराती हुई उन वेश्याओं ने बाईस श्रुति, पांच जाति, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्छना को संभावित स्थानों पर स्थापन करके सुन्दर मापसेअलाप रचकर १८ब्रह्मताल (इकताला) फैलाया ॥ १०२ ॥

चउ४कोन पट्ट१न तास पों पैयन्यास२ मंडित चित्र ॥
मनु वाटिका१ बहु पुप्प झौंर३न भास३ भौंरन मित्र ॥
किंमु पत्र१ पैं बहुचित्र२ सोभित चित्रकारन केर ॥
इम अंघ्रि उठ्ठत इष्ट आकृति दैन भा कृति देर ॥१०३॥
पयफेर अंकुस घेर१ घुम्मत केंखिका कि पतान२॥
मुरिजात ज्यों लचकात लंक विबंक तुट्टन मान ॥
फविजात तंडव पों गता१गत२ सौंचि३ चक्र४ फिराव ॥
भ्रमिजात मैंच्छरि भावमैं गुमिजात अच्छरिभाव ॥ १०४ ॥
तत१ आदि वादन च्यारि४ नैंादन धारि रारिहु तत्थ ॥
सब झैंकु१ धित्थ२पिपी३ ठनंक४ न मान मेलत सत्थ ॥
उद्ग्राहक१ रु मेलापक२ ध्रुव३ अंतर४रु आभोग५ ॥
जहँ लहि गीतक पंच५ भागन सहि संभव जोग ॥१०५॥
पद१ ताल२ ओ स्वर३ पाट४ तेन५ बहोरि बिरुदक६हु तत्थ ॥
इम गीत अंग छ६ भंग आश्रित संभवी क्रम सत्थ ॥
मिलि देस ताल१ रु वानि२ मानुज३ गीतँ जो हुव गीत ॥

चार कोनेवाले१वस्त्र(बिछायत,पर अथवा चार कोनेवाले उस पाटिये(तखत) पर चरणोंसे विचित्र२विन्यास रचा सो मानों३बगीचेमें पुष्पोंके बहुत गुच्छों पर उनकेमित्र भ्रमरोंने प्रकाश किया है४किंवा पत्रके ऊपर चितेरोंने शोभाय मान चित्र किये हैं ५ इस प्रकार उन नायिकाओं के चरण अनुकूल आकृति से उठते हैं सो ६शोभा करने में देरी नहीं करते ॥१०३॥ पैरों के फेरसे ७ लहँगे का घेर घूमता है सो मानों ८ छोटा डेरा फैला है ९ विशेष बांक वाली कमर को लचकातीहुई तूटीहुई (कमर) के समान मुड़ती हैं १० नृत्य में जाने आने और ११टेढी होकर गोलाकार फिरनेमें ऐसी शोभा पाती है कि जिसके भावमें१२ मच्छी भी भ्रम जाती है और अप्सरा का भाव भी गुम जाता है ॥१०४॥ १३ तांत आदि के चारों वाद्यों ने १४शब्द करके तहां पर युद्ध किया, यहां झैंकु आदि उन चारों वाद्यों के अनुकरण के शब्द हैं १५ गीत के इन पांच भागों को लेकर जहां जिसका संभव था वहां उसको मिलाया ॥ १०५ ॥ १६ ये राग के छः अंग हैं १७ वह गीत गाने योग्य हुआ, स्वर के घुजाने को गमक कहते

स्वरकंप जो गमका१रूप पंद्रह१५भेद तास प्रतीत ॥१०६॥
*तिरपा१रूप आदि१म लै तथा इम सर्व१५नामित१६अंत॥
जिम अष्टि१६ सम्मित एहि मिश्रित१६सोलहैं१६परजंत ॥
आरोह१मैं अवरोह२मैं थिति३ मैंहु ए१६ इम आनि॥
लहरी मनों रचिबेलगी स्वर सिंधु तानन तानि॥१०७॥
जति१ प्रास२ प्रापित गीत१ दस१०गुन व्यक्तता१दिक जुत्त॥
त्रि३विधत्व भिन्न प्रबंध३ जे तनु इक१इक१अछुत्त ॥
तिन्ह नाम ए सूडस्थ१ अलिश्रित२ बिप्रकीर्ण तथाहि ॥
एला१दि रूपापित अंग अष्ट८न सूड१ नामक आहि॥१०८॥
वर्णा१दि मित चउबीस२४सों अलिसंश्रया१रूप बखान ॥
श्रीरंग१आदि१छतीस३६सों वपु बिप्रकीर्ण३विधान ॥
जहँ पंच५ मान प्रबंध जातिहु आदि तत्थ छह६ अंग ॥
पुनि अंग इक१इक१ हानि जे पगि सिद्ध व्है क्रम संग१०९
अभिधान ए तिन्ह मेदिनी१ अरु नंदिनी२ अभिराम ॥
पुनि दीपनी३तिम पावनी४ तारावली५ जुत ताम ॥
तिन्ह ठानि संभव१आनि संभव२में असंभव३ त्यागि ॥

हैं उसके पन्द्रह भेद हैं ॥ १०६ ॥ जो * तिरपा को आदि लेकर सब पर्यन्त पन्द्रह हैं और नामितको अंत में लेने से सब मिलकर सोलह भेद हैं जिनको चढाने, उतारने और ठहरानेमें, इन सोलहों गमकों को लाकर स्वर रूपी समुद्र में † तानों को फैलाकर मानों लहरें रचने लगीं ॥ १०७ ॥ जती और प्रासको लेकर व्यक्त आदि राग के दश गुण हैं वे भिन्न प्रबंधों से १ तीन प्रकार के हैं. वे एक एक से नहीं मिलते जिनके नाम आगे कहते हैं इनमें एलाको आदि लेकर आठ अंगवाला सूड नामक २ प्रसिद्ध ३ है ॥ १०८ ॥ वर्ण से आदि लेकर चौवीस के प्रमाणवाला आलिसंश्रय नामका कहते हैं और श्रीरंग को आदि लेकर भेदवाला विप्रकीर्ण है तहां पांच प्रमाण. जाति में प्रथम के छः अंग हैं जिनमें से एक एक कम करने से क्रम सहित सिद्ध होते हैं ॥ १०९ ॥ ४ जिनके नाम आगे कहते हैं ५ सुंदर ६ तहां, इनको जहां जिसका संभव

रस प्रीति आलय१बोर दै सब रंजये अनुरागि ॥११०॥
सिव१ सक्ति२ संभव ताल देसिय२ उक्त व्है किय सज्ज ।
तस वर्ण पंच५ अनुद्रुत१दिक हेर हेलय कज्ज ॥
लघु इक्क१के सु सपाद२लघु३ मत भेदतैं दुव२ मान ।
उच्चारिबे मित व्है अनुद्रुत१ वर्ण१ तस अभिधान ॥१११॥
मिलि द्वै२अनुद्रुत इक्क१व्है द्रुत१।२वर्ण काल प्रमेय ।
मिलिकैं द्रुतद्वय२इक्क१लघु१।३लघु द्वै२मिले गुरु१।४ गेय ॥
लघुतीन३तैं प्लुत१।५वर्ण व्है इक१ ताहि मान ललाम ।
रहि तालमैं मिति पंच५ भेदक वर्ण ए५ अभिराम ॥११२॥
अब तालके दस१० प्रान व्है तहँ काल१ उक्तहि एस ।
मिलि बोध्य मग्ग२क्रिया३रु अंग४ग्रहा५रुय जाति६विसेस॥
पुनि है कला७लय८त्यों गिनोजाति९दसम१०तहँ प्रस्तार१०।
इहिँ दसक१०कारि असुमंत सद्विय ब्रह्मताल उदार ॥११३॥
ता१नाम दक्खिन१पानि जानिल२नाम वामकर२तत्थ ।
सिव१ सक्ति२ ए मिलि ताल संभव व्है कहे क्रम सत्थ ॥
सिव१तैं समाहत सक्ति२ व्है बिधि३अन्यथा१बिधि हानि२।

था वहां उनको लाकर असंभव को छोड़कर प्रीति रस के घर में डुबोकर सब प्रेमियों को प्रसन्न किये ॥ ११० ॥ एक शिव से और दूसरा शक्ति से उत्पन्न हुए दो प्रकार के देशी ताल कहते हैं सो वहां सज्जित किये इनके अनुद्रुत को आदि लेकर लयके लिये पांच वर्ण कहे हैं यहां मत भेद से कोई एक लघु और कोई १ सवाको अनुद्रुत वर्ण कहते हैं ॥ १११ ॥ दो अनुद्रुत मिलकर एक द्रुत होता है जिससे वर्ण के समय का २यथार्थ ज्ञान होता है, दो द्रुत मिलकर एक लघु और दो लघु मिलने से गुरु ३ कहते हैं और तीन लघु से एक प्लुत नामक वर्ण का ४सुंदर प्रमाण होता है सो ताल में येही वर्ण नामके सुंदर पांच भेद हैं ॥११२॥ अब आगे तालके दश प्राण कहते हैं इन दश प्राणों से ५ प्राणधारी ब्रह्मताल लाया ॥ ११३ ॥ इन में दक्षिण हाथ से बजनेवाला ताल शिव से और वामहाथ से बजनेवाला शक्ति से उत्पन्न हुआ कहते हैं जिनमें प्रथम ६ दहिने हाथ से बजाकर फिर वाम हाथ से बजावें वह बिधि

संपा१ रु ताल२ रु सन्निपात३ अघात बेद प्रमानि ॥११४॥
इम नर्तकी जन जूह पट्टनपैं कहारन अंस ॥
रचिबेलगी नृत्य गीत सुचि रस अन्य तिय अवतंस ॥
करि हाव१भाव२कटाक्ष३के क्रम अच्छरिन अनुकार ॥
हुव मोहिनी मन जन्य१मंडप२ लोक मोहन हार ॥ ११५ ॥
त्रिक३गान१बादन२नाट्य३संतत मान मेलित मोहि ॥
इक१लै प्रसारिय राग२ आदिक रोहि१ त्यौं अवरोहि२ ॥
सह घेर अंसुक फेर घुट्टन लंक तुट्टन संक ॥
बिरचैं जथातथ आनि संभ्रम ठानि लंक१अलंक२ ॥ ११६॥
लसि मोद लंभहिं इक्खि अभ्रहिं जन्य१ मंडप२ लोक ॥
शृंगार१मैं सनिभाव जे भनि इष्ट चाहत ओक ॥
इम बिंद बुट्ठत बित्त संचय गम्य स्वासुर औन ॥
पहुँच्यो पुरीजन लाजके निधि पाल ठानत नैन ॥ ११७ ॥
अति प्यार कार बजारके जन वारके दुहुँ२ओर ॥
लखिबे अनारतकार लग्गिय चंद१ जानि चकोर२ ॥
उपदा१ निजोचित उद्धरैं रु करैं निछावरि२ केक ॥
दानीय जे खिनपैं दिपे इनमेंहु आढ्य अनेक ॥११८॥

युक्त है और ऐसा नहीं करने से रीति पिगड़ती है ॥ ११४ ॥ १ इस प्रकार वेश्याओं का समूह २ कहारों के कंधे के पाटिये के ऊपर ३ शृंगार रस में ४ अन्य स्त्रियों का मुकुट ५ अप्सराओं के सदृश ६ मांढा और जानके लोकों के मनको मोहने के लिये वह मोहन करनेवाली हुई ॥ ११५ ॥ ७ चढाकर और उतारकर, घुटनों से ८लहँगे के घेरको फेरकर ९कमर टूटने की शंका से ॥११६॥ ११ आकाश में इस १० लाभ को देखकर जान और मांढा के लोक प्रसन्न होते हैं (कहारों के कंधे पर आकाश में नचती थी इस कारण आकाश में देखना कहा है) १२शृंगार रस में भीजकर १३वांछित घर को चाहते हैं १४धनके समूह की वर्षा करता हुआ जाने योग्य श्वसुर के घर पर गया ॥११७॥१५निरंतर १६ अपने उचित भेट निकालते हैं १७ अनेक धनवान शोभायमान हुए ॥११८॥

इम जाइ तोरन सद्धि लौकिक दै कसां अवघात,
वलि वंदि१कै वलि दीप२पंतिय केर वेरै विभात ॥
प्रविसाइ त्यों अवरोध भूपहिँ थप्पि उद्वहँ थान,
वॅरन्यों अनुक्रम ठानि व्याहिय पुव्व१ व्याह प्रमान॥११९॥
विधि वेद सूचित सद्धि दुल्लह१ दुल्लहीं२ वपु वाम,
वपु वाम२ नेमँ वरी करी वपु वाम२ प्रेम प्रकाम ॥
कुल सेखके अभिजातँ कूरम स्यामसिंह सुताजु,
कहिये गुलावकुमारि२०२१२कोविद नामधेय नुँताजु॥१२०॥
गुन१ रूप२ उत्तम चाहि ताहि बिबाहि कैं पटगेह,
अभिराम राम२०२१४ नरेस आइउ ओज१ सोज२ अछेह ॥
निज कृष्ण१ धीसख बुल्लि वंटन त्याग अप्पि निदेस,
प्रारंभ मंडियँ कित्ति पूरन वाढ देस१ विदेस२ ॥ १२१ ॥
कैविके पिता कविराज चंड१ रु भट्ट रत्न२ सुकज्ज,
करिवे लगे सव द्रव्य चैं करि स्वामि जे करि सज्ज ॥
रजनी द्वितीय२हु सद्धि लौकिक रीझिकैं अधिराज,
किय इभ्यँ गाइक१गाइका२ कुल सर्व साज समाज॥१२२॥
रहि यों किते दिन त्यों वँनीपक वर्गकों अनुरत्त,
द्विपँ१वाजि२भूपन३वस्त्र४रुप्पय५आदि उत्तम दत्त ॥
पुर जुज्झनौँ सन सिक्ख१संग सु दाप२ओसर पाइ,

१ तोरण पर चाबुक का प्रहार करके २ शरीर विशेष शोभा युक्त हुआ ३ विवाह के स्थान पर स्थापन करके ४ जोधपुर में प्रथम विवाह हुआ उसमें वर्णन किये अनुक्रम से ॥ ११९ ॥ उस स्त्री के शरीर को प्रेम सहित धरकर अपने वाम शरीर में उसको ५अरधांगी बनाई ६सेखावत कछवाहे स्यामसिंह की पुत्री ७ स्तुतियोग्य ॥ १२० ॥ ८ डेरों में ९ मंत्री १० आरंभ रचा (किया) ॥ १२१ ॥ ११ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पिता १२ धनवान् ॥ १२२ ॥ १३ याचकों के समूह को प्रीति युक्त होकर १४ हाथी. चहुवान रामसिंह के चलने पर

चहुवान चल्लत मंडपी हदतैं मुरे चहुँ आइ ॥१२३॥
तहँ सेख नत्तिय खेतरीपति नामतैं बखतेस,
उँपदा कर्यो तिहिँ खास अप्पन बाज१ बेग बिसेस ॥
अति ईंच्छ उड्डन कच्छ संभव लाडिया१ अभिधान,
बर अंग रंग कुमैत२ अंगन जंग गैन बिमान ॥ १२४ ॥
लाहि निहि सप्ति सु ऊहै दुरघाँ हठ सप्त७सप्ति लुभाइ,
प्रतिमग्ग प्रस्थित टारि जैपुर यौं बिस्यो पुर आइ ॥
बिरचे असेस बिसेस ऊँयाहृत बेद१लोक२ बिधेय,
दिय पैट्ट१ तत्वहजार२५०००दम्मन दुल्लही हित देय॥१२५॥

॥ दोहा ॥

स्यामसिंहदास जु सचिव, स्वेसुताकै दिय सत्थ॥
सिविबिराम१ नामक सुपै, आकारित हुव अत्थ ॥ १२६ ॥
सम्मति करि तस तंत्रसौं, माटुंदा१ पुर मुख्य ॥
कृष्णाराम१ धात्रेय किय, स्वामि हुकम चाहि सुख्य ॥१२७॥

॥ मत्तमयूरः ॥

यौंही बिंदौं१ जाहि प्रधानी करि अप्यो, माटुंदा१ पच्चीससहस्री २५००० बौलि मप्यो ॥
ताहूनैं तच्छंदं बढायो बसु तामैं,सौरो पट्टा फुल्लनछायो सुखमामैं१२८

१ मांडा के लोग अपनी हद से २ चारों ओर से पीछे फिरे ॥ १२३ ॥ ३ नजर ४ उड़ने में चतुर ५ कच्छ का पैदा हुआ ६ लाडिया नामक घोड़ा युद्ध क्षेत्र में ७ आकाश का विमान ॥ १२४ ॥ दोनों ओर हठ होकर वह घोड़ा कठिनाई से लिया जिस पर ८ सात घोड़ोंवाला (सूर्य) भी लोभ करता था ९ बुंदी में प्रवेश किया १० उक्त (कहेहुए) ११ पट्टा ॥ १२५ ॥ १२ अपनी पुत्री के साथ शिवराम नामवाले को यहां १३बुलाया ॥१२६॥१२७॥ १४दुलहन ने उसी को प्रधान करके १५ हासिल १६ उसने अपने अधिकार में और भी धन (हासिल) बढाया १७ सब पट्टा १८ परम शोभा से फूलोंछाया होगया ॥१२८॥

रस भूति स्वदूतिन ऊति रची, वयवारिन लच्छितिकान बची ॥
कुलटा तजि गेह सनेह ऊमी, जियमैं मुदितान सु प्रीति जमी ।१६।
अनुपुव्वसयानन भीति अरी, पिय संग सहेट न भेट परी ॥
परभोगदुखीन सखीपरखी, हिय रूप रु प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥
पतिप्रोषितकान विलाप पर्‌यो, क्रुध मानस खंडितिकान कर्‌यो ॥
दिन टेक निबाहि अबैं दरिता, तजि मान उठी कलहंतरिता ॥ १८ ॥
झगि विप्रसलब्धन सोक झिल्यो, मन सेट सहेट न आनि मिल्यो।
उतकंठिनि पुच्छि निदान अली, लखयो मग बासकसज्जलली१९
भर दर्प अधीनइनान भज्यो, अभिसारिनि बेस नयो उपज्यो ॥
वहु गंध कुवेलनको बिकस्यो, ससिहू व उदैगिरितैं निकस्यो।२०।
ससिके बसि ओषधि पोष लह्यो, गहकाय चकोरन मोद गह्यो ।

संकेतादि सूचना करिबेकं ॥ १५ ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीमें भूति वैभव जिनकै ऐसी. स्वदूति स्वयंदूतिकाननैं. यह नायिका प्राचीननैं लिखी नहीं, अरु चमत्कार विशेष हू नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविनके मताऽनुसार लिखिदीनी है. ऊति क्रीड़ा. वयवारिन वयवारी अपनैं समान अवस्थावारी सखी तिनसों. लच्छितिका लच्छिता नायिका. नबची नहीं छिपी रही. सनेह नेह सहित. ऊमी चली. मुदिता मुदिता नायिकानकै ॥१६॥ अनुपुव्वइति ॥ अनुपुव्वसयानन अनु है पूर्वमें जिसकै ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना तिनके. भीति त्रास संकेतके नाशादिककी. सहेट संकेत तहां. भेट मिलाप. परभोगदुखीन अन्यसंभोगदुखिता तिननैं. सखीपरखी यहां विपरीत लच्छनासों याकी शत्रु जो नायकसों संभोग करिआई सो दूती जानिये. रूपरुप्रेमवती रूपगर्विता प्रेमगर्विता ए दोऊ॥१७॥पतिप्रोसतिकानइति॥ पतिप्रोसतिका प्रोषितपतिका तिनके. क्रुध क्रोध. मानस मन. खंडितिकान खंडिताननैं. दरिता डरी हुई ॥ १८ ॥झगिविप्रइति ॥झगि दूनी प्रकुपित व्हैकैं. विप्रसलब्धन विप्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनकै. मनसेट मनस इट, मन ताको इट स्वामी ऐसो नायक. उत्कंठिनि उत्कंठिता तिननैं. पुच्छि पूछ्यो. निदान आदि कारन नायकके अनागमको. लखयो लख्यो. मग मार्ग. वासकसज्जलली वासकसज्जा ललनानैं ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार. दर्प गर्व ताको. अधीन इन अधीन वशीभूत है इन पति जिनकै ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिननैं. अभिसारिन अभिसारिका तिननैं. कुवेलनको कुवेल कुवलय लोके गद्दूल तिन·

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे रामसिंहजूम्भणांनामकनगरद्वितीयविवाहकरणानन्तर बुंदीप्रत्यागमनवर्णनमष्टमो ८ मयूखः॥ ८ ॥

आदितः सप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७० ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभा ॥

दोहा—इम बिलसत बुंदिय अधिप, वैभव अतुल बिलास ॥
जुगर रानिन अनुरत्त जहँ, प्रस्तरि स्वजस प्रकास ॥ १ ॥
सूरि१ सुकवि२ सुभट३न सहित, विहरत रहित बिकार ॥
सर१धर२बन३उपबन४सदन५, संसद६सग्धि७सिकार॥२॥
ऋतु पाउस अंतर रसिक, राजत अतुल रसेस ॥
समनुभूत संगीत१ सह, समुचित कुतुक असेस ॥ ३ ॥
पाउस३ सुख इम भुग्गिपहु, बिलसत सरद४ बहार ॥
इस७ प्रति अह बिलासिय अखिल, सह कत्तिय८महसार॥४॥
सूचित हुव गज धृति१९८२ सकहि, अर्ज्जुन१स्मरातिथि१३ उंज्ज॥
प्रभु अमात्य कोटापुरहिं, प्रस्थित हुव गुनपुञ्ज ॥ ५ ॥
( )
कृष्णाराम अमात्यकोविद स्वामि सत्रुनसाल,
कालफिल्ड११२ अजरटसों मिलिबे चल्यो तिहिं काल ॥
सो हुतो तहँ थान सूचित ङ्गग वाह्यै प्रदेस ॥
वंगला१ जहँ बद्ध बिस्तृत लग्न लम्प बिसेस ॥ ६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रामसिंह का जूंभणां नामक नगर में द्वितीय विवाह करके पीछे बुंदी आने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ सत्तर ३७० मयूख हुए ॥

१ पण्डित २ तालावों में ३ सभा में ४ सामिल भोजन करने में ॥ १ ॥ २ ॥ ५ भूपति ६ अनुभव किया ॥ ३ ॥ ७ आश्विन मास में ८ उत्सव का सार ॥ ४ ॥ १० कार्तिक ९ सुदि तेरस के दिन ॥५॥ ११नगर के बाहर ॥ ६ ॥

॥ उक्कुरः ॥

जब सक्क बेद हय धृति १८७४ जात, बढि इत अंगरेजन *व्रात॥
छिति †कर दक्खिनीन छुराइ, इन लिय प्रांत यह अपनाइ ॥७॥
जैपुर१ जोधपुर२ धुर जोरि, बुंदिय३ उदयद्रंग४ बहोरि॥
करि बस त्योंहि खिल कोटा५दि, छिति सब स्वीय सासन छादि८
इति[2]सुख थान थप्पि अजंट, विरच्चिय तंत्र निज निज बंट॥
सहरन बाह्य[3] सासन संधि, बहुविध बंगला लिय बंधि॥ ९॥
करि इक१ सासिता[4] सब केर, मालिक थप्पि दिय अजमेर॥
बुंदिपनैर तब लहि बंट, आइउ पुव्व१ टाड अजंट॥ १०॥
तिम हुव कालफिल्डर२ द्वितीय, सजि इन्ह अन्यतर१ घर स्वीय॥
किय तहँ बंगला१ चिति[5]काम, पुरसन पुव्व१धर सिर धाम ॥११॥
सो हुव पीठ[6]माल समाप्त, पुनि रहि रुद्ध नहि चँय[7]प्राप्त॥
तजि कछु हेतु करि इम ताहि, चर्य तस नंदे[8]गामहि चाहि ॥१२॥
तिहिं पुरतें सु उत्तर४।७ ओर, दिय तस अस्त दिस३।५ नदि दोर
पगि कछु दूर नदि सन पुव्व, परिचित[10] बंगला१ जु अपुव्व ॥१३॥

॥ नपुव्व१अपुव्व२ अंत्यानुप्रासः ॥ १॥

तबसन हो अजंटहु तत्थ, प्रभु पुर आत अवसर अत्थ॥
इहि प्रति मिलन उक्त अनेह[11], आदरि कछु प्रयोजन एह॥ १४॥
तक्कि हित प्रभु मुसाहब ताम, नयपटु कृष्णाराम स नाम॥

*अंगरेजोंके समूह बढकर †दक्खिणियोंके हाथसे भूमि छुडाकर इस प्रान्तको अपने अधिकार में करलिया ॥७॥ १राजपूतानेकी सब भूमिको अपनी आज्ञासे छाई ॥ ८॥ २ इत्यादि स्थानों पर ३ नगरों के बाहर ॥ ९॥ ४ सब पर आज्ञा करनेवाला अर्थात् सब के ऊपर एक हाकिम करके उसको अजमेर में रक्खा ॥ १०॥ ५ बंगले की नीम (बुनियाद) डाली ॥ ११॥ ६ पीढा (थाला) मात्र तयार हुआ ७ काम रुककर संचय को प्राप्त नहीं हुआ अर्थात् पूरा बन नहीं सका ८ कोटे में उसको ८ बनाना चाहा ॥ १२॥ १० जानने योग्य अपूर्व बंगला हुआ ॥ १३॥ ११ कहे हुए समय में ॥ १४॥ १५॥

सुमति सु पाइ प्रभु सन सिक्ख, तानि प्रभु राज्य वैभव तिक्ख१५
पत्तन *नंदग्रामहि पत्त, तकि नय बंगला गय तत्त ॥
भिंटिय कालफिल्ड२ सु भाइ, वह जह रीति सम्मुह आइ॥ १६ ॥
मंदिर लैगयो सनमानि, तकि हित उचित स्वागत तानि॥
विरचन विविध†अवस्यनवस्य, रचि कछु मंत्र ‡विजन रहस्य।१७।
पुनि लहि गंधतैल१रु पान२, दुव२गहि दुरदिस नेह निदान॥
पुनि करि सिक्ख सिविरहिं पत्त, अर्थिन वितरि वसु अनुरत्त।१८।
इम तिथि असित१ मग्ग९ उपादि२, विरचन मिलन भल्लहिं वादि
विदित जु माधवादि विलास१, उपवन भल्ल कृत जहँ आस॥१९॥
जब तहँ हो सु जालम जात, माधव विफल दर्प मचात ॥
दमि निज नृपहिं मासिक देत, अप्पहि वनि नृपत्व उपेत ॥२०॥
प्रतिबल कथनमात्र प्रधान, सबविधि स्वामिभाव समान ॥
बुंदिय सचिव तब तिहिं वेर्ल, मंडन दुरदिस नय मय मेल ॥२१॥
माधवसोंहु चहत मिलाप, इम गय तास उपवन आप ॥
अभिमुख भल्ल सुनतहि आइ, बाहिर वेल वलज विहाइ ॥२२॥
बढि मग पंचसत५०० मित अंस, सम्मुह भिंटि अधिक प्रसंस ॥
पुनि दुव२ उक्त उपवन पत, विरचिय काल कछु हित वत्त ॥२३॥
दिय१ लिय२ अंतर१ बीटक२ देय, पटकुटैं पत्त पुनि सह श्रेय ॥
हुव यह दोजिर२ दिन व्यवहार, बलि करि भूप भेट विचार ॥२४॥
अंतर त्रि३दिन दै तस अग्ग, मेचक१ मिलत गुहतिथि६ मग्ग९ ॥

* कोटा पुर में गया ॥१६॥ † कई प्रकार से वश में नहीं थे उनको वश में करने को ‡ एकांत में सलाह की ॥ १७ ॥ १ अतर पान लेकर ॥ १८ ॥ २ माधव विलास नामक भाला का किया हुआ ३ बाग ४ है ॥ १९ ॥ ५ जालमसिंह का पुत्र ६ माधवसिंह ७ अपने राजा को दंड देकर तनखाह देता था ॥ २० ॥ ८ उस बाग में ९ नीतिमय मिलाप करने को ॥ २१ ॥ १० सन्मुख ११ बाग के कोट को छोड़कर बाहर आया ॥ २२ ॥ २३ ॥ १२ डेरे में ॥ २४ ॥

माधव स्वीय नृपहिँ मनाइ, बुल्लन उतहु *श्रील बनाइ॥ २५ ॥
परिकर सज्ज नृप ढिक पेलि, मनिगन आभरन१ पट२ मेलि ॥
बुंदिय सचिव तहँ बुलवाइ, सब बिधि मिल्लन रीति सधाइ ॥२६॥
वर हय१ खिल्लत२ †अर्घ बिसाल, मनिमय ‡पट्ट३ मुत्तियमाल४॥
निज नृप पानि प्रति पहुँचाइ, दृढ हित बस्तु च्यारि४ दिवाइ ।२७।
आदरि नंदग्राम अधीस, सूचित ठानि इम बखसीस ॥
सद दिय कृष्णारामहि सिक्ख, तुलि मति स्फुल सम्मति तिक्ख२८
इम बलि भिंटि उक्त अजंट, कृत दुव२ राज्य भुव गत कंट ॥
इम मुरि हड्ड६१इंद अमात्य, बुंदिय भू बहिष्कृत जात्य३ ॥ २९ ॥
सासन स्वसिर निवहन सूर, हुव नत आइ स्वामि हजूर ॥
बिदलित बिक्खि मतिबल बाद, प्रभु किय कज्ज सिद्धि प्रसाद३०
मेचक१ तदनु उतरत मग्ग९, अधिगत पक्ख धवलित२ अग्ग ॥
बनि जहँ तीज३ तिथि ससि बार२, बिरचिय गोठँड्गोन बिचार३१
करि दुबिलान१ इक्क१ मुकाम, रुचि गय गोठपुर२ प्रभु राम२०१।
साहय कालाफिल्ड२हु संग, दल सह पत्त सूचित ढंग ॥ ३२ ॥
पट्टनिनैर रन करि पुव्व, अरिदहि अंबुग्गसि१ किं उव्व२ ॥
खिरि बलवंत२०१।तिलतिल खेत, सूचित भ्रात१ सूनु२।२ समेत३३
तिहिँ किय सभ्य निज त्रिदिवेस, सुत लघु भोम२०२ तस रहि सेस ॥
तब दिय तातें आसन ताहि, नृपवर प्रीति१ रीति२ निबाहि ॥३४॥

*अपने राजाको लक्ष्मीवान् बनाकर॥२५॥२६॥ †बडे मूल्य के ‡शिरपेच॥२७॥ १ सभा से ॥ २८ ॥ २ फिर अजंट से मिलकर, बुंदी की भूमि के बाहर से यह ३ शूद्र (कृष्णाराम) ॥ २९ ॥ ३० ॥ ४ शुक्लपक्ष के प्राप्त होने पर ५ गोठड़ा नगर में जाने का विचार किया ॥३१॥ ६सेना सहित ॥३२॥ ७ समुद्र में ८ वड़वाग्नि के समान ॥ ३३ ॥९इन्द्रने उस बलवंतसिंह को अपना सभासद किया जिसका छोटा पुत्र १० भोमसिंह बाकी रहा तिसको ११ पिता का पाट दिया ॥ ३४ ॥

लहि जस आइ पुनि दुविलान, अहे कछु रमि सिकार अमान ॥
परतट जो अजंट पठाइ, इन पुर अप्प विलसिय आइ ॥३५॥
समुझहु यह१८८२हि लग्गत साक, जट्टन खंडि मंडि कजाक ॥
तोपन भरतपुर गढ तोरि, मृध जय नवन मान मरोरि ॥३६॥
थिर सब देस१ पुर२ वस थप्पि, अर्भक नृपहिं सो पुनि अप्पि ॥
करि यह कंपनी जय काम, नृप१ अपर२ उद्धरिय जस१नाम२ ३७
भाकत कतिक इहिं १८८२ सक भाव, वर्मा नृपहु लास बढाव ॥
सूबा अराकान१ स्वकीय, तिम बलि तनासरम२ द्वितीय२ ॥३८॥
द्विक२ यह अंगरेजन दिन्न, कतिकन अत्र संसय किन्न ॥
समुझहु ता१८८२हि सूचित साक, जैपुर ठानि कपट कजाक ३९
श्रावक इक्क१ झुंतं१ सनाम, करि तिहिं धुंत्त धुत्तन काम ॥
अंतर भेदि सब अवरोधं, बहु दल छवि रानिन बोध ॥ ४० ॥
मुख्य जु भट्टिनी तिन माँहिं, निस्त्रप नाँहिं जिहिं किय नाँहिं ॥
तिय वह भट्टियानिय१ तास, हुव करि द्वैश हि कुल उपहास।४१।
रूपा किंकारिय अघरत्त, तस हुव मुख्य मंत्रिय तत्त॥
इत राहि झुंन१ बाहिर ईस, उत द्वैव२ उक्त मध्य अधीस॥ ४२ ॥
श्रावक बुद्धि फंद प्रसारि, राउल वैरिसल्ल बिडारि ॥
बाहिर मुख्य झुंत१ कुबोध, रूपां१ धाँसँखी अवरोध ॥ ४३ ॥

१कुछदिन २चामल नदी के परले किनारे ॥३५॥ ३ युद्ध करके जाटों को मारकर ४युद्ध में ॥३६॥ ५बालक राजा को भरतपुर पीछा देकर ६ ईष्ट इंडिया कंपनी ने जय का काम करके भरतपुर के राजा और ७ आगे आनेवाले समय के शुभ भाग्य के यश और नाम का उद्धार किया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ कितने ही लोग इसमें संदेह करते हैं ॥ ३९ ॥ १० झूंताराम नामक ११ धूर्त ९ सरावगी वैश्यने धूर्तों का काम करके १२ सब जनाने को अपने में मिलाकर ॥ ४० ॥ १४निर्लज्ज १३ भटियानी रानी ने नाहीं नहीं की ॥ ४१ ॥ भीतर रानी भटियानी और रूपां बडारन ये १५ दोनों ही मालिक रहीं ॥ ४२ ॥ १६ निकाल कर १७ जनाने में रूपां बडारन उसकी मंत्री रही ॥ ४३ ॥

मन जिहिँ झूंत१ रानिन२न मेलि, खलपन खेल अद्भुत खेलि ॥
महलन छन्न द्वैरहि मिलाइ, समुचित[1] राउलहिँ निकसाइ । ४४ ।
बहु बसु[2] अंगरेजनअप्पि, थिर सब तंत्र[3] अप्पन थप्पि ॥
कति अवरोध[4]जन प्रतिकूल, सह हठ जे लखे हिय सूल । ४५ ।
जे सब नारि१ नाजर२ जूह, आये न लखि निज मति ऊह[5]॥
गहि तिन्ह पटक्कि कैद[6] अगार, दुष्टन रुद्ध करि करि द्वार । ४६ ।
गन बहु ठानि अनसन[7] गूढ, मारे सतन[8] जन करि मूढ ॥
सिसु बय पिक्खि नृप जयसीह, वहि त्रिक३ त्रास तास अबीह[9] ४७
मिलि तह स्यामसिंह४।१प्रमत्त, प्रभु स्वसुरत्व[10] चाहि जिहि पत्त॥
सठ इक चिमनसिंह५।१ सनाम, धरि भव मनोहरपुर धाम ।४८।
जो खल हो खवासिप्रजात[11], यह छिक्कर२ सेख कुल इत आत ॥
मालिक उक्त रानिय१ मांहिँ, अभिमत[12] किंकरी२ जुत आंहिँ ४९
इत हुव उक्त जुगर जुन एम, बाहिर झूंत[13]१वैश्य बिसेस ॥
तहँ इम नारि दुवर नर तीन[14]३, इम मिलि भुक्त राज्य अधीन ॥५०॥
दृढ दम झूंत१ रानिय२ द्वैरहि, हाकिम उग्र सब सिर ठेहि ॥
असहन[15] जे लखे भट और, जिन्ह दिय कढ्ढि घर बरजोर[16] ॥ ५१ ॥

१ राउल वैरीशाल उचित था जिसको निकाल दिया ॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों को बहुत धन देकर सबको अपने ३ आधीन कर लिया ४ कितने ही जनाने लोग विरुद्ध थे ॥ ४५ ॥५इनकी बुद्धि की तर्कना में नहीं आये ६ कैद घर में ॥ ४६ ॥ ७ खाने निराहार रखकर ८ सैकड़ों मनुष्यों को मार डाले, राजा जयसिंह को बालक जानकर इन तीनों (एक झूंताराम और दोनों उपरोक्त स्त्रियों) की ९ निर्भय त्रास बढ़ी ॥४७॥१०रावराजा रामसिंह का श्वसुर ॥ ४८ ॥ ११ पासवान स्त्री से उत्पन्न १२ रूपां नामक दासी सहित तीनों आदर पायेहुए तथा उस रानी का अभीष्ट साधनेवाले थे ॥ ४९ ॥ १३ झूंताराम वैश्य १४ इस प्रकार दो स्त्रियां भटियानी और रूपां और तीन पुरुष (झूंताराम और दोनों सेखावत) इन पांचों ने मिलकर सब राज्य को अपने अधीन करके भोगा ॥ ५० ॥ १५ नहीं सहने योग्य १६ जबरी से निकाल दिये ॥ ५१ ॥

नतसिर[1] जे रहे बल नासि, मुख्यहु ते लयेहि बिसासि ॥
जयपुर ईस१ तजि भजि जार२, इम हुव अंधकार अगार ॥५२॥
राउल जो प्रधान विरत्त[2], मेरित मान बिनु गृह पत्त[3] ॥
सो रहि इंग निज सामोद, कट्टहि काल पत्त प्रमोद ॥५३॥
मिति सक अग्ग अहि धृति१८८३ मान, थिर गिनि अज्जभुव[4] नि-
ज थान ॥
हो इह नवम९ जनरल हंत, जिहिँ कहिँ सिंधु जुग२ परजंत॥५४॥
अवहित[5] कंपनीजन आनि, मन निज छंद अज्जन मानि ॥
अब दिय यह निदेस अभंग, स्त्री जिन[6]१ दहहु निजपति२संग॥५५॥
थित पुनि नवम९जनरल थान, अह कछु[7] मटकलप१०१अभिधान
अर्ज्जन रोध मेटि असेस, दिय जिहिँ सुद्धि लेख निदेस ॥ ५६ ॥
तिम लिखि खबर छंद तब तेहि, हुव मिथं प्रहित जित तित हेहि ॥
सक इत उक्त १८८३ मिति अनुसार, बनि जहँ छह्मुख तिथि६
बुध वार ४ ॥ ५७ ॥
पगि सित२ पक्ख श्राम सहस्य[12]१०, रुचि मन कोहु कज्ज रहस्य ॥
पिप्पललंब जहँ तहँ प्रात, अह चढि पंच५ नाडिय[13] आत ॥५८॥
गदियत खेरला१ जहँ ग्राम, आवत मटकलप१०१ अभिराम ॥

---

१ मस्तक झुकाकर ॥ ५२ ॥ २ प्रधानपन से विरक्त ३ विना मान होकर घर गया ॥ ५३ ॥ ४ आर्यावर्त को अपना निश्चल स्थान समझ कर. खेद है कि जिसका कथन पूर्व और पश्चिम के दोनों समुद्रों तक था उस नवमें गवरनर जनरल ने ॥ ५४ ॥ ५ कंपनी के लोकों को सावधान करके यह आज्ञा दी कि स्त्रियों को अपने पतियों के साथ ६ मत जलाओ अर्थात् सती होना बंध किया ॥ ५५ ॥ ७ कुछ दिन ८ आर्य लोकों की सम्पूर्ण रोक मेट कर खबर के लेखों (अखबारों) की आज्ञा दी ॥ ५६ ॥ उसी समय से ९समाचार पत्र लिखे जाकर १० परस्पर प्रेरित हुए जो अब तक हैं ११ स्वामिकार्तिक की तिथि (ज्योतिष में छठ तिथि का स्वामी स्वामिकार्तिक है) ॥ ५७ ॥ १२ पौष सुदि १३ पांच घड़ी दिन चढे ॥ ५८ ॥

इतसन कृष्णाराम१ अमात्य, जिहिँ जस जातरूप[1] कि जात्य[2] ॥५९॥
पहुँचि सु खेरला हद पास, मिलि जिम पंगु[3]सन कइमास२॥
इम तिहिँ लै सुरयो मग आस, सद्धिय ताल१ तालद्रग१ स ॥६०॥
जनरल नवम९ प्रतिनिधिजो१हि, संभर मंत्रि पट्टु१ इत सोहि॥
ख्यात जु जवन जमियतखान३।१, थित ढिग सो वकीलहु थान६१
जहँ इम जाम त्रिक३ निस जात, परि खिल जाम इक्क१हि प्रात ॥
व्हाँसन होइ प्रस्थित प्रीत, आवत ग्राम१ तीन३ अतीत ॥६२॥
गहि नवग्राम३।१ उत्तर४।७ ओक, चहि जह रम्य आयत चोक ॥
प्रभु उत आइ सम्मुह पत्त, रहि थित रीतिक्रम अनुरत्त ॥६३॥
मिलि तहँ मटकलप१०।१ महिपाल२, बाहुरि तुष्ट नेह बिसाल॥
रहि वह१ चैलगृह[6] अनुरत्त, प्रभु२ इत सुभ्र सौधन[7] पत्त ॥६४॥
इह गुरु५ सप्तमिय७ अवदात, जहँ निस इक्क१ नाडिय जात॥
भिंटन भूप१ सूरि१ सतेज२, आइउ उक्त तहँ अंग्रेज२ ॥६५॥
सु बिसत छत्रसौध[8] समाज, अभिमुख उठि तब अधिराज ॥
जिम बिधि अद्ध अंगन[9] जाइ, आनि सु संग हित अधिकाइ ॥६६॥
बैठिय इक्क१ पीठ[10]१ बिसेस, अभिहित[11] अंगरेज१ इलेस२ ॥
जहँ कछु बिजन[12] मंत्रहु जोरि, बख्सिय अतर१ पान२ बहोरि६७
जनरल दसम१० सम्मत जोहि, हाकिम सवन सिरपर होहि ॥
तिहिँ क्रम अधिक आदर तास, करि दियसिक्ख प्रीतिप्रकास६८
जिहिँ पुनि अजिर दल[13] लग जाइ, प्रभु इम बाहुरिय पहुँचाइ ॥

जिसका यश १श्रेष्ठ २चांदी के समान था ॥५९॥ ३ जयचन्द्र से कैमास मिला जैसे ॥ ६० ॥ ४ कायम मुकाम ॥ ६१ ॥ ५ एक पहर रात बाकी रहते ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ६ डेरे में ७ श्वेत महलों में ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ८ छत्रमहल की सभा में घुसते ही ९ पेसवाई को ॥ ६६ ॥ १० एक आसन पर ११ कहाहुआ अंगरेज और भूपति १२ एकांत सलाह करके ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १३ आधे चौक तक

वह गय तदनु जनपद्द इष्ट, संभर विभव विलसत सिंष्ट ॥ ६९ ॥
सूचित१८८३ सकहि तनि गृह्र सोक, लिय इत संधिया परलोक॥
गहि अवलों सु दौलतराव, पावत पद्द पटल पसाव ॥ ७० ॥
विनजिय वेर तिहि इहिं वेर, गृह्र गृह्र हंत हुव ग्वालेर ॥
इहिं सुत कृतक तात अभाव, गहि तस पट्ट जनकुव१राव ॥ ७१ ॥
साहजि१ पुत्र२ पुत्र३ सु मानि, किय तिम अंगरेजन कानि ॥
इत प्रभु अप्प हड्डद्द१न अर्क, सत्त्रन सिद्ध इद्ध उदर्क ॥ ७२ ॥
सत्थिन सत्थ उक्त १८८३हि साक, काननँ मंडि दोर कजाक ॥
वड्डिय घात पात विभक्ति, सक्किन कोल वेधन सक्ति ॥७३॥
दोरत पिट्ठि वाजिन देत, लघु वढि अप्प किरि हनि लेत ॥
वढि वढि दै पटा इक१ वीच, करि करि मग्ग सोनित कीच॥७४॥
दुव२ त्रय३ वेधि इम छितिदोर, भूपति वंटि सत्थिन भार ॥
अंगामि अप्प किति अछुत्त, जहँ मुरि तो वे अरुणान जुत्त ॥ ७५ ॥
आवहिं सिद्ध सस्त्र अगार, वत्सर पंद्रहम१५ वय वार ॥
मिलि चउ अट्ठ धृति१८८४ सक माप, इत पुर नंदग्राम इलाप७६
जबलग आयु लहि विधि जोर, किय निज देह हानि किसोर ॥
पिर्थेल३।१ मंगरोल मघात, गय नृप भ्रात लघु तजि गात ॥७७॥
तस सुत पट्टपति किय तांम, सचिवहिं रामसिंह सनाम ॥

१जिसप्रदेश जहां जानेकी इच्छा थी उस२देशमें गया और चहुवाण(रामसिंह) ने ३श्रेष्ठ वैभव का विलास किया ॥६९॥७०॥ उसने इस समय ४शरीर छोड़ा ५ दत्तक (गोद लिये हुए) ने पिता के अभाव में ग्वालेर का पाट लिया ॥७१॥ ६आगामि शुभ कर्म फल से॥७२॥७वनमेंदवरछियोंसे सूवरोंको वेधनेकी शक्ति ॥७३॥ ८शीघ्र पहकर सूवरों को मारलेते हैं ॥७४॥१०सूवरों को ११रक्त से लाल भालों सहित मुड़ते हैं ॥७५॥ कोटाके १२भूपति ॥७६॥१३किशोरसिंह ने शरीर छोड़ा १५ मंगरोल के युद्ध में राजा किशोरसिंह का छोटा भाई १४ पृथ्वी-सिंह मरा था ॥ ७७ ॥ उसके पुत्र को १६ तहां पाट का पति किया

कहियत ता१८८४हि सक समकाल, मृतइत उदयपुरमहिपाल७८
*रतजस भीमसिंह जु१ रान, जिहिं सुत भो अधीस जवान२ ॥
बलि अब लखनेउव बात, जहँ सुत लघु सहादत१ जात ॥ ७९ ॥
दिय असु गाजिसुखयुद्दीन२, रहि इम तह नसीरुद्दीन ॥
सूचित१८८४सकहि बाहुल८स्वेतर, प्रतिपद१वीर१रवि समुपेत ८०
निजकवि जनक चंड सनाम, तुम प्रभु पूज्य मन्निय तास ॥
करि इक बैठि अग्ग कुमंत, अंबकद्रंग लिय बलवंत२०१ ॥८१॥
तबसन रावरे प्रभु तात, खिजि हुव भ्रात सिर अनखात ॥
कविबर चंड तदपि लुकेन, रुचि वस गोठं जात रुकेन ॥ ८२ ॥
तब नृप इतहु भासत भीम, तिन्ह प्रति बंध किय ताजीम ॥
सो अब उक्त१८८४खिन अनुसार,प्रभु पुनि अप्पदिय करिप्यार८३
सत्थहि खास हय२ सिरुपाव४, भूधव तुष्ट दिय हित भाव ॥
आदरि चंड कवि इम अप्प, दलि किय नए कृपनन दप्प८४
इत सर नाग धृति१८८५ सक आत, अह जह नवमि९मधु१ अव-
दात१ ॥
विक्रमनेर लहि बिधि वाम, नृप मृत सुरतसिंह१ सनाम ॥ ८५ ॥
तस सुत रत्नसिंह२सु तत्थ, हुव नृप राज्य करि निज हत्थ॥
सकतिहिं१८८५बिसद२फग्गुन१२ध्रामैं,इतपुरकापरनिअभिराम ८६

॥७८॥*यशमें अनुरक्त रहनेवाले महाराणा भीमसिंहका देहान्त हुआ जिनका पुत्र जवानसिंह उदयपुर का पति हुआ॥७९॥१लखनेऊ का नवाब गाजियुद्दीन मरा २ कार्तिक सुदि पक्ष में ३ रवि वार सहित ॥८०॥ ४ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान को हे प्रभु (रामसिंह) तुमने उनको पूज्य माना ५ बलवंतसिंह ने खोटी सलाह से नैणवा नगर लेलिया था ॥ ८१ ॥ ६ गोठड़े जाते नहीं रुके ॥ ८२ ॥ ७ आपने प्यार करके वह ताजीम पीछी दी ॥ ८३ ॥ ८ भूपति ने प्रसन्न होकर ९ दर्प (घमंड) ॥ ८४ ॥ १० चैत्र सुदि नवमी के दिन ११ बीकानेर में ॥ ८५ ॥ फाल्गुन १२ मास के शुक्ल पक्ष में ॥ ८६ ॥

भुवपैं इम होत निसीथ भयो, रस प्रेतन साह नयो रचयो ॥२१॥
थित निंद प्रजा व्यवहार थके, जिम संजम इंद्रिय जोगिनके ॥
गति या भाँति रत्ति सु बित्ति गई, भल ब्रह्ममुहूरत वेर भई ॥२२॥
बिरुदारव बंदिनको बिथरयो, क्रम जग्गि तहाँ नृप नित्य करयो॥
छकतैं कसि आयुध जोम छल्यो, चढि बाह रु साह हजूर चल्यो२३
इत आगम प्रात लुभे अहके, चटकी चरनायुधहू चहके ॥
दिक प्राचिय आरुन रंग दिपी, लगि अंबर सुम्भि सु रोचि लिपी २४
लघु दिट्ठि नछत्रन निट्ठि लहैं, चित ज्यों तजि भोगन ग्यान चहैं॥
भजिकैं तम अद्रि गुफान भरयो, जिम तत्व लहैं गृह दंद जरयो २५
दुति पूर जरूर इतैं दमक्यो, चढि अक्क उदैगिरिपैं चमक्यो ॥
छकमैं तिँहिँ वेर नरेस छयो, गति अर्जुन साह समीप गयो ॥२६॥

(दोहा)

साहबहादुर तिँहिँ समय, बैठो आम बनाय ॥
नजरि निछावरि लेत निज, परिकरतैं जय पाय ॥ २७ ॥
सुनि आगम बुंदीसको, दारु अटा चढि देखि ॥
प्रमुदित्त आयो तखत पुनि, लोभ बिजय हिय लेखि ॥२८॥

(मनोहरम्)

एतेमैं नरेस आय अंदर प्रवेस होत,
उमडि नकीब कीनी सूचना अछूती है ॥
जाय करि नजरि निछावरि मिसल लेत,

को. व अब ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआगमइति ॥ अहके दिनके. चटकी चिरी. चरनायुध कुक्कुट. दिक दिशा. प्राचिय प्राची पूर्व. आरुन अरुन लाल रंगकी. सु सो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुदिट्ठिइति ॥ भोगन शब्द स्पर्शादि विषयनको. तम अंधकार. तत्वलहैं तत्वज्ञान अर्थ ॥ २ ॥ दुतिपूरइति ॥ दुति कांति. ताको पूर समूह. अक्क अर्क सूर्य ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहबहादुरइति ॥ आम बडी सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमइति ॥ दारुअटा काठकी बुरज. प्रमुदित अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैं॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमैंइति ॥नरे-

इव लहि बंधु *परिणाय हेत, नृप गय निज †पितृव्य निकेत ॥
करि तहँ कज्ज विधि सतकार, आगत क्रित्ति जित्ति अगार॥८७॥
वनि सामंत सुत उत विंद, ‡अंहति उचित ठानि आनद ॥
सरमथुरा१रुप नैर सिधारि, सोधित लग्न खिन अनुसारि ॥ ८८ ॥
कुमरिय जो मनोहर केर, वनि आनंदकुमारि सु वेर॥
वासर कतिक तत्थ विहाइ, छिति थिति अमिति चिंतिजसछाइ८९
सुत बलदेव१ इम बल सत्थ, जनकहु जाइ व्याहि सुजत्थ॥
लालित लै वधू१ वर२ लार, आगत रम्य गम्य अगार ॥ ९० ॥
इत हय हत्थि धृति १८८७ सक आत, सिति१ दल१ सुक्र३ मास सुहात ॥
प्रभु तहँ अनुज निज गोपाल२०२।४।१, सानुज विनयहरि२ अरि साल ॥ ९१ ॥
भेजिय दुवरहि व्याहन भ्रात, बल सजि भिन्न भिन्न बरात ॥
गागरनी पुरी पति गेह, अग्रज१ विंद गो इत एह ॥ ९२ ॥
तिहिं रघुनाथ व्याहिय ताम, नंदिनि चंद्रकुमरि२०२।१ सनाम ॥
वरिवर१ रहऊरि२ विनीत, अह कछु किन्न तत्थ अतीत४ ॥ ९३ ॥
पित्थल१ रान वंश्य प्रधान, सह तह खाँहमीद२ सुजान ॥
किय जुग२ मुख्य तहँ जस कम्म, दिय तिन त्याग सहँसन दम्म१
भूखन१ वस्त्र२गय३हय४मोलि५, खिल सब द्रव्य को सन खोलि॥
अंहति भट्ट लहि अधिकार, हुव व्रजलाल बंटनहार ॥ ९५ ॥
इम करि आढ्य जाचक जात, बहुरिय गम्य वट्ट वरात ॥

*विवाह के कारण † काका के घर गये ॥ ८७ ॥ ‡ दान ॥ ८८ ॥ १ यश का समूह छाकर ॥ ८९ ॥ ९० ॥ २ ज्येष्ठ मास के आधे शुक्ल पक्ष में ३ विनयसिंह ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ४ तहां कितने ही दिन वितीत किये ॥ ९३ ॥ ५ राणा के वंश में प्रधान (राणावत) ॥ ९४ ॥ ६ ऊंट ७ दान का अधिकार ॥ ९५ ॥

इत पुर पहुँचि उनियाराहु, लिय बरि बिनयहरि२ तिय लाहु॥९६॥
सुत तहँ भीम भव *दासेय, गुन पटु नाम जालिम गेय ॥
तनुजा रूप१ गुन२ जुत तास, आनंदादिकुमरिय१ तास ॥ ९७ ॥
बिधि सह बिनयसिंह१ सु व्याहि, गनवसुदत्त जस अवगाहि ॥
कूरम बिरुदसिंह१ कुमार, इत हुव मुख्यपन अधिकार॥ ९८ ॥
कहि तहँ रत्न१ भट्ठ कुलीन, क्रम हित त्याग वंटन कीन॥
सद्दन स्वामिपन गत सल्ल, मन्त्रि सु जान सुत फतमल्ल ॥ ९९ ॥
निज करि स्वामि तिहिँ जुत नेह, अरु हुव सचिव जालिम एह ॥
जिहिँ जामात हित वसु जाल, बहुविध हरन दत्त बिसाल ॥१००॥
इत इन बंटि बहु बसु व्रात, हंकिय हुलसि बद्ध बरात ॥
इन कहँ स्वसुर नारव आइ, चल्लिय सरनि हद पहुँचाइ ॥१०१॥
इम हुव उभय४दिस उपयाम, किय बिधि बिचहि असहन काम॥
इत नृप मान ताहि अनेह, बाढन बहुल सहि सनेह ॥१०२॥
निज लिपि पत्र प्रीति निकेत, सतदुव२०० सादि संघ२ समेत ॥
चारन इक्क१ जिहिँ नृप चित्त, मानस खास खिलिबत मित्त।१०३।
जो सुत जुगत नामक जात, भैरव स्वीय नाम भनात ॥
सो इत पठ्यो बनसूर, हित हित हड्ड६१ हेलि हजूर॥ १०४ ॥
दक्खिन२।३ द्रंग बाहिँ प्रदेस, आतहि उत्तरिय तहँ एस ॥
बहुबलों दुवदिस प्रस्थित बिक्खि, सठ इत दुरित छल बल सिक्खि

॥९६॥*दासी का पुत्र ॥९७॥९८॥९९॥१दहेज ॥१००॥२नक्का ३मार्ग में ॥१०१॥ ४ विवाह ५ नहीं सहन करने योग्य ६ उसी समय जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने ७ बहुत स्नेह बढाने के लिये ॥ १०२ ॥ ८ दो सौ सवारों के समूह सहित ॥ १०३ ॥ ९ जुगता का पुत्र १० भैरवदान नामवाले ११ वणसूर शाखा के चारण को १२ हाडाओं के सूर्य (रामसिंह) की हजूर में भेजा ॥ १०४ ॥ १३ नगर के बाहर दक्षिण दिशा में उतरा. १४बुंदी की सेनाको विवाहों में दोनों ओर गईहुई देखकर ॥ १०५ ॥

कुसंचिव पट्टरानिय केर, विच पुर जे जुरे तिहिं बेर॥
मिलि तह रूपराम१ अमात्य, बलि सरदारमल्ल२हु व्रात्य ॥१०६॥
निस इक१ विप्र१ पोखरनीय१, बानिंज ओसवाल२ बिईय२॥
इन विच तीसरो३ अघडत, बाहुजं३ सिंह३अंत विभूत३ ॥१०७॥
यह रठोर मेरतियाहु, बलि हुव भीर कढ़ि बल बाहु ॥
इम द्विज१एक१ ऊरुज३ एक१, बाहुज२ एक१ हीन विवेक ।१०८।
मिलि त्रिक३ एह मंडिय मंत्र, तनि छल प्रात होहु स्वतंत्र ॥
मारहु कृष्णराम१ अमात्य, प्रतिभट होहु तेहु निपात्य ॥ १०९ ॥
इन्ह बल ठ्याज जुग गत आँहिं, निरखहु कोहु रोधक नाँहिं ॥
विलसहिं राज्य करि निज वस्य, रक्खहु रत्ति गूढ रहस्य ॥ ११० ॥
भूपति चहे इक्क सुख भोग, नकरहिं नैक जास विजोग ॥
मन इम रीझि प्रभु जामात, मन्नहिं मुदित विलसन बात ॥१११॥
जो कछु विघ्न बिच परिजाइ, प्रेरहि भूप भट हठ भाइ ॥
जुद्धहु जानि हैं भय भार, तो निज तंत्र दक्खिन२।३ द्वार ॥११२॥
दुवसत२०० सादि भट समुदाय, समुझहु अप्पनैंहि सहाय ॥
जिन्ह बल द्रंग बाहिर जोरि, बस निज द्वार पठि वहोरि ॥ ११३ ॥
करि इम नियतं इच्छित कज्ज, अंगमि लेहु बुंदिय अज्ज ॥
जैपुर जो करी हम जाइ, पुनि इह क्यौं न संभव पाइ ११४॥
सुनि द्विज१ मंत्र यह दृढ संधँ, कृतघन ओसवाल२ कबंध३॥

---

१ पाटवी रानी के खोटे सचिवन २ शूद्र ॥ १०६ ॥ ३ वैश्य ४ क्षत्रिय ५ विभूतसिंह ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ ६ जो मुकाबला करनेवाला होवे उसको भी मारो ॥ १०९ ॥ दोनों सेना गई हुई है इस कारण अपने ७ छलको ८ रोकनेवाला कोई नहीं है ९ राज्य को वश में करके भोगेंगे १० इस सलाह को रात्रि में गुप्त रक्खो ॥ ११० ॥ ११ राजा अपना जमाई है सो ॥ १११ ॥ १२ दक्षिण का द्वार अपने आधीन है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ १३ निश्चय ही चाहा हुआ कार्य करके ॥ ११४ ॥ १४ दृढ प्रतिज्ञा

तिहिं निस तीन३ ठहै इक१ तंत्र, सदनन सुप्त मंडिय मंत्र ॥११५॥
प्रेरिय सुंढि हित चर प्रात, जदपि न नेक अवसर जात ॥
जहँ गत अंघ्रि१ऊन दु२जाम, तहँ लखि इष्ट संभव ताम ॥ ११६ ॥
अग गज अठ ससि१८८७सक आहि, अधिगत सुक्र५मास अमा३०हि
तहँ तिथि उक्त भुक्त अनेह, अनुचित एह तक्कि त्रिक३ एह॥११७॥
बाहुजँ२ नाम सालुव१ बुल्लि, खलपन मंत्र तिहिंप्रति खुल्लि ॥
अक्खिय कृष्णाराम१ अमात्य, घर अब है जु इक्कल१ घात्य ११८
आवहु ताहि जो हनि अज्ज, कृत मत होत सब निज कज्ज ॥
तो भट ग्राम दै दस१० तोहि, करिहैं ईस सब बल कोहि ।११९।
सुनतहि एह सालुव सज्जि, मन तस बीररस बस मज्जि ॥
सय गहि सानसित खर खग्ग,धुरि लिय सचिव परिखद मग्ग१२०
हुत जिहिं सचिव संसद द्वार, पहुँचत ठानि दंभ प्रसार ॥
पठई कहि मुसाहब पास, बिन्नति करन संधिय१ ठपास२ ।१२१।
भेजिय मोंहि सत्वर भाखि, अप्पहिं सूचिबे अभिलाखि ॥
जो मुहिं बिजन खिन मिल जाइ, तुमकहँ तो सु गोप्य सुनाइ१२२
करिहो सिष्ट जो इहिंकाल, कहिहौं सोहि जाइ कृपाल ॥
बिगरहिं कज्ज होइ बिलंब, बज्जहिं तो अपष्टुर बंब ॥ १२३ ॥

१घरोंमें सोते हुओं ने यह सलाहकी ॥११५॥ प्रभात हीं२खबरके लिये हलकार को भेजा ३पौने दो पहर जाने पर४तहां ॥११६॥५ज्येष्ठ मासकी अमावास्या कें प्राप्त होने पर ६उक्त तिथि के भोगने के समय ॥११७॥७सालू नामक क्षत्रिय को बुलाकर ८ घात करने (मारने) योग्य ॥११८॥ ९ सब सेना का सेनापति करेंगे ॥ ११९ ॥ उसका मन वीर रस में १० डूबगया ११ हाथ में साण से तीक्ष्ण कियाहुआ १२तीक्ष्ण खड्ग लेकर१३सचिव की सभाका मार्ग लिया ॥१२०॥ १४ सभा के द्वारपर ॥१२१॥ १५ शीघ्रता कहकर १६ आपको सूचना करने को भेजा है १७ एकान्त समय मिलजावे तो तुमको वह १८ गुप्त वार्ता सुनाऊं ॥ १२२ ॥ १९ इस समय जैसा शिष्टाचार करोगे वैसा ही जा कहूंगा २० निन्दा के तथा विपरीत नगारे बजेंगे ॥ १२३ ॥

सुनियत धाइभ्रात असेस, जो पटु जदपि दिष्ट१ रु देस२ ॥
पै परि गहन कुक्कुटि पास, हुव बहु पटुन पुव्वहु ३हास ॥१२४॥
मन ऋजु१ सत्यवैन२ अमूढ३, गहत न कुमति कुहकन गूढ ॥
जु कहै सत्य सुहि दृढ जानि, उरझत पास मग पग हानि ।१२५।
चतुरहु सचिव इम हित चाहि, तिहिं खिन निकट बुल्लिय ताहि ॥
इम ढिग सचिव सालुव१ आइ, सकुसल सब उदंत सुनाइ ।१२६।
लघुगोति विम आसिख१ लार, जिहिं कहि ओसवाल जुहार२ ॥
खल हनि पास पहुँचत खग्ग, इक१कर किन्न छिन्न अलग्ग१२७
असि सुहि झारि पुनि तस अंस, वल्लिय साचिउर१ सह बंस२ ॥
परिजन दश्र्अ तहँविस३।१पज्ज४।२,कछु रहिदूर निवहत कज्ज१२८
जितातित ते ढुरे भय जानि, सचिवहिं सत्रु इत मृत मानि ॥

वह चतुर था तोभी १ देश काल के कारण २ उस छली की पाश में पड़गया सो इसी प्रकार पहिले भी बहुत चतुरों का ३ नाश होगया है ॥ १२४ ॥ ४ सरल (सीधे) मनवाले और सत्य बोलनेवाले चतुर छली लोगों की छिपीहुई बुरी बुद्धिको नहीं जान सकते और जो वह कहै उसीको सत्य जानकर उसकी पाश में उलझ जाते हैं ॥ १२५ ॥ इस प्रकार उस चतुर सचिव ने भी हितकी चाह से उस समय उसको पास बुला लिया ॥ १२६ ॥ ५ छोटा कहै जैसे उस ब्राह्मण का आशीर्वाद कहकर ओसवाल वैश्य (सिंघी) का जुहार कहा और उस दुष्टने समीप पहुँचते ही तरवार मारकर उस धाय भाई का एक हाथ काट कर अलग करदिया॥ १२७ ॥ उसी तरवार को फिर उसके कंधे पर मारी सो ६ तिरछी होकर छाती सहित पीठ की बांसे की हड्डी को काट डाली ७ उस समय पास के लोग कम ही थे एक वैश्य और दूसरा ८ शूद्र था जो भी कुछ काम करते हुए दूरही थे ॥ १२८ ॥ ९ (※) मराहुआ जानकर

(※)यहनोट लिखतेहुए हमको बहुत खेद होताहै क्योंकि इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने इसग्रन्थमें इतिहासलिखने में अपूर्व रीति से सत्यका निर्वाह किया है जिसमें यहां आकर इस नोट से उस सत्यता पर कलंक आताहै, परंतु सत्यके अनुरोध से हमको लिखना पड़ता है, अर्थात् महाराव राजा रामसिंह के विवाह और कृष्णराम धायभाईके मारेजानेमें जो वृत्तान्त जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है उसमें और सूर्यमल्ल के कथनमें बहुत अन्तर है और यह ख्यात उसी समय की लिखी हुई होने से विश्वासनीय है इसके अतिरिक्त इस ख्यात का

लिखना अनेक ख्यातों के लेखों से प्रामाणिक सिद्ध होगया है इस कारण जोधपुर की ख्यात का सारांश नीचे लिखाजाता है कि रावराजा रामसिंह के विवाहके व्ययके अर्थ कृष्णराम धायभाईने कोटाके सेठ दानमल जोरावरमल से दो लाख रुपये ऋण लेकर खत लिख दिया जिसकी खबर जोधपुर के महाराजा मानसिंहको हुई तब अपने भले आदमी भेजकर उक्त सेठ के रुपये चुकाकर वह खत असल ही अपने पास मंगवा लिया और विवाह के समय वह खत, पचास हजार रुपये नकद और पचास हजार रुपयों की मौल्यकी मोतियोंकी कंठी इनके साथ अपनी पुत्रीके हतलेवेमें रख दिया, इस खतके हतलेवेमें रखनेके कारण कृष्णराम धायभाई बहुत अप्रसन्न हुआ कि महाराजा मानसिंहने असली खत हतलेवे में रखकर हमारे राज्य का हतक कर दिया और इसी अप्रसन्नता के कारण यह प्रसिद्ध किया कि इसी बरात से यहां से ही सीधे झूंझनूं जाकर रावराजा साहिबका दूसरा विवाह किया जावेगा, इस बात से महाराजा मानसिंह भी बहुत अप्रसन्न होगये और आज्ञा की कि एक बार जोड़े सहित बूंदी में जाकर पीछे जी चाहे जहां विवाह करें परन्तु बाईको मार्ग में छोडकर जाना अनुचित है इसीकारण बाईको पहुँचाने के नाम से सिंघी नेवराज आदिके साथ अपनी सेना देकर पहुँचाने को भेजे जिन्होंने रावराजा को परभारे झूंझनूं नहीं जाने दिया और बूंदी लेगये और कंकनडोरे खोले पीछे दूसरे विवाह के अर्थ जाने दिया.

कुछ समय पीछे महारावराजा रामसिंह की माता जो कृष्णगढ के महाराजा कल्याणसिंह की बहिन थी उससे और उक्त रावराजा की महारानी (महाराजा मानसिंह की पुत्री) से बहुत बिगाड़ होगया और कृष्णराम धायभाई उक्त माजीसाहिबा का कृपापात्र था जिसको बाईजी साहिबा (जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री) ने अपने पीहरवालों के द्वारा मरवाडाला उस समय महाराजा मानसिंह ने अपनी पुत्रीको लानेके लिये बणसूर शाखाके चारण भैरवदानको जमइयत के साथ भेजा था उसकेवहां पहुँचने पर उक्त धायभाई मारागया तब रावराजा साहिब की माताकी आज्ञासे जोधपुरवालों पर तोप चलना प्रारम्भ होकर लड़ाई होनेलगी तब भैरवदान अपने लोगों सहित कोटाके राज्य नानते में चलागया और भभूतसिंह आदि नौहरे के लोग मारेगये जिसपीछे महारानी राठोड़ी को मारनेके लिये उनका महल घेर लिया गया परन्तु महारानी की लोंडियां बंदूक आदि शस्त्र लेकर खड़ी होगई और किंवाड़ बंद करलिये इससे बचगई और यह खबर कोटा में बूड़सू के ठाकुर प्रतापसिंह के पास भेजी सो उक्त ठाकुर और भैरवदान पांचसौ सवारों से बूंदी गये और अपनी बाईके महल का घेरा उठाकर चार दिन से अन्नजल रोक रक्खा था सो पहुँचाया और उसी समय पर अजेंट साहिबने आकर दोनों ओर का बखेड़ा मिटादिया, यह वृत्तांत सुनकर जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने ठाकुर प्रतापसिंह का बूड़सू का ठिकाना पीछा बखश दिया अर्थात् बूड़सू का ठिकाना खालसे होजाने के कारण ठाकुर प्रतापसिंह कोटे में जा नौकर हुआ था सो उक्त सेवा के कारण बूड़सू का ठिकाना पीछा बखश दिया गया. बूंदी और मेवाड़वालों के द्वेष है इसी प्रकार बूंदी और जयपुरवालों के भी द्वेष चला आता है इसी कारण इन राज्योंवाले परस्पर एक दूसरे की अनेक निन्दनीय बातें उडा दिया करते हैं जैसे बूंदीवालों ने जयपुर के झूंताराम आदि की निन्दा उडा रक्खी है जो इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिख दी है वैसे ही उक्त राज्योंवालों ने बून्दी की बदंतें कररक्खी हैं परंतु मूर्खता से इर्षा द्वेष करके अनेक लोग अनेक बदंतें किया करते हैं वे विद्वान्

बाहुरि छिंप चोर विधान, सो लगि उत्तरन सोपानं ॥१२९॥
कायथ सेनासेता वल्ल केर, बिच भिरि सम्मुहो तिहिं बेर ॥
लगि हठ नामकरि सिवलाल, कर तस नग्ग लखि करवाल१३०
बखसी ताहि धरि निज बत्थ, जुज्झिय रक्खि हानि न जत्थ ॥
सत्रुहु जो लिटजो भय भार, परसिर दे सक्यो न प्रहार ॥१३१॥
इम तहँ लुत्थिवत्थन आइ, जुज्झत द्वैर गिरे अध जाइ ॥
रचि जन जामिकन तद रीस, सालुव१ सो कर्यो गतसीस१३२
उपयम करन इत अनुजात, भूपति भेजि इम दुवर भ्रात ॥
तहँ कुल पक्ख जुगर सम तुल्लि, बीकानैर पति सुत बुल्लि१३३
जीवनसिंह१ नाम सु जाहि, वह्निय रूपकुमारि१।२ बिवाहि ॥
रक्खन गेह तिहिं नरराथै, दिय दुवर आढय ग्राम१ सु दायं१३४

१ छांप्र चोर की भांति २ सीढियां उतरने लगा ॥ १२९ ॥ ३ सेनापति ४सालू के हाथ में नागी तरवार देखकर ॥१३०॥ ५शत्रु के ऊपर तरवार का प्रहार नहीं करसका ॥ १३१ ॥ ६दोनों नीचे जागिरे तहां ७पहरायतों ने क्रोध करके सालू का मस्तक काट लिया ॥ १३२ ॥ ८ दोनों छोटे भाइयों को विवाह करने के लिये ९ दोनों पक्ष बराबर तोलकर ॥ १३३ ॥ १० राजाने ११ दहेज में ॥१३४॥

लोगों को ग्राप्त नहीं होती इसी कारण हमने भी निर्दनीय किम्वदन्तियों को छोडकर जहां तहां प्रामाणिक लेखों को ही ग्रहण किया है इसी कारण यहां पर भी जोधपुर की ख्यात की नकल करदी गई है.

अब रहा यह कि जोधपुर की ख्यात मे लिखे हुए विषय को इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने छिपा दिया यह उनकी सत्यता पर कलंक आता है परंतु सामान्यतया विचार किया जावे तो कैसा ही सत्यवक्ता होने पर भी वर्तमान समयका सच्चा इतिहास लिखना दुर्घट है यदि कोई लिखभी देवे तो भी वरनियर जैसा विदेशी ही लिख सकता है किन्तु सेवक होकर वर्तमान स्वामी की सच्ची निंदा कदापि नहीं लिखसकता सो ही इस ग्रंथकर्ता के लिये जान लेना चाहिये. सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से हमने सुना है कि महाराव राजा रामसिंह की निंदा लिखने से उक्त रावराजा ने सूर्यमल्ल को मना किया. इसी कारण ग्रंथकर्ता ने यह ग्रंथ बनाना छोडदिया इसीसे यह ग्रंथ अपूर्ण रहगया सो यह भी समझमें नहीं आता क्योंकि यहां सत्य का विषय छोडगये और जहां तहां प्रशंसा ही की गई तो फिर आगे जाकर इसी बात पर अडना समझ में नहीं आता परंतु ऐसी बातों की छान बीन करना हमको भी आवश्यकीय और अभीप्सित नहीं है ॥

भूषन२ बस्त्र३गय४ हय५ भव्य, दिय रथ६ दास७ दासिय८द्रव्य॥
सह मह ताहि समय बिसेस, ब्याहिय जो स्वसा वसुधेस ॥१३५॥
हे इम हिट्ठ महलन माल, मुत्तिपसौध१ थित महिपाल ॥
पगि इत छद्म खग्ग पहारि, सालुव१सचिवमनि२ लिय मारि१३६
सुनतहि भूप इत यह सुद्धि, बिस्तरि बीरपन१ नय२ बुद्धि ॥
जँहँ पुर पत्ति संघ जितेक, तिन्ह कारि मग्ग मग्ग तितेक ॥१३७॥
चउ४ भट भेजि गोपुर च्यारि४, वस किय जे कपाट विथारि ॥
पुब्ब१हि रोकि दक्खिन२।३पोरि, ज्यों पुनि सेस रोधक जोरि१३८
रन-दुव२ दुग्ग सज्ज कराइ, असहन मंतुपर अनखाइ ॥
बलि कँलि अप्प कसि कटिबंध, संसद सज्ज रहि दृढ संध१३९
प्रभुढिग रहनहार प्रबीर, सब किय सज्ज कज्ज सधीर ॥
आतप उष्ण ऋतु अधिकात, जहँ सुत ज्येष्ट१ कृष्ण१प्रजात१४०
मोहन१ रमन सिंह मृगव्य, भूधव सिक्ख लहि चहि भव्य ॥
उत्तर४।७ गहन सह अवधान, मग वह गो त्रि३जोजन मान१४१
लघु तस भ्रात मंगललाल२, संगर अजिर पर बल साल ॥
नल निभ बाजि बिधि मतिमान, नरबर स्वामिधर्म निधान॥१४२॥
सूर रु सरलपन मन सुद्ध, बैरिहु जास मित्रहि बुद्ध ॥
तिम यह कृष्णाराम तनूज, प्रापित स्वामि सेवन पूज ॥१४३॥

राजाने १ बहिन का विवाह किया ॥१३५॥ २इस कारण राजा नीचे के महलों में ३ मोतीमहल में थे ४छल से तरवार के प्रहार को पाकर ५ सालू ने सचिवों के मणि रूपी कृष्णराम धायभाई को मार लिया ॥१३६॥ ६ राजाने यह खबर सुनते ही ७ पुर में जितनेक पैदलों के समूह थे ॥ १३७ ॥ ८ शहर के चारों दरवाजों पर ॥ १३८ ॥ ९नहीं सहने योग्य अपराध पर क्रोध करके १० युद्ध पर आपने कमर बांधकर ११ सभा में दृढ प्रतिज्ञा से सज्जित रहा ॥ १३९ ॥ १२ ग्रीष्म ऋतु की अधिक गरमी में १३ कृष्णराम का बडा पुत्र ॥ १४० ॥ सिंहकी १४ शिकार खेलने को १५ राजा की आज्ञा लेकर ॥ १४१ ॥ १६ युद्ध के चौक में १७ नलके सदृश ॥ १४२ ॥ १८ पुत्र ॥ १४३ ॥

इह पर लोहिता अभिधान, थानाँ रक्खि नृप तिहिँ थान ॥
*सादिन संघ सासक मुख्य, मंगल२ तत्थ क्रिय प्रभु मुख्य१४४
काका तनय तस जस काम, सो पुनि रत्नलाल१।३ सनाम ॥
बिद्या तुपक मय जिहिँ बीर, सज्जिय वर्म मुख्य सधीर ॥ १४५ ॥
ए दुव भ्रात तिहिँ दिन अत्थ, सज्जित स्वीय हय१ भट२ सत्थ ॥
तिन्ह मन लोहितापुर जाइ, उत्सुक हनन सिंघ अघाइ ॥ १४६ ॥
प्रिय मद अमल वितरत पान, जिन्ह हुव देर यह चढिजान ॥
तत्थहि बुल्लिलिय कवितात, खिलवलि कतिक भटबरख्यात१४७
प्रभुढिग रहनहार प्रवीर, सब तहँ मिलित विछुरन सीर ॥
ठयसु हुव सचिव इत तिहिँबार, परि सब ओर इक्क पुकार॥१४८॥
सुनतहि रत्न१ मंगल२ सत्थ, हंक्किय सर्ब भट असिँ हत्थ ॥
इनकँहँ सिंहचत्वर आत, बुल्लिय भूप ढिग सुहि बाँत ॥ १४९ ॥
ए तव सत्रुदिस मग उज्झि, सिव गय स्वामिढिग हित सुज्झि ॥
ससुभट रत्न१ मंगल२ संग, प्रभु कति रक्खि विघ्न प्रसंग ।१५०।

लसंग१ प्रसंग२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

सचिवहिँ देहनदत्त सहाय, पठये पुत्र२ सह समुदाय ॥
दाहन जाइ पच्छिम३।५ द्वार, इन गिनि इष्ट प्रेत अगार ॥ १५१ ॥
अब्बुर्वनाथ सिव जहँ आहि, दिय तहँ जो मुसाहब दाहि ॥
पुनि सव न्हाइ प्रभुढिग पत्त, इत प्रभु भृत्यहित अनुरत्त ॥१५२॥

* सवारों के समूह का हाकिम करके ॥ १४४ ॥ १ कवच पहना ॥ १४५ ॥ २ सिंह मारने को उत्कंठित हुए ॥ १४६ ॥ ३ सूर्यमल्ल के पिता को बुला लिया ॥ १४७ ॥ ४ उस समय इधर कृष्णराम मारागया ॥ १४८ ॥ ५तरवारें हाथों में लेकर चले ६ सिंहचौक में आने पर ७ उस समूह को ॥ १४९ ॥ ८ शत्रु की दिशा का मार्ग छोड़कर ॥ १५० ॥ ९ सचिव को जलाने में सहायता देने को ॥ १५१ ॥ १० जहां आबुनाथ शिव है ॥ १५२ ॥

सब लहि मंतु कारन सुद्धि, रंचहु छिद्र निकसन रुद्धि ॥
ठाँ जुग२जे रहे थिति ठानि, तुपकन जंग बिच बिच तानि॥१५३॥
सुनि नृप दै निर्देस प्रसस्त, बंधन धूर्त ठानि बिहस्त ॥
तब उड्डुदुर्गकी हुव२ तोप, अभिमुख रक्खि जमसुख ओप ।१५४।
जुग२ जुग२ देह चल्लन जंपि, कह्वहिं छुद्र गोलन कंपि ॥
पटुभट दानसिंह१ पुरोग, जुरि तहँ पिक्खि प्रध्वर जोग ॥ १५५ ॥
चुटकिन ओप तोप चलात, बिगरत बेध्य आलयँ ब्रात ॥
मतिगति मंडि फैरन फैर, निर्मित व्यग्र मन जन नैर ॥ १५६ ॥
व्यवहित भूँहर१न कति बैठि, कति गय कंदर२न प्रति पैठि ॥
हुव यह दरित पूरन हाल, जय रस फुरित सूर२न जाल ॥१५७॥
अद्रिन खोह फुट्टि अवाज, गिरि गृह१ जात पोतन गाज ॥
तरकत थंभ१ मंडप२ ताव, लरकत फुट्टि छित्ति४ लदाव५॥१५८॥
बिखरत गोख६ जालिन७ ब्रात, उड्डंत प्रजरि पट्ट८ अलात ॥
वलज९ रु कुड्य१० प्रघन११ बितर्दि१२, उंबुर१३ अजिर१४ कु-
ट्टिम१५ अर्दि ॥ १५९ ॥
सह अधिरोहिनिय१६ सोपान१७, बिर्दहत कोशिका१८ रु बितान
परिघ२० रु उत्तरंग२१ कपाट २२, बलभिय २३ नीप्र २४ प्रसरत
बाट ॥ १६० ॥
तिम दहि नागदंत२५ तमंग२६, पिट२७ पुट२८पेटिका२९जारिजंग

---

१ अपराध के कारण की खबर मंगाई सो २ कुछ भी छिद्र नहीं निकला ३ दो जगह पर ॥१५३॥४उत्तम आज्ञा ५धूर्तों को व्याकुल करके बांधने की ६तारागढ की ७ शत्रुओं के सम्मुख ॥ १५४ ॥ ८ दानसिंह आदि ९ पाधरी (सीधी) ॥१५५॥ १०घरों का समूह ११ व्याकुल ॥ १५६ ॥ १२ कितने ही लोग भोंहरों (तहखानों) में तथा भूधरों (पर्वतों) में छिपकर बैठे ॥ १५७ ॥ यहांसे आगे का जो वर्णन है इस में उपमा आदि कोई चमत्कार नहीं है केवल स्थानों के नाम हैं सो इस प्रकरण की सविस्तर टीका करना पिष्टपेषण है ॥ १५८ ॥१३अग्नि से ॥ १५९ ॥ १४ विशेष जलते हैं ॥ १६० ॥

निकट बुलाय साह बख्सी विभूतीहै ॥
दोऊहाथ हियसौं लगाय मुसिकाय कह्यो,
मरद बली तैं रखी खूब.मजबूतीहै ॥
दिल्लीपुर गादी मैं लही जो यह बादी बीर,
मेरे महारावराजा रावरी सपूतीहै ॥ २९ ॥

(पादाकुलकम्)

महारावराजा इम अक्ख्यो, भूपहिं छिनक लाय हिय रक्ख्यो ॥
पुनि बख्सीस करी दिल्लियपति, रामनृपति वह सुनहु रक्खि रति ३०
कोटादिक चोवन५४गढ दीनैं, कहत नाम कछु कछु हम चीनैं ॥
कोटा१बहुरि झल्लरापट्टनि२, गागरोनि३लीजो दुग्गन मनि॥ ३१ ॥
साहाबाद४सेरगढ५थानक, अरु बडोद६चेचत७अभिधानक ॥
छबडा८अरु गूगौर९दुग्गवर, पंचपहाड१०पडाप११डग१२नगर ।३२।

॥

॥ ३३ ॥

॥

॥ ३४ ॥

॥

॥ ३५ ॥

स बुधसिंह. अंदर सिरायचेके मध्य. सूचना जानकारी. अछूती और काहूके आयवेसौं जो सूचना नहीं भई ऐसी. आजमशाहके मारिबेबारे अरु दीदारबख्श को मूर्छित समतंगज कीलित करि ल्यायबेवारे,बुदासके आयवेतें नकीबनें कीन्हीं. बिभूति विशेष वैभव ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

स्वयं ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] की रचीहुई टीका यहां तक ही हमको मिली सो हमने ग्रन्थकर्ता के रक्खेहुए क्रम के अनुसार ज्यों की त्यों यहां लिख दी है. अब यहां से आगे हम [बारहठ कृष्णसिंह] अपने रक्खे हुए क्रम के अनुसार मूल कठिन शब्दों पर अंक देकर नीचे टीका लिखते हैं.

कुट्ट३० फुट मत्तवारन३१केतु३२, हुन हुव दहनं असहन हेतु १६१
खिरि खिरि थट्ट हट्ट३३न खंड, बिखरत वट्ट अट्ट३४ वरंड३५ ॥
जितितित सालभंजि३६न जूह, दढ़िगत मंच३७ पट्ट३८ दुरूह²।१६२।
उडिउडि ओघ गुमटन ग्राव, विरचित व्योम पटल बनाव ॥
प्रजरत डीनं³ पत्रिन पत्र, अभ्म कि चंग गाल अमत्र ॥ १६३ ॥
तजि तजि तीर नीर निपान, छिन छिन छिज्जि मेटत मान ॥
कपिसिर१ साल२ खोम३कलाप, धुज्जत लोल गोलन धाप१६४
प्रतिभट पूर सूरहु संकि, झारत तुपक छिद्दन झंकि ॥
जिनदिन१धूम२लखिनिस१ज्वाल२, लुग्न न देत गोलन माल१६५
भेदत मयद बहु पुत भित्ति, अद्दिन अननि कढ्ढन कित्ति ॥
वीथिय१त्रिक२रु चत्वर३द्वार, विस्तरि जग्गि जग्गि बजार४।१६६
वनिकन बिबिध किय क्रय बंध, गन ससि१ धीर२ मृगमद३गंध॥
छिति ढकि अन्न१ रासिन छार, इतउत प्रजरि तैल२अगार॥१६७॥
बिद्दलिन तरकि सनि३ गन भ्रात, जरि बहु विपनि औषध४जात॥
हुत हुरि बंग१ नाग२ अदभ्र, उडि उडि चढत पारद३ अभ्र।१६८॥
मचि पुर ध्वांत निभ करमाल, जिहिं सिति१भून सित२गृह जाल
मिलि मिलि धूम१सोर२समेत, लगि दृग लेत घन जन लेत॥१६९॥
इम हुव जाम सत्त७ अतीत, गोलन कोस दस१० गत गीत ॥
बिसंसन सचिव करि श्रुति वंट, हुन तब नंदग्राम अजंट ॥ १७० ॥
सुनतहि मेरगनि लगि त्रिउ लैन१. आगन अंर्थ करि रन अैन ॥

---

१ आग्न ॥ १६१ ॥ २ कठिनाई से तर्कना किये जाने योग्य ॥ १६२ ॥ ३ उडते हुए पक्षियों के पंख ४ पात्र ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ५ इस प्रकार सात पहर बितीत हुई ६ दश कोश पर्यन्त गोलों का शब्द गया ७ विश्वास योग्य सचिव का भाग जाना सुनकर ८ क्रोध से ॥ १७० ॥ ९ मार्ग लगा "यहां जो त्रिउ शब्द है यह कहीं नहीं मिला सो मालूम नहीं अशुद्ध है या क्या है" १० घोड़े पर चढ़कर

दिन इन जात जाम द्वितीय२, गय यह तत्थ पुर *गमनीय॥१७१॥
खिरकिय सौम्य३।७ द्वार खुलाइ, पुरबिच लिन्न इन खिन पाइ॥
सूचित सचिव सुत जुहि †जिठ्ठ, सुहु यह सुनत उग्र अनिट्ठ॥१७२॥
मोहन१ ताहि निस द्रुत मग्ग, आगत स्वामि सविध उदग्ग ॥
साहब सम्मुख जिहिँ तब जाइ, आनिय उक्त पथ प्रविसाइ ॥१७३॥
जम्मियतखान२ संगहि जास, निर्भय चिंति रहन निवास ॥
अधिपहु खास महलन आइ, स्वनिकट जालिनी[2] सु बसाइ।१७४।
जानिय इम अजंट१ [3]जनेस, आइउ समर अटकन एस ॥
पै तिहिँ कहिय प्रत्युत प्रेरि, गिनि खल गहहु१हनसुशक्कि हेरि१७५
अहँ त्रिक३ असह तोपन त्रस्त, ——हुव अब अहित विहस्त ॥
सीसक१ सोर२ उदक३ रु अन्न४, त्रितन घोर कष्ट विपन्न।१७६।
इत सुनि सचिव इत मग आत, बुंदिय पत्त द्वैरहि वगात ॥
हाजरि सकल वर्ल तब होइ, दब्बिय वेढि अरि गृहदोइ२॥१७७॥
जानहु श्रीचतुर्भुज१ तत्थ, तिनसन वारुनी३।५ दिस तत्थ ॥
[10]परिमित दंड बिंसति२० पास, आयत[11] जो हवेलिय१ आस ॥१७८॥
थिर हुव स्वामिनी[12] बस थान, परिखद तत्थ रहन प्रधान ॥
द्विजकहँ जो हवेलिय दत्त[13], हाजरि सो हुतो तिम तत्त ॥ १७९ ॥
गोलनसौँ [14]वँ बिगरत गेह, आतुर रूपरामहु एह ॥
लै सब स्वीय अप्पन लार, कढि निस छिन्न खुल्लि किँवार१८०

* जहां जाना था उस पुर (बुंदी) में ॥ १७१ ॥ † कृष्णराम का ज्येष्ठ पुत्र १ बडा अनिष्ट (प्रतिकूलवर्ता) सुनकर ॥१७२॥१७३॥ २ चित्रशाला में ॥ १७४ ॥ ३राजा ने यह जाना कि ४ उलटी प्रेरणा करके कहा ॥१७५॥५तीन दिन ६ शत्रु व्याकुल हुए ७ आपदा से घिरे ॥ १७६ ॥ ८ सब सेना ने हाजर होकर ॥१७७॥ ९ पश्चिम दिशा में १०बीस दंड के अंतर पर ११ मोटी हवेली है ॥१७८॥१२वह स्थान पाटवी रानी के आधीन हुआ था १३ दीथी ॥ १७९ ॥ १४ अब ॥ १८० ॥

*विपनि सु पुव्व१ दिस लगि वट्ट, हरि वसु लुट्टि मग इक१ हट्ट ॥
†जमदिस२।३ उक्त गोपुर जाइ, परवस ‡रुद्ध ताकहँ पाइ ॥ १८१ ॥
हैं ढिक व्हाँ पुरोहित हर्म्य[१], गजमुख[२] गहित कौलन कर्म्य ॥
तव सरदारमल्लहु तत्थ, ऊरुज[३] हो सु ठानि अनत्थ ॥ १८२ ॥
भनित जु सिंहअंतविभूत[४], संगहि सोहु पर रजपूत ॥
द्विज तिन्ह कहिय विघटन[५] द्वार, उन लिय एहु मध्य अगार१८३
महल सु जदपि दुर्ग्ग[६] समान, हुव तहँ तदपि जल मुँख हान[७] ॥
रहि द्विज१ वनिक२ तहँ दिन१ रत्ति२, पुनि दुव२ निक्खसिय
निस पत्ति[८] ॥ १८४ ॥
वाहुज रहिय तत्थहि वध्य[९], ते लड़ि संचरत मग मध्य ॥
वनि भय१भूख२प्यास विहाल, जुग२भ्रमि परिग नागन जाल१८५
तिन लखि विष्णुस्वामि मंतीय[१०], सिंचिय उदक[११] रक्खन जीय ॥
जुग२ तिन भोजि१ पेय पिवाइ२, जोगिन[१२] रक्खि रत्ति जिवाइ१८६
हुव खिल रत्ति जहँ दु२मुहूर्त[१३], ध्रुव प्रभु सुनत पकरन धूर्त ॥
विप्र१हु वनिक२ सह हठ बाद, मारिय वय किसोर प्रमाद ।१८७।
प्रभु[१४] तिहिं दोप अब पछिताइ, भाखत दुरित[१५] एह न भाइ ॥
महिसुर[१६]१वनिक२इम जुग२मारि, निज पटु सचिव वैर निकारि१८८

* बजार में पूर्व दिशा के मार्ग लगकर † दक्षिण दिशा के ‡ रुका हुआ (बंद) पाकर ॥ १८१ ॥ १ मकान २ गजमुख नामक पुरोहित का बनाया वामियों के काम का ३ बनियां ॥ १८२ ॥ ४ अभूतसिंह ५ किवाड़ खोलने को कहा ॥ १८३ ॥ ६ गढ के समान था ७ जल आदि सामान खूटगया ८ रात्रि में पैदल निकले ॥ १८४ ॥ ९ मारने योग्य क्षत्रिय अभूतसिंह वहीं रहा ॥ १८५ ॥ १० विष्णुस्वामी के मतवाले देखकर ११ पानी पिलाया १२ उन नागा जोगियों ने ॥ १८६ ॥ १३ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते राजा ने किशोर अवस्था के प्रमाद से हठ करके उन ब्राह्मण और वैश्य को मारडाले ॥ १८७ ॥ उस दोष से १४ रावराजा रामसिंह अब पछताते हैं और कहते हैं कि यह १५ पाप हमको अब अच्छा नहीं लगता १६ ब्राह्मण ॥ १८८ ॥

तिम पुनि होत *घस्र द्वितीय२, गिनि जमद्रंग निज †गमनीय ॥
कातर जो रह्यो सु कबंध३, सस्त्रन डारि ‡ह्वै हतसंध ॥ १८९ ॥
पच्छिय पच्छ२ द्वार प्रवेस, आदरि पत्त बाहिर एस ॥
जमदिसर१।३द्वार जुग२बिच जाहि, रोचक भोजि१पाइ३सराहि१९०
मंद सु जवन इक लिय मारि, तिन्ह खल सस्त्र लहि दियतारि ॥
इक१ द्विज अंगतैंहु अबध्य, मन्निय सेस अरिजुग१ मध्य।१९१।
बाहुज१ बनिक२ सस्त्र बिहीन, करि हम २अनसु अनुचित कीन॥
इम अब करत सासन आप, पै तब बय बिसेस प्रताप ॥ १९२ ॥
त्रिक३ हनि हेतु बिनु खिल तारि, उद्धरि बैर बिजय उवारि ॥
इत सब कहि मारव दिन्न, कंटक रहित पुर इम किन्न ॥१९३॥
चारनं३ चिंति इष्ट बिचार, आइउ द्विसत२०० लहि असवार ॥
तिहिँ सुनि सचिव तिम मृत ताम४,किय भजि कोस पंचसुकाम१९४
रहि तहँ मरत त्रिक३ लगि राह, प्रनमिय पहुँचि निज ५नरनाह ॥
बुंदिय त्रि३दिन बसि इत एह, गो इम अंगरेजहु गेह ॥ १९५ ॥
इत प्रभु सचिव सुत ६आकारि, मोहन१ मत्थ ध्रुव कर धारि ॥
पुनि दिय सचिवपन सिरुपाव, आदरि अधिक वृत्ति बढाव॥१९६॥
अनुजनु मंगल२ जु तस आहि, तारादुर्ग पति किय ताहि ॥
पुब्बहि आत गृह प्रबिसाइ, लिय चउ४ बरनिर बिंद२ लडाइ१९७

॥ केकिरवम् ॥

महिपाल१यौँ मोहन२थप्पि मंत्री, जग कित्ति बिस्तारि दिगंतगंत्री

---

* दूसरे दिन यमराज के नगरको अपने † जाने योग्य जानकर ‡ हतप्रतिज्ञ होकर ॥१८९॥१दक्षिण दिशाके॥१९०॥१९१॥२रावराजा रामसिंह कहते हैं कि इनको मारकर हमने अनुचित किया ॥१९२॥१९३॥ ३ भैरवदान नामक चारण ४तहां सचिव को मराहुआ सुनकर ॥१९४॥५ अपने राजा मानसिंह से प्रणाम किया ॥१९५॥६कृष्णाराम के पुत्र को बुलाकर ॥१९६॥७उसके छोटे भाई ८चारों ९वहन दुलहों को ॥ १९७ ॥ ९ दिशाओं के अंत में जानेवाली कीर्ति फैलाई

वय वर्ष अट्ठारह१८अग्ग१६वर्त्ती, अभिरूप दूरीकृत देसअर्त्ती१९८
कुसलत्व आच्छोटनं अग्रकर्मा, खुरलीर२ खलूरी धृत धुर्यधर्मा ॥
विविधत्वविद्या३रनबुद्धि वर्म्मा,मितसत्त्व४संसीदितदस्युमर्मा५॥१९९
अवधानता सज्जित अंग६ अंगी, सब सास्त्र७ ऊहां पटु सूरिसंगी
रुचिमग्गवेदोदित८एकरंगी,जितजुद्ध९खड्गी१कवची२निखंगी३॥२००
करिबे लग्यो कज्ज१०सु तीन३ सक्तिसौं, धरिबे लग्यो धी धुर
राज्य रक्तिं२सौं ॥
वरिबे लग्यो वीर१३न वीर-व्यक्तिसौं, भरिबे लग्यो श्रीप्रभु रंग
भक्तिसौं ॥ २०१ ॥
विसिष्ट१४ जो हय१ गय२ बाहि वेअली, भनैं सदा सबहित१५लै.
विधा भली ॥
अधीसिता बुध१भट२मंति३आदरैं१६, हठैं१७सौं इतर सभा प्रभा.
हरैं ॥ २०२॥

॥ त्रिष्टुबुपजातिः ॥

---

१ सुन्दर २ देश की पीड़ाको दूर करी ॥ १९८ ॥ ३ शिकार में कुशल होकर अग्रणी हुआ ४अखाड़े में शस्त्राभ्यास करके धर्म के धुर को धारण किया और नाना प्रकार की विद्या और युद्ध का कवच और निश्चय ही. शत्रुओं के मर्म को ५ कंपानेवाला हुआ ॥ १९९ ॥ राज्य के सात अंगों में एक तो स्वयं आप और बाकी के छः अंग और अंगियों में सावधानी करके पण्डितों की संगति से शास्त्रों की विवेचना में चतुर हुआ और वेद के कहे मार्ग में एक रंग होकर रुचि की, युद्ध जीतनेको खड्ग, कवच और भाथे को धारण किया ॥२००॥ श्रेष्ठ नीति और राजा की तीनों शक्तियों से कार्य करने लगा, राज्य में ७ प्रीति करके मुख्य बुद्धि को धारण करने लगा और वीर व्यक्ति से वीरों को अपने करने लगा ८ अपने मनको श्रीरंग नामक परमेश्वर की भक्ति से भरनेलगा (बुन्दीवालों के इष्टदेव का नाम श्रीरंग है) ॥ २०१ ॥ जो बलवान् हाथी, घोड़ों के चलाने में अत्यन्त श्रेष्ठ और सदैव भले प्रकार से सब के हितको कह नेवाला, स्वामिपन से पण्डित, उमराव और मंत्रियों का आदर करनेलगा १६ बहुत हठ से अन्य सभाओं की कांति हरनेलगा ॥ २०२ ॥

इखेस ऐसैं सु बयस्य संगी, संगीत१नाट्या२दि कला प्रसंगी॥
संगीयमान स्तव भानु संगी, संगीर्णा अंधार ससी पिसंगी ॥२०३॥
न दानबेला कबहू नकारी, सपत्न सेना कुल घातकारी ॥
साहित्य आस्वाद कवि प्रकारी, प्रमाद व्यापार बकी बंकारी२०४

( )

बुंदियपुर बैभव इम बिलसत, हड्ड ६१न हेलि अधिप पटु एस ॥
ललित अखंड सुधर्मा कि लसत, सहपुर अहप्रति समह सुरेस२०५
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रेहृतदाक्षिणात्यक्षोणिकांगरेजराजपुत्रस्थानस्वाजंटस्थापन१ विजितभरतपुरजट्टांगरेजपुनर्भरतपुरजट्टवितरण२ ब्रह्माराजसकाशांगरेजप्रान्तद्वयग्रहणसूचन ३ जयपुरराज्यराज्ञीभाट्टियानीझूंतारामवैश्यदुराचारसूचन ४ पतिसगहमनार्यावर्तप्राचीनप्रणालीवारणपूर्वां

इस प्रकार १ राजा रामसिंह अपनी समान अवस्थावालोंके साथ संगीत को आदि लेकर नृत्य आदि की कलाके प्रसंग में २ प्राप्त की है स्तुति योग्य ३ सुख से गाईजानेवाली, सूर्य का साथ करनेवाली और अंधेरे पर चन्द्रमा को ४ पीला दिखानेवाली उज्ज्वल कीर्ति जिसने "यहां उज्ज्वलता और चन्द्रमा आदि के प्रसंग से कीर्ति का अध्याहार ऊपरसे होता है"॥२०३॥ दान के समय कभी इनकार नहीं करनेवाला ५ शत्रुओं की सेना को कुल सहित मारनेवाला, कवियों के प्रकार से साहित्य का स्वाद लेनेवाला और प्रमाद के व्यापार रूपी बकासुर के ऊपर ६ श्रीकृष्ण रूपी ॥२०४॥ हाडाओं का सूर्य चतुर स्वामी रामसिंह इसप्रकार बुंदी में वैभवका विलास करता है सो मानों अमरावती पुरी सहित ७ देवसभामें ८ प्रतिदिन इन्द्र उत्सव करता है ॥२०५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के नृपति रामसिंह के चरित्र में, अंगरेजों का दक्षिणियों से भूमि छुड़ाकर राजपूताने के राज्यों में अपने अजंटों को स्थापन करना १ अंगरेजों का भरतपुर को विजय करके पीछा जाटों को देना २ ब्रह्मा के राजा से अंगरेजों का दो सूबा लेने की सूचना करना३ जयपुर के राज्य में राणी भटियाणी और वैश्य झूंताराम के दुराचार की सूचना करना४ अंगरेजों का आर्यावर्त में सती होने की रीति

गरेजसमाचारपत्रप्रचारण ५ जनरलमटकलपबुन्द्यागमन ६ कोटापतिकिशोरसिंहदेहांतरामसिंहपट्टसमासादन ७ उदयपुरमहाराणा भीमसिंहपरासुताजवानसिंहसिंहासनाधिरोहण ८ लखनेऊनवावगाजियुद्दीनपरेतभावनसूरुद्दीनगद्दिकोपविशन ९ विक्रमनगरेशमहाराजसुरतसिंहासुहानिरत्नसिंहराजतिलककरण १० बुन्दीसचिवधात्रेयकृष्णरामच्छलघातवधवर्णनं नवमो मयूखः॥ ९ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ ॥

अग्ग दीधितिमैं वडो१ अब भूप नंदन भूप ॥
भीमसिंह२०३।१ कुमार भूखन पट्टरानि प्रसूत ॥
पुव्व अव्द८८६ संहस्य१०मैं तस गर्भ दिष्ट प्रसाव ॥
भव्य धारन स्वामिनी२०।२।१ किय भानु१ प्राचिय२भाव॥१॥
कर्क४।१नक्र१०।२ पतंगके क्रम रत्ति१ वासर२ रीति ॥

को बंद करना और आर्यावर्त में समाचारपत्रों (अखबारों) का जारी होना जनरल मटकलाफ का बुंदी आना ६ कोटा के महाराव किशोरसिंह का देहांत होकर रामसिंह का पाट बैठना ७ उदयपुर के महाराना भीमसिंह का देहान्त होकर जवानसिंह का पाट बैठना ८ लखनऊ के नवाब गाजियुद्दीन के मरने पर नसुरुद्दीन का गद्दी बैठना ९ बीकानेर के महाराजा सुरतसिंह का देहांत होकर रत्नसिंह का गद्दी बैठना १० बुन्दी के सचिव कृष्णराम धायभाई के छलघात से मारेजाने के वर्णन का नवम ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ इकहत्तर ३७१ मयूख हुए ॥

अब आगे १ किरणों में बडा (बडेतेजवाला) राजा रामसिंहका पुत्र, कुमरों का भूषण भीमसिंह पाटवी रानी से हुआ सो कहते हैं २ पहले वर्ष के पांच मास में भाग्य की प्रसन्नता से उसके शुभ गर्भ को, जैसे पूर्व दिशा सूर्य को धारण करती है तैसे स्वामिनी ने धारण किया ॥ १ ॥ कर्क और मकर संक्रांति के ३ सूर्य के क्रम से जैसे रात्रि और दिन बढता है और शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा

पक्ख उज्जल१ इंदु२ ज्यों हुव ऐधमान प्रतीति ॥
पाइ सुर्जन १९१।१ भोज१९२।२ रत्न१९३।३ सता१९५।१ रु भाउ-
व१९६।१ पुराय ॥
गर्भ१ जो महिषी गह्यो अनला१ऽरणी अनु गुराय ॥ २ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम तनय जनन१ ज स२ जन अगर्भ, गत अब्द८६ प्रसर्ले५ ऋतु
गहिय गर्भ ॥
आधान१ विहित संस्कार इद्ध, सीमंत२ पुंसवन३ तदनु सिद्ध॥३॥
रानीय अदोहद१ विविध रक्खि, संपूरन पावत२ स्वमन सक्खि ॥
पहुँचत३ ढिग गरूयहु सखिन पानि, उत्थान२ अटन३ अवलंब४
आनि ॥ ४ ॥
प्रतिदिन गति५मंथर६--प्रसंग, उच्छ्वास७क्रम२हु श्रम८असह्यअंग९
रवि बिंब१हर२ गौरव१० हरिनराग११, भासन लगि गोचर१२ मध्य
भाग४ ॥ ५ ॥
जिमतिम परि-- घन३ कठिन जोट२, उन्नत१४ उठि चिबुक५हु

पढता है तैसे १ बढना प्रतीत हुआ २ पाटवी रानीने ३ अरणी की अग्नि की गणना से (दो लकड़ियों को परस्पर घिसकर यज्ञ के अर्थ अग्नि निकालते हैं उनका नाम अरणी है) ॥२॥ ४ हेमन्त ऋतु में गर्भ धारण किया ५ जिस पीछे गर्भ के उचित सीमंत और पुंसवन बडे संस्कार किये ॥ ३ ॥ रानी को ६ गर्भ नहीं होवै ऐसे नाना प्रकार से छिपाकर रक्खी, अथवा रानी स्वयं छिपाकर रही. उस गर्भकी संपूर्ण साक्षी अपना मनही पाता है, समीप जानेवाली सखियों के हाथ का आधार लेकर ७ उठती और फिरती है ॥४॥ यहां छिपाने पर भी गर्भ के लक्षण जानलिये जाते हैं उन्हीं को दिखाते हैं कि ८प्रतिदिन चाल धीरी होती जाती है ९ श्वास लेने का और चलने का श्रम शरीर में असह्य होता है १०सूर्य के समान कान्तिवाला शरीर भारी और ११हरे रंग का होता जाता है और पेट १२दीखने लगा(ऊंचाउठगया)॥५॥ शरीर की जोड़ें(संधियां) बहुत कठिन होकर १३ ठोडी और कुच ऊंचे उठगये जो वस्त्र के समूह से

कुचन ओट ॥
इन दुरहुन अगोचर१५वनि बिचाल६, जिम घन१ससि२न दुरत१६ चोल जाल॥६॥
व्यापार१हलुव२मित३नत बेन१७, क्रीड़ा१व्रीड़ा२करि नमत१८नैन
लहँगा१ बिवर्तलघु१९ चैल२ चीन२०, चोली२१ जुत चीर४हु धृति अधीन२१ ॥ ७ ॥
सौभाग्य चिन्ह द्विक२हि सुहाइ२२, भर अल्प वलय१ निष्का१ दि भाइ२३
अंचित खिल भूखन सब उतारि२४,धवं मंगल सूचक नियतधारि८
असनादि नियम सब सद्धि २५ आप, अंहपति सुख बिलसिय मह अमाप ॥
अववर्तन आश्विन७मास आइ, वेजनन वेर तह मह तनाइ ॥ ९ ॥
नव९ गात्र अबाधि९ निज अय उदर्क, अस्ताचल पहुँचत पाँथअर्क

ढककर १ नहीं दिखाने पर भी उनके विशेष पढने से नहीं छिप सकते जैसे बादलों से २चंद्रमा नहीं छिपता है ॥ ६ ॥ बोलने की क्रिया हलवै (धीरै) और कमती होती है ३ क्रीड़ा करने में लज्जा से नेत्र नीचे होते हैं ४ छोटे घेरवाला लहँगा और कांचली सहित ओढने का वस्त्र ५ बारीक वस्त्र के धारण तथा सन्तोष दायक होते हैं ॥ ७ ॥ सौभाग्य के दो चिन्ह अल्प भार के रक्खे ६ चूड़ा "यहां तिमणियां का नाम नहीं है, परन्तु सुहाग के दो चिन्ह कहने से तिमणियां का ग्रहण है, क्योंकि स्त्रियोंके सुहागका चिन्ह चूड़ा और तिमणियां ही माना जाता है" ७ स्वर्ण आदि के सुहाते हैं "यहां आदि शब्द से मोती आदि का ग्रहण हैं" ९ बाकी के सब भूषण उतार दिये और ८ ये दो भूषण पूज्य और १०पतिके मंगलकी सूचना करनेवाले होने के कारण निश्चय ही धारण किये ।८॥ ११भोजन आदि १२दिन प्रति १३जीविका प्राप्त करानेवाला "यहां अव शब्द प्राप्त करानेका और वर्तन शब्द वृत्ति(जीविका)का वाचक है" अर्थात् राजकुमार के जन्म से सबको जीविका दिलानेवाला आश्विन मास आकर १४ तहां गर्भ के जन्म समय का उत्सव फैला ॥९॥ १५आगे आने वाले अपने शुभ कर्म फलसे १६ चन्द्रमा के अस्ताचल पहुँचते समय महाराव

प्रभु सजि अनीक चौगान पत्त, देविय निमित्त बलि१अजजन२दत्त१०
रुचि बिबिध सद्धि प्रहरन दुरूह, जहँ दत्त परिच्छा भटन जूह ॥
चल१ अचल२ बेध्यं गन सफल चोट, जितजित कहुँ सादिन द्रव-
त जोट ॥ ११ ॥
तोपन चिंति चल्लत असह ताप, मिलि सम्मुह ढंकत हय अमाप॥
इम कृत्रिम आहव बल बिधान, बलि चढत बस्त१ मह२ सुरन
मान ॥ १२ ॥
सुत प्रसव सुद्धि तहँ पहुँचि तामँ, किय बिधि मन जनजन सफल
काम ॥
सक मुनि भुजंग बसु ससि १८८७ समान, ईस७ मास पक्ख इह
बिसद२वान ॥ १३ ॥
बर्तत नवमी९ तिथि मिहिर१ बार, पैंतीस३५ घटी पल द्विचउ ४२
पार ॥
पू०षा० २०उडु बिकृति२३ रु तिथि१५ प्रमेय, सौभाग्य४ धृति१८
रु पल प्रकृति२१ श्रेय ॥ १४ ॥

राजा रामसिंह सेना सजकर चौगान में गये और देवीको बलिदान व पूजन दिया ॥ १० ॥ १ कठिनाई से तर्कना की जावै ऐसी शस्त्रों की परीक्षा २हिल-ते हुए और ठहरे हुए निसानों को ३ सवार घोड़ों की जोड़ियां दौड़ाते हैं ॥ ११ ॥ ४ तोपों के समूह, देवताओं के बलिदान में ५ बकरे और ६ भैंसे चढते हैं ॥ १२ ॥ ७ तहां रावराजा के (*)पुत्र होनेकी खबर पहूँची ८ आसोज मासके शुक्ल पक्षकी नवमी ॥१३॥९रविवार पैंतीस घड़ी बयालीस पल, पूर्वाषाढा नक्षत्र तेईस घड़ी पंद्रह पल, सौभाग्य नाम योग अठारह घड़ी इक्कीस

(*)इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने राजकुमार भीमसिंह की मृत्यु तक का इतिहास नहीं लिखा इसकारण नहा मालूम कि वे इस विषय में क्या लिखते परंतु हमने बहुधा मनुष्यों की जबान से सुना है कि महाराज कुमार भीमसिंह अपनी युवावस्था के घमंड में महारावराजा रामसिंह की आज्ञा को नहीं मानते थे और यवनों का संग बहुत रखते थे इसकारण रावराजा ने उक्त राजकुमार को विश्वास घात से मरवाडाला। इन राजकुमार भीमसिंह के शारीरक बल और बाणविद्या व वीरता की हमने बहुत प्रशंसा सुनी है ॥

॥
॥ ३६ ॥
॥
॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेरन दिन्नी जब, बिन्नति नृप करजोरि करी तब ॥
कूरम नृप जयसिंह इरामिय, पै सेवक भंगी तस जामिय॥ ३८ ॥
तातैं तिहिँ संबंध अरज यह, आजम दोस आहि जखमी वह ॥
जो आयस तिहिँ ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अप्पन समुझाऊँ३९
सुनि यह अरज साह कछु अक्खैं, तव संबंध मदर हम रक्खैं ॥
पुर आमेर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलैं ढिग आवहु ४०
यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, मद्देर घाय सिकत वह पायो ॥
तीर एक भुज सव्य लग्यो तस, जाजव रन इक कंठ लहनजस४१
यो जस भयो बुद्ध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छतँ ॥
तिन सिकत जाय रु नृप तक्क्यो, करि महुहारि मोद हियछक्यो।४२।
कही बहुरि नृप नेह कहाई, आजन वसि आमेर बिहाई ॥
आलम सेवा अबहि अराधहु, स्वर्लूप जोर दुल्लभ सुख साधहु॥४३॥
डेरा अब आलम दल मंडहु, खेगि कछु दिनन बिपति दुखखंडहु॥
कूरमकौं लै संग यहै कहि, चाहुवान निज दल आयो चहि॥४४॥
अप्पन ढिग कछवाह उतारे, सालक जामिप विनय सम्हारे ॥
बिधि इहिँ कदँन अपूरब बित्त्यो, जाजव रन दुल्लभ नृप जित्त्यो ४५

---

१ उसकी बहिन की मुझसे सगाई (मंगनी) हुई है ॥ ३८ ॥ २ आजम के पक्ष में होने के अपराध से ३ घायल है ४ आज्ञा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ तीर के घाव को तपाताहुआ ६ बाम भुज पर ॥ ४१ ॥ ७ घाव ही पाया, यश नहीं पाया ॥ ४२ ॥ ८ बहिन के पति (बहिनोई) बुधसिंह के पक्ष से ॥ ४३ ॥ ९ रू- हन करके ॥ ४४ ॥ १० साला बहिनोई ने अधिक नम्रता की ११ इस रीतिसे- अपूर्व (पहले नहीं हुआ ऐसा) नाश १२ राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

वान५ रु तिथि१५ बालव२ मिति बिभात, तीस३० रु छतीस३६ इह इष्टआत ॥
रवि१ सर५ रु हर११ रु अधिपति १६ रु अष्टि१६, सिव ११ रासि दु२ लव लग्नहु समाष्टि ॥ १५ ॥
मंगल३ सफर१२ स्थित लग्न१ माँहिं, अरिगृह६ कवि६ सनि७तम ८ सिंह२ आँहिं ॥
दयिता७ गृह७ कन्या६ थित दिनेस१, अंतालय८ ससिसुत४ घटग एस ॥ १६ ॥
ससि२ गुरु कर्मालय१० चाप९ सत्थ, आहिक९ सकुंभ११ व्यय मीन१२ अत्थ ॥
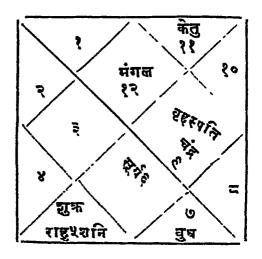
पल ॥ १४ ॥ बालव करण पांच घड़ी पन्द्रह पल, इष्ट तीस घड़ी और छत्तीस पल, सूर्य पांच राशि ग्यारह अंश, सोलह कला और सोलह विकला, लग्न ग्यारह राशि, दो अंश ॥ १५ ॥ मीनका मंगल लग्न में है, और शुक्र, शनि, राहु तीनों ग्रह छठे भवन में सिंह के हैं, कन्या राशिका सूर्य सातवें भवन में, और तुलका बुध आठवें भवनमें गया है ॥१६॥ चन्द्रमा और बृहस्पति दसवें स्थान में धन राशि के हैं, और कुंभ राशि का

इम ग्रह९न भोग्य राशि१२न अधीन, क्रम कथित छ६ गेहन वास
कीन ॥ १७ ॥

जँहँ हड्ड६१पुरंदर१ कुमर२ जात, केसव१ गृह दर्पक२सम सुहात॥
ऋतु मथन१ गृह कि कार्तिक२ कुमार, इन१ गृह वैवस्वत२किमु
उदार ॥ १८ ॥

बिधु१कै बुध२ बिधि१कै मनु२ महंत, जंभाहित१कै जय२ कै
जयंत३ ॥

आसुग१कैभीम२किँअसनिअंग३,अप्पति१कै---२किमुअभंग१९

कुह१ कुल नलकूवर२ किमु कुमार, किमु राम१ सदन कुस२
सुजसकार ॥

श्रीप्रभु ऋषभा१लय भरत२ श्रेय, कृतबीर्य१ कुट कि अर्जुन२
अमेय ॥ २० ॥

दुक्खंत१ सदन भरत२ कि द्वितिय२, बुध१ बसति ऐल२ इन हरि
द्वितीय ॥

धर्मा१लय ज्यौं अजमीढ२ धीर, बल१ निलय उल्मुक२क निसठ३
बीर ॥ २१ ॥

केतु बारहवें स्थान में है, ये ऊपर कहे हुए नव ग्रह छः भवनों में वास करते हैं और छः भवन खाली हैं ॥ १७ ॥ जहां हाडाओं के १ इन्द्र के कुमर हुआ सो मानों श्रीकृष्णके घर में कामदेव (प्रद्युम्न) के समान शोभा देता है, इसीप्रकार १शिव के घर में मानों स्वामिकार्तिक, २ सूर्य के घर में मानों उदार वैवस्वत मनु ॥ १८ ॥ ३चन्द्रमा के बुध, ४ ब्रह्मा के मनु, ५ इन्द्र के अर्जुन किंवा जयन्त, ६ पवन के भीमसेन और ७ हनुमान, वरुण के मानों अभंग ॥ १९ ॥ मानों कुबेर के घर में नलकूबर, रामचन्द्र के घर में सुयश के करने वाले लव कुश, ऋषभ के घर में श्रेष्ठ भरत, कृतवीर्य के घर में मानों तुलना रहित सहस्रार्जुन ॥ २० ॥ दुष्यन्त के घर में मानों दूसरा भरत, बुध के घर में परमेश्वर का भक्त राजा ऐल, जिसप्रकार धर्म के घर में धीर अजमीढ, बल के घर में वीर उल्मुक और निसठ ॥ २१ ॥ अर्जुन के मानों युद्ध में नहीं सहन

जद१कै अभिमन्यु२कि असह जुद्ध,*स्मर१सद्म†उषावर बरप्रबुद्ध
नरपति नल१ सद्म कि इंद्रसेन२, नाहुष१ निकेत पूरु२‡अनेन२२
मनु१कै कि प्रियव्रत२ गुन अमेय, ध्रुव१कै किमु उत्कल२ नाम-
धेय ॥
वैवस्वत१ गृह इक्ष्वाकु२वुद्ध, ————————१२ §अलुब्ध ॥ २३ ॥
कालिदमन परिच्छत१ नृप विकेत, पैनधन जनमेजय२ जयउपेत
उदयननृप१ गृह इत गृहसराह, नरवाहन दत्त२ कि कुमरनाह२४
पहु चंड महासेना१ख्य पस्त्य, गोपालकुमर अरिकाधि१अगस्त्य२॥
विक्रम१ निकाय क्रम चित्र२वीर, हुवभोज१ निलय २ गहीर ॥२५॥
संभर पित्थल१७।१।१ गृह रत्नसीह२, विजया१लय करन किरन
अबीह ॥
जयचंद्र१ महोदयपुर जनेन, सुत किमु तदीय वरदायसेन२ ॥ २६ ॥
नृप सिद्धराज जयसिंह१ नाम, सुत गोभिलराज२ कि तस सुधाम॥
सरवंधिक कर्ण१रैवत रसेसं, सुत तस कैवर्त२कि जस असेस२७

किपेजानेवाला अभिमन्यु, * प्रद्युम्न के बुद्धिमान् † उषा का पति अनिरुद्ध, राजा नल के घर में इन्द्रसेन. नहुष के घर में ‡ पाप रहित पूरु ॥ २२ ॥ मनु के मानों अमाप गुणोंवाला प्रियव्रत, ध्रुव के मानों उत्कल नामक पुत्र, वैवस्वतके घर में चतुर इक्ष्वाकु　　§ निर्लोभी ॥ २३ ॥ १ कलियुग को दंड देनेवाले परीक्षित् के घर में २ प्रण ही है धन जिसके ऐसा जय सहित जन्मेजय, राजा उदयन के घर में घर की प्रशंसा करानेवाला कुमारों का पति मानों नरवाहनदत्त ॥ २४ ॥ ४ महासेन नामक ३ प्रचंड राजा के घर में कुमर गोपाल, अरिकधि के अगस्त्य ५ विक्रम के घर में चित्रवीर्य ॥ २५ ॥ ६ चहुवाण पृथ्वीराज के घर में रत्नसिंह ७ सरवहिया विजय के घर में युद्ध में नहीं डरनेवाला करण, महोदयपुर के राजा जयचंद के घर में ८ मानों उसका पुत्र वरदाईसेन ॥२६॥ राजा सिद्धराज सोलंखी के श्रेष्ठ घर में मानों गोभिलराज १० रैवत के राजा ९ सरवहियां करण के घर में मानों सम्पूर्ण गुणोंवाला उसका पुत्र ११ कैवार्त हुआ॥ २७ ॥ इस प्रकार गुणों की खान हाडाओं के

गुन आकर हङ्ढ१न हेलि गेह, इहिँ तुल्य कुमार हुव तिहिँ अनेह ।
नर पहुँचि सुद्धि दायक अनेक अधिगत अभीष्ट हुव एक एक२८
भू१ धन२ गृह ३ भूषन ४ बसन ५बाह६, सतकार पगे सब लह लाह ॥
बांधव१ बयस्य२ भट३ सचिव४ वर्ग, सुनि कुमर जन्म अंहति निसर्ग ॥ २९ ॥
वृत्तिहिँ बचाइ सर्बस्व२ स्वीय, बहु देत भये रुचि जस वरीय ॥
कति संघ दत्त भूखन दुकूल२, मुद्रा३ दिय कतिकन प्रमदमूल३०
आब्दिक४ दिय कतिकन अवनि आय, कतिकन दिय मासिक५ निज निकाय ॥
महि६ दत्त कतिन श्रद्धा प्रमान, दिय द्वो ढिग जो सु७हि कतिन दान ॥ ३१ ॥
इम दत्त कतिन भूखन८ अगार, बसनालय९ कतिकन बसन वार
लुटवाइ मँदुरा१० कति अलुब्ध, सल११ महिषी१२सुरभी१३ वृषभ १४ सुब्ध ॥ ३२ ॥
कतिकन दिय सस्त्र१५हि प्रमद काल, बटि दंग बधाई वसु बिसाल ॥
रीझहिँ सक्यो न कहुँ कोहु रोकि, बिग्रह१ असु२ आगम मह बिलोकि ॥ ३३ ॥

सूर्य (रामसिंह) के घर में १ इनकी बराबरी करनेवाला कुमर उस (ऊपर कहे) समय में हुआ सो राजाको खबर देनेवाले अनेक मनुष्य पहुँचे उन सबको वांछित फल २ प्राप्त हुए ॥ २८ ॥ ३ दान के ४ स्वभाव से सत्कार को प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ अपनी वृत्ति को छोड़कर अपना सर्वस्व ॥ ३० ॥ ५ अपनी भूमि की सालियाना आमद और कितनोंने ६ घर की माहवारी आय (आमद) दी ॥ ३१ ॥ कितने ही निर्लोभियों ने ७ हयशाला लुटा दी ८ ऊंट ॥ ३२ ॥ ९ शरीर में १० प्राण आने के समान उत्सव देखकर ॥ ३३ ॥

प्रभु विहित कृत्य महलन पधारि, पोढे पुनि दुस्थन दुक्ख दारि ॥
सद्दिय दसमी१०दिन विधि असेस,अवसरनिगमोदित विरचि एस३४
क्रम जातकर्म ४।१ सह विधि कराइ, किय नाम कर्म ५।२ पुनि
समय पाइ ॥
कवि चंड ।पत्त दानाधिकार,सह सचिव बुल्लि तहँ मह प्रसार३५
अधिराज दुहुरन दिय हुकम एहु, दिन समह बधाई बंटिदेहु ॥
भरि तव वहु थैलिन धन अभंग, करि कर्म सचिव कति सुकवि
संग ॥ ३६ ॥
जब अखिल दान संभार जोरि, पीतांवर श्रीहरि निलय पोरि ॥
निज ठानि अधोमहलन निवास, पट्ठ उचित बंधु१ कवि रक्खि
पास ॥ ३७ ॥
तिहिं थान बधाई१ नाम त्याग, भनिहित प्रारंभिय क्रम बिभाग ॥
भूखन१पट२हय३ गय४ भँम५ भुम्मि६, घन द्रम्म७दन जसछाक
घुम्मि ॥ ३८ ॥
बुध१ कवि२ द्विज१विद्या२समर सूर, पौरानिक३मागध३ बंदि४पूर
वैतालिक५ चाक्रिक६भांड व्रात, जंगर८विरुदव्रत भट्ट९जात॥३९॥
बहुरूप१० भरत११ चारन१२ बहोरि, जिम नांदी१३ सूचक१४जूह
जोरि ॥
पुनि पीठमर्द१५ पार्श्विक१६ प्रवीन, प्रीतिदँ१७ विट१८ चेटक १९

१दारिद्रियों का दुःख काटकर २चंद का कहाहुआ ॥३४॥३इस ग्रंथ के कर्ता सूर्य-मल्ल के पिता चंडीदान को दान का अधिकार दिया ॥ ३५ ॥३६॥ ४सामग्री ५मंदिर की पोळ [द्वार] में ६नीचे के महलों में ॥३७॥ ७सुवर्ण ॥३८॥८चारण९भाट विशेष १० जांगड़ (ढोली)॥३९॥ ११नट १२कत्थक(नाचनेवाले नट विशेष) १३नाटक के आदि में मंगल पाठ करनेवाले नट १४सूत्रधार (नाटक करनेवाले नट विशेष)१५नाटक के नायक विशेप१६माया कारक नट विशेप और १७ विदूषक १८ विट, चेटक (ये तीनों कामी पुरुष के सखाओं के भेद हैं).

स्वगुन[1] पीन ॥ ४० ॥

पात्र[2]२० रु भ्रकुंस[3]२१ पनजुत्ति[4]२२ जत्थ, वादन[5]१ चउ४ वादक२३ श्रेनि[6]२४ सत्थ ॥

पहिले१ अधिकारी१चउ४प्रधान, मोताजदार२पुनि मध्य२ मान४१
उपटंक वनीयक[7] वृंद एस, गुन बेतन ग्राहक३ श्रेनि३ सेस३ ॥
इह अन्य[8]हि चारन१ भट्ट२ उक्त, पौरानिक१वंदी२पनप्रमुक्त॥४२॥
तर्क[9] बिदेश्य१ अरु देश्य२ तत्थ, आये जुरि सहँसन अर्थ[10] अत्थ
इम मग्ग[11]९अवधि जुग२मास अंत, दिय वंटि वधाई जस दिपंत४३
वटि सघ[12]१ हय२ भूखन३ सतन व्रात, सिरुपावन४ सहसन मित[13] सुहात ॥
बितरत अयुतन मित द्रम्म[14] वार,सिंधुन बिलंघि हुव जस प्रसार४४
उच्छव१ यह जान्यों दिसन अंत, क्रम संसकार सोभित सुमंत ॥
निस्कासन[15]१ प्रासन[16]२ बिधि बनाइ, पुनि अवसर छुरिका[17]३ बंध पाइ ॥ ४५ ॥

सह चौल[18]४उपनयन[19]५व्याह६सिष्ट,दिपि है सब इतिमुख आविदिष्ट[20]

१अपने अपने गुणों में पुष्ट ॥४०॥२नाटककर्ता विशेष ३स्त्री का वेष करके नाचने वाले नट विशेष ४वेश्याएं ५चार प्रकारके वाद्य (तत, आनद्ध, [*]सुषिर, घन) बजानेवालों की ६ पंक्ति सहित ॥४१॥ इन पदवियोंवाले ७ याचकों के समूह और बाकी गुण के साथ तनखा पानेवालों की पंक्ति ८ इन से भिन्न ऊपर कहे हुए चारण और भाट जिनको पौराणिक और बंदी कहते हैं ॥ ४२ ॥ ९ याचक १० धनके अर्थ ११ मृगशिर मास पर्यन्त ॥ ४३ ॥ १२ ऊंट १३ गिनती में १४ रुपयों का समूह ॥ ४४ ॥ अब आगे संस्कारों के नाम बताते हैं १५ बाहर निकालना १६अन्न खिलाना १७छुरी बंधाना॥४५॥१८चूडाकर्म(हजामत बनवाना)१९जनेऊदेना और व्याह करना इत्यादि श्रेष्ठ संस्कार२०आगे आनेवाले

[*]"ततं वीणादिकं वाद्य आनद्धं मुरजादिकम् ॥ वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम्" इत्यमरः ॥ अर्थ–वीणा आदि वाद्य का नाम तत, मृदंग आदि को आनद्ध, वंशी आदि को सुषिर और कांसी के ताल आदि वाद्य को घन कहते हैं ॥

अब वर्तमान क्रम करि उदंत, कोविद श्रुति धारहु अवनिकंत ४६
वलि उर्ज्ज८ मग्ग९ अह मह विताइ, अवलच्छ२ पच्छ अब पौ-
स१० आइ ॥
वर्तत तिथिपंचमि५तरनि१वार,क्रम लहिय जन्म अर्जुन१कुमार४७
खनि१ मनि स्वरूपलतिका२ खवासि, जो रत्न १ जन्यौं २ रुचि १
रूप२ रासि ॥
कविजनक किन्न वलि कवि विवाह, सक भावी१८८८मधु सि-
ति१ लग्न लाह ॥ ४८ ॥
कोटेस प्रतोली पात्रकेर, वहिनी सन सगपन किय सु बेर ॥
जहँ विद्यमान कवि मालजास,श्रुत विजयसिंह१अभिधानआस४९
जो मालिक महियारियन जात, कविराज मोघं उपपद कहात ॥
सासन थोहनपुर१प्रमुख सत्त७, पूरन१कति कतिकन वंट२पत्त५०
सब कुल माधानि न नेग सत्थ, आजीवन कोटा ज्ञात अत्थ
तस जामि वधू हित मंगि तात, प्रारंभिय उच्छव समय पात॥५१॥
सक हय अहि वसु इक १८८७ पकत सस्य, तिथि बारसि ससि
सुत४ सित२ तपस्य१२ ॥
अप्पँहि निमंत्रि कवि निज अगार,वुल्ले सह परिगह मह विथार५२
समुपेत पत्ति१सादि२न सहस्र, घटिका दस१०जावत कथित घस्र

समय में शोभा पावेंगे [होवेंगे] १ हे चतुर राजा सुनो अथवा हे राजा के पंडितो सुनो ॥ ४६ ॥ २ कार्तिक ३ पौष मास का कृष्णपक्ष ४ रविवार ॥ ४७ ॥ मणियों की ५ खान ६ सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान ने ७ इस ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का विवाह किया ८ चैत्र सुदि ॥ ४८ ॥ ९ पोळपात्र की ॥४९॥ १० कवि नहीं होने पर भी कविराजकी झूठी पदवी कहाता था ११गुड़ गाडुर आदि ॥ ५० ॥ १२उसकी बहिन को १३पिताने ॥५१॥ १४ खेती के पकते समय १५ बुधवार १६ फाल्गुन सुदि १७ कविने आपको न्यूँता देकर परगह सहित अपने घर बुलाये ॥ ५२ ॥ १८ कहेहुए दिन

प्रभु निवसथ हरिना१ निकट पत्त, अभिमुख२ कवि१आगत त्वरित तत्त ॥ ५३ ॥
पहुँचे न कास द्रोनि३१ प्रदेस, सोदागर भैरव२ पहुँचि सेस ॥
सह बिरुद१ दत्त आसिख२ सुहाइ, उँपदा किय हय इक१ प्रमद पाइ ॥ ५४ ॥
रक्खषो न तुरंग१ सु हड्ड६१राज, क्रमि अग्ग लग्ग१ लखि सम-य काज ॥
बाहलि कारुंड२सु संकट बट्ट३, उत्तरि इत आये थरकि थट्ट॥५५॥
क्रमि मग इंडुभ द्रह४ रु ढुड़कूप५, दै छलियद दक्खिन१ भुजहिं भूप ॥
जिम सब करि दक्खिन १ ईच्छुजंत्र ७, तजि तुरग रुंडतट ८ पुनि स्वतंत्र ॥ ५६ ॥
थित देवी चालकनेचि थान९, तहँ बहु तनाइ पँटगृह बितान १०॥
अंतर प्रवेसि ११ कटिबंध उंज्झि १२, समयानुसार सब कज्ज सुज्झि ॥ ५७ ॥
दै सैन्य जिमावन तहँ निदेस१४, पठये निंयोगि जन१५निपुन पेस
जिल्ला निज लैलै १६ तिनहु जाइ, जे सब कवि आलय दिय जि माइ१७ ॥ ५८ ॥
आदरके भट१ खिल रहि उदार, रहिकैं अधीस ढिग रहनहार२॥
बल आत जिम्मि जनजन बिबेक, अवसेसं रहत दिन जाम एक१

१हरणा नामक सूर्यमल्लके ग्रामके समीप पहुंच वहां कवि चंडीदान २सम्मुख [पेशवाई] को आया ॥५३॥३पर्वत की संधि के स्थान पर ४ नजर ॥५४॥ ५गाड़ा [छकड़ा] के मार्ग से ॥ ५५ ॥ ६गन्ना पीलने की चरखी [जंत्र] को दहिने हाथ रखकर ॥५६॥७डेरे और ८ चंदवे तनाकर ९कमरबंध खोला ॥५७॥ १०जीमनेका हुक्म देनेवाले मनुष्यों को भेजे ॥ ५८ ॥११एक पहर दिन बाकी रहते ॥ ५९ ॥

सह सौच१ बि२ संध्या २ सद्धि सूर, आरोहि३अर्ब हय मृग१ हजूर
हृहती गोवाटी१ मुख प्रबिट्ठ४, आवत४ निवसथ२ बिच स्वकवि
इष्ट ॥ ६० ॥

तवतैं पामंडे६ पट१न तानि, अति अर्घ पट्टमय२ अग्ग आनि७ ॥
तिम अग्ग ८ मिलित जर १ तार २ तार३, अधिराज पत्त ९ इम
कवि अगार ॥ ६१ ॥

गनपति१ सिव२ थान जु चतुर गोल१०, तजि११हय तहँ लालित
१ लालित२ लोल३ ॥

चतुर १२ जु आढ्हय करि रामचोक ३, अनि चउ ४ जुत करनी
सक्ति ओक१३ ॥ ६२ ॥

पैठे१४ तहँ संसदं प्रभु बनाइ, प्रविसे१५ पुनि अंदर समय पाइ ॥
कवि आलय चत्वर बिबिध कंति, परि चो ४ सर चत्वर भंति
पंति१६ ॥ ६३ ॥

प्रभु तत्थ सखा१ सुभटन उपेत, हड्ड६१न इनै बैठे१७ असन हेत॥
आचांत अंबु १८ स्वदनाँवसान, पानिय पवित्र लहि १९ अप्प
पान२० ॥ ६४ ॥

पुनि इम अयनं१तर अयन पत्त, महिला कविकुलकी जहँ समत्त॥
भट दुजनसल्ल १ गोकुल २ भुंवाल, लहि संग कर्णा३ तिम रत्न-
लाल४।१ ॥ ६५ ॥

त्रय३आदि महासिंहोत्त तत्थ, स्व सचिव काका——चउ४समत्थ

॥६०॥१ चांदी और मोतियों सहित ॥ ६१ ॥ २ चपल घोड़े को छोड़ा ३ करनी माता के स्थान में ॥ ६२ ॥ ४ सभा करके पैठे ५ चौक में ॥ ६३ ॥ ६ हाडों का पति भोजन करने को बैठा ७ भोजन के अंत में आचमन लेकर ॥ ६४ ॥ ८ घर के भीतर के घर में पहुंचे जहां कवि के कुल की १० सब ९ स्त्रियां थीं ११ रावराजा रामसिंह ने जिनकी लाज वे स्त्रियां नहीं करती थीं ॥६५॥ उन चार

ए ४ स्वामि १ संग चउ ४ बीर आसं, पंचम ५ लहि सो५कहँ अप्प पास ॥ ६६ ॥

पंच५न जुत अंतर गृह प्रविष्ट, पहिचानी सबतिय कवि प्रदिष्ट॥
कवि जननि नजर इक द्रम्म किन्न, लहि सो१ रु न इतरन भेट लिन्न ॥ ६७ ॥

उत्तारन२ करि तब तिय असेस, अक्खिय पवित्र किय सद्म एस॥
प्रभु आसिख इम कवि तियनपाइ,उपविष्ट सभा जह पुब्बआइ६८
सिरुपाव जकुट २ वर १ बरनि २ सीर, मुद्रा सतसह १०० हय वितरि वीर ॥
॥ ६९ ॥

दासि१न घट२ मुद्रा पंच५ दत्त, पुनि इक१ पुरोहित२कलस३ पत्त॥
इक१हि निप मोतीसर३न आइ, पयधावक नापित४उभय२पाइ७०
इक१दम्म भेजि श्रीहरि१ अगार, दुग्गावी२ मंदिर इक१उदार ॥
उपदा इक१चालकनेचि३अत्थ, सब्बिय इक१करनी४ भेट सत्थ७१
इततैं इक१ इक१ सिरुपाव १ अर्व१, कवि जनक १ किन्न प्राभृत २ सुपर्व ॥
रक्ख्यो न उपायन वह रसेस, मोताज मिलिय इततैं असेस॥७२॥
चैलालय १ अधिकृत दम्म च्यार, ध्रुव चउ४हि फरास२न निकर धारि ॥

आइयों को और पांचवें १ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल को पास लेकर ॥६६॥२सूर्यमल्ल की माता ने ३ दूसरी स्त्रियों की भेट नहीं ली ॥ ६७ ॥ ४ न्यौछावर ५ हमारे इस घर को पवित्र किया ६ सभा में जहां पहिले बैठे थे तहां आये ॥ ६८ ॥ दुल्लह दुलहन के लिये ७ दो शिरोपाव ८ देकर ॥६९॥ ९दासियों के कलश में १० मोतीसरों के कलश में ११ पग धोनेवाले नाई ने ॥ ७० ॥ १२ देवी के मंदिर ॥ ७१ ॥ १३ श्रेष्ठ समय पर कविने भेट किये १४राजा ने यह नजराना नहीं रक्खा ॥ ७२ ॥ १५फरासखाने के दरोगे को १६ फरासों के समूह को

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबु-
धसिंहचरित्रे मूर्छोत्थितश्रुतस्वानीकपराजयकरिपल्याणप्रहारभग्न
मस्तकदीदारबख्शमरण १ दीदारबख्शगजगतकोटिमुद्रालंकारो
पेतविजयप्राप्तिबुधसिंहबहादुरशाहसेवानिवेदन २ द्वितीयदिनप्रभातय
वनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधसिंहार्थमहारावराजपदसहितद्वा-
पञ्चाशत्प्रान्तयवनेन्द्रप्रदान ३ बुधसिंहालमसेनासमानीतामेराधी-
शजयसिंहालमसेवकत्ववर्णनं षोडशो मयूखः॥ १६ ॥

आदितः चतुःपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५४ ॥

(षट्पात्)

मरत साह अवरंग मंत्र मंडिय रट्ठोरन ॥
अब न साह अवनीस मूढ तस सुत प्रमाद मन ॥
इहिं अंतर यह पिक्खि आनि बंभन अगार सन ॥
पट्ट तखत जोधपुर नृपहिं रक्खहु निसंक मन ॥
यह मिसल अट्ठउपजाय उर द्विज गृहतैं तब आनि द्रुतं ॥
नृप अजितसिंह रक्ख्यो तखत सबन तत्थ जसवंत सुत ।१।

(दोहा)

इत आलम लहि बिजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, मूर्छा से सचेत हुए दीदारबख्श का अपनी पराजय सुनकर हाथी के होदे से मस्तक फोड़ कर मरना १ दीदारबख्श के हाथी पर क्रोड़ रुपयों के भूषण सहित विजय मिलने का बुधसिंह का बहादुरशाह की सेवा में निवेदन करना २ दूसरे दिन बुधसिंह के प्रभात समय बादशाह बहादुरशाह की सभा में जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के पद के साथ बावन परगने देना ३ आमेर के राजा जयसिंह को बुधसिंह का आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के वर्णन का सोलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चोपन २५४ मयूख हुए ॥
राठोड़ों ने १सलाह की २ भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका मूर्ख पुत्र उन्मत्त मनवाला ३ ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर के उमरावों की गणना में मुख्य आठ मिसल (बैठने की जगह) मानी जाती हैं ५ शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

दुंव २ दम्म द्वारपाल३न दिवाइ; पुनि दुव२हि नकीब४न निकर पाइ ॥ ७३ ॥
तांबूलकार५ द्दपभृत्य६ ताम, दुव२ दुव२ इत्यादिन लहिय दाम ॥
लहि सेसन इक१इक१दम्म लाह, अक्खिय पाकस्तव सबन वाह७४
पुहवीस व्याह मह इम पधारि, बहु पोलिपात्र गौरव बधारि ॥
तिमसद्धि निमंत्रन हड्ड६,१हेलि, किय आइ पुष्पसर१बेल२केलि७५
खिन पुव्व भोज१९२१२ भूपति खवासि, रुचि सुजस ठानि व्यय वित्त रासि ॥
लिंपतार्थ फुल्ललतिका१स नाम, जिहिं नरन१ भरन२ करि अट्ठ८ जाम ॥ ७६ ॥
भुव सोधि पवनदिस३६ कोस१ भाग, तहँ नाम फुल्लसागर१तड़ाग
बिरच्यो बिसाल जहँ तहँ सुबेस, आराम११२ रचिय भाऊ१९६ इलेसँ ॥ ७७ ॥
सवसाखी दल१ फल२ फुल्ल३ सालि, चद्दरि१ नला२दि जलजंत्र चालि ॥
सुभसिल्प कुंड१आपिय२सुहात, प्रासाद३ बंरन४ छविप्रचुर पात७८
लहिकाल भयो उपवन सु लुप्त, गुरु१विरल तरु२न रहिगो अगुप्त
अप्पहु प्रभु बिहरत कबहु आइ, लखि ताहिसज्ज बिरचन लुभाइ७९
दिय कृष्णाराम१ सचिवहिं निदेस; अभिनव वलि बिरचहु वल्लें एस
सुन जेठो१ मोहन१ प्रीति सत्थ, तारागढ अधिकृत बुल्लि तत्थ।८०।
इम कहिय सचिव वचें बेल एस, नृप किंयउ नव्य बिरचन निदेस

॥७३॥ १पकवान की स्तुति करके सबने प्रशंसा की ॥७४॥ २. फूलसागर नामक तालाव के बाग में क्रीड़ा की ॥ ७५ ॥ फूललताने अपना नाम ३निश्चय रखने के अर्थ ४ भरण पोषण करके ॥ ७६ ॥ ५ वायु कोण में ७.राजा भाऊने.यहां ६ बाग बनाया ॥ ७७ ॥ ८वृक्ष, महल और ९कोठें ॥७८॥ १० थोड़े से बड़े वृक्षों से प्रसिद्ध रहा ॥७९॥ १२इस बाग को फिर ११नवीन रचो ॥८०॥ १३ वचन कहा

सासन सु पुत्र सुहि धरहु सीस, मतिगति अरुद्ध मन्नहु महीस८१
सुनि जनक बैन प्रभु हुकम सध्य,इक्खि सु मुहूर्त तजि सब*अवद्य
प्रारंभिय उपबन नियम पारि, प्राकार †सुधा धवलित प्रसारि।८२।
नवधातु ‡उदुंबर के बनाइ नलिका१§उखा२दि बहुविध तनाइ३ ॥
तब गत छिति अंतर रक्खि ताम,जलजंत्र१जाल लग्गिय ललाम८३
चहरि२ तिम चल्लत तनत चित्रं, परिवाह सुद्धजल भृत पवित्र ॥
सरसेतु १ बेल २ बिच अति बिसाल, किय कुंड ३ किलोलन उष्णकाल ॥ ८४ ॥
तत श्रोढि४न सबदिस जहँ तनाइ, बिच तास पृथुल छत्री५ बनाइ॥
दिस उत्तर ४।७ तस तट रम्य देस, प्रासाद पंति ६ बिरचिय बिसेस ॥ ८५ ॥
चहरि७ जलजंत्र८ हु तहँ चलंत, छत्तिन लगि नल जल उच्छलंत॥
महलन उदीचि ४।७ दिस रुचिन मेल, बिस्तारिय सब ऋतु तरु ९ न बेल ॥ ८६ ॥
सब कूप १० कुंड११ बापी१२ सुधारि, चउ४ कोन बरनं१३ किय द्वार१४ च्यारि४॥
उत्तर तरु संभृत अखिल ऐन, दल१५फल१६ प्रसून१७ सबकाल दैन १८ ॥ ८७ ॥
प्राची१ आसा भव द्वार पास, अभिराम राम प्रासाद१९आस ॥
दक्खिन २।३ सन ध्रुवदिस ४।७ रुचिर राह, बिच नहर २० बहत चहरि प्रवाह ॥ ८८ ॥

॥ ८१ ॥ * सब अशुभों को छोडकर † चूने का उज्ज्वल कोट ॥ ८२ ॥ नवीन धातु की कितनी-ही ‡ देगलियां बनाकर नलियां और फुहारों के नीचे की § हांडियां आदि उनको भूमि के भीतर रखकर तहां १ फुहारों के समूह ॥ ८३ ॥ २ आश्चर्य फैला कर ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ३ उत्तर दिशा में ॥८६॥ ४ कोट ॥ ८७ ॥ ५ पूर्व दिशा में ॥ ८८ ॥

बिच तास चलत जलजंत्र ज्ञात, जिन अवधि कुंड२१ नव९ नलन
जात ॥
अतिवेग अंबु चढि तरुन उद्द २२, बरखा ३ दिखात बिनुकाल
छुद्द२३ ॥ ८९ ॥
प्रतिबाटी१ *इच्छु२४न सुमर२५न पाइ, अरु२ लवंग २६ द्राक्षा·
२७दि छाइ ॥
इत उपवन नैर्ऋत२।४कोन †अट्ट२८,बहु रमन सिंह आखेट बट्ट२९
निकटहि तस बाहिर कृत ‡निपान३०, तस दु २ दिस चोक३१
परिमित बितान ॥
अंतहपुर सह तह रहि उदार, प्रभु रमत प्रचुर सिंहन सिकार॥९१॥
सर सेतु सिरहु बाटिन सुढार, बहु कुसुम३२नागबल्लि३३न बिथार
कुंड१ रु तड़ाग२ बिच बिविध कंज३४, गुन सौरभ बिकसत कु-
सुम गंज ॥ ९२ ॥
अति तुंग गिरिन चहुँ४ ओर ओघ३५, मुख१ अंत्य ४ जाम२ रबि
रहत मोघ३६ ॥
अति जीरन१नव२इमबिरचिबाग, सद्दिय प्रभु सासनरक्खिराग९३
यह भूतकाल१ उपवन उदंत, समुझहु हुव पहिले सचिव संत ॥
अब वर्तमान२क्रम बत्त आहि,कविगृह पवित्र करि इम उमाहि९४
नृप तहँ बिवाह गौरव मनाइ, आये इहिं उपवन प्रमद पाइ ॥
इत जाइ व्याहि सूचित अनेह, बहु त्याग बंटि गय सुकवि गेह९५
इत सक अहि गज धृति १८८८ सरद ४ अंत, मनसिज तिथि १३
बाहुल८सित२मिलंत ॥

॥८९॥*इच्छु (गन्ना) † बुर्ज॥९०॥‡प्रपा(खेळी) ॥९१॥१तळाव की पाल पर २नागर
बेल ॥९२॥३ऊंचे पर्वतों के समूह से ४आदि और अंत की दो पहर में सूर्य नहीं
दीखता ॥९३॥९४॥५सूचना कियेहुए समय में ॥९५॥६कामदेव की तिथि७कार्तिक

भूपति सुत अर्जुन१मध्य भ्रात,जो सिसु स्वरूपलतिका१प्रजात९६
न सक्यो परि नामहु तत्र तास, बिधि बाम बिचहि बिरचिय बिनास
सक तिहिं१८८८ तदनंतर माघ११श्राम, ध्रुव मिलन थप्पि अज-
मेर१ धाम ॥ ९७ ॥
अंग्रेज७न अनुसारि मंत्र एस, एकल किन्न भूपति असेस॥
तहँ उदयनैर१ जयनैर२ ताम, सह जोधदंग३ बुन्दिय४ सनाम।९८
कोटा५ रु कृष्णागढ६ प्रमुख केक, बुल्लिय नरेस प्रभुपन बिवेक
महिपति जवान३ १ सीसोद १ मोर, कूरम २ जयसिंह २ सु वय
किसोर ॥ ९९ ॥
कुल इङ्ग६१न दिनकर उक्त काल , प्रभु राम २०२।४।३ पत्त
अप्पहु कृपाल ॥
पुनि पत्त राम४ कोटा पुरेस, इङ्ग सचिव झल्ल आयत्त एस।१००।
कल्ल्यान५ कृष्णागढ बिभु कहात, बिभु६ करि सुत १ कढ्ढिय जु
२ भट जात ॥
इत्यादि अधिप सब बल सजाइ, आहूत७ निगम अजमेर आइ१०१
पै इक१ जोधपुर३ नृप प्रमत्त, पति अलस नरन नहिं मान३ पत्त ॥
सुरस्यो गिन्यों सु जग मद मरोर, जिहिं फल पुनि पैहैं कुबिधि जोर
सूचित १८८८ सक मेचक१ माघ११ श्राम, तिथि नवमि९ आंगिर१०
स५ बार ताम ॥
तहँ नाड़ी चउदह१४निस बिताइ,पुनि सुभमुहूर्त तस अग्गपाइ१०३

सुदि॥ ९६ ॥ १माघमास में ॥९७॥९८॥ २आदि ३ जवानसिंह ॥ ९९ ॥ ४साचिव झाला माधवसिंह के वश में था ॥ १०० ॥ ५ कल्याणसिंह ६ प्रभु (राजा) पुत्र को किसनगढ में मालिक करके उमरावों सहित निकला ७ अंगरेजों के बुलाये हुए अजमेर नगर में आये ॥ १०१ ॥ ८ आलस्य करके नरनाथ मान-सिंह नहीं आये ॥ १०२ ॥ ९ मास में १० गुरुवार ॥ १०३ ॥

वह लहि प्रभु प्रस्थित बल सुहान, पगि प्रथम१पगाँरां१सिविर पात
दल पात देवली२किय द्वितीय२,तीजो३सु केकरी३अस्थितीय१०४
सरवाट४रामपुर५बीर६ सीम, किय क्रम मुकाम भट अरिन भीम ॥
सप्तम७मुकाम कछु देर संग,दल पहुँचि सक्यो नहि गम्य ढंग१०५
परिमग्ग विपिन विच कटक पात, सुग्गि सु निस सप्तम ७ हुव प्रभात ॥
अष्टम८दिन दु२पहर लंघिअप्प, आरुहि इभ दुजनन दलतदप्प१०६
दुंदुभि १ पटहा२दिक विरच बज्जि, सब भट १ बयस्य २ कवि ३ सचिव४ सज्जि ॥
झप्पत लगिडेरिन गमनमग्ग,बलहैकिय हद ढिग सिथिलबग्ग१०७
उततैं अंग्रेजहु पर्व पाइ, अधिकारी पंचक५समुख आइ ॥
मातंगारूढन हुव मिलाप, इम मुदित पटालय पत्त आप ॥ १०८ ॥
गोरेहु गये लहि सिक्ख गेह, अष्टम८ मुकाम अजमेर८ एह ॥
तहँ पुर सन उत्तर४।७तालताम,अभिधान अन्नसागर१ सनाम१०९
उत्तर४।७ प्रपात तस रचिय आत, जैपुर जन सर पृतना प्रपात ॥
तिम जानहु दक्खिन२।३ तीर तास, परि बल प्रभु अप्पन सिविर आस ॥ ११० ॥
दक्खिन२।३दिस पुर सन कछुक दूर, तहँ रान तंत्र परि तंत्र पूर॥
बलिरान१के रु पुर२केविचाल,जंगिय कोटावल सिविरजाल१११
इत्यादि अधिप उत्तरि असेस, पटकुटन रहे परिसर प्रदेस ॥
लगि ललित कलित वंसा१वलंब, पँटबरन१ सरन२ आयत१ प्र-

॥१०४॥१०५॥१०६॥१०७॥१समय पाकर२हाथियोंपर चढ़ेहुए ॥१०८॥१०९॥३पड़ाव (मुकाम)॥११०॥ ४ महाराणा के अधिकार में गृहों(डेरों)का समूह हुआ ॥१११॥ ५नगर के समीप डेरों में रहे, सुंदर मोटे और लंबे बांसों की ६प्रसिद्ध ७कनात

लंबर२ ॥ ११२ ॥

वलंब१मलंबर२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

शूल१न प्रति उच्छ्रित थूल थंभ२, सिर कनक कलस३ खचि म-
निसदंभ४ ॥

बनि अग्र अजिर५ नाना बितान६, सब ठां बनि स्त्रस्तर७ बिबिध
बान ॥ ११३ ॥

लगि बेणु इसीकन चिक८ ललाम, चितन विचित्र धृत धाम धाम
सिचय१ रु जवफल२ मय कृत सुढार, परदा९अपटी१० दिपि द्वार
द्वार ॥ ११४ ॥

सब कृत्य सदन११ बसु८ दिस बिभाग, पल्ल्यंक१२ पीठ१३ रुचि
रम्य राग ॥

गन तल्पिन१४न मलिन न निचुंल१ गुप्त, ऊधस्य फेन छबि फबि
अछुप्त ॥ ११५ ॥

प्रति थूल चूल२ १५ सध्वज पताकि १६, लहरात बात बेणु१न ल
तारकि ॥

क्रम करि प्रभुबिलसनअप्पकज्ज, सिचयालय३ ऐसे बिहितसज्ज११६

का कोट लगा ॥ ११२ ॥ १ डेरों के थंभ ऊंची चोबां के लगे जिन पर मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के कलश लगे २ जिनके आगे चौक रहकर अनेक प्रकार के ३चंदवे (सामियाने) तने ४अनेक प्रकार के शयन के तथा खसके डेरे बने "यह माघ मास था इस कारण खसके डेरे नहीं संभवते किन्तु शयन के डेरे ही जानो" ॥ ११३ ॥ ५ बांस की सुन्दर तूलियों की चिकें लगीं ६ वस्त्र और ७ बांसोंमई श्रेष्ठ पड़दे और डेरों की ८ कनातें द्वार द्वार पर शोभित हुईं ॥ ११४ ॥ भीतर मलिनता रहित १० वस्त्र की ९ बिछायत हुई जो ११ स्तनों से निकले हुए दूधके झागों के समान अस्पर्श कीहुई शोभा देती थी ॥ ११५ ॥ प्रत्येक डेरे पर १२ थंभां थंभां[चोबचोब] पर ध्वजा और पताका "अनेक वस्त्रों वाली ध्वजा और एक वस्त्रवाली पताका कहलाती है" उड़ती है सो मानों बांसों की लता को पवन हिलाता है १३ उचित डेरे सजे ॥ ११६ ॥

प्राकार१७ कील१ मेरुकर२प्रबिद्ध, संपुट त्रिक३ जवनिन बल-
जर१८ सिद्ध ॥
रहि तत्थ रुचिर बिलसतविलास,पुनिसज्जिय जावन लाठपास११७
चलि अग्ग चक्क चरख१न चठहि, तोप१न गन लोपन गढन तंहि॥
थहरात हेतु झंडन थरक्कि, फहरात केतु१ दंडन फरक्कि ॥११८॥
वहि कतिन जुत्त हय३ कतिन बैल४, गुर्न रत्त रत्त५ द्रव पत्त गैल
तिन्हपिट्ठि तरल नागद्दनानिसान७,रुचिपीवल्ल रोचन दिपिदिसान११९
सज्जित कति होद८न निंबहि सिंहि, परि मेघाडंबर९ कतिन पिट्ठि
वहि पिट्ठि पलट्टनि१०विहित ब्यूह, जहँ सद्दत प्रेहरन पंत्ति जूह१२०
इन्ह केटें आयुधिक पत्ति११ओर, जिन्ह केट सादि१२गन नियति
जोर ॥
पुनिकेट चोक१३रज्जुनप्रमेय, सादिन प्रवेक गुन१४पिट्ठिश्रेय१२१
तिन्ह केटें प्रमित पुनि चारु चोक१५, अति मुख्य पत्ति१६ तिन्ह
मध्य ओक ॥
रहि पास सामि तहँ अंतरंग १७, तहँ पदग मुख्य तिम१८ स्वामि
संग ॥ १२२ ॥
आरूढ तुरग तिन विच अधीस १९, सहदंड१ खचितें मनि २ छ-
त्र२० सीस ॥
पांडुरें रुचि चामर२१ढुरि दुरपास, ससिपर कि दुरघन सितें रचत

१प्रसिद्ध पांसों की कीलें २कनातों के तीन घेरों का कोट और द्वार॥११७॥३गढों का नाश करने को तष्टि [कुठार]रूपी॥११८॥ ४लाल लाख रंग को मार्गमें बहानेवाली ५ चपल हाथियों के निसान ६ पीले रंग के ॥११९॥ ८शिष्टि [आज्ञा] को ७ निबाहकर १० पैदलों का समूह ९ शस्त्रों को साधते हैं ॥ १२० ॥ ११ इन के पीछे १२ डोरियों का नापा हुआ चोक ॥ १२१ ॥१३ जिनके पीछे इन्हीं प्रमाण का सुंदर चोक ॥ १२२ ॥ १४ मणियों के जड़े हुए दंड सहित १५ श्वेत रंग के चमर ढुलते हैं सो मानों १६ चन्द्रमा पर दो १७श्वेत बादल नृत्य करने

रास ॥ १२३ ॥

मोरछल२२ *पुरट१ मनि२ दंड३ मेल, खिल ग्रह६ जनु †सनि७ सन करत खेल ॥

नरनाह१ वाह हय मनि२ नचात, प्रेच्छकन पंथ ‡मेदुर मचात ॥१२४॥

संक्रमिय सज्ज बल दंभ्र बीर, उरभ्कात अस्त्रि सेलन समीर॥

नागन१क्रम भ्रमि१जिम उदधि नाव, भुव भजत कंप२ तजि अ-चल भाव ॥ १२५ ॥

फिरि लेत तरारन तुरग२ फाल, भिरि देत दरारन उरग भाल ॥

सिर अगन डिगन लगि लरज संग, चिर्भट कि चरन चिपि भजत भंग ॥ १२६ ॥

दुवर दुवर भट कुंतन करत दाव, पटु घात दैन१ टारन२ प्रभाव॥

बहु खगन खगन गनगगनबेधि, समलगन दैन तुपकन निसेधि१२७

संगिन कति भंगिन करत सिद्ध, सद्धत कति तुपकन मन समिद्ध

मंडत कति दुद्धर भ्रसिन मग्ग, अभ्यासत हेतिँन इन उदग्ग ।१२८।

प्रस्थित इम संभर धरनिपाल, बिधि क्रम पथ पहुँचत हद बिचाल ॥

उततेँहु लाठ१ प्रभु २ सम्मुख आइ, लैगो सु निलय बल जिहिं बिसाइ ॥ १२९ ॥

हैं ॥ १२३ ॥ मणियों के मिलाप सहित * सुवर्ण के दंडवाले मोरछल हैं सो मानों बाकी के ग्रह † शनैश्चर से खेलते हैं, राजा रामसिंह वाहनों के मणि रूपी घोड़े को नचाता है सो मार्ग में देखनेवालों को अत्यन्त ‡स्निग्ध करता है ॥ १२४ ॥ १ अल्प सेना सज्कर चला २ भालों की अणियों [नोकों]में पवनको उलझाता हुआ, हाथियों के चलनेसे समुद्रकी भ्रमि[भ्रमर] में नाव के समान भूमि धुजती है ॥ १२५ ॥ ३ पर्वतों के शिखर डिगकर धूजने लगे सो मानों चरणों से चिपकर ४ काकड़ी टूटती है ॥ १२६ ॥ तरवारों से आकाश में उडते हुए ५ पक्षियों के समूह को वेधते हैं ॥ १२७ ॥ कितने ही साथी बरछियों से ६ लहरों को सिद्ध करते हैं ७ शस्त्रों का अभ्यास करते हैं ॥ १२८ ॥ ८ मकान के द्वार में प्रवेश कराकर ॥ १२९ ॥

निज सबय सुभट कति सूचि नाम, धरनीस संग लिय गम्य धाम
क्रम कारि तहँ दुर्ज्जनसल्ल१ कर्णा२, पर अहि१न विजय३ गिरि
धर४ सुपर्णा२ ॥ १३० ॥
बलि ईश्वर५ मंगल१।६ रत्न२।७ वीर, धात्रेयज अंतिम इह दु२धीर ॥
थितिसत्त७स्वभृत्यन वलजथप्पि, इन्हसत्त७न भृत्यन कर्मअप्पि१३१
दोउ२न कर इक१ इक१ चमर२ दत्त, पुनि दोउ२न इक१ इक१
बार्हस्पत्त ॥
खिल तीन३न उपजन१।५ रु चर्म२।६ खग्ग३।७, इन्ह थप्पि अनुग
इम पिट्ठि१ अग्ग२ ॥ १३२ ॥
छवि सारद कादंबिनि छटा१ कि, घनगज कुलीन कुंभिन घटा२ कि
जनु प्रालेयाचल सिखर३ जाल, सिवसैल सानु४ बिसद कि वि-
साल ॥ १३३ ॥
अद्भुत पटआलय ओरओर, ठनि बित्त रहे बनि ठौरठौर ॥
निज नियत लाठ पटकुट निवास, पांडुर अनेक इमआसपास१३४
सचिवाग्रग मोहन१ सह सुसील, इन तल खान जमियत२ वकील
ए दुव२गत पुव्वहि लाठ अैन, लाये तिहिं सम्मुह प्रभुहिं लैन१३५
सह प्रीति१ रीति२ नृप नीति३ संग, अज्जय सब नय मय रक्खि
अंग ॥
इन दुहुँ२न लाठ१के संगआइ, बिभु१जुक्त उक्तपटगृहबिसाइ१३६
तत चारु दारुमय पीठ तत्थ, उपविष्ट अधिप१ सह मुख्य सत्थ२

॥१३०॥१धायभाई ॥१३१॥२मोरछल ३पंखा ४ढाल ॥१३२॥ ५मानों शरदऋतु की मेघमाला की शोभा किंवा ५ ऐरावत के कुल के हाथियों की घटा है (ऐरावत का रंग श्वेत है)६मानों हिमालय पर्वत पर शिखरों का समूह है ७किंवा कैलास पर्वत पर श्वेत रंग के बडे शिखर हैं ॥ १३३ ॥ इस प्रकार के अद्भुत डेरे चारों ओर हैं ८श्वेत रंग के ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ ९ काष्ठमय सुंदर सिंहासन कुरसी पर १०राजा बैठा

हितजुत विधेय व्यवहार होइ, मतिहित१ गुनेर२ गुन१ सुमर२ मा-
ल्य पोइ ॥ १३७ ॥

दलनाग१ अतर२ आदत्त१ दत्त२, रस१ रुचित रक्खि नदि उचित
वत्त२ ॥

नृप आतत सिक्खहिं कारि निकेत, पहुँचान आय लाठहुउपेत१३८

सिविर सुख खरे हय स्वार्स सर्व, आरुहि तहँ नृप हयमृग१ सु अर्व॥

लहि लाठ हार्द फेरिय ईलेस, बलि तिहिं तजि आरुहि हय विसेस२

——————— धाम, नर्तिन सु मदनमतवार२ नाम ॥

तजि ताहि बहुरि आरुहि तृतीय३, हय मनि३ समार्हय हय गुन
गरीय ॥ १४० ॥

तीय१रीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गोपालसिंह २०२१५ निज अनुज गेय, जुरि उभय २ मल्लफेरिय
अजेय ॥

हय फेरि रहिय थित जवमहीप, मनमुदित लाठ गत हयसमीप१४१

हीप१ मीप२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तसँ थप्पलि निजकर खंध ताहि, अक्खिय यह घोरन लाठ आहि

थित रहिय लाठ आदिक स्वथान, हंकिय निज डेरन चाहुवान१४२

सित १ माघ ११ चुत्थि ४ तिथि बार सूर१, प्रभु इम आये मिलि
प्रमद पूर ॥

अह त्रिक३बिताइ अष्टमि८अनेह, आयो प्रभु१पटगृह लाठ२एह१४३

अधिपहु सीमालग समुह आइ, लैगो पटआलय भय लसाइ ॥

---

१ डोरे में पोई हुई श्वेत रंग की माला ॥ १३७ ॥ २ नागरबेल के पान ३ लिया और दिया ॥ १३८ ॥ ४ अपने सब घोड़े ५ राजाने ॥ १३९ ॥ ६ नाम ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ अपने हाथ से ७उस घोड़े का कंधा थापकर ॥ १४२ ॥ ८रावराजा रामसिंह के डेरे पर ॥ १४३ ॥

सुत जखमिन आजम भटन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥
इहिं अंतर मरुधर[1] खबरि, पहुँची विविध पुकारि ॥
रट्ठोरन जसवंत सुव[2], दयो तखत बैठारि ॥ ३ ॥

[षट्पात्]

यह सुनि आलमसाह कहर[3] हिंदुनपर कुप्यो ॥
प्रलय रुद्र जिम प्रबल लज्ज धीरज सब लुप्यो ॥
दिय आयस तिहिंबेर नगर आमेर१रु नरउर२ ॥
कोटापत्तन३ बहुरि पुरी दतिया४ रु जोधपुर५ ॥
आमेर आदि चउ४राज्य ये आँजम दोख उतारि लिय ॥
रट्ठोर हुकम बाहिर रहत धन्व[5] सीस अमरख धकिय ॥४॥
समँर[7] जित्ति यह साह रहिय चउ४मास सुसावर ॥
इस[8] दसमी[9]१०अवदात अनखि मारवधर[10] उप्पर ॥
परिन जारति करन क्षुब्धि अजमेर वहानौं ॥
करि फौजन दरकुंच आय आमेर रहानौं ॥
बुधसिंह हितु[11] जयसिंह तब कहिय एह परिनेय[12] समय ॥
इत साह संग अनवधि[13] गमन बहिनि भई इत उचित[14] वय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥
बेग न पुनि आवन बनैं, ब्याहनकी यह बेर ॥ ६ ॥
लग्गी हमरी खालसै, रजधानी रन[15] रोस ॥

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुलम के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमेर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही हुकम बाहिर थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ जला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजव का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दशमी १० मारवाड़ पर क्रोध करके ११ ले १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था॥५॥६ ॥ १५लड़ाई करने के क्रोध

सुचि मोहन १ जमियतखान २ सत्थ, संलपि अनेह कछु मति समत्थ ॥ १४४ ॥

थित रहिय सभा तिहिँ सिबिर१ थान, इक१ मंत्र पटालय२पिछिआन
तिहिँ प्रविसिय नृप१ सह लाठ२ तत्थ, साहब सिकत्तर ३ अजंट ४ सत्थ ॥ १४५ ॥

सचिव१ रु वकील २ दुव चलिय संग, इक१ मोहन १।५ जमियत खाँ २।६ अभंग ॥

थित खुरसिन६हुव सब६मंत्र थान,जंपिय नरेस लाठहिँ सुजान१४६
केसवपट्टनि पुर पूर्वकाल, हमरो हुतो सु बिख्यात हाल ॥

दक्खिन अधीस वह किय दलेल, मंडिय मरहट्ठन हिंतु मेल ।.१४७॥
संवत श्रुति मुनि गिरि इक्क १८७४ सार, किन्नौं जु अप्प हमतैं करार ॥

दिन्नोंहि लख्यो ताबिच सु ढंग,सो देहु हमहिँ अब लेखसंग१४८
कोटरिय इंद्रगढ मुख७ कुचाल, जे परि सब जालमँ कपट जाल
प्रतिवार्षिक सूबा द्रम्म पूर, कोटा सम्मलि व्है देत कूर ॥१४९॥

अब करहु सबन हमरे अधीन, क्यों अप्प राज्य यह अनय कीन२
पुनि रान हिंतु हम चहत प्रीति,रक्खैं वे हम सन द्वेप रीति॥१५०॥

१कुछ समय बात करके॥१४४॥२सभावाले वहीं स्थिर रहे३सलाह करनेका डेरा ॥१४५॥१४६॥४दलेलसिंहने वह नगर दाक्षिणियों को देकर ५उन दाक्षिणियों से मेल किया ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ ६ इन्द्रगढ आदि कोटाड़ियां खोटी चाल से ७ जालमसिंह झाला की जाल में पड़कर ॥ १४९ ॥ आप के राज्य में यह ८ अनीति क्यों की ९ उदयपुर के (*)महाराणा से हम प्रीति करना चाहते हैं ॥१५०॥

(*) पंचम राशि के अन्त में बुन्दी के राव सूर्यमल्ल के हाथ से महाराना रत्नसिंह के मारेजाने में जो कारण बुन्दीकी ख्यातके अनुसार इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिखा है वही कारण रावराजा अजितसिंह के हाथ से महाराना अरिसिंह के मारेजाने में उदयपुरवाले बताते हैं जिसको स्पष्ट रीति से लिखने की प्रतिज्ञा हमने वहीं पर की थी परन्तु भूलके कारण अरिसिंह के मारेजानें के प्रकरण में नहीं लिखागया सो प्रकरण

कछु द्वेस हेतु हुव पूर्वकाल, हम तिहिँ न गिनत वै गिनत हाल ॥
किन्नों वे चहत सम्मिलन काम, समअप्पमध्य रहि करहु साम१५१
तहँ बिटक सुनि नृप बत्त तीन३, क्रमतैं प्रत्युत्तर२ लाठ कीन ॥
किय पूर्व ग्वालियर इम करार, दिय पट्टनिता बिच लेखद्वार१५२
बदलै सु लेख जब तबहि बत्त, तुमरो वकील यह कहहु तत्त ॥
कोटरिय तिमहि कोटा करार, बिच पुब्ब दई हम लेख वार१५३
सुहु जबहि लेख बदलैं सु सील, कारित चिंतन तब ठहै वकील ॥
तब होत होन संभवप्रतीति, नहि बिचहि बचन बदलैं सु नीति२१५४
अरु रान मिलन जो चहत आप, मन्नत सु हमहु उचितहि मिलाप
पै पुच्छि रान सम्मतहिँ पाइ, जो होइ सु हम दैहैं जनाइ ॥१५५॥
तदनंतर स्वागत पर्ब तत्त, द्विप१ इक१ अखर्ब दुव२ अर्ब२ दत्त ॥
मंजुल महग्घ सिरुपाव१।३श्रेय, महि बेद४१संख्यतखतीप्रमेय१५६

१ अब हम उनसे मिलाप करना चाहते हैं ॥ १५१ ॥ उस डेरे में राजा की तीनों बातें सुनकर ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ २ याद करानेवाला ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ ३ स्वागत करने के समय ४ एक बडा हाथी ५ बहुमूल्य ॥ १५६ ॥

वशात् यहां लिखाजाता है कि कृष्णगढ के महाराजा बहादुरसिंह की बडी पुत्रीके साथ रावराजा अजितसिंह और छोटी पुत्रीके साथ महाराना अरिसिंह व्याहे थे, और उदयपुर में सिंधी यवनों के बखेड़े से घबराकर महाराना अरिसिंह कृष्णगढ में रहे वहांसे मेवाड़के फरेबी राना रत्नसिंह के पक्षवाले उमराव जो महाराना अरिसिंह से विरुद्ध थे उन्होंने रावराजा अजितसिंहके नाम ऐसा पत्र लिख भेजा कि जिससे क्रोध में आकर महाराजा अजितसिंह ने अरिसिंह को छलघात से मारडाला. बुंदीवालों ने जो कारण महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में बताया है इस पर करनल टाडने भी अपनी किताब (टाडराजस्थान) में शंका प्रकट की है और मेवाड़ के इतिहास (वीरविनोद) में स्पष्ट ही इसारा किया है, जिनसे भी यही सिद्ध होता है कि यह मेवाड़के उन उमरावों की ही दुष्टता थी कि एक कल्पित अपराध पर अपने स्वामीको मरवाडाला और इसी कल्पित अपराध पर मारेजाने के कारण उदयपुरवाले बुंदीवाला से कभी मिलना नहीं चाहते और बुन्दीवाले वारंवार महाराना से मिलाप करने का उपाय करते रहते हैं जिनमें यह पहला ही प्रयत्न था जो लाठसाहिब के द्वारा कियागया. इस पीछे तो अनेक यत्न हुए वे खालीगय किंतु सबसे पीछेकायत्न जोधपुर के मुसाहिब आला करनल सर प्रतापसिंह साहिबने इस टीकाकार[बारहठ कृष्णसिंह]के द्वारा किया था वह भी निरर्थक हा गया ॥

दृढ इक्क१ जटित मनि मुट्ठिदार, कमनीय प्रतन बुन्दिय कटार१.१४
अभिनव दुस्सह बल तुपक १.१५ एक्क१, ए उक्त उभय२ प्रहरन
प्रवेक ॥ १५७ ॥

इत्यादि अप्पि लाठहिं इलेस, दिय सिक्ख आइ सीमा प्रदेस ॥
दूजे२अहं३ नवमी९भाग्य दिट्ठ, अप्पहुपहु विरचन सिक्ख इट्ठ१५८

पुनि लाठ पटालय प्रगुन पत्त, विधि आनि ठानि हित तानि वत्त
तीन३हि मिलाप भट सत्त७तेहि, हितपुब्ब अनुगेपन रतरहेहि१५९

इक१ दंती१ इक१ हय१जत्र अमान, सिरुपाव १.१३ इक्क १ सुचि
वर वितान ॥
तखती मिति निधि गुन ३९ संख्य तास, इत्यादि आदि प्रभु भेट
आस ॥ १६० ॥

दीरघ दुरनालि१ हुक१ नालि२दार, विनु अनल१ उपल२ फल१
बल विथार२ ॥
इम तुपक१ विधा अद्भुत अनेक, कटितंत्र तमंचा२ जंत्र केक१६१

पुनि दूरबीन१ घटिका२ पुरोग, विस्मय करि वस्तुन जोरि जोग॥
उपदा इत्यादिक पुनि अनेक, पुनि भेट लाठ किय गुन प्रवेक१६२

करि सिक्ख आइ प्रभु पटनिकेत, चिंतिय पुनि पुष्कर गमन चेत
इत उदयनेर१जयनेर२ईस,हुव मिलन उत्कं१२ जिम कुल हदीस१६३

पै कुम्म १ झुंतें २ सिंघी प्रयोय, गुनैं६.१ सक्ति ३.२ रहित जु न
प्रभु गयोय ॥

१सुंदर २शस्त्र ॥१५७॥ ३दूसरे दिन ॥१५८॥ ४डेरे में ५सेवकपन में तत्पर होकर ॥१५९॥६अमाप वेग वाला ॥१६०॥७ बंदूक ८ पत्थरकला ९ पिस्तोल ॥१६१॥१० घड़ी आदि ॥ १६२ ॥११डेरों में १२मिलने को उत्कंठित हुए ॥ १६३ ॥ जयपुर का राजा कछवाहा जयसिंह १३झूंताराम सिंघी के वशीभूत और १४ संधि आदि छहों गुण और मंत्र आदि तीनों शक्तियों से रहित था इस कारण वह प्रभु (स्वामी) गिनेजाने योग्य नहीं था ॥ १६४ ॥

इत तदपि फुंत सम्मति अधीन, कछवाह श्रावक न सज्जकीन १६४
सामज[1] चढाइ दल दभ्र[2] सत्थ, प्रस्थित किय कुम्म१ हिं रान२ पत्थ
जहँ हुकमचंद१ फतां[3]२ अग्रजात, नृप पिट्ठि खवासी थिति निभात १६५
सह दंड१ जटित मनि छत्र२ सीस, मोरछल१ चमर२ बीजित[4] स-
हीस ॥
इम रान सिबिर जयसिंह आइ, कछु बढि गज हुल्लिय[5] क्रम चु-
काइ ॥ १६६ ॥
प्रतिहार[6] मुख्य तहँ रान पोरि, निज जनन पिल्लि गजपन[7] निहोरि॥
कछवाह करी करि राह रुद्ध, उतराइ अधिप सीमा[8] अबुद्ध ॥१६७॥
पटबरन पुटन अंतर पैठ्ठ, जयहारि[9]१ इम पहुँचत स्वजन जुँट्ठ[10] ॥
उततैं तिम तदवँधि[11] समुह आइ, ससोद राजकुल[12] क्रम सधाइ १६८
कर १ तास अप्प कर २ रक्खि तान, जग बिदित जँनन[13] आढ्य
जवान२ ॥
बिष्टर इक पुनि किय थिति बिसेस, दाहिन१ जवान१ जँय[14]२ वा
म२ देस ॥ १६९ ॥
इम बैठि सभाऽऽसन कछु अनेह, संलाप आप करि भारि सनेह ॥

१ हाथी पर चढाकर २ अल्प सेना सहित कछवाह को राजा के पस्त्य (घर) को रवाना किया ३ फूनाराम का बड़ा भाई ॥ १६५ ॥ ४ पवन होता हुआ ५ हाथी को हूलकर उतरने की सीमा से क्रम चूककर आगे बढाया ॥१६६॥ राना के मुख्य द्वार पर ६ द्वारपालने अपने लोगों को ७ महावत को वारं वार कहकर कछवाहे के हाथी का मार्ग रोककर ८ उतरने की सीमा नहीं जाननेवाले राजा को अथवा राजा को उतरने की सीमा समझाकर हाथी से उतारा ॥ १६७ ॥ कनात के पुड़ों के कोटके भीतर अपने लोगों से १० सेवित राजा जयसिंह ९प्रविष्ट हुआ ११अवधि पर्यन्त १२रावल कुलवाला ॥१६८॥ जयसिंह के हाथ पर अपना हाथ रखकर, संसार में प्रसिद्ध १३ वंशवाला महाराणा जवानसिंह १४गद्दी पर दाहिना जवानसिंह और वाम ओर जयसिंह बैठे ॥ १६९ ॥

वन्ति अतर१ पान२ मुखवनिविधेय, पटकुट गो कूरम भट प्रमेय१७०
रहि क्रम लहि अवसर तदनु रान, जयसिंह१ पटालय२ गय जवान॥
कुल रीति सद्धि किय मिथ मिलाप, दक्खिन१ दिस उपविसि इतहु आप ॥ १७१ ॥
तंबोल१ अतर२ लै१ दे२ तथाहि, स्वसिविर गय रानहु नय समाहि
प्रभु १ चहि निज मातुल मिलन प्रीति, कल्ल्यान कृष्णगढ नृप पुनीति ॥ १७२ ॥
बुल्लिय स्व पटालय क्रम विधान, मातुल२ तहँ अनुचित गहिय मान ॥
भाखिय तुम लघुबय १ भागिनेय २, गुरु वृद्ध१ रु मातुल २ हम गनेय ॥ १७३ ॥
तकि तारतम्य कारन तदीय, इम बाढहु गौरव अस्मदीय ॥
उल्लंघि रीति विधि कज्ज एस, न गिन्यों हित ससचिव१ भट २ नरेस ॥ १७४ ॥
जहँ इम इतरेतर दर्प जोर, अवनीस मिले जाने न ओर ॥
मिच्छनिदेस सब धरतमत्थ, न मिले ति परस्पर मदअनत्थ१७५
इत प्रभुहु तीर्थगुरु गम्य आइ, किय न्हान१ दान२ क्रम मह मचाइ
द्विज चिमनराम१ मुख गुरु उदार, किय आढ्य सर्वकुल१ बंधु२ वार१७६
नर१ नारि२ सिसु३न भूपन१ निचोल२, अखिलन अधीस अप्पिय अमोल ॥

उमरावों के साथ २ यथार्थ ज्ञान लेकर १ कछवाहा अपने डेरे गया ॥१७०॥ ३ परस्पर ४ यहां भी महाराना जवानसिंह ही दहिनी ओर बैठे ॥ १७१ ॥ राव-राजा रामसिंह ने अपने ५ मामा कल्याणसिंह से मिलना चाहा ॥ १७२ ॥ अवस्था में छोटे और ६ भानेज हो ॥१७३॥ आप के ७ छोटे बड़े होने का कारण देखकर ८ हमारा गौरव (बड़प्पन) बढावो ॥ १७४ ॥ ९ परस्पर घमंड करके ॥ १७५ ॥ १० जहां जाना था वहां पुष्कर आकर ॥ १७६ ॥ ११ वस्त्र १२ सबको

इभ १ हय २ रथ३ मंडित एक१ एक १, इम धेनु४ निकर अप्पिय
अनेक ॥ १७७ ॥
रुप्पय सोलहसत१६०० दै रसेस, अजमेर आइ रहि रत्ति एस ॥
बुंदिय दिस प्रस्थित हुव बहोरि,पहिले१मुकामपुनि२जातजोरि१७८
तिथितीज३असित२असित७६*तपस्य,बुंदियविसेसससहमह१संवस्य२
पुर१ १ पुर २ अमात्य १ जुब्बन २ प्रदिष्ट, विलसिय विलास प्रभु
अप्पि इष्ट ॥ १७९ ॥

॥ दोहा ॥

दिनदुल्लह होरिय जनन, सह मह कौतुक सद्दि ॥
सचिव१सुहृद२भट३बुध४सभा५, लिय क्रीडन रस लद्दि१८०
कुसुम१ रु रंग२ गुलाल३ क्रम, करि बाहिर१ बहु केलि ॥
सह रानिन अंतर२ सभा, होरिय किय कुल हेलि ॥१८१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे महारावराजारामसिंहराजकुमारभीमसिंहजनन१ ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लप्रथमविवाहतन्महसूर्यमल्लहरणाग्रामेरामसिंहगमन२ योधपुरेशमानसिंहातिरिक्तोदयपुरमहाराणाजवानसिंहादिराजस्थान- भूपाललार्डाभिधांगरेजप्रधानाधिकारिसंमिलनाजमेरराजसभागमन

दिये ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ * फाल्गुन वदि तीज को १ सभासदों सहित विशेष उत्सव से बुंदी में गये २ अमात्य रूपी यौवन ने शरीर रूपी पुर में प्रवेश करके स्वामी को वांछित फल देकर विलास किये ॥१७९॥ ३ मित्र ४ पण्डितों के साथ सभा में ॥ १८० ॥ ५ कुलके सूर्य ने होली खेली ॥ १८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, महारावराजा रामसिंह के राज कुमार भीमसिंह का जन्म होना १ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल का प्रथम विवाह और सूर्यमल्ल के ग्राम हरणा में रावराजा रामसिंह का महमान होना २ अजमेर में आम दरबार होकर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विना उदयपुर के महाराणा जवान- सिंह आदि राजपूताना के रईसों का लाट साहब की मुलाकात को अजमेर

३ अजमेरप्रत्यावृत्तपुष्करस्नातरामसिंहबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनंदशमो मयूखः ॥ १० ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समरसिंह१८२१७ नृप चरित सनें, लहि आरंभ१ उदंत ॥
रु अजमेर सन रावरे, आगम लग जिहिं अंतर२ ॥ १ ॥
इते ग्रंथ बिच किय अनिस, विदित वरन संबंध ॥
त्यागि मनोहर१ आदि त्रिक३, सबहि छंद दृढ संध ॥ २ ॥
मनोहरा१रुय घनच्छरी२, सरूपक३ हु इन माँहिं ॥
वृत्ति१ छेक१ बहु पै नियत, वरनसगाई३नाँहिं ॥ ३ ॥
सब खिल छंदन नियम सह, विहित वरन संबंध ॥

जाना३ अजमेर से पुष्कर स्नान करके रावराजा रामसिंहके बुंदीमें पीछे आने के वर्णन का दसवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से तीनसौ बहत्तर३७२ मयूख हुए ॥

राजा समरसिंहके चरित्र १से प्रारंभ का २ वृत्तान्त लेकर रावराजा रामसिंहके अजमेर से पीछे बुंदी ३ आने पर्यन्त ॥ १ ॥ इतने ग्रन्थ में ४निरंतर ५ [*]वर्ण सम्बन्ध (वरणसगाई) नामक अलंकार रक्खा है जिसमें ६मनोहर ८ घनाक्षरी और रूपक इन तीन छन्दों को छोड़कर बाकी सभी छन्दों में दृढ ७.प्रतिज्ञा से वर्णसंबंध है और उपरोक्त तीनों छन्दों में भी ९ छेकानुप्रास तो बहुत हैं. परंतु वर्ण संबंध नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥

---

[*]वर्णसम्बन्ध [वरणसगाई नामक अलंकार केवल चारणों की कविता में ही है अन्य कवियों की कवितामें यह अलंकार नहीं है सो अन्य जातिके कवियोंके ग्रथोंसे स्पष्ट सिद्ध है, इस अलंकारका सर्वोत्तम नियम यह है कि जो अक्षर चरण के आदि में आवै वही अक्षर चरण के अंतिम शब्द के आदि में होना चाहिये जिसके उदाहरणमें इसी ग्रंथका यह दोहा है "चांमाके सिरकी चटक, खोज फटक रनखेत ॥ हारयो कर आयास हर, हारयो तदपि न हेत॥" परन्तु इतने बड़े ग्रंथमें कहीं परभी कोई अशुद्ध शब्द नहीं आने देकर इन नियमका निर्वाह करना कठिन था, इस अवस्था में अशुद्ध शब्द के प्रयोग नहीं करने के नियमकी पूर्ण रक्षा करके वरणसगाई का जो नियम सूर्यमल्लने इस ग्रंथमें रक्खा है यह भी प्रशंसनीय है ॥

इक्क१ चरन१ गत इक्क१ अरु, द्वि२ ला३दिहु श्रुत संध ॥४॥
चरन१/४ केर अद्ध१/२रु चरन१/३, इनके अल्पहु अंस ॥
तिन्हलै आदि१ रु अंत२ तक, सुहि संबंध प्रसंस ॥ ५ ॥
स्मृत न भयो कहुँ तो सुबुध, न गिनहु कठिन बनै न ॥
मनको धर्म्महि विस्मरन, यहहि सनैन१ अनैन२ ॥ ६ ॥
कथित प्रयत्न २ प्रबंध करि, अच्छर सगपन आनि ॥
अब प्रयत्न तजि आक्खियत, ठांठां नियम न ठानि॥ ७ ॥
कँवि के सविता चंड कवि, अति प्रभु प्रीति अमत्र॥
लैन सिक्ख तिन किय अरज, तीरथ सेवन तत्र ॥ ८ ॥
षट्पात्॥सुकवि चंड तिहिं समय वरस चालीस इक४१वय ॥
भाखा१ त्रिक३१ साहित्य२ तुपक बिद्या३रु स्वरोदय४॥
सकुना५दिक जय सद्धि अब जु श्रुति सिर६ आलोचिय ॥
सक सत्तरि७० सन संतत रमन मृगया२ रस रोचिय ॥
पहिले समै सु७ दस१० अब्द प्रति मृगया७ इम रुचिमैं रहिय
मारे छ६ सिंह१ महि रोकँ रहि अमित बराह२ न अंतुं गहिय ॥९॥

१कहीं तो एक चरणमें एक ही वरणसगाई है और कहीं एक एक चरण में २दो दो तीन तीन वर्णोंसे संबंध है ॥४॥ कहीं पर ३चरण की चौथाई में और कहीं आधे चरणमें है और कहीं कहीं इनसे भी अल्प अंशोंमें है सो इनको आदि से लेकर अंत तक यह वर्णसंबंध ४ प्रशंसा योग्य है ॥ ५ ॥ ५ जहां कहीं उपरोक्त वर्णसंबंध रखना याद नहीं रहा वहां पण्डित लोग ऐसा नहीं जानैं कि यह कठिन था इससे नहीं बना किंतु नेत्रवाले और विना नेत्रवाले सबके मनका धर्म भूलने का है ॥ ६ ॥ ऊपर कहेहुए ग्रन्थ में प्रयत्न करके ६ वर्ण संबंध रक्खा है परन्तु अब इसका प्रयत्न छोड़कर जगह जगह नियम नहीं रखकर कहते (बनाते) हैं ॥ ७ ॥ ७ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के ८ पिता चंडीदान ९ रावराजा रामसिंह के अत्यन्त प्रीतिपात्र थे ॥ ८ ॥ १० संस्कृत, प्राकृत और देशभाषा में ११वेद के मार्ग को शिर पर रखना विचारा १२निरंतर १३ भूमि में खुदी हुई ओदियों (खड्डों) में रहकर १४ अगणित सूवर मारे ॥ ९ ॥

सिंह१ न सन कछु खर्व सिंह२ आव्हयं तदीय अब॥
द्वीपि१ वग्घ२ सद्दूल३ सुनहु इतिमुख वाचक सब ॥
वृक३ -- त्रिक३ मुख बहुत ह्रस्व तिनमैं अति हिंसक ॥
इनें प्रकट भुव बैठि१ कतिक ठहैं२हि छये छक ॥
सूकर१ अदभ्र२ खिल१दभ्र२सब हायन दस१०मृग संहरिय
आरंभि१ऊज्ज८फग्गुन१२अवधि१काल पंलल२हास न करिय॥१०॥
आवा१न करि आखेट सुंपहु२ साद्धिय रस सेलन ॥
साद्धिय अवट१ सिकार सुकवि२ स्वतुपक३ सम्मेलन ॥
इम असीति८० सक अंत अतुल१ इक्कल२कटैल३ किटि ॥
सीमा निज संस्सथ महाबल४ निडर५ गये मिटि ॥
अबतैंहि दया१ अंकुरि हृदय बलि रंगा२दिक करि बिजय॥
प्रभुके समीप निवसन प्रथित भुव भावित हुव बीत भय११
अप्पहि प्रमुदित अप्प किन्न कवि अरज जोरि कर ॥
तीरथ सेवन साद्धि नसत मो कृत अघ निर्भर ॥
देहु सिक्ख प्रभु सदय त्वरित अैहौं करि तीरथ ॥
बनिहै अघ न बहोरि पाइ कुमतिन सु संग पथ ॥

सिंहसे कुछ छोटे सिंह मारे उनके ये १ नाम हैं२चीता ३ व्याघ्र(बघेरा)४शार्दूल चौफूल्या (बघेरा विशेष) ५ इत्यादि कहेजाते हैं ६ तीन भेड़िये(ल्याळी) आदि हिंसा करनेवाले बहुत छोटे जानवर मारे ७ बडे सूवर और बाकी के छोटे सूवर, इस प्रकार के मृगों को दश वर्ष तक मारे ८ कार्तिक से लेकर फाल्गुन मास पर्यन्त ९ सूवर के मांस खाने का चय नहीं किया अर्थात् इसका कभी अंतर नहीं किया (बराबर खाते रहे) ॥१०॥ १०हे राजा रामसिंह उनने घावों से और भालों से और ११ भूमि में खुदी हुई ओदियों में बैठकर बंदूक से अठारह सौ अस्सी के संवत् तक १२ डाढोंवाले एकल सूवर १३ अपने ग्राम की सीमा में १४ स्नेह आदि को जीतकर, आपके (रामसिंह के) समीप रहने के कारण १५शुद्ध होकर निर्भय प्रसिद्ध हुए ॥११॥

प्रभु कहिय *बाह१सेवक२प्रमुख कतिक संग लेहो कहहु
कवि कहिय देरहि गृहजन बहुत प्रभु प्रसन्न रुचि करि रहहु॥१२॥
जंपिय प्रभु दुव२ जनन१ काप सेवन२ सद्धिहिं किम ॥
बलि न लेत तुम †बाह१ राह२अति कष्ट अहो इम॥
प्रभु१जुत मित्र२न प्रकर जदपि—— हठ जोरिय ॥
दोइ२ जनन बढि तदपि निखिल बिधि संग निहोरिय ॥
सक अंक अचल गज बिधु१८८९समय मास भद्द६पाउस३अमा३०
कविराज कढिय बुन्दि बितजि, बिधु रु वेद४१स्वक बय समा१३
अक्खिय पुनि अधिराज प्रीति अंतर पैर उप्पजि ॥
रथ१ नृजान२हय३रहित तुम न बिहैरे मृगया१ तजि॥
भारबाह इक१ मोलिं१ न्हस्व इक१लेहु किधों हय१।२ ॥
इक्क१बाह१।३चढि अप्प जाहु बिरचत श्रमादि जय ॥
जामिक स्व संग लहि अट्ठ८जन अभय पुराय बिधि आचरहु
बालपन१ तैं जु अब२लग बन्यों कलुख मस्म वह सब करहु॥१४॥
स्वामि१हुकम२जिम सुहृदँजन१न तिम प्रसभ२जनायउ ॥
तजि हठ कवि हिय तदपि भृत्य तीजो३हु न भायउ॥
वनत असन इक१ बेर मद्य२ तब लै लि३चषक मित ॥
बलि लहियत चउ४बेर अरक भंगार मय अंचित ॥
अहिफेन३निसा दिन खिन उभय२हुक्का४जंत्र छ६जाम हित॥

---

* सवारी और सेवक आदि ॥ १२ ॥ † फिर तुम सवारी भी नहीं लेते हो १ बुंदी को छोड़कर अपनी इकतालीस वर्ष की अवस्था में निकले ॥ १३ ॥ २ परम प्रीति उपज कर रावराजा रामसिंह ने कहा ३ बिना शिकार के इन सवारियों को छोड़कर कभी नहीं फिरे ४ ऊंट ५ पहरायत ६ पाप को ॥ १४ ॥ ७ मित्रों ने भी ८ हठ किया, चंडीदान दिन में एक समय भोजन करते थे तब ९ मद्य की तीन चुसकियां पीते थे और दिन में चार बार भांग का १० पूज्य अरक और रात्रि दिन में दो बार ११ अमल (अफीम) लेते और छः पहर हुका

*अंतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटनै[1] भरोस ॥ ७ ॥
तातैं द्वै२दिन सिक्खलै, बहिनी लेहु बिबाहि ॥
संगहि ऐहैं साहढिंग, चित्त बहुरि भुव[2] चाहि ॥ ८ ॥
बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
सुलतान[3] जु संबंध भो, जानत ज्यानपनाह ॥ ९ ॥
कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
द्वै२दिन अंतर लगनहै, बिरचहु ब्याह बिनोद ॥ १० ॥
तातैं जो आयसैं[4] लहौं, आऊँ करि उदबाह[5] ॥
द्वै२दिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
संभर कूरम सिक्खलै, आये दुहुँ सामोद ॥
बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सद्धि लगन सविनोद ॥ १२ ॥
जामि[6] बडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधानँ[7] ॥
बुंदियपति हिय हित बिरचि, ब्याही बिहित[8] बिधान ॥१३॥
इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यौ गजब गरूर[9] ॥
बुंदियपति आमैरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
रचि मारुन[10] पर रीस हल्यो[11] दरकुंच अलस[12] हरि ॥
अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
बेग आय कर बंधि परयो पायन अलहनपुर[13] ॥
इम साह धन्व[14] किय निज अमल सत्थ रक्खि जसवंत[15]सुव॥

से राजधानी (आमैर) खालसे होगई * जनाना १ उमरावों के भरोसे ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ सुलतान में थे तब ॥ ९ ॥ १० ॥ ४ आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ बहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥ ९ बहुत घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाड़ों पर ११ चला १२ आलस्य मिटा कर १३ आलयावास नामक नगर में १४ मारवाड़ में १५ जशवंतसिंह के पुत्र को

चढ़ि वाह चलन५,९७,इह सुकवि सब उज्झिय बुंदियद्सहित॥१५॥
महित१ सहित२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
को साहस इम करहिँ सूर तजि सब सरीर सुख ॥
चउ४ मादकें तजि चित्त दमि रु क्रमि पयन लहैं दुख ॥
स्वप्प्रभु१ सन लहि सिक्खर२ सुहृद१लोकन इम सम्मति२ ॥
कढि बुंदिय सन सुकवि पत्त हरिनाँ१ हरिनाँपति ॥
बाँधव१ कुटुंब२ सब बुल्लिकैं कहिय धाम चउ४मुख्य करि॥
तिन्ह सरनि न्हाइ सब तीरथन एहाँ अछल अजात अरि१६
रुद्रदान१ अभिधान सुकवि सँविता सोदर सुत ॥
मम माता निजनारि२ जुग२हि हम तनय२।४ विनय जुत ॥
अप्पन जन इत्यादि विरचि हारे सब विन्नति ॥
पै तीजो३ जन पास दास न लयो मनस्विमति ॥
पँथिदेव१ पुज्जि इष्ट२हिँ प्रनमि करि निज ग्राम परिक्रमन३
पिला१दि अस्थि४लै विधि प्रथित गम्य सरनि मंडिय मनन१७
लीलावति१ निज लार भृत्य इक१ लिय स्वसद्म भव ॥
दूजो२ सेवक द्विज सु रामकृष्णा२ऽभिधेय रव ॥
सेवक ए२ दुव२ संग लै रु प्रस्थित कविंद लहु ॥
जित चित मादक.जात पयन गंताहु अयन पहु ॥

पीते थे सो इनको और सवारी पर चढ़कर चलने का ? बुंदी के साथ ही छोड़े ॥ १५ ॥ २ चारों नशों को छोड़कर ३ अपने चित्तको दंड देकर, पैदल चलकर इस प्रकार कौन दुःख लेता है ४ हरणां नामक ग्राम के पति हरणां में प्राप्त हुए ५ चारों धाम "जगदीश्वर, बद्रीनारायण, रामेश्वर और द्वारका" और इनके मार्ग में आनेवाले तीर्थों में स्नान करके छल रहित और ६ अजात शत्रु होकर आऊंगा ॥ १६ ॥ ७ सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान के सगे भाई का पुत्र ८ चंडीदानकी स्त्री ९ सूर्यमल्ल और जयलाल ये दोनों पुत्र १० उन धीरता की बुद्धिवाले तथा अभिमान की बुद्धिवाले ने ११पथवारी पूजकर १२प्रसिद्ध रीति से १३जाने योग्य मार्ग में गमन किया ॥ १७ ॥१४अपने घर का उत्पन्न (खानाजाद)१५शीघ्र, नशावाले चित्त को जीतकर १६ मार्ग में पैदल

परब१ पयान पूरब१ ककुभ करि सेवित ब्रजभूमि१ किय ॥
तिहि ठाम धाम क्रम तीरथन सुनहु राम२०१४प्रभु नाम प्रिय१८॥

॥ पद्धतिका ॥

गिरिराज१ रु गोकुल अनघ गम्य, मथुरा३ वृंदावन४ रुचिर रम्य
जमुना५ अघहरनी न्हाइ जत्थ, सुरबापी६ न्हाये प्रनति सत्थ १९
पुनि सेवित सूकर७ छत्र पास, इह रामघट्ट८ सह कर्णवास९ ॥
जमुना१ गंगा२ जुग२सुबिधि सज्ज, करि मुंडन१ मज्जन२ श्राद्ध३ कज्ज ॥ २० ॥
सेवक जे सूचित स्वामि सत्थ, तजि रत्ति सुप्त३ दुव२ तेहु तत्थ ॥
ऐकाकी४ व्है इम पथ पिधान, सूकर७सन हंकिय अब सुजान२१
पुनि प्राची६अभिमुख रक्खि राग, पहुँचे कवि तीरथ पति पयाग१०
सित१ असित२ संधि जल कृत सनान१, दितलोम२ न्हाइ३ कृत श्राद्ध४ दान५ ॥ २२ ॥
बिश्वेश्वर पालित पुर बहोरि, किय कासी११जिय तिम कृत्यजोरि
पुनि स्रोत कर्मनासा१२ प्रवाह१, इहिँआसय न्हाये धरि उछाह२३
सरसिंधुर भस्म किय दुरित २ सर्व, यह१ पुराय २ भस्म करिहैं अखर्व ॥
तो सुगम मुक्तपन लभ्यताम,किय तहँ इम मज्जन मनअकाम२४

चलनेवाले प्रभु ने पहिले १ पूर्व दिशा में गमन करके ब्रजभूमि का सेवन किया ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ स्नान करके श्राद्ध किया ॥ २० ॥ साथ जानेवाले दोनों सेवक जो ऊपर सूचना किये गये हैं उनको रात्रि में वहीं ३ सोतेहुओं को छोडकर ४ अकेले ५ गुप्त (छिपे) मार्ग से ॥ २१ ॥ ६ पूर्व दिशा के सन्मुख प्रीति करके ७ गंगाकी श्वेत धारा और जमुना की श्याम धारा की संधि में स्नान करके ८मुण्डन कराकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ यहां की पवित्र भस्मी से सब ९ पाप भस्म होवेंगे तो मुक्ति पाना सहज है, इस प्रकार मनकी कामना करके तहां स्नान किया ॥ २४ ॥

वलि न्हाइ सोननद१३में विसेस, पुनि करि पुनःपुना १४ धुनि प्रवेस ॥
जिम उद्धरि गयपुर १५ पितर जात, प्रभु विष्णु अंघ्रि १६ करि पिंड पात ॥ २५ ॥
धरि भेट गदाधर१७ चरन धाम, कृत फल्गु१८ प्रेत गिरि१९ वल्गु काम ॥
गंगो१दधि२ संगम२० पगि प्रवीन, कपिलाश्रम२१ वंदन१ न्हान२ कीन ॥ २६ ॥
जगदीस ढंग२२ चढि पोत जाइ, प्रभु को प्रसाद१बहु विविध पाइ
करिं उदधि२३ न्हान२ दाना३दि कज्ज, सेये जगदीश्वर२४ प्रनति सज्ज ॥ २७ ॥
रहि दक्खिन २।३ अभिमुख सिंधु रोध, संक्रमि रामेश्वर १ दिस सुबोध ॥
संप्लुत चिलका१ नदि सिंधु१ संग२५, इम प्रस्थित इक्खत भ्रमन१ भंग२ ॥ २८ ॥
द्रुत गोन अंग १ क्रमि वंग २ देस, विसि इम कलिंग ३ जनपद विसेस ॥
गोदावरि२६ तटिनी जल गहीर, किय मंजन भंजन दुरत भीर२९
कृष्णा २७ धुनि न्हाये सह प्रकार, भस्मीकृत कलिमल४ असह भार ॥
धर तहँ पनाह नरसिंह २८ धाम, निज वपु असक्त जँजि १ किय प्रनाम२ ॥ ३० ॥

---

१ नदी में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ न्हाये ३ समुद्र की ऊर्मियां और तरगों को देखकर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ४ पापों को भस्म करके ५ अपने अशक्त शरीर से पूजन करके ॥ ३० ॥

इम भुवकलिंग३प्रविसत अनेह, दृढ *जग्ध ज्वर१ रु अतिसार२ देह ॥
मंजिल दुरकोस इक१कोस मान,पथ निट्ठि निट्ठि विरचत पयान३१
इकग्राम जाइ बपु गद असक्त१, गृह द्वार गिरे नत२निवल२नैक्त
गृहवासिन जानि सु कहियगैच्छ,ए डिगिसकेन तउ बपुअनच्छ३२
मन_मन धकि बढि हठ माँहिं माँहिं, न डिगत लखि अक्खिय गृहन नाँहिं ॥
हुव तदपि प्रसभै दुखदैनहार, गल१ पय२धरि ईसा हल अगार३३
दृढ हठ उठाइ क्रमि ग्राम दूर, पल्वल इक तट तजि पाप पूर ॥
आये गृह अरु इत कवि उदास, बलि तहँ निस दस १० मित बिमति बास ॥ ३४ ॥
संतत दस १० लंघन करि सहाय, बपु चेति जित्ति ज्वर १ रेक२ बाय३ ॥
अति अदय देस ऐसे अतथ्य, पटु तदनु चले भजि सुलभ पथ्य३५
बलि पत्त सह्य २९ कुलगिरि बिसेस, भजि लछमन बाला ३० तहँ भर्गेस ॥
धर अधर पुरी त्रिपदी३१सुधाम, तहँ ईंधन चंदन अरुन ताम ॥३६॥
भव १ हारि २ भट काँची ३२ पर दु २ भंति, पुर सप्त ७ मध्य

ज्वर और दस्तों के रोग से शरीर का अत्यन्त * चर्वण (कुचलना) होकर ॥ ३१ ॥ १ रोग से शरीर अशक्त होकर २ रात्रि में निर्बल होकर एक घर के द्वार पर जा गिरे ३ घरवालों ने कहा कि यहांसे चलेजाओ ॥ ३२ ॥ ४ हठ दुःख देनेवाला हुआ सो गला और पैरों को हल की हालों पर रखकर ॥ ३३ ॥ इन पूर्ण पापियों ने एक ५ तलाव की तीर पर छोडकर वे तो घर आये चंडीदान ने उदास होकर दस दिन तक मूर्छित दशा में वहीं वास किया ॥ ३४ ॥ ६ निरंतर दस लंघन करके ७ दस्त ॥ ३५ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ लाल चंदन का ईंधन होता है ॥ ३६ ॥

हतपाप पंति ॥
धर लघु वेदाचल३३ नामधेय, सुहि पच्छीं तीरथ३१२नाम श्रेय३७
क्रमि पत्त सलंवर३४ कुंभकोन, वाहिनि कावेरी३५ भद्रभोन ॥
कढि काढितस धारा भिन्नभास,विसतार त्रि३जोजन जन विलास३८
श्रीरंग छत्र३६ मंदिर१ सुढार, श्रीरंगनाथ३७ जहँ सेव्य सार ॥
पाखान स्याम मूरति२ प्रसिद्ध, अवनीतलसाई३ तल्प इद्ध ॥३९॥
प्राकार४ घेर गव्यूति१ पाय, श्रीरंग द्रंग५ ढिग प्रभु सहाय ॥
सु विभीषन६सेवक जातुजात, श्रीरंग३७प्रनुतं सबविधि सुहात ४०
अग्गैं समुद्रतट३८ पुराप अैन, विनु तरि तदग्ग पहुँचत बनैन ॥
जहँ नव नव पत्थर१ घटित जानि, पिक्खत इम जगद्दग लौं प्रमानि ॥ ४१ ॥
तरि करि तरि संकर सफल संध, विक्खे रामेश्वर३९ सेतुबंध ॥
श्रीरामचंद्र लंघत समुद्र, रुचि कपिल मुष्टि त्रय३ प्रमित रुद्र ॥४२॥
श्रीज्योतिलिंग नति१ नुति२ समेत, कृत दरसन३ सेवित४ जय निकेत ॥
तदनंतर व्है ज्वर असह ताप, पच्छिम प्रयान टारिय विपाप॥४३॥
नाहितो जजि पच्छिम ३।५ धाम धार ३, वदरीस ४ प्रनमि आगम विचार ॥

॥३७॥३८॥१भूमि रूपी बड़ी शय्या पर सोते हैं ॥३९॥२उसके कोट का घेरा प्राय: दो कोशका है३राक्षस विभीषण का बनाया हुआ है ४विशेष स्तुति योग्य ॥४०॥ ५विना नाव जिसके आगे नहीं पहुंच सकते६सूर्य के प्रमाण से दीखते हैं अर्थात् सूर्य की चमक से दीखते हैं ॥४१॥ नाव से तैर कर अपनी प्रतिज्ञा को सफल करके सेतुबंध रामेश्वर शिव के दर्शन किये ७ कांतियुक्त अग्नि की तीन मुष्टी रक्खी थी उतने ही शिवलिंग हैं ॥ ४२ ॥ ८ स्तुति सहित नम्रता करके ॥ ४३ ॥ द्वारका और बदरीनारायण को नमस्कार करके ९ आने का विचार

पै बिचहि मोरि ज्वर इत प्रयान, हढ हुव निकेत आगमनिदान४४
अग सह्य ४० ऽहे रु दिस सौम्य४।७ आइ, पुनि कृष्णा४१ गोदा
४२ न्हान पाइ ॥
पूर्णा ४३ अरु तापी४४ बपु पखारि, रचि मज्जन रेवा४५ बिमल
वारि ॥ ४५ ॥
रेवा१ काबेरी४६।२ मिलन रम्य, गहिरे न्हद न्हाये सहस गम्य ॥
सेवित मेकलजा पुलिन सीस, श्रीज्योतिर्लिंग ओंकार४७ईस४६
सब ओर सिंधु पूरव१ प्रवाह, रेवा१ गति केवल वरुन राह३।५ ॥
उल्लंघ्य विंध्य ४८ कुलगिरि अमान, पहुँचे भुवमालव४९ सिथिल
प्रान ॥ ४७ ॥
बिच ढंग बिसाला५०जहँ बिसिष्ट, अरु ईस महाकाला५१रूप इष्ट
गुरु सप्त७ पुरन पुर जो गणेय, श्रीकृष्ण अध्ययन धाम श्रेय४८
सिप्रा५२ सैविर्लिनी पुण्य श्रोत, साकिनि कृत प्रासन पाप पोत
तदनंतर प्रवणा ५३ सिंधु ५४ स्याम, तटिनी चर्मणवति ५५ न्हाइ
ताम ॥ ४९ ॥
मिलि सक्र ख नंद बसु इंदु १८९० मेय, सित२ पच्छ जेठ३ नव–
मी९ सु गेय ॥
बसु८दिवस मासनव९के बिचाल,कविआये बुंदिय उष्ण२काल५०
क्रम भुव त्रिसहस्र द्विसत३२०० कोस, दुव२ धाम परसि ध्रुव हुव
अदोस ॥
इक्कल१ पदाति२ सूचित अनेह, पुर बुंदिय प्रविसे दुबल देह ।५१।
दिनदुल्लह प्रभु सुनि न किय देर, बुल्लिय कवि परिखद आत बेर
इम ठानिकुसल पृच्छादुर२ओर, मोदित ससभ्य प्रभु महिपमोर५२

था ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १ पश्चिम दिशा में ॥ ४७ ॥ २ उज्जैन ३ श्रीकृष्ण के पढने के कारण वह धाम श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥ ४ नदी ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अक्खि सु असेस पेद्धति उदंत, हरिनाँ निज निवसथ पत्त हंत ॥
तब निज प्रकार तजि चँरनचार, आलय गय रयहय अस्ववार५३
पथिदेव१ पूजि गुरुजन१ उपेत, कछु अह१ गंगामह२रहि निकेत
पत्ते वलि बुंदिय कविप्रवीर, श्रीस्वामि सभ्प१गुरु सुहृद३सीर५४
मन१तेंहु पर स्वेहा मिटाइ, अघ काइक१ वाचक३ दिय उठाइ ॥
विनु सिंह१ छोरि मृगया१ बिलास, हित समुझि नसा मद्या२दि ह्रास ॥ ५५ ॥
सह मिथ्या संसन३ काम ४ क्रोध५, मद ६ लोभ ७ मोह ८ संहरि सुबोध ॥
असहत्व९ असूया१० ईरखा११ रु, सठता१२दि उभिंझ छम भ्रम १३ सरारु ॥ ५६ ॥
मायामय१ गोचर२ अखिल मानि, स्वा१ऽभिन्न२ अगोचर३ बिभु३ बखानि ॥
इम अप्प१ अवस्था लय३ अतीतं२, पर१ बोध२ तुरीया ४ स्थिति प्रतीत३ ॥ ५७ ॥
चउ४ वेदसीस वचनन बिचारि, जड़१ प्राकृत२ चेतन१सुंचि२प्रजारि

---

१ सब मार्ग का वृत्तान्त कहा २ हरणा नामक अपने ग्राम में खेद के साथ पहुँचे ३ पैदल चलना छोड़कर ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ४ मन से भी पराई वस्तु की इच्छा मिटाकर शरीर से और वचन से होनेवाले पाप उडा [छोड] दिये ५ मद्य आदि के नसे छोड़दिये ॥ ५५ ॥ ६ झूठ बोलना ७ उस श्रेष्ट ज्ञानी ने छोड़ दिये और हिंसा करना भी छोड़ दिया ॥ ५६ ॥ ८ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, इन इन्द्रियों के विषयों को मायामय (झूठे) जानकर ९ अपने को अगोचर (इन्द्रियों से नहीं जाना जावै) ऐसे परमेश्वर से अभिन्न(भेद रहित) कह कर इस प्रकार १० अपनी तीन अवस्था बिताकर परम ज्ञानवाली ११ चौथी अवस्था में अपनी स्थिति प्रसिद्ध की ॥ ५७ ॥ चारों वेदों के उपनिषदों के वचनों को विचार कर प्रकृति संबंधी जड़ पदार्थों को चैतन्य रूपी १२ अग्निमें जलाकर,

आनंद१ अप्प२ अव्यय३ असंग४, अक्खी१ सम२ रोचन३ एक१ रंग४ ॥ ५८ ॥
सुभ१ सत्व२ सत्य३ अनुभव४ अनंत५, सर्वोत१ प्रोत२ अज३ सतत अंत४ ॥
निष्ठा यह कवि मनि गहि अनिच्छ, दुर्लभ स्वबोध १ मख २ प्राप्त दिच्छ ॥ ५६ ॥
प्रभुकै उत्तेजन तस प्रकासि, निर्णाय जय संसय निचय नासि ॥
बोधन छह तर्क छम बुधन वार, देसीय१ बिदेसज१ के उदार६०
करि मति तदीय तत्त्वानुकूल, मत और जोर तंत दलि समूल ॥
कवि१जित बहि१रंतर२ करन काम, निज सख द्विज आसानंद२ नाम ॥ ६१ ॥
तिन्ह मत उत्तेजित प्रभु३ तृतीय३, सन्नद्ध बाद रन सुभट स्वीय॥
परिपूर्ण सत्व १ चित २ सुख ३ प्रभाव, धी सुद्ध रुद्ध गन करन धाव ॥ ६२ ॥

१आनंदमय, आत्मरूप, नाश रहित, संग रहित, चय रहित, सम, प्रकाश रूप, एक रस॥५८॥ शुभ, सत्वरूप, सत्य, अनुभवरूप, अनंत, सबसें ओतपोत अर्थात् सर्वव्यापक, अजन्मा २सदा सत् रूप ऐसे परमात्मा में उस कविशिरोमणि चंडीदानने इच्छा रहित होकर निष्ठा धारण की और दुर्लभ आत्मज्ञान रूपी यज्ञ की दीक्षा ली ॥ ५६ ॥ और देश विदेश के बड़े विद्वानों के समुदाय में छहों शास्त्रों का उपदेश करने में समर्थ ५उस कविचंडीदान नें राजा के मनमें उस निष्ठा का ३उत्तेजन करके निर्णयका जय और संशय के ४समूहका नाश किया॥६०॥ फैलेहुए अन्य मतों केवल का मूल सहित नाश करके ६उस राजा की बुद्धि को उत्तेजित की, और उस कविने बाहिर और भीतर की इंद्रियों की कामना जीत ली, इनका मित्र आशानंद नामक ब्राह्मण था ॥ ६१ ॥ इन दोनों के मत से तीसरा राजा रामसिंह उत्तेजित हुआ जो अपने सुभटों सहित शास्त्रार्थ रूपी रणमें सज्जित रहता था और सच्चिदानंद के प्रभाव से परिपूर्ण रहता था और उस शुद्ध बुद्धिवाले ने इन्द्रियों के समूह की दौड़ को

आस्थान१ गान२ तिम नटन३ तूर, परिहास४ संग्धि५ रस६ नव-
क९ पूर ॥
जय सिद्ध सस्त्र७ सय८ मल्ल जुद्ध९, आखेट १० फाग ११ क्रीड़न
अलुद्ध ॥ ६३ ॥
गज१२ वीति१३न वाहन रीति गैल, फटकारि विडारत सठन फैल
इत्यादि रजोगुनके उफान, भुग्गैं पहु कौतुक विविध भान ॥६४॥
पै तत्त्व सत्त्व गुरु कवि प्रसाद, व्युत्थाँन१ समाहित२ सहस बाद ॥
इम पत्त राज्य तरु फल अलुद्ध, सब रीति १ प्रीति २ पटु नीति ३
सुद्ध ॥ ६५ ॥
संधा ली वितरन जस प्रसक्त, उल्लंघि सक्ति रज१ सत्व२ अक्त॥
भंडार भूपके भर्म भूरि, पूरे धात्रेयन सुमह पूरि ॥ ६६ ॥
संधा जिन्ह सचिवन सह बिसेस, धन कोस नित्य धरि नुत निसेस
अन्नो१दक२ पीछैं लहत आप, पटु स्वामिधर्म सेवन प्रताप॥६७॥
बिसेस१ निसेस२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रक्खिय प्रभु तहँ इम दान रीति, जगके उदार सब आधिप जीति

रोक दी ॥ ६२ ॥ १सभा, गान,नृत्य, २वाद्य, हसी, ३सहभोजन(गोठ)पूर्ण नव रस, शस्त्रों के साधने में जय, बाहुयुद्ध करना, मल्लयुद्ध देखना, शिकार, फाग खेलना ॥ ६३ ॥ हाथी ४घोड़े को रीति पूर्वक चलाना दुष्टोंके फैलको फटकार कर मिटाना, इत्यादिक रजोगुण के उफान रूप नाना प्रकार के कौतुकों को अनासक्त होकर वह राजा भोगता था ॥६४॥५परंतु गुरु(आशानंद ६और कवि चंडीदान की कृपा से ब्रह्मभाव की विद्यमानता से उक्त ७ विरुद्ध कार्य और समाधि ये दोनों पाद करके समान भाव से रहते थे. इस प्रकार सब भांति की रीतियों में और प्रीति में चतुर नीति से शुद्ध उस राजाने अनासक्त होकर राज्य का फल पाया ॥ ६५ ॥ रजोगुण और सतोगुण में ९ आसक्त होकर जस में लगकर दान की ८प्रतिज्ञा ली और राजा के धायभाई (मंत्री) ने उत्साह से पूर्ण होकर राजा के भंडार को स्वर्ण से भर दिया ॥ ६६ ॥ स्तुति योग्य सब धनको खजानेमें रखकर पीछे आप अन्न जल लेते हैं और स्वामिधर्म

जँहँ द्विज १ पौरानिक२ बंदि३ जात दिगविजयी १ सबबुधर२ जो
दिपात ॥६८॥
तिँहिँ अयुत १०००० दम्म अप्पन इलेसैं, पट १ भूखन २ हय ३
गज४ भू प्रदेस५ ॥
बादीन १ तदपि जो सब प्रबुद्ध २, लहत सु सहस्र पंचक ५०००
अलुद्ध ॥ ६९ ॥
इक१ देस सूरि १ कलपक २ अभंग ३, सो लहत सहँस १०००
मुद्रा प्रसंग ॥
बादीन१ तदपि इक१ देस बीर२, सतपंच५००लहत मुद्रा सुधीर७०
सत१०० दम्म लहत लहि अब्द सुद्धि१, बितँरन क्रम संस्कृत
बुध१न बुद्धि ॥
भाखा छ ६ कोहि जिनको न भान१, प्राकृत१ मुख पंच५ हु इत
प्रमान ॥ ७१ ॥
केवल नृगिरा कवि जे कहात, जानै न प्रकृत भव अब्दजात२ ॥
पै जिन्ह कवित्व हिय जाइपैठि३,बिकसाइ देत मन सबन बैठि७२
जे काव्य केर सब१० अंग जानि, अँचत श्रोता मन रीझि आनि
सत१० संख्य तदर्थहुं दम्म देय, सिरुपाव१ तुरंगम२ संग श्रेय७३

के सेवन में चतुर ॥६७॥ ब्राह्मण १चारण २ भाट जो दिग्विजयी ३ और सर्व देशी होवे ॥ ६८ ॥ उस को ४ राजा दश हजार रुपये देता है ५ शास्त्रार्थ कर नेवाला नहीं होने पर भी सब शास्त्रों का जाननेवाला होवे वह निर्लोभी होने पर भी पांच हजार रुपये पाता है ॥६९॥ ६ जो एकदेशी (एक ही शास्त्र को जाननेवाला पंडित होवे और उत्तम कल्पना करनेवाला, दूसरों से नहीं जीतने में आवै वह एक हजार रुपये लेता है और एक देशी पंडित शास्त्रार्थ नहीं करनेवाला) होने पर भी उस शास्त्रमें वीर कुशल होवे उसको पांच सौ. रुपये मिलते हैं ॥ ७० ॥ बुंदी में सालियाना ७दान के क्रम से सौ रुपये मिलते ८हैं प्राकृत आदि पांच भाषा में भी प्रमाण रहित है ॥ ७१ ॥ ९ केवल देश भाषा का कवि कहलाता है ॥ ७२ ॥ १० उसको भी सौ रुपये मिलते हैं ॥७३॥

उप्परि[1] उफान सागर[2] उपम[3] दक्खिन पर गज्ज्यो गरुव[4]॥१५॥
रहि कछुदिन अजमेर सज्जि संभर[5] सेनापति ॥
दक्खिनपर दरकुंच गव्व[6] धरि चलिय जनँक[7] गति ॥
होय दुरग चित्तोर हेठ[8] दसउर[9] मिलान दिय ॥
यहँ रानाँ अमरेस[10] प्रनति[11] मनुहारि पठाविय ॥
हिंदवान सीस मिच्छन[12] हुकम ताम्हँ कुल रानँन[13] टरचो ॥
जवनेस तदपि[14] निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवन[15] परचो ॥१६॥

[दोहा]

अमररान अप्पन अनुज[16], तखतसिंह अभिधान[17] ॥
देवसिंह वेधमपुर पँ[18], दुव२पठये सनिदान[19] ॥ १४ ॥
इक्क१अनेकप[20] च्यारि४हय, साह काज दिय संग ॥
च्यारि४बाजि चहुवान[21] हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

अट्ठ८बाजि गज इक्क१भेट अमरेस पठाये ॥
तखतसिंह अरु देव लै रु दसउर[22] दुव२आये ॥
बाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुब्ब[23] निवेदिय ॥
मंडि बिबिध मनुहारि जानि जामिप[24] प्रमोदि जिय ॥
पुनि कहिय साहहित[25] रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुलासि[26] ॥

साथ रख कर वहां से १ उपड़ कर २ समुद्र के बढाव के ३भांति४बहुत (भारी) ॥ १५ ॥ ५ चहुवाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजेब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ मंदसोर मुकाम किया १० अमरसिंह ने ११ विशेष नम्र होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर म्लेच्छों के हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ भेजना पड़ा ॥ १६॥ १६ अपना छोटा भाई १७ नाम १८ पति १९ कारण सहित [अपने देश में आये हुए बडों को भेट देनी चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बुधसिंह के लिये, 'अभंग' यह महाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ मंदसोर नामक पुर में २३ नम्रता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५ बादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर

सामान्य कवि१ रु वर्जित विवाद२, संस्कृत ३ कवि लहत सु सत १०० प्रसाद ॥
ऐसो भासाकवि१मति अनिंद२,पंचास५०द्रम्म लहत सु प्रसिद्ध७४
इत्यादिनतैं गुन घटि१अनेक, वितरन[2] क्रम बहुविध तिन्ह विवेक॥
पच्चीस२५ आदि१ करि अंत२ पंच५, रोह्यो न चालिस१न बट हु रंच ॥ ७५ ॥
हायन इक१ टारि१ रु लैनहार, पुनि लहत आइ सुहि सुहि प्रकार
इम खट६ऋतु बारह१२मासअंत,अंहति१[3]झर मंडिय जस२उदंत७६
दुव २००० दुव २००० सहस्र कोसन बिदूर, पुर लग्गे आवन बुधन पूर ॥
उज्ज्वल रुचि बुंदिय तिहिंअनेह, गिनिये कि पुरंदर१[4]धनद२गेह७७
तन मान सवन मन धन१ तुलंत, अंकुरि मइ१ सव अह २ सादि १ अंत२ ॥
ऐसे उदारपन करि इलेस, प्रतप्पो परिपालत देसदेस ॥ ७८ ॥
आयुध सब साधक बहु उपाय, मृगयादि कुतूहल रमत राय ॥
आनन कलिंदिका निलय इद्ध, सब ठाम तदपि अद्वैत सिद्ध॥७९॥
चोगान तुरग बाजी प्रचार, खेलैं विदग्ध बिजई खिल्हार ॥
हठि कुसल सिकारिन ठिगनहार, किरि१ केहरि२ ऐसे छल प्रकार ॥ ८० ॥
छलिकैं तिन्ह वेधत सर समूह, दै डाक थकावत गज दुरूह ॥
अवरोध जनन क्रीड़न अनेक,विलसत विदग्ध इम एक१एक१।८१

१ घड़ी बुद्धिवाला नहीं होने पर भी ॥ ७४ ॥ २ दान के क्रम से ॥ ७५ ॥ ३ दान का झड़ रचा ॥ ७६ ॥ ४ इन्द्र का अथवा कुबेर का घर ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ५ यमुना नदी यमराजकी बहिन है इस कारण उस का और यमराज का घर एक ही है सो उपरोक्त कर्मों में तो रामसिंह का मुख यमुना का घर है तोभी सब जगह अद्वैत मत ही सिद्ध है ॥७९॥८०॥ ६ क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगाकर ॥८१॥

व्युत्थान बनत अैसे अनेह, अन्यत्र अधिप चिंत बोध एह ॥
कवि चंड१ रु आसानंद२केर, सफली हुअ सिच्छा स्वबय बेरा८२।
पौरानिक१ कै हुव सुख प्रबोध, रहिगो द्विज२कै तस तदपि रोध ॥
कवि चंडतैंहु हय अग्ग हंकि, अद्वय४ मय अंतहकरन अंकि॥८३॥
कवि१ सूरि२ सुभट३ सचिव४न कलाप, अखिलन रिझ्झात मन गुनन आप ॥
जिहिँ गुन प्रसार जन बिदित जोहि, स्वामीकहँ समुझ्झत पठित सोहि ॥ ८४ ॥
प्रभु मनु बसीकरन१ मनु प्रभाव, विद्या कि मोहिनी२ मनु बढाव॥
करि नैन१बैन२करि ध्रुव धनेस१,जन जन मन पैठो जनु जनेस८५
पिक्खन१संलापन२के प्रसाद,बिनु बेतन सेवन प्रकटि वाद॥
इम सबन चित्त कर गहि इलेस, देखंत बलि हारत द्रंग१देस२।८६
इम अब्द पंद्रहम१५ बय प्रबेस, बिलसिय बिलास बैभव बिसेस॥
हायन बिंसति२०तम लगबहार, सुख राजस लुट्टिय नीतिसार८७
अब सक नव गज बसु ससि १८८९ अनेह, सुरभि१ रु निदाघ २ बिलसिय सनेह ॥
क्रम निज तजि सावन१ भद्द २ काल, बदल्यो ऋतु पाउस ३ वह बिचाल ॥ ८८ ॥
बुट्ठिय जल ढिग ढिग त्रि३चउ४लेर, पै सो न समय घन प्रचुरघेर

ऐसे समय में तो १ विरोधाचरण बनता है, बाकी अन्य स्थानों में २राजा के चित्त में एक ज्ञान ही रहता है ॥ ८२ ॥ ३ चारण चंडीदान के सुखकारी ज्ञान होगया तो भी आशानन्द ब्राह्मण के उस ज्ञानकी रोक रहगई अर्थात् आशानन्द को ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ ४अद्वैत मत से अपने अंतःकरण को चिन्ह युक्त करके ॥८३॥८४॥५मानों मनुके प्रभाव से मन वश करके, मानों कुबेर के समान ६ राजा निश्चय ही मनुष्य मनुष्य के मनमें घुसा ॥८५॥ देखने और बोलनेकी प्रसन्नता से ७ हठ करके विना ही तनखा सेवा करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८वसन्त और ग्रीष्म ॥ ८८ ॥ ९ परंतु मेघ के अत्यन्त घेर से वर्षा नहीं हुई

[1]सर कर दहि दिस दिस सस्यें १ खेत, अग किसलय २ वीरुध ३ तृन४ उपेत ॥ ८९ ॥
अनलपें अरुख४।२ रु पच्छिम५।२ दुर्ओर, रचि पोन गोन किय भोन रोर ॥
पप्पीह [6]प्यास खिन खिन बढात, घटि लास मयूरन आस घात९०
लालित्य बेल१ बन २ गिरिन ३ लोप, किय झंखर भंखर किरन कोपि ॥
हाकार मचिग गत इस [7]हु होत, श्रोत७न चंडन गय तुट्टि श्रोत९१
गडि भेक १ कमठ २ झख ३ पंक गर्त, [9]पसु सम बिचेष्ट वर्तन बिवर्त ॥
तउ तजन नक्र४ गन तरफरात, जल मति पल छिति तल१ बिसंत जात ॥ ९२ ॥
पवमान२ भान३ इत बिरचि [11]पौन, निपरात करत हत छबि निपान
[12]जलजात१ रु कैरव २ कुमुद ३ जाल, सैवल ४ नल ५ संजुत हुत बिहाल ॥ ९३ ॥

चिपान१ निपान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

[13]जनपद मरु१ जंगल२ सिंधु३ जत्थ, अमि सूरसेन४ हरियान५ सत्थ

१गरमी से दिशा दिशा में २खेती के खेत ३कोंपलें ४भूमि पर फैलनेवाली लता और तृणों सहित सब सूख गये ॥ ८९ ॥ ५दक्षिण कोण का और पश्चिम दिशा का इन दोनों ओर का पवन चलकर सब भवन भयंकर कर दिये ६ क्षण क्षण में पपीहे की प्यास बढकर मयूरों की आशा का नाश होकर उनका ७ नृत्य घट गया ॥ ९० ॥ ८आश्विन मास के जाते ही हाहाकार होगया ॥ ९१ ॥ ९मरे हुओं के समान चेष्टा रहित होगये १० भूमि के नीचे घुसजाते हैं ॥ ९२ ॥ पवन और सूर्य की किरणें ११ पान करके समीप लेकर प्रपा (प्याऊ, पो) आदि छोटे जलाशयों को शोभा रहित करते हैं १२ कमल, रात्रिविकासी कमल (गुड़हल तथा गहूल) श्वेत कमल विशेषों के समूह, जलनीली (कुमोदनी) और कमलिनी सहित उस घड़ी अग्नि में जलगये ॥ ९३ ॥ १३ देश

ढुंढार६ सेखवट्टी७ कुढंग, मेवार८ मुलक सु पहार९ संग ॥९४॥
इत्यादि मनुज *उज्जट अगार, सकुटुंब कढे नत भूख भार ॥
इन्ह सूचित देसन अंतराल, हड्डोतिय१०भुव हुव बिकल हाल९५
कंकाल करंकन निचित कोट, इम पसुन अस्थि प्रतिगाम ओट॥
तरु पत्र असन कबलग कराइ,पय नाम मिट्यो रव हाम पाइ९६
कनिका३दि अठ ८ जल घोरि केक, वहिकात सिसुन जन पय बिवेक ॥
जिम मृत तंपादिक ग्रामजन्य१,वचि तिमहिं रहे कहुँ बिरलवन्य९७
पसु तृन१बुसा२दि प्रमितहु न पाइ, खिल ग्राम्य जिपत कहुँ कीट खाइ ॥
नाकँहिं जिम नाकुन ऋच्छ रक्खि, करखत छिति कीटन स्वास सक्खि ॥ ९८ ॥
इम चट्टि पिपीलिक १ दीम आदि, जीवत कहुँ गो १ महिषी २ अजा३दि ॥
तिन्हँ थनन ऐंचि जन अधम ओहि, दित करुन लेत पय अरुन दोहि ॥ ९९ ॥
दधि तस बिलोरि तजि तक्र दूर, कुभृतहु वह बेचन गहत कूर ॥

॥ ९४ ॥ * ऊजड़ घर ॥ ९५ ॥ १ हड्डियों और मस्तकों के समूह के कोट हो गये २ पशुओं की दुर्बलता के कारण दूध के नाम का शब्द ही मिटगया ॥ ९६ ॥ पानी में ३ गेहूँ का आटा घोलकर ४ जैसे वनके पशुओं में गज आदि कोई ही बचे तैसे ग्राम के लोग भी विरले ही बचे ॥ ९७ ॥ पशुओं ने तृण और ५ तुष आदि का ज्ञान भी नहीं पाया अर्थात् इनको जान ही नहीं सके और ग्रामों में ६ कीड़े खाकर कोई ही बाकी जीवित रहे ७ जैसे रीछ अपनी नासिका को उदेही (दीमक) के ऊपर रखकर खैंचता है तैसे पशु स्वास से भूमि के कीड़े खैंचते थे ॥ ९८ ॥ ८ कीड़ियां और दीमक आदि को चाटकर ९ करुणा हीन मनुष्य लाल रंग का दूध दोह लेते थे ॥ ९९ ॥ उस दही को विलोकर १० छाछ को दूर रखकर खोटी वृत्ति करनेवाले उसको बेचते थे

निज सिसुन वेचि कहुँ अन्न आनि, खल वहु असु धारत दुरित
खानि ॥ १०० ॥

ऐसो प्रवृत्त संकट अनेह, संवंधिन ठहर्यो नन सनेह ॥
दयिता१मारी२पति१इहिंदु२काल, हाहारव वाढिय असहहाल१०१
अति व्याकुल तजि इम देस उक्त, आये हड्डोतिय मान मुक्त ॥
प्रभु बुल्लि सचिव धान्नेय पास, करुनापर सासन किय प्रकास१०२
अंवार निचित अप्पन अगार, वरखनतैं चित सब धान्य बार ॥
उनके सवरुप्पय करनकाल, वसुमति रस बिलसन जसविसाल१०३
जन रंक१ कुटुंविय२ दुस्थ जानि, आसन चहि ओहैं आनि पानि
अप्पहुतिन्ह भोजन अर्घउज्झि,सवभंतिविसासहु पुरायसुज्झि१०४
वसु आढय१ कुटुंवी२ जे विपन्न३, उचितार्घ लै रु तिन्ह देहु अन्न ॥
नव कोस निकर भृत द्रम्म १ निष्क२, व्है अधिक गोप गृह
जिम हविष्क ॥ १०५ ॥

सचिवहु निवेदि आकूत सोहि, अन्नालय खुल्लिय विविध ओहि ॥
प्रतिदेस पहुँचि तस जस प्रसार, हुत आये जे खिल तेहु द्वार।१०६।
इम अलप अर्घ किय कल्प अन्न, वसु दुर्विध निवहे जिम विपन्न॥
रहि मुल्लप आढय देसन परत्र,अष्टमप्लव ता सन लहिपअत१०७
इहिं मोल तोल जिम कोल ऊखें, भजि भजि जन आये भनत भूख
वेचे जे अर्भकं जननि१ वप्प२, उनकों छुगाइ वसु आत्थि अप्प१०८

१वे पापों की खान जीते थे ॥१००॥ २ स्त्री को ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ अपने घर में वर्षों से संचय किया हुआ धान्य के समूह का ३ ढेर पूरित है ४ भूमि पर ॥ १०३ ॥ ५ दरिद्री ६ कीमत छोड़कर ॥ १०४ ॥ ७ धनवान् कुटुम्बी व्याकुल हैं उनको ८ उचित मोल लेकर, नवीन खजाने में रुपये और मुहरों का समूह भरा है जिससे, श्रीकृष्ण की सम्मति से ब्रज के गोपों के घर में ९होम हुआ था उससे भी अधिक होवै ॥ १०५ ॥ १०अभिप्राय ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ११जैसे गन्नों पर सूवर आवै तैसे १२ बालकों को ॥ १०८ ॥

जानें जिम जाके बर्ण१जाति२, ते भ्रष्ट होन दिय न सिव ताति ॥
कंटक दुकाल इम अन्नसत्र, अधिपति बिस्तारिय जस अमत्र१०९
प्रतिदिन चित सहसन दम्म पूर, दुख भूख जनन हुव जनन दूर ॥
जिन सिसुन लये कुल १ ग्राम २ जानि, तिनके संबंधिनहू ति
तानि ॥ ११० ॥
बुल्लि१ रु मिलाइ२ परिचय बिबेक, सह बास निबाहे इम अनेक॥
बिप्रा१दि बर्ण१४ आश्रम२४ बिधान, सब ब्रात्य न किय जिहिँ
जो समान ॥ १११ ॥
जिनके बसुधा१ बसु२ निज निबाह, ते पहुँचे सु समय घरन ताह
जिन्ह रंकन रंचन वृत्ति जोग, प्रभु सीस बसे ते सुख पुरोग।११२।
लक्खन जमाइ इम पुण्य १ पारि, बलि कोस दम्म २ लक्खन
बिथारि ॥
इस यह दुकाल अंकिय १ अधीस, सब द्वीप जनन जस २ बहिय
सीस ॥ ११३ ॥
निज जनन त्रि ३ हायन लाखि निबाह, लिय खिल करि दुर्लभ
पुण्य लाह ॥
जस दूत बुलाये सुकबि जूह, आनायक कोटिन कोटि ऊह११४
सूदहु तदीय कुल बिरचि मान, जाचक सब पोखे तिम सुजान ॥
दलि दलि दयालु दुस्सह दुकाल, किय नृप सुभांड१८७१४पहिलें
सुकाल ॥ ११५ ॥
दब्बत तिहिँ घन धन१ अन्न२ दान, ऐसो सुकाल किय चाहुवान
इहिँ जस उफान दिस१ बिदिस२ ऐन, हतरोचि१ व्हीडा२ नत ३

१ अन्न का यज्ञ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ २ शूद्र नहीं किये ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
३ यश रूपी जाल में ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ४ कान्ति रहित और लज्जित होकर
राजाओं ने नेत्र नीचे किये,

नृपन नैन ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसो असह दुकाल यह, दिनदुल्लह कुल दीप ॥
सु दुख दवि पोखे सकल, हड्ड६१न हेलि महीप ॥११७॥
जनपद हुव उज्जट[1] जिते, वचि हड्डोतिप वास ॥
स्वस्व वसाये ग्राम१ गृह२, पुनि तिन स्वर्घ[2] प्रकास॥११८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे आगामिग्रन्थगुम्फनवर्णसंबन्धाख्यालंकारपरित्यागसूचन १ ग्रन्थकर्तृपितृचण्डीदानमृगयामद्यपानादिदुष्टाचरणसूचनपदातितीर्थयात्राविधानाखिलपापमुक्तवेदान्तज्ञानसमधिगमन२प्रतिवर्षनियतीकृतरामसिंहदानविवेचन ३ एकोननवत्युत्तराष्टदशशततमसंवत्सरदुर्भिक्षरामसिंहोदारत्ववर्णनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अन्वय[3] हड्ड६१न इंद्र इम, देसन दलित दुकाल ॥
निवहे सव आपन्न[4] नर, जे सीमागत जाल ॥ १ ॥

॥११६॥११७॥ १ देश में ऊजड़ होगये थे २ अपनी ओर से मूल्य देकर॥११८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में. आगे की ग्रन्थ रचना में वर्ण सम्बन्ध नामक अलंकार के छोड़नेकी सूचना करना १ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान के शिकार और मद्यपानादि दुष्टाचरणों की सूचना करने के पीछे पैदल तीर्थ करके सब पापों से मुक्त होकर वेदान्त के ज्ञान में प्राप्त होने का कथन २ प्रत्येक वर्ष में महारावराजा रामसिंह के दान नियत करने का विवेचन ३ अठारह सौ निवासी के दुर्भिक्ष में रामसिंह की उदारता के वर्णन का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ तिहत्तर ३७३ मयूख हुए ॥

३ हाडाओं के वंश के राजा ने ४ आपदा प्राप्त हुए मनुष्यों को निबाहे ॥ १ ॥

भूपति बिक्रम१ भोज२की, पद्धति लग्गि पवित्र ॥
इहि दुभिच्छ महि मंडियो, चाहुवान जस चित्र ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

नभ नव बसु ससि १८९० निपत सुखद लग्गत सुकाल सक
बारिद अभिमत बरसि दरसि आसार महोदक ॥
औषधि गन अन्नादि बिबिध निपजे सीमा बढि ॥
कर्षुक कुल मन मुदित उदित कृषि ताव चाव चढि ॥
बहु बहुरि देस उज्जट बसे प्रान बारि बुंदीस पर ॥
निज सत्रु१आदि मंडल नृपहु पढन लगे नत नुति प्रसर ।३।
बंदी इक१ तिहिं बेर सहर बुंदी पत्तो सजि ॥
सावन५ लग्गत समय भ्रमत अतिसीम दर्प भजि ॥
बाम मग्ग सठ बहत रहत रत पंच५मकारन ॥
तुलसी१ मालहिं तराजि रुद्र अक्ख२हिं करि धारन ॥
नैंकन छिपाइ बरतैं निलज स्वपचादिक सब कृत असन ॥
स्वपचीहु गम्य जाके सुरत दुरतन गज दस्सन दंसन ॥ ४ ॥
चंडबाद कवि चंड इहां प्रभुके अनुकंपित ॥
तिनप्रति मुरि धावयें सचिव मोहन अनरुपा इत ॥
भनि सहाय वह भट्ट खुल्लि बुंदिय रुचि रक्खिय ॥

---

१ मार्ग २ दुर्भिक्ष को मिटाकर ॥ २ ॥ ३ महात्मा मेघ ने अभीष्ट (वांछायोग्य) वर्षा करके मेघधारा दिखाई ४ नहां खेती का उत्साह बढा ५ नम्र होकर स्तुति का विस्तार पढने लगे ॥ ३ ॥ उस समय एक ६ भाट ७ रुद्राक्ष पहनकर ८ भंगी आदि का किया हुआ भोजन खाता था ९ जिसके मैथुन करने में भंगिन भी जाने योग्य थी १० हाथी के दांतों के समान उसके पाप छिपे नहीं थे (हाथी के दांत किसी प्रकार छिपते नहीं हैं) ॥ ४ ॥ ११ रावराजा रामसिंह की कृपा में भयंकर शास्त्रार्थ करनेवाले, अथवा शास्त्रार्थ करने में भयंकर इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान थे जिनसे बुंदी के सचिव १२ मोहनराम धायभाई ने क्रोध किया

अप्प सचिव अवलंब भयो प्रभुकवि *परपक्खिय ॥
करि निज सु भट्ट दै छन्न कछु अधिपति प्रति किन्नीअरज
आयु प्रवीन कवि भट्ट इक गुनकी जो कहहिं गरज ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि चंड आदिक सदा, प्रचुर रहैं प्रभु पास॥
तिन सबसों यह अधिकतम, बंदी स्वगुन बिलास ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिं मोहन भनिय भट्ट यह अद्वितीय भव ॥
रामचंद्र अभिधान बाद बादन बिजयी हुव ॥
तिन दिवसन कवि तात स्वीय प्रभुको लहि सासन ॥
किय भारत उद्योग५पर्व नरभाखा भासन ॥
कवि तत्थ एह संधा करिय सुर१ नर२ बानी सब्दमय ॥
इम अर्थ१ विपुल२ अच्छर१अलप२जुहि आनैं सुहि लै बिजय
सुरबानिय१ भव सब्द बिदित जे पुनि नर बानिय२॥
इह द्विविधहि उद्योग५पर्व अंतर सब आनिय ॥
पंच५ अनुष्टुप प्रमित अर्थ ऐंचिय इक१ अंतर ॥
संधा लिय तहँ सुकवि दिपत जस पूरि दिगंतर ॥
बहु१अर्थ२अलप१अच्छर२विहित जो बिरचैं कहुँ अन्य जन॥

---

*आपके कवि चंडीदानका शत्रु हुआ, उस भाटको अपना करके मोहनराम ने रावराजा रामसिंह से अरज की ॥५॥ चंडीदान आदि श्रेष्ठ कवि आपके पास१ बहुत रहते हैं॥६॥ मोहन नामक धायभाईने राजासे कहा२शास्त्रार्थ करनेवालों से३सूर्यमल्लके पिताने रावराजा रामसिंहकी आज्ञालेकर, उनमें कवि चंडीदान ने यह प्रतिज्ञा की कि४संस्कृत और देश भाषाके शब्दोंमें इसप्रकार थोड़े अक्षरों में बहुत अर्थ लावे वही मुझसे विजय पा सकता है ॥७॥५संस्कृतमें उत्पन्न हुए ६ महाभारत उद्योग पर्व के पांच पांच अनुष्टुप श्लोकों का अर्थ खैंचकर एक एक छंद में लाये वहां चंडीदानने ७यह प्रतिज्ञाली ८उचित अथवा रचकर

तो खुल्लि पाय टुंड्डर[1]तजौं ध्रुवन वजौं[2] अव काव्यधन ॥८॥
करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय[1] जस[2]अधिकारिय॥
अर्जुन[3] शृंखल अग्ग द्विजन भोजन हितदेहैं ॥
जयपट्टहु[4] लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गेहैं ॥
यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
निर्भयनियोग[5] प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख सुखजियत९
बंदी इक[1] व्रजलाल[1] कृष्णधात्रेय आढ्य[6] किय ॥
अधिराजहिं करि अरज ग्राम[1] गौरव[2] गज[3] अप्पिय ॥
सचिव कृष्ण तनु[7] तजत अग्ग सहि साचि खग्ग उर ॥
सुत तस मोहन सचिव धरयो अधिकार राज्य धुर ॥
प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानें कवि चंडादि[9] जन ॥
तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन १०
तब अक्खिय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उपह्वरं[10] ॥
चित्तं[11] बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
कविअनेक भुवचक्र परत पैर जुरत[12] परिच्छा ॥
संसदं[13] वानिय समर सकल उघरैं धृत सिच्छा ॥
भारती[14] जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

---

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं धजूंगा ॥८॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ९ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने छाती में ८ तिरछी तरवार सहकर.७ शरीर छोड़ा तब ९ चंडीदान आदि मनुष्यों को ॥१०॥ १०एकान्त में अरज की ११चंदीदान आश्चर्य योग्य बढता है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२शत्रु-आकर जुड़े जब परीक्षा होती है १३सभा में वचन के युद्ध में १४सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

मिलवाय हमहिं यह भेट अब* बिदित निवेदहु समय बसि।१९।

दोहा—सुनि संभर[1] तिन्ह संग लै, जवनेंईस[2] ढिग जाय ॥
मिलवाये दस्तूर[3] मित, क्रम सलाम करवाय ॥ २० ॥
सीसोदन अक्खी सबहि, नुति[4] जु कहाई रान ॥
आलम अंगीकार किय, नुति रु भेट सनिदान[5] ॥ २१ ॥
बुंदियपति करि सिक्ख तब, लै तिन्ह डेरन आय ॥
नृप कूरम[6] रट्ठोरँहू[7], लीन्हे उभय बुलाय ॥ २२ ॥
अजितसिंह जयसिंहकौं, इक संभर अवलंब[8] ॥
पुच्छिय मंत्र नरेसप्रति[9], कहिकहि कित्ति कदंब[10] ॥ २३ ॥

[षट्पात्]

बंदहु[11] बत्त बुंदीस आय[12] रुकत हम आतुर[13] ॥
लियउ कुप्पि जवनेस छिन्नि आमेर जोधपुर ॥
नहिं निबाहि अब सकत बिभव गज बाजि बिमन[14] अति ॥
स्रोत सफर[15] जिम साह गहत दिनदिन उलटी गति ॥
सुनि यह नरेस[16] अक्खिय उचित बासर[17] कछु धीरज[18] बहहु ॥
सेवन बढाय कछु साहको गत मही सु निजनिज गहहु ।२४।
बुंदियपतिको हुक्म साह दल[19] माँहिं सबनसिर ॥
सीसोदन यह पिक्खि[20] जानि जामिप[21] जग जाहिर ॥
रान सुभट[22] राउत्त देवसिंहह बेघम पति ॥

---

* प्रसिद्ध॥१९॥१बुधसिंह२बादशाह के पास३रीति के अनुसार॥२०॥४नम्रता वा स्तुति५कारण सहित अर्थात् राणाओं ने पहिले नम्रता और भेट कभी नहीं की थी इसकारण से॥२१॥६आमेर का राजा कछवाहा जयसिंह७जोधपुर के राजा राठोड़ अजीतसिंह का ॥ २२ ॥ बुधसिंह का ही८आधार था९बुधसिंह से १० कीर्ति का समूह ॥ २३ ॥ ११ कहो १२ हम आमद रुकने से १३ पीड़ित हैं १४ उदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहतेहुए जल में मच्छ उलटा ही जाता है] १६ बुधसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो ॥ २४ ॥ १९ बादशाह की सेना में २० देखकर २१ बहिनोई २२ महाराना का उमराव देवसिंह

कवि चंड रचत संधा कुसल करिये विभव विलास किन११
प्रभु अक्खिय जहँ प्रीति सो न मेटहु कूटाश्रय॥
सुहृद्भाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय॥
पुनि असहन यह पाप महत विस्वासघात मय॥
उज्झहु स्वमति उपाय एह विधि वलित टारि रय॥
तत्थ्य१ रु अतत्थ्य२ न दुरैं तदपि जिहिं जैसो कहिदेत जग॥
दुख सहत चिंति करिकैं हुँरव मिलित द्रोह यह घोरमग१२
यातैं कपट उपाय कवि न कोऊ आकारहु॥
बहु आवत बिनु जतन विविध पावत वसु वारहु॥
जो संभव बनिजाइ बिक्खिलैहैं वानी बल॥
पर दुख चिंतन पाप त्वरित लैजाइ रसातल॥
सुनि यह निदेस मोहन सचिव बिन्नति किय सब स्वामिवस
प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सब गम्य रहिहैं सरस॥१३॥
आवन लगि तिन अहन प्रचुर भूसुर१पौरानिक२॥
मागध३ बंदिय४ सुमति बहुत बिरचहिं कवि वानिक॥
पुब्ब कथित क्रम पाइ घरन जावत लै धन घन॥
तिहिं अनेहँ धात्रेय पाप प्रेरिय कपटीपन॥
व्रजलाल भट्ट वह बुल्लिकैं कुटिल उँपव्हर मंत्र किय॥
बुन्दिय अधीन वंदिन बहुरि लै त्रिच सम्मति सबन लिय॥१४॥

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड़ दो रीति से ३ टेढे मार्ग के वेग को ४ सत्य झूठ नहीं छिपता ५ गीदड़पन करके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुलाना ७धन का समूह पाने हैं ॥ १३ ॥ ८ उन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० चारण ११ बड़वाभाट १२ स्तुति करनेवाले भाट १३ उस समय में धायभाई मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त) सलाह की ॥ १४ ॥

लंगर पय घृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
लै ढिग वह ब्रजलाल चविय कवि चंड चंडतर ॥
या कविको उतकर्ष सह्यो नन जात सदस्यन ॥
हमहु रुद्ध मुख होहिं बनत उत्तर कहुँ वस्यन ॥
कविचंड मान निर्मूल करि अप्पन रहहिं अभीत इम॥
तस अर्द्ध कविहु पावहिं ततो जयी करहिं निज पच्छ जिम॥१५॥
भन्यों सचिव सुनि भट्ट वदिय तुमरे सासन वस ॥
रामचन्द्र१ अभिधान इक्क१ वंदिय जाहिर जस ॥
वृत्ति नाँहिं बाहुज२१न पज्ज४१२ वर्द्धकि तस पालक ॥
पै सुनियत कवि निपुन व्यूह उड्डन उत्तालक ॥
जय आस प्रथम१ विनुही जतन पच्छ२न तो तावकँ प्रबल
इक१तंतु१चटर्क२तोरैं अलप मिलिबहु१गज२मोरैं मिसल१६
स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तब ॥
व्याह व्याह बाहुजन अटन ब्रजलाल मिल्यो अब ॥
करि दुर२ मंत्र१ साकूत२ पिहित समझाइ प्रयोजन३ ॥
सो तिहिं आवन सज्ज बिरचि आयो गृह अप्पन ॥
सक्क गगन अंक वसु ससि समय १८९० ॥
सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

१ चंडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ बड़प्पन ३ सभासदों से सहा नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि तुमारे हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४क्षत्रियों की वृत्ति नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से समूह को उडाने वाला है ७तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ सकता है और बहुत तंतु मिलकर हाथी को रोकदेते हैं ॥ १६ ॥ ९क्षत्रियों के विवाह विवाह में फिरते हुए ब्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० अभिप्राय सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर ब्रजलाल अपने घर आगया ॥

श्रीनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय
ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपु
राप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गा
रनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालाशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽ
ज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरिसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत
भाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽ
प्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्ण
वरामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसा
दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवरघुवंशीयराणोत्तशाहपुराधिपराजो
पटाङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरघुवंशीयगु
हिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न
महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म
मूर्ति वीर उदार सोदावारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पो
लपात सुयोग्यपिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सणगारबाई नाम माता
से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए
आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवा
ले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पंडित कवि अपने मामा कवि
राज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से
युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य
सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघु
वंशी राणाउत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और
आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजाके वंशवाले मेवाड़ देश
के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी समृद्धिवाले महाराणा
सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा,
और सूर्यकुल के भूषण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर

र्म, भानुवंशभूषण राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुरेशराजराजेश्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतिवदानमानस्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्याको सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि बारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहँ लग कविता आहि ॥
तापर टीका विस्तरी, संधाको हठ साहि ॥ १ ॥
अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारीदान ॥
ताकी टीका तजतुहैं, देखत किने निदान ॥ २ ॥
जे निजबुद्धि विवेकजुत, हैं अधुना निजगेह ॥
तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
तजनेहीके व्यङ्गतैं, सुकवि समुभिहैं सार ॥
कुत्सितवचन प्रयोगको, विरचत नहिँ व्यापार ॥ ४ ॥
को उपकारी ग्रन्थकारि, परउपकार प्रचार ॥
अन्यहि हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वंशभास्कर सो,
छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैं दिखायो छाम ॥
बुद्धिबात बेगतैं विडारि मेघ मंडलकों,
निर्मल दिखाय दीनों रचि टीका अभिराम ॥
कृति कवि कोकनकों दापन अमोघ सुख,
ज्ञापन करायो हिय कंज विकसैबो ताम॥
कूरन कुतर्कि घूक मूक कारि कृष्णकवि ॥
जीवन सफल जान्यों कारि उपकारी काम ॥ ६ ॥
रस व्योम ग्रह महि१९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
शाहपुर भूपकों सुहायो सुखमा पसार ॥
मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
फतैसिंहहूतैं पायो दान मान मीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनैं बढायो ज्यूँहीं,
चर्ननमें चामीँकर भूषनको धरि भार ॥
इभ सर नंद इन्दु१९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
परन बनाय टीका कीन्हों उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

बावन वर्ष बिताय बराबर, सम्मदमैं न लह्योकहुँ अन्तर ॥
सासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रह्यो सु अमंथर ॥
आयस मात पिता सिर आनिकैं, पुंगव पंथ निबाह्यो परंपर ॥
संसृतिभार सबैं तजिहों रु, अबैं भजिहों करतार निरंतर ॥८॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सद्धिहों, पर उपकार पवित्र ॥
जाकों पुराय महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिँ कूप ॥ १० ॥

उत्तरपीठिका

सूर्यमल्लकी कविताके लोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह लोभ यहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वयं इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी हस्ताक्षेप नहीं किया है यहांतक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ीहुई मयूख की इतिश्रियां हमने बनाई हैं वह भी आगे की कवितामें बनाना उचित नहीं समझा किंतु जैसा कुछ लिखा हुआ मिला वैसाही छपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु वह सूर्यमल्ल से नहीं होसका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रंथकर्ताके अभिप्रायको सफल करदेना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर में पक्षाघात, मधुप्रमेह आदि रोगों के होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही; इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्य था परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध होचुके हैं जिनका फिर यहां लिखाजाना केवल पिष्टपेषण है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे संतोष होजाने पर यह विचार छोडकर यहीं पर समाप्ति कर दी गई है. इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्यों से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका सङ्केत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महारावराजा रामसिंहका विवाह होना और बुंदीके धायभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहां दिखा दिया है

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महारावराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियां उस समय विद्यमानथीं उनको भी एक एक ग्राम उनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया. अब हमारे पाठकों से सविनय प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी रुग्णावस्था में बनने के कारण जहां कहीं अर्थदोष मिलै उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें. किमधिकं विज्ञेष्वलम् ॥

शाहपुरा के पोलपात सोदाबारहठ शाखा के चारण कृष्णसिंह ने
इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंच५न अखिल, नरपति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपति ॥
बाहुल८ वदि तिथि तीज३ सोमवासर२ साहव प्रति ॥
रजीडंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारलिस रिचारडिस तिनको आसिक॥
कलकत्त नगर स्वामी सबन तहँ सु लार्ड प्रति पत्न तिम ॥
लिखि अष्ट८कलम जग जस रहत अधिपहिँ भेजिय छिप्र इम॥३॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाँहिँ धर्म१गो२ प्रान हान१॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक सलामी न तहँ हान२॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागभ्झाग रत रहत जोहि॥
लखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥५॥
पुनि दुग्ग१ थान२ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सरल सिद्ध
बलि चक्र माँहिँ जो सस्त्रबंध, सो नाँहिँ रोक पावै सु संध४ ॥६॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरैं जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरैं जो हम जिहिँ थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय॥
बनवावैं हम तापैंहि बात, रोधक नह बुल्लैं दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयनर नालि, आवै इम भोलिन नालि नालि॥

तस सलक सलामी नित्य माग, जाकोहु हुक्कम व्है सर्व जाग ॥९॥
कछाँदि वस्तु सब प्रति मुकाम, दल मामकतैं लै सुविधि दाम ॥
दृढ चित्त अग्ग व्है थानदार, सबकों सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥
खत बीच अष्ट८ कलमां लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥
अर्पित किय साहब हत्थ ऐन, लैं त्वरित बंचि दल सदरलैन११
प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥
जो क्रम सु सनातन तिन जवाव, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब१२
तिनदिवस जहाँ व्यवहार तत्थ, आसय दृढ भेजिय तहँ सु अत्थ॥
इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्यादि श्राद्ध सास्त्रानुसार।१३
श्रीरंग सिष्टि लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥
सुद्धांत सहित पुनि किय प्रयान,दिय रंक रु भूसुर अमित दान१४
पहु लियउ भीम पट्टप कुमार, तिम कियउ कुमर अर्जुन तयार ॥
गोवर्धन तदनुज गुन गरीय, बचना सु सिष्टि भूवर बरीय ॥ १५ ॥
पथि माता पूजन करि प्रजेस, बलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस
सित२ पौष द्वितीयां२ऽऽगिरस५ वार, नाड़ी त्रय३ मध्यहि रजनि
कार ॥ १६ ॥
कोटेस राम प्रति अब्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥
सो पत्र सहित लै रत्नलाल, आइउ पंचोली तहँ उताल ॥ १७ ॥
घटिका सब वित्तत जब सु घस्र, हाजरि बितर्द हुव अष्ट८ अस्र ॥
नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल
पाय ॥ १८ ॥
आविक्क पुनि अंबर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि॥
अरु कहिय जयश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप॥१९॥
पथि संग रहन यात्रा प्रसंग, तसमात चित्त ममहै उमंग ॥

सो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयया सह ताकों सीख दिन्न
सित१ पोष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगंठि अर्जुन कुमार ॥
तदनंतर तहँ संबंध ताहि, मंदेस झल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥
हिंदूमल्ल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तिम पंच५ लांगली१ क्रमक२।५ त्योंहिं२, सिरपेच १ जटित इक्क
पुनि सुयोंहिं ॥ २२ ॥
तिम दियउ२ इक्क१ उरसूत्रिकाहि २, मौक्तिकय कर्णिका ३ हुअ
उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५।१ इक हय६।२
सुरीति ॥ २३ ॥
इत्यादिक दुव२ लै आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्टिका६ पुहवि सक्क, अंबक२ सह घटिका रहत
अक्क ॥ २४ ॥
रचि सभा चोक मानिक रसेस, आहूत सर्व उमरा असेस ॥
दे०पा१दि सिंह दुर्गापुरेस, जय१ विजय२ सिंह आइउ जयेस ।२५।
सचिवा१दि ऊरुजा२ सर्व आइ, प्राघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥
अरु अप्प कुमर अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि।२६।
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमर अत्थ
प्राघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमर अर्जुन हिताय२७
भरि कियउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महुर नजर करि तिन
उताल ॥
पूर्वोक्त जवाहर बस्तु पेस, सब कियउ भूप हिंत तहँ असेस॥२८॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कु
सल आखि ॥

संभर प्रति करजोरि बिहित अक्खिय यह बिन्नति ॥
करि नेह गेह पावन करहु मंजु बिवाहहु जामि मम ॥
सुनि यह नरेस स्वीकार किय सिक्ख बिसंगिय साह सम ॥

[दोहा]

दस बासरकी सिक्ख दिय, साह बिदित सनमान ॥
अजितसिंह जयसिंहसौं, तब अक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥
बेधम व्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥
मन न गिनहु कुमहर महर, उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥

[षट्पात]

सुनि कूरम रट्ठोर दुहुन अक्खिय सनेह सधि ॥
साह कितवके संग अबहु जैहैं रेवाऽवधि ॥
इहिं अंतर कछु होय ततो रहिहैं संगति सर ॥
नहिंतो ऐहैं सुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥
यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमकौं अवहि ॥
जोलौं बिबाहि आऊँ सजव तोलौं पुनि रक्खहु हितहि॥२८॥

[दोहा]

इम प्रबोधि ढुंढिय अधिप, मन जय जुब्बन मत्त ॥
दसउरतैं दरकुंच करि, पुर बेधम द्रुत पत्त ॥ २९ ॥
पुत्ती अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अभिधान ॥
देवभ्रातै सविनय दई, बुन्दहिं बिहित बिधान ॥ ३० ॥
बान तक्क मुनि इक्क१७६५सक, पुनि माधव मास ॥

१सुंदर २ बहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (यहां 'सस' शब्द 'से' का वाचक है) ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २६ ॥ ६ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओ ॥ २७ ॥ ८ छली [ठग] के साथ ९ नर्मदा नदी पर्यन्त जावेंगे १० साथ चल कर ११ वेग सहित ॥२८॥ १२समझाकर १३ जाजव के युद्ध की जय और जोबन से मन में मस्त होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम१७ भाई देवसिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

उग्गत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामंतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
धोउर पुरेस महिपाल धीर, वलि सम्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
जो उपवन भट्टजि असजाइ,अति प्रीति मिलि रु पटगृह सुआइ३०
पुनि रहत वेद४ नाड़ी पतंग, कापरनि कांत आये उमंग ॥
वलि वेल विलासहिँ देवमाँहिँ,अति स्वच्छ जलासय आवआँहिँ३१
सामंत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
मिलि बहुरि भुजांतर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
क पाइ ॥ ३२ ॥
संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
कहि इम रु तास दसतूरकिन्न,सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
आ धवल तप११पत्तति१जीव५आत, हुव लाल नयन२विश्रामदात
रहि तत्थ द्वितीया२ सुक्र६वार, किय बहुरा जीवक कारदार ॥३४॥
तिम अंकित मुद्रा नाम तास, प्रभु दियउ निरंतर रहन पास ॥
हुव कुच्च तृतीया३सौरि७होत, इढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
वदि वासर पंचमि५ चंद्र वत्त, साहव रिचारडिस अर स पत्त॥
प्रेषित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजंट गढइंद्र आइ ॥३६॥
करि साम कोटरिन तत्थ काज, रहतहि तस खवरि सु आत राज
प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुव राणी विकटोरियाहुलास३७
सुनि पत्त कियउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम विदारि
उग्गत बुध४ सत्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहव भनंत३८
दंत१ नंत२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति सं-
गहोइ ॥
अरु दुग्ग१थान२ तहँ पंथ आत, जँहँ व्है असत्त्र सह सेन जात३९
साहव न जात जिम अप्प सत्थ, इम सुनि मुकाम क्रम कारि न

अत्थ ॥ ४० ॥

एकादसि११बदि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध३ पात
श्रीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१
प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

आंत्रद अधीस मुहुकम्म उत्त, आव्हान राम प्रति दियउ छुत्त ॥
हाजरि हुव सत्त७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अभ्युत्थान पाइ४२
किय मुजरा तिहिँ अति भविक पात, दृढ अप्प पानि सुहृहि दिखात
किय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुव २ नाड़ी राखि रु सीख
दिन्न ॥ ४३ ॥

सुदि होत प्रतिपद१ सुक्र६ वार, ॥
, तब कियउ पत्तानुरूप ॥ ४४ ॥

सित सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्याप्टत चतुष्क ४ राखिय
विरुपात ॥

इक्क १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिँ, तिम राखि पठान जु जमित
खाँहिँ ॥ ४५ ॥

बलि पन्नाजुतलालहिँ भुवाल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥
थिरराज चतुष्क ४ न अत्थ अप्पि, महिपाल लेख त्रिंसति ३०
समप्पि ॥ ४६ ॥

क्रमतैं जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्व वच आलबाल ॥
रजवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिँ अत्र॥ ४७ ॥
जो होइ आसु तो झटिति देय, न त्वरित जो सु मम प्रतिहि नेय
अरु स्तैयो १ व्याप्टत २ अन्य आइ, करि दंड इतर बिधि जुत
कराइ२ ॥ ४८ ॥

जन स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
तासैं प्रमान डारैं सु तत्थ, पूरब स्वदंड करि तास पत्थ्य३ ॥४९॥

मेवारज मैंनें जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥
साहव अजंटतैं कहि सु लेय४, विधिजुत इत्यादिक तव विधेय५०
इम करत प्रबंध सु राज्य अंग, महिपाल लगत फग्गुन १२ उमंग
रविवार१तृतीया१रमत फग्ग, स्थलकमल गुलालादिक समग्ग५१
इम रमत फग्ग पुरिग्राम१५सु आत,प्रभु चलत सत्थ मार्गीन पात॥
मधु१ लगत मास पत्ताति१पतंग१, साहव रिचारिडिस अर उमंग५२
तंग१ मंग२ अंत्यानुमासः ॥ १ ॥
पट्टनितैं साहव भल्ल केर, मग बैठि डाक हय नां अवेर ॥
आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥
तस मिलन अत्थ प्रभु तहँ पधारि, साहव उदंत यात्रिक सु धारि॥
साहव सु उभय२ लै अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग्ग अत्थ५४
तहँ छत्रमहल्ल विच रंग ताहि, अक्खत कवि आह्वय तास आहि
कौसुंभि१ रु कुंकुम२नीर कारि, वर्णक३अवीर४तोखीर५पारि५५
पत्तंग६नीर पुनि करि रु स्फीत, पिचकारिन साहव किय पुनीत ॥
साहव अजंट प्रभुपैं सु वारि, दृढ प्रीति वहुरि दिय तवहि डारि५६
प्रभु अप्प डारि पुनि सहँस १००० धार, किय वर्णक जुत पट्टप कुमार ॥
करिफग्ग अजंटहि सीखदिन्न,अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७
आत्मीय शिविर साहव उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥
तस सम्मुह ड्योढी अप्प जाइ, आनंदित तासह माँहिं आइ५८॥
क्रमतैं जु वैठि पुनि तहँ कृपाल, किय सार्द्ध मुहूर्त२ रहस्यकाल॥
बुंदी१ अरु यात्रा करि प्रबंध, तिन्ह अतर१पान२ दे पुनि सुसंध५१
इम सीख दे रु मग कुसल आखि, तँहँ अप्प नयन२ विश्राम राखि
उग्गत रवि षष्ठी६कविढ्गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०
किय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥
नवमी९मुकाम किय पुर पडान, दसमी१०अंगारक३करि निदान६१
डुंगरमलारने किय मुकाम, बाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥
पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२
पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात, पीलोदै प्रभु किय सेन पात
हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥
बलदेव१ बनिक दीवान ख्यात, पुनि प्रियादास२ बाड़व उम्हात ॥
अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुस्साही रक्तीगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥
सचिवा१दि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि बिविध बिधि जुत कराइ
सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्कान्न मंथनी तास३०सत्थ६५
इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रत्ति प्रात पहु हुकम पाइ ॥
हाजरि हुव पटग्रह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६
अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न
अरु कहिय आगमन इह स्वकीय,गृह करहु पवित्रहि अस्मदीय६७
कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सतपंच५०० रौप्य पुनि व्है प्रसन्न, ॥
तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्यौं कंडोल च्यारि४ फल कुसुम२।६८
कूष्मांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिबल्लिपत्र सत चउ४००अनंद
महमानिकरहु स्वीकार एह,सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९
करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखिं ॥
दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, बिश्राम कियउ सूरैट जाइ ॥ ७० ॥
पन्नति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया २ दिन॥
मिलान ॥
चूड़ामनि जट्टहि बंस जात, लैवाल मुकुंदाऽऽतित्थ्य आत ॥७१॥
रचि सिबिर सभा लिय तिहिं बुलाइ, हाजरि हुव तहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सलाम,दुव२सचिवहेठ्ठ बैठि रु सुग्राम७२
किय अरज मुकुंदहि फौंजदार, बलवंत कियउ मालुम जुहार ॥
अरु पंचसतक५०० नाणकसु एह,स्वीकारकरहु प्रभु करि सनेह७३
विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतिथ्य रौप्य आदिक सु राखि ॥
व्यवहार भरतपुर करि सुवत्त, दुव२घट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त७४
पुनि सदरलैन साहव मिलाप, भेजिय हमीदखाँ सदल आप ॥
तिहिं जाय पत्र दिय करि सलाम, रुहि एह मिलन प्रभु चउ४ मुकाम ॥ ७५ ॥
पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
पुनि होत चतुर्थी४ दिन प्रभात, खांअंतहमीयद छदन आत ॥७६॥
तामाँहिं लेख पंचमि५ मिलाप, अरु सदरलैन ह्वै मुद अमाप ॥
कहि रामसिंह राजाधिराज, दृढचित्त रु है वार्द्धक दराज ॥७७॥
तातैं हम चाहत मिलन तूर्ण, पुनि चहत भरतपुर ईस पूर्ण ॥
आवत हम सम्मुह उभय तत्थ,सुनि राम अरज करिं कुचसत्थ७८

॥ दोहा ॥

पंचमि५ दिन करि कुच प्रभु, वैर मुकामन आत ॥
नगर कनावरतैं निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
उहां भरतपुर ईसके, वारीदारन आइ ॥
रंजित किन्न बिछात सम, मन वहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥

॥ षट्पात् ॥

सदरलैन साहव१ रु भूप वलवंत२ भरतपुर ॥
वाजी४ रथ थित होइ उभय२ सम्मुह उमंगि उर ॥
तीन३ कोस लग आइ वहुरि ठड्डे विछात पर ॥
तव जीवन वहुरा रु हमिदखां तह वकील तर ॥

चहुवान तरनि सन्निधि त्वरित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वे२ बिछात ठठ्ठे उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥

(दोहा)

यहै अरज सुनतहि अधिप, तहां हय स्थित आत ॥
अस्त्र बिछायतके उपरि, हुलसित तुरग बिहात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक१ भरत पुरेसहू, लिन्नों सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक१, आनन छुपस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥८४॥

॥ षट्पात् ॥

उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक्क लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥
गाइय१ ठाइय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
खंध जुट्ट मिलि मुदित हुव२हि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस१ काल२ बर ॥
जेट्टस केर चउ४ तुरग रथ बैठे तीन३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन९ ॥८५॥
सिरैरहि रु प्रभु अप्प१ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अग्ग जय१ बिजय२सिंह आरुहि तुरंग बर ॥
इम त्रय३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्पंदन चढि रु वे सु हुव२ चलिय बैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित॥
दसपंच१५ फैर उततैं चलत इत नालिय चालिय सहित ॥८६
रित१हित२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हुव हाजरि बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्ठित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥
सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पक्वान्न चक्र सब ॥
यह सुनि रु दियजु हुक्म सचिव आवैं मामक जब ॥
मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिवाइय स्वच्छ मन॥
आमोद तत्थ इम राखि पुनि आये व्याप्टत सठ सदन॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

षष्ठी६ दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय
तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु,कियउ अरज प्रभुतैं मुदपाइरु८८
प्रभु बलवंत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिं उत आये ॥
समय प्रजेस हार्द जो पाऊं, सो उनकौं मैं जाइ सुनाऊं ॥ ८९ ॥
सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाड़ी नयन२ रहैं दिनकर तब॥
इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साहब मिलन प्रमा-
नहु ॥ ९० ॥
इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवंत सुनायो ॥
स्वनृप जाइ तिन वृतानेवेदिय, तब सभ्य रु संसद तयार किय९१
पट्टप भीम २०३।१ कुमार जुत्त पुनि, गोवर्द्धन कुमरहिं प्रभु लिय
चुनि ॥
सेना सर्ब चार भट सारे, प्रभु नवलक्खा बाग पधारे ॥ ९२ ॥
प्रथम जात बलवंत गेहपट, सम्मुह बिंसति२०पैंड वे सु अट ॥
तुच्छ समय पुनिवस्त्रसदन रहि,साहब शिविर बरव्वर क्रमचहि९३
तहाँ अन्य१बलवंत२ सिधाये, रद३२पद सदरलैन समुहाऽऽये ॥
करि सँल्लाप भव्य मुद पाइउ,नृप३हि सौध संसद जहँ आइउ९४
खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम२०३।१कुमर दाच्छिन कुरसी
तहँ ॥
तदनंतर जय१ विजय१सिंह दुव२, उपवेसन गोवर्द्धन ततहुव॥९५॥

तातैं बक्र मिसल सम्मुह सन, खुरसिन लग्गिय तास सुभट जन॥
स०यहि सदरलैन साहब रहि, सन्निधि तास भरतपुर ईसहि ।९६।
समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय ॥
साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
महलनतैं सु चोक लग आये, सदाचार तीन३हिं तहँ पाये॥ ९८ ॥
प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
जब वहि सिबिर दुर दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि मुख्य सिबिर रह चाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट स०य किय ॥

जिय१ किय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत अस०यहि पाये, प्रभु तत लार्ड पलास दिखाये।१००।
तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविय नृप याको ॥
उत्तर झटिति अत्थ नहिं ऐहैं, बासर कातिक विचारिहु दैहैं॥१०१॥
अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हैं गमन किय
बाहिर सिबिर तनावहिं आइ रु, दियउ सिक्ख तिन्ह सुवच दृढाइ रु
बाजी स्यंदन चढि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुव२हि र-
क्खि रति ॥

इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस कटिबंध निवारिय।१०३।
षष्ठो६ दिन तहँ रत्ति बिहाई, सुज्जवार१ सप्तमि७ अथ पाई ॥
सत्त७ कोस व्हांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
करत कुच्च पुनि प्रभु तहँ भोजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय॥
इम बिज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय,भूप मदीयमिलन प्रभुभक्खिय१०५
पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु सामक द्रुतही पधरावैं ॥

इम सुनि अरज नियोग दयोनृप, हमरो तुम जानहु हुतहीसृप१०६
इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय संझकों पाइ रु
कर्म नित्य आदिक सब किन्नों, संसद रचन निदेसहु दिन्नों १०७
बान५ घटी रजनी पुनि बित्तत, चढि इम भूप प्रताप सु चित्तत ॥
उतरयो द्वार पटालय आइ रु,पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु१०८
इरु१ रिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
शस्त बहुरि मिलि कियउ परस्पर, बैठे इक आसन धरनीबर ॥
समय देस वृत्तांत सु जंपिय, नाड़ी इक१ उपवेसन रक्खिय१०९
दै तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, अंसुक सदन द्वार लग आवन॥
इम दै सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिबिर प्रतापपालके आसुहि११०
कियउ क्रमन प्रभु रत्ति रक्खि रति, सुभट मुख्य---सह संहति ॥
तिन्हैं तबहि आगमन रु सम्मुह, संल्लाप रु उपविष्ट आदि सुह १११
मुह१ सुह२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रथम रीति जिम कियउ धराबर, जंपिय सिक्ख अप्प तदनंतर ॥
इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार हयसही पाये ॥ ११२ ॥

॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुवत, पुनि चल्लिय मुद पाइ ॥
नयन२ घटी रजनीं रहत, हुव दाखिल स्थुल आइ ॥११३॥
अष्टमि८ दिन पुनि तहँ अधिप, राखि रु श्रम विश्राम ॥
शस्त्रादिक पूजन सकल, रंजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमी९ कुज३ वार प्रयान, दयो सु कुमेर मुकाम दिवान॥
यान१ वान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तहां बलवंत सुनाग पठाइ, जरी कुथ तास सिरी सु बनाइ ॥११५॥
सुतारन मंडित होदन साजि, पलास बहोरि सु यावनि राजि ॥

कियो तस लंच सु मानुस आइ, कर्यो सुररीकृत भाविक पाइ॥११६॥
दियो दशमी१० दिन डिग्ग सुकाम, रहे तहँ रुद्र११ तिथी प्रभु राम
तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्है किय देखन गोन दिवान११७
उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दये तिँहिँ भोन असेस बताइ ॥
बिताइ घटी बसु८हाँ क्षण देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस११८
चले पुनि द्वादसि१२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग॥
तहां इक१ गोरधनाऽह्वय सैल, मिटैं जहँ जातहि मानुस मैल ।११९।
अनंग१३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग१तुरंगम२ तत्थ१२०
सिरी१कुथ२ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादृश त्योंहि सुवाजि
महीप बहोरि सु द्रम्म पचास५०,तथासर५निष्क१रु चीर२सतास१२१
तुरंग१ बहोरि सनिष्क३हि तीन३, दये पुनि द्रम्म पचीस२५ सु दीन
वल्लापति ॥ १२२ ॥
अंबर१ पिछि रु तार खुगाहिँ, उहाँ दस१० द्रम्म दु२निष्क सु आहिँ॥
प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि अंसुक ओक प्रवेस ।१२३।
मुकाम तहां करि पुरिग्राम दीह, अगेस परिक्रमकों पुनि ईह ॥
प्रभू किय लै अवरोध प्रयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान१२४
प्रयान१ मयान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
निसीथ घटी दुव२ उप्पर जात, प्रदेसन व्हां करि डेरन घात ॥
तिथी पडिवा१बदि माधव२मास,चली सत वै किय बाहिनिबास१२५

॥ दोहा ॥

कियउ द्वितीया२ दिन क्रमन, राजराज प्रभुराम २०२।४ ॥
साहब सुनि आयो सपुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥
सुहु डिपटी अभिधा बिदित, पद रु किलट्टर पाइ ॥
मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक१ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

कुंडाउति ब्याही चतुर, बुंदियपति सविलास ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे हृष्टयवनेन्द्रराज्यदौर्बल्यमारवठक्कुराजितसिंहयोधपुरपट्टाभिषेचनं १ श्रुतमरुदेशोदन्तक्रुद्धयवनेन्द्राजमामित्रत्वापराधहृतामेरकोटानरउरदतियाराज्ययोधपुरप्रयाणं २ हृतयोधपुरालमशाहदक्षिणदेशगमनं सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५५ ॥

[षट्पात्]

चोवन५४गढ जब साह दये आजम रन जित्तत ॥
कोटाहू तिन माँहिँ नृपहिँ दिन्नौं अरिवित्तत ॥
जय उद्धत चहुवान नाँहिँ सम विसम बिचारयो ॥
आतन खुद लरि लैन प्रथम दलँ उतहि हकाँरयो ॥
कँग्गर पठाय लिखि अप्प कर बेघम सनँ बुंदिय नगर ॥
करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मंत्रिय सम्मति समर॥१॥
यह कँग्गर हुत बंचि मंत मंडिय इत बुंदिय ॥
जोधराज परधान वनिँक बयहुह प्रपंचिय ॥
धावँ गंगाराम सूर सुभटन इक्कत करि ॥
कोटा उप्पर कटक बेग मंडिय बीरन बरि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बादशाही का निर्बल देख कर मारवाड़ के उमरावों का अजितसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड़ की खबर सुनने से बादशाह का क्रोधित होकर आजम के साथी होने के दोष से आमेर, कोटा, नरउर, दतिया इन चारों राज्यों को खालसै करके जोधपुर पर चढाई करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचपन २५५ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह को २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ भेजी ५ कागज[पत्र] ६ अपने हाथ से ७से ८युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० बनियां ११धाऊ

मिलत अनामय पुच्छि करि, सत्रह१७ नालिन फेर ॥
साहब सह आये उमँगि, वस्त्रसदन वह नैर ॥ १२८ ॥
पुनि वृंदावन नैर पहु, मातामही मिलाप ॥
कियो तुरग आरुहि क्रमन, अल्प सत्थ करि आप ॥ १२९ ॥
जाइ अरज सुभ करि जहां, प्रसूमही पय वंदि ॥
आधघरी रहि सिक्ख करि, आये सिबिर अनंदि ॥ १३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥

॥ गीर्वाणभाषा अनुष्टुप् ॥

राधाकृष्णतृतीयायां कृत्वा श्राद्धादिकं नृपः ॥
पद्भ्यां विश्रामघट्टाय पञ्चम्यां सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीतिः ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्याख्यमहाराजसंयुतस्तत्र ॥
आचम्य षट्सुवर्णानुपायनीकृत्य तस्थिवान् घटिकाम् ॥२॥

॥ उपजातिः॥

विलोक्य नीराजनमत्र घट्टे नारायणं चापि गतश्रमाख्यम् ॥
नत्वोपहृत्यं द्रविणं यथार्हं भूपो निवासं स्वमलंचकार ॥ ३ ॥

(*) राजा रामसिंह वैशाख वदि तीज को श्राद्ध आदि करके पंचमी के दिन पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आचमन करके सुवर्ण की छः मोहर भेट करके घड़ीभर बैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग विधि

(*) हमारे नियमानुसार टीका की समाप्ति ऊपर करदी गई वहीं पर्यन्त हमारी रचीहुई टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि रावराजा रामसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सावकाश के समय पहिले बना रक्खा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रची कविता में मिला दिया इसकारण सामान्य पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिखदिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टीका के बाहर जानो इससे आगे की कविता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रचीहुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तम्यामुषसि परिक्रमाय पद्भ्यामायस्यन् ददद्थ तत्र तत्र वित्तम्॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघट्टं संपश्यन्नथ बलदेवघट्टमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघट्टं घट्टं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष
तीर्थम् ॥
रङ्गावनी तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वातपे स्वशिबिरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥
आचारतः प्राप्तमुदस्तविघ्नमकारयद्भूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥
अश्वे स्थितोऽष्ट्यष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाभ्याम् ॥
विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसद्म पितृबन्धनभूमिम् ॥
भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ सप्तमी के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहां तहां द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहांसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहांसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पासवानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ठ (कोढ़) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढकर गया और वहां से पैदल होकर बलभद्र कुंड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के वस्त्र धोने के कुंड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और वनखंडी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्यां देवीमगमददसीयां च सरसीं,
सरस्वत्याः कुण्डं तदनु च तदीयं झरमपि ॥
शिवं गोकर्णेशं तदनु गणपं दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेधाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजातिः ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघट्टानथ सामघट्टम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघट्टे हनूमन्तमथैकदन्तम्॥ १० ॥

उपजातिः

ततो द्वारकाधीशमालोक्य देवं पुनः प्राप विश्रान्तिघट्टं क्षितीशः॥
परिक्रान्तिमेतां यथार्हं विधाय निकेतं निजं भूषयामास भूपः॥११।

उपजातिः

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्यामाकारणां माथुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्तर्कालिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्या प्राप्य विश्रान्तिघट्टं तत्र स्नात्वा सावरोधः क्षितीशः ॥
स्तुत्वा भानोर्नन्दिनीं भक्तियुक्तः प्रादाद्दानं शास्त्ररीत्या द्विजेभ्यः१३

वहां से महाविद्या देवी के दर्शन करके अदसिया नामक सरोवर पर, गया, वहां से सरस्वती कुंड और सरस्वती कुंड के झरने को भी देखा तिस पीछे गोकर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये तिसपीछे दशाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसंगम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा पीछा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को यथायोग्य रचकर राजा अपने डेरे आया ॥ ११ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरानिवासी पंडितों को बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट जाकर राणियों सहित स्नान करके और यमुना की भक्तिपूर्वक स्तुति करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रप्रवेणिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥

ददौ महीशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥

वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्राय महीपतीन्द्रः ॥१५॥

एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशात्र गावः ॥

द्विजेश्वरेभ्योम्बरपूजितेभ्यो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेण ॥ १६ ॥

सुवर्णमर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥

अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमेर्निवर्तनानामदिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाङ्घ्रिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥

नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेभ्यो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ॥

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दश मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया॥१४॥ और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पांच मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके एक एक मोहर और पांच पांच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत स्त्रियों के योग्य वस्त्र समुदाय दिये. और अठाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बांस का एक निवर्तन होता है. " निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः " इति लीलावत्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आदि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के कुंडल और हार से सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को बनाने

दिनेऽल्पशेषे सकुमारमन्तःपुरं निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥
नीराजनानेहसि तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽव्रजता नृपेण ॥
अकार्यत स्वानुगहस्तिनिष्ठजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥
परेद्युराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदित्तत् ॥
रूप्यं तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्रं च तदन्वभोजयत्॥२१॥

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्यां१३ दिगद्रयङ्गो६७१०न्मितान्स्त्रीसहितान्द्विजान् ॥
अभोजयच्चतुर्वेदान्सपादद्रम्मदक्षिणाम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीतिः ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपाख्यव्रजकिशोरः ॥
पुत्रोऽस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासाः ॥ २३ ॥

॥ गीतिः ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधाः प्रागनागता मुख्याः ॥
आजग्मुर्नृपहूता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सरिर्नरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मैथिलबापुदेवः ॥

में जाने की आज्ञा दी ॥१९॥ सायंकाल की आरती के समय में वहां (विश्राम घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी की ॥२०॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब का जुदा जुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पांच पकान्न से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के दिन सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ दश चौबे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले राधारमण भट्टाचार्य, व्रजकिशोर, व्रजकिशोर का पुत्र राम बाबू और मथुराका गंगाराम ये प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये थे सो राजा के बुलाने पर आये ॥२३॥ ॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के श्रेष्ठ पण्डित आशानन्द और

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेण सार्धं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचद्रम्मार्चिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सद्रम्मदक्षिणमभोज्यत विप्रवर्गः शिष्टाप्यपूरि सहसत्कृतिदेयमात्रा२६

॥ वैतालीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं व्रजन्नृपः ॥
निशि षड्घटिभाजि कालियन्हदद्देशे शिबिरं स्वमाविशत्२७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युराप सार्द्धासु षट्सु घटिकासु निशि स्ववासन्
आचम्य कालियन्हदेथ तृतीयतिथ्यां वृंदावनस्य निरियाय परिक्रमाय

॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टाद्यमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्भ्याम् ॥
अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राज्ञार्पित गौस्सनिष्का।२९।

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिहरिं शिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल वासुदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुँचाये और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगेहुए अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढे छः घड़ी रात गये पीछा डेरे आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थोंकी परिक्रमा करके घोड़े से अपने डेरे आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक गौ अर्पण की ॥२९॥ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

स्वजननीजननीं स्वशाकृन्नृपः शिबिरमाप निशि प्रहरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां४ कलिंदात्मजास्वल्पधारास्थलाच्छेपतीर्थानि पद्भ्यामुपेत्य
परेद्युर्ह्रदे कालियस्याप्लुतस्सन् गजानां जलक्रीडनान्यालुलोचे३१

॥ उपजातिः ॥

षष्ठ्यां नृपेणाहृतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि सभा बुधानाम्॥
भूयः परेण द्युयुगेन सान्तःपुरेण तत्तीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरलैनमङ्गरेजं भरतपुरेड्वलवंतसिंहयुक्तम् ॥
प्रकटयितुमुदन्तमुर्व्यधीशप्रहित इयाय हमीदखाँ नवम्याम्।३३।

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्यां ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्रेर्द्वयामावशेषे ॥
धरेशस्तु मातामहीं वीक्ष्य नैजं निकेतं पुनः प्राप रात्रौ निशीथे।३४।

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत बहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-
मध्वन्येवामिलदवनिपस्य ... स्वप्रसूयुक् ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुंचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुना की अल्पधारा के स्थल से लेकर बाकी के सब तीर्थ राजा ने पैदल होकर किये और दूसरे दिन कालियद्रह में स्नान करके हाथियों की जलक्रीड़ा देखी ॥ ३१ ॥ छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की विलक्षण शास्त्र चर्चावाली सभा कराई जिसपीछे दो दिन में जनाना सहित वृन्दावन की प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ जिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह के साथ सदरलैन अंगरेज को समाचार जनाने के अर्थ रावराजा का भेजा हुआ हमीदखां गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन बाकी रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी नानी से मिल कर अर्द्ध रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतममुखास्तत्र गोविन्दमूर्ती-
र्वाक्सार्द्धमहररजनेराजगाम स्वधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणं भुजिष्यावर्गेणाकृत नृपतेः कनिष्ठमाता३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूप्यैः ॥
रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥
संस्थानमापन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥
संध्यादिकर्माण्यशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥३८॥
सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणं विलोक्य ॥
द्रम्मान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः॥३९॥
दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं स्वीयमुपेत्य भूपः ॥
पितामहस्याथ महासतीनां श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥४०॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे आया ॥३५॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियोंके साथ राजाकी छोटी माता ने देव मंदिरों के दर्शन किये ॥३६॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर राजाने जगह जगह पांच पांच रुपयों से रासथली, मानसथली और मान विहारी का सत्कार किया ॥३७॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर नानी के मकान पर पहुंच कर वह राजा सन्ध्या आदि सत्कर्म और भोजन वहीं करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥३८॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रुपये देकर और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा) भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राणियों के वार्षिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे

चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीज३ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥
किय आरुहि वाहन क्रमन, द्विजन दुःख करि दूर ॥ १ ॥
पहर इक्क१ रजनी नृपति, गोकुल मग्ग विहाइ ॥
हुव दाखिल डेरन हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

षट्पात्

भुजगतिथी५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥
आरुहि प्रभु पुनि अस्व महावन अप्पहि क्रम किय ॥
कन्ह चरित जो पुहवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥
अंतेउर सह सिबिर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥
आप्लवन अत्थ सुद्धान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमनः॥
महिपाल जोरि अंचल महिषि कियउ अप्प मोदित सबन३
मन१वन२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तर्पन आदिक तत्थ बहुरि करि नित्यकर्म वलि ॥
अर्वारुहि किय अटन द्विजन दारिद वृत्तन दलि ॥
मंदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥
प्रनमि प्रभू करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिमति ॥
करि दरस रौप्य हुव२सतक१००कर पंच५निक्क उत्तारन सु
इत्यादि सदन ईश्वर अखिल चालि इच्छन किय बहुत बसु४

दोहा

सुक्र६ असित२ षष्ठी६ सुरहि, सत्तमि७ उग्गत सूर ॥
मुदजुत प्रभुहि मिलानहू, दिय बलदेव हजूर ॥५॥
राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिबिर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस॥ ६ ॥
करत कुच्च अष्टमि८ अहन, पुनि चहि दरस जरूर ॥
तुरगारुहि हाजरि त्वरित, हुव बलदेव हजूर ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि इच्छन सत१०० दम्म पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥
उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥
इम करि भेट सुजान ग्राम मइनास अटन किय ॥
तहँ अवरोधन सहित महामति सिबिर प्रवेसिय ॥
करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम किय ॥
बिश्राम बहुरि दशमी१०दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डबिय८
रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥
तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ किय सत्वर॥
चल्लत अकबर नगर तास गव्यूति२ प्रभू रहि ॥
चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥
इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह आनिये॥
सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥
आजम नायब लार्ड सिकत्तर जाके उपपद ॥
हमबंटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥
दूजो२ मौलन२ सोहु किलट्टर पद स मजष्टर ॥
डीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिश्नर ॥
पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलट्टरहि॥
जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१०

हरिगीतम्

तजि अब्ब सब्बन गब्ब वे५ हुतही बिछायत आइकैं ॥
जयसिंह ओ तस भ्रात बिजय सु सिंह पुब्ब मिलाइकैं ॥

मुहुकम्म बंस कनकेस सुत जोगीरामहिँमुख्य किय ॥
यह बीरधीर हुन उमगि चलि सम्हारि चतुरंगिनिय ॥२॥

[दोहा]

कोटापति जाजव मर्यो, तासैं तनय नृप भीम ॥
बेसतरुन लै पट्ट बल, सो न तजत निज सीम ॥ ३ ॥
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेचंद कायत्थ ॥
बुंदिय पठये भीमनृप, करन साम नय कत्थ ॥ ४ ॥
आय दुहुँन किन्नी अरज, कोटा इक्कर लेहु ॥
मुलक ओर सबही नजरि, निज गिनि धरहु सनेहु । ५ ।
नाथाउति नृपमात तब, अरज न मन्नी एह ॥
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥
तमँकि तत्थ दोउ सचिव, पच्छे निज पुर पत्त ॥
भक्खी भूपति भीमसौं, रन मंडहु अनुरत्त ॥ ७ ॥
इत बुंदियतैं उमँडि दल, चम्मलि उत्तरि चंड ॥
गंजन जोगियराम गो, भिरत अंभ भुजदंड ॥ ८ ॥

(मुक्तादाम)

सज्यो उत भीम महादल सूर, गज्यो इत जोगियराम गरूर ॥
कचौंदियखेट मिले दुव आय, दये दल दोउन बाजि उठाय ॥९॥
बजी रन रीठ मची धमचक्क, चलच्चल छोनिय लग्गि लचक्क ॥

---

१ कनकसिंह का पुत्र २ सेना ॥ २ ॥ ३ उस रामसिंह का पुत्र भीमसिंह तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने नीति के कथन से मिलाप करने को भेजा ५ अपने जान कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने ॥ ६ ॥ ७ तहां क्रोध करके ८ कहा ९ युद्ध में अनुरक्त होकर युद्ध रचो ॥ ७ ॥ १० सेना ११ भयंकर (यह यातो सेना का विशेषण है अथवा चामल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बडी सेना १५ कचोदीखेड़ा में १६ सेना में १७ घोड़े उठादिये ॥ ९ ॥ १८ बल पूर्वक प्रहार अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर झुकने लगी

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वै२ पुनि त्यों मिले ॥
तिम महासिंह पउत्त दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिले ॥११॥
पुनि खंधजुट्टि मिलाप आपहि हमलटीनहुतैं करयो ॥
जनरल१ रु मोलन२ आदितैं इक१ हत्थ भाविकपैं धरयो ॥
चढि वाह चल्लत चाह साहब वाम दक्खिन व्है चले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्यों वसुधेस अक्कबरपुर हले ॥१२॥
इम शिविर अक्कबरनैर उपवन राम नामक आइकैं ॥
चउ४इक्क१।५साहब नैर चल्लिय सिक्ख सासन पाइकैं ॥
तव दुरगतैं दस१०तीन३।१३फैरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तगनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजबीबी सुकरबन क्रमि अप्प दिट्ठिनतैं छुहे ॥
रुहे१ छुहे अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
तस इक्खि उपवन१ तोपजंग्गन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जंग्ग२ साहब सिष्टितैं तस किंकरन किय फ्ररमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपैं गये हुव शिविर दाखिल आइकैं ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमवासर पाइकैं ॥
रथ तुरग आरुहि लार्ड ऐलनबरा शिविरहि आइकैं ॥
तजि यान आवत तास सम्मुह अप्प२०२।४सत्वर जाइकैं१५
करहू परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों भन्यूं ॥
वलि भीमसिंह२०४।१कुमार पट्टप लार्ड मेलनहू वन्यूं ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्ज्जुन त्यों मिले ॥
साहब सिकत्तर तास सन मिलि मोद पंकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडविटहू करयो ॥

अरु लार्ड बाम अबाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड बाम विराजयो ॥
थलि हमलटीन सिकत्तरादिक लार्ड बामक बैठयो ॥१७॥
अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प२०२।४दक्खिन ओरमैं ॥
स्वक२०४।४बंधु जय ओ विजयसिंह सु तास सन्निधि ठोरमैं॥
अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमरन पालजो ॥
अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥ १८ ॥
तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुरासिनतैं ठयो ॥
इत्यादि भटवर मुख्य राखि घटीदु२परिखिद मंडयो ॥
लै अतर दुव२कर राम२०३।४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं॥
दै पान सिक्ख बहोरि पूरब अप्प२०३।४ रीति पुगाइकैं ।१९।
दशमी१०बलाप हिताय औलनबरा बस्तु समाजयो ॥
तरवारि इक१ गुजरात संभव मुठि हाटक प्रेसयो ॥
अरु समरपट दल२ चर्म३इक१बार्धी सुं किरणपलूहरी ॥
इक१ वेणु मथ सिबिका४बनातिय टाटबांफियकी करी२०
तिमही हवद्द५ सु तारको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
अरु कुमर पट्टप भीम२०४।१हित हय१साज राजत साजयो॥
उरसूत्रिका२ सिरुपेच३इक१मंदील४ सिवपुर जो भयो॥
बाणारसीज दुपट्ट५ नामक बुढि कासहहू दयो ॥ २१ ॥
दुस्साल६इक१त्यों गरमपोसक७ स्वर्णमय घंटिका८दई ॥
ताकै हुती इक शृंखली पुनि सो सुबर्णमई नई ॥
दुव२ नैन मय दुरबीन९ इक१ सौवर्णमसि आदान१० जो ।।
अरु कलमदान११ ससाज ओ बन्नात१२ रंग दुरभोनजो२२
इम लार्ड प्रेषित बस्तु जो सब अप्प२०३।४स्वीकृतहू करयो

अरु तास मानुपकों पचत्तर७५भूप रुप्पय विस्तर्यो ॥
भूपाल द्वितिथि१२ भरतपुर बलवंत सहर सु थानभो ॥
तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
करिकैं परस्पर हत्थ मत्थ बहोरि भावुकहू भयो ॥
अरु तास करपर अप्प कर करि वामहें परिखद गयो ॥
अरु राखि दक्खिन अप्प२०३।४ओ खुरसी अदक्खिनपैं ठयो
इक१ नाड़िका तहँ देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
गहि अतर कर बलवंत हड्डनइंद२०३।४ अंग लगावनौं ॥
बलि सिक्खदे अति मोद जुत करि पुब्बक्रमपहुँचावनौं ॥
कर उभय२ उत्तमअंग भो बलवंत स्वक गृहमें गयो ॥
चहुवान अब्ज निसापकों बलि आन डेरनहू भयो ॥२५॥
गयानाथ तिथि४ दिन आगरापुरतैं सु कुच्च प्रभू भयो ॥
अजमादपुर बलि विंध्यईस मुकाम वाहिनिकों दयो ॥
तिथि५नाग पीरोजा सु बाद विभावरी पुनि त्योंरहे ॥
तिम पष्टि६का बिश्राम सकरबाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
किय सत्तमी७ बुधवार४ वास धरोल नामक गाममैं ॥
तहँ आइ साहब टालबट सँग रहन यात्रा आममैं॥
तब उट्ठि गद्दिपतैं प्रभू पयच्यारि४ सम्मुह जाइपैं ॥
पुनि हत्थ दोउ२न मत्थ माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥२७॥
कथ टालबट नरपालतैं पुनि अमा जावनकों कह्यो ॥
चहुवान अब्ज दिवापनैं सुनि एह ओपितहू चह्यो ॥
आदेस जीवनलालतैं तस संग भोलि सुजानकों ॥
जो कहैं साहब एह मिल्लनसों कथा सब आनकों ॥ २८ ॥
इम अग्ग साहबकों चलाइ रु अष्टमी८ सु प्रभातही ॥
करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
अरु अप्प सम्मुह आइबे सुहि दंग परिसरपैं खरे ॥
तसमात चल्लहु बेगहू व मिलाप आपहितैं वरे ॥
इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउश्न ओ अनामयहू करे ॥
अरु सत्थ साहब लौं महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
इत होइ दाखिल तूर्णहीं कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
दिवसेस घटिका१ इक्क१ रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंच५ रुप्पयतैं करी ॥
अर नयन२ वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी३२
भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अग्ग वाम बिठाइकैं ॥
अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलाम१ बलि२ किय आइकैं ॥
पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू व जुहार मालुमहू करयो ॥
विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छीबन कर परयो ॥
दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
करि नित्यकर्महि आदि सर्वरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ।
रयो१ दयोर२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
कविबार६ नवमी९ अर्क उग्गत कुच्च सत्वर ओ करयो ॥
प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो परयो ॥

सनिवार७ दसमी१० दिवसछपरामहू जाइ रु त्योंरहे,
एकादसी११ गुर१ साहिगंज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
पुनि चंद्रवासर२ द्वादसी१२ मीरांसरायहि पाइकैं,
अरु ह्वाँ फरुक्काबादतैं मिलनार्थ साहव आइकैं ॥
मिलि देसकाल उदंत अक्खि रु सिक्ख साहवकों दई,
विल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ वृष्टि दिवनिस ह्वाँ भई३६
पुनि तत्थ पुरिग्राम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
शिविराजपुर पति सम्मुहाऽऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
तब मेघ खुट्टिनतैं प्रभू तिनकोहु द्रंग प्रयानभो,
आदेस तस सतकारकों वलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
वलदेवहू व प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकैं,
अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिविर अप्पन आइकैं
अरु सत्थ साहवतैं महीपति अग्ग जान कहातभो,
वलि मिलन कन्ह पुरत्थ साह---- सुनि तहँ पातभो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

सुचि४मास रु पड़िवा१ असित, तजि विल्लोरहि तात ॥
चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥३९॥
सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
पुरतैं वे गव्यूति२ पर, आधिप मिलन रहि आइ ॥४०॥

(षट्पात्)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ करसत्थ लगाइय ॥
तब प्रभु आनन द्रयस अप्प सय इक१ उठाइय ॥
कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन दुव२सत्वर ॥
सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु किय गमन द्रंग पर ॥
वलि रहत अट्ठ८ घटिका दिवस महमाती प्रेषित करिय ॥

प्रभु पंच सतक५००नाणक बहुरि पंचक५मन पक्कान्न दिय॥४१॥
कुच्चं दोजिश्दिन करत सचिव तस आइ शिबिर तहँ ॥
भूपति भ्रातन माहि नाम जहुवारासिंह जहँ ॥
करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥
मामक भूपति मिलि रु बहुत दुवर प्रीति बढारहु ॥
सुनि एह अरज चढि तुरग बलि पुरप्रति सत्वर संक्रमिय॥
सिवराजपुरप उततैं सुनि रु महिपति सम्मुह गमन किय॥४२॥

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ मिलाइ ॥
कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु दुवर महलन आइ॥४३॥
पहु तहँ सक्तिप्रसादहू, बैठिय नृप दिस वाम ॥
स्वभट सर्व अपसव्यहू, इम क्रम राखिय आम॥ ४४ ॥
पुनि भट सक्तिप्रसादको, उग्रसिंह अभिधान ॥
अरु जुहारसिंहहिं नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[षट्पात्]

प्रभुकैं इक१ सिरुपाव पंच५ तखतीमय तिन किय ॥
असि इक१ पट्टिस एक१ स्वर्णमय मुट्ठि समप्पिय ॥
दंती इक१ कुथ सहित तास होदन सु कट्ठ मय ॥
तिम बनात कुथ साजि तुरग किय भेट महारय ॥
पंचदश अधिक रुप्पय सतक११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥
महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

दये१पये२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पंचक५ तखती प्रमित दियउ सिरुपाव१ खड्ग२ पुनि ॥
पट्टिस३ हाटक चोक१ मुट्ठि२ किय नजर अच्छ चुनि ॥
तुपक इक१।४ तिम तुरग५ रजत भूखन शृंगारित ॥

किंयउ भेट तिम द्रम्म भूत५ भूपाल निष्क१ मित ॥
इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अव जालाग्रटन ॥
तसमात यहै दसतूर सव भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥

॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु सक्तिप्रसादकों, दृढ पय घोटक दिन्न ॥
राजत भूपन सहित रय, क्रम शिरुपावहिँ किन्न ॥ ४८ ॥
तखती पंचक५ केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
तस नेउर करि रजत मय, लक्षित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
करत कुच्च कल्लयानपुर, प्रभुकों तव पहुँचान ॥
महिपति महलन द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥

॥ षट्पात् ॥

कुसल परस्पर करि रु दुव२हि कर मत्थ द्रपस दिय ॥
करि तस प्रभु सत्कार क्रमन कल्ल्यानपुरहिँ किय ॥
इम चल्लत पटसक्न पंथ उपवन इक१ दिट्ठो ॥
प्रभु संध्यादिक कर्म करन तहँ जाइ पइट्ठो ॥
असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी१ दिन संक्रमिय
सर्वरी पंच५ घटिका गयैं अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥

पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहव सुजान२
जनरल जग आव्हय कहत जाहि,आमय वहु वासर तास आहि५२
तातैं सु मजप्टर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुहीक ॥
पुनि सुनि रु टालवट मोद पात, ए दुव२हि मिलि रु तजि पुरहिँ आत ॥ ५३ ॥
कंपू रु कन्हपुर विच मिलाप, करि तत्थ विछायत हित अमाप ॥
तहँ रहिय उभय२ साहव हिताय, प्रभु तास विछायत अप्प पाय५४

जज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
तब कालडीक तजि अश्वताल, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत५५
तब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ सु बिछात मिलि लहँ उमंग ॥
करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभयर प्रीति कर सत्थ
पाय ॥ ५६ ॥
जज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविय नेह
प्रतिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं हम सुनीत।५७।
पुनीत१ सुनीत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इम अक्खि तुरंगम चढि रु तीन३, साहब सह शिबिरहिँ क्रमन कीन
इक१कोस हुती नाली तुरंग, किय फेर त्रयोदश१३तिन्ह उमंग५८
कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु यातैं गेह जाइ ॥
इम कहि सु सिक्ख दै तास आप, लैं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
पुनि क्रमन चउत्थी४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात
कर कुच्च पंचमी५ दिवस राम२०२१४, कल्ल्यानपुरैं दिय पुनि
मुकाम ॥ ६० ॥
विश्राम फतैपुर षष्ठि६कासु, तहँ रहत घटी दुव२ दिवस आसु ॥
साहब चउ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आह्वय राजराज६१
उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट१, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
पलियम जु पिरासन२नाम ताहि, इम रीढ३नाम साहब सु आहि६२
साहब सु टालबट४सत्थ जोहि, मिलि च्यारि४सभा आये सु सोहि
अरु अस्त्र बिछायत लग उताल, आतहि तब सम्मुह क्रमि नृपाल६३
मिलि सबन सत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जबहि
आइ ॥
करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तखत संसद पधारि६४
दिस बाम दुलीचनहू बिछाइ, तिहिँ उप्पर साहब सब बिठाइ ॥

छाइ१ ठाइ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अतर दान,चवि सिक्ख लगायो चाहुवान ६५
किय क्रम पुरी साहब पुरत्थ, तलेव टालबट रहिय सत्थ ॥
इक सिविर अंत तारा स आहि, प्रभु अप्प१टालवट२दुव३उमाहि६६
अब वहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीयदखाँ सु पाइ ॥
किय मंत्र अद्द घटिकादिवांन,दै सिक्ख ताहि किय तखतआंन६७
बलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुवट्ट ॥
साहब अनाम किय कैद जाहि,रक्खिय प्रयाग निवसथ रसाहि६८
तस राघवेंद्रसिंह जु अपत्य, दिय साहब तासहि राजकृत्य ॥
सुभ मनुज तिन्हैं भोजिय भुवाल,सोती सु मारफत कृष्णलाल६९
पौराणिक कासीनाथ२ पात, अरु पुरोधाहि नंदन उम्हात ॥
सो रामरसीले२ नाम ख्यात, पंडित३ अनाम मिलि सभा पात७०
दै आसिख अक्खि रु भद्र भूप, इक१ तुपक निवेदिय पुनि अनूप ॥
टहरी सु जात सौवर्ण अंग, अरु कुंद रजतमय कलि अभंग॥७१॥
त्यारी सु राजती वहुरि सत्थ, वलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्थ ॥
अक्खिय जुहार नृपअस्मदीय, सुभ आक्खिय तिन्ह पुनि तस सुहीय
प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिय सिक्ख सिविर हित करि अखर्व ॥
पट्टप सु भीम२०३।१ आयउ कुमार, आमय मसूरि सिंधूततार॥७३॥
करि नजर निछावरि मिसल लेत, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
किय कासमहू सप्तिम७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम२०२।४
मथुराप्रसाद१ भूसुर भुवाल, नारायन२ पाठक तिम उताल॥
संबंध रचन तहँ दुव२हि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ ।७५।
अरु वहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियउ आन ॥
ताजिगजरु शिविर प्रविसे सु विप्र,मिलि कुसल आक्खि अरु मंत्रछिप्र
तब वहुरा जीवनलाल१ तत्थ, अरु अमृतलाल२ भ्राता सु अत्थ ॥

तीजो३ वकील हम्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आँहिं ॥ ७७ ॥
नृप विश्वनाथ इम कथन गेय, ममगेह पुलिका तुमहिं देय ॥
सुनि मंत्र एह घटिका सु तीन३,पुनि जीवनलालहिं सिक्खकीन७८
अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, वलि विप्र गये दुव२आसु गेह ॥
पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैई सु किय सेन पात७९
करि कुच्च अष्टमी८दिन सुकाम, पहु दियउ कसीया नाम गाम ॥
इक१कोस हुती गंगा उहांसु,अवरोध सहित किय गमन व्हांसु८०
करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, हांकिय निज डेरन चाहुवान ॥
इम आइ शिविर सर्वरि वितात,पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात८१
मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी१०किय डूमनगंज थान ॥
एकादशि११वासर सोम पात,अति उमगि प्रयान सु राज आ त८
संमट१रु इलाहर२समट३नाम, कपतान त्रय३हि उपपद सु काम
आइउ प्रभु सम्मुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस॥८३॥
मिलि कमन बरब्बर बाम भाग, प्रभु आइ शिविरसन्निधि प्रयाग॥
तस दुग्ग बरब्बर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥८४॥
किय शिविर तत्थ प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रु भट सब शिविर आइ
प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि

॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥
किमहु होहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥८६॥

॥षट्पात् ॥

चढि तुरंग किय कमन अप्प माधवबेनी पहँ ॥
करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥
प्रनमि भूप उर हपस मोद सह गमन नीर किय ॥
पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

खटक्किय हड्डुन हड्डुन खग्ग, मचक्किय पब्बय लै डगमग्ग ॥१०॥
बडेबल भीम करी इतबाह, कटे बहु बुंदिय सेन सिपाह ॥
तिलत्तिल तुट्टिग स्वामिय काम, परयो कनकाउत जोगियराम॥११॥
दयो सब बुंदिय सेन बिगारि, जयो नृप भीम हजारन मारि ॥
उतैं सु कबंध रु कूरम नत्थ, गये दुव मेकलजा लग सत्थ॥१२॥
तथापि न साह भयो अनुरत्त, चल्यो दरकुंचन जात उमत्त ॥
वहै सरिता तब साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥
मिल्यो नृप रान इहाँ अनुरत्त, उदैपुर हैरदरकुंचन पत्त ॥
इते दुलही नृप बेघम व्याहि,चल्यो जवनाधिप सेवन चाहि ॥१४॥
लयें त्रय रानिन संभर संग, मिल्यो जवनेसहिं धारि उमंग ॥
गयो दरकुंचन दक्खिन साह, सजे दल सब्बलै सूर सिपाह ॥१५॥

(दोहा)

कामबखस निज भ्रातहो, दक्खिनधर रखवार ॥
भागनगर बीजापुरपै, हुव तिहिं सिर हुसियार ॥१६ ॥
बिक्रमनृप परमारभो, उज्जइनपुर ईस॥
ता पीछैं नृप भोज भो, धारानगर अधीस ॥ १७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्यकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दीसैन्यनिरसनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥

१हाडों के खड्ग हाडों पर खटके॥१०॥२लूटा (मारागया)॥११॥३ बिजई हुआ ४ भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७ तोभी ८ अनुकूल ९ उन्मत्त १० वह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ बादशाह को सेवन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ सबल (बलवान्) ॥१५॥ १४ पति ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा बिजय करने को गईहुई बुंदी की सेना को नष्ट करने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ

आप्लावन करि रु पुनि धेनु इक१उभयमुखी दिय भूसुरन,
वलि महुर पंच५दै नित्य करि किपउ प्रभू डेरन गमन।८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरल्ल लार्डहु,
नाम अलीनवराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥
अरज कराइय एह लार्ड पहु मिलन अज्ज चहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखाँ वृत्त एह कहि ॥
सुनि एह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,
अज्ज करि पितर तर्प्पन वहुरि कल्हि मिलन हमरो चहहु॥८८॥
इम कहाइ चढि अधिप चलिय गंगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक्१ हुव नीर आइ जहँ ॥
पंचम५ नामक गुरुहि वहुरि बुधजनन बुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिं कराइय ॥
दै दान द्विजन पंचम सु मुख रस६घटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अर्वं नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि८९
तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहव मिलाप सन,
नाम अलीनवराहु गवरनर जनरल्ल कमरन ॥
भेजिय सम्मुह त्वरित इस्तरेजी सु सिकत्तर,
सचिव लार्ड१को वहुरि नाम नांहि सु साहववर ॥
सकटी१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूतें सुमन,
कर मत्थ कारि रु सुभ लार्ड कृत अग्ग प्रभू सह किय अटन ॥९०॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन अधिप तहँ, चोक अनायत पाइ ॥
अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फेर कराइ ॥ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्डसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि आइरु ॥

मैंडक२ साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
करन परस्पर सीस कुसल करि कम२ प्रवेसत ॥
उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
मिलि खंध जुट्ट भावुक भनि रु वलि लगाइ दुव२मत्थ कर॥
संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैठि वर ॥ ९२ ॥
बैठिय नृप दिस बाम अलीनबरा१ सु लार्ड तहँ ॥
मैंडक२ बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह१ विजय जहँ ॥
याके अध भट१ सचिव२ तीस३० अमुकेर मुदित मन ॥
मध्य विराजिय अप्प समय चवि कृत धाराधन ॥
घोटक१ मतंग२ भूखन३ तुपक४ बस्त्रादिक प्रभु भेट दिय
इम तुपक१ तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजरकिय९३

॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह क्रमन, गंगातट प्रभु न्हान ॥
मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि१४ दिन चहुवान ॥ ९४॥
अमा३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन मगम तहँ पाइ॥ ९५ ॥
प्रसू दुव२हि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअप्पि ॥
अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समप्पि ॥ ९६ ॥
महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान मुद पाइ ॥
कथन सस्लि पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
पड़िवा१ सित पंचम सुरहिं, महिप बुलाइ मिलान ॥
पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१ मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय ॥
हाटक भूषन१ तुरग२ बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूलिका१।६हितिम
धेनू दुव२ शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुप्पय९ जिम ॥
इखुख५०९सोहु पंचक अरथ गाम१लोहली१।१०निष्कदुव२
इम करत वहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥
दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मचर्य पुनि॥
पंचमि५ दिन लै अप्प भीम२०३।१ कुमरहि सुभटन चुनि॥
शास्त्रउक्त विधि सह्हि भीम२०३।१ सह सुभट सधाइय ॥
दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन वहु मोद वढाइय ॥
षष्ठिका६ दिवस हुव मेघ झर सप्तमि७ बुधहिँ मिलानरहि
अवरोध सहित एकादशिय११चलिय गंगतटन्हान चहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उप्परि पधारि पुनि,
अप्प कर न्हाइ भरे दुव२ घट प्रवाहतैं॥
तर्प्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विज,
दैकैं गो१ सनिष्क२।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहतैं ॥
पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,
जाइ रु प्रनाम कियो पर्वईके नाहतैं ॥
निष्क इक१ नाणक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,
भोजन द्विजन दये रुप्पय सलाहतैं ॥ १०१ ॥
शिविर प्रवेसि पुनि द्वादशी१२ दिवस पात,
भेजिय हमीदखाँ वकील लार्ड घरकों ॥
जाइ तहँ मैंडक सिकत्तरसों अक्खि इम,
लैचलो डेरन हमारै गवरनरकों॥
जाइ तिन लार्ड अलीनवरातैं एह कही,
चालहू मिलाप आप बुन्दीधरावरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज यहही सुनि,
आवत शिबिर प्रभू लेकैं सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ औ,
कालविल्ल२ त्योंही हरीसन३ हलीहर४कों ॥
लार्ड अलीनबराको अमात्य मखन तोस,
समरढ६ नाम पैं कुहात सिकत्तर६कों ॥
अंसुकसदन ईस गाइब७ खुरम८ सोही,
स्यंदन सदन ईस आयो राम२०२४घरकों॥
टालबट९ आयो त्यों उमगि महिपाल पुनि,
जनरल१० जंगी ईस तजिकैं गुमरकों ॥ १०३ ॥
बैठक चउ४नको तुरंगरथ इक्क१ तापैं,
लार्ड चढि सिबिर महीपतिके आतभो ॥
एह सुनि लार्ड अलीनबराके सम्मुहकों,
जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
महासिंहउत्त भट धौंकल२ रु गोकुल३त्यों,
सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
जाइ मिलि उक्त लार्ड साहब सहित सब,
सिबिर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
शिविका अरोहि प्रभु सम्मुह बहुरि जाइ,
मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
कुसल दुहूँ२घाँ होइ साहब बहुरि कही,
भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त बरकों ॥
सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
बैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
मोदसह लार्ड भूप२ मैंडकैं सिकत्तरहू,

बैठिकैं तुरंगरथ आये वस्त्रघरकों ॥१०५॥
शिविर प्रवेसि लार्ड साहब सहित आप,
संसद पधारि सब बैठ खुरासिनतैं ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राजतीपैं बैठे अप्प,
मैंडक२ह्न सव्य बैठो— राम२०२।४ इनतैं ॥
वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतितैं,
समर जु आदि नव९ बैठे अध जिनतैं ॥
जीवन३ अमात्य हो इ:मिदखाँ४ वकील बैठे,
करन५ कल्यान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृत्तांत चवि, करन मंत्र एकत्त ॥
शिविर अंत ए लार्ड सह, तिम मैंडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥
जीवनलाल बुलाइ जहँ, अरु हमीदखाँ आइ ॥
करि रहस्य इक१ नाड़िका, पुनि पहु संसद पाइ ॥१०८॥
अतरपान पुनि अप्पिकैं;
शिरुपेच१।२रु दुस्साल१।३पुनि, जटित गिलंगी१।४अप्पि१०९
मुत्तिनमय उरसूत्रिका१।५, पटिस१।६ निज पुरजात ॥
चोक स्वर्ण वलदार मय, तुपक इक१ दिय तात ॥ ११० ॥

(षट्पात्)

दंती इक१।७ बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय,
तुरग२।८ दोइ२ सोवर्ण बहुरि राजतखन——दिय ॥
इत दे सिक्ख सुजान बाहय डेरन लग आइ रु,
भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँरन लगाइ रु ॥
चढि लार्ड तुरगस्यंदन बहुरि मोदित बँगलन गमन किय,
इकवीस२१फैरनालिन अधिपकरि कटिबंध निवारिदिय।११

॥ निश्शाणी ॥

चउदसि दिन क्रूर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
पुनि पुरिशाम नृप न्हानकों गंगातट आया ॥
जानि तिथि क्षय जनककी तर्पन उमगाया ॥
मज्जन करि बिधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया॥११२॥
रजनीं बित्तत बान५ बहुरि डेरनपर आया ॥
सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
तब नृप सचिवन अक्खिकैं तस मोल कराया ॥११३॥
चयारिसहँस४०००सत अठ्ठ८००पंचनभ५०रौप्य सगाय॥
दे हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
कियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लै मोद बढाया ॥
दिन चउत्थ४ दीवान शिबिर साहब छद आया ॥११४॥
कग्गर बंचि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
वृंदाबन सेवन करन अग्गैं तहँ आया ॥
सो अठ्ठारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
सेवक बल्लभ ताहिको गुस्सांइ कहाया ॥
नंदन गिरिधर सहित उमँगि डेरन पहँ आया ॥ ११६ ॥
तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
अंसुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
प्रभुको चोका तखततैं अपसव्य बिछाया ॥ ११७ ॥

वैठि रु चवि वृत्तांत समय दुहुँ२सत्व दिखाया ॥
नजर तीन३ किय निष्क प्रभू पट्टिस पुनि पाया ॥
चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
वाद्य शिविर लग वहुरि आइ तिन मुद पहुँचाया॥११८॥
वलि प्रभु डेरन प्रविसिकैं कटिबंध विहाया ॥
षष्टी६ दिन तिम सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
नवमी९ साहव मिलन कज्ज बांदापति आया ॥
अंत मुहम्मदजुल्फकार नव्वाब कहाया ॥ ११९ ॥
आवत डेरन दुग्गतैं नालिन चलवाया ॥
पंच अधिक दश१० फेरहू माल्लुम करवाया ॥
दशमी१०दिन पुनि शिविर भूप साहव चर आया ॥
मैंडककेर सलामहू माल्लुम करवाया॥ १२०॥
भावुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
एकादशि११ वाराणसी पढि द्विज इक१ आया ॥
गंधी केसवरामके सुत संसद पाया,
आह्वय सह हरवखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
वैठक ताके गुननतैं पहु रीझि दिखाया,
द्वादसि१२ दिन बुधवार४कों चढि अश्व चलाया ॥
कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
करि दरसन मृडकेर वहुरि गंगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
नित्यकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
गुन३ घटिका दिन रहत भूप डेरन पुनि पाया ॥
मक्खनतोस१ रु टालवट२ जु जात्रा सँग लाया,
पधरावन प्रभु लार्डगेह साहब दुव२ आया ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

चढि तुरंग तिन सह चतुर, लार्डकेर लग जात ॥
आदि सिकत्तर मैंडकहु, अधिपति सम्मुह आत ॥ १२४ ॥

॥ षट्पात् ॥

भनि भावुक प्रभुकेर सीस कर मुदित समप्पिय ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि मत्थ रक्खि रु सुभ अप्पिय ॥
साहब मैंडक सहित लार्डबँगलैं सु प्रवेसत ॥
उमँगि अलीनबराहु प्रभू सम्मुह तहँ आवत ॥
कर सीस परस्पर कुसल करि कमरुअंत राजाइ हुव२ ॥
खुरसीन बैठि बेला अलप हाकिम सह एकान्त हुव॥१२५॥

॥ दोहा ॥

तुच्छ समय एकांत रहि, कुसल जंपि करि सिक्ख ॥
आये प्रभु२०३ डेरन उमँगि, रक्खि हर्ष तहँ तिक्ख ॥१२६॥
चढि तरंड करि कुच्च पुनि, अमा३० तिथी दिन आप ॥
भूँसी नामक सहरहू, अंसुक सदन अवाप ॥ १२७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

प्रौष्टाऽसित प्रतिपदि१ सोमवार२, सहिद्रादि बाद रहियत उदार ॥
करि बहुरि द्वितीया२दिवस कुच्च,विश्रामवरोटहि दियउउच्च१२८
इक रत्त सिविर चंक्रमन गाम२०३, अति मुद कासीपुर आजगाम
दिय द्विजन तहाँ करि न्हान दान,इंग्रेजन मेलन करि दिवान१२९
सप्तमी७धवल पुनि सुज्जवार१, लै क्रमन कियउ कछु भटन लार
उज्जा८ऽसित अष्टमि८जीव५आप,मुदसहित गया पत्तनमवाप१३०
करि सबन श्राद्ध तहँ भूरि दान, दै दंती अश्वादिक दिवान ॥
सह१।१० सासित षष्ठी६ सौम्य२ वार, करि कुंच रहिय चरखी
उदार ॥ १३१ ॥
अधवल सहस्य९ पुनि दोजि२ आप, बारानसि नामक पुर अवाप

अविसदतपस्य१२सत्तमि७सआर३, राजातलाव गहि पटअगार१३२
इम करत कुच प्रभु२०३पुनि विश्राम, नागोध ढंग ब्याहन जगाम
पुनि सुक्ला नवमी९ लग्न पाइ, ब्याहिय निसीथ मासाद आइ१३३
सो चंद्रभानु कुमरी स नाम, वानांग अप्प करि राम२०३ बाम ॥
अंसुकगृह आइ रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन ददाप१३४
नभ गगन नंद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधु१ बलि कृपाल ॥
विश्राम कुच्च करि करि रसेस, बुंदीपुर सुभ दिन किय प्रवेस१३५

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंह चरित्रे पञ्चदशो १५ मयूखः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अभ्र गगन नव इंदु१९०० सक, अनँगतिथी१३ आषाढ ॥
पक्ख असित बुंदीस पुर, प्रविसे प्रभु गुन गाढ ॥ १ ॥
तदनंतर भट्टिय प्रथित, जैसलमेरु जनेस ॥
मूलराज बंधुन समुद, आनिय डोला एस ॥ २ ॥

पट्पात्

कन्या राउल विजयकुमारि जीवन गुनगोरिय ॥
राउल ज्ञान द्वितीय२ गिद्धिकुमरी तिम आनियं ॥
पट्टप भीम२०४।१ कुमारकेर संबंध दुहुँन भनि ॥
प्रेषित अक्खि रु ताम किय उ सतकार महिप मनि ॥
केदारनाथ शिवके निकट बुरजसिकारहिँ हित विजय ॥
उपवन बहोरि ज्ञानहिँ अधिप रक्खिय रूपविलास रयं ॥३॥

॥ मनोहरम् ॥

ईसतिथि८ उप्परं कुमारं भीम लग्न काल,

ठ्याहन पठायो पहु बुरज सिकारकों ॥
राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
कन्या करग्राहन करायो कुमारकों ॥
अनल परिक्रम औ सप्तपदी आदि दैकैं,
वेदबिधि आये पुर तिहि बारकों ॥
नवमी९ दिवस रूपआदिक विलास जाइ,
ज्ञानसिंह तनया बिवाही गुरु५वारकों ॥ ४ ॥
ग्यारह सहस्स ऊन११०००लक्ख दुव२०००००रुप्पय औ,
तुरग द्विषष्टि६२ अरु कटक दुसत्त७२मो ॥
अप्प प्रभु सभ्य रविमल्ल कवि मास सुचि,
एकादसी११हूतैं बिजैदशमी१०लौं दत्तभो ॥
सुनिकैं उदंत यह जम्बुक विदेशहूके,
आये नैर बुंदी प्रभु दव्य अनुरत्तभो ॥
सुकवि समाज कृति मिलिकैं निवाजे आप,
बाजे जस ताजे जेके वजाइकतिपत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पज्झटिका ॥

अरु भ्रात कांटग्नि करि उछाह, औ द्वादस वलि आये बिबाह ॥
सो नाम सहित सुनिये रसेस, यह भीमसिंह आये ससेस ॥ ६ ॥
सामंतसिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
देव्यादिसिंह दुर्गापुरेस, सिवसिंह इंद्रगढके रईस ॥७॥
सकुटुंब कुमर सह अवर पाइ, आंजद अधीस पुनिराम आइ ॥
इत्यादिक आइ रु रहय एस, आदरतैं रक्खिय सब इलेस ॥ ८ ॥
करि सभा तास सतकार लेय, दै सिक्ख ताहि दिय वस्त देय ॥
इमकरि बिबाह--राम२०३आप,मोदित किय कविबुधभटअमाप९
इहिं अब्द१९००जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि११मानकाल

आदितःषट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

(दोहा)

इन लग हिंदुन अहरयो, छक्कि उचित रन छोभ[1] ॥
इन पिच्छैं नय[2] धरम तजि, लग्गे केवल लोभ ॥ १ ॥
पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रट्ठोर ॥
इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥
तिनपिच्छैं तुरकान[3] हुव, निज नय धरम निधान॥
पीढिन कछु अंतर परत, छंडी तिनहु कुगान ॥ ३ ॥
इत बुंदियपति अहरिय, कोटाउप्पर कोप ॥
इत आलम रन अंकुरयो[4], लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥
कामबखस आलम अनुज, अग्गैं जिहिं अवरंग ॥
भागनगर बीजापुरह, सूबा दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिं उप्पर ॥
धर दक्खिन धमचक्क सजिय बीजापुर संगर[5] ॥
बुधसिंहहिं बलईस[6] बिरचि अति कोप बढारयो ॥
कामबखसकौं पकरि मुढ़[7] आगस[8] बिनु मारयो ॥
बप्पके[9] दये छलकरि कुबिधि[10] लिय बीजापुर भागपुर ॥
सूबा सम्हारि सज्जिय अमल आलम अनय[11] उमंगि उर ॥६॥
इत कूरम रट्ठोर आय बिरहित अति आतुर[12] ॥
मेकलजा[13]सन मुररि उररि[14] हुव पत्त[15] उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५६ मयूख हुए ॥
१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नीति और धर्म में निधान ऐसे ३ यवनों का राज्य हुआ ॥ ३ ॥ ४ युद्ध में खड़ा हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ मूर्ख ने ८ अपराध बिना ९ पिता को दिये हुए १० बुरी रीति से ११ अनीति से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के विरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ उद्दंड होकर(धीठता से) १५ प्राप्त हुए

पुरिग्राम१५दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट॥१०॥
इक बिंदु अंक ससि१९०१वर्ष माँहिं, साहब अजंट बर्टन सु आँहिं
साहब सन सम्मुह प्रभु पधारि,हुव महलन दाखिल हितवढारि११
जयवती ताल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजंट पुनि प्रीति पाइ ॥
तस सिबिर द्वितीयक २ अहन आप, किय क्रमन महीपालक मिलाप ॥ १२ ॥
उत साहब सम्मुह आजगाम, करि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपवेसन तखत पाइ, उपवेसन साहब सभ्य आइ॥१३।
पुनि लैन दैन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन इष्ट भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य षष्ठी६अवाप१४
––अभिमुख पायंदाज जत्थ, मिलि कियउ परस्पर हत्थ मत्थ ॥
तदनंतर बैठिय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय बाम ॥ १५॥
बेलाल्प राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दै सिक्ख ताहि दिय वस्तु देय, धरनीन्द्र अप्प २०३ किय जो बिधेय ॥ १६ ॥
अब सुनहु प्रभू२०३इहिं अब्द१९०१अंत, इंग्रेजन किय जो रन उदंत
व्यासा१सतलुज२रु बीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सय गगन निधी अरु इक १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्रा-ऽसित भुवाल ॥
महाराजकुमर लघु रंगनाथ२०४।२,उद्भवन भवन भव सर्व आथ१८
लाहोर ईस तिनदिन दिलीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप॥
जबकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तससेना करि रु नास॥१९॥
वालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चंदा नाम तात॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन ॥२०॥
गुन गगन अंक इक१९०३अब्द आत, भो तनय भुजिष्या जठर जात

अभिधा नारायनसिंह आइ, बय बहुरि बाल्य पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
पहु रूल्ल मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं१८०३ पट्टनि भयउ हान
तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, ग्ननि प्रभू चल्लिय सामान्य वट्ट ॥ २२ ॥
सक वेद सून्य ग्रह इक्क१९०४ आत, पट्टन दुरवंट पहु अप्प पात॥
वलि केसव उच्छव हित बढारि, सित राधमास पट्टनि पधारि२३
दर्शन करि केसवके दिवान, अक्षयतृतीय३ दिन पुनि विधान ॥
उच्छव अरु पूजन करि रु आप,सब करि विधेय सिबिरहि अवाप
करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हांनदांन, वर्टन अजंट वलि कियउ आंन॥
चर्मण्वति घट्टोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ।२५।
साहब सपुत्र आइउ उहांहि, अप्प२०३सु पहु सम्मुह छ६पद आँहिँ
करि दुरदिस सीस कर भद्रभाखि,गालीचन साहब बाम राखि२६
बैठिय पहु गद्दी सित अवाम, अल्पहि पुनि बेला रक्खि आम ॥
वैश्रतर पान तस सिक्ख दिन्न,क्रम छ६पद तस पहुंचान किन्न२७
राजेन्द्र राध सित नवमि९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
सक बान गगन नव ससि १९०५ भुवाल, किय कुमर नरायन
सिंह काल ॥ २८ ॥
तप असित नवमि९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमारि जात
इहिं साक १९०५ अधिप परतापपाल, क्रिय नगर करौली भाद्र
काल ॥ २९ ॥
सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
रस व्योम अंक भू १९०६ वर्ष आहि, लाहोर इँग्रेजन लिय
उमाहि॥ ३० ॥
हय गगन अंक इक१९०७ होत साल, दुग्गापुर देवीसिंह काल॥
सुत संभूसिंहसु गिनिं आभिन्न, दुग्गापुर सासक अप्प किन्न।३१।
इहिँ सक१९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्मातैं कछु देस छिन्न॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज प्रविसे
सुवाल ॥ ३२ ॥
साहब अजंट तहँ मिलन काम, सो जानहु मारिसैंन नाम ॥
चर्मण्वति तरनी उतारि चाहि, आइय विद्यात उप्परि उमाहि॥३३॥
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज बहु हित बढारि
कछु समय राखि दै सिक्ख तास, पहुँचावन पायंदाज पास ॥३४॥
हुव दाखिल शिविरहिं हड्डभान, दिन द्वितिय२कियउ तहँ न्हान दान
करि कुंच बहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनंतर बीकानेर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानैं कछु प्रभुनैं हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक१९०९आत साल,कापरनि कियो बलदेव काल
सब मेटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा हलधर कियउ फेर ॥३७॥
रागिनि सेखाउति हड्डराइ२०४, उज्जाऽसित तिन दिन निधन पाइ
बर्मा उपवर्तन नृप बहोरि, इंग्रेजन लिय इक१दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक्क नव ससि१९१० समात,
प्रभु मिलन अत्थ सौधन अवाप ॥३९॥
किय करन दुइदिसकछु कुसल कागि, पुनि अप्प तखत उप्प-
रि पधारि ॥
वर्टन गालीचन रक्खि बाम, बेलाल्प रहि रु गए वस्त्रधाम ॥४०॥
उप किय अजंट अजमेर जान, अब सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एकादसि११आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पंचत्व पात४१
तदनंतर जीवाराम तात, ग्वालेरप जनकू नाम ख्यात ॥
कछु रोग पाइ तिहिं कियउ काल,सुत जीवारामसु भो भुवाल४२
सक भूमि इक्क निधि ससि१९११उदार, शुक्राऽसित दशमी१० शु-
क्रवार६ ॥

मदनेस फल्ल धीदा उमाह, कुमरार्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्याग अमित पहु राम२०१४आप, मोदित दिवाइ किय कवि
अमाप ॥
सक इहिं१९११इंग्रेजन रूससाह,आस्कंदन जीति रु कियउछाह४४
सय भूमि अंक ससि१९१२लगत साल, आयउ अजंट मेसन सु-
वाल ॥
जयवतिय ताल उत्तरन जास, आगत अजंट महलन हुलास॥४५॥
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि सय मिलाइ॥
उपवेसन गद्दी कियउ आप, आसन सु सभ्य रहि हित अमाप४६
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुब्ब किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार वंसनबहाल ॥ ४७ ॥
उद्वाह करन भेजिय इलाप, सह जन्य कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास९एकादशि११बुद्धवार४,इहिं लग्नभीम२०३पट्टपकुमार४८
राउल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलाबकुमरी सुहीय ॥
परनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति लिय महलन दिवस बाम॥४९॥
गुन भूमि अंक मृगअंक१९१३साल, किय इंदगढप सिवसिंहकाल
संग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिय महाराजा कुबट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहब मोटि अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥
हुव अजंट हड्डोतिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥
बलानाथ इहिं सक बहुरि, मोद्यासित नरपाल ॥
रंगनाथ२०४।१सिंहहिं कुमर, किय नागोधहि काल ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-
सिंहचरित्रे षोडशो मयूखः॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वेद इंदु नव ससि १९१४ वरस, तपा मास सित पाइ ॥
पहु हलधर पंचत्वपन, पुरिराम१५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥
तव कापरनिय तस तनय, रामसिंह नरराज ॥
आइय वनि महाराज इत, गौरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अप्प २०१३ जो पहु तदनंतर, उज्जा८।३सित एकादशि११ वासर ॥
जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥
याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्जावत्तज मनुज फिरे मन ॥
सत्तर७०ही पलटनके स्वामी, साहिव रैटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥
सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥
तामैं मेघजीन खल्लासिय, ए उदंत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥
इकदिन आयुधीय तहँ आइय, खल्लासी जातैं दक मंगिय ॥
तवहि अदेय आयुधिक अक्खी, जव खल्लासि वात यह भक्खी॥६॥
मेद मिलित टोटन गो१ सूकर२, रद छेदन करिहो तव सत्वर ॥
जातिहु जवर पुराय फल पैहो, दक जव हमहिं पानकों दैहो ॥ ७ ॥
इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सव अज्जन वह वृत्त सुनायो ॥
तव कप्तान रैंट तिन्ह मारि रु, इकदिन सर्व छावनिन जारि रु ॥८॥
ससुत मैंम साहव वहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥
सुनि यह कौन दयो तव सासन, वाहिनि जाहु उपद्रव नासन॥९॥
सेनासहित लार्ड तव आये, कारेजन सव मारि भगाये ॥
दिल्ली साहवहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥
पकरि सोहु तव साहव भेजिय, पिंसन करि रु कपमहँ रक्खिय ॥
तदनंतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह२१२ महाराव जु नामी ॥११॥

कायथ जैदपाल१ तस किंकर, भो महरापखान२ अनुचित धर ॥
मैंम१ पुल२ सह बर्टन३ मार्यो, वैभव लूटि सदन तस वार्यो १२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौं, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौं ॥
॥ १३ ॥

सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूवर ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेसिय, जैदपाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तब -क सजायो, अति अमर्ष कोटापुर आयो॥१५॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥

जैदपाल१ महरापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रु वैभव सब१६
भीरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंधि बिजय साहब बल वज्जे ॥
मेटि सकल बिग्रह पुर करि मह, साहब गो अजमेर सेनसह।१७।
सक सर भूमि नंद ससि १९१५ जानहु, पुरिखाम१५ तिथि इस७
सुक्क१ प्रमानहु ॥
देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुर, मृत गोविंदकुमारि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैंनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नों. बुंदिय मुलक धाटि बस किन्नों१९
पहु तब तापर चक्क पठायो, रहि बन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्क कि-
य आवन ॥ २० ॥
हय भू अंक इक १९१७ मित हायन, फग्गुन१२ असित२ त्रयोद-
सि१३ पावन ॥
यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रतिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रु निमंत्रित भूधन२१

कवि रविमल्लहिँ दियउ कृपाकर, वलि भूदेवहिँ वित्त दियउ वर
तिनदिन भोमसिंह२०३तदनंतर,लागो चलन कुमग्ग अनयकर२२
विगरन राज्य उपाय सु वलि किय, मीनैं मनुजहिँ सरन अमित दिय
जव प्रभु अप्प इहाँतैं सुभजन,भेजिय भोमसिंह२०३समुझावन२३
जाइ रु तिन अति नय समुझायो, इक्क न वृत्त तास उर आयो ॥
उत्तमांग विलुनक्क कहिय इम,कहो विचारि ललित लग्गैं किम२४
इम सुनि सव बुंदीपुर आये, तास उक्त सव वृत्त सुनाये ॥
सुनत गहन मैंनन मारन सन, भेजिय चक्क गोठपुर भूधन ॥२५॥
ग्राम घेरि मैंने इन संगिय, नहिँदै कहि रु भोम२०३ रन मंडिय ॥
जव कुमार अर्जुन कलिकिन्निय,दुसह ताप तोपन तससिरदिय२६
कतिदिन कलह भोम २०३ गोलिन किय, भीरुक्क वनि रजनी
वलि भग्गिय ॥
नृप २०३ तस ग्राम सकल जव छिन्निय, कुमर सचक्क आगमन
किन्निय ॥ २७ ॥
वसु वसुधा निधि इंदु१९१८अब्द मित,आवन किय वेलन अजंटइत
पुव्वरीति सम्मेलन पहु किय,दृढ दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय२८
तदनंतर इहिँ सक१९१८इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन॥
पुनि सु विठूर भेजि गल अप्पिय, वोये वीज तास फल पक्किय२९
वाजेरायज एह वखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
वलि वडोद संग्रहि संन्पासन, सोपुरपतिहिँ दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिँ वहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
संभूसिंह पट्ट तस पावत, जे अंकस्यन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

संवत इक्क निधि अंक ससि१९१९ तेरसि१३तैस१०रु स्याम
श्रीगङ्गोदक क्रम स्रवन, राजराज किय राम२०३।४ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब बेद बिधि, पहु अप्प कर कारि ॥
सुभ मुहूर्त उड्डुर्गतैं, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुत सहित ––– पडवा१पयान, दुबजान प्रवेशन किय दिवान ॥
भौजिष्य भ्रात त्रिक३ कियउ आन, ॥ ३४ ॥
अह बहुरि तृतीया३ आर३ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥
करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस॥
लै लंचा सामाजिक समाप, अंसुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥
सितपक्ख पंचमी५ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रपात ॥
विश्राम करत चोरू बलाप, तहँ सुजन टौंकपतिके अवाप ॥ ३७॥
दोलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छद लै आये दुव२ सिताव ॥
सु अजीटग्ग अबदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान॥३८॥
सामाजिक किय दुव रचि समाज, करि नजर अरज कियहद्दुराज
पहु सामकीन अधिराज एह, नाणक रु सहस्र १००० नय करि सनेह ॥ ३९ ॥
कंडोल द्राग्हूरादि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥
महिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अप्प ऊंदद–धार ॥४०॥
उडुनाथ उदित रस६ घटि अवाप, दै सिक्ख उज्झि पर्यस्ति आप॥
पुनि दुरहुँन सभा बुलवाइ प्रात,सिरुपाव दियउ छदहित दिखात४१
चंक्रमन सप्तमी७ चाहुवान, आमिल माधवपुर कियउ आन ॥
तस नाम जवाहरमल्ल१ तात, अरु नायब बाजूलाल२आत ॥४२॥
तिम नायब जन मनसुख३ तृतीय३, तित मुनसी नारायण४तुरीय॥
ए सम्मुह आये अद्धकोस, सुभ अरज नस्तरकि गत सतोस ॥४३॥
हुव दाखिल पटगृह हद्द भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, डुंगर मलारनें किय मिलान४४
पद्ऊन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय विश हाकिम रामलाल ॥
सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम,रहि तहाँ रत्ति धरनीन्द्रराम४५
वाटोदे दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पन्नालाल आत ॥
लै लंचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह अवाप४६
उग्गत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगढ पटअगार ॥
आइउ द्विज आमिल अद्धकोस,सिवदीन सु लंचा किय सतोस४७
अंसुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत्त नारायनाऽऽस ॥
रहि द्वार कराइय अरज जोहि, व्है हुक्कम सरवराकेर मोहि॥४८॥
तापैं पहु अक्खिय तावकीन, है रीति इक्क१ हम लियउ तीन३ ॥
हमरै रु परस्पर एकवत्त,अब जानो यह तुम अप्रमत्त ॥ ९
इम सुनि उ कराइय अरज एस, सामग्री किय पुब्बहि असेस ॥
सब पुब्ब माफ करिहे सुसंध, व्है हुकम ततो दैहौं प्रबंध ॥५०॥
सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तब दियउ सरवरा दल असेस
आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
मच्छीपुराप बलवंत आइ, करि नजर पुहप कंडोल काइ ॥
किय नजर सबिबी अप्प केर, प्राभृतक कियउ महिषी सु फेर५२
वैतनिक१ बाहुभव२ जोहि सत्थ, सतच्यारि४०० सग्धि करवाइ
तत्थ ॥

अंतेउर वेसिय शिविर आइ, पहु रहिय तहाँ इम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदै पुनि हुव शिविर आन ॥
तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, श्रावक सुहि चुन्नीलाल आत५४
किय बलि वजीरपुरकेर आन, आमिल सु उदयचंदाभिधान ॥
लै भेट तास दै सिक्ख आप, अंसुकअंगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
हिंडोंनि पात तेरासि१३ अनंद, आमिल वहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलग नजर आइ, तहँ फेर रुद्र११ तोपन कराइ।५६।
लै सिक्ख गयो हाकिम सतोस, पहुँ कियउ शिबिर आगम मदोस
हिंडोंनितेँहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
नामसु———————————, गोपेश्वरसरखा सु देवराव ॥ ५८ ॥
अधिकारि नरायनदास आइ, रहिद्वार मिलन बिन्नति कराइ ॥
तब कहिय अप्परविचाहुवान, मान्योहम पुरिखाम१५मिलनमान५९
पुरिखाम१५ सर४ नाड़ी चढि पतंग, अधिराज मिलन हंकिय उमंग
पटग्रह गोपेश्वरसरखापाइ, अधिराज नमन करि भेट आइ ॥ ६० ॥
रहि पहर इक्क१धरनीन्द्र राम२०३।४, अंसुकअगार पुनि आजगाम
तप असित द्वितीया२दिन दिवान, सूरैट महिप दिय तिममिलान६१
तिथितीज३बयानें किय सुकाम, हाकिम तस आगत मिलन राम
बलदेवसिंह तस नामधेय, इककोस आइ सम्मुह अजेय ॥६२॥
मातुल सु भरतपुर महिप केर, तजि तुरग नजर करि गयउफेर ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाड़ी१इक१रहतहि अहन सेस॥६३॥
तत्रत्य सुजन पटद्वार पाइ, पकान्न द्व्यंक९२मन भांड लाइ ॥
सरसतक५००बहुरि नाखाकन सत्थ, महिमानिक सामग्री समत्थ६४
सुदपाइ पहू यह मामलीन, भेजिय सु अत्र इम अरज कीन ॥
रक्खिय सु सर्ब सो सुनि रसाप, इम लंचा लै दै सिक्ख आप६५
तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आइ॥
तजि तुरग सभा करतहि प्रबेस, सम्मुह द्वि२पैंड क्रमकरि जनेस६६
बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
सँल्लाप दु२दिस हुव सब बहोरि, एकांत करन कहि सुभटओरि६७
बाहिर उपवेसन करिउ सर्ब, रहि अप्प मंत्र कारन अखर्ब ॥

दहवारी दिस इक्क हुते वहुरा[1] सु विनायक ॥
आय रान अमरेस तत्थ भिंट्यो छल तच्छक[2] ॥
तीनहुँहि नरेस कंकान[3] तजि मन प्रसन्न बत्थन मिले ॥
रानहिँ निहारि भूपन दुहुन रखूबिँध[4] हिय पंकज खिले ॥७॥

(दोहा)

अग्गैं रान प्रतापसे, भये अरातिन[5] भीम ॥
आयसहू[6] नहि अद्दर्यो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥
साह सिकंदर जुल्लिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥
अग्गैं हिंदुन जित्तिकैँ, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥
तिनतैं अबलग नहिँ तक्यो, सीसोदन गिनि साँह[7] ॥
यह कुल राउल बप्पको[8], रक्खैं हिंदुन राह ॥ १० ॥
पुर आमैर रु जोधपुर, साह सुभट[9] सरसाय ॥
आलमतैं अब तोरिकैं, उभय उदैपुर आय ॥ ११ ॥
अमर रान अति मोद करि, भिंट्यो[10] सनमुख आय ॥
कूरम तहँ जयसिंह कछु, चरनन हत्थ चलाय ॥ १२ ॥
पक्करि हत्थ हियलाय[11] तब, कहिय रान अमरेस[12] ॥
भूपति मैं पावन भयो, आवन दुहुँन असेस ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥
महलन परिखद[13] मंडि उभय रक्खे अवनीसुर ॥
बाहिर परिखद लंघि रान सम्मुह पुनि आयो ॥ ॥

---

१ वहुरा विनायक बालक [गणेश] २ छल को काटनेवाला [यह महाराणा का विशेषण है] ३ घोड़े छोड़ कर ४ खुशी से ॥ ७ ॥ ५ शत्रुओं को भयंकर हुए ६ हुक्म ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ बादशाह अर्थात् उनको सदैव ही शत्रु ही समझे बादशाह कभी नहीं समझे ८ बापा रावल (इनका नाम महेन्द्र और उपपद बापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ बादशाह के उमराव ॥ ११ ॥ १० मिला ॥ १२ ॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अमरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ सभा

बलि भीम २०४१? कुमर पट्टप भुवाल, वहुरा अमात्य जविन सु
लाल ॥६८॥
करिमंत्र उक्त सबही समेत, दुव२ याम वजत तिहिं सिक्ख देत ॥
छट्ठी६ दिन चढ्ढत एक जाम, बलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजरि हुव संसद करि सलाम, करि नजर निछावर मिसल वाम
उपवेसनकिय अथ सुभटतीन३,कछुसमय१वत्त शास्त्रोक्त२कीन७०
तत जाम उपरि वज्जत तृतीय३, सिरुपाव सिक्ख दै गनि स्वकीय॥
बलि आइ करोली जादवेन्द्र, सो मदनपाल मेलन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
बलि होत सप्तमी७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अपार ॥
रवि चढत जाम इक१ राजराम, किय कमन शिविर तस मिलन
काम ॥ ७२ ॥
तजि तुरग प्रवेसत तहँ भुवाल, अभिमुख तब आइय मदनपाल ॥
मिलिकरि रु परस्पर हत्थ मत्थ, तत मेलन खंधा जुट्ट तत्थ॥७३॥
मिलि वहुरि महाराज सु कुमार, पूर्वोक्त रीति करि सब अपार ॥
इम दुव२हि गद्दिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ॥७४॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अवाम, पुनि मदनपाल बैठिय सवाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सर्व,दुहुँ२ओर भयो इम सभा पर्व॥७५॥
सारीर वत्त समयानुसार, करि कमन कियउ पहु मुद अपार ॥
पहुँचावन आइय मदनपाल, डोढीलग पूपा मध्यकाल ॥ ७६ ॥
सप करि रु परस्पर वहुरि सीस, स्वस्थान गयो जादव सुधीस ॥
उपवेसन सिविका अप्प आत, दस सत्त१७फेर नालिन करात७७
पहुअप्प सिबिर आइय प्रजेस, नाडी इक१ रहतहि पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउ उताल७८
नरयान छोरि पटद्वार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सप दु २ दिस वहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुव२हि आमोद

आक्खि ॥७९॥
उपवेसन किय हुव२तखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सव्य पाइ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४१ तात, अरु कुमर हुवरहि भोज्जिग्ग भात ॥ ८० ॥
सुभट जु बलि आत्मक रहि सु बाम,रक्खिय सु महामात्रादि रास
सम्मुह सु सर्ब कवि बुधन ढल्ल, मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
लालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥
तलाल१ टलाल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इम राखि सर्ब अप्पन भुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
अपसव्य चारभट तास रक्खि, अरु उचित समय वृत्तांत आक्खि॥
निस जात घटी त्रय३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूब्ब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥
आमोद दुहुँ२न इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उग्गत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभेरै शिविर आन ॥
नवमी९ सु भासकर बुध मिलंत,किय शिबिर फतेपुर धरनिकंत८५
कायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल॥
प्राभृतक निछावर करि सलाम,पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
दसमी१० दिन मंडा कर मुकाम,द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम॥
पुनि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिबिर चउद्दसि१४हलुराय ॥८७॥
करि कुच्च अमावसि३० सोमवार२, हुव दाखिल छतरस पटअगार
सित पड़िवा१मंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवाप॥८८॥
बुधवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंदर शिबिर जाइ ॥
मोहन पुर चोथी४ दिन मुकाम,बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
छट्ठी६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिबिर जाइ ॥
आप्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

करि सवन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गोर२ बाजी३ छिति ४ नृजान५ ॥
उष्णीप आदि सिरोपेन तत्थ, दिय दान सु गंगागुरुहिं तत्थ ॥९१॥

॥ दोहा ॥

गंगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥
दें पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व बिमान ॥ ९२ ॥
वस्त्रसदनके द्वारतें, इम दुव२गुरुहि चढाइ ॥
महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥
गुरु नारिन दै वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥
इक निसान सादी कतिक, दे तस सद्म पुगाइ ॥ ९४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि१ फग्गुन असित पुनि, गंगधार तजि गेय ॥
मोहनपुरहि मुकाम बलि, सब करि वेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत पयान श्रीदिवान राम दूजी२तिथि,
गाम काचनगरसो सिविर सुहातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सुक्रवासर बलापतिहू,
सैदाबाद आइ सुभ थूलन तनातभो ॥
फग्गुन चउत्थि४ स्याम सहादरे धाम राखि,
अकबरनेर पष्टी६ दिवस दिखातभो ॥
साहब अजंट नाम वेलन१ बुरुक२ द्वे२हीं,
सम्मुह दिवाप चढें नाड़ी गुन३ आतभो॥ २ ॥
करिकैं सलाम ओ परस्पर भविक भाखि,

साहब सहित अप्प डेरनलों जाइकैं ॥
अकबरनेर गये साहब दुर्सिक्ख लैकैं,
अप्प प्रभु सिविर प्रवेसे हरखाइकैं ॥
एकादशी११ मंदवार जाम जुगर बज्जतही,
हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥
बेलन अजंट ओ सिकत्तर द्वैर साहबहू,
सम्मुह दसक१० अप्प डोरिनलों आइकैं ॥ ३ ॥
जातहि समीप लार्डसाहबके बस्त्रधाम,
आये द्वैर सिकत्तर न जानें ताके नाममें ॥
रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,
लैगये पहूकों लार्ड साहबके धाममें ॥
दी आनरेबल दी अर्ल आफ ऐलगिन,
आयो ऊठि सम्मुह त्रि३पैंड मेल काममें ॥
सीस कर करिकैंहू दुर्दिस संलाप श्रेय,
बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आममें ॥ ४ ॥
समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,
कालोचित्त बत्त करी राजराज रामनें ॥
अतर लगाइ पान दैकैं सकुमार लार्ड,
उट्ठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनें ॥
होत अश्ववार लार्डकेर तहँ तोपनकें,
सप्तदस१७ फैरहु कराये नेह नामनें ॥
पाइ इम लार्ड प्रीति अंसुकसदन आइ,
उज्झ्यो कटिबंध यों अतीत जुग जामनें ॥ ५ ॥
आर३वार असित चउद्दसि१४ तपस्य दिन,
बेलन अजंट आये पहु पधरानकों ॥

अरुहि अजंट उक्त अप्प पहु अस्वरथ,
सेना सह त्वरित पधारे लाई थानकों ॥
पट्टप कुमार भीम२०४११ अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ बावातिक अंतः प्रविसानकों ॥
जीवन अमृतलाल वीर बलवंत भट्ट,
सत्थलें दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥ ६ ॥
तखत वितस्ति इक्क१ उच्चक बिछाइ तापैं,
जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
बैठिकैं बुलाये लार्ड भूप रजवारकेर,
सव्य अपसव्यहू बिठाये क्रमतें तहाँ ॥
बेगम भोपालकी१ अपसव्यहू बिठाई पुव्व,
सन्निधि सिकत्तरो२प्रवेसन करयो वहाँ ॥
असि तास हेठ ग्वालियरको नरेस जीवा३,
आसन अजंट कह्यो अप्प४को पहु चहाँ॥७॥
भरतपुरेस५ भूप अप्प अध बैठो इम,
महाराव कोटा रामद तातर बिठायोहै ॥
उत्तर अधीस७ अलउरको बिठायो तहाँ,
तास अध टोंकके नवाब८ थान पायोहै ॥
झालाकेर पट्टनिको राजराना पृथ्वीसिंह९,
रामपुर नवाब१० उत्तरोत्तर गायोहै ॥
अेक अधिराज अपसव्य लार्ड बैठो सब,
जानहु जनेस अब सव्य क्रम आयोहै॥८॥
जैपुरजनेस राम१ आसन सु सव्य कारि,
रजीडंट लारनस२ईस रजवारको ॥
इतर अजंट३ ओ सिकत्तर४ सु संसधाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछैं तास,
आत्मज औ भ्रात उपवेसन सुढारको ॥
जाके पिछि सुभट औ सचिव बलीय स्वक,
ऐसैं करि आमकह्यो धामजपधारको ॥ ९ ॥
राखिकैं कितेकबेर संसद बहुरि लार्ड,
सिरोपाव१ दत्तभो सु माला मुकतानकी ॥
अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
उठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
आरुहि तुरंगगति शिविर चुहानकी ॥
रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥१०॥
दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
मध्यदिन शिबिर पहूके आसु गाइकैं ॥
अंसुकसदन द्वारउज्झत तुरंग रथ,
सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
भविक भनाइ भनि संसद सलार्ड जाइ,
बैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्तद सब लंचा लै रु,
दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद जमाइकैं ॥ ११ ॥
द्वादसी८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
आगरा किलद्दर बरून मेल आयोहै ॥
जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
सहित प्रजेस२०२।२ ताहि विष्टर बिठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खिकैं कितेक वेर,
संक्रम चुहान साहबकों दरसायोहै ॥
जामिनी जुगल२ जात नारीजन नाथ अप्प,
आरुहि क्रमन काज बलन बढायोहै ॥ १२ ॥
सिविर बरोदै सावरोध गाम नेसै आइ,
वासर सु तेरसि१३ फतेंपुर वितायोहै ॥
चतुर्दसी१४ चंद्रवार४ नभेरै मुकाम करि,
शिविर बपानै राका दिवस१५ सुहायोहै ॥
पड़िवा१ – अर्जुन२ अधीस२०३१४ इम मधु१ श्राम,
गाम – सूरेट धाम स्वजन –नायोहै ॥
मंदवार७ दूजी२तिथि हइन अधीस इम,
रहत हिंडोनी बल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
करोली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
अभिधा ओंकार१ ओ मलूकपाल२दोलसिंह,
मंत्री बलदेव ४ ए बलदेव सभा थानकों ॥
मुजर ओ नजर निवेदि लै मिसल कह्यो,
भाबुक भनायो भूप जादवके भानकों ॥
बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि––,
ओमिति करोगे तूर्ण सबलक आनकों ॥ १४ ॥
अंगीकार तास अरज करि तृतीया३ दिन,
शिविर बरोदाको कृपाल करवायोहै ॥
दिवस चतुर्थी४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
कोस इक१ तटिनी करोलीतैं उतरि नीर,

आइ अस्वाक ठाढो रहि रु जितायोहै ॥
वावा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ मुस एस भावुक भनायोहै ॥ १५ ॥
महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह२०४।१,
अस्ववार अप्प२०३।४ मिले सदन प्रजापतें ॥
दुहुँओर मुजरा स्वसोस सप भव्य कारि,
चंक्रम जुहान करयो सव्यक जु आपतें ॥
उतरि नदीज जल उभय२ बिछात आइ,
गद्दीकोपवेसन ससव्य मुद मापतें ॥
आप अपसव्य प्रभु रहिकें बिराज तहाँ,
पट्टप कुमार२०४।१ बैठे पच्छिम मिलापतें ॥ १६ ॥
सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
जीवनादिलाल छिक सम्मुह बिठायोहै ॥
बालू२ दिशान औ ओंकारपाल२ अनपसव्य,
सव्य रहिकें किर्तावेर मनन मिलायोहै ॥
अस्ववार होइ दुव२ भूपन क्रमनक्रम,
सुभट समाज और पुव्वक्रम पायोहै ॥
नगर करोलीके समीप भो शिविर तहाँ,
प्रभुके प्रवेसतें जु वदन उम्हायोहै ॥ १७ ॥
सेस दिव तत्व५ नाड़ी रहत करोली भूप१,
बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहै ॥
पक्ष एक अन्न चत्वारिंश४१हूके भाड पुनि,
पंचशत५०० नाणक सनेह दरसायोहै ॥
नजर निवेदि भव्य भाखिकें जुहार जिम,
पाइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहै ॥

तीन३ अग्ग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक१,
पक्क अन्न सेना सबन भति दिवायोहै ॥ १८ ॥
पंचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाड़ी च्यारि४,
महल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
महाराजकुमर सु नाम भीमसिंह२०४१९ वलि,
अर्जुनादि भ्रात तीन३ वाबा ता नृपालके ॥
प्रासादन द्वार जात सेन सह हड्डइंद,
सत्तदस१७ फैर सु कराये अपनालके ॥
अंदर जु चौक लग जातहि मदनपाल,
अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
करिकैं करन सीस दुर्दिसही भद्र भाखि,
सव्य सातमी – पहु धारे संसदाममैं ॥
स्वीय सुभटालि सर्व वामहि विठाइ राम२०३१४,
आप अपसव्य राखि बैठो तखताममैं ॥
पट्टपकुमार भीम२०४१९ और शिवदान भ्रात,
अप्प२०३१४ दिस बैठे बीच गद्दिका अवाममैं ॥
सुभट स्वकीय अन्य संहति सचिव सर्व,
ऐसैं आम वाम रची सभा सुख धाममैं ॥ २० ॥
करिकैं कितोक काल नरप अतीत तहाँ,
हड्डइंद२०३१४ सिक्खलै पधारे निज थानकौं ॥
मंजु क्रम तुरग अरोहन अधिप उद्दौं,
पुव्वक्रम जादवेन्द्र आयो गहुवानकौं ॥
आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
सप्तोत्तर दसक१७ कराये फेर जानकौं ॥
जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द्र राम२०३१४,

नेह करि प्रबल प्रवेसे सिविरानकों ॥ २१ ॥
सप्तमी७ दिनेस पंच५ रहतहि नाड़ी सेस,
करोली मदन भूप स्वीय शिबिरायोहै ॥
अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
हड्डन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
अप्प दच्छि नासा तख्त उपरि बिठायोहै ॥ २२ ॥
अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
पुव्व लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
जादवन नेता गयो जेता निज थानकौं ॥
अट्ठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
आगत अधीस२०३१४ सभा बिहित बिधानकों ॥
आदमीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
पिष्ट आदिक समस्त बस्तु —— दानकों ॥ २३ ॥
ऐसैं राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
सिक्खदैन एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
ताजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेस पात,
सम्मुह तहाँही अप्प आवन रचायोहै ॥
संसद पधारि सव्य रहिकैं बहुरि आप,
भद्रासन ताहि अपसव्य बिठवायोहै ॥
एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
पाइकैं प्रवृत्ति पहू प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
कुच्च सर१५ जात नारी रति करवायोहै ॥

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥
कर दुहुँन२थंभि निज संग करि हुलासि खास परिखद हल्लिय ॥
उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन मंत[1] एकत्त[2] किय ॥१४॥

(दोहा)

बह्निनी बुद्धहिँ जानि इत, देवसिंह तखतेस ॥
बेघमतैं द्रुत[3] आयकैं, मिल्यो[4] रान नरेस ॥ १५ ॥
दिलखुसाल[5] प्रासादके, गोख मध्य पगधारि[6] ॥
बैठे भूपति तीनही, चोरो गद्दर डारि ॥ १६ ॥
मध्य रान अमरेस[7] अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥
दक्खिन दिस रट्ठोर नृप, इम रहि सज्जिग साम[8] ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीसोद नृपति प्रति ॥
तुरकनको नहिं तोर[9] भयो सब जोर मंद गति ॥
राजाकुल तुमरो सुं[10] रुद्द हिंदुन तुम रक्खैं ॥
जोखा[11] दिल्लिय जार प्रबल आनन[12] तुम पक्खैं ॥
साहसौं तोरि हम आय इत राज धरम साहस परखि ॥
हिंदुन हुँकारि[13] हिंदुन अवनि हिंदुनपति[14] भुग्गहु हरखि ।१८।

(दोहा)

इत बुल्ल्यो रट्ठोरनृप, हम रावरे सुभट्ट[15] ॥
भुग्गहु अज्जाँवत्त[16] भुव, लहि दिल्लिय पुर पट्ट ॥ १९ ॥

(मुक्तादाम)

---

१ मंत्र (सलाह) करने को. २ एकत्र (इकट्ठे) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥ ५ दिलखुशाल नामक महल के झरोखे में ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह ८ मिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ योषित (स्त्री). दिल्ली रूपी स्त्री है सो तुम जैसे प्रबल जार का १२ मुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हिन्दुओं की भूमि को १४ हे हिन्दुओं के पति हर्ष के साथ भेजो १५ उमराव १६ आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥

गाम कुर१ आइ थूल राखिकैं द्वितिय२ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसहालगढ२ पायोहै ॥
अमावसि३० अनेह संक्रमन चुहान करि,
बाटेंदे३ बलाप चक्र पत्तन करायोहै ॥
पड़िवा१ बलछ्छ काव्य वासर बहुरि राम२०३१४,
ग्राम कमलारनैं४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुव्व सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी९ पुप्प तड़ाग निस, समुचित कियउ स्वधाम ॥ २६ ॥
लीलीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअंत सिरदारके, उपवन किय थुल आन ॥ २७ ॥
राधर श्राम सित१ दोजि२ दिन, वलँज उदीचि विसाइ ॥
मग्गराज छलकमहल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे अष्टादशोमयूखः ॥१८॥

॥ दोहा ॥

मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भेजिय एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २ ॥

(पद्धतिका)

कर सीस परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड आइ॥
विष्टर सु लार्ड राजत विठाइ, उपवेसन वाम सु अप्प पाइ ॥ ३ ॥
प्रभु हेठ बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन त्रि३ बंधु बैठे उदार ॥
तदनंतर बैठिय सुभट सत्थ, पुनि सम्मुह जीवनलाल पत्थ ॥ ४ ॥

लघु तास सहोदर अमतलाल, मंत्र रु रहस्य यात्रिनि कमाल ॥
तातर वकील तस जानि नात, पहु आस अप्प दिस सर्व पात।५।
अरु काल उचित संलपि उदंत, करटा१ तुरंग२ लंचा करंत ॥
सिरुपाव पंच५ तखती समान, बहु प्रीति निवेदिय चाहुवान ॥६॥
पहु बहुरि समप्पि रु अतर पान, पहुँचान कियउ जिम पुव्व आन
चढितुरग यान साहब चचार, अवनीसन इतरन थुल उदार ॥७॥

॥

॥ ८ ॥

॥

॥ ९ ॥

लै सिक्ख प्रभू इम करि मिलाप, अतिप्रीति करौलीपुर अवाप ॥
दसदिवस रहि रु चल्लिय दिवान, प्रविसे बुन्दीपुर हट्टभान ॥१०॥
नभ नयन नंद महि१९२०साक मान, कन्या सु भद्रकुमरी सुजान
जिहिं कहत भुजिष्या जठरजात,अरु ब्रध्नकुमरि भौजिष्यजात११
जानसाह दुर्गापुरप जात, करग्रहन दुहुँ२न इक१ दिन करात ॥
सहमास ९ द्वादसी १२ सोमवार २, इहिं लग्न दु २ बर आइय उदार ॥ १२ ॥

रजनी बहोरि इक१ पहर जात, दुल्लह दुव२ तोरन उपरि आत ॥
करि कसाघात अंदर अवाप, तहँ बेदरीति तनया ददाप ॥ १३ ॥
तखतेस जोधपुर ईस पुत्त, सिरदारसिंह सुभ गुनन जुत्त ॥
दिय ब्रध्नकुमरि ताकों उदार,किय भोम२०३दान कन्या कुमार१४
हरसोर लाल सुत पुनि प्रताप, कन्या सु भद्रकुमरी ददाप ॥
मन्मथ तिथी१३ सु-गोरन जिमाइ, पुनि रक्खिय कति दिन प्रीति पाइ ॥ १५ ॥

दायज सम दुव२ हित पुनि समप्पि, सोदर जामाता सखि अप्पि॥

करि कुंच जन्य सह मुद अमाप, दुल्लह स्वसद्म मरुधर अवाप॥१६॥
अर्जुन१ गोवर्द्धन२ जगन्नाथ३, ब्याहे सु जोधपुर इक्क साथ ॥
तपमास असित षष्ठी६ सु सेस, सह्रिय सु लग्न इन विधि असेस१७
अधिराज सुनहु पुनि हुव उदंत, फग्गुन सित नवमी९ बुध मिलंत
मतिमान भीम२०३ पट्टप कुमार, महती कुमरानी गद ममार॥१८॥
मधु१ मास चउद्दसि१४ पुनि वदात, विग्रह स्वरूपलतिका विहात
ससि नयन नंदभू१९२१लगत साल,आगत अजंटसाहब उताल१९
सो पोलपाट इहिं नाम ख्यात, प्रभु तास रीति मेलन करात ॥
करि अतर दान सतकार किन्न,पटगृह पधारि तस सीख दिन्न२०
हुव नयन नंद ससि१९२२अब्द आत, सहमास९चतुर्थी४दिवसपात
कासीहु करन जात्रा जनेस, पटगेह प्रीति सहकिय प्रवेस ॥२१॥
लिय सत्थ भीम२०४पट्टप कुमार, भौजिष्य जगन्नाथहि उदार ॥
पटरागिान लिय पुनिप्रीतिहारि,पुनि बुरजसिकारहिँ रहि पधारि२२
तैषाऽसित तेरसि१३दिन दिवान,प्रभु अप्प२०३सवाहिनिकरिमयान
दुवलान द्रंग दिय पहु मुकाम, दूजा२सु नयनपुर दिय विस्राम २३
विश्राम समीधौ तिम तृतीय३, किय पुनि मुकाम चोरू तुरीय ॥
इमकरत मुकामन अधिपआप२०२,पतिमुद प्रयागनगरी अवाप२४
अनलांबकअतिधृति१९२३लगत साल,मनु१मास असित स्मरति
थि१३ नृपाल ॥
वलि इह्व भानु आंगिरस५वार, उड्डीसपुरी वेसिय उदार॥२५॥
निर्वाहि वेदविधि कियउ न्हान, दिय इक पंचाशत५१ पुहविदान॥
नागोध राघवेन्द्रहि समत्थ, किय भीम२०४कुमर सम्बंध तत्थ२६
अरु जगन्नाथ भौजिष्य एम, पुनि वीरसिंह कापरनि तेम ॥
करि तिलक वहुरि दे नालिकेर,सित सुक्र दसमि१०दे लग्न फेर२७
नागोध गमन किय राघविंद, चंक्रमन कियउ पुनि इहइंद ॥

नागोर्ध नवमि९ पंगगृह पधारि, भेजिय उन सेवन हित बढारि॥२८॥
सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, सद्धिय सु लग्न पट्टप कुमार॥
बलि वीरसिंह तस२०४०याहि साथ,करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
इनमाँहिँ राघवेन्द्राभिधानं, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दान॥
सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३ ॥३०॥
सुचि४असित२त्रयोदशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठक्कुरउदार २०२
इरवंशराय तनया सु आहि, सुभ नाथकुमारि प्रभु अप्प०याहि३१
सुचि४सुक्ल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३
इम चलत मुकामनकरत आए, हिंडोन हड्ड अधिपति२०३अखाप३२
महिपाल करोली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल॥
सो जानि सभा करि लिय बुलाइ, आहूत मलुकपालादि आइ।३३।
गौरव प्रभु मुजरा करत दिन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न
जय मदनमोहन–जन स्वकीय,कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४
कर उत्तमांग करि अधिप आप,दृढ क्रमन अक्खि सीख सु दखाप॥
ज्येष्टाह६ऽर्जुन नवमी९करि मयान, विश्राम बरोदहि दिय दिवान।३५।
चंक्रमन करि रु दशमी१०चुहान, इक१ —— करोलीतैं दिवान॥
अहिफेन बेल रहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६
मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ॥
मिलि दुव२हि बच्छतैं उर मिलाइ,उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७
अधिराज प्रीति सह पुनिअभिन्न, नालकिं उपवेसन इक्क१किन्न॥
अरु मिलि दु२सेन मुदजुत अमाप,वसनोक करोली दुव२अमाप३८
तहँ घटी इक्क१ रहि पुनि उताल, पुरप्रति किय जावन मदनपाल॥
रहि दिवस तिथी१५ तहँ हड्ड राम२०३, कुरगाम नाम वालि किय
मुकाम॥ ३९॥
इम करत कुच्च प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम॥

कोटेस राम २१२ इहिं १९२३ साक माँहिं, अरु राध२ चउद्दसि १४ सुक्ल आँहिं ॥ ४० ॥
महिपाल्ल सोहु कछु गद्द ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
सो सत्रुसल्य२१३इहिं नामख्यात,सुभ दिन भद्रासन तिलकपात४१
साहब सुहृहत इंडन सनाम, कोटेस२१३ हिं टीका दैन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल,कियक्रमन तास अभिमुख कृपाल४२
सल्लाप भव्य सय करि रु सीस, आगमन ससाहब किय अधीस
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दै सिक्ख तासप्रासाद जाइ ॥ ४३ ॥
आरामरत्नसाहब अवाप, अंसुकगृहसाहब जाइआप२०३ ॥
उपवेसन खुरसिन कियउजास,समयाल्प रहि रु दै सिक्खतास४४
अधिराज कियउ प्रासाद आन, साहब किय कोटा दंग जान ॥
माघा११ऽर्जुन एकादसि११मिलंत,मथुराहुवभ्राता भोम२०३अंत४५

इतिश्रीवंशभास्करे   एकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सक विक्रम जिन नंद ससि १९२४, अमा३०रु चैत्र अनेह ॥
भोमसिंह२०३भ्रातृज भुवप२०३, आइ विश्वेश्वर२०४एह॥१॥
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लग्गिय पाय ॥
तवहि स्वकर सिर फेरि तस, लिन्नों क्रोड़ लगाइ ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

विश्वेश्वर२०४१सिंहकों विसासि रु अधिप आप२०३,
प्रत्यह कराये वेद४ नाखुक असनकों ॥
राखी कछु भिन्न पुव्व रीति सु महर करि,
पुव्व जो हवेली सोहु तास२०४ दे रहनकों ॥
व्याकरन आदि शास्त्र अध्यापक मेल्हि वलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
बहुरि नागोध ढंग करिकैं विवाह ताकों,
नयो ग्राम नाम राम२०३ बाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
मास नभ५ धवल१ चउद्दसि१४ रु आर३ वार,
दुर्गापुरी ईस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
आत्मजहू ताको ओंकारसिंह२० पट्टपति व्है,
गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
बिहित बिधान पुब्ब होजो प्रभु ताको तास,
सो सब ओंकार२० सिंहको व प्रभुदानभो ॥
सस्त्र१ अरु सास्त्र२ तास२० अध्ययन सासन दै,
बुन्दीपुर राल२०३ को प्रवेसन विधानभो ॥ ४ ॥
प्रौष्ठाद्धसित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
लघ्वी मातिहारी जनी धीदा प्रसवकाल ॥
अंकक९ दिवस सोहुरहिकैं प्रतासु भई,
सौवास्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
अष्टमी८ नभस्य६ सित बहुरि सु व्यवहार,
नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
साहब जु रूलद्दस७ बुन्दिय अजंट आत,
रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
भूत वुव अंक ससि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
एकादशी११ आर३ वेद४ नाड़ी दिवस आत ॥
मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आसपतैं,
बुन्दीढंग माँहिं प्रभु निर्जरनैर पात ॥
सो सुनि अनंत शोक करिकैं नरेंद्र आप,
स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र अगुन सुगारिदान नामककों,
अभ्युत्थान आदि दे विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
भाद्र६सित षष्ठी६ सदानंद जो भुजिष्या भूप२०३,
जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
सद्दा१सित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
सोमवार२रत्ति सत्त७ नाडीकों विहातभो ॥
पट्टप कुमार भीमसिंह२०४।१हूके स्वर्ग जात,
हाहाग्व बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
ताको दाहकर्महु पुरोधातें करायपुनि,
——कति अधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
संवत तर्क दुव अतिधृति१९२६ समय होत,
स्वर्ग नभ५ भूप गो करोली मदनपाल ॥
नवमी९ नभस्य६ सित१ बहुरि अमात्य आप२०३,
बहुरा गतासु भयो जीवन अंतकाल ॥
सो सुनि नरेन्द्र आप२०३चंदनकों खंड इक१,
देकैं प्रेतवनकों पठायो चर उताल ॥
सासनानुसारि प्रभु२०३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
उज्झिय सकल सो कापालिक क्रियाकाल ॥८॥
प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ असित२ आत,
लच्छी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
ताको जातकर्म वेदविधितैं सधाइ पुनि,
आव्हय ताको रघुवीरसिंह२०४।३ भो उदार२०३ ॥
सार आढ्य रंकनकों करिकैं बहोरि आप२०३,
जाचकन अत्थहू दिवायो वसु अपार ॥
भूसुर गणप अभिरूपजनहूकों त्रालि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥
मार्गशीर्ष९ मासहु द्वितीया२ सित पक्ख होत,
साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥
वृहत किटिंग इहिं नामक के सम्मुहकों,
गाम जोधसागरके संनिधि प्रभू जाइ ॥
तुरग बिहाइ रु विछ्यातके उपरि आत,
सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥
आरुहि सु अश्व किय क्रमन वरश्वरतैं,
आइ पू बुंदी सिंहचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥
साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमाँहिं,
राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,
गोपुर बलवंत रठ्ठऊर भिजातभो ॥
हत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रवेस कियो,
अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥
जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,
मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥
वेला अल्प राखि दुव२ अतर रु पान करि,
सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥
अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,
सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥
अवसर अल्प राखि करिकैं समय वृत्त,
अतर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥
दैकैं सिक्ख ताहि इवोवसीयस बचन भाखि,
राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अंक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कौं,
गोन अजमेर किय लार्डहि मिलनकौं ॥
करत मुकाम कुच्च हुत अजमेर जाइ,
लार्ड मिलि गोन किय पुष्कर सवनकौं ॥
न्हाइ तहाँ जाइ वेदविधितैं सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकौं ॥
पंचसत५०० नाणक अनेकप दिवाये दान,
आये पुर बुंदी अप्प बंटि बहु धनकौं ॥ १३ ॥
अहि दुव अंक इक१९२८ विक्रम नरेन्द्र सक,
अधवल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सौम्यवार२ ॥
सत्त७ पल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्यो लख्यौ लघु कुमार ॥
जात१ नाम२ कर्म वेदविधितैं सधाइ तास,
रंगराजसिंह२०४१४ नाम मंजुल भो उदार ॥
चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककौं,
राज राज राम२०३ दयो बसु कति हजार ॥ १४ ॥
नंद दुव अंक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माँहि,
बीकानेर भूप सरदारसिंह कालभो ॥
ताके बंधुगनमें डुंगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पंचसिख पाइकैं भुवालभो ॥
पुरिशाम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भूपतिहू,
स्वर्ग तखतेस जात रानिन विहालभो ॥
पट्टप कुमार जसवंतसिंह पूरबहू,
राजकारि कज्ज पिता अंतर नृपाल भो ॥ १५ ॥
नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
साहब बृहत पेली१ बर्कली अजंटी दुव२,
आवत नयर बुंदी हुतही सु प्रभात ॥
सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुब्ब जिम,
करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
महलन प्रवेस किय देकैं सु सिक्ख तास,
साहब बृहत अजंट सह कोटैं जात ॥ १६ ॥
बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान॥
ग्राम रहि ठिक्करे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
पट्टनि सिविरको प्रवेसितभो दिवान२०३।४ ॥
राका उपराग बलि केसव दरश करि,
बिहित बिधान करि बेद सु न्हान दान ॥
सार्द्धमासइक्क१॥ तहँ रहिकैं बहुरि आप२०३।४,
राजराज राम२०३।४ नेर बुंदी कियउ आन ॥ १७ ॥
इक्क गुन अंक भू १९३१ समान सक विक्रमके,
फग्गुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४।५।३,
रजनी पहर१ गये उद्भव दिखायोहै ॥
लक्खन लुटाइ द्रव्य भूसुर रु रंकनकों,
जातक-वैदिक विधान बनवायोहै ॥
राम२०३।४ नरनाह सब देसनके जच्चनकों,
इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

यहैं सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरदिल्लिय जोग्य नरेस ॥
सुने हम दिल्लियको दसतूर, रहो सब सांजलि[1] साह हजूर ॥२० ॥
प्रवेसत सायुध[2] इक्क न आम[3], सजैं सब बारहि बार सलाम ॥
जहाँ बिनु आयसु[4] बुल्लि सकैं न, नमैं[5] इकटक निहारत नैंन ॥२१॥
जहाँ नहिं बैठक दुक्ख दुरूह[6], तरज्जत तंडिँ[7] नकीबन जूह ॥
चलैं सब पैदल आनन अग्ग, प्रभूजिम[8] मन्नि पलोटत[9] पग्ग ॥ २२ ॥
पठावत नारिनकों नबरोज, उठावत पत्तनकों हतओज ॥
बजावत बंबं[10] न जावत बार, सजावत पुत्रिन ब्याहि[11] सिंगार॥२३॥
सुनौं यह साहनको दसतूर, हलैं सब हिंदुव धुज्जि हजूर ॥
प्रभुप्पन[12] मिच्छन भोग्यहि एह, लिख्यो बिधि हिंदुन गोधि[13] न लेह[14]२४
रु कोउ करैं इम हिंदुव राज, भिरैं तब जानि असूयन भाज[15] ॥
हमैं तसमात[16] न दिल्लिय हौंस, दहैं[17] घर रक्खन ही निस द्यौंस।२५।
रु जो हठ दोउनको मत एह, गिनौं तब दिल्लियही यह[18] गेह ॥
रजू तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिल्लिय आज ॥२६॥
पुरा[19] नृप कूरम[20] मान जु किन्न, पधारि सुधारि वहै तुम लिन्न ॥
अबै हठ अप्पन ज्यौं जस होय, जथा[21] करिये वल कालहिं जोय।२७।

१ हाथ जोड़ेहुए ॥ २० ॥ २ आयुध सहित ३ बडी सभा में ४ विना आज्ञा बोल नहीं सक्ता बादशाह के देखते ही नेत्र नहीं टिमका कर ५ झुकते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा दुःख ७ गर्जना करके नकीबों का समूह डराता है और मुख आगे सब पैदल चलते हैं ८ स्वामी के समान आन कर ९ पैर दबाते हैं अथवा पग पंपोलते हैं ॥ २२ ॥१० नगारा ११उनसे विवाह करके पुत्रियों को शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥१२ यह स्वामीपन म्लेछों के भोगने योग्य ही है१३ ललाट में नहीं लिखा१४लेख ॥ २४ ॥ जाति की असूया के१५पात्र१६इसकारण हम को दिल्ली की चाह नहीं है१७घर की रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥१८इस घर (उदयपुर) को ही दिल्ली जानों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण राणा की पुत्रियों को यवनियें बनाने का भय दिखाया था)२१जिसप्रकार ॥२७॥

इक्क१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लच्छमन्न२०४।६ कुमारहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अंक इक्क १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥
चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४।७ जन्म चउद्दसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥
उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभगिनी भनाईहै ॥
असित तृतीया३ माघ११ काव्य११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सोभाग्य रघुवीर२०४।३।१सिंह पाईहै ॥
रंगराजसिंह२०४।४।२ लघु सोदर बहुरि व्याही,
सूरज कुमरि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥
उक्त तिथि४हूमें सिंहमुहुब्बत पुत्री बल,
दिव्य देवकुमरी रघुराज२०४।५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥
बावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुत्रिका समर्थ नाम कुमरी कहाई है ॥
माघा११सित२ चोत्थि४ मंद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥
करि उपयाम तत्थ रहिकैं कितेक दिन,
दुहुँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥
महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३।४ वलि,
आइकें प्रवेसि बुंदी नगर वधाईहै ॥ २१ ॥
गोपुर चोगान बनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो बाह्य संनिधि अप्प राम२०३।४ ॥
तोरन प्रासाद जोव बजत हजारी द्वार,
ताके सन्निकर्ष त्रिद्वारिका२ बनाई वाम ॥

तास अग्ग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
अंतिक बनाई तास त्रिद्वारि४ बंब काम ॥
मोतीकूप निकट बनाईहू तिबारी५ पुनि,
तामैं विष्णुस्वामीकाति रहत अष्ट जाम ॥ २२ ॥
न्याय६ सुल्क७ नामक कचहरी द्वै२ बनाई पुनि,
मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
मंदुरा९ द्वितीय२ कोंन नैर्ऋत बनाइ प्रभु,
अज्जहू बजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
छत्रमहल्ल माँहिं जलजंत्र१० अरु होद११इक्क,
त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
दूदा१९२१के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
खुरा१३ किय तातैं मर्त्य जावत अनायास ॥ २३ ॥
दोहा—तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥
जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३१४॥२४॥
बज्जत चामुंडा बलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
प्रभु भंडारन सहित पुनि, क्रमन राम२०३१४ प्रभु कारि॥२५॥
बायुकोंन उडुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
देवी चामुंडा सदन१८, बलानाथ२०३१४ बनवाइ ॥ २६ ॥
कौतुक मृगया कज्ज बलि, तुंग१९ रचिय अति धाम ॥
बहुरि पुष्पसागर बली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
कुंड२१ इक्क१ ताके निकट, मध्य जु छत्री पाइ ॥
सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक बाटि कराइ ॥ २८ ॥
बालागढ किल्लादि बलि, इतर जु थान उदार ॥
जँहँ जँहँ भ्रंशित भो तहां, किय जीरन उद्धार ॥ २९ ॥
इतिश्री वंशभास्करे त्रिंशोमयूखः ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ श्री ॥

बुधसिंह चरित्रका शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२३	मय ही का उत्कंठा	सय ही की उत्कंठा
२	४	ज्यों का त्यों	ज्यों की त्यों
२९०१	२०	चिंतां चिता	चिंतां चिंता
२९०८	१८	ताके वशमें	ताके वंशमें
,,	२०	बुधसिंह को	बुधसिंह के
,,	२७	ताको तनया	ताकी तनया
२९१०	१०	अप्पनौं आत्थ	अप्पनौं सत्थ
२९११	२३	सोहीं कठीरव	सोही कंठीरव
२११४	४	मेर खट ६	फेर खट ६
२६१९	२४	अग्गर आगरा	अग्गरा आगरा
२९२५	२५	अम अमावास्या	अमा अमावास्या
२६३४	११	ढक्किठट्ठो	धक्किठट्ठो
२६४१	१३	अवसानयो रतयो	अवसानयो रंतयो
,,	२७	मिलकर	मिलाकर
२६४४	१७	आलमके च्यारि ४	आलमके ए च्यारि ४
२९४६	६	हक्कधारि	धक्कधारि
२६४९	६	घटी डुव	धटी डुव
२९५१	५	पक्खर तीन	पक्खर जीन
२९५२	३	घुग्घर नद्द	घुग्घुर नद्द
,,	,,	भेक कि भट्ट	भेक कि भद्द
२६५३	८	उमंगन	उमंगत
२९५६	१५	नग्गारों	नगारों
२६५८	१	रनएह	रनराह
,,	२२	तुगऊंची	तुंगऊंघी
२९५८	२२	हजार.	हजारा
२९६२	२	घढियीचिन	चढि र्याच्चिन
,,	६	घढि घूम	चढि,घूम
,,		राजिंहि रंग	ए जिंहिं रंग
,,	२३	माणिक्य	माणिक्य
२६७२	११	प्रछन्न गप	प्रछन्नगथ
२६७७	११	ददिारथ-	दीदारथ-
२९७८	७	मन्यो अनीक	मध्यो अनीक

२९७८	२५	कधबंधतैं	कंधबंधतैं
२९७९	२५	श्रंगाली	शृंगाली
२९८०	३	अग्गिअर्की	अग्गिअक्की
२९८१	७	सेरघटा	सेनघटा
,,	२७	मडलाकार	मंडलाकार
२९८२	१८	फिफ लोके	फिफ्फ लोक़े
,,	२६	धनी भीर	घनी भीर
२९८३	२४	पट्ट मतगज	पट्ट मतंगज
२९८५	६	बाहक्क महत्त	बाहक्कबहत.
,,	,,	वहत उछाहक्क	महत उछाहक
,,	७	तिततेसजव	तित तित सजव
२६८६	३	तान मंडन	तान मंडत
,,	१२	जालम जन्यों	जालम जम्यों
२६८८	५	कोच कढैं	कोच कटैं
,,	११	तननकत	तननंकत
२९६३	५	मंडलकेरि	मंडल फेरि
२६६५	१७	इहिंतर	इहिं अंतर
२९६९	३	बलीतैंरषी	बलीतैंराषी
३०००	६	पाये केवल छत	पायो केवल छत
३०१०	२५	पिता को	पिता के
३०१३	२६	हर्ष के साथ भेजो	हर्ष के साथ भोगो
३०१३	२१	समान आनकर	समान मानकर
३०१९	२४	मरापुत्र	मेरा पुत्र
३०२४	१३	महराणा सैन्य सहाय	महाराणा सैन्य सहाय
३०२५	५	प्रवुर्द्ध	प्रबुद्ध
,,	९	वाहि सुद्धपन	श्वाहि सुद्धपन
३०२६	६	जेतसिंह	जैतसिंह
३०२८	१७	सादर सुच न	सोदर सुच न
३०३१	१२	सतपंच५०० तामभीर	सतपंच५०० तोपभरि
३०३३	२	डगतारा	दृगतारा
३०४४	८	पातनचम्मलि	पोतनचम्मलि
,,	२९	और आ आदि से	और आदि से
३०४६	२०	तह संध	हतसंध

१०४९.	२६	क्राधसे	क्रोध से
१०५१	४	भाईहनैं	भाईहनें
१०५८	२	पच्छा अप्पिय	पच्छो अप्पिय
१०७०	२६	चीतोड़के राव थे	चीतोड़के उमराव थे
१०७१	७	सुपच्चीगीत:	सुपच्चो गीत:
,,	२३	घाटा में	घटा में
,,	२६	सेनाकों को	सेनाओं को
१०७७	८	कटोपातिप्रति	कोटापति प्रति
१०७८	१६	सुयकी किरणों को	सूर्य की किरणों को
१०७९	५	निज भपति	निजभूपति
१०८८	२४	भानजी की	भानजे की
१०९५	१७	भुञ्जहिं कल	भुञ्जहिं किल
१०९९	१६	वहां जओ	वहां जाओ
११०१	५	अप्पजा दिद्वा	अप्पजा दिद्वी
११०७	११	स्वामिषर्म संगलै	स्वामिधर्म सीसलै
१११४	२६	देवयज्ञ कलहाता है	देवयज्ञ कहलाता है
११२०	११	धारनमैं घरयो	धारन मैं धस्यो
११२३	२५	बुरे स्वभावयाला	बुरे स्वभाववाली
११२५	२०	पुनारामपु लेखन	पुना रामपुरलेखन
११३३	१४	भ्रात जाहि	भ्रातृजाहि
११३६	२१	ज्योतिपियों में	ज्योतिष में
११४९	२३	चाहना मिटाते हैं	चाहना मिटाती हैं
११५१	७	फाल मचैं	फाल नचैं
,,	२१	योगिनियों का	योगिनियों के
,,	२२	घोड़ों का	घोड़ों के
,,	२८	खानेवालों का	खानेवालों के
११५७	१६	कृापयकैं	कृपायकैं
,,	२८	(खरणी)	(खेरणी)
११६१	२६	तेरती है सो	तिरती है सो
११६५	२०	हडों के शस्त्र	हाडों के शस्त्र
११६८	१५	शत्रुओं के ठोक कर	शत्रुओं को ठोककर
११७४	२४	और वैश्या	और वेश्या
११७६	११	वीर रु रवट्ट	वीर रु रवट्ट
११७७	२२	घूमके नाच से	घूमर के नाच से

३१८०	१९	झंपि वरक्कैं	झंपि फरक्कैं	१२७४	२१	मुरगे वाले	मुरगे वोले
३१८३	२७	पुरकती है	फुरकती है	,,	२६	७ शख	७ शंख
३१८५	२१	देवासिंह के	देवसिंह का	३२७१	१४	अक सत्रह	अंक सत्रह
३१८८	२४	साहयता के	सहायता के	,,	१७	धम धारनी	धूम धोरनी
३१९४	१०	गहिमांहि	गहि वांहि	३२७७	२१	विनाविजली	किनाविजली
३१९७	९	जावह्नु	जावह्नु	३२७९	३	सुक्कल्या	सुक्कल्यो
,,	१५	रत	वत	३२८१	२०	तखत खान	तखतरखान
३२००	२१	खैंचती हुआ	खैंचता हुआ	,,	२१	उंतरा तव	उतरा तव
३२०१	२२	संग्रामसिंहको-	संग्रामसिंहका	,,		तख्त खापर	तख्तर वांपर
,,	,,	दुर्जनशालका	दुर्जनशालको	३२८२	१	भलफिल	भलो फल
३२०३	१०	नसे हौ	नसैहो	३२८३	१५	उद्घोस	उदघोप
३२१२	१४	भजह्नु	भेजह्नु	३२८८	२४	कुलावंतस	कुलावतंस
३२१३	२	पलसैन	सप सैन				
३२१४	५	राम संग्राम	रान संग्राम				
३२१८	२१	अधमी	अधर्मी				
३२२२	२५	वाघसिंह पुत्र था	वाघसिंह का पुत्र था				
,,	२१	करनेवाल था	करनेवाला था				
३२२५	२५	रहन तक का	रहने तक का				
३२३५	१०	पधावनलाड	वधावनलाड़				
३२४०	१	कालिया देवि	कालिका देवि				
३२४८	२१	मन साथ	मन के साथ				
,,	१६	महाराणा जयसिंह	महाराजा जयसिंह				
३२५१	२२	जीम अक्षर ऐसा होता है	जीम अक्षर बड़े पेटवाला होता है				
३२५१	२२	नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित	नरवर के राजा गजसिंह सहित				
३२५८	२१	कलीजखां का	कलीजखां का				
३२५८	२२	खांनदारा को	खांनदोरां को				
३२६४	५	पखर जरजीन	पखरे जरजीन				
,,	२८	चपलते हैं	चमकते हैं				
३२६८	७	लंपसिखी	लंपसिखा				
३२७०	२१	नादरशाह को	किसीको				
३२७३	१	न नाकैं है	न नाकैं है				
३२७४	२१	कलही हमस	कलही तुम से				

उम्मेदसिंहचरित्र का शुद्धिपत्र

—*०*—

३२९१	२१	*छाटी	*छोटी
३२९४	३	तव अयो	तवआयो
३२९५	१७	आभपेक	अभिपेक
३३०१	१५	अच्छे फिरहु	पच्छे फिरहुं
,,	२३	६चगतसिंह	६वखतसिंह
३३१०	१४	दूजावेर	दूर्जावेर
,,	१९	खग्गनको	खग्गनकी
३३१६	२२	नेतादेकर	न्योतादेकर
३३२०	१७	दमहुव	हमहुव
३३२३	२३	जनानमें	जनाने में
,,	२६	१५देकडे	१५दोकड़े
३३२७	२१	सेदाका	सेनाकी
३३२९	९	पन्नगकी ७फनमाल	७पन्नगकी फनमाल
,,	२०	शेपनागका	शेपनागकी
,,	२२	चलक कर	लचकर
३३३१	२०	दोनोंआर	दोनों ओर
३३३२	२२	उसके अग्निसे	उस अग्नि से
३३३६	१९	अराहि	अरोहि
३३३७	२२	जुद्ध जीतनवाले	जुद्ध जीतनेवाले
३३४७	१०	सुलभ लाट	सुभ ललाट
,,	२२	(लक्खा)	(लक्खी)
,,	२४	रगवाले	रंगवाले
३३४९	११	चाहये	चाहिये
,,	२५	दानों कानों के	दोनों कानों के
३३५१	१८	मलगमें	मलंग में
,,	१९	सबेआर	सबेऔर
३३५४	१७	दुजुशाल	दुर्जनशाल
३३५८	१७	अथवा राज	अथवा राल
३३६२	२५	जघा कहते हैं	जंघा कहते हैं.
३३६५	७	अव घन	अवै घन
३३७६	२२	दत्तीण में	दक्षिण में
३३८४	१०	चकि	चुकि
,,	२४	भूमिका	भूमिको

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३८४	२६	पढ़ना जनाकर	पढ़ना जानकर
३३८५	१	लैनाकिय	लैनाकिये
,,	२७	तिरान	तिरानवे
३३८७	२४	७पुत्रीकी	पुत्रीको
३३९४	२	आपरू	आयरू
३३९७	११	धुरैल	गुरैल
३३९९	१९	उधरदादुर	उधर दादुर
३४००	२४	और इधर १०	और उधर १०
३४०२	५	जग्गे अग्नि	लग्गी अग्नि
,,	२९	भखेको निकालो	भूखेको निकालो
३४०५	३	हेलि चढाया	हेलिमढाया
,,	२३	हूरोंक	हूरोंके
३४०६	२२	अप्सराओंकी छातीपर परतलेलगे	अप्सराओंकीछातीपर हारअ र वीरों की छाती पर परतलेलगे
,,	२४	नाकेंफुलाये	नाकफुलाय
,,	२५	कानों में	कानोंके
३४०७	६	सुराग	सुराग
३४११	१६	निंदासुनन	निंदा सुनत
,,	२५	तबसे नीचेकी	तब नीचेकी
३४१३	२१	अमरस	अमरसु
३४१४	२७	आदि ल	आदि ले
३४१५	१९	९आकाश में	९ आरंभ होके आकाश में
३४१६		आडावाढ बजा	आडावाढ बजा अथवा हाडाओं की तरवारोंका ढालोंपरवाढबजा
३४१७	९	पासतुसार	पोसतुसार
३४२७	१९	८चक्खे हैं	८चक्चे हैं
३४३०	२२	पैदल आर	पैदल और
,,	२३	१२ननीन	१२नवीन
पृष्ठकेअंक		३३४४	३४३४
३४३४	२०	काटमेखला	फटिमेखला
३४३६	१८	दिपपत्त	दिवपत्त
३४३७	९	संगित सैन	संगिन सैन
,,	२४	खड्गका	खड्गकी
३४३९	८	कब्योकछ	कब्योकछु
३४५०	९	साजय	सजिय

३४५१	२१	मकुगढ में	मकुकरगढ में
३४६३	१३	पिन चंदन	निंप चंदन
३४७३	१४	कानैं मन	कानैं पल
३४८०	७	सुदीनगि	सुहिनगि
३४८५	१	योंकह	यों कहै
३४९१	३	लायह	आयह
,,	२६	निमांत्रन किये	निमंत्रित किये
३४९६	२४	ला डाल देते हैं	ला डालते हैं
३४९७	२२	कछवाते रथी	कछवाहे रथी
,,	२१	जानवेद जोरि	जानवेद जोर
३४९८	३	धून धोरनकी	धूम धोरनकी
,,	८	विजय वेद	विजय वेग
,,	२८	लच चार कचनार	लच कचनार
३५०४	१६	फटन चारकी	फटन चीरकि
,,	२५	मनी जाती है	मानी जाती है
३५०७	१६	पचरंगे टेडे	पचरंग झंडे
३५०८	२४	डड़ती है	उड़ती है
३५१२	१२	फैलानेव	फैलने से
,,	,,	चंद्रमाक	चंद्रमा के
३५१६	३	उदयपुर	उदय पर
३५१७	१	कलिगय	कढिगय
,,	२३	पीलवा के प्रहार से	पींजण के प्रहार से
३५२०	५	तमसेर झार	समसेर झारैं
३५२१	२१	बलिदान को है	बलिदान को लेते हैं
३५२३	८	दर्यांधन	दर्योधन
३५२५	५	जै नृपतिहू	जैपुर नृपहु
,,	१०	मदेंक	मद क
,,	२६	निर्भय	निर्भय
३५२८	१०	जीवन जप	जीवन अप
३५२९	१०	ईश्वरिसिंह	ईश्वरीसिंह
३५३०	१४	बुंदीन पिरुद	बंदीन पिरुद
,,	१२	अरघ्यो	अरघ्यो
३५३१	१४	कर्म्मराज	कूर्मराज
३५३२	२८	तीनसौ ३०६	तीनसौ छै ३०६

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५३१	११	रवायअसि	खायअसि	३७०६	३	अवदता	अवदात
३५४३	१६	जयपर	जयपुर	३७१२	३	अंतर ननहू	अंतर सुनहू
३५४६	१६	दिक्खनराहि	दक्खिनराहि	३७१४	१८	संमयमित्रसे	समयके मित्रमे
३५५५	९	यश१ दम१	यश१अरुदम१	३७१५	२१	६पुत्रं	६ पुत्रअथवाभाई
३५५६	१४	चिद्रकूट१	चित्रकूट१	३७२४	२७	मटका कट	मटकाकर
३५६१	१५	भटसप्रीति	भटन सप्रीति	३७२९	१	लहिरागकछु	लहि रोग कछु
३५६८	२४	लोगों का	लोगोंकी	३७३१	२४	गांघूंदेकाराजा	गोघूंदकाराज
३५७०	२६	३यड़ेभाईको	३वडेभाईको	३७३३	२१	इच्छावाल	इच्छावाले
३५७६	१	संग्रामावि-त्सादि १	संग्रामावित्सादि१	३७३७	१	पठवाये	पठवाय
३५८२	१०	के लग्गत	कैं लग्गत	३७४०	१७	तिनमैं सुनी	तिननैं सुनी
३५८७	२३	शुक्लपक्षको द्वितीय	शुक्लपक्षको प्रथम	३७४२	१०	फिप्फ फलतैं	फिप्फ फैलत
३६०५	१६	बैरतीन	वेरतीन	,,	१४	महाजरका	महाझरका
३६१०	४	द्विजदीनकी	द्विजदीनके	३७४६	१३	चमउदैपुरकी	चमूउदैपुर
३६१२	२१	६ राजा ने विष खाया	६गलेमेंराजा नेविष खाया	,,	२६	इसकारण	इसप्रकार
३६१४	१०	भत्तभयो	मत्तभयो	३७५१	१८	भरतासिंह	भारतसिंह
३६२६	१३	सब अरज	तब अरज	३७५५	१६	व्यय ऐसी	व्यय ऐसो
,,	१६	तुम्हारेपिता	तुम्हारे पिताने				

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६४४	१४	फणों को धारण करनेवाला	फणोंको नीचाकरके फूत्कारकरनेलगा
३६४३	९	वाहवाह	वाह वे वाह
३६४६	६	पापी छकैं	पापी छकैं
३६४९	१३	खेल्हे	खेलहैं
३६५०	३	मात तब	माततब
३६६८	२५	राजावतविक्रमसिंहकेलिये	राजावत विक्रमसिंह से लेकर
३६७३	२४	कुंभफलक	कुंभकलस
३६८२	६	तमंकेईत	तमंकेइतैं
३६८४	२३	गिरतमार	गिरतभार
३६८६	५	सहन मार	सहैनमार
३६९०	११	पोनछेहि	पौनछैहि
३६९१	१७	क्रीड़ामें ऐस	क्रीड़ामें ऐसे
३६९९	७	परतापतियन	राजसिंह तियन
	२	मड़ि मंत्रन	मंडि मंत्रन

बंयो पुनि कूरम भूप वृतंत, भली सबही करिहै भगवंत ॥
अबैंकरि हिंदुन इक्कत *अत्थ, सजैं पुनि आलमपैं निज सत्थ ॥

(दोहा)

हिंदुव चाकर रानके, इक परंतु यहँ ओर ॥
आलमतैं हम तोरिकैं, लियउ रावरो जोर ॥ २९ ॥
देस दुहुन२के खालसैं, ओर न लेन उपाय ॥
तो हम जित्तैं मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥
जित्ति मुलक पुनि कटक सजि, व्है दुवैं२रान हजूर ॥
दक्खिनपर दरकुंच करि, जित्तहिं साह जरूर ॥ ३१ ॥
रानकहिय कछुदिन उभय२, रहहु अत्थ गृह जानि ॥
पुनि जो जो भवितव्यहै, लेहैं सबहिं प्रमानि ॥ ३२ ॥
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतैं कहि एह ॥
इक१इक१गज द्वै२द्वै अरब, दोउ२न अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥
अतरपान पुनि बुल्लिकैं, इन ढिग रक्खे रान ॥
तब दोउन२कर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥
रान तथापि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥
जिहिं अंतर कर दुहुँन२के, संग्रेहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥
दोऊ२नृप इम पान लै, निज निज डेरन आय ॥
दूजेदिन किय गोठि तब, रान अमर रस भाय ॥ ३६ ॥
दोऊ२नृप बुल्लिय बहुरि, पंति परिय चहुँ ओर ॥
करिय अरज तँहँ रान प्रति, पुनि कूरम रट्ठोर ॥ ३७ ॥
इक्क१थाल बिच अप्पनौं, हमसैंह भोजन होय ॥
अबतैं संतत एकता, करहु न संमय कोय ॥ ३८ ॥

---

* यहां ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जोधपुर और आमेर के दोनों राजा ॥ ३१ ॥ २ यहां ३होनेवाला ॥ ३२ ॥ ४ उस दिन ॥ ३३ ॥ ५बुलाकर ६ हाथ मांड(फैला) कर ७ आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ८ तोभी ९ पकड़ कर, उस समर्थ (महाराणा) ने ॥ ३५ ॥ १० स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७॥ ११हमारे साथ१२निरंतर॥३८॥

॥ अजितसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३७६०	३	लहैं हैं२	लहे हैं२	३७८२	१३	प्रविस	प्रविसे
३७६२	३	दधनवारेकोमुरि उदयमानुकुलधारिदोना	दोनोधनवारेकोमुरि उदयभानुकुलधारि	३७८२	१७	गजपारि	गजपोरि
३७६५	४	संगवें	शृंगवें	,,	१८	संतपञ्च	सतपञ्च
३७७२	११	गिरागकैं	गिरायकैं	,,	२५	देखोगे	देखूँगा
३७७२	१५	छैनदायो	छैनगये	३७८३	१	उद्रयो नहि	उठ्यो नहि
३७७३	१६	पमुदिन	प्रमुदित	३७८८	२१	[अंनर]	[अतर]
३७७७	१५	नजगनिवाहि	नजरनिवाहि	३७९६	११	बोभविप्याहं	बोभविप्याम्यहं
३७७९	१३	है अजमेरु	व्है अजमेरु	३७९८	२१	राजाका	रानाका
३७८०	३	भणायपुरभर	भणायपुरभूप	३८०३	१३	निजपतिसंगे	निजपतिसंगे

॥ विष्णुसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३८१५	१६	सन्ध्याअँहँ	सन्ध्यापँहँ	३९०८	१५	सिंचरित्रे	सिंहचरित्रे
३८१७	१०	कोटपति	कोटापति	३९१०	५	अमात्यरनैवै	अमात्यरनवै
३८२२	२१	आनियारा	आनियारा	३९११	२५	जनानसे	जनानासे
३८३३	१६	कीनोंहो	कीगोंहो	३९१७	१३	देवसिंह	देवसिंह
३८३६	१	धारनहीं	धारैंनहीं	३९३१	२२	पर्मा१धाल२	पर्मा१साम२
३८४०	१६	कपड़नाहै	पकड़नाहै	३९३५	६	सन्ततसंग	सततसंग
३८४१	७	कन्याजाम	कन्याजामैं	३९४४	१०	यथाइमैं	यथाईमैं
,,	११	मयाहीसों	पगगहीसों	३९४७	२३	मिससे	दर्शनके मिससे
३८५२	२०	रघोपुर	रघोपूर	३९४८	२७	१लाहोरमैं	१लाहोरकापति
३८६१	१३	रानिवटी	रानिवटी	३९५७	१२	नानहूरख्योन	नामहूरख्योन
३८६७	११	साँझके	साँझहीके	,,	२६	विष्णुसिंहमे	विष्णुसिंहने
३८७२	१	माँहिराखि	नाँहिंराखि	३९६५	६	टेकीलागे	टेकिलागे
३८७७	२३	२अलपुर	२अलवर	३९६९	५	शाहजमार्थ	शाहाजमार्थ
,,	२४	३अलपुर	३अलवर	३९७२	१२	पट्टर्यां	पट्टर्यां
३८८०	१०	कहाइ	कहाईं	,,	१६	नारिनकाँ	नारिनकों
,,	१४	सुरायसो	सुरायचो	३९७१	८	निचोरिडारि	निंचोरिडारी
३८८४	२०	मराहुआ जाना	मराहुआजानो	३९८०	६	धाकल	धूंकल
३८९२	११	फीराजख	फीरोजखां	३९८६	१०	पापदर्पपर	पायदर्पपर
३८९३	१६	मानाका	माताकामरना	४००७	५	आदिक१	आह्निक
३९००	२२	नावरूपी	नायरूकी	४०१४	१२	उपदसादि	उपदंसादि
३९०३	९	तयहीं	तयहि	४०१६	२१	अबटरखांनि	

॥ रामसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०४३	४	प्रसिद्धक्रियां	प्रसिद्ध क्रिया	४१६०	४	जवश्रोघ	जवश्रोव
,,	३१	भस्मीभूतस्य	भस्मीभूतस्य	४१६४	१४	राचिरप्रकाश	रोचिःप्रका
४०४५	२१	आकारवले	आकारवाले	४१६७	२१	समतिदेखकर	संमतिदेखकर
४०५७	१०	दसम१०मॉहिं	दसम१०मॉहि	४१६८	४	तुंवै	तुंवै
४०६४	३	विधिएह	विधिराह	४२००	५	दुकूल	दुकूल
४०६७	२६	क्षधि के	अंधि के	४२०६	१६	मांडा के लोग	मांदा के लोग
४०७०	१४	तॉहूँ४	तॅहॉ४	४२०६	१८	अतर	अतर
४०७१	६	पराधनि	पराधीन	४२१३	१४	सुक्राज्य	शुक्राज्य
४०७४	२५	कताहा है	कहाता है	४२१८	२०	माग में	मार्ग में
४०७७	३२	विप दड है	विष दंड है	४२२६	१८	छित्तिरलदाव	छत्तिरलदाव
				४२२७	१७	वहुपुत	बहुपुट
,,	,,	छोट होवैं	छोटे होवैं	४२३२	१२	सगहमना	सहगमना
४०६१	२५	केसवाला	केसवाली	४२३६	२३	नहा मालूम	नहीं मालूम
४०६५	१५	१५आराग	१५अनाग	४२४०	३	तांबूलकार	तांबूलदार
४१०१	२३	सभाकोमिटाओ	उसकोमिटाओ	४२५८	२६	खाली गय	खाली गये
४१०३	१७	पावरा	पावरी	,,	२८	निरर्थकहागया	निरर्थकहोगया
४१०३	२७	माधवसिंहने	माधवसिंहके पिता जालमसिंहने	४२६४	१७	वर्णसेसपथहै	वर्ण सबंध है
४१११	७	आप्लल	आप्लव	४२६५	६	कालपलल	कोलपलल
४११८	२४	कञ्चन के	कज्जल के	४२६१	८	वुन्दि वितजि	वुन्दिय वितजि
४११६	१६	शुडमस्तकके	शुडसेमस्तकके	४२७४	१५	अत्मरूप	आत्मरूप
४१२०	१३	१शुडके	१शुंड के	४२७५	१४	प्रकृत भव	प्रकृत भद
४१२१	२७	जोन्हीकभर	जो भीक भर	४२८६	३	आयुप्रवीय	आयउ प्रवीन
४१२४	१	फल्ल तलाट	गल्ल तलाट	४२६२	४	परन वनाय	पूरन वनाय
४१३१	१	अंचभयो	अचंभयो	४३१०	१५	वसु भरि	वसु भूरि
४१३३	२३	गोलाकरनाच	गोलाकारनाच	४३२४	१३	सनपात	सेनपात
४१३६	२७	बोध होताहै	बाध होना है	४३२७	१४	छिजनन	छिज जनन
४१४९	१९	छटीवर्गाचियो	छोटीवर्गीचियों	४३३१	१५	ताजेके	ताजेके
४१६१	१५	चित्र८वललैं	चित्रम्बुललैं	,,	२०	गटके ईस	गढकर ईस
४१६५	१०	द्वै गर्भा७	द्वैद्वैरगर्भी७	४३४१	२४	रूपमॅहें	द्वंपमॅहें
४१७०	२८	धुरको	धूरको	४३५४	२२	भाडपुनि	भांडपुनि
४१७२	६	पेठेसद्धत	पैठे सद्धत	४३६१	३१	सिहको	सिंहको
४१८३	२६	अटेर	अटेरन	४३६२	१४	गतासुभई	गतासुभई
४१८४	१६	समीरकाप्रदेश	समीपकाप्रदेश	४३६६	२	अजयटोडुव	अजयटडुव

सुनि बुल्ल्यो *भट रानको, हढमन गंगादास ॥
सगताउत पुरबानसी, पति कछु †रोस प्रकास ॥ ३९ ॥
‡कूरम पति यह रावरे, पुरुखन अग्गैं कीन ॥
तोहू कुल उज्जल यहै, भो नहिं धरम विहीन ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं अकबरसाह लैन जुगराज लुभाये ॥
भगवतसिंह रु मान[1] पिता सुत उभय[2] पठाये ॥
दरकुंचन इन दोरि जोर जित्ती गुज्जर[2] धर ॥
पलटे पुनि सुत जनक[3] मिजल पंचक[4] के अंतर ॥
भगवंतसिंह आयो प्रथम दिल्लिय जावत रान घर ॥
जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥
नृप भगवंतहिं रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥
उनहू भोजन करन रान जुत प्रसभ[5] रचायो ॥
दिय उत्तर तब रान देत तुरकन तुम पुत्रिय ॥
हम हिंदुव अकलंक[6] धरम छंडैं न जात जिय ॥
तसमात[7] सुनहु दोउन[8] असन इक्क[9] थाल नाहिंन उचित ॥
यहसुनि नरेस भगवंत तब पृथक[10] जिम्मि बुल्ल्यो विदित ॥४२॥

॥ पज्झटिका ॥

नृप सुनहु पंच वासर[11] विहाय, सुत मान[12] इहाँ ऐहैं सुभाय ॥

---

* महाराणा का उमराव † क्रोध करके ॥ ३९ ॥ ‡ हे कछवाहों के पति (जयसिंह) आप के वडाउवों ने भी पहिले ऐसा ही किया था ॥ ४० ॥ १ मानसिंह २ गुजरात ३ पुत्र और पिता ४ पांच दिन के अंतर * से ॥ ४१ ॥ ५ हठ किया ६ निष्कलंक ७ इसकारण से ८ भोजन ९ भिन्न (जुदा) जीमकर १० प्रसिद्ध बोला ॥ ४२ ॥ ११ पांच दिन बिताकर १२ मरा पुत्र मानसिंह

छठे राशि की टीका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं करने का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम भूल से लिखागया है सोही यहां जानना चाहिये ॥

वासौं नरेस व्है हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि ऐसी *कुवत्त ॥ ४३ ॥
यह कहि नरेस भगवंत बत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥
दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिंट्यो पुनि ‡सम्मुह जाय रान॥४४॥
मिलि तासं[1] बिरचि अति मानुहारि[2], पुनि रान स्वगृह तिन[3]जुत पधारि
रचि गोठि बिबिध व्यंजन रसाल[4], बैठार्‌यो मानहिं पृथक थाल॥४५॥
रहि रान दिट्ठि परुसनं[5] लगाय, तव कुमर मान बुल्ल्यो हिताय॥
तुमकोंहु उचित बैठन नृपाल, भुञ्जैं[6] हुव भुञ्जन[7] इक्क थाल॥४६॥
तब कहिय रान राजाधिराज[8], एकासन[9] व्रत मैं करिय आज ॥
कूरम[10] तथापि बुल्ल्यो निहोरि, सागस[11] न होत व्रत इक्क छोरि॥४७॥
हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्कथाल भोजन हिताय[12] ॥
इम प्रसंभ[13] पुंज मानहिं निहारि, पटु[14] रान उदय बुल्ल्यो प्रचारि ४८
तुम लोभ धारि लिय जवन गाति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥
तुम अधम जामि[15] दुहिता[16] कलत्र[17], तुरकन समप्पि हुव सचिवतत्र॥४९॥
अकलंक यहै इकलिंग[18] ऐन, तस्मात[19] संग भोजन बनै न ॥
यह सुनत मान कुप्यो कराल[20], बुल्ल्यो सु उट्ठि छंकि छोरि थाल ५०
तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत खैहैं[21] वैं[22] संग ॥
यह कहि द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकबरहिं अत्थ आन्यो कुपाय५१

---

*ऐसी खोटी वार्ता भूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुंचा) ‡ सन्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिंह सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोसने में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करैं ७ भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराना] ने कहा ९ दिन में एक समय भोजन करने का व्रत १० तोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोडने से अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ हित के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह देख कर वह चतुर १४[महाराणा उदयसिंह) ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५ बहिन १६ बेटियें और १७ स्त्रियों को देकर वहां (यवनों के) सचिव हुए हो और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [मेवाड़वालों के इष्टदेव एकलिंग महादेव हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २२ अब २१ साथ खावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चित्तोर जंग, रान न तथापि[1] छंड्यो स्वरंग[2] ॥
विनु वित्त[3] लहिय बरसन बिपत्ति, छिति हित तथापि[4] कंपी न छत्ति।
यह कुल वहै हि निज नय[5] उपेत, दुहितादि[6] तुम सु तुरकान देत।
इकथाल असन तातैं बनैंन, भट हम निसंक मिथ्या भनैंन॥५३॥
यह सुनि कबंध कछवाह राय, खमि[7] समय जानि रोस न दिखाय॥
करजोरि कहिय दुव२नृपनफेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्म हेरि ॥५४॥
हम किय अधर्म गिनि बिभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिं मानि॥
अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्ल्योसु[8] व्यावहारिक[9] बिचार ।५५।
मम गेह ओर नहिं तुमहिं देय[10], इक बत्त सुनहु दुव२नृप अजेय[11] ॥
सौंपहु जो निजकर[12] लिखित सत्य, अबतैं न देहिं तुरकन अपत्य[13]।५६।
तो दुव२सुता[14] सु दोउन२बिवाहि, देसहु लै देहैं अरिन दाहि ॥
सह[15]भोजन तो नहिं उचित[16] आहि, पत्रावलि[17] जिम्मत हम सदाहि५७
तुम डारि रजत बिष्टर[18] बिसाल, नगजटित मध्य धरि कनक[19] थाल
इम भुंजत[20] तुरकन एधमान[21], इत्यादि हेतु सह असन हयान ५८
करि लिखित देहु जो कथित[22] चाहि, तो देहिं सिक्ख पुत्रिन बिबाहि
दुव२नृपन यहै सुनि असन[23] किन्न, रान सु परुसावन रहिय भिन्न[24]५९
नृप दुव जिमाय इम सिक्ख अप्पि, डेरन इन[25] आय रु मंत्र थप्पि ॥

---

१ तोभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोडा ३ धन ४ तोभी भूमि के अर्थ छाती नहीं कांपी ॥ ५२ ॥ ५ अपनी नीति सहित ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ उमराव मान कर ९ व्यवहार सम्बन्धी ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीते जावैं ऐसे १२ अपने हाथ का लिखा हुआ १३ सन्तान (पुत्री) ॥५६॥ १४ पुत्रियें हैं सो १५ शामिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (वृक्ष के पत्रों के निर्मित पात्र) में ॥ ५७ ॥ १८ चांदी का बाजोट १९ सोने का थाल २० भोजन करते हो २१ यवनों का पकायाहुआ [यहां 'इध एधने' इस धातु से एधमान शब्द हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ मैंने कहा उसकी [विवाह की] चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यँहँ उभय साहसौं तोरि आय, करि लिखित दैंन इत इन[1] कहाय ६०
अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमात[2] रान[3] कथितहि[4] बिधेय ॥
यह सोधि लिखिय नय[5] दुहुँन आदि, तुरकन न दैंहिं अबतैं सुतादि[6]
कहिहैं जु रान धरिहैं सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुव[7]अधीस ॥
यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत बिस्वास पाय
दुहिता दुहुनव्याहन बिचारि, बिरचिय बिवाह उच्छव बढारि ॥
कूरमनरेस यह समय पाय, प्रछन्न[8] रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥
संग्रामसिंह पट्टप कुमार, सुहिं[9] तास जामि दैहो उदार ॥
सुनि रान बहुरि पच्छी कहाय, इक लिखित और अप्पहु लिखाय ॥
याकै जु पुत्र जगदीस देंहिं, वह मुख्य राज आमैर लेंहिं ॥
आमैरईस[10] सुनि यह उपाय, लिखि स्वकर पत्र दिन्नौं पठाय ॥६५॥
दुहिता[11] स्वकीय जनिहै सु पुत्त, आमैर पट्ट लहिहै अभुत्त[12] ॥
यह लिखित रान बंचि रु बिचारि, निज पुत्ति[13] उचित कूरम निहारि ।

(दोहा)

निज पुत्तिय[14] संबंध तब, कूरम सैंन[15] किय रान ॥
निज काकासुत पुत्रिका, दिय रट्ठौरहिं दान ॥ ६७ ॥
चंद्रकुमरि कूरम लहिय, कृष्णाकुमरि रट्ठौर ॥
इम बिबाहि दुव भुव[16]अधिप, जचियँ[17] सिक्ख इन जोर ॥६८॥
हाटक[18] दोलाजंत्र[19] तब, दुहुँन रान नृप दिन्न ॥

---

१ महाराणा ने ॥६०॥ २ इसकारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥ ८ छाने ॥ ६३ ॥ ९ आप के पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १० जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अभुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात् छोटा होने पर भी आमेर का राज्य लेवेगा) १३ पुत्री यहां सामान्य रीति से पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७ मांगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के बल से, अथवा महाराना के, बल से ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हींडलाट] ॥ ६९ ॥

दुहुँन२तुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तव किन्न ॥६९॥
सत्त सहँस७०००निज दल सबल, करि दुव२भूपन संग ॥
रान सिक्ख देसन दई, अवनी लैन अभंग ॥ ७० ॥
तब दुव२भूपति सिक्खकरि, बढि चल्लिय बरजोर ॥
छोनी दब्बत साहकी, उमँडिय संभर ओर ॥ ७१ ॥
दुव२नृप इम दरकुंच करि, संभर उप्पर जात ॥
नारनोल सय्यद सुनी, रूँमा बिलुट्टन बात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणागतालमशाहहतस्वानुजकामबख्शभागनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतामेराधीशजयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानंगीकारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्याप्रदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयराजमहाराणामरसिंहनिजात्मजायुगलपरिणायन ३ पट्टपाभावेऽपिलेखितस्वदौहित्रामेरस्वामित्वहस्ताक्षरमहाराणामरसिंहस्वपट्टपपुत्रसंग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूखः॥१९॥

---

१ सेना २ भूमि लेने को [अभंग, यह महाराना का विशेषण है)॥ ७० ॥ ३ सांभर नगर की ओर बढे [उठे] ॥ ७१ ॥ ४ सांभर लूटने को ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण में जाकर अपने छोटे भाई कामबख्श को मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ आमेर के राजा जयसिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध होकर नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराणा अमरसिंह का उक्त दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे कभी यवनों को पुत्रियें नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दोनों राजाओं का अपनी दो पुत्रियें विवाहना ३ अपना दौहित्र पाटवी नहीं होने की अवस्था में भी आमेर के स्वामी होने के अक्षर लिखा कर महाराणा अमरसिंह का अपने पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्णन का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सत्तावन २५७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[षट्पात्]

जाजव संगर जित्ति साह अति गव्व सम्हाऱ्यो ॥
संभर पिक्खि सहाय धरा जित्तन मन धाऱ्यो ॥
हुसनअली सय्यद नबाब आदिक सम्मत करि ॥
जित्ति सँजव जोधपुर धाय दक्खिन साहस धरि ॥
कूरम कबंध अवनीप इत अमररान पुतिनपरनि ॥
पृतनाँ प्रचारि लुट्टन प्रथम पत्ते लगि संभरसरनि ॥ १ ॥

[दोहा]

नाग्नोलपुर सेनंपति, हुसनअलीके भ्रात ॥
घिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पैत्ती यह बात ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुसनअली सय्यद नबाब सुभटन अग्रेसर ॥
नारनोलके फोजदार ताके सोदर भैर ॥
घिंसीखान रु नूरदीन तिन वत्त सुनी यह ॥
लुट्टत संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥
साजि तबहि सेन द्वादस सहँस१२०००रुमाँ नगर रक्खन चलिय ॥
इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर काल बेहाल किय ॥३॥

(दोहा)

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कढत, सय्यद पत्ते आय ॥
भट कूरम रट्ठोरके, जुट्टे तिन बिहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥
१ गर्व २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ शीघ्र ५ भूपति ६ राणा अमरसिंह की ७ सेना ८ प्राप्तहुए ९ सांभर के मार्ग में लग कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥१२उमरावों में अग्रणी मुख्य)१३भड़ [वीर]१४सांभर नगर की रक्षा करने को चले. इधर काल रूपी१५क्रोधकरके इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥

हेरवैं रावत हंकिये, आतप करत उफेल्ल ॥
श्रमजल हत्थ पसीजिहैं, मुंठि न पैहैं मेल ॥ ५ ॥
सुनत एह सध्धद भटन, दिय उत्तर अति आघ ॥
छोहानल बिच छिज्जिकैं, नट्ठो दरित निदाघ ॥ ६ ॥
इम कहि बाजिन वग्गलै, तुट्टे हिंदुन सीस ॥
दल दोउन धमचक्क वजि, ज्यों कैटभ जगदीस ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलि हिंदुव मुगलान घिट्ठ रन रिट्ठ रमापुरि ॥
भिरि भट चंचल सपनें पयन चंचल जिम पातुरि ॥
लुत्थिन लुत्थि अहुट्टि जुत्थि लुत्थिन भट कट्टिय ॥
हड्डन खग्ग खनंकि रुंड मुंडन भुव पट्टिय ॥
डाकिनिन डक्क डिंडिमि डमकि नच्चि भैरव हेरुव नदियें ॥
जिम बनिजंकार टंडा उरत इम अनीकँ भुव अच्छदियें ।८।

॥ दोहा ॥

घिसीखान रु नूरदी, हुवर सध्धद लिय मारि ॥
राइँस१००० सूर दुहुँ ओरके, झरिगे घोर खँग झारि ॥९॥
इम कूरम रट्ठोर नृप, पुरसंभर जय पाय ॥
दिल्ली गहि दोउनर दई, लहँगे अंदर लाय ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

निज निज देसन आय, दुवउ नृप संभर लुट्टिकैं ॥

१धाम२धूप [गरमी]३परिश्रम के जल[पसीने] से हाथ ४भिगलैंगे [रपटैंगे] ये, इसकारण ५तलवार की मूंठ से मेल नहीं पावैंगे अर्थात् हाथ से तरवार नहीं थामी जावेगी ॥ ५ ॥ ६क्रोध रूपी अग्नि में जलकर गरमी से ७ उपजे हुआ जल (पसीना) ८ नष्ट होगया ॥ ६ ॥ ९सेना १०जिसप्रकार कैटभ नामक दैत्य और विष्णु भगवान् के युद्ध हुआ था तैसे ॥ ७ ॥ १० घृष्ट (धीठ) ११बल पूर्वक मचा १२लांभर १३चंचल हाथों से १४युद्धकरके १५नादयुक्त किया अर्थात् भैरवने डमरू (भैरव के वाद्य विशेष) को बजाया १६बनजारा १७सेना से १८भूमि को आच्छादन की ॥ ८ ॥ १९झड़े (मारेगये) २०भयंकर खड्ग चलाकर ॥ ९ ॥ २१ दिल्ली रूपी स्त्री के लहँगे (घाघरे)

थानाँ दियउ उठाय, आलमके करि करि अमलं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीमँ दिय, बुंदिय कंटक बिगारि ॥
जुज्झ्यो जुग्गियराम हद, मारि मरद तरवारि ॥ १२ ॥
धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक होय ॥
कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्मलि तोय ॥ १३ ॥
कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥
मंत्रि वनिक हरिराम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥१४॥
अलीखान अभिधान इक, जवन रुहिल्ला खुल्लि ॥
पंचसहँस५०००पँति रक्खयो, खमग पताकन खुल्लि ।१५।
यह सुनि कग्गरं भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥
बाबा धावर हमहुकोँ, रक्खहिँ बुंदिय रीय ॥ १६ ॥
जान्यों धावर नीतिअंड, गुज्जर गहल गमार ॥
बाबा कहिकहि जो लिखत, भिरैं न सो रन भार ॥ १७॥
दै मिल्लान वहु दिन रहयो, तब धावर नय दिन्न ॥
अलियखानको ठैंक चढ्यो, दोयरमास दिन तिन्न३ ॥१८॥

॥ पज्झटिका ॥

लहि समय भीमँ तब किय उपाय, बहु बित्त रुहिल्ला हित पठाय
अक्खिय धावर प्रति बँदहु बेन, हक देहु न तो अबहम लेंरै न१९ ।
धावरहिँ कहिय यह अलियखान, जब किय कुमंत्र गुज्जर अजान

में आग लगा दी ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और ढूंढाड़ से अमल (अधिकार) करके आलमशाह के थाणे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंहने ३ सेना को ॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चम्बल नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६ नाम ७ पांच हजार सेना का स्वामी ८ आकाश मार्ग में ध्वजाएं खोलकर ॥ १५ ॥ ९ कागज (पत्र) १० हे बाबा धाऊ [धाय का पति] ११ बुंदी का राजा ॥ १६ ॥ १२नीति में मूर्ख उस धाऊ गूजर जाति वाले ने जाना कि ॥१७॥ १३ मुकाम १४ तनखा ॥ १८ ॥ १५ भीमसिंह ने १६धन १७कहा १८धाऊ से कहो ॥ १९ ॥ १९ कुरीसलाह २० गूजर जाति के मूर्खने

बुंदिय भट बुल्लि रु कहिय एहु, मिलि सबहि जवनं इक वित्त[1] देहु २०
जो वित्त तो न इय करभं[2] टारि, सब याहि देहु मरनौं बगारि ॥
सुनि यह कुमंत्र दुम्मन[3] सिपाह, चढिचढि समस्त लागि घरन राह २१
तुरकन दिय धावर कैद घत्ति[4], यह खबरि देस दक्खिन हु पत्ति ॥
सुनि नृपति बुद्ध आयसं[5] पठाय, नहि लेहु मूढ धावर छुराय॥२२॥
बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिरामसाह पुनि अरज[6] दिन्न ॥
तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय२३
कोटा नरेस इम खग्ग झारि, हैदरबेर कटक दिन्नौं बिगारि ॥
इत कामबखस सोदरहि[7] मारि, निज अमल देस दक्खिन बिथारि२४
दरकुंच उतरि रेवा दुरंत[8], उज्जैनि आय करि प्रात अंत[9] ॥
गिरिवर मुकुंदद्दर[10] मध्य होय, पुर पट्टनि चंम्मलि[11] लंघि तोय ।२५।
लक्खेरिय[12] गिरि दरे कढि सुभाय, अजमेर पीर भिटन चलाय ॥
सक सत्त तक्क मुनि इक्क १७६७मान, अजमेर आय दिन्नो मिलान[13] २६
तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूरम कबंध किन्नौं गुनाह ॥
संभरहि[14] लुट्टि लिय स्वस्व[15] देस, तसमातें[16] जंग मंडहु नरेस ॥२७॥
कहि भूप जियत अवरंगसाह, हिंदून कियउ सासन[17] निवाह ॥
यह आदि मुलक हिंदुन असेस, बिनु नीति अमल करनौं न बेस[18] २८
फरमान दे रु दोउन बुलाय, अमदी[19] नहि रुक्कहु दुहुँन[20] आय ॥
अवरहु अनायं[21] किय भुम्मि भौंज. तिन सबन समप्पहु स्वस्वराज२९

---

१ धन॥२०॥ २ ऊंटों को छोडकर. ३ उदास होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद में घालदिया [रखदिया] ५ हुकम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अरजी भेजी ॥ २३ ॥ ७ सगे भाई को ॥ २४ ॥ ८ दूर है अंत जिसका ऐसी नर्मदा नदी ९ नाश १० मुकुंदरा का घाटा कोटा के राज्य में है ११ चामल नदी का पानी लांघकर॥ २५ ॥ १२ लाखेरी के पर्वतों के दरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २६ ॥ १४ सांभर का १५ अपने अपने देश १६ इसकारण से ॥ २७ ॥ १७ आज्ञा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है यावनी भाषा में बेस शब्द अधिक का वाचक है परन्तु यहां लोकरूढी से उत्तम के अर्थ में लिया है॥२८॥ १९ आमदनी २० बिना आमदनी २१ भूपतियों को

यह कहि पठाय फरमान तत्त[1], संभरहु[2] लिखिय बुधरनृपन पत्त[3] ॥
हम कहि गुनाह सब किपउ दूर, आवहु निसंक तुम अब हजूर ॥३०॥
यह सुनि कमंध कूरम चलाय, अजमेर साह मिंट्यो[4] सुभाय ॥
तब कहिय साह गिनि आप तोग[5], संभर दुहून रक्खिय स्वजोर[6] ॥३१॥
कूरम कमंध तब कहिय एह, निज स्वामि निमक खह्यो सनेह[7] ॥
आज्ञा अधीन अब उभय आँहिं[8], जँहँ स्वामि काम तँहँ लरन जाँहिं ३२
आज्ञा गिराहि तब दुव नरेस, दोउन लिखाय दिय स्वस्व देस ॥
दतियादि[9] राज आगम्हु निसाम, सँहदेस सबन दिन्नौं बुलाय ॥३३॥
इम दिहु नृपन विस्तारि साह, गहि नीति सबन अप्पिय गुनाह[11] ॥
दिन कछुक बिताय अजमेर ठौर[12], गम आप तखत दिल्लिय उमंग ३४

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जोधपुरराजराठौराजितसिंहामेरराजकूर्मजयसिंहयोर्महाराणासैन्यसहायेन शाकम्भरीपुरलुण्ठनानन्तरस्वस्वराज्य-स्वाधिकारकरणम् १ कोटाविजयगमनस्थितबुन्दीसेनापतिधाबरगंगारामगूर्जरस्य यवनकारागारनिपतनम् २ अजमेरागतालमशाहस्याहूताजितसिंहजयसिंहयोस्तद्राज्यपुनर्दानानन्तरेतरराजदतियादि

॥ २६ ॥ १ तहाँ २ बुधसिंह ने भी ३ पत्र ॥ ३० ॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप जानकर ६ अपने बल से ॥ ३१ ॥ ७ स्नेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर में निमक की झील है इसकारण यहां निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥ ३२ ॥ ९ दतिया को आदि लेकर १० देश सहित ॥ ३३ ॥ ११ सब के अपराध दिये [बख्श किये] १२ नगर में ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जोधपुर के राजा राठोड़ अजितसिंह और आमेर के कछवाहा राजा जयसिंह का महाराणा की सेना की सहायता लेकर सांभर नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ कोटा को विजय करने को गयेहुए बुंदी के सेनापति धाऊ गंगाराम गूजर का एक यवन की कैद में होना २ शाह आलम का अजमेर आकर राजा अजितसिंह और जयसिंह को बुलाकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा॰

राज्यपुनर्दानवर्णनं विंशो मयूखः ॥ २० ॥
आदितोऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५८ ॥

[दोहा]

नृप कूरम रट्ठोर सिर, साह नजरि लखि मुद्ध ॥
हुसनअली सय्यद धुक्यो, बंधुन बैर प्रबुद्ध ॥ १ ॥
पति बुंदिय अरु जवनपति, जाजव रन द्रुव जित्ति ॥
अब अभिमानन उप्फने, करन कित्ति अपकित्ति ॥ २ ॥
कामबखस जबतैं हन्यौ, तबतैं आलम मुद्ध ॥
वाहि मुद्धपनं चिंतयो, बुंदियपति अब बुद्ध ॥ ३ ॥
पुर दिल्लिय दिन पत्तं, आलम गरब उपत्त ॥
पुर बुंदिय दिन पत्तर, उपजिय धरम अहेत ॥ ४ ॥
तुरक हिंदु सब संग तकि, उपजि अपुव्वं उछाह ॥
करिय कुंच अजमेर तन, लिय दिल्लिय मग साह ॥ ५ ॥
सेखाउत कूरम सहर, नाम मनोहरद्रंग ॥
दिन दुवरत्तत मिलान दिय, आलम अधिक उमंग ॥ ६ ॥
नृप कूरम रट्ठोरकौं, दिय निज देसन सिक्ख ॥
चित्त बुद्ध बुंदिय चहिय, तोरैं गरब जय तिक्ख ॥ ७ ॥

[पट्पात्]

क्रिय विन्नति करजोरि रावराजा आलम सन ॥
बंदगीहु क्रिय बहुत रचिय पुनि स्वामिधरम रन ॥
पुरबुंदिय अब पास सिक्ख बखसहु प्रसाद सम ॥

जाओं को दांनया आदि राज्य पीछे देने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठावन २५८ मयूख हुए ॥

१ क्रोधित हुआ २ भाइयों का बैर स्मरण होने से ॥ १ ॥ ३ बादशाह ४ कीर्ति को अपकीर्ति करने के लिये ॥ २ ॥ ५ मूर्ख (मूढ) ६ जानकर मूर्खपन का स्मरण किया ७ बुधसिंह ने ॥ ३ ॥ ८ सहित ९ धर्म की शत्रुता ॥ ४ ॥ १० अपूर्व ॥ ५ ॥ ११ मनोहरपुर १२ मुकाम ॥ ६ ॥ १३ बुधसिंह ने १४ प्रताप ॥ ७ ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट विग्रह मन भुम्मि उतहु रचिहैं कछु उद्यम ॥
भग जैत नाम काका भरद वैरिसल कुल उद्धरन ॥
*सादी हजार१०००सुभटन सहित रहिहै हाजरि चतुररन॥८॥

(दोहा)

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिँ साह ॥
जैतसिंह भट सँहँस जुत, संग लयो सु सिपाह ॥ ९ ॥
इम आलम दरकुंच करि, पुर दिल्लिय संपत्त ॥
सत्त तक्क मुनि इक्क१५६७सक्क, बैठो तख्त बिमत्त ॥ १० ॥
फरुकसेर आर्जाम सुत, करि तिहिँ संग करीम ॥
पूरब सूबा ताहि दिय, रह्यो निकट अजीम ॥ ११ ॥
बिनु बिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिल्लीस ॥
दक्खिन काबल दोउ दिस, सामा दबिय सरोस ॥ १२ ॥
इत आलमहिँ सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥
चलिय मनोहर ढंग तैं, बुंदिय दिस बुधराव ॥ १३ ॥

[षट्पात]

इक्क कनफटा नित्यनाथ कउलन आचारिज ॥
हरि हर धरम हटाय करत अप्पन मत कारिज ॥
सिस्य बहुत तस संग सुभट हय[10] गय सिबिका[11] सह ॥
जावत दक्खिन देस नृपहिँ मगमाँहिँ मिल्यो वह ॥
गजमुख[12] पुरोहित नृपति को कउलमग्ग[13] सेवत रहत ॥
तिहिँ जाय नाथ भिट्यो[14] त्वरित[15] परिय पाय कित्तिय[16] कहत १४

(दोहा)

---

* सवार ॥ ८ ॥ ६ ॥ १ संप्राप्त हुआ (सुख से पहुंचा) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फरुखसियर नामक ४ करीमबक्स नामक ॥ ११ ॥ ५ रीस (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राव बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ वाममार्गियों का ८ वैष्णव ९ शैवधर्म को हटाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ वाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथकौं *गुरुव नमि, गजमुख नृप ढिग आय ॥
सिद्ध मन्त्रि गोरक्ख सम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥
यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति बर दिन्न ॥
दै मनवंछित यह करत, सिस्यहुकौं सम सिद्ध ॥ १६ ॥
अनुष्टान जप होम अरु, मंत्र जंत्र मतिमंत ॥
कहैं जाहि भसमहु करैं, कहैं जाहि सुवकंत ॥ १७ ॥
किय नृप गजमुख कथित सुनि, नाथ निकेत प्रयान ॥
बुंदियको बिगरन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥
नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पय परि करिय प्रनाम ॥
कहिय सिस्य मोकौं करहु, भरहु पेट धन धाम ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००रुपदयन करैं सुलभ, ऐसे ग्राम अनूप ॥
गहहु दच्छिना छत्त गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥
नित्यनाथ यह सुनि कह्यो, हम दक्खिन बसवान ॥
गुरु मृत सुनि हुन जातहैं, न रहैं तात निदान ॥ २१ ॥
हम भवदीय पुरोहितहि, मुख्य मंत्र देजात ॥
यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि बसु ब्रात ॥ २२ ॥
यह कहि मंत्रु गजमुखहिं दै, गयो कनफटा देस ॥
इत बुंदिय ढिग कुंचकरि, आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥
जब कावल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोध ॥
चढि तरंड गुनगोरि दिन, किय जलकेलि कुबोध ॥ २४ ॥

---

*गुरु के समान ॥ १५ ॥ † शक्ति १ अपने बराबर का सिद्ध करदेता है॥१६॥ २ बुद्धिमान् ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ ५ उस नित्य-नाथ नामक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरों में पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सुगमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हासिल के ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥ ९ गुरु को मरा हुआ सुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहित को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मंत्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई जोधसिंह १६ नाव पर १७ बुरी बुद्धि से ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन तत्थ ॥
नचि गावत पातुरि*निकर, †श्रुति स्वर तारन सत्थ ॥२५॥
गज इकलिंगप्रसाद इक, इहिँ अंतर मैमत्त[1] ॥
निज[2]दायज आयो हुतो, उदयनेरतैँ अत्त ॥ २६ ॥
वह[3] बारन अति दानछक, जल पीवन तँहँ आय ॥
ताल विक्खि पोतन निरत, कुप्पि चल्यो अतिकाय[4] ॥२७॥
सत्थ सकल आपान[5] थिर, किन्नोँ कछु न उपाय ॥
निज[6] पोतहि पकरि निठुर, एतेमैं गज आय ॥ २८ ॥
धाइभ्रात[7] निज संगहो, तात भयो इक वार ॥
एतेबिच उलटाइ इभ[8], बोरी नाव सु वार[9] ॥ २९ ॥
नियति जोग तब तिहि कढिय, असु[10] वसु[11] त्वरित अवेरि ।
धाइभ्रात अरु अप्पि[12] तुव२, स्वसन[13] निकासे हेरि ॥ ३० ॥
निकसत खिन गुज्जर मरिय, असु निज कछु अवसेस ॥
सो चउत्थि[15] तगमान लो, पत्तो मृत परदेस[16] ॥ ३१ ॥
अनुज गन जयसिंहको, भीम सुता यह तास ॥
जोध[18] नारि सह[19]गमन धारि, पत्ती दिवं[20] पति पास ॥ ३२ ॥
यातैं पुर प्रविसत अवहु, सादर सुचे[21] न समाय ॥
मति तथापि[22] संबोधि मन, इम पुरढिग नृप आय ॥ ३३ ॥

---

*समूह †गान के साथ की चढ़ी हुई श्रुति और स्वर तथा तालों के साथ॥२५॥ १ मदमस्त २ जोधसिंह के दहेज में ॥ २६ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े शरीर वाला (यह हाथी का विशेषण है ॥ २७ ॥ ५ पानगोष्ठी (मतवाल) में ६ जोधसिंह की नाव को ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई (धाय का पुत्र) ८ हाथी ने ९ जल में वह नाव डुबो दी ॥ २९ ॥ १० प्राणरूपी ११ धन को शीघ्र अवेर कर १२ जोधसिंह १३ छूटने हुए (अन्तिम)स्वास लेनेहुओं को ॥ ३० ॥ १४ निकसते समय गूजर जाति का धायभाई मर गया और जोधसिंह का कुछ प्राण बाकी था सो १५ इसके चौथे दिन मर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥ १७ बनेड़ा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधसिंह की स्त्री १९ सती हो कर २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ तोभी बुद्धि से मन को समझा व

सुनि भूपहिं आवन सुभट, सचिव वेग * समुपेत॥
बुंदियपुर सन निकसि सब, सम्मुह आय †सहेत ॥ ३४ ॥
नगर जैतगढ ताल[1] तट, रहि नृप अंतय मिलान[2] ॥
प्रात पुरहिं प्रबिसत प्रकटि, गृहगृह मंगल गान ॥ ३५ ॥
कोटारन निज भट मग्यो, जुग्गियराम निसंक[3] ॥
ताको सुत सालम लयो, गजारूढ नृप[4] अंक ॥ ३६ ॥
इम आलमके पँस[5] रहि, पंद्रह१५बरस बिहाय ॥
नभ खट सत्रह१७६७भद्द[6] सित, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥३७॥
बुंदिपपुर प्रबिसत समय, सउँन[7] किन्ह मग रुद्ध ॥
बिधवाबाल[8] रजस्वला, पिक्खी सम्मुह[9] बुद्ध ॥ ३८ ॥
इत्यादिक[10] असउँन[11] बिबिध, मन मन्ने नहिं तत्त[12] ॥
प्रविस्यो उत्तरद्वार पुर, जाजव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अजितसिंहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तस्वस्वराज्यगमनाज्ञालमशाहदिल्लीगमन १ गुणगौरीदिनबुधसिंहानुजयोधसिंहस्य नावा सह बुन्दीतडागमज्जनसूचनमेकविंशोमयूखः ॥२१॥
आदितः एकोनषष्ठ्यधिकद्विशततमः ॥ २५९ ॥

॥ ३३ ॥ * सहित † स्नेह सहित ॥ ३४ ॥ १ तालाब के किनारे २ मुकाम ॥ ३५ ॥ ३ विना शंका वाला जोगीराम ४ हाथी पर चढेहुए राजा ने गोद में लिया ॥ ३६ ॥ ५ अधीन ६ भादवा सुदि पक्ष में ॥ ३७ ॥ ७ शकुनों ने मार्ग रोका ८ बालविधवा और रजस्वला को बुधसिंह ने ९ सामने देखी ॥ ३८ ॥ १० इनको आदि देकर अनेक प्रकार ११ अशकुन १२ तहां ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में अजितसिंह, जयसिंह, बुधसिंह इनको अपने अपने राज्यों की सीख देकर बादशाह आलम का दिल्ली जाना १ गुनगौर के दिन बुंदी के तालाव में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव सहित डूबने की सूचना का इक्कीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसो उनसठ २५९ मयूख हुए ॥

(छप्पई)

बुंदिय गद्दिय बैठि बुल्लि[1] गजमुखह[2] पुरोहित ॥
अन्नि गुरुव सुनि मंत्र कउल[3] सारग चाहयोचित ॥
लक्ख१००००० रूपय्यन मुलक हत्थि[4] सिबिका[5] हय अप्पिय॥
गद्दिय[6] तक अधिकार बखसि गजमुख गुरु थप्पिय ॥
आचार अधम अद्दरि रद्दिय पंच मकारन मुदित मन[7] ॥
बुंदीस बुद्धि बिगरी बिबिध कउल कम्म[8] लग्गो करन ॥१॥
जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥
तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥
तास तखत अमरेस[9] रह्यो रानाँ कछु वच्छर[10] ॥
पत्तो[11] वह परलोक सुनी बुंदिय यह संभर[12] ॥
लै सिक्ख तबहि पटरागिनी[13] रानाउति पीहर गई ॥
उम्मेदकुमरि तत्थहि अचिर[14] भावीबसि असु बिनु[15] भई ॥२॥

[दोहा]

पटरागिनि पंचत्व[16] इम, लयो उदैपुर जाय ॥
चआरिलक्ख४०००००मुद्रा प्रमित, रह्यो तहाँ तस रॉय[17]॥३॥
इहिं अंतर बुंदीस प्रति, सगपन[18] हित सरराय ॥
पुर भनाय रट्ठोरके, नारिकेल[19] द्रुत आय ॥ ४ ॥
सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय भेलि ॥

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ वाममार्ग ४ हाथी ५ पालखी ६ गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ वाममार्ग के *पांच मकारों में मन प्रसन्न करके ८ वामियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ चहुवान बुधसिंह ने १३ पाटरागी १४ शीघ्र १५ प्राण विना ॥ २ ॥ १६ मृत्यु १७ धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

*वाममार्गियों में, मदिरा १ मांस २ मैथुन ३ मुद्रा ४ और मत्स्य ५ ए पांच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके सेवन से वामीलोक मोक्ष होना मानते हैं, जिनका विशेष विवरण देखना होवै तो वामियों के 'भैरवी चक्र' नामक ग्रन्थ में देखें ॥

मन परंतु लगि कउल[1] मत, प्रथित बेदमत पेलि[2] ॥ ५ ॥
रहत चक्रपूजा[3]नुरत, बिधि नय धरम बिसारि ॥
आलस मद्य प्रमाद[4] करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥
इहिँअंतर लाहोरतैं, दिल्लिय आय पुकार ॥
सूबा बिच दल बंधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥७॥
नानक मत अनुगामि[5] सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥
सो मंडत अप्पन अमल, सूबा खंडि सरीस[6] ॥ ८ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह दिल्लीस अटकदिस कटक अगंजित ॥
सजि चल्लिय द्रुत साह राह उद्धत जय रंजित ॥
सबहि पुत्त निज संग हुरम बेगम सब हाजरि ॥
तीन लक्ख३०००००तुक्खाँर[7] भार[8] सतपंच५००ताम[9] भीर ॥
संक्रमित साह आलम सबल क्रम प्रवेस लाहोर करि ॥
वह अजितसिंह सब सिखन हनि दंडिखंडि[10] लिन्नौं पकरि ॥९॥

(दोहा)

त्रासित[11] करि सब सिखनतैं, नानक पंथ छुराय ॥
मुंडित डह्वी मूछ करि, दंडि[12] दये निकसाय ॥ १० ॥
सालमार उपबन[13] निकट, रह्यो कछुक दिन साह ॥

शीघ्र आये ॥ ४ ॥ १ प्रसिद्ध २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३*चक्रपूजा में ४ गफलत [भूल] ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले ६ रीस [क्रोध) सहित ॥ ८ ॥ ७ घोड़े ८ चल कर ९ सेना सहित १० दंड तोड़ कर [नानक मतवाले हाथों में दंड रखते हैं] ॥ ९ ॥ ११ त्रासयुक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को डाढी मूंछ मुंडवा कर निकला दिये [डाढी मूंछ का मुंडवाना नानक मत के विरुद्ध है] ॥ १० ॥ १३ सालमार नामक बाग के समीप

* वाममार्गियों के ग्रन्थों में "भैरवी चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहां नहीं लिखी जासक्ती जिस किसीको देखना होवे वह "भैरवी चक्र" नामक ग्रन्थ में देखै, उसका सिद्धान्त नीचे के श्लोक से जानना चाहिये ॥

प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमाः ॥ निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥ १ ॥

अब अभाग तुरकानको, उलटी करत *इलाह ॥ ११ ॥

(षट्पात्)

कलिजुग भूपन कुमति †निलय नारिन भरि रक्खैं ॥
रहैं इक्क अनुरत्त अवर जारन तब चक्खैं ॥
योंही आलम संग निकर नारिन अंतहपुर ॥
तिनमैं बेगम इक्क लज्ज लंघिय कामातुर ॥
सँहँसन सिपाह जामिक रहत रुक्कन तोहु न कामरय ॥
निसदीह जार इच्छत निलज सरमा जिम सारद समय ॥१२॥

(दोहा)

गायक्क आवत गान गृह, सिखवन नारिन गान ॥
तिनबिच पिक्ख्यो रूप बर, गायक इक्क जवान ॥ १३ ॥
छन्नैं ताहि कनायकैं, रक्ख्यो चिकन लुराय ॥
प्रतिसीरा पलटाय पुनि, लिन्नौं रत्ति बुलाय ॥ १४ ॥
दिन रक्खैं मंजूस धरि, रत्ति निकारैं ताहि ॥
यौं बेगम दिल्लीसकी चिपी कलावत चाहि ॥ १५ ॥
पिक्खि सउत्तिन इक्क निस, अक्खी आलम अग्ग ॥
सुनत प्रमादी साह धकि, लयो ताहि गृह मग्ग ॥ १६ ॥
साहागम बेगम सुनत, छन्नैं संग लगाय ॥
जाय सउच संकानिलय, आई ताहि दुराय ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

---

* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतियुक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २ जनाने में ३ काम से पीड़ित ४ पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदऋतु के समय में ६ कुत्ती के समान॥ १२ ॥ ८ कलावंत ९ गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ श्रेष्ठ ॥ १३ ॥ १२ कनात में लपेटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १३ सौतों ने १४ उस्सी बेगम के घर का मार्ग ॥ १६ ॥ १५ बादशाह का आना १६ उसे अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावंत को छिपाआई ॥ १७ ॥

इहिँअंतर आलम तहँ आयो, तिय जुब्बन *तसकर नहि पायो ॥
तब नचाय †सोतिन दृगतारा, ‡सउचगेह दिय सैंन इसारा॥ १८ ॥
सु लखि साह अक्खिय बेगम सन, मैं §बिरेकगद ¶अज्जबिकल मन
यह सुनि गायक भिक्खु बिचारयो, खंजर दोरि साह हिय मारयो
रीढक फारि पार वह फुट्टो, छिन अंतर आलम असु छुट्टो ॥
नियति जोग इम लेहु निहारैं, दिल्लीसहिँ गायक हनिडारैं ॥ २० ॥
गायकहू नारिन गहि मारयो, साह कुबिधि मरि सुजस बिगारयो ॥
अंतहपुर तब बजिगँ अचानक, इतउत रुदनराग उरआनक ॥२१॥

(षट्पात)

हुरम हार शृंगार तोरि झूरत तोबा करि ॥
झारिझारि बंगरिन परत लुट्टत उट्टत परि ॥
मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि द्रुत धायो ॥
सुत्तो कुमर अजीम मुंढ ताकहँ हनिआयो ॥
लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्ल्यो दलैं हलकारिकैं॥
दोउनरमराय गद्दिय लई आजमैं अनय बिचारिकैं ॥ २२॥

(दोहा)

आलम मरन अपुब्ब हुव, फुट्टी दिस दिस बत्त ॥

*स्त्री के जोबन का चोर †सौतोंने नेत्रों की पुतलियों का इसारा करके ‡तहारत में होने का इसारा किया॥१८॥§दस्तों के रोग से ¶आज 'मृत्यु॥१९॥२बांसे की [पीठ की लंबी] हड्डी अथवा पीठ को फाड़ कर३प्राण४भाग्य के योग से ५ कलावंत ॥ २० ॥ ६ बजे ७ रोने के राग और ८ छातियों के ढोल ॥ २१ ॥ ९ फारसी में तोबा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिसका अन्वय 'हार शृंगार' के साथ है, अर्थात् हार शृंगार के परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शीघ्र ११ मूढ [यहां मूढ कहने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने से वह पाट का हकदार नहीं था तोभी उस मूर्ख ने वृथा मारडाला १२भेजी १३ सेना १४ आजमशाह के किये हुए अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात् आजम ने भी आलम के छोटे भाई होने पर दिल्ली के तखत का दावा किया था इसीप्रकार ये भी कर बैठें तो आश्चर्य नहीं, यह जानकर॥२२॥ १५ अपूर्व

मोजदीन लय३भ्रात हनि, बैठो तखत प्रमत्त ॥ २३ ॥

(षट्पात्)

आलम मृत सुनि अजितसिंह मरुदेस नरेसुर ॥
करि फोजन दरकुंच आय अजमेर निडर उर ॥
लिन्नौं *बिंटुलि दुग्ग साह थानौं हनि †संगर ॥
सूबा दब्बि ‡सजोर भयो बिनु संक गब्ब भर ॥
इत नक्कि छिद्र दक्खिन अवनि मरहट्ठन बल मंडयो ॥
जित जित उठाय दिल्लिय अमल छंत्ति कातरपन छंडयो॥२४॥

(दोहा)

मति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥
तक्की मारि कटाच्छ दृग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

देसदेस मचि दंग चंग भूखन चमकाये ॥
पुरपुर धाटिनि पात पयन घुग्घर घमकाये ॥
अलस अैस अन्याय हावभावन बिसतारत ॥
आसवपान अपार मार आतुर दृग मारत ॥
गनिकान बिभव अधिकार गत चंडोतक घुम्मर रचिय ॥
दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय ॥

(पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा) ॥ २३ ॥ * अजमेर के गढ का नाम 'बींटली' है † युद्ध में ‡ जोर [बल] सहित १ भूमि में २ बढ कर ३ कायरपन छोडा ॥ २४ ॥४प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाक्ष ॥२५॥ अब यहां रूपक अलंकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) मचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) भूषण चमकाये और पुरपुर में ८ धाड़े (डाके) ९ पड़े सोही पैरों में घूघरे बजाये १० अत्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीड़ित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनिकाओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११लहँगे[घाघरे] की घूमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घूमर है) ॥२६॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत भ्रात हनि, बैठि तखत बनि बीर ॥
निलज दूर किन्नों *अनखि, आलमसाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिक्खन ॥
जुलफकारखाँ नाम अवर थप्यो लखि §इक्खन ॥
तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुंच गेह रुख ॥
अतिजव दिल्लिय आय पट्ट पायो सु परम सुख ॥
आसव ¶बिपान अनुरत्त अति हठ प्रमत्त लय[1]आत हानि ॥
गनिकान संग गीदर रहत दिल्लिय पादप दीम[2] बनि ।२८।

॥ दोहा ॥

नायक[3] लाडकपूर इक, गायक[4] गहिर[5] गुमान ॥
तास लालबीबी बहिनि, अधिक रूप गुन आन[6] ॥ २९ ॥
पट्ट हुरम ताकौं करी, मोजदीन बस होय ॥
गलबाँही छिनछोरिकैं, कम्म सुनैं नहिं कोय ॥ ३० ॥

पादाकुलकम् ॥

नारिन संग फिरत कांतारन[7], नारिनहीमैं सहल सिकारन ॥
इक दिन बाग करी असवारी, नाजर संग तथा सब नारी ।३१।
पान कापिरसायन अति किन्नौं, साम[9] चढन सासन पुनि दिन्नौं ॥
दिन वेला[10] बासि केलि बिहाई, अपरअन्ह[11] संध्या अब आई ।३२।

---

* क्रोध करके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी शिक्षा से [लोगों के सिखाने से] § परीक्षा करने के लिये अथवा अपने नेत्रों से देख ¶ विशेष पीने [अधिक पीने] में अनुरक्त १ दिल्लीरूपी वृक्ष का २ दीमक (उदेही) ॥ २८ ॥ ३ कलावंतों का अफसर ४ कलावंत [गानकार] ५ गहरे घमंड वाला ६ घर अथवा नखरा ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ७ वनों में ॥ ३१ ॥ ८ मद्यपान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय क्रीड़ा में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान बिमत्तो, रहँसि लालबीबी अनुरत्तो ॥
सोधि तास सिबिका बिच सोयो, जावतखिन काहू नहिँ जोयो॥३३॥
असवारीके समय अचानक, इत उत बजे चढनके आनक ॥
कहि कहि त्वरा दरोगन किन्नी, सब हुरमन सिबिका करि दिन्नी॥
लेलै चले कहार नृजानन, जोवत फिरत साहकोँ सब जन ॥
भटन लालबीबिय ढिग भारयो, खोजन तब तहँ जाय निकास्यो३५
खोलि बंध सिबिका इक नाजर, आन्यों साह भटनके अंतर ॥
अति अचेत सिबिकाबिच डार्यो, लुछहिँ राज समस्त बिचारयो ३६
आई तब दिल्लिय असवारी, मर्नाजँत साह रहेँ इम मारी ॥
दै अधिकार बिभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नैँ सब गायक॥३७॥
दोहा—इत दिल्लिय इम सचिव अनय, इत बुंदिय अवनीस॥
साहबहादुर मिच्चु सुनि, सोचि रु धुन्न्यों सीस ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवाममार्गधारणम् १ नानकमतीयोपद्रवश्रवणालमशाहलाहोरगमन २, आलमशाहकलत्रोपपतिगायककरालमशाहपञ्चत्वप्रापणम् ३ हतानुजत्रिकमोजदीनदिल्लीपट्टोपविशन४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबीविशाभवनं छा-

न्ध्या [मायंकाख] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मस्त हुआ २ एकान्त में ॥ ३३ ॥ ३ शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ पालखियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ उमरावों के भीतर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन को जीतने वाली ८ महामारी [मरी] रोग विशेष जिसको अंगरेजी में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ बड़े सलाहकार सब कलावंतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अनीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह का वाममार्ग धारण करना १ नानक मत वाले सिक्खों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २ आलमशाह की बेगम के जार [उपपति] एक कलावंत के हाथ से बादशाह आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छोटे भाइयों को मार कर मोजदीन का दिल्ली के तखत पर बैठना ४ अत्यन्त मद्यपान करनेवाले मोजदीन का एक

विंशो मयूखः ॥ २२ ॥

आदितः षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भजिं बाममत, सजि बिधिरहित समाज ॥
आलस पर आसिक भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

हुसनअली सय्यद नवाब इक मंत्र रचिय इत ॥
मोजदीनकौं मत्त जानि चिंतिय प्रपंच चित ॥
पूरब पुर पटनाँ सु साहफूरुक अजीम सुव ॥
तब पत्रनें मिलि ताहि भिरन आन्यौं दिल्ली ध्रुव ॥
रन मोजदीन तासन बिरचि भजि दिल्लिय अंदर दुरयो ॥
लगि पिट्ठि साहफूरुक सजव आय ताहि हनि अंकुस्यो ॥२॥

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, बिक्रम हायन बट्ट ॥
मोजदीनकौं मारिकैं, बैठो फूरुक पट्ट ॥ ३ ॥
जुलफकारखाँ सचिव तस, हन्यौं सोहु हमगीर ॥
सय्यद फूरुकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥
पलटी गद्दिय तीन ३ इम, बरस इक्क १ के माँहिं ॥
आलम पिच्छैं मोजदी, अब यह फूरुक आँहिं ॥ ५ ॥
बुध नृपकै पाही बरस, भयो कुमर कुलभान ॥
कछवाही रानी उदर, देवसिंह अभिधान ॥ ६ ॥
होत जनम दिसदिस दये, लक्खन देम्म लुटाय ॥

कलावंत की पुत्री लाल बाई के वशीभूत होने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ साठ २६० मयूख हुए ॥

१ वाम मत का सेवन करके ॥ १ ॥ २ फूरुकशाह ३ पुत्र ४ पत्रों से मिल कर अर्थात् लिखा पढी करके ५ युद्ध करने के लिये ६ उस फूरुकशाह से ७ खड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ विक्रम के सम्वत् के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ९ रुपये

जातकरम अरु दान जप, सवबिधि पुव्व सधाय ॥ ७ ॥
कुमर जनम आमेरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥
पठये कुल पहिरावनी, दस १० हय दोय २ करिंद ॥ ८ ॥
मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥
बिगरि बाममग बुद्धमति, आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥
ऐसो आलस अँवर गत, सुन्यौं न पिक्ख्यो रंच ॥
सातौं ७ प्रकृति सम्हार नहिं, बिगरत सबहि प्रपंच ॥१०॥
पुर भनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥
रट्ठोरनकौं खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥
विप्र पुरोहित निज बिबुध, नाम भवानीदास ॥
महडू केसोदास पुनि, कुल चारन मतिकास ॥ १२ ॥
ये दुव२ भूप तयार करि, पठये नगर भनाय ॥
लगन बेर हम आयहै, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥
द्विज चारन दुव २ जायकैं, भाखि लगन रहि तत्थ ॥
इत नृपकौं आलस अधिक, उपजत विविध अनत्थ ॥१४॥
वहै लगन नृप चुक्किकैं, दूजो लगन दिखाय ॥
लगन पंच५इम चुक्कयो, व्याहन गो न भनाय ॥ १५ ॥
द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति भनाय करि रोस ॥
अब तुम सिर कन्या हनौं, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥
तब चारन तत्थहि रह्यो, द्विज आयो नृप पास ॥
बुल्ल्यो अब मरिहौं न तो, ब्याहहु आलस बास ॥ १७ ॥
यह सुनि द्विज संकोच करि, गो नृप नगर भनाय ॥

१विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य में गया हुआ ५स्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातों अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ६ पंडित ७ चारणों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १० हे आलस्य का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रट्ठोरकी, बिबिध त्याग बँटाय ॥ १८ ॥
बुंदिय दिस पुनि कुंच किय, अति आलस *अलसात ॥
आत आत मगमाँहिँ रुकि, बहु मुकाम रहि जात ॥ १९ ॥
चलत रुकत रुकि चलत इम, नगर मालपुर आय ॥
तहँ [१]तडाग अंतर उतरि, [२]कटक मुकाम कराय ॥ २० ॥
व्याहयो मासतपस्यँ[३] बिच, साह्यो[४] अलस सुगाढ ॥
रहत मास पुरताल बिच, आयो सिर आषाढ ॥ २१ ॥

षट्पात् ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥
अधिक मंडि आसार[५] बिहित[६] संबँर[७] बरसाये ॥
आयो जल जब ताल तबहि स्पंदर्न[८] मँगाय इक ॥
तिहिँ उप्पर थित होय रह्यो बहु दीह आलसिक ॥
मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमपति[९] प्रति पत्र दिय ॥
उन कहिय नीर परिवाह[१०] मग कढ्ढहु तब यह इन करिय ।२२।

गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥

इत्थं स वक्षोद्वयसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥
बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्षितीशः॥२३॥

अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥
स्वामिदर्शनसाकांक्षो, जैत्रसिंहः समागतः ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ * आलस्य करता हुआ ॥ १९ ॥ १ तालाव के भीतर २ सेना का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ उस आलस्य को गाढा (दृढ) पकड़ा ॥ २१ ॥ ५ मेघ धारा ६ उचित ७ जल ८ रथ मंगवा कर ९ आमेर के राजा जयसिंह प्रति १० जल निकलने के मार्ग [मोरी] के रस्ते से ॥ २२ ॥ इसप्रकार वह छाती पर्यन्त जल आने पर रथ में बैठाहुआ मालपुरा के तलाव में मदोन्मत्त आलसी बुंदी का राजा बहुत दिनों तक रहा ॥ २३ ॥ वहां ही फरोखशाह के बादशाह होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इच्छावाला जैत्रसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे श्रावण मास के आने पर, आ-

वंशस्थः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागते, बुन्दीं समागम्य विघुप्तबुद्धिभृत्।
आलस्यमासेव्य चिरक्रियेश्वरोऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः ।२५।

प्रायो ब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मरुनृप अजमेर लिय, तब विग्रह हुव एक ॥
रूपनगर रट्ठोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥
मरुभूपति सौं नहिं मिल्यो, हठपूरव हमगीर ॥
साहहिं गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥
याके अरु मरुईसकै, बनी नाँहिं जब बत्त ॥
तब रजधानी संगलै, दिल्लियपुर वह पत्त ॥ २८ ॥
बुंदियहू तब आय वह, राजसिंह रट्ठोर ॥
नहि किन्नौं सतकार तस, बुद्ध अलस बरजोर ॥ २९ ॥
राजसिंह निज पुत्रिका, सगपन हित कहि बत्त ॥
सोहु नृप मन्नी नहीं, अलस नारि अनुरत्त ॥ ३० ॥
पाय अनादर तब गयो, कोटापुर रट्ठोर ॥
कन्या भीमहिं व्याहिकैं, जुरि मंड्यो इक जोर ॥ ३१ ॥
रूपनगर पति रीति इहिं, भीम हितु करि मंत्र ॥
निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥
मरुनृपको बनि बनि पिसुन, अनय साहसौं अक्खि ॥

लक्ष्य का आश्रय लेकर, आलसियों का शिरोमणि, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ मारवाड़ के राजा ने २ किशनगढ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राप्तहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्य रूपा स्त्री से अनुरक्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से सलाह करके ॥ ३२ ॥ ८ चुगल ९ अनीति

साह लगत भानेज सुत, यातैं अदर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धतिः ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताब, करि सचिव मुख्य सय्यद नबाब ॥
फरमान देसदेसन पठाय, सतकारपुव्वं सब नृप बुलाय ॥ ३४ ॥
बुधसिंह पास नैति सहित तत्र, निज हत्थ मंडि पठयो सु पत्र ॥
द्रुत सँदल आय सत्रुन बिदारि, चाचा वँ रचहु मम घर सम्हारि३५
सोहू न पत्र मन्न्यो नरेस, बिधिजोग राज दुड्डन बिसेस ॥
किय छत्रमहल्ल विच्च सतत बास, अब सुभट मंत्रि सब हुव उदास३६

दोहा ॥

चारन केसोदाससौं, इकदिन अक्खिय बुद्ध ॥
मरुनृप जो अप्पन मिलैं, जुरैं साहसौं जुद्ध ॥ ३७ ॥
बुंदिय तजि उत हम चलहिं, वे आवहिं इत बेग ॥
ततो उभयरमगमाँहिं मिलि, धर दब्बहिं गहि तेग ॥ ३८ ॥
महडू केसोदास तब, यह सुनि गो अजमेर ॥
मरुनृपसौं मिलिकैं कह्यो, अब नहिं करहु अबेर ॥ ३९ ॥
हेरतहो मरुनृप पहहि, कोऊ मिलहिं सहाय ॥
यातैं द्रुत दरकुंच करि, बुंदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥
कुंच तीन ३ मरुनृप करिय, चह्यो तथापि न बुद्ध ॥
तब आलस्य अचेत गिनि, फिर्यो कबंधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥
दिल्लीपति फरमान इत, नहिँ मन्नैं बुंदीस ॥
यातैं अनर्ख बिचारि उर, रची साहहू रीस॥४२॥
रूपनगरपुर भूपको, तबही लग्गो दाव ॥
संभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिसुन चँवाव ॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नम्रता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अब ॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना मांडा ॥३६॥ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥६क्रोध करके ॥४२॥ ७ रूपनगर नामक पुर के राजा का ८ चुगल ने ९ चुगली रची ॥ ४३ ॥

[षट्पात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम बत्त साह श्रुतं[1]॥
मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभय[2]मंत्र जुत ॥
कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अद्दर ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस प्रबल पिल्लहु तिन उप्पर ॥
कूरम नरेस जयसिंह कहँ छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि ॥
उज्जैन नगर सूबा अपि तत्थ[3] पठावहु नीति तकि ॥४४॥
सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भीम[4] बुलायो ॥
महाराव[5] कहि मिलि रु बहुत सतकार बढायो ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस साह पिल्ल्यो[6] दोउनगर ॥
इहिं तब कोटा आय सेन सज्जिय हित संगर[7] ॥
इत साह भेजि आमेर दल जयसिंहहिं इम हुकम दिय ॥
सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम महर किय॥४५॥

(दोहा)

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥
सूर सबल[9] सेना सहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥
संभर सम्मुह जायकै, आन्यौं पुरहिं बधारि ॥
रक्ख्यो कछुदिन प्रीति रस मंडि बिबिध मनुहारि ॥४७॥
अंतेउर[10] कछवाहको, अंतेउर[11] बिच आय ॥
मिलि ननंद[12] भाउज मुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥
उपालंभ[13] कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥
मन्नैं नहिं फरमान तुम, किन्नौं वहुत अनर्थ[14] ॥ ४९ ॥

---

१ कानों में २ पत्र ३ तहां (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले इस समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराव की पदवी मिली ६ भेजा ७ युद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥४७॥ १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजाई॥ ४८ ॥ १३ ओलंभा १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

कोटापुर पति भीम अब, बुंदिय लिन्न लिखाय ॥
तुम प्रमत्त वह छिद्र तकि, करिहैं बिग्रह आय ॥ ५० ॥
यातैं मम मत[1] आहि यह, सजहु भ्रात दुव साम ॥
प्रथित[2] सत्य मैं बीच परि, कट्टौं द्रोह निकाम ॥ ५१ ॥
तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥
घरहीमैं हम समुझिहैं, लिन्नी बिबिध बिचारि ॥ ५२ ॥
सक अंबर रिखि सत्त ससि१७७०, फग्गुन द्वादसि स्यांम[3]॥
कछवाही उर कुमर हुव, भावतसिंह स नाम ॥ ५३ ॥
भागिनेय[4] हित हरख करि, करिय कुंच कछवाह ॥
पहुँचावन बुंदीसहू, चढ्यो तुरग हित चाह ॥ ५४ ॥
चढत बाजि[5] प्रासाद[6] सिर, बुल्ल्यो बिकट उलूक ॥
काकन कंकन[7] कुक्कुरन[8], किय फेरंडन[9] कूक ॥ ५५ ॥
यह असकुन चिंते न चित, चल्ल्यो चढि चहुवान ॥
कूम्मकौं पहुँचायकैं, मुरर्‌यो अलस अमान ॥ ५६ ॥
नाथाउत नगराजको, गुढा नाम इक गाम ॥
मातुलकुल[10] चहुवानको, किन्नैं तत्थ मुकाम ॥ ५७ ॥
सक अंबर रिखि सत्त इक १७७०, फग्गुन मेचक भूत[11] १४ ॥
कोटापति लै दल[12] चढ्यो, बुंदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे हतदिल्लीपतिमोजदीनफूरुकसियरशाहयवनेन्द्री-

---

॥ ५० ॥ १ मेरी सलाह है २ प्रसिद्ध ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ कृष्णपक्ष की ॥ ५३ ॥ ४ भानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घोड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पक्षि विशेष ८ कुत्तों ने ९ गीदड़ों [स्यालियों] ने कूक की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुलवाला का था ॥ ५७ ॥ ११ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी १२ सेना ॥ ५८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के बादशाह मोजदीन को मारकर फ़रुकशाह का

भवन १ बुधसिंहदीर्घसूत्रताहेतुभणायपपुत्रीविवाहलग्नपञ्चकातिक्रमण २ मरुपाजितसिंहाजमेरग्रहतद्विरुद्धरूपनगरराजराजसिंहदिल्लीगमन ३ आज्ञापत्रातिक्रमफ़र्रुकसियरबुधसिंहबुन्दीहरणानन्तरकोटापतिभीमसिंहतत्प्रदान ४ आमेराधीशजयसिंहोज्जयिनीपदप्रेषणं त्रयोविंशो मयूखः ॥ २३ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६१ ॥

[षट्पात्]

पोतन चम्मलि छाय घाय बज्जिग निसान घन ॥
पक्खर घंट घमंकि बेग हल्लिय इय वारन ॥
माधानी सब संग भिरन अवरहु अनेक भट ॥
सहँस वीस२००००हय सज्जि भीम आयउ बट उब्बट ॥
निस घटिय दोय २ रहतैं निडर लरन घेरि बुंदिय लई ॥
प्रातहि पुकार बुंदीस प्रति भय बिहाल हाजरि भई ॥ १ ॥
सुनत एह बुंदीस चलिय चढि बाजि सुर्ड मन ॥
खबरि इतें बिच आय घेरि लिन्नौं अरि पंत्तन ॥
तबहि भूप टरि बाम लंघि असतोली भूधर ॥
आय सुरथपुर करिय रक्तदंता दरसन बर ॥
गजमुखह पुरोहित कहिय तब मैंतो जावत लरन रन ॥
भीमसौं भिंटि दिखराय भुज नगर द्वार रचिहौं मरन ॥ २ ॥

बादशाह होना १ बुधसिंह के अत्यन्त आलस्य के कारण भणाय के राजा की पुत्री से विवाह करने में पांच लग्नों को चुकाना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का अजमेर लेना और रूपनगर के राजा राजसिंह का अजितसिंह के विरुद्ध दिल्ली जाना ३ फ़रमान नहीं खोलने के कारण फ़र्रुकसियर का बुधसिंह से बुंदी छीनकर कोटा के राव भीमसिंह को देना ४ आमेर के राजा जयसिंह को उज्जैण के सूबे पर भेजने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आआदि से दो सौ २६१ मयूख हुए ॥

१ नावों से चामल नदी को छाकर मेघ के २ समान नगारे बजे ३ हाथी ४ माधोसिंहोत हाडे ५ विना मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का मूर्ख ७ पुर ८ असतोली ना-

यह कहि गजमुख आय प्रविसि पच्छिम पुर तोरन[1] ॥
दक्खिन तोरन निज निकेत[2] तहँ जाय रच्यो रन ॥
भरि भरि ब त तुपक पिक्खि नृप भीम कहाई ॥
दोउन २ के तुम बंद्य[3] सिलहु करि बंध लराई ॥
गजमुखहु पाय तब लोभ गति मंद[4] जाय भीमहिं मिल्यो ॥
पकराय तबहि लिन्नो निपुन[5] गुरुतामद तब द्विज गिल्यो ।३।

(दोहा)

गजमुखकों पकराय इम, तोरन[6] अररन[7] फारि ॥
आय तखत कोटेस अगि, बुंदिय अमल बिथारि ॥ ४ ॥
इत नृपसों सालम कह्यो, मरन उचित इहिं जुद्ध ॥
जो न रुचत तो लरहिं हम, हमहिं सिक्ख अब सुद्ध ॥५॥
यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥
नृप सु सुरथपुरतें सुगरि, गो मेवारन[8] गाम ॥ ६ ॥
मेवारहिं पुनि दाहिनें, करि गो मालव देस ॥
सालके[9] मिल्यो जाय तहँ, पुर आमेर नरेस ॥ ७ ॥
इहिं अंतर उनियार[10] पति, नरुवंस[11] संग्राम ॥
नैनगर[12]के ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥
कारातें[13] गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥
तबहि अनादर तरजि[14] नृप, अंतर भो जु उदास ॥ ९ ॥
छिन्नि अखिल[15] अधिकार तस, द्विज सिवदासहिं दिद्ध ॥
कउल गग्ग गुरुसिर कहर[16], कोप बिगरि अब किद्ध ।१०।

स पर्वत लांघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ मूर्ख ५ चतुर भीमसिंह ने ॥ ३ ॥ ६ पुर के द्वार के ७ किवाड़ों को तोड़कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ मेवाड़ के गामों में ॥ ६ ॥ ९ शाला[जयसिंह] से मिला ॥ ७ ॥ १० उणियारा का पति ११ नरूका संग्रामसिंह १२ नैणवा नगर के ॥ ८ ॥ १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ९ ॥ १५ सब १६ क्रोध "यहां क्रोध की अधिकता दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग है" वा कहर का अर्थ जुल्म

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समस्त अपनाय ॥
अनायत्त[1] करउर समुझि, घेर्‌यो सालम जाय ॥ ११ ॥
बुंदियपुर अवरोधतैं[2], रानिय बिपात बिरत्त[3] ॥
इक १ बेघम आमेर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥१२॥
अवर लोक अवरोधके, बिभव सचिव तिहिँ वार ॥
सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥
खरच रुपय्ये अठ्ठसत ८००, अँरपि[4] नित्य तिन्ह एव ॥
इक १ हायन[5] बुंदिय बिभव, दुव्वर निबाह्यो[6] देव ॥ १४ ॥
इत नृप मालव जायकैं, लिन्नैं तुरग अनाय ॥
बेघमपति प्रति मोलकी, हुंडिय[7] दिन्न पठाय ॥ १५ ॥
देवसिंह वह बंचि दल, गिनि सगपन व्यवहार ॥
दिन्नी हय सोदागरन[8], मुद्रा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥
बिपति बीच इम बंदगी, चुंडाउत किय चाहि ॥
अप्पन सिर ऋन किय अधिक, बुंदिय बिभव निबाहि ॥१७॥
इत करउरपुर भीम नृप, रह्यो बिटि रनरत्त[9] ॥
अट्ठारह ८१ अह[10] अंकुर्‌यो[11], मुर्‌यो न सालम मत्त ॥ १८ ॥
पल पल बिच गोलन परिग, प्राकारैंन[12] बिच पंथ ॥
सब करउर तोपन सिलगि, हुव झाएकें[13] हरिमंथ[14] ॥ १९ ॥
मुहुक्कमकुल उमराव इक, सुखसिंहह चहुवान ॥
पुत्रहिँ दै घर बिभव पद, किय कसायें[15] परिधान[16] ॥ २० ॥
वह अनिच्छ[17] बिचरत फिरत, कोटा दल[18] बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ विरक्त होकर ॥ १२ ॥ १३ ॥ ४ देकर तिनको धारण किए (रक्खे) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १८ ॥ १२ कोटों में मार्ग होकर १३ भाड़ में १४ चने होवें ऐसे होगया ॥ १९ ॥ १५ भगवा १६ वस्त्र ॥ २० ॥ १७ इच्छा रहित १८ कोटा की सेना में आया

मिलि गहिय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥
कह्यो भीम करजोरि तब, मो सिर करहु निदेस ॥
सुखसिंहहु यह सुनि कह्यो, चढि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥
तबहि कहैं सुखसिंहकैं, वह चढि बुंदिय आय ॥
नतो कितो करउर नगर, खेतो हुंताहि छुराय ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

कोटापति सुखसिंह कथित किय, जान्यौं लोकन सालम जित्तिय।
कूरमपति इत मंत्र बिचारयो, जालमप बुंदिय हीन निहारयो॥२४॥
अमरे रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान संग्राम धरम धुर ॥
तिहिँ प्रति दलँ जयसिंह पठायो, स्वकर मंडि सतकार सिवायो॥२५॥
हे नृप तुम भीमहिँ समुझावहु, बुद्धहिँ बुंदिय देस दिवावहु॥
यह मोसिर ऐसान करहु अब, तुमरो हुकम भीम स्वीकृत सब॥२६॥
तबहि रान यह पल बिचारयो, कूरमपति संकोच सम्हारयो ॥
निज काका तखतेस बुलायो, बुंदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥
तबहि आय तखतेस भीम प्रति, अक्खिय बिबिध रानकी बिन्नति ॥
बुंदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह ऐसान बिचारहु ॥२८॥
यह सुनि भीम कह्यो धरि गब्बहिँ, बुध नृपनैं बुंदिय नहि दब्बहिँ ॥
जमी जम्मत सालमकी जानौं, तजिहौं तो रहिहैं तुरकानौं ॥ २९ ॥
यह कहि सिक्ख दई तखतेसहिँ, तजत भीम नहिँ बुंदिय देसहिँ ॥
तब देसहिँ सालमें लगि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन॥३०॥

[दोहा]

मेवावत सामंतहर, इन ठट्ठन गहितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आज्ञा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालमसिंह जीतगया ॥ २४ ॥ ४ महाराणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (मंजूर) करैगा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ बुन्दी के देश को सालमसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदियढिग पुर जैतगढ, लुट्टिय आय सवेग ॥ ३१ ॥
तिन पर पठयो भीम नृप, धाइभ्रात भगवान ॥
वाँनैं जाय धनावपुर, किन्नौं हद घँमसान ॥ ३२ ॥
मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥
धाइभ्रात भगवानके, घाय विलग्गे अंग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरणं १ बुन्दीन्द्रबुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकमालवगमनं २ बेगमरावदेवसिंहबुन्दीकुटुम्बपालनं ३ सुखसिंहाभिधहड्डानिदेशनमहारावभीमसिंहकरवरनगरप्राकृत्युत्थापनं ४ जयसिंहलेखमहाराणासंग्रामसिंहस्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहभणनतदस्वीकरणवर्णनं चतुर्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६२ ॥

(पज्झटिका)

संग्राम रान सादर कहाय, सो भीम नाँहिँ मन्निय सुभाय ॥
तकसीर तास मेटन विचारि. कोटेन उदयँ पत्तन पधारि ॥१॥
सीसोदभिटि संग्राम रान, दिय भीम तथ कछु दिन मिलान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सावंतसिंह के वंशवाले ३ विशेष करके घाव लगे ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुंदी छीनना १ बुंदी के रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास मालवे में जाना २ बेगम के राव देवसिंह का बुंदी के कुटुंब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का सुखसिंह नामक हाडा सन्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना ४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुंदी छोडने के अर्थ महाराव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बासठ २६२ मयूख हुए ॥
४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ मुकाम

*अट्टाल सीस इक दीह आय, बैठे दुरभूप †रिखिद्द बनाय ॥ २ ॥
‡प्रासाद तासके हट्ट पास, इक नटिय आय किन्नों [१]तमास ॥
कोटेस कुजस करि कहि कुवत्त, बुल्लिय सालम जस चढ़िब तत्त ॥ ३ ॥
सो सुनत सीस कर [२]मुच्छ घाल्लि, लै सिक्ख आय बुंदिय [३]उझाल्लि ॥
रट्ठोर सुभट जयसिंह नाम, सालम सिर [५]पिल्ल्यो जय सकाम ॥ ४ ॥
दल सहँसबीस२००००लै तब [६]दुरुद्द, जयसिंह विविध सजि तोपजूह
करउर सु जाय विंटिय सजोर, इक१मास रहिय घमसान घोर ॥ ५ ॥
करउर रजपूतन इम [८]उँपत्त, सर पूर सँगधि जिम सोभ दत्त ॥
जयसिंह पुर सु तुट्टन नजानि, मन सोधि श्रेय सामहिं प्रमानि ॥ ६ ॥
सालम समीप लिखि [९]दल पठाय, अब साम हमहिं तुम मिलहु आय ॥
अरु तुमरे सुत सों है अनेय, सग दोहिता सगपन है विधेय ॥ ७ ॥
सालम कहाय तब इम [१०]अनीक, पुरतें[११]न अंदर मिलन ठीक ॥
सन्नी सहेतु रट्ठोर तत्थ, पुर द्वार गयो लै तुच्छसत्थ ॥ ८ ॥
उतनैं चढ़ि सालम सहैल[१२] आय, रट्ठोर लियउ अंदर बुलाय ॥
सालम सु मिल्यो जालम[१३] अनूर, हुव घाटय अद्ध बैठक दुदून ॥ ९ ॥

(दोहा)

बीससहँस२००००दलनैं बचैं, बैसो करउर हो न ॥
यहै नजानैं क्यों मिल्यो, भोरे[१४] कबंध सिरयोंन ॥ १० ॥
सालम सुन परतापसों, स्वीयं[१५] सुता संबंध ॥
करि बुंदिय सो कुंचकरि, सु जयसिंह तह संधि[१६] ॥ ११ ॥

---

*इन के ऊपर रंगमहल के ॥ २ ॥ ‡इसी महल के नीचे [१]तमाशा ॥ ३ ॥ २मूँछ पर हाथ रख के ३खड़ा करके जय की कामना सहित ॥ ४ ॥ ४कोटा वालों में नरेला में आये ... [५]मारा ॥ ५ ॥ ६सहित (संयुक्त) ७जैसे बाणों से पूर्ण भाथा शोभा देते हैं ऐसे ८ ... ॥ ६ ॥ ९पत्र ॥ ७ ॥ १० कोटा की सेना से ११शहर के द्वार के भीतर मिलना ठीक है 'बाहर निकलने में पकड़ लेने का भय था इसकारण" ॥ ८ ॥ १२सेना सहित १३जुलम करने वाले कोटा से ॥ ९ ॥ १४कायर ॥ १० ॥ १५अपनी (जयसिंह राठोड़ की) पुत्री का १६विजय करने के अर्थ.

जागो जुग्गियगामको, अंकुरि[1] करउर एम ॥
जैसैं[2] न दोरहु बंर भो, भावी मिटैं सु केम ॥ १२ ॥
इत कूरम कहि गंभरहिं[3], उज्जइनी हम जात ॥
जोलों तुम अत्थहि रहहु, हम करिहैं सुब हात ॥ १३ ॥
यह कहि वह उज्जैन गो, सूबापति मरसाय ॥
गाम नाम कायत्थिया, रह्यो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि समग मंत्र किय ॥
मिलि अप्पन कूरमन अग्ग संभरपुर लुट्टिय ॥
अब कूरम पति फुट्टि भयो सूबा सिर स्वामी ॥
एकाकी[4] अप्पनहि रह दिल्लीस हरामी ॥
अवर न उपाय सुज्झत अबहि उचित आहि दिल्लिय गमन ॥
सुंदर बिबाहि साहहि[5] सुता रहैं सदा सिर कूरमन[6] ॥ १५ ॥

(दोहा)

अमर[7] लिखाई उदयपुर, मेटि रीति वह सुद्ध ॥
पुलिन[8] भैंटैं[9] पहुमि पुनि, लग्गो रक्खन लुंद्ध[10] ॥ १६ ॥
निज तनया तब संगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥
अजितसिंह दिल्लिय गयो, पर्यो साहके पाय ॥ १७ ॥
तब हिंदुन जिम तामैं[11]की, सुता बिवाह्यो साह ॥
अजितसिंहकौं इक्कठ, किन्नैं माफ गुनाह ॥ १८ ॥
साह बनायो सद्यदन, यातैं वे[12] हमगीर ॥
हुसनअली इच्छित[13] करैं, ब्राहिवेमात्र वजीर ॥ १९ ॥

तिज्ञा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खड़ा] होकर २ आधीन (नहीं झुका) ॥ १२ ॥ ३ बुधसिंह को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अकेले ५ बादशाह को बेटी परना कर ६ कछवाहों के मस्तक पर रहैं ॥ १५ ॥ ७ महाराणा अमरसिंह ने बादशाहों को पुत्री नहीं देने की रीति लिखवाई थी उसको मेट कर ८ सूर्य ने ९ बदले में १० लोभी ॥ १६ ॥ १७ ॥ ११ उसकी ॥ १८ ॥ १२ सय्यद १३ चाहा हुआ (चाहे सो) करैं

तिनसौं गाढहु दबि रहत, सम्मुह गजत न सत्थ ॥
हुसनअलीके हुकमकौं, मिट्टन कोन समत्थ ॥ २० ॥
हुसनअली काढ़ मुकल्यो, यह मरु भूपति पास ॥
सांभर पुर भाई हनैं, बैर बिमंगौं[1] तास ॥ २१ ॥
यह सुनि नव मरुपति गयो, हुसनअलीके गेह ॥
करन जोरि अरु साथ करि, अक्खी तिहिं प्रति एह॥२२॥
मैं कराम बरज्यो बहुत, सांहस[2] तदपि[3] सम्हारि ॥
जयसिंहहि पुर लुट्टिगो, भ्रात रावर मारि ॥ २३ ॥
सार बुरं[4] करि इन निरखि, सआदगौं मरुमौरं[5] ॥
सआद नव म.र्गस[6] गिन्यौं, जयसिंहहिं बरजोर ॥ २४ ॥
जयसिंह यह सब सुन्यौं, मरुपति सआद मेल ॥
तब उज्जइनी नीति तकि, अंकुश रहिय अठेल ॥ २५ ॥
इहिं बिच दक्खिन देसकौ, पत्ता आनि पुकार ॥
मरहट्टे लुट्टत मुलक, करि करि बिबिध बिगार ॥ २६ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद नवाब दक्खिन पुकार लहि ॥
पुर अवरंगाबाद चल्यो दरकुंच बिजय चहि ॥
लखधलक्ख७५००००तुरंग संग सत दोय२००तोप साजि ॥
आवन घन जिम उमडि बंब निकरंब तानितें बाजि ॥
उज्जैन निकट आयो जबहि कूरमपति इक नीति करि ॥
पैंतीस३५कोस दरकुंच गो दुल्लहनि ब्याहन[11]ब्याज[12] दौरि॥२७॥

(दोहा)

॥ १९ ॥ २० ॥ १ उनका बैर मांगता हूं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ ३ [illegible] ॥ २३ ॥ ४ फौज सांग ५ मारवाड़ का मुकुट ६ अगाध महिमा ॥ २४ ॥ ७ [illegible] ऐसा हांकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ ८ यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से सवार जानने चाहिये ९ नगारों का समूह १० मेघ की गर्जना के समान बज कर ११ विवाह के मिस से १२ दौड़ कर ॥ २७ ॥

सह त्रि३५कोस उज्जेनतैं, इक चहुवानन ग्राम ॥
तिन तनया सगपन कियउ, कूरमसौं सह साम ॥ २८ ॥
वह सगपन मन चिंति अरु, सत्पद गिनि बरजोर ॥
बिनुहि लगन ब्याहन गयो, कूरम कुल सिरमोर ॥ २९ ॥

गीर्व्वाणभाषा ॥
वंशस्थः ॥

लग्नं विनोद्वाहचिकीर्षया गतो नीतिस्थ आमेरपुरो नरेश्वरः ॥
ततस्य पत्नी खलु चाहुवाणजा पल्लंकपाणी वलयान्यधारयत् ॥३०॥

प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
(दोहा)

कूरमकौं[2] परिनाय इम[3], सत्पद दक्खिन पंत ॥
नवब्बर तब उज्जेनपुर, आयो पुनि उमत्त ॥ ३१ ॥

[षट्पात्]

नवब्बर आय अवंति जानि सत्पद दक्खिन गत[5] ॥
लिखि तिन्नति मुक्कलिय साह फरुक हजूर तत ॥
बुंदीपति आयत्त स्वामि आयस लुप्यो किन ॥
आलमके अतिसोक नाँहिं फरमान लये इन ॥
बुंदिय लिखाय वखसहु इनहिं सिर सब हुकम चढायहै ॥
फरमान दे रु बुल्लहु बुधहिं अब हजूर द्रुत आयहै ॥३२॥

दोहा ॥

यह सुनि साह नवाब इक, नाम दलावरखान ॥

१ विचार के साथ ॥ २८ ॥ २९ ॥ नीति में स्थित, आमेर का राजा बिना लग्न ही विवाह की इच्छा से गया इसकारण से उसकी स्त्री, चहुवाण की पुत्री ने निश्चय ही लाख की चूड़ियें धारण की. अर्थात बिना लग्न अचानक विवाह लेके कारण दांत का चूड़ा उपस्थित नहीं होसका ॥ ३० ॥ २ कछवाहे को ३ इसप्रकार बिना लग्न ही ब्याह कर गया ४ नवाब नर [जयसिंह] ॥ ३१ ॥ ५ गया हुआ ७ आपके आधीन है ८ नाजिक का हुकुम किसने लोपा ॥ ३२ ॥

लिखिन पटा जुत मुकल्यो, कूरम आरज प्रमानें[1] ॥ ३३ ॥
आय दलावरखान तब, कूरम[2] सचिव समेत ॥
बुंदी लै द्रुत भीमसौं, अप्पी इनहिं सहेत ॥ ३४ ॥
प्रथम साह किय खालसैं, बुद्धहिं तदनु समप्पि ॥
कोटाकै उठवायकैं, थानाँ इन निज थप्पि ॥ ३५ ॥
सुता सनाय अधीसकी, रानी जो रहोरि ॥
सुतौं[3] नाम सूरज कुमरि, हुव ताकैं गुनगोरि ॥ ३६ ॥
सक अंबर हय सत इक१७७०, अमा[4] रु फग्गुन मास ॥
कोटापति बुंदियलई, गिल्यो सु दुज्जन[5] त्रास ॥ ३७ ॥
सक जामल हय सत इक१७७२, मगहन द्वादसि स्याम[6] ॥
आई पुनि बुंदीसकैं, वसुधा कुलटा बाम[7] ॥ ३८ ॥
बुल्लि सचिव बुंदीसके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥
दै बुंदी दिल्लिय गयो, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥
अवर देस बुंदीसकैं, आयो सबहि बहोरि ॥
भीम[8] नगर बारौं मऊ, द्वै परगना न छोरि ॥ ४० ॥
तदनंतर[9] फरमान पुनि, पठये साह जरूर[10] ॥
बुद्धसिंह जयसिंह नृप, बुल्ले उभय हजूर ॥ ४१ ॥

(पट्पात्)

फरमानन द्रुत झेलि सज्यो कूरम नरेस जब ॥
बुंदीसहिं बुलवाय कह्यो आहूत[11] उभय अब ॥
ए बिक्खहु[12] फरमान चल्लहु दिल्ली हम सत्थैं ॥
लैहैं साह रिझाय मुकुट ठैहैं अरि मत्थैं[13] ॥

१. माफिक ॥ ३३ ॥ २ जयसिंह के कामदार सहित ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३ पुत्री ॥ ३६ ॥ ४ अमावास्या ५ दुर्जन शत्रु ने ॥ ३७ ॥ ६ कृष्णपक्ष की ७ स्त्री ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ८ भीमसिंह ने ॥ ४० ॥ ९ जिस पीछे ॥ ४१ ॥ १० शीघ्र ११ दोनों को बुलाये हैं १२ देखो १३ शत्रुओं के मस्तक पर

कूरम नरेस यह कहि चढ्यो बुंदीपति तदपि न चढत ॥
आलस[1] अचेत मतिमंद[2] अति पल पल प्रति चाखिहँ पढत ४२
सुनत एह जयसिंह आसु[3] बुंदिय दल[4] आयो ॥
जामैं बुद्धहि कहिय साले[6] गजि मंद सिवायो ॥
अब नृजान[5] आरुहहु चलहिं धरि खंध भृत्य हग ॥
निज असु[8] सौंथ[9] दिवाय एह आक्खय नृप कूरम ॥
संकोच तास चहुवान तब चढि तुरंग तिन संग हुव ॥
इहिं रीति छोरि मालव अवनि दक्खिय चालय भूप हुव ॥४३॥

[दोहा]

कढि मुकुंद दर उत्तर, चम्मलि पट्टन ओर ॥
लक्खैरिय गिरि लंघि कै, आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥
कछुदिन तत्थ मुकाम करि, चर मुक्कलि[10] हित चाय ॥
संभर निज उमराव सब, दे दल[11] लिय बुलाय ॥ ४५ ॥
प्रथम इंद्रमल्लोत भट, नगर इंदगढ नाह ॥
मेघ सुवन छित्तर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥
छित्तरसौं जयसिंह नृप, मिल्यो न बाथैं[12] घालि ॥
इन अक्खी तुम आमई[13], हम मिलिहै अब हालि ॥ ४७ ॥
इम कहि कूरमसौं मिल्यो, दै पय गहिय सीस ॥
इक्क सुरपन अनुसर्‍यो, अनखि इंद्रगढ ईस ॥ ४८ ॥
करडरपति आयो नरसुं, मिल्यो डैरर[15] उद्योत ॥
सालम जुग्गीराम सुव[16], भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४९ ॥
रन करडर पचि पचि रह्यो, सु नृप भीम हन संध[17] ॥

---

१ तामसी २ मंद बुद्धिवाला ॥ ४२ ॥ ३ शीघ्र ४ सेना में ५ वाहन के पति बुधसिंह ने ६ साले ने ७ पालकी पर चढ़ा ८ अपने प्राण का ९ सौगन्द ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० हलकारे भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १२ साथ चढ़ा कर नहीं मिला १३ रोग ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १४ जिस पीछे १५ डरड़ (घमंड) प्रकाश करके १६ पुत्री ॥ ४९ ॥ १७ प्रतिज्ञा छोड़ कर

यातैं दोउन अद्दर्यो, सालम थप्पन्ति खंध ॥ ५० ॥
सुभट वैरिसल्लौत सजि, नगर पल्लोधी नाह,
जैतसिंह जाजव जयौ, आयो गरग सिपाह ॥ ५१ ॥
वेगिसल्ल कुल उद्धरन, हद्दा रन हमगीर ॥
वलवनपति आयो बहुरि, अभयसिंह अति बीर ॥ ५२ ॥
पुर खातोली पति प्रवल, अमरसिंह अभिधान ॥
इंद्रसिंह कुल उद्धरन, चाप मिल्यो चहुवान ॥ ५३ ॥
मिल्यो आन उद्धत गुमर, चंड समर चहुवान ॥
सेरसिंह सामंत हर, भजनेरी पुर भान ॥ ५४ ॥
नाथाउत नरसिंह, नगर गुढाको नाह,
पुनि दूजो निम्मान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥
सबल मिले उमराव सब, इम स्वामी ढिग आय ॥
सबहि सिरोह सूरपन, जयसिंहहु जस गाय ॥ ५६ ॥
दोहा—सबन कह्यो दिल्लीस दिय, कुंडिय लाखन लिखाय ॥
तं कंगार पिक्खैं हमहु, तब इन दिन्न दिखाय ॥ ५७ ॥
पिक्ख पटा सबहिन कह्यो, कूरम नृपहि सिराहि ॥
मरु नगर बारौं मुल्क, ए न पटा दिय आहि ॥ ५८ ॥
कूरम नृप भुगिकाग कहि, दुव २ हम दिल्लिय जात ॥
अब लैहें कहि साहसौं, गेरौं मुलक बसु भ्रातँ ॥ ५९ ॥
इम कहि अवरन सिक्खदे, चल्ल उभय नृप तत्थ ॥
सालमसिंह रु जैतसी, सुभट लयेदुव २ सत्थ ॥ ६० ॥
इम दुव २ नृप आमेरपुर, दरकूंचन चलि आय ॥
जामिपै सालक प्रीति जुत, रहे कछुक दिन गायँ ॥ ६१ ॥

१ जयसिंह और बुधसिंह इन दोनों ने आदर किया ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २ नाम ॥ ५३ ॥ ३ युद्ध में भंयकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५ है ॥ ५८ ॥ ६ बाकी का देश ७ धन का समूह ॥ ५९ ॥ ८ तहां से ॥ ६० ॥ ९ बहिनोई और साला १० राजा

तँहँ करउ रन रीझि तकि, सालम हित दरखास ॥
नैननेगरको[1] परगनौं, सब दिन्नौं बुंदीस ॥ ६२ ॥
सालमके इकन भई, पहुमि दम्मं[3] नवलक्ख९००००० ॥
कतिकिन तब यौंहू कह्यो, धनिके करहु विपक्ख ॥ ६३ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

करी इम सालमकौं बखसीस, गये पुनि दिल्लिय है अवनीस ॥
उभै हित संग गये पुनि आमै[4], रजी नृप होउन पै साह सलाम ॥६४॥
अनामय[5] होउनको जवनेस, स्मिताधर[6] पुच्छिय प्रीति विसेस ॥
उभै २ नृप अप्पन अप्पन ओंक[7], सिराहहिं पाय खरे हत सोक ॥६५॥
उभै २ भट सालम जैत समत्थ, बुलायउ एहु सभा बिच तत्थ ॥
न नौबनको[9] इतमाम उभल्ल[10], परी लकरी इक सालम ढल्ल[11] ॥६६॥
दई पुनि साह समस्तन सिक्ख, रह्यो नृप कूरमको अनि निक्ख ॥
रहैं इम दिल्लिय है नरनाह, सदा खलिवत्त बुलावत साह ॥६७॥
लग्यो नृप कूरम साह रिझाय, प्रसन्न कहै सु करै हित पाय ॥
सुनाइव सालमकौं करि मुद्द, पठायउ बुन्दियपै[12] तब बुद्ध ॥६८॥
सभा दिन इक्क बड़ी रचि साह, बुलायउ आम सबै नरनाह ॥
गयो जयसिंह कूरम ईस, गयो बुध हड्डन बंस अधीस ॥ ६९ ॥
गयो दरा सु इन्हें गनु[13] गंत, गयो मरु ईस अजित्तसिंह तत्त ॥
गयो नृप राठौर भीम मदंध, गयो पुनि रूपपुरेस कबंध ॥ ७० ॥
गये इम हिंदुन मिच्छ असेस, गयो पहिलैं तहँ बुद्ध नरेस ॥
सलाम करी कसि पांइ[17] ढल्ल, लई नृप बुद्धसिंह पह मिसल्ल ॥७१॥

॥ ६१ ॥ १ नैनागरा नगर का ॥ ६२ ॥ २ कायों की आमदनी की ३ दाम ॥ ६३ ॥ ४ आम दरबार में ॥ ६४ ॥ ५ कुशलता ६ हंसते हुए होटों से ७ स्थान पर ८ प्रशंसा पाकर ॥ ६५ ॥ ९ समय १० रोब बढ़ानेवाली ११ ढाल पर ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ १२ सूर्य (बुधसिंह) ने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १३ बादशाह का मजुरा होने से घमंड करता हुआ १४ अजितसिंह १५ चहुवाण भीमसिंह १६ रूपनगर का पति राठौड़ ॥ ७० ॥ १७ पांव १८ बुधसिंह १९ कटारी ॥ ७१ ॥

गये तदनंतर सर्बहि आम, सजी हित पूरव नम्र सलाम ॥
विलंब कछू करि आयउ भीम, तक्यो हिय हेत रची तसलीम ।७२।
सिरे लखि बुद्धहिं सुद्ध रिसाय, जग्यो मनमाँहिं सुक्यों मिटिजाय॥
दई उठि साह समस्तन सिक्ख, रह्यो तँहँ बुद्ध बलापति तिक्ख७३

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(मालिनी)

इय उअयउराओ तत्थ सङ्गामराणा,
णरवइजयसिंहं पेसिअं णेहपत्तम् ॥
जइ कुणइ पमाअं फूरुआ तुब्भ धीए,
वसइ णणु तदो मे पट्टणं चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥
णयसमयजयसिंहो तं क्खु दट्ठूण पत्तं,
समयबलविएगी णीइ एकत्तु बुद्धिम् ॥
दडवडहि गयो सो साहकज्जम्मि कुम्मो,
कहिउ जवणणाहं फूरुअं राणवत्तम् ॥ ७५ ॥

॥ प्रायोदर्शीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(षट्पात्)

---

१ जिस पीछे सब आम दरबार में गये २ आदाब ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदयपुरात् तत्र संग्रामराणा नरपति जयसिंहं प्रेषितं स्नेहपत्रम् ॥
यदि करोति प्रमादं फूरुकस्तव बुद्धौ वसति ननु तदा पत्तनं चित्रकूटम्॥७४॥
नयसमयजयसिंहः तं खलु दृष्ट्वापत्रं समयबलविवेकी नीत्वा एकत्र बुद्धिम्॥
शीघ्रं गतोसौ शाहकार्ये कूर्मः कथयितुं यवननाथं फूरुकं राणवार्ताम् ॥ ७५ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इधर राणा संग्रामसिंह ने वहां राजा जयसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो तुम्हारी बुद्धि में फूरुकशाह कृपा करै तो निश्चय ही चित्तौड़ बस जावै।७४। उस समय को और बल को जाननेवाला जयसिंह नीति के पत्र को निश्चय देख कर बुद्धि को एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फूरुकशाह से राणा की वार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अग्गैं अकबर साह लियउ चित्तोर दुग्ग बर ॥
पच्छी अविचिय बहुरि रह्यो तबतैं वह उज्जर[1] ॥
साह हुकम बिनु रान जाय स्वच्छंद[2] बसैं किम ॥
यातैं पठई अत्थ अरज संग्रामसिंह इम ॥
अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहु रहैं[3] ॥
सतपंच५०० सुभट पक्खैंत मम कथितकरो तँह निब्बहैं ।७६।

[दोहा]

नजरि द्रव्य करिहै किता, यहैं कही जब साह ॥
तबहि दम्म त्रयलक्ख३००००० मित, अक्खे कूरमनाह[4]७७

(षट्पात्)

सुनि सु रान मुक्कलिय नजरि हुंडी त्रय३लक्खन ॥
कूरम किन्नी नजरि साह पिक्खी सु मोद सन ॥
लियउ पाट लिखवाय रही महुरहि अवसेसह ॥
अरज इक्क पुनि करिय नगर आमेर नरेसह ॥
बुधसिंह भीम बिग्रह बिरचि छिज्जहिं लरि लरि परसपर ॥
दोउन मिलाय अब अप्प द्रुत मेटि बइर मंडहु महर॥ ७८ ॥

[दोहा]

सुनत एह कोटेसकौं, दिन्नी साह कहाय ॥
करहु मेल बुंदीस सन, जयसिंहह ढिग जाय ॥ ७९ ॥
जो तुम छिन्न्यो हुकम लहि, सो सब पच्छो देहु ॥
उभयरभ्रात एकत्त जुरि, सुनय साम करि लेहु ॥ ८० ॥

(हरिगीतम्)

बरजोर[6] आयस[7] साहको सुनि भीम भौ जुत धी[8] भई ॥

---

१ शून्य २ स्वतंत्र ३ कहना करो तहां ॥ ७६ ॥ ४ कछवाहों के पति ने ॥७७॥ मुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ बलवान् ७ आज्ञा ७ न्याय सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके घन रूप डेरन जाय बिन्नति मंडई ॥
कछवाह कहि वारँ मऊ अब छोरि इन लिखि दीजिये ॥
बुंदीससौं मिलि मोमकैं इकथाल भोजन कीजिये॥ ८१ ॥
तब साह औ[2] कछवाह है[3]मन मंत्र इक्कत जानिकैं ॥
कोटेस वह तजि देस दानौं लेख कग्गर ठानिकैं ॥
करि असँन[4] इक्कहि थाल औ भूपाल त्रय हित बित्थर्यो[5]॥
नृप भीम उप्पर और औ मनमाँहिं दोख भर्यो जर्यो॥८२॥
सक तीन हय गिखि इंदु१७७३ मैं यह बत्त तीननकैं भई ॥
इहिं बीच जट्टनकी[6] पुकार अपार दिल्लिय उँन्नई ॥
इक नेर थूहनि ईस जट्ट सु नाम चूडामनि रहैं ॥
धन जोर औ मन जोर जो रन जोर फौजन निब्बहैं ॥८३॥
तब साह जट्ट पुकारपैं कछवाह भूपति पिल्लयो[8] ॥
बुंदीस बिनु सब संग नृप करि सेन संचय[9] ठिल्लयो ॥
इन जाय तोपन माल कैं रचि जाल थूहनि बिंटई ॥
इत साह बुंदिय नाह बुल्लि[10] रु रान[11] बत्त सु पुच्छई ॥८४॥
बुधसिंह[12] रान पठाय बिन्नति चित्रकूट बसावहीं ॥
किय भेट दम्म त्रिलक्ख३००००० औ अपनो निदेस उठावहीं ॥
नयमंद[13] हड्ड नरिंद यौं सुनि कुंम्भ[14] कानि हु नाँकरी ॥
जयसिंह उक्त प्रपंच[15] जानत हू यहै कथ उच्चरी ॥ ८५ ॥
वह दुग्ग अक्कबर साह रन करि अब्द द्वादस१२ मैं लयो ॥
हम आदि बहुतन रान[16] तजि तब सीस साहनकौं नयो ॥
वह चित्रकूट बसायकैं पुनि रान फैल प्रचारहैं ॥

---

१ सार उपाय [सलाह] करके ॥ ८१ ॥ २ और ३ पत्र लिख कर ४ भोजन ५ विस्तारा [फैलाया] ॥ ८२ ॥ ६ जाटों की ७ उठी ॥ ८३ ॥ ८ भेजा ९ एकत्र करके १० बुला कर ११ राणा की वार्ता ॥ ८४ ॥ १२ हे बुधसिंह १३ नीति में मूर्ख १४ जयसिंह की १५ जयसिंह की कहीहुई यह रचना जानता था तो भी ॥ ८५ ॥ १६ राणा को छोड कर बादशाहों को शिर झुकाया है

अवनीप हिंदुन फोरि अंकुरि[2] साह नाह बिसारिहैं ॥ ८६ ॥
यह गाह फूरुक साह सुनि वह पत्र भीत[3] बिदारयो ॥
जयसिंहपैं इत भीम थूहनि जंग मोह प्रसारयो ॥
करजोरि कहि मम गेह पुत्रिय अप्प उपनय[4] कीजिये॥
कछवाह तब जयसाह कहि कछु दीह[5] अंतर दीजिये॥८७॥
नृप बुद्ध सोदरकी[6] सुता हम पुब्ब[7] सगपन कैं[8] वरी ॥
यह ब्याह करि इन रावरे गृह बत्त उपनय[9] अहग ॥
जयसिंह यह कहि भीमसौं बुधसिंह प्रति दल[10] पिल्लयो ॥
तुम ब्याह मंडहु वेग मैं पुनि भीमको बच[11] झिल्लयो॥८८॥
बुधसिंह यह सुनि साहसौं लहि सिक्ख थूहनि संक्रम्यो[12] ॥
जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौं दल[13] जोर जट्टनपैं जम्यो ॥
लिखि पत्र बुंदिय जोध[14] सोदरकी सुता नृप बुल्लई[15]॥
उम्मेदकुमरि सु नाम जो परिनाय कूरमकौं दई ॥ ८९ ॥
कोटेस भीमहु अप्पनी तनया[16] सु तत्थ बुलायकैं ॥
बरजोर[17] कूरम सोर कौं दिय प्रीति सह परिनायकैं ॥
सक अग्गि हय रिखि इंदु१७७३हायन नेर थूहनि जंगमैं ॥
कछवाह इम दुव ब्याह कीने बीर[18] सींचे रस रंगमैं ॥९०॥
करि ब्याह कूरम नाह यौं पुनि ताव जट्टनपैं दयो ॥
हरिमंथ[20] आफू[21] रोर[22] ज्यौं तरकाव तोपनको भयो ॥
उडि कोट अट्ट[23] थट्टु यौं गढ बैट्ट[24] जट्टनकैं परे ॥

---

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी पन भूलैगा ॥ ८६ ॥ ३ डर कर फाड़डाला ४ विवाह ५ दिन की छुट्टी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के सगे भाई की बेटी ७ पहिले ८ शीघ्र ९ विवाह की वार्ता स्वीकार करी १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ वचन ॥ ८८ ॥ १२ चला १३ सेना का १४ छोटे भाई जोधसिंह की बड़ी को १५ बुलाई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ बलवान् उस वीर कछवाहे ने १९ युद्ध में १८ शृंगार रस किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाड़ में २२ शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग.

कढि वेग तव गहि तेग वे सब सेन सम्मुह ह्वै मरे ॥ ९१ ॥
जयसिंह थूहनि तोरिकैं इम जट्ट चूडामनि हन्यौं ॥
अरु बदनसिंहहिं रक्खि सरनैं *अप्प जय छक्क उप्फन्यौं ॥
जिहिं बदनसिंह †निकेत सूरजमल्ल जट्ट सु पुत्तभो ॥
‡जर बंटिकैं सिर §सांटि लै भुव फोज लक्खन जुत्तभो ॥९२॥
द्वै कोटि२००००००० आमद मुलक दब्बि रु ताव साहनपैं दयो ॥
धरि बीस२०००००००० कोटि स्वकीय[1] कोस सरोस सत्रुनकौं जयो[2]॥
तांर आगरा लहि मारि दिल्लिय साह कोसन[3] लुट्टिकैं ॥
किय भरतपुर निज राजधानी जंग मिच्छन[4] जुट्टिकैं ॥९३॥
गढ भरतपुर कुम्भेर डिग्घ रु बैर ए चउ४निर्मये[5] ॥
अैसान सिर आमेरको भुल्ल्यो न जाहु इते भये ॥
वाके जवाहरमल्ल पुत्र सहाय सूरहु[6] जाहिलै ॥
बैठो सु मरुपति[7] बिजयसिंहहु इक्क गाहिय ताहिलै ॥ ९४ ॥
जिहिं पुत्र नातिय[8] ए भये तिहिं सग्ग कूरम स्वीकर्यो[9] ॥
गढ फोरि थूहनि तोरि सब नृप जोरि[10] दिल्लिय संचर्यो॥
रस राहसौं रु सिराहसौं मिलि साहसौं जय अप्पयो ॥
सिरमोर भूप समस्तमैं बरजोर कूरम यौं भयो ॥ ९५ ॥
कछवाह साह उमैरहि इक्क गिनि ब्याज[11] भीम बिचारयो॥
जामात[12] पर रचि घात जड नृप सख्ख मंत्र सम्हारयो ॥
पुर रूपनगर नरेस अरु मरुदेसपति दुव बुल्लिकैं ॥
मिलि इक्क सम्मति मंत्र[13] मंडिय भूप तीनन भुल्लिकैं ॥९६॥

॥ ९१ ॥ * आप † घर में ‡ धन बांट कर § बदले में मस्तक लेकर ॥ ९२ ॥ १ अपने खजाने में २ जीता ३ बादशाह के खजाने का ४ म्लेच्छों से ॥ ९३ ॥ ५ बनाये ६ वीर भी जिसकी सहायता लेते थे ७ मारवाड़ का राजा ॥ ९४ ॥ ८ पोते ९ स्वीकार किया १० सब राजाओं को एकत्रित करके ॥ ९५ ॥ भीमसिंह ने ११ छल विचारा १२ जमाई (जयसिंह) पर १३ सलाह की ॥ ९६ ॥

लिखि पत्र सय्यदपैं *ततक्खिन देस दक्खिन मुक्कल्यो ॥
इत साहकी हित चाहसौं कछवाह भूपति †उज्झल्यो ॥
जयसीह यह कछु दीहमैं अधिकार अप्पने पायहै ॥
बनिकैं वजीर समस्त मस्तक चंड[2] घात चलायहै ॥ ९७ ॥
रहनौं तुम्हैं जु वजीर ह्वै अरु बंधु वैर निवेरनौं[3] ॥
तो बेग आवहु तेग मंडि घुमंडि कूरम घेरनौं ॥
इन पिक्खि यह छ[4] सज्जि सय्यद सेन सम्मद[5] उप्परयो ॥
सजि अग्ग तोपन मग्ग कोपन लज्ज लोपन संचरयो[6]॥९८॥
उज्जैन आय रु साहकौं[7] दल मंडि दूतन[8] अप्पये ॥
हम आनि पुव्व देससौं तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥
जयसिंह नृप मम भ्रात मारक[9] ताहि निज हिय लायकैं ॥
मम तुल्य आदर[10] अदरयो सु दये हि अप्प[11] भुलायकैं ।९९।
कछु डर[12] नहि बिसवासहै अब पास आय रु अक्खिहौं[13] ॥
रन चाय आयस पाय[14] मैं निज बंधु वैर न रक्खिहौं ॥
सुनि साह यह निज मातसौं सब बात सय्यदकी कही ॥
तब मात अक्खिय घात यह जयसिंह उप्परहै सही॥१००॥
तिहिं देहु सादर[15] सिक्खसौं आमैर नैर पठायकैं ॥
तब चूक[16] अप्पनमांहिं नाहिं लरैं जु सय्यद आयकैं ॥
सुनि साह यह कछवाहसौं हित चाह अक्खिय सर्बही ॥
तुम जाहु बेगहिं सिक्खि लै अति फैल सय्यदको सही॥ १०१ ॥
जयसिंह अक्खिय जो वजीर जु साजदीनहिं मारिकैं ॥
लैहैं सु आवत बेर ये सब चौर छत्र उतारिकैं ॥

* चला गया † बड़ा १ आपके वजीर पन का २ भयंकर ॥ ९७ ॥ ३ भाइयों का वैर मिटाना होवे तो ४ पत्र ५ हर्ष सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख कर ८ हलकारों को दिया ९ मारनेवाला १० आदर से मेरे बराबर किया ११ अपने ॥ ९९ ॥ १२ डर १३ कहूंगा १४ हुक्म पाकर युद्ध की चाह से ॥१००॥ १५ आदर के साथ १६ दोष (भूल) ॥ १०१ ॥

तसमान सज्जहु सेन सम्मुह सत्रु सत्वर मारिहैं ॥
सबहिंदु पायन लाय हिंदुमथान आन बिथारिहैं ॥१०२ ॥
कहि साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सत्वर जानिहैं ॥
पुनि तुमहिं बुल्लि प्रपंच करि तिहिं मारि खैर[2] प्रमानिहैं ॥
तब कहिय कूरम रानहित फरमान जो वह निर्मयो[3] ॥
चित्तोर दुग्ग बसायबेहित सो ममुर्द्दहु[4] नाँभयो ॥ १०३ ॥
बुंदीस बैनन चिंति तब यह साह नाँहिं न स्वीकरी[5] ॥
कछु और मंगहु रान हित दैहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥
आमेरपति तब एह अक्खिय रामपुर लिखिदीजिये ॥
करि[6] मान भूपति रान सर्वसमान सेवक कीजिये ॥१०४॥

[दोहा]

मालवधर अंतर मुलक, नगर रामपुर नाम ॥
चंद्राउत सीसोद तँहँ, स्वामि नाम संग्राम ॥ १०५ ॥
याकै पुरुखन अग्ग अति, सेये दिल्लिय साह ॥
किये सुभट तब राव कहि, राज बखसि हित राह ॥ १०६ ॥
तबतैं बुंदिय जोधपुर, पुर आमेर समान ॥
सनमानित सीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥
तिन कुल यह संग्राम नृप, गह्यो मुररि लहि काल ॥
छिद्र यहै तकि गहन छिति, कहि कूरम भूपाल ॥ १०८ ॥

षट्पात् ॥

कहि कूरम करजोरि सुनहु मम बत्त साह श्रुत[11] ॥
रामपुर पै[12] संग्राम रहिय अब मुररि जोर जुत ॥

...उदारता से ॥ १०२ ॥ २ कुशलता ३ निर्माणकिया था सो ४ मुद्रा [छाप] सहि- नहीं हुआ अर्थात् छाप नहीं लगी सो लगवादेवें ५ स्वीकार नहीं करी ६ ...र करके ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ७ सन्मान पाकर ८ बादशाह को ॥ १०७ ॥ ...॥ १० भूमि लेने के लिये ॥ १०८ ॥ ११ कान में १२ पति

जनपद[1] लेहु उतारि रहैं मुरैं[2] न ठिकानाँ ॥
शानहिं देहु लिखाय रचहि सेवन यह रानाँ ॥
सुनि यह लिखाय फरमान दिय करि सैमुद जयसिंह कर॥
शान तुम दब्बि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट बर ॥१०९॥

दोहा ॥

रामपुरहिं लिखवाय इम, शान अरथ हित राह ॥
सजव सिक्ख करि साहसौं, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥
जामिप[3] डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥
इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न रांजस तिक्ख ॥ १११ ॥

षट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूरम प्रति उत्तर ॥
तुम आयउ लहि सिक्ख सजव सज्जित पद्धति पर ॥
हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजैहैं ॥
चलहु अप्प तसगति सिक्ख लै द्रुत हम ऐहैं ॥
जयसिंह सु सुनि आमेरपुर आय कटक बहुसज्ज किय ॥
इत सँदल आय दिल्लिय उगँडि हुसनअली अनखात हिय॥११२॥
स्वसुर साहको सूढ अजित अभिधाहि धन्वपति ॥
रूपनगर रठोर जनक मातुलो[11] बिसद[12]मति ॥
योंहीको[13] जामात भीम कोटेस राम सुत ॥
बंधुवरग[14] त्रय जानि बीच डारिय विसास जुत ॥
कहि साह साम सय्यद बिरचि राजकाज निबहहु सकल ॥

१ देश २ कार (सुरर) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ बहिनोई [बुधसिंह] के डेरे पर ४ राजापन की वा रजोगुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकारण से ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह ८ नाम ९ मारवाड़ का पति १० बादशाह फरुखसियर के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूर्ख बुद्धिवाला १३ इसी राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्धी जानकर

इन दियउ डारि सय्यद श्रवनं उन सब फोरिय मंलबल॥११३॥
ए तीन ३ हि अवनीप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥
बदलि साहसौं छुन्न अधम सय्यद बिच आये ॥
साहहिं दै बिसवास इक्क बासर जुरि इक्कत ॥
बैठे करन रहस्य साह पंचम५ करि सम्मत ॥
तब साह तीन भूपन पकरि बंधि जाहिकी पग्घ करि ॥
मखतूल पासि गल डारिकैं मारि गिरायउ गारि लरि ११४

हरिगीतम् ॥

सक बेद हय गिरि इंदु १७७४ हायन मास फग्गुन गोरमैं॥
हनि साह त्रय नरनाह सय्यद चाह हुव अति जोरमैं ॥
परि कूक दिस दिस हुरमखानन नारि तोबह उच्चरैं ॥
आतंक सय्यदको अतीव सु द्रव्य गोपनहू करैं ॥ ११५ ॥
लै सबन हुरमन द्रव्य धन्वं धरेसं धी गृहमैं धरयो ॥
मरुईस सुनि बसुजुत पुत्तियं छुल्लि लोभहि अद्दरयो ॥
सह वित्त मुक्कलि धन्वं दिय तनया सु यौं मरु ईसनैं ॥
अरु भीमैं सय्यदसौं कही बुधसिंह बैर रचैं घनैं ॥ ११६ ॥
जयसिंह जामिप है यहै तुमसौं हु छल करि तारिहै ॥
तसैंमान मारहु याहि सब मिलि जोर छल यह जोरिहै ॥
सुनि एह सय्यद फेरि फोजन बट्ट बुंदिय बंधयो ॥

१यह वार्ता सय्यद के कानों में डाल दी॥११३॥२भूमि के लोभ से ये तीनों राजा नम गये३एक दिन एकत्र होकर४एकान्त सलाह करने बैठे५बादशाह को६तीनों राजाओं ने७उसी (बादशाह) की पगड़ी से ८ रेशम की फांसी ९ गालियों से लड़कर अर्थात् बादशाह को गालियें देकर॥११४॥१०सम्वत् के११शुक्लपक्ष में १२ राजा १३ 'तोबा तोबा' करने लगी १४ धन छिपाने लगी ॥ ११५ ॥१५ मारवाड़ के१६पति की १७ पुत्री के घर में१८धन१९सहित पुत्री को २० बेटी को धन सहित मारवाड़ में भेज दी२१कोटे के महाराव भीमसिंह ने ॥ ११६ ॥ २२ बहिन का पति २३ इसकारण से २४ बुन्दी का मार्ग

अवनीस तीनन[1] अप्प लै बुधसिंह डेरनपैं गयो ॥ ११७ ॥
बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संक्रम्यौं[2] ॥
तब जैत[3] अक्खिय घोर यह अति जोर सय्यदको जम्यौं ॥
लाहोर तोरन[4] होय नृप तुम जाहु कूरम देसमैं ॥
हम धीर रन हमगीर जुज्जहिँ बीर जोरठ बेसमैं[5] ॥ ११८ ॥
यह कहत आतुर[6] आय खल दल जानि बद्दल लुंबये ॥
बजि बीर आनक[7] यों अचानक राग सिंधुव लग्गये ॥
बजि डेरु डिंडिम डक्क ओ वहरक्क[8] अंभ[9] फरक्कई ॥
अहि भोग[10] लेत लचक्क ओ धरनी सु धक्कन धक्कई ११९
परि ओर ओरन रोर[11] दिल्लिय जोर जालम जंग भो ॥
हटनारि हट्टन लागि पट्टन[12] अंग रंग बिरंग भो ॥
प्रजरात जात बजार बीथिन[13] यों अलौंत[14] सु उच्छरैं ॥
जिम मास बाहुल[15] दरसपैं[16] नेहास[17] कास[18] करैं जरैं ॥१२०॥
आकास धूम रु धूलि धुंधुरि भान भासन[19] लुप्पयो ॥
बजि कंक गिद्ध सिचान पच्छिति[20] रारि सय्यद रुप्पयो ॥
अनिरुद्ध सुत[21] तब तेग झारत मीर मारत निक्कल्यो ॥
कुल बैरिसल्लज[22] जैतसिंह सु सेन सम्मुह उज्झल्यो[23]॥१२१॥
पुनि जोधराज प्रधान ऊरुज[24] आय ए रन अंकुरे[25] ॥
लहि रोक कोकन[26] सोक भो पुरलोक ओकन[27] मैं दुरे ॥

१आप (सय्यद) तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह ने कहा ४लाहोरी दरवाजे होकर ५ वृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥६शीघ्र वा घबराया हुआ कि बुधसिंह भाग नहीं जावै ७ ढोल ८ ध्वजा ९ आकाश में १० फण ११९ ॥ ११ भय १२ हाटों के किंवाड लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि१५कार्तिक मास की १६ अमावास्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥१९सूर्य का दीखना छुपगया२०पंख२१पुत्र (बुधसिंह). बैरीसाल के कुल में २२ जनमा हुआ २३ बढा ॥ १२१ ॥ २४ वैश्य २५ खड़े हुए २६ सूर्य की रोक देखकर चकवा चकवियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फोजनमैं पर्यो भट जैत हल्ल हकारिकैं ॥
रन नैर¹ दिल्लियकी रहीं तिय जालरंध्र² निहारिकैं ॥ १२२ ॥
तरवारि नागिनि जैतकी बिस मोह³ सत्रुनकौं⁴ दयो ॥
दल जुद्ध जाँव⁵ प्रबुद्ध ह्वै नृप ताँव तोरन⁶ लंघयो ॥
निकसाय स्वामिय संकरैं बान ओट तोरनपैं अर्यो ॥
बाजि हक्क रन धमचक्क यौं बिनु मत्थ जैत लर्यो पर्यो ॥१२३॥
परि बीर सत्रह १७ संगके दल जाँम इक्क १ सु रुक्कयो⁷॥
लरि क्रोध कैं⁸ परि जोध⁹ ऊरुज¹⁰ स्वामि ऋन सब चुक्कयो ॥
लाहोर पंद्धति¹¹ भूप कढि कछवाह जनपद¹² संक्रम्यौ ॥
इत जीति संगर घोर सय्यद जोर दिल्लिय मैं जम्यौ ॥१२४॥
किय साह नाम रफीलदोला मास छह६बिच सो मर्यो ॥
तव ओर किय दुव२ मास बिच तजि सोहु संचैर¹³ संचर्यो¹⁴ ॥
तब किय मुहुम्मदसाह सौंह¹⁵ सु चाह सय्यदकी भई ॥
यह यौं छह६हायनमैं¹⁶ छ ६ साहन धाँपि¹⁷ दिल्लिय भुग्गई ॥१२५॥

(षट्पात्)

सक बसु खट हय इंदु १७६८मरिग आलम ओरँग सुव¹⁸ ॥
गुनहत्तरि ६९ हनि मोजदीन फूरुक पट्टप हुव ॥
किय रफीलदोला सु ताहि हनि सक चउहत्तरि७४ ॥
पचहत्तरि७५ यह मरत अवर किय सोहु गयो मरि ॥
सय्यद वजीर पुनि मंत्र सजि आलम नाती जानि जिय ॥
तक्कत रफीलकदरग्ग तनय साहमुहुम्मद साह किय ॥१२६॥

---

¹ दिल्ली नगर की स्त्रियें २ जालियों के छिद्रों में ॥ १२२ ॥ ३ मूर्छा ४ सेना को ५ जब तक युद्ध हुआ ६ तब तक राजा सचेत होकर ६ शहर का द्वार लांघ गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक रोकी ८ करके ९ जोधराज वैश्य १० वैश्य ११ देश में १२ चला ॥ १२४ ॥ १३ शरीर को छोड़ कर १४ चला (मरा) १५ बादशाह १६ छः वर्ष में छः बादशाहों ने १७ दौड़कर (शीघ्रता से) ॥१२५॥ १८ पुत्र १९ आलम का पोता

(दोहा)

सक सर हय सत्रह१७७५समय, सय्यद थप्पि सु लाह ॥
पुर दिल्लीके पट्टपर, धर्‍यो मुहम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहभणनबुन्दीमुक्त्यस्वीकारापराधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमरनिराशकोटाकटकप्रत्यागमन २ मरुधराधीशाजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसियरस्वसुतापरिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसय्यददक्षिणादिग्गमन ४ वैवाहिकनक्षत्रअन्तरापिहुसनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरगुणक्रोशान्तरजयसिंहस्वविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागम भीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पण ६ यवनेन्द्राह्वानजयसिंहबुधसिंहदिल्लीसरण ७ जयसिंहद्वारामहाराणासंग्रामसिंहस्य पुनश्चित्तोडवासहेतुफूरुकसियराज्ञाग्रहण ८ चूडामणिजट्टविजयार्थजयसिंहाधिकारथूहणपुरयवनेन्द्रसैन्यप्रेषण ९ थूहणपुरसमरविवाहद्वयकरणानन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहविरोधेन कोटाधी-

॥ १२६ ॥ १ अपना श्रेष्ठ लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुधसिंह के चरित्र में, महाराणा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोडने का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर के युद्ध में कोटा की सेना का निराश होकर पीछी आना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का दिल्ली के बादशाह फूरुकसियर को बेटी विवाहना ३ सय्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से उज्जैण को छोड कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का बिना ही लग्न विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर भीमसिंह से छुडा कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ बादशाह के बुलाने पर जयसिंह और बुधसिंह का दिल्ली जाना ७ महाराणा संग्रामसिंह का जयसिंह द्वारा बादशाह फूरुकसियर से चीतोड़ बसाने की आज्ञा मांगना ८ चूड़ामनि जाट को विजय करने के अर्थ बादशाह का जयसिंह के अधिकार में थूहणपुर पर सेना भेजना ९ थूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दो विवाह किये पीछे

शभीमसिंहादिसय्यदहुसनअलीदाक्षिणादिल्लीप्रत्यानयन ११ हुसनअलीभययवनेन्द्रजयसिंहामेरप्रेषणजयसिंहमहाराणासंग्रामसिंहार्थरामपुरदापन १२ योधपुरकोटारूपनगरराजत्रयसहायहुसनअलीयवनेन्द्रफूरुकसियरहनन १३ कृतयुद्धबुधसिंहदिल्लीनिःसरण १४ यवनेन्द्रद्वयशीघ्रशीघ्रमरणानन्तरहुसनअलीमुहुम्मदशाहयवनेन्द्रीकरणं पञ्चविंशो मयूखः ॥ २५ ॥

आदितस्त्रिषष्टयुत्तरद्विशततमः ॥२६३॥

[षट्पात्]

इत कूरम गृह आय सेन सय्यद डर सज्जिय ॥
लिखित रामपुर पत्र रान अंतिक्क मुक्कलि दिय ॥
मुलक रामपुर दक्खि अमल मंडहु हुत अप्पन ॥
दल पुनि सजहु दुरंत मंत बलवंत थप्पि मन ॥
हम सीस घात सय्यद तकत आततायि दल दर्प्प अति ॥
जो परहिं काम तो इत सजैव पिल्लहु दल चित्तोर पति ॥ १ ॥

[दोहा]

यह कहाय सजि दल अतुल, इत कूरम मतिमान ॥
गाम सु टोडा भीमकौं, दिन्नैं आनि मिलान ॥ २ ॥
इहिं अंतर कूरम सुन्यौं, दिल्लिय जामिप जंग ॥

जाटों को विजय करना १० कोटा के महाराव भीमसिंह आदि का जयसिंह के विरोध पर सय्यद हुसनअली को दक्षिण से दिल्ली में बुलाना ११ हुसनअली के भय से बादशाह का जयसिंह को आमेर भेजना और जयसिंह का महाराणा संग्रामसिंह को रामपुरा दिलाना १२ जोधपुर कोटा और रूपनगर के तीनों राजाओं के साथ हुसनअली का बादशाह फ़ुरुकसियर को मारना १३ बुधसिंह का युद्ध करके दिल्ली से निकलना १४ दो बादशाहों के शीघ्र शीघ्र मरे पीछे हुसनअली का मुहम्मदशाह को बादशाह बनाने का पचीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ त्रेसठ २६३ मयूख हुए ॥

१ महाराणा के समीप २ शीघ्र ३ दूर है अंत जिसका (बहुत) ४ मंत्र (सलाह) ५ शीघ्र ६ सेना भेजना ॥ १ ॥ ७ मुकाम ॥ २ ॥ ८ बहिनोई से

लंघि पहर खट६असनं लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ।३।
दिल्लीतैं इहिं बिच निकसि, रन करि बुंदिय नाह ॥
मिलिय आनि जयसिंहसौं, टोडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥
कोटापति अग्गैं लियउ, सोपुर मुलक छुराय ॥
इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान बचाय ॥ ५ ॥
गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥
आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥

उक्कुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥
पुर रामपुर लहि पत्तँ, सजि सेन पिल्लिय तत्त ॥ ७ ॥
तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥
कर बंधि नैरँ बिहाय, पय रान लग्गिय आय ॥
तब रान लखि नँत एस, दिय मंडि अद्धह देस ॥ ९ ॥
लहि अद्ध भुव तब राव, हुव रानको उमराव ॥

बराव १ मराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भुव अद्ध छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥१० ॥
जिन्नोद १ जीरन २ दंग, सजि कुकुटेश्वर३संग ॥
लिय नैर नीमंचि४नाम, किय तत्थ सेन मुकाम ॥ ११ ॥
भुव अद्ध लै इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥
भुव अद्ध पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥
खट सत्त हय इक१७७६मान, लिय रामपुर इम रान ॥
इत जोर सय्यद किन्न, गहि हत्थ दिल्लिय लिन्न ॥ १३ ॥
निज पति मुहम्मदसाह, ताको न कछु जिय चाह ॥

१भोजन॥२॥३॥४॥५॥१गोड़ वंश का मुकुट१पर्वत ॥ ६ ॥ ४ पत्र ५ मंजी तरह॥७॥ ॥ ८ ॥ ६ नगर को छोड कर ७ नम्र देख कर ८ आधा देश लिख दिया "यह रामपुरा वाले पहिले से चीतोड़ के राव थे परन्तु उस महाराणा की विपत्ति में स्वतंत्र राजा होगये थे" ॥ ९ ॥ १०॥ ६ नीमच ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

कोटेस अरु मरुनाह[1], किय दोहु[2]बुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥
तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक[2] बिसेस ॥
खगमार धारन खेरि, लैहैं व कूरम घेरि ॥ १५ ॥
हुवरसालैं[3] जाँमिप मारि, आमेर बुंदिय धारि ॥
रहिहैं निरंकुस होय, पिच्छैं न कंटक कोय १६ ॥
मरुईस सुनि यह बत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥
लगि सेन सज्जन अंध, कछवाह सीस कबंध ॥ १७ ॥
इत भीम खुम्मि उमंग, ब्रज आय गोकुल ढंग ॥
गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत्र बल्लभ[5] धारि ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

बल्लभमत चहि मंत्र लहि, रजत[6]तुला किय दान ॥
हुव सेवक ब्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

कृष्णदास निज नाम कहायो, नंदगाम कोटा लिखवायो॥
सेरगढँ सु थप्पिय बरसानौं, इन नामन व्यवहार चलानो ॥२०॥
कोटकोट अंतर कोटापुर, किय ब्रजनाथ निवेदित आतुर ॥
दान रु द्विज भोजन बहु दिन्नौं, चिकनमाँहिं रहनौं पुनि लिन्नौं २१
दुरयो कितवं डेनरके अंदर, बाहिर नाँयो पंद्रह१५बाँसर ॥
रोग रोग कहि मृत्यु उडायो, कोटापुर सुनि सोक अघायो ।२२।
माधाँनी[12] मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित॥
द्वारन अग्गै[13] लगाय धीर ध्रुव, बुर्ज बरन सिर मरन मंडि हुव २३
जान्यौं मृत भीमहिं सुनि अैहैं, बुंदिय कटक छिन्नि गढ लैहैं ॥
सोहि भई सालम सुनि धायो, लुट्टन कोटा मुलक लगायो ।२४।

१मारवाड़ का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ साला ४ बहिनोई॥१६॥१७॥५ वल्लभ संप्रदाय को ॥ १८ ॥ ६ चांदी की ॥ १९ ॥७शेरगढ का नाम बरसाना रक्खा ॥ २० ॥ ८ भेट ॥ २१ ॥ ९ छलसे १०नहीं आया ११दिन ॥ २२ ॥ १२ माधोसिंहोत हाड़ा १३ किंवाड़ ॥ २३ ॥ २४ ॥

दिल्लीतैं नृप साल बिहत्तरि७२, सालम पठयो मुख्य सचिव करि
इहिं तब ऐसो राज अवेरयो, *फिरयो †समुझि बिनु फेरयो फेरयो२५
अब यहँ साल छहत्तरि७६ अंतर, मृत ‡मृत सुनि भीमहिं §बालिसबर॥
बुंदियतैं चढि बेग कुबुद्धी, रुपि सालम कोटा धर ¶रुद्धी ॥ २६॥
बिनु नृप +आयस द्रोह बढायो, मार लूट करि फैल मचायो॥
सु सुनि भीम गोकुल सन चल्ल्यो, गिनि सागस१ मुच्छन कर घल्ल्यो
कोटापुर पैत्तो२ निस बेला३, द्वार आय सुभटन दिय हेला ॥
खुल्लहु अरर४ जियत हम आये, प्रात सबहि करिहैं मनभाये ॥ २८ ॥
यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम सुवन५ बानी पहिचानी ॥
हसि तब आयउ द्वार कन्ह हर, अरर खुल्लि भूपहिं लिय अंदर।२९।
वंटिय घर तब कुसल बधाई, इम सु भीम वह रत्ति६ बिहाई ॥
प्रातहि कटक अचानक सज्ज्यो, गहि गुमान७ सालमसिर गज्ज्यो३०
पुर आटोनि हुतो वह सालम, पहुँच्यो भीम जोरि दल जालम ॥
सालम दलहिं पक्खि बित्थर८ सह, सबन सुनाय भीम अक्खी यह३१

प्लवङ्गमम् ॥

सालम दल बहु सज्जि मुलक निज मारयो ॥
अप्पन अब इहिं खेत लरन ललकारयो ॥
बुद्ध नियति९ बलवान ततो हम जित्तिहैं ॥
कोटापति सकुटुंब नतो यँहँ १०बित्ति हैं ॥ ३२ ॥

(दोहा)

अर्जुन नैती११ हड्डहो, पुर बड़ोदपति पास ॥
तिहिं अक्खी नृप भीमसौं, उलटी यह किम आस ॥३३॥

*विरुद्ध हुआ †बिना समझ (निर्बुद्धि) ॥२५॥ ‡भीमसिंह को मरा मरा सुन कर § मूर्खों में श्रेष्ठ ¶ रोकी ॥२६॥ +राजा की बिना आज्ञा के १ अपराध सहित ॥२७॥ २ पहुंचा ३ रात्रि के समय ४ किंवाड़ ॥ २८ ॥ ५ प्रेमसिंह के पुत्र ने ॥ २९ ॥ ६ रात्रि बिताई ७ घमंड करके ॥ ३० ॥ ८ विस्तार सहित ॥ ३१ ॥ ९ बुधसिंह का भाग्य १० नाश होवेगा ॥ ३२ ॥ ११ पोता ॥ ३३ ॥

भीम कहिय जित्ते बिनाँ, अप्पन जियत रहैंन ॥
अप्पन बिनु यह उग्रठै, लेहैं बुंदिय ऐंन ॥ ३४ ॥
यह कहि बाजिन बग्गलै, पर्यो भीम पवि पात ॥
खरकोनेन मनु चुगत खिन, घल्ली सेनन घात॥ ३५ ॥

मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥
अस्मिन्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धंगीतनामकं मरुदेशीयं छंदः ॥
गीतेष्वपिसुपखरोगीतः ॥

भूमी लागरै लुंभाणाँ डाणाँ संपाति रूपरा भड़ाँ,
लेताँ ताणाँ बागरै भूपराँ लग्गी लीह ॥
अधायो खागरै बीसं मागरै ऊपरा आयो,
सालमेस नागरै धूंपरा भीमसीह ॥ १ ॥
घटा बीज घाटकी उनाळे खागाँ बार घाँचै,
रटा त्रंबाटकी वागाँ घोळै नागाँ राड़ि ॥
दै कौंवो रामरै छटा बिहंगराटकी दोळे,
फैटा सेना विरोळे झाटकी फाड़ि फाड़ि ॥ २ ॥

१बुन्दी का स्थान लेवेगा॥३४॥२वज्र पड़ने के समान३मानों चुगते हुए तीतरों पर शिचाण (सिकरे) ने घात डाली॥३५॥मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाड़ी छन्द, जिन गीतों में भी यह सुपंखरा गीत है॥ भूमि का ४ लोभ लाग कर ५ डाणा लगा हुआ (मस्त) संपाति रूप के वीरों ने घोड़ों की वागें ६ खींचने ही ७भूमि पर ८ लकीरसी लग गई खड्ग से ९ अतृप्त [भूखा] १० वीर [पक्षी] तिन के ईस (गरुड़) के मार्ग से सालमसिंह रूपी सर्प के ११ मस्तक पर भीमसिंह आया ॥ १ ॥ घटा में बिजुली के १२ रूपवाले खड्ग को हाथ में तोल कर, वीरों को घेर (धकेल) कर १३ ताशों के निरन्तर शब्द होने पर सर्पों से युद्ध करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पक्षियों के राजा [गरुड] की शोभा से चारों ओर, सेना रूपी १५ सर्पों को १६उड़ाये, और उनके नाकों को फाड़ फाड़ कर पछाड़ डाली ॥२॥ डांणां लगे हुए (यह डाणी वीरों का विशेषण है)

डांखाँ ओक ओक *जाँगी जैतरा रुड़ाया डाक,
तोक चंचाँ केवाणाँ छुडाया बीर ताळ ॥
†पाँणाँ ओक संभरी असंखाँ के उडाया प्राँणाँ,
बाणाँ सोक पंखाँ के उडाया बूंदीवाळ ॥ ३ ॥
काटी पूंछ झंडा ले ‡किसोर दूजे दाटी कोपि,
सेना फटा फाटी मैं कटार पंजाँ साजि ॥
बैनतेय भीमरी झपाटी तेग आगैं बचे,
भोगी जोगीरामगो त्रिपाटी गयो भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥

प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

§अहि सालम इम भज्जिगो, फोज फटी सु फटाय ॥
व्याधि सहित कृमि बैर की, अतिजव बुंदिय आय ॥३७॥
कोटेसहु तुर्तें पिट्ठि लगि, लिन्नी बुंदिय घेरि ॥
सठ सालम इक दीह लरि, गो भजि आयुध गेरि॥ ३८ ॥
जायो जुग्गियरामको, आयो नगर झलाय ॥
कोटापति इत लुट्ट करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥
फग्गुन बिसद चउत्थि४सक, रस हय सत्रह१७७६मानँ ॥
बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेरी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर में विजय के * नगारे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं से उठा-कर खड्गों की मूठों से वीरों की तालियां [हथेलियें] छुड़ाईं, इसकारण हे चहु-वाण तुम्हारे † हाथों को धन्य है कि जिन से असंख्यों के प्राण उड़ाए और बाणों के सोक रूपी पांखों से बुन्दीवालों को उडाये ॥ ३ ॥ उस सेना के झं-डे लेने रूपी पूंछ को काटा और ‡ दूसरे किशोरसिंह ने क्रोध करके दबाई कटार रूपी पंजों का भय तज कर सेना रूपी फण को फाड़ा, इसप्रकार गरु-ड़ रूपी भीमसिंह की शीघ्र चलनेवाली तेग के आगे बच कर, जोगीराम का पुत्र रूपी सर्प शीघ्रता की दौड़ से भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ § सर्प १ कृमि २ रोग सहित ३ वह बैर का कीड़ा ४ बहुत शीघ्र बुन्दी आया ॥ ३७ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ शुदि पक्ष की ७ प्रमाण वाला ॥ ४० ॥

सबहि देस बुंदीसको, अडर भीम अपनाय ॥
लूट माँहिं बहु द्रब्यलै, इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवरहु भीम देस बहु छिन्नैं, चउदह सहँस५४००० गाम निज किन्नैं ॥
अग्गैं लिखित *कूरमहिं अप्प्यो, सो सब लुप्पि लोभ हिय थप्प्यो ४२
हुलसि एह अक्खिय सुभटन हित, अब ब्रजनाथ करहि मन इच्छित ॥
रन जयसिंह †बुद्ध लरि मारहिं, ‡बसुमति आन §अमोघ बिथारहिं ४३
इक पुत्रहिं बुंदियगढ अप्पहिं, थिर इक्कहिं कोटागढ थप्पहिं ॥
इक्क सुतहिं सोपुरगढ दैहैं, हम उज्जैन राज अब लैहैं ॥ ४४ ॥
तदनंतर सप्पद प्रति कग्गर, पठयो इत लिखि भीम अप्प[३]कर ॥
इत दल सजय सज्जि हम आवत, उत तुम आनहु कटक अमावत ४५
पक्करि बुद्ध जयसिंह बिपक्खन, लैहैं पहुमि मारि भट लक्खन ॥
यह लिखि संगर भीम उमाह्यो, चढ्ढु सजि सहँस बीस २००००
जय चाह्यो ॥ ४६ ॥

[दोहा]

इन सप्पदसौं सिक्ख लहि, अजितसिंह मरु आय ॥
जँह सुभटन एकत्त जुरि, अक्खिय मंत्र उपाय ॥ ४७ ॥

[षट्पात]

मिसल आठ उमराव जबहि रहोर इक्क जुरि ॥
अजितसिंह प्रति अक्खि अनयै किन्नौं तुम अंकुरि ॥
कूरमपतिसौं तोरि अप्प सप्पद चाह्यो उर ॥

॥ ४१ ॥ * कछवाहा जयसिंह को दिल्ली में लिख दिया था कि बुन्दी के परगने छोड़ देवेंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुधसिंह को ‡ पृथ्वी पर § पीछी नहीं फिरै ऐसी आज्ञा फैलावेंगे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ जिस पीछे २ पत्र ३ अपने हाथ से ४ नहीं पावै ऐसा ॥ ४५ ५ शत्रुओं को ६ भूमि ७ युद्ध पर उत्साह युक्त हुआ ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ मारवाड में १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति करी १२ खड़े होकर

अज्ज गई आमैर कल्हि जैहैं सु जोधपुर ॥
स्वामिकों मारि सप्पद्द सबल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥
तस्मात जोरि जयसिंहसों धन्वं पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥
दोहा—कूरमसों सगपन बिरचि, मरुधर बुल्लहु ताहि ॥
रुचिर सुता अब रावरी, बिधिजुत देहु बिबाहि ॥ ४९ ॥
मरुपतिसों यह मंत्र करि, पठयो सुभटन पत्त ॥
नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ ब्याहन अनुरत्त ॥ ५० ॥
कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धाम ॥
रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, परहिं साहसों काम ॥ ५१ ॥
यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम बिच हरि आहिं ॥
आवहु अप्पन इक्कहैं, जावहु ससुख बिबाहि ॥ ५२ ॥
सु सुनि कूंच जयसिंह किय, साजि दल सबल सिपाह ॥
बुंदी सोपुर नृप उभयर, चल्लिय संग हित चाह ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकम्)

रस हित बिनय परसपर रत्ते, तब नृप तीन जोधपुर पत्ते ॥
रट्ठोरन आक्खिय कूरम सैन, लगनबेर अब चलहु बिबाहन ॥५४॥
मरुपति सों तब सबन संसक्खी, कूरमपति सुभटन यह अक्खी ॥
हैंम नृप परनि पधारहिं जौलौं, हमबिच रहहु धन्वपति तौलौं ॥५५॥
अजितसिंह यह मन्नि रह्यो यँहँ, कूरमपति गो तब ब्याहन कँहँ ॥
रनँ जिम सज्जि कवच धारन करि, बँर दुल्लहनि रट्ठोरि लई बरि५६

१ उसके पति बादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ इसकारण से ३ मारवाड़ की भूमि ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्री ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ विष्णु भगवान् हैं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० लग्न ११ रक्त प्रीतियुक्त हुए १२ जयसिंह से कहा १३ विवाह करने को ॥ ५४ ॥ १४ समर्त्थ लोगों, श्रेष्ठ १५ महाराजा [जयसिंह] १६ हे मारवाड़ का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो "भीतर जयसिंह को चूक करके न मार सकै इसकारण से" ॥ ५५ ॥ १७ जैसे युद्ध में सज्जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहनि राठौड़ी को वरी ॥ ५६ ॥

(दोहा)

इक्क नवाब कलीजखाँ, इहिँ अंतर लहि *काल ॥
दक्खिन सन आयो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद वजीर सुनि एह बंटि †जर ॥
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्ल्यो तिंहिँ उप्पर ॥
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय [1]गब्ब तजि ॥
मारहु कलीजखानहिँ [2]मरद [3]खानदलावर संग रहि ॥
जयसिंह जेर पिच्छैं करहिँ यह करि जेर कलीज [4]अहि॥५८॥

(दोहा)

सु सुनि भीम सिर धुन्निकैं, दिय [5]दल अधिक छुराय ॥
जान्यौं [6]तप जयसिंहके अंत अप्पनौं आय ॥ ५९ ॥
बुड्ढे वीरन संग लै, तब यह मरन बिचारि ॥
सम्मुह खानकलीज सौं, रचन चल्यो अब रारि ॥ ६० ॥
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछवाह ॥
दरकुंचन चलि भिंटये, सत्रुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥
मेकलजाके पार इक, तटिनी कोढी नाम ॥
तीनन३ खानकलीज सौं, सजिय तत्थ संग्राम ॥ ६२ ॥

षट्पात् ॥

[9]सल्ली जुरि दुवरसेन हुलासि जुज्झन बढि हल्ली ॥
[10]कादंबिनि चल्ली [11]किं बाढ चमकत [12]घनवल्ली ॥

---

* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † धन बांट कर ‡ भेजा १ घमंड को छोड कर २ हे वीर ३ दलावरखां कैसा थरह कर ४कलीजखां रूपी सर्प को ॥ ५८ ॥ ५ जय-सिंह के मारने को अधिक सेना रक्खी थी जिसको छोड कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पास ८ नदी ॥ ६२ ॥ ९ घोड़ों के सवार १० मेघमाला ११ मानों १२ विद्युत् (बिजुली)

दिट्ठि जुरत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥
तब बज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट *उब्बट ॥
गिद्धनि सिचान †संकुलि गगन रवि ‡मयूख अवरोध किय॥
खुरतार मार §जव धार खुंदि दिसदिस ¶पुहवि दरार दिय ६३
लग्गे जिम जिम लोहं[1] छोहं[2] तिम तिम उर छायो ॥
धायो जिम जिम धीर बीरं[3] तिम तिम मकटायो ॥
जिम खादित[4] जैपाल मथत अंत्रन द्रुत दुज्जर ॥
इम कलीज दल[6] अतुल मथ्यो सायुध[7] सँय संगर ॥
हैदराबाद भट बहुल[8] हनि चिरि अच्छरि रस चक्खयो ॥
भूपाल[9] भीम काटस सिर रुद्रमाल नँन रक्खयो ॥ ६४ ॥
हत्थी भज्जत हल्ल चढ्यो हयबर रँय[10] चंचल ॥
हय कट्टत पयचार[11] बन्यों खयकार[12] महाबल ॥
तोमर[13] तुट्टत तेग तेग तुट्टत करि कत्तिय[14] ॥
कत्तिय कट्टत करद[15] घोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥
देख्यो कलीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्दव मुदिर[16] ॥
जिम जिम स्वसीस[17] रज रज रचिय तिम तिम छुन्निय[18] संभु सिर ६५

दोहा ॥

मुनि हय मत्त रु इक्क १७७७ सक, जेठ रु पुण्णिम दीह ॥

---

*बिना मार्ग †आकाश में भर कर ‡सूर्य की किरणों को रोक दी §शीघ्र दौड़ने के वेग से ¶भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ वीर रस ४ जिसप्रकार दुःख से जरनेवाला खाया हुआ ५ अजैपाल्या [जमालगोटा] आंतों को शीघ्र मथ डालता है तिसीप्रकार महाराव भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बड़ी सेना को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चहुवाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने अपने मस्तक को शिव की मुंडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकड़े टुकड़े होगया १० वेग में चपल घोड़े पर चढ़ा ११ पैदल होकर १२ नाश करनेवाला [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटारी अथवा सरोंता से छुरी १६ भादवा के मेघ के समान १७ अपने मस्तक को १८ मुंडमाला के योग्य नहीं रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

परयो दलावरखान रन, सहित *भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥
नरउरपति जाजव भज्यो, परयो इहाँ तजि मान ॥
मारि हजारन भीम जिम, परयो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

(षट्पात्)

सुनि कोटापुर भयउ †भीत मरतहि निज भूपति ॥
धाइभ्रात भगवान हुतो बुंदी सु जानि ‡हति ॥
बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिरवाय सोधि उर ॥
अप्पन सब थानाँ उठाय आयउ कोटापुर ॥
सुनि खबरि एह मतिमंद सठ सालम आय भलाय सन ॥
बनि सचिव मुख्य बुंदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ।६८।

[दोहा]

तनय तीन ३ नृप भीमकैं, जेठो अर्ज्जुन १ नाम ॥
अमररान भानेज यह, तत्र भूपति हुव ताम ॥ ६९ ॥
स्यामसिंह २ मध्यम सुवन, लघु सुत दुरजन साल३ ॥
राज लोभ निसदीह रखि, कट्टत एहू काल ॥ ७० ॥

[षट्पदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिर छायो ॥
साह मुहुम्मदकौं चढाय आमेर चलायो ॥
सय्यद अति बरजोर साह दुम्मन इहिँ कारन ॥
चिंतत रहत उपाय मन्नि निहचै तिहिँ मारन ॥
तब नाम मुहुम्मदखान इक तूरानी तक्कयो प्रबल ॥
रचि मंत साह तासौँ रहँसि मारयो सय्यद छेदि छल ।७१।

दोहा—तब पच्छे दरकुंच करि, हुसनअलीकौं मारि ॥

---

* भीमसेन के समान ॥ ६७ ॥ † भय ‡ भीमसिंह का नाश जानकर ॥ ६८ ॥ १ महाराणा अमरसिंह का २ तहां [कोटा में] ॥ ६९ ॥ ३ पुत्र॥७०॥ ४ उद्दाम ऐकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

बनि स्वतंत्र इम साहहू, पुर दिल्लिय*पगधारि ॥ ७२ ॥
बरस तीन३ नृपकैं बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥
दुव२रानिन उर दोय२सुत, बहुरि भये इहिं बार ॥ ७३ ॥
नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृहजातं[1] ॥
पदमसिंह दूजो२ भयो, चुंडाउति जठरांत[2] ॥ ७४ ॥
कुमर बधाई जोधपुर, पत्ती संभर[3] पास ॥
जयसिंहहु तत्थहि सुन्यौं, सप्पद सत्रु बिनास ॥ ७५ ॥
सुनत कुंच जयसिंह किय, बिनस्यो[4] सप्पद बैर ॥
सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आमैर ॥ ७६ ॥
संभरें[5] किय ढुंढाहरहि, बसवा निबसथ[6] बास ॥
अनाहूत[7] जयसिंह गो, साह मुहुम्मद पास ॥ ७७ ॥
अठ सत्त हय इक्क १७७८ सक, चित्त महर[8] करि चाह ॥
अकबरपुर सूबा दियउ, कूरमपतिकौं साह ॥ ७८ ॥

पज्झटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, क्यौं नाँहिं अत्र[9] बुंदीस आय ॥
जयसिंह कहिय सालमं[10] नरेस[11], आबाद रखत पुनि नहिं असेस ७९
कोटेस भीम करि जोर दौय[12], बाराँ मऊ सु लिन्नैं छुराय ॥
बिनु खरच नाँहिं निबहत प्रबास, जर कोस सबहि हुव नट्ठ[13] जास ॥
सतपंच ५०० सुभट सादी[14] सुमंतं[15], मम संग दिय सु हाजरि रहंत ॥
सुनि साह दयो अमरख[16] निवारि, ऐसी अनेक दिय कुम्म[17] टारि ८१
चूड़ामनि सुत सुहुकम्म जट्ट, इन दिनन बहुरि लग्गो[18] कुंबट्ट ॥

---

* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर) से ॥ ७४ ॥ ३ बुधसिंह के पास ॥ ७५ ४ नाश हुआ(मिटा) ॥ ७६ ॥ ५ बुधसिंह ने ६ बसवा नामक ग्राम में ७ बिना बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कृपा ॥ ७८ ॥ ९ यहां १० सालमसिंह ११ राजा (बुधसिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ सवार १५ श्रेष्ट बुद्धिवाले १६ क्रोध १७ जयसिंह ने ऐसी अनेक आपत्तियें टाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार्ग

करि लूट मुलक सिर घल्लि घेत्त, मरुईस सरन मरुदेस पत्त[2] ॥ ८२ ॥
जयसिंह बदन जट्टहिं सहेत, बहुभुव दिवाय थूहनि समेत ॥
ह्वै साह हिंतु मुहुकम हराम, यातैं पलाय गय[3] धन्व धाम । ८३ ।
तब साह कहाई हे नरेस, आतुर[4] गहि भेजहु जट्ट एस ॥
मन्न्यो न हुकम यह मेरु महीस, रचि साह मुहुम्मद सुनत रीस ८४
इत लहि प्रमाद आलस अनंत, बुंदीस गाम बसवा बसंत ॥
तँहँ किय अनीति लोकन अपार, दबिवय अनेक परकीय दार ८५
ताडँन रु लूट तर्ज्जर्न विधाय, पत्तन प्रजा[10] सुं[11] किय दुखित प्राय ॥
पुरजन सब लहि तब दुख अपार, कूरम प्रति दिल्ली किय पुकार ८६
सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा सु गाम[12] अबहू बसंत ॥
कहि पुनि वे जामिप अस्मदीय[13], सहनौं समस्त दुक्खहु गैरीय ८७
तुम माँहिं अबहु जो परहिं त्रास, तो कहहु जाय बुंदीस पास ॥
मम ढिग जो ऐहो बहुरि भज्जि, दैहौं निकासि तो तोड़ि तज्जि ८८
यह कहि पुरवासिन सिक्ख दिन्न, कूरम इम जामिप[16] हितहि किन्न ॥
मन्न्यो न हुक्मइतमरु[17]नरेस, बैलसजियसाहतिहिंसिरबिसेस ॥ ८९ ॥
मरु पिल्लि[18] बहादुरखान मीर, पिल्ल्यो पुनि कूरमपति प्रबीर ॥
इम दुव२चलाय मरु दिस अमाँन, मैरुपहु सुनि सम्मुह किय प्रयान ९०
मगरूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप ॥
इततैं स[22]सेन मारन उपाय, जयसिंह बहादुरखान आय ॥ ९१ ॥
मरु ईस अतुल[23] लखि साह सैंन, भजिगो तजि डेरन अप्प ऐन[24] ॥

१पा.न२मारवाड़ गया ॥ ८३ ॥ ३मारवाड़ में भाग गया ॥ ८२ ॥ ४शीघ्र ५मारवाड़ के पति ने ॥ ८४ ॥ ६पराई स्त्रियों को ७ पीड़ना ८ धमकाना ९ करके १० उस नगर की प्रजा को ११ बहुत दुःखी की ॥ ८५ ॥ १२ काकुभाषा से कहा कि क्या अब भी वह ग्राम बसता है १३ हमारे पहिनोई हैं १४ भारी दुःख होवे सो भी सहना चाहिये ॥ ८६ ॥ १५ ताड़ना और तर्जना करके ॥ ८८ ॥ १६बहिन के पति को १७मारवाड़ के राजा ने १८ठेना ॥ ८९ ॥ १९मारवाड़ में भेजा २० अमाप २१मारवाड़ के पति ने भी ॥ ९० ॥ २२सेना सहित ॥ ९१ ॥ २३ अतोल (बहुत) २४ अपने घर (जोधपुर)

सक अंक सप्त हय इक्क १७७९बीच, रन छोरि लगाई गालिनीच ९२
सुनि साह कटक[1] अति जव चलाय, रट्ठोर[2] विभव लिय लुट्टि आय
संभर[3] बिनु कहुँ लरतहु सुन्यौं न, भजि भजि गो संगर छोरि भौंन ९३
अग्गैं जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गो पयन आय ॥
पुनि अमर[4] रान कर लिखित[5] दिन्न, सो मेटि साह जामात[6] किन्न ९४
अरु बहुरि सय्यदन मिलि अधर्म, जामात साह हनि किय कुकर्म
पुनि तब तृतीय रन समय पाय, पृतना[8] तजि कातर गो पलाय ९५
जयसिंह बहादुर लगिय पिट्ठि, इन रचिय मंत्र गृह जाय निट्ठि ॥
रघुनाथ सचिव रट्ठोर सर्व, मिलि कहिय राज गय अप्प[9] गर्व ९६
कर बंधि परहु अब साह पाय, जो यह न[10] देहु कुमरहिं पठाय ॥
भट सचिव मंत इम तव विचारि, जयसिंह नरेसहिं बीच डारि ९७
सुत अभयसिंह पट्टप समत्थ[11], पठयो पुर दिल्लिय कुम्म[12] सत्थ ॥
रघुनाथ सचिव दिय संग ताम[13], लहि साह जाय इन किय सलाम ९८
गृह जाहु कुमर यह कहिय साह, आवत हम मंडहु रन उछाह ॥
तब कुम्म कहिय यह गिनत आन, याको न दोस जनक हि[14] अमान ९९
पुनि कहिय साह जो यह प्रपन्न[15], तो जनक[16] हनहु तब हम प्रसन्न ॥
यह सुनि उवाच[17] कछवाह ईस, व्है है जु हुकम धरिहैं सु सीस १००
प्रल्हाद एँह[18] तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरन्यकसिपुव समान ॥
यह सीस साह सेवन वहंत, चित जनक इहिं[19] न यातैं चहंत १०१

॥ ९२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बडे वेग से ३ सांभर नगर के बिना ॥ ९३ ॥ ४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६ जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोडकर भगगया ॥ ९५ ॥ ९ आपके वसंड से ॥ ९६ ॥ १० जो यह नहीं करो तो ॥ ९७ ॥ ११ समर्थ १२ कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ तहां ॥ ९८ ॥ १४ नहीं माननेवाला इसका पिता ही है ॥ ९९ ॥ १५ शरणागत है तो १६ पिता (अजितसिंह) को मारडालै तो १७ बोला ॥ १०० ॥ १८ यह [अभयसिंह] १९ इसकारण से पिता इसको नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

*प्रल्हादवत्त कूरम सुनाय, इम अभयसिंह हित रिस उडाय ॥
कहि साह हमहिँ जो गिनत ईस, सुत तो अब आनहु जनकसीस१०२
रघुनाथ सचिव किय अरज तत्थ, सब करहिँ पाय आयस समत्थ॥
हेरन बहोरि लहि सिक्ख आय, दल अभयसिंह पठयो लिखाय१०३
निज अनुज भ्रात बखतेस नाम, तिहिँ प्रति उदंत सब लिखिय ताम
यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लै हैं उतारि ध्रुव धन्वराज ॥
लहि राज भोग जो चहत लाल, तो भ्रात हनहु जनकहिँ उताल
देहौं तब तोकहँ अर्द्ध देस, नागोरपुर पै करिहौं नरेस ॥ १०५ ॥
बखतेस बुंद्ध यह पत्र पाय, जनक सु निज मास्यो सुप्त जाय ॥
हाकार जोधपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय रोय ॥१०६॥
सुनि मिसल अट्ठ ८ उमराव एह, गहि तेग कुमर विंट्यो स्वगेह
बखतेस भीत तब नीति विधाय; दिय अभयसिंह कग्गर दिखाय॥
गिनि तब समस्त यह मंतगूढ, अब किय नरेस चितिको अरूढ-
नाजरन सहित सुद्धांत नारि, चिति आगि भस्म हुव असिह च्यारि ८४
सक गगन अट्ठ हय इक्क१७८०साल, यह खबरि भई दिल्लिय उताल

*प्रल्हाद की वार्ता १ पिता का मस्तक ॥१०२॥ २समर्थ आज्ञा पाकर ३पत्र ४ अपने छोटे भाई ५ बखतसिंह के नाम ॥१०३॥ ६ वृत्तान्त ७नहीं ८ पिता के ऊपर ९ निश्चय ही मारवाड़ का राज्य उतार लेवेगा ॥ १०४ ॥ १० शीघ्र ११नागोरपुर का पति करके १२ राजा करदूंगा ॥ १०५ ॥ १३ मूढ १४ सोते हुए पिता को ॥ १०६ ॥ १५ अपने घर में घेरलिया १६ भय से १७ नम्रता करके १८ पत्र ॥ १०७ ॥ १९ चिता पर चढाया २० जनाने की स्त्रियां २१ * चिता की अग्नि में चोरासी जन भस्म हुए ॥ १०८ ॥

* इसके लिये राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि नाजर आदि जिन जिन का बखतसिंह को अपने से विरुद्ध होने का खटका था उन ८४ जनों को चिता की अग्नि में बलात्कार डाल कर भस्म कर दिये इस बखतसिंह की बुराई का यह छप्पय छंद प्रसिद्ध है ॥

छप्पय ॥ प्रथम तात मारियो, मात जीवती जळाई ॥ असीन्यार आदमी, हत्या बीरां पण आई ॥
फेर गाढो इकळास, वेग जैसिंह बुलायो ॥ मिट मुरधर मरजाद, भरम गांठ को गुमायो ॥
कवियां हूंत कैवाकरे, घराइदक लेवण घरी ॥ बखतसी जनम पायां पछै, कुसाबात आछी करी ॥१॥

सुनि रीझि सरातव बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह[1]॥१०९॥
अरु कहिय राज्य जमवाय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥
मरुपति[2] उवाच तब नाय मत्थ, नागोर देत मैं अनुज[3] अत्थ ॥११०॥
सो सुभट मोहि नहिं दैन देत, करि लिखित अप्प[4] पठवहु निकेत[5]
राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस करि महर एहु ॥१११॥
इम अभयसिंह कहि धन्व आय, पुनि दियउ साह लिखित सु पठाय
राजाधिराज उपपद समेत, नागोर देहु बखतेस हेन ॥ ११२ ॥
यह सुनि रठोरन तजिय टेक, कढ्ढिय दिन मरुपति[6] मरु कितेक
हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम बख्तसिंह नागोर लीन ॥
पट्टप कुमार गजसिंह[7] जाम, हुव अग्ग बीर अमरेस नाम ॥
नृप इंद्रसिंह नाती[8] जु तास, सो करत पट्ट नागोर बास ॥ ११४॥
नृप अभयसिंह ताकँहँ निकारि, नागोर दई अनुजहिं बिचारि ॥
इत कुंम्भ[9] साह सेवन विधाय[10], लहि सिक्ख महहु आमेर आय ॥
आमेर हुतो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूरम प्रवेस ॥
मिलि तबहि साला जामिप समोद, बिरचिय दुहून२ कति दिन बिनोद

दोहा ॥

सक ससि वसु सतह१७८१समय, कहि बुन्दहिं कछवाह ॥
बिरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिं सुलाह ॥ ११७ ॥
बिनु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर[11] राज ॥
कहत होत बुंदिय कुनय[12], अँह[13] प्रति महत अकाज ॥११८॥
बुंदीपति आक्खिय तबहि, अच्छी करहु विचारि ॥
पठवहु कोऊ नीति पटु, सब जो करहि सम्हारि ॥ ११६ ॥

---

१ मारवाड़ का पति ॥१०९॥ २ अभयसिंह ने कहा ३ छोटे भाई बखतसिंह को ॥ ११० ॥ ४ आप ५ हमारे घर [जोधपुर] ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र ८ उसका पोता ॥ ११४ ॥ ९ जयसिंह १० करके ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११ स्वर्ग का १२ अनीति १३ दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृपे मातुल कुल जानि ॥
पठयो वह कूरम सु पहुँ, बुंदी विभव बखानि ॥ १२० ॥
आय लंघि रक्ख्यो नृपति, द्विगुन खरच निज सत्थ ॥
सब मेटयो नगराज सो, अधिप खिज्यो इम अत्थ ॥१२१॥
कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्त्ति सुमंतै ॥
कउलै भूप बरजत कुढतै, तदपि न टेक तजंत ॥ १२२ ॥
पति पतनीकैं याहि पर, बनैं न हितकी बत्त ॥
हठ्ठ न लोपैं तिय हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥
अग्गैं नव हय सत्त इक१७७९, कछवाही यह किद्ध ॥
लै सालमसौं सचिवपन, निज अनुचरकौं दिद्ध ॥ १२४ ॥
राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥
इम रानी पति हुकम बिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥
अद्ध खरच कट्टत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥
रानी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुंदिय भूप ॥ १२६ ॥
निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनैं करि रक्खहु गेह ॥
नाथाउत नगराजकौं, द्रंग न प्रबिसन देहु ॥ १२७ ॥
रानीहू समुझी तबहि, रुकहिं मोर निदेस ॥
सो करिहैं नगराज जो, कहिहैं कुंम्म नरेस ॥ १२८ ॥
यातैं अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥
नन सौंपहु नगराजकौं, अप्पन गृह ठेपय आँय ॥ १२९ ॥
तब बुंदिय नगराज तिन, दिन्नौं प्रबिसन नाँहिं ॥
महुरछाप दैहिं न कह्यो, अधिप निदेस न आँहिं ॥१३०॥

---

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल में श्रेष्ठ राजा ने १२० ॥ १२१ ॥ ३ श्रेष्ठ बुद्धि ४ वाममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [छीजता] था तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ स ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ६ युद्ध करके ७ पुर में मत घुसने देना ॥ १२७ ॥ ८ जयसिंह कहैगा सो करैगा ॥ १२८ ॥ ९ खरच १० आमद ॥ १२९ ॥ राजा की आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥

तिनहिँ *ठिल्लि नगराज तब, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥
राजकाज लग्गो करन, †नूतन छाप घराय ॥ १३१ ॥
आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि
स्वामि समुझि बुधसिंहकौं, बिगरत लिन्न सुधारि॥१३२॥
द्विगुन खरच मेटत कियउ, मातुल¹ पर नृप रोस ॥
अर्च्छामैं उलटी समुझि, दिय कूरम सिर दोस ॥ १३३ ॥
इत द्रुत² जामिपै³ राज्यको, करि प्रबंध कछवाह ॥
दरकुंचन⁴ दिल्लिय गयो, सबिनयँ⁵ मिंट्योसाह ॥ १३४ ॥
तदनंतर⁶ मरूईसहू, जय नयँ⁷ राज्य जमाय ॥
दिल्लिय मिंट्यो मुगल हुन, साहमुहुम्मद आय ॥ १३५ ॥
कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भट⁸ अति मगरूर ॥
जमन देत नहि राज्य जुगि⁹, करहु अप्प मचकूर¹⁰ ॥ १३६ ॥
पठयो कूरम जोधपुर, तब निज कटक उताल ॥
रट्ठोरन समुझाय रहि, कट्यो तँहँ बहुकाल ॥ १३७ ॥
हुते भूप जयसिंहकैं, सुतौ¹¹ दोय२सुत दोय२ ॥
सुनहु रामनृप¹² नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥
जेठो सुत सिवसिंह१जो, मार्यो जनक प्रमत्त¹³ ॥
अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथितँ¹⁴ कर तत्त ॥ १३९ ॥
सुता बिचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्णा कुमारि ॥
सु पहुँ¹⁵ रान संग्रामकी, जामेयी¹⁶ निरधारि ॥ १४० ॥

---

*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२॥ १ मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ पहिनोई के राज्य की ४ नम्रता सहित ५ बादशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ ८ उमराव ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० लेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियां १२ हे राजा रामसिंह कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३८ ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता (जयसिंह) ने मारडाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥ १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो बिचित्रकुमारिको, बय*उपगम अनुसार ॥
जानि जनक जयसिंह जब, रचिय ब्याह ब्यवहार ॥१४१॥
अभयसिंह मरुईससौं, करि सगपन कछवाह ॥
सामग्री किय उचित सब, नैयपटु जैपुर नाह ॥ १४२ ॥
सिक्ख तबहि लहि साहसौं, दुबरन्नृप मथुरा आय ॥
अंतहपुरै आमैरतैं, लिन्नौं सकल बुलाय ॥ १४३ ॥
सक ससि बसु सत्रह१७८१ थैसित, अट्ठमि८ैनह बिचारि ॥
तनया ब्याही मरुपतिहिं, कुम्म बिचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥
माता नृप संग्रामकी, रानौं अमर कलत्र ॥
चाहुवान पुरबेदला, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥
सस्सू वह जयसिंहकी, गंगा न्हावन आय ॥
दुरत मग्ग मथुरा मिली, लीनी कुम्म बधाइ ॥ १४६ ॥
दाहुवानि पिक्ख्यो रुचिर, बिट्टी तनयाँ ब्याह ॥
बैरनि बिचित्रकुमारि नव, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[षट्पात्]

सस्सुकी जयसिंह कानि किंकर जिम किन्नी ॥
इक दिन गोकुल जात खंध सिविका तस लिन्नी ॥
इक्क बंस गहि अप्प मैरुप कर इक्क गहायो ॥
मातासौं गिनि मेहत बिहितैं सतकार बढायो ॥
अप्पनौं गिनहु मोकौं अनुगैं यँहँ तीरथ हरि अवतरिय ॥

---

* बिवाह के ॥१४१॥ १ नीतिचतुर २ जयपुर का पति "अब थोड़े ही समय में जयपुर बसावेगा इससे जयपुर का पति कहा है" ॥१४२॥ ३ जनाना ॥१४३॥ ४ कृष्णपक्ष ५ भादवा की ॥१४४॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ बेटी की पुत्री [दौहित्री] का ८ बींदनी (दुलहिन) नवीन ॥ १४७ ॥ ९ अदब १० पालकी ११ एक बांस तो आप [जयसिंह] ने लिया और दूसरा बांस जोधपुर के राजा [अभयसिंह] को पकड़ाया १२ बड़ी १३ उचित १४ सेवक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया सो तुम यहां

तुम देहु बैठि हाटक[1] तुला करैन जोरि[2] इम अरज किय ॥१४८॥

दोहा ॥

यह सुनि महिषी[3] अमर[4]की, बोली नयमय[5] बैन ॥
दुहिता[6]के वसु[7]तैं तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवम्मुदिताऽमरस्य महिषी प्रोवाच जामातरं,
वस्वस्माकमकब्बरादनुचितञ्जातन्तथाप्यायतम् ॥
भावत्कम्भुवनम्मनेव्यदिसुमूभृद्भूरिभम्मर्माकरं,
पौरट्यो बहुशस्तुलास्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

स्रग्विणी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्म्मेश्वरः साहसी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥
बुन्दीभृज्जाययाऽपीति नोरीकृतन्तत्कृता भागिनेयस्य राज्ञा हठात् ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नाम भवानीसिंह निज, हो जामेय[8]हु तत्थ ॥
ताकी तब हाटक[9] तुला, किय कूरम हठ सत्थ ॥ १५२ ॥
रांन[10] मात जामात[11] प्रति, पुनि आक्खिय चित प्रेय[12] ॥

१सोने की तुला दो २दोनों हाथ जोड़ कर॥१४८॥ ३पटरानी ४राणा अमरसिंह की ५नीतिमय ६बेटी के ७धन से॥१४९॥प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की पटराणी जमाई से बोली कि हमारा धन तो बादशाह अकबर से युद्ध होने में अनुचित गया अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस [अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की खान वाली होवें तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहों के पति ने उस समय अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा यह बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी स्वीकार नहीं किया तब वह तुला राजाके हठसे भानजेकी कीगई।१५१। ८ भानजा ९स्वर्ण की तुला॥१५२॥१०राणा की माता ने ११जमाई जयसिंह से १२प्यार से

पुल *कालिंदी सरित पर, बंधौं सुगम †विधेय ॥ १५३॥
इन तव लिखि दिल्लीससौं, लिन्नौं हुक्म मगाय ॥
सट्ठि सहँस६०००० ‡मुद्रा खरचि, §इन पुल दिय बंधाय१५४
कुमर रान संग्रामकैं, जगतसिंह ¶अभिधान॥
ताहूकै तिहिं दिन [1]तनय, भो [2]प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥
सुत सुत [3]सुतकी [4]मधुपुरहि, सुनी खबरि चहुवानि ॥
दिय [5]हाटक लक्खन द्विजन, मुदित बधाई मानि ॥ १५६ ॥
कूरमपति पठयो [6]तदनु, [7]अंतहपुर आमेर ॥
इत [8]पत्ती चहुवानिहू, निज [9]उदयादिकनैर ॥ १५७ ॥
अभयसिंह जयसिंह ए, दुव२पुनि दिल्लिय आय ॥
हाजरि साह हजूर हुव, [10]लाह बिनय हित लाय ॥ १५८ ॥
सक हग बसु सत्रह१७८२समय, [11]सेयें रिझ्झायो साह ॥
सोहि करत दिल्लीस सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥
सूबा दुव २ जयसिंहकैं, आगरा रु उज्जैन ॥
अब सूबा अजमेरको, बहुरि दयो हित बैन ॥ १६० ॥
[12]मतिमें [13]नयमें [14]मंत्र [15]सें, सबमें कूरम सेर ॥
बिनु बजीर दब्बे बहत, जवन हिंदु सब जेर ॥ १६१ ॥

[षट्पात्]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस [16]दवर दुख ॥
सिक्ख साहसौं मंगि रचिय दरकुंच गेह रुख ॥

---

* जमुना नदी पर † सुगमता से बंध सके तो पुल बनाओ ॥ १५३ ॥ ‡ रुपये § महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ¶ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नामक ॥ १५५ ॥ ३ पड़पोते की ४ मथुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया वा ब्राह्मणों को लाखों मुहरें दीं ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्राप्त हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिसके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुर॥ १५७ ॥ १० लाभ ॥ १५८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १२ बुद्धि में १३ नीति में १४ सलाह में १५ सिंह (बलवान्) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (लूट खसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन बसुसहँस८०००जुत्त बर ॥
राजामल निज सचिवकेर सिवदास *सहोदर ॥
†कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥
समुझाय सबहि रट्ठोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ।१६२।

[दोहा]

आयो मरुपति गेह इम, सत्थ सचिव सिवदास ॥
इत मेट्यो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥
दिल्लीमैं यह दुसह दुख, सहि सब कट्टत काल ॥
गहि गहि हिंदुन बरस प्रति, कर मंगत चंडाल[1] ॥ १६४ ॥
बीस २० दम्म बसुमान[2] सौं, इक्क१ अबसु[3] सौं लेत ॥
जर्न[4] प्रति हेरत स्वपच[5] जर, दिन प्रति यौं दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकिर्त्ति[6] तिनमैं इक नायब[7], स्वपच और तस कथित करैं सब[8] ॥
दिन प्रति करि[9] हिंदुन हरवल्ली[10], स्वपच कहैं स्वामिहिं[11] जुरि संल्ली१६६
हमरी यह रैय्यत है नायब, आई हासिल दैन इहाँ अब ॥
तब वह अक्खिय स्वामि[11] जिम उत्तर, कथित[12] रीति सब हिंदु[13] गहैं कर१६७
कर गहि लिखि बंधैं[14] दल कंठन, यह लखि स्वपच तजैं इक हॉयन[15]
दूजे बरस बहुरि गहि लावैं, अह[16] प्रति दंद[17] मंदंध उपावैं ॥ १६८ ॥
हिंदुन हेरत फिरत हीन दल[18], करत [19]रांहि दिन प्रति कोलाहल॥

* सगा भाई कहा ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १ भंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ धनवान् से बीस रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ भंगी [चांडाल] धन लेता था ॥ १६५ ॥ ६ उन भंगियों में एक नाई ७ हाकिम [अफसर] था ८ सब भंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके १० सवार होकर ॥ १६६ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर कहीहुई रीति से १३ से ॥ १६७ ॥ १४ वह कर लेकर कंठ में पत्र बांध देते १५ एक वर्ष तक उसको चांडाल छोड देते थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव ॥ १६८ ॥ १८ बिना पत्र वालों को १९ रोक कर

स्वपचन प्रनति करहिं हिंदू सब, [1]तदपि दंड अप्पहिं छुट्टहिं तब१६९
दिल्लिय यह दिनप्रति दुस्सह दुख, सब कर दयैं बिना न लहैं सुख॥
कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो१७०
छाप वजीर करैं नहिं उद्धत, बहुन बेर सुनि टारि गयो [2]बेत ॥
द्विज इक दया बहादुर नागर, सो जावत दक्खिन सूबापर ॥१७१॥
जाको मनसुब सत्त७हजारी, तीन अयुत३००००भट संग [3]लुखारि॥
वासों मिलि कूरम यह अक्खी, [4]रहैं कानि हिंदुन तव रक्खी१७२
कहि द्विज करन सिक्ख हम जैहैं, तब छपाय बल करि [5]दैल लैहैं॥
जो वजीर सम्मुह [6]पिल्लैं दल, तो तुम करहु सहाय खंडि खल१७३
यह कहि विप्र तास गृह पत्तो, संग सबहि सुभटन अनुरत्तो ॥
वह वजीर बँरखानमुहुम्मद, हुसनअली सुहन्यों जिहिं सयपद१७४
मद१पद२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुभट संग सहँसन तूरानी, इम बरजोर रहैं अभिमानी ॥
यह द्विज बीर गयो तस आलय, रोके भट सु रुके न बड़ [9]रैय१७५
दै पय खान मुहुम्मद गहिय, इहिं [10]दैल छाप करहु यह [11]बहियं ॥
लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिबल हनि जैहैं॥१७६॥
इम बिचारि पत्र सु छप्पो उन, हटि भग्गो तबतैं दुख हिंदुन ॥
सक गुन अठ सत्त इक१७८३अंतर, किय बरजोर [12]समुंद सु [13]कगर१७७
यह जयसिंह अपूरब किन्नी, नागर कित्ति बंटि इम लिन्नी ॥
बहु ऐसी किन्नी कूरम [14]बर, कहि साहहि मिटवाय गया कर१७८

---

१ तोभी॥ १६९॥१७०॥२बात ॥ १७१ ॥ ३घोड़ों के सवार ४ आदर॥१७२॥५पत्र ६ सन्मुख सेना भेजें तो ॥ १७३ ॥ ७ वजीरों में श्रेष्ठ ॥ १७४ ॥ ८ उसके घर ९बड़े वेग से ॥ १७५ ॥ १० इस पत्र पर छाप करो यह ११ कहा ॥ १७६ ॥ उस१२पत्र को१३मुद्रा (छाप) सहित किया ॥ १७७ ॥ १४ श्रेष्ठ ॥ १७८ ॥

कौटिकै[1] अरु कांदविकै[2] द्रव्य[3] बिक्रय ढिग धारैं ॥
अनुक्रम[4] आपन अवलि[5] कैयं[6] निज निज बित्थारैं ॥
सोहू साहहिं अक्खि प्रबल मेटी कूरमपति ॥
इम करि किंत्ति[7] अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥
लहि धरम मग्ग मनुमत[8] समुझि श्रुति निदेस कछु[9] अनुसरिय ॥
पटु बुद्धि भयो इहिं समय[10] पै कहिंहैं दैस[11] अनुचित करिय ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे उदयपुराधीशराणासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १ कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य वल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हितत्वकारणमरणप्रख्यापन २ महारावमरणज्ञानकोटाहरणहेतुबुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्माद्रात्रिसमयगोकुलागतभीमसिंहसमरपराजितसालमसिंहपलायन भीमसिंहबुन्दीहरण ४ आमेराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशाजितसिंहकन्याविवाहन ५ कोटामहारावभीमसिंहदलावरखांसमरमरण ६ पुनर्बुधसिंहा-

---

१खटीक [कसाई] और २कंदोई हलवाई ३ बेचने की वस्तु पास पास रखते थे अर्थात् मांस और मिठाई पास पास बिकती थी अनुक्रम से४बाजार में५पंक्ति बांधकर ६ अपनी अपनी बेचने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ वेद की आज्ञा के साथ चला १० परन्तु ११ जयसिंह ने इस पार्में अनुचित की सो आगे कहेंगे ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का वल्लभ मत धारण करके पड़दा में रहने के कारण मरना प्रासद्ध होना २ महाराव को मराहुआ जानकर कोटा लेने के अर्थ बुंदी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रात्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भागना और भीमसिंह का बुंदी लेना ४ आमेर के राजा जयसिंह का जोधपुर के राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह का दलावरखां के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकारबुन्दीगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टप्रापण ८ जयसिंहमारणार्थसयवनेन्द्रप्रयाणकर्तृसय्यदहुसनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहम्मदशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुराधिकारसमर्पण ९ मरुदेशोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपलायिताजितसिंहनिजज्येष्ठात्मजाभयसिंहदिल्लीप्रेषण १० यवनेन्द्रनिदेशनिजानुजबखतसिंहकरमारितजनकाजितसिंहाभयसिंहयोधपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयवनेन्द्राज्ञाभयसिंहनिजानुजबखतसिंहार्थंगआधिराजपदसहितनागोरदंगराजप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकनीपाणिग्रहण १३ जयसिंहस्यानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेकप्रशंसनीयकार्यगणनासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञानं षड्विंशो मयूखः ॥ २६ ॥

आदितश्चतुःषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६ ॥

[दोहा]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पायो त्रि[1]बरख प्रान ॥

के अधिकार में होना ७ कोटा में अर्जुनसिंह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को मारने के लिये बादशाह सहित चढाई करनेवाले सय्यद हुसनअली को छल घात से मार कर बादशाह मुहम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिंह को आगरे का सूबा देना ९ मारवाड़ पर बादशाही सेना जाने के कारण डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई बखतसिंह के हाथ से पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई बखतसिंह को राजाधिराज की पदवी के साथ नागोर का राज्य देना १२ राजा अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १२ जयसिंह का हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुडाना १४ जयसिंह के अनेक प्रसंशनीय कार्यों की गणना के साथ उनके दश अनुचित कार्य बताने की प्रतिज्ञा का छव्वीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौसठ २६४ मयूख हुए ॥

1 तीन वर्ष जीवित रहा

स्याम रु दुज्जनसल्लके, भो भू हित घमसान ॥ १ ॥
अग्रज स्यामहिं मारिकैं, भो नृप दुजनसल्ल ॥
बुंदीपर दावा बिरचि, हठि सु बिचार तदल्ल ॥ २ ॥
इत दिल्लिय कूरम अधिप, साह त्रिहायन सेय ॥
सक चउ४बसु सत्रह१७८४समय, आयो निलय अजेय ॥३॥
करि अमात्य नगराज दिय, बुंदिय कुम्मँ पठाय ॥
बुंदीपति इहिं पर बिमन, रक्खत बिरस रिसाय ॥ ४ ॥
कछवाही प्रति नृप कहिय, अनुज प्रबोधहु आज ॥
राज तुम्हैं जो दव्वनों, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥
भ्रातहिं इम रानी भनत, कह्यो तमकि कछवाह ॥
भगिनी तुमरी भुम्मिकी, चित्त न रक्खत चाह ॥ ६ ॥
जामिपै अलस प्रमाद जुत, अरु तुमरी मति एह ॥
गेह द्विर भूपन बिगरते, बिगरयो इक्कहि गेह ॥ ७ ॥
इम जान्यों बिगरत बिभव, लैहैं अबहु सुधारि ॥
तुमरी मति भ्रम माँहिं तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥
यह कहि नृप जयसिंह तब, लिय नगराज बुलाय ॥
रंच सिराही रांगिनी, इहिं पर बुंदिय राय ॥ ९ ॥
चुंडाउति उर जो भयो, कुमर पदम अभिधान ॥
आमय बस तिहिं इन दिनन, किन्न महाप्रस्थान ॥ १० ॥
नाथाउत कूरम नृपति, बुंल्ल्यो बिबिध रिसाय ॥
राजकाज लग्गो करन, बुंदिय सालस आय ॥ ११ ॥

---

१ श्यामसिंह और दुज्जनशाल के भूमि के अर्थ २ युद्ध हुआ ॥ १ ॥ ३ बड़े भाई श्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ बादशाह की तीन वर्ष सेवा करके ५ अपने घर (आमेर) आया ॥ ३ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ ४ ॥ ९ बुधसिंह ने कहा १० छोटे भाई [जयसिंह] को समझाओ ॥ ५ ॥ ११ क्रोध करके १२ हे बहिन ॥ ६ ॥ १३ बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी को ॥ ९ ॥ पद्मसिंह १५ नामक १६ रोग के वश १७ परलोक गया ॥ १० ॥ १८ बुलाया ११ ॥

कछवाही सन याहिपर, कछु प्रसन्न बुंदीस ॥
चुंडाउति रहोरि सिर, यहहि रही बनि ईस ॥ १२ ॥
दिल्लीसन बुंदीस जब, ढुंढाहर घर आय ॥
चुंडाउति रहोरि तब, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥
कछवाहीके डर दुहुँन२, रक्खि *निवाई नैर ॥
पट्टरानीके बचन बसि, अप्प रहिय आमैर ॥ १४ ॥
नाम भावानीसिंह निज, पट्टरानी किय पूत ॥
औरस वो कृत्रिम[2] यहै, सु हैम[3] न जान्यौं सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तब रानी सुतहिं सिखावहिं, पति ढिग भोजन काल पठावहिं
अरज कुमार असनहित[4] अक्खहिं, भिन्न[5] थाल भोजन तब रक्खहिं१६
डर भ्रम सबन यहै लखि आन्यौं, पै काहू न तत्व पहिचान्यौं ॥
छित्तरसिंह इंद्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी ।१७।
भुज्जन[6] नृप बैठो छित्वर सहँ[7], रानी तबहु बुक्कल्यो सुत वह ॥
छित्वर लग्गि ताहि बैठावन, दिय तब नृप उत्तर छल दावन।१८।
खलु[8] सुर अर्चन[9] कछुक रह्यो खिल[10], करि वह[11] इक१थाल भुंज्ज-हिं[12] कल[13] ॥
दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोर्यो, सोतिन आदि सबन मन मोर्यो ॥ १९ ॥
रानी अब नृप सीस रिसावैं, पुतहिं असनै[14]काल न पठावैं ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ * निवाई नामक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने २कछवाही के उदर से उत्पन्न हुआ था या करतबी (बनावटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ जुदे थाल में ॥ १६ ॥ १७ ॥ ६ भोजन करने को ७ छीतरसिंह के साथ ॥ १८ ॥ ८ निश्चय ही ९ देवपूजन(कुमर के अर्थ देवताओं की कबूलायत करी थी सो) करना १० बाकी है सो ११ वह पूजन करके १२ एक थाल में कुमर के साथ १३ निश्चय ही भोजन करेंगे ॥ १९ ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहैं नहि जानैं, मिथ्याही भगिनी रिस मानैं ॥२०॥
प्रीति दिखाय रह्यो नृप उप्पर, अरुचि धरैं रानीपर अंतर ॥
*कुम्महिं नहिं बुंदीस कहावैं, †पुत्तहिं लखि ‡संतत दुख पावैं॥२१॥
सक चउ४बसु सत्रह१७८४संबच्छर[1], घल्लयो यह बिग्रह बुंदियघर ॥
लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई ॥२२॥

(षट्पात्)

बुंदी लोकन बहु अनीति आमेर मध्य किय ॥
सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाल मारि लिय ॥
पकरि पकरि परदार[2] जार बहुतन गहि रक्खी ॥
मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नक्खी ॥
सुनि सुनि अनीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस प्रति ॥
जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनय[3] प्रचारयो नरनअति२३

(दोहा)

दिन दिन अब कूरम दुमन[4], कह्यो कछूहुन जाय ॥
अंधु[5] छाँह जिम कछु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥
सुता रान संग्रमकैं, ईडरपति भानेज ॥
स्वसा[6] सहोदर नाथकी[7], उपयम[8] उचित अंजेज[9] ॥ २५ ॥
लै चर ताके लँगली[10], आये जैपुर अंत्थ[11] ॥
सुभट केसरीसिंह पुर, सलूमरिप[12] के सत्थ ॥ २६ ॥
सगपन ईश्वरिसिंहसौं, कूरम सुतसौं ठानि ॥
कछवाही भ्रातहिं कह्यो, मम सुत ब्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ * जयसिंह को † पुत्र को ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सम्वत्सर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ उदास ५ कुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी बहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में नाथजी' कहते हैं ८ विवाह के उचित ९ विलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० नारियल ११ यहां १२ सलूँबरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

[1]भ्रात [2]स्वीय भानेजहू, ब्याह उचित अब एह ॥
करिये सगपन [3]रानके, कुमर सुता तस गेह ॥ २८ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

श्रुत्वैवमाहूय सलूमरीशं चुण्डाउतं केसरिसिंहसंज्ञम् ॥
राणेशसामंतचयोडुचन्द्रं प्रोवाच ढुंढारधराधवस्तत् ॥ २९ ॥

[स्रग्धरा]

बुंदीधीशात्मजोयञ्ज्वलनकुलमणिर्भागिनेयोऽस्मदीयो,
युष्मज्जामातृभावंगमितमुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥
अस्मायष्टाऽब्दकायाप्युदयनगरनाथेन षड्ढायनी सा,
राणेशेनादिराज्ञा लवजननभृता संविवाह्या स्वपौत्री॥३०॥

(स्रग्विणी)

इत्थमाकर्ण्य बुन्दीनरेशस्तदाऽऽहूय चुण्डाउतम्प्रावदत्स्वम्मतम् ॥
राणराजा ध्रुवनप्त्रिकोद्वाहकृत्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥

प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमपति यह बत्त सुनि, संभर [4]भूपँ समीप ॥

---

१ हे भाई २ तुम्हारा भानजा भी ३ राणा के कुमर के पुत्री है॥२८॥ऐसा सुन कर केसरीसिंह नाम सलूमर के पति को बुलाया जो राणा के तारों रूपी उमरावों में चन्द्रमा रूपी था उससे ढुंढाहड़ के पति ने विवाह सम्बन्धी वार्ता कही ॥ २९ ॥ यह अग्नि वंश का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भानजा है, इसकारण से निश्चय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचित है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और वह उदयपुर के पति की कन्या छः वर्ष की है महाराणा लव के वंश को धारण करनेवाले आदि राजा हैं, सो अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा ने उस सलूँबर के पति चुंडाउत को बुला कर अपना सिद्धान्त कहा कि मेरी आज्ञा के बिना राणा की पोती के विवाह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन सुक्कल्यो, *कुंभानी भट †दीप॥ ३२ ॥

[षट्पात्]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तब ॥
यह सगपन ‡अवरोध संधि §अंजलि पुच्छयो सब ॥
कहिय बुद्ध सुनि कुमर आँहिं मम ¶जात नाँहिं यह ॥
रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत +जानि गव्व सह ॥
जो चहत भूप जयसिंह अब बंस बरनसंकर करन ॥
तो उदयनेर ब्याहहु सुतहिं [१]निगम रीति यह उचित नन॥३३॥

दोहा ॥

यह कहि मुद्रा [२]रजतमय, सत्तरि सँहस७००००मँगाय ॥
दिन्नी [३]कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥
न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥
इम थिति रक्खहु समय हित, लैहैं मंगि बहोरि ॥ ३५ ॥
दीपसिंह जान्यों बहुरि लैहैं द्रव्य मँगाय ॥
[४]पत्तो पुनि नृप पास पै, [५]जुलम कह्यो नहि जाय ॥ ३६ ॥
कूरम नृप [६]सुभटहिं कह्यो, पुच्छी सो कहिदेहु ॥
कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कह्यो न एहु ।३७।
अक्खिय तब जयसिंह यह, रखत [७]जामि पर रीस ॥
कुमरहिं [८]इम कृत्रिम कहत, बिरचि [९]अनर्थ बुंदीस ॥ ३८ ॥
यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥
मम [१०]जनपद अब रहहु मति, चलहु [११]जँत्थ चित चाह ॥ ३९ ॥

---

*कुंभावत शाखा के कछवाह उमराव †दीपसिंह को भेजा ॥३२॥ ‡रोकने का कारण § हाथ जोड़ कर ¶ यह कुमर मुझ से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को पुत्र वाली समझ कर गर्व सहित १ वेद की रीति से यह उचित नहीं है ।३३। २ चांदी के रुपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु वहां जाकर यह जुलम की वार्ता नहीं कही ॥ ३६ ॥ ६ उमराव को ॥ ३७ ॥ ७ बहिन पर ८ इसकारण ९ अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देश में ११ जहां जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनरपः प्रमादी कूर्म्मेश्वरम्प्रत्यवदद्दलेन ॥
युष्माभिरीहे प्रथमं रहस्यं तद्युष्मदुक्तं सकलं करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीशं जयसिंहस्तदा नृपः ॥
पप्रच्छ जामिजोदन्तन्नम्रो नीतिपरायणः ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आर्या ॥

सोऊण चविउ रण्णा स्सालं दुट्ठकुलं क्खु चिय होइ ॥
णणमे ओरसबिट्टो रण्णीए कित्तिमो किद्दो ॥ ४२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

शृण्वन्नित्थङ्कूर्म्मराजो महात्माप्यामर्षी प्रोन्नद्धभोगोवसर्प्पः ॥
तर्जन्नुग्रो जामिपम्प्रत्युवाचास्मज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतुः ॥४३॥

चाहै वहां जाओ ॥ ३९ ॥ यह सुन कर उन्मत्त बुन्दी के राजा ने कछवाहों के पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकांत चाहता हूं फिर आपका कहा हुआ सब करूंगा ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकांत में बुला कर उस नीतिनिपुण जयसिंह ने नम्र होकर भानजे का वृत्तान्त पूछा ॥४१॥

संस्कृत अनुवाद ॥

श्रुत्वा ऊचे राज्ञः शालं दुष्टं कुलं खलु एव भवति ॥ ननु नून औरसपुत्रो राज्ञ्या कृत्रिमः कृतः ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा बोला कि हे साला मेरा अष्टकुल दुष्ट (दूषित) होजावेगा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं है इसको रानी ने कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥ इस प्रकार सुन कर महात्मा कछवाहों के राजा ने क्रुद्ध होकर फण उठाये हुए सर्प के समान उग्र तर्जना करके बहिनोई (बुधसिंह) से कहा कि हमारे भानजे के अनौरस होने में यहां क्या कारण है ॥ ४३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ।

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जासिपर ॥
सेवत श्रीगोबिंद बीज[1] इत्यादि कउलवर ॥
चुंडाउति पर चित्त तास जो होहिं तनय अब ॥
देहों ताकँहँ राज्य सोधि हमहू लिन्नी सब ॥
बसु८बरस पालि पुत्रहिं सविधि धिक मन सिसु मारन धरिय॥
अभिसाप अप्प अप्पत अब सु किन अलीक[6] जनमत करिय ।४४।

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिं कालिका आन ॥
कछु कारि संकट टारिहौ, सो सब करहिं प्रमान ॥ ४५ ॥
कूरम अक्खिय कउल तुम, सँपथन नहिं विस्वास ॥
लिखि स्वहत्थ अप्पहु लिखित, तब लैहैं असुतास ॥४६॥
चुंडाउति रट्ठोरि कें, निपजहु पुत्र निसंक ॥
वाहि न दैहैं राज्य अब, अवरहिं लैहैं अंकं ॥ ४७ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह बुंदीस कूर[11] निज हत्थ लिखित किय ॥
चुंडाउति रट्ठोरि जनित पैहैं नहि बुंदिय ॥
तुम कूर[13] अप्पहि ताहि करहु अप्पने मन इच्छित ॥
कहिहो जिंहि कछवाँह[14] सूनु थप्पहि करि सिच्छित[15] ॥

---

१ बाहिन पर २ कारण ३ हे ४ बारहसौ [illegible] शियों में श्रेष्ट ४ उस चुंडावति के अब आप ५ मि-थ्या दोष देते हो सो जन्मते ही ६ ने[illegible]श क्यों नहीं करदिया ॥४४॥४५॥ ७ तुम वा-ममार्गी हो इसकारण तुम्हारे सौगनों का वि[illegible]श्वास नहीं है ८ अपने हाथ से लिखावट लिखकर दो ९ तब उस लड़के के प्रा[illegible]ण लेवेंगे ॥ ४६ ॥ १० दूसरे को गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ कूड़ (मूर्ख) ने यह लिख[illegible] दिया कि १२ चुंडावति और राठोड़ी के पुत्र होवेंगे सो हम तुम्हारे हाथ में देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ शिक्षित

दलं दियउ एह जयसिंह कर सक्खी लिखि हड्डन सबन॥
कोऊन लिखत ऐसी कुबिधि लिप्प्यो जिम संभर लिखन४८

(शुद्धप्राकृतभाषा)

इम लिहिअं कत्तु तदो प्पिअवयणोहिं णिहाय संबन्धम् ॥
रण्णा जयसिंहाणं सुज्जकुमारी णिअप्पजा दिण्णा ॥ ४९ ॥

(षट्पात्)

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥
सित सहस्यं द्वादसिय १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥
सिलप तंत्र अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥
बारह१२कोस बिथार बिबिध प्राकारँ बधाये ॥
रचि जुकति दम्मं कोटिन खरचि पुर अपुब्बं किन्नौं प्रकट॥
हिंदुवसथानं दूजो नहिन सहर प्रातिबिंबक सुघट ॥ ५० ॥

गीर्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

विधायैवमग्रयम्पुरं कूर्मराजः श्रुतीर्धीर आसेव्य लब्ध्वा स्मृतीश्च॥
द्विजेन्द्रान् समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्रेय आविश्चकार ५१

---

१ पत्र २ साक्षी ३ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एवं लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम् ॥ राज्ञा जयसिंहाय सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा (बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥

४ पौष सुदि बारस ५ शिल्प शास्त्र के अनुसार ६ विस्तार ७ कोट ८ युक्ति ९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में १२ इसके सुडोल प्रतिबिंबवाला ॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर ब्राह्मणों को एकत्र करके धर्म शास्त्र की मर्यादा से चलकर चारों वर्ण और आश्रम के कल्याण कारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ वह अग्रणी राजा बुद्धि

धियारत्न१४विद्याःसमाकरार्यधौर्यस्ततोनीतिमेत्यप्रकृष्टाःकलाश्च।
यतदूत्तद्राज्यांगसप्तोपपुष्टो जनेनाननूनान्समाक्रम्य तस्थौ ॥५२॥
मुखम्पुरायभूमीश्वराः प्रक्ष्यमाणा वजीरश्च यद्बुद्धिवेगन्न जग्मुः ॥
विहायैव तन्म्लेच्छपोप्यन्यभूपानियायोच्चमालंबमामेरमौलिम्॥५३
विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्मं हृषीकेशभक्तः॥
सितारेशदिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रः कृती पुरायभूमौ बभूवाग्रयनामा॥५४॥
कृतो धीसखः खानदौराऽभिधेन प्रणात्त्यैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन ॥
महात्मा स विष्णवात्मजः कूर्मराजो रराजाखिलेष्वर्यमैको यथाह्नि

(कामक्रीड़ा)

तंत्रावापोपेतं स्कन्धावारं सर्व्वोच्चीकुर्वन्,
वव्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशोन्मुख्यम् ॥
आन्वीक्षिक्या धर्म्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृत्तारि,
भोजाचारं भेजे भूम्यृभ्वाशीर्भ्राजद्भूभर्त्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को पढ नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सीख यत्न करते हुए और पढे हुए राज्य के सातों अंगों से पुष्ट होकर अपने से न्यून नहीं ऐसे राजाओं को दबाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा उसका मुंह ताकते थे और बडे बडे वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पहुँचते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोडकर आमेर के मुकुट (जयसिंह) को ऊंचा [बडा] आलंबन समझते थे ॥ ५३ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितारा और दिल्ली के पति सलाह पूछते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आर्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खांनदौरां ने बडी नम्रता के साथ उस राजा को अपना मंत्री (सलाहकार) बनाया. विष्णुसिंह का पुत्र महात्मा वह कछवाहों का राजा सब में ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दिन में अकेला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वश करने की चिन्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित, जयसिंह नीति से दिल्लीश के सन्मुख गया और ब्राह्मणों के आशीर्वाद से राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ वह तेजस्वी राजा शत्रुओं का नाश करके भोज के समान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

(नर्कुटकम्)

मतिरुडुदारा उल्बणदारिद्र्यतमिस्रहरिः,
समिदतलस्पृगर्णवविलङ्घन एकतरिः ॥
जयनयधार्य्यकार्य्यमननार्य्य उदग्रगति,
र्भुवि यशसा रराज जयसिंह इलाधिपतिः ॥ ५७ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[षट्पात्]

इम कूरम जयसिंह हिंदु मिच्छन उप्पर हुव ॥
जाप धरम श्रुति[1] अजन[2] भूरि अध्वरैं[3] बिथ्थरि[4] भुव ॥
निंदत निगम[5] पिछानि जार तुरकान प्रजारन ॥
सहर सिताराधीस मंत्रि खुल्ल्यो तिन मारन ॥
साहू नरेस लहि तब समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥
सिंधिया बहुरि हुलकर सुभट[6] पिल्ले दुवर दल अमित मँह ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

नृप साहू नवलक्ख ९०००००दल, सहर सितारा ईस ॥
पिल्ले हुलकर सिंधिया, दब्बन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥
इन अवरंगाबाद लरि, पहिलैं अमल प्रचारि ॥
वई[8] नागर सूबा अधिप, दयाबहादुर मारि ॥ ६० ॥

भूपति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशता था जो बुद्धि के लिये चन्द्र रूप और उत्कट (उग्र) दरिद्र रूपी अथवा अनीति रूपी अन्धकार का नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह समुद्र को लांघने के लिये अद्वितीय नौका [नाव] रूप जय और न्याय से धारण करने योग्य कार्य का विचार करने से श्रेष्ठ और बडे ऊंचे पदवाला शोभायमान हुआ ॥ ५७ ॥ १ वेद २ देवपूजन ३ बहुत यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [फैला] कर ५ वेद की निंदा करने वाले समझ कर यवनों का बल जलाने के अर्थ ६ सिताराके दोनों उमरावों को भेज ७ सेना के अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ८ वह हिंदुओं के कर छुडाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का ब्राह्मण ॥ ६० ॥

इत *गुज्जर धर जवन इक्क, सरबिलंद [†]सप्रसाद ॥
सूबापति वह साहको , नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥
सुं[1] बसु[2] गाम सत्तरिसहँस७००००, आयसं[3] जास अधीन ॥
मरहट्ठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अघ[4] लीन ६२ ॥
उज्जइनी अकबर[5]नगर, अरु पत्तन अजमेर ॥
सूबा त्रय३ जयसिंहकैँ, सो हुल्लत[6] बल सेरँ ॥ ६३ ॥
इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहुम्मद सूल ॥
कंटक अरि काजीन[8]कौं, अनय अैस अनुकूल[9] ॥ ६४ ॥
मंदं[10] नपुंसक रत[11] मुदित, यौँही पुनि अनुचार[12] ॥
रक्त कापिसायन[13] रहत, सचिवँहु[14] मंद सँमार[15] ॥ ६५ ॥
मोजदीनतैं इक्कसे, भये पंच५ दिल्लीस ॥
दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी[16] पर रीस ॥ ६६ ॥
इत हुंदिय पति लिखित करि, रच्चि सालकँ[17] सन साम ॥
भिट्टी[18] हित जयसिंह बरि, आरंभिय उपयाम[19] ॥ ६७ ॥
नगर निवाई हिंतु[20] लिय, रानी उभय२ बुलाय ॥
सुंज[21]कुमारि जयसिंहकौं, अथितैं[22] दई परिनाय ॥ ६८ ॥
संगानेर समीप यह, हुंढीपति किय व्याह ॥
दायज वसु[23] त्रय लक्ख३००००० दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९
सक चउ बसु सत्रह१७८४समय, तिथि तँपस्य[24] सित आदि ॥

*गुजरात में †प्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ लो २ धनवान अथवा श्रेष्ठ धनवाले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप में ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. उस जयसिंह ने ७ बलवान सेना को ६ बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त ॥६४॥१० वह मूर्ख ११ हींजड़ों के रत[मैथुन]करने में प्रसन्न १२ चलन [बरताव]१३ मद्य में आसक्त १४ उसका वजीर भी मूर्ख १५ कार्य्य था ॥ ६५ ॥ १६ खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से मिलाप[सुलह]१८ बेटी [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सूरजकुमारि २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ फाल्गुन सुदि एकम

कूरम इम *जामात किय, पति चहुवान †प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह बिचार संभर उर आयो, कूरम ‡रिस बसि लिखित करायो ॥
अब रिस गयेँ लिखित मुहिँ अप्पहिँ, थिर सुत §अंक लैन नहिँ थप्पहिँ
बिट्टी¹ निज यह सोधि बिबाही, सत्य लिखित कूरम² यह साही ॥
औरस सुत होहि सु हम लैहैं, दायादजहि³ अंक⁴ धरि दैहैं ॥७२॥
मम जामिज⁵ कृत्रिम जिहिँ मानत, मारहिँ तिहिँ अब न्याय लिखित⁶ मत ॥
जामिँप⁷ अंक अवर कोउ रक्खहिँ, चुंडाउति न पुत्र फल चक्खहिँ ७३
यह जयसिंह नियम अवगाह्यो, सत्य लिखित उप्पर हठ साह्यो॥
बुंदीपति अब दुमन⁸ बिचारैं, टेक न यह कूरम नृप टारैं ॥ ७४ ॥
बुंदी लिखित संग हम बोरी⁹, जुलम भयो चलहिँ न अब जोरी ॥
उर दयिता¹⁰ भव सुत अंकूरी, मुरक्यो नृप लै इम ठग सूरी¹¹ ॥७५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहमरणमारिताग्रजश्यामसिंहदुर्जनशालनृपीभवन १महाराणासंग्रामसिंहसुतायाः जयसिंहपुत्रेश्वरीसिंहेन सह संबंधप्रदान २ बुंदीमहारावराजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

---

* जमाई † भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस संबंध और दायजा देने के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का लेख मुझे पीछा दे देवेगा, इस भूल से) ॥ ७० ॥ ‡ क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने इस बात को पकड़ी कि यह लिखावट सत्य है ३ सपिंडी में से ४ गोद रख देवेंगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानजे को ६ लिखावट के मत से ७ बहिनोई की गोद ॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ डुबोई १० प्यारी चुंडाउति के उदर में पुत्र के जन्म का अंकुर हुआ ११ ठगकीसी सूली [झूठी आशा] लेकर ॥ ७५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचंपू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव अर्जुनसिंह के मरे पीछे बडे भाई श्यामसिंह को मार कर दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह से सगाई होना २ बुंदी के महा-

भवानीसिंहकृत्रिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवारण २ भवानीसिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुण्डावतिराष्ट्रकूटीजठरजातजयसिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहस्ताक्षरकरण ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माण ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनिन्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरट्टदिल्लीधराक्रमण ६जयसिंहस्य बुधसिंहपुत्रीविवहनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदाख्य नैर रानको हन्यौं ॥
सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भीरकौं बन्यौं ॥
भनंकि भौंर झौंर के ठनंकि अंदु गै गुरे ॥
कुँदार नैंन चारके तुखार सज्ज संजुरे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम बताकर उसके उदयपुर संबंध होने को रोकना २ भवानीसिंह को मारडालने की अवस्था में चुंडावति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होवें उन पुत्रों को जयसिंह को देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र को बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५ दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह की सलाह से आए हुए मरहटों का दिल्ली की भूमि को दबाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से विवाह करने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पैंसठ २६५ मयूख हुए ॥

इधर महाराना के १ जावद नामक नगर को शत्रुओं ने मारा [लूटा] जिसकी २ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसकारण ३ सहाय करने को सज्जित हुआ सो ४ भ्रमरों का समूह उड़कर ५ जंजीरें बजकर ६ हाथी गुड़े (हाथियों को सज्जित करते समय उनको जमीन पर लेटाकर रज झाड़ते हैं इसी कारण उनका गुड़ना लिखा है) ७ कुलटा (खोटी) ८ स्त्री के नेत्र चलने के समान चपल ९ घोड़े सज्जित होकर एकत्र हुए; अथवा कु (पृथ्वी) जिसको विदारण करनेवाले "दृविदारणे" इस धातु से दार शब्द का अर्थ विदारण है अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले और नेत्रों के

चमू हजार अश्व बान५० लै कृपान भानकी ॥
रिसाय कुम्मराय यों चल्यो सहाय रानकी ॥
बुलैं नकीब दोयसै २००हुलैं हरोल हाँकरैं ॥
झुकैं भटालि भीर त्यों रुकैं समीर साँकरैं ॥ २ ॥
बजैं निसानं नाद सो दिसा दिसान बित्थरैं ॥
सँकूक दंदसूककी फटा हजार फुंकरैं ॥
मवासँ बास आसपास जास त्रास कंपये ॥
चकार चीस ह्वै पुरीसँ दिक्करीसँ चंपये ॥ ३ ॥
चले मतंग आदि अंग स्याम रंग सज्जके ॥
कुरंग फाँद के चले तुरंग जंग कज्जके ॥
चले दुबाह के सिपाह स्वामिधर्म संगलै ॥
चली सु तोप सट्ठि६० त्यों चँटक्कि चक्क चीसलै ॥
मिले प्रबीर पँत्रबाह पत्रबाँह बेधते ॥
कमान पंत्थके कमान पत्थकी निसेधते ॥
भिरे भुँवाल भुम्मियाँ सु भागधेयँ भेटलै ॥

समान चलनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही चपल है इसकारण यह दूसर अर्थ भी संगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तरवारें लेकर २ सेना के अग्रभाग को बढाने की हाक करके ३ वीरों की पंक्ति चढती है जिनकी सकड़ाई [भीड़] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ नक्कारों का शब्द बजकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ कूक सहित ८ शेषनाग के हजार ९ फण फुंकार करते हैं "यहां हजार फणों के योग से सामान्य सर्प शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिसकी त्रास से आस पास के १० चोरों और लुटेरों के स्थान धूजते हैं और चीस और ११ लाद [विष्टा] करके १२ दिशाओं के हाथी १३ दबे ॥ ३ ॥ १४ हिरणों की छलांग भरनेवाले १५ युद्ध के काम के १६ वीर १७ पहियों के खिचने का चीस करके [यह बल पूर्वक खिचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त वीर १८ बाणों से १९ पक्षियों को बेधते हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (बाण विद्या की रीति में) २१ अर्जुन के धनुष का निषेध करते हुए २२ भूपाल (राजा) और भोमिये २३ हासिल (खिराज) भेट ले लेकर मिले

कहौंन ओजं उँन्नयो जु तास फोज भेटलै ॥ ५ ॥
फरक्कि केतु गैंन यौं बिजैय बैंन बित्थरी ॥
सहाय दैंन कुम्म सैंन रान औंन संचरी ॥
सुनी सु रान कान त्यौं प्रयानँ सम्मुहो कियो ॥
हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[पद्धपात]

मिच्छन धाटि प्रपातें रान जनपैंद जावद सुनि ॥
पृतना सँहँस पचास ५०००० चंडै क्रोधन जोधन चुनि ॥
आभैरो नरनाह पत्त हित चाह उदैपुर ॥
दहलारी लग रान आय सम्मुह मुद आतुर ॥
महिपाल उभय हिय लाय मिलि सुख सह पत्तन संचँरिग ॥
करि दल मिलान कूरम रहिय सुपहुं रान महलन सरिगँ ॥

[दोहा]

सक्र सर बसु सत्रह१७८५समा, लहि कूरम निज भीर ॥
अति आदर रानाँ कियउ, व्है प्रणमन हमगीर ॥ ८ ॥
इक जामिप पुनि दैल अतुल, बहुरि बढ्यो लहि कौल ॥
यातैं लँहँ प्रति नम्र अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥
इक्क१ थाल किन्नौं असन, पुव्व रीति सब पेलि ॥

१किसीमें तेज[पराक्रम]२नहीं उठा कि ३ उस जयसिंह की सेना से टक्कर लेवै॥५॥ आकाश में ४ध्वजा उडकर ५विजय करने के वचन फैले ६राणा के घर में कछवाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सम्मुख गमन किया ॥ ६ ॥ म्लेच्छों का ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ भयंकर क्रोधवाले १३ प्राप्त हुआ १४पुर में गये १५सेना का मुकाम करके १६वह प्रभु राणा१७ चला ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक में सत्रहसौ पिच्यासी के सम्वत् में १९ विशेष नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जामाता (जमाई) यहां 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः दुहितरि" बहुत २१ सेना २२ समय पाकर ॥ ९ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को हटाकर

कछु अंतर हितमैं न किय, हिंय तब हिंदुन हेलि[1] ॥ १० ॥
कूरमहू करजोरि कहि, मति नति करि पलटाव[2] ॥
मन्नहु अप्पन सुभट[3] मुहिं, जिम सोलह१६ उमराव ॥ ११ ॥
मैं इनहूसौं अनुगतम, ममहित नहिं मरजाद ॥
बिधि सब कैहौं बंदगी, पैहौं रान प्रसाद[6] ॥ १२ ॥
यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उठ्ठि ॥
रचि अंजलि[7] तब रानहू, बरजि निठ्ठि हित बुठ्ठि ॥ १३ ॥
इत्यादिक किय अनुगपन[8], कूरम हित निकरंब[9] ॥
जामिपं[10] बिनु रानहु जप्यो, अवर न मम आलंब ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

कूरम प्रति दिन इक्क कहिय सीसोद जोरि कर ॥
रामपुरेप[11] संग्राम बदलि अब रहत टेक बर ॥
नैंकन करत निदेस भुम्मि अद्धी पुनि भुग्गत ॥
सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहौं रन उद्धत ॥
रामपुर देहु मोकँहँ नृपति मैं सेवन करिहौं मुदित[12] ॥
कहि यह सलाम जयसिंह किय मुलक लैन लक्खन प्रमित[13] ॥१५॥

महासुंदरी ॥

सुनि यौं मन रानौं खिसानौं महा अहि[14]ग्रस्त छुछुंदरि ज्हैनों परयो ॥
दुवखेर कही इमरोही हुतो तब द्रम्म[15] त्रिलक्ख३०००००दै लैनों परयो
सुनि यौंहू सलाम करी जयसिंह नयो तब रानकौं नैनों[16] परयो ॥

१ हिन्दुओं के सूर्य ने (यह महाराणा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ उत्तर में नम्रता का पलटा करके ३ आपका उमराव. जिसप्रकार सोलह उमराव हैं तिसी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ सेवक ५ करूंगा ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥ ७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के विना ॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर चाकरी करूंगा १३ लाखों की आमद के प्रमाणवाला ॥ १५ ॥ छुछुंदर को पकड़नेवाले १४ सर्प के समान छुछुंदर को पकड़कर छोडने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है १५ रुपये १६ जयसिंह झुका तब राणा को भी झुकना पड़ा

लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों दैनों परयो१६

(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लगि, इम कूरम तँहँ आय ॥
लियउ रामपुर रानसों, करि नुति[2] लिखित कराय ॥ १७ ॥
रान सचिव कायत्थ तँहँ, कग्गरै[3] छाप करी न ॥
तब कूरम गृह जाय[4] तस, पाई नीति प्रवीन ॥ १८ ॥
पटु प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लगि लाह ॥
बहुरि रान सन अनुग[6] बनि, किय रहस्यँ[7] कछवाह ॥१९॥

(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह दइव[8] हिंदुन सुभ दायक ॥
मिटत जानियत मिच्छ निगम[9] निंदक भुव नायकं[10] ॥
कबहु न सुनत कुरान नहिँन कलमाँ[11] निमाज नेंत ॥
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुहँ[12] नन जात महज्जत ॥
रत पान कापिसायन[13] रहत मासूकान[14] जानत महत[15] ॥
बिधि थप्पि संड मोहँन[16] बहत चित प्रपंच[17] कछुहु न चहत ॥
अब बिचारि हम एह मंत्रि[18] बुल्लत मरहट्ठन ॥
सजि प्रपंच तिन संग बोरि तुरकान हिंदु बँन[19] ॥
हे नृप हिंदुन हेलि[20] अप्प इक१ छत्र रहहु अब ॥

---

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारी-दास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस बिहारीदास के घर ५ छाप कराई ॥ १८ ॥ ६ सेवक बनकर ७ एकांत में सलाह की ॥ १९ ॥ ८ भाग्य ९ वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ झुकते हैं (यावनी भाषा में परमेश्वर के वाक्य को कलमां कहते हैं अर्थात धर्मोपदेश को नहीं झुकते) १२ मुख १३ मद्य पीने में १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको माशूक कहते हैं उस माशूक को ही १५ बड़ा जानते हैं १६नपुंसकों से मैथुन करते हैं १७राज्य प्रबंध को चित्त पर कुछ नहीं चाहते ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाते हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के सूर्य

भुग्गहु दिल्लिय भुम्मि सचिव हम करहिं जेर सब ॥
मरहट्ठ पार[1] मंडहिं अमल अप्पनं चम्मलि वार[2] इत ॥
यह अक्खि बहुरि कूरम अधिप लियउ हत्थ जामिप[3] लिखित॥२१॥

दोहा ॥

लिखवायो पहिलै लिखित, संभरतैं[4] जयसीह ॥
सो दिखाय संग्रामकों, अक्खी सम्मत ईह[5] ॥ २२ ॥

[षट्पात]

सुनहु रान संग्राम साल खट हय सत्रह १७७६ जब ॥
संभरपतिकैं[6] सूनु[7] भयो मम जामि जठर[8] तब ॥
रखत जामिपर रीस कउल जामिप बिनु कारन ॥
कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि सौंपत अब मारन ॥
हम कहिय क्यों न जनमत हन्यों अब इहिं हनन प्रपंच अति॥
पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद[9] अब रहहु मति।२३।
उत्तर पुनि उच्चरिय कउल जगदंब सपथ[10] करि ॥
मैं नहिं हनन समत्थ[11] अप्प यह हनहु बंस अरि[12] ॥
जुलमसील[13] तुम जामि[14] कलह हमसह वह कत्थहिं ॥
कछु तुमतैं नन कहहिं अप्प थप्पत[15] श्रुति[16] अत्थहिं ॥
यह अघ अरिष्ट[17] तसमात अब कूरम[18] जिम तिम मेट करि ॥
कहिहो जु सीस धरिहैं कथित[19] नहिं स्वतंत्र रहिहैं निवारि।२४।
हठ उत्तर सुनि हमहु हेतु[20] कृत्रिम बिच हेरे ॥

---

१ चामल नदी के उधर २ चामल नदी के इधर ३ बहिनाई [बुधसिंह] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय देने की चेष्टा कही ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ मेरी बहिन के उदर से ९ मेरे देश में ॥ २३ ॥ १० सौगन ११ समर्थ १२ वंश के शत्रु को (वर्णसंकर होने के कारण यह भवानीसिंह का विशेषण है) १३ जुलम करनेवाला स्वभाव १४ तुम्हारी बहिन का १५ आप वेद के १६ अर्थ का स्थापन करते हो इसकारण १७ पाप का उत्पात १८ हे कूरम (जयसिंह) १९ कहना ॥ २४ ॥ उस लड़के के जाली होने के २० कारण

पै[1] इक्क२न तँहँ पत्त[3] बहुत ऋतैं माँहि निवेरे ॥
कह्यो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाँई[4] ॥
यह जो तो किम अग्ग भये तदुदर[5] दुवरभाई ॥
पुनि कउल एहँ[6] वहँ[7] हरि प्रनत करैं न अघ इर्म कोप कित ॥
बसु८बरस बहुरि न सुन्यौं बितँथ[9] पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥
कुंभाँनी[10] भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥
रूप्पय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नैं प्रछन्नतँम[11] ॥
तब मैं भंडारेजँ[12] छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥
पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्रहि ऋतैं[13] भास्यो ॥
हम तब विचारि चहुवान हठ प्रतिबँच[14] अक्खिय नीति पर ॥
करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तब मन्नहि कुमर।२४।

(दोहा)

सीसोदनि रठोरि सुत, होहि सु तुमकौं देहिँ ॥
जुँ[15] तुम अंकैं[16] धरि थप्पिहो, सु सुत मन्नि हम लेहिँ ॥२७॥
हम जान्यौं यह लिखित हठि, न लिखहिँ बुद्ध नरेस ॥
हत्यातैं तब डरहिँ हम, इहिँ भल मारहु एस ॥ २८ ॥
लिखि यहैहु दुंक्कर[17] लिखित, मम कर दिन्नौं मुँद्ध[18] ॥
सब हड्डनको सँक्खि[19] धरि, बालिसँ[20] पुंगँव[21] बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

---

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ सत्यता में ४ नहीं आई ५ उसके उदर से ६ बुधसिंह तो वाममार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह झूठ वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभावत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त छाने १२ नगर का नाम है १३ सत्य दीखा १४ पीछा वचन [प्रयुत्तर] ॥ २६ ॥ १५ जो १६ गोद ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुष्कर [कठिनाई से किया जावे ऐसा] १८ मूर्ख १९ साक्षि २० मूर्खों में २१ श्रेष्ठ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

तह्मा लिहि अवकज्जं कज्जं अह्मेहिं सच्चवयणेहिम् ॥
तिम चेयवि तुह्मेहिं कज्जाकज्जं वियज्ज सीकज्जम्॥ ३०।
इन्द्रवज्रा ॥
सोऊण संगामणरिस्सरोवि होऊण सक्खी लिहिअम्मि तह्मि ॥
घेत्तूण णीइं णिअलेहिणीए सो अप्पऊरीकरणं लिलेह ।३१।
उपजातिः ॥
खु पास्सए बिन्दुमईसपट्टे अणोरसो तस्स धियं कुबिट्ठो ॥
दिट्ठूण लेहं बुहसीहकिढं संगामराणा लिहिअं मए वि॥ ३२॥
(इन्द्रवज्रा)
ताणं भड़ाणं बिजिसोलहाणं १६लेहं दले सो इय लेहिऊण ॥
दिढं तदो कुम्मकरम्मि पण्णं लिद्धं हि तह्मा पिहुलं पसाअम्।३३।
प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्यं कृत्यमस्माकं सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिरपि कार्याकार्यं विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि भूत्वा साक्षी लिखिते तस्मिन्॥गृहीत्वा नीतिं निजलेखिन्या सोऽपि आत्मोरीकरणं लिलेख॥३१॥खलु पार्श्वके बिन्दुमतीशपत्रे अनौरसस्तस्य बुद्धौ कुपुत्रः॥ दृष्ट्वा लेखं बुधसिंहकृतं सङ्ग्रामराणेन लिखितं मयापि ॥३२॥ तेषां भटानामपि च षोडशानां लेखन्दले स इति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्मकरे पत्रं लब्धस्तस्मादपि प्रचुरः प्रसादः ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य वचन से लिखो. तैसे ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह सुनकर राणा संग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साची होने का नीति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिया ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बुन्दी के पति के पत्र को देखा. उस (बुधसिंह) की बुद्धि में वह पुत्र अनौरस है सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुझ (संग्रामसिंह) ने भी लिख दिया है ॥ ३२ ॥ उन सोलह उमरावों से भी उस [संग्रामसिंह] ने वह लेख लिखवाकर वह पत्र कछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे बहुत प्रसन्नता हुई ॥ ३३ ॥

(दोहा)

*सभट रानकी †सक्खि इम, ‡बहुल प्रपंच बनाय ॥
बुद्ध लिखित §दल सिर सबिधि, लिय कूरम लिखवाय॥३४॥
कछु दिन रहि कौतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥
पाय रान सन सिक्ख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥
गो कूरम जब रान गृह, ¶बुद्ध तबहि बुंदीस ॥
सह कुटुंब आमैर सन, रचिय प्रयान रिसीस[1] ॥ ३६ ॥
द्विजबर गुरु जयसिंहको, रतनाकर अभिधान[2] ॥
कानीखोह मुकाम तस[3], दिन्नैं तत्थ मिलान[4] ॥ ३७ ॥

(षट्पात्)

जिहिं रतनाकर बिप्र सुगुन जयसिंह सिखायो ॥
स्मृति रु निगम खट६ सत्थ बिबिध नृप धर्म बतायो ॥
चउदह१४पुनि चउसट्ठि६४ कला बिद्या पटु किन्नों ॥
जयसिंह[6] गे दारिद जोग भूसुर[7] जिहिं भिन्नों ॥
धारन कराय सब कुल धरम कलि[8] भूपन सिरमोर किय ॥
जिम जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अद्दरिय।३८।
बिनु त्रि३संध्य[9] जलपान जँग्य[10] पंचक५ बिनु भोजन ॥

* उमरावों सहित † साक्षि ‡ बहुत § बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥३५॥ ॥ ३५ ॥ ¶ बुधसिंह ने १ क्रोध सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम ३ उस रत्नाकर का कार्णीखोह ग्राम था ४ तहां मुकाम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जयसिंह की जन्मपत्री में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्राह्मण ने मिटाया ८ कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥९ तीनों सन्ध्या किये विना जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के * पांच यज्ञ किये विना

* पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ इत्यमरः ॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वेदपढाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है, तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ कहाता है बलि अर्थात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता हैं और घर में आएहुए अतिथि की सेवा करके खान पानादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्हीं प्रतिदिन कियेजानेवाले पांच यज्ञों का नाम महायज्ञ है.

बिनु स्मृतीन[1] व्यवहार ख्यात नय[2] बिनु बसु[3] खोजन ॥
द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥
बिनु बिधि काल व्यवाय[4] मंत्र नय बिनु अरि मारन ॥
बिन न्हान निगम[5] पाठन बहुरि बिनु प्रपंच[6] संगर बिकट ॥
इहिं द्विज प्रसाद[7] कूरम इते नन रक्ख निज भुव निकट ॥
जब कूरम जोधपुर चल्यो व्याहन नय चातुर ॥
तब सय्यद डर ताकि पुब्ब[8] पठयो अंतहपुर[9] ॥
नगर[10] करोली नाह भूप जदुबंस जासभुव ॥
दुग्ग[11] बहादुरदुग्ग धीर रक्ख्यो सु तत्थ धुव ॥
अवरोध[12] संग हो द्विज यहहु तिहिं तहँ दिन्नो देह तजि ॥
तब कुम्भ तास जेठो तनय भूसुर[13] गंगाराम भजि ॥ ४० ॥

दोहा ॥

गंगारामहु अमित[14] मति, भो द्विजराज सुभाय ॥
बहु मख[15] नृप किय जास बल, बलि जैपुर बसवाय ॥ ४१ ॥
निबसथ[16] कानीखोह तस, रहिय आय बुन्दीस ॥
कछवाही आमेर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(षट्पात्)

इत कूरम गृह आय कालकोबिद[17] प्रपंचकिय ॥
मरहट्ठन छन्न मिलि दई अरजी पुनि दिल्लिय ॥

भोजन नहीं किया १ धर्म शास्त्र के विना जिसका व्यवहार प्रसिद्ध नहीं हुआ २ विना नीति के ३ धन नहीं लिया. सुपात्र ब्राह्मण के विना दान नहीं दिया, विष्णु और शिव के विना ध्यान नहीं किया, उचित समय के विना ४ मैथुन नहीं किया, नीति की सलाह के विना शत्रुको नहीं मारा. विना स्नान किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, विना ६ रचना [व्यूह] के भयंकर युद्ध नहीं किया ॥३९॥ ७ कृपा ८ जाने से पहिले ही ९ जनाने को १० नगर ११ बहादुर गढ नामक १२ जनाना के साथ १३ ब्राह्मण गंगाराम का सेवन किया ॥४०॥ १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १६ ग्राम ॥ ४२ ॥ १७ समयचतुर

रचत दौर[1] मरहट्ठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥
जो भेजहु बल[2] बित्त[3] प्रबल हम लरहिं[4] मंडि पग ॥
सुनि साह पुच्छि सचिवन सबन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥
कथ तांव खानदौरां कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु ।४३।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनोदन्तश्रवणसमकालससैन्यजयसिंहोदयपुरगमन १ महाराणासकाशाज्जयसिंहरामपुरप्रापण २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेखविषयसाक्षीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमन ३ जयसिंहगुरुरत्नाकरप्रशंसया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[दोहा]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभर[5] दुज्जनसल्ल ॥
पायो कुम्म[6] जु रामपुर, हठि लुट्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अठ्ठ मुनि ससि१७८५सम्मित सक, इक बिग्ग्रह कोटा हुव ओचक

---

१ दौड़ अथवा फैलाव २ सेना ३ धन ४ लड़ैं ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदीके भूपति बुधसिंहके चरित्र में महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पड़नेकी खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से राजा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बूंदी देने के बुधसिंह के लेख पर जयसिंह का महाराणा की साक्षी कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गुरु रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का अठाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छासठ २६६ मयूख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया वह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट *छित्वर, प्रबल सिपाह बहयो छक उप्पर ॥२॥
महाराव भट यहै मत्त मन, घंटीपति राउत †गव्व घन ॥
कछुक बत्त उप्पर वह कोप्यो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लोप्यो॥३॥
करउर अग्ग लख्यो जो रनकरि, तिहिं कबंध जयसिंहहिं ‡संहरि॥
रत्ति निकसि हड्डा सु वडेरय, रामपुरप संग्राम सरन गय ॥ ४ ॥
कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु चोर सहाई ॥
चंद्राउत सु सुनी न धरी चित, तब धकि[1] दुज्जनसल्ल वढयो तित॥५॥

हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्पर्यो ॥
बजि नै[2]द्द मैं[3]दल हद्द सै[4]द्दल भै[5]द्द बद्दल ज्यौं भर्यो ॥
उडि केतु दंति[6]न पंति पंतिन सिंधु तंतिन[7] लग्गये ॥
नखरा[8]ल चा[9]लन बाजि जाल[10]नं ज्वाल ना[11]लन जग्गये ॥६॥
ठननंकि घंटन घोर त्यौं रननंकि कोचै[12]नकी करी ॥
सननंकि सै[13]त्तिन नाल सास झनंकि पक्खर झल्लरी ॥
बिरुदै[14]तें वीर पटै[15]तें कइ कै[16]मनैत सज्जित संक्र[17]मे ॥

*छीतरसिंह ॥ २ ॥ †बहुत गर्व से ॥ ३ ॥ ‡मारकर॥४॥ १क्रोध करके उधर बढा
॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनशाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर उठा जब २ भादवा
के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दायमान होकर ३ मर्दल [ज्यों मृदंग के
आकार 'मादल' नाम से वाद्यविशेष प्रसिद्ध है] का २ शब्द हुआ ६ हाथियों
पर ध्वजा की अनेक पंक्तियें उडकर ७ तांत के बाजों पर सिंधवी [बड़ाराग]
रागनी लगी ८ नखरावाली ९ चालों से घोड़ों के १० समूह की ११ नालों
[खुरतालों] से * अग्नि जगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घंट और १२ कवचों की क-
ड़ियें बजीं १३ घोड़ों के नाकों (फुरणों) से श्वास बजकर झालरों के समान
पाखरें बजीं १४ विरुदाये (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा फैंकनेवाले
वीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुषधारी] सज्जित होकर १७ चले

* अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोकरूढी से जहां तहां हमने स्त्रीलिंग लिखा है जिसको अशुद्ध नहीं
जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और दोहा आदि कितने ही स्त्रीलिंग शब्दों को लोकरूढी के कारण
पुल्लिंग करके लिखे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीय-
म्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥

रन सैंनं[1] लखि लगि लैंनं[2] के गनं[3] गैनं[4] गिद्धनके भ्रमे ॥७॥
डगमग्गि अद्रिन कूट[5] तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥
दर[6] छिट्ठिदै भुव पिट्ठि कच्छप निट्ठि निट्ठिन रुप्पयो ॥
नउबत्ति नादनं[7] बीर बादनं[8] छोनि[9] छादन वित्थरयो ॥
जिम भद्द संबरं[10] धूलि डंबरं[11] एम अंबर उच्छरयो ॥ ८ ॥
फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करैं ॥
जिन मैंन[12] पव्वय प्रान गंव्वय[13] दान निज्झर[14] निज्झरैं ॥
असवार तोंकें[15] तुखार के भट चक्रचारं[16] फिरावहीं ॥
अबलों सु सिक्खत पौंनं[17] पै वह गौंन रंचन आवहीं ॥ ९ ॥
तिन धार[18] मार भैयार[19] भार हजार भोगप[20] जंक्यो[21] ॥
खुरतार अंग्रन[22] भुम्मि फूटत ज्यों उदुंबरं[23] पक्यो ॥
[24]खुरली सु खिल्हत बीर के मुरली[25] सु सिंधुव उच्चरैं ॥

---

१ युद्ध करनेवाली सेना को देखकर ग्रीधनियों के ३ समूह की २ पंक्तियें लगकर ४आकाश में भ्रमने उड़ने)लगीं ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर तूटनेलगे और समुद्र ने मर्यादा छोडी ६भय की दृष्टि देकर भूमि को पीठ पर लियेहुए कच्छप कठिनाई से खड़ा रहा ७ नोबतों के शब्द ८ वीरों के वचन ९ भूमि को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेघधारा "यहां शम्बर शब्द सामान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेघधारा का ग्रहण है" के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ मस्त हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं १३ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १२ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके दाण (मदधारा) १४ झरणा के समान झरता है कितने ही घोड़ों को १५ बागों में उठाकर वीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस गति को १७ पवन अब तक सीखता है "पवन वात्या(वघूल्या)होकर गोलाकार फिरता है सो मानों इसीकी नकल करता है" परन्तु गति कुछ भी नहीं आती ॥९॥ १८ उन घोड़ों की गति [दौड़] की मारके १९ भयंकर भार से हजार २०फणों का पति[शेषनाग]२१ गिरा. उन घोड़ों की खुरतालों के२२अग्र भाग से पके हुए २३ ऊमर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही वीर २४ शस्त्राभ्यास के खेल खेलते हैं और २५वंसियों में बडे राग का उच्चार करते

किलकारि जुग्गिनि संग ठेहैं हलकारि भैरव हुंकरैं ॥१०॥
भट भीमलों निज सीमतैं सुत भीम यों चढि संचरयो ॥
लिय घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि संगर बित्थरयो ॥
लगि अग्गि तोपन काल कोपन नैर लोपन मंडयो ॥
खगि गोख जालन सौंध सालन दुग्ग गोलन खंडयो ॥११॥
जरि हट्ट पट्टन बट्ट बट्टन धूम धोरनि धुंधरे ॥
दुरि ओक ओकन सोक के पुरलोक संसयमैं परे ॥
प्रांकार गिरि गिरि जात कहुँ छिकि बप्र कपिसिरैं उच्छटैं ॥
कहुँ फुट्टि खोमन तोम गिरि परिखान पूरि सु उप्पटैं ॥१२॥
दगि दाव तुट्टि लदाव मंडप ग्रैव गिद्धनि ज्यों चढैं ॥
प्रासाद पत्थर सोर सत्थरैं ठेहैं थरत्थर के कढैं ॥
छकि छिन्न तोपन छूट के परिकूट गोपुरतें गिरैं ॥
फुलिंग फालन जग्गि ज्वालन चित्रसालन के किरैं ॥१३॥

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और वीरों को ललकार कर भैरव हुंकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान वीर होकर अपनी सीमा से महाराव भीमसिंह का पुत्र चढ कर २ चला ३ सेना का घेरा लगा कर ४ युद्ध फैलाया ६ काल के कोप के समान तोपों से ५ अग्नि लगा कर नगर का नाश रचा और गोले लग कर झरोखे, जालियें ७ महल और शालाओं को गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में वस्त्र जल कर मार्ग मार्ग में धुवां की धोर से अंधेरा होगया शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के संदेह में पड़गये कि जीवित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर ११ बडा कोट छिक कर १२ कांगरे उछटते हैं 'जो कोट बीस हाथ से नीचा होवे उसको प्राकार और इससे बडा होवे उसको वप्र कहते हैं और मतांतर से धूल कोट का नाम भी वप है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ समूह गिर कर १५ खाइयों को पूरण करके उफलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और मंडप (गुंमज) टूट कर उनके १६ पत्थर गीधनियों के समान आकाश में चढते हैं और १७ बारूद के साथ धुज कर महलों के पत्थर निकलते हैं, तोपों से कट कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग कर १९ अग्निकण उडने से कितनी ही चित्रशालियें गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलन थंभ के थहरात छत्रिन छुट्टिकैं ॥
छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुट्टिकैं ॥
अंगार छार अगार द्वार बजार बीथिन उच्छरैं ॥
न रहें निवानन छिज्जि नीर समीर ग्रीखमलौं सरैं । १४ ।
जरि जात पर परि जात गिद्धनि डोरि तुट्टत चंगज्यों ॥
झरिजात झंडन दंड के गिरिजात केकिय भंगज्यों ॥
धकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामें बिब्भल कुक्कयो ॥
इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल झेल्लन[11] झुक्कयो ॥ १५ ॥
दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अट्टनपैं[12] चढे ॥
के दोरि अररन[13] तोरि अग्गलैं[14] पोरि मग्ग लगे बढे ॥
वह हड्ड छित्वर आय चैत्वर[15] धीर धारनमैं धर्यो ॥
करि जंग कछु बिधि झारि खग्ग सु फारि फोजहिं निक्खर्यो १६
संग्राम नृप यह काम[16] सुनि तब रामपुर तजि भज्जयो ॥
इत जित्ति दुरजनसल्ल हत्तन[17] लुट्टि पत्तन[18] गज्जयो ॥
बरजोर कूरमभोर[19] कौं गिनि भीति मानससौं[20] भिरी ॥
जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी ।१७।

१गोलोंके गिरने[बरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे टूट कर ठहरजाते हैं दरवाजों के बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगार और ३ भस्म उडती है निवाणों में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (गरम) ५ पवन ६ चलने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी टूट कर ७ पतंग [कनकव्वा] गिरै तैसे पंख जल कर ग्रीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं जैसे मरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरैं ९ घर घर जल कर धुवां से घबराया हुआ १०रामपुर कूका इसप्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को ११ झेलने को बढ़ा॥१५॥१२बुरजों पर चढे और कितने ही १३ कँवाड़ों को और १४ आगळों (अर्गला, भागळ) को तोड़ कर द्वार के मार्ग लग कर बढ़े वह हाडा छीतरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छीतरसिंह के निकलजाने का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कछवाहों के पति (जयसिंह) को बलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

(दोहा)

कोटापति नहिँ अमल किय, कूरम नृप भय भार ॥
लुट्टि रामपुर *जाम लग, आयउ अप्प 'अगार ॥ १८ ॥

[षट्पात्]

चंद्राउत सीसोद नृपति संग्रामसिंह इत ॥
पुर बिंझोली आय रह्यो चिंतत प्रपंच चित ॥
मातुल[1] हो परमार नाम बिक्रम बिंझोली[2] ॥
इहिँ कारन[3] तँहँ आय खूब भज्जत कटि खोली ॥
धनकुमरि नाम जननीहु तस ही पीहर इम तत्थ रहि ॥
दिन कछु बिहाय[4] दिल्लिय गयो साहमुहुम्मद सरन गहि ।१९।

(दोहा)

कछु वसु[5] हुंडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥
दिय कोटा आमेर हुव, बनि बनि पिसुन बताय ॥ २० ॥
कछु दिन रहि निज पुर कस्यों[6], पटा मुलक सब पाय ॥
सरँनि[7] मध्य जयसिंह सों, मास्यो चूक कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर[8] संक[9] बान वसु सत्रह१७८५ संबच्छर[10] ॥
अंमा[11] अह्न[12]गर्न पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥
रानाउति जाठरज[13] नाम माधव नृप नंदन ॥
सुनत खबरि जयसिंह भुम्मि मंडिय उच्छव घन ॥
दिय द्विजन दान रुप्पय अयुत१००००कथित[13] रीति जप जज्ञ करि ॥
सुत प्रसवकर्म[14] सज्जिय सकल आमनाय अनुसार[15] सँरि ।२२।

---

*एक पहर पर्यन्त 'घर ॥ १८ ॥ १मांमा २बींझोली नामक नगर में ३इसकारण ४बिता कर ॥ १९ ॥ ५ धन ॥ २० ॥ ६ चला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९ विक्रम के शक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ उदर से उत्पन्न १३ कहीहुई रीति से १४ जातकर्म १५ वेद के अनुसार चलकर ॥२२॥

(दोहा)

कछवाही भ्रातहिँ कहिय, उदयनैर तुम *पत्त ॥
†भामजको संबंध भो, वा नहिँ अक्खहु ‡अत्त ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहि कूरम तव कुप्पि §भ्राम कृत्रिम तिहिँ भाखत ॥
हमतैं ¶इम नहिँ होय बदहु पतितैं जु करहिँ बत ॥
कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥
बिजयसिंह मम अनुज¹ सत्य पै जग नहिँ मानत ॥
यह अक्खि अनुज कटिबंध² गहि खंजर³ खैंचन करिय कर ॥
झंझटि⁴ छुराय कूरम झटिति⁵ आयो बाहिर दै⁶ अरर ॥२४॥

दोहा ॥

कछवाही पिच्छैं⁷ निकसि, द्रुत⁸ निज सत्थ⁹ बुलाय ॥
चढि सपुत्र स्यंदन चली, स्वामी¹⁰ निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(षट्पात)

जामिपै¹¹ प्रति जयसिंह तबहि चैर¹² भेजि कहाई ॥
पहुँचे सब तुम पास भलैं बिरचहु मनभाई ॥
हत्या देत जु हमहिँ ततो हम करहिँ लिखित तकि ॥
नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पकि ॥
यह सुनत भूप पच्छी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥
हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ।२६।
सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय राजामल ॥
पठयो अक्खि प्रपंच लौन भानेज छन्न छल ॥

* गये सो † भानजे का ‡ यहां कहो ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह] इसको करतवी कहते हैं ¶ इसप्रकार १ मेरा छोटा भाई २ कमरपंधा पकड़कर ३ शस्त्र विशेष ४ झिटका देकर ५ शीघ्र ६ किंवाड़ देकर बाहिर आगया ॥ २४ ॥ ७ पीछे ८ शीघ्र ९ अपने साथ को ९ पुत्र सहित रथ पर चढके १० बुधसिंह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ हलकारा भेजकर ॥ २६ ॥

तब खत्री तँहँ जाय कह्यो कारन रानी प्रति ॥
सुरझ्यो कलह समस्त *अनुज तुम पच्छ करिय अति ॥
कहिहो तँहाँहि सगपन करहिं बुंदीसहु नहिं अब [†]बिमन॥
करि लिखित दिन्न जयसिंह कर किन्न सबहि [१]उररीकरन ।२७।

पादाकुलकम् ॥

तब रानी नृप हिंतु [२]कहाई, [३]भानज निजहिं बुलावत भाई ॥
सुरझ्यो जो विग्रह हित सत्थहि, तो भेजहिं अप्पन सुत [४]तत्थहिं।२८।
तब बुंदीस कह्यो रानी प्रति, तुमरो अनुज [५]बलिष्ठ बढ्यो अति॥
इम सुरझी उरझी सुन [६]चिन्ही, अक्खी उन जिम तिम लिखि दिन्ही
यह सुनि जान्यौं साम भयो अब, समुझ्यो रानी द्रोह मिटयो सब॥
तबहि भवानीसिंह स्वीय सुत, [७]मातुल ढिग पठयो खत्री जुत।३०।
राजामल लै तिहिं तहँ आयो, कुम्भ सुता कँहँ इतन कहायो ॥
दुर्ग माँहिं इक दुर्ग भयंकर, नाम चिल्हटोला [८]काराघर ॥ ३१ ॥
तहँ चढाय बालक वह मार्यो, नृप [९]कूरम काहू न निवार्यो ॥
एह कुमार हमहु [१०]अनुमान्यौं, पै असत्य सत्य न पहिचान्यौं ॥३२॥
कुटिल [११]कुसील लखत कछवाही, इम हम मति कृत्रिम [१२]अवगाही
पुनि बुंदीस [१३]नष्ट मति पिक्खत, देखि हेतु अवरहु [१४]ऋत दिक्खत ३३
[१५]प्राचीनन यह कथ इम रक्खी, यातैं हमहु [१६]अनिश्चय अक्खी ॥

---

*तुम्हारे छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पच्छ किया † उदास १ अंगीकार [स्वीकार] ॥ २७ ॥ २ कुंभसिंह से मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भानजे को बुलाता है ४ तहां ॥ २८ ॥ ५ बलवान् ६ नहीं देखा ॥ २९ ॥ ७ अपने पुत्र को मामा के पास राजामल खत्री सहित भेजा ॥ ३० ॥ ८ कैद [जेल]खाना ॥३१॥ ९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ बुरे स्वभाववाला १२ कृत्रिमपन का ही थाह लिया अर्थात् कृतघ्नी ही जाना १३ नष्ट बुद्धिवाला १४ सत्य दीखता है ॥ ३३ ॥ १५ ख्याति लिखनेवाले प्राचीन लोगों ने इस कथा को इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी संदेहवा-

*सुत सुनि सूनु कैद लिय दाही, किन्नो कलह कुप्पि कछवाही ३४
पति सन कहिय हन्यौं तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौं देह अमुत्रहि[1] ॥
इम कहि अन्न त्याग अवधारयो[2], व्याकुल नृप तब सोक बिचारयो ३५
मतिजड़[3] भूप कउल[4] निश्चित मन, नारिन नैंक उदास सहैं[5] नैन ॥
बिनयादिक करि कोप बहावैं, अंतर तबहि इष्ट सुख आवैं ।३६।
ललना[6] माल कहैं सु न लुप्पैं, करैं प्रनंति[7] जब जब कोउ कुप्पैं ॥
यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७
सत्रुन हत्थ तुमहि सौंप्यो सुत, अब क्यौं रिस हम कियउ कहा उत
कहिहो पुनि सोही हम करिहैं, असन लेहु इच्छित[8] अनुसरिहैं ३८
यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमर सु[9] मम मंडहु यह कग्गर[10] ॥
तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक[11], कछवाहीको एह कुमारक ३९
कलह उग्र रानी पुनि किन्नौं, निट्ठिनैं[12] अन्न दिनैंन[13] बिच लिन्नौं ॥
इत पुनि गरभ धरयो बुंदाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ।४०।
इति १ छुति २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अब तक्कत कूरम नृप याकैंहूँ, कल सुत होय मंगिहौं ताकैंहूँ ॥
कुमर भयें जामिजै गति कैंहौं[14], दुहिता[15] जो स्वसुतहिं तो दैहौं ।४१।

॥ चौपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि काल[16], रक्खे भट जामिकँ[17] रक्खवाल ॥
बुधसिंह रहे हेरत जे घेरि, नृप[18] सुत लोभ लयो मन फेरि ।४२।

ली ही रक्खी है * अपने पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धारण किये ॥ ३५ ॥ ३ मूर्ख बुद्धिवाला ४ वाममार्ग में मन का निश्चय करनेवाला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ स्त्रीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ ३७ ॥ ८ तुम्हारा चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ यह कुमर मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टालने [मिटाने] वाली ॥ ३९ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४ आपकी सी गति हुई सो ही करूंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अपने बेटे ईश्वरीसिंह को परणाऊंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को १७ पहरायत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया॥४२॥

[षट्पात्]

तदनु ईश्वरीसिंह सुपहु जपसिंह पट्ट सुत ॥
रान कुमर जगतेसे सुता व्याह्यो हित संजुत ॥
सर बसु सत्रह१७८५ साल माघ सितै लगन मिलायो ॥
जबहि उदैपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥
इत दक्खि मुलक्क मालव कियउ मरहट्टन मंडू अमल ॥
आजलौं दूर सुनते इनहिं प्रबिसन अब लग्गे प्रबल ।४३।

दोहा ॥

रन अवरंगाबाद रचि, पहिलैं कटक प्रचारि ॥
दयाबहादुर बिप्र वह, सूबापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

(षट्पात्)

इहिं द्विज दिल्लिय अग्ग भेटि हिंदुन दुख दिन्नौं ॥
साह हुकम पुनि पाय कुंच दक्खिन सिर किन्नौं ॥
तीन अयुत३०००० तुक्खार सुभट निज संग सिधारे ॥
सहँस बीस२०००००पुनि साह कँटक भट दिन्न करारे ॥
कोटा नरेस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु संग दिय ॥
इन जाय सरित रेवा उतरि कछुदिन पार मुकाम किय४५
कोटापति करि कपट तत्थ कछु काल बिहायो ॥
द्विज ढिग निज दल रक्खि अप्प कोटा चलि अयो ॥
उत अवरंगाबाद लुट्टि मरहट्ट चलाये ॥
द्विज त्रि३ बेर दल पिल्लि पिल्लि रंचक ठहराये ॥
अति जोर बढिय मरहट्ठ अरि तब द्विज सम्मुह झिल्लये ॥
पासक कृपान चोपरि प्रथितै खेत प्रान पन खिल्लये ।४६।

---

१ जिस पीछे २ राणा संग्रामसिंह के पुत्र जगतसिंह की पुत्री ३ शुदि ४ विवाह ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोड़ों [सवार] ७ सेना ८ नर्मदा नदी ॥ ४५ ॥ ९ तहां कुछ समय बिताया १०अपनी सेना ११ब्राह्मण तीन वार सेना भेजकर १२ खड्ग रूपी पासों से युद्धक्षेत्र रूपी १३ प्रसिद्ध चोपड़ में १४ प्राणों का दाव

दयाबहादुर बीर बिप्र नागर सूबा पति ॥
खूब झारि रन खग्ग मारि बहु सत्रु महामति ॥
तिल तिल तेकन तुट्टि बिरचि अच्छरि लगबाँहीँ ॥
गंजि अरिन करि गरद मरद पत्तो दिवँ माँहीँ ॥
जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगेन जिम जिम भुल्लये ॥
तिम तिम कटाच्छ तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ।४७।

(दोहा)

मारि द्विजहिँ मंडत अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥
मरहट्ठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥
लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥
सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित सक्खि ॥ ४९ ॥
तबके आवत दक्खिनी, भुव दब्बत बरजोर ॥
अब कूरम कहि मुक्कल्यो, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥
जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥
अवर देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥
कूरम तब मुक्कलि कटक, अमल रामपुर किन्न ॥
मरहट्ठन सैन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भरदिन्न ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्टन १ रामपुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्तरा-

---

लगाकर खेला ॥ ४६ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग भोगने में ३ कटाक्ष ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ४ हित की साक्षी [गवाही] से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ ६ सेना भेजकर ७ से ८ भार ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव दुर्जनशाल का रामपुर को लूटना १ रामपुरा से भागेहुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लिखाना २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा पाकर पीछे आते हुए राव

मपुरप्रत्यागच्छज्जयपुराधीशजयसिंहस्य रावसंग्रामसिंहच्छलघात-
मारणं ३ जयसिंहकनिष्ठसूनुमाधवसिंहजननं ४ जयसिंहस्य स्व-
भागिनेयबुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारणं ५ जयसिंहपट्टकुमा-
रेश्वरीसिंहोदयपुरविवाहनं ६ गृहीतोज्जयनीकमहरट्ठदशपुरपुराव-
ध्याक्रमणवर्णनमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६७ ॥

[दोहा]

अभयसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥
स्वामिधरम बहि साहको, अतिजवै दिल्ली आय ॥ १ ॥
इत नृप कानीखोह रहि, तज्यो बचन गहि गाढ ॥
सक खट बसु सलह१७८६समय, आयउ अब आषाढ॥२॥

[पट्पात]

असित पक्ख आषाढ मास सनिवार चउद्दसि१४ ॥
चुंडाउति उर कुमर भयो दहमास जठर बसि ॥
धांलेयी नृप निकट उल्वँ सहितहि गहि आन्यौं ॥
बुल्ली नीति बिचारि जनन अवलग नहिं जान्यौं ॥
पै अब न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि कहिहैं कुमर॥
॥ ३ ॥

पादाकुलकम् ॥

संग्रामसिंह को छलघात से मरवाना ३ जयसिंह के छोटे पुत्र माधवसिंह का जन्म होना ४ राजा जयसिंह का अपने भाणेज और बूंदी के पाटवी राजकुमार भवानीसिंह को मरवाना ५ जयसिंह के पाटवी पुत्र ईश्वरीसिंह का उदयपुर में विवाह होना ६ मरहठों का उज्जैण लेकर मंदसोर तक बढने का उनतीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सड़सठ२६७मयूख हुए॥
१ धारण करके २ अत्यन्त शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥ ३ कृष्णपक्ष ४ दशमास उदर में वास करके ५ धाय की बेटी ६ नृपसिंह के समीप ७ आवल [जेर की थैली] सहित ८ अन्य मनुष्यों ने अथवा कुमर का जन्म अन्य लोगों ने नहीं जाना

अग्गैं जबहि *भीम हुडी भुव, †तनया तब सूरजकुमारि हुव ॥
रिपु[1]भयसौं सुत सुत करि राखी, भावतसिंह भय[2] सुत भाखी ॥ ४ ॥
जँहँ सुता[3]हिं सुत सुत कहि ठानैं, तिहिं पुनि सुता कहैं जग मानैं॥
सुत[4]हिं सुता[5] कहि कहि जहँ रक्खहिं, ताहि बहुरि कोउ न सुत अ[6]क्खहिं
हुव संतान सबन यह जान्यौं, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौं ॥
पै[7] छन्नैं रक्खैं नहिं भल मत, ख्यात[8] कियैं कूरम[9] इहिं संगत ॥६॥
हमरी मति सु फुं[10]रत प्रकटावन, पुनि कहिहो सु करहिं किंक[11]रपन॥
धात्रेय[12] जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकरन अभिधा[13]न हुतो वह ॥ ७ ॥
ताकी इहिं तन[14]चा धालेई, कोविद[15] नीति कही इम केई ॥
सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, वंटहु सुत भैं[16]व प्रकट बधाई ॥८॥
भावसिंह नृपको यह नाजर, वय नँय[17] वृद्ध[18] रु राजकाज बँर ॥
अग्गैं नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपुर[19] कोउ बेलँ[20] चल्यो तब॥९॥
सिविका छोरि अपुव्व[21] सयानी, रथहि चढी राजाउति रानी ॥
चिकन ओट कछु लखत प्रपंचकैं[22]. वाहिर कढी अंगुली रंचकैं[23] ॥
कहि तब नाजर अमर करारी[24], छरी[25] तीन३ अंगुलि पर मारी ॥
उपालंभ[26] अनिरुद्ध भूप दिय, नाजर तबहि ओरि कर आक्खिय ११
दासी जन अंगुलि मैं मानी, रानी रथ आरूढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ * कोटा के महाराव भीमसिंह ने † पुत्री १शत्रु के इस भय से कि अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण बूंदी को दबालेना चाहिये २.यह कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहां पुत्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रक्खेंगे तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं कहेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से ९ जयसिंह इसको मांगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने में ही चलती है ११ नौकरपन के कारन १२ धायभाई १३ नाम ॥ ७ ॥ १४ बेटी१५नीति चतुर ने कई वार्ता कही १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और नीति दोनों में वृद्ध १८ श्रेष्ठ १९ जनाना २० किसी बाग में ॥ ९ ॥ २१ अपूर्व २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कठिन) २५ छड़ी २६ ओलंभा ॥ ११ ॥

यातैं रही अंगुली अक्खय[1], नहिं तो लैतो कट्टि रीति नय[2] ॥ १२ ॥
अैसो तुंजक[3] हुतो वह नाजर, किन्नौं तिहिं यँहँ अरज जोरि कर
बुंदिय जो बारिधिं[4] बिच बोरहु, छन्नैं रक्खि ततो नय[5] छोरहु ॥१३॥

(षट्पात्)

सु[6] सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नौं ॥
दुंदुभि[7] बज्जिग द्वार द्रव्य बिप्रन बहु दिन्नौं ॥
गणाकन[8] अरु नेवगिन[9] कुम्म नृपसौंहु कहाई ॥
सत१०० सत१०० रुप्पय सबन दई जयसिंह बधाई ॥
बुद्धहि[10] कहाय पठई बहुरि सौंपहुँ अब हम हत्थ सुव[11] ॥
गहि लिखित रीति लखि बंधुगन[12] धारहु अवरहि अंकै ध्रुव[13] १४

[दोहा]

कहि पठई बुधसिंह तब, पच्छी ब्याज[14] बिसास ॥
करन देहु जातक करम[15], पुनि भेजहिं तुम पास ॥ १५ ॥

(षट्पात्)

जातकरम सब करिय तनय उच्छव[16] तदनंतर[17] ॥
सुन्यौं कुमर संसार नाम उम्मेदसिंह बर ॥
बहुरि कुम्म इक बनिक[18] सचिव पठयो हीरामल्ल ॥
कह्यो देहु मुहिं कुमर कोहिं[19] तब कियउ ख्यात[20] छल ॥
अक्खिय रिसाय बुंदिय अधिप पुत्रहु कहिं मंगे मिलत ॥

---

१ क्षय रहित २ न्याय की रीति से अंगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबंधकर्ता (यह यावनी शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दबदबा शान शोकत प्रबन्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डुबोना होवे तो ५ नीति ॥ १३ ॥ ६ सो ७ नगारे बजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग·पानेवालों ने जयसिंह से भी १० बुधसिंह का ११ सुत [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से भाइयों के समूह में से १३ निश्चय किसीको गोद रखलो ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कहलाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के उत्सव का १७ जिस पीछे १८ बनिया १९ क्रोध करके २० प्रसिद्ध

बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हम रन इच्छत[1] खग्ग[2] हत ।१६।
सुनत एह जयसिंह चप्पि कर मुच्छ रिसायो ॥
पन्नग पय दब्बयो[3] किं[4] छुधित सद्दूल खिजायो[5] ॥
तमकि[6] भूप ततकाल[7] सचिव राजामल्ल हुल्ल्यो[8] ॥
कह्यो कहा करतव्य[9] खिज्जि अब उन छल खुल्ल्यो ॥
करि उचित लेहु खत्री कहिय गृहवासिन[10] इन हनहु नन[11] ॥
इच्छित[12] हिं राज बुंदिय अरपि प्रथित[13] निवाहहु लिखित पन[14] १७॥

(दोहा)

तब छित्वर[15] प्रति ढुंढगढ, कुम्म लिख्यो यह चाहि ॥
देवसिंह भेजहु कुमर, बुंदी अप्पहिं ताहि ॥ १८ ॥
प्रथम राज तुमको मिलत, जो यह तुमहिं रुचै न ॥
तो हम अवरहिं अप्पिहैं, वदहु न पिच्छैं बैन ॥ १९ ॥
छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥
हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिं न एह ॥ २० ॥
अवरहु गोपीनाथ कुल, नटयो अनुक्रम पाय ॥
बुंदीतैं[16] कूरम तबहि, सालम लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥
कह्यो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गद्दिय बीर ॥
लखहु एह जामिर्प[18] लिखित, हम सहाय हमगीर ॥ २२ ॥
सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्ल्यो[19] कुमर प्रताप ॥

---

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार मारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया ४ किंवा ५ भूखे सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया ९ क्या करना चाहिये १० अपने घर में वास किये छत्रों को ११ मारो मत "यहां अधिक निषेध-के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्य स्थानों में भी जहां 'नन' शब्द आवै वहां अधिक निषेध समझना चाहिये" १२ चाहे जिस को बून्दी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निबाहो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ १७ सालमसिंह को ॥२१॥ १८ बहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट ॥२२॥ १९ बुलाया

नय बिचारि सोहू नट्यो, उच्चरि दुरित[1] अमाप ॥ २३ ॥
जड़ सालम बुल्ल्यो जबहि, मध्यम कुमर दलेल[2] ॥
करउरतैं आयो कुटिल, मन इच्छित लहि मेल ॥ २४ ॥
अभयसिंह इत मरुअधिप, बखसि साह[3] बसु जात,
सरबुलंद सिर मुक्कल्यो, दै सूबा गुजरात ॥ २५ ॥
दिल्लीतैं मारव[4] नृपहु, आयो जैपुर[5] अत्थ ॥
बरखनलग[6] जैपुर बस्यो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥
तब दरकुंचन आय तँहँ, मरुपति दिन्न मिलान[7] ॥
इहिँ सुनि कार्नीखोहतैं, चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥
मरुपतिसौं अति हेत मिलि, कहि सब लिखिन कुकाम[8] ॥
जयनिवास उपबन[9] निकट, किय बुंदीस मुकाम ॥ २८ ॥

मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध बिनोद, परस्पर डेरन आय प्रमोद ॥
सु हेरकरि गोठिन[10] जिम्मन साजि, दये लिय दोउन[11] बारन बाजि २९
मरू प्रभु डेरन कुम्महु आप, सुतापति[12] जानि मिल्यो सरसाप[13] ॥
कह्यो करि पावन जैपुर जेबँ[14], समालय[15] भोजन[16] कैं चलिये[17] बँ।३०।
कह्यो मरुभूपहु यौं सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बलापति[18] सत्थ ॥
ठगे इनकौं तुम जानि प्रमत्त, हमैं इनतैं हित हैयँ न अत्त[19]॥ ३१ ॥
यहै सुनि कूरम अक्खिय एह, चुक्यो मिलि जामिपतैं यहदेह[20] ॥
यहै कहि लै मरुभूपहिँ जाय, दई बिनु जामिपँ[21] गोठि जिमाय॥३२॥

---

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दलेलसिंह को ॥ २४ ॥ ३ बादशाह ने धन का समूह देकर ॥२५॥ ४ मारवाड़ का राजा ५ यहां ६ कई वर्षों से वास किया हुआ ॥२६॥ ७ मुकाम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देने का खोटा कार्य कह कर ९ बाग के समीप ॥ २८ ॥ १० गोठें ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ १२ अपनी पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६ भोजन करने पर १७ अब चलिये ॥ ३० ॥ १८ यह बुधसिंह का विशेषण है १९ त्याज्य नहीं है ॥ ३१ ॥ २० दहिनाई से यह देह मिल चुका अर्थात् अब कभी नहीं मिलसक्ता "यह काकु भाषा का कथन है" २१ बिना बुधसिंह के ॥३२॥

चल्यो लहि कूरम सिक्ख कबंध, बयो नृप बुद्धहि[1] फेरि प्रबंध ॥
रहो तुम कूरमकी यह जानि, कछू करिहै मम भद्र[2] प्रमानि ।३३।
सु तो सब गो तुमरी लिपि[3] संग, अबैं नँन[4] रक्खहु राज्य उमंग ॥
चलो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो इन्है[5] ठिल्लहिँ लै तुम थान ३४
यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहू कछु रीस ॥
क्रम्यौं[6] करि कुंचन धँन्व कबंध, रच्यो धर[7] गुज्जर[8] लैन प्रबंध।३५।
इतैं सठ[9] संभरै मोह[10] अरोहैं, क्रम्यौं निज डेरन कानियखोह ॥
दई पुनि बुद्धहिँ कुंभ[11] कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु भाय[12]।३६।
रु लै सुत सालम[13] अंक दलेलैं[14], मनौं इहिँ पुत्र गिनौं जहि मेल ॥
न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि मुच्छ तबै कछवाह ३७
दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद[15] ॥
बरब्बर गद्दिय पैं बइठारि, कह्यो तुम बुंदिय भूप हँकारि[16] ॥३८॥
अबैं तुमकौं दुहिता हम अप्पि, थिरौं[17] निज भुग्गन भेजहि थप्पि।
बिराजहु बुंदिय गद्दिय जाय, सबै हम रौंन[18] समेत सहाय ॥३९॥
रह्यो अभिसेक सुतो लहि कौल[19], सबै सधिहै पुनि सत्रुनसाल।
यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधित[20] बुंदिय दिन्न पठाय ।४०।
कह्यो बुधसिंहहिँ आन न देहु, सबै तस राज्य रजू करिलेहु ॥
सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हरांम[21] तजी नय धर्म हदीसें[22] ४१

(दोहा)

---

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं ५ जयसिंह को हटाकर ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ मारवाड़ में ८ गुजरात की भूमि लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [भूल] पर सवार होकर ११ जजसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के पुत्र १४ दलेलसिंह को गोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को १८ उदयपुर के राणा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥४०॥ २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड दी ॥ ४१ ॥

यह सुनि कानीखोहतैं, बुद्ध नरेसहिँ छोरि ॥
मुरि मुरि सालममैं मिले, बहु भट सचिव बहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक बनिक नाम बानाँ[1]अधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म
यह जोधराज *जामिज अनीति, पलट्यो सठ सालमपैं सप्रीति ४३
सुखराम[2]नाम कायस्थ स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान[3] ॥
नागर द्विज इक जगदीस[4]नाम, हड्डा पुनि क्षितुव[5]हुव हराम ४४
भट अनर्घ पुंज हड्डा भवान[6], थित नैर दुघारी जास थान ॥
पुनि धाइभ्रात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप४५
अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाभिधान[7] ॥
इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम बिच गय सटेक ४६
इत किय प्रपंच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥
बुंदीस बुद्ध आलस बहंत, चित अब न साह सेवन चहंत ॥४७॥
नहिँ पुत्र[3] आहि इनके निकेत[4], तसमात[5] भ्रातजहिँ[6] राज्य देत ॥
मुहुकम्म वंस सालम अठेल, बर कुमर तास मध्यम दलेल ।४८।
अति गुन प्रपंच रन पटु उदार, बिक्रांत[7] सुभग बर मति बिचार ॥
बुंदीस राज्य अब देत ताहि, अरु मरुप रान हम मतिहु[8] आहि४९
तसमात[9] पटा मुद्रित[10] कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥
सुनि साह मुहुम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ।५०।
बुंदिय दलेलसिंहहिँ समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिँ देहु थप्पि ॥
तुम जाहु कुम्म[11] मालव सु देस, आवत गिनीमँ[12] रोकहु असेस ५१
पठये हम रूप्पय त्रि ससि१३००००० लक्ख, इन बल अनीकं[13] बिरच-

*भानजा ॥४३॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३ है ४ घर में ५ इसकारण से ६ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर ८ मेरी सलाह भी है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सब शत्रुओं को ॥ ५१ ॥ १३ सेना

हु अपक्ख[1] ॥
उज्जैन वार आवन न देहु, लागि पिट्ठि समस्तन मारि लेहु॥५२॥
कूरम नरेस तव भुज भरोस, हैं हम निचिंत अति मुदित होस ॥
इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बंचि मंडिय उछाह॥५३॥

॥ षट्पात् ॥

बंचि साह फरमान हरखि जयसिंह महीपति ॥
रुप्पय तेरह१३लक्ख पाय मंडिग दल[2] दुम्मति[3] ॥
मनतैं मिलि दक्खिनिन अक्खि उप्पर साहायस[4] ॥
किय मालव पर कुंच लुत्थि[5] आमिखं जिम वायस[6] ॥
संगहि दलेल सालम सुवन लै मंडिग दक्खिन चलन ॥
बुंदीस इत सु बिगरयो बिबिध मन्नि न उग्गन अत्थमन॥५४॥
किय बुंदीसँ[7] बिचार जान मालव सालक[8] जिय ॥
बिजयसिंह निज अनुज[9] कुम्म कारागृह[10] रुक्किय ॥
जाहि कहि बरजोर थिरहि जैपुर नृप थप्पहिँ ॥
करि फोजन एकत्त योंहि[11] दारिद अब अप्पहिँ ॥
यह किय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि॥
वह बिजयसिंह सोदर[12] अनुज पठयो हनि करि अनय[13] पुनि५५
ध्रमधार[14] जयसिंह करम अनुचित यह किन्नो ॥
बिजयसिंह हनि अनुज भेजि जामिपै[15] ढिग दिन्नो ॥

---

१ मरहठों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥५२॥५३॥ २ सेना ३ दुर्मति (बादशाह से रुपये लेकर उसीके शत्रु मरहठों से मिलजाने के कारण यह विशेषण दिया है)४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के टुकड़े पर ६ काकपक्षी की भांति ॥ ५४ ॥ ७ बुधसिंह ने ८ अपने साले (जयसिंह) के मालवे में जाने के विचार से ९ जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जयसिंह को १२ सगे छोटे भाई को १३ अनीति करके मारकर बुधसिंह के पास भेजदिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहि पठई पुनि कुम्भ जामि भ्रात रु तव सालक ॥
आयउ यह मम ईस प्रथित ढुंढाहर पालक ॥
इहिं विधि कहाय वह निज अनुज कटक बुद्ध ढिग दगध किय॥
पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहि प्रति सालम यह मंत्र प्रिय ।५६।

(दोहा)

हम जावत मालव पहुमि, मिलि रुक्कन मरहट्ठ ॥
बुंदिय धर तुम जतन बल, करि रक्खहु नहिं कट्ठ ॥५७॥
साह मुहुम्मद तुमहि सब, बुंदिय धर दिय बीर ॥
सठ बुद्धहिं देहु न धसन, हड्डन पति हमगीर ॥ ५८ ॥
सालम प्रति यह लखि सबल, लै निज संग दलेल ॥५९॥
मालव उप्पर उप्परयो, मरहट्ठन हिय मेल ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचनं १ बुधसिंहकुलदाननिषेधबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजदलेलसिंहार्थजयसिंहबुन्दीसमर्पणं २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशाभयसिंहयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहाहमदाबादोपरिप्रस्थापनं ३ प्रेषितमा-

१ जयसिंह ने २ बहिन [कछवाही] का भाई और तुम्हारा साला ३ मेरा पति [जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध ढूंढाड़ देश की पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेना के पास जलाया ६ यह प्यारा मंत्र ।५६॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मंगवा देने के कारण अब बूंदी की भूमि का यत्न करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥५८॥ ८ सेना सहित ।५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होने पर उसको जयसिंह का मांगना १ पुत्र के देने से बुधसिंह के नांही करने पर करवर के पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह को बुधसिंह की गोद रखकर राजा जयसिंह का उसको बूंदी देना २ मारवाड़ के राजा अभयसिंह को बहुत धन देकर बादशाह मुहम्मदशाह का अहमदाबाद भेजना राजा ३ जयसि-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थबुन्द्यधिकाराज्ञापत्रलेखन ४ मरहट्टवारणार्थोज्जयिनीप्रस्थातृजयसिंहस्य स्वानुजविजयसिंहमारणं त्रिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह१७८६समय, उर्ज्ज[1] मास[2] अवदात ॥
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज[3] तिथि उमहात ॥१॥
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु[4] वाम ॥
संगानैर समीप सो, ही असती[5] रु हराम ॥ २ ॥
सस्सू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि[6] प्रसूति ॥
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊँति[7] ॥ ३ ॥

पज्झटिका ॥

रट्ठोरि निकट जयसिंह राय, पहु[8] दिय दलेलसिंहहिं पठाय ॥
कहि यह सु पुत्र[9] तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदार ॥४॥
सुनि यह दलेल सन अति[10] कसूर, कहि पुत्र मिली रट्ठोरि कूर ॥
इम कूरम संगानैर आय, सैंरलू[11] पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का बादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर बूंदी का फरमान मंगाना ४ मरहठों को रोकने के अर्थ उज्जैन जाते हुए राजा जयसिंह का अपने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अड़सठ २६८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में ३ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [यहां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दिया है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगनेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ क्रीड़ा [नया खेल रचकर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥ १० बडे अपराध सहित था तो भी ११ सासू को ॥ ५ ॥

इम दुव२दलेल कूरम *अमान, मिलि नैर निवाई दिय †मिलान॥
बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, सालम तुम मंडहु घर सम्हारि६
हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि सुग्गहु बुंदिय ‡कटक पूर ॥
सुनि यह सठ सालम अनय साम, कूरम ढिग आयउ मिलन काम७
मिलि उभय२गाम फुड़वा मिलान, दिय कुम्म सालमहिं सिक्खदान
कहि जावहु बुंदिय तुम निसंक, अब तव कुमार सिर पट्ट[2]अंक८
इहिं लै हम मालव जात आज, सूबा अवंति रक्खन समाज ॥
सालम तुम जावहु गृह सधीर, बुद्धहि नन[3]प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥
यह अक्खि सालमहिं सिक्ख अप्पि, मालव चलि कूरम कुंच सप्पि
दल [4]भरन भुम्मि फुट्टत दरारि, चंचल मतंग ह्लिय [5]चिंकारि ॥१०॥
वहि सज[6]वं तरारन लेत बाजि, उद्धत भट [7]लड़न कपट [8]आजि ॥
रचि इम दर[9]कुंचन कूर्मराज, कोटा धर संक्रमि प्रथित काज ॥११॥
नदि कुसक तीर परि दल अनंत, ढिल्लिसन फुट्टि गय यह [10]उदंत
कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, हित सचिव दोय२पठये हजूर ॥ १२ ॥
नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दौलत्तराम ॥
इम दुव पठाय कूरम अनीक[11], कोटेस रचिय[12]प्रनतिय कितीक १३

[षट्पात्]

कुसक छोरि पुनि कुंच करिय अग्गैं नृप कूरम ॥
सिंधु सरित[13] निवसथ[14] बड़ोद किय तँहँ मुकाम क्रम ॥
उज्जईनीके [15]अनुग गोड़१ उम्मट संभर[16] गन३ ॥
अरु कबंध४ कछवाह६ सुपहु खिच्चिय७सुनि सेवन ॥

*अमाप (अत्यन्त) †मुकाम॥६॥‡पूर्ण सेना से१अनीति का मिलाप करने को ॥७॥२बुन्दी के पाट का लेख॥८॥३बुधसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥ ४ सेना के भार से ५ चीत्कार शब्द [चीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित ७ सेना के उद्धत वीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते जाते थे ८ चला ९ प्रसिद्ध कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ ११ कछवाहे की सेना में १२ विशेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ग्राम १५ सेवक १६ चहुवाण

सूबाधिनाथ कुम्भहिँ समुफ्फि नृप ये सब आयउ निकट ॥
सजि सजि मिलाप जयसिंह सन किय सासन लँखि सिर करट१४

(दोहा)

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उम्मट पट्टनि ईस ॥
कोटापति चंडासि कुल, संभरवार बलीस ॥ १५ ॥
गढँगघव बज्जंगगढ, ये खिच्चिय चहुवान ॥
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥
पति ईडर रतलामपति, दुव रट्ठोर दलेस ॥
इत्यादिक उज्जैनके, आये अनुग असेस ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

सूबानुग नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥
अरु कोटेस पटालय आयो, भीम जनकें भव सोक भुलायो।१८
जान्यौं दई दलेलहिँ बुंदिय, होय यहै इनकैं स्वीकृत हिय ॥
इम बिचारि कोटा अपनायउँ, बहु मुद डेरन जाय बढायउ ॥१९॥
जयहरि लै इम सबन बडे जैव, मंडुवपुर प्रबिस्यो धर मालव ॥
प्रकट दिखात साह किंकरपन, मिल्यो कितव अंतरें मरहट्ठन२०
कछुदिन समर व्याज तहँ कढ्ढि, बहुल पिक्खि दक्खिन दल बढ्ढे॥
लुंभि कटक अप्पन लुटवायो, मरहट्ठन कहँ बिजय मिलायो२१
कछु धन बसनँ निवेदन किन्ने, लोभ छन्न तिनके बचँ लिन्ने ॥

१सूबा का पति [स्वामी]२समीप३ने४जैसे अंकुश को५अपने मस्तक पर हाथी६ सहन करैं तैसे ॥ १४ ॥ ६ चहुवान ॥ १५ ॥ ७ राघवगढ ॥ १६ ॥ ८ सेना के ईश ९ सेवक ॥ १७ ॥ १० सूबा के साथ चलनेवाले ११ पिता भीमसिंह के मरने का शोक मिटाया ॥ १८ ॥ १२ कोटावालों को स्वीकार होजावे इसकारण १३ कोटे को अपना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ शीघ्रता से १६ प्रवेश किया १७ छली १८ भीतर के मन से मरहठों से मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के मिष से २० बहुत देखकर २१ उस [जयसिंह] लोभी ने अथवा लोभ करके अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ वस्त्र २३ वचन

ठहै कूरम इम साह हरामी, किय मरहट्ट मेल भुव *कामी॥२२॥

(दोहा)

†तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥
अवर रहे हाजरि अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयसिंहकोटागमनपूर्वकोज्जयनीगमन १ मरहट्टपुरमरहट्टमिश्रितकपटिजयसिंहस्वानीकलुण्टनमेकत्रिंशो मयूखः ॥३१ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २६९ ॥

(षट्पात्)

इत बुंदिय ‡अवनीस चाहि §बुद्धह नृप चल्लिय ॥
कानीखोह मुकाम छोरि बुंदिय दिस छल्लिय ॥
रस बसु सत्रह१७८६संरत पाय अगहन सित पंचमि५ ॥
किय स्वदेसपर कुंच भुल्लि ज्यों मृगथल जल भ्रमि ॥
चट्ठग्गृ निवाई मग्ग चलि भगवतगढ भोरो रहिय ॥
इत सुनि उदंत सालमं यह सु बुंदियतजि सम्मुह बहिय।१।
उग्र बँधिक कछवाह समय सरधि रु सर साहस ॥
हढ गुन साह निदेस चाप चतुरंग रंगरसं ॥

---

* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † जिसपीछे ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह का कोटे होकर उज्जैण जाना १ मंहूपुर में मरहट्टों से मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सेना को लुटवाने का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनहत्तर २६९ मयूख हुए ॥

‡ बुन्दी का राजा § बुधसिंह १ उद्धता [बढा] २ सम्वत् ३ मृगतृष्णा के जल से भ्रम कर मृगस्थल म जावै जैसे ४ चाटन्नू ५ समाचार ६ सालमसिंह ॥१॥ जयसिंह तो उग्र ७ शिकारी और समय है सो ८ भाथा है जिसमें हठ है सो ही बाण है बादशाह की आज्ञा ही दृढ९ प्रत्यंचा है १०युद्ध के रसवाली सेना है

बन हड्डोतिय बिकट स्वान सालम दलेल सह ॥
लिखित बागुरा[1] लग्गि गाढ मत कुंडल[2] फंद ग्रह ॥
मुग्धपन अलस लहि मोह मन बुद्ध सु मंत्र बिबेक[3] बिन ॥
उनमत्त एँन[4] संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय इरिनं[5] ॥ २ ॥

[दोहा]

सुनि इत आवत संभरहिं[6], बनि सालम बुंदीस ॥
लै दल सम्मुह उल्लटयो, स्वामि हराम सरीस[7] ॥ ३ ॥
लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्डो आय ॥
यह सुनि सठ बुंदिय अधिप[8], बाम मुरयो बिहसाय ॥ ४ ॥
जैतसिंह जाजव जयी[9], दिल्लिय रन असु[10] छिन्न ॥
तास देवसिंहह तनय, भकति स्वामि रस भिन्न[11] ॥
नगर पलोधा धाम निज, वैरिसल्ल भव बंस ॥
कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उत्तंस[12] ॥ ६ ॥
साह समप्पे संभरहि, चोवनगढ गहि बाँह ॥
कुसथल पंचोलास ए, उभय रइजाफों[13] माँहिं ॥ ७ ॥
तब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥
सय्यद सैंन दिल्लिय समर, बिरच्यो जिहिं दिव[14] बास[15] ॥ ८ ॥
तास देवसिंहह तनय, स्वामिधरम रत सूर ॥
ताके पुर कुसथल तबहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी विकट बन और सालमसिंह सहित दलेल-सिंह ही स्वान [कुत्ते] हैं. बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लिखावट ही १ वागर [फंदा) है जिसमें २ वाममार्ग की दृढता ही फंदों की गांठें हैं मन पर मूर्खपन और आलस्य रूपी मोह लेकर ३ बिना सलाह और विना विचार का वह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उन्मत्त ४ मृग बूंदी रूपी ५ ऊषर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७ क्रोध सहित ॥ ३ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १० मारागया ११ भीना हुआ ॥ ५ ॥ १२ नगरों के मुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिवाय (तरक्की) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

विष्णुसिंह[1] तनया बहुरि, अनुपम[2] तनया आय ॥
ये संगहि रानी उभय२, पति प्रमत्त गति पाय ॥ १० ॥
पुरबाहिर पृतना परिग[3], घन जिम डेरन घेर ॥
देवसिंह महिमानि दिय, बुद्धहिं गोठि द्विरबेर ॥ ११ ॥
परि डेरन लग पांमरे[4], धाम स्वीय[5] पधराय ॥
निज सरबस्व निवेदयो, देवसिंह हित दाय[6] ॥ १२ ॥
यह सुनि पुर बलवन अधिप, अभयसिंह अति धीर ॥
निज दल सजि आयउ निडर, बुंदियपति ढिग बीर ॥१३॥
अभयदेव ये भट उभय२, वैरिसल्ल भव बंस ॥
सम्मलि हुव बुंदीसकैं, देह अगपि सजि दंस[7] ॥ १४ ॥
यह उदंत[8] सुनि इंद्रगढ, सुभट इंद्रसल्लोत ॥
देवसिंह छित्वर सुवन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥
कछु किसोर बय बसि कछुक, कूरम भय लहि कूर ॥
देव[9] पृथक डेरा दये, दल संभर[10] तजि दूर ॥ १६ ॥
इत सठ सालम पिट्ठि परि, कृतघन चिंति कुकाम ॥
पत्तन[11] पंचोलास ढिग, किन्ने लरन मुकाम ॥ १७ ॥
कुल बंधव मुहुकम्मके[12], मिलि सब सालम माँहिं ॥
पट्टोलीपुर पति प्रथित[13], मिल्यो जवान सु नाँहिं ॥ १८ ॥
तोप इक्क १ जंबूर सत १००, द्वैसत १०० सजि बंदूक ॥
मिल्यो आनि बुधसिंहसैं, अनुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥
त्योंही इक १ नगराज तँहँ, मुहुकम बंस वतंस[14] ॥
सालमसैं न मिल्यो सुभट, पटु विख्यात प्रसंस ॥ २० ॥

१विष्णुसिंह की पुत्री २वेघम के रावत अनोपसिंह की पुत्री ॥ १० ॥ ३पड़ाव से (सेना का डेरा) हुआ ॥ ११ ॥ ४ पांवडे (पगमंडे) ५ अपने स्थान पर ६स्नेह की रीति से ॥ १२ ॥ १३ ॥ ७ कवच सझकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ९ देवसिंह ने १० बुधसिंह की सेना को दूर छोडकर ॥ १६ ॥ ११पुर ॥ १७ ॥ १२ मोकमसिंह के कुल के हाडे १३ विदित ॥ १८ ॥ १९ ॥ १४ मुकुट ॥ २० ॥

[षट्पात्]

सुनि इत रन जयसिंह भीर सालम दल भेजिय ॥
तीन सहँस३०००तुक्खार[2] पंच५उमराव सुख्य प्रिय ॥
ईसरदापुर ईस नाम कोजुव१निसंक नर ॥
सारसोपपुर स्वामि विदित फतमल्ल२वीरवर ॥
साँवल३सुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल४नानेड़ि पति ॥
बहादुरसिंह५कूरम बहुरि बुहानीपुर पति विमति ॥ २१ ॥

[दोहा]

ब्रजभुव बासी सुभट बलि, नरुव[6] बंस कछवाह ॥
नामधेय[7] सिरदार१निज, सो दिय संग सिपाह ॥ २२ ॥
पृथ्वीसिंह२रु कनक३पुनि, उभय नरुव अवतंस[8] ॥
घासीराम४रसोरपति, बलि भट कूरम बंस ॥ २३ ॥
सेरसिंह खिचिय सबल, पुनि जहव परताप२ ॥
हरि१तोंवर झल्ला हुकम१, मारनं करन१मिलाप[11] ॥ २४ ॥
उदयसिंह१पुनि रूप२अरु, जोध३सुरत४भट जत्थ ॥
सालम हित कूरम सजे, सोलंखी चउ४सत्थ ॥ २५ ॥
आमेर[12] पैं पठये इते, लरि बुंदिय भुव लैंन ॥
बिग्रह[13] बहुरि प्रवासें[14] बसि, सब रक्खिय ढिग सैंन ॥ २६ ॥
नरउरपति गजसिंह सुवें[15], जयसिंहहिं तँहँ जंपि ॥
समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि[16] चंपि ॥ २७ ॥
भेजहु तिहिं इनसंग भल, कूरम तब मुसिकाय ॥
संगहि दिय नरउर सचिव, नाम सु खंडेराय ॥ २८ ॥

१इधर युद्ध सुनकर २घोड़े (घोड़ों के सवार) ३ विशेष बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४ ब्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरू के वंश का [नरूका] कछवाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरूकों के८मुकुट ९ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने और११सालमसिंह से मिलाप करने का ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमेर के पति ने १३मरहठों से युद्ध और१४विदेश में बसने के कारण ॥ २६ ॥१५सुत१६दबाकर

(षट्पात्)

सुभट मानसिंहोत[1] कलह इम पंच५मुख्य क्रिय ॥
अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मलि ह्वै[2] त सज्जिय ॥
करि यह दल दरकुंच[3] मुलक मालव तजि मंडुव ॥
जुरि आयउ जंघाल भीर सालम कुसथल भुव ॥
करि दल मिलान सालम कटक्कै[4] हड्डन पति ढिग मिलन हित ॥
इन पंच५भटन आय रु कहिय बुद्ध[5] श्रवन धारहु बिदित २९

(दोहा)

अभयसिंह बलवन अधिप, पट्टनि भज्जिग[6] एह ॥
भीम हिंतु[7] अति भज्जि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥
जाके बल जयसिंहतैं, अब रन रचहु न एहु ॥
दिनप्रति रुप्पय दोयसत२००, रहि वृंदाबन लेहु ॥ ३१ ॥
नहिं बुल्ल्यो बुंदिय नृपति, क्रम सब सहित कुबैंन ॥
राजाउत पंचन सरिस[8], निठुर दिखाये नैंन ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

कूरमपति भट कुवच प्रकट सुनि सुनि बलवन पति ॥
अभयसिंह अति बीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भति[9] ॥
करखि मुच्छ डसि अधर निरखि पंचन५उफनायो ॥
पन्नगें[10] पय चंप्यो कि मत्त मृगराज खिजायो ॥
बुल्लयो बिदित भुज ठोकि बल गल्ल बजत गीदर डरैं ॥
बुधसिंह[11] आन कूरम बलहिं[12] केहरि हम गैडुरि[13] करैं ॥३३॥

(दोहा)

॥ २७ ॥ २८ ॥ १ ये मानसिंहोत राजावतों के नाम से प्रसिद्ध हैं २ शीघ्र ३ शीघ्र चलनेवाले ४ सालमसिंह की सेना में ५ हे बुधसिंह सुनो ॥ २९ ॥ ६ पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८ रीस (क्रोध) सहित ॥ ३२ ॥ ९ भांति १० सर्प को पैर से दबाया ११ बुधसिंह के सौंगन है कि १२ कछवाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गाडर (भेड़) के स-

भ्रातन अग्गैं हम भजत, गृह रन अनुचित गाय ॥
अवरनतैं रन आहुरत, पव्वयं हडुन पाय ॥ ३४ ॥
इम हकारि बलबन अधिप, धुरि उट्ठिग गहि मुच्छ ॥
फँटाटोप मंडिग मनहुँ, पन्नँग दव्वत पुच्छ ॥ ३५ ॥
तब कूरम सुभटन तमक्कि, सजिय जाय निज सैंन ॥
जुत सालम सब इक्क जुरि, लागि दल बंधिय लैंन ॥ ३६ ॥
देवसिंह छित्वर सुवन, इंद्रगढप सुनि एह ॥
भीरु मन्नि जयसिंह भय, गयो सपरिँकर गेह ॥ ३७ ॥
इदयनरायन हरिय कुल, ए वंधुव उमराव ॥
करन भीर बुंदीसकी, हुत आये रन दाव ॥ ३८ ॥
हड्ड मेव सामंत हर, माधव हर भट मोर ॥
कुल वँल्लन अरु नाथ कुल, ये चौलुक नृपँ ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

बिइहअणेहविएगी अणुअं बुंदीसपट्टवं पिक्ख ॥
सालमउत्तपआवो जिट्ठो मिलिओ बुहेण भूवइणा ॥ ४० ॥

प्रायो देशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मान करेंगे ॥ ३३ ॥ १ घर का युद्ध अनुचित कहकर २ हाडाओं के पैर पर्वत के समान हैं ॥ ३४ ॥ ४ मानों सर्प ने पूंछ दवाते ही ३ फण का आटोप (छत्र) रचा है ॥ ३५ ॥ ५ क्रोध करके ६ सेना की पंक्ति (परेट) बांधी ॥ ३६ ॥ ७ परगह सहित घर गया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ वालणोत शाखा के९सोलंखी१०बुधसिंह की ओर ॥ ३९ ॥

संस्कृत अनुवाद

विविधानेहोविवेकी अनुजं बुन्दीशपट्टपम्प्रेक्ष्य ॥ सालमपुत्रप्रतापः ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥ ४० ॥

अनेक प्रकार के समयों को जाननेवाला छोटे भाई को बुन्दीश के पाट का पति देखकर सालमसिंह का बडा पुत्र प्रतापसिंह राजा बुधसिंह से मिला ।४०।

(दोहा)

राजसिंह अन्वय[1] रतन, बंधव निज वरवीर ॥
दौलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥
हाजरि भट प्रथमहिं हुते, महासिंह कुल मोर ॥
असित[2] पक्खके इंदु जिम, लग्यो घटन दल ओर ॥ ४२ ॥
दस हजार पृतना[3] बदलि, सब हुव सालम संग ॥
दस हजार१०००० नृप[4] निकट दल, रहिय रचावन रंग[5] ॥ ४३ ॥
उभय[6] पक्ख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥
रहिय इंद्रगढ आदि बहु, उदासीन[7] उमराव ॥ ४४ ॥
सालम ढिग तेरह सहँस१३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥
इत कुप्यो बलवन अधिप, भुज धरि बुंदिय भार ॥ ४५ ॥
बुद्ध नृपति बरजत रह्यो, दोउन सपथ[8] दिवाय ॥
हठ्ठ भज्जन नाँ सुनैं, लग्गी अंदर लाय ॥ ४६ ॥
अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु संभर[9] सैंन ॥
जिहिँ बिच जे भट सज्ज किय, बरनत तिन्ह कवि बैंन ॥ ४७ ॥
महाराम मातुल[10] कुलज, मुर्यो जु सालम मेल ॥
वाको सुत संग्राम १ इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥
प्रेमसिंह२ सज्ज्यो प्रथित[11], नाथाउत रन नूर ॥
बखतसिंह३ जगभानु४ बोलि[12], सजे हठ्ठ अति सूर ॥ ४९ ॥
साँवलदास५ सजोर सजि, गोर[13] बंस उजियार ॥
जोरावर६ कछवाह जुरि, परसुराम७ परिहार ॥ ५० ॥
बरजत नृप बुंदीसकौं, सहठ दिवावत सौंहँ ॥

---

१ वंश ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष के चंद्रमा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ बुधसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोडकर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौगन दिलाकर ॥ ४६ ॥ ९ बहुतसी सेना ॥ ४७ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुल में उत्पन्न ॥ ४८ ॥ ११ प्रसिद्ध १२ पुनि ॥ ४९ ॥ १३ गौड़ वंश का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय भौंहँ ॥ ५१ ॥
देवसिंह अभमल्ल हुव, दुल्लह ललिन उदार ॥
अच्छरि दुलहनि आहरिय, जल्प इते जुझार ॥ ५२ ॥
अवर भटन पिक्ख्यो समय, सालम अगुन अनीक ॥
छोरहु नृपहि न इक छिन, को जानैं पै किंतीक ॥ ५३ ॥
जो भूपहु सिर घात जड़, कूरम घल्लहिं कूर ॥
तो सब स्वामि सभीतता, सकुन गंजहिं सूर ॥ ५४ ॥
स्वामि दये न लरन सपथ, बोलि नृप तजन न बैंस ॥
नय विचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥
वीर जिते पहिलैं वदिय, तिन नंन मन्निय सौंहँ ॥
अभयसिंह संगहि उठिय, भेयद फुरावत भौंहँ ॥ ५६ ॥
कहि कुवैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥
यह सही न बलवन अधिप, लगिय सोर बिच लाय ॥५७॥
अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलिय जिम काल ॥
सिर घँस्सत अंजलोकसौं, पय परसत पायाल ॥ ५८ ॥
सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरूर ॥
बुंदिय दल सिर बग्गलै, सकल चढे बढि सूर ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतजयसिंहत्यक्तकाणीखोहग्रामबुधसिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालमसिंहबुधसिंहसंमुखसरण २

॥५२॥ १जानैती २अब ॥५३॥ ३मारेंगे ॥५४॥ ४सौगन ५पुनि ६उत्तम नहीं है ॥५५॥ ७कहे ८सौगन नहीं माने ९भय देनेवाले ॥५६॥ १०अपनी सेना को भेजी ॥५७॥ मस्तक १२ब्रह्मलोक से ११घिसता है और पैर १३पाताल का स्पर्श करते हैं ॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह को दक्षिण से गया हुआ जान कर रावराजा बुधसिंह का काणीखोह नामक ग्राम को छोड़ कर बुंदी की ओर आना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

सालमसिंहसहाय जयसिंहसैन्यसहितजयपुरसामन्तपञ्चककुसथ-लाख्यनगरनिकटसालमसिंहसंमिश्रण ३ प्रत्यहद्विशतमुद्राग्रहणपूर्वकबुधसिंहवृन्दावनवासार्थजयपुरसामन्तभणन ४ जयसिंहभीतित्यक्तबुधसिंहकतिपयबुन्दीसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसामन्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य युद्धाकरणार्थस्वसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिपयसामन्तशपथभंगपूर्वकसमरसज्जभवनवर्णनं द्वात्रिंशो मयूखः ॥३२॥

आदितः सप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७० ॥

[दोहा]

सक हय बसु सत्रह१७८७समय, माधव दरस३०मिलाप ॥
घटिय रुद्र११रबिके चढत, उलटि समुद्रन आप ॥ १ ॥

[दुर्मिला]

दुव सेन उदग्गन खग्ग समग्गन अग्ग तुरग्गन बग्ग लई॥
मचि रंग उतंगन दंग मतंगन सज्जि रनंगन जंग जई॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की भेजी हुई सेना सहित जयपुर के पांच उमरावों का कुसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सामिल होना ३ जयपुर के उमरावों का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर वृंदावन वास करने को बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहुधा सेना का बुधसिंह को छोड कर सालमसिंह में मिलना और कितने ही उमरावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से डरेहुए बुधसिंह का अपने उमरावों को नहीं लड़ने के सौगन दिलाना ६ देवसिंह और अभयसिंह आदि थोड़े से उमरावों का सौगन नहीं मान कर युद्ध के अर्थ तैयार होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्तर २७० मयूख हुए ॥

१वैशाख मास की२अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन चढे पर समुद्रों का ३ पानी उलटा ॥ १ ॥ ४ उदग्र [उछलते हैं अग्रभाग जिनके ऐसे] खड्ग लेकर दोनों सेना के ५ सब लोकों ने घोड़ों की वागें आगे लीं अर्थात् घोड़े बढाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजेहुए ऊंचे हाथियों का ६ युद्ध हुआ

लगि कंप लजाकन[1] भजि भजाकन वाक कजाकन[2] हाक बढी॥
जिम मेह[3] समंबर यौं लगि अंबर चंड अडंबर खेह चढी॥२॥
फहरक्कि दिसान दिसान बंड बहरक्कि[4] निसान उडैं बिथरैं॥
रसना अहिनायक[5]की निकसैं कि पग झल होरियकी प्रसरैं॥
गज घंट ठनंकिय भेरि[6] भनंकिय रंग[7] रनंकिय कोंच[8] करी॥
पक्खरान झनंकिय बान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी॥३॥
धमचक्क रचक्कन लग्गि लचक्कन कोलि[9] मचक्कन तोल कढ्यो॥
पक्खरालिन[10] भार खुभी खुरतालन ठेपाल[11] कपालन साल बढ्यो॥
डगमग्गि सिलोच्चय[12] शृंग डुले झगमग्गि कृपानन[13] अग्गि[14] झरी॥
बजिखल्ल तबल्लन[15] हल्ल उझल्लन भुम्मि हमल्लन घुम्मि भरी॥४॥
मचि घोरन दौर दुहुओर समीरन[16] जोर उमीरन घोर जग्यो॥
अभमल्ल उछाहन दहु हठी कछवाहन गाहन चाह[17] झग्यो॥
सुव[18] जैत इतैं भट देव सही करि स्वामि[19] महीहित संग मच्यो॥

जिस से १ लज्जित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग कर २ युद्ध करनेवाले वीरों के वचनों की हाक बढी और ३ जल सहित मेघ के समान भयंकर आडंबर से आकाश में खेह [रजी] चढी॥ २ ॥ ४ बडी ध्वजायें और छोटी ध्वजायें फरक कर दिशा दिशा में उड कर फैलीं सो मानों ५ शेषनाग की जिव्हा निकलती है अथवा होली की झाल फैलती है उस युद्ध में हाथियों की घंटा ६ नौबत और ७ कवचों की कड़ियें बजीं ८ घोड़ों की पाखरों का झणकार बाणों का झणकार और धनुषों के खिचने से भय हुआ॥ ३ ॥ उस युद्ध में टक्कर लेने से भूमि में लचक लग कर भूमि को धारण करनेवाले ९ वाराह के झुकने का तोल कढा १० पाखरों वाले घोड़ों के भार से खुभी खुरतालों से ११ शेषनाग के कपाल में साल बढा १२ पर्वत हिल कर उनके शिखर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि गिरी, उस हल्ले के बढाव में खाल के ऊपर १५ तबलें (कुठार विशेष] बज कर भूमि हमल्लों से घूमने लगी॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड़ से दोनों ओर का १६ पवन चल कर अमीरों [सरदारों] का भयंकर बल जगा उस समय हठवाला छोटा अभयसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का १८ पुत्र देवसिंह निश्चय ही अपने १९ स्वामी [बुधसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुओर कुलाहक तोप दगी लगि भद्द[2] बलाहक[3] नद्द लज्यो ॥५॥
उततैं कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु वाहन वग्ग लई ॥
बनि बुंदिय बालमं[6] जंग सु जालम संगहि सालम दौर[7] दई ॥
परि रिंछि[8] कृपानन चंड चुहानन गिद्धि उडानन गूद गहैं ॥
गन[9] धीर गुमानन पीर प्रमानन बीर कमानन तीरबहैं ॥ ६ ॥
बढि बुत्थिन बुत्थि छई बसुधा[10] लगि लुत्थिन[11] लुत्थि परैं प्रजरैं ॥
घट[12] सेल घमाकन रंग[13] रमाकन हड्ड सु हाकन हौंस हरैं ॥
लखि खग्ग उदग्गन[14] मग्ग लगी जुरि अच्छरि जग्ग प्रजापतिज्यौं[15]।
गलबांह करैं करि बीर बरैं गमनैं गन गैंवरकी[16] गतिज्यौं ॥ ७ ॥
छननंकि उडानन बान छये ठननंकि गयंदन[17] घंट घुरे ॥
फननंकि दुबाहन[18] टोप फटे रननंकि सिपाहन कोच[19] रुरे ॥
डुलि भैरव डैरुवतैं डहकी[20] डरि डाकिनि साकिनि चौंकिचली ॥

ज्जित हुआ उस समय दोनों ओर १ कोलाहल करनेवाली अथवा खोटा लाभ करने (मारने) वाली अथवा कु (पृथ्वी) का लाभ करनेवाली तोपें चलीं जिनसे २ भादवा के ३ मेघ की ४ गर्जना लज्जित हुई ॥ ५ ॥ उधर से बडे उत्साह वाले कछवाहों ने ५ घोड़ों की शीघ्र वागें उठाईं और उनके साथ ही युद्ध में जुल्म करनेवाला सालमसिंह ६ बुन्दी का पति बन कर ७ दौड़ा. भयंकर चुहाणों के खड्गों के ८ निरंतर प्रहारों से उडते हुए गीधों ने गूद ग्रहण किया. धीर लोगों के ६ समूह के घमंड की पीड़ा का प्रमाण करने के लिये वीरों की कबाणों से तीर वहते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूथें [मांस के टुकड़े] बढ कर १० भूमि ढक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लोथ गिर कर जलने लगी १३ युद्ध में क्रीड़ा करनेवाले वीरों के १२ शरीरों पर भालों के घमाके होकर हाडा क्षत्रियों की हाक उनकी चाहना मिटाते हैं १४ उदग्र तरवारों को देख कर अप्सरायें १५ जिसप्रकार दक्ष पजापति के यज्ञ में गई तिसप्रकार इस युद्ध के मार्ग में लगीं, वे गलबांहीं करके वीरों को वरती हैं और उनका समूह १६ हाथियों की चाल के समान चलता है॥७॥ छनंक शब्द करके उडने वाले बाण छागये और ठनंक शब्द करके १७ हाथियों के घंट बजे फनंक शब्द करके १८ वीरों के टोप फटे और रणंक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच बजे भैरव के डैरू से २० चमकी हुई डाकनियें और शाकनियें (देवी की दासी विशेष) डर कर इधर उधर डुल कर चौंक कर चलीं

नचि नारद *नच्चबिसारद ह्वाँ[१]बिबि[१]बारद भाँति मिले खुरली॥८॥
कटि खग्ग कलापं[१] रु दंत कढें कटि कुंभ[२] मउत्तिन मेह फुरैं ॥
तरिता[३] तनु[४] तेग तहाँ तरकैं घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरैं ॥
बक पंतिय दंतिय[६] दंत बढे चहुँओर अचानक अंभ चढे ॥
कटिकैं उडि चातक घंट कढे प्रति पक्खर भेक अनेक पढे॥९॥
यह आनि सुमाकरमैं बरखा बढि माधवमास अमा बिथुरयो ॥
लखि नायक[११] सूरन हूरन हूरन[१२] अंगन[१३] अंग अनंग[१४] फुरयो ॥
इत सूरन चंदन अस्त्र[१५] चढे रस कैं इत हूरन राग रचे ॥
उमहे इत सिंधुनकी[१६] ध्वनितैं समुहै[१७] उत सिंजित[१८] सद्द मचे ॥१०॥
इत डाकिनि दूति[१९] कंजाकिनि ओ इत साकिनि नाकिनि[२०] या ससखी ॥
सब हूर सुहागिनि इक्क अभागिनि बुद्द बिभागिनि[२१] सो बिलखी[२२] ॥

---

*नाचने में चतुर नारद नाचा और [दो] मेघों के समान शस्त्र विद्या जाननेवाले वीर मिले।८।हाथियों के१कलावे [गरदनें] कट कर दंत निकलते हैं और २कुंभस्थल कट कर मोतियों का मेह होता है३बीजली के४विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और मेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं५बुगलों की पंक्ति के समान ६ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों रूपी अनेक मींडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बढी, जहां ११ वीरपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में१४ कामदेव बढा इधर वीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढा और उधर प्रीति करके अप्सराओं ने गाना रचा इधर वीर लोग१६सिंधवीरागनी [बडाराग] की ध्वनि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सन्मुख [अप्सराओं में] १८ भूषणों का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १९ युद्ध कराने वाली इधर डाकिनी और इधर साकिनी दोनों सखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की. यहां 'य' शब्द यात्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थचिंतामणौ॥ वे सब हूरें सुहागिनी हुईं उनमें जो बुधसिंह के २१ बंट में आई वही एक अप्सरा दुहागिन रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर युद्ध में नहीं आया इसकारण उसके बंट में आईहुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही) उस अभागिनी ने

द्रुत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अंजन[2] रोदन[3] बारि बह्यो ॥
कर कंकन फोरि मरोरि कलापहिं[4] छोरि अलापहिं[5] ताप सह्यो ॥११॥
यह आइय डाकिनि[6]की सिखई धवहीन[7] भई अब छोहि[8] छई ॥
अनि आरति[9] अच्छरिकी लखिकैं हसि डाकिनि डिंडिम डक्क दई ॥
सहनाइय सुंडिन[10]की करिकैं गन बावन५२गावनमैं गेहकैं[11] ॥
कटि मुंड रु रुंड किरैं[12] इतकौं चौसट्ठि[13]६४न झुंड नचैं चहकैं ॥१२॥
पखरालि[14] तुरंगन पूर किते नखगोल[15] कुरंगन[16] फाल मचैं ॥
भट वार कटारन पार करैं असि[17] झार अँगारन मार मचैं ॥
फटकारि मतंगज[18] सुंडि फिरैं[19] कटकारि चुडानन[20] झुंड झमैं ॥
हलकारि चुरेलिनि होस हरैं ललकारि भयंकर भूत भ्रमैं ॥१३॥
खेंग[21] धारन धार खिरैं खटकैं पलचारन[22] झुंड झटैं झपटैं ॥
खुरतारन भार खुदैं पहुमी असवारन वार दटैं दपटैं[23] ॥

---

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाड़ दिये और २ रोने का पानी (अश्रु बहने से उसका रक्त) जल धुप गया, हाथों के कंकणों को फोड़ कर ४ कटिमेखला (कणगती) को मरोड़ (तोड़) कर और ५ गाना छोड़ कर दुःख सहा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६ डाकिनी के सिखाने से बुधसिंह को वरने को यहां आई थी सो ७ पति से हीन होकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई इस अप्सरा की अत्यन्त ९ पीड़ा देख कर डाकिनी हंस कर अपनी डिमडिमी [वाद्य विशेष] बजाई और उधर हाथियों की कटी हुई १० सूंडों की सहनाइयें बना कर बावन भैरव गाने में ११ प्रसन्नता की बोली बोलते हैं, रुंड और मुंड कट कर १२ गिरते हैं और इधर १३ चौंसठ योगिनियों का झुंड नच कर बोलते हैं ॥१२॥ कितने ही १४ पाखरों वाले घोड़ों का समूह १५ नखरा करनेवाले १६ हिरणों की छलांगें भरते हैं वीर लोग वार से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की ज्वाला से अंगारों की मार मचती है १८ हाथी सूंड को फटकार कर फिरते हैं और १९ सेना के शत्रु चुडाणों के समूह २० चलते हैं उन चुडाणों की हलकार [ललकार] चुड़ैलों की चाह को मिटाती है भयंकर ललकार से भूत फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवारों की धार पर तरवार की धार लग कर खिरती और खटकती है और २२ मांस खाने वालों का समूह शीघ्रता से झपटते हैं घोड़ों की खुरतालों के भार से भूमि खुदती है और असवार अपने वार से २३ दौड़ते और दबाते हैं कितने ही वी

उपकारन कौर किते उमहे सिव धारन काज गहैं सिरकों ॥
दल मारन मार मिले दुवघाँ मद बारन वार चले चिरकों ॥१४॥
घमसानन बान उडाननलै अरि प्रानन पीवत काल अही ॥
चहुवाननके करकी उपमा पवमान न मानस ह्वाँ निबही ॥
करवालन चंड उडी चिनगी भट जालन भीर भिरैं भुरसैं ॥
बढि ज्वाल करालन लोक बरैं दिकपाल कपालन साल बसैं ॥
गजराजन ढाल ढहैं ढरवैं रत भाजन घाय भरें भभकैं ॥
लगि लाजन सूर लरैं लटकैं छटकैं भुव कोजन लोहँ छकैं ॥
कटि कालिक पीहँ किरैं कलिमें फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं
जिम सैलनशृंग खिरैं बिखरैं प्रतिमल्ल पुरंदरके पविकैं ॥ १६ ॥
मथि मंथनि मंत्थ गहैं गतिसों गन गिद्धनि गोदं गिलैं गहकैं ॥
मनु ग्वालिनि मट्ट दही मथिकैं नवनीत निकारन बारनकैं ॥

---

१ उपकार के १ काम पर २ उत्साह युक्त होते हैं और शिव को धारण कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥ ५ युद्ध में उडान लेकर बाण ६ काले सर्पों के समान शत्रुओं के प्राण पीते हैं, वहां पर चहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उडकर १० वीरों के समूह से भिड़कर ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बढकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के कपालों में शाल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बडे झंडे गिरकर पड़ते हैं और भरेहुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उफ़लते हैं भागने की लज्जा लगकर सूरवीर लड़कर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ शस्त्रों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २० गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर खिर खिरकर बिखरें तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उडकर २४ शोभा देते हैं ॥ १६ ॥ २५ बिलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर गीधनियों का समूह उनको मथकर २७ भेजी [मस्तिष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती हैं सो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधार¹ चलैं चमकैं असवार तुखार² कटैं उलटैं ॥
फटि मक्कुन³ ऊरू⁴ फटैं उछटैं कटि बाहुल⁵ बाहुल⁶ बाहु कटैं॥१७॥

(दोहा)

इहिं रन बिच बलवन अधिप, अभयसिंह अति बीर ॥
फतमल्लहिं खोजन फिरत, हुलसि इह्न हमगीर ॥ १८ ॥
जबहि पंच५जयसिंहके, ये कूरम उमराव ॥
बुंदीपति अग्गैं बिदित, बुल्ले कुबच⁷ बढाव ॥ १९ ॥
इनहूमैं फतमल्ल यहँ, सारसोप पति सूर ॥
कहि कातर⁸ अभमल्लकों गह्यो बहुत मगरूर ॥ २० ॥
इहिं कारन अभमल्ल अब, तिहिं हेरत गहि तेग ॥
दुरयो⁹ कहाँ कूरम दुरित, बीर बतावहु बेग ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

जिम नागहिं¹⁰ खगराज¹¹ मृगहिं मृगराज¹² महाबन ॥
जंभहिं जिम जंभारि¹³ मधुहिं मानहुँ मधुसूदन¹⁴ ॥
पानी जिम पावकहिं¹⁵ तृनहिं पावक जिम तक्कत ॥
सजव कपोतहिं सेन¹⁶ हनन हेरन जिम हक्कत ॥

बिलंब नहीं करती है. मारना चाहकर दो १ धारोंवाले चमकते हुए खड्ग च-लाते हैं जिनसे सवार और२घोड़े कटकर उलटते हैं उन खड्गों से३जंघात्रा-ण फटकर ४ जंघायें कटकर उछलती हैं और ५ दस्ताने [बाहुत्राण] कटकर ६ बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ खोटे बचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९ डरकर ॥ २१ ॥ जिसप्रकार १० सर्प को ११ गरुड़ और मृग को बलवान् १२ सिंह. जंभासुर को जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णुभगवान् १५ अग्नि को जैसे पानी और तृणों को जैसे अग्नि, कबूतर को जैसे वेगवान् १६ शिकरा (बाज पक्षी) मारने को हेरकर * चलै तैसे अथवा

---

* इस छन्द में "हनन हेरन जिम हक्कत" इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समा-प्तपुनरात्त दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जावे वहां यह दोष होता है किन्तु क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजावे वहां यह [समाप्तपुनरात्त] दोष नहीं रहता सो ही यहां जा-नना चाहिये ॥

आखुंहिं बिडाल तिमिरहिं अरुन नर रंकहिं दारिद्रनिभ ॥
फतमल्ल रूप पोमिनि फिरत इम हेरिय अभमल्ल इभ॥२२

(दोहा)

समुख पिक्खि फतमल्लसों, इम अक्खिय अभमल्ल ॥
गीदर गाल बजायकैं, अब किन करत उफल्ल ॥ २३ ॥
इम हकारि बलवन्त अधिप, मंडत बानन मेह ॥
उफनावत आयो उमँडि, दंस न मावत देह ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

पय दब्बत अहि पुच्छ मुच्छ अँचत मयंद जिम ॥
सोर मनहुँ सावंत अग्गि लग्गत प्रचंड इम ॥
हेलि मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जग्गिय ॥
प्रलय उग्र जिम प्रथित लाय अंखिन अति लग्गिय ॥
कानन प्रमान बानन करखिं कूरम देह सु सेह किय ॥
मदमत्त लक्खहु हड्डे नरद गड्डे पद अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[मुक्तादाम]

जुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं कलि क्रुद्ध ॥
उभै निज स्वामिनकी मुव आस, तकावत अक्कहिं चक्क तमास॥२६॥
उभैं इन दच्छ बडे उमराव, उभै उमँडे रसवीर उगाव ॥

१चूहे को २बिल्ली ३अंधेरे को सूर्य ४रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैसे फतहसिंह रूपी ५हथनी को अथवा पद्मिनी (कमलनी) को अभयसिंह रूपी ६हाथी ने हेरा॥२२॥ ॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सर्प ९ सिंह १० रजक का बारूद [तोड़ादार बंदूक के कान में डालने के लिये बारूद को दुबारा करके तेज करते हैं उसको 'साबात' कहते हैं और मतान्तर से जामकी [तोड़ा] को भी साबात कहते हैं जो डिंगलभाषा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और साबात दोनों ही बारूद के नाम हैं जो अत्यंत प्रबलता दिखाने के अर्थ वीप्सा के अर्थ में एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग किया है]११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिव जैसे प्रसिद्ध है १४ अंगद के समान चरण रोपे ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६ सेना का तमाशा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथप्पि, उभै उफनाय कुबेनन अप्पि ॥ २७ ॥
उभै दल दुल्लह सज्जित अंग, उभै भर ऐंचत मुच्छ अभंग ॥
उभै अनुरूप रिझावत रंभ, उभै रन अंगनके जय खंभ ॥२८॥
उभै सिव दारिद मिट्टनहार, उभै पलचारनकै उपकार ॥
उभै झमकावत खग्ग उदग्ग, उभै चलि प्रेत हसावत अग्ग॥२९॥
उभै भवतैं तजि मोह अलुब्ध, उभै मन वृत्ति लगावत उद्ध ॥
उभै तुम वाहहु वाहहु अक्खि, उभै करि सूरजकों निज सक्खि ३०
उभै कनकाचलकैं पायन बंधि, उभै दंम उद्धत संहरि संधि ।
उभै तुलसी धरि मस्तक आय, उभै जल गंग उमंग अचाय ॥३१॥
उभै वृषजानि जुरे इक धेनु, उभै करिराज कि इक्क करेनु ॥
उभै इक सिंहनि ज्यों वनईस, जुरे इम कूरम हड्ड जगीस ॥ ३२ ॥
मिले पहिलैं दुव तीरन मार, कढे सर दोउनके भेदि करार ॥
टट्टहिं चंड अतंचन चाप, उडैं सलभा जिम रोपें अमाप ॥ ३३ ॥
हाँ करि दानन यों रन जोर, मिले पुनि सेलन द्वै भट मोर ॥
कंकट भेदि कढे घँट सारि, किधो तरु तेजन अग्ग कुदारि।३४।
बली अभमल्ल दरच्छिय अच्छ, पर्यो छिदि कूरम बाँजि दुपच्छ॥
हाँ इम ओर चढ्यो कछवाह, रुप्यो अभमल्लहु पैंव्वयराह॥३५॥

---

१ चढे ॥ २७ ॥ २ भट ३ अपने सदृश ४ रंभा नामक अप्सरा को 'डिंगल भाषा में सामान्य अप्सरा को भी रंभा कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिव का मस्तकों रूपी दरिद्र मिटानेवाले ६ मांस खानेवालों के ७ उदग्र (उछलते) हुए अग्रभाग वाला ॥ २९ ॥ ८ संसार से ९ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२ सुमेरु पर्वत को १३ दंड देने में १४ नीति के प्रथम संधि गुण का संहार करके पीकर ॥ ३१ ॥ १६ वृषभ १७ गज पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २० टिड्डियों के समान २१ बाण ॥ ३३ ॥ २२ कवच को और २३ शरीर को फोड़ २४ मानों बांस के वृक्ष का २५ अग्रभाग २६ भूमि को फोड़ कर निकला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों बाजू से छिद कर गिरा २८ पैदल पंक्ति ॥ ३५ ॥

बराच्छिन जंग अपुब्ब बिधायँ, लई अब खाप[2]नतैं हिमलायँ[3] ॥
किधौं घनतैं काढि बिज्जु[4] कराल, किधौं बिलतैं किल[5] कुंडलिका[6]॥३६
किधौं नभतैं ससि द्वैज[7] कला कि, कढी जमके मुखतैं[8] दसना कि॥
हली कि हुतासनतैं[9] काढि हेति[10], मयूख नभोमनितैं[11] अथवेति[12]॥३७॥
कढी ध्वनि व्याकृतितैं[13] कि सकासँ[14], कढे मत गोतमतैं कि समास॥
कटाच्छ किधौं कुलटा दृग कुंजैं[15], पयोभव[16] कोरकतैं अलि[17] पुंज।३८।
कलिंद[18]कतैं निकसी जमुना[19] कि, प्रजापति[20] तैं परिपूरि प्रजा कि ॥
गुनत्रैय[21]तैं कि चले महदादि, महानट[22]की जटतैं[23] प्रमथादि ॥ ३९ ॥
हिमालयतैं जिम गंग हिलोर, किटीश्वर[24]के मुख दंतुलिकोर ॥
अनंतक[25] आननतैं जिम जीह, सटा[26]धुनि थंभहितैं नरसीह[27] ॥ ४० ॥
नवोढनके उरतैं कि उरोज[28], उदैगिरितैं कि दिवाकर[29] ओज ॥
कि अंजनिके उरतैं हनुमान, परासरनंदनतैं[30] कि पुरान ॥ ४२ ॥
सुराधिप[31]के करतैं जिम संब[32], कढे धनु गाँडिवतैं कि कलंब[33] ॥
सही कपिलाननतैं[34] जनु[35] साप, लयायन[36] गायनतैं कि अलाप॥४२॥

अपूर्व युद्ध१करके २ म्यानों में से ३ ठंढी अग्नि सी (यह तरवार का विशेषण है) ४ मेघ से विद्युत् [बिजुली] की कांति ५ निश्चय६काला सर्प [यह आंपी हुई तरवार की उपमा है] ॥ ३६ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहां जहां अकेला 'कि' आवे वहां किधों, किना मानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्थान पर इसका अर्थ लिखने से विस्तार होता है] ८ दाढ ९ अग्नि से १० ज्वाला [झाल] १२ अथवा ११ सूर्य से किरणें प्रकाश करें जैसे ॥ ३७ ॥ १३ व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कढे जैसे १५ नेत्रों के कोनों से १६ कमल की कली से १७ भ्रमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ सत, रज, तम, इन तीन गुणों से महदादि चौबीस तत्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गण निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरदन के केश धुजा कर थांभे से २७ नृसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९ सूर्य का तेज ३० वेदव्यास से ॥ ४१ ॥ ३१ इन्द्र के हाथ से ३२ वज्र ३३ बाण ३४ कपिलमुनि के मुख से ३५ मानों आप निकला ३६ लय को जानने वाले कलावंत

धपी[1] जनु नीरदतैं[2] जलधार[3], महाबल[4] माधवतैं मनु मार ॥
त्रिलोचनके[5] करतैं कि त्रिसूल, मउत्तिय सुत्तियतैं[6] कि अमूल॥४३॥
कढे इम दोउनर्खापन खग्ग, मिले प्रलयानल[7] ह्वै रन मग्ग ॥
उभै करि लाघर्व[8] दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात॥ ४४ ॥
उभै फिरि मंडल[9] टारत वार, मचावत झार दुधारन मार ॥
दई धपि[10] संभर दाहिन अंस, पर्यो कटि कूरम ख्याति[11] प्रसंस॥४५

(दोहा)

हठि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह चहुवान ॥
कूरम कोजुत्ररामकौं, पिक्खत गाहक प्रान ॥ ४६ ॥
ईसरदा पुरपति अतुल, वह कोजुब कछवाह ॥
अप्पहिं खोजत इक्खिकैं, अभिमुख[12] रचिग उछाह ॥ ४७ ॥
मिलि दोउनर्किन्नी मुदित, नागफेन[13] मनुहारि ॥
अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥
सब तुम मिलि हमरे सुनत, भूपहिं डारी भीति[14] ॥
तुमहूमैं फतमल्ल तँहँ, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥
काकोदरहिं[15] कुपयकैं, कोउन जियत सकोप ॥
फननैं[16] हन्यौं फतमल्लकौं, अब तव सिर आटोप[17] ॥ ५०॥
फबर्त[18] वान फतमल्लके, छत्ति अभय छेत[19] छेक ॥
जनुं[20] छानन जय अरु अजय, बन्यौं तितेउ[21] सबिबेक ॥५१॥

मानों २ मेघ से ३ जलधारा १ दौड़ी. बडे बलवान् ४ श्रीकृष्ण से मानों कामदेव ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से मोती निकले तिस प्रकार दोनों ने म्यानों में से तरवार लेकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ चक्राकार (गोलकुंडा) १० दौड़के चहुवाण ने दहिने कंधे पर दी ११ प्रसिद्ध प्रशंसावाला ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ १२ सामने ॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ भय ॥ ४९ ॥ १५ सर्प को क्रोधित करके १६ फणों से १७ उठाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में १९ बाणों के छिद्र करके फतहसिंह के बाण ऐसे १८ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अजय छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [छलणी] बनी है ॥ ५१ ॥

यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्ल्यो रन माँहिं ॥
जिनके बानन तुम छिदे, तिनतैं गव्वहु नाँहिं ॥ ५२ ॥

[षट्पात्]

यहै सुनत अभमल्ल खग्ग कोजुव सिर भारिय ॥
संजि कोजुव इत संगि हल्ल उग्ग तक्कि प्रहारिय ॥
याके खग्ग उदग्ग कट्टि बाहुल्लैं कर कढ्यो ॥
वाकी संगि अपुव्व चक्खि हिय रीढंक चढ्यो ॥
अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि भारिय मत्थ पर ॥
कटि टोप सीस कट्टिय सकल मनहुँ बिरवंधव वंटि घर ॥ ५३॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, बेग बसन सन बंधि ॥
कर इक्क१हि असिवर कराखि, सिर भारिय जय संधि५४
कोजुवको दक्खिन कर सु, इम कढ्यो अभमल्ल ॥
यातैं गहि कर बाम असि, भारी बहुरि उझल्ल ॥ ५५ ॥
टोप कट्टि तिरछी तरकि, तुट्टि परिय तरवारि ॥
अक्खिय तब अभमल्ल इम, बाहहु नैंक विचारि ॥ ५६ ॥
जिहिं करतैं असिबर जुगत, तिरछी तरकत तुट्टि ॥
जनि ताकों इरखैं जननि, क्यों बहु थालन कुट्टि ॥ ५७ ॥
कहि इम कोजुवराम पर, असि भारिय अभमल्ल ॥
सिव गहि लिन्नों उडत सिर, ढरयौ यहहु रनढल्ल ॥५८॥
ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पत्ति हनि वेग ॥
साँवलदास सुढाड पति, तक्क्यो भारत तेग ॥ ५९ ॥

१गर्व मत करो॥५२॥२कोजूराम के मस्तक पर ३ हल्लाना काट कर ४ पीठ को ५ मानों दो भाइयों ने घर का बंट किया ॥ ५३ ॥ वस्त्र ६ से शीघ्र बांध कर ७ श्रेष्ठ तरवार खेंच कर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ८ वह युद्ध की ढाल ८ गिरा ॥ ५८॥

(मुक्तादाम)

चवी यह दूतन भूतन चार[2], सुनी सब कूरम साँवलदास ॥
उदायुध[3] उग्र दिवाकर[4] अंस, रहैं इतनी सहि क्यों रघुबंस ॥६०॥
मिल्यो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहिं दै बलिदान ॥
धप्यो कुवलाश्व[6] कि धुंधुहि[7] धारि, किधौं रन रावन राम हकारि६१
किधौं बलपैं बल बासव[8] क्रुद्ध, जटासुरपैं[9] कि वृकोदर जुद्ध ॥
कुं[10] अर्थ[11] भ्रमावत हत्थ कृपान, दिखावत संकरकौं अति दान ६२
सुहाडपै[12] हू इततैं गहि संगि, मिल्यो अभमल्लहिं भैल्ल[13] उमंगि ॥
नची तँहँ तालिनैं[14] चोसठि६४ नारि, रची इम हड्ड रु कूरम रारि ६३
जहाँ तँहँ आवहिं आवहिं जाप, जहाँ तँहँ खूटत खग्गन खापैं[15] ॥
जहाँ तँहँ प्रेत डकारत जोर, जहाँ तँहँ घायन घायल घोर ॥६४॥
जहाँ तँहँ नारदको अति नच्च, जहाँ तँहँ सूरन हूरन सच्च ॥
जहाँ तँहँ भूतन भूख प्रकास, जहाँ तँहँ गिद्धिनि गूद बिलास ६५
जहाँ तँहँ डाकिनि डिंडिम डक्क, जहाँ तँहँ धारनकौ[16] धमचक्क ॥
जहाँ तँहँ हत्थिन चंड[17] चिकार, जहाँ तँहँ फेरविकान[18] फिकार ।६६।
जहाँ तँहँ फुट्टत भूं[19] अति जोर, जहाँ तँहँ त्र्यंबक तंडव[20] तोर[21] ॥
जहाँ तँहँ दिग्गज कातर[22] गज्ज, जहाँ तँहँ सोहत सूरन सज्ज॥६७॥
जहाँ तँहँ कातर कूकत कूक, जहाँ तँहँ चाहत चंचल चूंक[23] ॥
जहाँ तँहँ फुट्टत फीलन[24] मत्थ, जहाँ तँहँ सूरन हूरन[25] हत्थ ॥ ६८ ॥

दूतों रूपी भूतों ने यह २ खबर १ कही ३ ऊंचे किये हैं शस्त्र जिसने ४ सूर्यवंशी ॥ ६० ॥ मानों ६ कुवलयाश्व नामक राजा ७ धुंधु नामक राक्षस को देख कर ५ दौड़ा ॥ ६१ ॥ ८ बलवान् इन्द्र क्रोधित हुआ ९ भीमसेन का युद्ध १० भूमि के ११ अर्थ हाथ में तरवार फिराना हुआ ॥ ६२ ॥ १२ सुहाड़ का पति १३ अच्छे उत्साह से मिला १४ वहां पर तालियें देकर चौसठ योगनियें नचीं ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से म्यान खूटने हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ १६ तरवारों की धाराओं की. हाथियों की १७ भयंकर चीस १८ फेकरियों [स्यालनियां] के फत्कार ॥ ६६ ॥ १९ भूमि २० ताल [वाद्य विशेष] २१ नृत्य की रीति के. दिग्गजों की २२ कायर गर्जना ॥ ६७ ॥ २३ छलघात २४ हाथियों के माथे २५ अप्सराओं का हाथ [हथलेवा जुड़ता है]

जहाँ तँहँ खग्गन खंड[1] खिरंत, जहाँ तँहँ गैवर[2] गंज गिरंत ॥
जहाँ तँहँ जुग्गिनिको जयकार[3], जहाँ तँहँ रुंडन मुंडन मार ।६९।
जहाँ तँहँ साकिनि सोर[4] सुनाव, जहाँ तँहँ पंडित जंग प्रभाव ॥
जहाँ तँहँ हत्थन बत्थन[5] जुट्टि, जहाँ तँहँ तेग तरक्कत[6] तुट्टि ॥ ७० ॥
जहाँ तँहँ सोनित सौं[7] बढि साँद, जहाँ तँहँ प्रेतन भच्छ[8] प्रमाद ॥
जहाँ तँहँ चाल चुरैलिनि चौंकि, जहाँ तँहँ भैरव भैरव[9] भौंकि[10] ७१
जहाँ तँहँ हड्डुन जालिम[11] जोर, इतैं तँहँ दुस्सह[12] कूरम ओर ॥
सुहाडँप[13] कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमल्लहिं पुंज[14] प्रकास ॥७२॥
कहैं दुव दाहहु वाहहु कत्थ, रचैं रन त्यों रवि रुक्कत रत्थ ॥
सरैं[15] जलजंत्र कि घायन[16] सोन, जुरैं इन दोउनतैं तँहँ जोन ॥७३॥
लरैं अभमल्ल सु बुंदिय लाज, करैं उत कूरम जैपुर काज ॥
बहैं असि बान वरच्छिन व्रात[17], परैं मनु भद्दव विज्जुव पात ॥७४॥
थेइ थेइ नच्च कबंधन[18] थूल[19], बनैं तँहँ कातर[20] पत्त वघूल[21] ॥
सलंगत भैरव सोनित[22] मत्त, छलंगत गिद्ध बनैं सिर छत्त[23] ॥ ७५ ॥
नचैं निकसे हियपैं[24] कढि नैन, सरोज[25] कि सोन सिलीमुख[26] सैन ॥
कढैं फटि बुक्कन[27] टुक्क निकास, मनों सुमं[28] किंसुक[29] माधव[30] मास ७६

१टुकड़े २हाथियों के समूह ३जय हो जय हो ऐसा शब्द॥ ६९॥ ४कोलाहल ५बाथों से [दोनों हाथों को फैला कर अंक में भर कर बाहु युद्ध होता है] लड़ते हैं ६ तरवारें फिसल कर टूटती हैं ॥ ७० ॥ ७ लोही का कीचड़ ८ खाने का ९ भयंकर १० गाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुल्म करनेवाला १२ वह जुल्म कछवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड़ का पति १४प्रकाश का समूह ॥ ७२ ॥ १५ फुंहारा चलै जिस प्रकार १६घावों से रक्त चलता है ॥ ७३ ॥ १७समूह ॥ ७४ ॥ १८बिना मस्तक वाले क्रियावान् शरीरों का १९समूह २० कायर २१बघूले (वायु के गोटे) के पत्तों के समान २२ रक्त से मस्त होकर २३ छत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकस कर नाचते हैं सो मानों २५ लाल कमल पर २६ भ्रमर शयन करते हैं २७ बूकों (गुरदों) के टुकड़े होकर फट कर निकलते हैं सो मानों ३० वैशाख मास में २९ ढाक के (केसूला के) २८ पुष्प फूले हैं ॥ ७६ ॥

उडैं सिर अंबर पच्छिन पेलि[2], करैं[3] जनु कालिय कंदुक केलि[4] ॥
उछट्टहिँ ढालनमैं कढि अंत[5], भुजंग टिपारनमैं[6] कि फनंत ॥७७॥
रुरैं[7] सिर अद्ध फटयो इहिँ रारि, दयो जनु जुग्गिनि खप्पर डारि॥
सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौं जयकेतु प्रभंजन[10] पात॥७८॥
किरैं[11] फटि टोपनतैं करवाल[12], फैंटा[13] बिनु लेत भुजंग कि फाल ॥
सुहावत के झरि नक्क[14] समूल, फबैं इसमास[15] मनों तिलफूल ७९
लगैं असि[16] ओठ झरैं कटि लाल, पके जनु बिंब[17] कि पुंज प्रवाल[18]
उडैं कटि दंतन ओघ अखंड[19], खिरैं फटि हीरनके जिम खंड॥८०॥
किरैं[20] सह मुत्ति[21] प्रहारन[22] कान, बनैं सह मुत्ति सु सुत्ति[23] बिधान ॥
जहाँ झरि हत्थ गिरैं अति जुद्ध, किधौं फन पंचकके अहि क्रुद्ध८१
तिरैं वहु खेटक[24] सोनित[25] ताल, मनों कि सरस्वति[26] कच्छप माल॥
झुकैं वहु सूर झटक्कन[27] झार, गिरैं जिम आसव मत्त गमार८२

पक्षियों को २ हटाकर आकाश में १ मस्तक उडते हैं सो ३ मानों कालिका गैंद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ५ आंतें गिरती हैं सो मानों टिपारों में ६ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ मस्तक ७ गुडता [लुडकता] है सो मानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ वीरों की चोटियें कट कर उडती है सो मानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से पडती है ॥ ७८ ॥ टोपों के ऊपर से टूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो मानों १३ विना फण सर्प उछलते हैं १४ मूल सहित नासिका कट कर ऐसी दीखती है कि मानों १५ आसोज मास में तिलों के फूल शोभा देते हैं ।७९। १६ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो मानों १७ बिम्बफल [रक्त फल विशेष] और १८ मूँगों (नग विशेष) का समूह है १९ विना टूटे हुए दांतों के समूह कट कर उडते हैं सो मानों हीरों के टुकड़े होकर खिरते हैं॥८०॥२२ प्रहारों से २१ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मोतियों सहित २३ सीपें बनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २५ रुधिर के तालाव में बहुत २४ ढालें तैरती हैं सो मानों २६ सरस्वती नदी में कच्छपों की पंक्ति तिरती है (सरस्वती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है) २७ तरवारें चला कर 'डिंगल भाषा में तरवार के एक वार में दो टुकड़े होजावें उसको झटका कहते हैं परन्तु लौकिक में इसकी रूढी खड्ग में होगई है इसीकारण यहां तरवार लिखा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥
तिन्हैं भट नाटकके नट तोर, गिनैं रस अद्भुतही नहिं घोर॥८३॥
गिरैं कहुँ भज्जतें भीरुन सीस, उठावत पुब्ब विहावत ईस ॥
गिलैं तिनको नन गृद्दहु गिद्ध, बुरे इम जे कि मरे भय विद्ध॥८४॥
मिले हुवरया गतिके रन माँहिं, जचैं जुरनों तँइ नाँहिं सु नाँहिं॥
लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करैं नहि अग्घ सरैं नहिं काज ८५
भयो बल साँवलको बल भाव, दयो अभमल्ल पुरंदर दाव ॥
चली पविकी छवि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्यों गिरि खंड८६

(षट्पात्)

अभयसिंह सुत अत्थ प्रबल सुगतेस१.रु पूरन२ ॥
दासी औरस हुव रहि चले चाहत अरि चूरन ॥
सारसोपके सुभट वढ्ढि पहुंचे सुंढाड़ थल ॥
भट साँवल के भंजि दव्वि नाँनेड़ि दयो दल ॥
इन्द्र हनत पिक्खि कूरम अचल दोउन सुग्गन हूर दिय ॥
उभैं पुत्र मरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय८७
अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि पर ॥
झरत खंध हय झुकिय इनहु झारिय इहिं अवसर ॥
सूर अचलको सीस तरकि तुट्ट्यो असि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर भीर लोग उसका नटों के २ खल की भांति अद्भुत रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए फिर कायरों के मस्तक समझ कर ५ छांड देते हैं, और वे भय से बिंध कर मरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद मजा बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहां बहुत कायरों के मस्तक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु नाहीं करने की ही नाहीं थी ८ प्राणों का आघ नहीं करते अथवा पाप नहीं करते ॥ ८५ ॥ सांवलदास का बल राजा ९ बलि की भांति होगया उस समय अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार चली ॥ ८६ ॥ १२ सुढाड़ की सेना में १३ नानेड़ी की सेना को १४ अचलसिंह ने १५ दोनों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लियउ झेलि लगि लाह नखि बहु मंडि *महानट ॥
अचलहिँ बिदारि अभमल्ल इम लुतन धैर कढ्यो सकल ॥
बिनु बाजि जाय गंज्यो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रबल॥८८॥

दोहा ॥

वीर बहादुरसिंह तब, बुद्धानी पुर नाह ॥
अश्व रहित अभमल्लकों, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥
वेग हयहिँ झपटाय बलि, सम्मुह झारिय संगि ॥
अभमल्लहिँ यह लगिय इम, अंग सिर पंबि किं उमंगि ९०

॥ षट्पात्॥

लगत संगि अभमल्ल छत्ति फुट्टन नन छोहिंउ ॥
बिरचि बंपा बखसीस डंकि कूरम दल डोहिंउ ॥
बिनाँ तुरग हठ बंधि तुमुल काऊ नहिँ तक्कत ॥
यह अचिंज्ज सहि संगि बढ्यो सम्मुह अय बंक्कत ॥
जिम तुंला दंड खंभहि जुरत उर प्रबिद्ध अभमल्ल इम ॥
बुद्धानि नगर ईसहिँ सबिधि तुंल्लि पटक्किय अवनि तिम९१

[दोहा]

पर्यो बहादुरसिंह इत, इत सु पर्यो अभमल्ल ॥
इम कूरम भट पंच५ अगि, हनि सुत्तो हरवल्ल ॥ ९२ ॥

पज्झटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिँ बिचारि, सिरदार कुम्म नौरव सम्हारि ॥
नाथाउत चौलुक प्रेम नाम, किय आहव नरउर सचिव कौम९३
संग्राम नाम चालुक्य संग, जुरि करनसिंह कछवाह जंग ॥

---

* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८६ ॥ १ बरछी २ पर्वत पर ३ वज्र । ९० ॥ ४ सूछित नहीं हुआ ५ मल्ला ६ कूद कर ७ मथा ८ आश्चर्य है कि बर्छी को सहन करके ९ बोलता हुआ १० लकड़ी की डांडी किसी खंभे से बांधी जावै जैसे ११ वेधन होकर १२ तोल (उठा) कर भूमि पर पटकी ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ १३ लड़का १४ सोलंखी १५ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार*परसुधर उक्त प्रचंड, दिय जोध चालुक्कहिं दुसह दंड ९४
गंजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य ओर ॥
जोरावर †नारव कुम्भ जत्थ, सुरतेस बीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५।
बखतेस इड्ड असि करत वाह, चलि उदयसिंह चालुक्य चाह ।
जगभानु इड्ड अति ‡चित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग॥९६॥

(दोहा)

इम बुंदिय आमेर भट, रचिग परस्पर रारि ॥
जुद्ध मिले जल §दुद्ध जिम, ¶अल्बन बग्ग उपारि॥ ९७ ॥

[मुक्तादाम]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट९८
उलट्टिय सत्त समुद्रन आपं, प्रकट्टिय कूरमको यँहँ पाप ॥
थरक्किय त्यों अतलादिक थान, लरक्किय सेस फटा लचकान९९
तरक्किय कच्छप पिट्ठि सत्रास, बनैं जनु अंडकटाह विनास ॥
टिक्यो किरि तुंडहिं दंतुलि टारि, चिक्यो दिक्कुंजर पुंज चिकारि
छुटैं सिर छत्तिन छत्तिन छोक्कि, कढैं बनतैं जिम कुक्कत कोक्कि ॥
करक्कहिं कोचनकों असि कट्टि, फरक्कहिं बिज्जुव ज्यों घन फट्टि १०१
खरक्कहिं ढालनके कटि खंड, दरक्कहिं तालनसे ध्वजदंड ॥
छरक्कहिं छोनिय छिंछिन रत्त, वरक्कहिं बाहुल टोप बिघत्त॥१०२॥
झरक्कहिं इक्कहिं इक्क झटक्कि, थरक्कहिं रुंड लरक्कहिं थक्कि ॥
गरक्कहिं खंजर पंजर गोदि, जरक्कहिं जोर महाभट मोदि ॥१०३॥

* परशुराम ॥९४॥ †नरूका कछवाह ॥ ९५ ॥ ‡आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला ॥ ९६ ॥ § दुग्ध ¶ घोड़ों की बागें उठा कर॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ जल २ जयसिंह का ३ फण ॥ ९९ ॥ ४ मानों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होवेगा५वाराह का मुख ६ दिग्गजों का समूह चीसलों करके हटे ॥ १००॥७चत्रियों की छातियों को फोड़ कर८मयूर९कवचों को काट कर१०खड्ग११बिजुली॥१०१॥१२ताड़ वृक्ष के समान १३ भूमि को १४ रक्त की छींटों (पिचकारियों] से १५ दस्ताने १६ विशेष घात से ॥ १०२ ॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ शरीर को खोद कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३ ॥

प्लवंगन[1] प्रोथ[2] सनंकिय स्वास, भनंकिय भेरि[3] बलाहिक[4] भास ॥
रनंकिय कोचन[5] रोचन रुंड, झनंकिय अक्खर[6] पक्खर झुंड॥१०४॥
खनंकिय हड्डन[7] हड्डन[8] खग्ग, फनंकिय फेनिल[9] सेस समग्ग ॥
छनंकिय बान उडानन छूट, ठनंकिय घंट करी कटि[10]कूट ॥१०५॥
इतैं तँहँ देव उतैं सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥
उभै २ झपटावत सत्तिन[11] सूर, उभै अधिबीर[12] महा मगरूर ॥ १०६॥

(दोहा)

महाचंड अरु चंड मनु, दोऊ भट जम दास ॥
असु[13] दल गाहक अंकुरे[14], रन मोरी[15] भव रास ॥ १०७ ॥

[षट्पात्]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट६ ॥
नारवके रन रुपि देव सज्जिय द्वादस भट ॥
द्विगुन जोर लखि इतहि अर्क[16] पहिलैं तिन्ह आदरि[17] ॥
अरु मंडल भिदवाय[18] प्रथम पठये स्वधर्म-परि ॥
डाकिनि पिसाच यह कूक दिय सु सुनि सोर नारव[19] सुभट
दस१० मान[20] उग्र अड्डे दुसह बहुरि आनि ठड्डे[21] विकट॥१०८॥

---

१ घोड़ों के २ फुरणों[नासिकाओं] से ३ नौबत ४ मेघ की शोभा से बजी ५ कवचों से शोभायमान धड़ ६ नहीं गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह बजे॥१०४॥७हाडा क्षत्रियों के खड्ग८शरीर के हाडों पर बजे; या हडों के शस्त्र हाडाओं पर ही बजे [क्योंकि यहां दोनों ओर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ९ झागों सहित शेष के सब फणा फेन [झाग] सहित होकर फूत्कार करने लगे [यहां फेनों के योग से फणों का ग्रहण है]१०हाथियों के कुंभस्थल कट कर ॥ १०५ ॥ ११घोड़ों को१२वीरों के पति [स्वामी] ॥१०६॥ १३सेना के प्राणों के ग्राहक१४खड़े हुए१५युद्ध में महामारी (प्लेग) का नृत्य हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का नृत्य हुआ ॥ १०७ ॥१६सूर्य ने१७देवसिंह के वीरों का आदर करके१८सूर्य मंडलका भेदन कराकर १९ नरूके २० दश का प्रमाण वाले अर्थात् दश भट आ २१ खड़े हुए ॥ १०८ ॥

(दोहा)

सुभट अठ८निज संटिकैं[1], देवसिंह ढुत[2] दाय ॥
नारवके ते दस१०निगलि, नारव लिय नियराय ॥ १०९ ॥

(षट्पात्)

अब उन्नततम[3] अंस उपर दिनकर[4] आरोहत ॥
चित्र[5] जंग[6] दिय चच्छु[7] मुदित सारथि सह मोहत ॥
देवसिंह सिरदार जय[8] रु राधेय[9] मिले जहँ ॥
बिरचत दुवरबल बंधि तुमुल थल रंग जंग तहँ ॥
सत्तन खलीनं[10] खंचिय अरुन चुक्कि सैंकति[11] फनिपति[12] चक्किय ॥ ११० ॥
दुवरजाम[13] अधिक संजोग सुख तेंदिन[14] चक्क चक्किन तक्किय ॥
जिम द्रोणाचल लैन उठयो अंजनि सुत लासक[15] ॥
अचवन[16] जिम अंमोधि[17] बिदित आतापि बिनासक[18] ॥
चंडी जिम चंडपर खान मुष्टिक संकरखन[19] ॥
पन्नगपर कि सुपर्ण[20] गरबि तैम[21] हिमकर[22] ग्रासन ॥

१बदले में देकर २ नरूके सरदारसिंह को समीप लिया ॥ १०९ ॥ इस समय ३ अत्यंत ऊंचे भाग (मध्यान्ह) पर चढ कर ४ सूर्य ने इस ५ आश्चर्य वाले ६ युद्ध पर ७ चक्षु [नेत्र] दिये और सारथि सहित प्रसन्न होकर मोहित हुए. जहां देवसिंह और सरदारसिंह रूपी ८ अर्जुन और ९ कर्ण मिले तहां दोनों ने बल बांध कर युद्ध क्षेत्र में भयंकर युद्ध किया वहां सूर्य के सारथि अरुण ने घोड़ों की सातों १० लगामें खेंचीं (युद्ध देखने को रथ रोका। और ११ अपनी शक्ति को भूल कर १२ शेषनाग डिगा १४ उस दिन चकवा चकवियों ने १३ दो पहर तक संयोग का अधिक सुख देखा अर्थात् युद्ध का कौतुक देखने के कारण सूर्य दो पहर अधिक ठहरा इससे वह दिन छः पहर का हुआ ॥ ११० ॥ जिस प्रकार१५नृत्य करता हुआ हनुमान द्रोणाचल लेने को उठा. जिस प्रकार१७समुद्र को१६पीने के लिये आतापि नामक राक्षस को१८मारने वाला (अगस्त्य) उठा. चंड दैत्य को मारने के अर्थ चंडी और मुष्टिक मल्ल को मारने के लिये१९बलदेव किंवा सर्प के ऊपर२०गरुड़ और २२ चंद्रमा को ग्रहण करने को घमंड करके२१राहु उठा तिस प्रकार

इम वैरिसल्ल कुल उद्धरन लरि समीप नारव लियउ ॥
मानों कि भीम हढ पय मुररि दुस्सासन उप्पर दियउ १११

भुजंगप्रयातम् ॥

मिले वन्हिके भानुके बंस मंज्झी, दुहूँ फोजमैं ओजतैं मोज दंज्झी
दुहूँ तोरके जोरतैं भुम्मि दब्बी, इतैं गोमुखा भेरि बज्जे अरब्बी ११२
भयो सेस रंकेसके बेस भिन्नों, किटी दंतुली टारिकैं तुंड दिन्नों॥
कढ्यो व्याल पाताल त्राता न कोऊ, सर्यो बेंच्छ बीभैच्छ दौले-
यैं सोऊ॥११३॥
हठी जूटतैं मेरुके कूट हल्ले, चहूँ कोदँ सप्तोर्ध्वके श्रोत चल्ले ॥
भजे लोक स्वर्गादि लोकेसँ भौनैं, लगैं ईसकौं सीसके लाभ लौनैं
भये राग सिंधूनके लोग भिन्ने, नची जुग्गिनी ताल बेताल दिन्न॥
खिरैं हड्डपैं खग्ग बुल्लै अखंडँ, मनौं फग्गमैं चैंचरी दंड मंडैं ॥ ११५ ॥

वैरीशाल के कुल का उद्धार करनेवाले (देवसिंह) ने युद्ध करके १ नरूके सरदारसिंह को समीप लिया सो मानों २ पीछा फिर कर भीमसेन ने दुस्सासन पर दृढ पावंडे दिये ॥ १११ ॥ इस प्रकार ३ अग्नि वंशी और सूर्य वंशी दोनों ४ मांझी (वीर) मिले जिनकी ५ ताप से दोनों ओर की सेना की ६ खुशी ७ जली, उन दोनों ने प्रताप के जोर से भूमि को दबाई और इधर ८ गोमुखा [वाद्य विशेष] नौबत और ९ आरबी ताशे बजे ॥ ११२ ॥ शेष नाग भग्न होकर अत्यन्त दीन के वेस में होगया और १० वाराह ने दंतुली को टाल कर मुख नीचा कर लिया उस समय पाताल में ११ शेष नाग की रक्षा करने वाला कोई नहीं निकला और १३ ग्लानी युक्त होकर १४ कमठ भी १२ छाती के बल चला ॥ ११३ ॥ उन हठ वाले दोनों वीरों के १५ युद्ध करते समय सुमेरु पर्वत के १६ शिखर हिलने लगे और चारों १७ दिशा में १८ सातों समुद्रों के सोते चले 'मतांतर से समुद्र चार माने हैं परन्तु शास्त्रों में बहु मत से सात ही लिखे हैं' १९ स्वर्ग आदि के लोक भग कर २० ब्रह्मा के लोक में गए और २१ शिव को मस्तकों का लाभ २२ सुंदर लगा ॥११४॥ भिड़ कराने (मरवाने) की लागवाला (वीर रस का पोषक) २३ सिंधवी राग हुआ वहां पर चौसठ जोगनियें नचीं और बेतालों ने ताल दी, हड्डियों पर तरवारें गिर कर निरंतर शब्द होने लगा सो मानों फाग में अथवा फाल्गुन मास में २४ गहर [डंडहर] के डंडे बजते हैं ॥ ११५ ॥ दोनों ओर के रूपक बाजे

उभै झल्ली धावै बाजी उडावैं, उभै वारकी मारमैं नाँहिं आवैं ॥
इतैं लज्ज बुद्धेसकी ठोकि ठिल्लैं, उतैं ख्याल जैसिंहके जोर
खिल्लैं ॥ ११६ ॥
उभै जेठके भानके मानैं उग्गे, परैं फौजके ओजके अंसु पुग्गे ॥
बकैं डाकिनी डक्क डैरौं बजाय, घने भेदके मेद भैरौं अघाये ११७
फिरैं फेकरी चंड फेरंड फुल्ले, भिरैं भूत के रत्तमैं मत्त भुल्ले ॥
भ्रमैं गिद्धनी चिल्हनी मेद भक्खैं, रमैं पंकमैं कंक नाँ संक रक्खैं
तपैं रंगी बाजीनके तंग तुट्टैं, छिपैं भीरु विद्राव कैं चाव छुट्टैं ॥
उलट्टी नदी लौं गिरैं को उछट्टैं, फिरैं रीस कैं ईसके सीस फट्टैं ११९
कटी के पताका उडी अभ्र कड्ढैं, चढैं मेघके जोर ज्यौं मोर चड्ढैं ॥
झुकैं झंड बेतंडपैं बात झंपैं, किधौं सैलके सृंग खज्जूरि कंपैं १२०
बन्यौं संकुली सत्थ लै बत्थ बाँहीं, निकंपा पौनपैं ह्वाँ सदागौन नाँहीं

---

१ दौड़ में २ घोड़ों को उड़ाते हैं सो दोनों ओर के प्रहारों में नहीं आते इधर तो बुधसिंह की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रह जावे) शत्रुओं को ठोक कर ३ हटाते हैं और उधर जयसिंह के जोर से लड़ाई का खेल खेलते हैं ॥ ११६ ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५ ताप की ६ किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से डाकिनियें डैरव बजाकर बकने लगीं और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव ८ तृप्त हुए ॥ ११७ ॥ स्यालनियें फिरती हैं और भयंकर ९ स्याल फूलते हैं १० रुधिर में मस्त होकर भूले हुए भूत परस्पर भिड़ते हैं और उडती हुई गीधनियें और चीलहें मांस खाती हैं उस लोही मांस के कीचड़ में कंक [डीच] पक्षी निःशंक होकर क्रीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग टूटते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर छिपते हैं और कितने ही उलटी हुई नदी के समान उछट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिव की मुंडमाला में गएहुए मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १५ सेना में कटी हुई १३ ध्वजा ऐसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १४ आकाश में मयूर चढ़ते हैं १७ पवन लगने से १६ हाथियों पर झंडे ऐसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर खजूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को भुजाओं में भरकर वह सेना ऐसी १९ भरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागौन [निरंतर ग-

गहे कोर[1] कट्टार के पार[2] गोदैं, खुरैं बाजि के घुम्मिकैं भुम्मि खोदैं
फिरैं के गदा मारि गै[3] मत्थ फोरैं, चिरैं कुंभ[4] मुत्तानिको[5] रंगचोरैं ॥
कढैं हत्थि होदेनके उद्ध[6] कच्छी[7], सुरैं तारकी वग्ग ज्यों वारमच्छी[8] ।
किते कुप्पि होदेनमैं सूर कुद्दैं, मरोरैं निसादीनके[9] कंठ मुद्दैं ॥
भिदैं त्यौं गजाजोंर[10] के जीव झुल्लैं, बढे मोदमैं के पदग्गंत[11] बुल्लैं १२३
नदैं[12] झंझैं[13] की फुट्टि भेरी[14] नगारे, बदैं के बिदारैं हहा हाय हारे ॥
चढी आगि जंगी[15] चिनंगी चमंकी, सिकी[16] झार संसारकी बुद्धि संकी
तपैं पक्खरी बाजि दज्झैं[17] तरक्कैं, जपैं राम के घुम्मिकैं भुम्मि जक्कैं[18]
खिरैं हड्ड के झुंड के खंड खंडी, मनो वुट्ठि ओरेनकी[19] मेघ मंडी ।१२५।
चलैं रोपं[20] त्यौं चाप जीवाँ[21] चटक्कैं, नचैं खेचरी भूचरी प्रान नट्ठैं[22] ॥
बहैं वेगतैं तेग सन्नाह[23] बट्ठैं, किधौं संब्बुकी[24] पंतिमैं तंति कट्ठैं ॥

मन] नहीं होसका "पवन का नाम ही सदागति है वह सार्थक नहीं हुआ" कटार ग्रहण करके उसका १ कोना [नोक] मांस में २ पार करते हैं और कितने ही घोड़े फिर कर भूमि को खोदते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही गदाओं से ३ हाथियों के मस्तक फोड़ते फिरते हैं और चिरेहुए ४ कुंभस्थलों से ५ मोतियों का रंग चुराते हैं अर्थात् श्वेत रंग के मोतियों को रुधिर से लाल कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के होदों से ६ ऊपर निकालते हैं वे घोड़े सूत के तार की धार से ८ पानी में मच्छी जुड़े तैसे जुड़ते हैं कितने ही वीर क्रोध करके होदे में कूदते हैं ९ हाथी के सवारों के कंठ मरोड़ कर प्रसन्न होते हैं १० कितने ही महावत भिद कर जीव झूलते हैं कितने ही हाथियों के ११ पैरों में दब कर मूर्छित होकर बोलते हैं ॥१२३॥ १३ भंभं [फूटे बाजे के शब्द का अनुकरण है) करके कितने ही १४ नौबत और नगारे १२ बजते हैं कितने ही कटेहुए हाय हाय करते हैं १५ युद्ध संबंधी अग्नि चढ कर उसकी चिनगारियें चमकीं जिनकी ज्वाला से १६ जल कर संसार की बुद्धि शंकित हुई ॥ १२४ ॥ पाखरों वाले घोड़े तप कर १७ जलते हैं तड़कते हैं अथवा कूदते हैं और कितने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाडों के झुंड टुकड़े टुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों मेघ ने १९ ओलों (गड़ों) की वृष्टि रची है ॥ १२५ ॥ ज्यों २० बाण चलते हैं त्यों धनुष की २१ प्रत्यंचा चटकती है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नचती है और प्राण २२ नष्ट होते हैं वेग से तरवारें पड़कर २३ कवच कटते हैं सो मानों २४ साबन की पंक्ति

झरैं सुंडि हत्थीनके झुंड झुक्कैं, कटैं प्रोथ[1] वाजीनके कं[2]क कुक्कैं
भई रुंधि[3] त्रैलोक्यकौं धुंधि भारी, छई स्वर्गकी सीमलौं [4]भीमछारी
तकैं बीर कायासं[5] आयासं[6] तंद्रा[7], चढी राति सोपै[8] अमा नष्टचंद्रा॥
सजी दैव त्रै[9]जामकै पुब्ब संझा[10], बनैं [11]भानकैं विप्फुरी चंद्र वंझा[12]॥
सबैं संकुली[13] [14]ध्वांत संग्राम सीमा, [15]भचक्री फिरी झार अंगार[16] भीमा[17]
छिपैं व्हाँ कटारी उठी [18]अंभ दीसी, सुही चंदकौं मोहिनी[19] रोहिनीसी
जरैं गैन गिद्धीनके नैन नं[20]क्की, सुही [21]मृग्गकी तीन३तारा थरक्की
उडैं हीर जो कालिनी[22] इक्क१उग्गैं, प्रभा जासं[23] अंधारपैं मारपुग्गैं
कसैं गैन के भल्ल [24]ज्या जोर कड्ढैं, गृहाकारि[25] आदित्य[26] जे च्यारि४चढ्ढैं
छुट्यो कट्टि त्रैसूल उड्डौनँ[27] छोहैं, सुही तीन३तारानतैं पुष्य सोहैं॥

में तांत निकलती है ॥ १२६ ॥ सुंडें कटने से हाथियों के समूह झुकते हैं और घोड़ों के १ फुरणे [नासिका] कट कर २ मांसाहारी पक्षी विशेष झुकते हैं इसप्रकार तीनों लोकों को ३ रोक कर भारी धुंधि हुई और वह ४ भयंकर भस्मी स्वर्ग की सीमा तक छागई ॥ १२७ ॥ ५ शरीर के साथ ६ परिश्रम होने से वीर ७ आलस्य अथवा निद्रा को ताकते हैं उस समय नष्टचंद्रा ८ अमावास्या के समान दिन में ही रात्री होगई ९ रात्रि के पहिले ही दैव ने यह १० संध्या कर दी जो ११ सूर्य के बिना और चंद्रमा से १२ बांझ (वंध्या) रात्री बढी ॥ १२८ ॥ संग्राम की सब सीमा १४ अंधेरे से १३ भरगई उस समय ज्वाला और १६ अंगारों की १७ भयंकर १५ नक्षत्र मंडली [तारा मंडल] फिरी. 'अब यहां नक्षत्रों का रूपक वर्णन करते हैं' वहां १८ आकाश में चढी हुई कटारी दीखती है सो ही चंद्रमा को १९ मोहनेवाली रोहिणी शोभा देती है 'रोहिणी चंद्रमा की स्त्री है इसकारण उसको चंद्रमा को मोहनेवाली कही है' आकाश में गीधनियों के नेत्र और २० नासिका जलते हैं सो ही २१ मृगसर नक्षत्र के तीन तारे ठहरे. वहां हीरा उडता है सोही २२ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा उदय हुआ २३ जिसकी कान्ति की मार अंधेरे पर पहुँचती है ॥ १३० ॥ कितने ही तीरों के भाले २४ प्रत्यंचा के जोर से निकल कर आकाश में फिरते हैं सो २५ घर के आकार २६ पुनर्वसु के चार तारे चढे हैं छूटा हुआ त्रिशूल कट कर २७ नक्षत्र शोभा देता है सोही २८ पुष्य नक्षत्र के तीन तारे दीखते हैं [पुष्य नक्षत्र त्रिशूल के आकार है] १३१ ॥

छुटैं चक्क [1]है बक्क आयास छाजैं, भुजंगी [2]मैं जो पंच[3]तारेन [4]भ्राजैं
गृहाकार[5]है पंच अंगार उड्डैं, मघा जो मनौं हूंकि आई [6]हुड्डैं ॥
जरंते उडैं कालिका [7]पालिका[8]पै, ति [9]पुर्व्वोत्तराफग्गुनी [10]रिच्छ द्वै[11]द्वै
उडैं ओ जरैं हत्थ [11]लग्गी अँगारी, भैं [12]पंचौंल जो [13]हस्त नक्षत्रभारी
चढैं [14]अंभ मुत्ती बनैं इक्क १ चित्रा, प्रबालौं [15]चढैं [16]स्वाति इक्कैं १
पवित्रां ॥
धकंती [17]कँबी [18]अंव्वतैं [19]अंभ धावैं, बिसाखा सु चो४[20]रिच्छका[21]खाँब-
नावैं ॥ १३४ ॥
उडैं त्यौं तिते [22]मानके के अँगारे, तिं [23]ज्यौं [24]मिलैं नच्छत्रके च्यारि४तारे
चली कानतैं कुंडली [25]व्योमैं चीनौं, [26]सुनासीरके [27]रिच्छके ते [28]मैं तीनौं३
[29]इली वक्कपैं रुद्र संख्या११अँगारे, ति ज्यौं [30]सिंहलंगूल त्यौं [31]मूलतारे

टेढे चलने के १ परिश्रम से चक्र छूटता है सो ही २ सर्प के आकार वाले [अश्लेषा] ३ नक्षत्र के पांच तारे ४ शोभा देते हैं (मतांतर से अश्लेषा के छ तारे भी मानते हैं] ५ घर के आकार होकर पांच तारे उडते हैं सो ही मानों मघा नक्षत्र चल कर ६ हूडा [गोलकुंडा] खेल विशेष पर आई है ॥ १३२ ॥ ७ कालिका देवी के ८ पलंग पर जलते हुए अंगारे उडते हैं ९ वे पलंग ही १० पूर्वाफाल्गुनि और उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रों के दो दो तारे बनते हैं [ये दोनों नक्षत्र दो दो तारों के होते हैं] फटे हुए ११ हाथों के अंगारे लग कर उडते हैं सो १२ हस्त नक्षत्र के १३ पांच तारे होते हैं [हस्त नक्षत्र हाथ के आकार होता है ॥ १३३ ॥ १४ आकाश में मोती चढता है सो ही चित्रा नक्षत्र का एक तारा होता है आकाश में १५ मूंगा चढता है सो १६ पवित्र स्वाति नक्षत्र का एक तारा होता है १८ घोड़े के मुख से जलती हुई १७ लगाम १९ आकाश में जाती है सो २० चार तारों के विशाखा नक्षत्र का २१ डोल (आकार) बनाती है ॥ १३४ ॥ २२ उतने ही प्रमाण के कितनेक अंगारे उडते हैं २३ वे २४ अनुराधा नक्षत्र के (चामर दंड के आकार) चार तारे होते हैं कान से चली हुई कुंडली २५ आकाश में दीखती है सो कुंडल के आकार २६ इंद्र के २७ नक्षत्र (ज्येष्टा) के तीन २८ तारे हैं "ज्योतिष में ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र है" ॥ १३५ ॥ २९ टेढी तरवार पर ग्यारह संख्या के अंगारे हैं सो ३० सिंहपुच्छ के आकारवाले ३१ मूल नक्षत्र के तारे हैं

जरैं अब्भ* गैंदन्त दो† ओरसौंजो, दिपैं‡ पुव्वआखाढ सो§ रिच्छ द्वै[1] को
अँगारी उभै[2] अब्भ काहू उछारी, कढे उत्तरा द्वै[2] भैं मंचानुकारी ॥
इतमैं उडैं अब्भ औरैं अंगारे, त्रिकोणाभ[4] जे ते भिजिं[5] त्तीन तारे॥
भ[6] गोविंदको[7] ज्यौं कह्यो मग्ग त्यौं भो, मृदंगैं[8] लख्यो चो[4] ध-
निष्ठा भ ज्यौं भो ॥
उडैं चर्म[9] सो[10] १००चंद माला[11] अरोह्यो, सुदी[12] हंत्त वागीसको रिच्छ
सोह्यो ॥ १३८ ॥
महारत्ति[13] अर्केंदुके[14] संग मन्ने, छ[6]तारे रहे कृत्तिका अंत छन्ने[15] ॥
त्रिजामा[16]हिँ पुव्वा[17] भई यो त्रिजामा[18], परी फैलि ज्यौं असृ[19]उद्भेद[20] पामा
हठी वीर जैसिंहके घूंक[21] हुक्के, कुहू[22] सालमी[23] सूर फेरंडै[24] कुक्के॥
फिरैं भंगली[25] वंगुली[26] गिद्ध फुल्लैं, भ्रमैं पिंगला सेन भा[28] लेन भुल्लैं॥१४०॥

आकाश में * हाथी के दांतों † ओर के दंत जलते हैं सो (गज दंत के आकार) § दो तारों का ‡ पूर्वाषाढा नक्षत्र होता है ॥ १३६ ॥ १ आकाश में दो अंगारे किसीने उछाले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अंगारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे दीखते हैं ॥ १३७ ॥ ७ विष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में श्रवण नक्षत्र के देवता विष्णु हैं" मार्ग के आकार श्रवण नक्षत्र हुआ ८ मृदंग के आकार चार तारों का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ ९ ढाल के ऊपर के चांद (फूल) १० चढेहुए उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सौ तारों का वरुण का १२ नक्षत्र शतभिषा शोभायमान है "ज्योतिष में शतभिषा नक्षत्र का स्वामी वरुण है" ॥ १३८ ॥ १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चन्द्रमा के साथ मानेहुए इसकारण कृत्तिका नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भरणी ५ कृत्तिका ६ ये छः नक्षत्र १५ छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "ये नक्षत्र वैशाख मास में सूर्य के आस पास रहते हैं और अमावास्या का दिन होने के कारण सूर्य चंद्रमा का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १७ पहिले ही इसप्रकार की १८ रात्रि हुई यह ऐसी फैली कि जैसे १९ रुधिर में पामा रोग २० प्रकट हुआ ॥ १३९ ॥ जयसिंह के वीरों रूपी २१ उल्लू बोले २२ उस नष्टचंद्रा अमावास्या में २३ सालमसिंह सम्बन्धी २४ गीदड़ बोले २५ भागलों (भागनेवाले-कायरों) रूपी २६ पागल (चमगीदड) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना कोचर पक्षी की २८ कान्ति को लेना नहीं भूलकर भ्रमती है ॥ १४० ॥

भन्यौं बेरिसल्लोत[1] भूतेस[2] भायो, जग्यो देवक्रव्याद[3] जो जैत[4] जायो।
नरूजात[5] सैं गात[6] यौं लीलि[7]लिन्नौं, नही ईस[8] जच्च्यो सु[9] पै सीस
दिन्नौं ॥ १४१ ॥

[दोहा]

गिरत गिरत नांरव[10] गजब, द्रुत[11] झंडिग सिरदार ॥
देवसिंह किय छकित दै, असि[12] उपबीत उतार ॥ १४२ ॥
अब सु[13] देव हनि नारवहिं[14], खाय इक्क तस खग्ग ॥
धप्यो प्रबल हरबल्ल धुर[15], फिरत मचावत फग्ग ॥ १४३ ॥

(षट्पात्)

अग्गैं तच्छक[16] उरग बहुरि पय पुच्छ बिदब्बिय[17] ॥
अग्गैं बर[18] बारूद छोरि पाबक[19] सिर छब्बिय ॥
अग्गैं दिनकर[20] असह मुररि उत्तर मग लिद्धो ॥
अग्गैं छुधित[21] मयंद[22] बहुरि बिच्छिय अंक[23] बिद्धो ॥
अग्गैं सु देव आहव[24] अडर अरु नारव[25] अति उप्फन्यो ॥
जयसिंह मान भंजक[26] सजव[27] बेतालन रंजक[28] बन्यो॥१४४॥

[निःशाणी]

---

१ वैरीशाल के वंशवाला २ शिव के सन्मुख आया ३ देवसिंह "क्रव्याद् सिंहे" इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देवसिंह) जगा ५ नरूका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से ८ शिव ने उसका मस्तक नहीं मांगा ९ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरूके सरदारसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ १३ वह देवसिंह १४ नरूके को १५ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही१६तक्षक सर्प था और फिर चरण से उस की पूंछ को१७दबाई१८पहिले ही श्रेष्ठ बारूद था और फिर१९अग्नि के ऊपर डाला२०पहिले ही नहीं सहने योग्य सूर्य था और फिर मुड़कर उत्तर दिशा का मार्ग लिया, २१ पहिले ही भूखा २२ सिंह था और फिर बीछू के२३डंक से बींधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही२४युद्ध में निर्भय था और फिर २५ नरूका सरदारसिंह बहुत बढा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटानेवाला होकर बेतालों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥

नारक्कौं देवा निगलि अग्गैं उफनाया ॥
इत नरउर नृप के सचिव चालुक चंपाया ॥
प्रेमसिंहहू दै पलट हुत दाव दिखाया ॥
झल्लरिलौं झननंक ते तेगा तरकाया ॥ १४५ ॥
सूरौं हूरौं सत्थह्वै गलबत्थ मिलाया ॥
खंडेराय खिल्हारहू रन फग्ग रचाया ॥
पातं गदा के पुँट्टली फट्कार फबाया ॥
घाय इन्नकैं रंग के जलजंत्र चलाया ॥ १४६ ॥
खेह गरद्दी मेहलौं अँध्धीर उडाया ॥
फूल कलेजे फिप्फरे फबि फाँक फुलाया ॥
गोली गोटैं गुल्लालके चहुओर चलाया ॥
डेरौं डिंडिम डाकिनी डफ डक्क बजाया ॥ १४७ ॥
गनिका ज्यौं नचि जुग्गिनी थेई थरकाया ॥
भैरौं गैंयक भायकैं आलाप उठाया ॥
नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिलहाया ॥
दोऊ फग्ग उद्दग्गमैं इम कौतुक आया ॥ १४८ ॥

नरके को खाकर देवसिंह आगे १ पढ़ा २ सोलंखी को दवाया ३ शीघ्र ४ खड्ग विशेष ॥ १४५ ॥ वीरों और ५ अप्सराओं ने साथ होकर ६ उस फाग में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमान हुआ और कितने ही घाव उबकते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥१४६॥ मेघ के समान अंधेरा करके धूल उडती है सोही१०गुलाल उडाई उस युद्ध में कलेजे और फेंफड़ों की फांकें हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियां रूपी ११ गुलाल गोटे चौतरफ चलाए और भैरव के वाद्य डैरव और डाकिनियों के वाद्य डिंडिमियें बजे सो ही उस फाग में डफ बजाये॥ १४७ ॥और वैश्याओं के समान थेई थेई करके जोगिनियें चलीं और वाचन ही भैरवों ने १२ कलावंतों की भांति आलाप ली, नाथाउत प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर तरवार का खेल खिलाया १३ उदग्र (उछलते हुए शस्त्रों की अथवा निरंकुश फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से छातियों को

छेदैं तीरन छत्ति यों वीरन बिरमायो ॥
सेल घमाकौं संकुले छाकौं कि छकाया ॥
दोऊ२मारत दाव जे घन घाव घुमाया ॥
नरउर मंत्री प्रेमकौं बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥
खंडे खंडेरायके द्रुत प्रेम दबाया ॥
चंचल चंड चमक्कि कैं ग्रीवा गरकाया ॥
सिवकौं दै सिर प्रेमका गतप्रान गिराया ॥
चालुककौं नरउर सचिव हनि यों रु हकाया ॥ १५० ॥
देखि निरंकुस देव इहिं सज्जित समुहाया ॥
धर दोउन धमचक्कदै फनमाल फिराया ॥
हड्डन मंस निहारहीं हड्डा हठ आया ॥
जिम लग्गैं तिम लै चलैं खग पान पचाया ॥ १५१ ॥
कंकट टोपों कट्टिकैं कढि जात अधायो ॥
ज्यों सबनीगैंर सब्बुमैं चढि तंत्र चलाया ॥
यों आसे उच्छट देवकी रन चित्र रचाया ॥
खंडेराय खिल्हारकौं खग्गों बल खाया ॥ १५२ ॥

(दोहा)

नरउर पतिको सचिव हनि, खंडेराय सु नाम ॥
बहुरि देवसिंहह बढ्यो, कूरम दल जय काम ॥ १५३ ॥

(षट्पात)

छेद कर वीरों को १ विलमाया (आनंद पूर्वक ठहराया) भालों के प्रहार २ भर गये (अवकाश रहित होगये) सो मानों मद्य के प्यालों से तृप्त किया है ३ प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खांडेराव ने ४ तरवार से शीघ्र दबाया ५ गरदन में घुस गया ६ सम्मुख आया ७ जहां हड्डे हठ पर आते हैं तहां हड्डियों पर मांस नहीं रहता तरवार के पाण से पचाया हुआ मांस जहां वे तरवारें लगती हैं तहां से ले जाती हैं ॥ १५१ ॥ वे खड्ग ८ कवच और टोपों को काट कर ९ भूखे ही निकल जाते हैं जैसे कि १० सावन चखनेवाला आकाश में तीन चलावै वह भूखी ही निकल जाती है ?? युद्ध में आश्चर्य किया ॥ १५२ ॥

महाराम नृप *माम मूढ पहिलैं जु पलट्यो ॥
सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्यो ॥
करनसिंह कछवाह चाहि तिहिं ओर चलायो ॥
पानी मानहु प्रलय उदधि सत्तन उफनायो ॥
झमकात खग्ग झारत झपटि बाजि दपटि सम्मुह कढ्यो ॥
अपनैनं निरखि बपरेंय तद्दिनं पय पय प्रति जय जय पढ्यो १५४॥
इत संग्राम असंक करन[६] कूरम उत उद्धत ॥
इत बुंदिय जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥
दोऊ जुरि जम दाव घाव खँग धाव घुमाये ॥
बहुरि मान अच्छरिन लुब्भि आयास लुभाये ॥
बीर रु रउद्द बीभच्छ बलि अति अचिज्ज[११] रस उप्पज्यो ॥
नच्चत अनेक मुंडन निरखि भालचंद्र[१२] तद्दिन भज्यो ॥१५५॥
करभन[१३] ग्रीवा कटत उनहिं बेताल उठावत ॥
अंत्र तंत[१४] आरोप वीन लय लीन बजावत ॥
मनुजन[१५] रुंड मृदंग ढोल बज्जत हय ढढ्ढर[१६] ॥
गोमुख[१७] गति गज सुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥*राजा बुधसिंह का मामा. मानों सातों १ समुद्रों से प्रलय का पानी बढ़ा २ घोड़े दौड़ा कर ५ उस दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख कर पग पग प्रति जय जय का शब्द पढ़ा ॥ १५४ ॥ ६ कछवाहा करणसिंह ७पक्षियों की दौड़ से घूमे ८ फिर इन लोभियों (अप्सराओं से विवाह करने के लोभियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर उनमानवाली अप्सराओं को विवाह के लिये लोभ युक्त की वहां वीर रस, रौद्र रस,१०बीभत्स रस और ११ आश्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की मुंडमाला में अनेक मस्तकों को नाचते हुए देख कर राहु से ग्रहण होने की शंका करके१२शिव के ललाट का चन्द्रमा उस दिन भागा १५५॥ १३ ऊंटों की गरदनें कटती हैं जिनको उठा-कर उनके आंतों की १४ तांत बना कर बेताल लय में लीन होकर उस वीणा को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की मृदंगें और घोड़ों के१६अस्थिपंजरों [हड्डियों के पींजरों] के ढोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई सुंडों को१७गोमुखों

गावत पिसाच जुग्गिनि गहक्कि लहक्कि सुसिर आनद्ध तत ॥
करि ताल खंड सीसक किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत१५६

(दोहा)

रन दोऊ या विधि रचत, सजि करन रु संग्राम ॥
आँजि न रुक्के लै अडग, ताजिन वग्ग तमाम ॥ १५७ ॥
कुप्पि हनिय कूरम करन, सोलंखी उर सांगि ॥
प्रतिभट पर अति भट यहहु, इततैं बढिय उमंगि ॥१५८॥
झारिय खग चालुक झपटि, चैंल हय दपटि अचूक ॥
किय सिर कूरम करनको, टोप सहित द्वै टूक ॥ १५९ ॥
हनि याहि रु झल्ला हुकम, खिच्चिय सेर खपाय ॥
लिय अब गाम रसोर पति, घासीराम निराय ॥ १६० ॥
कूरम घासीराम तब, सिर झारिय सैंमसेर ॥
कहत खिंन वह सिर कियउ, सिव निज माल सुमेर १६१
समर परयो संग्रामकौं, देवसिंह हुत देखि ॥
कूरम घासीरामकौं, पूगो सम्मुह पेखि ॥ १६२ ॥
देवसिंहके उर दुसह, हुत कूरम खग दीन ॥
पैठो कटि नांगोद पुनि, तरक्कि पंसुली तीन३ ॥ १६३ ॥
इहिं अंतर देवहु अतुल, तस सिर झारिय तेग ॥

[illegible] विशेष) की भांति लेकर सलोहर संगीत बचाते हैं जहां १ प्रस-
[illegible] घोली से पिशाच और जोगनियें गाती हैं तहां २ फूंक से बजने
वाले [वंशी आदि] ३ खाल से मढेहुए [ढोल आदि] बाजे बज कर कटेहुए
मस्तकों के ४ ताल मजीरे करके ५ छूम के नाच से किलकारी करके डाक-
नियें चलती हैं 'स्त्रियों के समूह के नाच का नाम हल्लीसक है' ॥ १५६ ॥ ६
युद्ध में नहीं रुके ७ घोड़ों की बागें ८ काढ़ी, करके (घोड़ों की बागें काढ़ी
करना दौड़ाने का सूचक है) ९ कछवाह करणसिंह ने क्रोध करके १० बरछी
शत्रु पर यह अत्यन्त वीर इधर से बढ़ा ॥ १५८ ॥ ११ चंचल घोड़े को दौड़ा
कर ॥ १५९ ॥ १२ हमीर ॥ १६० ॥ १३ खड्ग १४ समय १५ अपनी मुंडमाला का
सुमेर ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १६ उदर का कवच [पेटी] काट कर ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

हनि रसोर पतिकों हुलासि, बढ्यो बहुरि अति वेग॥१६४॥
हरियसिंह तोंवर हठी, पुनि जद्दव परताप ॥
करनसिंह रठोर कुल, ये अरि पिक्खि अमाप ॥ १६५ ॥
*लिखत इन्हैं मानहुँ †लिखे, खग ‡सिचान §खरकोन ॥
आयो देव सु उप्परहि, मलय माँहि जिम पोन ॥ १६६ ॥
तबहि देवके खंध तकि, तोंवर झारिय तेग ॥
तीनन इन हनिकैं तऊ, बीरि न भो हत वेग ॥ १६७ ॥
जैतसुवन[1] के इम जबर, तीन रुहगिय तरवारि ॥
अरु खट६भट आमैरके, मरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥
अब सु देव अति लोह छकि, परयो मूरछित प्रान ॥
हूरनकों[2] हाँसहि रही, यहँ आयुहि बलवान ॥ १६९ ॥
सालम दल सागर[3] मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥
तोउ न लद्धो जय रतन[4], यहँ बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥
सठ सालम इक खाल[5] बिच, दुरयो रह्यो भय दाव ॥
बुंदिय दल सम्मुह बढे, आमैरे[6] उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार जोध चालुक्क अति जुट्टिय ॥
साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुट्टियँ ॥
जोरावर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥
बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिय अग्गह ॥ वैवाह
जगभानु हड्ड उद्धत जुरयो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥
सजि माँहि[7] माँहि दुव दल सुभट लग्गे इम लग्गन[8] खरन॥१७२॥

॥ १६५ ॥ * देख कर † देखे ‡ सिचाण (बाज, शिकरा) पक्षी ने § तीतर पक्षियों को ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं को इसके बरने की चाहना ही रही अर्थात् मरा नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को ४ जय-रूपी रत्न नहीं मिला सो बुधसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नाले में छिपा रहा ६ आमेर के ॥ १७१ ॥ ७ लड़े ८ आगे ॥ १७२ ।

[निः शाणी]

दोऊ ओर दुबाह यों असि वाह अछक्कैं ॥
डेरों डाहल[2] डिंडिमी डक्कौं डक्क डक्कैं ॥
सेल मचक्कैं संकुले[3] अति घाय उबक्कैं ॥
सीस कपाली संग्रहैं काली सु किलक्कैं ॥ १७३ ॥
खूब बजाई खग्गनैं धारा धमचक्कैं ॥
कुक्कैं कोड़ कराहिकैं कमठेस मचक्कैं ॥
नीसासा नासानुगी[6] आसां[7]गज तक्कैं ॥
भोगी भोग[8] न झिल्लिसक्कैं मुम्मी[9] अकबक्कैं॥१७४॥
[10]चौहों दिस [11]रोहों रुक्के [12]छोहों भट छक्कैं ॥
[13]जेड्डे जंजीरन जरे बड्डे गज बक्कैं ॥
ता[14]जी तंगन तोरिकैं फालों फरक्कैं ॥
मेह अडंबर मंडती रज अंबर ढक्कैं ॥ १७५ ॥
के सूरन थक्कैं कलह के हूरन तक्कैं ॥
गात नमावैं गिद्धनी गिलि गूद गजक्कैं[15] ॥
के घायक पायक कटैं साय[16]कैं सकसक्कैं ॥
खंधे खेलह खिल्हारके भट सेल मचक्कैं ॥ १७६ ॥
खंड चटक्कैं खुप्परी लागि लुत्थि लटक्कैं ॥
सेलों मार सुमार ह्वै असवार उचक्कैं ॥
धुक्कि हत्थी धीरन धरैं जंजीरन जक्कैं[17] ॥
[18]लकलक्कैं बरछी लगत छलि घाय छछक्कैं ॥ १७७ ॥
रीस बटक्के अगके के सीस पटक्कैं ॥

१वीर२बाच विशेष३अवकाश रहित४शिव॥१७३॥५वराह६नासिका के साथ चलनेवाले निश्वास से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर फणों पर भूमि नहीं झेल सका ॥ १७४ ॥१०चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध १३जाडे [मोटे]१४घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ चारभंजनें [हूंग] १६ बाण ॥ १७६ ॥ १७ जंजीरों से बांध कर पकड़ लेते हैं १८ कांपते हैं ॥ १७७ ॥

के कंकट संकट कटैं के तेग तटक्कैं ॥
सिर फट्टैं धर उल्लटैं कढि नैंन फड़क्कैं ॥
हय हट्टैं पय उच्छटैं रपैं अंग रैड़क्कैं ॥ १७८ ॥
लोही बूंदनि लालकी धारा धकधक्कैं ॥
के डाकिनि खप्पर भरैं के साकिनि छक्कैं ॥
चंड कृपानी चंचला चढि अंभ चमक्कैं ॥
यौं अंबर आयुध उडैं जिम नाग लटक्कैं ॥१७९॥
वीरौं वीर बराबरी तरवारि तरक्कैं ॥
दो हत्थन झारैं दपटि के वत्थन हक्कैं ॥
के भंबक बंबक बजैं के डोल डमक्कैं ॥
के जंबुक अड्डैं फेंकरा के कंक किलक्कैं ॥ १८० ॥
के बंदी कुक्कैं विरद रैंसवीर रचक्कैं ॥
सूर दुरक्कैं सम्मुहीं नभ कूर थरक्कैं ॥
तीर दुसारौं निक्कसैं रनधीर रैंटक्कैं ॥
के भीतर मातर कहैं के कातर चक्कैं ॥ १८१ ॥
सोर सलक्कैं संकुली लपि घोर तुपक्कैं ॥
के कंकट आटोपकैं के टोपैं चपक्कैं ॥
धाये बद्दल धूमके छाये छोनि ढक्कैं ॥
कंपि वरक्कैं के झुकैं पय कंपि लरक्कैं ॥ १८२ ॥
धाम हलक्कैं के हक्कैं हत्थीन हलक्कैं ॥

---

१ कवच ले घिरे हुए २ वेगवान होकर ३ दौड़ते हैं ॥ १७८ ॥ ४ सावन की डोकरी (वीरबहूटी) के समान लाल रक्त की धारा निकलती है. ५ भयंकर खड्ग रूपी ६ विद्युत् [बिजुली] ७ आकाश में ८ सर्प ॥ १७९ ॥ ९ वीरों वीरों में बराबर १० नगारे ११ गीदड़ १२ शाल (कुत्ता, लुकड़ा) ॥ १८० ॥ १३ भाट १४ वीर रस बहती है १५ दोनों ओर फूट कर १६ लड़ते हैं १७ माता माता १८ कायर ॥ १८१ ॥ १९ भरी हुई. कितने ही टोप कटते हैं, तब कितनेक २० कवचों को २१ मस्तक पर ढक लेते हैं. धुएं के बादल दौड़ कर २२ भूमि को ढक देते हैं ॥ १८२ ॥ २३ हाथियों के हलके [लो हाथियों के समूह को हलका कहते हैं].

गीत अलापौं जुग्गिनी लै जात ललक्कैं ॥
ग्राम सुपै[1] गंधारमैं[2] तीखे स्वर तक्कैं ॥
ज्यौं नर त्यौं हैवर[3] उडैं ज्यौं गैवर[4] जक्कैं ॥ १८३ ॥
धाता[5] जग निर्म्मानके[6] अभिमान असक्कैं[7] ॥
पानी सुक्खि पतालसौं जिम थाल धरक्कैं ॥
अग्घे अग्घे[8] होहु यौं बैंडे भट बक्कैं ॥
त्यौं त्यौं पय पच्छे लगैं छत्ती धक धक्कैं ॥ १८४ ॥
समय घोर संहारको[9] इहिंरीति उबक्कैं ॥
कौंन पिता को पुत्र यौं नांते[10] सब थक्कैं ॥
उब्बरिबेमैं[11] इक्कसे मन भीतैं[12] मुरक्कैं ॥
जिम तिम प्यारे जीवकौं तजनौं नन तक्कैं ॥ १८५ ॥
कलबल्ली[13] बानी कहैं भ्रमि भीरु भटक्कैं ॥
पाय अटक्कैं पैंगडौं[14] लरि लुत्थि[15] लटक्कैं ॥
अंत उलज्झै अंतसौं जिम फंद जरक्कैं ॥
इक्क झटक्के इक्कौं पखरैत पटक्कैं ॥ १८६ ॥
केते होदन कंगुरौं खुरताल खनक्कैं ॥
कांपि कलेजे के कहैं के ढेंहर[16] ढक्कैं ॥
पिट्ठि मचक्कैं पंसुली रीढैं[17] बरक्कैं ॥

---

१ गाती हैं २ सो भी गांधार ग्राम में तीखे स्वर से गाती हैं 'राग के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, यथा

"षड्जग्रामो मेदादौ मध्यमग्राम एव च ॥
गान्धारग्राम इत्येतत् ग्रामत्रयमुदाहृतम्" ॥

३ घोडे ४ हाथी गिरते हैं ॥ १८३ ॥ ५ ब्रह्मा संसार ६ बनाने के अभिमान में ७ अशक्त होता है अर्थात् जितने मनुष्य मारे जाते हैं इतने पीछे बनाये नहीं जाते ८ आगे बढो आगे बढो ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १० सम्बन्ध ११ बचने में १२ भय से ॥ १८५ ॥ १३ कलराई हुई १४ घोडों के पागडों (रकाबों) में १५ मृतक शरीर ॥ १८६ ॥ १६ शरीर का पिंजर १७ पीठ की लंबी हड्डी

केते हूल कृपानकी [1]बांतुल बक्कक्कैं ॥ १८७ ॥
फट्टैं मुंडन फांक ज्यों दारिम दर्रक्कैं ॥
कंध [2]कफोणी [3]कर कट्टैं [4]करकोर्चें करक्कैं ॥
[5]कट्टे किरत नितंब के जिम कच्छप जक्कैं ॥
कटि [6]जंघा सत्थी कट्टैं ह्त्थी हनि हक्कैं ॥ १८८ ॥
[7]व्यंजन प्रेत बनात के [8]गहकाति गटक्कैं ॥
केते टोप [9]कटाहक्कैं पय [10]लोहितैं पक्कैं ॥
[11]ऊंबी [12]सिंबी अंगुली बहु सेकि बटक्कैं ॥
खाजे [13]पूंपी खल्लके ताजे करि तक्कैं ॥ १८९ ॥
[14]खुरमाँ खंडी खुप्परी चक्खैं धँमचक्कैं ॥
भेजा भात भरायकैं गिलि जात [15]गँजक्कैं ॥
फैले घेउर पिप्फरन [16]छैले बनि छक्कैं ॥
बुक्का ठौर बनायकैं [17]बुक्का भरि हक्कैं ॥ १९० ॥
[18]भुंजन ऐसे भूत गन करि केक किलक्कैं ॥
जिहिँ [19]वेलों संके जुरत बंके अकबक्कैं ॥

१तरवार की हूल से२चापड़ा (फाहला)॥१८७॥३कुहनी४हाथ का कवच (दस्ताना) ५ कटेहुए नितंब (हूंगे) गिरते हैं सो किधौं कच्छप पड़े हैं ६ नितंबों के नीचे की जाडी जंघा को (जांघ) और उससे नीचे की ओर घुटनों से ऊपर की पतली जंघा को सक्थी (साथल) कहते हैं॥ १८८ ॥ प्रेत७ भोजन के पदार्थ बना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए टोपों के ९ कड़ाह बना कर १० रक्त रूप पानी में पकाते हैं, उन में अंगुलियां रूपी ११ दांघी (जव, गेहूं का फल) और १२ फलियां सेक कर खाते हैं और खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुड़ियां बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥१४ उस युद्ध में कटी हुई खोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा रूपी भात मिला कर १५ खारभंजना (गजक) निगलते हैं फैलेहुए फीफरों के घेवर बना कर १६ रसिक होकर तृप्त होते हैं और बूकों (गुड़दों) के ठोर बना कर उनसे १७ मुख भरकर चलते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कितने ही भूतों के समूह किलकारियें करते हैं १९ उस समय टेढे वीर भी युद्ध

फाटि बक्कतर बिक्खरैं के टोप चटक्कैं ॥
फील छटक्कैं फाँदते खग हक्कु खटक्कैं ॥ १९१ ॥
भुल्लैं के मग भाँवरी पग पंक खचक्कैं ॥
घुम्मैं खेतरपाल लै घन रत्त घुटक्कैं ॥
चाहे रत्त चटक्किकैं चउसट्ठि६४चहक्कैं ॥
काय उभक्कैं के कटैं भरि पाय भभक्कैं ॥१९२॥
लग्गैं अंबर लायसी के घाय टपक्कैं ॥
के बटके बटक्के करैं भटकेन भमक्कैं ॥
नाच न चुक्कैं डाकिनी लै डाँच डचक्कैं ॥
ज्वाल भरक्कैं के जरी गजढाल ढरक्कैं ॥ १९३ ॥
बीर बक्कतर पारके दै तीर तमक्कैं ॥
दंत दमक्कैं हीरलौं चिनगी कि चमक्कैं ॥
सत्त लोक उप्पर सिकैं धर सत्त धमक्कैं ॥
परि अट्ठौं दिक्पालके कप्पोल कसक्कैं ॥ १९४ ॥
के भुक्कैं गाफिल कटैं लगि नैंन पलक्कैं ॥
सेस करक्कैं संकुली फनपंति फरक्कैं ॥
घायन सत्थे स्वास के भरि फेर्न भमक्कैं ॥
छोड़ गरूरी छोरि के सिर फोरि ससक्कैं ॥ १९५ ॥
भुल्लि भटक्कैं के भिरैं कलि खान कटक्कैं ॥
महिला पय मंजीरलौं हिंजीर ठमक्कैं ॥
बंबं ठहक्कैं बीरमैं के त्रंब त्रहक्कैं ॥

करने को संकते और घबराते हैं १ हाथी ॥ १९१ ॥ २ अँभल (प्रकार) खाकर ३ कीचड़ में घुसते हैं ४ रक्त की घूंटें ५ पीकर ६ शरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में ८ घाव ९ तरवारों के १० मुख में बड़ा ग्रास ११ हाथियों के नीलाथ गिरते हैं ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को खैंच कर १३ हीरों की भांति १४ जलते हैं १५ नीचे के सातों लोक धूजते हैं १६ कपाल (खोपरी)॥ १९४ ॥ शेष नाग की रीढक (पीठ की हड्डी) टूटती है और१७फणों की पंक्ति पुरकती है१८झाग १९ घमंड ॥ १९५ ॥ २० युद्ध में २१ स्त्रियों के पगों के नूपुरों के समान २२ सांकलें बजती हैं २३ नगारे २४ वीर रस में २५ तासे बजते हैं

पिट्ठि कसक्कैं*कच्छपी धर धुजि धसक्कैं ॥ १९६ ॥
वैं दंतुलि बाराहकी बहु भार बरक्कैं ॥
लै के घायल लेकलकी सैंटि निट्ठि सरक्कैं ॥
कै रजपूतौं बल कढैं घूंतौं परि धक्कैं ॥
पत्तौं खरक्कैं जुग्गिनी के रत्त छरक्कैं ॥
तक्यो जिन तैसो तुंमुल ते फेरि न तक्कैं ॥
तद्दिन पंचोलासपैं नर नास न थक्कैं ॥
यौं बुंदी आमेरकी अति लाज अटक्कैं ॥
हड्डे कूरम हल्लसौं हरवल्लन हक्कैं ॥ १९८ ॥

[दोहा]

इहिं अंतर अवसेर्से अब, दुवरनांडी दिवसेसैं ॥
बुंदी भट छिज्जत लख्यो, विजय कूरमन बेसैं ॥१९९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहदलेलसिंहोभयभूपलेनासमरतद्भयप्रच्छन्नासीनबुधसिंहकुत्साख्यापनं १ चाहुवानाभयसिंहसारसोपठक्कुरफतहसिंहेसरदाठक्कुरकोजूरामखुहाड़पतिश्यामलदासकूर्मचलसिंहबुद्धानीपतिबहादुरसिंहमारणानन्तरमरणं २ बुन्दीजयपुरवीरद्वन्द्व

* कच्छप की ॥ १९६ ॥ १ दांतों २ कंप ३ लज्जित होकर ४ घूनों के ऊपर ५ पत्र ६ रक्त ॥ १९७ ॥ ७ संकुलित युद्ध ८ उस दिन ॥ १९८ ॥ ९ बाकी १० दो घड़ी ११ सूर्य रहते १२ अंष्ट ॥ १९९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह और दलेलसिंह बुंदी के दोनों राजाओं की सेना का युद्ध होना और युद्ध के भय से छिप कर बैठे हुए बुधसिंह की निंदा की सूचना १ चहुवाण अभयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतैसिंह को मारना अभयसिंह का ईसरदा के ठाकुर कोजूराम को मारना अभयसिंह का खुड़ाड़ के पति स्यामलदास को मारना अभयसिंह का कछवाहे चलसिंह को मारना अभयसिंह का बुद्धानीपति बहादुरसिंह को मार कर मारा जाना २ बुंदी और जयपुर के वीरों का द्वंद्व युद्ध करना ३ चहुवाण दे-

भवन ३ चाहुमानदेवसिंहस्य नरूकासरदारसिंहहनन ४ देवसिंहस्य प्रे-
मसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारण ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसं-
ग्रामसिंहस्य कूर्मकरणसिंहासुहरण ६ रसोरपतिघासीरामस्य सं-
ग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारण ७ हतषट्कूर्मदेवसिंहमूर्च्छासादन ८
दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दीपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्य-
समाक्रमण ९ मुहूर्तावशिष्टास्तावलचुम्बिनि मरीचिमालिनि हत-
बुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णनं त्रयस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३३ ॥
आदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[दोहा]

नृपके बरजत जे निडर, अभय देव जिम आय ॥
तिल तिल बुंदिय बीर ते, तुट्टे असिन अघाय[1] ॥ १ ॥
तिनमैं इक१ जैतह तनय, देवा लरन उदार ॥
मिच्चु[2] न तउ मूरछि[3] परद, सुत्तो लि३[4] असि समार ॥

(षट्पात्)

परयो अभय[5]हरि प्रथम पारि[6] पंच५हि राजाउत ॥
पुनि निज संगहि परिगँ सुगत पूरन दोऊ२सुत ॥
हड्ड देव पुनि हनिय नँरुव सिरदार स्वतंत्री[7] ॥

वसिंह का नरूके सरदारसिंह को मारना ४ देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले नरवर के सचिव खंडेराव को मारना ५ बुधसिंह के मामा के बेटे भाई संग्रामसिंह का कछवाहे करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का संग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छै कछवाहों को मार कर मूर्छित होना ८ बुंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में छिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का चढ़ना ९ बुधसिंह की सेना के मारेजाने पर दो घड़ी दिन बाकी रहते जयपुर की सेना के जय पाने का तेतीसवां ३३ मयूख हुआ और आदि से दोसौ एकहत्तर २७१ मयूख हुए ॥

१ तरवारों से तृप्त होकर ॥ १ ॥ २ मृत्यु नहीं थी तोभी ३ मूर्छित होकर ४ तीन तरवारों की मार सहित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पड़े ७ स्वतंत्री (अपने अधिकार में रहनेवाला, अथवा अपने अधिकार में लेकर) नरूके सरदारसिंह को

खिजि पुनि खंडेराय मारि नरउर पति मंत्री ॥
हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीराम कालि ॥
जद्दव कबंध तोंवर जुरे मच्चे ते अरि तीन३बलि ॥ ३ ॥

(दोहा)

अग्गन इम उमराव खट६, मारि देव बसि मोह ॥
रिपु रुंडन मंचक रसिक, लरि सुत्तो छकि लोह ॥ ४ ॥
करन हुकम अरु सेर इन, तीनन३हनि बलि तेग ॥
नाथउत्त संग्राम नर, बिनु सिर नच्च्यो बेग ॥ ५ ॥
बद्दलहू यह बप्पकैं, नामी बद्दल्यो नाँहिं ॥
सीस अरथ बुधसिंहकैं, दै पत्तो दिवं माँहिं ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार पर्‌यो चालुक जोधहिं हनि ॥
चालुक रूपहिं चक्खि पर्‌यो साँवल गोरन मनि ॥
जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुत्तो ॥
उदयसिंह हनि परिग हड्ड बखतेस बिरत्तो ॥
जगभानु हड्ड जुज्झत हन्यों कूरम पृथ्वीसिंह कँहँ ॥
लगि माँहिं माँहिं छिज्जे लरत तोउ न कोप समात तँहँ७

(दोहा)

बुंदीपतिको भट्ट बलि, नाम सु जद्दोराय ॥
अति उद्धत हनि पंच५अरि, तुट्यो असिन अघाय ॥ ८ ॥
बारहसै१२००इत्यादि बढि, दुवरदिस परिग ढुंबाह ॥
भट हजार१०००घायल भये, निडर देव तिन नाँह ॥ ९ ॥

---

१ युद्ध में २ पलवानों को अथवा फिर ॥ ३ ॥ ४ मूर्छा के ३ वश होकर ५ शत्रुओं के धड़ों रूपी मंच (च्यारपाई) के ऊपर ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ पिता के बद्‌लने पर भी ७ स्वर्ग में गया ॥ ६ ॥ ८ गौड़ वंश के क्षत्रियों का माणि ९ बिना शब्द करने वाला (मूनक होकर ॥ ७८ ॥ १० वीर ११ उन घायलों का निर्भय

(षट्पात्)

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंगभयंकर ॥
चरमं अद्रि ढिग चपल हंकि पहुँचत रवि हैवर[2] ॥
विखम[3] रारि हुव वंध कुत्थि पत्थरि[3] वट उब्बटं[4] ॥
दुंवघाँ सौं लखि दाव खेत खोजन भेजे भट ॥
कुणपन[6] कृसानु[7] चिति होम करि लाये डेरन घायलन ॥
जैपुर नरेस जगसिंह जय बुंदीपति अनजय बिमन ॥१०॥

[दोहा]

बित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालम जोर ॥
सोधत अब घायल सुभट, आगम निस दुहुँ ओर ॥
त्रि असि घाय जैतह तनयं, देख्यो घुम्मत देव ॥
निज सिविका पठवाय नृप, आन्यौं वह ढिग एवं[11] ॥१२॥
सुनत पराजय खग्ग सजि, खिजि तँहँ भोप खवास ॥
पासवान रघु दुहुँन पुनि, निरचयो लरि दिवँ[12] वास ॥१३॥
वरजतहू तिल तिल बढ्यो, कढि अरिन अति कोप ॥
स्वामि हारि सहि नहि सक्यो, भलभल नापित[13] भोप॥१४॥
कछु अनीकँ[14] बुंदीसको, अभय[15] संग इम लग्गि ॥
यह रन करि अब हारि गिनि, पलटयो द्रोहन पग्गि॥१५॥
समय घोर परखे सुभट, वदले सव नय बोयँ[16] ॥
घायहु सेके घायलन, सालम दल बिन सोय ॥ १६ ॥
रहे मनुज[17] बुंदीस ढिग, इक्क सहँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ ९ ॥ २ चपल घोड़ों को हांक कर सूर्य के १ अस्ताचल के समीप पहुंचते ही ४ मार्ग और विना मार्ग छूटे ३ फैल कर ५ दोनों तरफ से ६ मुरदों को ७ चिता की अग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हुआ ॥१०॥ ९ रात्रि के आने पर॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारों के तीन घावों से ११ इसप्रकार घूमते हुए को ॥१२॥ १२ स्वर्ग में ॥१३॥ १३ नाई ॥ १४ ॥ १४ सेना १५ अभयसिंह के साथ ॥१५॥ १६ नीति को डुबो कर ॥१६॥ १७ मनुष्य

सालम बिच दल नव सहँस९०००, मुरयो बहुरि अघ मूल १७

इहिं अंतर अंधार अति, कुहु निस आगम कीन ॥

बुंदीपति मतिमंद बुध, नौंती बिपति नवीन ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

जिहिं बुंदिय हित देवसिंह मैंनन रन मारिय ॥

जिहिं बुंदिय हित समरसिंह बर दुर्ग बिथारिय ॥

जिहिं हित सूरजमल्ल रतन रानाँ खिजि खद्दो ॥

जिहिं हित भोज सजोर जारि रु सूरति जय लद्दो ॥

जिहिं हित जयसिंह संभर सता साहजिहाँकों सीस दिय ।

बुध धर्वहिं छोरि जारन बिरेय तद्दिन वह बुंदिय तकिय१९

(दोहा)

बुंदी पति बहुबिधि बिगरि, ऐसो भयउ असत्त ॥

अचे बिनु हल जिम अंधको, बरनी जाय न बत्त ॥ २० ॥

कूरम दल इत बिजय करि, सालम सहित सहास ॥

अमल किन्न आमैरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥

इसँ कुसथल अनिरुद्ध सुंव, पाय अनादर उच्च ॥

बिमैंना रत्ति बितायकैं, कोटाकों किय कुच्च ॥ २२ ॥

संभर देव सु जैतसुत, असि त्रय३घायल अंग ॥

छुट्टी जानि स्वकीय १७छिति, सिबिका चढि हुव संग॥२३॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अमावास्या की रात्रि २ बुराई ॥ १८ ॥ ३ मैनों को ४ श्रेष्ठ गढ का विस्तार किया ५ सूरत नामक शहर ६ जय करनेवाले ७ चहुवान शत्रुशाल ने ८ पति बुधसिंह को छोड कर. जारों से ९भोग करने को उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (नाताकत) ११जिसप्रकार बिना स्वर की सहायता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिसप्रकार उस अन्ध की वार्ता नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ हास्य सहित ॥ २१ ॥ १३ हलकारवा १४ बुधसिंह १५ उदास होकर रात्रि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी १७ भूमि छूटी जानकर

(षट्पात)

चढि चल्लिय चहुवान छोरि बुंदिय छत्राधम[1] ॥
कोटा निबसथ मंगरोल किय तँहँ सुकाम क्रम ॥
हो दुवरानिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥
पठयो सालक[3] पास कुमर निज रु यह कहाई ॥
तुम देवसिंह जिहिँ तिहिँ तरह याहि जिवावहु छन्न अब ॥
जयसिंह जोर पिक्खहु जबर गुमर[4] तोर मंडत गजब ॥२४॥

[दोहा]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गेंदा गोत ॥
जिहिँ निज धावर[5] धाइ जुत, पलनाँ लिय धरि पोत[6] ॥२५॥
चुंडाउत सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥
कढन छन्न नृप कुमरकेँ, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[पादाकुलकम्]

धावर भारतसिंह पिधाये, चम्मक्कि उत्तरि सजव चलाये ॥
डब्भिय नाम बिंदुमति ग्रामह, आय उहाँ बिरचिय बिश्रामह॥२७॥
जहँ दलसिंह हड्ड भोजाउत, जतनन रक्खे गेह बिनय जुत ॥
कुमर उमेद रत्ति यँहँ कट्टी, प्रात लगिय बेघम मग पट्टी ॥ २८ ॥
गिरिबर घंटिय लंघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥
देवसिंह मातुल बेघम-हुत, जाय बधाय लयो उच्छत्र जुत ॥२९॥
इत सालम लागि पिट्ठि उडायउ, मंगरोल बुद्धहिँ पहुँचायउ ॥
पच्छो मुरि आयउ बुंदिय प्रति, अमल स्वकीय कियउ जय उन्नति ३०

॥२३ ॥ १ अधम (नीच) क्षत्रिय २ ग्राम३अपने साले बेघम के रावत देवसिंह के पास ४ घमंड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ धाऊ ६ बालक [उम्मेदसिंह] को पलने में धर लिया ॥ २५ ॥ २६ ॥ ७ छिपेहुए अथवा दौड़े ८ बुन्दी का ग्राम ॥ २७ ॥ ९ यतनों से १० नम्रता सहित ११ शीघ्रता की दौड़ से॥२८॥१२श्रेष्ठ पर्वत (आडावला) की घाटी लांघ कर १३ मामा ॥ २९ ॥ अपना अधिकार ॥ ३० ॥

दिन्नी मुलक दलेल दुहाई, सठको[1] नृपता[2] अधिक सुहाई ॥
छत्रमहल बिच रहि छत्राधम[3], कियउ राजधानी भुग्गन क्रम ।३१।
भुल्लि[4] गुनहं इम ऐस भुलायो, मनहु राज पीढिनतैं पायो ॥
झूलत कर दासिन झक झोरन[5], कनक[6] पउत्त कनक[7] हिंडोरन।३२।
मंगरोलतैं इत मति[8] मुद्दह, निजु सुधि चल्यो करभ[9] जिम बुंद्दह[10] ॥
स्यंदन[11] सत१००बीरन[12] बत्तीसह, वहलदल[13] डेरा इकबीसह२१॥३३॥
पुनि सतसत्तरि१७०सकट[14] प्रमानह, रुचिर[15] पालकी तखतरवानह[16]॥
इत्यादिक बहु रखत[17] सुहाये, सरफहीन तत्थहि रखवाये ॥ ३४ ॥
अप्प चल्यो जित मुँह[18] तित ऐसैं, पै[19] न बिचार कोन गृह पैसैं ॥
गहन लंघि तारज[20] गिरि घंटिय, सूखन भंजि बलहिं[21] जर बंटिय ३५
राजा इम पहुँच्यो प्रमाद रढ[22], ग्राम प्रेमपुर ह्वै मधुकरगढ ॥
कछुदिन तत्थ रह्यो कउलेसह[23], देखन चह्यो रानको देसह ।३६।

(दोहा)

असित जेठ तेरसि१३दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥
मधुकर गढतैं बुद्ध नृप, मुरि चल्ल्यो मेवार ॥ ३७ ॥
कुसलसिंह भट रानको, भैंसरोर गढ धाम ॥
तत्थ बंभनी[24] सरित तट, किन्ने जाय मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगताउत भट भैंसरोर पति, बहु पैज[25] कुसलसिंह रचि विन्नति ॥

---

१ दुष्ट का २ राजा पन ३ अधम (नीच) क्षत्रिय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर ५ दासियों के हाथों के झोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्वर्ण के हिंगलाट पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमूढ ९ ऊंट के समान १० बुधसिंह ११ रथ १२ हाथी १३ दल बादल (यह बडे डेरे का विशेषण है) ॥ ३३ ॥ १४ छकडे (गाडियां) १५ सुन्दर १६ तखतरवाँ (खाला) नरयान विशेष १७ सामग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ परन्तु २० पर्वत का नाम है २१ सेना को ॥ ३५ ॥ २२ बावलापन के हठ से २३ वाममार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४ बम्हणी नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आय नजरि हय किन्नौं, अरु तिहिँ नृपहु बाजि इक[1] दिन्नौं ॥ ३९ ॥
रत्ति इक्क[2] पिच्छैं बेघम रहि, चाहुवान गो उदयनेर चहि ॥
आय रान संग्राम मन्नि सुहं, मोहिल्ला नगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥
मिलतहि सुद्द बुंदीस बढायो, चरन रान प्रति हत्थ चलायो ॥
रान सु हत्थं पकरि अनुरत्तो, मुसकि लाय छत्तिय मंय मत्तो ॥ ४१ ॥
इहिँ बिधि प्रकट कियो अति अद्दर, अरु बिमना कूरम हित अंतर
प्रबिस्यो पुनि बुद्धहिँ लै पत्तन, महिमानी पठई संकोचन ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे संग्रामहतक्षतप्राणगणनया सह समराङ्गणान्वेषणात्यक्तबुधसिंहबुन्दीसुभटसालमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसथलाधिकारानन्तरप्रद्रुतबुधसिंहकोटादिग्गमन २ कोटामुक्तपत्नीद्वयबुधसिंहस्वकुमारोम्मेदसिंहबेघमप्रेषण ३ मंगरोलमुक्तगजरथादिपरिकरबुधसिंहोदयपुरगमनं चतुस्त्रिंशो मयूखः ॥ ३४ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७२ ॥

(दोहा)

---

१ घोड़ा ॥ ३९ ॥ २ छुख मान कर ॥ ४० ॥ ३ मांद ४ राना के चरणों में हाथ चलाया ५ प्रीति युक्त हुआ ६ हँसकर छाती के लगा कर ७ हृदय में मदमस्त हुआ ॥ ४१ ॥ ८ जयसिंह के कारण भीतर से उदास था ९ नगर में गया १० अपने घर पर आने के संकोच से महिमानी भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र को हेरने का वर्णन और बुन्दी के उमरावों का बुधसिंह को छोड कर सालमसिंह से मिलना १ कुसथल में सालमसिंह के अमल करने पर बुधसिंह का कोटा की ओर जाना २ बुधसिंह का अपनी दोनों राणियों को कोटे और कुमर उम्मेदसिंह को बेघम भेजना ३ बुधसिंह के हाथी रथ आदि सामान को मंगरोल में छोड कर उदयपुर जाने का चोतीसवां ३४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बहत्तर २७२ मयूख हुए ॥

इत कूरम मालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥
केदन मन्नि निज भटनको, कुप्पि फिर्‌यो जयकाम ॥१॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बग्ध[2] बिच्छिय[3] चटकायो, जानि प्रलय भूतेस[4] जगायो ॥
कुद्ध[5] कलहँ जयसिंह मानि किय, कोटा सीम सुकाम आनि किय२
हो दलेल संगहि सालम सुत, चहयो राज जिहिँ स्वामि धरम च्युत[6]
वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम द्रुत सरित[7] कुसक तट आयो॥३॥
कुसकहि गयो मिलन कोटापति, बिरचिय समय जानि अति बिन्नति
हय गज वसन नजरि करि हड्डा, तजि नृप धरम[8] खुच्यो अघ[9] हड्डा॥४॥

पज्झटिका ॥

उज्जैन अंनुग[10] नृप करि इकत्त, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत्त ॥
लिय बुद्ध[11] हिंतु जो दल[12] लिखाय, दिय प्रकट बंचि सबहिन दिखाय५
कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सक्खि[13] निज भटन लेह[14]
अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, स्वी करहु हुकम दिल्लीस संकि६
कोटेस छाप तब प्रथम कीन, इत ओर नृपन पुनि छापदीन ॥
सूबानुग[15] भूपन सबन रक्खि, राजा लिखाय लियटेक रक्खि॥७॥
पुनि तिहिँ सुकाम कूरम प्रबीन, क्रमजुत दलेल[16] अभिसेक कीन॥
कोटेस हत्थ पहिलैं कराय[17], बलि तिलक हत्थ अवरन बिधाय ८
करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्भ, सिर धरिय छत्र नग ललित[18] लुम्भ
पुनि ढोरिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

---

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ क्रुद्ध होना मान कर जयसिंह ने कूंच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी ॥ ३ ॥ ८ राजाओं का धर्म छोड कर ९ पाप के खड्डे में फसा (गडा) ॥ ४ ॥ १० सेवक ११ बुधसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ साक्षि १४ लेख ॥ ६ ॥ १५ सूबा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सूबे के राजाओं ने ॥ ७ ॥ १६ दलेलसिंह के १७ कराके ॥ ८ ॥ नगों की १८ सुन्दर लूंबोंवाला ॥ ९ ॥

अरु कोटापतिसों कहि अठेल, बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥
जो आवहिं बुदिय सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु लुट्टि॥१०॥
हय अट्ठ सप्त इक १७८७ अब्दै मान, बनि बिसद जेठ तेरसि १३ विधान ॥
इम करि दलेल अभिसेक अंक, समयानुकूल्य कूरम निसंक ११
निज कृष्णा कुमरि तनया सु नाम, लाँगलि भिलाय ताके ललाम
मन्नि सु दलेल जामात स्वीय, गज इक१अरोहि दोऊ२गेरीय१२
कोटेस पटालयं किय प्रयान, थिर हुव त्रय३इक१हि तखत थान
सिरुपाव बाजि द्वय२दव२नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३
तदनंतर कूरम तोरि तिक्ख, कोटेसहिं कोटा दियउ सिक्ख ॥
उज्जैन अनुग अवरहु असेस, दै सिक्ख रु पठये स्वस्व देस ।१४।
कूरम दलेल जुत बिरचि कुच्च, आयउ भुव कुसथल गुंमर उच्च ॥
संग्राम भुम्मि तँहँ लखि समस्त, आत्मीयें भटन बंटिय अत्रस्तं१५

[दोहा]

इहु अभय पहिलैं हरियँ, सारसोप पति स्वास ॥
वाके सुत रतनहिं दियउ, पैत्तन पंचोलास ॥ १६ ॥
अजितसिंह कोजुव तनय, ईसरदापुर ईस ॥
कुसथल पुर ताकों दयो, हठि जयसिंह महीस ॥ १७ ॥
साँवलदास सुहाड़पति, सुत सोभाग सनाम ॥
चाहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥
नाह नगर नानेड़िको, आहव मृत अचलेस ॥

---

१ नहीं डिगै जैसा (यह दलेलसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी के उमराव॥१०॥ ३ प्रमाण वाले सम्वत् में ४ शुक्ल पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७ नारियल ८ अपना जमाई॥१२॥९ पहले हाथी पर दोनों राजा सवार होकर १० डे-रों में ॥ १३ ॥ ११ जिस पीछे १२ प्रताप की तीक्ष्णता से ॥ १४ ॥ १३ बड़े घमंड से १४ अपने उमरावों को १५ निर्भय होकर बांटी ॥ १५ ॥ १६ अभयसिंह ने १७ लिया १८ पुर ॥ १६ ॥ कोजूराम का १९ पुत्र २० भूपति ने ॥ १७ ॥ १८ ॥ २१ युद्ध

च्यवन तास हरिसिंहकों, *वसु८ग्रामक दिय देस ॥ १९ ॥
सुवन बहादरसिंहको, पुर बुद्धानी †पाल ॥
दस१०ग्रामक तिहिं हित दये, हुंढाहर गिनि ढाल ॥२० ॥
घासीराम रसोर पति, पुत्तहिं ग्रामक पंच५ ॥
दिय भूपति जयसिंह हुत, पहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥
कपंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अभयसिंह आत्मज अधम, नाथूरामह नाम ॥
पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसों करि साम ॥ २२ ॥
यातैं नहिं बलवन लियउ, मिल्यो जानि इन माँहिं ॥
नाथूरामहिं मन्नि निज, विस्वास्यो गहि माँहिं ॥ २३ ॥
देवसिंहकी मेदिनी, इम बंटी कछवाह ॥
देवहु गिनि बुद्धहिं अधन, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥
पुनि तजि पंचोलासकों, किय जयसिंह प्रयान ॥
प्रविस्यो जैपुर निज नयर, उद्धत विजय अमान ॥ २५ ॥

सोरठा ॥

स्वीय जननिके सत्थ, उदयनेर ही जो अवहि ॥
तनया बुल्लिय तत्थ, कारन ब्याह दलेलके ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुत समेत जयसिंहसों, रानाउति सु रिसाय ॥
बरख छिंयासी ८६ माघ बिच, पत्ती पीहर जाय ॥ २७ ॥
ही तबतैं तत्थहिं सुन्यों, अब तनया आव्हान ॥
सालम सुतके ब्याहकों, यातैं पठई सा न ॥ २८ ॥

में मरा *आठ उत्तम ग्राम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेवाला ॥ २० ॥ १ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्धन जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर बुलाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥ ७ पुत्री का बुलाना ८ उसको नहीं भेजी ॥ २८ ॥

कूरम पुनि कहि मुक्कलिय, नहिँ यह सालम नंद ॥
है अब यह बुंदीस *सुव, अधिप दलेल अमंद ॥ २९ ॥
हुकम साह लिखवाय इम, दिय इहिँ राज्य दिवाय ॥
जिहिँ रक्खन हम रान जुत, सब कछवाह सहाय ॥ ३० ॥
यातैं कछु न बिचार अब, इहिँ ललाट नृप अंक ॥
तनया देहु पठाय तुम, सोक बिहाय निसंक ॥ ३१ ॥
निज रानी प्रति पत्र इम, पठयो कूरम पाल ॥
पै कुमरी कछु रोग पगि, आय सकी नहिँ हाल ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहस्योज्जयनीतो बुन्दीदिग्गमन १ बुंदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासम्बधंकरण २ हटकुसस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुंदीग्रामवितरण ३ दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनवर्णनं पञ्चत्रिंशो मयूखः ॥ ३५ ॥
आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७३ ॥

(दोहा)

इत नृप प्रविस्यो उदयपुर, स्वसुर[2] हवेली पास ॥
औंधे छज्जन[3]के महल, उतर्यो तत्थ उदास ॥ १ ॥
मोदक[4] फल भाजन[5] अमित, पुनि रुप्पय सत पंच ५०० ॥

---

* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का उज्जैण से बुन्दी की ओर आना १ दलेलसिंह के बुन्दी का राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेलसिंह से संबन्ध करना २ राजा जयसिंह का कुशलथल के मुकाम युद्ध क्षेत्र को देख कर अपने मरे हुए उमरावों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागीर में देना ३ जागीरें दिये पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तिहत्तर २७३ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह २ श्वसुर की हवेली [जहां पर अब रेसीडेंसी है] के पास ३ औंधे छाजों के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं)॥१॥ ४ लड्डू (मिठाई) ५ पात्र

मि दिस ॥
बिदित बिजय दसमी सनि बासर, बिंटि अहमदाबाद लयो बेर२२
अंग कछुक तोपन रचि जाहिर, बुल्ल्यो बहुरि डाक दै बाहिर ॥
लखि आवत रट्ठोर लरन हित, चहि रन सब इंकिय प्रसन्न चित२३
ऊदाउत चंपाउत उद्धत, मेरतिया कुंपाउत दृढ मत ॥
जैताउत पुनि जैतमालउत, वल्लूाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥
पाताउत रु कलाउत प्रतिभर्ट, बढि धूहड़ रानाउत रन वट ॥
भद्दाउत रु महेचे बिजुभय, रूपाउत रु सताउत अतिरयं ॥२५॥
गोगाउत रु करमसीउत जँहँ, देवराज रनधीर बंसि तँहँ ॥
चाहड़देवउत रु पोकरनाँ, चंडाउत हुमंढि दृढ मरनाँ ॥ २६ ॥
जोधे रतन केसरी कुल भव, धंधल अरु सिंधल अरि बन दँव ॥
भूपतिउत रतनोत वडे भर, मंडनउत चुंडाउत असिकर ॥ २७ ॥
बरसिंहोत नराउत अति बल, सोहड़ रायपालउत अतिभल ॥
रनमल्लोत मंडले रनरत, मुदित भारमल्लोत लरन मत ॥ २८ ॥
बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥
नृप अभमल्लहिँ हत्थ दिखावत, लगे लरन मुच्छन कर लावत २९
सरबुलंद सूरज कर सक्खियँ, निडर मिच्छ उततैं हय नक्खिय

---

१ दिन २ श्रेष्ठ अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ क्रोध दिखाकर ॥ २३ ॥ (अब यहां राठोड़ों की शाखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ शत्रु से युद्ध करने वाले ५ उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह विपत्ति के दिनों में मारवाड़ में 'लोया-णा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोयाणा के ठाकुर को 'राणा' की पदवी दी थी सो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणावत कहलाते हैं और राव रिड़मल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वं-श वाले राणावत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से प्रसिद्ध है परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ६ वड़े वेग वाले ॥ २५ ॥ ॥ २६॥ ७ शत्रु रूपी वनों की अग्नि ८ हाथ में तरवार रखने वाले ॥ २७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करने वाले ॥२८॥ १० साक्षी करके ११ म्लेच्छ ने

आकुल भोगे सहँस अकुलानैं, डग मगि पव्वय कूट डुलानैं।३०
घने घुमंड वग्ग इँचि घोरन, रारि मचिग मिच्छन रट्ठोरन ॥
किलक प्रेत डाकिनि गन किन्नी, लॉस्य व्यक्ति चउसट्ठि ६४ न लिन्नी ॥ ३१ ॥
डिगि वीचिन सिंधुन जल डोह्यो, अरुन अव्वँ सप्तक अवरोह्यो ॥
कटि कंकट निकसत बपु कैसैं, जिह्मग गन कंचुक तजि जैसैं।३२।
कटि कटि कुंभ तिरत सोनित किम, जल अगाध घट उडुप ऐंथुल जिम ॥
अली इमाम होत उत औरव, इत हरि अच्च्युत भूतनाथ भव॥३३॥
भूत किलकि कहुँ हय भँरकावत, गौ कि चोर लखि ग्वाल चलावत
कहुँ भट चरन रकाबन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत॥३४॥
फट्टित केतु इँभन फहरावत, रूंभों तरु कि अँद्रि लहरावत ॥
गुटिका भ्रमत रीति यह रक्खिय,मनहु क्रुद्ध सँरघाभिध मक्खिय३५

निर्भय होकर घोड़े उठाये १ कर्तव्यता में मूढ (अब क्या करना चाहिए) हो कर शेष नाग के हजार फण घबराये और पर्वत हिलकर उनके २ शिखर झुके ॥ ३० ॥ बहुत घमंड से घोड़ों की बागें ३ खिंच कर (घोड़े दौड़ा कर) म्लेच्छों और राठोड़ों के युद्ध हुआ वहां प्रेतों ने और डाकिनियों ने किलक करी ५ चौसठ शरीरों से योगनियों ने ४ नृत्य किया ॥ ३१ ॥ ६ तरंगों ने चल कर समुद्र के जल को मथा और सूर्य के सारथि अरुण ने सूर्य के ७ सात घोड़ों के समूह को ८ रोका ९ कवच फट कर वीरों के अंग ऐसे निकलते हैं जैसे १० सर्पों का समूह कांचली छोड कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे १२ गहरे जल में घड़ा (कलश) तिरे अथवा १४ बड़ी १३ नाव तिरै तैसे ११ हाथियों के कुंभ-स्थल कट कर रुधिर में तिरते हैं उधर (म्लेच्छों की ओर) तो अली और इमाम आदि पैगंबरों के १५ शब्द करते (नाम लेते) हैं और इधर (राठोड़ों) में विष्णु विष्णु और १६ शिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहीं पर भूत मिल कर १७ घोड़ों को चमकाते हैं सो मानों चोरों को देख कर १८ गऊओं को ग्वाल भगाते हैं जैसे मूर्ख चित्तवाला दुर्मति भोगों में पड़ा रहै तैसे १९ पागड़ों में चरण उलझ कर वीर लटकते हैं ॥ ३४ ॥ फटीहुई ध्वजा २० हाथियों पर उड़ती है सो मानों २२ पर्वतों के ऊपर २१ केल का वृक्ष झोका खाता है और क्रोधित हुई २३ मधुमक्खियों के समान भिनभिनाती हुई गोलियां भ्रमती

निकसत*गोद कपाल हिंतु इम, मंजु†मदन‡मधुजाल हिंतु जिम।
बहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि झल्लरि§देवालय लज्जत३६
इम रन करि रट्ठोर बढे अति, निच्छन इनत धन्वपति सम्मति ॥
सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ, हारयो तजि गुजरात सहित हठ ॥ ३७ ॥
बोलि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जिति रन आयो ॥
मुदित भयो सुनि साह मुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गय दुम्मद ३८
हुम्मद १ दुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनि तत्थहिं रक्खि गमन चहि
कत्तिय मास कुम्भ अप्पुन किय, दायज बसु बहुबिधि राउ दिय३६
दंतिय गढ्ढेराव सु दंतह, मास रहत बारह १२ मयमत्तह ॥
नृपके इमपालन वह नांयो, अंचत निगड जोर उफनायो ॥ ४० ॥
यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहँस१०००भेजि रुप्पय चर सत्थी॥
इत कोटेस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंत्र उपायउ॥ ४१ ॥
मयाराम बिप्राधम तत्थहि, बुल्ल्यो कुँवच कुँनय अघ सत्थहि ॥
कहा रान पुच्छत कोटेसहिं, दक्ख्यो इन पहिलें नृप देसहिं॥४२॥
इनकी लखि अबरन मन चल्ल्यो, तबहू इत न सुच्छ कर घल्ल्यो
कग्गर लिखि जयसिंह कथित किय, इनहिं पुच्छि लहिहो किम बुंदिय ॥ ४३ ॥

ह ॥ ३५ ॥ ‡ मधु मक्खियों के छातों (मुहाल के छातों) से सुंदर † मैंण निकलने के समान मस्तकों से * भेजे (मस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही शस्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिनको देख कर § मंदिरों में बजती हुई झालरें लज्जित होती हैं ॥ ३६ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि ३ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (मान हीन होकर) ॥३८ ॥ ५ धन ॥ ९ ॥ ६ गढेराव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के महावतों से १० नहीं आया ११ सांकलों को खेंचती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥४१॥ १३ नीच ब्राह्मण१५अनीति और पाप के साथ१४खोटे वचन बोला १६ बुधसिंह के देश का ॥ ४२ ॥ १७ पत्र १८ कहना

यह सुनि महाराव धंकि उठ्यो, रानहु विप्र अधमपर रुठ्यो ॥
इम नृपकाज बिगार बिप्र यँहँ, पहुँच्यो मगहि मद्ध्य संभर पँहँ४४
इम पुनि बुद्ध उदैपुर आयो, बिपति जोर सब गुंमर बिहायो ॥
सम्मुह आय रान हित सज्जिय, लै प्रविस्यो पत्तन चहि लज्जिय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुंदीहरणमन्त्रहेतुमहाराणासंग्रामसिंहस्य कोटामहारावदुर्जनशल्योदयपुराकारणं १ पाणिग्रहणहेतुबुधसिंहबांसवहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणादुर्जनशल्यक्रोधकरणं २ योधपुराधीशाभयसिंहाहमदाबादविजयनं ३ बुधसिंहोदयपुरप्रत्यागमनवर्णनं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७४ ॥

(षट्पात्)

रान नगर बिच रहिय हड्ड भूपति इक १ हायन ॥
सर सत५००रुप्पय नित्य रान पहुँचात मान मन ॥
सभा समय संभरहु जात पहुँ रान निकट जब ॥
अदब रक्खि अति अग्घ तखत तजिदेत रान तब ॥
लैजात आय सम्मुह सरल इकासन बैठत उभय२ ॥
संभरहिं मन्नि पाहुन सँमुद बिलु लुंदिय धारत बिनय ॥१॥

---

१ क्रोध करके(भीतर से जल कर) २बुधसिंह के पास ॥४४॥३घमंड छोडा ॥४५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुंदी लेने की सलाह करने के अर्थ महाराणा संग्रामसिंह को कोटा के महाराव दुर्जनशाल का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विवाह करने के अर्थ बांसवहाले जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कडुवे वचनों से दुर्जनशाल का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदाबाद को विजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के वर्णन का छत्तीसवां ३६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चोहत्तर२७४मयूख हुए ॥

४ एक वर्ष ५ रुप्य ६ एक गद्दी पर ७ हर्ष सहित ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुरोहित मंत्र बिगार्‌यो, नृपति रान हित तदपि[1] न टार्‌यो ॥
अक्खिय पुनि बुंदिय जब ऐहैं, तुमहिं भूप जावन तब दैहैं ॥ २ ॥
अवनि[2] दैन कूरम प्रति अक्खहिं, रानाँपनको गव्व[3] न रक्खहिं ॥
जब स्वाधीन राज निज जोवहिं, सुख सह निंद हमहु तब सोवहिं ।३।
तौलौं खरच स्वकीय मान[4] तत, दिन प्रति द्रम्म पंचसत ५०० प-
हुँचत ॥
कहि नृप कुम्मं खुसामदि कैहो, लगि हमरे हित बुंदिय लैहो ॥४॥
प्रनय[6] शावरे तैं कूरम पति, मम भुव जो दैहैं न टेक मति ॥
तो रन करि लैहौं कि तँतक्खिन, प्रीति तथा करिहौं परपक्खिन ।५।
सुनियह रान सुजान नीति सम, कहिय आज दिल्ली कर कूरंम ॥
अकबरपुर[11] अजमेर अवंतिय[12], सूबा तीन ३ अधीन साह किय ॥६॥
मित्र खानदौराँ जिहिं मन्नत, सेनानी[13] जु जवन पति सम्मत ॥
साहहु जास कथित[14] सिर धारत, वलि अवरन जिहिं सम[15] न बि-
चारत ॥ ७ ॥
पुनि निज बनिबनि स्वसुर साल प्रिय, अकबरतैं अवलौं धन संचिय ॥
अरु बहु मुलक अप्पन न ऐसो, जास सचिव राजामल जैसो ॥८॥
राय कृपारामहु वकील रत[16], जास कथित[17] जवनेस न लुप्पत ॥
गृह जाके दिल्लिय उमीर गन, पहुँचत कर जोरत किंकरपन ॥९॥
जिनकी अरज साहप्रति जंपत, बसु[18] अधिकार मिलत तिनकौं बत ॥

१ तो भी ॥ २ ॥ २ भूमि पीछी देने का ३ गर्व ॥ ३ ॥ ४ आप के खरच के प्रमाण (माफिक) बुधसिंह ने कहा कि ५ जयसिंह की ॥ ४ ॥ ६ नम्रता ७ उसी समय ८ जयसिंह के शत्रुओं से प्रीति करूंगा ॥ ५ ॥ ६ से १० जयसिंह पर दिल्ली के हाथ हैं (यहां लक्षणा से दिल्ली के पति का ग्रहण है) ११ आगरा १२ उज्जैन ॥६ ॥ १३ सेनापति १४ जिस जयसिंह का कहना १५ जिसके बराबर ॥ ७ ॥ ८ ॥ १६ अनुकूल १७ जिसका कहना ॥९ ॥ १८ धन और अधिकार सन्तोष दायक मिलते हैं

द्वे२ द्वे२ सत १००*सिविका†जिहिं द्वारह, बढि पंतिन ढकिजात बजारह ॥ १० ॥
बैठक जाहि खास खिलवत्तिय, रमत साह सतरंज हुलसि हिय ॥
जिनके घर औसे वकील जन, थिरन उथप्पि स्वामि जय थप्पन॥११॥
जंग विरचि तिनतैं को जित्तहिं, बिनुहित काहि बिगारहि ‡बित्तहिं
इहिं कारन तिनतैं रन उचित न, अवर उपाय रचहिं बहु अप्पन१२
§भेद उपाय कोहु नहिं संभव, लग्गैं नहिं बिनु समय जास लव¹ ॥
यातैं साम दान अनुसरिहैं, कूरमसौं तुमसौं हित करिहैं ॥ १३ ॥
बिनु नै²य समय होत नहिं चाही, सं³मर टेक नाहक तुम साही ॥
निज हठ तो मम राज्य नसेहौ, प्रं⁴ज्ञ तुमहु को फल तब पैहो॥१४॥
सच्च कहत नृप मु⁵ढ रिसायो, चलन हुकम सत्थ⁶हि पहुँचायो ॥
हे सब अनु⁶ग मूढ हथ⁷जोरे, न चलहु इम काहू न निहोरे ॥१५॥
सक बिक्रम ग्रह रु बसु सत्रह १७८८, बा⁸हुल मास वृथा करि बिग्रह ॥
अनखि⁹ चल्यो संभ¹⁰र अज्ञानी, बरजत रह्यो रान हित बानी॥१६॥
जद¹¹पि मुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन॥
पठये मि¹²ति दसतूर बुद्ध प्रति, इनअक्खिय हम करजदार अति१७
इनके दम्म पठावहु यातैं, बनि¹³कन दै हम करज बिघातैं ॥
तिनकी तीस सहँस ३०००० मु¹⁴द्रा तब, जानि बिपत्ति रान पठई जब ॥ १८ ॥
करज झारि तिनकारि कउले¹⁵सह, बुद्ध चलिय पं¹⁶सुमति नरवेसह॥

* पालकियें † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर द्वेष कराना (फोड़ तोड़) १ लेशमात्र ॥ १३ ॥ २ बिना नीति ३ युद्ध की ४ तुम बुद्धिमान हो ॥ १४ ॥ ५ मूढ ६ सेवक ७ हाथ जोड़नेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्तिक मास में ९ क्रोध करके १० बुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भी १२ दस्तूर के माफिक ॥ १७ ॥ १३ बनियों को देकर १४ रुपये ॥ १८ ॥ १५ वाममार्गियों का पति. १६ पशु की बुद्धि और मनुष्य के वेष से.

द्रुत*बाहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि †श्रीद्वार ‡हड्डइन१९
इकसत१००दम्म भेट हरि[1] अप्पिय, थाँवल[2] गाम मुकाम सु थप्पिय
बसि तत्थ रु दुव२मास बिताये, लंघन पुनि चालीस लगाये ॥२०॥
अधिक अफीम बढ्यो नृप अग्गैं, पैसे त्रि३मित नित्य हित पग्गैं॥
पुनि तिम मद्य अवर्य्यंहु पीवहिँ, जड़ बिनु भूख आयुबल जीवहिँ२१
असन लेत सत्तम७अट्ठम८दिन, तुच्छ बहुत सोपै न पचैँ तिन ॥
इहिँ बिधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तब चालीस४०लगाये२२
तबहि अफीम मद्य दुव त्यागे, ले पुनि पथ्य लोभ भुव लागे ॥
बिरचि कुच्च वह ग्राम बिहायो, लुट्टन रानाँ मुलक लगायो ॥२३॥
सठ नृप नहि परकरैं[5] समुझायो, बहु बहु लूट प्रपंच बनायो ॥
रानहु सुनि गिनि[6] मुद्ध रिसानोँ, बुद्ध सु कँउलन[7] हत्थ बिकानोँ २४
दुव२मिलानं कुंपासगि किन्नैं, दुव२त्रय३पुर गंधेरहु दिन्नैं ॥
पथ इहिँ रुक्कत चलन प्रमत्तो, पुर बेघम स्वसुरालय[9] पत्तो ॥ २५ ॥
बसु बसु सत्त इक्क १७८८ मित संवत, गैंउर[10] चउत्थि ४ सहस्य[11]
मास गत ॥
मंजु[12] गिन्योँ न जुद्द करि मरनौँ, स्वसुर अन्नजीवन लिय सरनौँ२६
परदुख सदय[13] हृदय देवहु पुनि, सालक निज ढुक्कहिँ आवत सुनि
अभिमुख[14] जाय निजालय[15] आनैं, बिनय प्रीति कर जोरि बखानैं २७
बुद्ध सुरुप्प महल्लन बसवायो, अप्प लालबारिय कढि आयो ॥
रखतैं[16] सुराजबाग खिलँ[17] रक्खिय, अब कैसैं निभिहोहु न अक्खिय२८

*काती वदि चौथ के दिन †नाथद्वारे में ‡हाडों का राजा आया ॥१९॥१ विष्णुभ-गवान् के भेट किये२थांवला नामक ग्राम में॥२०॥३तीन पैसा भर ४ वह अधम बुधसिंह मद्य भी पीता था॥२१॥२२॥२३॥ ५ परगह ने उस मूर्ख राजा को नहीं समझाया; अथवा उस मूर्ख ने परगह को नहीं समझाई ६ मूर्ख जानकर ७ वासियों के हाथ बिकगया ॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ ससुरे के घर में गया ॥ २५ ॥ १० शुक्ला ११ पौष मास १२ सुन्दर ॥ २६ ॥१३दयावान् हृदयवाले देवसिंह ने१४ सामने१५अपने घर ॥ २७ ॥१६सामग्री (सामान) १७ बाकी का ॥ २८ ॥

बुंदिय लोक बिचार बिहीनौं, क्रम लुट्टन तत्थहि अति कीनौं ॥
राउत देव तिनहि बरजाये, पै[1] न रहे तब ग्रहन पठाये ॥२९॥
सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपालंभ[2] देवहिं प्रति अक्खिय॥
धरनि बिपत्ति लोक मम धारत, वहिं[3] अत्थहि आधार बिचारत३०
लुट्टन खान देहु तुम सालकं[4], क्यौं मारैन पकरात कृपालक[5] ॥
जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु ओगन कहि मोरे॥३१॥
अति सहनत्त्व[6] देव अब लीनौं, बुद्ध हिंतु[7] बनि अधिक अधीनौं ॥
पंचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुप्पय अट्ठ ८ नित्य सु न रंचक[9] ॥ ३२ ॥
निबहनकों यह देव निवेदिय, जड़ संभैर[10] तोउ न धप्पत जिय ॥
करजहु करि रक्खैं नहिं कोऊ, समुभी तुच्छ मूढनृप सोऊ।३३।
अग्ग त्रिलक्ख हजार अठारह ३१८०००, भुगते दम्म करज सह भारह ॥
बसु सत ८०० नित्य दये इक १ बच्छर[11], तीस सहँस ३०००० हय[12] हित उदारतर ॥ ३४ ॥
बिभव देव जिहिं करज बिलायो, तोऊ अब गृह नजरि बतायो॥
हो सब हेयं[13] अधम नृप हड्डा, बिरचिय तदपि देव हित बड्डा[14]॥३५॥

[मनोहरम्]

बुंदीके बिनामति[15] बिडारि[16] देवेके जे,
तिन्हैं राखि बहु बेरन बिपत्ति बिकलायो नाँ ॥
याहीतैं रिसाय रान[17] छीनि लीनी बेघम,
कहायो नाँहि रक्खहु तथापि तास तायो नाँ ॥

१परंतु॥२९॥२ (उरहना) ओलंभा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे साले ५ मेरे लोकों को ॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पांच ग्राम पांच हजार रुपये सालाना आमद के ९ वह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥ ११एक वर्ष पर्यन्त१२घोड़े मोल लिये जिनके ॥ ३४ ॥१३ सब प्रकार से त्याज्य था१४बहुत ॥ ३५ ॥१५निर्बुद्धि१६निकाल देने योग्य १७ महाराणा ने

पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पैनई,
मिली पै मजबूती मानि मन मुरझायो नाँ ॥
चौंडासौं सपूत बप्प राउलके बंस कोऊ,
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुंदीपतिबुधसिंहचरित्रेमहाराणासत्योपदेशक्रुद्धत्यक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँवलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिफेनत्यजन १ मेदपाटग्रामलुण्टाकबुधसिंहश्वसुरदेवसिंहगेहबेघमगमन २ सोढापरितव्ययस्वगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः ॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि बरस दुरभिच्छ भयो अति, नहिँ तृन अन्न धनीहु धरैं नँति
इक १ रुप्पय उपधान्य जतन इत, मूल्य बिक्यो द्वैसत२००टकेन मित ॥ १ ॥

अब नृप तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिँ पच्छिय जिम
मनहुँ ताल सुक्कैं जल मच्छे, इम नहिँ गये छ्व सातक७अच्छे॥२॥

१पगरखियां (जूतियां)२ चूँड़ा के विना ३ बापा रावल के वंश में ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्र में महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़ कर नाथद्वारे होकर थांवला नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटते हुए बुधसिंह का अपने ससुर देवसिंह के घर बेघम में जाना २ असह खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने घर में रखने की रावत देवसिंह की प्रशंसा का सैंतीसवां ३७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचहत्तर २७५ मयूख हुए ॥

४ दुर्भिक्ष (कहत) ५ धनवान भी नम्रता धारण करते थे ६ अङ्क धान्य (सांवां, मळीचा आदि) ७ एक रुपये का दोसौ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ बिना पत्ते और बिना फलों के वृक्ष को पक्षी छोड़े जैसे१०सूखे तलाव में ॥ २ ॥

*यादि गजादि†रखत अब आयो, मंगरोल रक्ख्यो सु मँगायो ॥
नृप कोटेस सोहु पठयो तब, खान खरच दै जाहु कह्यो घन ।३।
इम ‡ठाँठाँ बहु बिभव रह्यो अब, संभरकौं निंदत जिहान सब ॥
पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा बढाय असन बहु छक्के ॥ ४ ॥
अग्गहि तजि कोटापति आहुति, आइ निज पीहर चुंडाउति ॥
हुति १ उति २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
[1]कोटापुरहि रही कछवाहिय, अवसु नृपहु बेघन अवगाहिय ॥५॥
अजैतसुवन उत देव जंग जय, [2]गनि बुद्धहिं अधन रु कोटा गय ॥
तत्थहि घाय अच्छ हुव तत्तो[2], पुनि कोटेस सभा वह पत्तो[3] ॥ ६ ॥
महाराव तब कहिय दर्प[4] मत, सारधलक्ख १५०००० पटा तुमरो
गत[5] ॥
हम दुवलक्ख२०००००पटा अबदेहैं, अरु अच्छत्व[6] तुमरे घर ऐहैं ७
अब बुंदीस नामहु न अक्खहु, गति अदब दुगुनौं[7] यह रक्खहु ॥
यहै सुनत देवा रिस आयो, दर्वीकर[8] जिम पुच्छ दबायो ॥ ८ ॥
उठ्यो भट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा बिच ओदक
नक १ दक २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
अरु उत्तर बुल्ल्यो असंक उर, पति कूरम अग्गैं दिल्लिय पुर ॥ ९ ॥
बुद्ध रु भीम उभय करि इक्कत, त्रय ३ नृप इक्क१ थाल जिम्मिय
तंत[9] ॥
हे मम जनक जैत तँहँ[10] हाजरि, कह्यो तिनहिं[11] कूरमपति हितकरि
सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अब न बिरोध सौम[12] हुव अप्पन

* स्मरण † हाथी आदि सामान ॥ ३ ॥ ‡ ठाम ठाम (जगह जगह) ॥ ४ ॥
१ बुधसिंह ने निर्धन वेघम का थाह लिया ॥५॥ २ ताता (चंचल) ३ गया ॥६॥
४ घमंड की बुद्धि से ५ गया ६ निर्मलता से; अथवा घायल हुआ उससे अच्छे होने के उत्सव में; अथवा तुमारे घर तक सम्मुख आवेंगे 'अच्छम् अभिमुखे' इति शब्दार्थचिंतामणिः ॥ ७ ॥ ७ सर्प ॥ ८ ॥ ८ मन ॥ ९ ॥ ९ बुधसिंह और भीमसिंह को १० तहां ११ जयसिंह ने ॥ १० ॥ १२ मिलाप

सु सुनि भीम*अग्घो कर किन्नौं, द्रुतहि[†]जैत उत्तर तब दिन्नौं११
हड्डनकी जननी रे[1]अघहिय, भामिनि गिनि बुंदिय तैं भुग्गिय ॥
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम स्वच्छ
मति ॥ १२ ॥

कहि इम दिय उठेलि ताको कर, वा[2]केसुतहिं कहत इम[3]अक्खर
अप्पन स्वामि तोहिनसुहावहिं, तोनहमहिंतवआश्रयभावहिं ॥१३॥
देव न इम परिखद बिच दब्यो, फिरि धकि उठत घाय इकफट्टयौं
महाराव कर जोरि मनायो, यह मन्न्यौं न मुररि तउ आयो।१४द्र-
फटत घाय [4]अंतक गद फैलिय, कतिक मास बिच त्रि[5]दिवबासकिय
इम भट देव धरम अवधा[6]र्यो,बिपति सहि रु धन अनय बिढार्यो १५
कलिजुग[7] काल भयो यह भीखम, है इक जाह कहैं कोलौं हम
होवत कुल मुहुकम्म हरामी, निकस्यो बैरिसल्ल कुल नामी १६
बुध[8] इत गरभ जानि नव बाला, ठ्याहि जु रक्खिय बंसबहाला ॥
ताके उदर कुमर उँद्गम[10] हुव, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥१७॥
मधुगत[11] अमा सत्त बसु ८७ संबत, मातुल[12] घरहि बाल यह भो बत्त[13]
इहिं असु[14] धारिय मास अढारहि१८, बेघम नायसक्यो[15] इक१बारहि
चुंडाउति रानिय इत बेघम, गर्भ धर्यो सु भयो पुनि उँद्गम[16] ॥
संबत मान अंक बसु सत्रह १७८९, अरु सित बाहुल[17] भालचंद्र[18]
अह १४ ॥ १९ ॥

---

*हाथ आगे किया (हाथ आगे वढाया)†जैतसिंह ने शीघ्र ही॥११॥१स्त्री जान कर॥१२॥२उस जैत्रसिंह के पुत्र को इसप्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इसप्रकार सभा में देवसिंह नहीं दबा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया ॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के समान हुआ ॥ १६ ॥ ८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावास्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अथवा बालक के होने की वार्ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १८ ॥ १६जन्म [उत्पन्न] १७कार्तिक सुद १८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्वामी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगु[1] वासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बनदव ॥
इत जैपुर साहस[2] अधिकाई, बहुरि[3] जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥
कृष्णाकुमारि नाम अति अग्गहँ[4], अभयसिंह मरुपति साली यह॥

गह१ यह२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

माधव[5] बहिनि बडी लहि मेलहिँ, दई सविधि परिनाय दलेलहिँ२१
तब कूरम घर ब्याह अनंतर[6], बसि जामातँ[7] सुता इक१ बच्छर[8] ॥
अंक अष्ठ सत्रह१७८९सक आगम,सिक्ख पाय जयसिंह जनक सम[9]
आई अब बुंदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निबाही॥
स्वसुर स्वकीयँ[10] पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम॥२३॥

लम१धम२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

जो यह राज्य हत्थ निज जानैं, काहूको न कथित[11] रर आनैं ॥
सुत तिय जानि रु मानि स्वसुर मुँह[12], सो तिहिं बेर गोहु नहि सम्मुह२४
कछवाही इहिँ अनख रिसाई, कूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥
मैं बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी[13] ।२५।
स्वसुर मान्नि सम्मुह सठ नायउ[14], कर जोरि न पुनि बिनय कहायउ
नृप महलन रहिकैं अति उन्नति, भुग्गत राज्य अंध बनि भूपति२६
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कढि जाहिर
चँवि इम[15] ताहि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ।२७।
पुनि सालम निकस्यो अति सोचत, निर्जन[16] सहित करजोरि
अधिक नत[17] ॥

चत १ नत २ अंत्यानुप्रासः॥१॥

जान्यौं अबहि प्रतिष्ठा जैहैं, कछवाही इच्छित अब [18]कैहैं ॥२८॥

१शुक्रवार २ हठ की अधिकाई से ३ फिर॥ २० ॥ ४ आग्रह (आदर) से५माधोसिंह की ॥ २१ ॥ ६ ब्याह के पीछे ७ जमाई और बेटी ८ वर्ष ९ पिता से ॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ सुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कहा) करनेवाला ॥२५॥१४नहीं आया ॥ २६ ॥१५इसप्रकार कह कर ॥ २७ ॥१६अपने लोकों सहित१७नम्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करैगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, बलि तत्थहि निज निलय बनायो
स्ववंसि राज्य इम करि हठ साहिय, अब महलन प्रबिसी कछ-
वाहिय ॥ २९ ॥

प्रथमहि फल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अंकुलायो ॥
इत मरुपति गुजरात बिजय करि, धर मारवं पुनि आय गरब
धरि ॥ ३० ॥

बुद्ध उदंत सुनि रु लिखि कग्गरं, पुर बेघम पठये चंर सत्वर ॥
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जबाव लिख्यो जड़तासंन ३१
इम दस१०बेर मरुप दंल आयउ, पै इक१दल न बुद्ध सन पायउ॥
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निरासह ३२
बुद्धि बिगारि उंदबेग बढ्यो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥
स्वीयं जनहु नहिं निकट सुहावहिं, काम परहिं तब टेरि बुलावहिं३३

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिषत्क्रुद्धविदीर्णक्षतबुन्दी
सुभटदेवसिंहमरण १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसव २ परिणीतजयसिंह-
कन्यबुन्दीनवनृपदलेलसिंहबुन्द्यागमन ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णन
मष्टात्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१मकान२अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्ता-
न्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ मूर्खता से ॥ ३१ ॥ ९
मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम११अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदीके राजाबुधसिंह
के चरित्र में बुंदी के उमराव देवसिंह का सभा में कोटा के महाराव पर क्रोध
करने के कारण घाव फटकर मरना१बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न होना२बुंदी
के नवीन राजा दलेलसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करके बुंदी
आना ३ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अड़तीसवां ३८
मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रताप बढ्यो अति, *प्रथित कहैं सु करैं दिल्लिय पति॥
अदवहु लिखैं बिसेस साह अब, कग्गरमाँहिं लिख्योहु जो न कब१
जँहँ राजाधिराज उपपदं[1] जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो द्रुत[2] ॥
तिम तिम बढयो सबन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२
किय रुप्पय कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मंदुरन[3]।

घन१ रन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करैं बल संभरि[4] ३
स्मृतिनं[5] सुधाय न्याय बिसतारैं, बिप्रन अग्घ[6] बिसेस बढारैं॥
बाहिर इम धरमानुग[7] दीसैं, पै सु रच्यो[8] न पिष्ट[9] कँहँ पीसैं ॥ ४ ॥
जो निज धरम रच्यो कूरम[10] हिय, क्यों तब कर्म अधर्म इते किय॥
हन्यों प्रथम सिवसिंह स्वीय[11]सुत, जोहु तास जननी[12] निज तिय जुत५
पुनि जननी निज[13] स्वर्ग पठाई, भट वर[14] बिजयसिंह बलि[15] भाई ॥
पुनि भानेज[16] सत्य जो होतो, अरु असत्य सिसु[17] हो तउ सोतो॥६॥
पुनि संग्राम[18] रामपुर स्वामी, हन्यों दग्ग रचि होय हराम[19]ी ॥

---

*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दबाव का सूचक है)॥१॥१पदवी (खिताब) २शीघ्र॥२॥३गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये४बल से भरकर; अथवा अपने बल को संभाल कर ॥ ३ ॥ ५ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ६ आघ (आदर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वाला दीखता था, परन्तु ८ उस धर्म में रचा (रंगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचा हुआ था तो इतने अधर्म के काम क्यों किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ५ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ श्रेष्ठ वीर १५ फिर अपने भाई विजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और बुंदी के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ ६ ॥१८संग्रामसिंह चंद्रावत को१९ अधर्मी होकर दगा से मारा

सत्त अठ्ठ सत्रह १७८८ * मित संबत, तेरह लक्ख १३००००० साह रूप्पय †तत ॥ ७ ॥
लै अरु ‡कितव मिल्यो मरहट्ठन, सो मुरयो न अबलग अधर्म §सन
ठन १ रन२ अंत्यानुप्रासः ॥१॥
साह तास बिस्वासहि रक्खैं, यह तउ मंत्रं[2] दक्खिनिन अक्खैं॥८॥
ऐसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छोहु करी बहु कूरम ॥
अब नव वसु सत्रह १७८९ मित संबत, आयो पुनि मालवधर उद्धत ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

अब हायन[3] नव अठ्ठ ८९ बिसद बाहुल[4] दर्प्पक[5] १३ दिन ॥
आयउ पुर उज्जैन अवनि[6] दब्बत कूरम[7] इन ॥
सत्तलक्ख ७००००० साह सन ब्याज[8] रुप्पय मँगाय बलि॥
मरहट्ठन किय मेल किय न हित साह मंडि[9] कलि ॥
दल[10] लिखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अतुल[11] ॥
यह आय सुम्मि दब्बन समय मिलि मरहट्ठन दल बिपुल[12] १० ॥

दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दल[13] पठयो सु दराज[14] ॥
सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइभ्रात[15] नगराज ॥ ११ ॥
दराज १ गराज २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बिनु सादड़ि[16] अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥
ते दसउर आये त्वरित[17], अवनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

---

* प्रमाणवाले † तहां ॥ ७ ॥ ‡ छली § से १ उस जयसिंह का २ सलाह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कछवाहों का पति ८ छल से ९ बादशाह का हित रच कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित १२ बहुत ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बडी १५ धाय भाई ॥ ११ ॥ १६ सादड़ी के राजराणा और बेदला के राव बिना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आयउ पुर उज्जैन ॥
कूरमसौं हित मिलन करि, संग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥

षट्पात् ॥

*बुल्ल्यो तब नगराज देवसिंहहु बेघम पति ॥
तवहि देव करि कुंच चल्यो सहसत्थ बेग गति ॥
तबहु मंद[1] बुंदीस चल्यो निज सालक संगहि ॥
सोची[2] यह कुंम्म[3] सन मिलि रु लैहैं स्वकीय[4] महि ॥
जयसिंह व्याहि तनया[5] जु पै पट्ट दलेलहिँ थप्पिदिय ॥
पिक्खहु तथापि जड़बुद्ध मति लैन जात निज बसुमतिय[6] । १४ ।

दोहा ॥

देवसिंह निज जामिँपहिँ[7], आत देखि अकुलाय ॥
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल[8] अग्ग पठाय ॥ १५ ॥
जामिप आवत संग मम, निज हठ मन्नैं नाँहिँ ॥
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम थित आँहिँ[9] ॥ १६ ॥
जु सुनि केसरीसिंह जब, नगर सलूमरि नाह ॥
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुप्पि कछवाह ॥ १७ ॥
तुम सु रान घर मुख्य भट[10], अरु छन्नें नहि येहु ॥
चिंति सु वत्त रु रहहु चुप, श्रवनन मुंदन[11] देहु ॥ १८ ॥
सुं[12] सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥
आवन देहु न बुद्ध यँहँ, रस नहिँ कुम्म बिरत्तँ[13] ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

॥ १३ ॥ नगराज ने बेघम के पति देवसिंह को * बुलाया १ मूर्ख २ सोची (विचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेदेगा ५ पुत्री व्याह कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि की वक्रोक्ति का वचन है) ॥ १४ ॥ ७ बहिनोई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहां ठहरे हुए हैं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ १० उमराव ११ कानों को बंद करलो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह प्रतिकूल है ॥ १९ ॥

देवसिंह तब यह*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥
तबहु अंध बुन्दीस नाँहिं पच्छो पयान किय ॥
यह लिखि देव उदार कुंच बिरच्चिय बेघम प्रति ॥
ताहि बिगारन तबहि सुरच्यो बुधसिंह हीन मति ॥
यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु बेघम लई ॥
सङ्कत बिमूढ जामीस सुख सालक[1] बिच यह गति भई ।२०

दोहा ॥

नगर फुरक्काबाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥
कूरमपति वासौं कियउ, अग्ग बइर रन इंच्छ[2] ॥ २१ ॥
अब बुंदिय आमेरकौं, जवन वहै लखि जुद्ध ॥
भल कग्गरै[3] भेजत भयो, बेघम पुर प्रति बुद्ध ॥ २२ ॥
सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लै[4] दल तत्त ॥
बेघम आय रु बुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥
वह तैथापि[5] बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥
व्है उदास निज गेह तब, गो खत्रिय करि गोन ॥ २४ ॥
सक नभ नव सत्तह १७९० समय, द्वादसि१२माघ वलच्छ[6] ॥
तजिय रान संग्राम तँनु[7], दान समय नय दच्छ[8] ॥ २५ ॥
तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जगतेस[9] ॥
बुद्ध सु इत देवहिं बिपति, अँदय दई जड़[10] एस ॥ २६ ॥
सक नभ नव सत्रह१७९०समय, अब फग्गुन अवदात[11] ॥
मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटल समय प्रभात ॥२७॥
चुंडाउति रानी जठैर[12], रहि नव ९ मास प्रमान ॥

*वृत्तांत १ बहिन के पति का ॥ २० ॥ २ युद्ध चाह कर ॥ २१ ॥ ३ कागद (पत्र) ॥ २२ ॥ ४ तहां पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोडा ॥ २५ ॥ ९ जगत्‌सिंह १० निर्दय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

*दुहिता हुव बुंदीसकैं, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-पतिबुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणन १ सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनबुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहाराणसंग्रामसिंहमरणानन्तरजगत्सिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनचत्वारिंशो मयूखः ॥ ३९ ॥

आदितः सप्तसप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७७ ॥

षट्पात् ॥

इत यह हड्ड प्रतापसिंह सालम जिट्ठो सुव ॥
अनुजहिं गिनि अवनीस भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥
आयो तब नृप याहि नाँहिं अहरि मुह लायो ॥
अब तिहिं कोटा आय रानि प्रति मंत्र रचायो ॥
बिसवासि ताहि तिय बुद्धकी कछवाही यह मंत्र किय ॥
हम देत खरच तुम जाय हठि बल दक्खिन आनहु बलिय ।१।
तब प्रताप हठ तिक्ख मिल्यो दक्खिन मरहट्टन॥
लखि श्रीमन्त अनीक अतुल आरंभ मुदित मन ॥
बाबा पंडित रामचंद्र १ संध्या राणाजिय१ ॥

---

*पुत्री १ नाम॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचित कार्यों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उज्जीन जाना और बुधसिंह का प्रमाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहान्त होकर महाराणा जयसिंह के पाट बैठने के वर्णन का उनचालीसवां ३९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सितहत्तर २७७ मयूख हुए ॥

२ ज्येष्ट (बडा) पुत्र ३ छोटेभाई को बुन्दी का राजा जानकर कुशथल की युद्ध ४ भूमि में ५ बुधसिंह ने ६ बुधसिंह की स्त्री कछवाही ने ॥ १ ॥ ७ पूना के पति की ८ तुलना रहित आरंभवाली सेना को देखकर मन प्रसन्न हुआ.

पुणापतिके पासवान दलमैं पति ए बिय२ ॥
इनतैंहु अधिक श्रीमंतके दल मालिक उमराव हुव२ ॥
आनंदराव परमार१ अरु हुलकरराव मलार२ हुव ॥ २ ॥

दोहा ॥

इन च्यारि४न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोद॥
दम्म लक्ख खट६०००००दैन किय, बुंदियपर स बिनोद॥३॥
इत कूरम कछु कज्ज बसि, मालव अवनि बिहाय ॥
सालम सुवन दलेल सह, जैपुर पत्तो जाय ॥ ४ ॥
मरहठ्ठन परताप मिलि, दै खट लक्ख६०००००सु दम्म ॥
दल दुस्सह लायो लरन, कज्जल बुंदिय कम्म ॥ ५ ॥
सक इक नव सत्रह१७९१ समय, अमा रु माधव मास॥
बुंदी बिंटिय आनिकैं, गहत अरक तम ग्रास ॥ ६

भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यौं लगे नेर बुंदी, खुरौंपक्खरौं घुम्मि हैं भुम्मि खुंदी
भगी ज्वालिका दीपकी मालिकासी, दगीं नालिका कालिका बालिकासी ॥ ७ ॥
हट्यो पोन भ्फंडनमैं गोन हंक्यो, बढ्यो घोर अंधार संसार ढंक्यो ॥

१ पूना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थे ३ सेनापति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की भूमि को छोडकर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रुपये ८ बुन्दी के युद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी में युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥ ११ वैशाख मास की१०अमावास्या के दिन१२सूर्य को१३राहु ने ग्रसा (ग्रहण हुआ) उस समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढकर बुंदी नगर के लगे सो १४ घोड़े घूमकर खुरों से और पाखरों से भूमि को घूंदी (कुचली) और दीपमाला के समान १५ ज्वाला १६ प्रज्वलित हुई और कालिका की पुत्रियों के समान १७ तोपें दगीं ॥ ७ ॥ झंडों में नहीं चल सकने के कारण पवन रुकगया और भयंकर अंधेरा बढकर संसार ढकगया.

चलै *लोल गोला झगैं अग्गि झारैं, दुबाजू छिकैं कोट दैदै दरारैं
परैं गोख[1] अट्टाल[2] तुट्टैं पताका, उडैं छद्दकै भद्दमैं ज्यौं [3]बलाका ॥
छिकैं त्यौं गिरैं थंभ [4]प्रासाद छत्री, पताका उडैं [5]अब्भ व्हैव्है पतत्री[6] ९
उडैं गैन गिद्धी लगैं पच्छ [7]अग्गी, लखैं [8]चंगके पुच्छ ज्यौं राललग्गी
डिगैं [9]कोल त्यौं [10]व्याल पाताल डोलैं, [11]अकूपारकी भारसौं पिठ्ठि बोलैं ॥ १० ॥

चलैं तोप [12]प्राकारको लोप मंडैं, खिरैं [13]खोमके [14]तोमके खंड खंडैं ॥
जरैं हट्ट बाजार यौं [15]हेति जग्गी, मनौं [16]राल कौ [17]तूलमैं अग्गि लग्गी ११
कहौं [18]दंद्व [19]पाटीर कारी कँवारी, बुझावैं कहौं डारिकैं नीर नारी ॥
चिनंगी उडैं चित्रसारीन चंडैं, मनौं बाग [20]खद्योत [21]प्रद्योत मंडैं ।१२।
वडे पट्ट अट्टालिका [22]पात बज्जैं, घनी बालिका [23]पालिका छोरि भज्जैं
कहौं झारसौं धेनु [24]हंभारैं कढ्ढैं, बरैं द्वार [25]आगारपैं [26]छार बढ्ढैं ॥ १३ ॥

*चपल गोले चलकर अग्नि की ज्वाला जगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों ओर फूटता है॥८॥ उन गोलों से १ झरोखे २ छतें बुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती हैं और जैसे भाद्रपद मास में ३ बक (बगुले) उडें तैसे छादित होकर उडती हैं, थंभे ४ महल और छतरियें छिककर गिरती हैं और ५ आकाश में ध्वजा ६ पक्षी होकर उडती है ॥ ९ ॥ पांखों में ७ अग्नि लगकर ग्रीधनियां आकाश में उड़ती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकउवा) के पूंछ में राल लगी होवे वैसे दीखती हैं ९ बराह डिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और भार से ११ कमठ की पीठ बोलती है "अकूपारः कूर्मराजः" इति शब्दार्थचिन्तामणौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही १३ बुरजों के १४ समूह के टुकड़े टुकड़े करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर ऐसी १५ ज्वाला (झाल) उठी कि मानों राल में १६ किना १७ रूई में अग्नि लगी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कँवाड़ियें (कपाट विशेष) १८ जलती हैं, सो मानों बाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥१२॥ छतों के बडे पाटों के २२ पड़ने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग छोड़ कर भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गउवें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं २५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्मि (राख) बढती है; अथवा जलने से घरों के द्वार पर भस्मि बढती है ॥ १३ ॥

गहि सालम निज *जनक बंदि हुलकर बसि किन्नौं ॥
सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥
नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥
बुंदिय छुराय मरहट्ठ इत रस ६ मुकाम तत्थहि रहिय ॥
दिस दिसन बत्त फुट्टिय †द्रुतहि कविन वाह दक्खिन कहिय२६

॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥
अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत प्रान ॥ २७ ॥
कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥
दिय महिमानी दक्खिनिन, दुव२दिन सेन रखाय ॥ २८ ॥
कछवाही मल्लार कर, ‡रक्खी बंधिय रानि ॥
अरु ताकी तियकी अतुल, किय भावज सम३कानि ॥ २९ ॥
तहँ हुलकर मल्लार तब, सँधा४ लिय हित पग्गि ॥
बुंदिय जो जैहैं बहुरि, लै हैं तो हठ लग्गि ॥ ३० ॥
अवरहु त्रय३ दल६के अधिप, तिनहूकौं हित धारि ॥
दिन्ने हय सिरुपाव द्रुत, रानी सुनय७ बिचारि ॥ ३१ ॥
कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर जय तोर ॥
प्रबल बीर पच्छे८ पलटि, उमडिय९ दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥
कटक सु डब्भिय ग्राम कढि, रहि बिंझोलिय रैन ॥
बेघम कग्गर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलन न आयउ तबहु बंचि कग्गर बुंदिय पति ॥
तब उप्परि मरहट्ठ गये दक्खिन सबेग गति ॥

---

*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह को †शीघ्र॥२६॥२७॥२८॥ ‡राखी (रक्षा) बांधी १बहुत २ भोजाई के समान ३ अदब ॥३१॥४प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥३०॥ ६सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर॥३१॥८जिसपीछे ९ चढे॥३२॥१०पत्र॥३३॥

इत वेधम तजि महल बुद्ध आरामै[1] वास किय ॥
रान कटैक[2] तिन दिनन आनि तत्थहि मिलानैं[3] दिय ॥
इति जानि रान संग्रामकी[4] नृपहु[5] सोक अक्खन गयउ ॥
मिलि धाइभ्रात नगराज नमि करन जोरि हाजरि भयउ।३४।
दुव५दुव२ हय सिरुपाव नृपहि नगराज निवेदिय ॥
आय रान मृत जानि नृपति यह अक्खि नाँहि लिय ॥
तदनु[6] साहिपुर ईस नाम उम्मेद जंग जय ॥
ताँस[7] जनक तिन दिनन मरिय यातैँ तत्थहु गय ॥
केसरीसिंह डेरन तदनु[8] गिनि सलूमरि पैं[9] ताहि गय ॥
इम रान भटन सनमानि अब नृप निज उपबनैं[10] आहि गय ।३५।

॥ दोहा ॥

धाइभ्रात जिम नजरि किय, इनहु दुहुँन तिन किन्न ॥
नाँहि सु लिय बुंदिय नृपति, दुव२तिन हित हय दिन्न॥३६॥
इत बुंदिय लिन्नी सुनत, कुप्पि नृपति कछवाह ॥
बीससहँस२००००चतुरंग[11] बलि[12], पठये सज्जि सिपाह ॥३७॥
सालम सुवन प्रताप तब, चतुरंगह सुनि चौंस[13] ॥
नैननगर[14] तजि भज्जिगो, पुनि मरहट्ठन पास॥ ३८ ॥
अरु कछवाही सुनत यह, आवत भ्रात अनीक[15] ॥
बुंदिय तजि वेधम गई, रही न टेक रतीक ॥ ३९ ॥

नीक१ तीक२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

॥ सोरठा ॥

कछवाही निज किन्न, इक्क१मास बुंदिय अमल ॥

---

१ बाग में २ महाराणा की सेना ने ३ मुकाम किये ४ राणा संग्रामसिंह का देहांत जानकर ५ बुधसिंह ॥ ३४ ॥ ६ जिस पीछे ७ उम्मेदसिंह का पिता (भारतसिंह) ८ जिस पीछे ९ पति १० अपना बाग है वहां गया ॥३५॥३६॥ ११ सेना १२ फिर ॥ ३७ ॥ १३ सेना आने की खबर सुनकर १४ नैणवा नगर को छोड कर ॥ ३८ ॥ १५ भाई जयसिंह की सेना ॥३९॥

लरैं बिनुहि पुनि लिन्न, इतहि आय जयसिंह दल ॥ ४० ॥
कूरम कोट कराय, याहि बरस पुर टौंक इत ॥
*दोसा दुग्ग बनाय, † मथित निवाई दुग्ग पुनि ॥ ४१ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

इतको उदैपुर रान नृप जगतेस ‡ कालहि जानिकैं ॥
ब्रजकुमरि नामक§जामि निज तिहिं व्याहजोग्य प्रमानिकैं॥
कोटेस दुरजनसल्लकौं बरि ताहि व्याहन बुल्लयो ॥
इन लिखिय कूरम उग्रहै अवकास उद्[1]वहको गयो ॥ ४२ ॥
यह जानि रान पठाय प्रति[3]वच कुम्म जो अब कुप्पिकैं ॥
हम गेह व्याहन आत तुम भुव लैंहिं लज्जहिं लुप्पिकैं ॥
इकलिंग[4] आन हमैंहु तो तुमसाँहिं व्है रन रोरिहै ॥
जोपै सुवापति जैपुरेस तथापि तेगन तोरिहै ॥ ४३ ॥
कोटेस यह सुनि कुंच करि पहुँच्यो उदैपुर प्रीतिसौं ॥
जगतेस तिहिं निज जामि[5] दिय परिनाय हित रस रीतिसौं ॥
यह व्याह चंद्र रु अंक सत्त रु इक१७९१संबतमैं भयो ॥
आषाढ मेचक[6] पक्ख नवमिय९लग्न उच्छव उँन्नयो ॥४४॥
कोटेस नृप इम व्याहि दुलहनि स्वीय पत्तन संचरयो ॥
इक जानि रानहिं याहि इत जयसिंह जालम व्है जरयो ॥
इत रान भेंट जयसिंह सगताउत्त बग्घेह पुत्तहो ॥
जिहिं ग्राम पिप्पलिया जु स्वामिय काम स्यंदन[11] जुत्तहो ४५
दुवरपुस्त हिंतु[12] वकील उत्तम्म हो उदैपुरको वहै ॥

॥ ४० ॥ * नगरका नाम है † प्रसिद्ध ॥ ४१ ॥ ‡ समय § अपनी बहिन १ जयसिंह २ विवाह का समय॥४२॥ ३ उत्तर ४ उदयपुर के इष्टदेव एकलिंग नाम के शिव हैं ॥ ४३ ॥ ५ बहिन ६ कृष्णपक्ष ७ उठा (छाया) ॥ ४४ ॥ ८ अपने घर को चला ९ उमराव १० बाघसिंह पुत्र था जो स्वामि के कार्य में ११ शीघ्रता करनेवाला था (स्यन्दनं जवने" इति शब्दार्थचिन्तामणिः॥ १२ दो पीढी से

साहु सितारधीसपैं जु*अनीस † अब्दनतैं रहै ॥
तिहिं तत्थ ‡ साहुव छत्रपति आदाव अति करि अहैं ॥
बइठारि गद्दिय कोनपैं काका कहैं रु कही करैं ॥ ४६ ॥
संग्राम रान § निपात सुनि तिहि सिक्ख साहू सौं चही ॥
जयसिंहसौं यह जानि बाजेराय मंत्रियहू कही ॥
मम मात पूरब जात[1] जात जु न्हान तित्थ बिधान सौं[2] ॥
तिहिं लै उदैपुर जाहु एह उदंत[3] अक्खहु रान सौं ॥ ४७ ॥
तुम रान कूरम सौं कहाय यहै कहावहु साहसौं ॥
मम मात कासिय जात जो दैहै न कर रहि राहसौं[4] ॥
स्वच्छंद मग्गहुमैं कहौं रुकिहै न दलजुत[5] जायहै ॥
पुनि फलगुगय सिर पारि पिंडन[6] अध्व इच्छित आयहै ॥४८॥
जयसिंह बग्घहनंद यौं सुनि तास मातहिं संगलै ॥
आयो उदैपुर ओ मिल्यो वह रान हिंतु उमंगलै ॥
करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मंत्रिय आहि जो ॥
तत्मात आवत रावरे घर पुंव्व[10] तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥
सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अद्दर[11] अद्दरी ॥
महिमानि मंडि दिवाय डेरन कानि मातहिलौं[12] करी ॥
अंवरोधमाँहिं[13] बुलाय प्रीति वढाय बिन्नति अक्खई ॥
सुनि रान बिन्नति वात मंत्रिय मात मोदमई भई ॥ ५० ॥
गज बाजि वस्त्र विसेस रान निवेदि[14] ताहि घनौं नयो ॥

---

* निरन्तर † वर्षों से ‡ छत्रपति पदवी वाला राजा साहू ॥ ४६॥ § पतन (देहान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने को ३ वृत्तान्त ॥४७॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित. फल्गु गया में पिंड करके चाहे हुए ६ मार्ग से आवेगी ॥४८॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात् साहू आप के वंश में है और यह उसके मंत्री की माता है इसकारण आपके घर आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥४९॥ ११ बहुत आदर से १२ माता के समान १३ जनाने में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिक्खदै सँग स्वीय सेनहुकों दयो ॥
नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुख्य सु संगभो ॥
जयसिंह पुनि वह बग्घ नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥
खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम[1] पक्कज्यों ॥
नवलक्ख९००००० दलपति मंत्रि जननी चंड[2] संगहि चक्कज्यों ॥
बहरक्क[3] दंति बडेनपैं फहरक्कि फैलतसी फिरैं ॥
झिलि फट झंड झपेटपैं पवमान[4] चंचलहू चिरैं[5] ॥ ५२ ॥
श्रियमंत मात सुखेन[6] यों सह सेन जैपुर संचरी[7] ॥
कछवाह रायँहु[8] आय सम्मुह कानि राँनहि[9] लों करी ॥
जयसिंह प्रीति वढाय तास दिवाय डेरन मोदसों ॥
वेतंड[10] बाजि उदंड दुवश किय भेट बंदि[11] बिनोदसों ॥ ५३ ॥
महिमानि दै अति अग्घसों अवरोध[12] मध्य बुलायकैं ॥
सकुटुंब सम्मुह जाय मंदिर[13] लाय मत्थहिं नायकैं[14] ॥
बइठारि गद्दिय ताहि अप्पुन अल्प[15] आसनपैं रह्यो ॥
नग बस्त्र नव्य[16] निवेदिकैं हम दास कूरम यों कह्यो ॥ ५४ ॥
तनया[17] सु कृष्णाकुमारि अप्पन जो दलेलहिं[18] अप्पई ॥
गहि ताहि हत्थन कुम्भ यों थिर तास अंकहि[19] थप्पई ॥
कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥
तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै ॥ ५५ ॥
हैयहै१ भैयहै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु आक्खि प्रीति परं[20] पगी ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ झंडे बडे हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भी ५ देरी करता है अर्थात् उन झंडों में हो कर शीघ्रता से निकल नहीं सक्ता ॥५२॥ ६ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना ने की जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥५३॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नवीन ॥५४॥ १७ पुत्री १८ दलेलसिंह को विवाही १९ उस की गोदी में विठाई ॥ ५५ ॥ २० परम

रुपये पचीस हजार२५०००छोरिय जे न बुंदियकों लगैं ॥
जव[1] कुम्म मालव पत्त तत्त सु साह[2] छन्नहिं मेलकैं ॥
निव्वेहजार९००००लिखायलियठहराय[3] दम्म दलेलकैं॥५६॥
तब दक्खिनिन नृप साहुसौं अरजी कराय निदेस[4]लै ॥
यह अंक[5] थप्पिय बुंदिपैं कहि कोउ नाँहिं बिसेस लै ॥
तिनमाँहिंसौं श्रियमंत मात व[6] छोरि दम्म इते दये ॥
पुनि अक्खि पुत्ति[7]य लाय च्छत्तिय[8] नेह बीज बये नये ॥५७॥
श्रियमंत मातहि रक्खि यौं जयसिंह जैपुर मासलौं ॥
पुनि साह हिंतु लिखाय मग कर माफ तास प्रवास[9]लौं ॥
चलि तास डेरन जाय कूरम राय बंदन[10]कैं चली ॥
साजि स्वीय सेनहु संग दै वह पंथ पूरब मुक्कली ॥ ५८ ॥
भट रान केसरिसिंह ओ जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥
दल ओर संगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहे ॥

एरहे१जेरहे२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह धुत्त[11] अधीर ज्यौं ॥
जयसिंह बग्घहनंद हो यह बेदपाठक[12] वीर त्यौं ॥ ५९ ॥
सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकैं ॥
हय हत्थि कूरमसौं ति[13]लै पहुँचे उदैपुर आयकैं ॥
मल्लार अरु परमार ए करि कैद सालमकौं इतैं ॥
तजि नैर बुंदिय कुंच कैं पहुँचे ति मालवमैं तितैं ॥ ६० ॥
परमार दौलतसिंह इक१सु सेन दक्खिन संगही ॥

---

१ जयसिंह मालवे में गया २ तहां बादशाह ने छाने ३ दलेलसिंह से रुपये ठहरा लिये ॥ ५६ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बूंदी पर गांद रक्खा है; अथवा रुपयों का यह अंक बुंदी पर स्थापन किया ६ अब ७ पुत्री कहकर ८ छाती से लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहन तक का १० नमस्कार करके ॥५८॥ ११ धूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला ॥ ५९ ॥ १३ ते (वे) ॥ ६० ॥

यह रान को उम्मरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥
तिंहिं अक्खि सालमसिंह सो[1] कँहँ लेहु जामिन व्है अबैं॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय लेहु सो इन्ह[2] देहु जावहुँ मैं तबैं६१
जितनैं उदैपुरमैं रहौं अरु रानको जस बित्थरैं॥
मम पत्र लेहु लिखाय औ लिखिदेहु तुम इनके[3] करैं ॥
इनको अमात्यहु[4] इक्क१ रुप्पय लैन संगहि लीजिये॥
तिहिं ग्राम पंचहजार ५०००को हम देहिं सत्य पतीजिये[5] ६२
तुमकौंहु बुंदिपको पटा मिलिहै हजारपचीस२५०००को॥
सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको[6] ॥
अरु अप्प राव मलारसौं परमारसौं इम अक्खई ॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय देहिंपै गृह लैहिं तो लिखि सो दई६३
हम रान जामिन बीच जो नहिं देहिं तो हम देहिंगे ॥
बलि[7] रान भूप बलिष्ट[8] जे इनतैं निवेरिहु लेहिंगे ॥
परमार यौं लिखि पत्र जो परमार हुल्लकरकौं दयो ॥
निज संग हुल्लकर दास भट्ट महादिदेव[9] सु पै लयो ॥६४॥
पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सौं इम सिक्खकैं ॥
सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहकौं तब तिक्खकैं ॥
लिखि पत्त[10] बुंदि दलेलकौं दम[11] दम्म सालम मंगये ॥
बदल्यो दलेलहु बप्प[12] हिंतु कैपर्द[13] दोय२हु नाँ दये ॥ ६५ ॥
तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसौं ॥

---

१ सालमसिंह ने दौलतसिंह से कहा २ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थ-चिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोड़ी भी नहीं ॥ ६५ ॥

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥
निज कोसतैं दुव लक्ख२०००००रुप्पय देस दक्खिन मुक्कले ॥
पुनि कुंम्म आयस पाय दोउनकौंहि दिन्न पटा भले ।६६।
ससि अंक सत्त रु इक्क१७९१संबत मास कत्तिय गोरमैं ॥
कछ्वाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥
मेवारमैं आगौंच नामक ग्राम सर्ब मिले तहाँ ॥
अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥
सुनि साह सेन समस्त संजुत खानदोरह मुक्कल्यो ॥
यह मास अगहन कृष्ण पंचमि५ चंडै चँक्कहिँ लै चल्यो ॥
इत आय मालव देसमैं बुलवाय कूरमहू लयो ॥
बिनु रान तब सब भूप संजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥
तिहिँ साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥
कछ्वाह रानिय देह हानिय दान कैं रु करी तहाँ ॥
इत कौं नवाब रु कुंम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सौं ॥
सब हिंदु भूपन सत्थ लै रन मंत्र मंडिय रीतिसौं ॥ ६९ ॥
अभमल्ल नृप मरुईस बीकानैर भूपति सत्थही ॥
कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥
रतलाम भब्बुवके रु ईडरके कबंधहु संजुरे ॥
बुंदेल नृप दतियादि भूप भदोर भंड पै बिप्फुरे ॥ ७० ॥
रचि मेल बीर बघेल्ल बंधुव भूप सम्मिलि सज्जयो ॥
नगरी करोलिय भूप जद्दव सेन संजुत सो ठयो ॥
पुनि रूपनैर कबंध भूप जु पाय लग्गिय आनिकैं ॥

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर॥६५॥२शुक्ल पक्ष में३आगोंचा के पास ही हुरड़ा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे॥६७॥४भयंकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ खड़ा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नैर भनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥
बजरंग राघव दुग्गको महिपाल खिच्चियहू मिल्यो ॥
नगर्ग सिरोहिय देवरा नृप आनि आयसको झिल्यो ॥
रचि चक्क टट्टिय आय भट्टिय नैर जैसलमेरको ॥
बलि नैर पट्टिनि भूप उम्मट आय आतहि बेरको ॥ ७२ ॥
कछवाह नरउर नाह मिच्छ नबाबहू कितने कहाँ ॥
मिलि खानदोरह सौं सबै परि तत्थ रूंधि दिसा चहाँ४ ॥
सबकौं सिराहि रु खानदोरह सेन दक्खिनपैं सज्यो ॥
मरहट्ठ सेनहु पिक्खिकैं चहि रट्ठ सम्मुह व्है गज्यो ॥ ७३ ॥
रचि मंत्र मंडित रामचंद मलार अो परमार त्यौं ॥
राणांजि सम्मिलि संधिपा बढि जंग जीत विचार त्यौं ॥
दलमांहिसौं पक्खरैत अट्ठ हजार८०००काढ्ढि रु यों कही ॥
तुम जाय जैपुर देस लुट्टहु त्यौंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥
असवार अट्ठ हजार८०००वे तब सांमि जैपुर जायकैं॥
टोडा रु टौंक बिगारि लुट्टिय कुम्भ आन उठाय कैं ॥
नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥
लंबा रु डग्गिय लुट्टि पट्ठलि दाव दुंढ्वपैं दयो ॥ ७५ ॥
तिहिं माहि जारि नराननैर रु जाय सालिय लुट्टई ॥
मोजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि घंत्तन दै लई ॥
इम रारि खग्गन झारि मारि बिगारि जैपुर देसमैं ॥
पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवसेसमैं ॥ ७६ ॥

१बजरंगगढ और राघोगढका २हुकम को झेल।३सेना की टाटी(थोड़ीसीआड) रच कर४आते समय ॥७२॥५म्लेच्छ (यवन)६चारों दिशा रोक कर७राष्ट्र(राज्य) की चाहना करके ॥७३ ॥८ पाखरों वाले ९ म्लेच्छों की भूमि को ॥ ७४॥ १० पुरका नाम है॥ ७५ ॥नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर को लूटा १२बातें १३बाकी में ॥ ७६ ॥

जिम कुम्म भो यँहँ साहको[1] मरहट्ठ नाँहिँ गिने मिले[2] ॥
तिम तेहु दक्खिन वीर मन्नि रु ग्राम जैपुरके गिले ॥
असवार मान[3] हजार अट्ठन लूट यौं इत मंडई ॥
उत रामचंद्र मलार ओ परमार बँग्गनकौं[4] लई ॥ ७७ ॥
निज सुत्त[5] साह अनीकपैं पबिपात[6] पब्बय ज्यौं परैं ॥
वजि बंब आनक[7] त्यौं अचानक कूटि[8] बिब्भल ए करैं ।
तब ज्यौं हुते तिम साहके उमराव भीरुक[9] भग्गये ॥
लखि कुम्ममोरँह[10] खानदौरह लज्जि मग्गहि[11] लग्गये ॥ ७८ ॥
तब सेन भज्जत साहको दखिनीन[12] खग्गन खंडयो ॥
उडि खेह अंबरैं[13] यौं छई जिम मेह संबैर[14] मंडयो ॥
अंचलाहु[15] लक्खनैं[16] फोजकी धमचक्क धक्कनतैं धुकी ॥
वढि ब्यौंधि दिग्गज दंत तुट्टि समाधि संकरकी चुकी ॥ ७९ ॥
फररक्कि फीलन[18] केतु त्यौं थररक्कि अंबर अंच्छरी[19] ॥
वररक्कि दड्ढ बराह भूँ[20] दररक्कि कच्छप भो दैरी[21] ॥
तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥
हँग[22] मीचि भज्जत साहके दल राह बुंदियको लयो ॥ ८० ॥
लगि पिट्ठि दक्खिनके अनीकन[23] लाग चम्मलिलौं[24] करी ॥
इत अग्ग आय रु साहकी पृतना[25] धुंनी[26] वह उत्तरी ॥

---

१ जिसप्रकार जयसिंहको वादशाह का ही हुआ समझैं २ मरहठों से मिलाहुआ नहीं समझैं इसप्रकार दक्खिणियों ने जयपुर के देश को लूटा ३ प्रमाण ४ घोड़ों की वागें उठाई ॥ ७७ ॥ ५ वादशाह की सोतीहुई सेना पर ६ पर्वत पर वज्र पड़ै जैसे ७ नगारे और ढोल ८ ठोक कर ६ कायर १० कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सब जगह ऐसा ही जानो) ११ लज्जित होकर मार्ग ही लगे ॥७८॥ १२ मरहठों ने १३ आकाश में १४ जलधारा १५ भूमि भी १६ लाखों सेना की १७ पीड़ा ॥ ७६ ॥ १८ हस्तियों पर १९ अप्सरा २० भूमि २१ भय युक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अंगों को भीतर समेट लिये २२ नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ २३ सेना ने २४ चामल नदी तक पीछा किया २५ सेना २६ वह नदी (चामल)

तजि [1]भानपुर कोटानदी लग सेन भज्जतही गयो ॥
जब चुर्[2]णा रुप्पय इक्क१को इक१ सेर त[3]द्दिन बिक्कयो॥ ८१
अतिही छु[4]धातुर साहको दल आ[5]पगा इम उत्तरयो ॥
पुनि आय बुंदिय खानपान दलेल सालमकैं करयो ॥
कछवाह नाह रु खानदोरह सर्ब भूपन सत्थही ॥
रहि तत्थ मंडिय मंत्र दक्खिन सेन मन्नि स[6]मत्थही ॥ ८२
कछु देस अ[7]ज्ज दयैं बिनाँ उनको नहीं मन धप्पिहैं ॥
त[8]स्मात अक्खहु साहसों सुनि साह मा[9]लव अप्पिहैं ॥
तब खानदोरह मंडि यों पठवाय बिन्नति साहकों ॥
लिखिदेहु मालवकों नतो खल आत दिल्लिय चाहकों ॥ ८३
यह मंडि ओ इत सेन दक्खिनपैंहु क[10]ग्गर मुक्कल्यो ॥
तुम लेहु मालव साहसों करि साम सं[11]चित जो फल्यो ॥
मरहट्ठ बीरन बंचि कग्गर बत्त मालव स्वी[12]करी ॥
जवनेसहू सुनि पत्त मालव दैन बत्तहि अ[13]द्दरी ॥ ८४ ॥
लिखि पत्त मालव दैनको जवनेस बुंदिय प्रे[14]रयो ॥
सुनि खानदोरह [15]कुंम्ममोरह सोहि दक्खिनकों दयो ॥
मरहट्ठ त[16]त्तह बंचि प[17]त्तह लै अवंति खुसी भये ॥
नदि नाँहि चम्मलि उत्तरे मुररे ति मालवही गये ॥ ८५ ॥
मधुमा[18]स चंद्र रु अंक सत्त रु इक१७६१संवत यों भई ॥
इत खानदोरह सिक्ख भूपन दै रु दिल्लियही लई ॥
तब चाहकैं कछवाह भूपति दु[19]ग्ग बुंदिय देखनैं ॥

१भाणपुरा को छोड़कर२उस दिन२चून रुपये का एक सेर बिका॥८१॥४भूख से पीड़ित ५ नदी ६ समर्थ ॥ ८२ ॥ ७ आज ८ इस कारण से ९ मालवा देश देवेगा ॥ ८३ ॥१०पत्र भेजा११तुम्हारा संचित कर्म फलीभूत हुआ है सो मिलाय करके मालवा देश लेलो१२मालवा लेने की बात स्वीकार की१३आदरी (स्वीकार की)१४भेजा१५कछवाहों के मुकुट जयसिंह ने१६तत्रह (तहां) १७पत्रह (पत्र) को (यहां भी स्वार्थ में ह प्रत्यय है सो सब जगह ऐसा ही जानना) ॥ ८५ ॥१८चैत्र मास १९ बुन्दी का गढ देखना चाहा ॥ ८६ ॥

चढिकैं दलेल समेत हत्थिय इक्क१ वीरहु लै घनैं ॥ ८६ ॥
प्रविस्यो सु उत्तर द्वार *पत्तन पंति पिक्खत †संचरयो ॥
चढि दुग्ग ‡हत्थियपोरिव्है §नवठान चोकहि उत्तर्यो ॥
सठ पाप सालम आप सम्मुह जोरि हत्थनकों नयो ॥
इम राजमंदिर पिक्खिकैं पुनि कुम्म ‖पव्वयपैं गयो ॥८७॥
वरसिंह भूपति अग्ग बंधिय दुग्ग जो बिगरयो लख्यो ॥
क[1]पिसीस भित्ति[2] रु खातिका[3] कहुँ खोम[4] तोमें[5] परयो लख्यो॥
कछवाह नाह दलेलसों तब दुग्ग बंधनकी कही ॥
सुनि सच्च मन्नि दलेलहू स्वसुरेस[6] उक्त कियो सही॥ ८८॥
रहि दोय रत्ति[7] रु आक्खि[8] यों जयसिंह जयपुर संचर्यो ॥
नव दुग्ग बंधि दलेलहू इत सज्ज बुंदियको कर्यो ॥
इहिं साल अगहन मासमैं जगतेस रानहु जानिकैं ॥
दिप नैर बेघम देवसिंहहिं फेरि कग्गर ठानिकैं ॥ ८९ ॥
दुवलक्ख२००००० रुप्पय दंडके लिय रान राउत देवसों ॥
सहि दुक्ख दारिद बिग्गरयो इम साल[9] जामिप सेवसों ॥
पुनि रान काम सु राजको नगराजसों सब छिन्नयो ॥
लखि वृद्ध कोविदं[10] जो बिहारियदास कायथको दयो ।९०।
जिहिं अग्ग दिल्लिय जायकैं सब रान काम सुधारयो ॥
जयसिंहकों बिच डारिकैं लिखवाय रामपुरा लयो ॥
पुनि भीतें[11] पंद्रह१५ अब्दतैं[12] श्रियद्वार[13] कायथ जो रह्यो ॥
अब रान[14] बुल्लि बहोरि हू तिहिं मुख्य मंत्रिय कैं चह्यो॥९१॥

*पुर †में चला ‡हाथीपोल होकर §नवठाणों के चौक में उतरा ‖पर्वत पर (पर्वत के ऊपर के तारागढ में) ॥ ८७ ॥ १ कांगरे २ कोट ३ खाई ४ बुरजों का ५ समूह गिराहुआ देखा ६ ससुरे और स्वामी (अपने को बुन्दी की गद्दी पर बिठाने वाला पति) का कहना सही किया ॥ ८८ ॥ ७ रात्रि ८ फिर पत्र (पट्टा) लिख कर ॥ ८९ ॥ वह साला ९ बहिनोई की सेवा करने से बिगड़ा १० चतुर ॥ ९० ॥ ११ भय से १२ वर्ष १३ नाथद्वारा में १४ राना ने बुलाकर ॥ ९१ ॥

दुव अंक सत्रह१७९२मान संवत पक्ख *उज्जल पोसमैं ॥
निज बंधु भूप †अमान मन्नि रु रान उप्फनि रोसमैं ॥
दल[1] पंति दुद्धर बंधिकैं जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥
चहुँ ओर सोर सजोर ठ्हाँ घनघोर तोपनमैं दग्यो ॥ ९२ ॥
तब रान सम्मलि होनकौं जयसिंह जैपुरसौं चल्यो ॥
सुनि एह साहिपुरेसकौं अति सोक कूरमकौं[2] वल्यो ॥
तब दंड रुप्पय लक्ख१०००००साहिपुरेस अप्पिय रानकौं ॥
करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानकौं ॥ ९३ ॥
इहिं साल मेचक[3] माघमैं दबि रोग दुस्सहतैं गरयो ॥
निज नैनवापुर माँहिं अंध सु मंद सालमहू मरयो॥
मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जित्ति उछाहसौं ॥
अरजी करी कर जोरि बुद्धहिं दैन बुंदिय[4] साहसौं ॥ ९४ ॥
तँहँ खानदौरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥
जयसिंहको मंति मित्र[5] यौं अरजी सु लग्गन जो न दै ॥
नव९मास बुंदिय काज यौं मरुभूप दिल्लियमैं रह्यो ॥
बखसीस किन्न बिसेस पै यहतो न लाह करयो कह्यो ।९५।
तब कुप्पिकैं बिनु साह आयस[6] सेन धँन्वप सज्जयो ॥
सब देस लुट्टत साहको मरुदेस गर्वित ठ्है गयो ॥
दुव अंक सत्रह१७९२ साक यौं सितपक्ख फग्गुनमैं भई ॥
इत साह दक्खिनमैं मिल्यो यह जानि कूरमकी लई ।९६।

*पौष सुदि पक्ष में †नहीं मानने वाला (निरंकुश) १ सेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दुःख से धर्षण करने में आवे ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥९३॥ ३ माघ वदि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

तबही नबाब उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥
प्रभु[1] खानदोरह कुम्म[2]मोरह यौं हरामिय अहरी ॥
मिलि सत्रु सेननसौं गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥
दुव कोटि२०००००००रुप्पय देस मालव मंडि साहुवकों दयो९७
चुगली सु जानि रु कुम्महू पुनि पत्र दक्खिन मुक्कल्यो ॥
श्रियमंत आवहु बेग ह्याँ हम दौरें दिल्लियको दल्यो ॥
श्रियमंतहू नृप साह[4] मंत्रिय बंचि पत्र सु बेगलै ॥
दल[5] दर्प दुःखर[6] बंधिकैं गति काल कीलिय[7] तेगलै ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

नृप साहुव नवलक्ख९०००००दल, नगर सितारा नाह ॥
सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह[8] ॥ ९९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाबा पंडित रामचंद्र हुलकर मल्लारह ॥
राणांजिय संध्या रु प्रथित आनंद पमारह ॥
अबहु मुख्य करि इनहि चढि रु श्रियमंत चलायउ ॥
सालम सुवन[9] प्रताप सोहु संगहि भट आयउ ॥
कूरमहिं जानि आह्वानकर[10] इम दक्खिन सन उप्परिय ॥
तहिनैं[11] अपार दल[12] भार तकि फैंनपति[13] फेनन फुंकरिय१००

परिय१ करिय२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

गरद गैनं[14] बित्थरिय जरद[15] जैंम[16] जैंनक[17] रंग किय ॥

---

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ९७ ॥ ३ फैलाव ४ बादशाह के मंत्री राजा (जयसिंह) का ५ सेना, घमंड से, अथवा सेना के घमंड से ६ दुःख से धर्षणा की जावे ऐसी ७ समय की गति को खड्ग से कीली ॥ ९८ ॥ ८ वीर ॥ ९९ ॥ ९ पुत्र १० जयसिंह को बुलाने वाला जानकर ११ उस दिन १२ सेना का अपार भार देखकर १३ शेषनाग झागों से फूत्कार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में गरद फैलकर १६ शनैश्चर के १७ पिता (सूर्य) का रंग १५ पीला करदिया

मरद मंत्रि उम्माहिय दरद भूदार दह्व दिय ॥
पंच अयुत५००००पक्खरिय सहँस१०००दंतावलि साज्जिय॥
दल पदाति दक्खिनिय गरबि दुवलक्ख२०००००गराज्जिय॥
बहुबिधि निसान भेरिय बजिय बल नकीब हंकन बढिय ॥
पेसवा प्रथित बिप्र सु बलिय चामर बेर बित्तर चढिय।१०१।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहाराष्ट्रपत्तषळयुतमुद्रकीलितसालमसिंहतदात्मजमतापसिंहबुन्दीहरणं १ कूर्मीमल्लाररक्षाबन्धन २प्रेपितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापिपुनर्दलेलसिंहबुन्द्यधिकारमापणं ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यस्य राणाजगत्सिंहजामिपाणिग्रहणं ४ तीर्थयात्राप्रस्थितसिताराधीशसाहूमन्त्रिबाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्कारस्वीकरणं ५महाराणासुभटदौलतसिंहस्य माहाराष्ट्रकीलितहड्डसालमसिंहमोचनं ६ जयपुराधीशजयसिंहस्य खारीनदीसमीपराजस्थानान्तर्वर्तिराजपुत्रै-

---

१ वीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बराह की दाढ में पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करके ७ नगारे ८ नौबत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ चमरों को १२ विस्तर (फैला) कर चढा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बडे पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की राणी कछवाही से मिल कर मरहठों को छ लाख रुपये देकर सालमसिंह को कैद करवा कर बुन्दी छुडाना १ राणी कछवाही का मल्लार के राखी बांधना २ जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर बिना ही युद्ध किये बुन्दी पर दलेलसिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव दुर्जनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश साहू के मंत्री बाजेराव पेसवा की माता का तीर्थयात्रा जाते समय उदयपुर और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार होना५महाराणा के उमराव दौलतसिंह का हाडा सालमसिंह को मरहठों की कैद से छुडाना ६ राजा जयसिंह का राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना ७

कलीकरण ७उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेपक्ष्मापालसहितदिल्लीसे
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिग्गमन ८महाराष्ट्रगात्रि
रणापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली
न्द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १०महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट
नलक्षमुद्रादराडादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान
वर्णनं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटक बिमद्दरकूंच करि, आयउ लौंनावाड़ ॥
सु सब रान जगतेस सुनि, लग्गि बधावन लाड ॥ १ ॥
जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥
बहुरि सलूमरि नाह बियर, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥
मिलन गये श्रीमंतसौं, तब वह सम्मुह आय ॥
मुख्य रान भट मन्निकैं, बियरलिय अग्ग बढाय ॥ ३ ॥
प्रथम लिखिय श्रीमंत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥
सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥
यातैं उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के विना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर दिल्ली के सेनापति खानदोरां का मरहठों पर दक्षिण में जाना ८ मरहठों के रतिवाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरां का भागना ९ खानदोरां और राजा जयसिंह का बादशाह से मरहठों को मालवा देश दिलाना १० महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना ११ जयसिंह के बुलाने से मरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का चालीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर २७८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तख्तसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों को ॥ ३ । ४ जयपुर के बलवान् राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
आसिरबादहि अग्ग यह, लिखतो गुमर लसंत ॥
पै नमिकैं यहँ रान प्रति, किय सलामै श्रियमंत॥ ।६॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरंचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसौं,
बाजेरायहिं लाय बधाय बिनोदसौं ॥
आहड़ ग्राम समीप सिबिर दलको कस्यो,
हो जँहँ चंपकबाग अप्प तँहँ उत्तस्यो ॥ ७ ॥
पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,
रूप्यय पंचहजार५०००बसन गज बीति सौं ॥
दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
बिप्रहु गो तब बेग नेह बिथस्यो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
दूजी गद्दिय बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
तिहिं उठवाय रु पेसवा, बिनु गद्दिय गय बैठि ॥
रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
गद्दिय पर रानाँ रह्यो, सिर दुव२ चमर ढराय ॥
चमर इक्क१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाव ॥
मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१घमंड से शोभित होकर२बडा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है॥६॥३करके४डेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥ ६ वस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

नग जराय भूखन नवल[1], विप्रहिं[2] दिय सबिबेक ॥ १३ ॥
सड्ढ लक्ख१५०००० इक१ साल प्रति, स्वीकरि दक्खिन दम्मं[3]॥
दियउ परग्गन बनहड़ा, तिनमैं लिखि हित कम्म[4] ॥ १४ ॥
ताल मध्य इक रानकैं, जगमंदिर प्रासादं[6] ॥
ताहि दिखावनकी कही, बासर दूजे बाद ॥ १५ ॥
रान पिसुन[9] बनि कोउ तब, बाजेरावहिं अक्खि ॥
लै जावत मारन तुमहिं, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥
दक्खिन मंत्रियं[10] एह द्विज, हो तथापि[11] सुनि एह ॥
मूरख सच्ची मन्निकैं, किय रोखारुन[12] देह ॥ १७ ॥
पठई यों कहि रान प्रति, मैं छलघात मरौं न ॥
कैलिहि[13] मंड सज्जहु कटक, करहिं साम अब कोन ।१८।

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुव२ भट [14]वे प्रबीन॥
तखतेस रु केसरिसिंह तत्थ, जाय रु द्विज बंदियं[15] जोरि हत्थ ॥१९॥
कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु[16] अमरख अधीन ॥
किहिं मूढ कहिय यह द्रोह कत्थ[17],सोकहहु अप्प सब विधि समत्थ[18]२०
जो कहहु नाहिं तजि देहु रोस, नाहक न देहु अभिसाप दोस[19] ॥
श्रियमंत तदपि भो नहिं प्रसन्न, तब सत्त लक्ख७०००००दिय दम्म[20]
छन्न ॥२१॥
संग्रामरानकी मात अग्गे[21], चहुवानि मरी निज भुग्गि भग्ग[22] ॥

---

१ नवीन २ ब्राह्मण बाजेराव पेसवा को विचार पूर्वक दिये ॥ १३ ॥ ३ डेढ लाख रुपये ४ हित के कार्य के लिये ॥ १४ ॥ ५ पीछोला नामक तालाव में ६ महल ७ दूसरे दिन ८ वचन ॥ १५ ॥ पहले ९ राणा का चुगली करने वाला बनकर ॥ १६ ॥ १० यह ब्राह्मण दक्षिण का सलाहकार था ११ तोभी १२ क्रोध में लाल शरीर किया ॥ १७ ॥ १३ युद्ध रच कर ॥ १८ ॥ १४ ऊपर के कहे हुए १५ ब्राह्मण को नमस्कार किया ॥ १९ ॥ १६ क्रोध के १७ वचन १८ समर्थ ॥ २० ॥ १९ मिथ्या दोष २० रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (बंट)

तब हुव त्रिलक्ख३०००००मित*कनक दान, सो रानदयो बिप्रहिं सयान ॥ २२ ॥
दल कुंच कियउ लै बिप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥
सतपंच५००दम्म किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल बंदिय पुनि समत्थ२३
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, बिरचिय तिन अग्गहु †निति बिसेस ॥
तिनकौंहु‡दम्म सतपंच५००अप्पि, मरहट्ठ चलिय दल[1]कुंच मप्पि२४
पुनि होय जाजपुर नगरपास , बल कियउ केकड़िय दंग[2] बास ॥
उततैं सुनि कूरम भूप आय , चतुरंग चक्क[3] डुब्बर चलाय ॥ २५ ॥
धमि नैर कृष्णगढ निकट धाम , भिंटिय दुव २भंभोलाव ग्राम ॥
पठई तब कूरम राह अक्खि , हम मिलहि रानघर रीति रक्खि ।२६।
पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमान[4] , है रान सुपहु[5] साहू[6] समान ॥
जे कबहु मिच्छ[7] अनुचर बनैंन , अनुचर सदाहि तुम लोभ औनं[8] ॥२७॥
जिहिं[9] हेतु मोहुकौं अधिक जानि , पै मिलहिं अज्ज समता[10] प्रमानि ॥
तुम जानत गद्दिय दै उठाय , पै बैठहिं दुव२ इक१पीठ[11]पाय ॥२८ ॥
हम तत्थहु[12] दक्खिन ओर होय , दै बाम तुमहिं इम मिलहिं दोय ॥
जयसिंहहु यह सुनि प्रबलजानि , इक आसन स्वीकरि[13] मिलिय आनि
चढि उभय२ चक्क[14] हुव सज्ज आय , तिन बीच इक पटगृह[15] तनाय ॥
तामाँहिं मिले दुव२ गजन[16] छोरि , बैठे इक१ आसन जानु[17] जोरि ३०
द्विज किय तँहँ हुक्काजंत्र पान , लगि धुम्म[18] कुम्म मनबिच रिसान ॥

---

* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रुपये ॥ २४ ॥ १ सेना का २ नगर दुःख से धर्षणा की जावै ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) की सेना ॥२५॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ श्रेष्ठ राजा ६ सितारा के पति साहू के समान हैं ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥२७॥९इस कारण मुझ को बडा मानो परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दहिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलाप के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो कर रही १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ घुटने मिला कर॥३०॥ १८ धूम

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल*आयत बनाय३१
दक्खिन भट हाजरि सबहि तत्थ[1], इक न मलार आयउ समत्थ[2]॥
संधा[3] जिहिं बुंदिय लैन लिन्न, द्विज बाजेरावहु बचन दिन्न॥३२॥
श्रेयमंत यहाँ मिलि पलटि पोन, कछवाह बुंदि छोरहु कह्यो न॥
योन१ ह्योन २अन्त्यानुप्रासः १॥
गालम सुत संजुत आँसु उट्ठि, इहिं कारन हुलकर चलिय रुट्ठि३३
श्रेयमंत कुम्म इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय आय
यहँ सुनिय बिप्र रुट्ठिय मलार, गय तबहि निहोरन प्रकटि प्यार३४
अक्खिय तब हुलकर अत्थ आय, तुम बुंदिय लैन न किय उपाय
करि सपथ लैन पुनि देहु बैन, तुम संग न तो अब हम चलैं ना३५॥
नृप साहु सपथ तव बिप्र बुल्लि, लैहों अब बुंदिय तेग तुल्लि॥
बिचमैं कछु बासर जान देहु, दोउन मनाय लिय अक्खि एहु ३६
कूरम रु बिप्र पुनि मिलन कीन, लहि कूर्म हाद रचि मंत्र लीन॥
उततैं दल लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर है सहाय॥३७॥
अब ही न लरन अवकास अच्छ, दक्खिन अमात्य तुम नीति दच्छ
मिलि बहुरि दैहिं मिच्छन मिटाय, जँव करि दल सज्जहु गेह जाय
क्रम गय जैपुर अक्खि एह, श्रियमंत मुरयो दक्खिन सनेह॥
त अंक सत्त इक १७९२ सक दुरंतैं, यह भयउ मास फग्गुन उदंत॥ ३९॥

दरकुंच तदनु करि द्विज प्रयान, बेर्घम ढिग आय रु दिय मिलान

(धुंआं) लगने से जयसिंह मन में रिसाया * बडी ॥ ३१ ॥ १ तहां २ समर्थ ३ प्रतिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ शीघ्र उठकर ५ रोष (क्रोध) करके ॥ ३३ ॥ ६ ब्राह्मण (बाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहां आकर फिर बुंदी लेने का ८ सौगन ॥ ३५ ॥ ९ राजा साहू का (सौगन) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अभिप्राय ॥ ३७ ॥ १३ अच्छा १४ हे दक्षिण के मंत्री १५ दक्ष (चतुर) १६ शीघ्र करके सेना सजो ॥ ३८ ॥ १७ दूर है अन्त जिसका; अथवा बुरा है अन्त जिसका १८ वृत्तांत ॥ ३९ ॥ १९ जिस पीछे २० मुकाम

यँहँ भट प्रताप हड्ड सु अभंग, श्रियमंत चरहु[1] लै इक्क१ संग ।४०।
बुन्दीस निकट गय नमिय बीर, सब यह उदंत जंपिय[2] सधीर ॥
कथ पेसवाहु यह तब कहाय, तुमतैं न जुदे हम बुंदिराय ॥ ४१ ॥
अबतो हम आये लोभ ठानि, लैहैं पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥
बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु बिप्र इम दल[3] लिखाय४२
तदनंतर[4] दक्खिन द्विज प्रपत्त[5], गो हड्ड प्रतापहु संग तत्त[6] ॥
इत दिल्लिय कूरम कुजस उट्ठि, श्रियमंत मिलन सुनि साह रुट्ठि ४३
तब साँह निजामनमुलक बुल्लि, आयउ नवाब सुनि तेग तुल्लि ॥
हो यह कलीजखाँ नाँम बीर, गाजुद्दीखाँ सुत रन गंभीर[8] ॥ ४४ ॥
वह भट द्रुत[9] दिल्लियनैर आय, बल्लि साह हिंतु सिजदा[10] बिधाय[11] ॥
जवनेसहिं कूरम कुपित जानि, पुनि लिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि४५
अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैन[12] ॥
यह सुनत बज्जि जिततित निसान[13], उमडिय अनीकँ[14] सागर उफान४६
फहराय झंड हत्थिन फरक्कि, भहराय भज्जि भीरुक[15] भरक्कि ॥
सज्जत भट बाहुल[16] कवच टोप, अतिकाय[17] चरक्खन चढत तोप ॥४७॥
खुरसान धार आयुध खनंक्कि, पावक[18] प्रचंड झारत झनंक्कि ॥
दक्खिन अनीक[19] गज्जिय दुरंत[20], इहिं रीति बीर सज्जिय अनंत४८
संवत त्रि अंक हय इक्क१७९३मान, इसमास[21] बिजयदसमी१०उफान
संक्रमिय[22] सिताराधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लगि भुम्मि लैन।४९।
अतिकाय बाजि फाँदत अकास, मिटिजात दुग्ग[23] पद्धर मवास[24] ॥

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४ जिस पीछे ५ गया ६ तहां ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुल्मुल्क को (यह खिताब है. जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया ८ युद्ध में गंभीर ॥ ४४ ॥ ९ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ सेना सहित १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ दस्ताने १७ बडी तोपें चरखों पर चढीं ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्त जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१ आश्विन मास २२ चली ॥ ४९ ॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

रवि लियउ ढंकि खुरतार खेह, मंडिय कि भद्द ओसार मेह ।५०।
किलकिलत[2] संग कालिय कराल, खिलखिलत[3] मलंगत खेत्रपाल॥
जुग्गिनि जमाति जय जयति[4] जंपि, झपटत झुकंत बेताल झंपि।५१।
बकबकत[5] संग बावन ५२ प्रमत्त, सकसकत[6] गिद्ध सिर होत छत्त॥
डमरूक डक्क डाँहल डमंकि, ठहनाय हूर नूपुर ठमंकि ॥ ५२ ॥
सजि चलिय संग भैरव त्रिसूल, फरकिय सिचान हिय असन[10] फूल॥
आतापि[11] ओघ ढंकत अकास, फेरंडे[12] फलंगत गिलन ग्रास॥ ५३ ॥
इम चलिय संग पलचर[13] अनेक, कटकट बिरोंव[14] प्रेतन कितेक ॥
लगि अतल बितल सुतलन लचक्क, मुरकत बराह दंतुलि मचक्क ५४
ग्रावन[15] खुरतालन झरत अग्गि, जिहिं[16] रव समाधि प्रमथेस[17] जग्गि ॥
अकबकत सेतु[18] सागर उमंगि, भुल्लत दिसान नर मद कि [19]भंगि ।५५।
तररकि भुम्मि[20] छेकत तुंखार, दररकि देत[21] पब्बय दरार ॥
रननंकि रोंव[22] कंकटै[23] करीन, छननंकि होत जल नंदन[24] छीन ।५६।
उडिजात उंपल[25] चूरन अनंत, गडिजात तिमिर पूरन दिगंत ॥

---

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ हंसताहुआ ४ 'जय हो, जय हो' यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ बहुत बोलते हुए (बकवाद करते हुए) बावन वीर (जहां जहां बावन की संख्या आवै तहां तहां बावन वीर' जानना चाहिये) ६ पंखों के शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ बाद्य विशेष ८ अप्सराओं के ९ पायजेब (पदभूषण) बजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर सिचाण पक्षी उडे ११ चीलहों के समूह से आकाश ढकगया और निवाले गिटने को १२ गीदड़ कूदने लगे ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ मांस खानेवाले अनेक पशु पक्षी साथ चले और कितने ही प्रेतों के दंतों का कटकट १४ शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पत्थरों से और घोड़ों की खुरतालों से अग्नि झड़ने लगी जिसके १६ शब्द से १७ शिव की समाधि छूट गई. घबरा कर समुद्र १८ मर्यादा भूलकर ऐसा बढा जैसे १९ भांग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरारें ले कर २० घोड़े भूमि को फांदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (तेड़ें) देते हैं, रणं-कार करके २३ कवच की कड़ियों का २२ शब्द होता है २४ बडे जलाशयों का पानी क्षीण होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पत्थर चूर्ण होकर उडजाते हैं

इभराज अंदु[2] ऐंचत अभंग, रज्जू[3] कि खेत्र[4]फल मपन रंग ॥ ५७ ॥
बहिचलिय धातु अद्रिन अनेक, सलसलिय[9] पंथ गज दान सेक ॥
इम हलिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दब्बत दुरंत ॥५८॥
सुनि साह सेन सज्जिय सिताब, बल मुख्य उभय रक्खिय नवाब ॥
इक खानकमरदी निजवजीर, बलि[11] संग निजामनमुलक बीर ॥५९॥
दुवर चलिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥
कुलटा कनीनि[12] विधि तरल बाजि, उड्डन मलंगि आगामि आजि[13] ६०
मनके रु पवनके जे सुमित्र, चलत रस[14] धाव[15] मंडत विचित्र ॥
खंधन बिनम्म्र[16] चट्टत खलीन[17], मखतूल[18] बग्ग जर[19] जिलह लीन ॥६१॥
बिरचत निकम्मँ नमि जेरबंध, खेह जात झंपि तउ सहस[22] खंध ॥
दलै[23] मध्य उलटपलटन दिखात, तिमि[24] मच्छ मनहु अर्नव[25] तिरात ६२
भुवकों[26] ति प्रवल बत्थन[27] भरंत, कामिनि गर[28] लग्गत जानि कंत[29]॥
साद्दिन[30] सुख साधित सहज संद्दय[31], फिरिजात छत्रकी छाँह मद्दय६३
असवार चह्त जिहिँ रूप द्रव्य[32], नच्चि रु दिखात सुहि रूप नव्य[33] ॥

और अंधेरे से पूर्ण होकर दिशा दिशा गडजाती (अदृश्य होजाती) है
१ बड़े हाथी नहीं टूटनेवाले २ जंजीरों को खैंचते हैं सो मानों ४ खेतों
को मापने को ३ डोरी (जरीव) खैंचते हैं ॥ ५७ ॥ ५ अनेक पर्वतों से ७ हा-
थियों के मद के ८ सींचने से मार्ग ९ गीले होगये ॥ ५८ ॥ ९ सेना में १०
कमरुद्दीखां ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुतली के समान चपल
घोड़े१३आगे आनेवाले युद्ध के अर्थ उड़ते हैं ॥ ६० ॥१४चलने में रस (स्वाद)
उत्पन्न करते हैं और१५दौड़ने में आश्चर्य करते हैं१६विशेष झुके कंधों वाले
१७लगामों को चाटते हैं वे घोड़े१८रेसम की बागें और१९जरी की शोभा में
लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक झुके हुए कंधों से२०जरबंद को निकम्मा करते
हैं २१ आकाश में उडकर जाते हैं तो भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही झुका
हुआ रहता है वे घोड़े२३सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानों २५ समुद्र में
२४ बड़े मच्छ तिरते हैं ॥६२॥ २६ वे घोड़े भूमि को अपनी २७ बाथों (भुजा
ओं) में भरते हैं सो मानों २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३१ सहज साध-
न से३०सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं।६३।
सवार जिस३२भव्य; अथवा विशेष नम्र रूप को देखना चाहे उसी ३३ नवीन

रन अजिरं वज्र जिनके रकाब, हरखात चढाकन मन हिसाब ६४
इम चलिय अव्व थेइन थरक्क, हंकिय अनेक हत्थिन हलक्क ॥
चंचल लखि पच्छिन करत चोट, जिन अग्ग अंबु इक्खत अगोट ६५
अति बीत पाय रोपत अडोल, लगि बहुरि डौंक बढिजात लोल॥
जंजीर लंब ऐंचत सजोर, सिर रचत भौंर गुंजार सोर ॥ ६६ ॥
आधोरन रक्खत बहु बिसासि, हंकत तथापि उद्धत हुलासि ॥
इम हलिय साह पृतना अभंग, दक्खिन दल सम्मुह रचन दंग ॥६७॥
सुनि इनहि आत दक्खिन दलेस, द्रुत बढिय बिगारत साह देस ॥
खटमास वट्ट आवत बिताय, चक्के सु अब दिल्लिय सिर चलाय ।६८।
ग्वालेर लुट्टि बहु अरिन गंजि, अब चलिय अग्ग रसबीर रंजि ॥
मग चुक्कि अग्ग कढिगयउ मिच्छ, इनआनिलई दिल्लियस्वइच्छ ।६९।
सक बेद अंक सत्रह१७९४सुभाय, अष्टमि८ वलच्छ मधुमास आय
दिल्लीपुर बाहिर पृथुल दोर, अति रुचिर सिल्पविधि ओरओर ७०

रूप को नचकर दिखाते हैं १ युद्ध के अखाड़े में जिनके रकाब (पागड़े) वज्र रूपी हैं जो २ चढने वालों के मन को प्रसन्न करते हैं ॥ ६४ ॥ इस प्रकार के ३ घोड़े नचकर चले और अनेक हाथियों के ४ हलके चले (सौ हाथियों के समूह का नाम हलका है) जो चंचल हाथी पाछियों को देखकर चोट करते हैं जिनके ६ आगे ५ मद का जल बहता हुआ दीखता है ॥ ६५ ॥ अत्यन्त ७ हूलने और अंकुश लगाने से अपने पगों को निश्चल रोपकर खड़े रह जाते हैं और फिर ८ क्रोध दिलाने वाले सांटमारों के छांटे प्रहारों पर ९ चपल होकर पढजाते हैं बड़े जंजीरों को बल पूर्वक खींचते हैं और जिनके मस्तक पर गुंजार करते हुए भ्रमर कोलाहल करके चलते हैं ॥ ६६॥ जिन हाथियों को १० महावत विश्वास देकर रखते हैं, ११ तोभी प्रसन्नता के साथ अनम्र होकर चलते हैं १२ बादशाह की अभंग सेना इस प्रकार चली १३ युद्ध करने को ॥ ६७ ॥१४दक्षिण के सेनापति १५ वह सेना ॥ ६८ ॥ १६ वीर रस में प्रीति करके१७यवन आगे बढ गये१८मरहठों ने अपनी इच्छानुसार दिल्ली को आ ली ॥ ६९ ॥१९श्रेष्ठ रीति से २१ चैत्र २० सुदि २२ बड़े फैलाव से २३सुंदर शिल्परचना की रीति से चारों ओर ॥ ७० ॥

थित इक्क कालिया देवि थान, मेला तहँ तद्दिन हो महान ॥
बढि रहिय तत्थ लक्खन बनिज्ज, जिन्ह लखत होत धनदहिँ अचिज्ज
दक्खिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥
कढि कढि तब बिब्भल बनिजकार, तजि द्रव्य भजिग कालिँदि पार
कोटिन धन दिल्लिय कहर कुप्पि, लुट्टिय मरहट्टन कानि लुप्पि ॥
बहु जलज हीर मानिक बिथार, प्रतिमुल्ल लाल मरकत अपार७३
इम महुर हूंन रुप्पय अनंत, भूखन जराय कुंडल सुभंत ॥
कोटीर तिलक आपीड़ केक, अरु तांडपत्र नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥
सिरपेच हार केयूर स्वच्छ, ऊर्मिक ग्रैवाप कटिसूत्र अच्छ ॥
बहु मारि हट्ट लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु रांकव समाज ।७५।
कौसेय पग्घ साटिन कलाप, नीसार नव्य थुरमा अमाप ॥
अत्तार बिपनि लुट्टिय अनेक, करटी रु बीति पुनि भक्ष्य केक ७६
हारव हुव दिल्लिय हंत हंत, दल कढिय तत्थ पुरतेँ दुरंत ॥
इत रचत लूट दक्खिन अनीक, श्रियमंत सज्ज चाहत समीक।७७।

१उस दिन बडा मेला था२लाखों व्यापारी, अथवा लाखों का व्यापार बढ रहा था ३ जिनको देखने से ४ कुबेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्यापारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ॥ ७२ ॥८ जुल्म करनेवाला क्रोध करके ९ बहुत मोती हीरे और माणिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रुपये, जड़ाव के भूषण १२श्रेष्ट रीति के कर्ण भूषण१३किरीट (मुकुट) कितने ही शिवतिलक और १४चूड़ामणि (मस्तक भूषण विशेष)१५कर्णफूल (स्त्रियों के कानों का भूषण) अनेक नूपुर (चरणाभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥१६ भुजबंध १७ अंगूठियां १८ कटिमेखला अर्थात् करधनी (कणगति) १८ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की २० दुकानें लूटीं जिनमें सण के, सूत के और२१ऊन वस्त्रों के समूह थे ॥ ७५ ॥ २२ रेसमी पगड़ियें और साड़ियों के २३ समूह २४ ठंढ को मिटानेवाले २५ नवीन अपार थुरमे (दुशाले) अनेक अत्तारों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक ३० हाहाकार शब्द हुआ तहां पुरसे ३२ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३१ सेना निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षिण का वजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

पहुँ सुनिय कमरद्दीखाँ वजीर, बोलि कहिय निजामनमुल्लक बीर॥
आप्पन मग चुक्कि रु अग्ग आय, दिल्ली खल पंत्ते लौंन दाय ७८
पह्न अक्खिल सुर लै दल अभंग, पहुँचे अंधारहिं जिम पतंग ॥
उततैं दल पत्तनसौंहु आय, इततैं नबाब दुवरहय उडाय ॥ ७९ ॥
मरहट्ठ लये लुट्टत प्रमत्त, प्रतिमल्ल मिच्छ दुहुँ२ओर पत्त ॥
मचि समर घोर समसेर मार, बजि निनंद बंब त्रंबक बिथार।८०।
धर धुक्कत धुज्जि धावन धसक्कि, कुंडलि कपाल दरकिय कसक्कि ॥
कटि परत भौंह रद अधर कंध, किलकिलत मुंड नच्चत कबंध८१
डमरूक मैंड्डु डाहल डमंकि, घहरात ढोल पक्खर घमंकि ॥
बबक्कारि करत बावन५२बिलास, रच्चत जँहँ जुग्गिनि केलि रास८२
जिततितहि मत्थ उडि परत जत्थ, तुंबा कि तरल अवधूत हत्थ ॥
चढि गगन टोप चमकहिं अनेक, तुटि जँगर जात तननंकि तेकं।८३।
सर्पै गिरत भिन्न बाहुलं समेत, अहि पंच५फन कि कंचुक उपेत ॥
जिरहन बिच कढि दृग फदक्कि जाँहिं, मानहुँ झख दासनँ जालि माँहिं
कटि कटि गिरंत कहुँ मुच्छ कंदं, रंगे मृगनाभि कि दोज२चंद ॥

१पुनि २दिल्ली में प्राप्त हुए (गये) ३दिल्ली को लेने की रीति से॥७८॥जैसे अंधेरे पर ४सूर्य पहुंचे तैसे पहुंचे ५ उधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मरहठों को लूट में ६ असावधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन ७शत्रु ८ प्राप्त हुए ९ तरवारों की मार से घोर युद्ध हुआ और नगारे व तासे बजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़ से नीची बैठकर भूमि धुजी १२ शेषनाग का मस्तक हटकर फटा १३ बिना मस्तक के क्रियावान धड़ नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिकों का वाद्य विशेष १५योगिनियें रासक्रीड़ा करती हैं ॥ ८२ ॥१६चपल अवधूत के हाथ से तूंबा गिरै तैसे१७कवचों के ऊपर तणंकार शब्द करके१८तरवारें टूटती हैं ॥ ८३ ॥ २०बाहुत्राण (दस्ताना) सहित१९हाथ कटकर गिरते हैं सो मानों कांचली २१सहित पांच फण के सर्प हैं२२लोहे की जालीवाले टोपों में नेत्र निकल कर फदकते हैं सो मानों२३धीमरों की जाल में से मच्छी जाती है ॥ ८४ ॥ कहीं पर टेढी मूछों के २४ समूह कट कर गिरते हैं सो मानों २५ कस्तूरी में रंगेहुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं

नागोद कढ़ि कहुँ कढत गत्त, मोचातरुतैं जिम गर्भ पत्त ॥ ८५ ॥
कंकट बिदारि प्रबिसत कटार. बिल बीच पन्नग कि मच्छ वार ।
खंजर कढि पंजर पार जात, सोनित सँन्यो सुअति छबि सुहात८६
मानहुँ गवाक्ष रंजादिन दिखान, कर पटु क्रिया कि जावक चुवान
द्विपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन मुट्ठि मार ॥ ८७ ॥
चलं असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भत्त जुत्त कि करीर ॥
सोनित तिरात धमनिन समूह, जल अरुन जानि अलगर्द जूह८८
सरघा सम छुट्टत बिसिख व्रात, मधु जाल छत्त मत्थन बनात ॥
खिचिजात सरासन करन कानि, जमराज लपन जमुहात जानि८९
मिलिजात कोटि लस्तकैं मचकि, सुकुमार नारि लंक कि लचकि॥
तुरंगीर तुट्टि उड्डत अमाप, केकीनके कि चंद्रक कलाप ॥ ९० ॥

---

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों २ केले के वृक्ष से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है किंवा ४ पानी में मच्छ घुसता है ६ रुधिर से ७ भीगाहुआ खंजर (छुरीविशेष) ५ अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अत्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥ जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ झरोखे से दिखाती है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुंभस्थलों की चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरें होती हैं १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में १७ पानी के सर्पों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमक्खियों के समान तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को सुवाल के छाते बनाते हैं २१ धनुष कानों पर्यन्त खिंचता है सो मानों यमराज २२ मुख से २३ जंभाई (उबासी) लेता है ॥ ८९ ॥ धनुष की २४ मूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें) मिलजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ भाथा टूटकर अमाप बाण उडते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंद्रवों) के समूह

संधत सर[1] धनु बिच यौं सुहात, दड्ढा कि काल आनन[2] दिखात ॥
खग झरत फूल धारन खनंकि, तुटिपरत चाप चिल्लन[3] तनंकि ९१
ढालनपर पय कटि ठहरि जात, कच्छप पर मंदर[4] सम सुहात ॥
छलिजात रुहिर[5] घायन छछक्कि, छुटिजात प्रान कहुँ लोह छक्कि ९२
जिन वंदन[6] इक्कनारिन[7] उछिष्ठ[8], चुंबत शृगाल तिन उदित इष्ठ[9] ॥
मनि कनक मंच निंदक अमान, ते सूर धूर[10] सज्जा सयान ॥ ९३ ॥
वहु बीर बैठि अच्छरि बिमान, तांडव[11] उपेत सुनि गान तान ॥
चित मुदित[12] डारि गलबाँह चाहि, स्व[13] कबंध लरत पिक्खत सिराहि ९४
हिय तिरत अंत जुत निकसि हाल, मानहुँ सनाल लोहित मृनाल[14]
उर गिद्ध वपा[15] हित धसत आय, बैठे गृही कि बलभी[16] बनाय ॥९५॥
भट गिरत पाय अटकत रकाब[17], घुम्मत घने कि उद्धत सराव[18] ॥
तुटिजात तंग पंजरत[19] पलान, कटि परत बाजि[20] गल[21] प्रोथ[22] कान ।९६।
कढिजात कुंत[23] पक्खर बिदारि, बढिजात रुहिर जिम[24] जंत्र बारि ॥

उडते हैं ॥ ९० ॥ धनुप के बीच में संधान किया हुआ १ बाण ऐसी शोभा देता है मानों यमराज के २ मुख में दाढ दीखती है, तरवारों की धारों पर धारें खणंक कर अग्नि कण उडते हैं ३ प्रत्यंचा तणंक कर धनुप तूटते हैं ॥ ९१ ॥ कितने ही चरण कट कर ढालों के ऊपर ठहर जाते हैं सो कमठपर ४ मंदराचल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ९२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदड़ चाटते हैं "यह इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मंचों (पलंगों) की निन्दा करनेवाले थे वे वीर मान रहित १० धूल की शय्या पर सोते हैं॥९३॥ ११नृत्य सहित १२प्रसन्न चित्त से १३अपने धड़ को लड़ता हुआ देख कर प्रशंसा करते हैं ॥९४॥ तुरत का निकला हुआ हृदय आंत सहित गिरता है सो मानों नाल सहित १४लाल कमल तिरता है १५चरवी के लिये ग्रीध पेट में घुसते हैं सो मानों गृहस्थी १६सबसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "वलभी कूटागारे" इति शब्दार्थचिंतामणिः॥९५॥ तिरते हुए वीरों के चरण १७पागड़ों में अटक जाते हैं सो मानों मंदिरों में थंभों के ऊपर १८ श्रावकों (सरावगियों) के देवता ऊंघे झूलते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणे और कान गिरते हैं ॥९६॥ पाखरों को फोड़कर २३भाले निकल जाते हैं और २४जैसे फुहारे से पानी

कटि असिनै केतु उड्डत अकास, मानहुँ मयूर गन भद्द मास ।९७।
इम परत खग्ग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटीरैं तरु पर भुजंग ॥
इम मचिय घोर आहवं अनूप, बहु कटि दक्खिन भट हुव बिरूप९८
उडि चलिय अँग्गि बढि ओर ओर, जमुना जल लुक्किय ताप जोर॥
संकुलिय मच्छ खलभलिसु मार, पन्नग कि अँहिं तुंडिकँ टिपार९९
यँहँ भयउ दैव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मरहट्ठ घोर ॥
लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्खिन बिहाल किय प्रबल दाय १००
श्रियभंत भीतँ गति मति बिसारि, भज्ज्यो सु क्यों न बंभन भिखारि
इहिं भजत भज्यो दक्खिन अनीकँ, घनबिकल कहाँ कहि पेघनीक१०१
मूरखन मिच्चु सोच्यो न मैंत्थ, बनि कांदिसीकँ भरि जियन बत्थ ।
उड्डाव ताँव बिब्भल अनेक, खुंचि मरिय भानुजा गलनि केक१०२

॥ दोहा ॥

मनतैं मूढ जुदे नहे, जियन मरन ऋत जानि ॥
सँघन पंक गडि मरिय सब, अँकक्सुता बिच आनि ।१०३।

भिकले तैसे रुधिर निकलता है १ तरवारों से उडकर ध्वजा आकाश में उडती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उडते हैं ॥ ९७ ॥ वीरों के शरीरों पर तरवारें ऐसी पडती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पडें ३ उपमा रहित युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भरगये ७ मानों टिपारों में सर्पों के फण ६ हैं ॥ ९९ ॥ ८ प्रबल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागै १२ भिक्षा मांगने वाला ब्राह्मण था अर्थात् उसका भगना यथार्थ था १३ सेना ॥१०१॥ उन मूर्खों ने यह नहीं सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहां जावेंगे परन्तु १५ भयद्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा क्या करूं, कहां जाऊं इसप्रकार घबराकर भागे) और १६ जीने को हाथ (भुजों) में भरा १७ उस भाग-ने में अनेक विव्हल होकर कितने ही १९ जमुना नदी की कलख में (दल दल में) १८ गडकर मरगये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को सत्य जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २२ जमुना नदी के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानो! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनोंरे सयानैं त्रिहुगुननको तमासो जाहि,
बस्तुतैं बिचारैं ज्ञान ज्वलन प्रचारैं हैं ॥
सिद्धको न साधन कहौं मैं कौन रीति वहै,
कारनन काज औ दुहूँनैं धुर धारैं हैं ॥
वाहि जे नजानैं याहि सत्य करि मानैं यातैं,
झूठे सुख दुक्ख मानि बेद्यकौं बिसारैं हैं ॥
जानैं अनजानैं की परिच्छा पारबेकी जानि,
डारिबेकी ठोर धीर बीर देह डारैं हैं ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम सेनहिं मरवाय भरक्कि[1] भज्जिग द्विज कातर[2] ॥
अवसेसन[3] सजि सत्थ मुरिग[4] प्रतिमुख भय[5] आतर ॥
तर १ बर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
पिक्खि सिंहकौं स्यार पटक्कि उच्चार[6] पलायउ ॥
क्रिखिसौं गब्बन काज[7] अनखि कोटापर आयउ ॥
चालीस ४० दिवस तोपन तरक्कि लरिरुप्पय दसलक्ख १०००००० लिय

संसार सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारैं तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ. इस में गीता का भी प्रमाण है कि "यो बुद्धेः परतस्तु सः" वह किसी का नतो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की धुर वो ही धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस संसार को सत्य मानते हैं इस कारण झूठे सुख और दुःख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को भूलते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहां शरीर डालने का स्थान होता है वहीं धीर और वीर डालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ बाकी के लोगों का साथ ४ पीछा मुड़ा ५ विष्टा डालकर भागा ("लींड पटक कर भागा" यह राजपूताना की लोकोक्ति है) और ६ लोमड़ी (लूँगती) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अलप सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरिय[२]।१०५।
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजेरावपेसवाख्यस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशन१बाजेरायस्य महाराणादण्डादान २ भम्भोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनोभयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजेरायपुनर्दक्षिणदेशगमन ४ श्रीमंतपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्राप्रसादजयसिंहस्य दिल्लीं प्रति ससैन्यबाजेरायपुनराकारण५दिल्लीबहिःप्रदेशसमराङ्गणयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अवशिष्टसैन्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहारावबाजेरावस्यदक्षिणागमनवर्णनमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २७९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर जित्ति संगर[३] मरहट्टन ॥

---

१ छोटों को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मंत्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भंभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलने के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सेना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध होकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बचीहुई सेना से पीछे आए बाजेराव का कोटा के महाराव से दंड लेकर दक्षिण में जाने के वर्णन का इकतालीसवां ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २७९ मयूख हुए ॥

३ युद्ध में

हरखित गयउ हजूर साह वहु दियउ रीझ रन ॥
इक इक प्रति आदाव[1] उचित सब लिय सलाम करि ॥
दूजे दिवस कलीजखान हुव त्यों तँहँ हाजरि ॥
याकौंहु दैत्त[2] वैभव अतुल लिय सब पृथक[3] सलाम नत[4] ॥
हसि ताहि खानदौराँ कहिय बुङ्ढा बंदर बेर[5] नचत ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि साह रु परिखद[6] सकल, मुसकिँय[7] आसँव[8] मत्त ॥
अट्टाट्टहु[9] कतिकन करिय, त्रँपा[10] न रक्खिय तँत्त[11] ॥ २ ॥
खानकलीज नबाब यह, जथा[12] यौवनी[12] जीमँ[13] ॥
जिहिँ अग्गैं गजसिंह जुत, भखे दैलावर[14] भीमँ[15] ॥ ३ ॥
जिहिँ[16] अक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहै साह तिँहाँर[17] ॥
वेगहि बंदर नच्चिहैं, पुर दिल्लिय प्राकार[18] ॥ ४ ॥
यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पारिय रोस ॥
पै पापिनँ[19] बिगरयो समय, सो न लखैं अपसोसँ[20] ॥
मोजदीनसौं इक्कसे, भये पंच५ दिल्लीस ॥
मत्त कापिसायनँ[21] मुदित, हिय इच्छित रँतही[22] सँ[23] ॥ ६ ॥

---

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया. तुलना रहित (बहुत) वैभव ३ जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ श्रेष्ठ (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सब सभा ७ मुसकराये (मंद हास्य से हसे) ८ मद्य में मस्त ९ कितनों ने उच्च स्वर से भी हास्य किया १० लज्जा ११ तहां ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (फारसी) भाषा में १३ जीम अक्षर होवे तिस प्रकार अर्थात् बड़े पेटवाला (फारसी में जीम अक्षर ऐसा होता है। जिसने पहिले नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित१४दिलावरखां और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को मारे थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा बादशाह इस बुद्धि से रहैगा तो दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही बंदर नचेंगे ॥ ४ ॥१९उन पापियों का २० चिंता है ॥ ५ ॥२१मद्य में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २३ वे (बादशाह) हृदय में२२मैथुन ही चाहते थे. अथवा 'हीस' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्स' का अपभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता बताने के अर्थ दीप्तार्थ में एकार्थवाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

गानमैं गडे जे बालकानमैं[१] बडे जे बौरु[२]-
नीके बहकायेंतैं घुमंडन घनैं लगे ॥
रुष्यनकी रमनि रजीली जो निहारैं ताहि,
बलन बुलाय रुपात ठहे ठहे चाखनैं लगे ॥
कथित[३] कुरानको बिसारि बैठे बालिसं[४],
भनैं जो रीतिकी तो चुप[५] मूढ भाखनैं लगे ॥
दिल्लीके घरानैं उलटी करि इलाहसौं[६] वे[७],
बुलिके[८] ठिकानैं पंडे पायु[९] राखनैं लगे ॥ ॥७॥

दोहा-जुमैं[१०] महज्जत जात नन, सुरा[११] मत्त सठ साह ॥
रहैं सुधि न दिन रैत्ति[१२] की, लहैं सुरत रस लाह ॥ ८ ॥
इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥
कोऊ बिधि बैठो सु चित, जत्थ[१३] बिचारिय जान ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

तहिंन[१४] रचि आपान[१५] अधिक आसव बनि उद्धत ॥
संगहि लै संडे[१६] गन मत्त सब पत्ते[१७] महज्जत ॥
बिरचि बिरचि गलबाँह साह[१८] जुत रबहिं[१९] नमैं सब ॥
यह को रीति अंपुब्ब[२०] तंरकि[२१] जंपिय काजी तब ॥
सुनि हसि रु एह अकिखय सबन रे नहिं तू जानत रुचितें[२२] ॥

---

१ बालकों (मूर्खों) में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुरान का कहना (उपदेश भूलगये) ४ मूर्ख ५ मूर्ख कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके ७ वे योनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के स्थान में नाजरों से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० शुक्र वार के दिन; अथवा बड़ी महजत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहां (मसजिद में) जाना विचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्ठी (मतवाल) रचकर १६ नाजरों अथवा हींजड़ों के समूह को साथ लेकर मस्त होकर मसजिद में १७ गये १८ बादशाह सहित सब १९ खुदा को झुके वहां २१ क्रोध करके काजी ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

साशूके जनन आसिक मिलन आदि रीति सुनियत उचित॥१०॥

॥ दोहा ॥

काजी तवहि कुरानकी, अपनैं सिर दिय उट्ठि ॥
आयउ आलय सबन सह, रंचक साहहु रुट्ठि ॥ ११ ॥
नीति रहित दिल्लिय नयर, इम मच्चिग अंधेर ॥
कोऊ सुनत न काहुकी, घर घर हा रँव घेर ॥ १२ ॥
कटुक खानदोरां कहिय, साह सुनिय हसि सीस ॥
यातैं खानकलीज अब, रचत दुहुँनपर रीस ॥ १३ ॥
तिहिं वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी तत्त ॥
बहुरि सहादतखान प्रति, पठयो पूरब पत्त ॥ १४ ॥
खानसहादत हो यहै, दुड्ढर पूरब देस ॥
हाजरि सूबा च्यारि४है, पूरवके जिहिं पेसैं ॥ १५ ॥
ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सत्वर पत्त ॥
इहाँ समय कछु औरभो, आवहु कोउ न अत्त ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

लियउ वजीर मिलाय, अप्पन तीन३हि इक्कहैं ॥
सेन सम्हारहु आय, हनहिं खानदोरहिं सहज ॥ १७ ॥
रहैं निरंकुस होय, पटकि जोर कछु साह पर ॥
सेनापति तुम सोय, हम वजीर अब इक्क हुव ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हम तुम सम्मलि हनहिं खानदोरां कपटी खल ॥
तब सेनापति तुमहिं साह करिहै गिनि सब्बल ॥

१ माशूक लोगों से आशिकों का मिलना 'प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में माशूक कहते हैं) २ योग्य॥ १०॥ ३ घर में ४ क्रोध करके॥ ११॥ ५ नगर ६ मचा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ १२ ॥ ८ कडुए वचन ९ कलीजखां ॥ १३ ॥ १० कमरदीखां को ११ पत्र ॥ १४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥ १५ ॥ १३ शीघ्र पत्र गये १४ यहां ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १५ सामिल होकर मारेंगे

सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥
लगि सेनापति लोभ आय दिल्लिय चहि अप्पन ॥
अष्ठ सत८००तोप जिहिं वसि अतुल्ल [illegible]
लहि एह हेतु ताकँहँ[1] खलक[2] कहर[3] भाड़भुंजक कहत॥१९॥

॥ दोहा ॥

आय सहादतखान वह, मिलि कलीज सह मोद ॥
इक्क वजीर रु अप्प व्है, विरच्यो कपट विनोद ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान[4] जवन इत ॥
प्रबल सबहि प्रत्यंत जाहि मन्नत जित ही तित ॥
गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥
बुल्लनें[5] नादरसाह पत्त[6] ईरान पठाये ॥
आवहु निसंक सुरताँन[7] इत तिय दिल्लिय तुमकोँ चहत ॥
सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचत दंद[8] दिन दिन महत२१

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनिय बत्त पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जनपद[9] इरान ॥
प्रत्यंत[10] मुख्य बुलवाय पंच, पँहु[11] रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥
तामाचकुली नामक वजीर, बलि[12] मिलिय अलीनिसुरुत[13] प्रबीर ॥
सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥
रुस्तम सलेम सेरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥
मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सय्यद सधीर ॥ २४ ॥

---

१ इस कारण से उसको २ संसार ३ जुल्म करनेवाला भड़भूज्या कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्ष ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १२ पुनि १३ निसुरुतअली ॥ २३ ॥ २४ ॥

दाऊद सेख इसहाकदीन, मँहँदी रु मुहुम्मद मौंनदीन ॥
कदीन १ नदीन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अहमद नियाज मसुऊद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥२५॥
गालिब हबीब लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥
आरास हसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥
याकुबअली रु अम्मन इमाम, नाँसिर असद पुनि नूर नाम ॥
इत्यादि साह भट बर अत्रस्त[1], सँह सचिव[2] किन्न इकत समस्त २७
सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तब कलीज कँग्गर[3] दिखाय ॥
कहि अब न जोर मुगलन निकेत[4], दिल्लिय कटाच्छ मम ओर देत[5]२८
अवरंगजेब मिरजा मरंत, धर हिंदु धँव न धारक धरंत[6] ॥
सचिवन नवाब भट सानुकूल, मिटि गय रँसूल[7] मजहब समूल २९
गायकं[8] हन्यौंहि आलम अजान[9], पुनि मोजदीन अति मद्य पान ॥
मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमंद, फूरुक[10] गहि मार्‍यो पासि फंद३०
मुगलेस दोय २ पुनि साल मद्ध्य, जौंहलन[11] हने जे इन अबद्ध्य[12] ॥
सय्यद अधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहुम्मद पट्ट पाय॥३१॥
सय्यदहिं[13] मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहुम्मद भो वजीर ॥
तासौं इक बंभन[14] पटकि जोर, हिंदुन कर बोर्‍यो नद हिलोर ३२
[illegible]नात[illegible] गनीम दक्खन जमीन, कटक्कन[15] बढि रेवाँ[16] अमल कीन॥

॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय २ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजखां का पत्र ४ मुगलों के घर में ५ मेरी तरफ नजरें मारती है ॥ २८ ॥ ६ हिंदुस्थान की भूमि नहीं धारण करने योग्य पति को धारती है; अथवा वह धरा किसी हिंदु को पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद डाल कर ॥ ३० ॥ ११ मूर्खों ने मारडाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे; अथवा वे बादशाह को मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ हुसन अली नामक सय्यद को मारकर १४ दया बहादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ फौजों ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुव वजीर, सम्मलि कन्नौज नय बिन सरीर ३३
रक्खैं न खबरि सठ रत्ति दीह, लुप्पिय सम्हारि नय लज्ज लीह
चाकर चहंत मालिक मिटान, कठि इच्छत मालिक अनुगं हान३४
मिरजा सु मुहुम्मद तिन समेत, जो कहत जाहिकी मन्नि लेत ॥
नहिं लखत अंध किम बंद रु नेक, कहियेप्रमाद असे कितेक ३५
गनिकान गुंमर आसिक अनंत, हीसैन जिनाँ सु रत हंत हंत ॥
अधिकार गायकंन दिय अनीति, पंडु नरनसौं वं नहिं नेक प्रीति ३६

यावनीभाषा ॥

मस्तदिलाँ अजामैं शराब दिल्ली च्यकुनद बसू बे रूवाब ॥
सुहबत् बदाँ बदाना दिलाँर नाजीम तहम्मुलू मुकूबिलाँन ३७
शहदरून गुजारद् शहर बाब शैताँश नवीनद् रह सवाब ॥
अफवाजि दखनू आमद् बजोर बुजराय कलाँ गरदीद कोर३८
किशू मुल्ककसाँरापासबाँन मरदम् बजमानेंदस् अमाँन॥
इन्साफ अदल रफ्तह बज्योर अज खासु आम आमद् बशोर३९

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१ बिना नीति का बदलाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का मारना ॥ ३४ ॥ ३ बुरा ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त है सो खेद की बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अब ॥ ३६ ॥

शराब (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त हैं, दिल्ली क्या करै बहुत बेरोब है, बुरे लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, भले मनुष्य भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को सहन करते हैं ॥ ३७ ॥ शैतान जो नेकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को नहीं छोडता है दक्षिण (मरहठों) का सेना (फौजें) जोर से आगई हैं और बडे बडे वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का कोई रखवाला (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एकार्थवाची शब्द न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और बडे व छोटे सब पुकार (त्राहि त्राहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

गोजा निल्लाज कलमाँन रत्त, मैहरीन[2] संग जड़ संतत[3] मत्त ॥
रेवा[4] रु अटक बिच पृथुल[5] राज, सब नय[6] बिहीन बिगरत समाज ।४०।
मालव लिय दक्खिन दलन आय, दिल्लीलग लुट्टिय दुसह दाय ॥
त्रिनुचेत मुगल वासर[7] बितात, दल सजहु ठहाँ न रोधक[8] दिखात ४१
तामाचकुली यह सुनि वजीर, बुल्लिय सिराहि भुज ठोंकि बीर ॥
जुल्किरन सिकंदर अग्ग[9] जाय, जित्तय जमीन हिंदुनहराय॥४२॥
तमूर बहुरि गोरी पठान, हत्थन[10] सब जित्तिय हिंदवान ॥
बहु पुस्त[11] पठानन रहिय राज, सो लिय बहोरि मुगलन समाज[12]४३
अग्गैं गुमाय दिल्लिय अनीति, भज्ज्यो जु हमायौं मुगल भीति ॥
आयो सु इहाँ पुर इस्पहान, सुरतान मदति दिन्नी समान[13] ॥ ४४ ॥
ईरान कटक[14] तब जाय संग, लै दियउ राज जुरि जाति जंग ॥
सुरतान हिंतु[15] इम कैरन[16] जोरि, दिल्ली सु हमायौं लिय बहोरि ४५
पुनि ता सुत अकबर पट्ट पाय, सो गिनत रह्यो सिरपर सहाय ॥
ताके सुत सुतके सुत बहोरि, अवरंग पट्ट लिय जंग जोरि ॥ ४६ ॥
ताकेहु तनय[17] अकबर सनाम, आयो सु सरन अत्थहि अधाम[18] ॥
पुनि मरिय अत्थ[19] कछु रोग पाय, दिल्लीहि न तो देते मिलाय॥४७॥
यों मुगल याहि घरके गुलाम, दिन्नौं सु रक्खि नहि सकत धाम[20]
तो अब जमीन अप्पन सम्हारि, बंधहिं प्रपंच औपस[21] बिथारि।४८।
गोगन[22] सकैं न जो ग्वाल रक्खि, अवरहिं तब अप्पत[23] स्वामि आक्खि
कृखि गन सेकादिक[24] जो करै न, तो भू क्रिया पटुन[25] उचित दैन।४९।

१प्रीति नहीं है२चंद्रमुखी नायिकाओं के साथ (फारसी में चन्द्रमाका नाम महर है) ३निरंतर४नर्मदा५बडा६नीति बिना॥४०॥७दिन८रोकनेवाला वहां नहीं दीखता ॥४१॥९ आगे ॥ ४२ ॥१०अपने हाथों से ११ पीढियों तक १२ समूह ने॥४३॥१३ मान सहित ॥ ४४ ॥ १४ सेना ईरान के बादशाह१५से१६हाथ जोड़ कर ॥४५॥ ॥ ४६ ॥ उस औरंगजेब का१७पुत्र१८बिना स्थान होकर १९ यहां ॥ ४७ ॥ २० दिया हुआ घर नहीं रख सकते हैं तो२१हुक्म फैलाकर॥४८॥२२गऊओं के समूह को २३किसी अन्य को सौंपना है२४कर्षुक लोग सींचने आदि खेती का कार्य नहीं करै तो २५ भूमि की क्रिया में चतुर होवे उन काश्तकारों को देना उचित है

जो रक्खि सकहिं तुम हुकम जोरि, ऐहैं तो दिल्लिय दै बहोरि ॥
तामाचकुली यह कहिय*तत्थ, सुनि सजिय साह नादर †समत्थ५०

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे खानदोरांकटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखाँखानदोरांमरणोपायकरण१ मद्यपयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहनपुंसकासक्त्यादिनिमित्तनिन्दनदिल्लींप्रतीरानाधीशनादरशाहाह्वानार्थकलीजखांपत्रप्रेषण ३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनवर्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥

आदितोऽशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥
लग्गा घाय निसानपैं घन जानि घुरााया ॥
उर अट्ठौं दिकपालकैं [२]नैंटसाल खुभाया ॥
हाक नकीबाँ हल्लकौं दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥
जंगी डैरु डमंकिया त्रंबक [३]त्रहकाया ॥
ईरानी भट उप्फने [४]बँपु सज्ज बनाया ॥
टोप बकत्तर जालिका रन ओप रचाया ॥
बेबे [६]तुग्गस बंधिकैं कँटि खग्ग कसाया ॥ २ ॥

॥४९॥ * तहां † समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखां का बादशाह के विरुद्ध होकर खानदोरां को मरवाने का उपाय करना १ मद्यपी बादशाह मुहुम्मद शाह की नपुंसकों से आसक्त होने आदि की निन्दा २ ईरान के बादशाह नादरशाह को दिल्ली पर बुलाने का कलीजखां का पत्र भेजना ३ उक्त पत्र को पढकर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के वर्णन का वियालीसवां ४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्सी २८० मयूख हुए॥

१ नगारों पर २ नहीं निकलै ऐसा साल चुभा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर को ५ जाली (पाखर) ६ दो दो भाथे ७ कमर पर खड्ग बांधे ॥ २ ॥

वे बे चाप बहादुरौं फटकारि बजाया ॥
तद्दिन देस इरानमैं नर बाजि नमाया ॥
के अफगान पठानके मुगलान मिलाया ॥
बलखी कज्जलबास के छांहैं छक छाया ॥ ३ ॥
अरबी रूसी उजबकी हरखाय हकाया ॥
खमसी खूमी खूबही रन सज्ज सुहाया ॥
आतसबाजी अफससी क्रम वाहँ कहाया ॥
आरमनी सीधी इतैं आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥
फ्रांस इतालिहु उप्फने समसेर सजाया ॥
खंधारी जारी खरे बहलीम बुलाया ॥
ओलंदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥
रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥
बीर बुखारी काबिसी रसबीर रचाया ॥
कायेनी अरु कासिदी लरने ति लुभाया ॥
यूनानी रु यहूदिया सब संग सिधाया ॥
गालीली अरु गिंगिनी धर लैन धकाया ॥ ६ ॥
जद्दाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥
काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥
तूरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥
तिगरीके रु तिदोरके छक्क जोर छलाया ॥ ७ ॥
तत्ते तुरक त्रिपोलिके कैंचे कसिआया ॥
हल्ले इम लक्खौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

---

१ उस दिन २ मुगल ३ बलख देश के (यहां से लेकर सात के छन्द तक कहीं देशों और कहीं शहरों के नामों से वहां बसनेवालों के नाम हैं) ॥ ३ ॥ ४ प्रशंसा के वचन ॥ ४ ॥ ५ इटलीवाले ॥ ५ ॥ ६ ते (वे) ॥ ६ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का नाम है ८ मीर सय्यद का खिताब है ॥ ७ ॥ ९ ताते (चपल) १० खड्ग ११ स्त्री बनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया॥
केन मुहम्मद निजनबी रखें केन रटाया ॥ ८ ॥
के बुल्ले इसहाक ओ दाबूद दिपाया ॥
के याकुब हि सगोनकों अक्खैं बल आया ॥
अम्मीनाद्वके अरम मतमैं बतलाया ॥
के योथम आहस कहैं सलमान सुहाया ॥ ९ ॥
के बोयस ओवेदकों चिंतैं चित लाया ॥
सुलेमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥
इत्यादिक अति गैंठवके चढि मिच्छ चलाया ॥
नादरसाह सनाहके विनु देह दिपाया ॥ १० ॥
चोला लाल बनातका सुहि टोप सुहाया ॥
कर दोऊन २ कुरानलै मन नैन लगाया ॥
बेसरके स्पंदन बडे चढि वेग चलाया ॥
हाक नकीबाँ हल्लकैं दल डौंकडगाया ॥ ११ ॥
उग्र बिडाली अंखिके बहु मिच्छ बढाया ॥
केके अरब्बी फारसी बुल्लैं बिकसाया ॥
पंचक टंकी चाप जे रक्खैं भुज भाया,
चक्खैं बक्कर एक जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥
तौंजी पक्खर सज्जके बाँजी बल छाया ॥
ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

---

१ दिन में पांच वार निमाज पढने से २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को ॥८॥ ५ कितने ही (यहां से दस के छन्द तक यवनों के पैगंबरों के अथवा कहीं कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके मजहब पर वे यवन चलते) थे ॥९॥ ६ गर्व वाले ७ विना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चरों के ९ बडे रथ पर १० सेना को क्रोध दिला-कर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसी आंख नेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न होकर (फूलेहुए) १४ यह कमान की ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ धनुष का बल परावधि अठारह टंक का माना जाता है॥१२॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

बैंडे हत्थिन झुंडकै धुजदंड झुकाया ॥
नादरसाह उछाह कैं सहसन[1] चलाया ॥ १३ ॥
सत्यलोक लग यौं रु यौं पाताल पचाया ॥
फट्टा रीढ़[3] सेसका फनमाल फिराया ॥
हल्ली जुग्गिाने संगही थेई थरकाया ॥
फाल फलंगी[4] डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥
काबल सीमा ठ्ठै कटक[5] अब अटक[6] निरैया ॥
हाक परी हिंदवानमैं सब सोक अघाया ॥
लंघि अटक पंजाबका थाँनौं घन घाया ॥
सूबा नायक साहका सब फौरि[7] मिलाया ॥ १५ ॥
आन चलाया अप्पनौं मुगलान मिटाया ॥
सूर इरानी संचरे मगरूर मचाया ॥
यौं नादर अति वेगसौं दिल्ली सिर आया ॥
पानीपथ किरनालपैं झंडाले झुकाया[8] ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोर[9] मचिगैं दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥
साह मुहम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची[10] मानि ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

ईरानपैं[11] सुनि आत, सठ प्रसन्न सबही सचित्र ॥
सोक न तदपि समात, इक खानदोराँ उदर ॥ १८ ॥

॥ पट्पात् ॥

कूरम प्रति जैंपनेर[12] खानदोराँ पठये दल[13] ॥

१ सेना सहित ॥ १३ ॥ २ इधर ३ पीठ की हड्डी ४ छलांगें भर कर कूदी ॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप की ७ त्रस्त हुए (भागगे) ॥ १५ ॥ ८ झंडे खड़े किये "डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊँचा करने को झुकाना कहते हैं" ॥ १६ ॥ ९ हाक १० सच्ची ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥ १२ जयपुर १३ पत्र

तू दुद्धर कछवाह साह तोहीसोँ सब्बल ॥
आवत दल[1] ईशान रचहु दिल्लिय सहाय रन ॥
हम तुम इक्कत होय भुम्मि करिहैं बसि भुग्गन ॥
मम सीस भार आयउ अमित[2] सो तोसैन[3] अब उत्तरहिँ ॥
सिर धरि कुरान करियत सपथ[4] जो उपकृत[5] यह बीसरहिँ॥१९॥

॥ दोहा ॥

तेरीही यह बेरहै, आवहु सदल[6] उछाह ॥
तोहि दुरग रनथंभ अब, रीझि समप्पहिँ साह ॥ २० ॥
इम अनेक कँग्गर[7] लिखे, साह चमूपति[8] सूर ॥
सच्चे करिकैँ सपथ[9] सो, कुम्म गिनैँ नहिँ कूर ॥ २१ ॥
मैँ आवत तुम साह जुत, बाहिर करहु मुकाम ॥
योँ लिखि लिखि दल[10] मुक्कले, कूरम कलुख[11] दुकाम ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

इम जवनन बिस्वासदै रु कूरम छल किन्नोँ ॥
अंतहपुर[12] निज अखिल[13] उदयपुर मुक्कलि दिन्नोँ ॥
सावधान सह सत्थ रह्यो जैपुर कूरम पति ॥
यह अचिज्ज[14] लिखि आत[15] हौँ रु मरन न किन्नी मति ॥
अवरहु नरेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदंत[16] लखि ॥
कोऊ न गयउ दिल्लिय कलह[17] प्रबल काल[18] भाविय परखि२३

॥ दोहा ॥

टारी इम कूरम कितव[19], इत दिल्लीस अनीक[20] ॥
सबल खानदोराँ सजिय, सम्मुह चहत समीक[21] ॥ २४ ॥

---

१ सेना २ प्रमाण रहित (अमाप) ३ तुझसे हो ४ सौगन ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पत्र ८ बादशाह के सेनापति के ९ शपथ (सौगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेजे ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्चर्य १५ लिखे हुए पत्र आते थे तो भी १६ वृत्तान्त देख कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २३ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

इहिँ अंतर परताप वह, जेठो सालम नंद ॥
दिल्ली आय रु दासभो, छली जवनपति छंद ॥ २५ ॥
पानीपथ आयो समुझि, संडन तजि अव साह ॥
सेनापतिके कथित सँग, रचिय कुंच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटकेस चँमू सब सज्ज करी, प्रतिहार नकीबन हाक परी ॥
बल पाय निसानन घाय बजे, लखि जे घन भद्दव नद्द लजे ॥२७॥
खुरसानन फूल कृपान खिरे, चमकात चिनंगिन बाढ चिरे ॥
झननंकि हुताशनँ धारझरी, घननंकि बजी गज घंट घरी ॥ २८॥
पखरैत पटैतँ घने उमहे, कमनैत कटैत न जात कहे ॥
बहु बाजिय ताजियँ सज्ज बने, जँव जान मनौं पवमानँ जने ।२९।
ककचैच्छद कन्न मनौं कलिका, कच याल लखैं भुजगावलिका॥
सहनाईमुखे जिन प्रोथँ सदा, पँय लोलँ मनौं गनिका प्रमदा॥३०॥
केलि जित्तिन कंधँर बंक कसैं, कुलटा कि क्रियापटु लंक कसैं

हुआ ॥ २४ ॥ १ इसी समय के भीतर २ प्रतापसिंह ३ अधिकार में ॥ २५ ॥ ४ नपुंसकों को छोडकर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर ६ सेनापति (खानदौरां) ने ७ सेना सज्जित करी जहां ८ द्वारपालों की और छड़ीदारों की हाक पड़ी, सेना को प्राप्त होकर; अथवा बल पूर्वक ९ नगारों पर घाई बजी जिसको देखकर भादवे के मेघ का शब्द लज्जित हुआ ॥ २७ ॥ खुरसाणों पर १० तरवारों के अग्निकण उडे और उन चिनगारियों के चमकते हुए धाढ चिरे और झणकार करती हुई धाराओं से ११ अग्नि झड़ी और हाथियों की घंटा रूपी १२घड़ियां बजीं ॥ २८ ॥ बहुत से पाखरोंवाले और१३पटा फेंकनेवाले उत्साह युक्त हुए१४धनुष धारण करनेवाले और१५तरवारों से काट करने वाले कहे नहीं जासकते१६ताजिक देश के बहुत घोड़े सज्जित हुए जो१७वेग में मानों१८पवन के पुत्र (हनुमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९ केवड़ा की वा केतकी की कली है और केसवालों के केश२०सर्पों की पंक्ति के समान शोभायमान हैं २१ जिनके फुरणे सदैव २२ सहनाई के मुख के समान फूले रहते हैं २३ जिनके पगों की २४ चपलता मानों गणिका २५ स्त्री के समान है ॥ ३० ॥ २६ युद्ध जीतने को २७ कंधों को टेढे कसते हैं सो मानों२८क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी त्रिसिखान बनैं चकरी ॥३१॥
बिथुरे गजगाहन बीजित जे, जवके बल राहन बीजित जे ॥
पखर जर जीन सजे सखरे, नचि मंडत चेरिनके नखरे ॥ ३२ ॥
धरि धोरित वल्गित धाव धपैं, मनकी गति जे छिन माहिं मपैं॥
छलि गात चलात धुनात छितीं, किल कोट पटी बिच बत्त किती॥३३॥
भटके मन भाय फिरे लटके, धंटके निपजे कि बेटा नटके ॥
हुलसैं करि बिज्जुलिकी हसना, रयमैं मनु तर्किपकी रसना॥३४॥
खुर राजत रजत पत्त खरे, जिन पक्क महायस नाल जरे ॥
लगि यों खुरसों खुरताल लसैं, गहिकै स्वरभानु कि चंद ग्रसैं ३५
चलैं बोधितरुच्छदसे चमकैं, झपटात कनीनिपैं ज्यों झमकैं ॥
असवार चढ़ैं सु करैं अनुठा, मलपैं बनि फाल गुलाल मुठी ॥३६॥

विदग्धा कुलटा नायिका कमर कसती है जिनके उड़ान की टक्कर में १ हाथी टलजाते हैं और सकड़ी २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥ फैले हुए गजगाहों से जिनका ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के बल से मार्गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरें और जरी के जीनों से ६ सुंदर सजे हुए; अथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके ७ लौंडिया के समान नखरे करते हैं ॥ ३२॥ ८ धौरित और वल्गित आदि घोड़े की पांचों गतियों में ९ दौड़ते हैं जो क्षण मात्र में १० मन के चलने की गति का माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ भूमि को धुजा कर चलते हैं जिनकी पट्टी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय हो कोट क्या बात है अर्थात् जिनके आगे कोट कुछ चीज नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ घाट देश के निपजे हुए घोड़े वीरों के मन माफिक झुक कर फिरते हैं सो मानों नट का १४ छोकरा (पट्ठा) फिरता है, बिजुली की १५ हसी करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों १७ तार्किक (न्याय शास्त्र पढ़े हुए) की जिव्हा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८ चांदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ बड़े पक्के लोह (गजवेल तथा फोलाद) के नाल जड़े हैं वे खुरताल खुरों से लग कर ऐसी शोभा पाते हैं जैसे चंद्रमा को पकड़कर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ चपलता में २२ पीपल वृक्ष के पत्ते के समान चपलते हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के समान झमकते हैं २४ अनूठी (अपूर्व) ॥ ३६ ॥

परि संग कुरंगन जे पकरैं, छिति चौ४करमें पलटा छ६करैं ॥
बपु जोर उछक्कत प्रोथ बनैं, सफरी पलटान उडान सजैं ॥ ३७ ॥
रस लेह खलीनं अधीन रहैं, गतिमैं भरि बत्थन भुम्मि गहैं ॥
करि झंप बढैं नटकी न कला, चलि जात दिखात मनों चपला ३८
प्रतिमल्ल बनैं नभ पच्छिनपैं, बहुरैं उडि दोय२ बरच्छिनपैं ॥
कुल जाति बनायुज आदि किते, जवमैं पवमान उडान जिते ।३९।
कुलटैं उलटैं उछटात करी, पलटैं मनु पातुरिकी पुतरी ॥
इक लक्ख१००००० तुरंगन या गतिके, करटी सु हजार१००० भली भंतिके ॥ ४० ॥
झरनाँ तल डानन दान झरैं, कुपितारुन पच्छिन चोट करैं ॥
अय-लंगर ऐंचत ऐंड भरे, खिजि खूँन भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥
डर-देत डरावत डांकनतैं, पलटैं खिजि छाँह पताकनतैं ॥
त्रिपदी पय बद्ध तऊ तरकैं, बमथून लगावत बद्दरकैं ॥ ४२ ॥

साथ होकर जो १हरिणों को पकडते हैं ३चार हाथ के विस्तार वाली २भूमि में छः पलटे करते हैं ४शरीर के जोर से ५चमकने में ६कुरंगों बजते हैं ७मच्छी के पलटने के समान उडान सजते हैं॥३७॥ ८लगाम के चाटने के रस में आधीन होकर रहते हैं और चलने में भूमि को बाथों में पकड़ते हैं ९ जिनके झंप लेने में नट की भी कला नहीं चढती ; अथवा हाथियों को फांदने में नट की कला भी नहीं बढती (नट के फांदने की पूर्ण अवधि हाथी को फांदने की समझी जाती है) चले जाने में मानों १० बिजुली दीखते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पक्षियों के ११ शत्रु (मुकाबला करनेवाले) बनते हैं और दो बरछियों पर उड कर पीछे फिरते हैं, कुल में कितने ही १२ बनायुज आदि देशों के उत्पन्न १३ वेग में १४ पवन के समान उडनेवाले ॥ ३९ ॥ १६ हाथियों को उडा कर १५ कुलांट लेकर उलटते हैं अथवा कु (पृथ्वी) को लोटते हैं और हाथियों को उडा कर उलटते हैं और पलटने में मानों वेश्या के १७ नेत्र की पुतली पलटती है; अथवा नृत्य करते समय वेश्या की पुत्री (लड़की) पलटती है १८ हाथी १९ भली भांति के ॥ ४० ॥ २० क्रोध में लाल होकर पक्षियों पर चोट करते हैं २१ लोहे के जंजीर २२ घमंड से भर कर ॥ ४१ ॥ २४ सांटमारों के क्रोध दिलानेवाले छोटे भालों से डराने वाले २३ पैंड देते हैं २५ ध्वजा की छाया से खिजकर पलटते हैं २६ डगबंडी (पग बंधन) से पग बंधे हैं तो भी तड़कते हैं २७ सुंड के जलकणों को बादलों

घन *बीत घुमावत मत्थ मुरैं, फहरात निसानन जेब फुरैं ॥
फटकारत सुंडिनतैं नभकों, गिर भौंर भनंकत सौरभकों ॥ ४३ ॥
बहु खावन रावतभ्रात बनैं, जल सैंचन काज अगस्ति जनैं ॥
मखतूल कलापक कंध कसे, लगि गत्त बरत्तन नद्ध लसे ॥४४ ॥
भल जंगिय हौदन सज्ज भये, बलमैं चर पौनहिं पैं पठये ॥
कर्ट सुंडि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिरचे ॥ ४५ ॥
गिरचे१ बिरचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १
बहु अद्रिन निंदत उच्चपनौं, मजबूत रूपैं जमदूत मनौं ॥
बलके सिरताज महाबलजे, सनि राहु तमोगुन सामलजे ॥४६ ॥
मदछाकन घुम्मत पैंड मते, बल बाद हिमाचलसौं बदते ॥
मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तृन मान बडे तरु तोरत जे, मनतैं रवि केतु मरोरत जे ॥ ४७ ॥
कनकाचल लड्डुव गोट गिनैं, रवि चंद मलीदन रोट गिनैं ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ * बहुत अंकुश लगाने और हूलने से मस्तक घुमा कर मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उडती शोभा देती है वे (हाथी) सुंडों से आकाश को फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये भ्रमर उडते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने में अगस्ति के पुत्र (अगस्त्य) बनते हैं, कंधे में ३ रेशम के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगेहुए ५ रस्सों से ६ बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल में मानों पवन पर ७ हलकारे भेजे हैं जिनके ८ कपोल और सुंड रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी ऊंचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढता में मानों यमदूत रूपते हैं वे हाथी १० सेना के शिरताज और बडे बलवान जो शनैश्चर, राहु और तमो गुण के समान ११ काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के भरे हुए पैंड पैंड पर मद की छाकों से घूमते हैं और बलवान पन का वाद हिमालय से करते हैं, बडे वृक्षों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य की ध्वजा को मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १३ सुमेरु पर्वत को लड्डुओं के गोले गिनते हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोट गिनते हैं "हाथी के भोजन का नाम डिंगल भाषा में मलीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपैं करें, चल सुंडि चलात घनें चेरें ॥ ४८ ॥
कटपैं कुरुबिंद प्रकासकरें, सनि भौमें भिरे जनु लग्गि गरें ॥
करँ त्यों हरिताल सुढाल करयो, गुरु जानि बिधुंतुद पासि परयो ४९
चरखीनें चिकें न चटाहटपैं, उडिजात अचानक आहटपैं ॥
कति बीरन कुंत लगें कटसों, बलि निछि बहोरत उब्बटसों ॥ ५० ॥
जनकों नियराय रचैं जबरी, बढि ऐंचत बग्घन की बबरी ॥
जिन लंगर पाय धरें जितनें, जमकी इक रज्जुव बद्धनें ॥ ५१ ॥
सिरपैं मनि हाटक जात सिरी, भैरमाचलसौं भ ततो कि भिरी ॥
इम इक्क हजार १००० बडे इभ जे, निकसे सजि बद्दल के निभ जे ५२
तुरकान तयार भयो रनपैं, फरके भुव खंड फनी फनपैं ॥
खग उद्धत सय्यद सेख खिले, मिरजा मुगलान पठान मिले ॥ ५३ ॥
भुजदंड कमानन केक धरें, स लुलायें पखालन बेध करें ॥
बहु बीर बँदूकन दाव रचैं, वर सिस्त जुरें अगु नाँहि बचैं ॥ ५४ ॥

उनको पकड़ने के लिये १ चपल सुंड को चला कर बहुत २ चिरते हैं ॥ ४८ ॥ ३ कपोलों पर ४ हींगलू प्रकाश करता है सो ६ मानों गल से लग कर शनैश्चर और ५ मंगल भिड़े हैं "शनैश्चर का रंग काला और मंगल का रंग लाल है" इसीप्रकार ७ सुंडको हरताल से श्रेष्ठ किया (रंगा) है सो मानों ८ बृहस्पति ९ राहु की पासी में पड़ा है "बृहस्पति का रंग पीला और राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरखियों (अग्नि क्रीड़ा विशेष) की चटाहट पर डिगते ही नहीं हैं और कभी आहट (चरण आदि लगने का सूक्ष्म शब्द) पर उडजाते हैं, कितने ही वीरों के ११ भाले १२ कपोलों पर लगते हैं और १३ बिना मार्ग जाते हुओं को फिर कठिनाई से फेरते हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों को १४ समीप लेकर जबरी करते हैं और आगे बढ़कर खैंच लेते हैं सो मानों बकरी को १५ सिंह खैंचता है इन हाथियों के लंगरों (जंजीरों) पर चरण धरते हैं उतने ही यमराज की एक १६ रस्सी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक के ऊपर मणियों की जड़ी हुई १७ सुवर्ण की सिरी (मस्तक भूषण) है सो मानों १८ सुमेरु पर्वत से १९ नक्षत्रों की पंक्ति भिड़ी है २० सदृश ॥ ५२ ॥ २१ शेषनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिष (भैंस) सहित २३ श्रेष्ठ सीध

करि केक त्रिभागनतैं खुरली, बढि धावन दाव बचातबली ॥
तरवारिन वार करैं कितने, घमकावत संगिन लच्छैं[3] घने ॥ ५५ ॥
सब दिल्लिय मीर उमीरसजे, रनमैं भट भीम रहीम रजे ॥
प्रतिवासर[4] पंच ५ निमाज पढैं, कलमाँ बिच गुप्त बयान कढैं॥५६॥
बिरचैं बहुनेक तजैं बदकौं, मन चिंति रसूल[6] मुहुम्मदकौं ॥
रँसि कंठ कुरानसिरीफ रहैं, बल उच्च रु डाढ्ढ्य[7] कुच्च[8] बहैं ॥ ५७ ॥
लखि मुच्छ न लंब सिखा जिनकी, बिधिछिन्निय रीति प्रतीपनकी[9]॥
छबिके बपु[10] मुद्गर दंड छटे, प्रतिमल्ल[11] घुमावत कैंकि पटे ॥ ५८ ॥
बदैं[12] केक कितेक तजैं कपटैं, रबै[13] पीर[14] बलीन[15] अलीन रटैं ॥
असि ढल्लन मल्ल अपुब्ब अरैं, कति वान बिहंगन[16] बेध करैं॥५९॥
खलट[17] टंक कमानन खैंचतजे, अतुली पय लंगर अंचत जे ॥
बदैं[18] खानकलीज सहादतसे, बलि[19] मूढ वजीर मुहब्बतसे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करते हैं २ बरछियों से ३ निमाजों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में "लाइलाह इल्लिलाह मुहुम्मद रसूलिल्लाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालते हैं ॥ ५६ ॥ ६ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डाढ़ी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहती है वे बड़े बल और ८ डाढ़ी के बड़े केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढ़ी के बाल नहीं कटवाते ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और मूछें लंबी नहीं हैं ९ मानों आर्यों से विरुद्धता की रीति को विधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेरने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ ५८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट को छोड़ने वाले १३ खुदा को गुरु (उपदेशक) को १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली "यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं. कितने ही तरवार और ढाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का बंधन करते हैं ॥ ५९ ॥ १७ अपने समान दूसरे को नहीं समझनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है सो जब उसको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट कमरुद्दीखान चमूप भले, मजिकैं दल दिल्लियतैं निकले ॥
चढि पीलि सुकुम्भ[illegible] [illegible] निसानन ध्वान बढ्यो ॥६१॥
दल के हरवल्लनके पटे, [illegible] [illegible]नके कढतैं ॥
गजढाँल प्रलंब सु तुट्टि [illegible] [illegible] मंडल कूक करी ॥६२॥
दिन मूंक उलूकन कूक दई, छिति व्योम भयानक खेह छई ॥
अपसौंन उपश्रुति पिट्ठि पढी, कचमुक्त रजोवँति दिट्ठि कढी ६३
उनमत्त क्रमेलक आत लख्यो, रु दिगंबर दंत दिखात लख्यो ॥
चिरमेहि लुलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कराल बिडाल छुहे ॥६४॥
इम गौंन कुसौंन अनेक बनैं, मन उद्धत बीरन जे न मनैं ॥
जिम वेद बिरंचनके मुखतैं, गन ज्यौं गिरिजेसैं जटा रुखतैं ॥६५॥
जिम जान्हवि अंडकटाहकतैं, बरखा कि उदीचि बलाहकतैं ॥
टाहकतैं१ लाहकतैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
रचना कि गुनं त्रयतैं बिकसी, पृतना इम दिल्लियतैं निकसी ६६
हुव हाक नकीब हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥
मग डोरिनि सप्पत फोज चली, उरमी जिम सागरतैं उच्छली ॥६७॥

कमरदीखां जैसे सूर्य ॥ ६० ॥ १ सेनापति (खानदोरां) २ हाथी पर ३ नगारों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते ही ७ हाथी का लंबा निसान टूट पड़ा ८ चक्राकार (गोलकुंडा) फिर कर ९ कुत्ते ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (गूंगे) रहने वाले ११ भूमि और आकाश में १२ पीठ पर आकाश वाणी हुई कि शकुन बुरे होते हैं १३ खुलेहुए केसों वाली १४ रजस्वला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १५ मस्त ऊँट को सन्मुख आता देखा१६नग्न पुरुष को हँसता हुआ देखा१७गधा और१८महिष (भैंसा) सामने आते मिले१९भयंकर सर्प छूटा और उस पर बिल्ली क्रोधित हुई ॥६४॥ २०ब्रह्मा के मुख से वेद कढे जैसे २१ शिव की जटा से गण निकले जैसे॥६५॥ २२ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे२३उत्तर दिशा के२४मेघ से वर्षा निकले जैसे २५सत- रज- तम- इन तीनों गुणों से संसार की रचना निकली जैसे २६ तैसे दिल्ली से सेना निकसी ॥ ६६ ॥२७द्वारपालों का२८बडे राजाओं की सवारी निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियें लगाई जाती हैं २९ लहरें

उमडात डगात बली बलकौं, धमकात धुजात रसातलकौं ॥
इक अक्खहिं नादरकौं गहिहैं, इक अक्खहिं दूरनमैं रहि हैं॥६८॥
इक अक्खहिं जित्ति इरान लई, इक अक्खहिं मंत्रि न साहमई ॥
इक अक्खहिं खानकलीज फँटयो, रु वजीर सहादत पै पलटयो६९
इक अक्खहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तहिं तोरि इरान तती ॥
इक अक्खहिं जित्तहिं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादरही॥७०॥
इम चंड चल्यो दल दिल्लियको, हठ जानि हरामिनके हियको ॥
क्रमि मारग सत्त७ मुकाम करे, पंथपानियसौं वं समीप परे॥७१॥
खट६ कोस इरान अनीकिं रह्यो, क्रम तत्थ चमूप मुकाम कह्यो
असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु बीस २०००० छबीनिन
सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक मैसाप्त ॥
रहसि खानदोराँ रचिय, बदन इरानिन बात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाणी ॥

दलईसें खानदोराँ लिखि पत्त पठाया,
ईरान ईस अग्गैं मुनसीन सुनाया ॥
तुम तोरके तरारे चतुरंग चलाया,
लाहोर आदि सूबा बदफैल फटाया ॥७४॥
पंजाब पेसें थाँनाँ निज आन नमाया,

॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १ वजीर बादशाह के अनुकूल नहीं है २ जुदा (भिन्न) होगया है ३ सहादतखां भी "पै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६९ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (भूल) में रही ॥ ७० ॥ ६ भयंकर ७ चलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोरां) ने १२ सेना की रात्रि समय की चोकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पड़ाव पड़ा१४एकान्त में (गुप्त) १५ दुष्ट ईरानियों से वार्ता रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोरां ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ सेना चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सबे हरामी [1]सीने सुलगाया ॥
दिल [2]दौरि ओर [3]औरैं बरजोर बनाया ॥
गिनि इस्पहान बुद्धी पैर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥
औरत [4]अनूप दिल्ली लखि दाव चलाया,
जानी यह न कोऊ बर [5]तास बनाया ॥
सैतानके सिखायेँ [6]मगरूर मचाया,
दिल्लीससौँ न संके दिल मस्त दिखाया ॥ ७६ ॥
[7]सुलताँनकी जमीपैँ [8]समसेर सजाया ॥
कसमीरकी फते [9]कैं मुलतान लुटाया ॥
[10]दरियावकौं दगासौँ लहि नाव लँघाया ॥
पाया एकार सो [11]पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥
चाहो सुलाह जो तो करिजाहु [12]पैयानौं ॥
जो जंगकी जरूरी तो देर नजानौं ॥
दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमानौं ॥
सुलतान [13]दैरजमानैं बर [14]नायब मानौं ॥ ७८ ॥
इस पत्र खानदोराँ पठये [15]ति [16]पैठाये ॥
ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये ॥
एकांत लै [17]ईजाँके [18]अहवाल सुनाये ॥
भेजे ति खानदोराँ [19]दैल खोलि दिखाये ॥ ७९ ॥

---

१ छाती से २ दिल बढाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ उस (दिल्ली) ने नादरशाह को पति बनाया है ६ घमंड ॥ ७६ ॥ ७ बादशाह को ८ तरवार ९ करके १० नदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (गमन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझो नायब लब्ज सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से वह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखागया है ॥ ७८ ॥ १५ ते (वे) १६ पठाये १७ उस जगह के, अथवा इनके; और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होवे तो तकलीफ (दुःख) का अर्थ होता है अर्थात् दुःख के हाल सुनाए १८ वृत्तान्त हाल) १९ खानदोरां ने भेजा वह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अक्खी तामच कुलीसौं ॥
तैंहो वजीरे आनैं अफवाजि खुलीसौं ॥
एतो नहीं निहारे तदबीरें डुलीसौं ॥
आलो बजोरें आये समसेर तुलीसौं ॥ ८० ॥
हिंदू न एक आया सब सोर ठानैं ॥
तोहू ४ लाख१००००० ताजी पखरैत पलानैं ॥
हाथी हजार१०००मत्ते घनरूप घुमानैं ॥
लक्खौं सवार अच्छ्रन पैं हूर लुभानैं ॥ ८१ ॥
तापैं हजार दो २०००पैं नीसान फिरानैं ॥
छोहैं लगे छ्वानौं भट मीर भिरानैं ॥
लक्खौं पयाद जंगी समसेर सजानैं ॥
खुदमोजें खानदोरौं वर फोज खजानैं ॥ ८२ ॥
एतो कलीजखाँका नाइक फरेबंहै ॥
गाफिल जरा न दिल्ली जेर जोर जेबंहै ॥
सबही सुलाह मंडे करनौं कि जंग नौं ॥
उनतो यहै कहाई हमकौं दिरंग नाँ ॥ ८३ ॥
ईरानसाह अक्खी सबकौं सुनायकैं ॥
उमराव बीर बोले मन मंत्र लायकैं ॥
निसुरत अली रु हाजी काजी करीमसे ॥
गाजीहुसैन रुस्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥
बुल्ले कलीजखाँपैं अहवाल पठावैं ॥
पौंजी सु क्यौं बुलाये जंरजोर सुनावैं ॥

---

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देखे ४ उपाय ५ घंड ६ जोर के (पक्ष के) साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अब ९ घोड़े, पाखरोंवाले १० श्रेष्ठ अप्सराओं पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ ११ ध्वजा १२ स्वेच्छाचारी (स्वतंत्र) ॥ ८२ ॥ १३ झूठ १४ धन और बल से १५ शोभायमान है १६ सलाह (मंत्र) रचो १७ देर (विलंब) नहीं है ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ १८ यह हाल १९ हे नीच २० जबरी (बलात्कार) से

जो हिल् दंगाजना यो नाँकिसू न नौंकहैं ॥
हमहू हराम तोपैं कातिलू कँजाकहैं ॥ ८५ ॥
ईरानसाँह ऐसैं लिखि पत्र पठाया ॥
आया कलीजखाँपैं इन मंत्र उपाया ॥
जुरि मेल खाँकमर्दों दिल्ली वजीर जो ॥
दूजो सु भाइभुंजा जालम सरीर जो ॥ ८६ ॥
मिलि तीन३ मंत्र कीनों अपनी जमीनहे ॥
अरु साह पैं मुहुम्मद अपनैं अधीनहै ॥
ईनसौं व खानदोराँ हुसमलु मरायकैं ॥
कछु दंडदे रुपैये देहैं पठायकैं ॥ ८७ ॥
इन मंत्र मंडि पच्छो तँहँ पत्र पठायो ॥
इहिमे हजूर नाँही हम काम बनायो ॥
सब रावरे रंजूहैं तुमसौं न रारिहैं ॥
इक नाँ जु खानदोराँ फर्दाहि मारिहैं ॥ ८८ ॥
तुम जंगकी कहावो न कबूल आमलै ॥
तब सज्ज खानदोराँ ऐहै तमामलै ॥

आमामलै१ तमामलै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हम रावरे महोंसे मिलि ताहि मारिहैं ॥
ईरानकी हुमाई वजमाँ निवारिहैं ॥ ८९ ॥
सुनि एह साह नादर वरजोर कहाई ॥

१हे दुर्दंदना करनेवाला ३ निकम्मा ४ नरे नाक है कि नहीं है ५ हे अधर्मी ६कतल करनेवाले ७ लुटेरे हैं अथवा 'कजा' शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय किया है तो मृत्यु का नाम है ॥८५॥ ८ नादिरशाह ने ९ कलंदीखाँ १० दुष्ट ॥ ८६ ॥ ११ अब ईरानियों से ॥ ८७ ॥ १२आधीन हैं१३एक खानदोराँ आधीन नहीं है सो उसको कल ही मार डालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा और दीरोज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ १४ आमला (दंड) अर्थात् फौज खरच लेना मंजूर मत करो१५संग को लेकर आवेगा१६जमाने के साथ (जमाने में ॥ ८९ ॥

*फर्दाहि †खानदोराँ तुमसौं ब लराई ॥
सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥
दुहुँओर होत ऐसैं वह रत्ति बिताई ॥ ९० ॥
जाई१ ताई२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
अब प्रातकाल आया ‡कृकवाकु कुकानैं ॥
§अरबिंदतैं उडे के[1] अलि[2] रैंनि रुकानैं ॥
परदार[3] छोरि छाती नर जार[4] पलाया[5] ॥
गिरिराजकी गुफामैं तम तोम[6] चलाया ॥ ९१ ॥
दर[7] घंट देहरोंमैं वर नाद बजाया ॥
चहि भोग चक्क चक्की सुख मेल सजाया ॥
तारेन मंद तेजी दबिबिंब दुराया ॥
मंथान[8] ग्वाल गेहों घनघोर घुराया ॥ ९२ ॥
तजि पंथ चोर तक्के छिपनौं दरीनं[9]मैं ॥
गहि मौन घूक बैठे तरु कोटरीनंमैं[10] ॥
उदयाद्रिपैं अनूठी इक रोचि[11] लखाई ॥
चल चाटकेर[12] चौंके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥
अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर रीस ॥ ९४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिय सहादत कजलबास[13] वैभव मम लुट्टत ॥
देहु साह आदेस[14] नरन नाहक सिर तुट्टत ॥

---

† हे खानदोरां अब * कल ही तुम से लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ मुरगे बोले §कमलों से २ रात्रि के रुके हुए १ भ्रमर ३ पर स्त्रियों की छाती को छोड कर जार पुरुष४ भगा५ पर्वतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में६ अंधेरे का समूह गया ॥ ९१ ॥ ७ शंख ८ बिलोना (दधिमंथना) ॥ ९२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षों के कोचरों में ११ कान्ति १२ चपल चिड़ियां बोलीं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ १३ कजल के रहनेवाले; अथवा काले कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकम

तब नय[1] अक्खिय साह पृथक[2] लरनौं न उचित अब ॥
इक्क होय अंकुरहि[3] सजहिं तुम हम कलीजें[4] सब ॥
कहि तदपि[5] भाड़भुंजक कुटिल सब कातर[6] दिल्लीस दल ॥
पिक्ख्यो न जात हमतैं प्रबल बिरचत लूट इरान बल ।९५।
यह सुनि अक्खिय साह पृथक लरि मरहु सहादत ॥
अधम सुनत द्रुत[7] उट्ठि भाड़भुंजक अति उद्धत ॥
चढि निज दल[8] लै चलिय खानदौराँ प्रति यौं कहि ॥
दीजै हमहि सहाय चमूअधिराज[9] बिजय चहि ॥
इम अक्खिं[10] जाय ईरान दल मिल्यो मूढ लवहुँ[11] न लर्‌यो ॥
सब भेद साह नादर समुझि अधम सहादत[12] उच्चर्‌यो ।९६।

॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥
पच्छी यौं कहि मुक्कली, अतुल[13] भार मम सीस ॥ ९७ ॥

॥ निःशानी ॥

सुनि एह खानदौराँ चढि बेग चलाया ॥
वाकौं[14] सहाय दैबे छक छोहँ[15] छकाया ॥
दिल्लीसकी चमूको अधिराज[16] बीर जो ॥
हरवल्ल व्है रु हंक्यो धमचक्क धीर जो ॥ ९८ ॥
अच्छे सिपाहलैकैं अब अब्ब उडाये ॥
मानौं घटा उँदीची[17] आसार[18] मचाये ॥
धरनी धमंकि धूजी सिर फूटि सेसका ॥

---

१ नीति के वचन कहे २ जुदा ३ खड़े होवेंगे ४ कलीजखां ५ तोभी ६ कायर ॥ ९५ ॥ ७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ क्षणभर भी नहीं लड़ा १२ सहादतखां को नीच कहा ॥ ९६ ॥ १३ बहुत १४ सहादतखां को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ ९८ ॥ १७ उत्तर की घटा ने १८ जलधारा

दिनं चंदसा दिखानौं दिपनौं दिनेसका ॥ ९९ ॥
दल भार भाग दक्खा बरकी बगाक्की ॥
कमठस्स पिट्ठि फट्टी दंत ग्राह ग्राह की ॥
काली तथा कपाली आये उछालसौं ॥
वेताल सेन नच्चे चतुरंग चाहसौं ॥ १०० ॥
गन सेन कंक गिद्धो गोमायु गॅहक्के ॥
जंजीर तोप जाली गज घंट ठहक्के ॥
बैंडे हजार हत्थी चढि लैंन विथ्थारे ॥
ताजी तुरंग तत्ते नभ लेन तारे ॥ १०१ ॥
चढि वीर खानदौरौं इस सेन चलाई ॥
ईरानकी अनीपैं अन बॅग उठाई ॥
उततैं हु सेन आयो दुनि चाहि आतही ॥
पातालसौं पुकारैं पहुँचो प्रभातही ॥ १०२ ॥
सक बान अक्क सप्तद्द १७९५ वदि फग्गुन मारो ॥
रवि देखनैं उक्कानौं तरदारि तम्मासे ॥

नम्मासे१ तम्मासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १

हुहुँआर तोप दग्गी धपि धम धोरनी ॥
कनैं बिमान कारे अति गाज उप्फनी ॥ १०३ ॥
डगमग्गि मेदिनीके गिरि कूटें गिरानैं ॥
सरितौं तडाग छिज्जे पसु पच्छि पिरानैं ॥
आकास अच्छरीके गन गान मचायो ॥
डैकैं सु डाकिनीके रस रास रचायो ॥ १०४ ॥

---

१ दिन के चन्द्रमा के समान २ सूर्य दीखने लगा ॥ ९९ ॥ ३ कार्ली ४ शिव ५ सेना में ॥ १०० ॥ ६ गीदड़ ७ प्रसन्न होकर बोले ८ पंक्ति फैलाई ९ ताजिक देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की बागें उठाई १२ गर्जना बढी ॥ १०२ ॥ १३ भूमि धूज कर कितने ही १४ पर्वतों के शिखर गिरे १५ नदी १६ तालाब १७ पीड़ित

गोले गरूर गंजैं हत्थी न हल्लकैं ॥
बारूद भार भग्गैं संपा कि सलक्कैं ॥
आवाज तोप उट्ठैं जिम संब सौलुसौं ॥
ज्वाला कराल जग्गैं बढि चंद भानुसौं ॥ १०५ ॥
आकास लूटि भंडे उडिजात ओरसे ॥
समसेर मेहैं नच्चैं नभ मत्त मोरसे ॥
कर्ट कूट काटि डारैं गोले अरातिकी ॥
मानौं पिछानि पारैं गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥
हुसियार खानदौरौं सम्मसेर चलाई ॥
पहुमी सु रंग पिक्खी लागि रत्त ललाई ॥
फूटैं कपाल भेजे तरवारि तरक्कैं ॥
के कुंत कंकटोंमैं गत सैाल गरक्कैं ॥ १०७ ॥
केते तुखार कट्टैं असवार उलट्टैं ॥
कट्टैं कटार भूखे हिय कालिकैं चट्टैं ॥
नौंगोद बान फुट्टैं नर कातर नट्ठैं ॥
टंकार चाप बज्जैं चिल्ला सु चट्टैं ॥ १०८ ॥
घायल अचेत घुम्मैं लटके रकाबसौं ॥
मानौं गमार मत्त सरसे सराबसौं ॥
कटि पिप्फरे कलेजे फँबि फाँक फुलावैं ॥
वैसाख माँहिं केसूं जिम जेबं बनावैं ॥ १०९ ॥

१घमंड मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ विना विजली चमकती है. ५पर्व-तों के शिखरों से ४ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ ६ तरवार से भंडे तूट कर आकाश में उडते हैं सो मानों ७ वर्षा में मत्त मयूर आकाश में नाचते हैं ८ हाथियों के गंडस्थल और कुंभस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १० उस युद्ध की भूमि ११ रुधिर लग कर लाल रंग की दीखी १२ भाले १३ कवचों में जाकर १४ साल सहित घुसते हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोड़े १६ कलेजा १७ पेट के कवचों (पेटियों) में तीर फूटते हैं १८ कायर मनुष्य भागते हैं १९ प्रत्यंचा खींचते हैं ॥ १०८ ॥ २० शोभित २१ ढाक वृक्ष के फूल (केसूले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥

सुंडा करीन कटैं जिम पन्नग कारे ॥
झंझं झपाने[1] बज्जैं भट भिन्न[2] नगारे ॥
आकास अग्गि[3] पत्ते[4] सुरलोक उजारे ॥
महरादि लोक वारे जनलोक[5] सिधारे ॥ ११० ॥
बिनु चेत वीर बक्कैं वहु दंत वजावैं ॥
घोरि अनेक घुम्मैं मुख भग्ग हलावैं ॥
धाराल[6] बाढ बज्जैं अति वीर बकारैं ॥
समसेरकों सिराहैं मुख मार उचारैं ॥ १११ ॥
पंचासदोय ५२ भैरूँ ललकार लगावैं ॥
लैलै ललाम[7] लोही चउसट्ठि६४ चढावैं ॥
के सीस ईस[8] लैकैं गल भेट भिरावैं ॥
के अच्छरी अनूठी वरमाल गिरावैं ॥ ११२ ॥

षट्पात् ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदोराँ बर[9] बज्जिय ॥
अनिय मोरि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥
रवि अत्थतैं[10] रन रुक्किय घाय लग्गिय अट्टारह१८ ॥
खेत सहादत[11] खान लखन हेरिय बहु बारह ॥
पापिय कहौंन पायो तदपि[12] देख्यो सब ईरान दल ॥
यह जानि भाड़भुंजक अधम दूत पठायउ छुद्र[13] छल ॥११३॥

॥ दोहा ॥

खानसहादत दूत दल, पठयो चखुपति पास ॥
मोहि इरानिन जित्तिकैं, गहि दिय कारावास[14] ॥ ११४ ॥
अब प्रदोस[15] आगम अधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

---

१ भयंकर २ वीरों के फोड़ेहुए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ श्रेष्ठ १० सूर्य अस्त होते ११ सहादतखां को देखने के लिये १२ तोभी १३ उस नीच ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥ १४ कैदखाने में ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कल्हि छुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम[1] जंग ॥ ११५ ॥
बदलि मूढ ईरान बिच, खल सु सहादतखान ॥
यह फरेब कहि मुकल्यो, बनि सठ बंदीवान ॥ ११६ ॥
सेनापति यह सुनि फिर्यो, जय जस कछुक उबारि ॥
सोधि समर घायल भटन, चल्यो नृजानन डारि ॥ ११७ ॥

षट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदोरहिँ सुनि आवत ॥
मारन ताकहँ मूढ ईष्ट[2] बहु ब्याज[3] उपावत ॥
कहिय साहसोँ जाय भजिग कातर सेनापति ॥
कजलबास[4] लगि पिछि आत डारन इत आपति ॥
मैं अबहि दैन दलपति[6] मदति तोपन बल रोकत तिनहिँ ॥
यह अनृत[7] अखिल गोलन गजब गंजर[8] बिथारिय को गिनहिँ।११८।

॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर किय, खंता[9] कमरदी खान ॥
सेनसहित सेनेसको, पिन्नौं तोपन प्रान ॥ ११९ ॥
दुव २ हि खानदोरह चरन, गोलन उड्डिग गैंन[10] ॥
अति घायल हुव तदपि द्रुत आयउ डेरन ऐंन[11] ॥ १२० ॥

॥ निःशाणी ॥

अति घाय खानदोराँ इम डेरन आया ॥
खूँनी[12] कलीजखाँको सँवजीर[13] बुलाया ॥
मन मंत्र[14] नीति मंडी सबकौंहि सुनाया ॥
होंनाँ सु तो हुवा ज्यौँ हम ज्याँन गुमाया ॥ १२१ ॥

१दुर्गम ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ २ अनुकूल ३ मिस (छल) ४ भागा ५ ईरानी ६ सेनापति (खानदोरां) को ७ झूठ बोल कर ८ निरंतर प्रहार ॥ ११८ ॥ ९अपराध (कसूर) ॥ ११९ ॥१०गोलों से आकाश में उडगये११स्थान में ॥१२०॥ १२खून करने वाले (घातक)१३वजीर सहित१४नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अक्खैं हम सो तुम कीजै ॥
ईरानसौं लराई इक १ होन न दीजै ॥
दिल्लीस हिंतु दूजैं २ नादर न मिलावो ॥
तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥
नेगैं सु दै रुपैये प्रतिगोनै करावो ॥
कीनी तुम्हैं जु मोसौं क्यौं सो वैं कहावो ॥
यौं अक्खि खानदोरौं बपु सद्य बिहायो ॥
सुनि साह पैं मुहम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥
अब खाँकलीजकौंही सेनापति कीनौं ॥
अर्थ भाड़मुंजकके अत्थ न दीनौं ॥
इतकौंहु साह नादर अकुलाय बिचारी ॥
उमराव इक्क किन्नी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥
तबही कलीजखाँ पैं लिखि पत्र पठाया ॥
लैं दंडके रुपैये हम गोनै उपाया ॥
सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढाया ॥
एकांत साह अग्गैं अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अग्ग कर जोरि ॥
सेनापति मान्यो समुझि, देहु लग्न अब छोरि ॥ १२६ ॥
इक्क कोटि १०००००००० दम दम्मलै नादर पच्छे जात ॥
सोहे बत्त अब स्वीकरहु, लरैं न पुग्गहिं तात ॥ १२७ ॥
मन्नि साह यह मंत्र तव, नादर प्रति लिखवाय ॥
दम्म कोटि लैजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

१तीन मंत्र मैं कहता हूं २ मे ॥१२२॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शीघ्र शरीर छोडा. बादशाह मुहम्मदशाह भी ७ भर गया ॥ १२३ ॥ ८ यहां ९ सहादतखां के अर्थ सेनापति पन नहीं दिया १० घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना विचारा है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥१२दंड के रुपये लेकर१३स्वीकार करो१४हे स्वामी! ॥१२७॥

इक्क १ भाग अबहीं लहहु, इक्क १ जाय लाहोर ॥
इक्क १ गिनहु लंघत अटक[1], इम लीजे दम[2] मोर ॥ १२९ ॥
यह सुनि नादरसाह अब, करन बिचारिय कुच्च ॥
खानसहादत जानि यह, अधम जम्यो अघ उच्च ॥ १३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नसहादत एह बिचारी, नाँहिं अवर कोऊ भटभारी ॥
खानदोराँ जब देहैं, सेनापति तब मोहि बनै हैं ॥ १३१ ॥
बिचारि वजीर मिलायो, मूढ सु ब्रथा चमूप मरायो ॥
ह कलीज कियउ सेनापति, यातैं जम्यो सहादत अबअति॥१३२॥
नादरप्रति इम बैन सुनाये, ब्रथा कलीज तुमहिं बहकाये ॥
देछिय राज दयो तुमकों रबै[3], क्यों नहिं लेत रु जान कहत अब१३३
खान कलीज मिलन मिस बुल्लहुँ[4], पुनि करि कैद खीज[5] सिरखुल्लहु
तब तुमरे वसि साह मुहुम्मद, व्हैहैं[6] द्रुतहि[7] तजहिं सौँहस हद१३४
तब इन खानकलीज[8] बुलायउ, करन मंत्र[9] वह सठ द्रुतं[10] आयउ ॥
तबहि पकरि कारौं[11]बिच डार्यो, अब नादर अति गैंब[12] सम्हार्यो १३५
अक्खिय सुनहु कलीज कहावहु, दिल्लीसहिं यहँ मिलन बुलावहु॥
सिर कुरान धरि सपथैं[13] उचारत, एकासैंन[14] बैठहिं हित सम्मत १३६
रत १ मत २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तबहि कलीज पत्र लिखि प्रेरिय, आवहु मिलन इनहु हित हेरिय॥
यह सुनि तखत खान[15] आरोहिय, चलत साह बहु बीरन रोहिय[16] १३७
अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवंत[17] ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उतरा तब २ इस प्रकार मुझसे दड लो ॥१२९॥१३०॥
॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ क्रोध ६ शीघ्र ही ७ हद की सीमा छोड देवेगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजखां को ९ सलाह करने को १० शीघ्र ११ कैद में १२ गर्व ॥ १३५ ॥ १३ सौगन १४ एक गद्दी पर ॥ १३६ ॥ तख्तखा पर १५ चढ कर १६ रोका ॥ १३७ ॥ १७ सेना बलवान् है

है हाजरि भट लक्ख१०००००कटारे, पैहो मिलि न भली फलप्यारे
काहूकी न साह श्रुति कीनी, चल्यो मिलन सेनहु नहिं लीनी॥
संग सु लये पंचसत ५००सादी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥
पावकोस लग नादर पुत्तह, गय सम्मुह बेसर रथ जुत्तह ॥
इम ईरान अनीकै गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वह १४०
जाय सभा बैठे इकआसन, भाई कहि हुव दुव संभासन ॥
तब नादर दिल्लीसहिं अक्खहिं, सचिवहु सचिव मिलि हित रक्खहिं१४१
तुम वजीर बुल्लहु यहँ यातैं, हम वजीर रक्खहिं हित तातैं ॥
तब दिल्लीस पत्र लिखि निज कर, बुल्ल्यो स्वीय वजीर पापपर१४२
यह कग्गर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥
तब पचीस२५ असवार पठाये, चढ ति कग्गर लै रु चलाये १४३
ते उद्धत आये दिल्लिय दल, बदत वजीर वजीर कुंजे बल ॥
यह सुनि खानकमरदी कंपिगै,तिन सह चल्यो नाँहि कछु जंपिगै१४४
तबहि मंत्र अक्खिय उमगावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥

वन१ नन२ अन्त्यानुप्रासः ॥

पापी जन न सुलाहि पिछानैं, बिपरीतहिं अनुकूल बखानैं ।१४५।
कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहैं माम साह हम दोऊ२ ॥
इम कहि लै द्वै सत२००असवारन, गो वजीर चित मंत्र बिचारन १४६
सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्लिय दल सुनि भजिग महा दर ॥

नादर१ हादर२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१कटा(कतल)करनेवाले मिल कर भला फल नहीं२पाओगे॥१३८॥३सवार।१३९। ४पुत्र (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५खच्चरों के रथ जुताकर ६ सेना में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा, वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा वजीर उससे स्नेह रक्खेगा१३अपने हाथ से१४अपने पापी वजीर को बुलाया ॥ १४२ ॥१५पत्र ॥१४३ ॥१६सेना में घुसे१७बुजा१८कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥ १९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्लिय उद्धत अरि १४७
सक सर अंक सत्त इक १७९५ *हायन, परि फग्गुन †सित दस-
मि १० ‡पलायन ॥
इम नादर दिल्लिय पुर आयउ, होय निरंकुस तोरे[1] चलायउ ॥१४८॥
साह मुहुम्मद खान सहादत[2], बहुरि बजीर रु खाँकलीज बैत[3] ॥
ए च्यारिहि कैदी करिआनैं, ईरानी दिल्लिय प्रविसानैं[4] ॥ १४९ ॥
आप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान[5] नगरी अंतर[6] दिय॥
तत्थँ[7] रहत निस दोय२ बिताई, पै सेना अनसन[8] अकुलाई ॥ १५० ॥
कोउ न बनिक हट्ट पट खोलैं, बैठे दुरि गेहन नन बोलैं ॥
दल[9] नादर प्रति अरज दई तब, अत्थ बनिक बेचैंन अन्न अब १५१
तँहँ किय अरज भट्ट बंदीजन, राजा जुगलकिसोर प्रीति पन ॥
दल ईरान दहसति[10] मन डोलत, यातैं बनिक बजार न खोलत १५२
तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुर बाहिर ॥
तब आदेस[11] अधीन कटक चढि, बाहिर पुरके जान लग्यो बढि१५३
तिहिं खिन पुर उदघास[12] बिथारयो, महलनमैं नादर[13] हनि डारयो॥
वाको कटक भजत अब यातैं, पथ रुकहु इन सबन निपातैं[14] १५४
यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बंदूक रु पत्थर बाजे ॥
पहर दोय२ तैंस[15] सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥
हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥
बंदूकन ग्रावन[16] पुनि मारत, हम सु रावरो[17] कथित निहारत॥१५६॥

॥ १४७ ॥ * संवत में † शुक्ल पक्ष ‡ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ २ सहादतखाँ ३ इन चारों को सन्तोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (घुसे) ॥१४९॥ ५ सेना का मुकाम ६ शहर के भीतर ७ तहां ८ भूख से ॥ १५० ॥ ९ सेना ने ॥ १५१ ॥ १० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के आधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया १३ नादरशाह को मारडाला १४ मारैं ॥ १५४ ॥ १५ उस (नादर) की सेना ने ॥१५५॥ १६ पत्थरों से १७ आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज[1] दल[2] अरज न मन्नी नादर, अप्पहि लखन[3] चल्यो अन[4] आदर
संके त[5]दपि नाँहिँ जन सारे, याहूपर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥
नादरकाँहु सत्य तब भासी, कट्ठ[6] मुट्ठि निज किरचि निकासी ॥
ठ्यजनँ[7] ताहि उच्ची करि बुल्ल्यो, ईरानिन यह सुनि खग तुल्ल्यो १५८
भयो कतल दिल्लियपुर भारी, लक्खन कटे बाल नर नारी ॥
स्वान[8] बिडाल[9] धेनु हय कुंजर[10], ऍडक[11] अँज[12] रु महिख खर बेसर[13] १५९
कटे कहर[14] को गिनैं अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जाम[15] घोर पन ॥
यह सुनि खानकल्लीज अरज किय, तब नादर यह[16] रुक्कि अभय दिय ॥ १६० ॥
फग्गुन मास बिसँद[17] द्वादसि१२दिन, इम पुर कतल कियउ ईरानिन
नादर दत्त[18] अभय अब जानिय, तब तंस भटन कोस असि[19] ठानिय १६१
रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लिय पति[20] सँन लिखित लिखायउ ॥
हो मैं साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इरान पति ॥१६२॥
वानपति१ रानपति२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ज्यान माल बख्सीस कियउ सब, सो मैं लियउ अधीन उभय अब
इम लिखाय नादर दल[21] लिन्नौं, कछु न मुहुम्मद आदर किन्नौं॥१६३॥
छिन्नि बिभूति लई सब बँर[22] बर, सत्रह१७ मन अनमोल जवाहर ॥
हीरा इक आयँत[23] चतुरंगुल, जो बुंदीस भोज किय बाहुलँ[24] ॥१६४॥

१ अपनी २ सेना की ४ बादशाही लवाजमा लिये विना ३ देखने को ५ तोभी नहीं डरे ॥ १५७ ॥ ६ काष्ठ (लकड़ी) की मूँठ की तरवार को निकाल कर, उसको ऊँची करके ७ कतल बोला ॥ १५८ ॥ ८ कुत्ते ९ बिल्ली, गाय, घोड़े १० हाथी ११ मैंढे १२ बकरे, भैंसे, गधे १३ खच्चर ॥ १५९ ॥ १४ उस जुल्म में १५ तीन पहर तक १६ इस (कतल) को रोक कर ॥ १६० ॥ १७ सुदि १८ नादर का दिया हुआ १९ तरवारों को म्यानों में की ॥ १६१ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ १६२ ॥ २१ पत्र ॥ १६३ ॥ २२ श्रेष्ठ श्रेष्ठ ऐश्वर्य छीन लिया २३ चार अंगुल मोटा बुंदी के पति भोज ने २४ भुजबंध किया था ॥ १६४ ॥

गुल १ हुल २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

सोहीराहु छिन्नि लियनादर, तखत[1] दम्म नवकोटि९००००००० मुल्लबर
आयुध अतुल बसन[2] भूखन प्रिय, अच्छे सब इत्यादि छिन्नि लिय॥१६५॥
रहि दुर मास दिल्लिय इम नादर, करिगय कुच्च सेन सह सादर
अथ इत खानसहादत जानी, मैं हराम यह साह पिछानी ॥१६६॥
जियत नाँहिं छोरहिं हजरत हठ, यह बिचारि बिस खाय मरयो सठ॥
साह मुहुम्मद तेज नसायो, लगि कुमग्ग[3] सब बिभव लुटायो १६७
दिल्लिय निबल सबन अब जानिय, पुनि मरहट्ठन हल्ल प्रमानिय॥
इत बुधसिंह देह अब छोरयो, बुंदिय राज उदधि[4] बिच बोरयो १६८

॥ दोहा ॥

पुरबेघम सन[5] कोसत्रय ३, नाम बाघपुर ग्राम ॥
जत्थ[6] देह संभर तजिय, निज बिथारि बदनाम ॥ १६९ ॥
संवत खट नव सत्त इक १७९६, अर्मा[8] ३० रु[9] माधव मास ॥
इम सु बुद्ध अनिरुद्ध सुव[10], किय परलोक निवास ॥ १७० ॥
प्रेत करम सब बिधि सधिय, भो न[11] भूमि गजदान ॥
वसुधा[12] बिनु किहिं घर बनैं, बैदिक[13] मृतक बिधान ॥१७१॥
रम्य[14] महल१ सर२ बाग३ रचि, करन नाम बय काल ॥
सेवन आलम साह ४११ कौं, प्रबिस्यो[15] बुद्ध १९७१ नृपाल १७२
कछवाही १९७१२ रानी कियउ, पुर निरचन प्रारंभ[16] ॥ ॥
जयनिवास१ अभिधान धरि, थप्पन भुव जस थंभ ॥ १७३ ॥
बिच अच्युत[18] मंदिर बिरचि, पुर ताके चहुँ ४ पास ॥

१श्रेष्ठ तख्त.(यह तख्त बादशाह शाहजहां ने बनाया था और 'तख्तताऊस' उस का नाम था)२वस्त्र ॥ १६५॥१६६॥३कुमार्ग॥१६७॥४समुद्र में डुबोया॥१६८॥ ५से ६ जहां ७ बुधसिंह ने शरीर छोडा ॥ १६९ ॥ ८ अमावास्या ९ चैत्र मास १० अनिरुद्धसिंह के पुत्र ने ॥ १७० ॥११भूमि और हाथी का दान नहीं हुआ १२बिना भूमि के १३वेद विहित कर्म॥१७१॥१४सुन्दर१५प्रवेश किया ॥१७२॥१६ नगर बसाने का कार्य प्रारंभ किया१७नाम रख कर॥१७३॥१८विष्णु भगवान् का

रानी रचन बिचार किय, जैपुर उपमिति[1] जास ॥ १७४ ॥
हे गनेस घंटी बिहित[2], ताके बाहिर तत्थ ॥
दिस उत्तर ४।७ केदारतैं, लग्यो बसन अति अंत्थ[3] ॥ १७५॥
बिच चत्वर[4] तँहँ बनि सक्यो, पहु[5] पहु आलय पीढ[6] ॥
बिनु बुंदिय रुकिगो बहुरि, तुंग[7] न भो नभ लीढ[8] ॥ १७६ ॥
निलय जोध[9]१९७।२ रहि नृप अनुज, व्यय बिस्तरि बसु[10] वार॥
पुरतैं पच्छिम३।५ कोस१ पर, कमन[11] रच्यो कासार[12] ॥१७७॥
नाम जोधसागर १।२ सर१.३, निबसथ[13]२ रचित नवीन ॥
बाग३ महल४ सर सेतु[14]बिच, प्रभु[15] मंदिर५ ढिग पीन[16] ॥१७८॥
भूपति धावर गंग भो, जिहिं पुर पूरब जत्थ ॥
बिरचे उपबन[17]१ बापिका[18]२, अप्पि हजारन अंत्थ[19] ॥ १७९ ॥
कोटवाल नृपको कथित, रामचंद अभिधान[20] ॥
बिरचे बापी१ बाग२ जिहिं, पुरबिच पच्छिम३।५थान॥१८०॥
गजमुख भूप पुरोहितहु, पच्छिम३।५दिस पुर पास ॥
दधिमति देवीको सदन१, बिरच्यो बिभव बिलास ॥१८१॥
तत्थहि बेल[21]१रु बापिका३, छत्री४ किय तिहिं छीव[22] ॥
पुरके दक्खिन२।३प्रांत पुनि, ऊँचे महल५अतीव ॥ १८२ ॥
नृपदासी राधा तनय[23], गंग नाम इक दास ॥
नाल[24] ताल नवलक्खके[25], सबिध महल१ तिम तास ॥१८३॥
समय भूप बुधसिंह१९७।१के, परिकर[26] जनन जितेक ॥

१जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया॥१७४॥२उचित गणेश घाटी है३धन॥१७५॥४बीच का चौक५हे प्रभु रामसिंह, प्रभु (विष्णु) के मंदिर का६थाला ही बन सका७ऊँचा नहीं हुआ ८ आकाश को चाटने वाला ॥१७६॥ ९. बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुन्दी) में रह कर१०धन के समूह का ख़रच फैला कर११सुन्दर१२तालाब रचा ॥ १७७ ॥१३ग्राम१४पाल के ऊपर १५विष्णु भगवान् का१६बडामंदिर॥१७८॥१७बाग१८बावड़ी १९धन देकर॥१७९॥ २०नाम॥१८०॥१८१॥२१बाग२२क्षीब (मत्त, पागल) ने ॥ १८२ ॥२३पुत्र २४ नाले में तलाब २५ नौलखा के नाम से बनाया ॥ १८३ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

विरचे आउठान[1] बहु, न बनें कबहु तितेक ॥ १८४ ॥
पिक्खहु नियति[2] उदर्क[3] पहु, ऐसे[4] विभव अपेत ॥
सो बेघम तजि संहनन[5], गो इम निस्स्व[6] निकेत ॥ १८५ ॥
अंतहपुरके जननमैं[7], हित पति[8] संगति होन ॥
काहूनँ कुलरीति करि, सह्यो नहिं सहगोन[9] ॥ १८६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्यावर्तपानीपथकरनालागमन १ खानदौरांस्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणव्याजदर्शनतदनागमन२जयसिंहागमननिराशखानदौरांनादरशाहसंमुखसैन्यसज्जन३यवनेन्द्रमुहुम्मदसहितसंमुखप्रस्थितखानदौरांनादरशाहान्तिकपत्रप्रेषणद्वारासंधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककलीजखांप्रभृतिप्रेषणद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहुम्मदविरुद्धशहादतखांनादरशाहसंमिश्रण ६ विजितेरानसैन्यागच्छत्खानदौरांविरोधदिल्लीमहामात्यकमरदीखांतन्मारण ७ गृहीतदण्डरूप्य-

१आईठाण (स्थान)॥१८४॥२भाग्य३राजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल४ऐसे वैभव को छोड़ कर५बेघम नामकपुर में शरीर छोडकर६दरिद्री होकर घर से गया।१८५।७जनाने के लोकों में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था९सती नहीं हुई॥१८६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, नादरशाह का सेना लेकर हिन्दुस्थान में पानीपथ, करनाल में आना १ खानदौरां का अपनी सहायता पर जयपुर के राजा जयसिंह को बुलाना और जयसिंह का बहाना करके नहीं जाना २ जयसिंह के आने की आशा छोड कर खानदौरां का नादर के सम्मुख सेना सजना ३ बादशाह मुहम्मद को लेकर गये हुए सेनापति खानदौरां का नादरशाह के समीप पत्र भेज कर युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना४डरे हुए नादरशाह के समीप कलीजखां आदि का पत्र भेज कर उसको युद्ध पर सन्नद्ध करना ५ युद्ध के समय शहादतखां का मुहुम्मद से विरुद्ध होकर नादरशाह से मिलना ६ ईरान की सेना को विजय करके आतेहुए खानदौरां को दिल्ली के वजीर कमरदीखां का परस्पर के विरोध के कारण मारना ७ दंड के रुपये लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाह को समझा कर सआदतखां का सलाह

कजिगमिषुनादरशाहप्रबोधपूर्वकशहादतखांमन्त्रव्याजाहूतकलीजखांकीलन ८ संधिव्याजाहूतयवनेन्द्रमुहुम्मदमहामात्यकमरदीखांकीलनानन्तरनादरदिल्ल्यागमन ९ विहितदिल्लीहत्याकोषितमासद्वयकारितमुहुम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीसर्ववैभवनादरशाहेरानप्रतिगमन १० दिल्लीशहादतखांविषभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्बलीभवन ११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा बारहठशाखाक-चारणकुलावतंसशाहपुराप्रतोलीपात्राऽनम्रसिंहपुत्रेण, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतहसिंह-योधपुराधीशमहाराजयशवन्तसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपापात्रशाहपुरानिवासि-योधपुरमहाराजाश्रितसुकविबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंहचरित्रस्य टीका समाप्तिमिता ॥

के मिस से बुलाकर कलीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के मिस से बादशाह मुहुम्मदशाह और वज़ीर कमरदीखां को बुलाकर कैद किये पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली में कतल किये पीछे दो मास पर्यन्त रहकर मुहुम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विष खाकर मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्बल होना ११ बुंदी के राजा बुधसिंह के मरने के वर्णन का तियालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इक्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा बारहठ शाखाके चारणकुलावंतस शाहपुरा के पोळपात ऐसे अखनाड़ासिंह के पुत्र उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की कीहुई उदधिमंथिनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम राशि के अंतर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ उम्मेदसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ चूलिका पैशाची भाषा ॥

॥ गीतिः ॥

तुमट्टकतनपलपञ्जो हवति सता च्येव पीतपङ्गुरनो ॥
सा पउमाए सन्तलपामङ्को गां नमिय्यते तेवो ॥ १ ॥
सम्फुं कन्तप्पहलं चराडीसं कजमुहं कनाथिपतिं ॥
तन्तून फारतिं मं करेमि अथउत्तलत्थकं कंथम् ॥ २ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

वन्देऽस्मदीयवप्तारं चराडीदानं महामतिम् ॥
त्रैगुरायतिमिरध्नं विद्यावाग्भूषिताननम् ॥ ३ ॥
बुधसिंहेऽथ बुन्दीन्द्रे प्रयाते पञ्चतत्त्वताम् ॥
सूनुरुम्मेदसिंहोऽस्याऽभिषिक्तोऽभून्महामनाः ॥ ४ ॥
परानवाद्रीन्दु १७९६ संख्याभृद्विक्रमाब्दोत्तरायणे ॥
वसन्ताऽर्जुनवैशाखे त्रयोदश्यां १३ नरेन्द्रता ॥ ५ ॥

दुष्टकदनपरप्राज्ञो भवति सदा एव पीतप्रावरणः ॥ स पद्मया सुन्दरवामाङ्गो ननु नम्यते देवः ॥ १ ॥ शंभुं कन्दर्पहरं चराडीशं गजमुखं गणाधिपतिम् ॥ नत्वा भारतीं अहं करोमि अर्थोत्तरस्थकं ग्रन्थम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी सहित सुन्दर है वाम अंग जिनका और सदैव पीत वस्त्रवाला, बुद्धिमान् निश्चय ही दुष्टों के नाश में तत्पर होता है, उस देव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ चंडी के पति, कामदेव को नाश करने वाले, शिव को और गज के मुखवाले गणपति (गणेश) को और सरस्वती को, मैं नमस्कार करके जिस पीछे ग्रन्थ करता हूं ॥ २ ॥ विद्या और वाणी से शोभायमान है मुख जिनका, त्रिगुण रूपी अन्धेरे के सूर्य, बड़े बुद्धिमान्, मेरे पैदा करने वाले (पिता) चंडीदान को नमस्कार करता हूं॥३॥अब बुधसिंह का देहांत होने पर उसका पुत्र महात्मा उम्मेदसिंह अभिषिक्त (राजा) हुआ ॥ ४ ॥ विक्रम के सत्रह सौ छिनवे १७९६ के संवत् के जाने पर उत्तर अयन में वैशाख सुदि तेरस के दिन वह उम्मेदसिंह राजापन को प्राप्त हुआ ॥ ५ ॥ (ज्योतिष में

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ प्रलम्बकम् ॥

*पानिग्गहन चउ४हि करि पाये†सुत पंचक५‡उम्मेद१९८।४सधीरि
उभय२खवासि तहाँ इक §औरस सुत दुव२दुव२हि¶सुतासम सीरै
प्रथम१०ब्याह झल्ला दलपतिकी तनया गर्गराटपुर थान ॥
क्रमनैं बरात पहुँचि अभिधा करि चिमनकुमरि१९८।१परन्यौं चहुवान६
दूजी२रासि नगर पति दुहिता नव बय कुंदनकुमरि१९८।२सनाम ॥
ऊदाउति रट्ठोरि बरी इम करि बखतेस स्वसुर जस काम ॥
बखतकुमारि१९८।३ईडरेची बलिँ जुग२कर जुग२ अंचल जुग२जोरि
परनी ईडर भूप पितृव्यक रामसुता तीजी३ रट्ठोरि ॥ ७ ॥
अजितसिंह ईडर पैंहु पुत्री क्रमचोथी४ तिम उदयकुमारि१९८।४ ॥
बिजैय नरेस जोधपुर बुल्लि रु ब्याही नृपहिँ सनेह बिधारि ॥
तनयँ बडो१इनमैं तीजी३भैव सैजव मरयो सु१९९।१न भो तस नाम
पुनि सुत हुव दूजी२ पैतनकै अजितसिंह१९९।२दूजो२अभिरामा८।
तीजो३तनय बहादुर१९९।३तैासहिं क्रम सोदैर ए दुव२हि कुमार ॥
पुत्र दुव२हि चोथी४पतनीकै सुत चोथो४तिनमैं सरदार१९९।४ ॥
पुत्र त्रिलोकसिंह१९९।५हुव पंचम५ सिसु बय हुव तासहु अवसान॥
सुनहु खवासि रूपरसराय१ रु अपर२ गुमानराय२अभिधान ॥ ९ ॥
दूजी२कै संतति चउ४बिधि दिय सुत सिवसिंह१तथा संग्राम २ ॥

सम्वत् को गत मानते हैं, वर्तमान नहीं मानते) * विवाह † पांच पुत्र पाये ‡ धीरज वाले उम्मेदसिंह ने § विवाहिता स्त्री के उदर से ¶ दो पुत्रियें १ शीलवाली २ पुत्री ३ सुन्दर ४ नाम (यश) करके ॥ ६ ॥ ५ पुत्री ६ नवीन अवस्थावाली ७ पुत्रि ८ दोनों हाथ ९ दोनों वस्त्र जोड़कर १० ईडर के पति के काका रामसिंह की पुत्री ॥ ७ ॥ ११ प्रभु (राजा) १२ राजा विजयसिंह ने जोधपुर बुलाकर १३ पुत्र १४ जन्मा सो १५ शीघ्र मर गया १६ स्त्री के १७ सुन्दर ॥ ८ ॥ १८ उस सहित अथवा उस स्त्री के १९ सहोदर (सगेभाई) २० अन्त २१ दूसरी २२ नाम ॥ ९ ॥ २३ ब्रह्मा वा भाग्य ने

अनिरुद्धकुमरि१वडी१अरु*अनुजा२सुता भई व्रजकुमरि२सनाम ॥
जेठी१जनक[2] दई जयसिंह[3]१हिँ जामाता[4] जदुकुल सेम[5] जानि ॥
सुत तस सप्त[6]राजसिंहा१दिक प्रकट भये कुल नियति[7] प्रमानि॥१०॥
दूजी२सुता जैतसिंह१।२हिँ दिय तकि सम कुल रट्ठोर सतेज ॥
नवलसिंह१ताकै इक१नंदन[8] भयो प्रकट हड्ड६.१न भानेज ॥
दीपसिंह१९८।६इत भूप सहोदर[9] दिय जिहिँ थान कापरनि[10]ढंग ॥
भये विवाह तास खट भावी[10] सुव इक१दोइ२सुता विधिसंग ॥११॥
अनुपमकुमरि१९८।१बडी१ठकुराइनि सोवर[11] दीपसिंह१९८।६हित सत्थ ।
इंद्रसिंह तनया सगताउति सील१चरित२गुन३रूप४समत्थ ॥
अरु उम्मेदकुमरि१९८।२गागरनी दूजी२ अभय सुता रट्ठोरि ॥
तीजी३तिय ईडरपति तनया गदित[12] भवानकुमरि१९८।३गुन गोरि॥१२॥
जादव सोनपाल तनया जिम फतैकुमरि१९८।४चोथी४निज नारि ॥
नृप सामंत सुता रूपनगर क्रम पंचम५सु किशोरकुमारि १९८।५ ॥
परनाई जु पितृव्य[13] बहादुर यह रट्ठोरि कृष्णगढ आसु[14] ॥
कोस[15] सीहोर छठी६अमरकुमरि१९८।६सगताउत्त अमान सुता सु॥१३॥
अजित सुता तीजी३ तिय इनमैं अग्रज[16]की साली जुहि आस ॥
सुत जेठो१सुरतानसिंह१९९।१हुव तनया चंद्रकुमरि१९९।१हुव तास ।
तिय चोथी जहोनि जना तिम दूजी२सुता विचित्रकुमारि२ ॥
परिनाई जयनैर प्रतापहिँ सो श्रीजित[18] श्रुति[19] विधि अनुसारि॥१४॥
अधिपति[20]१को रु अनुज२को आक्खिय इहाँ विवाह१प्रजा२क्रम एस

* छोटी१पुत्री२पिता उम्मेदसिंह ने३जयसिंह को४जमाई५समान (बराबरीवाला) ६.राजसिंह आदि ७ भाग्य के अनुसार ॥ १० ॥ ८ पुत्र ९ उम्मेदसिंह का छोटा भाई १० आगे आने वाले समय में ॥ ११ ॥ ११ नगर का नाम है ।१२ ईडर के पति की पुत्री जिसका नाम भवानकुमरी कहते हैं ॥ १२ ॥१३जिसका विवाह काका बहादुरसिंह ने किया १४ शीघ्र १५ जाकर ॥ १३ ॥ १६ उम्मेदसिंह की साली १७ है१८बुन्दी का राज्य छोडकर वानप्रस्थ हुए पीछे उम्मेदसिंह ने अपना पद (खिताब) श्रीजित (लक्ष्मी को जीतनेवाला) रक्खा था १९ वेद की विधि के अनुसार ॥ १४ ॥ २० उम्मेदसिंह का

जो सब प्रभु भावी३बिधि जानहु बर्त्तमान१अब सुनहु बिसेस ॥
पाइ जनक पट्टहिँ दुर्गत पन करि जो जो दुष्कर रन काम ॥
पुहवि लई१रु दई२जिम पुत्रहिँ रोचक सकल सुनहु प्रभुराम२०३।४

॥ दोहा ॥

पन१पट्टु रन२पट्टु बचन३पट्टु, बार बरस दस१०वेस ॥
बैठि तखत बुधसिंहकेँ, हुव उम्मेद नरेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

कोटेस दुर्जनसल्ल यह सुनि सोचि कछु हित हेरयो ॥
बखतेस पृथ्वीसिंह सुत निज बंधु बेघम प्रेरयो ॥
तिहिँ खग्ग निज कर बंधि श्रो नृप भाल तिलकहु मंडयो ॥
नजरि रु निछावरि ठानिकैँ निज थान परिखद बैठयो॥ १७ ॥
तिमही पुरोहित व्यास चारन भट्ट नजरि निवेदई ॥
भट बर्ग पुनि कछु हे जिन्हैँ इम भूप भूपतिता लई ॥
गोस्वामि गोपियनाथ नृप तब लैन मंत्रहि बुल्लये ॥
करि नाँहिँ आयउ नाँहिँ जे जयसिंहके भय भुल्लये ॥ १८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुम्मँ दलेलैं कानि बँसु कामी, गोपियनाथ नटिय गोस्वामी ॥
कहिय मैं न कोटापुर छोरौं, दिन चँउ४मास कितहु नहिँ दोरौं १९
यह सुनि पुर बेघम नृप माता, बिपति स्वीय लखि नीति बिधाता
पुनि बिन्नति पठई कोटा पुर, धारक तँहँ रामानुज मत धुर॥२०॥
द्विज नागर उपपद सहोदर, बेखाराम सनाम भट्ट बर ॥
पठयो दैंल चुंडाउति तिन प्रति, तुम समदिट्ठि गिनहु सेवक तँति

१हे प्रभु रामसिंह२दरिद्रपन में३रु४चिकारक४हेप्रभु रामसिंह॥१५॥ ५ प्रतिज्ञा में चतुर॥१६॥६खड्ग७ललाट में८सभा में बैठा॥१७॥९उनने भी नजर न्यौछावर की १०राजापन११गुरु मंत्र लेने को बुलाया॥१८॥१२कछवाहा (जयसिंह) १३ बुन्दी का वर्तमान राजा दलेलसिंह के भय से१४धन की कामनावाला१५चौमासे के दिनों में ॥ १९ ॥ २० ॥१६पत्र १७ समदृष्टि१८सेवकों की पंक्ति में ॥ २१ ॥

मम सुत कलिह सत्रु निज मागहिं, बुंदिय अप्पन आन बिथारहिं॥
जो यह नियति जोग नहिं पावहिं, [2]तोपै तुमहिं सदा सिर लावहिं २२
जो तुम मंत्र दैन हित हेरहु, तो आवहु पुत्रहिं वा [3]प्रेरहु ॥
वेणियराम सोधि यह [4]बत्ती, बिरचि अनुग्रह जानि [5]बिपत्ती ॥ २३॥
दैन मंत्र पठयो बेघम [6]हुत, श्री गोबिंद नाम जेठो सुत ॥
तिहिं आय रु उपदेस मंत्र दिय, न्रूप उमेद [7]सानुज सिच्छा लिय २४
चहि बुंदिय पति भक्ति धर्म चित, गेह रु देह निवेदिय गुरुहित ॥
श्रद्धामय [8]अर्पित गहि [9]भूसुर, पुनि करि सिक्ख गयउ कोटा पुर २५
गहिय जबहि बुधसिंह मरन गति, उदयनैर हो तब बेघमपति ॥
अब [10]ईस मास माँहिं वह आयो, उर [11]जामीसे सोक अकुलायो॥२६॥
नयन [12]स्रवत जलधार निरंतर, [13]आँधि अतुल छिज्जत [14]अँसु अंतर॥
[15]बुद्ध भस्म पूजन मसान किय, अरु स्वर उच्च टेरि यह अक्खिय २७
बिनु सेवक तुम [16]त्वरा बिचारी, करिहौं मैं सेवन द्रुत[17]कारी ॥
इम कहि देवसिंह गृह आयउ, [18]लालित [19]जामितनय हिय लायउ२८
अजितसिंह मरुईस अग्ग मृत, सुत सप्तक७ हे तास [20]कलुख कृत
हो दिल्लिय पट्टप [21]नय हीनों, तदनु[22]ज बखत [23]जनक जिय लीनों २९
पंच५ हुते तासों लघु भाई, उनकों कैद करन मति आई ॥
भाजे सुनत कितेक महा भय, डारे कैद कितेकन निर्दय॥ ३०॥
रायसिंह१ आनंद२ भ्रात दुव२, ईडरपुर [24]अधिराज जाय हुव ॥

१भाग्य के योग से २ तोभी ॥ २२ ॥ ३ अथवा तुम्हारे पुत्र को भेजो ४वार्ता ५ आपदा जानकर ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ छोटे भाई सहित शिक्षा ली ॥ २४ ॥ ८ अर्पण किया सो लेकर ९ वह ब्राह्मण ॥ २५ ॥ १० आश्विन मास में ११ बहिन के पति के ॥ २६ ॥ १२ बहती हुई १३ मन की पीड़ा से १४ प्राण १५बुधसिंह की भस्मी का ॥ २७ ॥१६शीघ्रता की१७शीघ्रता करनेवाला अर्थात् मैं भी शीघ्र मरकर तुम्हारे पास आऊँगा १८ लाड करके १९ भानजे को ॥ २८ ॥ २० पाप करनेवाले २१ बिना नीतिवाले २२ उसके छोटे भाई बखतसिंह ने २३ पिता को मारा ॥ २९ ॥ ३० ॥ २४ ईडर के पति होगये

इक१ईडर लगि मालव आयो, जोर मँहँदपुर अमल जमायो।३१॥
यह सुनि आनि लगे दक्खिन दल, काढ्यो वह रट्ठोर बंधि बल॥
आतुर पुर बेघम तब आयो, देवसिंह अति मोद दिखायो ॥ ३२ ॥
रुप्पय पंच५नित्य तँहँ देकरि, धन्वपँ भ्रात रक्खि लिय हित धरि ॥
तदनंतर सक खट नव सत्रह१७९६, अगहन मास बिसदँ पंचमि
५ अँह ॥ ३३ ॥
बेघमपति देवहु वपुँ छोर्यो, जिहिँ जसहेत कँपर्द न जोर्यो ॥
पद सु दुर्जनसिंह तस पायो, रान सुनत हिय लोभ रचायो॥३४॥
ताके सिर दुवलक्ख२०००००दम्म किय, बंखि लिय तबहिँ उदै-
पुर बुल्लिय ॥
रस नव सत्त इक्क१७९६ मित बच्छँर, बिसंद माघ मासगँ पंचमि
५ पर ॥ ३५ ॥
दुर्जनसिंह गय रान सभा जब, अहरि रान समुख आयउ तब ॥
दंड लियउ वहँ दोस दबावन, अक्खिय रान कियउ मैं पावन ३६
इम कहि तिलक भाल तस कीनौं, अँचक्कत मुत्तिय मंडि नवीनौं॥
निज हत्थहि तरवारि बँधाई, सयनँ जोरि कहि मेघँसिवाई॥३७॥

॥ दोहा ॥

नाम सिवाईमेघ तस, कहिय रान कर जोरि ॥
पुर बेघम करि सिक्ख पुनि, वह आयउ मन मोरि ॥३८॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृ-

॥ ३१ ॥ १ सेना ॥ ३२ ॥ २ मारवाड़ के पति के भाई को ३ जिसपीछे ४ शुक्ल पक्ष ५ दिन ॥ ३३ ॥ ६ देवसिंह ने भी शरीर छोड़ा ७ कोड़ी भी इकट्ठी नहीं की ॥ ३४ ॥ ८ फिर ९ सम्वत १० सुदि ११ माघ मास में गई हुई ॥ ३५ ॥ १२ दंड लिया जिस दोष को दबाने के लिये ॥ ३६ ॥ १३ मोतियों के आखे चढ़ाकर १४ हाथ जोड़कर १५ सवाई मेघसिंह नाम रक्खा॥३७॥३८॥

श्री * वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, भूपति उमेद

* यहां पर हमको उम्मेदसिंह चरित्र और अजितसिंह चरित्र के मयूखों की इतिश्रियें ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)

द्रुम्मेदसिंहाऽभिषेचनवल्लभसम्प्रदायशिक्षानमिलनश्रीरामानुजशि-
क्षाप्रापणबंघमपतिदेवसिंहमरणदुर्जनसिंहतत्पीठोपवेशनसिवाईमेघ
नामभवनं प्रथमो १ मयूखः॥ १ ॥ ॥ २३८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
दोहादिवृत्तोत्पादिनी चूलिआला ॥

इत बंघम बुंदीस अब, बय दस१० *हायन मान बिराजत ॥
हय बिद्या सिक्खन हुलसि, नय †दमधर्म निधान बिराजत ।१।
तोमर असि पट्टिस तुपक, चापन साय्क चंड चलावत ॥
खुरली बिनु बित्तैं खिन न, मन जाको ब्रह्मंड न मावत ॥२॥
ब्रह्ममुहूरत जग्गि बलि, संध्या न्हावन आदि सुधारत ॥
सावित्री जप इक सहँस१०००, अरु हरि नाम अनादि उचारत३
व्रत संजमँ उपवास बिधि, इक १ न टारत अप्प इलापति ॥
सर्व्वामैं हित अनुसरैं, गिनैं न मूढन गप्प महामति ॥ ४ ॥
स्वीयजनक बुधसिंह सठ, अति आसवैं अधिकार उपायो ॥
सो मग करि उच्छिन्न सब, बैष्णव धर्म बिचार बढायो ॥५॥
हरिपूजन नैंति जुत हुलसि, बिधि सह खोड़स १६ अंगबनावैं॥

सिंह का अभिषेक होकर वल्लभसंप्रदाय की शिक्षा नहीं मिलने के कारण श्रीरामानुज संप्रदाय की शिक्षा लेना १ बंघमनगर के पति देवसिंह का मरना २ उसकी गद्दी पर बैठकर दुर्जनसिंह का सवाई मेघ के नाम से प्रसिद्ध होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अठ्यासी २८२ मयूख हुए ॥

* दश वर्ष के प्रमाणवाली अवस्था † नीति और दंड १ शोभायमान ॥ १ ॥ २ कटारी ३ धनुषों से भयंकर बाण ४ शस्त्राभ्यास के बिना ॥ २ ॥ ५ चार घड़ी रात्रि बाकी रहे ६ गायत्री के ॥ ३ ॥ ७ इन्द्रियों का रोकना ८ भूपति ॥ ४ ॥ ९ अपने पिता १० मद्य का ११ उस मार्ग को उखाड़कर अर्थात् बुधसिंह के वाममार्ग को छोड़कर ॥ ५ ॥ १२ नम्रता सहित १३ सोलह अंगों सहित

की कीहुई मिलगई हैं जिनका भाषानुवाद करके आगे विष्णुसिंह चरित्र और रामसिंह चरित्र की इतिश्रियें नवी बनावेंगे ॥

पंच५जज्ञ करवाय पुनि, लघुभोजी[1] मन जंग लगावैं ॥ ६ ॥
भारत स्मृति पुनि भागवत, बेद बचन धरि चेत बिचारैं ॥
मृगया[2] रस रत्तो मुदित, सिंहन स्वकुल[3] समेत बिडारैं ॥ ७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

उम्मेदनृपति बुधसिंह पट्ट, दस १० अब्द[4] बेस अति छक उछट्ट ॥
अरु मंजु[5] बालससि[6] जिम अनूप, भल बैन सबन मन हरत भूप॥८॥
कर्कादि[7] निसा मकरादि[8] दीह, इम बढत रक्खि भुव लेनईह[9] ॥
तिम सार्दूलं[10] सिसु निस रु द्यौस, हर्त्थान हनन मन धरत हौंस[11] ९
इम नृपहिं लैन बुंदिय उमंग, आयुष्ष समग्त सद्धत अभंग ॥
बुधसिंह सुतहिं सुनि इम समत्थ[12], सब मिलिय आनि भेंट[13] सचिव सत्थ ॥ १० ॥
धरि सबहि महासिंहोत धर्म, भृत्या[14] बिनु अद्दरि भृत्य कर्म ॥
जे बीर रहे नृप पास जाय, पति आधिपत्य[15] चिंतत उपाय ॥ ११ ॥
इम भूप बढत दिन दिन अमान[16], अवनी[17] निज लेबेकों उफान ॥
इहिं बेरहिं दोलतसिंह रंच, हरदाउत हड्डा किय प्रपंच ॥ १२ ॥
नृप अनुज दीपसिंहाभिधान[18], किय तास[19] पृथक परिखंद बिधान ॥
बहु नरन फोरि अप्पिय बिसास, पुनि यह नृप माता हुव सत्रास१३
सुखसिंह महासिंहोत बुल्लि[20], अक्खिय सुलाह[21] गति समय खुल्लि ॥
मम पुत्र हुवरहि अब बैय[22] महंत, चैंल[23] सुभट इनहिं फोरन चहंत१४

पूजन करता है १ लघुभोजन करना वीरता का सूचक है ॥ ६ ॥ २ शिकार के रस में प्रीति करके ३ उनके कुल सहित ॥ ७ ॥ ४ दश वर्ष की उमर में ५ मनोहर ६ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ ७ कर्क संक्रांति के आदि से रात्रि बढै जैसे ८ मकर संक्रांति के आदि से दिन बढै जैसे ९इच्छा से १०जैसे सिंह का बच्चा ११ चाहना ॥ ९ ॥१२समर्थ१३उमराव ॥१०॥ १४तनखा अथवा जागीर (वेतन) विना ही१५भूपति होने का ॥११॥१६अमाप १७अपनी भूमि ॥ १२ ॥१८नाम१९उस दीपसिंह की जुदी सभा करने लगा ॥ १३ ॥२०बुलाकर २१ सलाह कही २२ अवस्था में बडे होगये हैं २३ चंचल

हम गेह हुती जो राजरीति, आपत्ति सु पै पलटी अनीति ॥
छोटे रु बडे बैठें समस्त, अंजलि[1] बिनु बुल्लत तिन्ह अत्रस्त[2]।१५।
दोलतसिंह सु बिग्रह वढात, दुव२बंधुन बिच अंतर दिखात ॥
ऐसे भट बहु बिरचत अकाज, तस्समात[3] हमहिं यह उचित आज१६
धारत तुम नय जुत[4] स्वामि धर्म, बिस्वासहु तुमरो भक्ति बर्म[5] ॥
यातैं समस्त ऐसे निकासि, बलि[6] लेहु सुद्ध हृदयन बिसासि।१७।
रहिहैं समस्त जो राजरीति, तो हमहिं बढन व्हैहैं प्रतीति ।
सुखसिंह महासिंहोत बीर, धरि हिय यहैहि किय धर्म धीर॥१८॥
दोलतसिंहादिक वे दुँबुद्धि[7], सब दिय बिडारि[8] किय रीति सुद्धि ॥
नृपं[9] मातहिं पुनि अक्खिय निदान, स्वंनिलय[10] निबाह चिंतहु सु-
जान ॥ १९ ॥
जयसिंह गिनहु अति उग्र जोर, दिल्ली रु दक्खिनहु सहत दोर[11]॥
तस्समात[12] हमहिं इक मंत्र आय, नृप अँनुज[13] हेत बिरचहिं उपाय२०
जगतेस रान सन यह निवेदि, कछु लेहु पटा भट तास भेदि[14] ॥
सुनि यह नरेस जननी सुभाय, अब रान हिंतु[15] चिंतिय उपाय।२१।

॥ दोहा ॥

इत मरुपति अभमल्ल नृप, सजि अनीकं[16] अमानं[17] ॥
बीकानैर अधीस सन, चिंतिय लरन प्रयान ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप अनंद अभिधान अग्ग बीकानैर पं[18] स्तत ॥
तब काका सुत तास भटन गजसिंह भूप कृंत[19] ॥

॥ १४ ॥ १ हाथ जोड़े विना २ निर्भय होकर बोलते हैं ॥ १५ ॥ ३ इस कारण से ॥ १६ ॥ ४ नीति सहित ५ है भक्ति के कवच ६ पुनि ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ दुर्बुद्धि ८ निकाल दिये ९ उम्मेदसिंह की माता को१० अपने घर का ॥ १९ ॥ ११ फैलाव १२ इसकारण से १३ उम्मेदसिंह के छोटे भाई के अर्थ ॥ २० ॥ १४ उनके किसी उमराव को मिलाकर १५ से ॥ २१ ॥ १६ सेना १७ प्रमाण रहित ॥ २२ ॥ १८ पति १९ उमरावों ने गजसिंह को राजा बनाया.

यह इक नव हय इंदु १७९१ भयउ जंगलधर भूपति ॥
अब हय नव मुनि इंदु१७९७[1]मरुप तिहिं लरन किन्न मति ॥
यह सुनि नरेस गजसिंह अब कूरमपति[2] प्रति पत्र दिय ॥
हरि[3] गज सहाय तिम तुम हुलसि मम सहाय रक्खहु महिय[4] २३
सुनि यह नृप जयसिंह रान अरु अप्प[5] इक्क बनि ॥
पठये दोउन२ पत्र सजव[6] मरु देस क्रोध सँनि ॥
इन्ह तुम गिनि अंकस्थ[8] विभव निज करन बिगारत ॥
उचित नीति नन एह मूढबनि बंधुन मारत ॥
इत रूपनगर[9] उत अहि[10] अतुल दुरग[11] जोधपुर पंच्छ[12] दुवर ॥
बिनु पच्छ गिद्ध संपाति बिधि धरिहो नहिन उडान ध्रुव।२४।
यह कग्गर[13] द्रुत बचि मरुप नैंकनमन्नैं सन ॥
अक्खी स्वसुर[14] असंक रानजुत[15] बनत किंत्ति[16] धन ॥
सुभट[17] मोर गजसिंह ताहि क्यों नहि समुझाऊँ ॥
मैं गुंज्जर[18] धर जैतवार[19] अरि गरद मिलाऊँ ॥
यह कहि कबंध लै दल[20] अतुल बीकानैरहिं बिंटि लिय ॥
तरकाव ताव तोपन तपिय मनहुँ दाव तिंदुन[21] मचिय ॥२५॥
जिम दंतन बिच जीह[22] इच्छु[23] जिम जंत्र अरोहित[24] ॥
इम आतुर गजसिंह मन्नि संकट हुव मोहित[25] ॥
सुनि आगति[26] जयसिंह कुंच जैपुर सन किन्नौं ॥

१मारवाड़के राजा ने२जयपुरके राजा जयसिंह के नाम३जिसप्रकार विष्णु भगवान ने गज की सहाय की तिसप्रकार मेरी सहाय करके४भूमि रक्खो॥ २३ ॥ ५महाराणा और आप एक बनकर ६ शीघ्र ७ क्रोध में भीजकर ८ गोद बैठे हुए जानकर ९ किसनगढ की प्राचीन राजधानी का नाम है १० बीकानेर ११जोधपुर के गढ की१२दोनों पांखें हैं ॥ २४ ॥१३पत्र१४मेरा श्वशुर(जयसिंह) १५ उदयपुर के राणा सहित हुआ तोभी१६क्या धन है१७मेरा उमराव१८गुजरात की भूमि को १९ जीतनेवाला हूं २० सेना२१तींदू वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी जलाते समय अग्नि कण बहुत उडते हैं ॥ २५ ॥ २२ जिव्हा २३ इक्षु (गन्ना) २४ चरखी में चढाया २५ मूर्छित (घबराया) हुआ २६ पीड़ा के वचन

बुल्ल्यो रानहु वेग लैन मरुधर पन लिन्नौं ॥
दरकुंच चलिय कूरम दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय ॥
सुरलोक वत्त छुट्टिय सहज किहिंसिर कूरम कोपकिय २६
नागराज[1] फन फटिय कमठ रीढक[2] बररक्किय ॥
वसुधा भर[3] विद्दरिय मनहुँ दारिम[4] दररक्किय ॥
रवि लुक्किय[5] रज मेघ दान दिग्गज गन सुक्किय ॥
मग रुक्किय पवमान[6] तान अच्छरि चकि चुक्किय ॥
अतुलित[7] अनीक जयसिंह इम जाय रु विंटिय जोधपुर ॥
रानहु प्रयान यह सुनि रचिय प्रबल सेन हंकत प्रचुर[8]॥२७॥

दोहा-विंट्यो कूरम जोधपुर, जोरयो तोपन जाल ॥
मनहुँ भगाली[9] दच्छमख[10], किन्नौं समय कराल ॥ २८ ॥
सुनि मरुपति अभमल्ल यह, सत्थ अलपतम[11] सज्जि ॥
वेस बदलि आधी निसा, पैठो निजपुर भज्जि ॥ २९ ॥
इत कूरम नागोर पुर, दिन्नौं पत्र पठाय ॥
बखतसिंह आवहु तुम्हैं, दैहैं तखत बठाय ॥ ३० ॥
हेरतहो[12] बखतेस यह, भज्यो त्वरित तजि भौन[13] ॥
जिहिं सठ जनक[14] निपात किय, भ्राता तिहिं चित कौन ३१
सजवै[15] आनि जयसिंहसौं, मिल्यो मूढ भुव लोभ ॥
मरुपति हिय यह सुनि अमित, छयो अनुज सिर छोभ[16] ॥ ३२ ॥
जान्यों अग्गहि कुंम्म[17] यह, उभय लक्ख २००००० चतुरंग[18] ॥
पीछैं आवत रान पुनि, सहँस असी ८०००० दल संग ॥ ३३ ॥

॥ २६ ॥ १ शेष नाग के २ पीठ ३ भार से भूमि ऐसी विदीर्ण हुई ४ मानों दाड़िमवृत्त का फल फटा. रज रूपी मेघ से सूर्य ५ छिपा ६ पवन का ७ अतोल सेना से ८ बहुत ॥ २७ ॥ ९ शिव ने १० दत्त प्रजापति के यज्ञ में ॥ २८ ॥ ११ थोड़ा साथ लेकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १२ शीघ्र १३ घर छोडकर १४ जिस दुष्ट ने पिता को मारडाला उसके लिये भाई कौन बात है ॥ ३१ ॥ १५ शीघ्र १६ क्रोध ॥ ३२ ॥ १७ यह जयसिंह १८ सेना ॥ ३३ ॥

जित्तैं बिनु नहिँ जीवनौं, अरु जित्तन बहु दूर ॥
ध्रुवहि अनुज सिर छत्र धरि, जैहैं स्वसुर जरूर ॥ ३४ ॥
यातैं नातिही उचित अब, मंगैं सुहि दै दम्म ॥
कूरम कुंच कराइये, कछुदिन जीवन कम्मैं ॥ ३५ ॥
स्वसुर पितासम निगम मत, अरु सुत सम जामात ॥
यहे गैली अब कहिकैं, भुव रक्खहिं निज हात ॥ ३६ ॥
कूरम प्रति कहि मुक्कलिय, इम बिचारि अभमल्ल ॥
बंदनीय तुम स्वसुरहो, हम करैं न रन हल्ल ॥ ३७ ॥
जो मंगहु सो देहिंगे, लै जावहु निज गेह ॥
मम सोदर सठ फोरिकैं, अनुचित करहु न एह ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप कूरम बाईस लक्ख२२०००००रुप्पय तब मंगिय ॥
इक्किंव समय मरुईस अखिल रुप्पय किय अंगिय ॥
रट्ठोरन यह जानि बहुत बरज्यो मरु भूपति ॥
दम्म इते क्यों देत मरन मंडहु निसंक मति ॥
सचिवन तथापि अभमल्लसौं दंड दैन अक्खिय उचित ॥
सो सब कबंध स्वीकार किय देस काल निब्बल दुचित३९

॥ दोहा ॥

कूरम तब जामातकौं, नमितजानि इम साफ ॥
निज तनयाकौं चोलंके, तीनलक्ख३०००००किय माफ४०
सेसं लक्ख गुनईस १९ रहि, तिनमैं बहु भरि लिन्न ॥

॥ ३४ ॥ १ नम्रता २ रुपये ३ जीने के काम से; अथवा जीवन से काम है ॥ ३५ ॥ ४ वेद के मत से ५ जमाई ६ मार्ग ॥ ३६ ॥ ७ अभयसिंह ने ८ नमस्कार योग्य ॥ ३७ ॥ ९ मेरे सगे भाई को ॥ ३८ ॥ १० समय देखकर ११मारवाड़ के पति ने१२सब रुपये स्वीकार (मंजूर) किये१३ तोभी१४अभयसिंह ने१५निर्बल ॥ ३९ ॥१६ जमाई अभयसिंह को १७ अपनी पुत्री को कांचली में ॥ ४० ॥ १८ बाकी के

अवसेसन हित ओलिमें, निज प्रधान उन दिन्न ॥ ४१ ॥
रतनसिंह अभिधान यह, मरुपति सचिव सुभाय ॥
दमें के लक्खन दम्मलै, कूरम डेरन आय ॥ ४२ ॥
बट्टेकै रुप्पय निरखि, पुनि किय कूरम रोस ॥
रतनसिंह तब उच्चरिय, देहु न नाहक दोस ॥ ४३ ॥
जैसे रुप्पय जोरकरि, हमतैं छिन्नत हाल ॥
तैसेही तुम दीजियो, हमकों कोउक काल ॥ ४४ ॥
यह सुनि कुम्म सिगाहि अरु, ओलिमाँहिं तिहिं डारि ॥
करिय कुंच निज गेहकों, बिनु रन बिजय बिचारि ॥ ४५ ॥
मिले स्वसुर जामात गिनि, लगी वैखत हिय लाय ॥
सुह बिगारि नागोरकों, कुँम्महि निंदत आय ॥ ४६ ॥
प्रत्यागम जयसिंह किय, अतिदल अतुल उछाह ॥
नगर नाम सरवाड़ ढिग, मिलिय रान कछवाह ॥ ४७
रानहि कूरम कहिय हम, कियउ जोधपुर जेर ॥
अप्पहु अब अच्छे फिरहु, बढहिं खरच बिनु बेर ॥ ४८ ॥
कहिय रान आयउ निकट, पुसकर तीरथ एह ॥
यों न अबहि फिरनों उचित, न्हाय रु जैहैं गेह ॥ ४९ ॥
इम कहि गिनि न्हावन उचित, पुसकर रान पधारि ॥
कूरम आयउ आगरा, सूबा करन सम्हारि ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पो-
गराडकालोम्मेदखुरलीसाधनश्रोतव्यश्रवणमहासिंहोतत्स्वामिसेव -

---

१ बाकी रहे जिसमें २ रुपयों के एवज की कैद में ॥ ४१ ॥ ३ नाम ४ दंड के लाखों रुपयों में ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ५ जमाई अभयसिंह ६ बखतसिंह के हृदय में ७ जयसिंह की निन्दा करता हुआ ॥ ४६ ॥ ८ पीछा गमन ॥ ४७ ॥ ९ बिना समय ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में दश वर्ष की अवस्था में उम्मेदसिंह का शस्त्राभ्यास करना सुनकर, महासिंह के वंशवालों का

नदौलतसिंहादिनिष्कासनयोधपुरराजाऽभयसिंहबीकानेरयुद्धकरणतन्नृपगजसिंहजैपुरसहायपत्रप्रेषणजयसिंहजामातृवारणकूर्मकटकयोधपुरवेष्टनदण्डद्रव्यानयनसरवाड़राणाजगत्सिंहाऽऽगरानगरगमनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ ॥२८३॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अग्गैं नादरसाहके समय जयसिंह दिल्ली न गयो ॥
मुहुम्मदसाहनैं किल्ला रनथंभोर दैनों करि बुलायो तथापि टरिबेकौं बहानौं लयो ॥
तदनंतर¹ नादरसाह दिल्लीकी कतलकरि तमाम बादसाही बैभव लूटि अपनैं मुलक ईरान सिधायो ॥
अरु मुहुम्मदसाहनैं सरबस्वके साथ अपनौं तेजही गुमायो ॥१॥
ऐसी अनेक बदफैली जयसिंहनैं कीनी तथापि² हिन्दुस्थानमैं बरजोर⁴ जान्यौं ॥
अरुपहिलैं³ याकौं सूबा दयेहे ते⁵ गंजूही राखे रुबिनयसौं बखान्यौं ॥
राजाधिराजराजराजेन्द्र सवाईजयसिंह ऐसो उपटंक⁶ लिखायो ॥
अरु अग्गैं काहूको न भयो ऐसो फरमानमैं सतकार बिसेस बढायो ॥ २ ॥
यातैं जयसिंह जोधपुरकी फतै करि दरकुंच आगरप्रवेस कीनौं ॥
अरु रानौं जगत्सिंह पुष्कर सेमहातीर्थके स्नान को लाह लीनौं ॥

स्वामि की सेवा करना १ दौलतसिंह आदि को निकालना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का बीकानेर से युद्ध करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का, सहाय के अर्थ जयपुर पत्र भेजना ४ जयसिंह का अपने जमाई (अभयसिंह) को मना करना ५ कछवाहों की सेना का जोधपुर को घेरना ६ दंड के रुपये लेकर सरवाड़ में राणा जगत्सिंह से मिलकर जयसिंह का आगरे जाने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तियासी २८३ मयूख हुए ॥
१ नादरसाह ने दिल्ली की लूट की तब २ तोभी ३ जिस पीछे ॥ १ ॥ ४ बलवान् ५ आधीन ६ खिताब ॥ २ ॥

तहाँ व्यास दौलतराम रानाँ सौं अरजकरि मेवारके उदक[1]ीनकी बेगारि मिटाई ॥

अरु अपने हाथ मैं उदक[2] झेलि दोऊइनकी कीर्त्ति चौतरफ चलाई ॥ ३ ॥

अग्गैं राननकी विपत्तिमैं यह बेगारि जागी भई ॥

अब व्यासके आतं[3]कसौं तमाम मेवार छोरि गई ॥

या रीति पुष्करमैं पाप धोय रानाँ जगतसिंह उदैपुर प्रविष्ट[4] भयो॥

अरु रट्ठोर बखतसिंहनैं पछिताय हाथ जोरि अपनैं अग्रज[5] जोधपुरके राजा अभयसिंहको प्रसाद[6] लयो ॥ ४ ॥

कही स्वामिसौं हरामी भयो सो अपराध मेरो माफ कीजिये ॥

अरु अपनैं घरके बिगारे कछवाहके ऊपर फौजबंधीको हुकम दीजिये ॥

राजा अभयसिंह यह बात बिचारमैं लीनी ॥

अरु अधर्मी अनुजके बिगारबेकी सारे रट्ठोरनकौं एकांतमैं सुनाय फौजैं जयसिंहपैं जंगकौं सज्जीभूत कीनी ॥ ५ ॥

अठ नव सत्रह१७९८के साल मारवारमैं नर तुरंग न माये ॥

नव९ कोटी नाथके सेनाके सँभार[7] हजारही भोग[8] भोगीसके[9] भमाये ॥

बैंडे हत्थीनपैं लंबी लालरंगकी पताका फैरकानैं[10] लगी ॥

मानौं रक्तबीज[11]के समय कालिका जिव्हाकौं थरकानैं लगी॥६

---

१ उदक भूमिवालों की २ पानी ॥ ३ ॥ ३ भय से ४ प्रवेश किया ५ अभयसिंह की ६ प्रसन्नता ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भार से ८ फण ९ शेषनाग के १० ध्वजा उडनेलगी (जोधपुरवालों का निशान लाल रंग का है) ११ रक्तबीज नाम राक्षस को वरदान था कि तुम्हारे रुधिर की जितनी बूंदें भूमि पर गिरेंगी उतने ही शरीर उठकर शत्रु से युद्ध करेंगे, सो कालिका से रक्तबीज का युद्ध हुआ तब, उसका रुधिर भूमि पर नहीं गिरने देने के अभिप्राय से अपनी जिव्हा को फैलाकर रक्तबीज का सम्पूर्ण रुधिर

कैधौं पिंगल नागराज गरुड़के आतंक[1] बचिबेकौं बडे मात्राछं-
दकी पताका[2] बनाई ॥
कैधौं अंधक[3]के ऊपर त्रिलोचन[4]के त्रिसूलकी तीखी नौंख न-
जरि आई ॥
कैधौं चंदनके दंडपैं पलेटा डारि रक्तराग[5] राजमान[6] नागराज
फहरानौं ॥
कैधौं दुस्सासनके भुजदंडतैं सैरंध्री[7]की साटी[8]को समूह लहरानौं ॥७॥
कैधौं प्रचंड पवनके पातसौं[9] हीरीकी झार ढहनैं लगी ॥
अरु भद्दवकी मेघमालामैं इंद्रके रोहितं चापसौं[10] लागि चंचला[11]
की चलाकी कढनैं लगी ॥
कैधौं सुमेरुके शृंगतैं संभुसेखरा[12]स्रवंताके सीधे स्रोतैं[13] छूटे ॥
अरु कल्पकारस्कर[14]के कंधतैं[15] साखाके समह फैल फूटे ॥८॥
ऐसैं अनेक फैंतूहैं[16] फीलनपैं[17] फहराय छोनि[18]छाई ॥
अरु राजा रट्ठोर जयसिंहकौं जीतिबेकौं जैपुरपैं चंड चैतुरंगिनी[19]
चलाई ॥
या रीति सोदर[20] बखतसिंह सहित राजा अभयसिंह बडी धकसौं
मेरता नगर आय मुकाम दीनैं ॥
अरु बागनके बिलासकी मरजी मानि मालीकागनैं[21] प्रसूननके[22]

चाटलिया, जिसकी कथा मार्कंडेय पुराण आदि ग्रंथों में विस्तार से लिखी हुई है, वहाँ उपमा यहाँ दी है ॥ ६ ॥ १ गरुड़ के भय से बचने के अर्थ पिंगल नागराज ने मात्रा छंद की इतनी बडी २ पताका (छन्दों के षोड़श कर्मों के अन्तर्गत एक कर्म है) बनाई जो समुद्र के तट तक पहुंचगई तब, पिंगल गरुड़ की कैद से भागकर समुद्र में कूद पड़ा ३ अंधक नामक दैत्य के ऊपर ४ शिव के ५ लाल रंग वाला सर्प ६ शोभायमान ७ द्रौपदी की ८ साड़ी का ॥ ७ ॥ ९ प्रचंड पवन के पड़ने से १० इन्द्र के सीधे धनुष से (जिसको लौकिक में मच्छ कहते हैं) ११ बिजुली की १२ शिव के मस्तक से बहनेवाली (गंगा नदी) के १३ प्रवाह १४ कल्पतरु के १५ मूल से ॥ ८ ॥ १६ ध्वजा १७ हाथियों पर उड़ कर १८ भूमि को. भयंकर १९ सेना २० सहोदर (सगेभाई) २१ मालियोंने २२ पुष्पों के

पूर नजरि कीनैं ॥ ९ ॥
ते प्रसून राजा रठ्ठोर अपनैं उमरावनकौं वखसीस बंटि दये ॥
अरु रठ्ठोर उमराव अनेक अैंडी बैंडी तरह लँपेटेनपैं धारत भये॥
तहाँ आउवानगरके अधिराज चाँपाउत रठ्ठोर कुसलसिंह राजा सौं प्रसून नाँहिं लीनौं ॥
अरु कारनके पूछैं अहंकारके उफान अँपुब्ब उत्तर दीनौं॥१०॥
अज्ञानैंतैं आपकौं प्रसूननके पसारिबेमैं लज्जाको लेसहू हमैं न जान्यौं पैं ॥
रठ्ठोरनके पाघ अरु नासिका कछवाहनैं छीनिलीनैं यातैं अज्ञानके प्रसून लेकैं कोन ठाम धारन करैं ॥
यहै सुनतही राजा अभयसिंहको सोदरानुज नागोरको अधिराज रठ्ठोर वखतसिंह खिसाय ऊठि बुल्ल्यो ॥
अरु मेरे मिलैं यह भई अैसैं अग्रजसौं अैक्खी अरु जुदोही जुद्ध करिबेकौं जयसिंहपैं जंनूनसौं चंडे चंद्रहास तुल्ल्यो ॥ ११ ॥
अरु यातरफ जोधपुरसौं फौजबंधी करि रठ्ठोरनके चलायबेकी सुनि बड विस्तारकी वरूथिनी ले जयसिंह आगरामाँ कुंच कीनौं॥
अरु जोधपुरकोही सीमामैं जाय सज्जीभूतहै निसाननपैं निर्हांव को हुकम दीनौं ॥
वातरफसौं रठ्ठोर वखतसिंह अपनैं पाँचहजार५०००पखरैतौं सैं वागैं उठाई ॥
अरु धूलीकी धुंधिमैं धकाप संजोगी चैंक्र चक्रीनके चाहकी चौंपैं मिटाई ॥ १२ ॥

---

१ पुंड (समूह) ॥ ९ ॥ २ पगड़ियों पर ३ पंक्ति ४ अपूर्व ॥ १० ॥ ५ पुष्पों के ६ फैलाने (देने) में ७ सगा छोटा भाई ८ राजा ९ खिसा (लज्जित होकर) १० मैं जयसिंह से मिल गया तब ११ अभयसिंह से १२ कहकर १३ क्रोध के साथ १४ भयंकर १५ खड्ग उठाया ॥ ११ ॥ १६ सेना १७ नगारों पर १८ बल पूर्वक निरन्तर प्रहार (बजाने) का १९ चकवा चकवी के २० लाग

मकराकर मेखला मही महानागके मस्तकके हजारे[3]पैं नचन लगी

अरु बाराहकी तुंडापैं मचक्कनकी मार मचनलगी ॥

अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ सातौंही धराके अधोभाग धूजिगये ॥

अरु भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक६सत्यलोक७सहित ऊपरके ओकबासी व्याकुलभये।१३।

ऐरावत१पुंडरीक २ बामन३कुमुद ४ अंजन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७सुप्रतीक८आठौंही आसाके[6] अनेकपन कंपिकैं कातर कूक करी।

अरु पुरुहूत १ पावक २ परेतपति ३ पुण्यजन ४ परंजन५प्रभंजन ६ पौलस्त्य ७ पिनाकपाणि ८ आठौंही लोकपालनकौं लोक रक्षामैं बिपत्ति बिसेस जानिपरी ॥

लवणोद१ इक्षुरसोद२ मद्योद३ आज्योद४ क्षीरोद५ दधिमंडोद ६ शुद्धोद७ सातौंही समुद्रन क्षोभ पायो ॥

अरु अनूरुनैं[10] अव्वनकी अवछेपनी[11] ऐंचि आदित्यकौं[12] अरजी अखिल अपुव्व आहव आलोकन[13] उछाह लगायो ॥ १४ ॥

अष्टापद[14] अद्रिसौं[15] अतित्वर[16] आय महानट[17] मनोज्ञ[18] मुंडमालाको मिलाप मान्यौं ॥

अरु डाकिनीन डिंडिम डमरूक डाहलादिकनपैं[19] डंके डारि हल्लीसैंक[20] नच्च तान्यौं ॥

गोदनके[21] गूंदनके[22] ग्रासकौं गिद्धि गन गैनमैं[23] गरूरीसौं गहकानैं ॥

(इच्छा) ॥ १२ ॥ १ समुद्र की है २ कटिमेखला (कर्धनी) जिस के ऐसी भूमि ३ हजार फणों पर ४ नीचे के भाग (लोक) ५ ऊपर के स्थानों में रहने वाले ॥ १३ ॥ ६ आठों ही दिशा के ऊपर कहेहुए नामोंवाले ७ हाथी ८ कायर (यहां कहेहुए दिग्गज और लोकपालों के नाम पूर्वदिशा से प्रारंभ करके यथाक्रम से हैं) ९ चलायमान हुए १० सूर्य के सारथि ने घोड़ों की ११ वाग खैंच कर १२ सूर्य को १३ युद्ध देखने का ॥ १४ ॥ १४ सुवर्ण के १५ पर्वत (सुमेरु) से १६ शीघ्र १७ शिव ने १८ मनचाही (इच्छानुसार) १९ डाहल आदि बाजों पर २० घूमर का नाच २१ मस्तिष्क (भेजा) २२ मींजी २३ आकाश में घमंड

अरु कराल कलहके कोलाहल कातरनके[1] कलाप डहकानें १५ बावन ५२ बीर चउसट्ठि ६४ जोगिनीनके जाल[2] जुद्धकी[3] जैछूसी जोयबेकों जारी भये ॥

अरु रट्ठोर कछवाह दोहू २ सेनाके सरदार तत्काल तुमुल[4] युद्धमैं तीखे तोरसौं तत्ते तुरंगन[5] तोकिबेकों[6] तयारी भये ॥

राजा जयसिंह जंगी हौदेके हत्थीपैं आरूढ होय संग्रामभूमिकी सीमाके समीप अपनी अनीकके[7] अंतर[8] अतीव[9] उच्छाहसौं उंद्धत[10] होय आनि खरो रह्यो ॥

अरु रचनाबिसेससौं सेनाको व्यूह बनाय बाँई दाहिनी दोऊ २ तरफ खवासीके हत्थी लगाय सूरबीरनकौं श्रवन करायबेकों पंडितनकौं उच्चारनको आदेस[11] कह्यो ॥ १६ ॥

सो आदेस सुनिकैं दोऊ २ खवासीके हत्थीनपैं पंडितराज रामायन लंकाकांड १ महाभारत द्रोनपर्ब २ कहन लगे ॥

अरु बैंडे बीरनकों बंदीजन[12] बीररसमैं बिरुदाय चतुरंग[13]की चलाकी चहन लगे ॥

कछवाहकी सेनाको संभार[14] झेलिबेकों पुहवी[15] हू वासमय समर्थ न भई ॥

अरु राजा जयसिंह असे अनीकके[16] उफानसौं रट्ठोरनपैं अर्ब[17] उठायबेकी आज्ञा दई ॥ १७ ॥

जा सेनामैं साहिपुराके अधिराज[18] रानाउत उम्मेदसिंहसे बाईस २२ राजा सज्जीभूत खरे ॥

अरु औरहू अधीन होय आहवपैं उमाहे[19] अनेक सूरबीरनके

से प्रसन्नता की बोली बोले. कायरों के १ समूह चौंके ॥ १५ ॥ २ समूह ३ शोभा ४ अवकाश रहित युद्ध में ५ चंचल घोड़े ६ उठाने को ७ सेना के ८ भीतर ९ अत्यन्त १० अनम्र ११ हुक्म ॥ १६ ॥ १२ भाट लोग १३ सेना की १४ भार १५ भूमि भी १६ सेना के चढाव से १७ घोड़े ॥ १७ ॥ १८ पति १९ उत्साह

संयुक्त अरे ॥

वा समय रहोर बखतसिंह पाँचहजार ५००० पखरैतनसौं बडे वेग वाजी बीच डारे ॥

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके समुद्रमैं पार पूगिबेकों पोतके प्रमान पधारे ॥ १८ ॥

दोऊ[२] कटकनके[३] कंकटी[४] क्रूर कालरूप[५] वैंडे[६] वीर[७] कालिंग[८] कुटिल कोसनतैं कालायस[९] कराल करवालनके कलापैं[१०] काढि कज्जलसे कारे कुंजरनके[११] कूटमें[१२] कुंभनपैं झारन लगे ॥

अरु धीर वीर धन्वदेसी[१३] बडी धकसौं धकाय धूंपकी[१४] धारासौं धपाय पंचरंगी[१५] ध्वजादंडनकों पाडिडारन लगे ॥

पर्वतसौं मयूरके माफिक कुंभीनके[१६] कलापनके[१७] कलापनतैं[१८] पताकानके[१९] पुंज उडन लगे ॥

अरु गाढे गरूरी रठोरनके[२०] गंजे[२१] गिरन लगे गजराज गुडन लगे१९

हयनकी हयछटों[२२] कबंधनके[२३] कराल करवालनतैं कटि कटि कलहमैं[२४] कूदते कबंधनके[२५] कंधनपैं[२६] फहरन ठहरन लगी ॥

कैधों हयग्रीवावतारकी हजारन प्रतिमा लास्यके[२७] लालित्यसौं छाकि लहरन लगी ॥

दोऊ[२] चमूके मजबूत मगरूरी महाबीरनके मंडलाग्रनकी[२८] मार ग्रैमैं मचन लगी ॥

युक्त हुए १ समूह २ नाव के समान ॥ १८ ॥ ३ सेना के ४ कवच धारण कियेहुए (सिलहपोश) ५ काले और ६ टेढे ७ म्यानों से ८ भयंकर काल की आज्ञा के समान; अथवा काले लोहे के ९ खड्गों के १० समूह निकाल कर ११ हाथियों के १२ शिखर रूपी कुंभस्थलों पर प्रहार करने लगे १३ मारवाड़ देशवाले १४ तरवार की १५ जयपुर की ध्वजा का रंग पचरंगा है १६ हाथियों के १७ समूह को १८ करधनियों (कणगतियों) से कसे हुए १९ ध्वजाओं के समूह उडने लगे २० घमंडी राठोड़ों के २१ मारे हुए ॥ १९ ॥ २२ घोड़ों के कंधे २३ राठोड़ों के भयंकर खड्गों से २४ युद्ध में २५ विना मस्तक वाले क्रियावान शरीरों के कंधों पर २६ उडकर ठहरने लगी २७ नृत्य की सुन्दरता से २८ तरवारों

मानौं होलीके हुलासपामर[2] पुरुखनके पानि [illegible] [4] डंडेहरिरचनलगी
तेगनकी तराकन पोंगरनके पलटेदेन सिं[illegible] सुंडादंडझारन लगे
मानौं जन्मेजयके जिह्लग जज्ञमैं मंत्रनके म.र पन्नगनके पूर परनलगे
गिरे टोपनकौं ग्रहनकरि जोगिनीनकी जमाति बैंडैं बीरनके
वपासौं भरन लगी ॥
अरु लोहितकी[10] लालीमैं कालीकदि कूदि सोसैनी[11]रंग धारनकरनलगी
सच्चे सूरनके सीस महेसकी मैंनोज्ञ[12] मुंडमालामैं गुंफेगये[13] तथापि
देहु देहु यौं दकालन लगे ॥
तिनको सोर सुनि अनेक ग्रँभ्रपिसाच आये मानि आतंकसौं
भालचंद्रके[15] प्रान चालन लगे ॥
जावकके जंत्र[16] जिम सोनितके स्रोतकी[17] छछकैं छूटि छूटि
छोनीतल छायबेकौं परन लगी ॥
तिनकौं साकिनीनकी संहति[18] आनन[19] उबाय ऊपरही झेलि झे-
लि पान करन लगी ॥ २२ ॥
कबंधनके कलापैं[20] मानौं अपने उत्तमांगकी[21] आंखिनसौं देखि
देखि दाव दैवेकौं दौरन लगे ॥
अरु पैने मंडलाग्रैं[22] मारि मदमत्त मातंगनके[23] मैंत्थ[24] फोरन लगे ॥
सकंचुक[25] पंच ५ फनके पन्नगके प्रमान बाँहुल[26] समेत बाँहुल[27]

की १ उत्साह में २ नीच (ग्रामीण) लोगों के हाथ से ३ फाग (वसन्त की क्रीड़ा विशेष) की ४ गेहर (डंडों का खेल विशेष) ॥ २० ॥ ५ हाथी की सुंड के अग्रभाग (पुष्कर) के ६ हाथियों के ७ सर्पयज्ञ में ८ सर्पों के समूह ९ मेद (चर्बी) से १० रुधिर की ललाई में ११ लाल में काला रंग मिलाने से सोसनी रंग होता है ॥ २१ ॥ १२ मनोहर १३ गुथेगये १४ राहु १५ शिव के ललाट के चन्द्रमा के प्राण (ग्रहण के) भय से चलायमान होने लगे १६ फुहारे १७ रुधिर की पिचकारियें १८ समूह १९ मुख फाड़कर ॥२२॥ २० राठोड़ों के समूह २१ मस्तकों की आंखों से (कटेहुए मस्तकों की आंखों से) २२ तीक्ष्ण खड्ग मस्त २३ हाथियों के २४ मस्तक २५ काँचली सहित पाँच फणोंवाले सर्पों के समान २६ दस्ताने सहित २७ बहुत हात

बाहु तूटन लगे ॥

अरु अवमर्द के आतंक कातरनके गाढ छूटन लगे ॥ २३ ॥

बाग टल्लाके इसारैं बेगवान वाजी जंगी होदनकी बराबर झंप लैन लगे ॥

अरु सादीनिक सस्त्र संपात करि नष्ट नूर होय निसादानके नैन नैंनलगे ॥

बंके कमनैत कठोर कोदंडनकौं गोसिपचीकी बरब्बर तानि तानि तीर मारन लगे ॥

ते तीर कितेक आसमानमैं उडान लैकैं सरदकालके सलभन की सोभा धारन लगे ॥ २४ ॥

रट्ठोर बखतसिंह जयसिंहकौं जोयबेकौं घनैं हत्थानके होद हेरिडारे

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके पार निकसि वचे बीरनसौं बैरी की वरूथिनीमैं बड बेग बाजी फेरिडारे ॥

ऐसैं दूजाबर पैलेनैंकौं पृतनामैं पैठत देखि राजा जयसिंह साहिपुराके अधिराज राजाउत उम्मेदसिंहसौं राजा कहि बुल्ल्यो ॥

अरु बखतसिंहकौं पैने लोह चखायबेकौं सिद्धांत खुल्ल्यो ॥२५॥

अग्गैं राजा न कहता रु अब कह्यो यातैं साहिपुराके अधीस राजा उम्मेदसिंह बडा उम्मेदसौं ओट होय कबंधनकी लैंकापझेल्यो

अरु मारवनको मगरूर मारि स्वामी खग्गनको फाग खेल्यो ॥

वा जुद्धमैं राजा रट्ठोर बखतसिंहके चयारि हजार सातसै४७०० पखरैत झरि परे ॥

अरु तीनसै ३०० पखरैतन सहित उम्मेदसिंहकी ऐंसिबरसौं

१संकुलित युद्ध के२भय से ॥२४॥ ३घोड़ों के सवारों के ४ शस्त्रों के प्रहार से ५शोभा बिगड़कर६हाथियों के सवारों के नेत्र७नीचे होने लगे८कान की बराबर ९ टीडियों की ॥२४॥१०देखने की ११ सेना में १२ घोड़े१३शत्रुओं को१४सेना में घुसते देख कर१५पति१६तीखे शस्त्र॥२५॥राठोड़ों के१७समूह की१८श्रेष्ठ खड्ग से

अब्रके छांकि मनिवोर्हो मानि कछ्वाहके कादंबिनी रूप कटक सों टरि परे ॥ २६ ॥

या रीति पलायन होय रहोर बखतसिंह नागोरको मार्ग लीनों॥

अरु राजा अभयसिंहहू याहीके बिगारिबेकों आयोहो यातैं पच्छो जोधपुरकों कुंच कीनों ॥

ऐसैं है २ बेर कछवाहकी सेनाको समुद्र तरि तीजी ३ बेरकी ताकत न जानि बखतसिंह निकसि नागोर आयो ॥

अरु जाके इष्ट गिरिधर परमेश्वरके हाथी तथा पातुरिखानैं सहित डेरनकों कछ्वाहको कटक लूटि लायो ॥ २७ ॥

तब वह बखतसिंहको इष्ट परमेश्वरतो जयसिंहनैं नाँहिं पठायो ॥

अरु पातुरिखानैंकों पच्छो भेजि कैंगरमैं कातरँ काहि लिखायो ॥

कह्यो अंतहपुर हमारे भेट कीनों परन्तु हमकौंतो अभुक्तके ग्राहक जानों ॥

१तृप्त होकर २ जयसिंह की मेघमाला रूपी सेना से ॥ २६ ॥ ३ भागकर ४ *गोवर्धननाथ की मूर्ति सहित ५ सेना ॥ २७ ॥ ६ पत्र में ७ कायर ८ जनाना ९ जिसका भोग पहिले किसीने नहीं किया होवे उसके

*उम्मेदसिंह को जयसिंह का राजा नहीं कहना और इस समय राजा कहने के कारण उम्मेदसिंह का वखतसिंह से युद्ध करना लिखा सो यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि शाहपुरा के राजा भारतसिंह को दिल्ली के बादशाह आलम (बाहादुरशाह) ने विक्रमी संवत १७६३ में राजा का खिताब देकर साढा तीन हजारी का मनसब देदिया था सो कई प्रमाणों से सिद्ध है, और भारतसिंह के पुत्र राजा उम्मेदसिंह ने वखतसिंह से गिरधारी की मूर्ति सहित सेवा की हथनी छीनली सो वह मूर्ति इस समय तक शाहपुरा में लक्ष्मीनारायण के मंदिर में विद्यमान है और इसी युद्ध में इस टीकाकार (वारहठ कृष्णसिंह के वृद्ध प्रपितामह बारहठ देवीसिंह बडी वीरता के साथ घायल हुए और नागों की जमात के एक वीर के हाथ से हाथी की सुंड कटजाने के कारण उस नागेको मारकर देवीसिंह ने वह तरवार छीनली जो इस समय शाहपुरा के शस्त्रागार सिलहखाने) में नागावाली तरवार के नाम से विद्यमान है, इस खड्ग की लंबी चौड़ी कथा है सो विस्तार के भय से यहां नहीं लिखी जासकती इस युद्ध की किंवदन्ती ऐसी प्रसिद्ध है कि शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह एक ओर खड़ा था जिनको हटजाने को राठोड़ों ने कहलाया जिनको उम्मेदसिंह ने पीछा कहलाया कि यदि वीरता का घमंड है तो युद्ध करके हटाकर आगे जाओ इसीपर इनसे युद्ध हुआ जिसमें राजा उम्मेदसिंह के छोटे भाई कुसलसिंह आदि बडे बडे वीर मारे गये ॥

यातैं तुमारो तुम अवेरि फेरि ढुंढाहरसौं लरिबेकी न *हौंस आनौं ॥ २८ ॥

या रीति अठ नव सत्रह १७९८ के साल राजा जयसिंह रट्ठोरनसौं जंग जीति आयो ॥

अरु या जंगको जस साहिपुराके †अधिराज रानाउत राजा उम्मेदसिंह पायो ॥

या तरफ बेघम नगर रावराजा उम्मेदसिंहकी माता चुंडाउति अपने निर्बाहको ‡अवलंब बिचारत बरस तीन३ निकारे ॥

अरु सुखसिंह महासिंहोतके §सम्मतसौं अपने छोटे पुत्र दीपसिंहके अर्थ रानाँ जगतसिंहसौं पटा लैबेकौं पुरोहित दयारामकौं उदयपुर पठावनमैं कारन बिचारे ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ राणा जगत्सिंहपुष्करस्नानसोदकदत्तभुग्विष्टित्यजनबखतसिंहस्वाऽग्रजमिलनसेनासज्जीकरणजयसिंहतदभिमुखाऽऽगमनमरुराजानुजकूर्मराजकलहकरणबखतसिंहपराभवनं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥२८४॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहिय मास बाहुल बिसद, प्रतिपद१ दिन अति प्यार ॥
सत्त७ रूप इक्कत करिय, कोटानृप श्रियद्वार ॥ १ ॥

---

* इच्छा ॥ २८ ॥ † स्वामी ‡ आधार § सलाह से ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा जगत्सिंह का पुष्कर स्नान करके उदकवालों की बेगार छोडना १ बखतसिंह का अपने बडे भाई से मिलकर सेना सजना २ जयसिंह का इनके सम्मुख आना ३ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) के छोटे भाई (बखतसिंह) का जयसिंह से युद्ध करना ४ और बखतसिंह का पराजय होने का तीजा मयूख ३ समाप्त हुआ और आदिसे दोसौ चोरासी २८४ मयूख हुए॥

१ कार्त्तिक सुदि एकम के दिन कोटा के राजा ने ३ नाथद्वार में २ सात स्व-

बिठ्ठल१ अरु नवनीत प्रिय२, बहुरि द्वारकानाथ३ ॥
गोकुल४ मथुरा५धीस गनि, गोकुलचंद्र६ *सुगाथ ॥ २ ॥
मदनमोहन७हु सत्त७ †मित, ए बल्लभकुल इष्ट ॥
कोटानृप इक्कत करिय, अप्पन दहन ‡अरिष्ट ॥ ३ ॥
खरचि दम्म इक लक्ख१०००००मित, उच्छव रचिय अपार ॥
रानहिं तब §निमंत्रदै, बुल्ल्यो बिहित बिचार ॥ ४ ॥
तँहँ रानाँ कोटेस प्रति, बिरचि नेहमय बैन ॥
माधव[1] निज भानेज हित, अक्खी जैपुर लैन ॥ ५ ॥
कोटेसहु तब रान प्रति, नय[2] बैच[3] आक्खय नून ॥
जब मरिहैं जयसिंह तब, ऐहैं पहुमि दुंरहून ॥ ६ ॥
बुंदिय मिलहिं उमेदकौं, माधवकौं जयनैर ॥
पै जोलग जयसिंह प्रभु, बदहु न तोलग बैर ॥ ७ ॥
कोटापति अरु रान दुव२, किय रहस्य[5] यह बत्त ॥
इहिं[6] तुम जावहु उदयपुर, रान करहु अनुरत्त ॥८॥
रानाउति पीहर ससुतँ, रहत कुंम्मसौं रुट्ठि ॥
इहिं रानहु कूरम अहित, बप्प[9] बहिनि हित बुट्ठि ॥ ९ ॥
अप्पन पुब्बहि कुंम्म अरि, अब रानहु अरि आहि ॥
यातैं कछु दीपहिं[12] पटा, दैहिं[13] तुं दैहिं सिराहि ॥ १० ॥
यह बिचारि निज बिप्र वह, दयाराम संबोधि ॥
पठयो मतिगति[14] उदयपुर, समय देस हित सोधि ॥ ११ ॥

रूप इकट्ठे किये ॥ १ ॥ *श्रेष्ठ कथा वाले ॥२॥ † प्रमाण ‡ पाप जलाने के लिये ॥ ३ ॥ § नेता देकर उचित विचार से बुलाया ॥ ४ ॥ १ माधोसिंह ॥ ५ ॥ २ नीति के वचन कहे ३ निश्चय ही४उमेदसिंह के बुंदी और माधवसिंह के जयपुर आवेगा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ एकान्त में ६ इस कारण ॥ ८ ॥ ७ पुत्र (माधवसिंह) सहित ८ कछवाहा जयसिंह से रूठ (क्रोधित हो)कर९पिता की बहिन (भुआ) पर हित की दृष्टि करके जयसिंह से रुष्ट है ॥ ९ ॥ १० जयसिंह के ११ है १२ दीपसिंह को १३ तो ॥ १० ॥ १४ अपनी बुद्धि की गति से दया-

तानैं जाय रु *तक्क्यो, नगर सलूमरि नाह ॥
जान्यौं या बिनु होय नहिं, सब इहिं हत्थ सलाह ॥ १२ ॥
अक्खी केसरिसिंहसौं, बत्त यहै तब बिप्र ॥
बुंदीपति लघु पुत्र हित, पटा चहत हम †छिप्र ॥ १३ ॥
यह ‡उदंत कहि रानसौं, §बिहित दिवावहु बेग ॥
हैं हुड्डे बाल न गिनहु, कालिह करैंग तेग ॥ १४ ॥
सुनि यह केसरिसिंह सठ, [1]मानि लोभ निज मित्त ॥
[2]संभरपर उपकृत समय, चाह्यो नेह न चित्त ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इहिं चुंडाउत अग्ग मुख्य भुव लोभ सोधि मन॥
सजि दलेल सन साम प्रकट अद्दरि किंकर पन ॥
[3]रोरै नाम लघु सुवन अप्प बुंदियपुर रक्ख्यो॥
पटा सहँस पैंतीस ३५०००लेरु [4]अधिपति वह अक्ख्यो ॥
तिहिं लोभ अबहु उलटी तकत यह न पुरोहित अद्दरिय॥
बिनु समय कछु न हम सन बनहिं कहि यहै रु उपहास किय१६

॥ दोहा ॥

दयाराम यह सुनि दरिंत, [5]इच्छि [6]अवर आलंब ॥
दौलतराम सु व्यास द्रुत, सोध्यो दुख गिरि संबँ ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहिलैंही यह व्यास छोरि कोटा किहिं कारन ॥
रहिय रान ढिग आय मंत्र नय चतुर महामन ॥
तबहि पुरोहित ताहि मिलि रु अक्खिय उदंत सब ॥
समयो दैन सहाय आहि बुधसिंह सुतहिं अब ॥

राम को समझा कर ॥ ११ ॥ *देखा ॥ १२ ॥ †शीघ्र ॥ १३ ॥ ‡वृत्तान्त ॥ १४॥ §उचित १ लोभ को अपना मित्र मानकर २ चहुवाण पर उपकार करने के समय ॥ १५ ॥ ३ रोड़सिंह नामक ४ दलेलसिंह को स्वामी कहा ॥ १६ ॥ ५ डरकर ६ अन्य आधार चाहा ७ दुःख रूपी पर्वत का वज्र ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

बिनु धन निबाहि सकत न बिभव यातैं रानहिं करि अरज।
कछु देहु पटा लघु भ्रात हित गिनि बिपत्ति कहहु गरज॥१८॥

॥ दोहा ॥

द्विजवर दौलतराम सुनि, अक्खिय रानहिं एह ॥
दीपसिंहहित दीजिये, कछुक पटा करि नेह ॥ १९ ॥
सु सुनि रान जयसिंहको, चिंत्यो *नहर प्रचंड ॥
अक्खो वह कूरम अतुल, दिय †मरुपहु जिहिं दंड ॥ २० ॥
कियँ आहित यह कुम्म को, बिगरहिं राज [1]सिमाज[2]
यातैं तुम उनसौं कहहु, कट्टहु कछु बिधि काज ॥ २१ ॥
यह उत्तर जगतेस दिय, सो सुनि कुमर [3]प्रताप ॥
अक्खी घर आयेन कौं, क्यों नहिं रक्खत आप ॥ २२ ॥
सत्रुकोहु [4]आयँ सदन, मानत [5]अग्घ महत ॥
[6]नृपहु अप्प असे समय, कूरम त्रास कहंत ॥ २३ ॥
यह कहि कुमर प्रताप [7], पटा हजार पचीस २५००० ॥
[8]जनकहुसौं बरजोर बनि, किय तयार बखसीस ॥ २४ ॥
नगर पटा बिच मुख्य लिखि, लाखोला अभिधान[8] ॥
अवरहु वस्तु अनूप चउ ४, चित्त करिय पहुँचान ॥ २५ ॥
इक कृपान हय २ खास इक, इक चामर ३ बर बेस ॥
इक सिरुपेच ४ उमेद हित, किय तयार कुमरेस ॥ २६ ॥
सगताउत सुरतेस सुत, निडर उमेद सनाम ॥
किय तयार बुंदीस प्रति, बघम भेजन काम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमार अति जोर बढ्यो जुव्वन वय उव्वट ॥

---

* भयंकर प्रताप † मारवाड़ के राजा को भी ॥ २० ॥ १ जयसिंह का २ बड़ा ॥ २१ ॥ ३ राणा जयसिंह के कुमर प्रतापसिंह ने कहा ॥ २२ ॥ ४ घर ५ आघ ६ आप श्रेष्ठ राजा होकर ॥ २३ ॥ ७ पिता से ॥ २४ ॥ ८ नाम॥२५॥२६॥ २७ ॥

अग्गमि जनक अमात्य भेदि कति लिय मिलाय भट॥
भिल्लाड़ा पुर भिन्न बंधि अप्पन रजधानी ॥
दखल राज बिच डारि रहैं उद्धत अभिमानी ॥
यह सोधि रान जगतेस अब पक्करन पुत्तहिं किन्न मत ॥
तिन दिनन भूप बुंदीसको उदयनेर यह बिप्र गत ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नटत रान इम निंदि हुत, उद्धत कुमर प्रताप ॥
संभर हित स्वच्छंद तब, लिखि पटा रु किय छाप ॥ २९ ॥
लखि सुनको यह मत्तपन, सोचि रान जगतेस ॥
है भट निज अनुकूल ते, इक दिन बुल्लि असेस ॥ ३० ॥
कहिय केइ सम सुत करहु, अनर्थ प्रचारत एह ॥
निज निज सुत या ढिग रहत, तिनहिं पठावहु गेह ॥ ३१ ॥
यह बिचही एते दिनन, करत रह्यो अपकार ॥
पै इम बिनु पैले नृपन, हुव अब रक्खन हार ॥ ३२ ॥
यातैं अब अज्ञान हुत, मेटहु गहि उमराव ॥
अरु जो नहिं तो आगि यह, सजलनदहन स्वभाव ॥ ३३ ॥
दृढ प्रपंच इम रान करि, भटन सिक्ख दिय भाय ॥
इन निज पुत्र अनेक मिस, दिन्नें घरन पठाय ॥ ३४ ॥
सगताउत दारूनगर, पति सुरतेस स नाम ॥
स्वसुतहिं अक्खिय ताहुनैं, घरजावहु कछु काम ॥ ३५ ॥
यह उमेदसिंह सु कुमर, जो किय बेघम त्यार ॥
ताहूसौं इम पितु कहिय, जावहु गेह कुमार ॥ ३६ ॥

---

१ पिता के सचिव को पकड़ कर २ उमरावों को ३ विचार कर ४ गया ॥ २८ ॥ ५ शीघ्र ६ स्वतंत्र ॥ २९ ॥ ७ सबको बुलाए ॥ ३० ॥ ८ अनीति ॥ ३१ ॥ यह जलती हुई ९ अग्नि है जिसका १० जलाने का ही स्वभाव है ॥ ३३ ॥ ११ रीति पूर्वक ॥ ३४ ॥ १२ सुरतसिंह १३ अपने पुत्र से कह

इहिं कुमार मतिबल[1] कछुक, जान्यौं रान प्रपंच ॥
अक्खिय स्वामि प्रताप अब, जानि न छोरौं रंच ॥ ३७ ॥
तदनंतर इकदिन यहै, रान कुमार प्रताप ॥
अलपसत्थ रहि जनक[2] की, परिखद[3] पत्तो आप ॥ ३८ ॥
उपवैन कृष्णविलास नृप, बैठो गहन उपाय ॥
इहिं बिच कुमर प्रताप यह, डोढी पहुँच्यो आय ॥ ३९॥
प्रतिहारन[6] अक्खिय अरज, लीजै दुवरचर[7] पास ॥
लै जानन अवर[8] न हुकम, चतुर अप्पनय[9] वास ॥ ४० ॥
निज सत्थहिं तँहँ रक्खि तब, लै अनुचर दुवरसंग ॥
परिखद पैत्त[10] प्रताप तँहँ, रानहिं नमि रुचि रंग ॥ ४१ ॥
अप्प मिसल बैठिय उचित, रचि सैंन रु तब रान ॥
सुभट च्यारि४ निज पुत्र सिर, डारिय भरत उडान ॥४२॥
नाथनाम१लघु भ्रात निज, पुर बंग्घोर[11] अधीस ॥
रानाउत भारत बहुरि, नगर जाजपुर ईस ॥ ४३ ॥
चुंडाउत पुर देवगढ, पति जसवंत३ स एव ॥
देलवाड़पुर पति बहुरि, झल्ला राघवदेव४ ॥ ४४ ॥
ए भट रान अधीस की, सैंन होत छल सोर ॥
चंड परे प्रतिमल्ल चउ४, जानि कुमर अति जोर ॥ ४५ ॥
तिनके परत प्रताप तब, जनक[12] गहन मत जानि ॥
हो कितेक पै पितु हुकम, कहि छोरिय असि[13] पानि ॥४६॥
इन तथापि मूढन चउ४न, गहि दिखाय बल दिट्ठि ॥
नाथसिंह तस बाहु गहि, जाँनु[14] मचक्क दिय पिट्ठि ॥ ४७ ॥

॥ ३६ ॥ ३३ ॥ १ बुद्धि बल से ॥ ३७ ॥ २ पिता की ३ सभा में गया ॥ ३८ ॥ ४ बाग ५ पकड़ने के उपाय में ॥ ३९ ॥ ६ द्वारपालों ने ७ सेवक ८ दूसरों को लेजाने का हुकम नहीं है ९ नीति की खबर है ॥ ४० ॥ १० सभा में गया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ११ बागोर पुर का पति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ १२ पिता पकड़ता है यह जानकर १३ हाथ से तरवार छोड़दी ॥ ४६ ॥ १४ घुटने का ॥ ४७ ॥

कहिय पटा फैंकत कुमर, मल्लन लरत *उमाहि ॥
अज्ज कहाँ वह बल गयउ, होत निबल को †चाहि॥४८॥
कहि इम कुमरहिँ कैद किय, चउ४ भट कुबच प्रचार ॥
सक नव अंक९९ ‡सहस्य गत, §बिसद तीज३रवि बार॥४९॥
अग्गैं अनुचित कुमर करि, इहाँ उचित अवधान[1] ॥
पकरन जानत पहिल किय, खग्ग रु खेटक[2] हान ॥ ५० ॥
गहत अचानक इम कुमर, फुट्टिग[3] हक्क अपार ॥
डोढीपर निज सत्थ सुनि, भज्यो बिकल भय भार ॥ ५१ ॥
कुमर[4] जु कुमर तयार किय, बेघम भेजन बीर ॥
सगताउत उम्मेद सो, धँप्यो[5] सभा बिच धीर ॥ ५२ ॥
असि झारत मारत अरिन, रान लियउ नियराय[6] ॥
जिहिँ पिल्लितँ[7] तिहिँ बपु जुगल[8]२, करत खंड अतिकाय ॥ ५३॥
ताहीको काका तबहि पिल्ल्यो रान प्रचारि ॥
स नंति[9] पुब्ब इक बार सहि, मरद सोहु लिय मारि ॥ ५४ ॥
सुरतसिंह तब तस जनक[10], रोकन पिल्ल्यो[11] रान ॥
तिहिँ लखि कुमर उमेद तजि, असिबर[12] नमिय अमान[13]॥५५॥
जानि धरम इहिँ असि तजिय, इहिँ मूरख किय एह॥
नमत बेर निज पुत्र सिर, कट्टयो नूतन[14] नेह ॥ ५६ ॥
कुमर प्रताप सु कैद करि, इम खिजि जनक अमान[15] ॥

---

* उत्साह करके † चाह कर कौन निर्बल होता है ॥ ४८ ॥ ‡ पौष § सुदि ॥ ४९ ॥ १ सावधानी २ तरवार और ढाल का त्याग कर दिया ॥५०॥३हाक फूटी ॥ ५१ ॥ ४ कुमर प्रतापसिंह ने जिस कुमर को बेघम भेजने को तैयार किया था वह उम्मेदसिंह५दौड़ा॥५२॥६समीप७जिसको भेजते हैं उसी के श-रीर के८दो टुकड़े करता है॥५३॥९नम्रता पूर्वक, पहिले उसका एक वार सहकर ॥ ५४ ॥ १० उस कुमर के पिता सुरतसिंह को ११ राना ने रोकने को भेजा १२ श्रेष्ठ तरवार छोड़कर १३ मान रहित नमा ॥ ५५ ॥१४नवीन स्नेह को काट दिया अर्थात् पुत्र उम्मेदसिंह को मारडाला॥५६॥१५ अमाप (प्रमाण रहित)

पक्करन वारे चउ४नकौं, मुख्य सचिव किय रान ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ कोटापतिदुर्ज्जनशल्यश्रीद्वारगमनसप्त ७ स्वरूपैकत्रकरणबुन्दीन्द्रपुरोहितदयारामोदयपुरप्रेषणदीपसिंहार्थपटोपनामकनिर्वाहवसुप्रार्थन-तत्सलूमरीशकेसरिसिंहाऽपहसनव्यासदोलतरामवाक्सहायविरचनराणाजगत्सिंहाऽनङ्गीकरणतद्राजकुमारप्रतापसिंहस्वीकरणपटाबेघमप्रेषणविचारणाद्यौद्धत्यधारणतद्राणाकुमारकाराक्षेपणातद्भटोम्मेदसिंहकुमाररणमरणराणासोदरनाथादिसचिवचतुष्टयी ४ करणं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥ ॥ २८५ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूलिकाप्याला ॥

नृप उमेद इत व्याह किय, मालव धर पुर गर्गराट पति ॥
झल्ला दलपतिकी सुता, चिमनकुमरि अभिधान[1] महामति॥१॥
सक नव नव रात्रह१७९९समा, नवमी९राध[2] बलच्छ[3] लगन किय॥
गुर्न[4]३वासर महि स्वसुर ग्रह, बेघम आनि मिलान[5] बहुरि दिय॥२॥
प्रतिदिन कुंदिय लेन पट्ट, कहत भूप उम्मेद बलापति[6] ॥

॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति दुर्जनसाल का नाथद्वारा में जानी सात स्वरूपों को इकट्ठा करना बुन्दी के राजा के पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना दीपसिंह के अर्थ पटा है उपनाम जिसका ऐसे निर्वाह (खरच निबाहने) की प्रार्थना करना उसकी सलूमर के पति केसरीसिंह का हंसी करना व्यास दोलतराम के वचन की सहायता करने को राणा जगत्सिंह का अस्वीकार करना उसको राणा के राज कुमार प्रतापसिंह का स्वीकार करके पट्टा बेघम भेजने का विचार करना आदि उद्धतता धारण करने से राणा का उस कुमर को कैद करना उस कुमर के वीर कुमर उम्मेदसिंह का युद्ध में मरना राणा का सगे भाई नाथसिंह आदि चारों को सचिव करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पिच्यासी २८५ मयूख हुए ॥

१ नाम ॥ १ ॥ २ वैशाख ३ सुदि ४ तीन दिन ५ मुकाम ॥ २ ॥ ६ आज्ञा वला

सावन गत ओसार कै, कै सित पक्खगं[2] द्वैज२कलापति ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बुंदिय यह सोर, चूक दलेल बिचारिकैं ॥
चूंडाउत वह रोरं[4], मारन बेघम मुक्कलिय ॥ ४ ॥
भोपसिंह तस संग, हरदाउत हड्डा दियउ ॥
जो पति धोवड़ ढंग, सालम सुत हितकॅर[5] कुटिल ॥ ५ ॥
दोउ२न बेघम आय, द्विरदं[6] मत्त निज छोरि दिय ॥
जान्यौं कौतुँक[7] पाय, सिसु उमेद ऐहैं लखन ॥६॥
तबहि दगा बल ताहि, मारि रु बुंदिय मुक्कलहिं[8] ॥
इम सठ उभय२ उमाहि, पहर तीन३ गज सँग फिरिय॥७॥
सो सुनि लखन न आय, सानुकूल नृपकी नियति[9] ॥
छन्न गये दुख छाय, मुह बिगारि दुव२ सठ दुमन ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप जयसिंह इत, जित्ति मरुस्थल जुद्ध ॥
अद्वितीय अप्पहिं समुझि, मान गहिय बनि मुंद्ध[10] ॥ ९ ॥
मद्य पान हित गिनि मुदित, निस दिन रचत अनंत ॥
निधुवन[11] रुचि धप्पत नहिन, दम हुव आगम अंतं[12] ॥ १० ॥
निस रु दीह आसव नसा, रक्खत हृदय अरूढ[13] ॥
छोरत नहि कामुक छगलं[14], मंजों[15] नारिन मूढ ॥ ११ ॥
ऐसी बिधि अवसानके[16], आगम हुव कछवाह ॥

नामक पर्वत का पति बढता है १ श्रावण की मेघ धारा बढै जैसे २ किधों शुक्ल पक्ष के द्वितीया के३चन्द्रमा की कला बढै जैसे ॥ ३ ॥ ४ वह सलूमर के रावत का छोटा पुत्र रोड़सिंह ॥ ४ ॥ ५ सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) का हित करने वाला ॥ ५ ॥ ६ मस्त हाथी ७ तमाशा जान कर ॥ ६ ॥ ८ भेजे-गें ॥ ७ ॥ ९ भाग्य ॥ ८ ॥१०मूर्ख बन कर ॥ ९ ॥११मैथुन से १२ अंत समय का आगम हुआ ॥ १० ॥१३हृदय पर चढाहुआ१४वह कामी बकरा१५स्त्रियों रूपी छालियों (बकरियों) को नहीं छोडता ॥ ११॥१६कछवाह के अन्त का ॥ १२ ॥

राजामल सिर राज्यकी, रक्खी निबहन राह ॥ १२ ॥
वैदन सेन औषधि बलन, अधिक ठानि आहार ॥
उभय२ घटी ओदन अदन, बढ्यो कुम्म इहिं वार ॥१३॥
आगम सकल अनंगके, सठ एकांत सुधाय ॥
मोहन मेहन वृद्धि सुख, सेय दवा दरसाय ॥ १४ ॥
वरज्यो जदपि चिकित्सकन, मन्न्यो तदपि न मंद ॥
आराधत अविरत अतुल, आसव सुरत अनंद ॥ १५ ॥
राजामल इक दिन कहिय, क्यों नृप करत कुजोग ॥
अक्खो तुम छत हम अभय, भुग्गत अब यह भोग ॥१६॥
हुव प्रमत्त जयसिंह इम, मन लगि मोहन मद्य ॥
अवर कोन मम सम यहै, सोधि गरब गहि सद्य ॥ १७ ॥

॥ रोला ॥

इकदिन आसव मत्त होय कछवाह मूढ मति ॥
उदयनेर लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
मम आदेस अमोघ चतुर जगतेस बिचारहु ॥
बेघम जे बुधसिंह नंद निज देस निकारहु ॥ १८ ॥
सुनि यह कूरम कथित राम जगतेस भीरु बनि ॥
दिय बेघम आदेस देस मम तजहु भूप भनि ॥
यह सुनि भूप उमेदसिंह अरु दीप भ्रात दुव २ ॥
कछु दिन कठिन निकारि धारिय धरत्तैन चित्त ध्रुव ॥ १९ ॥

---

१ वैद्यों से बल बढ़ाने की औषधियों के सेवन से बहुत भोजन करके दो दो घड़ी में २ अन्न ३ खाना ॥ १३ ॥ ४ मद्य शास्त्र ५ कामदेव के. एकान्त में दिखा कर ६ मैथुन की और ७ लिंग की वृद्धि (बढ़ाना) ८ आदि ९ औषधों का सेवन करके दिखाया अर्थात् औषधियां खाकर मैथुन और लिंग की वृद्धि दिखाई ॥ १४ ॥ १० वैद्यों ने मना किया तो भी ११ वह मूर्ख नहीं माना १२ निरन्तर, मद्य और मैथुन के अत्यन्त आनंद का आराधन (सेवन) करता रहा॥ १५ ॥ १६ ॥ १३ मैथुन १४ तुरंत (शीघ्र ॥ १७ ॥ १५ मेरा हुकुम १६ पीछा नहीं फिरने (खाली नहीं जाने) वाला॥ १८ ॥ १७ जयसिंह का कहा हुआ १८ कायर॥ १९ ॥

सक ख अभ्र बसु सोम१८०० असित[1] पंचमि५ असाढ गत॥
कोटा जनपद[2] क्रमि[3] छोरि बेघम रन उद्धत ॥
सुनि यह दुज्जनमल्ल भीरु कूरम भय भाखिय ॥
निज ढिग बुल्लिय नाँहिं दुहुँन मधुकरगढ राखिय ॥ २० ॥
रहिय तत्थ चउ४मास नृप उम्मेद अनुजं[4] सह ॥
मृगयादिक[5] कौतुक अनेक रचि बीर सहा मह[6] ॥
घाँटं[7] रुक्कि गिर घेरि झुंड तुपकन नृप मारे ॥
अति प्रगल्भ[8] आयुधन सद्धि मृगपति बहु मारे ॥ २१ ॥

॥ रुचिरा ॥

इत कूरम[9] नृप रोग बिबसि हुव देह बिकसि क्रमि[10] पुंज[11] परे ॥
मास बहुत यह दुक्ख सह्यो अरु गूद[12] पैलल[13] तनु[14] बिक्लिन[15] गरे ॥
इक१ अंगुल परिमित[16] लंबे क्रमि स्याम[17] तन सब देह धसे ॥
त्वच[18]१ लोहित[19]२ पल[20]३ मेद[21]४ न खावत अस्थिन[22] अंतर बिबिध बसे २२
भस्म तल्प[23] सोवत दुख भाजन[24] नैंक न पीड़ित निंद लहैं ॥
जिम बिकसन तरबूज पक्यो इम बिग्रह[25] रंचन गाढ गहैं ॥
सुप्त[26] हि मूत्र तथा मल मोचन निजकृत[27] दुरितन[28] चिंतिकें[29] ॥

---

१ कृष्णपक्ष की २ देश में ३ गये ॥ २० ॥ ४ छोटे भाई दीपसिंह सहित ५ शिकार आदि ६ बडे उत्सव रचकर ७ घाटा रोककर ८ शस्त्रों में बुद्धिमान् अथवा उस बुद्धिमान् ने शस्त्रों का साधन करके बहुत सिंह मारे ॥ २१ ॥ ९ कछवाहों का राजा जयसिंह रोग वश हुआ जिसका शरीर फटकर उसमें १० कीड़ों के ११ समूह पड़गये सो कई मास तक यह दुःख सहा और १२ चरबी व १३ मांस १४ शरीर से १५ ग्लानि युक्त होकर गिरा १६ एक अंगुल के प्रमाण वाले १७ काले मुख के कीड़े सब शरीर में घुस गये वे कीड़े १८ चमड़ी १९ रुधिर २० मांस २१ चरबी नहीं खाकर २२ हड्डियों के भीतर घुसगये ॥ २२ ॥ २४ उस दुःख के पात्र (राजा जयसिंह) ने २३ भस्म की शय्या पर शयन करके उस पीड़ा से नींद नहीं ली २५ शरीर २६ वह राजा सोया हुआ ही मल मूत्र का त्याग करता था और २७ अपने किये हुए २८ पापों को २९ याद करता था

अनुज बिजय[1] तिय मात सुतादिक[2] मारिय ते सब दिट्ठि[3] परैं॥२३॥
इम अति कष्ट विकल कूरम नृप संचित[4] अघ भर[5] भूरि भज्यो ॥
खखवसुस.सि१८००विक्रमसक इसगतं[6] विसँद[7] चतुर्दसि१४देहतज्यो
हुव जैपुर घर घर हाहारँव अंतहपुर[9] अति त्रास परयो ॥
ईस्वरिसिंह तबहि पट्टप सुत देखि निगंम[10] बिधि दाह करयो॥२४॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद नृप भाग बल, तजिग देह कछवाह ॥
यह उदंतै[11] दिस दिस उडिग, हुव अरि घरन उछाह॥ २५ ॥
यह कथ सुनि कोटा अधिप, खुसय मन्नि तजि खेद ॥
मधुकरगढतैं अनुज जुत, बुल्लयो निकट उमेद ॥ २६ ॥
मधुकरगढ सामंत हर, हड्डा हरजन नाम ॥
किल्लापति कोटेसको, जु हो भुजिष्ठ्या[12] जाम ॥ २७ ॥
मुख्य सचिव बुंदीसको, कोटापति वह किन्न ॥
कोटा आय उमेद नृप, हयन हर चउ४लिन्न ॥ २८ ॥
लेत हयन[13] कोटेस लखि, अक्खी भूपहिँ एहु ॥
तुम हित हम रक्खत कटक[14], लगैं खरच सु देहु ॥ २९ ॥
सुनि नृप निज भूखन दये, मोल लक्ख दुव२ दम्म ॥
इक्क१ किलंगिय[15] कटक जुग२, करन जंग भुव कम्म[16] ॥३०॥
लोभी दुज्जनसल्ल सठ, लखी बिपत्ति न रंच ॥
इम भूखन बुंदीसके, लिन्नैं कपट प्रपंच ॥ ३१ ॥

---

१ छोटे भाई विजयसिंह, माता और २ पुत्र आदि को मारे थे वे सब ३ दीखने लगे ॥ २३ ॥ ४ संचय किये हुए पाप के ५ भार का ६ बहुत भोगा ६ आश्विन मास के ७ शुक्ल पक्ष की ८ शब्द ९ जनाने में १० वेद विधि से॥२४॥ ११ वृत्तान्त ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२ पासवान स्त्री का पुत्र ॥ २७ ॥ १३ अच्छे हर कर चार घोड़े लिये ॥ २८ ॥ १४ तुम्हारे लिये सेना रखते हैं जिसका खरच लगै सो दो ॥ २९ ॥ १५ मस्तक पर लगाने की एक जड़ाऊ किलंगी और हाथों के १५ दो कड़े दिये पृथ्वी के लेने के अर्थ युद्ध का १६ कार्य करने को ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तदनंतर[1] दल इक सहँस१०००, पठयो बुंदिय सीम ॥
आय रु तिहिँ लुट्टिय मुलक, भेद मचायउ भीम[3] ॥ ३२ ॥
नृपति ईस्वरसिंह हुव, इत जैपुर लहि पट्ट ॥
श्रद्धाजुत करि जनक[4]को, पेतकरम बिधि बट्ट[5] ॥ ३३ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ भूभृदुम्मेदसिंहमालवरागरोटपतिझल्लादलपतिसिंहपुत्रीप्रथमोद्वहनतन्मारणदलेलसिंहविचारणाकूर्मराजमद्यमदमज्जनललनालोलुपीभवनोदयपुरदलप्रेषणराणाहड्डेन्द्रदेशनिष्कासनजयसिंहमरणानदुम्मेदकोटाऽऽह्वयनकोटेशतद्रूपणामारणसेनासमुच्चयनबुन्दीदेशविग्रहकरणाजयपुरेश्वरीसिंहपट्टप्रापणं पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥ ॥ २८६ ॥
प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापुर इत मंत्र किय, दुज्जनसल्ल उमेद ॥
इक्कन करि हड्डे अखिल, भाखिय संगर[6] भेद ॥ १ ॥
काह भट बेणीरामसौं, कोटापति कर जोरि ॥
गिनत तुम्हैं सब भूप गुरु, छल रु छोनिँ छक[7] छोरि ॥ २ ॥
यातैं जैपुर जाहु तुम, बुंदिय लैन उपाय ॥

१जिस पीछे २ सेना ३ भयंकर ॥ ३२ ॥ ४ पिता का ५ रीति के मार्ग से ॥ ३३ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में भूपति उम्मेदसिंह का मालवे में गागरूण के पति झाला दलपतसिंह की पुत्री से प्रथम विवाह करना १ उम्मेदसिंह को मारने का दलेलसिंह का विचारना २ कछवाहों के राजा (जयसिंह) का मद्य के नसे में डूबकर स्त्रियों का लोलुप होना और उदयपुर पत्र भेजना ३ राणा का उम्मेदसिंह को देश बाहर निकालना ४ जयसिंह का मरना और उम्मेदसिंह को कोटा में बुलाना ५ कोटा के पति का उम्मेदसिंह से भूषण लेना ६ सेना एकत्र करके बुन्दी के देश में उपद्रव करना ७ जयपुर के राजा ईश्वरीसिंह के पाट बैठने का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छियासी २८६ मयूख हुए ॥
६ युद्ध का ॥ १ ॥ ७ भूमि का घमंड छोड़कर ॥ २ ॥

कूरम[1] जो यह स्वीकरें[2], तो लरनों न हिताय[3] ॥ ३ ॥
हम जावत शिवद्वार पुनि, मिलहिं रानसों तत्थ[4] ॥
करहिं न हित कछवाह तो, सज्जहिं उभय समत्थ[5] ॥ ४ ॥
यह सुनि भट जैपुर चलिय, दुर्जनसल्ल शिवद्वार ॥
अन्नकूट सज्जिय समय, अधिक भक्ति उपचार[6] ॥ ५ ॥

॥ हीरकम् ॥

पुनि रानहिं पठयो दल[8] अप्प मिलन आइये ॥
माधव निज भागिनेय हित हु हृदय लाइये ॥
बुंदिय पुर लेन काहु मंत्र मिलि रु ठानिहैं ॥
ढुंढाहर मेदिनि[9] पर सज्जि समर[10] तानिहैं ॥ ६ ॥
यह सुनि जगतेस रान कूंच करिय बेगही ॥
कोटापतिके मिलाप नीति रीति के गही ॥
उदयनगरके समीप सेनहिं फरमानदे ॥
नाहरमगरा[11] सथान[12] थान तँहँ मिलानदे ॥ ७ ॥
कोटापति पापि[13] पास प्रीति पत्र प्रेरयो ॥
आवहु मिलिहैं इहाँहि जो तुम हित हेरयो ॥
कोटेसहु सुनत एह नाहरमगरा गयो ॥
रानहिं मिलि रीतिसहित मंत्र सहित[14] मंडयो ॥ ८ ॥
अग्गैं असरंग रानकी पुत्रि[15] ब्याहिबे ॥
रौनाउत दुर्लभ रीति चिंतित जस चाहिबे ॥
निजकर जयसिंह कुंभ[16] कग्गर लिखवा[17] की सही ॥

---

१ कछवाहा ईश्वरीसिंह २ स्वीकार करै तो लड़ना ३ हित नहीं है ॥ ३ ॥ ४ वहाँ ५ समर्थ ॥ ४ ॥ ६ पूजना ॥ ५ ॥ ७ पत्र ८ आपके भानजे माधवसिंह के हित को ९ भूमि १० युद्ध ॥ ६ ॥ ११ नाम १२ मुकाम ॥ ७ ॥ १३ पापी के पास (आगामि समय में बुंदी को दबावेगा इससे यह विशेषण दिया है) १४ हित के साथ सलाह की ॥ ८ ॥ १५ राणा की पुत्री को १६ कछवाहा जयसिंह ने पत्र लिखकर १७ सही की

रानाउति पुत्र होहिँ[1] ढुंढाहर ईस हीं ॥ ९ ॥
पहिलैं इतनी लिखाय रानहु तनयाँ[2] दई ॥
चिंनहु पट्टँ[3] नीति अप्प तथ्य[4] न सब जो भई ॥
जिट्ठहि जयसिंह पुत्र[5] राज्य अखिल अंगम्यौं[6] ॥
माधव हित कछु दयो न नँति जुत[7] तुमसौं नम्यौं ॥ १० ॥
बुंदिय दुवरहत्थन[8] गाह छोरनहु न उच्चरैं ॥
अप्पन इहिँ कारन दुवर[9] सज्जित[10] दलकौं करैं ॥
दोउनर[11] यह मंत्र थाप्प इक्कत पृतना करी ॥
बिप्र सु उन बेगिगाम कूरम प्रति उच्चरी ॥ ११ ॥
छिन्निय जयसिंह सोहि बुंदिय अब दीजिये ॥
कूरम उपकार यहहि कोटा सिर कीजिये ॥
राजामल्ल जुत नरेसैं[11] बिप्रहिं तब अक्खई ॥
बुंदिय हमरे पिचंडै[12] क्योंकरि कढिहै गई ॥ १२ ॥
आक्खिय सुनि एह बिप्र तुर कैंतरि[13] कढ्ढिहैं ॥
दुंद्दर[14] दल हंकि हड्ड जैतर सिर चढ्ढिहैं ॥
यह कहि द्विज आय बत्त हड्डुनपति सौं कही ॥
सो सुनि चहुवान[15] रान[2] सज्जिय पृतना सही ॥ १३ ॥
लंबित भुजदंड मत्त हत्थिन सिर खुल्लये ॥
बीरहु निज निज समग्ग बंधन बँल बुल्लये[16] ॥
त्रंबक डक्क बज्जि बेग सिंधुव[17] स्वर लग्गये ॥
पठवय डगमग्गि भोग भोगियं[18] भँर[19] भग्गये ॥ १४ ॥

१इस रानावती के पुत्र होगा सोही निश्चय जयपुर का पति होगा॥९॥२पुत्री३ आपनीति चतुर हो सो विचारो४वह सत्य नहीं हुई ५ जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र (ईश्वरीसिंह) ने६सब राज्य दबालिया७नम्रता सहित ॥ १० ॥ ८ दोनों हाथों से पकड़कर ९ सेना को १० सेना एकत्र करी ॥ ११ ॥ ११ ईश्वरीसिंह ने १२ हमारे पेट में है सो ॥ १२ ॥ १३ बड़े पेट को चीरकर १४ दुःख से घर्षण की जावै ऐसी सेनाको १५ सेना ॥ १३ ॥ १६ सेना बांधने के लिये बुलाये १७ वीर रस को बढानेवाला राग विशेष १८ नाग के फण १९ भार से तूटे ॥ १४ ॥

*संकुलित धर धूलि धुंधि रुंधि रु रवि ढंकयो ॥
चिक्कार लखि चंड चेन दिग्गज गन संकयो ॥
दिकपालनके कपाल नाटसालसे चुभे ॥
वीर सु मगरूर मंडि हूरन हित के लुभे ॥ १५ ॥
सागर सब लै हिलोर ओर ओर उज्झले ॥
हाटक¹गिरिके समस्त शृंग भंग व्है हले ॥
कोटापति सेन रान सेन उमयर² यों चली ॥
सो सुनि कछवाह भूप इक्कन बैल कैं बली ॥ १६ ॥
मंडिय दरकुंच रान सम्मुह मगरूरतैं³ ॥
मानहु घन भद्द मास पाय पवन पूरतैं⁴ ॥
राजामल कग्गर लिखि रान निकट पिल्लयो⁵ ॥
हल्लनके पेचमाँहिं मानस⁶ तुम क्यों दयो ॥ १७ ॥
जो हित हमसों बनैं सु आगन सैन नाँ बनैं ॥
आवत हमहू हजूर अप्पन सिरहो मनैं⁷ ॥
माधव निज जामिज हित बांट पहुमि लीजिये ॥
हल्लन सन भिन्न होय नैंकहु न पतीजिये ॥

॥ दोहा ॥

यह दैल अग्गहि मुकलयो, राजामल सचिवेनं¹² ॥
पुनि नृप ईश्वरिसिंह जुत, सम्मुह हंकिय सेन ॥ १९ ॥
इत रान रु कोटेस दुवउ बंग सु¹³ कग्गर बंचि ॥

*भूमि पर रज छा कर (इस सेना की तीव्रता इतनी चौमुखी करके जिन से दिशाओं के हाथियों का समूह शंकायुक्त हुआ (जहाँ निकलने वाले मातंग. 'कि' से मानों अर्थ समझा जाता है इसीप्रकार 'कि' से कितने यह अर्थ सब जगह जानना चाहिये)॥१५॥ १सुमेरु पर्वत के शिखर २ सेना इच्छा की ॥१६॥ ३घमंड से ४पवन के समूह से ५ भेजा ६ मन ॥ १७ ॥ ७ आपको मस्तक पर मानते हैं ९ बाहिन का पुत्र १० विश्वास मत करो ॥ १८ ॥ ११ पत्र १२ साचवों का पति ॥ १९ ॥ १३ वह पत्र बांचकर

धाये सम्मुह खग्गचि धन, सेना अतुलित संचि[1] ॥ २० ॥
नगर जाजपुरके निकट, जामोली इक गाम ॥
उत्तरि तँहँ भूपति उभय, किय चालीस मुकाम ॥ २१ ॥
सगताउत सावर[2] अधिप, इंद्रसिंह अभिधान[3] ॥
तिहिं दब्ब्यो इक गामको, नगर देवली थान ॥ २२ ॥
ताहि तजन जग्गतस तब, वहुत कहाई वत्त ॥
सगताउत मन्नी न सो, मुररि रह्यो जिम मत्त[4] ॥ २३ ॥
इहिं रानाँ[5] अब देवली, रचन लेन गढ रारि ॥
राजाउत भार[6] सहित, पठयो कटकँ[7] प्रचारि ॥ २४ ॥
दलहिं जात अब देवली, सुनि सव[8] पति पुत्त[9] ॥
सालम नाम सु संजिम बनि, धरयो लरन गढ धुंत्त[10] ॥ २५ ॥
दिन पंचक५ पहिलैं गहैं, व्याह्यो सालम वीर ॥
कंकन मोचन हू न किय, हुव जुज्झन हमगीर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशावुम्मे-दसिंह १ दुर्जनशल्य २ मन्त्रणावर्णारामभट्टजैपुरप्रेषणकोटेशश्रीद्वा-रगमनराणासमाह्वयननाहरमगराभिध २ मिलनवर्णारामेश्वरीसिं-हविरसीभवनभट्टपश्चादागमनराणामहारावसेनाभिनिर्याणतदभिमुख-कूर्मराजाऽऽगमनदेवलीकुमारसालमसिंहसज्जीभवनतद्राणासैन्य

१ एकत्र करके ॥ २० ॥ २१ ॥ २ सावर का पति ३ नाम ॥ २२ ॥ ४ मस्त हाथी के जिसप्रकार ॥ २३ ॥ ५ इन्द्रगढ़ी रखना वा नगर लेने का ६ भारतसिंह ७ सेना भेजी ॥ २४ ॥ ८ सेना को देवली जाती हुई सुनकर ९ पुत्र १० अनम्र ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह और दुर्जनसाल का सलाह करना १ भट्ट वर्णाराम को जयपुर भेजना २ कोटा के पति का नाथद्वारे जाकर राणा को बुलाना ३ नाहरमगरा नामक स्थान पर दोनों का मिलना ४ वर्णाराम और ईश्वरीसिंह का परस्पर विरस होना ५ भट्ट के पीछे आने पर राणा और महाराव का सेना सहित गमन करना ६ इन के सम्मुख कछवाहों के राजा का आगमन ७ देवली में कुमर सालमसिंह का

भारतसिंहप्रेषणाशंसनं षष्ठो ६ मयूखः ॥ ६ ॥ ॥२८७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

गहयो जिहिँ अग्ग प्रताप कुमार, वहै हुव भारतसिंह तयार ॥
दयो तस संग अभंग अनीक, सजे भट उद्धत चाहि समीक ॥१॥
सिराहि कहयो सबसोँ इम रान, लहो गढ घोर रचो घमसान ।
चल्यो सुनि भारतसिंह प्रचंड, उमंगत हंक्किय सेन अखंड ॥ २ ॥
भयो दिकपालन मोह भयान, प्रकंपत दिग्गज सुल्लिय प्रान ॥
मचक्किय पन्नगकी फँनमाल, भचक्किय पक्किय सूकर भाल ॥३॥
छछक्किय अद्रिनतैँ कटि धातु, लचक्किय लोक कहैँ हरि पातु ॥
सरक्किय एम उदैपुर चक्क, फरक्किय हत्थिनपैँ बैंहरक्क ॥ ४ ॥
करक्किय कंकटकी कटिकालि, ढरक्किय पैंब्बय शृंगन ढालि ॥
खरक्किय खप्पर जोगिनि संग, झरक्किय नालन अग्गि दमंग ॥५॥
घुरक्किय अक्खर पक्खर घोर, थरक्किय अच्छरि अंबँर ओर ॥

सज्ज होना ८ उस पर महाराणा का सेना सहित भारतसिंह को भेजने के कथन का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यासी २८७ मयूख हुए ॥

जिसने पहिले राणा के कुमर १ प्रतापसिंह को पकड़ा था वह भारतसिंह तैयार हुआ २ सेना ३ युद्ध करना चाहकर ॥ १ ॥ ४ युद्ध ॥ २ ॥ ५ भयंकर ६ धूजते हुए ७ शेषनाग का (यहां फनमाल शब्द के योग से शेषनाग का ग्रहण है) मचक लगने से ८ वराह का ललाट पक गया ॥ ३ ॥ पर्वतों से धातु की पिचकारियें छूटने लगीं और भूलोक आदि लचककर कहने लगे कि हे परमेश्वर ९ रक्षा करो१०इसप्रकार उदयपुर की सेना चली और हाथियों पर ११ ध्वजायें उड़ीं ॥ ४ ॥१२कवच की१३कड़ियों की पक्तियें लूटने लगीं और १४ पर्वतों के शिखर चलायमान होकर गिरने लगे और योगिनियों के साथ खप्पर बजने लगे१५घोड़ों की नालों के साथ१६अग्नि के कण झड़ने लगे (डिंगल भाषा में दमंग शब्द अग्नि और अग्निकण दोनों का वाचक है) ॥ ५ ॥ घोड़ों की पाखरों का आकाश में घोर शब्द हुआ; अथवा नहीं च्युत होने (गिरने) वाली पाखरों का भयंकर शब्द हुआ १७ आकाश की ओर अप्सराएं ठहरीं

दरक्किय छोनिय[1] दारिम रीति, भरक्किय खंड चउद्दह१४भीति[2] ॥ ६ ॥
धमंक्किय घोरन घुग्घरमाल, चमंक्किय सेलन सोचि[3] सचाल[4] ॥
छमंक्किय अच्छरि नेउर गैन[5], झमंक्किय भूखन लक्खन लैन[6]॥७॥
टमंक्किय त्रंबिय बंबियँ बज्जि, ठमंक्किय घंट मतंगन रज्जि ॥
डमंक्किय डाहल[9] डिंडिम लोल[10], ढमंक्किय संहल[11] मद्दल[12] ढोल ॥८॥
द्रमंक्किय दुंदुभि[13] दिग्घ द्रमाम[14], धमंक्किय धुज्जि रसातल धाम ॥
उलट्टिय सेन कि सागर अंभ[15], पलट्टिय जानि पुरंदर[16] जंभ ॥ ९ ॥
चल्यो इम रान महीपति चँक्क[17], लग्यो उडि पावक तोप ललक्क ॥
लयो गढ देवलिका गरदाय[18], धर्यों रन तोपन झुम्मि धुजाय॥१०॥
कही तँहँ भारत[19] सालम काज, मिलौं गढछोरि लहो अँसु[20] आज॥
यहै सुनि बीर न किन्न अबेर[21], कहाइय सालम जुज्झन केर।११।
उदैपुरको दल[22] दुर्लभ लाय, इहाँ तुमसे भट पाहुन आय ॥
[23]नँकैं हम जो तुमरी मनुहारि, लजैं पितु मात लगैं कुल गारि१२
खरे तुमहू नय[24] जानत ख्यात[25], करैं सब स्वागत[26] पाहुन आत ॥
अबैं इहिं कारन धर्महिं धारि, पधारहु स्वीकरि[27] मो मनुहारि ॥१३॥
हुते हम सावरके पति हंत[28], कहाँ तिनकौं सुख स्वर्ग मिलंत ॥

और दाड़िम की भांति १ भूमि फटी २ भय से चौदह ही लोक चौंके ॥ ६ ॥ ४ चपलता सहित ३ भालों की कान्ति चमकी ५ आकाश में अप्सराओं के नूपुर बजे और उन अप्सराओं की लाखों ६ पंक्तियों में भूषण चमके ॥ ७ ॥ तासे और ७ नगारे बजने का शब्द हुआ ८ हाथियों पर शोभायमान घंट बजे ९ डाहल और डिंडिम आदि देवी और भैरव के वाद्य १० चपलता से बजे ११ उस सेना के साथ अथवा शब्दायमान होकर १२ मर्दल (मांदळ जो मृदंग के आकार होता है) और ढोल बजे ॥ ८ ॥ १३ बड़े नगारे १४ नोबतें बजीं १५ मानों समुद्र के जल के समान सेना उलटी; सो मानों जंभासुर पर १६ इंद्र पलटा ॥ ९ ॥ १७ सेना चली १८ देवली के गढ को घेर लिया ॥ १० ॥ १९ भारतसिंह ने कुमर सालमसिंह को कहलाया २० प्राण २१ विलंब नहीं किया और सालमसिंह ने युद्ध करने को कहलाया ॥ ११ ॥ २२ सेना लाकर २३ तुमारी मनुहार नहीं करैं तो ॥ १२ ॥ २५ प्रसिद्ध २४ नीति जानते हो २६ आये का सत्कार सभी करते हैं २७ स्वीकार करके पधारो ॥ १३ ॥ २८ खेद

परंतु कृपाकरिकैं तुम आय, ततो मम बिन्नति मन्नि हितायः॥१४॥
गुरू तुम आसिख अक्खहु एहु, सुपुत्रक स्वर्ग सभा सुख लेहु॥
कथा यह सालमसिंह कहाय, रुप्यो जिम अंगदकौं रनराय ॥१५॥
रची सुनि भारत तोपन रारि, हनी इन सेन घनी हलकारि ॥
चलैं पबिपात कि गोलक चंड, दिपैं जिम मोर उडैं धुजदंड॥ १६ ॥
गिरैं गृह मंडप फुट्टि लदाव, तप्यो पुर तोपनके तरकाव ॥
नठे चहुँकोद निवानन नीर, परी जलजंतुन दुस्सह पीर ॥ १७ ॥
घिरयो पुर देवलिका दल घोर, जम्यौं दुहुँओर प्रबीरन जोर ॥
जँबूरजजावलि तोप तुपक्क, चलैं द्रुत चंड मचैं धमचक्क ॥ १८ ॥
सुहट्टन हट्टन वट्ट बजार, उडै दमकैं बहु वृंद अँगार ॥
जरंत किरंत बिजाजन पट्ट, गुडी जनु लग्गिय राल गरट्ट ॥१९॥
बनिक्कन आपन लग्गि अलाव, दहैं घन कानन ज्यौं तृन दाव ॥
जरैं घृत ओदन तेल रु तूल, दिवारिय दीपक होत दुकूल ॥२०॥

के साथ १ हित के अर्थ ॥ १४ ॥ २ तुम बडे हो सो यह आशीर्वाद दो कि ३ हे पुत्र स्वर्ग की सभा का सुख लो, जिसप्रकार यह कथा कहाई तिसीप्रकार वह ५ युद्ध का राजा; अथवा युद्ध ही है धन जिसके ऐसा सालमसिंह ४ शरीर देने को खड़ा हुआ ॥ १५ ॥ ६ भारतसिंह ने ७ वज्र पड़ने के समान भयंकर गोले चलते हैं और मयूरों के समान उडते हुए ध्वजादंड शोभा पाते हैं ॥ १६ ॥ ८ चारों दिशा के जलाशयों का जल नष्ट होगया ॥ १७ ॥ देवली नगर भयंकर ९ सेना से घिर गया और विशेष वीरों का बल दोनों ओर जमा १० शीघ्र ११ भयंकर चलकर युद्ध हुआ ॥ १८ ॥ उन तोपों के चलने से चौहटा, दुकानें १२ मार्ग और बजार में अग्नि के १४ अंगारों के बहुत समूह उडकर १३ चमकते हैं जिनसे बजाजों के १६ वस्त्र जलकर १५ गिरते हैं सो मानों १७ पतंग (कनकौवा) अथवा राळ के १८ समूह में अग्नि लगी (यहां अग्नि का अध्याहार ऊपर के प्रकरण से होता है) ॥ १९ ॥ इसप्रकार बनियों की १९ व्यापार की गलियों में २० अग्नि लगकर बहुत तृणोंवाले २१ वन को अग्नि (लाय) जलावै तैसे जलाता है जिससे घी २२ अन्न २३ रुई जलती है सो मानों दीपक ही हैं वस्त्र जिसके ऐसी दीवाली होती है और उस ज्वाला में काष्ठ के छपरे और फूस की टपरियें अथवा टापरे (फूस के छाये घर) जलते हैं)

जरैं कटछप्पर टप्पर ज्वाल, झरैं जिम फग्गुन होरिय झाल ॥
छिकैं बहु अट्टन कंगुर छुट्टि, तरक्कत पत्थर छन्निन तुट्टि ॥ २१ ॥
परैं प्रजरैं बहु मंचे कपाट, घिरयो पुर पावक दुस्सह घाट ॥
जरैं ससिसालन ज्वालन जूह दगैं गृह अंगन अग्गि दुरूह ॥२२ ॥
द्रवैं जरि नागं रु बंगं अदभ्रैं, उडैं लगि पावक पारद अभ्र ॥
मनौं गढको अघ मेटन मान, करायउ सालम अग्गि सनान ।२३।
घने दिन भो रन तोपन घोर, छिक्यो गढ गोलन मार हुरओर ॥
कढयोतब सालम खुल्लि कपाट, झुक्यो रन वीर बजावत झाट २४
बजी सगताउतकी हतबाँह, चले कर ओदन ज्यों सिसु चाह ॥
उडैं हय खंधगिरैं असवार, कटैं भट छत्तिन छेदि कटार ॥ २५ ॥
तरक्कत टोपनपैं तरवारि, दिपैं मनु देवल झल्लारि झारि ॥
कटैं फटि कंकट बीरन अंग, तजैं निरमोकैं कि भीमैं भुजंग ॥२६॥
चटक्कत टोप समस्तक चीर, किधौं जगदीस प्रसाद करीर ॥
उलट्टत अब्बनैं तुट्टन तंग, पलट्टत के जिम एनें पलंगैं ॥ २७ ॥
झरैं गज सुंडिन झंडन झुंड, रचैं घन घुम्मत तंडैव रुंड ॥

सो जैसे फाल्गुन मास में होली की झाल जलै तैसे जलते हैं १ बहुत बुरजों के कांगरे छूटकर वे छिकती हैं और छन्नियों से तड़ककर पत्थर टूटते हैं ॥ २१ ॥ बहुत से २ मांचे और कँवाड़ जलकर गिरते हैं इसप्रकार नहीं सहन की जावे तिस रीति के ३ अग्नि से वह पुर घिरगया ४ चंद्रशालाओं (सब के ऊपर के मकानों) में ५ अग्नि का ६ समूह जलता है और घर के चौक में ८ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा अग्नि ७ जलता है ॥ २२ ॥ वहां १० सीसा ११ रांगा जलकर १२ बहुत ९ बहता है और उसके अग्नि से पारा उडकर १३ आकाश में लगता है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ १४ प्रहार १५ चावल खाने पर बालक के हाथ चलै तैसे ॥ २५ ॥ १६ कवच फटकर वीरों के अंग निकलते हैं सो मानों १८ काला सर्प १७ कांचली छोडता है ॥२६॥ १९ टोप फटकर मस्तक सहित चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का २० घड़ा फटता है (जगदीश के प्रसाद से भरेहुए घड़े का चौफाड़ होकर फटजाना प्रसिद्ध है) २१ तंग टूटकर घोड़े उलटते हैं और कितने ही घोड़े जैसे २२ हरिण पर २३ चीता पलटे तैसे पलटते हैं ॥ २७ ॥ २४ विना मस्तक

परैं हग *रत्त फदक्कत पुंज, गिरैं जिम सीतसमै पकि †गुंज।२८।
थरक्कहिं अंबर अच्छरि थट्ट, भरक्कहिं भीरुक ‡उव्वट बट्ट ॥
परैं कति पक्खर §वग्ग पलान, मरैं भट छाकि रजोगुन मान।२९।
उरज्झत ¶अंत्रन गिद्ध अनेक, तरप्फत घायल मूढ कितेक ॥
किलक्कहिं कालिय[1] कूदि कराल, खलक्कहिं सोहित[2] लोहित खाल३०
छुलक्कहिं घाय छछक्कत रत्त[3], झलक्कहिं सूरन ओज उमत्त[4] ॥
न तक्कहिं[5] कातर दूरहु नंट्ठि[6], ललक्कहिं बावन५२ओ चउसट्ठि६४॥३१॥
उलट्टत हत्थिनतैं भट आँहिं[8], मनौं तिहरी नट भग्गल[9] माँहिं ॥
उछट्टहिं आयुध तुट्टहिं तोनं[10], सुलट्टहिं केत[11] उचट्टहिं सोनं[12] ॥ ३२ ॥
दपट्टहिं बाजिनं[13] जुट्टहिं दाव, झपट्टहिं ज्यौं तरितै[14] झमकाव ॥
झटक्कहिं इक्कहिं इक झंझोरि[15], पटक्कहिं भूतनकौं रन रोरि ॥ ३३ ॥
अटक्कहिं पाय रकाबन केक, गटक्कहिं गोर्दन[16] गिद्ध अनेक ॥
खटक्कहिं हड्डनपैं लगि खग्ग, छटक्कहिं के उडि अंबरमग्ग[17]।३४।
लटक्कहिं थक्कहिं रान अनीकं[18], सटक्कहिं के सठ घोर समीकं[19]
वढ्यो इम सालम बाजि उडाय, लयो हुंत[20] भारतसिंहहिं जाय।३५।
कह्यो तुम मन्निय मो मनुहारि. अरे[21] दल सज्जि बनैं उपकारि ॥

शरीर नृत्य करते हैं जिसप्रकार शरद ऋतु में पकीहुई † चिरमी गिरैं तिस प्रकार * लाल नेत्रों के समूह उछलकर गिरते हैं ॥ २८ ॥ ‡ विना मार्ग § वाग (कुसा) ॥ २९ ॥ ¶ आंतों में १ कालिका २ रुधिर के नाले वहते हुए शोभित हैं ॥ ३० ॥ ३ रुधिर ४ उन्मत्त वीरों का पराक्रम ५ कायर नहीं देखते हैं ६ दूर से भागते हैं ७ जहां केवल चौसठ की संख्या आवै वहां चौसठ जोगनियें जानो, और बावन की संख्या से बावन भैरव जानो ॥ ३१ ॥ ८ उलटते हैं ९ भागल में (हाथी को फांदने के लिये नट लोग लकड़ी (काष्ठ) बांधते हैं उस का नाम भागल है) १० भाथे ११ ध्वजा गिरती है १२ रुधिर उडता है ॥ ३२ ॥ १३ घोड़ों को दौड़ाते हैं १४ बिजुली चमकै जैसे १५ प्राणियों को भयंकर युद्ध में गिराते हैं ॥ ३३ ॥ १६ मस्तिष्क (भेजा) १७ आकाश के मार्ग ॥ ३४ ॥ १८ राणा की सेना १९ भयंकर युद्ध से भागते हैं २० शीघ्र ॥ ३५ ॥ २१ हठ पूर्वक ठहरे ॥ ३६ ॥

पितामह मोहि गिन्यौं सिसु बर्ग, दयो करुणाकरि दुर्लभ स्वर्ग३६
बच्यो *खिल जो मम आयु बहोरि, मिलौं तुमकौं सु घटी पल जोरि
तज्यो तिहिं याबिधि आखिल कुमार, पर्यो भट औरनपैं रन प्यार
दुर हत्थन झारत खग्गन दाय, गयो बहु बैरिनके †असु खाय ॥
घनी अरि नारिन कंकन झारि, घनैं मदमत्त ‡मतंगन मारि।३८।
तज्यो पहिलो वह कंकन चाहि, नयो बंधि बंधिय अच्छरि व्याहि
तज्यो इम सालम मानुज देह, लयो सुर विग्रह नूतन नेह ॥३९॥
उदैपुरके भट बीर पचास५०, हनैं अरु अल्प गिनैं उपहास ॥
परे निज बीरहु सत्रह१७ संग, मर्यो इम सालम स्वर्ग उमंग॥४०॥

॥ दोहा ॥

रानाउत भारत वहे, इम रन सालम मारि ॥
रान अमल किय देवली, अप्पन बिजय उचारि ॥ ४१ ॥
सगताउत सावर अधिप, मंद सु सुतहिं मगाय ॥
जामोली जगतेसकें, पामर लग्गो पाय ॥ ४२ ॥
तदनंतर कछवाह नृप, आयउ कटक अमान ॥
ग्राम नाम पंडेर ढिग, दिन्ने मुदित मिलान ॥ ४३ ॥
बुंदियतैं यह सुनि बिदित, करिय दलेलहु कुच्च ॥
कूरम ईस्वरिसिंहसौं, उतहि मिल्यो छक उच्च ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे २ सप्तम ७ राशौ

---

*बाकी की जो मेरी उमर बची है वह तुमको मिलो अर्थात् तुम जीते रहो मैं मरता हूं यह कहकर सालमसिंह ने उस भारतसिंह को छोड दिया और वह वीर युद्ध से प्यार करके दूसरों पर गिरा ॥ ३७ ॥ † प्राण ‡ मस्त हाथियों को मारकर ॥ ३८ ॥ १ पहिले का डोरड़ा २ फिर ३ मनुष्य शरीर छोडा ४ देव शरीर लिया नवीन स्नेह से ॥ ३९ ॥ ५ छोटों को गिनने में हसी है ॥ ४० ॥ ७ भारतसिंह ॥ ४१ ॥ ८ मूर्ख ९ नीच जामोली नामक ग्राम में जाकर राणा जगत्सिंह के चरण लगा १० जिसपीछे ११ प्रमाण रहित १२ मुकाम ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा जगत्सिंह

राणाजगतसिंहसेनानीभारतसिंहदेवलीयुद्धकरणशावरपतीन्द्रसिंह-कुमारसालमसिंहमरणतज्जनकराणाचरणपतनदेवल्युदयपुरकेतवारोपणकूर्मराजेश्वरीसिंहपण्डेरग्रामशिविरस्थापनतद्दलेलसिंहमिलनं सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥ ॥२८८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गगनांगनम् ॥

राजामल कूरमनृप सचिव *तत्थ गो रानपैं ॥
अक्खिय कर जोरि चढन कौंनकाज घमसानपैं ॥
यह सुनि जयसिंह लिखित लै रु रान बंच्यो तहाँ ॥
अक्खिय इहिं पत्रमाँहिं जो लिखी सुं अब है कहाँ ॥ १ ॥
बुल्लिय सुनि कुम्मैं सचिव जवनईस यह जानिकैं ॥
अक्खिय लिखि पत्र भूप करहु जेष्ठसुत मानिकैं ॥
यौं यहै नृपता भई सु जवनइंद्र फरमानसौं ॥
लोपन तिहिं को समत्थ बिरचि बैर बलवानसौं ॥ २ ॥
अप्पहु नृप नीति चतुर समय देस हिय लाइये ॥
किहिं विधि जवनेस हिंतु समर सज्जि जय पाइये ॥
नाथ जु निज अनुज ताहि तुम दयो सु पुनि पेखिये ॥
गृह गृह सबके यहैहि राजरीति दृढ देखिये ॥ ३ ॥
अनुचर हुतो तथापि नृपसमेतं सब रावरे ॥

सेनापति भारतसिंह का देवली में युद्ध करना १ सावर के पति इन्द्रसिंह के कुमर सालमसिंह का मरना २ उसके पिता का राणा के चरणों में गिरना और देवली में उदयपुर का निशान रोपना ३ कछवाहों के राजा ईश्वरीसिंह का पंडेर नामक ग्राम में डेरे लगाना ४ उससे दलेलसिंह के मिलने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठ्यासी मयूख हुए ॥२८८॥

* तहां राणा के पास गया १ युद्ध पै २ जयसिंह का लिखा हुआ पत्र ॥ १ ॥ ३ ईश्वरीसिंह का सचिव ४ बादशाह ने यह वृत्तान्त जानकर ५ इस प्रकार; या इस कारण ईश्वरीसिंह ६ बादशाह के हुक्म से राजा हुआ है ७ कौन समर्थ है ॥ २ ॥ ८ बादशाह से युद्ध सजकर ९ आपके छोटे भाई नाथसिंह को ॥ ३ ॥ १० ईश्वरीसिंह

अप्पहिँ बहिकाय लरन लैचले सु सठ बावरे ॥
अब मम बिनती बिचारि हुकम धर्मगहि दीजिये ॥
माधवं[1] हित रीति रक्खि कछु सिवाय भुव लीजिये ॥ ४ ॥
रानहु सुनतहि इतीक गिनि बौलष्ठ[2] कछवाहकोँ ॥
राजामल इंद्रजाल बनि बिमूढ[3] तजि राहकोँ ॥
अक्खिय सर लक्ख५०००००दंम्म[4] पहुमि माधवहिँ दीजिये॥
सुनतहि हुत कुम्मं[5] सचिव लिखि पटा रु कहि लीजिये ॥
टौँक नगरको समस्त परगनाँ सु लिखि योँ दयो ॥
रानहु बनि मंद भागिनेय[6] हेत वहही लयो ॥
तदनंतरँ[7] यह उदंत[8] सुनि अनिष्ट[9] कोटेसहू ॥
रानहिँ वहक्यो विचारि तजिय तत्थ मुंद[10] लेसहू ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल कूरम सचिव, माया बचनन मंडि ॥
दिय माधव[11] हित टौँक पुर, लरन रान मत खंडि ॥ ७ ॥
तदनु[12] रान जगतेस अरु, कोटापति चहुवान ॥
दुव२भूपन कूरम सिबिरँ[13], किन्नो मिलन प्रयान ॥ ८ ॥
हो पहिलेँ आवन उचित, कुँम्महिँ[14] रान महीप ॥
पै तस पितु सुच[15] मेटनाँ, मन्न्योँ प्रथम महीप ॥ ९ ॥
यातेँ रान अराहि[16] अब, कानकँ[17] तखतरवान ॥
रतन छत्र छायितँ[18] चल्यो, जहँ दल कुम्म मिलान[19] ॥ १० ॥
संग गमन कोटेसहू, कूरम डेरन कीन ॥

साहित १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ४ ॥ २ बलवान् ३ मूर्ख बनकर ४ रुपयों की भूमि ५ ईश्वरीसिंह के सचिव ने ॥ ५ ॥ ६ भानजे के लिये ७ जिस पीछे ८ वृत्तान्त ९ प्रतिकूल १० हर्ष ॥ ६ ॥ ११ माधवसिंह के अर्थ ॥ ७ ॥ १२ जिस पीछे १३ कछवाहे के डेरों पर ॥ ८ ॥ १४ ईश्वरीसिंह को १५ जयसिंह का शोक ॥ ९ ॥ १६ सवार होकर १७ सुवर्ण के खासे में १८ छादित (छाया हुआ) १९ जहां कछवाह की सेना के मुकाम थे ॥ १० ॥

निज निज भट अंदर लये, कलह जई रु कुलीन ॥११॥
तँहँ कोटापतिके भटन, किय भटभीरं विसेस ॥
कीलनसंहित सिरायचे, गिरे ठलाठल ठेस ॥ १२ ॥
पिक्खत यह कोटेस प्रति, कुम्म भयउ प्रतिकूल ॥
तिम रानहु अहितहि तकिय, मन फट्टिय सह मूल ॥१३॥
इम रान रु कोटेस दुव२, कूरम डेरन पत्त ॥
रान चित्त पलटयो समुझि, हुव कोटेस विरत्तं ॥ १४ ॥
तीन३ सहँस कछवाह तँहँ, सज्जित पिक्खि सिपाह ॥
कोटापति सब सहि रह्यो, किन्नी इंन जु कुराह ॥१५॥
कछुक काल रहि सिक्ख करि, इम दुव २ डेरन आय ॥
रान पैठालय कूरमहु, पुनि आयउ हित पाय ॥ १६ ॥
अह दूजे नृप रान अरु, मिलि कूरम अतिमोद ॥
पिक्ख्यो सरित बनास बिच, बारन जुद्ध बिनोद ॥१७॥
बुल्ल्यो नहिं कोटेस तँहँ, यातैं अनखि बिसेस ॥
बिनुहि सिक्ख कोटा गयउ, लुट्टत बुंदिय देस ॥१८ ॥
इत रानंहि कूरम अधिप, अहरि साम उपाय ॥
टोंक नगर लघुभ्रात हित, अप्पि रु जैपुर आय ॥ १९ ॥
रानहु पत्तन बनहड़ा, महिमानी इक मानि ॥
कितव कूरमनको ठग्यो, आयो गृहं भय आनि ॥ २० ॥
पट्पात्-मरुपतिसौं जयसिंह दंम्म गुनईस१९ लक्ख लिय ॥
ते अब ईस्वरिसिंह पिक्खि समय रु पच्छे दिय ॥

१युद्ध जीतनवाले॥११॥२वीरों की भीड़वा धक्काधक्की३मेखों सहित४डेर५उस भीड़ की टक्कर से॥ १२ ॥६ईश्वरीसिंह॥१३॥७ विरक्त (प्रीति रहित) ॥ १४ ॥८ईश्वरीसिंह ने ९ सजे हुए सिपाही देखकर १० कोटा के पति ने जो कुरीति की वह सब सहन करके चुपरहा ॥ १५ ॥ ११ राना के डेरे ॥ १६ ॥ १२ दूजे दिन १३बनास नदी में१४हाथियों के युद्ध का कुतूहल१५देखा ॥१७॥१६कोटा के ईश को नहीं बुलाया१७क्रोध करके ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ छली कछवाहों का ठगा हुआ ॥ २० ॥ १९ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) से २० रुपये

इत कोटापति अनखि सेन बुंदिय सिर सज्जिय ॥
करि इड्डन एकत्त गुम्मर धरि उच्च गरज्जिय ॥
बज्जिय निसान डाहल बिसम यह उदंत जग उज्झलिय ।
संभर[२] उमेद कोटेस सह कूमत[३] लैन बुंदिय बलिय ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नागर द्विज गोबिंद निज, सेनापति कोटेस ॥
तबहि जोधपुर मुक्कल्यो, लैन मदति[४] बल बेस ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

द्विज नागर गोबिंदराम कोटेस सेनपति ॥
पठयो तब जोधपुर मंडि कग्गर[५] सहाय मति ॥
यहै समय मरुईस लैन बुंदिय दल[६] पिल्लहु[७] ॥
सिर इड्डन आसान[७] करहु कूरम अहि[८] किल्लहु ॥
गोबिंद बिप्र यह पत्र गहि अभयसिंह अंतिक[९] गयउ ॥
बहुदिन बिताय अवसर उचित भूपति प्रति हाजरि भयउ२३

॥ दोहा ॥

कछुक ब्याज मरु भूप कहि, सेन दयो नहिं संग ॥
तरकि[११] बिप्र अजमेर तब, आयो मुरारि अभंग ॥ २४ ॥
फक्करुद्दौला नाम इक, सबल नबाब सिपाह ॥
पठयो जो गुजरात प्रति, सूबापति करि साह ॥ २५ ॥
जवन पीर जारति करन, आयो वह अजमेर ॥
तासौं मिलि गोबिंद तब, किय रहस्य[१२] हित केर ॥ २६ ॥
कहिय बिप्र इक लक्ख१०००००तुम, हमसन रुप्पय लेहु ॥
संगचलहु चतुरंग सजि, लरि बुंदिय लै देहु ॥ २७ ॥

---

१ घमंड२चहुवाणँ उम्मेदसिंह, कोटा के पति सहित ३ बुन्दी लेने को जाता है ॥२१॥४सेना की अधिक सहायता लेने को ॥ २२ ॥ ५ पत्र ६ सेना भेजो ७ उपकार ८ कछवाहे रूपी सर्प को कीलो ९ समीप गया ॥ २३ ॥ १० मिस ११ क्रोध करके ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ १२ एकान्त वार्ता ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

यह अंगीकरि[1] मिच्छ वह, भयउ सहाय अभंग ॥
साहिपुरप[2] सीसोद पुनि, सजि उमेद हुव संग ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विज तब लिखि कोटा पठयो दलैं[3], इततैं हम आवत रन उज्झल
गुज्जर धर सूबापति संगति, पुनि उमेद नृप साहिपुरापति॥२९॥
उततैं तुम दोऊ२ नृप आवहु, चंड लरन चतुरंग चलावहु ॥
दुज्जनसल्ल उमेद भूप दुवर, हड्डनपति सुनि लरन सज्ज हुव ३०

॥ दोहा ॥

खुरली[5] पटु नय[6] धिंज्ज[7] खम[8], बरस चउद्दह १४ बेस ॥
निडर सज्यो उम्मेद नृप, दुपहर जेठ दिनेस[9] ॥ ३१ ॥
रसा[10] रसातल बोरि दिय, कनककनैन[11] बुध कूर ॥
अब उमेद किरिराज[12] इहिं, सज्यो उधारन[13] सूर ॥ ३२ ॥
स्वसा[14] दीपकुमरी सहित, कोटा मातहिं रक्खि ॥
सानुज[15] भूपति सज्ज हुव, अवनि[16] लैन निज अक्खि ॥ ३३ ॥
सक इक नभ वसु ससि१८०१समा[17], मिलि द्वादसि१२सुचि[18] मास
कोटापुर सज्जिय कटक[19], निडर करन अरि नास ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ राणाशिविरकूर्मसचिवागमनमाधवसिंहार्थपंचलक्षरौप्यकाऽऽर्घटोङ्कन

१अंगीकार (मंजूर) २ शाहपुरा का पति ॥ २८ ॥ ३ पत्र भेजा४साथ॥२९॥३०॥ ५ शस्त्रविद्या में चतुर ६ नीति चतुर ७ धीरजवाला ८ क्षमा रखनेवाला ९ ज्येष्ठ मास के दुपहर का सूर्य ॥ ३१ ॥ ११बुधसिंह रूपी हिरण्याक्ष (हिरणाक्ष) ने १० भूमि को पाताल में डुबो दी थी जिसको फिर१२वाराह अवतार की भाँति उम्मेदसिंह १३ उद्धार करने (निकालने) को सजा ॥ ३२ ॥ १४ बहिन १५ छोटे भाई सहित१६अपनी भूमि लेना कह कर ॥ ३३ ॥ १७सम्वत् १८आषाढ १९सेना सजी ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा के डेरे पर कछवाहे के सचिव का आना और माधवसिंह के अर्थ पांच लाख रुपयों के मूल्य

गरदेशलिखनराणानिवेदनतन्मायाजगत्सिंहमोहनतत्पूर्वजयपुरशि-
विरागमनकोटेश्वरदुर्मनीभवनबुन्दीदेशधाटिपातनाऽनुकोटाऽऽग—
मनकूर्मराजजनकनीतमरुदण्डद्रव्यप्रत्यर्पणमहारावसहायार्थगोविं-
दरामयोधपुरप्रेषणसाहिपुरेश्वरादिसहिततत्प्रत्यागमनबुन्दीविजया-
र्थहड्डेन्द्रसेनसंचयनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥ ॥ २८९ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

सटा[1] धूनिकैं सिंह उम्मेद सज्ज्यो, गदा लै कि दुज्जोधपैं[2] भीम गज्ज्यो
बिडोजा[3] मनों जंभपैं छोह छायो, लग्यो लंक कै[4] अंजनीको लडायो
किधौं कुंडली[5]पैं बली पन्नगासी[6], रिसानों[7] कि अंधारपैं[8] तेजरासी[9] ॥
किधौं सिंधुके[10] सूनुपैं संभु[11] तंड्यो, मनों चंडपैं कालिका कोप मंड्यो. २
जटाजूटतें[12] वीरभद्रसें[13] जग्ग्यो, महासेन[14] कै क्रौंचकों[15] लैन लग्ग्यो ॥
फटाटोप[16] कै रागपैं नाग किन्नौं, कुँवलाश्व[17] कै धुंधुपैं[18] दाव दिन्नौं ॥ ३ ॥

(हाँसिल) का टांक नगर का देश लिखकर राणा की नजर करना १ उसकी इन्द्र-जाल सें राना का ठगा जाना २ राणा जगत्सिंह का पहिले ईश्वरीसिंह के डेरे आना ३ और कोटा के पति का उदास होकर बुन्दी का देश लूटपीछे कोटे जाना ४ ईश्वरीसिंह का, पिता (जयसिंह) के लियेहुए मारवाड़ के दंड के रुपये पीछे देना ५ महाराव का सहाय के अर्थ गोविन्दराम को जोधपुर भेजना ६ शाहपुरा के पति सहित उसका पीछा आना ७ बुन्दी को विजय करने के अर्थ हाडों के इन्द्रका सेना संचय करने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ निवासी २८९ मयूख समाप्त हुए ॥

१ उम्मेदसिंह रूपी सिंह गरदन के केस धुजाकर सज्जित हुआ, किंवा गदा लेकर २ दुर्योधन के ऊपर भीमसेन ने गर्जना की ३ मानों जंभासुर पर इंद्र क्रोधित हुआ किंवा लंका के ऊपर ४ अंजनी का पुत्र (हनुमान) लगा ॥ १ ॥ किंवा ५ सर्प के ऊपर बलवान् ६ गरुड़ किधूँ ८ अंधेरे पर ९ सूर्य ने ७ क्रोध किया किंवा समुद्र के १० पुत्र (कामदेव) पर शिव ने ११ गर्जना की, मानों चंड नामक दैत्य पर कालिकाने कोप रचा ॥ २ ॥ १२ मानों शिव की जटा के जूट से १३ वीरभद्र उठा किंवा १४ स्वामिकार्तिक १५ क्रौंच नामक पर्वत को लेने लगा अथवा बडा सिचाण पक्षी क्रौंच पक्षी को लेने लगा किंवा गिरनारी राग पर सर्प ने १६ फण का आटोप (छत्र) किया किंवा १७ कुवलयाश्व नामक राजा ने १८ धुंधु राक्षस

किधौं हैहयाधीसपैं रामकुप्यो, किधौं राम लंकेसके आजि उप्यो ॥
रच्यो चाप गांडीव टंकार रंज्यो, गज्यो कै गुडाकेस राधेय गंज्यो ॥४॥
सज्यो कन्ह कै साहगोरीसँ सत्थैं, मुर्‍यो लंगरी जानि जैचंद सत्थैं ॥
धक्यो सोखिबे सिंधु वातापि ध्वंसी, अर्‍यो द्वंद्वपैं बालि ज्यौं इंद्रअंसी ॥५॥
बलाधीस भू लैन यों भूप बढ्यो, चमू संकुली भद्द ज्यौं मेघ चढ्यो ॥
लगे सान झंझान धाराल धारी, अमासक्त दज्झैं झरैं फूल भारी ॥६॥
लरो गाय नोबत्तिपैं घाय लग्गैं, भराक्रांत व्है सर्प्पके दर्प भग्गैं ॥
पताका खुली मत्त हत्थीन मत्थैं, सजे डाकिनी प्रेत बेताल सत्थैं ॥७॥
धुरी टोप सन्नाह बिक्रांत धारैं, इचैं चाप घाँघाँ निसानाँ उतारैं ॥
दराबीन आरूढ के तोप दग्गैं, जैटा ज्वालकी माल ज्यौं उज्ज जग्गैं ॥८॥
समै कल्पको भो डिग्यो रत्नसानू, भयो दीहके भेसके बेस भानू ॥

पर दाव दिया ॥ ३ ॥ किधौं कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) पर १ परशुराम ने क्रोध किया किंवा रावण के २ युद्ध में रामचन्द्र शोभायमान हुए किंवा गांडीव धनुष की टंकार करके शोभायमान ३ अर्जुन ने ४ कर्ण को मारा अथवा दबाया ॥ ४ ॥ ५ किंवा गोरीशाह के साथ पृथ्वीराज का काका कन्ह सज्जित हुआ ६ किंवा पृथ्वीराज का सामंत लंगरीराय कन्नोज के राजा जयचंद पर मुड़ा किंवा समुद्र को सुखाने के अर्थ ७ वातापि राक्षस को मारने वाला (अगस्त्य ऋषि) क्रोधित हुआ अथवा ८ इन्द्र के अंशवाला वालि नामक वंदरों का राजा द्वंद्व राक्षस से अड़ा ॥ ५ ॥ इसप्रकार ९ आडावला नामक पर्वत का पति भूमि लेने को बढ़ा और जैसे ११ भाद्रवा का मेघ चढ़े तैसे सेना १० भरगई १२ सकलीगर साण को झनकाने लगे जिस से अग्निकण झड़कर १३ साण को फेरनेवाला सकलीगर जलने लगा ॥ ६ ॥ १४ लड़ी लगकर (निरंतर प्रहारों से) नोबत पर घाई लगी १५ अथवा लड़ो ऐसा कहकर नोबतों पर घाई लगी १६ भार से पीड़ित होकर १७ शेषनाग का घमंड भगा (यहां भार से पीड़ित होने के संबंध से शेषनाग का ग्रहण है) ॥७॥ १८ युद्ध का धुर खींचनेवाले वीर टोप, कवच धारण करने लगे १९ दिशा दिशाओं में धनुषों को खैंचकर निशाना उतारने लगे २० चरखों पर चढ़ीहुई २१ कर्णी ह्कों तोपें दगती हैं सो मानों ज्वालमाला की २१ शिखा २२ कार्थी को २१ पिता का नी है ॥ ८ ॥ २३ प्रलय का समय होकर २४ सुमेरु पर्वतपर्यंत काले २९ आम- २५ नक्षत्रेश (चंद्रमा) के रूप से २६ सूर्य होगया, ·षी

धरैं कुंकुमी चैल के सस्त्रधारी, नचैं मोद कैं व्याहिबे स्वर्गनारी।९।
बनैं पिट्ठि बेतंड होदे बिसाली, रचैं जीन बाजीन के पक्खराली ॥
धुजादंड हत्थीनपैं बेंणु बट्ठे, मनौं सैलके शृंगपैं ताल ठट्ठे ॥ १० ॥
लची मेदनी राग सिंधून लग्गे, भ्रमैं भुम्मियाँ भुम्मिकौं छोरि भग्गे
परी त्रास मेवास आवास पत्ती, बढी यौं बलाधीसकी जोर बत्ती११
घुरैं गज्ज दंती खुलैं सज्ज घोरे, डकेती रचैं चाकरके हत्थ डोरे ॥
जरी ओपकैं तोप जंजीर जाली, करैं पिक्खि उच्छाह काली कपाली

॥ दोहा ॥

जंगर टोप वाहुल्ल जटित, हुलसि सूर असि हत्थ ॥
सजिय सेन बुंदिय सुपहु, सह कोटेस समत्थ ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गज मत्तन गरदाय मिलिग बिरुदाय महाउत ॥
पालकाप्य आगम प्रभाव जैव पाव दाव जुत ॥
नट कछनी कछि निडर मल्ल रन निपुन महाबल ॥

१केसर के रंग के२वस्त्र करते हैं और हर्ष३करके४अप्सराओं को व्याहने के लिये नाचते हैं अथवा वीरों को विवाहने को हर्ष करके अप्सराएं नाचती हैं ॥ ९ ॥ ५ हाथियों की पीठ पर बडे होदे कसते हैं और घोड़ोंपर जीण और ६ पाखरों की पंक्ति लगाते हैं, हाथियों पर ध्वजा दंड के ७ बांस बढे सो मानों पर्वत के ८ शिखर पर ताड़ के वृक्ष ९ खड़े हैं ॥ १० ॥ वीर रस का सूचक सिंधवी राग लगकर१०भूमि चलायमान हुई भोमिये भ्रमकर भूमि को छोडकर भागे११लुटेरे और चोरों के स्थानों में त्रास पड़कर वह त्रास उनके घरों में १२ प्राप्त हुई, इसप्रकार१३आडाबला के पति के जोर की१४वार्ता बढी ॥११॥ १५ हाथी गरजना करके घूमे और घोड़े सज्जित होकर खुले जो१६चाकरों के हाथ में१७डोरों से बंधे हुए कूदने लगे१८शोभा युक्त करके तोपों को जंजीरों की जाली में जेड़ी जिनको देखकर कालिका और१९शिव उत्साह करते हैं ॥ १२ ॥ २० कवच (जगड़) टोप और २१ बाहुत्राण (दस्तानों) से जड़े हुए क २२य पर का[illegible]थ में लेकर हर्ष युक्त होते हैं ॥ १३ ॥ मस्त हाथियों को२३ मद उठा किनां१४९२ महावत मिले २४ पालकाप्य मुनि के किए हुये शाब्दा सिखाण पच्ची कंव से उन महावतों के पग दाव और२५शीघ्रता से युक्त फल का आटोप (छत्र) ।

आडपेच रचि अतुल अंग भसमी धरि उज्जल ॥
त्रयरेख[1] अलिक नागज[2] तिलक कारे मनहुँ पिसाच कुल ॥
इभपाल[3] गयउ बिकराल इम बारिन[4] ढिग डंकत[5] बहुल[6] १६
लागि दुकच्छ लंगोट कठिन बजरंग तंग कसि ॥
दंड ऐंचि दस बीस फैंकि मुद्गर बिद्या बसि ॥
झंपन बिबिध बनाय अंग उछटाय ऐंड[7] भरि ॥
प्रान त्रान[8] कारन पुकारि केसव प्रनाम करि ॥
गजबाग[9] हत्थ निब्भर[10] गुमर आयउ सिर गौरव[11] अलप ॥
मारुत[12] प्रजात[13] बंदर मनहुँ मंदर[14] पर लिन्निय मलप ॥ १५ ॥
इम कलाप[15] द्रुत[16] आय अक्खि बिरुदन आधोरन[17] ॥
फौजाँ नायक[18] फील[19] फते अप्पहु जस जोरन ॥
जय व्यंजक[20] भंजक[21] कपाट वंके गढ गंजक ॥
अब तेरे सिर यार भार रक्खिय रन रंजक[22] ॥
आरुहि[23] मलंगि बिरुदाय इम झट मिलाय लिय मदझरन[24] ॥
कहि जनक[25] नाम बुल्लिय कुसल कुंभत्थल थप्पलि करन[26] १६
फुरत[27] अंग फटकारि रंग रज झारि रुमालन ॥
अति मेचक[28] आमलन[29] जाल[30] मंडिग जंगालन[31] ॥

हैं १ ललाट में तीन रेखावाला २ सिंदूर का तिलक किये हुए ३ महावत ४ हाथियों के ठाणों में " वारी तु गजबंधने त्यमरः " ५ कूदते हुए ६ पहुंच गये ॥ १५ ॥ ७ घमंड भरकर ८ प्राणों की रक्षा के लिये परमेश्वर को प्रणाम करके ९ बडा अंकुश हाथ में लेकर १० घमंड से भरे हुए ११ थोड़े भार से हाथी के मस्तक पर आये सो मानों १२ पवन के १३ पुत्र (हनुमान्) ने १४ मंदराचल पर मलंग ली ॥ १५ ॥ १५ हाथी के कलावे पर १६ शीघ्र आकर १७ महावतों ने उन हाथियों की स्तुति की १८ सेनाओं के पति १९ हे हाथी! यश को जोड़ने के लिये विजय देना २० जयके प्रकाश करने वाले २१ कँवाड़ों को तोड़ने वाले २२ युद्ध में प्रीति करने वाले २३ चढकर २४ हाथियों को २५ पिता का २६ हाथों से ॥ १६ ॥ २७ शोभायमान शरीर को. २८ अत्यंत काले २९ आमलों से और ३१ जंगाल से ३० जाली (चित्रविशेष) रची

[1]कंट विचित्र [2]कुरुबिंद बहुरि हरिताल बिथारिय ॥
जंगी [3]अंदुक [4]जोरि [5]दोर डुंगर पग डारिय ॥
[6]त्रिपदीन [7]गत्त [8]नद्धिय अतुल लगि [9]कलाप जेवर लसिय ॥
[10]कुंथ डारि [11]गुडन [12]सन्नद्ध करि क्रम [13]वरत्त हादन कसिय॥१७॥
सकल [14]हेति सिर सज्जि [15]छिप्र [16]आलान छुरायउ ॥
दैदै बिरुद [17]दुरूह घोर [18]घन गज्ज घुरायउ ॥
[19]बारी बाहिर बाक [20]हाक बल अचल डगाये ॥
बढि चरखिन बारूद ज्वाल विकराल जगाये ॥
[21]हिंजीर लंब ऐंचत हुलसि बल [22]अमान हरवल बढिय ॥
मानहुँ अपुव्व [23]मेचक [24]मुदिर कज्जलगिरि [25]जंगम कढिय॥१८॥
[26]भद्र१मंद२मृग३ भव्य मिश्र४चउ जाति महाबल ॥
[27]बसाँ लोभ आत बेग [28]सरत उछटावत [29]शृंखल ॥
[30]बाल [31]पोत अरु [32]बिक्क [33]कलभ [34]मक्कुन [35]अतिकायक ॥
[36]जूहनाह जव जोर सज्ज हुव समर सहायक ॥
गज्जित अनेक उद्धत गुमर बहु सज्जित [37]मदकल वलिय ॥

१कपालों पर विचित्र२हींगलू और हरताल फैलाया३बडे जंजीर४जोड़ कर५पर्वत के समान फैलाव वाले पगों में डाले ६ रस्सों से तुलना रहित ७ शरीर को ८ बांधा और ९ कलावा लगाकर जेवर से भूषित किया १० झूल (गदरा) डालकर ११ पाखरों से १२ सज्जित करके क्रम पूर्वक १३ रस्सों से होदे कसे ॥ १७ ॥ उन होदों में सब १४ शस्त्र सजकर १५ शीघ्र १६ खंभों से खोले और १७ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी स्तुति करके १८ मेघ के समान भयंकर गर्जना करते हुए हाथियों को १९ ठाणों से बाहर २० छोटे घावों से क्रोध दिलाने के बल से निकाले २१ लंबी जंजीरों को २२ अप्रमाण बलवाले २३ अपूर्व काले २४ मेघ अथवा २५ चलते हुए कज्जल के पर्वत निकले ॥ १८ ॥ २६ भद्र आदि चारों जाति के बलवान् शुभ हाथी २७हथनियों के लोभ से २९सांकल को उडाते हुए वेग से २८ चलते हैं उन हाथियों में कितने ही ३० छोटे ३१बच्चे ३२ तुरन्त के पैदाहुए ३३ पाठा ३४मुकने (विना दांतवाले) ३५बडे शरीरवाले ३६जूथनाथ (यूथ के पति) वेगवाले और बलवान्, युद्ध में सहायता करनेवाले सज्जित हुए, निरंकुश घमंड से गर्जना करनेवाले अनेक बलवान्३७मस्त

गंभीर[1]वेदि परिघात गजय चतुरंगन रच्छक चलिय ॥ १९ ॥
कतिक[2] ठंपाल अतिकोप कतिक उपनाह्य[3] कुलाचल ॥
ईसादंत[4] अनेक बढिग घुम्मत समीर[5] बल ॥
झरत प्रवृत्ति[6] पटान भौंर करटन[7] भननंकत ॥
अरु कंदुक[8] जिम उडत झाट अंदुक[9] झननंकत ॥
फटाकरि सुंडि वमथुन[10] फुहरि पच्छिन नभ छिरकत प्रकट ॥
बुंदीस सेन अग्ग[11] ति बढिग कमठानन तजि पीनकट[12] ।२०।
अहि[13] फन जिम आटोप रचत पुक्खर[14] सिर रक्खत ॥
दृग लघु दीरघ दिट्ठि[15] चलत मोचाफल[16] चक्खत ॥
वंगर[17] कनक बिखान[18] जटित अति जेब जवाहर ॥
आधोरन[19] आसनन बीत[20] मारत हंकत बर ॥
चूलिका[21] हरित चित्रित रुचिर अच्छिकूट[22] पीत रु अरुन ॥
बुंदीस हुकम हंकिय बिबिध तोर जोर बीरन[23] तरुन ॥ २१ ॥
नील हरित निर्ज्जान[24] कतिक करटन[25] कलमासन ॥
कतिक अवग्रह[26] कपिस अधिक रोहित कति आसन ॥
अति कडार आरच्छ[27] विसद बाहित्थ[28] बिराजत ॥

हाथी सज्जित हुए १ अंकुश नहीं माननेवाले और गजब करनेवाली तिरछी घात करनेवाले सेना के रक्षक हाथी चले ॥ १९ ॥ २ कितने ही दुष्ट हाथी ३ सवारी के पर्वत ४ लंबे दांतों वाले ५ पवन के समान चलवाले ६ पटों से डाण का प्रवाह झरता हुआ ७ गंडस्थलों (कपोलों) पर भ्रमर उडते हुए ८ गेंद के समान उडती है ९ जंजीर १० सुंड के जलकणों की फुँहार से आकाश में पक्षियों को छिड़कते हैं १२ पुष्ट (मोटी) कमरवाले खंभालों (खंभों) को छोडकर ११ आगे बढे ॥ २० ॥ १३ सर्प के फण के समान १४ सुंड के अग्रभाग का मस्तक पर छत्र किये हुए छोटे नेत्र और लंबी १५ दृष्टिवाले १६ कलवृक्ष के फल को चखतेहुए १७ सुवर्ण के पंगड़ १८ दांतों में जड़ेहुए १९ महावतों के २० अंकुश लगाने और पैरों से हूलने से श्रेष्ठ चलते हैं २१ कानों के मूलभाग हरे रंग से रंगेहुए २२ नेत्रों के भाग पीले और लाल रंग से रंगे हुए २३ बडे प्रताप और बलवाले तरुण हाथी ॥ २१ ॥ २४ नेत्रों के पास नीला और हरारंग २५ कपोलों पर काला रंग २६ ललाट पर काला और पीला मिलाहुआ रंग २७ पीतवान पर पीला २८ कुंभस्थल के

पीत अरुन प्रतिमान लखत *सुरगुरु †कुज लाजत ॥
‡बिदुदेस हरिन पालास बनि §आतकुंभ नील रु बिसद ॥
बुंदीस संग हरवल बढिग ¶मातंगप इम झरत मद ॥२२॥
+तलपन पीन रु तुंग छजत ÷पीढक पर छादित ॥
कच्छा रेसम कठिन नद्ध[1] होदन घन नादित ॥
झुकि कतिकन झंडाल[2] कतिन मेघाडंबर[3] कसि ॥
सिंहासन कति सज्ज लंब हिंजीर[4] अवरै[5] लसि ॥
डाकन[6] अमान निढ्ढिन डगत झगत जंग अमरख[7] झलक ॥
उम्मेद हुकम घुम्मत अतुल हंकिय इम हत्थिन हलक॥२३॥
मिलि अनेक मंदुरन[8] प्रीति मंडिय हय पालन ॥
झलक खेह झटकारि देह फटकारि दुसालन ॥
दे खलीन[9] बिरुदाय अंस[10] थप्पलि कर ओपित[11] ॥
जंगी पक्खर जीन खेंचि तंगन आरोपित[12] ॥
गजगाह मंडि चित्रित गहर लहरदार लूमन ललित ॥
आनिय तुरंग कंपन अरिन कृत कंजाक[13] झंपन कलित[14]॥२४॥
गरुत[15] रूप गजगाह उडत मानहुँ उरगासन[16] ॥
पय नेउर रवँ[17] प्रचुर ललित मंडत बहु लासन[18] ॥
खुरसान ताजिक तुखार भाडेज भुम्मि भव[19] ॥

नीचे का भाग स्वेत * पीले रंग से बृहस्पति और † लाल से मंगल लज्जित होता है ‡ कुंभस्थल के बीच का भाग काला और हरा § कुंभ का अधोभाग, नीला और स्वेत ¶ हाथियों के पति ॥ २२ ॥ + बिछोने मोटे और ऊँचे ÷ पीठ पर छाये हुए शोभा पाते हैं, रेसम के गुच्छे १ दृढ बंधेहुए २ झंडे ३ छायावाले होदे ४ लंबी जंजीर ५ दूसरे हाथियों के शोभायमान है ६ सांटमारों के क्रोध दिलानेवाले प्रहारों से कठिनाई से डिगते हैं ७ क्रोध की॥ २३ ॥ ८ हयशालाओं में ९ लगाम देकर १० कंधे थापल कर ११ शोभायमान करके १२ आरोपण किये १३ युद्ध करनेवाले झंप में १४ प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ १५ पांखों के रूप से गजगाव उडते हैं १६ सो मानों गरुड़ उडता है १७ बडा शब्द १८ नृत्य १९ उत्पन्न

वनायुज रु वाल्हीक जात कांबोज महाजव ॥
कोंकान गोजिकानहु कतिक प्रोढहार धावन प्रबल ॥
हाजरि हइंद नृप अग्ग हुव पलटत पल न लगात पल ॥२५॥
आजानेय अनेक पारसीकहु विनीत पथ ॥
पंचभद्र जय पूर अष्टमंगल सुलाभ अंथ ॥
चक्रवाक जवचपल मल्लिलोचन अछेह मन ॥
कति कियाह कोकाह पीत खुंगाह सुद्ध मन ॥
आलाल कपिल बोल्लाह अरु हालक सोन हलाह हय ॥
पंगुल कुलाह उकनाह पुनि बोरुखान अति रय सु वय ॥२६॥
सुलभ लाट अरु सीस कंध मणिबंध कथित क्रम ॥
देस नाभि हिय देस भांति मुख त्रिक उत्तम भ्रम ॥

---

१ उत्पन्न २ बड़े वेगवाले ३ कितने ही गोजिकान के घोड़े ४ बल पूर्वक दौड़ने में निपुण ५ पलटने में नेत्रों के पलकों की भांति ६ पल भी नहीं लगाते ॥ २५ ॥ ७ मार्ग में शिक्षा पाये हुए कितने ही सुंदर घोड़े ८ चारों पैर और ललाट जिसका श्वेत होवे उस घोड़े को पंचमंगल कहते हैं ९ चारों पैर, ललाट केसवाली मदूदू और बालछा जिस घोड़े का श्वेत होवे उसको अष्टमंगल कहते हैं और मतान्तर से मदूदू के स्थान में श्वेत छाती को अष्टमंगल मानते हैं १० लाभ के अर्थ ११ पीले रंग के घोड़े के, नेत्र और पैर श्वेत होवे उसका नाम चक्रवाक है १२ वेग में चपल १३ महुवा रंग के घोड़े के चरण और मुख श्वेत होवे उसको मल्लिलोचन अथवा मल्लिकाक्ष कहते हैं १४ कुमेत १५ श्वेत (नुकरे) और पीले १६ श्याम-वर्ण के (लक्खा) १७ नीले १८ नीले पीले मिले हुए रंग के अवलख १९ पीला और श्वेत अवलख २० पीले और हरे रंग के अवलख २१ सुवर्ण के अथवा कमल के रंग के २२ चित्र विचित्र रंगवाले अर्थात् अनेक मिले हुए रंगवाले २३ काच के समान कान्तिवाले २४ काले घुटनोंवाले २५ पीले और लाल रंग के अवलख २६ समदे २७ अत्यन्त वेगवान् और श्रेष्ठ अवस्थावाले ॥ २६ ॥ २८ गले का मणिया २९ कहे हुए क्रम से ३० नाभी के स्थान पर और ३१ हृदय के स्थान पर ३२ शोभायमान है मुख पर तीन ३३ भवँरी जिनके

रंध्र[1] जठर[2] गल[3] रुचिर[4] बिहित[5] आवर्त्त बिराजत ॥
चन्द्रकोस[6] जुत चपल लखत नखत मन लाजत ॥
कति इन्द्र[7] पदम लच्छन कतिक चक्रवर्त्ति[8] चिंतामनिक[9] ॥
हुव सज्ज दबत[10] छोनिय हयति[11] फबत माल यालन[12] फनिक २७
इक्क बिजय[13] आवर्त्त बहत[14] इक सुकल[15] महाबल ॥
इक्क कुसुम[16] आमोद इक्क चंदन[17] गंध उज्जल ॥
इक लोहित[18] इक असित[19] इक्क सारंग[20] सेत[21] इक ॥
पिंग[22] इक्क इक पीत[23] इक्क पीलास[24] एंत[25] इक ॥
खुरअग्ग[26] भुम्मि सज्जित खनत[27] बलि गज्जत ऊरध बदन[28] ॥
चहुवान राज आयस[29] चलिय सहँसन हय जव जय[30] संदन २८
दिपत पुरुख[31] चउ४ दड्ढ रंग कालिक[32] रद[33] बारह १२ ॥

१घोड़े के कुक्षि (कूँख) और नाभी के मध्य प्रदेश का नाम रंध्र है २पेट पर ३गले पर सुन्दर और ४ उचित ५ बालों की भवँरियें शोभा देती हैं ६ जिस घोड़े के ललाट में दो भवँरियें होती हैं उसको चंद्रकोस कहते हैं ७ जिस घोड़े के कंठ में दक्षिण तरफ दो भ्रमरियां होवें उसको इन्द्र कहते हैं और जिसके कंधे के एक ओर एक भ्रमरी होवै उसको पद्म कहते हैं ८ जिस घोड़े की नासिका पर एक अथवा दो भ्रमरी होवै उसका नाम चक्रवर्ति है ९ कंठ के मणि-यें पर भ्रमरी होवे उसको चिन्तामणि अथवा देवमणि कहते हैं १० भूमि को दबाते हुए ११ ते (वे) घोड़े १२ सर्पों की माला के समान जिनकी केसवाली शोभा देती है ॥ २७ ॥ ॥ १३ विजयमणि नामक भ्रमरी (भँवरी) वाला जो थापे पर होती है १४ धारण करता है १५ भ्रमरी विशेष १६ मुख में पुष्प की गन्धवाला, जिसका ब्राह्मण वर्ण मानते हैं १७ मुख में चंदन की गंधवाला जिसका क्षत्रिय वर्ण मानते हैं १८ लाल रंग वाला १९ काले रंगवाला (लक्खी) २० अनेक (चित्र विचित्र) रंगवाला २१ श्वेत (नुकरा) रंग वाला २२ पीतल के समान पीले वर्णवाला जिसका नाम विशेषकर सोवन कलश रक्खा जाता है २३ सामान्य पीले रंगवाला २४ हरा रंगवाला २५ कर्बुर (अबलख) रंगवाला २६ सज्जित हुए पीछे अगले खुर से भूमि २७ खोद-नेवाला २८ ऊँचा मुख करके गाजनेवाला २९ आज्ञा से ३० वेग के और जय के घर ॥ २८ ॥ (ऊपर के दोनों छन्दों में शुभदायक घोड़ों के लक्षण कहे हैं ३१एक पुरुष (ऊषदा, परस) ऊँचे शोभायमान हैं ३२काले रंग की चार दाढें ३३दांत

अंगुल सत१००वपु उच्च जुद्ध संगर जयकारह ॥
वीससत्त२७ मुख निहित कॅरन अंगुल खट६ केतक ॥
चाप उपम चालीस अट्ठ४८ मित कंध उपेतक ॥
चउवीस२४पिट्ठि आपत रुचिर कलित तीस३०अंगुल कमर
वालधि प्रलंब चालीस बसु४८चल धुनाय ढारत चमर ।२९।
चउ४दीरघ चउ४रत्त च्यारि४ सुच्छम चउ४उंन्नत ॥
च्यारि४ हस्व नत च्यारि४च्यारि४आयत मुनीन मत ॥
मुख१ भुज२केस३निगाल४ सेफ१जीह२रु ओठ३ कोकुद ॥
कॅरन२पुच्छ३पयकोष्ठ४प्रोथ१ सँफर२ गोधि३तथा गुद४ ॥
दुव२कँन बंस३अंतर दुहुन४ कॅल्ल१उदर२ जानुक३ ककुद ॥
मुख१खंध२जानु३पंसुलि४महित लच्छन हयन मचात मुद ४।३०॥

कति किसोर अति जोर कतिक जुब्बन छक डंकत ॥

१सौ अंगुल का ऊँचा शरीर२युद्ध में ३जय करनेवाला ४ सत्ताईस अंगुल लंबा उचित मुख५छः अंगुल के कान६केतकी की कली के समान७ धनुष की उपमा वाले अड़तालीस अंगुल के प्रमाणवाले लंबे कंधे८ सहित९चौवीस अंगुल लंबी पीठ १० विदित११वालछा लंबा१२चपलता से अथवा चलता हुवा, बालछे को हिलाकर चमर करनेवाला ॥ २९ ॥शुभदायक घोड़े के १३ चार अंग लंबे१४ चार अंग लाल १५ चार अंग पतले १६चार अंग उठेहुए १७ चार अंग छोटे १८चार अंग झुकेहुए१९चार अंग मोटे चाहिये सो २० शालिहोत्र बनानेवाले मुनियों के मत से कहे हैं "इन अंगों को आगे यथाक्रम से स्पष्ट बताते हैं" मुख, भुज, केस२१गला ये चार तो लंबे होने चाहिये और२२लिंग, जीभ, ओठ२३तालुवा ये चार अंग लाल होना शुभ है२४दोनों कान, वालछा,२५पैरों के गाठे (मोदे) ये चारों अंग पतले चाहिये२६फुरणा (नासिका) २७ खुर (सुम) २८ ललाट २९ गुदा ये चार अंग उठेहुए होवें ३० दोनों कान ३१ बांसे का हाड (पीठ की लंबी हड्डी) ३२ दोनों कानों के बीच का अंतर (छेटी) ये चार अंग छोटे होवें तो उत्तम है ३३ कूँख (बाखी, तार) पेट ३४ घुटने३५मद्दू, ये चार अंग झुके हुए और मुख, कंधा, घुटना, पांसली ये चार अंग बड़े (लंबे) होना ३६ पूज्य है और ये उपरोक्त घोड़ों के लचण ३७ हर्ष कराते हैं ॥३०॥ घोड़ों के कितने ही बच्चे यौवन अवस्था के छक में बडे बल से कूदते हैं

प्रोथ बजत पवमान हुलसि अंबर बढि हंकत ॥
धोरित१ बल्गित२ धाव इमहि प्लुति३ अरु उत्तेरित४ ॥
उत्तेजित५ पुनि अटत पंचधारन मग प्रेरित ॥
झारत फुलिंग नालन झपटि अतुल प्रसारत उड्डयन॥
चातुरि मलंग धारत चपल पातुरि गति डारन पयन ॥ ३१ ॥
रजत पत्त खुर रंजत ललित अयं पक्क नाल लगि ॥
थित जिम देवल थंभ चरन अति दृढ लगैं न चंगि ॥
पुट्ठे गरद्द प्रपीन रुचिर छतिय परिणाहित ॥
कंध कुटिल कोदंड सजव धज कसत समाहित ॥
सारत मलंग सेनन मुकुट एनन जव पारत अलप ॥
उम्मेद नृपति अग्गल अटत मानहु नट भग्गल मलप ॥३२॥

---

१ फुरके २ पवन के जोर से बजते हैं और प्रसन्न होकर ३ आकाश में बढ कर चलते हैं ५ ऊपर कही हुई घोड़े की पांचों गतियों का नाम धारा है उन पांचों धाराओं में प्रेरणा किये हुए ४ फिरते हैं "उपरोक्त पांचों गतियों की संक्षेप व्याख्या यह है कि चतुराई युक्त सीधी गति (आदम और दुड़की) को धौरित कहते हैं और खोटे स्थलों में अगले शरीर को समेट कर मुख टेढा करके चलता है उसको वल्गित कहते हैं शरीर के अगले और पिछले दोनों अंगों को उछाल कर (चौकड़ी भर कर) दौड़ता है उसको प्लुत कहते हैं उत्तेरित जिसका दूसरा नाम आस्कंदित है, इसमें घोड़ा वेगांध होकर न तो कुछ सुनता है और न कुछ देखता है जिसको लौकिक में पट्टी या सरपट कहते हैं, उत्तेजित जिसका दूसरा नाम रेचित है जो मध्यवेग से गोलाकार फिरने को गोलकुंडा कहते हैं" वे घोड़े दौड कर नालों से ६ अग्निकण उडाते हैं और तुलना रहित ७ उडान फैलाते हैं ॥ ३१ ॥ ८ चांदी के पत्रों से ९ शोभायमान खुरों में सुंदर पक्के १० लोहे की नाल लगी हुई और ११ मंदिर के थंभ के समान जिनके चरण जो दृढता के कारण कभी १२ भूल कर (फिसल कर अथवा ठोकर खाकर) नहीं लगते जिनके १३ पुष्ट और गोल पुट्ठे १४ सुंदर चौड़ी छाती १५ धनुष के समान १६ टेढा (झुका हुआ) कंधा १९ समाधित (एकाग्रचित्त) होकर १७ वेग के साथ १८ शोभा बनाते हैं २० सेनाओं के मुकुट वे घोड़े मलंग लगाकर २१ हरिणों के वेग को न्यून करते हैं २२ आगे चलते हैं २३ जैसे आगळ में नट मलंग लगावे तैसे लगाते हैं ॥ ३२ ॥

नव *चेरिन नखराल घलत घुम्मर नचि घेरिन ॥
फट लगत जिन †फाल फिरत हत्थिय चक्कफेरिन ॥
‡तीय कनीनिय तरल सरल सच्चे §मुख सोहत ॥
मंजु पसम ¶मखतूल मुकुर ×बिग्रह छबि मोहत[1] ॥
रयँ[2] जोर लेंन संगर[3] रचक्कें[4] मचक पारि अहि भुम्मि भर ॥
चरनन नमाय मारत मचक्क लचक्क जानि हिंडोलें[5] लर ३३
चरखन तोप चढाय चित्र मंडिग तिन चारन[6]॥
सँनि[7] आनन सिंदूर पूर सज्जिय गढ पारन ॥
दिपत लंब भुजदंड जीह अंतक[8] जिम हल्लत ॥
इक्क निमेष अनेंह[9] अट्ठ८नव९फैर उगल्लत ॥
बिथुरात[10] ज्वाल लालिय बिखम अग्गि छत्तिन सालिय उपित[11]॥
आलियँ[12] अनेक नालियँ[13] अतुल कालिय जिम चालिय कुपित३४
कुंभीनसँ[14] आनत कितीक मकर रु मइंदँ[15] मुख ॥
करभ[16] सँरभ[17] कति कोलँ[18] बदन धारंत रोस रुख ॥
हंकत खिन हरवल्ल होत दुद्धर नर हल्ले ॥
अँचत वृखँ[19] गन अग्ग पिट्ठि मारत गज टल्ले ॥
अयँ[20]पिंड गिलत धटिकौ[21] उभय२बल्लि दगँ न पब्बय बचत॥

*नवीन लौंडियों के समान नखरे करनेवाले † मलग में ‡ स्त्रियों के नेत्रों की पुतली के समान चपल § मुख सच्चे और सीधे शोभायमान ¶ रेसम के समान सुंदर जिनके शरीर के केस और काच की छविवाले × शरीर से १ मोहित करते हैं २ वेग के पल में ३ युद्ध में ४ टक्कर लेते हैं और भूमि और शेष पर मचक (टक्कर) पाड़ते हैं ५ हींदे की लड़ ॥ ३३ ॥ ६ तोपों के चाकरों ने ७ तोपों के मुख को सिंदूर में भिजोकर ८ यमराज की जिव्हा जैसी ९ नेत्रों के पल लगने जितने समय में अग्नि की नहीं सहन योग्य ललाई १० फैलाती है ११ शोभन १३ तुलना रहित तोपों की १२ अनेक पंक्तियां ॥३४॥ १४ फण किये हुए सर्प के मुखवाली १५ सिंहमुखी १६ ऊँट के मुखवाली १७ केसरीसिंह के मुखवाली १८ सूवर के मुख को धारनेवाली १९ आगे से बैलों का समूह खैंचता है २० लोहे का गोला २१ दस सेर के (शास्त्र में पांच सेर

हंकिय दलेल उप्पर हलक रॅव[1] चटठ चक्कन रचत ॥३५॥
सब अनीक इम सज्जि अप्प हयराज अरोहिय[2] ॥
लिय कोटेसहिं लार सार अक्खिय रन सोहिय ॥
घुरि नोबति घनघाय कलह त्रंबक जय कारन ॥
बजि कजाक[3] वड बाक द्वार प्रतिहार[4] हजारन ॥
संक्रमि अनेक उद्धत सुभट तरिन[5] बैठि चंम्मलि[6] तरन ॥
बुधसिंह सुवन आदेस[7] बस लागिय मग्ग बुंदिय लरन॥३६॥
चम्मलि तट मिलि चक्र पंति छादित जल पोतन[8] ॥
क्रीड़ा वहुविध करत सूर छेकत जव स्रोतन[9] ॥
उडुपन[10] कति आरूढ तिरत कति भेल[11] तरंडन[12] ॥
कतिक झारि बंदूक रचत कुंभीरन[13] खंडन ॥
दल भीर नीर बढि बढि दुर दिस मरजादन[14] लोपत महत॥
सजि सेतु मनहुँ दसकंध सिर बंदर जल अंदर बहत ॥३७॥
अवधिराज[15] उम्मेद दीप[16] सोदर लछमन दुति ॥
कोटापति कपिराज[17] निडर सुग्रीव रचत थुति[18] ॥
सजि अंगद सिवसिंह बैरिसल्लोत देव सुव[19] ॥
पवन[20] पुत्त सुखसिंह महासिंहोत धीर ध्रुव ॥
लोक रु प्रयाग नल नील तिम मिलि हंकिय जय जंग मन ॥
बुंदिय विदेहतनया[21] अरथ हठि दलेल[22] रावन हनन ॥ ३८ ॥

का नाम धटी है) १ पहियों के शब्द रचती हुई ॥ ३५ ॥ २ आप (उम्मेदसिंह) घोडे पर चढा ३ युद्ध के पडे बचन ४ द्वारपालों की ५ नावों में २६ चामल नदी को २७ उम्मेदसिंह के हुकम के आधीन ॥ ३६ ॥ ८ नावों से ९ पानी के प्रवाह को १० कितने ही छोटी नावों पर चढ ११ भैले (नाव विशेष) १२ नाव विशेष १३ मगरों का १४ सीमा [हावों] को ॥ ३७ ॥ १५ उम्मेदसिंह है सोतो रामचन्द्र है १६ छोटा भाई दीपसिंह लक्ष्मण है १७कोटा का महाराव सुग्रीव निडर होकर १८ स्तुति करता है १९ वैरीसालोत देवसिंह का पुत्र अंगद के समान सजा २० हनुमान २१ बुन्दी रूपी सीता के अर्थ २२ हठवाले दलेलसिंह रूपी रावण को मारने के लिये ॥ ३८ ॥

तरि इम चम्मलि तोय कटक[2] आरुहि केकानन[3] ॥
हंकिय रन हुसियार वीर बेधत खग[4] बानन ॥
चौलुक कति चहुवान जोध कूरम कति जद्दव[6] ॥
कति सीसोद कबंध भटन मंडिय घन भद्दव ॥
कोतुक अनेक खुरलिय करत रन दुरूह पंडित रजिय ॥
बुधसिंह सुवन अतिजोर[11] बल सठ दलेल उप्पर सजिय ।३९।
चलत रेनु रवि ढंकि चक्क चक्किन बियोग बनि ॥
कुंभीनस[12] कसमसत भोग फट्टंत हंत[13] भनि ॥
दिग्गज गन डगमगत जगत संकर समाधि जिम ॥
उदधि नीर उच्छलत तुंग[14] गिरि हलत शृंग[15] तिम ॥
जिम फल अनार[16] कंन रद[17] जंगध इम भीरुन[18] जल उत्तरिग ॥
दिस दिस जिहान मंडिग दुमन प्रलयकाल संभ्रम परिग ४०
प्रत्यागम[19] रचि पवन फिरत लगि लगि दल फेटन ॥
झुंड गजन झंडाल[21] झुकत फहरात झपेटन ॥
बन जंतुव[22] हतबेग रहत थकि थकि जिहिँ अंतर ॥
चलिग[23] चक्क इम चंड दब्बि निज ओघ[24] दिगंतर ॥
भय सुनि अपार गन भुम्मियन जित तित बढि भज्जन जिकर ॥
पक्खर न मात गैलन[25] पहुमि नभ न मात सेलन निकर[26]४१

१ चामल नदी का जल उतर कर२सेना३घोड़ों पर चढ कर४बाणों से पक्षियों को वेधन करते हुए ५ कितने ही सोलंखी ६ यादव७राठोड़८शस्त्राभ्यास के खेल ९ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे युद्ध के पंडित १० शोभायमान हुए ११ बलवान् सेना ॥ ३९ ॥ १२ सर्प (शेष) १३ फण फटने से खेद के वचन [हाय] कह कर १४ ऊँचे पर्वतों के१५शिखर१६दाने का१७दांतों से कुचलने से पानी उतरता है ऐसे१८कायरों का जल (पराक्रम) उतरा ॥ ४० ॥१९उलटा गमन २०सेना की फेट से२१झंडे२२वन के जीवों का वेग हत होकर २३ इसप्रकार भयंकर सेना चली २४ अपने समूह से २५ भूमि के मार्गों में पाखरें नहीं समाती हैं और २६ आकाश में भालों के समूह नहीं माते हैं ॥ ४१ ॥

निज हठ कच्छप निठुर[1] हत्थ बासुकि[2] छवि छावत ॥
तिम मंदर[3] तंक्राट[4] भिदुर[5] करवाल[6] भ्रमावत ॥
दल कोटापति दितिज[7] अदिति संभव[8] दल अप्पन ॥
उद्यम गति अनुसार थोक सम्मलि फल थप्पन ॥
जागर[9] बिथारि गंद[10] अरि जनन कहि कहि गुन आगर[11] कथन
चहुवान इंद्र नागर[12] चढिय मनु बुंदिय सागर[13] मथन ॥ ४२ ॥
प्रलय पौंन परमान दिपत हंकिय दल[14] दुद्धर ॥
मिलिय आनि मग मध्य कतिक पर[15] भट निवेदि कर ॥
सक इक नभ बसु सोम१८०१मास आसाढ पक्ख सित[16] ॥
तिथि द्वादसि१२दल तुंग हलिय रन मत्त लरन हित ॥
छिति[17] अप्प लैन रस बीर छकि द्रुत मुकाम इक१बीच दिय
बड अंतरीप[18] जलजाल बिधि नृपबर बुंदिय बिंटि लिय।४३।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ कोटेश सहितहड्डेन्द्रावराडुम्मेदसिंहसज्जीभवनसेनासौभाग्यविजयाभिनि-

१अपना हठ है सोही कठोर कच्छप है२हाथ है सोही बासुकि सर्प की शोभा पाते हैं ९ वज्र रूपी६तरवार को भ्रमाता है सोही ३ मंदराचल रूपी ४ मंथनदंड (रई) है कोटा का पति है सोही ७ दैत्य है "कोटा का पति शत्रुशाल उम्मेदसिंह से छीनकर बुंदी को अपने वश में करलेवैगा इसकारण उसको दैत्य लिखा है" ८ उम्मेदसिंह की सेना है सोही अदिती के पुत्र (देवता) हैं चलने के अनुसार (बुंदी पर चलता है सोही) समुद्र के मथने का उद्यम है और सेना का शामिल होना ही मथन के स्थल का स्थापन करना है, शत्रुओं में ९ जागरण रूपी १० रोग फैलाकर ११ गुणों के समूह का (अपनी सेना के गुणों का) कथन कहकर चहुवाणों के इंद्र (उम्मेदसिंह) रूपी १२ परमेश्वर बुंदी रूपी १३ समुद्र के मथने को चढा ॥ २४ ॥ १४ कठिनाई से धर्षणा की जावे ऐसी सेना चली १९ शत्रु (दलेलसिंह) के उमराव खिराज देकर१६शुक्ल पच्च १७ अपनी भूमि लेने के अर्थ, जल के समूह में १८ बडे टापू के समान बुंदी को घेर ली ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति सहित हाडों के इन्द्र रावराजा उम्मेदसिंह का सज्जित होना १ विजय करने वाली

र्याणगजहयनालीयन्त्रसुभटादिवर्णनचर्मण्वतीलंघनमार्गैक[1]प्रपातकरणदिगन्तरातङ्कप्रसरणबुन्दीवेष्टननालीयन्त्ररणप्रारम्भणं नव मो ९ मयूखः ॥ ९ ॥ ॥ २९० ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

धकि पावक[1] धमचक्क[2] जाल तोपन जंजीरित ॥
जपि जपि क्रंदन[3] जाप पुर सु तपि तपि हुव पीरित[4] ॥
परत [5]बप्र प्राका[6]र गिरत [7]कपिसिर उडि गोलन ॥
दरत द्वार बाजार झार मारुत[8] झक झोलन ॥
बिखरत गवाक्ष[9] जालिय[10] बहुल झरत सौध[11] मंडप झपट ॥
मानहुँ बिनास[12] भावक मचिग लंकापुर पावक[13] लपट ॥ १ ॥
डिगि पव्वय[14] कटि कूट तपिग उन्नत[15] तारागढ[16] ॥
बढिग झाल बिकराल रचिग संगर रावन[17] रढ ॥
नैर[18] परिग हटनारि सकल पुरजन अति त्रासित ॥
जरत गेह वढि ज्वाल प्रबल बारूद प्रकासित ॥
छिज्जत निवान पानिय छिनकि हुव धूमित दस१०मित हरित[19]॥

सौभाग्यवती सेना का निकलना २ हाथी, घोड़े, तोपें, सुभट आदि का वर्णन ३ चामल नदी लांघकर बीच में एक मुकाम करना ४ दिगन्तों तक भय फैला कर बुन्दी को घेरना ५ तोपों के युद्ध का प्रारंभ होने का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ निव्वै २९० मयूख हुए ॥
जंजीरों से जड़ी हुई तोपों की जाल (समूह) से २ युद्ध में १ अग्नि जला ३ रोने के वचन कह कह ४ पीड़ा युक्त हुआ और गोलों से ५ धूलकोट ६ चूना से बना हुआ पक्का कोट ७ कांगरे उड उड कर गिरने लगे ८ पवन के झकोलों से ९ झरोखे १० बहुत जालियें ११ महल और घुमटे अग्नि की झपटें से गिरते हैं सो मानों १२ प्रलय का भाव मचकर लंका में १३ अग्नि की ज्वाला लगी ॥ १ ॥ १४ पर्वत के शिखर कटकर डिगे और १५ ऊंचा १६ तारागढ (बुंदी के गढ का नाम तारा गढ है) तप गया १७ रावण के समान हठ से १८ नगर में १९ दश ही दिशाएं धूम युक्त होगईं.

रुकि जीह दंत*संकट रहत इम बुंदिय दल†आवरित ॥२॥
कटि गोलन परि ‡कूट गिरत जित तित पुनि §गोपुर ॥
गृह ¶चत्वर शृंगाट[1] प्रचुर[2] प्रासाद[3] तप्यो पुर ॥
सिंहद्वार[4] संजवन[5] जरत कुट्टिम[6] घन ज्वालन[8] ॥
वीथी[9] बिपंखि बजार दहत अंगार दवालन[10] ॥
अपवरक[11] कोश[12] अवसधि[13] अटज[14] जगत चंद्रसालन[15] ज्वलन[16] ॥
होत्रीय[17] काय मानन[18] दहत छबि अलात[19] रुचि उच्छलन ॥३॥
आथरवन आताप मचत फुंलिंग[20] महानस[21] ॥
तपि कटाह जिम तेल मनुज कुकत दुख मानस[22] ॥
आवेसन[23] वेपनी[24] अनेक सिलगंत प्रतिश्रय[25] ॥
पाकपुटिन[26] झलपट्ट लगत जिम अग्गि महालय[27] ॥
गर्त्तिका[28] बहुल गोसालगृह[29] गंजा[30] पक्कवण[31] घोखगन[32] ॥
मंदुरा[33] चतुर[34] सिलगत अमित जगत द्वार बेदिन[35] ज्वलन ॥४॥

*जैसे दांतों के घेरे से जीभ रुकजाती है तैसे सेनासे बुंदी †घिरगई॥२॥‡दरवाजों के ऊपर के शिखर गिरकर §शहर के द्वार गिरते हैं¶घर का चौक १ चतुष्पथ (चोहटा) २ बहुत ३ महल और नगर तपगया ४ प्रथम प्रवेश करनेका द्वार (सिंहपोळ) ५ सम्मुख चार द्वारवाली चोपाड़ ६ छोटे घर ७ बहुत अग्नि से जलते हैं ८ गलियें ९ व्यापार की गलियें, बाजार १० दीवारें बहुत अंगारों से जलती हैं ११ बीच का घर १२ भंडार १३ औषधिशाला में १४ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाला अग्नि जलता है इसीप्रकार १५ सब से ऊपर के मकानों में भी १६ अग्नि जलता है १७ होमालय (अग्निशाला) के शरीर के १८ प्रमाण (सदृश) १९ शोभा के साथ अग्नि उछलता है ॥ ३ ॥ अथर्ववेद सम्बंधी (अथर्ववेद में मारण मोहन आदि संताप होता है तैसे) अथवा शान्तिगृह में २१ रसोई में २० अग्नि कण मचे अथवा रसोई में अग्नि कण उड़ते हैं जैसे शान्तिगृह में उडने लगे २२ दुःख के मन से कूकते हैं २३ शिल्पशाला (कारीगरों के घर) २४ नाइयों के घर २५ सभा का स्थान २६ कुंभशाला अर्थात् कुम्हार के आव(भट्टी)में झाळें उठैं ऐसी २७ बडे स्थानों में झाळें उठती हैं २८ तंतुशाळा (जुलाहों के घर) २९ गउवां रहने के घर ३० मदिरागृह (कलालों के घर) ३१ भीलों के घर ३२ अहीरों के घर ३३ हयशाला ३४ गजशाला (फीलखाना) ३५ द्वार

सूत अरिष्ट[1] यंत्र[2] गृह वेस मंडप अंगन बँट[3] ॥
लगि बासोकँ[4] अलाव[5] चवत ऍडूक[6] चटच्चट ॥
उत्तरंग[7] पुनि अरर[8] थंभ छत्रिन थहरावत ॥
परिघ[9] बिटंक[10] प्रघाणँ[11] लगत पावक[12] लहरावत ॥
नीसा[13] रु पटल[14] बलभिन[15] निकर[16] इन्द्रकोस[17] दंतक[18] अतुल ॥
प्रग्रीव[19] बहुरि जालक[20] प्रथित[21] प्रजरत इम गेहन बिपुल ॥५॥
कति सह अन्न कुसूल[22] निकर[23] सोपान[24] निसैनिन[25] ॥
जरत सालभंजीन[26] उडत बनि छार सु नैनिन[27] ॥
पेटी[28] पुनि संपुटक[29] कतिक बर सिल्प करंडक[30] ॥
कंडन[31] मुसल कलिंज[32] भंति बाहुल[33] चँप भंडक[34] ॥
इत्यादि[35] सकल गृह उपकरन[36] दगि अलाव पावक दहत ॥
पौर[37] जन त्रसित यह लखि दुर्ग[38] तहखानन कानन[39] चहत ॥

के बाहर के चबूतरे अग्नि में जलते हैं ॥ ५ ॥ १ सूतिकागृह (जापा का घर) २ तेल का घर, उत्तम मंडप और आंगने का ३ मार्ग ४ शयन के घर में ५ अग्नि लगकर ६ भींतें (दीवारें) चटचट करती हैं ७ द्वार के बाहर लगी हुई काष्ट की घाड़ियें ८कपाट जलते हैं और छतरियों के थंभे धुजते हैं९ कवाडों के रोकने का काष्ठ अर्गला (आगळ अथवा भागळ) १० घरों में पक्षियों के पालने के अर्थ काष्ट के बनाये हुए घरों में ११ बाहर के द्वार में १२ अग्नि लगकर लहराती है "अग्नि शब्द पुल्लिंग होने पर भी लोकरूढी से स्त्रीलिंग लिखा जावे तो अशुद्ध नहीं है" १३ बारसोत (चोकट) अथवा छाबणा १४ छज्जे (छाजे) १५ खपरेलों के आधार वक्र काष्टों (मियालों) १६ के समूह अथवा कूटागार (सब के ऊपर के मकानों के समूह) १७ मांचा १८ खूंटियें १९ झरोखे वा खिड़कियें २० जालियें, घरों में इसप्रकार बहुत २१ प्रसिद्ध जलती हैं ॥ ५ ॥ २२ अन्न के भरे हुए कोठे २४ सीढियें (जीने) २५ नीसरनियों के २३ समूह २६ काष्ट की बनी हुई पुतलियें जलकर २७ श्रेष्ठ नेत्रवाली स्त्रियों के नेत्रों में उड़ती हैं अथवा उन श्रेष्ठ नेत्रवाली पुतलियों की भस्म होकर उडती है २८पेटियें (संदूकें) २९ डिब्बे ३० कितने ही श्रेष्ठ कारीगरी के टोकरे (छबले) ३१ ऊँखली मूसल ३२ चटाइयें ३३ बहुत प्रकार के ३४ भांडों [मिट्टी के पात्रों] के समूह ३५ इनको आदि लेकर घर की सब ३६ सामग्री को अग्नि का समूह जलकर वह अग्नि जलाती है ३७ नगर के लोक डरकर ३८ घुसने के लिये तहखाने और ३९ वन

तरु देवल[1] पुर[2] ताल काल[3] कच[4]माल कदंबित[5]॥
जरत बिपंचिन[6] जाल[7] नागदंतन[8] अवलंबित[9] ॥
मंच[10] बहुरि प्रतिमंच[11] सुघट बिष्टर[12] सिंहासन ॥
बिखरत बीथिन[13] बीच परत आलय[14] चहुँ पासन ॥
त्रपु[15] नाग[16] द्रवत अतिसय[17] तपित पारद[18] उडत अकास पथ ॥
जुत तूल[19] राल गंधक जरत करत तोप कल कल अकथ[20]॥७॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन आताप अति, बुंदिय नगर बिहाल ॥
सठ दलेल अति भय सहित, कैलि[21] वह मन्न्यौं काल ॥ ८ ॥
तारागढ चढिगय त्वरित, अंतहपुर[22] जुत एह ॥
इम उमेद भूपति अतुल, मंड्यो गोलन मेह ॥ ९ ॥
साहिपुरप जुत सेनपति[23], इततैं वह द्विज आय ॥
जंग कठिन लखि तिहिं[24] जवन, लिय गुजरात पलाय[25] ॥१०॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

यारीति रावराज उम्मेदसिंह वैरिनके बिडारिबेकौं बुन्दी विं-

को चाहते हैं ॥ ६ ॥ वृक्ष १ देवालय [मंदिर] २ नगर और तलाव ३ कासमर्द [वृक्षविशेष] अथवा राज ४ केसों के समूह "यहां यदि कालक चमाल, एक पद किया जावै तो इसका अर्थ अश्लील होजाता है क्योंकि केसों के साथ काला शब्द लगाने से गुह्य स्थान के केसों का बोधक होजाता है जैसे राजा, रात्रि, निद्रा, पण्डित आदि शब्दों के साथ महा शब्द के लगाने से विरुद्ध अर्थ होजाता है सो ऐसा प्रयोग उत्तम कवि नहीं करते हैं" ५ उपरोक्त वस्तुओं का समूह और ८ खूँटियों पर ९ लटके हुए ६ वीणाओं के ७ समूह १० मांचे ११ बडे मांचे (डैला) १२ श्रेष्ट घड़े हुए बाजोट जलकर १३ गलियों में विखरते हैं १४ घरों के चारों ओर १७ बहुत तपने से १५ कथीर १६ सीसा [illegible]ता है और १८ पारा आकाश के मार्ग उडता है १९ रूई सहित राल, गंध[illegible]ता है और २० कहा नहीं जासके जैसा तोपें कोलाहल करतीं हैं [illegible] उस युद्ध को ॥ ८ ॥ २२ जनाना सहित ॥ ९ ॥ २३ सेनापति [illegible] २४ उस गुजरात के सूबेदार यवन ने २५ भागकर गुजरात

टिलीनी ॥

अरु ताकदार तोपनकौं लगाय महाप्रलयके माफिक मार दीनी ॥
अच्छे बारूदके उडान वज्रपातसे गोले गिरन लगे ॥
अरु तारागढके*प्राकारकंगुरेनके†कलाप‡किरन लगे ॥११॥
जिन तोपनके§कलाप कुलटानायिकाके समान सोभित भये ॥
अरु गोलंदाजनकौं जार जानि पूर्वानुराग[1]के प्रभाव समीप लये॥
जिनके अद्भुत अनंगकी[2] आगि ऐसी कि उदरमैं नमावैं यातैं आननकी[3] ओर उफनाय कढैं ॥
सो समीपके सबनकौं बचाय दूरके दुर्ग दाहिबेकौं बढैं ॥१२॥
जिनकौं आहार पचेतैं अपनैं स्वामीकौं आनंद नाँहि आवैं ॥
अरु वमन[4] कियेंतैं बिटै[5] बिदूसकन सहित नायक मोदपावैं ॥
जे खिन खिनमैं गर्भाधान धारिकैं प्रसूतिकाल[6]को बिलंब नाँहिं करैं ॥
परन्तु जिनके बालक कुपुत्र यातैं होतही जनक[7] जननीकौं[8] छोरि वैरिनके वृंद[9]मैं बसिबेकौं कूदिपरैं ॥ १३ ॥
जिनकौं बत्तीस बत्तीस३२ जार भोगैं तथापि अल्प साधन जानि रति जंगके विजयकी पताका उडावैं ॥
अरु तृप्तिके अभाव बडे बैलनके जोट जीति बैंडे हत्थीनके टल्ले खावैं ॥
आगि देबेवारोही[10] जनाइबेवारी दाई ताकौं जलदीसूँ जनाइबेमैं बधिरता[11]की बखसीस करैं ॥
ऐसी उनमत्त जानि कितनेक दरितै[12]दाईनके संदोहैं[13] जनायबेली ॥ १० ॥ * कोट † कांगरों के समूह ‡ गिरने लगे ॥ ११ ॥ § समूह बिखरने लगे १ पहिले की प्रीति २ कामदेव की अग्नि ३ मुख की तरफ ॥ १२ ॥ ४ उछांट (कै) ५ कामी पुरुष के सखा ६ बालक जनने के समय में ७ पिता ८ माता को ९ समूह में ॥ १३ ॥ १० अग्नि देने (बत्ती बताने) वाला ११ बहरेपन की १२ डरनेवाले १३ समूह ॥ १४ ॥

की हाँस न धरैं ॥ १४ ॥

जिनके *आनन †आरक्तसमानौं ‡वन्हिके वमनहीसौं यह रंग धरैं

अरु आलस ऐसे कि अपनी सज्जापर सूताही आहार बिहा-
रादिक कर्म करैं ॥

जे बलिष्ठ ऐसी कि जंगी कारतूस बिना §सद्गर्भा होय जावैं ॥

अरु जंगी कारतूसकरि जरायुथेली[1]सौं जुदही पुत्र उपावैं ॥१५॥

जिनकी तीखी नजरिके कटाक्ष लागैं गढ पर्वत आदि जंगम[2]
हू लोटी परैं ॥

अरु चंडवेग[3] चिरवेग[4] ऐसी कि संपयोगे[5] सूरिनतैं[6] कामकल-
हकौं जीति जीति गर्जना करैं ॥

ऐसी तोपनके फैर पर फैर जारी भये ॥

अरु पत्तनके प्राकार[7]कौं दुरवाजू छेकि छेकि गोले आडव्र्यद्रि[8]के
अंतर बिहार करन गये ॥ १६ ॥

तारागढके प्राकार कपिसिर[9] वप्रन[10] समेत थहराय तूटन लगे ॥

कैधौं आखंडल[11]के असिनि[12]सौं उत्तुंग अद्रिन[13]के कूट फूटनलगे ॥

या रीति तोपन बुन्दीके बैरखा[14]कौं बेधि घनैं घंटापथ[15]नके समा-
न पंथ कीनैं ॥

अरु रावराजा उम्मेदसिंह महाराव दुर्जनसाल हल्लेको हुकम दे
वारिवाह[16] बीजुरीसे खेटक[17] खग्ग[18] लीनैं ॥ १७ ॥

* मुख † लाल ‡ अग्नि के उगलने से § गर्भ पटकनेवाली १ उल्व (आवळ) रूपी थेली से ॥ १५ ॥ २ जड़ भी ३ भयंकर वेग ४ बहुत ठहरने वाली ५ रत करनेवाले ६ चतुरों से ७ नगर के कोट को ८ आडावला नामक पर्वत में ॥ १६ ॥ तोपों के इस रूपक में कुलटा नायिका के साथवाले शब्दों में श्लेष है परन्तु अश्लील होने के कारण हमने उनका अधिक विवरण छोड दिया है और यथार्थ में इनका अर्थ भी सीधा है ९ कंगुरे १० कोट सहित ११ इन्द्र के १२ वज्र से १३ ऊँचे पर्वतों के शिखर १४ कोटको १५ चौड़े मार्ग (राजमार्ग) १६ मेघ और बिजुली के समान १७ ढाल १८ तरवार ॥ १७ ॥

दक्खिनकी तरफसौँ सज्जीभूत सेना समेत दोऊ२ नरेस पत्तन मैँ पैठि चन्द्रहास चलाये ॥

अरु पच्छिमकी तरफसौँ साहिपुराके*अधिराज उम्मेदसिंह कोटा के†कटकेस गोविंदराम‡तोरनकौँ तोरि हमगीरहरोलनके झुंड हलाये

दोऊ२ तरफसौँ§बरूथिनी बढि भीतरके भटनपैँ महाकाल रूप ¶मंडलाग्रनकी मार दीनी ॥

तिनकौँ दबते देखि दलेलसिंह तारागढ सौँ एक हजार १००० सचे सूरबीर भेजि सहरके स्वकीय[1] सिपाहनकी भीरि[2] कीनी ।१८।

तिनमाँहिँसौँ कितेक बंदूकनके चलाक गृहस्थनके गेहनके ऊँचे अट्टनकौँ[3] अरोहि पैलेनको पहिचानि गोलीनतैं गजब करन लगे ॥

अरु सेस जे असेस धाराधरहीसौँ[4] धापिबेको संकल्प सचे करि पैलेनकी पृतनामैँ[5] पैठि अश्वमेध अध्वरके[6] फलके उपमान आपुनैँ अडोल अंघ्रिनँकौँ[7] अंगदकी रीति धरन लगे ॥

चिरकालसौँ[8] बिछुरे मित्रनके माफिक कितनेक अछूती अनीके लाडा छातीसौँ छाती भिराय मिलन लगे ॥

अरु परस्परके प्रहरनं[9] प्रपात असित अंबुदसे[10] अज्झैलनपैँ[11] झिलन लगे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

ससि अंबर बसु इक१८०१ समा[12], बिक्रम सक गत बेर ॥
बुंदिय पुर बाजार बिच, फरिग बाढ आसि फेर ॥ २० ॥

॥ मुक्तादाम ॥

अमावसि सावन मास अनेहँ[13], मच्यो इम बुंदिय खग्गन मेह ॥

* पति † सेनापति ‡ नगर के द्वार को § सेना ¶ तरवारों की १ अपने २ सहायता ॥ १८ ॥ ३ छतों पर चढकर ४ तरवार से ५ सेना में ६ यज्ञ के ७ पैरों को ८ बहुत समय से ९ शस्त्रों के प्रहार १० काले मेघ जैसे ११ ढालों पर झेलने लगे ॥ १९ ॥ १२ सम्वत् ॥ २० ॥ १३ समय

छई नभ[1] गिद्धनि चिल्हनि छत्ति, घुमंडत गृदन चंचुव[2] घत्ति ॥२१॥
लगी लुभि घुम्मन अच्छरि लैन, गुथ्यो रस[3] भाव बिभावन गैन[4] ॥
रच्यो इत तंडव[5] नारद शारि, झुक्यो ऋषि ह्वाँ महती[6] झनकारि २२
उडे सिर झेलत उँद्धहि[7] ईस, बहैं इत चंडियके भुज बीस ॥
पटक्कहिँ रत्त[8] खिलैँ चउसट्ठि६४[9], बबक्कहिँ बावन५२ गावन गंठि[10]॥२३॥
चुरैलिनि मंडत फाँलन[11] चाल, लगावत डाइनि घुम्मरताल ॥
बजैँ लगि खग्गन खग्गनैं[12] बाढ, गिरैँ भट भीरु भजैँ तजि गाढ।२४।
उमेद दिनेस रच्यो खग खेल, दुरयो सठ घुग्घुव दुंग[13] दलेल ॥
फबैं असि खुप्परि टोपन फारि, बहैं जनु सब्बुव तंति बिदारि ॥२५॥
फिरैँ कटि हड्डन खंड करक्कि, झरैँ उडि धारन बूर झरक्कि ॥
कटैँ सह सत्थिन[14] जानुव जंघ, सु ज्योँ गज सुंडिन खंडन संघ[15]।२६।
फदक्कहिँ कद्दहिँ कालिक[16] फिप्फ, भचक्कहिँ टोप कपालन भिप्फ[17] ॥
उडे सिर फुट्टत भेजन ओघ, मनोँ नवनीत[18] मटक्किय मोघ ॥ २७ ॥
मचक्कहिँ रीढक[19] बंक अमाप, चटक्कहिँ ज्योँ मिथिलापुर[20] चाप ॥
धसैँ कढि लोचन सौँनित धार, चढैँ सिसु मच्छ बिलोम कि वाँर[21]२८
कटैँ गल स्वास बजैँ बिकरार, धमैँ धमनी[22] जनु लग्गि लुहार ॥

१छत्री२चांचवाल कर॥२१॥३शृंगार रस के भाव अनुभाव गुथे (रस के अनुकूल मन का विकार होवै उसको भाव और भाव के जनानेवाले को अनुभाव कहते हैं, यहां अमरकोशकारने (विकारो मानसो भावो) लिखा है जिसका रसतरंगिणीकार खंडन करता है) विभाव उद्दीपन को कहते हैं ४ आकाश में ५ नृत्य ६ नारद की वीणा का नाम है ॥ २२ ॥ उडे हुए मस्तकों को शिव ७ ऊपर ही झेलते हैं ८ रक्त पीकर ९ चौसठि योगनियें प्रफुल्लित होती हैं १० एकत्र होकर (गांठ बंधकर ॥ २३ ॥११मलंगों से (फांदने, कूदने से)१२तरवारों का तरवारों पर लगकर घाव बजता है॥२४॥१३गढ में छिपगया॥२५॥१४जाडी जंघा को सक्थि (साथल) और पतली को जंघा कहते हैं सो साथल, घुटना और जंघा कटती हैं१५समूह॥ २६ ॥१६कलेजे और फैंफरे१७कपालों को भेदन करके १८मक्खन की मटकी फूटी ॥ २७ ॥ १९ पीठ का हाड २० जनक राजा की पुरी (तिरहुत देश) के धनुष २१ छोटी मच्छी पानी में उलटी चढै जैसे ॥ २८ ॥
२२ धमनी (धमण)

कढैं हिय छत्तिय फट्टि किवार, सु ज्यों [1]ह्रद लोहित कंज[2] सुढार[3] २९
परैं कढि अंत अपुव्व[4] प्रकारि, फनी[5] गन जानि टिपारन फारि ॥
परैं छुटि संधित[6] प्रान अपान, मनों पँय पानिय लोन[7] मिलान ॥३०॥
वनैं फटि डाच कढे रद बड्ड, किधों घृत डब्बिय[8] रंक कवड्ड[9] ॥
गिटैं रसना कढि झग्गन[10] ग्रांम,चटैं नचि नागिनि ज्यों पय आम[11]३१
लगैं दृग मुच्छ फरक्कत लीन, मनों उरझी[12] बंनसी मुख मीन ॥
छलैं छत[13] रत्त छछक्कन छुट्टि, फबैं जनु गग्गरि जावक[14] फुट्टि ॥ ३२ ॥
झुकैं असि मत्त दुहत्थन झारि, मनों रजकालि[15] सिला पट मारि ॥
छुटैं फटि पेटिय लोटिय[16] लंब, तनैं पट जानि कुविंद[17] कदंब ॥ ३३ ॥
मचैं रव टोप उडैं फटि मत्थ, अलाबुव[18] जानि अतीतन हत्थ ॥
कढैं दृग लग्गि कनीनिय[19] काल, मनों कुंब लोहित[20] भौंरन माल३४
चलैं फटि ढाल बकत्तर चीर, सु ज्यों तरु ताडन पत्त समीर[21] ॥
धसैं हिय गोलिय गावत गित्त, मनों पटवा बटवा बिच वित्त ।३५।
रटैं फटि कोचैं[22] करी रननंकि, झरैं घंन[23] बादन ज्यों झननंकि ॥
घटैं दम मत्त वकैं छकि घाय, मनों मद पामर जीह जडाय ॥ ३६ ॥
कढैं वपु[24] छक्कि वरच्छिन व्रात[25], तृणध्वज[26] अग्ग कि गज्ज[27] प्रपात ॥
लगैं निकसैं छकि पट्टिस[28] लाल, मनों परतीयनके[29] कर जाल ।३७।

१जलाशय (दह) में२लाल कमल३श्रेष्ठ रीति से॥२९॥४अपूर्व रीति से५सर्पों का समूह६मिले हुए श्वास और निःश्वास की संधि छूटती है७लवण(नमक) मिलाने से दूध और पानी फटजावैं जैसे॥३०॥८मुख फटकर बडे दन्त दीखते हैं सो मानों दरिद्री ने डिब्बे में९कोडियें रक्खी हैं१०झागों के समूह को जिभ निगलती है सो मानों सर्पिणी११कच्चा दूध पीती है॥३१॥१२मच्छी पकड़ने का कांटा मच्छी के मुख में उलझा१३घावों से रुधिर१४जावक का घड़ा॥ ३२ ॥ १५ धोबियों की पंक्ति१६लंबी पड़ी हुई१७जुलाहों के समूह वस्त्र फैलाने हैं॥ ३३ ॥ मानों जोगियों के हाथ से१८तूंबे गिरते हैं१९नेत्रों की काली पुतली २० लाल कमल में ॥ ३४ ॥ २१ पवन से ताड़ वृक्ष के पत्ते फटैं जैसे ॥ ३५॥ २२ कवच की कड़ी २३ कांसी आदि धातु का वाद्य ॥ ३६ ॥ २४ शरीर को २५ समूह२६घाँस वृक्ष का अग्र मेघ की २७ गर्जना से भूमि से निकलै जैसे २८ कटारी २९ परकीया नायिकाओं के हाथ जालियों से कढैं जैसे (परकीया नायिका अपना

सुट्टैं फटि हड्ड चटच्चट संधि, चटक्कत प्रात गुलाब कि गंधि ॥
उठैं बिनु मत्थ किते तनु *तुंग, थेइ त्थेइ नच्चत थुंगत थुंग ॥ ३८ ॥
बबक्कत †डाच कितेकन बैन, मनौं बड ‡बक्कर टक्कर मैन ॥
गिरैं बररक्कत पंसुलि गात, मनौं कठछप्पर पत्थर पात ॥ ३९ ॥
छुटैं §पल जानु कढैं ¶नल हड्ड, मनौं रद ÷बारन वंगर बड्ड ॥
लटक्कत पाय रकाबन रुक्कि, मनौं तप सिद्ध अधोमुख झुक्कि॥४०॥
मलंगत छत्तिनके क्रम मप्पि, मनौं नट पट्टरि पाय मलप्पि ॥
छुटैं घन घायक[1] सायक सोक, उडैं सरघा[2] गन ज्यौं तजि ओक[3]।४१।
छके कति वृत्तँ[4] फिरे सुधि छोरि, बनैं जनु बालक भंभिह[5] भोरि ॥
गिरैं सर बिद्ध घनैं सिर तत्त, मनौं सरघानं[6] तजे मँधुछत्त[7] ॥ ४२ ॥
सरैं घन संगिन[8] भिन्न सरीर, कुमारिनके[9] जनु उज्ज[10] करीर ॥
बकैं बहु प्रेत मिलं गल वत्थ, किधौं रन मल्ल अपूरव कत्थ ॥ ४३ ॥
जगावत हाक रचावत जंग, लगावत भैरव नट्ट मलंग ॥
घसैं चढि डाकिनि के मृत[11] छत्ति, मनौं कि बिदूँसक[12] कौं तिय मत्ति४४
अटैं पय इक्क१ किते छक ओप, किते इक१ नैंन लखैं भरि कोप
करैं कटि जीह किते अँच्च कूक[13], मनौं कि परँगिर[14] प्रेरित मूक।४५।

महँदी का हाथ दिखा कर लाल रंग के संकेत से जार को अपना रजस्वला होना जनाकर उसके आने का निषेध करती है। ॥ ३७ ॥ * ऊँचे ॥ ३८ ॥ † कितनों के मुख से अवाच्य शब्द निकलते हैं सो ‡ बडे कामी बकरे की टक्कर में, अथवा बडे बकरे की टक्कर में भी नहीं होवैं ऐसे बकाई खाने के वचन कहते हैं ॥ ३९ ॥ § मांस छूटकर घुटने सहित ¶ नली की हड्डियें निकलती हैं सो मानों ÷ हाथी के बडे दन्त वंगड़ों सहित हैं ॥ ४० ॥ १ घाव करने वाले बाण २ मधुमक्खी ३ घर छोडकर ॥ ४१ ॥ ४ चक्राकार (गोल) ५ भांभाभोली, भमल (चक्कर) खाने का बालकों का खेल विशेष ६ मधुमक्खियों के छोडे हुए ७ मुवाल के छाते हैं ॥ ४२ ॥ ८ बरछियों से बहुत छिदे हुए शरीर चलते हैं सो मानों ९ कार्तिक मास में लड़कियों के बहुत छिद्र वाले १० घड़े हैं॥४३॥ ११ मरे हुओं की छातियों को डाकिनियें घिसती हैं १२ कामी पुरुष को मस्त स्त्री ॥४४॥ १३ बकाई खाकर स्पष्ट नहीं बोले जानेवाले अवाच्य शब्द का अनुकरण है १४ दूसरे का वाणी से प्रेरणा किया हुआ गूँगा मनुष्य ॥४५॥

फिरैं[1] इक१ ओठ किते इक१ कान, घनैं मुख अद्ध रचैं[2] घमसान ॥
किते इक१ हत्थ किते गत केस, बनैं [3]बहुरूप मनौं [4]नव बेस ॥ ४६॥
मिलैं [5]रसना कढि नक्कुटैं[6] मूल, फबैं भुजगी कि लगी तिलफूल॥
किते कर टेकि उठैं रन रत्त[8], मनौं मदछाकन पामर मत्त ॥ ४७
रहैं कति गिद्धनकौं गल[9] लाय, कहैं कति हू[10] रव ऐंचत हाय ॥
चकैं कति मात पिता तिय बैन, गिरैं कति मोहित[11] उच्छलि गैन[12]४८
[13]श्रव घन सावनको इत तुट्ठि[14], [15]बरूथ घटा इत आयुध बुट्ठि ॥
वहैं पुर बुंदिय सोन[16] बजार, धपी[17] जनु जोहि सरस्वति धार॥४९॥
गिरैं जल बद्दल गंग सु गाथ, पुर स्त्रिय अंसुव [18]जामुन पाथ[19] ॥
वही इम बेनिय[20] पत्तन बीच, मिलैं बहु मुक्ति जहाँ लहि मीच[21]।५०।
बन्यों रन बुंदिय सावन अद्ध, दु[22]रघाँ असि ज्वाल भयो पुर दद्ध[23] ॥
चुहट्टन लग्गिय लुत्थन लुत्थि, बिथारिग हट्टन वट्टन बुत्थि ॥५१॥
समाकुल[24] रुंड परे खिलि खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड[25] ॥
डडक्कत डौंहल[26] के डमरूक, घुगावत घाय घने जनु घूक[27] ॥ ५२ ॥
रटैं सिर मार अटैं कति रुंड, मिटे कति जोर फटैं कति मुंड॥

१फिरते हैं २कई आधे मुखवाले युद्ध करते है ३भाँड ४नवीन स्वांग करै जैसे ॥४६॥ ५जीभ कटकर ६नासिका के मूल से मिलती है सो मानों ७तिल के फूल से लगी हुई सर्पिणी शोभा देती है ८युद्ध में प्रीति करनेवाले ॥४७॥ ९गले से लगा कर १० शब्द ११ मूर्छित होकर १२ आकाश में उछल कर गिरते हैं ॥ ४८ ॥ १३ इधर श्रावण मास का मेघ १४ प्रसन्न होकर वर्षा करता है १५ सेना रूपी घटा इधर शस्त्र बरसाती है १६रुधिर बहता है सो १७ वही मानों सरस्वती की लाल धारा बही ॥ ४९ ॥ बादलों से जल गिरता है सोही श्रेष्ठ यशवाली गंगा है पुर की स्त्रियों के कज्जल युक्त नेत्रों से आंसू बहते हैं सोही श्याम वर्णवाली १८यमुना नदी का १९जल है २०इसप्रकार नगर में त्रिवेणी बही २१ मृत्यु लेकर जिस त्रिवेणी में मुक्ति मिलती है ॥ ५० ॥ २२ दोनों ओर की तरवार की ज्वाला से पुर २३दग्ध होगया ॥ ५१ ॥ मस्तक रहित शरीरों के टुकड़े होकर २४अवकाश रहित (भरे) पड़े सो मानों २५ टांडा (बालध) पड़ा है २६ भैरव और देवी आदि के वाद्य बजते हैं २७ घुघुओं (उलूकों) के समान कितने ही

बरैं सिर मंगि भरैं हर बैल, छकैं कति छोह हकैं रन छैल[२] ॥५३॥
लगैं कति कंठ लरत्थर[३] पाय, जगैं कति प्रेत ठगैं भट जाय ॥
लखैं कति हूर चखैं मिलि लाह, नखैं[४] नभ फूल रखैं गिनि नाह[५]५४
[६]किरैं कहुँ कोच खिरैं लगि खग्ग, फिरैं कति मत्त भिरैं जनु फग्ग
चिरैं सिर बाढ गिरैं अति चोट, घिरैं नद सोन तिरैं कहुँ घोट५५
जरैं उडि अग्गि झरैं असि जोर, ढरैं भट केक टरैं जिम ढोर ॥
[१०]दरैं कति कुप्पि धरैं धक दाव, भरैं कति [११]भूरि करैं मृत भाव ५६
मरैं थकि स्वास परैं कहुँ मूढ[१२], अरैं कहुँ हूर वरैं नवऊढ[१३] ॥
[१४]ररैं हरि केक लरैं धकि रोस, हरैं जिय केक [१५]सरैं तजि होस५७
फटैं [१६]धर प्रेत [१७]बटैं सिर फाँक, [१८]लटैं[१९] मन केक कटैं उर लाँक[२०] ॥
खुलैं कहुँ नैंन डुलैं कहुँ खग्ग, झुलैं कहुँ [२०]उंढ फुलैं मुख झग्ग ५८
छुलक्कत घायन रत्त छछक्क, उरज्झत केस बनैं अकबक्क ॥
त्रहक्कत तंतिन सिंधुव तार, दहक्कत भूतल देत दरार ॥ ५६ ॥
झनंकत पक्खर बेधित बंट, घमंकत घुग्घर घंटन घंट ॥
बढी [२१]कुणपावलि उग्र बखान, मनौं बड [२२]पत्तन [२३]दिग्घ मसान॥६०॥

वाव बोलते हैं ॥ ५२ ॥ कितनेही मस्तकों को शिव १ अपनाकर (वरणीकरके) मांगकर वैल भरते हैं २ रणरसिक क्रोध में छककर आगे बढते हैं ॥ ५३ ॥ उनमें कितने ही ३ लुढ़कते हुए चरणों मे शत्रुओं के कंठ से लगते हैं, कितने ही प्रेत उठते हैं और वीरों को ठगते हैं ४ आकाश से पुष्प डालकर ५ उनको अपना पति मानकर रखती हैं ॥ ५४ ॥ तरवारें लगकर कहीं पर कवच ६ गिरते हैं ७ रुधिर की नदी में घिरे हुए कहीं पर ८ घोड़े तिरते हैं ॥ ५५ ॥ बल पूर्वक तरवारों के पड़ने से अग्नि उडकर जलती है जिससे कितने ही वीर गिरते हैं और कितने ही ९ पशु (गउ) के समान टलते हैं, कितने ही क्रोध करके धक के साथ दाव देकर १० विदारण करते (काटते) हैं "दृविदारणे" इस धातु से यह शब्द बना है. ११ बहुत ॥ ५६ ॥ १२ मूर्छित होकर कितनी ही अप्सराए हठ करके १३ नवीन वर करती हैं १४ कितने ही वीर विष्णु भगवान् को रटते हैं १५ चेत को छोडकर चलते हैं॥५७॥१६ धड़ १७ बांटते हैं १८ मन मुड़कर १९ लंक (कमर) २० ऊपर झूलते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २१ मुरदों की पंक्ति २२ बड़े नगर के २३ बड़े श्मशान ॥ ६० ॥

गवाच्छन[1] जालिनके पट डारि, रही रन बुंदिय नारि निहारि ॥
वढी घन मार मची हथवाह, रुक्यो रवि जंपत[2] वाह सिराह ॥६१॥
अर्यो नृप छोनिय[3] लैन उमेद, खिंज्यो[4] इम देत दलेलहिं खेद ॥
बढे गढ सम्मुह छेकि बजार, मिली तह सत्रु हजारन मार ॥६२॥
चले सर चंड[5] चटक्कत चाप[6], मचावत पंखन सोक अमाप ॥
वहैं बरछी असि तोमर तोम[7], बनैं नर कातर लोमविलोम ॥ ६३ ॥
उरज्झत अंत्र[8] कटारन तोरि[9], गही जनु नागिनि[10] अंकुस डारि ॥
लगैं खैर[11] खंजर पंजर लीन, मनौं प्रतिलोम[12] धसैं जल मीन ॥६४॥
चलैं फटि पात गदा सिर चीर, मनौं तरबूज हनैं कर कीर ॥
चलैं तजि स्यॉन छुरी पल[13] चाह, मनौं पिचकारिन वारि प्रवाह ६५
झरप्फर चिल्हनि गिद्धनि झुंड, सरोरत चंचुन अैंचत मुंड ॥
किलोलत स्यार सिवा[14] गन कंक[15], नचैं बहु डाकिनि प्रेत निसंक।६६।
घनैं हननंकत घोटक[16] घुम्मि, भिरैं कति भिन्न गिरैं छकि भुम्मि
कुसा[17] गल छुट्टत तुट्टत तंग, भभक्कत मारुत प्रोथन[18] भंग ॥ ६७ ॥
परैं प्रजैरं जर जीन पलान, किते कबिका[19] बिनु लेत उडान ॥
वहे पुर तद्दिन[20] रत्त[21] रु बार, धपी वढि बीथिन[22] बीथिन धार॥ ६८ ॥
मनौं यह दुग्ग छुधातुर[23] पाय, दये बलि मानव[24] संभर राय ॥
समाकुल[25] लुत्थिन बुत्थिन बट्ट[26], चढैं पल[27] चिक्कन हट्ट चुहट्ट ॥६९॥
सह्यो घन चोरनको दुख जीय, लगैं अब बुंदिय भूपति हीय ॥

१ झरोखों की जालियों पर वस्त्र डालकर २ प्रशंसा का वचन कहता हुआ ॥६१॥ ३ भूमि लेने को ४ क्रोध करके ॥६२॥ ५ भयंकर बाण ६ धनुष खैंच कर ७ भालों का समूह ॥ ६३ ॥ ८ आँतों में ९ कटारी की ताड़ियें १० मानों सर्पिणी को अंकुश डालकर पकड़ी है ११ तीक्ष्ण खंजर शरीर में लीन होता है सो मानों १२ उलटा ॥ ६४ ॥ १३ मांस की चाह से ॥ ६५ ॥ १४ गीदड़ियां १५ ढीच (पक्षी विशेष) ॥ ६६ ॥ १६ घोड़े १७ बाग १८ फुरनों को चीरता हुआ ॥ ६७ ॥ १९ लगाम विना २० उस दिन २१ रुधिर और जल २२ गली गली में ॥ ६८ ॥ २३ गढ को भूख से पीड़ित २४ मनुष्यों का बलिदान २५ भर गये २६ मार्ग २७ मांस और चरबी ॥ ६९ ॥

घनैं दिन भुग्गि बियोगज[1] भार, कियो जनु सोनित[2] रंग सिंगार ७०
दलेल लखी तपकी तरवारि, धुज्यो छत[3] दुग्ग पलायन धारि ॥
सुन्यौं यह जैपुर जामिप[4] भार, किया निज मंत्रिय[5] भ्रात तयार ७१

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पूर्व-नालीयन्त्रयुद्धकरणातदनुगोपुराऽऽररविदारणाबुन्दीप्रवेशनतुमुलर-णारचनदलेलसिंहताराऽदुर्गाऽऽरोहणातद्‌दुदन्तजैपुरश्रवणं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥ ॥ २६१ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप ईस्वरं[6] जबहि, सुनि यह बुंदिय सोर ॥
सजि दल दुव्वर मुक्कल्यो, दैन सहाय सजोर ॥ १ ॥
राजामलको इक अनुज, भ्रात नाम सिवदास ॥
सेनापति खर्त्री सु करि, पठयो समर प्रयासँ[7] ॥ २ ॥
राजामल निज अनुज सन, किय तब मंत्र इकत्त ॥
कहिय अग्ग जयसिंह नृप, मोसन[8] भयउ बिरत्त[9] ॥ ३ ॥
यह लखि मंद दलेल इहिं, मन्नैं हमहिं निकम्म ॥
अब्द[10] लार देतो अयुत१००००, दिन्नैं ते नहिं दम्म[11] ॥ ४ ॥
तीन३ बरस पाई तबहि, अप्पन बिपति अछेह ॥

१वियोग से उत्पन्न हुआ भार२लाल रंग का ॥७०॥३ गढ के होते हुए भागना विचार कर धूजा ४ बहिनोई पर ५ अपने मंत्रि राजामल के भाई को ॥ ७१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, प्रथम तोपों से युद्ध करने पीछे शहर के द्वार के कवाड़ तोड़ना १ बुंदी में घुसकर भयंकर युद्ध करना २ दलेलसिंह का तारागढ पर चढना ३ जयपुर में इस वृत्तान्त के सुनने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ इक्कानवे २९१ मयूख हुए ॥

६ ईश्वरीसिंह ने ॥ १ ॥ ७ युद्ध के परिश्रम ॥ २ ॥ ८ मुझ से ९ प्रतिकूल (नाराज)॥ ३ ॥ १० प्रतिवर्ष (सालियाना) ११ रुपये ॥ ४ ॥

संगेहु[1] दम्म न मिले, अपटु नट्यो सठ एह ॥ ५ ॥
यातैं अबहि दलेल कौं, दैन सहाय न अच्छ ॥
पहिलैं तुम बरवाड़ पुर, प्रबिसहु मारि बिपच्छ[2] ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि खत्रिय सिवदास, अग्रज हिंतु निदेस यह ॥
आनि प्रथम जय आस, लरन लैन बरवाड़ लगि ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं पुर बरवाड़ बीर इक भयउ महाबल ॥
रामसिंह रट्ठोर जाहि अक्खत जग रुट्टल[3] ॥
ताके कुल सिवसिंह भयो रन दान धुरंधर ॥
इहुन मुहुकमहैरन[4] सजिय तासनैं[5] बहु संगर[6] ॥
इन हनि अनेक रट्ठोर भट ग्राम च्यारि४ तस दब्बि लिय॥
यह लखि कबंध सिंवसिंह इहिं कलहँ घोर प्रारंभ किय।८

॥ दोहा ॥

जो मुहुकमसिंहोतको, ग्राम परैं हग तास ॥
ताहि प्रँजारत[7] लुट्टितो, बहुनन बिरचि बिनास ॥ ९ ॥

---

१ मूर्ख ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं को ॥ ६ ॥ ३ रोटला कहते हैं (इस रामसिंह के नियम था कि भोजन के समय नगारा बजवाना उसका शब्द सुनकर जितने दीन इकट्ठे होने तिनको भोजन कराये ❋ पीछे आप भोजन करता इसी कारण से उसका नाम रामसिंह रोटला प्रसिद्ध होगया था और यह उदयपुर के महाराणा बडे जगत्सिंह के समय मेवाड़ का सेनापति था)॥७॥ मोखमसिंह के ४ वंशवालों ने ५ उस शिवसिंह से ६ युद्ध ॥ ८ ॥ ७ जलाकर ॥ ९ ॥

❋रामसिंह के इस कार्य की प्रशंसा का एक दोहा राजपूताना में प्रसिद्ध है वह नीचे लिखा जाता है

रामैं भूंजाई रची, मारूधर मेवाड़ ॥
रोट झटक्के तेणरज, पहो धूंधळा पहाड़ ॥ १ ॥

इसमें कवि उत्प्रेक्षा करता है कि राठोड़ रामसिंह ने मेवाड़ की भूमि में रसोई (रसोवड़ा) की रचना की जिसमें रोटियों के झटकने से जो रजी उडी उसीसे मानों प्रभात के समय पर्वत धूंधले दीखते हैं ॥

हड्डन तब मुहुकमहरन, अति साहस इहिं जानि ॥
बेटी अर्प्पंहिं बैरमैं, मंत्र सबन यह मानि ॥ १० ॥
जाई जुग्गियरामकी, जड़ सालमकी जानि ॥
सिवसिंहहिं व्याही सबन, दोऊ२ दिस हित धानि ॥ ११ ॥
नृप कूम्म जयसिंह पुनि, अतुल कपट रचि आइ ॥
दियउ कहि सिवसिंह यह, लियउ छिन्नि बरवाड़ ॥ १२ ॥
जयसिंहहिं अब जानि मृत, इहिं सिवसिंह कबंध ॥
लिन्नौं पुर बरवाड़ लरि, बसि करि कुम्म प्रबंध ॥ १३ ॥
राजामल यातैं अनुर्ज, रोक्यो बुंदिय जात ॥
पठयो इत सिवसिंह पर, बुल्ल्यो तँहँ यह बात ॥ १४ ॥
तुम सिवदास तयार हुव, बुंदिय दैन सहाय ॥
मगहि मध्य बरवाड़ पुर, जावहु ताहि छुराय ॥ १५ ॥
इहिं कारन सिवदास अब, सजि दल प्रबल सिपाह ॥
गो पहिलैं बरवाड़ गढ, दिन्नौं तोपन दाह ॥ १६ ॥
इत बुंदिय संगर अतुल, सज्ज्यो संभरवार ॥
नगर जित्ति लिन्ने निकट, प्रासादन प्राकार ॥ १७ ॥
दक्खिन दिस महलन निकट, भैरव नामक द्वार ॥
तासौं कछु पच्छिम तरफ, कोटा दल रखवार ॥ १८ ॥
द्विज नागर गोबिंद वह, लरत हुतो हठ लग्गि ॥
कनपट्टिय गोलिय लगिय, परयो स्वामि हित पग्गि ॥१९॥
मरत बिप्र खिजि नृप उभय, लंब निसैनिन लाय ॥
घटिय इक्क१ जावत रजनि, लिन्नैं महल छुराय ॥ २० ॥
अब इक्क तारागढ बच्यो, जँहँ दलेल भय जानि ॥

१ छठी २ देवैं ॥ १० ॥ ३ बहिन ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ४ छोटे भाई को ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ५ युद्ध ६ चहुवाण उम्मेदसिंह ७ महलों का कोट ॥ १७ ॥ १८ ॥ ८ सेनापति ॥ १९ ॥ २० ॥

तिहिं सिर पुनि हल्ला त्वरित, पृथुल रच्यो असि पानि ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

लैलै खेटक खग्ग कटक पव्वय पर हंकिय ॥
नृप उमेद रहि मध्य समुख हनुमत जिम डंकिय ॥
अधिरोहिनि दिय जाय भये कंगुर कंगुर भट ॥
सु लखि दलेल श्रृगाल भज्यो नारिन जुत लंपट ॥
नैनवा मग्ग आतुर लगिय खुल्लि द्वार पच्छिम अरर ॥
अंधार मास सावन अँमा झुकि पुनि लग्गिय मेघझर २२
जिन नारिन सतखंनन अक्कं पिंक्खन अकुलावत ॥
जिन नारिन जैव जोर पवन परसन नहिं पावत ॥
इक्क महल सन अन्य जात जिनकौं श्रम लग्गहिं ॥
कुचन ओट लचकात भार मानहुँ कटि भग्गहिं ॥
जिन पय प्रसून पंखुरि गडत रस बिलास मृदुपन रजिग ॥
ते तिय दलेल नायक सहित झारन बिच फट्टत भजिग ॥२३॥

॥ दोहा ॥

मेझ सरितँ दुबलानपुर, जिम तिम लंघि दलेल ॥
प्रात होत लहि नैनवा, मन्न्यौं वपु जिय मेल ॥ २४ ॥
पतंनी इक्क दलेलकी, दासी जन दस १० मान ॥
वन बिच भज्जत थकि रहिय, गय दूजेरदिन थान ॥ २५ ॥
दुज्जनसल्ल उमेद इत, बुंदिय अमल बिथारि ॥
झंडे अप्पन गड्डि दिय, विजय पताका धारि ॥ २६ ॥
कोटापति अब लोभ करि, अनुचित जो किय अंत्थ ॥

१यहां ॥ २१ ॥ २ढालें ३तरवारें ४कूदा ४ नीसेनियें ५गीदड़ ६ कपाट ७ अमावास्या का अंधेरा ॥ २२ ॥ ८ सातखंड के महलों में ९ सूर्य भी १० देखने को ११पवन भी बेग से पल में स्पर्श नहीं करने पाता १२ कमर १३ फूलकी पांखड़ी १४ १४ कोमल पन १५ दलेलसिंह पति सहित १६ झाड़ों के कांटों में ॥ २३ ॥ १७ नदी ॥ २४ ॥ १८ स्त्री १९ प्रमाण ॥ २५ ॥ २० ध्वजा ॥ २६ ॥ २१ यहां

सो पिक्खहु नृप*राम सब, अधरम अनैय अनत्थ ॥ २७ ॥
पहिलैं इहिं कोटापुरहिं, भूपतिसौं छल भिन्न ॥
मुल्ल दम्म दुवलक्ख२००००० के, कटैक किलंगिय लिन्न।२८।
तैसीही अब तक्किकैँ, अंगमि बुंदिय अैंन ॥
नृप उमेद प्रति यह कहिय, तुमतैं राज दबैं न ॥ २९ ॥
पुर लोहितको परगनाँ, इमकहि भूपैंहिं अप्पि ॥
अवर देस लिन्नौं अखिल, थानाँ अप्पन थप्पि ॥ ३० ॥
केसव पुर पट्टनि परम, बहुरि बरुंधनि नाम ॥
ए दुव२ पुर ब्रजनाथ हित, करिय भेट छल काम ॥ ३१ ॥
बुंद्ध नृपति किय पुराय ते, ग्रामादिक दिय नाँहिं ॥
इम बिसासघातक भयउ, कोटापति छल माँहिं ॥ ३२ ॥
लरन अंत लुट्टिय सहर, इक्क१ पहर धनवंत ॥
साहिपुरप उम्मेद लिय, दुवरं गज द्रव्य अनंत ॥ ३३ ॥
देवैं सुवन सिवसिंह वह, बैरिसल्ल कुल जात ॥
लरि जिहिं पंच५ दलेलके, गज लुट्टे बडगात ॥ ३४ ॥
कोटापति सिवसिंहसौं, छिन्ने ते गज पंच५ ॥
आदर बिनु सठ सिक्ख दिय, रक्खी कानि न रंच ॥ ३५ ॥
साहिपुरप कोटेससौं, इक दिन अक्खिय एह ॥
तुम निलज्ज अनुचित तकत, नीति धरम तजि नेह ॥ ३६ ॥
इम जानी बुंदीस सिर, करहिं छत्र कोटेस ॥
इम बिचारि आये इहाँ यह जस सुनन अँसेस ॥ ३७ ॥

शुद्धब्रजदेशीयाभाषा ॥

*हे राजा रामसिंह सब १ अनीति और अनर्थ देखो ॥ २७ ॥ २हाथों में पहनने के कड़े और ३ मस्तक पर लगाने की किलंगी॥२८॥ ४बुंदी के स्थान को दबा कर ॥ २९ ॥ ५ उम्मेदसिंह को देकर ६ सब ॥ ३० ॥ ७ उत्कृष्ट (उत्तम) ८ छल करके ॥ ३१ ॥ ९ राजा बुधसिंह ने ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ १० देवसिंह के पुत्र ११ दलेलसिंह १२ बडे शरीरवाले ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ १३ संपूर्ण ॥ ३७ ॥

मनोहरम्—दोस निज तातको उतारिबेकी बेर तुम,
लीनें मंगि कटक किलंगी यातें बालहो ॥
तिनहिं बिकाय फोज राखी सो तुमारी नाँहिं,
जातें जंग जीति मन मानत निहाल हो ॥
प्रति उपकारक उमेद नृप जानों नैर,
कोटा निज खोवहु कहावत नृपालहो ॥
जो तुम कहूँहूँ स्वामि धर्म न धरोगे तो बँ,
दुर्ज्जनके साल नाँहिं सज्जनके सालहो ॥ ३८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतामिश्रितभाषा ॥

दोहा—सुनि यह कोटापति सचिव, चारन भूपतिराम ॥
बुल्ल्यो साहिपुरेस सौं, करैं करहु कुनाम ॥ ३९ ॥
सेनानी गोविंदसे, लग्गे बुंदिय अर्थ ॥
खरच रम्म लक्खन परयो, क्यों तुम बदंत अकत्थ ॥४०॥
यह सुनि साहिपुरेस तब, गो निज नगर रिसाय ॥
कोटापति बुंदिय बिभव, लुट्टयो अखिल अघाय ॥ ४१ ॥
भट मोहनसिंहोत निज, नगर पल्हायत नाह ॥
तारागढ रक्ख्यो तबहि, रूपसिंह हित राह ॥ ४२ ॥
पुनि किसोरसिंहोत भट, अनतापुर पैं अजीत ॥
ए दुवर किल्लादार किय, पँटु रन धरम प्रतीत ॥ ४३ ॥
अवरहु निज रक्खे सचिव, निवहन राज्य असेस ॥
अप्पुन लै बुंदिय बिभव, कोटा गय कोटेस ॥ ४४ ॥

१दुर्जनसाल के पिता भीमसिंह ने बुंदी छीन लीथी उस दोष को उतारने के समय २ कड़े और किलगी मांग ली ३उम्मेदसिंह को पीछा उपकार करने वाला जानो ४जिस कोटा के कारण राजा कहलाते हो उस कोटे को मत खोओ ५ इस कहने पर भी ६ अब ॥ ३८ ॥ ७ शाहपुरा के पति से बोला ॥ ३९ ॥ ८ सेनापति ९ अर्थ १० झूठ बोलते हो अथवा नहीं कहने योग्य वार्ता कहते हो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ११ पति १२ युद्ध चतुर ॥ ४३ ॥ १३ अपना बुंदी

इत खत्रिय सिवदास लिय, पुर बरवाड़ छुराय ॥
दियउ कछि रट्ठोर वह, जैपुर[1] अमल बिधाय ॥ ४५ ॥

पज्झटिका ॥

बरवाड़ समर सिवदास ठानि, जैपुर नरेस यह उचित जानि ॥
धूलापुर पति कूरम दलेल, बुल्ल्यो राजाउत मंत्र मेल ॥ ४६ ॥
कहि उचित ताहि बुंदिय सहाय, पठयो दलेल[2] ढिग समय पाय ॥
वह तबहि नैनवा नगर पत्त, भिंट्यो[3] दलेल हित बिबिध बत्त ॥४७॥
अक्खी पुनि ईस्वरिसिंह राज, दिल्लीपुर जावत कछुक काज ॥
जवनेस हिंतु[4] काम सु सुधारि, बुंदीपर ऐहैं दल बिथारि ॥ ४८ ॥
ठहै हैं तब अप्पन अमल तत्थ, हड्ड सु उमेद गहि करहिं हत्थ ॥
पै[5] जोलों आवैं न कछवाह, तोलोंन उचित अब समर चाह ॥ ४९ ॥
पूगैंन अबहि हम बीर होय, दुस्सह उमेद कोटेस दोय२ ॥
दोऊ दलेल[6] यह मंत्र चाहि, बहु मास रहे पुर नैनवाहि ॥५०॥
इत जैपुर पति दिल्लिय प्रपत्त[7], सेयो सुरतान जु बिबिध बत्त ॥
बुंदिय पुर बिग्रह बहुरि अक्खि, लिय साह हुकम करि सबन सक्खि[8]
इम रहत कुरम्म[9] दिल्लिय अभंग, सेवंत साह अवनिय[10] उमंग ॥
इत अभयसिंह मरु[11] देस राय, किय चिरं[12] निवास अजमेर आय ॥५२॥
मम जनक[13] पब्ब गृह नगर लिन्न, यह चिंति मरुप तँहँ बास किन्न ॥
कूरम इत दिल्लिय कपट धारि, इक मंत्र साह छन्नैं बिचारि ॥५३॥
राजामल मंत्रिय निज सिखाय, दक्खिन दल[14] लावन दिय पठाय ॥
यह तबहि पत्त दक्खिन अनीकैं[15], किय साम बिरंचि हितकथ कितीक

का वैभव लेकर १ जयपुर का अमल करके ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ २ दलेलसिंह हाडा के पास ३ मिला ॥ ४७ ॥ ४ बादशाह से ॥ ४८ ॥ ५ परन्तु ॥४९॥ ६ कछवाहा और हाडा दोनों दलेलसिंह ॥ ५० ॥ ७ जाकर ८ साक्षी ॥ ५१ ॥ ९ कछवाहा ईश्वरीसिंह १० भूमि के उत्साह से ११ मारवाड़ देश का राजा १२ बहुत दिन तक ॥ ५२ ॥ १३ पहिले मेरे पिता ने ॥ ५३ ॥ १४ दक्षिण (मरहठों) की सेना लाने को १५ सेना में ॥ ५४ ॥

लिय रामचंद पंडित मिलाय, मंध्या राणांजिय पुनि सुभाय ॥
मरहठ उभयर इम लियउ फोरि, करि नेह दैन किय द्रम्म कोरि
१०००००० ॥ ५५ ॥
इत नृप उमेद बुंदिय बिचारि, कोटेस लुब्ध अनुचित अकारि ॥
इमरेहि द्रव्य सन रचिय जुद्ध, लिय बहुरि भुम्मि रचि कपट लुद्ध ५६
तस्मात उचित नहिं पर सहाय, लेहैं वँ हमहिं भुजबल दिखाय ॥
उम्मेदनृपति यह मंत्र लाय, अजमेर गयउ बुंदिय बिहाय ॥ ५७ ॥
मरुधर नरेस सन किय मिलाप, महिपाल उभय रहि हित अमाप ॥
इत उदयनैर जगतेस रान, बुंदी छुटी सु निरख्यो निदान ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ दलेलसिंहसहायार्थजैपुरपतिसचिवखत्र्युपटङ्कराजामल्लाऽनुजशिवदाससज्जीकरणतदग्रजसम्मतिबरवाड़पुरयोधनतान्निदानकथनहड्डेन्द्रबुन्दीविजयकरणकोटेशसनापतिमरणताराादुर्गाऽधिरोहणयारोपणापलायमानदलेलसिंहनयनपुरगमनकोटेशबुन्दीवैभवलुण्टनसर्वाधिकारस्वीकरणनृपार्थलोहितप्रान्तसमर्पणतत्प्रतिसाहपुरेश्वररुशत्युपालम्भदानमहारावकोटागमनशिवदासबरवाड़विजयनकूर्मराजधूलाधि

१ श्रेष्टरीति से ॥५५॥ २ रुपये ३ लोभी ने ४ किया ५ लाभ ॥५६॥ ६ इसकारण ७ अब ८ बुन्दी छोड़कर ॥ ५७ ॥ ९ से १० कारण देखा ॥५८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, दलेलसिंह की सहाय के अर्थ जयपुर के पति (ईश्वरीसिंह) का अपने सचिव, खत्री उपटंकवाले राजामल के छोटे भाई शिवदास को तयार करना १ उसके बड़े भाई की सलाह से बरवाड़ युद्ध करने का कारण कहना २ हाडों के राजा का बुन्दी विजय करना और कोटा के पति के सेनापति का काम आना ३ तारागढ आदि पर नीसरनियें लगाना और दलेलसिंह का भागकर नैणवे जाना ४ कोटे के पति का बुन्दी का वैभव लूटकर सब पर अपना अधिकार करना ५ उम्मेदसिंह के अर्थ लोहितपुर का परगना देना ६ जिस के प्रति शाहपुरा के पति (उमेदसिंह) का खिजकर उपालंभ (ओलंभा) देना ७ महाराव का कोटे जाना शिवदास का बरवाड़ को जीतना ८ कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का धूला

पतिदलेलसिंहनयनपुत्रप्रेषणसालम्याश्वासनजायसिंहिदिल्लीगमनम
रुपत्यजमेराऽऽगमनेश्वरीसिंहराजामलदक्षिणाप्रेषणरजतमुद्राकोटि
निवेदनप्रतिज्ञानश्रीमन्तसचिवराणाजि १ रामचन्द्र २ मेलनहड्डेन्द्र-
कोटासहायलज्जाप्राप्तस्तद्बुन्दीत्यजनाजमेरगमनधन्वेशसमागम-
नमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥२९२॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभषा ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जगतेस इत, जान्यौं समय नवीन ॥
बुंदिय हड्डन छिन्नि लिय, हैं जैपुर बल हीन ॥ १ ॥
यातैं भुव उद्यम करन, उचित काल अब आय ॥
भागिनेयं हित दीजिये, ढुंढाहर बटवाय ॥ २ ॥
यह बिचारि कोटेस प्रति, पुनि पठये लिखि पैत्त ॥
जीतैं जैपुर जंग जुरि, अब हम तुम अनुरैत्त ॥ ३ ॥
सोधी दुर्जनसल्ल तब, उनकै गाढ न रंच ॥
पहिलैंहीं फीके परे, परि परि रान प्रपंच ॥ ४ ॥
यह बिचारि पच्छी लिखिय, रचहु कुंच तुम रान ॥
पीछैंहीं हम आतहैं, जुरि जित्तहिं घमसौंन ॥ ५ ॥
यह दलं बंचि बिचारि तब, निज भट रान बुलाय ॥

के पति दलेलसिंह को नैणवे भेजना सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) को आश्वासन देना (विसासना) ९ जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का दिल्ली जाना १० मारवाड़ के पति का अजमेर आना और ईश्वरीसिंह का राजामल को दक्षिण में भेजना ११ क्रोड़ रुपये देने की प्रतिज्ञा का बोधकराना १२ श्रीमन्त के सचिव राणांजी और रामचन्द्र को मिलाना २१ हाडां के इन्द्र (उम्मेदसिंह) का कोटा की सहायता से लज्जा पाकर उसका बुंदी छोड़कर अजमेर जाकर मारवाड़ के पति से मिलने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बानवै २९२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ भानजे (माधवसिंह) के अर्थ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ प्रीतियुक्त होकर ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ युद्ध ॥ ५ ॥ ६ पत्र बांचकर

मरहट्टन ढिग मुक्कलन, दुवर तयार किय *दांय ॥ ६ ॥
इक्क रुल्लूमरि पुर अधिप, केसरि सुवन कुबेर ॥
बखतसिंह काका बहुरि, किय तयार हित[1]केर ॥ ७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकर हित कग्गरं[2] लिखवाये, कोटि १०००००००[3] दम्म तिहिं
दैन कहाये ॥
लिखिय मं[4]ल्लार भरोस तिहारैं, अब हम जैपुर विजय निहारैं ॥ ८ ॥
रामचन्द पंडित इम फोरहु, राणांजी सन पुनि हित जोरहु ॥
कूम्म तुमहिं दैन जो करिहैं, तासौं द्विगुन द्रव्य हम भरिहैं ॥ ९ ॥
कग्गर इम लिखवाय दये कर, बखत१कुबेर१दोहु२पठये बं[5]र ॥
दोऊ२तब दक्खिन दं[6]ल पत्ते, अवसर पाय मिले अनुरं[7]त्ते ॥ १० ॥
राणांजी संध्या सुत तत्थह, जया नाम सब रीति समत्थ[8]ह ॥
बद्दलि पग्ग तासौं बखतेसह, मित्र भयो जिम धं[9]नद महे[10]सह ॥ ११ ॥
यह सुनि रान सेन सजि दुद्दर, माधवं[11] जुत हंकिय जैपुर पर ॥
नागोर पं[12] बखतेस कबंधह, अप्पनं[13] पुत्रिय स्वसुर हुतो वह ॥ १२ ॥
विजयसिंह वं[14]को सुत व्याह्यो, स्वीय सुं[15]ता तातैं हित चाह्यो ॥
इहिं कारन जगतेस रान अब, सत्थ लैन नागोर कटकं[16] सब ॥ १३ ॥
कनकं[17] मुल्ल रुप्पय दुवर लक्खन २०००००, पठयो बखतसिंह
पँहँ हितपन ॥
अक्खिय खरच एह अं[18]वधारहु, एतनौं[19] निज मम भीर प्रचारं[20]हु ॥ १४ ॥
दुं[21]मति लुं[22]ब्ध बखतेस वंचि दल, पुं[23]रट लयो रु नाँहिं पठयो वं[24]ल ॥

---

*रीति पूर्वक ॥ ६ ॥ १ हित के लिये ॥ ७ ॥ २ पत्र ३ रुपये ४ हे मल्लार ॥ ८ ॥ ९ ॥ ५ श्रेष्ठ ६ सेना में गये ७ अनुकूल ॥ १० ॥ ८ समर्थ [यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो अन्य स्थानों में भी ऐसाही जानना] ९ कुबेर १० शिव से ॥ ११ ॥ ११ माधवसिंह सहित १२ नागोर का पति बखतसिंह राठोड़ १३ महाराणा जगत्सिंह की पुत्री का श्वशुर था ॥ १२ ॥ १४ बखतसिंह का पुत्र १५ राणा जगत्सिंह की पुत्री १६ सेनासहित ॥ १३ ॥ १७ सुवर्ण १८ धारण करो १९ अपनी सेना मेरी सहाय पर २० भेजो ॥ १४ ॥ २१ खोटी बुद्धिवाला २२ लोभी २३ सुवर्ण तो लेलिया और २४ सेना नहीं भेजी

रान पचीस सहँस २५००० दल रज्जिय[1], सेन सहँस दस १०००० माधव सज्जिय ॥ १५ ॥
इम हजार पैंतीस ३५०००अनीकिन[2], रान बहुरि माधव इच्छत रन
किय दरकुंच उदयपत्तन तजि, सब कूरम सीमा[3] पहुँचे सजि ॥१६॥
टोडा नगर परग्गन अंतर, माधव रान मिलान दये[4] बर ॥
हो दिल्लिय तबतैं कूरम पति, यातैं अवर[5] सेन पठयो अति ॥१७॥
हेमराज१बखसी दलकंत[6] सु, अरु ऊनियारपति[7] सुत जसवंत सु२ ॥
नागरचाल ईस पुनि नारव, सुभट नाम सिरदार३ जोर जब ॥१८॥
इत्यादिक जैपुर भट आये, रान सम्मुख सजि कपट रचाये ॥
जान्यौं कछु दिन अंतर पारैं, तो नृप ईस्वरिसिंह पधारैं ॥१९॥

॥ दोहा ॥

कग्गर[8] पठयो कूरमन, रान निकट छल रक्खि ॥
महिपति तुम माधव अरथ, अवनि[9] दिवावहु अक्खि ॥२०॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप जयसिंह राज माधवहित अप्पिय[10] ॥
अब नृप ईश्वरिसिंह ताहि मेटन मति थप्पिय ॥
यातैं नहिं अनुकूल सुभट हम सब कूरम सैन[11] ॥
अप्पहु आयस[12] अप्प सोहि करिहैं प्रतीति पन ॥
बिनु खरच नाहिं कारज बनैं देहु खरच सब स्वीय करि[13] ॥
हम अब अधीन तुमरे हुकम गहि हैं ईस्वरिसिंह लरि॥२१॥
छल प्रपंच यह मंडि पत्र पठयो कछवाहन ॥
बंचि रान मतिमंद मन्नि लिय सत्य मुदित मन ॥

---

१ शोभित हुआ ॥ १५ ॥ २ सेनाओं से ३ कछवाहे की सीमा पर ॥ १६ ॥ ४ माधवसिंह ने और राणा ने मुकाम किया ५ अन्य ॥ १७ ॥ ६ सेनापति ७ उणियाराका पति नरूका ॥ १८ ॥ १९ ॥ ८ पत्र ९ भूमि ॥ २० ॥ १० माधवसिंह को दिया ११ ईश्वरीसिंह से १२ आज्ञा १३ सब को अपना बनावै ॥ २१ ॥

दम्मं[1] अयुत१००००प्रतिदीहँ[2] कुम्म[3] सेनहिँ करि दिन्नैं ॥
कपटी कूरम कटक लुब्भि[4] दस १० दिन तक लिन्नैं ॥
दिय पत्र बहुरि दिल्लियनगर बुल्लिय ईस्वरिसिंह द्रुत[5] ॥
आमेर पट्ट जावत अबहि रानाँ आयउ अनुज[6] जुत ॥ २२ ॥
यह सुनि ईस्वरिसिंह साह[7] सँन सजव सिक्ख लहि ॥
करि आयउ दरकुंच गुमर[8] अति बल बिसेस गहि ॥
निज दल सम्मलि होय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
अग्गैं भो वह बचन क्यौँ सु चुक्कत अब दुम्मति[9] ॥
मंत्रिय इतैं सु मरहट्ठ दल[10] राजामल सब फोरि लिय ॥
इक्क न मलार फुट्टिय अतुल हुलकर राय उपाय हिय।२३।

पादाकुलकम् ॥

रान सुभट[11] हुलकर मिलवाये, बलि[12] संध्या सुत मित्र बनाये ॥
रान सहाय करन तिन धारी, सो राजामल सबहि बिगारी ॥ २४ ॥
रान सुभट दोहूर निकसाये, मुहबिगारि निरखत भुंव[13] आये ॥
पुनि खत्रिय लै सब मरहट्ठन, चलिय रान सिर कुंच कटट्ठन।२५।
कोटा मुलक लुट्टतहि आये, दुजनसल्ल नहिँ हत्थ दिखाये ॥
इम द्रुत[14] आय रान दल[15] घेरयो, फनपति[16] मानहु कुंडल फेरयो॥ २६ ॥
षट्पात्-सक इक नभ वसु सोम१८०१माघ मेचँक[17] पख अंतर॥
मरहट्ठन दिय मार रान बिंटिय रचि संगर ॥
धमि तोपन धमचक्क धुम्मि भोगँन डगमग्गिय ॥
झंडे अरुन[19] प्रजारि झुंड गोलन झगमग्गिय ॥

१ रुपये २ प्रतिदिन ३ कछवाहों की सेना को ४ लोभ करके ५ शीघ्र ६ तुम्हारे छोटे भाई (माधवसिंह) सहित ॥ २२ ॥ ७ बादशाह से शीघ्र ८ घमंड ९ दुर्मति१०राजामल ने इधर मरहठों की सेना को ॥२३॥ ११ राणा के उमरावों ने १२ फिर ॥ २४ ॥ १३ भूमि की तरफ नीचा देखते हुए ॥ २५ ॥ १४ शीघ्र आकर १५ राणा की सेना को१६सर्पों के पति (शेषनाग) ने॥२६॥१७यदि १८ शेष के फणों पर१९उदयपुर के निशान का रंग लाल है

गज हय सिपाह उड्डिय गरद प्रबल अचानक भय परिग ॥
झंपत सिचान[1] खरकोन गति मेवारन[2] मद उत्तरिग ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

आय अचानक अरध निस, मरहट्ठन दिय मार ॥
भीत रान व्याकुल भयउ, वलि[3] किय साम बिचार ॥ २८ ॥
यह उदंत मरहट्ठ सुनि, रुचि वस छंडिग रीस ॥
साम बिरचि किय रान सिर, दम्म[4] लक्ख बाईस२२००००० ॥ २९ ॥
नृप कूरम अरु रान पुनि, मरहट्ठन[5] मिलवाय ॥
कियउ साम दोऊ२नकै, रस हित कछुक रचाय ॥ ३० ॥
माधवहूके मिलनकी रामचंद्र किय बत्त ॥
सो हुलकर मन्नी नही, रक्ख्यो प्रथक[6] बिरत्त ॥ ३१ ॥
माँधवहू[7] यह सुनि कहिय, मैं ढुंढाहर राज[8] ॥
कैसैं ईश्वरिसिंहसौं, सद्दै मिलन समाज[9] ॥ ३२ ॥
माधव रान बिगारि मुंह[10], तदनु[11] उदैपुर पत्त ॥
मरहट्ठन जुत कुम्म नृप[12], घल्ली बुंदिय घत्त ॥ ३३ ॥
सहर देस लै किय सकल, अमल दलेल अधीन ॥
तारागढ भो नहिं तबहि, बिंट्यो जाय बलीन ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

धम्मि तोपन धमचक्क कोट तारागढ कंपिग ॥
दुवरकोटा भट देखि जानि परबल यह जंपिग[13] ॥
हम हड्डे बड बीर कढहिं फहरात फतूहन[14] ॥
भग्गे जिम निकसैं न प्रबल लग्गत कलंक पन ॥
जो जानदेहु संजुत रखंत[15] तो कवि कीरति पढ्हि हैं ॥

---

१ तीतर पक्षियों की भांति २ मेवाड़वालों का ॥ २७ ॥ ३ पुनि ॥ २८ ॥ ४ रुपये ॥ २९ ॥ ५ मरहठों ने दोनों राजाओं को मिलाकर ॥ ३० ॥ ६ जुदा रक्खा ॥ ३१ ॥ ७ माधवसिंह ने भी ८ राजा ९ सभा में ॥ ३२ ॥ १० मुख ११ जिस पीछे १२ ईश्वरीसिंह ने ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ १३ कहा १४ ध्वजा उडाते हुए १५ सामग्री सहित

नाँतरि कढ़ैं न हड्डे मरद अड्डे पंजर[1] कढ्ढिहैं ॥ ३५ ॥
सुनि हुलकर दिय वचन रेखत[2] संजुत तुम जावहु ॥
कछुदिन कूरम जोर नाँहिं बुंदिय तुम पावहु ॥
अजितसिंह अरु रूप[3] तवहि कोटेस सुभट हुवर ॥
सजि बल खुल्लि निसान निकसि कोटा अध्वग[4] हुव ॥
लुट्टिय दलेल बुंदिय सकल बुन्दसुतहिं[5] चाहत निरखि ॥
कूरम समेत दक्खिन कटक दिन दुवरक्खिय लुब्ध[6] लखि ३६
जुत दलेल कछवाह तँदनु[7] लै दल मरहट्ठन ॥
कोटा बिंटिय जाय रुट्ठि लुट्टत मग[8] रैठन ॥
ग्राम सगत पुर जाय अप्प उत्तरि चम्मलि तट ॥
लिय पत्तन[9] गरदाय सेन संकुलि[10] बट उब्बट ॥
वज्जिय निसान त्र्यंबक बिखम दुसह फैर तोपन दगिय ॥
अंदर अँलाव[11] मच्चिय मनहुँ लंकापुर बंदर[12] लगिय ॥ ३७ ॥

॥ हीरकम् ॥

दक्खिन दल लै दुरूह[13] कूरम हठ हेरयो ॥
कोटापुर जाय घोर घत्तन[14] घन घेरयो ॥
द्वैरबट दल बंटि अप्प चम्मलि दिस तंडयो[15] ॥
अद्ध सु दल पुव्वओर जाय जोर मंडयो ॥ ३८ ॥
तोपन धमचक्क[16] कोट लोपन पुर लग्गयो ॥
गोलन गजबीन[17] सोर[18] संकुलि दव[19] दग्गयो ॥

---

१ शरीर पड़े पीछे ॥ ३५ ॥ २ सामग्री ३ रूपसिंह ४ मार्ग ५ उम्मेदसिंह को देखना चाहते थे ६ लोभ देखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिस पीछे ८ मार्ग के बुंदी और कोटा के दोनों राष्ट्रों (राज्यों) को ९ पुर को घेर लिया १० मार्ग और विना मार्ग में सेना भरकर ११ अग्नि १२ हनुमान् की लगाई हुई ॥ ३७ ॥ १३ कठिनाई से नर्कना में आवै ऐसी सेना लेकर १४ घातों से १५ गर्जना की ॥ ३८ ॥ तोपों के १६ युद्ध में कोट और पुर का लोप होने लगा १७ गजब करनेवाले गोलों ने १८ बारूद भरी हुई १९ अग्नि लगाई

कच्छप फटि पिट्ठी नाग रीढक बररक्कयो ॥
दंतुलि तुटि कोल[2] झोल झंझट[3] झुकि झक्कयो[4] ॥ ३६ ॥
अतल रु बितलादि लोक ओदकि भय भग्गये ॥
दिग्गज डगमग्गि सोच[6] मोचन मद लग्गये ॥
फोजन घन फेर भुम्मि जोजन दुवर ढंकई ॥
ओजन भट भीर जंग मोजन हठि हंकई ॥ ४० ॥
टोलन पवि[7] पात डोलि गोलन[8] गढ बिग्गरैं ॥
गज्जन[9] पुर सोध[10] गोख छज्जन छटके परैं ॥
मंडप फटि के लदाव खंभन गन उच्छटैं ॥
थंभन थहराय ओक ओकन[11] अति उप्पटैं ॥ ४१ ॥
उड्डत गढ खंड फेर गोलन लगि बिक्खरैं ॥
बज्जन कटि पंच्छ[12] जानि पब्बय फटि के परैं ॥
कोट रु कपिसीस[13] ओट उड्डत छबि गैन[14] मैं ॥
चोटन पर चोट लोट लग्गत पुर लौनमैं ॥ ४२ ॥
गोपुर[15] परिकूट अट्ट[16] पट्टन परि वट्ट[17] के ॥
[18]कापथ अतिपंथ[19] होत चम्मलि तट घट्ट[20] के ॥

१शेषनाग की पीठ (सांकल की हड्डी) तूटी२वराह की दंतुली तूटकर३वह उस झगड़े (युद्ध) के झालों से झुककर४गिरा (बैठगया) ॥३६॥५भय से डरकर भागे६शौच (विष्ठा,लाद) और मद छोडने लगे, फौजों के अधिक फैलाव से आठ कोस भूमि ढक गई और वीरों की भीड़ पराक्रम के साथ युद्ध की लहरों में हठ करके चली ॥ ४० ॥ पर्वतों पर ७ वज्र पड़ने की ८ तरह गोलों से गढ बिगड़ने लगा उन तोपों की ९ गर्जना से नगर के १० महल, झरोखे और छाजे तूटकर पड़ते हैं कितने ही लदाव के गुंमज फटकर खंभों का समूह उछटता है और११घर घर में थंभे धूज धूज कर उपटते हैं ॥४१॥ फिर गोलों से गढ के टुकड़े होकर उडते और बिखरते हैं सो मानों वज्र से१२पांखें कटकर पर्वत फटकर गिरते हैं कोट और १३ कांगरों की आड उडकर १४ आकाश में शोभायमान होकर उडते हैं ॥ ४२ ॥ १५ नगर के द्वार के आगे का कोट (पड़कोटा अथवा (घूघस) और १६ बुरजें गिरकर कितने ही १७ मार्ग होते हैं २० चामल नदी के किनारों के घाटों में १८ पगडंडियें (छोटे मार्ग) और १९ बडे मार्ग होते हैं

द्विपंथ रु त्रिक ओ चतुष्क रीति सु सब लुप्पई ॥
कुट्टिमें ढिग छत्ति आनि छत्तिन मिलि उप्पई ॥ ४३ ॥
अंगन घर अंग्गि सोर संगर अति उच्छरैं ॥
जंगन अतिजोर दोर दंगन गढ बिग्गरैं ॥
अंदर अकबक्कि लोक बंदर भय ज्यौं दुरे ॥
मंदिरँ पुर तूटि आनि चम्मलि जल के घुरे ॥ ४४ ॥
डंबर उडि खेह अंक्क अंबर सब लुक्कये ॥
ध्यान सु सिव छुट्टि तान अच्छरि गन चुक्कये ॥
चम्मलि जल छिज्जि मीन सम्मलि घन ओवटे ॥
डुंगर डगमग्गि पक्क उंबर गति के फटे ॥ ४५ ॥
सागर जल सेतु छोरि लोपन भुव लग्गये ॥
कोपन इम कुम्म सेन तोपन दव दग्गये ॥
संगर दुव मास मंडि कूरम इम अंकुरयो ॥
सत्थहि मरहट्ठ पिक्खि दुज्जनसल संकुरयो ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

राणांजी संध्या सुवन, जया नाम अति जोर ॥

नगर में १ दो मार्ग, तिरपटा और चौहटे (चोपड़ के बजार) की सब रीतियें मिटगईं ३ ऊपर की छत नीचे की छत से मिलकर २ नींव (बुनियाद) में मिलकर ४ शोभित हुई ॥ ४३ ॥ ५ बारूद की वह अग्नि उस युद्ध में घरों के चौकों में अत्यन्त उछली और उस बलवान् युद्ध के फैलाव में ६ आश्चर्य युक्त गढ बिगड़ने लगा, भीतर के लोक घबराकर जिसप्रकार लंका में हनुमान् के भय से छिपे थे तिसप्रकार छिपने लगे ७ कितने ही मकान टूटकर चामल के जल में ८ घुळ (मिल) गये ॥ ४४ ॥ खेह के उडकर ९ छाजाने से आकाश में १० सूर्य छिपगया अथवा सूर्य और आकाश सब छिपगये, शिव की समाधि छूटकर अप्सराओं का समूह तान चूकगया, चामल का जल छीज कर मच्छियों के साथ बहुत जीव ११ उघले १२ पर्वत हिलकर पके हुए ऊमर वृक्ष के फल के समान फटे ॥ ४५ ॥ १३ मर्यादा छोडकर १४ कोप के साथ कछवाहे की सेना ने इसप्रकार अग्नि जलाई १५ खड़ा हुआ १६ दुर्जनसाल सकुचा ॥ ४६ ॥ राणांजी नामक सिंधिये का १७ पुत्र

ताकै इक[1] गुटिका लगिय, घन रन मंडत घोर ॥ ४७ ॥
यह लखि कुम्म दलेल सौं, चवि दक्खिन हितचाहि ॥
पंच५ ग्राम जुत कापरनि, द्रंग[3] दिवायउ ताहि ॥ ४८ ॥
दक्खिन जोर दलेल लखि, दियउ कापरनिद्रंगं ॥
पुर पट्टनि पुनि सौंकमैं, अप्पिय राज्य उमंग ॥ ४९ ॥
तब पट्टनि लिय दक्खिननि, किय त्रि३भाग वनि कंत ॥
इक१इक१ हुलकर संधिया, इक१विभाग श्रियमंत ॥५०॥
संवत दुव नभ धृति समय १८०२, मेचक माधव[6] मास ॥
पट्टनि यम कोटा प्रधन, गिल्यो गिनीमन ग्रास ॥ ५१ ॥
ग्वाल सुरभि गजपाल[9] गज, चक्कि रंजक पर चेल[11] ॥
जमी देत कर्षुक[12] जिमहि, दिय यह द्रंग[13] दलेल ॥ ५२ ॥
मरिंग[14] याहि रनके समय, चुंडाउति[15] नृप मात ॥
कोटा मध्यहिं दाह किय, पर[16] भय जानि प्रपात ॥ ५३ ॥
मृतक कर्म निज मातको, किन्नौं लघु सुत दीप[17] ॥
हो पुष्कर मरुभूप[18] सह, मिलि उम्मेद महीप ॥ ५४ ॥
दीपकुमरि अरु दीप दुव२, सोदर भगिनी भ्रात ॥
सह झालिय रानी सह्यो, पुर कोटा दुख पात ॥ ५५ ॥
कोटा इम कूरम दई, मरहट्ठन जुत मार ॥
महाराव सठ भीत मन, सम्मुह भो नहिं स्यार[19] ॥ ५६ ॥
रूप्पय सोलह लक्ख१६००००० लिय, मरहठ रु कछवाह ॥

१गोळी॥४७॥२उस जया को ॥ ४८ ॥ ३ नगर॥४९॥५पति बनकर उसके ४ तीन बंट किये ॥ ५० ॥ ६ वैशाख वदि ७ कोटा के युद्ध में ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार ८ गउ का ग्वाल ९ हाथी को महावत ११ पराये वस्त्र को १० धोबी १२ भूमि का कर्त्ता, भूलकर और को और की देदेवै तिसप्रकार यह१३नगर दलेलसिंह ने दिया ॥ ५२ ॥ १४ मरी १५ उम्मेदसिंह की माता १६ शत्रुओं के भय का पड़ना जानकर ॥ ५३ ॥१७दीपसिंह ने१८मारवाड़ के राजा के साथ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ १९ गीदड़ ॥ ५६ ॥

च्यारि४०००००लक्ख पुनि वरस प्रति, लैनैं किय दंग राइ॥
इम कोटा करिराजको, मद दिय कुंम्भ उतारि ॥
कियउ कुच्च निज निज घरन, हुव२दल्ल विजय बिचारि ।५८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ समाधवसिंहराणाजगत्सिंहजयपुरविजयार्थनिस्सरणदिल्लीतईश्वरीसिंहाऽऽगमनसराजामल्लदक्षिणसैन्यराणावेष्टनदण्डद्रव्यग्रहणकूर्मराजबुन्दीविजयकरणकोटेश्वरसुभटनिष्कासनाऽनन्तरकोटायुद्धकरणराणजिपुत्रजयाऽभिधानगुटिकाहतप्रापणतच्छुल्कीभूतपट्टनिपुरप्रभृतिनिवसथनिवेदनछत्रेन्द्रमातृमरणकोटातोदमद्रव्यग्रहणतच्चतुर्थांशद्दायनिकरस्थापनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ २९३ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत पुक्खर उम्मेद नृप, माता मरन उदंत ॥
सुनि सब सक्किय वेदविधि, मन्नि धरम दृढ मंत ॥ १ ॥
खरच भीरं नृपकैं बहुत, बिपति सकैं न निवाहि ॥
प्रभु संभर तउ धरम पहु, करैं सु अनुचित काहि ॥ २ ॥
मिलैं जबहि सब सत्थकौं, अप्प प्रसन तब लेत ॥

१ दंड के मार्ग से ॥ ४७ ॥ २ बडे हाथी का ३ ईश्वरीसिंह ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में माधवसिंह सहित राणा जगत्सिंह का जयपुर को विजय करने के अर्थ निकलना १ दिल्ली से ईश्वरीसिंह का आना २ राजामल्ल सहित दक्षिण की सेना का राणा को घेरकर दंड के रुपये लेना ३ ईश्वरीसिंह का बुन्दी विजय करके कोटा के पति के उमरावों को निकालने पीछे कोटा में युद्ध करना ४ जया नामक राणजी के पुत्र के गोली लगना और उसके सूंफ (रिसवत) में पाटणपुर आदि ग्राम देना ५ उम्मेदसिंह की माता का मरना ६ कोटा से दंड के रुपये लिये जिसके चतुर्थांश का वार्षिक कर (खिराज) स्थापन करने का बारहवां १२ मयूख सम्पूर्ण हुआ और आदि से दोसौ तिरानवें २९३ मयूख हुए ॥

४पुष्कर में ५वृत्तान्त॥१॥६तंगी (सकड़ाई)७उम्मेदसिंह॥२॥८सब साथ को९भोजन

दुवर दुवरदिन लंघन बनैं, डुल्लैं[1] तदपि न चेत ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

असन[2] बेर सह सत्थ[3] पंति चोसर परिजावत ॥
जो व्यंजन सब अत्थ[4] सोहि निज अत्थ लगावत ॥
मोहतें सुभटन चित्त वित्त अप्पत हित जोरत ॥
स्मेरें सुमहिं जिम भृंग सुभट इम नृपहिं न छोरत[5]॥
सब रतन फुट्टि घन घात जिम सूचीमुख कछु उव्वरिय[6] ॥
ते भट उमेद भूपहिं अतुल रहत विंटि सट्ठि६०हि घरिय॥४॥
भट प्रयाग अरु तोक बहुरि कल्यान भ्रात त्रय३ ॥
वीर भवानीसिंह तिमहिं मजबूत धरम मय ॥
सूर धीर सिवसिंह बैरिसल्लोत सहावल ॥
इत्यादिक बड वीर नृपहिं सेवत मन उज्जल ॥
सब धन निवेदिं सहत हुकम बातर्जात जिम राम तट ॥
पिक्खै न हानि अप्पन प्रथिंत रक्खैं हिय पतिकाम रट॥५॥

॥ दोहा ॥

ऐसे भट नृप ढिग रहिय, अवर न विपति प्रपात ॥
तदपि भूप धीरज अतुल, सूर धरम सरसात ॥ ६ ॥
पर सहाय अनुचित परखि, तजि बुंदिय चहुवान ॥
सूर निकसि ऐसे समय, बंधत लैन विधान ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मरुपतिहू अजमेर भिंटि[12] भूपहिं करि अहर ॥

---

१ तोभी मन नहीं डुलता ॥ ३ ॥ २ भोजन के समय ३ सब के अर्थ ४ धन देता है ५ सुगंधि के कारण पुष्प को भ्रमर नहीं छोड़ै जैसे उमराव राजा को नहीं छोड़ते हैं ६ हीरा घण की चोट से बच जाता है जैसे कुछ सुभट राजा के पास बचरहे ॥ ४ ॥ ७ भेट करके ८ जैसे हनुमान रामचन्द्र के पास ९ प्रसिद्ध १० स्वामी के काम का ही स्मरण है ॥ ५ ॥ ११ आपदा पड़ने से अन्य नहीं रहे, तोभी ॥ ६ ॥ ‥ ॥ १२ मिलकर

समुख जाय सनमान बिरचि आन्यो डेरन बेर ॥
सहं[1] भोजन सह वास बिहिंत रचि हेत बढायउ ॥
उभय[2] मिलन आनंद पुराय[4] जस जगत पढायउ ॥
वय अप्प जदपि सोलह१६बरस अक्खि तदपि छोरन अलस॥
सिखयो चुहान खुरसी सु घर रट्ठोरहिं मृगयादिरस ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मरुपतिकैं उमराव इक, ऊदाउत रट्ठोर ॥
बखतसिंह रन पट्टु बिदित, रासि नगर सिर मोर ॥ ९ ॥
अक्खी तिहिं मरुईस सौं, कन्या सुभ मम गेह ॥
बुंदीसहिं व्याहन उचित, अप्प करहु हित एह ॥ १० ॥
अभयसिंह अक्खिय सुनत, तनयाँ बुल्लहु अत्थ ॥
बुंदीसहिं हम व्याहि हैं, सुभ मुहूर्त हित सत्थ॥ ११ ॥
बखतसिंह सुनि बुल्लई, तनया अप्पन तत्थ ॥
परिनाई कहि धन्वपति, संभर नृपहिं समत्थ ॥ १२ ॥
संवत दृग नभ धृति१८०२समा, राध तीज अवदात ॥
इम रानिय कुंदनकुमरि, व्याहयो नृप बिख्यात ॥ १३ ॥
इत दलेल कूरम उभय, दै मरहट्ठन सिक्ख ॥
गुमर जोर जैपुर गये, तोर बिजय रन तिक्ख ॥ १४ ॥
सुतक्षत्रिय सिवदासको, नंदराम अभिधान ॥
बीरन जुत मेटन बिघन, रक्ख्यो बुंदिय थान ॥ १५ ॥
इत संभर[12] यह व्याह करि, आयो नगर भनाय ॥
माता सन हित जुत मिल्यो, करन जोरि नत काय ॥१६॥

१श्रेष्ठ२साथ३उचित४पवित्र यश५उसने घर में था उस सुवड़ (चतुर) ने शस्त्र लिया सीखी थी सो ६ शिकार में राठोड़ को दिखलाई॥८॥९॥१०॥७पुत्री को यहां बुलाओ ॥ ११ ॥ ८ मारवाड़ के पति ने ॥ १२ ॥ ९ विक्रम के शक में १० वैशाख सुदि तीज के दिन ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११नाम॥१५॥ १२ उम्मेदसिंह॥१६॥

सस्सू यह जयसिंहकी, नृप बुधसिंह कलत्र[1] ॥
पलटी जो नय[2] तजि प्रथम, तिहिं मंड्यो[3] हित तत्र ॥ १७ ॥
दुलहनि दुल्लह अँग्घ[4] अति, लिन्नैं निलय[5] वधाय ॥
कछुदिन रक्खे मोद करि, मेटन वह अघ[6] माय ॥ १८ ॥
तदनु[7] मात[8] सन सिक्ख किय, बुंदिय सिर नृप सज्जि ॥
दुलहनि रक्खिय तत्थही, रस उज्जल[9] हित रज्जि ॥१९॥
कोटाधीस सहाय सन, पहिलैं बुंदिय पाँय[10] ॥
यातैं नृप बिक्कम अतुल, सज्ज्यो पृथक[11] रिसाय ॥२० ॥
हिंडोली दरकुंच करि, दिन्नैं आनि मिलान[12] ॥
सैंना बारह१२खेटके[13], आनि मिले छक आन ॥२१॥
दुव२ज्जीवौं[14] धनुही करन, दुव२दुव२पिट्ठि निखंगैं[15]॥
कटि[16] कटार बलि[17] बंसुरिय, सिर धवपत्त[18] किलंग ॥ २२ ॥
बायुहिं[19] बा अरु किमहिं का, अंकहिं[20] बुल्लत आँक ॥
भजत लरत लरि पुनि भजत, लैंफि[21] उडि चित्रक लाँकै[22] २३
संगाके अरु सल्लहके, गुंगाके बल घात ।
दासाँके अरु देवके, जग्गूके कुल जात[23] ॥ २४ ॥
सैंनाँ कुल इत्यादि मिलि, इम हुव हाजरि आनि ॥
पहुमी सिर सज्ज्यो नृपति, मन रन उच्छव मानि ॥२५॥

---

१ स्त्री २ नीति छोडकर ३ किया ॥ १७ ॥ ४ आव (आदर) ५ घर में ६ बुधसिंह ने बदल गई थी वह पाप मेटने के लिये ॥ १८ ॥ ७ जिस पीछे ८ माता से ९ शृंगार रस से शोभायमान दुलहन को वहीं छोडी. अथवा दुलहन को वहां छोडकर शृंगार रस की तर्जना की ॥ १९ ॥ १० बुन्दी पाई थी ११ जुदा ॥ २० ॥ १२ मुकाम १३ बारह खेडों के सैने ॥ २१ ॥ १४ हाथों में दो प्रत्यंचा के धनुष (धुर्वी) १५ भाथे (तरकस) १६ कमर में कटारी १७ और बंसी १८ एवं मस्तक पर धोकड़ा (वृक्ष विशेष) के पत्तों की किलंगी ॥ २२ ॥ १९ पवन को २० आक के वृक्ष को २१ नीचे झुक कर उडते हैं २२ चीते के समान कमरवाले ॥२३॥ २३ ऊपर कहे हुये पुरुषों के कुल में उत्पन्न ॥ २४ ॥ २५ ॥

हिंडोली पुरकी प्रजा, जुगलें स्वामि सिर जोय ॥
सैनय दम्म सोलह सहँस१६०००, नजरि किन्न नैत होय२६
नयपट्ट सवन बिसासि नृप, किय बुंदिय सिर कुच्च ॥
वजि सिंधुव डाइल विसम, इम हंकिय मन उच्च ॥२७॥
नंदराम इततैं निकसि, सहँस पंच ५००० सिख संग ॥
पहुमी दब्बत पक्खरन, अब्भें घसत उतंमंग ॥२८॥
बिपरदल आवत बीचँड़ी, मिलिग आनि तजि मोह ॥
गज्जरके घरियार गति, लग्गयो बज्जन लोह ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृदुम्मेदसिंहश्रीपुष्करद्वितीयो २ द्वाहकरणादलेलसिंहसहितकूर्मराजजयपुरगमनखत्रिशिवदाससुतनन्दरामबुंदीस्थापनइन्द्रभगायनगराऽऽगमनसपत्नजनन्यभिवादनतत्रैवराज्ञीनिवासनस्वयंबुन्दीविजयार्थसज्जीभवनहिंडोलीनगरसेनाप्रपतनद्वादश १२ खेटमैणासार्थस्वामिवरणपतनविजयार्थप्रस्थानबीचड़ीग्रामसीमाशत्रुसैन्यमिलनं त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥ ॥२९४॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१माथे पर दलेलसिंह और उम्मेदसिंह दो स्वामी देखकर २ नीति सहित रुपये ३ झुककर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ आकाश को ५ मस्तक से घिसता हुआ अर्थात् जिसका मस्तक ब्रह्मांड से लगा हुआ ॥ २८ ॥ ६ ग्राम का नाम है ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, भूपति उम्मेदसिंह का पुष्कर में दूसरा विवाह करना १ दलेलसिंह सहित ईश्वरीसिंह का जयपुर जाना २ शिवदास खत्री के पुत्र नन्दराम को बुन्दी में रखना ३ उम्मेदसिंह का भगाय नगर में आकर अपनी सौतेली माता को नमस्कार करना ४ वहां राणी को रख कर अपनी बुन्दी को विजय करने को सज्ज होना ५ हिंडोली में सेना का पड़ाव होकर बारह खेड़ों के मीणों का स्वामी के चरणों में गिरना ६ विजय के अर्थ गमन करके बीचड़ी नामक ग्राम में शत्रु सेना से मिलने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौरानवें २९४ मयूख हुए ॥

॥ चटकप्लुत ॥

दुव२ सेन बग्ग लीनी, *कलि कोप अंख कीनी ॥
फन सेसनाग फुट्टे, †दिग्दंति दंत तुट्टे ॥ १ ॥
धरकी बराह दड्ढा, गिलि अंग कुम्भ ठड्ढा ॥
दिगपाल कंप लग्गे, पुंट[1] इन्द्र१४ भीति भग्गे ॥ २ ॥
सब सिंधु[2] सेतु लुप्पे, कलि[3] जानि वीर कुप्पे ॥
सिवकी समाधि जग्गी, नवमाल[4] आस लग्गी ॥ ३ ॥
कइलास छोरि काली, चढि सिंह संग चाली ॥
चउसट्ठि६४ चौंकि आई, घन मंडि नच्च घाई ॥ ४ ॥
दुवपंच५२ वीर दोरे, जैंव[5] डाकिनीन जोरे ॥
कलिंकार[6] मोद पग्गे, महती[7] बजान लग्गे ॥ ५ ॥
गुन अच्छरीन गाये, अति मोद झुंड आये ॥
नभ[8] गिद्धनीन छायो, रवि रेनुमैं लुकायो ॥ ६ ॥
चहुवान बाजि[9] नक्खे, लखि आखु[10] जानि तक्खे[11] ॥
किलकार वीर बज्जी, समसेर मार सज्जी ॥ ७ ॥
कटि टोप जात झोंके[12], जिम पत्र जोगनीके ॥
तरवारि धार धप्पैं, अरि केतें[13] स्वर्ग अप्पैं ॥ ८ ॥
कर धूंप[14] भूप धायो, इत नंदराम आयो ॥
बिथुरी कजाक[15] बानी, मिलि वीर धीर मानी ॥ ९ ॥
बिबि[16]२ ओर तीर बज्जे, लखि भीरु नीर लज्जे ॥

* युद्ध में † दिशाओं के हाथियों के ॥ १ ॥ १ भूमि के चौदह पुट (लोक) डर कर भागे ॥ २ ॥ २ समुद्रों ने मर्यादा छोड़ी ३ युद्ध जानकर वीर कोपे ४ नवीन मुंडमाला की आशा लगी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ वेग ६ युद्ध करानेवाला (नारद) हर्षित हुआ और ७ वीणा बजाने लगा ॥ ५ ॥ ८ आकाश ॥ ६ ॥ ९ घोड़े डाले (चलाये) १० चूहे को देख कर ११ ताक्षा नाग ॥ ७ ॥ १२ झोंके जाते हैं (निरन्तर प्रहार को डिंगल भाषा में झोंकना कहते हैं) १३ कितने ही शत्रुओं को ॥ ८ ॥ १४ शस्त्र विशेष हाथ में लेकर १५ युद्ध की वार्ता (डिंगल भाषा में युद्ध का नाम कजिया है जिस संबंधी) ॥ ९ ॥ १६ दोनों ओर

बरछीन वेध लग्गैं, परि सूर *मुत्ति पग्गैं ॥ १० ॥
घट के कटार कड्ढैं, मुख सूर नूर वड्ढैं ॥
फबि सेल पार फुट्टैं, छक लोह प्रान छुट्टैं ॥ ११ ॥
फटि घाय छिंछि झल्लैं, †जलजंत्र जानि चल्लैं ॥
सिख नंदरामके जे, लखि ‡ओदकैं कलेजे ॥ १२ ॥
फटि §कोच गात फट्टैं, जिम केलि ¶गब्भ कट्टैं ॥
गहि ÷कुंत नाभि गेरैं, धमनीन [1]मूल हेरैं ॥ १३ ॥
उलटंत [2]सादि आली, हय होत केक खाली ॥
मग [3]ओर खेह डुल्ले, जम स्वर्ग वट्ट खुल्ले ॥ १४ ॥
गजमत्थ फेट फुट्टैं, जिम [4]गोत्र [5]कूट तुट्टैं ॥
परि भीरु [6]सोक कूईं, परभोग ज्यों [6]असूईं ॥ १५ ॥
गति हीन केक फीके, मन जानि [7]संजमीके ॥
तजि प्रान जात सच्छी, तरु [8]ठुंड जानि पच्छी ॥ १६ ॥
सुधि भुल्लि केक [9]वक्कैं, जड़ जानि सीधु छक्कैं ॥
कटि जात अंत [10]हीसौं, जिम पाप [11]जान्हवीसौं ॥ १७ ॥
तरवारि [12]भाँ चलक्कैं, जिम [13]संपिका सलक्कैं ॥
हुव रत्त रत्त अंगे, [14]रँजतत्व जानि रंगे ॥ १८ ॥
दविजात केक [15]श्रेनी, नैर [16]अस्व ती कि एँनी ॥

*मुक्ति पाते हैं॥१०॥११॥†फुँहारा‡डरे॥१२॥§कवच फटकर शरीर फटते हैं मानों ¶ केल वृक्ष का गर्भ कटता है ÷ भाला लेकर नाभि में घुसेड़ते हैं सो १ मानों नाड़ियों (नसों) का मूल हेरते हैं कि कहां से निकली हैं ॥ १३ ॥ २ सवारों की पंक्ति ३ यमराज ने स्वर्ग का मार्ग खोल दिया ॥ १४ ॥ ४ पर्वतों के शिखर ५ कूप (कुए) में ६ जैसे दूसरे के ऐश्वर्य भोगने से असूया करनेवाला पड़े तैसे ॥ १५ ॥ ७ इन्द्रियों को रोकनेवाले का सच्छी (घृणा के साथ) अर्थात् शरीर की घृणा करके प्राण जाते हैं ८ ठूंठ (बिना पत्तों के वृक्षमूल) को पक्षी छोड़े जैसे ॥ १६ ॥ जड़ मनुष्य ९ मद्य में छकै जैसे १० हृदय से ११ गंगा से ॥ १७ ॥ १२ कान्ति १३ विद्युत (बिजुली) १४ रंगरेज ने अथवा रजोगुण में रंगे हैं ॥ १८ ॥ १५ अश्व जाति के पुरुष से १६ मृगी जाति की स्त्री

मिलि प्रेत डाकिनीसौं, छिय मीँडि गाढ हीसौं ॥ १९ ॥
कुच तिक्ख तास गहैं, जिम बिद्धकैं सु बहैं ॥
कति जोगिनीन छीकैं, वढि जीत लोभ हीकैं ॥२० ॥
सुहि पुंव्व भिंटनेमैं, जनु देत पुष्टि प्रेमैं ॥
कति लै रु संडं लेटैं, प्रतिसंम्क जानि भेटैं ॥ २१ ॥
उदघृष्ट केक सज्जैं, कति पीड़िते न रज्जैं ॥
इम मत्त प्रेत सोहैं, मिलि च्यारि४भाँति मोहैं ॥ २२ ॥
भुव गाम बीचड़ीकी, हुव रत्त रत्त हीकी ॥
भिरि नंदराम भज्ज्यो, लखि खत्रि नीर लज्ज्यो ॥ २३ ॥
सिख तास संम्मुहाये, सैलभा कि दीप धाये ॥
तिन्ह तक्कि भूप नेरे, परि बीच खग्ग पीरे ॥ २४ ॥
इठ लग्गि हड्ड मारैं, दुव हत्थ खग्ग भ्कारैं ॥
कटि वग्ग बाजि फेरैं, हठि नंदराम हेरैं ॥ २५ ॥
भजिकैं छिप्यो सु खत्री, जिम सेन लाव पंत्री ॥
सिख हड्ड दोहु२सज्जे, बिकराल बाढ बज्जे ॥ २६ ॥
अति जंग संकुल्यो व्हाँ, अवमर्द दोन२क्यो व्हाँ ॥
तरवारि केक तुट्टैं, घरियारि जानि फुट्टैं ॥ २७ ॥

दब जावे (जैसे काम शास्त्र में शश, मृग, अश्व इन तीन प्रकार के पुरुष और मृगी, वड़वा, हस्तिनी ये तीन प्राकर की स्त्रियें लिखी हैं जिन की व्याख्या दूजी और तीजी राशि में विस्तार पूर्वक करदी गई है) १ मसल (कुचल) कर ॥ १९ ॥ २ उस डाकिनी के ३ बडा पेधन करते हैं ४ केवल लोभ करके अथवा हृदय में जीतका लोभ करके ॥ २० ॥ ५ प्रथम मिलाप में ६ नपुंसक ७ शय्या पर ॥ २१ ॥ ८ घर्षण (रगड़ना) ९ पीड़ा देतेहुए तृप्त नहीं होते इन उद्घृष्ट और पीड़ित आदि का विषय तीजी राशि में लिख आये हैं अश्लीलता के कारण अधिक लिखना नहीं चाहते ॥ २२ ॥ २३ ॥ १० सन्मुख हुए ११ मानों दीपक पर पतंग दौड़े १२ समीप १३ तरवार से पीड़ित किये ॥२४॥ ॥ २५ ॥ १४ शिकरे से लावा पक्षी ॥२६॥ दोनों ने १५ अवकाश रहित, पीड़ाकारि

निकसंत नैंन गोटे, फदकैं कि भेक[1] छोटे ॥
कति चाप[2] खैंचि[3] झारैं, जिम काल[4] डाच[5] फारैं ॥ २८ ॥
बिच[6] तास भाल ठट्ठा, सुहि जानि तिक्ख दट्ठा ॥
फटि पेट अंत दीसी, पलटी कि पन्नगीसी ॥ २६ ॥
चउ ४ फार हीय मन्ने, जिम कंज[7] च्यारि ४ पन्ने ॥
फटि कालखंज[8] खुल्ले, फबि ज्यों पलास फुल्ले ॥ ३० ॥
सर लीन तुंद[9] कूपी, बिल जानि नाग रूपी ॥
इम भूप जंग मंड्यो, सिख व्रात[10] खग्ग खंड्यो ॥ ३१ ॥
अवसिष्ठ[11] केक लज्जे, मुख अग्ग भीत भज्जे ॥
तिन पिट्ठि हड्ड धाये, त्रय ३ कोसलौं भजाये ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल सोदर[12] सुवन, नंदराम गय भज्जि ॥
सिख कितेक सम्मुह मरे, नट्ठे[13] कति जैंल[14] लज्जि ॥ ३३ ॥
सानुकूल नृपकी नियंति[15], लग्गे लोह न अंग ॥
अरि आहव[16] भज्जे भैंरकि[17], जिम लखि बाज कुलंग[18] ॥३४॥
नागर द्विज नृप भृत्य इक, नंदराय अभिधान ॥
सोहु सूर सम्मुह भयो, किन्नौं हद घमसान[19] ॥ ३५ ॥
मारे सिख बिक्रम अमित, जुरयो बिबिध जैंयकार[20] ॥
लग्गे बंभन बीरकैं, सत्त ७ कृपान[21] समार[22] ॥ ३६ ॥

युद्ध किया ॥ २७ ॥ १ मैंडक २ धनुष को ३ खैंचकर जैसे ४ यमराज ५ मुख फाड़ता है ॥ २८ ॥ ६ उस धनुष के बीच में तीर लगा है सोही मानों यमराज की तीखी दाढ है ॥ २६ ॥ ७ कमल है ८ कलेजा ॥ ३० ॥ ९ पेट की नाभी में बाण घुसते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है १० सिक्खों के समूह को काटा ॥ ३१ ॥ ११ अवशिष्ट (बाकी के) ॥ ३२ ॥ १२ राजामल के भाई का पुत्र १३ नाठे (भागे) १४ पराक्रम को लजाकर ॥ ३३ ॥ १५ भाग्य १६ युद्ध से १७ चमक कर १८ सिचाण को देखकर कुलंग पक्षी भगै जैसे ॥ ३४ ॥ १९ युद्ध ॥ ३५ ॥ २० जय करनेवाला २१ तरवार २२ मार (प्रहार) सहित ॥ ३६ ॥

सोधि खेत नृप घायलन, लये नृजानन[1] डारि ॥
बुंदिय आप रु भटन जुत, प्रबिस्यो अररन[2] फारि ॥ ३७ ॥
उदयराम पकरयो बनिक, लये अयुत दम[3] दम्म ॥
बैठो नृप बुंदिय तखत, करि निज हत्थन कम्म[4] ॥ ३८ ॥
संबत दुव नभ धृति१८०२समय, सावन तीज३ वलच्छ[5] ॥
असिबर[6] बल किन्नों अमल, अधिपति बुंदिय अच्छ ॥ ३९ ॥
सुनि कछवाह दलेलसों, अक्खी मम दल[7] संग ॥
मारहु जाय उमेदकों, जुरहु वडे बल जंग ॥ ४० ॥
सटि दलेल सुनतहि नटयो, किन्न अरज करजोरि ॥
मंडहु तुम अप्पने[8] अमल, मैं बुंदिय दिय छोरि ॥ ४१ ॥
ताके[9] कर लिखवाय तब, कंग्गर[10] कूरम[11] लीन ॥
नैनवा रु करउरनगर, रक्खे तास[12] अधीन ॥ ४२ ॥
अवर देस अप्पन करन, गिलन[13] अजीरन ग्रास ॥
बुंदियपर पिल्लिय[14] बिकट, पृतना[15] सहँस पचास५०००० ॥ ४३ ॥
नाम नरायनदास इक, खत्री रन हमगीर ॥
राजामल सिवदासको, भ्रात सज्यो बरबीर ॥ ४४ ॥
तिहिँ करि कूरम सेनपति, पठयो बुंदिय लैन ॥
संग दये उमराव सब, उद्धत जे रन ऐन[16] ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ हड्डेन्द्र

---

१ डोलियों में २ कवाड़ तोडकर ॥ ३७ ॥ ३ दंड के दश हजार रुपये ४ अपने हाथों से कार्य करके ॥ ३८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष की ६ श्रेष्ठ तरवार के बल से ॥ ३९ ॥ ७ मेरी सेना साथ लेकर ॥ ४० ॥ ८ अपना अधिकार ॥ ४१ ॥ ९ दलेलसिंह के हाथ से १० पत्र लिखाकर ११ कछवाहे ईश्वरीसिंह ने लिया १२ दलेलसिंह के आधीन रक्खे ॥ ४२ ॥ १३ अजीर्ण के ऊपर ग्रास (निवाला) गिटने के लिये भयंकर १५ सेना १४ भेजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ युद्ध के स्थान में अनम्र ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा क्षत्रियों

सपत्नसैन्यपींचड़ीयुद्धकरणखत्रिनन्दरामपलायनविजयिरावराट्स्वपुरप्रवेशनदलेलसिंहबुन्दीत्यजनपुनःकूर्मराजपृतनाप्रेषणं चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥　　॥२९५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

सज्यो[1] अब कूरम भूपति सैन, लगे भट घुम्मन बुंदिय लैन ॥
बन्यो समयो यह दुस्सह आय, जहाँ फटि बाल तजैं निज माय[2] ॥१॥
पिता सुतकों पतिकों निज नारि, तजैं वह बत्त[3] बनी भयकारि[4] ॥
जनैं जननी जु गिनैं सब ठीक, वहै नर आँहि न मध्य १०००००००००००००००० अनीक ॥ २ ॥
वहै नर आतम संबिद[6] धन्न्य, वहै नर जो न ततो मृग बन्न्य[7] ॥
वहै नरही गुन तीनन३ ईस[8], वहै अवनीसनको अवनीस[9] ॥ ३ ॥
वहै जिम[10] कूट तथा इक सार[11], वहै सब ओर[12] न सुद्द अपार ॥
वहै नर तीन३ अवस्थन[13] एक, वहै सबघाँ[14] सित धारन तेक[15] ॥४॥

के इन्द्र का शत्रु सेना से पींचड़ी नामक ग्राम में युद्ध करना १ नन्दराम का भागना २ जयपाये हुए रावराजा का अपने नगर में प्रवेश करना ३ दलेलसिंह का बुन्दी छोडना ४ फिर कछवाहों के राजा का सेना भेजने का चौदहवां मयूख १४ समाप्त हुआ आदि से दोसौ पिचानवें २९५ मयूख हुए ॥

१ सेना २ अपनी माता को ॥ १ ॥ ३ वार्ता ४ भयंकर, माता के जन्म दिये हुए सभी मनुष्यों की गणना कीजावे तो वह ठीक मूल में लिखी हुई संख्या होती है (पुराणों के मत से इस संसार के सम्पूर्ण मनुष्यों की यह संख्या है) सो तो सभी इस सेना में नहीं ५ है (यदि उक्त संख्या के सभी मनुष्य एकत्र होते तो वह ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी मिल जाता) ॥ २ ॥ ६ वह आत्मज्ञानी पुरुष धन्य है और जो वह आत्मज्ञानी पुरुष नहीं है तो उसके विना अन्य पुरुष तो ७ वन के पशु हैं ८ वही आत्मज्ञानी पुरुष सत, रज, तम तीनों गुणों का पति है ९ वह राजाओं का राजा है ॥ ३ ॥ १० इस माया की रचना में ११ सार (तत्व, स्थिर अंश) रूप वही है १२ वह सब ओर व्याप्त है १३ भूत, वर्तमान, भविष्यत्, तीनों अवस्थाओं में वह एक रूप है १४ वह सब ओर श्वेत धारा का १५ खड्ग है ॥ ४ ॥

वहै नरही सब कृत्रिम सक्खि, वहै यह मोघ रह्यो बिच रक्खि ॥
वहै[3]हि वहै गुनको नहिं जोग, वहै बिखई[4] यह अन्न्य सु भोग॥५॥
वहै अज[5] इष्ट अनादि अनंत, गुनत्रय[6]३ नारियको वह कंत[7] ॥
वहै नहितो भव नाहक पाय, बिगारत बालिस[9] जुव्वन माय ॥ ६ ॥
वहै इक१रुंधंत[10] नाहक नारि, वहै सठ अन्नहिको खयकारि[11] ॥
वहै पय[12] मात बिगारनहार, वहै रहि व्यर्थ करैं भुव[13] भार ॥ ७ ॥
भयो नर नारि न लंच्छन[14] एह, नहीं कुच मुच्छनै[15] सुंदर देह ॥
हुते नहिं याविधि[16] के भट हाय, बडे मरनीक तथापि[17] वलाय[18] ॥८॥
कह्यो हम ह्याँ कछु बोध[19] बिचार, सुयो वह बीर गिनैं सब सार ॥
कहा मरनौं अरु जीवन तास[21], कहा सुख दुक्ख सबै इक१भास[22] ९
वहै हि गिनैं निजही[23] सब बत्त, यहै रन तो भल होवहु अत्त[24] ॥
परंतु न हे इस कूरम[25] बीर, गिने सुख अच्छरि[26] स्वर्ग सरीर ॥ १०॥

वही मनुष्य१इस जगत् का साक्षि रूप है वही इस२नाशवान् (झूठे) संसार को रख रहा है३वह ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप आप ही आप (स्वयंज्योति) है, उसमें किसी गुण का योग नहीं है४वह भोग करनेवाला है और यह अन्य जगत् उसका भोग्य है॥५॥५ अजन्मा [जिसका कभी जन्म नहीं होता है] ६ तीन गुण रूपी स्त्रियों का वह ७ पति है ८ वैसा ब्रह्मज्ञानी नहीं है तो यह संसार वृथा पाकर ९वह मूर्ख माता का यौवन वृथा बिगाड़ता है ॥ ६ ॥ वह मूर्ख वृथा एक स्त्री को १० रोकता है ११ वह मूर्ख अन्न का नाश करनेवाला है१२वह मूर्ख माता के दूध को बिगाड़नेवाला है१३भूमि पर व्यर्थ भार करता है ॥ ७ ॥ यह नर होगया है१४स्त्री का चिन्ह नहीं है, नहीं तो स्त्री ही है, इसके कुच नहीं हैं१५ मूंछों से देह सुन्दर है परन्तु पुरुष नहीं है खेद की बात है कि१६इस सेना में इसप्रकार के आत्मज्ञानी वीर नहीं थे१७तोभी बडे मरनेवाले१८बलाय थे (वन पशु विशेष जिसका अत्यन्त क्रोधी होना प्रसिद्ध है और राजपूताने में उसको बूट और बागड़ भी कहते हैं और फारसी में आफत (आपदा)का नाम बलाय है)॥ ८ ॥१९ज्ञान२०सब में सार रूप २१ उस आत्मज्ञानी के मरना जीना क्या है २२ एक सरीखे हैं ॥ ९ ॥ २३ वह सब बात को अपनी ही जानता है तो यह युद्ध भी २४ यहां भले ही होवै २५ कछवाहा ईश्वरीसिंह के वीर इसप्रकार के नहीं थे २६ अप्सराओं के साथ स्वर्ग में शरीर का सुख

रु एहहि केवल[1] सूग्न धर्म, सुही तिन्ह रक्खि कसे दृढ[2] बर्म ॥
सजे भट[3] कूरम[4] मानज सूर, [5]खँगारज[6] नाथज पानि[7]प पूर ॥ ११ ॥
[8]कल्यानज [9]पूरनमल्ल कुलीन, द्वितीयरहु [10]कुंभज [11]आजि अदीन ॥
जथा वनबीर चतुर्भुज[12] जात, घनैं सिव ब्रह्मज [13]इष्टप्रघात ॥ १२ ॥
सजे [14]बलिभद्रज [15]सेखँज सत्थ, घनैं [16]सुरतानज [17]संघ समत्थ ॥
[18]नरूजं रु [19]कुंभज [20]अच्छरि नाह, कढे इन्ह आदि बडे कछवाह ॥१३॥
सज्यो [21]दलईस नरायनदास, लये सब संग जग्यो बल जास ॥
चल्यो दल जैपुरकौं तजि [22]तत्त, बढी रन जित्तहिं जित्तहिं बत्त ।१४।
खुली गजपिट्ठि धुजा [23]पचरंग, चले हय मप्पत [24]छोनि मलंग ॥
भई सह [25]आलिय कालिय गैल, बडे हित [26]उग्र चढे चलि बैल।१५।
चल्यो [27]महती गहि नारद लार, चले गन बावन५२त्यौं [28]पैल प्यार ॥
चली चउसट्ठि६४मलंगत चाल, चल्यो गहि खप्पर खित्तरपाल १६
चले गन डाकिनि [29]जैच्छ चुरेल, पिसाच रु रक्खस गुह्यक गैल ॥
चले कति [30]डंकत इक्कहिं पाय, चले कति [31]दोउन२भू धमकाय॥१७॥
चले कति मंडत नट्ट [32]कुलट्ट, चले कति चौंकि हसे अटअट्ट ॥
चले गन गिद्धनि चिल्हनि घोर, शृगाल रु कंक महा रन सोर ॥१८॥
[33]गहक्किय सेन [34]सिवा किय गोन, चल्यो दल कुम्म [35]प्ररुद्धत पोन ॥

माननेवाले थे ॥ १० ॥ अरु १ वीरों का केवल यही धर्म है, सोही उनने रख कर दृढ २ कवच कसे ३ कछवाहे वीर ४ मानसिंहोत (राजावत) ७ पूर्ण पराक्रमवाले ५ खंगारोत ६ नाथावत ॥ ११ ॥ ८ कल्याणोत ९ पूर्णमल्लोत १० दूसरे कुंभावत ११ युद्ध में दीनता रहित १२ चतुर्भुजोत १३ कितने ही शिव ब्रह्म पोते जिनको युद्ध ही इष्ट है वे उस युद्ध में सजे ॥ १२ ॥ १४ बलिभद्र के वंश के बलिभद्रोत १५ सेखावत १६ सुरताणोत १७ समर्थ समूह १८ नरूके १९ कुंभावत २० अप्सराओं के पति ॥ १३ ॥ २१ सेनापति २२ तहां ॥ १४ ॥ २३ जयपुर की ध्वजा पांच रंग की है २४ भूमि को २५ सखियों सहित कालिका साथ हुई २६ शिव॥१५॥२७ महती नामक वीणा को २८ मांस के प्यार से ॥१६॥२९ यक्ष ३० एक पैर से कूदतेहुए ३१ दोनों पैरों से॥१७॥ ३२ कुलांट ॥ १८ ॥३३ प्रसन्नता की बोली बोल कर ३४ स्यालनियें ३५ पवन को रोकती

अटैं कति मंडि बरच्छिन वार, करैं कति लच्छयन बेध कटार१९
किते खुरलीपैंटु सद्धत खग्ग, मिलैं रचि केक तुपक्कन मग्ग ॥
बनैं कमनैतन पच्छिन बेध, सजैं कति कुंतन केलि सुमेधं ॥२०॥
दिपैं रसबीर गिनैं त्रन देह, छुहे निज साहस देत न छेह ॥
छलैं छक हूर चहे कति छैल, चलैं द्रुत मंडित कुंकुम चैल ॥२१॥
मलप्पत बाजिन के मचकाय, धरातल दब्बत वेग धुजाय ॥
चल्यो दल दुद्धर यों दरकुच्च, उठावत दुग्गनको छक उच्च ॥ २२ ॥
लग्यो भर भोगि पैलट्टन सेस, भयो गिलिअंगदरी कमठेस ॥
तुटी लखि दड्ढ दयो किरि तुंड, भरैं रैद कंपिग दिग्गजझुंड॥२३॥
उडे खुलि केतन कुंभिन कंध, डिगे डर डंकन भीरुन बंध ॥
छिप्यो निस चंद रु बासर अक्क, चहैं निस घूक तथा दिन चक्क२४
सुपैं सुधि नाँ निस बासर संधि, बन्यों तम तोमं प्रभा घन बंधि ॥
चले इत सद्दल मद्दल चौंस, मिले इत बद्दल भद्दल मास ॥ २५ ॥
छल्यो इत पानिप ओ उत नीर, सहायक त्यों रसबीर समीर ॥
घुरैं इत नोबति ओ उत गज्ज, इतैं भुव पाय उतैं नभ सज्ज॥२६॥

हुई कछवाहों की सेना चली १ निशानों (चिन्हों) का ॥ १९ ॥ २ शस्त्राभ्यास में चतुर ३ भालों से क्रीड़ा करते हैं ४ श्रेष्ट बुद्धिवाले ॥ २० ॥ ५ क्रोध में आये हुए ६ रसिक ७ केसरिया वस्त्र ॥ २१ ॥ ८ कितनेही घोड़ों को उडाते हैं ॥ २२ ॥ ९ भार से शेषनाग फणों को १० पलटने लगा ११ कमठ अपने अंगों को गिट (समेट) कर कंदरा रूप होगया १२ बराहने १३ दन्त तूट कर दिग्गज धूजे ॥ २३ ॥१५हाथियों के ऊपर१४ध्वजा खुल कर उडी१६ भय से१७कायरों के बंध डिग कर डरे, रात्रि में चंद्रमा और १८ दिन में सूर्य छिपा, घूघू (उलूक) रात्रि को और १९ चकवा दिन को चाहने लगे ॥ २४ ॥परंतु दिन और रात्रि की संधि (संध्या) की सुधि नहीं रही इसप्रकार २० अंधेरे का समूह२१मेघ की कांति बांध कर रही२२इधर तो शब्दायमान होकर २३ मर्दल (वाद्य विशेष) २४ युद्ध की खबर देकर चले और इधर २५ भाद्रपद मास के बद्दल मिले ॥ २५ ॥ २६ सेना रूपी घटा में पराक्रम और मेघ की घटा में पानी बढा और इनके सहायक सेना में वीर रस और मेघ में २७ पवन हुआ इधर नौबत का शब्द और उधर २८ गर्जना हुई और सज्जित होने को इधर

इन्हैं न चहैं रु उन्हैं जग आस, वनैं इत शस्त्र उतैं जलवास ॥
इतैं बहुरंग उतैं सित स्याम, लसैं इत ओ उत बेग ललाम ।२७।
लसैं इत अग्र उतैं लहरून, दिपैं मुद सूर मयूरन दून ॥
इतैं गजदंत उतैं बक ब्रात, इतैं उत दौरत अग्र दिखात ॥ २८ ॥
इतैं उत पक्खर दद्दुर बुल्लि, इतैं उत गिद्ध रु चातक फुल्लि ॥
इतैं उत खग्ग रु बिज्जुन ओघ, इतैं उत होत धरा नभ मोघ।२९।
इतैं उत ओज इरम्मद भास, रजोगुन बूढनि ब्रात बिलास ॥
झरैं सर यौं उत ऊसर जुत्त, इतैं उत भूपन भम्मन पुत्त ॥ ३० ॥
कहैं इत लैन मही कछवाह, कहैं उत पिक्खिं हमैं वह चाह ॥
कहैं यह नीति बिथारन कत्थ, कहैं वह अन्न प्रचारन अत्थ ।३१।

भूमि प्राप्त हुई और उधर आकाश प्राप्त हुआ ॥ २६ ॥ १ इस सेना को कोई नहीं चाहता था और मेघ की आशा संसार करता था; इधर शस्त्रों का और उधर जल का २ निवास है अथवा जल ही वस्त्र है सेना में अनेक रंग हैं और उधर ३ स्वेत और काला रंग है और इधर उधर दोनों ओर ४ सुन्दर वेग शोभायमान है ॥ २७ ॥ इधर सेना का ५ अग्र भाग और उधर लहरें शोभित हैं, सेना में वीरों को और मेघ में मयूरों को ६ इन दोनों को हर्ष शोभा देता है अथवा इन को दुगुना हर्ष शोभा देता है, सेना में हाथियों के दंत और मेघ में बक (बुगला) पक्षियों का ७ समूह है जो दोनों ओर आगे दौड़ते दीखते हैं ॥ २८ ॥८इधर पाखरें और उधर दादर (मेंडक) बोलते हैं और इधर ग्रीध और उधर चातक फूलते हैं९इधर तरवारों का और उधर बिजुलियों का समूह है, इधर सेना से ढक कर पृथ्वी नहीं दीखती और उधर मेघ से ढक कर आकाश नहीं दीखता ॥२९॥ इधर१०पराक्रम और उधर ११ मेघज्योति का प्रकाश होता है और इधर १२ रजोगुण (रजोगुण का रंग लाल है) और उधर १३ वीरबहूटी (सावण की डोकरी) का विलास है इधर बाणों की वर्षा होती है और उधर१४ऊसर भूमि में बरसता है१५इधर राजाओं के पुत्र हैं और उधर १६ ब्रह्मा का पुत्र (इन्द्र) है ॥ ३० ॥ इधर कछवाहा भूमि लेने को कहता है और उधर इन्द्र पृथ्वी १७ देखने की चाह कहता है अथवा हम को देखते ही वह भूमि चाहना करती है, यह (कछवाहा) तो नीति १८ फैलाने की वार्ता कहता है और वह (मेघ) अन्न का प्रचार करने के १९ अर्थ कहता है ॥ ३१ ॥ इधर तो भूमि को ये अपनी कहते हैं और उधर बहुत घुमंड कर

कहैं इत है सब अप्पन भुम्मि, कहैं उत अप्पन है घन घुम्मि ॥
कहैं इतहैं रवि ढंकन हार, कहैं उत बद्दल ज्यों न बिथार[1] ॥३२॥
कहैं इत चाप[2] चढावन बत्त, कहैं उत सज्जित आयत[3] अत्त ॥
इतैं रज अद्रि[4] उडावन बाद, कहैं उत रक्खहिं संवर सांद[5] ॥ ३३ ॥
कहैं इत मंडहिं गोलिन गान, कहैं उत मूक करैं करकान[6]॥
कहैं इत बानन छावन देस, कहैं उत बुंदनतैं न बिसेस ॥ ३४ ॥
कहैं इत आयुध बुट्ठि अनल्प[7], कहैं उत बुट्ठि करैं हम कल्प[8] ॥
इतैं प्रभु कुम्म[9] उतैं सुरईस[10], इतैं उत सज्जित छोनिय[11] सीस । ३५ ।
बढे दल[12] बद्दल यों रचि बाद, सु सोनित संवर मंडन सांद[13] ॥
दिपे[14] प्रविसे इत बुंदियदेस, अरे बिथुरे[15] उत भुम्मि असेस ॥ ३६ ॥
बन्यौं इम कूरम सेन प्रयान, सुन्यौं नृप बुंदिय धर्म सयान ॥
उयो[16] रनपैं जिम व्याह उछाह, सजे मनबंछित जानि सनाह[17]। ३७ ।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बु-

मेघ अपनी कहता है सेना कहती है कि मैं खेह से सूर्य को ढकनेवाली और मेघ कहता है कि तुमारा १ विस्तार बादलों के समान नहीं है ॥ ३२ ॥ इधर २ धनुष चढाने की बात कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि यहां हमारा धनुष ३ लंबा है, इधर तो ४ पर्वतों की रजी करके उडाने का बाद (हठ) करते हैं और उधर ५ जल का कीचड़ करके उनकी (पर्वतों की) रक्षा करना कहते हैं ॥ ३३ ॥ सेनावाले कहते हैं कि गोलियों का गान करेंगे और मेघ कहता है कि ६ गड़ों (ओलों) से बाधिर कर देवेंगे, इधर देश को बाणों से छादित करना कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि वे बाण बुंदों से विशेष नहीं हैं ॥ ३४ ॥ इधर ७ बहुत शस्त्रों की वर्षा करना कहते हैं और उधर वृष्टि करके ८ प्रलय करदेना कहता है, इधर तो ९ कछवाहा (ईश्वरीसिंह) स्वामी है और इधर १० इन्द्र स्वामी है, इधर उधर दोनों ११ पृथ्वी पर सज्जित होते हैं ॥ ३५ ॥ इसप्रकार १२ सेना और बादल दोनों बाद करके रुधिर और पानी का १३ कीचड़ करने को चढे १४ सेना तो बुंदी के देश में प्रवेश करके शोभित हुई और मेघ हठ करके संपूर्ण भूमि पर १५ फैल गया ॥ ३६ ॥ १६ युद्ध पर उदय हुआ (उठा) १७ कवच ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तम राशि में, बुन्दी विजय करने

न्दीविजयार्थकूर्मराजकटकनिस्सरणस्तनयित्नुसहाऽऽधिक्याभिमा-
ननतद्बुंदीशश्रवणोत्साहवर्द्धनं पञ्चदशो १५ मयूखः॥१५॥२६६॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लै बुंदिय नृप [1]प्रसभ लगि, [2]खमगं पताकन खुल्लि ॥
[3]अबलाजुत [4]अनुजा अनुज, कोटा सन लिय बुल्लि ॥ १ ॥
दीपकुमरि अरु [5]दीपहरि, तब बुल्ले छक तोर ॥
रानी भल्लिय सह रुचिर, जय रन जुब्बन जोर ॥ २ ॥
कोटापति नृप बित्त लै, दूनों गरब दिखाय ॥
मन अरि उप्पर मित्र बनि, लिय बुंदिय छक लाय ॥ ३ ॥
सो लखि नृप कृतघन समुझि, उदासीन रहि [6]अत्थ ॥
भुजदंडन लिय अप्प भुव, सजि [7]असु त्याग समत्थ ॥ ४ ॥
[8]गजब कार कोटेस गनि, भयकारक अब भूप ॥
सिर उठाय मूढ न सकत, [9]रद तोरे अहि रूप ॥ ५ ॥
[10]अंतहपुर संजुत अनुज, [11]बुल्ले नृप इहिँ बेर ॥
कोटापति कछुहु न कह्यो, संकित मन गिनि सेर[12] ॥ ६ ॥
तिनहु आय [13]भिंट्यो त्वरित, निज प्रभु भ्रात निसंक ॥
रुचि [14]उपेत भूपति रह्यो, [15]आतपत्र धरि [16]अंक ॥ ७ ॥
[17]अह्न सोलह १६ भुग्ग्यो अधिप, रहि सूरन गति राज ॥

के अर्थ कछवाहों के राजा की सेना का निकलना १ उसका मेघ के साथ अधिकता का अभिमान २ उस को बुन्दी में सुनने से उत्साह बढने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छिनवे २९६ मयूख हुए ॥
१ हठ लग कर २ आकाश मार्ग में ३ स्त्री सहित ४ छोटी बहिन और छोटे भाई ॥ १ ॥ ५ दीपसिंह के ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ यहां ७ प्राण छोडने को ॥ ४ ॥ ८ गजब करनेवाला ९ दन्त तूटेहुए सर्प के सदृश ॥ ५ ॥ १० जनाना सहित ११ बुलाये १२ सिंह रूप जानकर ॥ ६ ॥ १३ मिला १४ रुचि सहित १५ छत्र सहित १६ भाई को गोदि में लिया ॥ ७ ॥ उस राजा ने वीरों की गति से रह कर १७ सौलह

सबल सज्यो दिन सत्रहम१७, सत्रुन बिसम समाज ॥ ८ ॥
असित भद्द पंचमि५ दिवस, चल्ल्यो अरि चतुरंग[1] ॥
सत्तमि७ दिन भूपति सुन्यौं, जामिनि[2] सुत्तैं जंग ॥ ९ ॥
रैंहसि[3] निवेदिय[4] नाजरन, दासिन जुत इत दाय ॥
जगि पहिलैं रानिय जंप्यो[5], जग्गे अद्रिन लाय ॥ १० ॥
सिंहनि[6] अक्खिय सिंहसौं, कित सोवहु अब कंत[7] ॥
जिन हत्थिन कुंभन जलज[8], ते आवत घुमडंत ॥ ११ ॥
जिनहित लंघन लंघिकैं, खद्दो और न मंस[9] ॥
सहजैं ते आवत सुनैं, वारन[10] भद्दन वंस ॥ १२ ॥
लंबी हत्थल लंक[11] तनु, उंछट[12] परक्खहु आज ॥
भूख न कछुहु भावते[13], रोसिल्ले मृगराज ॥ १३ ॥
जिन कुंभन नख नाहके, बनैं घटा जिम बीज ॥
हम कौतुक वह पिक्खिहैं[14], खुल्लहु रंचक[15] खीज ॥ १४ ॥
इतर[16] मृगन अपराधपैं, नयन उघारत नाहिं ॥
त्यौंही जो यह तक्किहौ[17], यौंही तौ नह आंहि[18] ॥ १५ ॥
भूख निकासहु भोनतैं[19], गंजि गंजन[20] बल गह्ह ॥

दिन तक राज्य भोगा और सत्रहवें दिन शत्रुओं के विषम समूह पर सजा ॥ ८ ॥ १ सेना २ रात्रि में सोते हुए ने ॥ ९ ॥ ३ एकान्त में ४ शीघ्र. रीति पूर्वक ५ रानी ने कहा ॥ १० ॥ ६ रानी रूपी सिंहनी ने राजा रूपी सिंह से कहा ७ हे पति ८ जिन हाथियों के कुंभस्थलों में मोती हैं वे घुमं-ड कर आते हैं ॥ ११ ॥ जिन भद्र जाति के हाथियों के कारण उपवास कर-के अन्य ९ मांस नहीं खाया है वे भद्र जाति के १० हाथी सहज में आते सुने हैं ॥ १२ ॥ लंबी हाथल और पतली ११ कमर की १२ फुरती और दाव की आज परीक्षा करनी है सो १३ हे प्यारे क्रोधवाले सिंह अब भूखे मत रहो ॥ १३ जिन हस्तियों के कुंभस्थलों में पति के नख घटा में विद्युत् के समा-न बनते हैं वह खेल हम १४ देखेंगी सो १५ कुछ क्रोध करो ॥ १४ ॥ जिसप्रकार तुम. १६ अन्य मृगों के अपराध पर नेत्र नहीं खोलते हो उसीप्रकार जो इनको १७ देखोगे तो ये वैसे ही तो नहीं १८ हैं ॥ १५ ॥ बडे बलवान् २० हाथियों को मार कर १९ घर से भूखे को निकालो.

कुंभं सांन तिक्खी करहु, दंढारे घसिं दृढ्ढ ॥ १६ ॥
दृक्कं तरच्छु चित्रक बहुल, इत सिंव स्वान अधप्प ॥
सरभं भरोसैं जियत सब, अब दृग खुल्लहु अप्प ॥ १७ ॥
रमनीके सुनि अंय रुचिर, ऐंड गुंमर अलसात ॥
सिंह कह्यो जगि सिंहनी, होवन देहु प्रभात ॥ १८ ॥
होत रौसिं यह बत्त हुव, कृकवाकुन ध्वंनि कान ॥
उट्ठ्यो तजि गलबाँह अब, चंड सरभ चहुवान ॥ १९ ॥
इत रानिय बज्जत सुनें, गैंरुत गिद्धनिन गैन ॥
बुल्ली अब देर न बहिनि, चित तुम रक्खहु चैन ॥ २० ॥
देनहार गज कालिकन, गूंद पलन अब गाह ॥
तिहिं मम कंतहिं नैंक तुम, सज्जन देहु सनाह ॥ २१ ॥
वीरनके बहुविधि बंपा, लाभ जथारुचि लेहु ॥
असिमुट्ठि रु हयपिट्ठि अब, पतिकों पावन देहु ॥ २२ ॥

और२हे सिंह१ कुंभस्थल रूपी सांण पर डाढों को घिस कर तीखी करो॥१६॥बहुत ३ भेड़िये(बघाळी) ४ अदपेसरे(घघेरे)अर्थात् छोटे सिंह५चीते६गीदड़, कुत्ते भूखे हैं और ये सब७केसरीसिंह (बबरी नाहर) के भरोसे पर जीवित रहते हैं इसकारण अब ८ आप नेत्र खोलो ॥ १७ ॥ ९ प्यारी (स्त्री) के ऐसे रुचिकारक १० वचन सुनकर ११ ऐंड और घमंड में आलस्य करते हुए (यहां ऐंड और गुमर ये दोनों घमंड वाची पर्याय शब्द हैं जो अत्यन्त घमंड दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यों की शैली है कि जिसकी अधिकता दिखानी होवे वहां एकार्थवाची दो शब्द देते हैं और व्याकरण का भी यही मत है कि 'वीप्सायां द्वे' वीप्सा में एकार्थवाची दो शब्द होते हैं यथा

॥ श्लोकः ॥

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे॥
देशे देशे न विद्वांसश्चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥)

सिंह ने कहा कि हे सिंहनी प्रभात होने दे ॥ १८ ॥ १२ मुर्गों के बोलने का १३ शब्द हुआ १४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) रूपी भयंकर सिंह उठा ॥ १९ ॥ रानी ने १६ आकाश में गीधनियों के १५ पंख बजते हुए सुनें १७ चरबी (मींजी) और मांस को १८ भक्षकर भोजन के अर्थ कालिकाओं को हाथी देनेवाले मेरे पति को कवच पहनने दे ॥ २१ ॥ १९ बरछी का ॥ २२ ॥

इम रानिय इत गिद्धनिन, अकरूयो[1] बिहित बिसास ॥
इत कर ऐंची मुच्छ नृप, पगि[2] रसबीर प्रकास ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत मुच्छ चहुवान फाँक दारिम[3] भुव फट्टहिं ॥
भुव फट्टत अति भार अतल बितलादि[4] उलट्टहिं ॥
अतल आदि उलटंत पानि[5] कच्छप अहि छोरहिं ॥
पान तजत पाताल बारि[6] उच्छलि जग बोरहिं ॥
जल तलँ[7] उफान बुड्डत जगत भग्गहिं लोक[8] प्रपंच भुव ॥
प्रकटहिं[9] कटाह भग्गत प्रलय मगहि मुच्छ बुधसिंह सुव२४

॥ निशाणी ॥

कान भनक तबतैं परी चढि कुंम्म[10] चलाया ॥
तबतैं संभर[11] तंडि[12]कैं सिर अंभ[13] लगाया ॥
लाँह[14] जरूरी लग्गिकैं संध्या क्रम लाया ॥
सावित्री[15] जप इक्क सहँस१००० रस भक्ति रचाया ॥ २५ ॥
नित्य निवेर्‌यो मातको धन बिप्र[16] धपाया ॥
सेनासौं रन सज्जकौं आदेस[17] लगाया ॥
सोर[18] नकीबौं संकुले चहुँओर चलाया ॥
फट्टे[19] कग्गर देसमैं फिरि दूत[20] फिरांया ॥ २६ ॥

---

१ उचित विश्वास २ वीर रस में प्राप्त हो (भीज) कर ॥ २३ ॥ अब यहां कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि उम्मेदसिंह के मूँछ ग्रहण करते ही दाड़िम की फाँक के समान ३ भूमि फटेगी और भूमि के फटने से ४ अतल वितल आदि नीचे के लोक उलटेंगे उनके उलट-ने से शेषनाग और कमठ पराक्रम छोड़ेंगे जिससे पाताल से ५ जल उछल कर ६ संसार को डुबोवेगा ७ नीचे का जल बढने से संसार डूबकर ८ भूमि की लोक रचना मिटजावेगी ९ ब्रह्मांड के नाश होते ही प्रलय होवेगा इस कारण हे बुधसिंह के पुत्र मूँछ को मत पकड़ो ॥ २४ ॥ १० कछवाहा ११ उम्मेदसिंह ने १२ गर्जना करके १३ आकाश में मस्तक लगाया १४ लाभ १५ गायत्री के ॥ २५ ॥ १६ ब्राह्मणों को १७ हुकम दिया १८ शब्द भरा १९ पत्र बंटे २० दूतों ने फिरकर उन पत्रों को फिराये ॥ २६ ॥

झंडे बाहिर गड्डिकैं धुजदंड *झुकाया ॥
†फूल झराया सानपैं असि बाढ चिराया ॥
सिल्लहखानाँ खुल्लिकैं वर हेति बढाया
टोप बकत्तर ओप के दसतान दिपाया ॥ २७ ॥
‡केतौं §छादन कुंकुमा रन मोद रँगाया ॥
केतौं अच्छरि चाहिकैं सिर मोर बनाया ॥
त्रंब त्रहक्के ¶कल्लरे वर बंब बजाया ॥
शहनाइन लग्गी ललक सिंधू सुनवाया ॥ २८ ॥
हड्डोती[१] हाजरि भई कटिबंध[२] कसाया ॥
हूरों[४] सूरों सत्थही बर साज बनाया ॥
यों[५] जावक लग्गेचरन यों लंगर लाया ॥
यों नेउर पग अंकुरे[७] यों मक्कुर्न आया ॥ २९ ॥
यों अद्धोरुक[९] उल्लसे यों दंस[१०] दिपाया ॥
यों आहूत[११] विमान के यों बाजि[१२] मँगाया ॥
यों रागन[१३] पाया प्रमुद[१४] यों सिंधुन[१५] छाया ॥
यों कोनन[१६] लाया करन यों मुट्ठि[१७] मिलाया ॥ ३० ॥

*खडे किये (डिंगल भाषा में अधिक ऊँचे करने को झुकाना कहते हैं) †तरवार के बाढ चीरते समय अग्निकण उडे उसको फूल कहते हैं सिलहखानह खोलकर श्रेष्ठ शस्त्र बांटे॥ २७॥ ‡कितनों के §केसर के रंग के वस्त्र ¶युद्ध के तासे बजे। वीर रस को बढानेवाला सिंधवी राग सुनाया ॥ २८॥ १यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से हाडोती के वीर जानना चाहिये २ कमरबंधा बांधा ४ अप्सराओं और वीरों ने साथ ही ९ श्रेष्ठ साज बनाये (यहाँ 'यों' शब्द से इधर अर्थ जानो) ५ इधर हूरों के चरणों में जावक लगाया और इधर वीरों ने पैरों में युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने इधर अप्सराओं के पैरों में नेवर ७ लगे (बजे) और इधर वीरों के ८ जंघात्राण लगा (यहां प्रथम अप्सरा और पीछे वीरों का सजना यथाक्रम से जानना चाहिये) ॥ २९ ॥ इधर ९ लहँगा (घागरा) और इधर १० कवच शोभित हुए ११ इधर विमान मंगवाये और इधर १२ घोडे मंगवाये १३ रागों से १४ हर्ष पाया १५ सिंधवी राग (बडा राग) १६ हाथों में सितार बजाने की नक्खियें (मजराफ) लगाई १७ खड्ग की मूंठ ॥ ३० ॥

यों बीआ गन अग्गहे[1] यों तेग तुलाया ॥
यों रसना[2] आरोप यों कटिबंध कसाया ॥
यों कुंकुम[3] कुच लग्गि यों दृढ[4] छत्तिन छाया ॥
यों कंचुक[5] मंडे कुचन यों बच्छ बनाया ॥ ३१ ॥
यों बलयावलि[6] हत्थ यों दसतान दिपाया ॥
यों मद्दल[7] भुजबंधसों[8] सब सज्ज सुहाया ॥
हार दवाली[9] दोउँ२घाँ[10] उर अंतर आया ॥
यों मुख बीरी आप यों गंगोदं[11] अचाया ॥ ३२ ॥
यों मंडे नथ नक्क[12] यों धक्कि कोप धमाया ॥
यों दृग रेखा अंजनी[13] रजगुन[14] यों छाया ॥
पिंजूसन[15] ताटंक[16] यों यों कुंडल पाया ॥
सोभा सिर सीमंत[17] यों यों टोप लगाया ॥ ३३ ॥
यों कबरीन[18] प्रसून यों तुररेन झुकाया ॥
यों लग्गे मन मोहं[19] यों मन मोहं बिहाया ॥
नेउर पक्खर नाद त्यों बिबि[21] २ ओर बढाया ॥
तिक्ख॰ कटच्छा[22] सज्ज यों सित[23] भल्ल सजाया ॥ ३४ ॥

---

१ आग्रहे (ग्रहण किये) २ कटिमेखला (कर्धनी) लगाई ३ कुचों पर केसर लगाई ४ छातियों पर कवच छाये ५ अप्सराओं ने कुचों पर कंचुकी (कांचली) रची और इधर वीरों ने वक्ष (छाती) का बनाव किया ॥३१॥ ६ चूड़ियों (कंकणों) की पंक्ति ७ मादलिया (स्त्रियों के भुजों का भूषण विशेष) ८ हाथों में भुजबंध सुहाये (यहां सामान्य हाथ शब्द के कहने में भुजबंध के योग से भुज जानो) ९ पदकता १० दोनों ओर छाती पर आये अर्थात् अप्सराओं की छाती पर पर्तके लगे ११ गंगाजल पिया ॥ ३२ ॥ १२ नासिका में, इधर वीरों ने क्रोध युक्त होकर श्वास प्रश्वास लेना के फुलाये १३ काजल की १४ रजोगुन १५ टोटोर्वाँदी १६ कर्णफूल ये दोनों स्त्रियों के कानों में भूषण हैं इधर वीरों ने कुंडल पहने १७ माथा गुंथवाकर (केशपाश कराकर) सिर शोभा लगाई और वीरों ने टोप लगाये ॥ ३३ ॥ १८ केशपाश में फूल लगाके १९ इधर अप्सराओं ने वीरों को वरने का मन में मोह (स्नेह) लगाया २० और इधर वीरों ने घर से स्नेह छोड़ा २१ दोनों ओर २२ तीखे कटाक्ष २३ तीखे भाले ॥ ३४ ॥

यों खोड़स१६ शृंगार यों *उपचार विधाया ॥
यों मन छाया मैंन यों रनपैं †उफनाया ॥
यों छक्क पाया उरबसी यों [1]नृप उमगाया ॥
यों रंभा हुलसी इतैं बल्ल [2]पित्थल पाया ॥ ३५ ॥
यों मन फुल्ली मैंनका यों [3]अमरैं उम्हाया ॥
यों सु घृताची यों [4]प्रयाग सुराग रचाया ॥
एत्थ सुकेसी सज्ज यों [5]मेरजाद [6]मुदाया ॥
यों बरघोसा नच्चि यों स्वग [7]तोक लुकाया ॥ ३६ ॥
यों हरखांदत अच्छरिन बल्ल भूप बनाया ॥
गज बैंठे [10]इंभपाल गन [11]बिरुदार मिलाया ॥
अंग गरक्की मंजिकैं रन रंग लगाया ॥
थप्पे कुंभ सुबोल्ल दै [12]कुरुबिंद चढाया ॥ ३७ ॥
मंडि कलम जंगालकी हरिताल मिलाया ॥
जंग ढवद्द डारिकैं [13]गुंड साज सजाया ॥
बंधि [14]दरत्तों सिर [15]सिरी धरि धूप [16]धुंआया ॥
मोदक्क गंज मिलायकैं [17]जल बेगन पाया ॥ ३८ ॥
द्रुम चाकर [18]मांकर उछ्छट उढि आसन आया ॥
[19]बैरी बाहिर लैनकों [20]आलान छुराया ॥
करि अग्गैं [21]करिनीनकों रचि [22]डांक डगाया ॥

---

*सोलह प्रकार से देवपूजन किया। इधर अप्सराओं के मन में कामदेव छाया और † इधर वीर युद्ध पर चढे १उम्मेदसिंह २ पृथ्वीसिंह ॥ ३५ ॥ ३ अमरसिंह ४श्रेष्ठ प्रीति ५ सुरजादसिंह ६ हर्षित हुआ ७ तोकसिंह ने ॥ ३६ ॥ ८ हर्षित (प्रसन्न) ९ सेना१०महावतों के समूह ने११स्तुति करके १२ श्रेष्ठ वचन कहकर हिंगुलू लगाया ॥ ३७ ॥ १३ हाथी की पाखर १४ रस्सों से१५मस्तक का भूषण बांधकर १६ धूप देकर धूम युक्त किया १७ लड्डुओं के ॥ ३८ ॥ १८ हाथियों के चाकर बंदरों की भांति कूदकर १९ ठाण के बाहर लेने को २० [illegible] छोडे २१ हथनियों को आगे करके २२ छोटे भालों से क्रोध दिला कर डिगाये

यों[1] बुंदीस अनीकमैं[2] गजराज चलाया ॥ ३९ ॥
मिलि हयपालक[3] मंदुरन[4] तिम हयन तुकाया ॥
खेह गरद्दी कढ्ढिकैं[5] दुति देह दिपाया ॥
कबिका देत कुरंग[6] गति छबिका[7] छक छाया ॥
रविका[8] मन रिझवायकैं पबिका[9] जव पाया ॥ ४० ॥
सीनन पलट मिटायकैं जर जीनन भाया ॥
खीनं[10] न गति पीन न पैसम[11] जैव[12] हीन न जाया ॥
पक्खर अंग पसारिकैं क्रम तंग कसाया ॥
राह पैरोंके[13] लाहकों गजगाह[14] झुकाया ॥ ४१ ॥
वाह चहूँ घों[15] उच्चरी गति थाह न गाया ॥
दीप कनोती चाप[16] दुति खंधों बलखाया ॥
काल व्यालैं[17] गति जालके लटियाल लगाया ॥
कट्टोरे खुर तौरके[18] खुग्तारैं[19] सुहाया ॥ ४२ ॥
दसमी१० के द्विजराजतैं[20] जिम राहु जुगाया ॥
हाटकके गल हल्लरे झल्लरि झननाया ॥
छोरि दुबग्गों मोरिकैं करडोरि झिलाया ॥
नक्खी पायन नेउरी मग सोर मचाया ॥ ४३ ॥
बाजी ए नृप बंटिकैं सब बीर सजाया ॥
अप्प चढे हय हंजपैं[21] करकंज[22] तुकाया ॥

१इसप्रकार२सेनामें॥३९॥३घोड़ों के चाकरों ने ४हयशालाओं में५लगाम देते ही ६ हरिण की भांति७शोभा के८सूर्य का मन प्रसन्न करके९वज्र का वेग॥ ४० ॥ १०जिन की गति क्षीण नहीं है११शरीर के बाल मोटे नहीं हैं १२जिसका वेग हीन नहीं है ऐसे (पवन) के पुत्र१३पंखों का लाभ लेने के राह से १४ गजगाह लगाये ॥ ४१ ॥१५चौतरफ दीपक के समान कनोती और १६ धनुष की टेढ के समान झुका हुआ कंधा१७काले सर्पों के समान अयाल १८ कटोरे के समान खुरों पर चांदी के१९खुरताल शोभित हुए ॥ ४२ ॥२०चन्द्रमा से ॥ ४३ ॥ २१ हंज नामक घोड़े पर उम्मेदसिंह चढे २२ कमल रूपी हाथों में ॥ ४४ ॥

नाथाउत पित्थल अरथ मृगडान मिलाया ॥
अमरसिंह रठोरकौं नटराज चढाया ॥ ४४ ॥
सूर भवानीसिंहकौं दिलयार दिवाया ॥
मेहरनकाज प्रयागकौं खगराज खुलाया ॥
तोक महासिंहोतकौं झपटैत झिलाया ॥
मुहुकमहर मरजादकौं जयनाद दिखाया ॥ ४५ ॥
इत्यादिक हय बंटिकैं नृप बीर बढाया ॥
सोदरजुत सुंदांतकौं कोटा पहुँचाया ॥
ढुंढारे दल ढाहिबे बल अप्प बनाया ॥
बेरबेरतुग्गस बंधिकैं कमनैत कसाया ॥ ४६ ॥
बेरबेर खग्ग वलग्ग कसि कर धूँप धुनाया ॥
बेरबेर चाप बजायकैं सिर अंब्भ लगाया ॥
केक तुपक्कौं धारिकैं अरु मारि उडाया ॥
सेल बरच्छी सज्जिकैं अच्छी गति आया ॥ ४७ ॥
अच्छे बाँजि उडायकैं मन आँजि मिलाया ॥
बैंडाराग अलापिया भैंडा छक छाया ॥
बंदीजन रसबीरमैं भट छाक छकाया ॥
ज्यों गिरिनारी गानपैं सिर नाग उठाया ॥ ४८ ॥
कै जुब्बन बय व्याहपैं नायक हरखाया ॥
जानि मितंपच रंककौं नवही निधि पाया ॥
अंक उदैगिरि आत कै बारिज बिकसाया ॥
पिक्खि मतंगज थूलैं कै सदूल चलाया ॥ ४९ ॥

१ प्रहार करने (शत्रुओं को मारने) के अर्थ ॥ ४५ ॥ २ जनाने को ३ तरकस (भाथे) ॥ ४६ ॥ ४ सुन्दर अथवा टेढे खड्ग कसकर ५ हाथ में खड्ग लिया ६ आकाश में मस्तक लगाया ॥ ४७ ॥ ७ घोड़े ८ युद्ध में ९ कालराराग (सिंधवीराग) १० भाट लोगों ने ॥ ४८ ॥ ११ कृपण दरिद्री को १२ सूर्य के उदय होने पर मानों १३ कमल फूले १४ मानों हाथियों

उत्तरके पवमानतैं घन जानि घुराया ॥
जानि दिवाकर जेठमैं बहु ओज वढाया ॥
इक्खत जिम हिमकर उदै अंबुधि उफनाया ॥
सोलह१६ बेर कि सुकमैं तपनीयँ तपाया ॥ ५० ॥
पावक मारुत पायकैं हेतिनं हुलसाया ॥
कामंदक मग लग्गिकैं बल भूप वढाया ॥
ज्यों करिणीके जालपैं सुंडाल सुहाया ॥
अंधक अग्गैं आनिकैं सिव जानि सजाया ॥ ५१ ॥
गोबर्द्धन कर लैनकों जिम कैन्ह कसाया ॥
जानि जटासुर जंगपैं भुज भीम बजाया ॥
कै गजकेतन कदनकों कपिकेतु कुपाया ॥
ज्यों लंघन जलरासिकों हँनुमा हुलसाया ॥ ५२ ॥
कै रावन बध काजपैं रघुराज रिसाया ॥
कै बाहर प्रह्लादकी नरनाहर आया ॥
जिमि एका१इक१ बिंदुतैं दस १० गुन दरसाया ॥
बढि ऐसैं रसबीरसैं चढि भूप चलाया ॥ ५३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ संभर

का समूह देखकर सिंह चला॥४९॥ १ उत्तर दिशा के पवन से २ सूर्य ने ३ प्रताप ४ चन्द्रमा को उदय हुआ देखकर ५ समुद्र बढा ६ अग्नि में ७ सुवर्ण को (सुवर्ण को सौलह बार तपाने से कुंदन होता है) ॥ ५० ॥ ८ अग्नि ९ पवन को पाकर १० ज्वालाओं से प्रसन्न हुआ ११ कामंदक मुनि की कीहुई नीति के मार्ग लगकर राजा ने सेना बढाई १२ हथनियों के समूह पर हाथी शोभित हुआ १३ अंधक नाम असुर को आगे लेकर ॥ ५१ ॥ १४ गोवर्धन पर्वत को हाथ में लेने के लिये १५ कृष्ण सज्जित हुए १६ भीमसेन ने १७ कर्ण का नाश करने को १८ अर्जुन क्रोधित हुआ १९ समुद्र का उल्लंघन करने को २० हनुमान उत्साहित हुआ॥५२॥ २१ सहाय २२ नृसिंह २३ जिस प्रकार एक के अंक पर एक बिंदी लगने से दश गुना होजाता है ऐसे ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चहुवाणों के राजा

नरेशसज्जीभवनवाहिनीवीरवाजिवारणवर्णनं षोडशो १६ मयूखः
॥ १६ ॥ ॥ २९७ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कुम्म[1] कटक जवही सुन्यौं, हठि हंकत हमगीर ॥
अरु[2] तवही पित्थल अमर, भट आये नृप[3] भीर ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जव कूरम जयसिंह दई बुंदिय दलेल कँहँ ॥
तवहि नगर निम्मान छोरि पित्थल रानाँ[4] पँहँ ॥
उदयनैर अति[5] धर्म गयो निज बल नाथाउत ॥
सुपहु रान संग्राम जाहि रक्ख्यो सनेह जुत ॥
उमराव स्वीय पंद्रह १५ अधर[6] पालसोलि उप्पर प्रथित[7] ॥
वैठारि उच्च आदर बिरचि हरख्यो नृप चालुक्य[8] हित ॥ २ ॥
इक्क समय चालुक्य निडर पित्थल नाथाउत ॥
रहत सभाबिच रान जप्पो बुधहिं[9] अधर्म जुत ॥
स्व[10] प्रभु निंदा सुनत भीम उठ्यो पित्थल भट ॥
पटा सहँस पंचास५००००छोरि हंक्यो[11] वंछित वट ॥
हुन[12] रान पहुँचि नैति[13] जुत कहिय साफ करहु अपराध मम ।
मन्नी न तदपि पित्थल सुमति अक्खी तुम अकुसल अधम ३

का सज्जित होना१सेना के वीर और घोड़े और हाथियों के वर्णन का सौलह-वां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यानवे २९७ मयूख हुए ॥
१ कछवाह की सेना २ शीघ्र ३ उम्मेदसिंह की सहाय ॥ १ ॥ ४ राणा के पास (उदयपुर) ५ अत्यंत धर्मवाला ६ अपने पन्द्रह उमरावों के नीचे और पारसोली के ऊपर (इस समय सब से नीचे की बैठक आसींद के रावत की है परन्तु उस समय आसींद का ठिकाना नहीं बन्धा था तब से नीचे की बैठक पारसोली के रावकी थी) ७ प्रसिद्ध ८ सोलंखी को हित सहित रक्खा ॥ २ ॥ ९ बुधसिंह को१०अपने स्वामी की११चाहे हुए मार्ग से चला १२शीघ्र १३ नम्रता

*दुजनसल्ल कोटेस सुनत यह सचिव पठायो ॥
लिखि कग्गर अति †ललित बहुत सतकार बढायो ॥
लिखी नगर निम्मान ‡नाह इतही तुमगे घर ॥
आवहु मिलहिं सु अन्न बंटि खेहैं बीरनवर ॥
पित्थल सु बंचि उत्तर लिख्यो क्यौं तुम हठ मंडत घनैं ॥
मम[1] जनक हन्यों आटोनि रन बलि बुंदिय वैरिय बनैं ।४।
अग्ग नगर आटोनि भीम[2] सालम जब जुट्टिय ॥
चालुक देवीसिंह तबहि असि धारन तुट्टिय ॥
कोटापति पुनि कितव[3] वैर बुंदिय पर लायउ ॥
दुवर[4] कारन दल बीच मंडि पित्थल पहुँचायउ ॥
सुनि दुजनसल्ल उत्तर लिखियं जानहु नहिं मम दोख जिय॥
मम[5] जनक हन्यौं तुमरो जनक बुंदियसन पुनि वैर किय ।५।

॥ दोहा ॥

नहिं रुचि तो आवहु नहिन, परिखद[6] बिच मम पास ॥
रहिये घर लहिये रुचिर, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ ६ ॥
इत्यादिक उत्तर लिखि रु, दुजनसल्लहित[7] दिट्ठि ॥
सचिव भेजि निज साम करि, बुल्ल्यो पित्थल[8] निट्ठि ॥ ७ ॥
अमरसिंह रट्ठोर इत, रुट्टल राम[9] कुलीन ॥
कछवाहन बरवाड़ लिय, निकस्यो तब छिति[10] छीन ॥ ८ ॥
निज सुत पंचक५जुत निडर, स्त्रीजन अनुग[11] समेत ॥

सहित ॥ ३ ॥ * कोटा के पति दुर्जनशाल ने † मनोहर ‡ हे निस्माण के पति १ मेरे पिता को आटोण ग्राम के युद्ध में मारा था और बुंदी से वैर किया था ॥ ४ ॥ २ कोटा का महाराव भीमसिंह और सालमसिंह ३ छली ४ पत्र में ५ मेरे पिता ने तुह्मारे पिता को मारा था और बुंदी से भी वैर उन्होंने किया था ॥ ५ ॥ ६ सभा में ॥ ६ ॥ ७ स्नेह दिखाकर अथवा स्नेह की दृष्टि से ८ पृथ्वीसिंह को बुलाया ॥ ७ ॥ ९ रामसिंह रोटला के कुल वाला १० भूमि छिनजाने से ॥ ८ ॥ ११ सेवकों सहित ॥ ९ ॥

सहि बिपत्ति कोटा सहर, आयो नीति *उपेत ॥ ९ ॥
पटा सहँस पैंतीस३५००० मित, करि हित दिय कोटेस ॥
इम रक्खे पित्थल अमर, दुव२ छल तिमिर †दिनेस ॥१०॥
ते भट दुव२ बुंदीसपर, कूरम ‡दल सुनि आत ॥
तजि कोटापतिके पटा, आये रन उमडात ॥ ११ ॥
जोधपुर प[1] गजसिंह सुव[2], कुमर अमर[3] रट्ठोर ॥
मरन आगरा मंडयो, तोरि साहको तोर[4] ॥ १२ ॥
अमर भीर[5] आये तबहि, बलू१ रु भाऊ२ बीर ॥
पातसाहके तजि पटा, हठि जुज्झन हमगीर ॥ १३ ॥
तिमहि रान अमरेस सुत, करन[6] अनुज भट भीम[7] ॥
रक्खि खुरुम सरनैं रच्यो, संगर[8] कासी सीम ॥ १४ ॥
सगताउत मान[9] सु सुनत, छिप[10] उदैपुर छोरि ॥
पहुँच्यो कासी भीम[11] पँह, मरयो साह दल मोरि ॥ १५ ॥
इमहिं बीर पित्थल अमर, कोटा सैन करि कुच्च ॥
[12]समर बेर[13] बुंदीससों, आनि मिले छक उच्च ॥ १६ ॥
अमरसिंह रट्ठोरकी, पतनीके गैंद[14] पूर ॥
दुक्ख हुतो बहु दिननतैं, सक्यो तदपि[15] न सूर ॥ १७ ॥
उतरत चम्मलि आपगा[16], प्रिया भई गतप्रान ॥
सोहु अमर रट्ठोर सुनि, न मुरयो जंग निदान[17] ॥ १८ ॥
अभयसिंह जेठो तनय, पच्छो गेह पठाय ॥
अप्प च्यारि सुत जुत अडर, अमर स बुंदिय आय ॥ १९ ॥
मुहुकमहर त्योंही मरन, मेटन अघ[18] मरजाद ॥

*नीति सहित॥९॥ †छल रूपी अन्धेरे के सूर्य॥१०॥ ‡सेना॥११॥ १ पति २ गजसिंह का पुत्र ३ अमरसिंह ४ बादशाह के प्रताप को तोड़कर ॥ १२ ॥ ५ सहाय॥ १३ ॥ ६ करणसिंह का छोटा भाई ७ भीमसिंह ८ युद्ध ॥ १४ ॥ ९ मानसिंह १० शीघ्र ११ भीमसिंह के पास ॥ १५ ॥ १२ से १३ युद्ध के समय ॥ १६ ॥ १४ रोग १५ तोभी ॥ १७ ॥ १६ नदी १७ युद्ध के कारण ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ पाप

सूर तुपक्क सजि पंचसत५००, आयो *नद्दत नाद ॥ २० ॥
सब भट हिय लाये सुपहु, बहु अद्दरि बुंदीस ॥
सहित प्रीत बंटी सिलह, सज्ज्यो जैपुर सीस ॥ २१ ॥
नाथाउत पित्थल निडर, सज्यो न बपु †सन्नाह ॥
अक्खो इच्छहु जो ‡जियन, लेहु वहै यह लाह ॥२२ ॥
सत बारह१२००इम सेन सजि, सादी[1] पैदग[2] समेत ॥
उडइनि[3]के तट अमरपुर, खजि[4] चिंत्यो रन खेत ॥ २३ ॥
सजि बुंदिय उत्तर तरफ, ढंक्यो नृप हुसियार ॥
पहुमी छाई पक्खरन, सेलन[5] गगनें प्रसार ॥ २४ ॥
कोस तीन३ उप्पर कटक[6], मिले उभय२ रन मोद ॥
उत्तर दक्खिनके अरे, पाउस[7] जानि पयोद[8] ॥ २५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ बुन्दीन्द्रसहायार्थचालुक्यपृथ्वीसिंहकबंधाऽमरसिंहहड्डमर्य्यादसिंहाऽऽगमनसेनाऽभिनिर्याणं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥ ॥२९८॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

उंयो रसबीर[9] छयो नृप अंग, चल्यो अब सम्मुह लै चतुरंग ॥
चल्यो भट पित्थल[10] संकित सेस, चल्यो सुत च्यारि४नतैं अमरेस[11] ।१।
चल्यो मरजाद[12] नमावत नाग, चले भट सोदर तोग१ प्रयाग२ ॥

---

* गर्जना करता हुआ ॥ २० ॥ २१ ॥ † शरीर में कवच नहीं पहना ‡ जो जीना चाहो सो कवच पहनने का लाभ लो ॥ २२ ॥ १ सवार २ पैदलों सहित ३ नदी का नाम है ४ क्रोध करके ॥ २३ ॥ ५ भालों के फैलाव से आकाश छाया ॥ २४ ॥ ६ सेना ७ वर्षा समय में ८ मेघ ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, बुन्दी के इन्द्र की सहाय के अर्थ सोलंखी पृथ्वीसिंह, राठोड़ अमरसिंह और हाडा मरजादसिंह का आना और सेना के सम्मुख जाने का सत्रहवां १७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठानवै २९८ मयूख हुए ॥

९ वीर रस उदय होकर १० पृथ्वीसिंह ११ अमरसिंह ॥ १ ॥ १२ मरजादसिंह

भवानियसिंह चल्यो भट भूप, खुमान[2] चल्यो रन रावन रूप ॥२॥
चल्यो हरदाउत देविसुगेस[3], चल्यो सगताउत त्यों अचलेस ॥
चले भट भारत अर्जुन चंड, उदेहरि[4] चालुक ओज अखंड ॥ ३ ॥
चल्यो नर नाहर[5] नाहर बीर, चल्यो नवलेस हठी हमगीर ॥
चल्यो भट कर्ण महारन चाहि, अजीत चल्यो कछवाह उमाहि ४
चले इन्ह आदि बडे बर बीर, धपावन सत्रुन खग्गन धीर ॥
चल्यो इम बुंदिय भूपति चक्क[6], बितंडन[7] पिट्ठि खुली[8] बहरक्क ॥ ५ ॥
अडंबर[9] भो रज[10] अंबर ओघं, मच्यो बडि ध्वांत[11] बन्यौं रवि मोघं[12] ॥
भयो निसिचारन[13] आनँद भुल्लि, डरे डिगि चक्कियं[14] चक्कहु डुल्लि ॥६॥
चले इत बारहसैं १२०० रन रीस, पिंखे[15] उत गज्जि हजार पचीस २५००० ॥
तज्यो भव[16] मोह भज्यो[17] कर तेग, उठे भट राजिय[18] बाजिय बेग ।७॥
घमंधमि भुम्मि धुजी हय धौर[19], घमंघमि घुग्घर पक्खर भार ॥
डमंडमि डाहल डिंडिम डक्क, ठमंठमि सिंधुर[20] घंट ठमक्क ॥ ८ ॥
नरायन[21] पिक्खिय बुंदिय नाह[22], कह्यो जुरि याहि गहो कछवाह ॥
इती कहतैं दुहुँघाँ उमराव, मिले ति[23] मिले पय[24] सक्कर भाव॥ ९ ॥

१राजा का उमराव २खुमाणसिंह॥२॥ ३ देवीसिंह ४ उदयसिंह ॥ ३ ॥ ५ मनुष्यों में सिंह रूप, नाहरसिंह ६ चक्र (सेना) ७ हाथियों की पीठ पर ८ ध्वजा खुलीं ॥ ५ ॥ ६ आकाश में १०रज का समूह छागया जिससे ११ अंधेरा होकर सूर्य १२ ढकगया और उस अंधेरे से भूलकर १३निशाचरों को आनंद हुआ १४ चकवा चकवी भूलकर डरे और पास पासके हटगये ॥ ६ ॥ १५ ईश्वरीसिंह ने भेजे १६ संसार से मोह छोडा और हाथों में १७खड्ग लिये १८ वीरों की और घोड़ों की पङ्क्तियें वेग के साथ उठीं ॥ ७ ॥ १९ घोड़ों की गति से भूमि धूजी, डाहल आदि वैताल और योगिनियें आदि के वाद्य बजे २०हस्तियों पर घंट बजे यहां ठमंठमि घमंघमि आदि अनुकरण के शब्द हैं जिनकी व्याख्या करना अनावश्यक है किन्तु ये शब्द ही व्याख्या है) ॥ ८ ॥ २१ नारायणदास खत्री ने २२ बुंदी के पति (उम्मेदसिंह) को देखते ही कहा कि २३ वे दोनों ओर के उमराव जैसे २४ दूध और सक्कर मिलै तिस रीति से मिलगये ॥ ९ ॥

वज्यो असि हड्डन अड्डन वाढ, गज्यो भय भीरुन बीरन गाढ ॥
दपट्टत लक्खन भक्खन दाय, झपट्टत तक्खनकौं झमकाय ।१०।
लकल्लकि[3] छुट्टिय बान बिथार, धकद्धकि घायन सोनित धार ॥
झगज्झगि आयुध भौ झगमग्गि, धगद्धगि उट्ठिय खग्गन अंग्गि ११
कटक्कटि कंकट वंकट वाढ, खटक्खटि खावन डाकिनि डाढ ॥
चटच्चटि उच्छटि हड्डन संधि, गटग्गटि गिद्ध वपा चय बंधि ।१२।
खनक्खनि टोपनपैं खुरतार, भनब्भनि गोलिन भैरान भयार ॥
झपज्झपि सेनन पच्छैति झुंड, लपल्लपि लुट्टत सिंधुर सुंड ॥ १३ ॥
झमंझमि मार दुधारन झाट, घमंघमि सेलन ठेलन घाट ॥
लसैं असि कुंभनैं फाँक चलाव, बढै रदैं सब्बुवैं तंति वनाव ।१४।
भुजांतैरैं होत कटारन भिन्न, खिचैं परि पंजर खंजर खिन्न ॥
कढैं खैर तोमर दंसैन दारि, फबै प्रैथुरोम किं जालिय फारि ।१५।
चलैं चमक्कैं असि ओज अपार, छपाकैंर बाल कला छबिदार ॥
लटक्कहिं लुत्थिनपैं लगि लुत्थि, उछट्टहिं कट्टहिं बुत्थिन बुत्थि १६

हड्डियों के ऊपर तरवारों का आडा वाढ वजा और कायरों पर भय और वीरों पर गाढ ने १ गर्जना की, खाने के लिये लाखों दौड़ते हैं और २ घोड़ों को झमका कर दौड़ाते हैं ॥ १० ॥ ३ कांपते हुए बाणों का फैलाव छूटा और घावों से धक धक रुधिर वहने लगा. ४ शस्त्रों की कान्ति चमकने लगी और तरवारों की ५ अग्नि प्रज्वलित होकर उठी ७ तरवारों के वाढ से ६ कवच कटकट कारने लगे, खाने के लिये डाकनियों की डाढें खटकने लगीं और हड्डियों की जोड़ें खुलने लगीं ८ चरबी का समूह जोड़कर ग्रीधनियें खाने लगीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ गोलियों का भयंकर शब्द होने लगा १० सेन (सिचाणा) पक्षियों के ११ पंखों के समूह झप झप करने लगे और हाथियों की सूँडें लप लप करने लगीं ॥१३॥ दुधारे खड्गों की मार मची और भालों के धकेलने से घाव हुए १२ हाथियों के कुंभस्थलों को चीरें करती तरवारों का चलना शोभा देता है और तांत से १४ साबुन कटै जैसे १३ दांत कटते हैं ॥१४॥ कटारों से १५ छातियें फटती हैं और खंजरों से चीरा हुए अस्थिपंजर खिचते हैं १६ तीखे भाले १७ कवचों को फोड़कर निकलते हैं सो मानों जाल को चीरकर १८ अच्छी शोभा देती है ॥१५॥ १९ द्वितीया के चंद्रमा की कला को विदारण करनेवाले खड्गों का ओज चमकता है ॥१६॥

उच्छट्टहिं घोरनतैं भट आय, खमैं[1] अँह[2] जानि कबूतर खाय ॥
छुरक्कहिं छिछि हरक्कहिं घाय, छुटैं जलजंत्र[3] कि जावक छाय ॥१७॥
चलैं टिकि जानुन[4] के पयभिन्न[5], स्तनंधय[6] केलि कि अंगन किन्न ॥
किते भुव लुट्टत जात अचेत, खिचैं जनु कोटिँस[7] डैंलन[8] खेत ॥१८॥
परे कति ऊरध[9] हत्थ पसारि, किधौं हरि मंदिर वंदन[10] कारि ॥
बबक्कत के गिरि बक्कर[11] बेस, मनौं नमि गात[12] रिझ्झात महेस ॥१९॥
अटक्कत पाय रकाबन इंद्र[13], लटक्कत जानि अँधोमुख[14] सिद्ध ॥
कटैं सिर अंभ[15] फिरैं भ्रमकारि[16], कुलाल[17] कि चक्कहिं[18] भंड उतारि २०
थरत्थर कातर कंप कुठार, बिना तिय ज्यों नर पास[19] तुसार ॥
उडैं फटि पेट फरक्कत अंत, करंडनतैं[20] कि भुजंग कढंत ॥ २१ ॥
बनैं वटके भट के रन बाद, सु ज्यौं अँटके[21] जगदीस प्रसाद ॥
रचैं दुव २ हत्थनके असि वार, किधौं कर खत्तिय[22] कैंठ[23] कुठार २२

१आकाश में कबूतर२कुलांट खाये तैसे३जावक का फुँहारा चलै जैसे॥१७॥कितने ही कटे हुए५चरणोंवाले४घुटनों के बल चलते हैं सो मानों घर के चौक में६दूध पीनेवाला बालक क्रीड़ा करता है, कितने ही अचेत होकर भूमि पर लोटते जाते हैं सो मानों खेत के८ढकलों (ढेलों) पर७चावर (लोष्टभेदन) खिचती है॥१८॥कितने ही ९ ऊंचे हाथ करके पड़े हैं सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में १० नमस्कार करते हैं ११ बकरे की भांति कितने ही गिरकर अवाच्य शब्द बोलते हैं सो मानों १२ नमस्कार करके शिव को प्रसन्न करते हैं (यज्ञ विध्वंस करके दक्ष के धड़ पर बकरे का मस्तक रखकर फिर जीवित किया तब दक्ष प्रजापति ने बकरे के मुख से शिव की स्तुति करके शिव को प्रसन्न किया था इस कारण अब भी लौकिक में बकरे की बोली से शिव की स्तुति करते हैं) ॥ १९ ॥ १३ नीचे लटकते हैं सो मानों १४ नीचा मुख करके सिद्ध लटकते हैं कटे हुए मस्तक १५ आकाश में १६ चक्र के आकार फिरते हैं सो मानों १८ चाक के ऊपर से १७ कुम्हार भांडा (मिट्टी का पात्र) उतारता है ॥ २० ॥ बुरी भांति कायर ऐसे कांपते हैं जैसे बिना स्त्रीवाला पुरुष पौष मास की १९ ठंड में कांपता है, पेट फटकर आंतें उछलती हैं सो मानों२०पिटारों से सर्प निकलते हैं ॥ २१ ॥ युद्ध में दृढ करके टुकड़े टुकड़े होते हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का२१कलश फटता है, कितने ही दोनों हाथों से तरवार का वार करते हैं सो मानों दोनों हाथों से२२खाती२३काष्ट पर कुठार चलाता है ॥ २२ ॥

सरैं[1] छतजात[2] छिदे उर सैंकि, नमात[3] रजोगुनकी लहरैं कि ॥
गुटी[4] दृग ओर कढैं दृग लै रु, किधौं अलि[5] कामल[6] कोरक[7] लै रु २३
धसैं कढि के दृग सोनित धार, बनैं पृथुरोमन[8] वारि बिहार ॥
सिंचानक[9] अंतहि लै नभ जात, अचानक गोत गुडी सम खात २४
दिसा बिदिसान निसानन[10] नद्द, भनैं जनु घोर बलाहक[11] भद्द ॥
तुटी लगि टोप बजैं तरवारि, मनौं हरि मंदिर झल्लरि झारि ।२५।
भई हलमल्ल[12] चलच्चल[13] भुम्मि, घट्यो बल नाग[14] निसासन घुम्मि ॥
रचैं धनु सिंजिनि[15] बेग बिसाल, किधौं रन थंभत जंभत[16] काल २६
मचैं घन लोहित फुट्टत मत्थ, हसैं लखि जुग्गिनि खप्पर हत्थ ॥
समप्पत[17] हेरि सबै गन सीस, अपूरब हार बनावत ईस ॥ २७॥
थेइत्थेइ घुम्मत डाकिनि मत्त, तमासन प्रेत मलंगत तत्त ॥
किते रस[18] पान पिसाच करंत, रमैं कति लोहित तुंद[19] भरंत ॥२८॥
करैं कति आमिखनैं[20] अनुराग[21], बनावत के मुख मेद[22] बिभाग ॥

बरछी से छाती छिद कर २ रुधिर १ चलता है सो मानों शरीर में रजोगुण की लहरें नहीं ३ समाने के कारण बाहर निकलती हैं ४ गोली नेत्रों में लगकर नेत्र निकालती है सो मानों ५ भ्रमर ६ कमल की ७ कली को लेकर निकलता है ॥ २३ ॥ नेत्र फटकर रुधिर की धार में ऐसे घुसते हैं जैसे ८ मच्छी का विहार जल में होवे ९ बाज पची आंत लेकर आकाश में जाता है और पतंग (कनकौवा) के समान अचानक गोत खाता है ॥ २४ ॥ दिशा दिशाओं में १० नगारों का शब्द होता है सो मानों भादवा के महीने में ११ मेघ का भयंकर शब्द होता है, टोप के ऊपर लगकर तूटी हुई तरवार बजती है सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में झालर बजती है ॥ २५ ॥ १२ अत्यन्त भीड़ से अथवा बहुत लोगों के मिलकर चलने से भूमि १३ चलायमान होगई और निश्वासों से घूमकर १४ शेष नाग का बल घट गया, धनुष से खिचकर १५ प्रत्यंचा बडा वेग रचती है सो मानों यमराज युद्ध में खड़ा होकर १६ उबासी (जम्हुहाई) लेता है ॥ २७ ॥ मस्तक फूटकर अत्यंत लोहू मचता है जिस को देखकर डाकिनियें हसती हैं और शिव के सब गण मस्तक हेरकर शिव को १७ देते हैं ॥ २७ ॥ कितने ही प्रेत १८ स्वाद लेकर रुधिर पीते हैं और कितने ही रुधिर से १९ पेट भरकर खेलते हैं ॥ २८ ॥ कितने ही २० मांस से २१ प्यार करते हैं और कितने ही २२ चरबी आदिका बंट करते हैं,

करैं मृदु*कीकस जिम्मन केक, अहारत†कोशिक ग्रास अनेक २९
खरे कति ‡घस्मर शुक्रहिं खातु, भये रन दुर्लभ सत्तहिं धातु ॥
रचैं सिव हास नचैं भयकार, जचैं जिय बुंदियको जयकार ॥३०॥
अहत्रह तंतिन सिंधुव सद्द, मच्यो रन अंगन यौं अवमद्द ॥
गहक्कहिं चक्खहिं गिद्धनि गोद, वपा लहि मंडत कंक विनोद ।३१।
निकासत चिल्हनि चंचुन नैन, गहैं हिय सेन गहक्कत गैन ॥
किलोलहिं स्यार सिवा किलकारि, चखैं पल मंडल मंडलँ चारि३२
उठी रन अंगन खग्गन अग्गि, लसी अटवी नव ज्यौं दव लग्गि॥
जरैं गजढालन तालन जूह, जरैं गजसुंडि तमालन जूह ॥ ३३ ॥
कटे पय कुंभिं न तिंदुव तत्त, जरैं गज उन्नत पब्बय जत्त ॥
वरैं हय बालधि तेजन तंब, लगैं लटियाल कि दर्भ कदंब ।३४।
सिखा बलि सूरनकी तृन गुच्छ, मलीमस कास सुडड्डिय मुच्छ ॥

*कितने ही कोमल हड्डियों का भोजन करते हैं †अनेक घूघू निवाले खाते हैं ॥२९॥ कितने ही ‡ भक्षण शील (बहुत खाने वाले) खड़े खड़े ही १ वीर्य ही खाते हैं उस युद्ध में उन घस्मरों को सातों ही धातु दुर्लभ होगई, वैद्यक के मत से वे धातुयें हैं "स्तन्यं रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति॥ शुद्धमांसभवःस्नेहो यः सा संकीर्त्यते वसा ॥ स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवोजश्च सप्तमम् ॥" २ भयंकर रीति से नाचते हैं और जीव से बुंदी का जय होना ३ मांगते हैं ॥ ३० ॥ ४ इसप्रकार का पीड़ाकारी युद्ध मचा॥३१॥५गीदड़ और गीदड़णियें किल्लोलें करती हैं ६ कुत्ते ७ चारों ओर फिरकर मांस खाते हैं ॥ ३२ ॥ युद्ध के चौकमें तरवारों से अग्नि लगी सो वन में लाय लगने के समान शोभायमान हुई जहां ८ हाथियों के झंडे जलते हैं सोही ताड़ वृक्षों का समूह जलता है और हाथियों की सुंड जलती है सोही ९ तमाल वृक्षों का समूह जलता है ॥ ३३ ॥ १० हाथियों के कटे हुए पग जलते हैं सोही ११ तींदू वृक्ष हैं १२ ऊंचे हाथी जलते हैं सोही जलनेवाले पर्वत हैं १३ घोड़ों का वालछा जलता है सोही१४बांसों का१५वड़ा (समूह)है और घोड़ों की यालें (केसवालियें) जलती हैं सोही १६ डाभ का समूह जलता है ॥३४॥१७वीरों की चोटियें जलती हैं सो १८ घास के पूले हैं, डाढी मूंछें जलती हैं सोही २० कांस (तृणविशेष) का १९ कचरा जलता है

जरैं छगणावलि[1] खेटक[2] जाल, बरैं असिकोस[3] पृथग्विध[4] व्याल ॥३५॥
दहैं द्रु[5] मृदुच्छद[6] छल्लि दुकूल[7], किरैं[8] चिनगी सुहि पौन कुकूल[9] ॥
जरैं तहँ तोमर[10] ते त्वचिसार[11], तचैं[12] गवलावलि[13] रूप तुखार[14] ॥ ३६ ॥
प्रजारिय भूपति यागति अग्गि, झिली रनरंग[15] मिली झगमग्गि ॥
अपूरब फैलिय ज्वाल अलात[16], बचैं तृनके[17] जलके[18] जरिजात ॥३७॥
अनूरुहिं[19] आतुर आक्खिय अक्क[20], चढे रन ढुंढिय जैपुर चक्क[21] ॥
तुरंगम रुक्कहु खंचि खलीन[22], कुतूहल पिक्खहु[23] वीर बलीन ॥३८॥
दिसा बिदिसान कृसानु[24] दिखाँहिं, मच्यो दव ग्रीखम भद्दव[25] माँहिं ॥
निहारहु होत अनीकन[26] नास, तपैं भुव तक्कहु चक्क तमास ॥ ३९ ॥

॥ प्रतिलोमाऽनुलोमार्द्धम् ॥

तुदे[27] नर रीस रवीसम[28] लाल, तुले हय[29] जेम हले सु कराल ॥
लरांक[30] सु[31] लेइ[32] सजे यह लेतु, ललाम[33] स बीर सरीरन[34] देतु ॥ ४० ॥

---

२ ढालें जलती हैं सोही जलने वाले १ छाणों (कंडों) की पंक्ति है ३ तरवारों के म्यान जलते हैं सोही ४ नाना प्रकार के सर्प जलते हैं ॥ ३५ ॥ ७ वस्त्र जलते हैं सोही मानों ६ भोजपत्र के ५ वृक्ष का जलना है और पवन से अग्निकण ८ गिरते हैं सोही ९ तुष की अग्नि उड़ती है १० यहां भाले जलते हैं सोही मानों ११ बांस जलते हैं और वन की अग्नि में जलनेवाली १३ रोजों की पंक्ति के समान १४ घोड़े १२ जलते हैं ॥३६॥ राजा उम्मेदसिंह ने इस प्रकार की अग्नि लगाई सो १५ उस रणरंग में चमकती हुई आनंद पूर्वक ठहरी अपूर्व रीति से उस ज्वाला के १६ अंगार फैले जिनसे १७ तृण (मुख में तृण लेने) वाले बचते हैं और १८ जल (पराक्रम) वाले जलते हैं ॥ ३७ ॥ १९ सूर्य के सारथि अनूरु से २० सूर्य ने कहा कि २१ सेना २२ लगाम खैंच कर घोड़ों को रोक, बलवान् वीरों का तमासा २३ देखेंगे ॥ ३८ ॥ दिशा दिशाओं में २४ अग्नि दीखती है सो २५ ग्रीष्मऋतु के समान भादवा के महीने में अग्नि लगी २६ सेनाओं का नाश होता है सो देखो और भूमि तपती है जिसका और सेना का तमासा देखो ॥ ३९ ॥ (आधे छंद को सीधा पढकर उसीको उलटा पढने से पूर्ण छन्द होजाता है और उसका अर्थ बदल जाता है सो आगे बताते हैं) मनुष्य २७ पीड़ा युक्त होकर क्रोध में २८ सूर्य के समान लाल हुए और जैसे २९ घोड़े उठाये तैसे ही भयंकर चले ३१ सो (वे) ३० लड़नेवाले ३२ स्वाद लेकर यह आनंद लेते हैं और वे ३३ सुन्दर ३४ शरीरों को देते हैं इस छन्द में "तुद व्यथने" इस धातु से

अस्मत्सजातीयेष्वेव प्रसिद्धं गीतनामकं मरुदेशीयं छंदोनाम्ना त्रिकूटबद्धम् ॥

उम्मेद भूपति अंगमैं रस[1]बीर संकुलि[2] रंग[3]मैं बरबीर बारहसै१२०० प्रबीरन चंक्क लै चहुवान ॥

जयपनैं[5] सम्मुह जोरसौं भिलि[6] खग्ग झारिय भोरसौं[7] बर गुमर असिवर[9] समर लागि झैर[10] कुनर छरैंतर[11] हुनैंर[12] हत कर जबर खैंर[13] सर गर्जैंर[14] जय धर अडर भैंर[15] मिलि कचरघैंन[16] कर अमरपुर मचि दैंवर[17] दरबैंर[18] उदर पर मिलि भुंखर[19] पलचर खैंचर[20] चय अैंर[21] खपर खरभर पहर इक्क बजि टक्कर धरपर घोर इम घैंमसान[22] ॥

झैंर[23] बाम तोक्क प्रयागठ्है अमरेस दक्खिन[24] भाग ठ्है मरजाद पित्थल अैंग्ग[25] मंडिय बीच अैंप्पन[26] बाजि ॥

बिरुदालि बंदिनैं[27] बित्थरे अतिबेग सम्मुह उप्परे बजि कैंटक[28]

तुदा शब्द बना है जिसका अर्थ पीड़ित होना है और "लिह आस्वादने" इस धातु से लेह शब्द बना जिसका अर्थ स्वाद लेना है ॥ ४० ॥ "ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमारी (चारण) जाति ही में प्रसिद्ध ऐसा मरुभाषा का गीत नामक त्रिकूटबद्ध छंद है" राजा उम्मेदसिंह अपने शरीर में १ वीररस २ भरकर ३ युद्ध में बारह सौ वीरों की ४ सेना लेकर उस चहुवाण ने ५ जयपुरवालों के सम्मुख ६ भिड़कर ७ प्रभात से तरवार चलाई जहां ८ श्रेष्ठ घमंड के साथ ९ युद्ध में १० झड़ लगकर खोटे मनुष्यों के ११ अत्यन्त छलकों १२ हुनर (इल्म) से मिटाकर १३ बडे तीक्ष्ण बाणों के १४ निरंतर प्रहार से जय को धारण करके निर्भय १५ वीरों से मिलकर १६ शस्त्रों का कवच धारण किया १७ अमरपुरा के युद्ध में १८ दड़बड़ (शीघ्रदौड़) मचकर और उदर के ऊपर १९ शब्द करते हुए मांस खानेवाले मिलकर २० आकाश में विचरने वालों का समूह २१ अड़ा और देवी के खप्परों की खड़भड़ होकर भूमि पर एक पहर टक्कर बजकर इस प्रकार का २२ युद्ध हुआ राजा के २३ वाम हाथ को तोकसिंह और प्रयागसिंह हुए और अमरसिंह २४ दाहिनी ओर रहा, इसीप्रकार मरजादसिंह और पृथ्वीसिंह २५ आगे रहकर बीच में २६ अपना (उम्मेदसिंह का) घोड़ा रहा २७ भाटों की बिरुदावली फैली और गर्व से सम्मुख उठे २८ सेना को दण्ड देनेवाली रचक (टक्कर) हुई

हसनक रचक धमचक अटक[1] देक[2] तक मुलक अकबक अछक
छक भट ललक अति धक[3] तुपक चलि हक सलक[4] इक टक
गरक[5] रँग भक फरक वहरक[6] चमक खुर छुचि[7] झमक चकमक
किलक डक लगि अजक चउ४[9] चक[10] पुलक सक कर घमक प-
खरक अरक रज ढक अाजि[11] ॥
अतिमोद जुग्गिनि उल्लसैं[12] हर देवि नारद त्यों हसैं डरदेत लेत
डकार डाकिनि प्रेत हेत पसार[13] ॥
कमनैतँ[14] तीरन तानिकैं पखरैतँ[15] बेधत पानिकैं[16] बुधतनय[17] हित
जय प्रयाय नय वय छपयँ[18] रनसुमैं[19] अभय अतिसँय[20] बिजय चँय[21] भुव
बलयँ[22] बिसमय प्रलय मय भय समय निरदय उदय रवि नयनि-
लयँ[23] अतिरँय[24] अजय खँयकर[25] अँखयजय[26] अँय[27] उभय सँय[28] पय हृद-
य अँपचय[29] कटय भट रँनय[30] निचय हय गय मार हीन सुमार ॥

१युद्ध में २अटक नदी के जल पर्यंत का देश घबराकर अर्थात् बादशाही देश तक घब-राहट पहुँचकर, और आर्य्यावर्त की सीमा भी अटक ही है अछक छके हुए वीरों ने ललकार करके ३ अत्यन्त क्रोध से बढकर ४ बंदूकों की निरन्तर सलक की (बहुत बंदूकों के एक साथ चलाने को सलक कहते हैं) ५ गहरे रंग में डूबी हुई ६ ध्वजायें उडीं और ८ चमक के समान घोडों के खुरों से ७ अग्नि च-मकी और कालिकाओं की किलकारी होकर उनके वाद्य बजे, प्रसन्नता में संदेह करके अथवा प्रलय का संदेह करके रोमांच होकर १० चारों दिशाओं में ९ अचैन फैला और घोड़ों की पाखरें बजकर ११ युद्ध की रज से सूर्य ढक गया, योगिनियें अत्यन्त हर्ष से १२ फूलती हैं इसीप्रकार महादेव, पार्वती और नारद मुनि हसते हैं, डाकनियें भय देनेवाली डकारें लेती हैं और प्रेतों से स्नेह १३ फैलाती हैं १४ बाण चलानेवाले तीरों को खैंचकर १६ पराक्रम करके १५ पाखरोंवालों को बेधन करते हैं १७ बुधसिंह के पुत्र (उम्मेदसिंह) को विजय प्राप्ति कराने के अर्थ नीति के वचन कहते हैं और १६ युद्ध रूपी पुष्प के १८ भ्रमर २० अत्यन्त निर्भय होकर २१ देशों के समूहवाले २२ भूमि मंडल पर प्रलयमई निर्दय समय का संदेह कराकर सूर्य के समान उदय हुए वे वीर २३ नीति के घर २४ बडे बेगवान् २५ पराजय का नाश करनेवाले और २७ आगे आनेवाले शुभ भाग्य से २६ अक्षय विजय करनेवालों ने २८ दो-नों हाथ, पग और हृदय की २९ हानि (नाश) करके वीरों के ३० समूहों को

तं[1]गी रचैं कति तेहरी किं[2]सु अं[3]द्रि लंघित केहरी फटि मत्थ भे-
जन जुत्थ फैलत नूतन कि नवनीतं[4] ॥

छिकि टोप वाँहुल उच्छटैं[5] कटिकालि[6] कंकँटकी कटैं भट गरट
मिलि थट पुं[9]रट छट पट कुघट घट परि अं[10]वट कट कैंट[11]　कपट
तट अति झपट रन अं[12]ट　उबट बट रट बिकट रैं[13]हचट पलट नट
गति उलट झैं[14]टपट उछट खैं[15]गझट निपैं[16]ट अघ दट दा ट दिय
भिलि निकट प्रतिभट रपट मचि रन प्रकट रजबं[17]ट जुरत चाहत
जीत ॥ ४१ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनी रोला॥

बुंदी जैपुर उलटि बीर आये ति[18] अखारैं ॥
गायक सिंधू तां[19]र ग्राम आलाप उचारैं ॥
भुम्मि मचक्कैं कटक भार फन नाग पसारैं ॥

काटे और हाथी घोड़ों के समूह तो बिना गिनती (बेसुमार) मारे १ कितने ही घोड़े तीन तीन मलंग लेते हैं सो २ मानों ३ पर्वत को उल्लंघन करता हुआ सिंह मलंग (छलांगें) भरता है और मस्तक फटकर भेजों (मस्तिष्क) का समूह फैलता है सो मानों नवीन ४ मक्खन फैलता है, टोप कटकर ५ दस्ताने (बाहुत्राण) उड़ते हैं ७ कवच की ६ कड़ियों की पंक्ति कटती है ८ वीरों के अत्यन्त समूह मिलकर (यहां अधिकता दिखाने के कारण गरट और थट्ट दोनों एकार्थ वाची शब्दों का प्रयोग किया है) अथवा समूह की भीड़ मिलकर ९ सुवर्ण की क्रांतिवाले (केसरिया) वस्त्र शरीर पर बुरे घाट से पड़े हैं ११ हाथियों के कुंभस्थल कटकर १० खड्डों में गिरते हैं और कपट के किनारे से अत्यन्त झपटकर अर्थात् कपट से दूर भागकर युद्ध में मार्ग और विना मार्ग निरंतर १२ फिरते हैं १३ भयंकर दौड़ से नट की भांति पलटकर और उडकर १४ शीघ्र दौड़ से १५ तरवार की झाट से १६ बहुत पाप को दबानेवाली दपट देकर वे वीर समीप लेकर शीघ्रदौड मचाकर युद्ध में १७ रजोगुण के मार्ग को प्रकट करके विजय को चाहते हुए जुड़ते हैं ॥ ४१ ॥ १८ ते (वे) युद्ध के अखाड़े पर आये १९ गानेवाले सिंधवी रागनी के ग्राम में उच्च स्वर से आलाप लेते हैं "संगीत में स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं। यथा ॥ षड्जग्रामो भवेदादौ, मध्यमग्राम एव च ॥ गान्धारग्राम इत्येतत्, ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥१॥

ऐरावततैं सुप्रतीकै लग चीह चिकारैं ॥ ४२ ॥
दहकि दहकि दौलेयँ राज किरिराज पुकारैं ॥
लवणोदकसौं सुद्धनीरैं लग बढन बिथारैं ॥
बल सूदनसौं वामदेवँ लग अजक्क उसारैं ॥
बड़वामुखसौं ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारैं ॥ ४३ ॥
इम हड्ड कूरम अभंग बल जंग बिथारैं ॥
बज्जैं आयुध निसितं बाढ अरि गाढ उतारैं ॥
फूटैं सिर तरबूज फाँक कटि लाँकँ कुढारैं ॥
हत्थिन मत्थैं चन्द्रहास हुवर हत्थन म्हारैं ॥ ४४ ॥
सुंडादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारैं ॥
के उद्धत संग्रहि कलापैं हठि दंत निकारैं ॥
सैक्किम मालाँकार सोभ अति जोर उपारैं ॥
आधोरैंन घुम्मैं अचेत कपि ज्यौं द्रुम कारैं ॥ ४५ ॥
कुंभनतैं गजभद्र केक मुत्ताहल ढारैं ॥
मानौं मेचक बारिबाह डिगि सीकँर डारैं ॥
चउसट्ठी ६४ मारैं मलंग बावन ५२ बबक्कारैं ॥
हाक हक्कारैं केक जानि गज मार गैलारैं ॥ ४६ ॥

---

१ पूर्व दिशा के दिग्गज (दिशा को धारण करनेवाले हाथी) से लेकर २ ईशान दिशा के दिग्गज तक (क्रम से, ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद४अञ्जन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ दिग्गजों के नाम हैं) ॥ ४२ ॥ ३ जल जल कर कमठ ४ वराह ५ लवणोद से लेकर, शुद्धजल के समुद्र पर्यन्त समुद्र के सात भेद (लवणोद, क्षीरोद, दधिमंडोद, घृतोद, शुण्डोद, इक्षुरसोद, स्वादु उद अर्थात् शुद्धोद) हैं ६ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र से लेकर ७ ईशान दिशा के स्वामी शिवतक [पूर्व दिशा से क्रम पूर्वक ईशान दिशा तक के स्वामियों के नाम [इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर और शिव हैं)८ पाताल से ॥ ४३ ॥ ९ तीक्ष्ण १० लंक [कमर] ११ खड्ग ॥ ४४ ॥ १२ हाथी का कलावा पकड़कर १३ मूल को १४ माली की भाँति १५ महावत १६ काले वृक्ष से बंदर गिरै तैसे॥४५॥ १७मोती१८श्याम१९मेघ२०जलकण(बुंद) २१गर्जना॥४६॥

फुट्टैं बक्तर *सिंगिफेट बपु वेधि बिहारैं ॥
टक्करनतैं [1]नागोदं टोप [2]बैल खगन बिदारैं ॥
रुक्के पाय रकाब जोर [3]सादी सिसकारैं ॥
सच्चे कच्चे लखन सूर अति परख उघारैं ॥४७॥
कर तुट्टैं जैसैं [4]ऐंड़ाकु फन पंच उफारैं ॥
अंत्रावलि उरझैं कटार जनु [5]बड़िस बिसारैं ॥
छुरिका छत्तिन छेदि छेदि [6]मस्कर छबिमारैं ॥
॥ ४८ ॥
बुंदी जैपुर लाज बाद परि उभयर प्रहारैं ॥
अमरपुरेकी सीम अंत नर [7]कुणप निहारैं ॥
[8]लोहित लंबी छछक छूटि प्रेतन [9]जक पारैं ॥
[10]सांयक भय दायक [11]दुंसार [12]घायकैं घट सारैं ॥ ४९ ॥
सरिता भो वह [13]संपराय जल [14]सोनितैं धारैं ॥
बुंदी जैपुर [15]तट बिलंद [16]घट बिकट किनारैं ॥
फुल्लि [17]कुसेसय हृदय फाँक छबि [18]अतुल अपारैं ॥
[19]उतपल गन लोचन [20]अनूप हुव [21]बिकच हजारैं ॥ ५० ॥
[22]इंदिदिरैं उप्पर अनेक [23]गुटिका गुंजारैं ॥

---

* सींगवाले पशुओं की फेट से (यहां सिंगि की जगह सांग-पाठ होतो बरछी से बख्तर के फूटने का संबंध अच्छा होता है) १ पेट का कवच (पेटी) २ तरवारों के बल से ३ घोड़ों के सवार ॥ ४७ ॥ ४ सर्प ५ मच्छी पकड़ने कां कांटा ६ वांस की शोभा को ॥ ४८ ॥ ७ मुरदे ८ रुधिर की ९ चैन (आराम) भय देनेवाले १० बाण ११ दोनों ओर फूटकर १२ घाव करनेवाले होकर शरीर को बेधन करते हैं ॥ ४९ ॥ १३ वह युद्ध नदी रूप हुआ जिस में १४ रुधिर है सोही जल हुआ जहां बुंदी और जयपुर ही लंबे १५ किनारे (ढावे) हैं और वे किनारे ही भयंकर १६ घाट हैं अथवा कटे हुए शरीर हैं सोही भयंकर घाट हैं और हृदय की चीरें हैं सोही १८ तुलना रहित अपार फूले हुए १७ शतपत्र कमल हैं, कटे हुए नेत्र हैं सोही २० उपमा रहित २१ फूले हुए हजारों १९ नील कमल हैं (कितनों ही के मत से सामान्य कमल का नाम भी उत्पल है) ॥ ५० ॥ उन कमलों के ऊपर २२ भ्रमरों रूपी अनेक २३ गोलियें शब्द

गजन दंत कटि कटि गिरैं सु [1]करहाट कितारैं ॥
तं[2]बेरम [3]कुंभीर तुल्ल्य बलवान बिहारैं ॥
बाजी गन [4]अवहार बेस मिलि तास मझारैं ॥ ५१ ॥
सुंडि पतित[5] अंकुस समेत बनि [6]बडिस बिसारैं ॥
जि[7]रह गिरी [8]आनाय जानि पल [9]कर्दम पारैं ॥
कटि कटि उहत [10]कालखंज सुहि कमठ सिधारैं ॥
[11]बुक्का चैंप दद्दुर बिं[12]डंबि बहु फदक बिथारैं ॥ ५२ ॥
अंत्रावलि [13]अलगर्द्द रूप [14]संचर्य संचारैं ॥
जल[15]नीली निभ [16]सिंचय जाल इत तिरत अपारैं ॥
जत्थ [17]जलौका जूइकी सु [18]धमंनी छवि धारैं ॥
[19]गंडक संचय अंगुलीन बनि चपल बिहारैं ॥ ५३ ॥
हत्थ नि[20]हाका निकर होय करि [21]चलत कितारैं ॥
कटे तिलक बिचरैं [22]कुलीरैं [23]श्रुति सीप सुहारैं ॥
संख नख रु [24]संबूक संख [25]कीकस [26]अनुकारैं ॥

करती हैं और हाथियों के दंत कट कट कर गिरते हैं सोही १ कमल के जड़ों की पंक्तियां हैं २ हाथी हैं सोही बलवान् ३ मकरों के रूप से विहार करते हैं और घोड़े हैं सोही ४ घड़ियाल (मगर विशेष) के रूप से हैं ॥ ५१ ॥ अंकुश सहित ५ पड़ी हुई हाथियों की सुंडें हैं सोही ६ मच्छी पकड़ने के कांटे को झुलाती हैं ७ कवच हैं सो ही ८ मच्छी पकड़ने की जाल और मांस ही ९ कीचड़ है १० कलेजे कट कट कर बहते हैं सो ही कच्छप चलते हैं ११ बूकों (गुड़दों) का समूह ही मेंडक का १२ भ्रम कर (छलांग) फैलाते हैं ॥५२॥ आंतों की पंक्ति है सोही १३ जल सर्पों का १४ समूह चलता है, यहां १६ वस्त्रों के अपार समूह तिरते हैं सोही १५ शैवाल (कांजी) के सदृश हैं १८ मरेहुए पुरुषों की नाड़ियें (नसें) तिरती हैं सोही १७ जलौकाओं (जोकों) की शोभा धारण करती हैं, कटी हुई अंगुलियों के समूह ही १९ छोटी मच्छियें चपल बन कर चलती हैं ॥ ५३ ॥ कटे हुए हाथों के समूह ही २१ पंक्तियें करके २० गोह (गोहिली) के समान चलते हैं और कटीहुई तिल्लियें (उदरस्थ मांस पिंड) ही मानों २२ केकड़े फिरते हैं २३ कटेहुए कान तिरते हैं सोही सीपें हैं, उस युद्ध में नख हैं सो ही २४ सांखल्या और २५ हड्डियें हैं सोही शंख के २६ सदृश हैं

अँत्थि चूर सिकता अनूप नर सूर निहारैं ॥ ५४ ॥
आवरणिक आँवर्त्त रूप अटि चक्र उघारैं ॥
धूँम लहरि उठैं अनेक अति वात इसारैं ॥
कुंभ कँरीके चक्रवाक ध्रुव पीतन धारैं ॥
छुंदी गिरत हँयच्छटा सु सारस संचारैं ॥ ५५ ॥
चामर बनि चक्रांग रूप बक टोप बिहारैं ॥
घन कारंडव गँजन घंट गिरि गिरि गुंजारैं ॥
उंच्चूल सु आँटी कपाल मँग्गू किलकारैं ॥
गज अंगुलि कटि कटि गिरी सु सिखरी व सुढारैं ॥ ५६ ॥
कातर वीरंणा तंब केक कढि लग्गि किनारैं ॥
शृंगाटकैं करसूंक संघ बिच देत बिहारैं ॥
ऊरु पतित सिंसुमार आभ गॅल उंद्र अपारैं ॥
घुंटक घन सालूक सोभ धर पातितैं धारैं ॥ ५७ ॥

अथवा छोटे शंख, सांखूल्या और शंखों का अनुकरण हड्डियें करती हैं "क्षुद्रशङ्खा : शङ्खनखाः" इत्यमरः ॥ वीर पुरुष हैं वे १ हड्डियों के चूरे को ही उपमा रहित २ रेत निहारते हैं ॥ ५४ ॥ ३ रुधिर में तिरती हुई ढालें ४ चक्राकार (गोल) फिरकर भ्रमि पटकती हैं, ५ यहां धूम (धुवां) है सो ही ६ पवन के इसारे से लहरें उठती हैं ७ हरताल से रंगेहुए हाथियों के कुंभस्थल हैं सो ही निश्चय ही पीलेपनको धारण करनेवाले ८ चकवे हैं, उस युद्ध में कटीहुई ९ घोड़ों की गरदनें गिरती हैं सो ही सारस १० चलते हैं ॥ ५५ ॥ चमर हैं सोहि ११ हंस बनते हैं और १२ बुगलों के रूप से टोप विहार करते हैं १४ हाथियों की घंटा गिर गिर कर बजती है सोही मानों १३ बतक (जलजंन्तु विशेष) बोलते हैं १५ ध्वजाओं के वस्त्र हैं सोही १६ आटी नामक पक्षि विशेष हैं और कटे हुए कपाल हैं सोही १७ जलमुर्ग बोलते हैं कटीहुई हाथियों की अंगुलियें गिरी हैं सोही श्रेष्ठ रीति के १८ कांकड़े के ढंक हैं ॥ ५६ ॥ कितने ही कायर १९ कांस (तृण विशेष) के समूह के समान इस युद्ध रूपी नदी से निकल कर किनारे लगते हैं २० सिंघाड़ों के समान २१ नखों का समूह २२ शोभा देता है २३ पडीहुई जंघा है सोही २४ सूंस (मगर विशेष) की शोभा देती है २५ और कटेहुए गले (कंठ) ही अपार २६ जलमानस (जल माणसिया) है पृथ्वी पर २९ पडेहुए २७ घुटने २८ कमल के मूल (कंद) की शोभा धरते हैं ॥ ५७ ॥

निडर पराक्रम पृथुल[1] नाव नय मंग[2] निहारैं ॥
लंबे केतन[3] बरदवान पवमान[4] प्रसारैं ॥
प्यारे दुल्लभ प्रान रूप आतर[5] कर डारैं ॥
बीर नियामक[6] रस बिसेस सुहि पार उतारैं ॥ ५८ ॥
उट्ठैं घायल लँपन[7] झग्ग बुदबुद अनुकारैं[8] ॥
मज्जा[9] मेदं[10] अनेक ओघ डिंडीर[11] दिकारैं ॥
ऐसी दुस्तर आपगा[12] सु हुव स्रोत[13] हजारैं ॥
बुंदी जैपुर उभयर बीर तिहिँ तिरन बिचारैं ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसी दुस्तर आपगा, बढे तिरन बर बीर ॥
इत उतके आहव अडर, धाराधर[14] कर धीर ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत पित्थल चालुक्य असह कूरम प्रताप उत ॥
इत कबंध अमरेस उत सु जद्दव दलेल द्रुत ॥
इत प्रयाग चहुवान सुरत[15] उत कुम्म सुमंतह[16] ॥
इत मरजाद असंक उत सु कूरम जसवंतह ॥
इत तोक बिजय कछवाह उत इत उत कुम्म अजीत दुव२

इस युद्ध रूपी नदी के तिरनेको निर्भय पराक्रम है वही १ बडी नाव है और नीति है सोही उस नाव का २ मस्तक है ३ सेना में लंबी ध्वजा है सोही उस नावका वरदवान (मस्तूल) है जिसको ४ पवन फैलाता है अत्यन्त प्यारे प्राण हैं सोही उस नदी की उतराई के५ कर में डालते हैं "आतरस्तरपण्यंस्या" दित्यमरः॥ वीर रस ही उस६नाव का खेवटिया है सोही उस नदी के पार लगाता है॥५८॥घायलों के७*मुख से झाग उठते हैं सोही उस नदी में बुदबुदों के ८ अनुकरण करनेवाले हैं९अस्थिगत धातु और (मींजी, सार)१०चरबी का समूह ही११फेन (झाग) दीखते हैं ऐसी दुस्तर१२नदी की हजारों १३ धाराएं हुईं ॥ ५९ ॥१४खड्ग हाथों में लिये ॥ ६० ॥१५सुरतसिंह१६श्रेष्ठ बुद्धिमान्॥६१॥

* क्रिया आकर फिर विशेषण दिया जावे उसको समाप्तपुनरात्त दोष कहते हैं परन्तु क्रिया के पीछे फिर अनेक विशेषण व अनेक उपमा दी जावे वहां यह दोष मिटजाता है सोही यहां जानना चाहिये.

इत देव हड्ड हम्मीर उत हरखि कुम्म हमगीर हुव ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हड्ड भवानीसिंह इत, उत माधव कछवाह ॥
इत सगताउत अचल उत, संकर कुम्म सिपाह ॥ ६२ ॥
च्यारि *अमर रट्ठोर सुत, अब तिनके †अभिधान ॥
इत भैरव अंगद अचल, उत कछवाह अमान ॥ ६३ ॥
इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
इत ‡सन मान कबंध उत, अर्ज्जुन कुम्म अचाल ॥६४॥
अडर सिवाईसिंह इत, रनपंडित रट्ठोर ॥
अभयसिंह कछवाह उत, मिले उभयर भट §मोर ॥ ६५ ॥
इत सु भट्ट बुंदीसको, जुद्ध निपुन जगराम ॥
उदयसिंह परमार उत, कुपित भिरयो जय काम ॥ ६६ ॥
उभय उभय इत्यादि जुरि, अनी अमर उमराव ॥
किन्नौं रन रविमल्ल कवि, बरनैं बिरुद बढाव ॥ ६७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

चालुक्क वर पित्थल जंग चाह, नाथाउत पुर निम्मान नाह ।
पैंसठि६५पदाति[2] सादी[3] पचीस२५,साजि चलिय कुम्म परताप सीस६८
उततैं प्रताप हय सत१००उपेतं[4], खिजि आयो सम्मुह बीर खेत ॥
पित्थल उर मारिय बान पंच५, रन बीर यहहु संक्यो न रंच।६९।
मारकँ[5] सिर झारिय मंडलग्ग[6], कटि टोप कछुक सिर खगियँ खग्ग
तस सुभट इहाँ इक वार किन्न, कर सव्य सांगद सु करिय भिन्न७०
दै जात चलिय पित्थल कृपान, सिर भिन्न होय अरि भुव संयान[1]

॥ ६२ ॥ * अमरसिंह राठोड़ के चार पुत्र † नाम ॥ ६३ ॥ ‡ इधर से ॥ ६४ ॥ §मोड़ (मुकुट)॥६५॥६६॥ १ सूर्यमल्ल कवि स्तुति को बढाकर वर्णन करते हैं ॥ ६७ ॥ २ पैदल ३ सवार ॥ ६८ ॥ सौ घोड़ों ४ सहित यहां (अजहत्स्वार्था लक्षणा से घोड़ों के सौ सवार जानना चाहिये) ॥ ६९ ॥ ५ मारनेवाले पर ६ खड्ग चलाया ७ घुसा ८ भुजबंध सहित वाम हाथ काट डाला ॥ ७० ॥१सोया

पुनि हनि प्रतापके सुभट सत्त७, आयो उडाय हय इत उमत्त।७१॥
हयखंध[1] तेग झारिय प्रताप, हय गिरत भयो पयचार[2] आप ॥
हय हीन तिमहि कर सव्य[3] हीन, पुनि हनिय कुम्भ भट नव ९
प्रवान ॥ ७२ ॥

इहिं बिच प्रताप झारिय कृपान, पित्थल कटयो सुतिल तिल प्रमान
सन्नाह[4] लयो नहि प्रथम सूर, पानिप[5] दिखाय तेंसोहि पूर ॥७३॥
सत्रह१७अरी तेरह१३स्व[6]भट सत्थ, सजि इष्ट[7]लोक पहुँच्यो समत्थ[8]
रट्ठोर अमर जद्दव दलेल, खिजि खिजि इत मंड्यो वीर खेल।७४।
तेतिस३३ पैदग[9] इत कृति२० तुरंग[10], उत सत १०० रु सट्ठि६०अनु-
क्रमें[11] अभंग ॥

लखि कहिय परस्पर वाह वाह, बाहहु तुम वाहहु नेंव[12] सिपाह७५
भिरि प्रथम रचिय सेलन भचक्क, रमि दाव[13] धाय[14] कावन रचक्क ॥
इम फिरत बाजि दोउन२ उडानि, दुव२ भंड कुंडभृत[15] चक्र जानि७६
ननु[16] कै दिनेस[17] अरु जामिनीस[18], गरदाय फिरत हाटक गिरीस[19] ॥
आवर्त्त उदधि[20] जिम दुव२ जिहाज, कलि किंधु[21] कपोत पर उभय
२ बाज ॥७७॥

दुव२ पत्र बातचक्र[22] कि घिरंत, कन्न्या कि उभय कुंदिय[23] फिरंत ॥
दुव२लट्टुव[24] जानि नट सिर दिखाय, इम फिरिय बीर बाजिन उडाय ७८
अमरेस झुक्कि तोमर[25] अभंग, जद्दव हय बेध्यो निडर जंग ॥

॥ ७१ ॥ १ घोड़े के कंधे पर २ पैदल ३ वाम हाथ से ॥ ७२ ॥ ४ कवच ५ पराक्रम ॥ ७३ ॥ ६ अपने वीरों के साथ ७ चाहता था उस लोक में ८ समर्थ ॥ ७४ ॥ ९ पैदल १० यहां लक्षणा से सवार जानो ११ सौ पैदल और साठ सवार इस अनुक्रम से १२ नवीन ॥ ७५ ॥ १३ दाव खेल कर १४ दौड़ १५ कुम्हार के चाक पर दो मटके होवैं इस तरह ॥ ७६ ॥१६अथवा निश्चय ही मानों १७ सूर्य और १८ चन्द्रमा १९ सुमेरु पर्वत को घेरकर फिरते हैं २० समुद्र के भ्रमि [चक्कर] में दो जहाज२१मानों एक कबूतर पर दो बाज हैं ॥ ७७ ॥ २२पवन के गोंद में दो पत्ते घिरे २३ नृत्य विशेष२४गेंद॥७८॥२५भाला

हय गिरत [1]अपर आरुहि दलेल, मारयो कबंध [2]उर सुभर सेल ७९
सहि सेल अमर हनि सत्रु सत्त७, मारयो दलेल [3]असिवर उमत्त ॥
जद्दवहिं मारि अग्गैं [4]जगाम, [5]भिटयो भटेस सीसोद स्याम ॥ ८० ॥
दोउन२ कृपान झारिय दुरहत्थ, [6]मुंडमाल मध्य गय उभय२मत्थ॥
अरि नवें९पच।स२५निज भट उपेत, रठोर गयो [7]निर्ज्जर निकेत८१
इत भट प्रयाग इक्क१ हि अभंग, सुरतेस उत सु हय सट्ठि६० संग॥
मिलि उभय२जंग मंडिय अमान, बदि वाह वाह सिव किय बखान।८२।
[8]पटु प्रथम तुपक झारिय प्रयाग, अरि दोय२हनिय तिम [9]आखु नाग।
[10]हकरांय बाजि पुनि तुपक डारि, कटि हिंतु [11]कालनागिनि निकारि ८३
सुरतेस निकट पहुँचयो प्रयाग, फिरि मंडल खेल्यो [12]हेति फाग ॥
जेजे भट [13]पिल्ले सुरत जत्थ, तेते प्रयाग सब हनिय तत्थ ॥ ८४ ॥
इम फिरत हड्ड हैवर उताल, जिम [14]अनिल अग्गि तृन बिपिन जाल
तिय [15]मृगिय सुरत जिम नर तुरंग, इम [16]सुरतै हड्ड दब्यो अभंग८५
आघात खग्ग दद्द अनूप, किय बहुत कुम्भ [17]आलक्त कूप ॥
खट६ सुभट सुरत पिल्ले [18]खिसाय, [19]पैले प्रयाग पर रन रिसाय।८६।
अभिमन्न्यु लरयो खट रथिन [20]आजि, बिफ्फुरयो प्रयाग इम दपटि बाजि।
दुव २ मारि च्यारि ४ घायल गिराय, खट६ असि प्रहार तिनकेहु खाय ॥ ८७ ॥
सुरतेस सीस हंकिय सजोर, मानहु लखि [21]जिह्मग मत्त मोर ॥

१ दूसरे घोड़े पर चढ़कर २ सुभट ने ॥ ७९ ॥ ३ श्रेष्ठ तरवार से उन्मत्त होकर ४ चला ५ वीरों का पति शीशोदिया श्यामसिंह से मिला ॥ ८० ॥ ६ शिव की मुंडमाला में ७ स्वर्ग में गया ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८ चतुर ९ चूहे को सर्प मारे तैसे १० घोड़े को ललकार कर ११ तरवार ॥ ८३ ॥ १२ शस्त्रों का फाग सुरतसिंह ने १३ भेजे ॥ ८४ ॥ १४ पवन से तृणों के वन में अग्नि फिरै तैसे १५ मृगी जाति की स्त्री अश्व जाति के पुरुष से जैसे दबजाती है तैसे १६ सुरतसिंह को हाडा ने दबाया ॥ ८५ ॥ १७ अलते के कूए कर दिये अलते का रंग लाल होता है १८ सिटाकर १९ पूगे ॥ ८६ ॥ २० युद्ध में ॥ ८७ ॥ २१ सर्प

इक१जवन आनि इहिँ बिच उमाहि, बेध्यो प्रयाग सित[1] सँगि बाहि८८
इहिँ सँगि सहित घोटक[2] उडाय, कट्ट्यो सु मिच्छ पुनि पिहुल[3] काय
यँहँ सुरतसिंह किय खग्ग वार, मारयो प्रयाग मृड[4] जानि मार॥८९
ढुंढत जिहिँ हारे कंक[5] ढैंक, नहिँ मिलिय लुत्थि पलचरन[6] नैंक ॥
अवसिष्ठ[7] रहिय नहिँ लैन अग्गि, लुत्थि सु प्रयाग गय असिन[8] लग्गि९०
हनि पंच५ च्यारि४ घायल बिधाय[9], पत्तो प्रयाग निर्जर[10] निकाय[11]॥
मरजाद सु मुहुकम अन्ववाय[12], सतपंच५००पैदग[13] सादी[14] सजाय ।९१।
इत चलिय पिक्खि जसवंत बीर, धुर धर झलायपति कुमर धीर ॥
वहहू सजि खट सय ६०० अश्ववार, इमगीर पैदिक[15] त्योंही हजार
१००० ॥ ९२ ॥
मरजाद सीस धारत मरोर, आयो राजाउत रचत रोर[16] ॥
मरजाद मत्थ तकि तीर तीन३, दपटाय[17] बाँजि कछवाह दीन ॥९३॥
मरजाद सुभट इक नाम मान[18], कूरम हय मारयो दै कृपान ॥
जसवंत अपर[19] हय चढि जरूर, समसेर हन्यों वह मान सूर ॥ ९४ ॥
कूरम निज जद्दव सुभट दोय२, हड्डा सिर हूले[20] कुपित होय ॥
दै चक्क दुहुँन२ मरजाद बिंटि, भालन प्रहार किय भिंटि भिंटि ।९५।
इत हड्ड दुहुँन२ तोमर बिदारि, जद्दवन गयो मरजाद जारि[21] ॥
रट्ठोर बहुरि पिल्ल्यो रिसाय, खग झारि हड्ड लिय सोहु खाय ।९६।
पठये इम कूरम दस१० सिपाह, लिन्ने ति मारि लगि बिजय लाह ।
हड्डा सुमेरु पठयो बहोरि, दिन्नों कृपान तिहिँ खंध दोरि ॥ ९७ ॥

को देखकर १ तीक्ष्ण बरछी चलाकर ॥ ८८ ॥ २ घोड़ों ३ बड़े शरीर वाले को ४ शिव ने कामदेव को मारा जैसे ॥ ८९ ॥ ५ दोनों मांसाहारी पक्षि विशेष हैं ६ मांस खानेवालों को ७ जलाने को अवशिष्ट [बाकी] नहीं रहा ८ तरवारों के लग गया ॥ ९० ॥९करके१०देवताओं के११स्थान [स्वर्ग] में गया१२हुकमसिंह के वंश में१३पैदल १४ सवार ॥ ९१ ॥ १५ पैदल ॥ ९२ ॥ १६ १७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ९३ ॥ १८ मानसिंह ने १९ दूसरे घोड़े पर ॥ ९४ ॥ २० बढाये वा भेजे ॥ ९५ ॥ २१ हजम करगया ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपवीत उतरि मरजाद *अंस, बैठो†तनुत्र भिदि‡पृष्ठिवंस॥
इहिं घाय भयो §संभर अचेत, खिन धरिय मोह[1] ढरि परिय खेत ९८
तजि मोह बहुरि बिनुही तुरंग[2], जसवंत हिंतु[3] किय उठ्ठि जंग ॥
पुनि मारि अठ्ठ८ कूरम प्रबीर, सुत्तो [4]सतल्प संगर सधीर ॥ ९८ ॥
इम खाय सत्रु एकोनबीस१९,[5]बलि करिय चेत घायल बतीस ३२
विंटिय तब अच्छरि डारि बाँहि, मरजाद [6]पत्त इम [7]नाकमाँहि १००
चोरासी८४निजभट रहिय खेत, सतदोय२००भये घायल सु चेत॥
इत तोकसिंह मिलि छोह[8] अंग, उत बिजयसिंह कूरम अभंग१०१
दुव२दपटि [9]बीतिं रीतिन दिखाय, दुव२करत वार असि घाय दाय
रन [10]चत्वर दुव२ जयखंभ रूप, दुव२ स्वामि धर्मधर भटन [11]भूप१०२
दुव२ [12]द्विरद इक्क [13]धेनुक दिखात, दुव२ सिंह जानि इक [14]बस्त आत
यँहँ तोक चंड असिबर चलाय, गति वज्ज [15]बिजय दिन्नों गिराय१०३
इत अजित अजित कछवाह [16]दोय२, हथियार मार मिलि मत्त होय
गोलिन लगि दोउन२ हय गिरंत, व्है [17]पदिक जुरे बलवंत [18]हंत १०४
[19]आतापि उभय२ जिम जुरत जुद्ध, कैधौं [20]चरनायुध उरझि क्रुद्ध ॥
जिम [21]त्रोटि नखर [22]खरकोन जंग, [23]दाक्षाय्य कंक [24]जनु अतुल दंग१०५
भिरि इम प्रवीर बनि छिन्न भिन्न, करि कित्ति दुहुँन२[25]दिवँ बास किन्न
इत देवसिंह हड्डा उदार, हरदाउत सत्रुन गिलनहार ॥ १०६ ॥
हम्मीर कुम्भ सिर बिरचि हाक, जग कतल करत आयो [26]कजाक

* कंधे में † कवच फट कट कर ‡ पीठ की हड्डी में § बहुवाण १ मूर्छा॥ ९८ ॥ २ बिना घोड़े ३ से ४ रथशय्या ॥ ९९ ॥ ५ पुनि [फिर] ६ गया ७ स्वर्ग में गया ॥१००॥ ८ क्रोध ॥ १०१ ॥ ९ घोड़ों को १० युद्ध के चौक में ११ उमरावों वा वीरों के राजा ॥ १०२ ॥ १२ दो हाथी एक १३ हथनी पर १४ एक बकरे पर १५ विजयसिंह को ॥ १०३ ॥ १६ दोनों अजितसिंह १७ पैदल १८ खेद है (घोड़े मरजाने से खेद के वचन कहे हैं) ॥ १०४ ॥ १९ चील्ह पक्षी २० कुक्कुट (मुरगे) २१ चंचू और नखों से २२ तीतर पक्षी लड़ै जैसे २३ गीध २४ मानों ॥ १०५ ॥ २५ स्वर्ग में ॥१०६॥ २६ युद्ध में

मिलि उभय२भाद्रपद सुदिर मान, आसार हेति बरखत अमान१०७
हम्मीर इहाँ करि असि प्रहार, वह देव न राख्यो अश्ववार ॥
तब पदिक होय रचि नट मलंग, सौरसन झटकि ऐंच्यो सुसंग१०८
पयचार उभय२ इम बनि प्रबीर, हठ पुब्ब जुरिग देव रु हमीर ॥
हलकारि खग्ग झारत दुहत्थ, ललकारि होत पुनि लुत्थि बत्थ१०९
तुट्टिय लागि दोउन२ असि तनंकि, कट्टार तबहि झारिय झनंकि ॥
छर्म मल्ल जुद्द पुनि रचि अछेह, दुव२ वीर गिरे इम छोरि देह ।११०।

॥ षट्पात् ॥

सुभर भवानीसिंह महासिंहोत उमँडि इत ॥
उत माधव कछवाह हलिय, निज स्वामि बिजय हित ॥
खुरन अग्ग भुव खुंदि मुंदि पँन्नग सहस्र मुख ॥
तुमुल झारि तरवारि रारि मंडिय रावन रुख ॥
मिटि गुमर पिट्ठि कच्छप मुरकि दुरकि निट्ठि सूँकर छविग
भारुन भटेस धिक्कारि भिरत दिक्करि गन चिक्करि दविग ११२
जिम आखंडल जंभ सव्यसाची राधासुत ॥
स्वामी तारक सूर भीम कीचक बल अद्भुत ॥
पुनि हलहेति प्रलंब सूनसागिर अरु संबर ॥
अंजनिनंदन अक्ष वज्रतुंड रु काकोदर ॥
मैनाकस्वसा जित सुरमहिष आजगवी अंधक असुर ॥

१भादों के मेघ के समान २खड्गों रूपी पानी॥१०७॥३घोड़े को मार डाला ४कर्पट नंच-ला (कर्धनी अथवा कमरबंधा)॥१०८॥ ५पैदल ॥१०९॥ ६समर्थ॥११०॥ ७शेषनाग के रावण की भाँति ८घमंड मिटकर १० वराह ठहरा ११ कायरों को धिक्कार देकर १२ दिशाओं के हाथियों के समूह १३ चीत्कार शब्द करके दबगये ॥ १११ ॥ १४ इंद्र और जंभासुर १५ अर्जुन और १६ कर्ण १७ स्वामिस्वकार्तिक और १८ तारकासुर भीम और कीचक १९ बलदेव और प्रलंबासुर जैसे २० समुद्र का पुत्र कामदेव और २१ शंबरासुर २२ हनुमान और २३ अक्षयकुमार २४ गरुड़ और २५ सर्प २६ पार्वती (देवी) और २७ महिषासुर, जैसे २८ शिव और अंधक असुर अड़े

इहिँ रीति झपटि आहव अजिर[1] बीति[2] दपटि लग्गे लरन।११२।
कूरमको करवाल[3] हठु झिल्ल्यो तोमर[4] पर ॥
कटत कुंत[5] असि कड्ढि अनखि झारिय इहिँ अवसर ॥
कूरमको सिर कट्टि निडर किय रुद्र निवेदन[6] ॥
इम अछ्त[7] रहि अप्प अरिन मंडिय उच्छेदन[8] ॥
वर बाजि नाव खेयक[9] बलिय कुच्छेयक[9] दिय बलि[10] करट[11] ॥
जय धारि फिरिग जानिय जगत भिरिग भवानियसिंह भट११३
इत सगताउत अचलसिंह कूरम उत संकर ॥
इत प्रबीर लवअंस[12] उत सु कुंस[13] बंस भयंकर ॥
इत बुंदिय धर अरर[14] उत सु ढुंढाहर तालक[15] ॥
उदयनेर इत ओप उत सु जैपुर उज्जालक ॥
इत इक्क१उत सु दस१०हय अधिप इत सिव रक्खक बिष्णु उत ॥
कलिकार[15] फुरे हिय सुम[16] बिकासि निकसि जुरे कलिकार[17] नुत।११४।

॥ दोहा ॥

दस१० दस१० झेलि प्रहार दुवर, रहे ति घायल रंग ॥
आयु भयो बलवान यहँ, मेटी त्रिदिव[20] उमंग ॥ ११५ ॥
इत भैरव अमरेस सुत, रनकोबिंद[21] रठोर ॥
अर[22] अमान कछवाह उत, जवी[23] जुरिग अतिजोर[24] ॥ ११६ ॥
कूरम खग्ग कबंधकैं, दिन्नों तमकि सदंध ॥
कटि बाहुलैं[25] कर अद्ध कटि, बैठो लागि सबिंध[26] ॥ ११७ ॥

तैसे १ युद्ध के आंगन (चौक) में २ घोड़े दौड़ाकर लड़ने लगे ॥ ११२ ॥ ३ खड्ग ४ भाले पर ५ भाले कटते ही ६ शिव के भेट किया ७ आप (खुद) घाव रहित शत्रुओं को ८ काटना शुरू किया ९ कौक्षेयक (खड्ग) से १० बलिदान (भोजन) दिया ११ काक पक्षियों को ॥ ११३ ॥ १२ लव के वंश में (सीपोदिया क्षत्रिय) १३ कुश के वंशवाला (कछवाहा क्षत्रिय) १४ कपाट १५ ताला १६ कलियों के आकार से हृदय फूलकर १७ पुष्प होगये १८ युद्ध करनेवाले नारद से १९ स्तुतियोग्य ॥ ११४ ॥ २० स्वर्गकी ॥ ११५ ॥ २१ युद्ध चतुर २२ शीघ्र अथवा अड़ (लड़) करके २३ वेगवान् जुड़े २४ अतिबल से ॥ ११६ ॥ २५ दस्ताना २६ पाँचे तक ॥ ११७ ॥

ऐसैंही इक अंस[1] पर, खाय उभय२ तस खग्ग ॥
मार्यो कुम्म अमानकौं, इम रठोर उदग्ग ॥ ११८ ॥
पुनि कूरम भगवंत प्रति, जुर्यो मलंगत मत्त ॥
दोउन२ असिवर छाक छकि, तजे कलेवर[2] तत्त ॥ ११९ ॥
इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
अरे इच्छनै[3] जोरे[4] उभय२, कर तिच्छन करवाल ॥ १२० ॥
मानौं अद्दव मेघमैं, चपला जुग२ चमकाय ॥
झटके[5] इम झमकाय दुव२, हुव चटके घन घाय ॥ १२१ ॥
इमहि बीर सनमान इत, उत अर्ज्जुन कछवाह ॥
तिल तिल कटि पहुंचे तविष[6], लै दुव२ अच्छरि लाह ॥१२२॥
अडर सिवाईसिंह इत, सूर अभय उत सज्जि ॥
परे खेत घायल उभय२, रुहिरँ छक्कन[7] रज्जि ॥ १२३ ॥
इत भट्ट सु बुन्दीसको, जयगाहक जगराम ॥
उदयसिंह परमार सिर, धप्यो प्रसारत धाम[8] ॥ १२४ ॥
कुंत[9] इक्क१ परमारको, खाय महारिय खग्ग ॥
किन्नौं प्रबल करोडियाँ[10], अरि सिर खंध अलग्ग ॥ १२५ ॥
उदयसिंहकौं मारि इम, बिंट्यो जद्दव वग्ध ॥
देह छोरि दिय पत्त दुव, अच्छरिं मंडिय अग्घ ॥ १२६ ॥
ज्यौं संगर कनउज्जके, चंद लर्यो असि चंड ॥
इम जुट्यो जगराम यँहँ, खंडन करि बपु खंड ॥ १२७ ॥
इत्यादिक इत उत लरत, बुंदी सुभट बिसेस ॥

---

१ कंधे पर ॥ ११८ ॥ २ शरीर ॥ ११९ ॥ ३ शीघ्र ४ नेत्र मिलाये ॥ १२० ॥ ५ तरवारें (यहां लक्षणा से तरवार का ग्रहण है, नहीं तो एक वार में दो टुकड़े होजाने को डिंगळभाषा में झटका कहते हैं) ॥ १२१ ॥ ६ स्वर्ग में ॥ १२२ ॥ ७ रुधिर की छक्कों से शोभित होकर ॥ १२३ ॥ ८ तेज तथा अपना स्वरूप ॥ १२४ ॥ ९ भाला १० भाटों की एक जाति ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥

बिय असि झारत बुद्ध[1] सुव, दुपहर चंड दिनेस ॥ १२८ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

चल्यो इत भुपति झारत खग्ग, झरैं अरि घायल डारत झग्ग ॥
इतैंउत घोर मचैं अवमद्द[2], इतैंउत आवहिं आवहिं नद्द ॥ १२९ ॥
इतैंउत मुंडन छादित भुम्मि, इतैंउत डोलत घायल घुम्मि ॥
इतैंउत सं[3]कुलि लुत्थिन लुत्थि, इतैंउत बाढ बिखेरत बुत्थि ।१३०।
इतैंउत खंजर होत दुसार, इतैंउत फुट्टत पट्टि[4]स पार ॥
इतैंउत होत तुपक्कन मग्ग, इतैंउत बेधत सेलन[5] अग्ग ॥ १३१ ॥
इतैंउत तीरन ढंकत गैन[6], इतैंउत उद्धत संगितसैन[7] ॥
इतैंउत उग्र रचैं रन रोर[8], इतैंउत पात[9] गदा अति जोर ॥ १३२ ॥
इतैंउत चाप चटक्कन[10] चक्क, इतैंउत धूपन[11]की धमचक्क ॥

॥ तचक्क१मचक्क२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इतैंउत पा गति आयुध छुट्टि, इतैंउत मुट्ठिन[12] मारत मुट्ठि ॥ १३३ ॥
इतैंउत भोंहँन चुंबत मुच्छ, इतैंउत उड्डत गोदन[13] गुच्छ ॥
इतैंउत अंब्बन[14] लग्गत लीह, इतैंउत कातर कड्ढरि जीह ॥१३४॥
इतैंउत तुट्टत संकुलि[15] सीस, इतैंउत सूर रिझावत ईस ॥
इतैंउत डाकिनि खाजत खेत, इतैंउत पानि[16] पसारत प्रेत ॥ १३५ ॥
इतैंउत डोलत अंत्रन व्याल[17], इतैंउत फुट्टत कंठ कपाल ॥
इतैंउत धावत सोनित धार, इतैंउत कीकस[18] बृंद अपार ॥ १३६ ॥
इतैंउत नैंन उछट्टत कड्ढि, इतैंउत बाहु फरक्कत बड्ढि ॥
इतैंउत टोप बकत्तर टूक, इतैंउत हू[19]रव हूरव हूक ॥ १३७ ॥

---

१ बुधसिंह का पुत्र ॥१२८॥ २ पीड़ाकारी युद्ध ॥१२९॥ ३ भरगई ॥१३०॥ ४ कटारी ५ भालों के अग्र भाग से ॥ १३१ ॥ ६ आकाश को ७ बरछियों से सेना ८ शब्द ९ प्रहार ॥ १३२ ॥ १० चक्र (सेना) ११ तरवारों की १२ मुक्कों से अथवा खड्ग की मूंठों पर मूठी मारते हैं ॥ १३३ ॥ १३ मस्तिष्क (भेजों) के समूह १४ घोड़ों की पट्टी ॥ १३४ ॥ १५ अवकाश रहित १६ हाथ फैलाते हैं ॥१३५॥ १७ आंतों के सर्प १८ हड्डियों के समूह ॥ १३६ ॥ १९ हू हू, शब्द अथवा हूरों (अप्सराओं) का शब्द

इतैंउत बावन गावनहार[1], इतैंउत जच्छ जपैं जयकार ॥
इतैंउत नारद अक्खत वाह, इतैंउत साकिनि देत सिराह ॥ १३८ ॥
इतैंउत चौंकि फिरैं चउसट्ठि६४, इतैंउत सूरन सज्ज समट्ठि[2] ॥
इतैंउत तंडव[3] मंडत रुंड, इतैंउत झुक्कत झुंडन झुंड ॥ १३९ ॥
इतैंउत बाहहु बाहहु झुल्लि, इतैंउत तेगन झारत तुल्लि ॥
इतैंउत बाजिन वग्ग तमाम, इतैंउत कुद्दत गैवर[4] ग्राम ॥ १४० ॥
इतैंउत पक्खर घंटन घोर, इतैंउत ऑग्गि[5] सिलग्गत सोर[6] ॥
इतैंउत वद्दलके अनुकार, इतैंउत लोहित[7] छुट्टत धार ॥ १४१ ॥
इतैंउत चाप सु वासव चाप, इतैंउत गज्ज सु गज्ज अमाप ॥
इतैंउत सीकर[8] गोलिन गोट, इतैंउत दंतिन दंत बकोट[9] ॥ १४२ ॥
इतैंउत ओज इरम्मद[11] धारि, इतैंउत त्यौं तड़ितौं[12] तरवारि ॥
इतैंउत ठट्ठै लहरू[13] हरवल्ल, इतैंउत घुग्घर दद्दुर[14] गल्ल ॥ १४३ ॥
इतैंउत बीर सु उत्तर वात[15], इतैंउत सूर मयूर सुहात ॥
इतैंउत चातक घंटन[16] आलि, इतैंउत अत्थि[17] फिरैं करकालि[18] ॥ १४४ ॥
इतैंउत कातर[19] भौलि उदास, इतैंउत हूर[20] कृषीबल आस ॥
इतैंउत जीगनैं[21] ठट्ठै चिनगीन, इतैंउत स्याम घटा करटीनैं[22] ॥ १४५ ॥
रच्यो नृप यौं रन पाउँसरूप[23], धपावत सत्रुनतैं निज धूँप[24] ॥
लयो ढिग जाय नरायनदास, प्रहारन मार रची चहुँपास ॥ १४६ ॥

॥ १३७ ॥ १ गान करनेवाले बावन भैरव ॥ १३८ ॥ २ समष्टि (समूह) ३ नृत्य ॥ १३९ ॥ ४ हाथियों के समूह ॥१४०॥ ५ अग्नि ६ सदृश ७ रुधिर बरसता है सोही पानी है ॥ १४१ ॥ ८ इन्द्र धनुष, गोळे और गोळियां चलती हैं सोही ९ जलकण हैं १० हाथियों के दन्त हैं सोही बगुले हैं ॥ १४२ ॥ ११ पराक्रम है सोही मेघज्योति है१२तरवारें ही बिजुली है१३ सेना का अग्रभाग है सोही लहरें हैं १४ घुघरे हैं सोही मैडकों का शब्द है ॥ १४३ ॥ १५ धीर हैं सोही उत्तर का पवन है१६घंटाओं की पंक्ति ही चातक है१७अस्थि (हाड) बिखरते हैं सोही१८ओलों की पंक्ति है ॥ १४४ ॥१९ऊँठों रूपी कायर उदास हैं २० अप्सराओं रूपी खेती की आशा है२१अग्नि कण ही जुगनूँ है २२ हाथी हैं सो ही काली घटा है ॥१४५॥२३वर्षा रूपी युद्ध रचा २४ तरवार को ॥ १४६ ॥

मरे भट भूपतिके सत तीन ३००, भये सत पंचक५०० घायनखीन॥
भज्यो गज खत्रियको लखि भार, भयो तब कुद्दि रु हैं[1] असवार॥
इते बिच कूरम बिक्रम[2] आय, दई तरवारि घनैं करि दाँय[3] ॥१४७॥
भयो तिहिं हंजक[4] है पय भिन्न, तऊ झपटाय हनैं अरि तिन्न ३ ॥
भिरयो वह बिक्रम आनि बहोरि, लयो नृप[5] कूरमको सिर तोरि १४८
यहै लखि कूरम भैरव आनि, जुरयो नृपतैं दल मारत जानि ॥
महीपति उप्पर खग्ग[6] सुमोच, खँग्यो[7] कछु पक्खरिपैं कटि कोर्च[8]१४९
करी पुनि हंज[9] हयच्छट चोट, कढ्यो कछु पै न रुक्यो नृप घोटं[10] ॥
चली नृपकी तपकी तरवारि, लयो वह भैरव मारत[11] मारि ॥१५०॥
इतेबिच कुम्म मिल्यो महताप, दये सर च्यारि४ चटक्कत चाप ॥
लगे नृपकै दुव२ दारित दंस[12], लगे हयकै दुव२ दाहिन अंस[13] ॥१५१॥
रुक्यो नहिं रंच तऊ नृप ओज, चल्यो अरि मारत फारत फोज ॥
तहाँ पुरपीलँपती[14] चहुवान, भिरे दुव२ थाँन[15]१ तथा सुरतान२ ।१५२।
नरूकेर[16] त्यों हरनाथ३ तृतीय, इन्हैं नृप रुक्किय गाढ[17] गरीयँ ॥
उमैर चहुवानन झारिय खग्ग, करे तिनके सिर भूप अलग्ग१५३
तथा सहि नोंरवकी[18] तरवारि, लयो हरनाथहुको हय मारि ॥
घनी इम जैपुर बीरन नारि, करी नृप जोगिंनि[19] कंकन झारि १५४
जहाँ हरदाउत हू नगराज, लरयो नृपको भट[20] हुंदिय लाज॥
कहार हठी१ हु रह्यो नृप पास, लरयो सँहँ[21] दोलतराम खवास१५५

१घोड़े पर चढा।२विक्रमसिंह ने ३दाव (पेच)॥१४७॥ ४हंज नामक घोड़े का पैर कटगया।५उम्मेदसिंह ने (इस चरित्र में जहां जहां केवल नृप, भूप, पहु, संभर, चहुवाण शब्द आवै तहां तहां बुंदी के राजा उम्मेदसिंह को जानना चाहिये) ॥१४८॥६छोड़ा (खड्ग का प्रहार किया)७घुसा (बैठा)८कवच फट कर ॥ १४९ ॥ ९ हंज नामक घोड़े के कंधे पर १० राजा का घोड़ा ११ मारते हुए को मार लिया ॥ १५० ॥ १२ कवच फोड़कर १३ दाहिने कंधे पर ॥ १५१ ॥१४पुर का नाम है१५थानसिंह ॥ १५२॥ १६ नरू के वंशवाला१७भारी दृढता से ॥ १५३ ॥ १८ नरूके की १९पिशाचा ॥ १५४॥ २० राजा का उमराव २१ साथ ॥ १५५ ॥

तथा सठ भीरु भजे सतच्यारि४००, रची इम जैपुरत नृप रारि।१५६।
तथा सतच्यारि४००मरे अरि तत्त, परे पुनि घायल व्है सतसत्त७००
नरायन खेत खरो अघ धोय, घनों दल क्यों न तहाँ जय होय १५७
कढ्यो नृप बुंदियपैं धक धारि, मरैं तब कोन करैं पुनि रारि ॥
इतैं कछवाहन खोजिय खेत, लख्यो रन अंगन चित्र*उपेत।१५८।
कहाँ तरफैं भट तुट्टत स्वास, लरैं कहुँ लुत्थि करैं कहुँ हास ॥
बकैं कहुँ घायल व्है सुधि हीन, जिकैं कहुँ जानुन झुक्कत झीन १५९
डरें कहुँ अंत्रन डारत ग्रीव, फिरैं कहुँ नैंन चलैं कढि जीव ॥
करैं कहुँ सुंडिनके[1] उपधान, रटैं हरिकों रन तल्प[2] सयान ॥१६०॥
लरैं कहुँ मत्त परासुन[3] ओट, लुरैं कहुँ लेत कबूतर लोट ॥
भरैं कहुँ बायु करैं उनमत्त, धरैं कहुँ सीस कलेजन छत्त ॥१६१॥
गिरैं कहुँ पाय पटक्कत घुम्मि, रहे कहुँ रुट्ठि रकावन झुम्मि ॥
लरैं कहुँ सूतनतैं भरि बत्थ, झरैं कहुँ जावक[4] जंत्रव मत्थ ॥१६२॥
परे कहुँ बीर अधोमुख भूरि, लुरे कहुँ गाफिल चट्टत धूरि ॥
दबे कहुँ कुक्कत हत्थिन हेठ, जरे कहुँ पब्बय ज्यों दव[5] जेठ ॥१६३॥
रहे कहुँ कुंजर[6] कुंभन लग्गि, मनों जुवतीन[7] अनन्यज[8] जग्गि ॥
तिरैं कहुँ सोनित व्याकुल व्रात[9], भिरैं कहुँ भेदत गिद्धन गात १६४
करैं कहुँ दंतनतैं कटकट्ट, जरैं कहुँ जुग्गिनिपैं रॅंहपट्ट[10] ॥
पढै कहुँ कृष्ण[11] कह्यो वह ज्ञान, भनैं कहुँ सांख्य[12] बनैं भगवान१६५
चखैं कहुँ लोहित ओठन[13] चब्बि, लुरैं कहुँ कंकन पंखन दब्बि ॥
अटैं कहुँ आतुर इक्कहि पाय, हटैं कहुँ पीडित जंपत हाय ॥१६६॥

॥१५६॥१५७॥ * आश्चर्य सहित ॥१५८॥ † गिरैं ॥ १५९ ॥ १ तकिया २ रणशय्या पर सोते हुए ॥१६०॥ ३ मृतक शरीरों की ओट में ॥१६१॥ ४जावक के फुँहारे के समान॥१६२॥५ज्येष्ठ मासमें पर्वतों में अग्नि जलै जैसे ॥१६३॥ ६हाथियों के कुंभस्थलों से लगकर ७स्त्रियों से ८ कामदेव के जगने से९समूह ॥१६४॥ १० थप्पड़ ११ गीता का ज्ञान १२ सांख्यशास्त्र के मत को कह कर स्वयं ब्रह्म बनते हैं ॥१६५॥ १३ होठों को चबाकर लोहू चखते हैं ॥ १६६ ॥

कहैं कहुँ वैद्य बुलावन बत्त, चहैं कहुँ अच्छरिकों रसरत्त ॥
झुलैं कहुँ घोरनपैं मृत झुंड, रुलैं कहुँ*तंडव मंडत रुंड ॥ १६७ ॥
खिजैं कहुँ चिल्हनिपैं†पलखात, लसैं कहुँ‡फेरुन मारत लात ॥
गहैं कहुँ§स्वानन तोरत गूद, बनैं कहुँ साकिनिके हित¶सूद ॥१६८॥
नटैं कहुँ अंतक दूतन भीत, गिनैं कहुँ रीझत डाकिनि गीत ॥
मिलैं कहुँ प्रान अपानन मेल, सिटैं कहुँ प्रोत[1] निहारत सेल १६९
लखैं कहुँ नाक जुरावन बिक्ख, कढैं कहुँ कायन[2] तोमर तिक्ख ॥
नये कहुँ दुल्लह चिंतत नारि, कहैं कहुँ पुत्रहि पुत्र पुकारि ॥१७०॥
डिगैं कहुँ निट्ठि गहैं हय पुच्छ, मिलैं कहुँ उट्ठि मगोरत मुच्छ ॥
जकैं कहुँ बाजि स्खलक्कत जीन, हलैं कहुँ हत्थिय सुंडि बिहीन१७१
ढुरैं कहुँ आनक दुंदुभि फुट्टि, डरैं कहुँ केतन[3] तेगन तुट्टि ॥
गिरे कहुँ पाट्टिस[4] खग्ग कमान, गिरे कहुँ खेटक[5] तोमर बान ॥१७२॥
गिरे कहुँ बाहुल[6] कंकट[7] टोप, गिरे कहुँ कोस[8] उरंगम[9] ओप ॥
गिरे कहुँ गंज क्रमेलक[10] खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥१७३॥
गिरे कहुँ पक्खर वग्ग[11] खलीन, गिरे कहुँ तुंग खरे खग खीन ॥
गिरे कहुँ गुच्छ बनें गजगाह, गिरे कहुँ प्रोथ[12] बजावत बाह[13]॥१७४॥
गिरे कहुँ गैंवर मोहि अमाप, गिरे कहुँ अंकुस घंट कलाप ॥
गिरे कहुँ पुष्कर[14] आसन कान, गिरे कहुँ पेचक[15] ओ प्रतिमान[16] ॥ १७५ ॥
गिरे कहुँ कुंतल[17] मुच्छ कुघाट, गिरे कहुँ मुंड रु तुंड[18] ललाट ॥
गिरे कहुँ नेत्र रदच्छद[19] लाल, गिरे कहुँ नक्र ध्वनिग्रह[20] गल्ल ॥१७६॥

---

*नृत्य रचते हुए ॥ १६७ ॥ †मांस खाने से ‡ गीदड़ों को लात मारते शोभा देते हैं § कुत्तों को ¶ साकिनियों के लिये रसोईदार (बबरची) बनते हैं ॥ १६८ ॥ यमराज के दूतों को डरकर नटते हैं कि हम को मत लेजाओ १ भालों को शरीरों में घुसते हुए देखकर ॥ १६९ ॥ २ शरीरों से तीखे भाले ॥ १७० ॥ ॥१७१॥ ३ ध्वजा, तरवारों से कट कर पड़ी है ४ कटार ५ ढाल ॥ १७२ ॥ ६ दस्ताने ७ कवच ८ तरवारों के म्यान ९ सर्पों की शोभा से १० ऊँटों के टुकड़े ॥१७३॥ ११ लगामें १२ फुरणे बजाते हुए १३ घोड़े ॥ १७४ ॥ १४ पोगर (सुंड का अग्रभाग) १५ हाथियों के पूँछ का मूलभाग १६ हाथियों के दंतों के बीच का भाग ॥ १७५ ॥ १७ मूँछों के केस १८ मुख १९ लाल होठ २० नाक, कान और

गिरे कहुँ*काकुद जिब्भन जूह, गिरे कहुँ†मल्लक दल्ल समूह ॥
गिरे कहुँ‡ग्रीवन त्यों§कृक्क फाटि, गिरे कहुँ काकल[1] कंठ[2] कृकाटि १७७
गिरे कहुँ कूर्प्पर[3] खंडिक कंध, गिरे कहुँ जत्रु[4] भुजा मणिबंध[5] ॥
गिरे कहुँ अंगुल[6] अंगुलि टूक, गिरे कहुँ ज्यों कर त्यों कररूक[7] ।१७८।
गिरे कहुँ पंसुलि रीढक तोम[8], गिरे कहुँ पुप्फस[9] कालिक[10] क्लोम[11]
गिरे कहुँ नाभि पुरीतति[12] गंज, गिरे कहुँ फुफ्फि फबे हिय कंज ॥ १७९ ॥
गिरे कहुँ त्यों त्रिक[13] सक्थिन संघ[14], गिरे कहुँ जानु जुदे जुगर जंघ
गिरे कहुँ पिंडिय गोहिर[15] फुट्टि, गिरे कहुँ एडिय घुंटक[16] तुट्टि ।१८०।
लख्यो कछवाहन यों रन थान, धरे सब घायल खोजि नृजान ॥
निकारिय सल्ल जथा सुखकार, चिकित्सक[17] बुल्लि रच्यो उपचार[18] ।१८१।
मरे तिनके बिधिसों किय दाह, बनैं तिम प्रेतक्रिया निरबाह ॥
दिवावत यों जय दुंदुभि डक्क, चल्यो अब बुंदिय जैपुर चक्क ॥ १८२ ॥
बिथारत बट्टन[19] अप्पन आन, उठावत सत्रुन सीम अमान ॥
जंयो[20] नृप कूरम अक्खत जोध, कथंचित[21] भो जु समावत क्रोध ॥ १८३ ॥
महाबल जो जयके छक मत्त, प्रसारत ओदक[22] बुंदिय पत्त ॥
पुरी पुनि झंड रुपे पचरंग, दिसा बिदिसान सुन्यों यह दंग[23] ।१८४।
भयो मन मोदित कूरम नाह[24], स्वसेनहिं[25] अप्पिय वाह सिराह ॥

गला ॥ १७६ ॥ * तालुआ और जीभों का समूह † दन्त और दाढों का समूह ‡ गले के दोनों पसवाड़े § गला १ कंठमणि २ गरदन का ऊँचा भाग ॥ १७७ ॥ ३ हाथ की कुहनी ४ गले की संधि (हसली की हड्डी) ५ पूंचा ६ अंगूठा ७ नख ॥ १७८ ॥ ८ समूह ९ फेफरा १० कलेजा ११ तिल्ली १२ आंतों के समूह ॥ १७९ ॥ १३ माकड़ी का हाड और साथलों का १४ समूह (घुटनों के ऊपर के भाग को साथल और साथल के ऊपर के भाग को जांघ कहते हैं) १५ पिंडुलियों और पादग्रन्थि (गिरिये) १६ घुटने ॥ १८० ॥ १७ वैद्यों को बुलाकर १८ इलाज ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १९ मार्गों में २० ईश्वरीसिंह की जय हुई (जय शब्द पुल्लिंग है जिसको यहां लोक रूढी से स्त्री लिंग लिखा है) २१ अत्यन्त प्रयत्न से हुआ उस क्रोध को मिटाते हैं ॥ १८३ ॥ २२ भय फैलाते हुए बुन्दी में गये २३ युद्ध ॥ १८४ ॥ २४ कछवाहों का पति (ईश्वरीसिंह २५ अपनी सेन.

करे गज बाजि पटा बखसीस, गिन्यौं*जयसिंहज अप्पहिं ईस१८५
दये सब भूपनकौं जयपत्र, लिखी वह हड्ड भज्यो तजि छत्र ॥
सु आवहिं जो तुमरी भुव माँहिं, ततो ¹इत कछ्छहु रक्खहु नाँहिं१८६
लई इम बुंदिय कुम्म बहोरि, जिला गढ कोट सजे बलजोरि ॥
फिर्यो सब देस नरायनदास, लग्यो ²कर लौन ³ससैन हुलास१८७
इतैं अब जो हुव ⁵भूप चरित्र, सुनौं नृप ⁶राम रचौं वह ⁷चित्र ॥
पचास सहस्र ५०००० नमैं असि झारि, कढ्यो नृप पूरब फोजनि फारि ॥ १८८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीन्द्रकूर्मकटककलहकरणं कूर्मप्रतापसिंहीयसप्तदश १७ स्वकीयत्रयोदश १३ सुभटसहितचालुक्यपृथ्वीसिंह १ शूरसप्तक ७ सहितयादवदलेलसिंह १ मारकस्वसुतत्रय ३ सुभटपञ्चविंश २५ त्युपेतकबन्धाऽमरसिंह २ सयवनशत्रुपञ्चक ५ सहितहड्डप्रयागसिंह ३ स्वचतुरशीति ८४ झलायपुरीयैकोनविंशति १९ सुभटयुतहड्डमर्यादसिंह ४ तोकसिंहप्रहतकूर्म्मविजयसिंह ३ स्वनामसजातीय ४ संयुतकूर्म्माऽजितसिंह ५ सकूर्महम्मीर ४ हड्डदेवसिंह ६ सम्भरभवानीसिंहाऽऽक्रान्तकूर्ममाधवसिंह ५ कावन्धत्रिकाक्रान्तकूर्म्माऽमान

को *जयसिंह के पुत्र ने अपने को बुन्दी का पति जाना ॥ १८५ ॥ १ शीघ्र ॥ १८६ ॥ २ हासिल ३ सेना सहित ४ प्रसन्न होकर ॥ १८७ ॥ ५ उम्मेदसिंह का ६ राजा रामसिंह ७ उसका चित्राम रचता हूँ सो सुनो ॥ १८८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के इन्द्र का कछवाहे की सेना से युद्ध करना, कछवाहे प्रतापसिंह के सत्रह और अपने तेरह सहित सोलंखी पृथ्वीसिंह का, और सात वीरों सहित यादव दलेलसिंह को मारने वाले अपने तीन पुत्र और पच्चीस वीरों सहित राठोड़ अमरसिंह का, यवन सहित पांच शत्रुओं के साथ हाडा प्रयागसिंह का, अपने चौरासी और झलाय नगर के उन्नीस वीरों सहित हाडा मर्यादसिंह का, कछवाहे विजयसिंह को मारकर तोकसिंह का अपने ही नामवाले और अपनी जातिवाले अजितसिंह का, कछवाहा हम्मीरसिंह सहित हाडा देवसिंह का, कछवाहा माधवसिंह को मारने वाले चहु-

सिंह ६ भगवत्सिंह ७ भूपालसिंहा ८ ऽर्जुनसिंह ९ प्रमारोदयसिंह १० यादवव्याघ्रसिंह ११ सहितभट्टजगराम ७ बुन्दीशाक्रान्तकूर्म्म विक्रम १२ भैरव १३ चाहुवाणस्थान १४ सुरतानाऽऽदिसप्तशत ७०० सुभटमरणद्वादशशत १२०० सुभटक्षतप्रापणहंजहयचरणकर्त्तना ऽनन्तररावराजनिस्सरणकूर्म्मकटकविजयीभवनबुन्दीप्रविशनमष्टादशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ २९९ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नर समुद्र तरि नृप कढिय, अलप सत्थ रहि संग ॥
कोस तीन३ पहुँचत कसिय, तजि[1] असु हंज तुरंग ॥ १ ॥
असि तुपकन बपु भिन्न अति, बलि[2] इक१चरन बिहीन ॥
नृप त्रय३ कोस निबाहयो, कठिन हंज हय कीन ॥ २ ॥
भूपहु अंग बिसल्य[3] करि, सहिय अग्गि[4] उपचार ॥
सस पल[5] भोजी रत्ति रहि, बिरचिय प्रात बिहार ॥ ३ ॥
गिरिन[6] संधि अंतर कियउ, पूरब ओर प्रयान ॥
ढँबिय[7] इंद्रगढ नगर ढिग, चित्त निडर चहुवान ॥ ४ ॥
इंद्रगढाधिप देव प्रति, कहि पठई नरनाह[8] ॥

चाण भवानीसिंह का, कछवाहा अमानसिंह, भगवत्सिंह, अर्जुनसिंह को मारनेवाले राठोड़ अमरसिंह के तीन पुत्रों का, पँवार उदयसिंह और यादव बाघसिंह को मारने वाले भाट जगराम का, तथा बुन्दीश के मारे हुए कछवाहे विक्रमसिंह, भैरवसिंह, चहुवाण थानसिंह और सुरताणसिंह आदि सात सौ वीरों का मरना, और बारह सौ सुभटों का घायल होना, हंज नामक घोड़े का पैर कटे पीछे रावराजा (उम्मेदसिंह) का निकलना, कछवाहे की सेना का विजयी होकर बुंदी में प्रवेश करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ नन्यानवे २९९ मयूख हुए ॥

१ हंज नामक घोड़े ने प्राण छोड़ा ॥ १ ॥ २ पुनि ॥ २ ॥ ३ साल निकाल कर ४ अग्नि से सेकने (तपाने) का इलाज किया ५ रात्रि में खरगोस का मांस खाकर रहा ॥ ३ ॥ ६ पर्वतों की संधि में ७ ठहरा ॥ ४ ॥ ८ उम्मेदसिंह ने ॥ ५ ॥

इय हमरो गतप्रान हुव, हो जिहिं लरन उछाह ॥ ५ ॥
तातैं पठवहु देव तुम, खासा हय इक खुल्लि ॥
अवर न चाहैं हमहु *इन, भुजन कुमाई भुल्लि ॥६॥
सुनि यह देव सिटाय सठ, †त्रसित चुरायउ चेत ॥
यहै न जानी हम ‡अनुग, तउ इक१ अश्वहि लेत ॥ ७ ॥
इम अधर्म अहरि अधम, जैपुर गिनि बरजोर ॥
पच्छी यौं कहि मुक्कलिय, मूढ तजहु भुव मोर ॥ ८ ॥
जिम तुम खोई निज पहुमि, बिनु मति दर्प बढाय ॥
तिम हमरी खोवन तकत, अश्व लैन यहँ आय ॥ ९ ॥
निठुर बैन सुनि सहि नृपति, लिखी अब न कछु लैंहि ॥
जो तुम यह खायो जहर, दैहैं लहर कबैंहिं ॥ १० ॥
इम कहाय नृप बर करिय, कोटा सीम प्रयान ॥
चम्मलि लंघि मुकाम किय, ग्राम रानपुर थान ॥ ११ ॥

॥ पज्झटिका ॥

रन सिंधु तरिग चहुवानराय, कछ्रवाह भटन असिबर चखाय ॥
गिरि पारियात्र द्रोनिंन बिहारि, उपनँद्धि घाय बपु सल्लय टारि ।१२।
इम होय इंद्रगढ पुर समीप, देवहिं नटाय नृप बंसदीप ॥
उल्लंघि सरित चम्मलि अमान, कोटाग रानपुर दिय मिलान ॥१३॥
अरु सुभट अल्प नृप संग आय, रन दुसह कोन असु तजि रहाय ॥
अब मिलिय आनि सब अनुग अत्थ, अवरहु अनेक सुनि रन समत्थ१४
उत कुम्म भटन लहि बिजय जंग, बुंदिय प्रवेस किय अति उमंग ॥

---

* राजा तथा तुम्हारे पति हैं तोभी ॥ ६ ॥ † डर कर ‡ सेवक हैं तोभी ॥७॥८॥१घमंड बढा कर॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ २ जिस पर्वत के चारों ओर यात्रा (परिक्रमा) की जावे उसको पारियात्र कहते हैं [इसी कारण चित्रकूट को पारियात्र कहते हैं] ३ पर्वतों की संधि जिनको राजपूताने में खाड्रेव खोहलें कहते हैं ४ पाटा बांधने आदि घावों का इलाज ॥ १२ ॥ ५ कोटा के पर्वत में ॥ १३ ॥ ६ प्राण छोडने को कौन रहै ७ सेवक ८ युद्ध में समर्थ सुनकर ॥१४॥

जिन रचिय*अघ थिर नृपहिं थप्पि, †आयत्त बिरचि तिन ‡दंड अप्पि ॥
कोटेस §हिंतु पुनि यह कहाय, तुम चतुर नीति ¶हितार्थ हिताय ॥
बुधसिंह सूनु हित १करुन लेहिं, सत दोय २०० ३द्रम्म इम नित्य देहिं ॥ १६ ॥

मध्यस्थ होय तुम साम लाय, तिहिं देहु ४कुम्म नृप पय लगाय ॥
कोटेस ५लुब्ध सुनि पाप प्रीत, ६संजार पाय पय ७होत सीत ॥ १७ ॥
स्वीकारि ८पहुँ जड़ छुन्न साम, दिनप्रति लिय मासन द्विसत २००दाम ॥
नृप ९आंतिक पठये तेहु नाँहिं, उलटो खिल वंचन १०बुद्धि आँहिं ॥१८॥
कोटेस बहुरि किय यह कुकर्म, इम कोन कोन अक्खहिं अधर्म ॥
इत सुनिय रान जगतेस वृत्त, बुंदीस सूर रन रचिय रत्त ॥ १९ ॥
दुअर बेर कूरमन फोज फारि, बरछी गति प्रविस्पो बहु बिदारि ॥
११करवाल झारि हद रारि कीन, बलि काढिय जानि १२हय पय बिहीन २० ॥
अब ग्राम रानपुर धाम १३आँहिं, छत १४छाम तदपि १५नति नाम नाँहिं ॥
हय हंज जो १६कि पय भिन्न ठहै न, छोरैं न हनत तो सत्रु सैन ॥२१॥
मन मित्र १७बाजि बिनु अब नरेस, बाँछत कछु दुर्मन हय बिसेस ॥
यह सुनत रान हिय मोद आय, भूपहिं सिराहिं बीरत्व भाय ॥ २२ ॥
हय खास नाम जिहिं १८होनहार, साखाति १९चामीकर साजि सुढार ॥
सिरुपाव उच्च इक १ रुचिर रंग, तरवारि खास इक १ तास संग ।२३।
उम्मेद नृपति हित दिय पठाय, स्वी२०करिय नृपहु गिनि हित सुनाय ॥
इम होत सरदरितु साज्झ आय, द२१क गगन उभय२ निर्मल दिखाय२४

* आघ, जिन उम्मेदसिंह के आघ करनेवालों को † अपने आधीन किये ‡ दंड देकर ॥ १५ ॥ § से ¶ हितार्थ १ बुधसिंह के पुत्र के अर्थ २ करुणा करके ३ रुपये ॥ १६ ॥ ४ ईश्वरीसिंह के पैरों लगादो ५ लोभी ६ बिल्ली को ७ दूध ठंढा होता मिला ॥ १७ ॥ ८ मंजूर करके उम्मेदसिंह के ९ पास १० ठगने की बुद्धि है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ११ तरवार चलाकर १२ घोड़े को बिना पैर जानकर ॥ २० ॥ १३ है १४ घावों से दुर्बल है तोभी १५नाम मात्र भी नम्रता नहीं है १६ याद ॥ २१ ॥ १७ घोड़े बिना ॥ २२ ॥ १८ जिसका नाम आगे होने वाला है १९ सुवर्ण की ॥ २३ ॥ २०स्वीकार किये २१जल और आकाश ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

गरजि मेघ उग्घरिय भरिय नव[1] नीर[2] निवानन ॥
पितरन कव्य[3] पहोंचि[4] बिरचि नृप निगम[5] बिधानन ॥
पुनि कुलदेविय पूजि सद्धि कत्तिय[6] व्रत संजम ॥
अब आगम हेमंत किन्न अगहन मृगया[7] क्रम ॥
आखेट थान[8] कोटेसके कति मृगराज[9] बिहीन किय ॥
सद्धिप परक्खि आयुध सकल रानपुर सु इम नृप रहिय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

ईडरिया उपटंक इत, रामसिंह रठोर ॥
हो जो तब पुर बनहड़ा, सुनि नृप बिक्रम सोर ॥ २६ ॥
ताकै ही इक१ पुत्रिका, बखतकुमरि अभिधान[10] ॥
ताको रचि सगपन त्वरित, संभर[11] हिंतु[12] सैंयान ॥ २७ ॥
पठयो डोला रानपुर, सचिव सुभट दै संग ॥
उपयम[13] करन उमेदसौं, जानि बीर बर जंग ॥ २८ ॥
सचिव भटन तब प्रीति सह, अँरहि[14] रानपुर आय ॥
कन्या वह बुंदीस कँहँ, प्रथित[15] दई परिनाय ॥ २९ ॥
कन्याके काकाहुकी, बिर् सुता रूप बिसाल ॥
रान१ रु माधव२ एहु दुव२, ब्याहे पूरब काल ॥ ३० ॥
सगे उचित यातैं समुझि, परनि नृपहु मुद पात ॥
सक गुन नभ धृति१८०३ लगन सुभ, दोजिर[16] सँहा[17] अँवदात ॥३१॥
रंग्यो नहिं शृंगार रस, अबहि बीर अनुसारि ॥
बहुरि बढ्यो मन बप्पकी, धरनी पर धक धारि ॥ ३२ ॥

---

१ नवीन २ पानी ३ श्राद्ध का अन्न ४ पहुँचा कर ५ वेद विधि ६ कार्तिक मास में, इन्द्रियों के रोकने का व्रत ७ शिकार ८ शिकार के स्थान ९ सिंहों के बिना ॥२५॥ ॥ २६ ॥ १० नाम ११ चहुवाण से १२ बुद्धिमान् ॥ २७ ॥ १३ विवाह ॥ २८ ॥ १४ शीघ्र ही १५ प्रसिद्ध ॥ २९ ॥ ३० ॥ १६ मृगसिर १७ सुदि ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दुलहनि कोटा मुक्कलिय, जत्थ अनुज[1]तिय[1]जामि[2] ॥
अप्पन मन रन उम्मह्यो, इच्छत जय [2]आगामि ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपुर बुधसिंह सुतहिँ सुनि बहुरि चलावत ॥
कोटापति लगि लोभ कहिय इम भुम्मि न आवत ॥
हम उद्यम यह करत हेत मरहट्टन सम्मलि ॥
बिनु बल जैहो [3]लाल निट्ठि लैहो यह [4]चम्मलि ॥
दै इष्ट सौंह इम अक्खि द्रुत बुंदीसहिँ रक्ख्यो बराजि ॥
सतदोय२००[5]दम्म कछवाह सैन [6]भेट होत यह लोभ भजि ।३४।

॥ दोहा ॥

बंधु बर्ग उमराव निज, अजबसिंह अभिधान ॥
कोइलपुर पति भेजि करि, अटक्यो [7]नृप प्रस्थान ॥ ३५ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधानी अजबेस आय भूपहिँ इम अक्खिय ॥
गिनत अप्प रन सुगम चंड [8]असि बर नहिँ चक्खिय ॥
अप्पन परि[9]कर अलप दुसह जैपुर वह दाहत ॥
सिंहन [10]आगसँ [11]ससहिँ चिन्ह अनुचित [12]असु चाहत ॥
यातैँ न तुमहिँ जावन उचित कोटापति यह हित धरत ॥
हठ मंत्र बुल्लि दक्खिन [13]दलन जतन लैन बुंदिय करत ।३६।
सुनत एह गिनि सत्य भूप कोटेस भरोसैँ ॥
जान्यों काका करत [14]महत उद्यम यह मोसैँ ॥
तो इनकी अब देखि बहुरि बनिहै सु बिचारहिँ ॥

---

१ जहां बहिन थी २ आगे आनेवाली जय की इच्छा करता हुआ ॥ ३३ ॥ ३ हे लाल ४ भगकर यह चामल नदी कठिनाई से लोगे ५ रुपये ६ से ॥ ३४ ॥ ७ उम्मेदसिंह के गमन को रोका ॥ ३५ ॥ ८ भयंकर खड्ग ९ परगह १० सिंहों का अपराध करके ११ खरगोस १२ जीना चाहै सो अनुचित है १३ सेनाओं को ॥ ३६ ॥ १४ मुझ से बडा उद्यम

सुमिरी यह न सयान कुहक[1] निज काम निकारहिँ ॥
नृप रहिय होत उद्योग लखि मास सत्त७बिनु भुव जतन ॥
मृगया प्रसक्त[2] कोटा मुलक गंजत सिंह बराह गन ॥३७॥

॥ दोहा ॥

मधुकरदुग्ग[3] मुकाम किय, ग्रीखम अंत नरेस ॥
महडू[4] चारन दान तँहँ, बरनी किति बिसेस ॥ ३८ ॥
अमरपुराके जंगको, काव्य जथामति ठानि ॥
गीत छंद मरु बानि गत, नृपहिँ सुनायो आनि ॥ ३९ ॥
सुनत भूप बखसीस किय, रीझि तरल[6] हयराय ॥
खास जरिप पोसाक पुनि, कुंडल कटक सुभाय ॥ ४० ॥
सनमान्यौँ कविराव कहिँ, डेरा तास पधारि ॥
भयो बहुरि हत्थिय हुकम, नूतन[9] काव्य निहारि ॥ ४१ ॥
सो गज बुंदिय तखत जब, अप्प बिराजे आनि ॥
तब दिन्नौँ यह[10] अत्थ हम, भावी लिखिय बखानि ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक बेद ख बसु सोम१८०४ मास सावन तदनंतर[11] ॥
भैंसरोरगढ सीम रमिग आखेट भूप बर ॥
पुनि भद्दव सित पच्छ आय बेघम एकादसि११ ॥
भयो जानि दुरभिच्छ बिपति चिंतत दिन दुव२बसि ॥
दरियाव नाम गजराज निज उदयनैर बिक्रय[12] करन ॥
मुकल्यो पुरोहित स्वीय तब दयाराम द्विज धर्मधन[13] ॥ ४३॥

॥ दोहा ॥

जाय पुरोहित उदयपुर, गज बिक्रय तँहँ ठानि ॥

१छली (ठग)२शिकार में आसक्त॥३७॥३मधुकर गढ ४ चारणों की एक शाखा का नाम है ५ उस चारण का नाम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ चपल घोड़ा ७ मोती ८ कड़े अच्छी रीति से दिये ॥ ४० ॥ ९ नवीन ॥ ४१ ॥ १० यहां ॥ ४२ ॥ ११ जिस पीछे १२ बेचने को १३ धर्म ही है धन जिसके ॥४३॥

दम्म सहँस दुव२०००मुल्कके, पठये समय प्रमानि ॥ ४४ ॥
बिनु भुव सोलह१६ बरसतैं, भुकतैं आपति भार ॥
अब अबुंष्टि कति दिन टिकहिं, दम्म ति दोय हजार २००० ॥

॥ षट्पात् ॥

सावन सूको गयउ बेर दुव२अलप वुष्टि घन ॥
ज्यौंही भट्टव जात घोर हाकार उट्ठि घन ॥
इहांतिय सवार तंग अोदनं दुव देसन ॥
वनिय आनि इहिं बेर निट्ठि निरवाह नरेसन ॥
नृप तबहि चिंति आपति धरम रवीय भटन संजुत साजय ॥
मन जोर पैठि बुंदिय मुलक गैनोलीपुर लुट्टि लिय ॥४६॥

॥ दोहा ॥

गैनोली बसु लुट्टि इम, अति बिपत्ति चहुवान ॥
तदनु दुग्ग रनथंभकी, सीमा करिय पयान ॥ ४७ ॥
नगर नाम खंडारि ढिग, कछुदिन बिरचि मुकाम ॥
कोटापतिको लोभ सुनि, ठग मन्न्यौं अघ ठाँम ॥ ४८ ॥
उत सु पुरोहित उदयपुर, दयाराम अभिधान ॥
पुब्बहि रान अधीनहो, लौनिदेस चहुवान ॥ ४९ ॥
आत जात नृप ढिग रह्यो, स्वामि धरम भन्नि भान॥
तातैं बेचन संग तस, दयो हुतो दरियाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ बु-न्दीन्द्रहयमरणात्मृदुचरणाविचरणाकृदिन्द्रगढाऽऽगमनाऽश्वयाचनदेव-

॥ ४४ ॥ १ अनावृष्टि (दुर्भिक्ष) में २ ते (वे) ॥ ४५ ॥ ३ अन्न बिना ॥ ४६ ॥ ४ धन ५ जिस पीछे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ६ पहिले से ही ७ उम्मेदसिंह की आज्ञा लेकर ॥ ४९ ॥ ८ दरियाव नामक हाथी ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के पति का घोड़ा मरने से कोमल चरणों से चलकर इन्द्र गढ आना१घोड़ा मांगना और देवासिंह

सिंहनेतिकथनहड्डेन्द्रराणपुरनिवसनतदनुकूलबुन्दीजनकूर्म्मकर्तृक निग्रहनबुन्दीन्द्रनिमित्तमुद्राशतद्वय२००महारावप्रापणाराव‌राजार्थ-राणाहय १ पट २ खड्ग ३ प्रेषणघनात्यय १ हेमंतर्त्वागमनभूभृत्तृतीयो ३ द्वहनकोटेशान्नृपोद्यमवारसम्भरमधुकरदुर्गकालक्षेपणास म्प्रदानकविदानचारणदानप्रभुभैंसरोड़दुर्गप्रान्ताऽऽखेटक्रीडनातेघद्ध मपुराऽऽगमनदुर्भिक्षपतनविक्रयार्थदरियावगजोदयपुरप्रेषणापिद्ध-र्म्मधरधरेशगैणोलीपुरलुण्टनरणस्तम्भदुर्गप्रान्तखण्डारिपुरकिञ्चि न्निवसनकोटेशकौहक्यविबोधनमेकोनविंशोमयूखः ॥ १९ ॥३००॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

दयाराम द्विज सहित रानें[1] इकदिन रहस्य[2] किय ॥
साहिपुर पैं[3] सीसोद वीर उम्मेदँहु[4] बुल्लिय ॥
स्वीय[5] सुभट पुनि च्यारि४ प्रथम भारत१ सेनापति ॥
दुरग अग्ग देवलिय हठन जिहिँ किय सालम हंति[6] ॥
देवगढ अधिप जसवंत२ पुनि संगाउत चौंडा जनँन[7] ॥

का नटना २ हाड़ों के राजा का राणपुर में निवास करना ३ उम्मेदसिंह के अनुकूल बुंदी के लोकों को कछवाहों का कैद करना ४ उम्मेदसिंह के कारण दोसौ रुपये रोज कोटा के महाराव का पाना ५ रावराजा के अर्थ महाराणा का घोड़ा, वस्त्र और खड्ग भेजना ६ मेघों के मिटे पीछे हेमंतऋतु के आगम में भूपति का तीसरा विवाह करना ७ कोटेश के उद्यम के समय में चहुवाण (उम्मेदसिंह का मधुगढ में समय बिताना ८ दान नामक चारण को दान देकर राजा का भैंसरोड़ गढ के प्रान्त में शिकार खेलकर वहां से वेघमपुर आना ६ दुर्भिक्ष पड़ने से दरियाव नामा हाथी को बेचने के अर्थ उदयपुर भेजना १० आपद्धर्म को धारण करके भूपति का गैणोलीपुर को लूटना ११ रणस्थंभ गढ के प्रान्त में खंडारपुर में कुछ ठहरना १२ कोटा के पति का ठगपन जनाने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ मयूख ३०० हुए ॥

१महाराणा जगत्सिंह ने २ एकान्त सलाह की ३ पति ४ उम्मेदसिंह को भी बुलाया ५ अपके उमराव ६ नाश ७ वंश में

पतिदेलवाड़ झल्ला *प्रथित राघवदेव२ निसंक रन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रायसिंह४ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
इन जुत रान रहस्य किय, चित जैपुर जय चाह ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिन रान कोटेस कितव१ दुवर२बेर बदलि गय ॥
अब पुनि इक्कत होन चवैहि पठवाय दूत चय३ ॥
बंचककों विसवास करन काको चित चाहत ॥
दयाराम सुनि कहिय अरज करजोरि उमाहत ॥
प्रतिअब्द५ आत श्रियद्वार वह अन्नकूट सद्दन समय ॥
तब चलन तत्थ अप्पन उचित माधव सहित निहारि नय ३
हरि प्रतिमाके अग्ग तबहिँ कोटेसहिँ अक्खहिँ ॥
तुम बंचक चलबुद्धि मित्र भावहि हम रक्खहिँ ॥
जो अब इक्कत होत ततो हरि इष्ट सपथ करि ॥
सदा साम लिखि देहु अब न डरपहु कूरम अरि ॥
छद इम लिखाय कोटेसको पुनि प्रसन्न मरहट्ठ करि ॥
खंडुव मलार हुलकर तनय बुल्लहु समर सहाय बरि ।४।

॥ दोहा ॥

दयाराम इम अरज करि, थप्पो यह दृढ मंत्र ॥
सुपहु रान सुनि स्वीकरिय, सुभटन सहित स्वतंत्र ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तदनंतर नृप राँन, देवकरन कँहँ दूर करि ॥
पंचोली सु प्रधान, नाम भवानीदास किय ॥ ६ ॥

---

*प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ १ ठग २ कहता है ३ दूतों का संमूह भेजकर ४ उस ठग का ५ प्रतिवर्ष ६ माधवसिंह सहित ॥ ३ ॥ ७ मूर्ति के आगे ८ सौगन (शपथ) ९ पत्र १० अपना करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत जैपुर पहिलैंहि मरिग खत्रिय राजामल ॥
*कोबिद केसवदास हुतो सुत तास मंत्र बल ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह किन्न वह सचिव सिरोमनि ॥
पिसुन नरन तिहिँ पिठि भूप प्रति इम चुगली भनि ॥
हेनृप अमात्य केसवं कितव मंत्रैं तुमहिँ न मंत्र मद ॥
याकेँ उमेद माधव अरथ छन्नैं आवत जात छँद ॥ ७ ॥
सुनि यह ईस्वरिसिंह मूढ तत्व न पहिचानिय ॥
काकन कथित बिधाय हंस मारन मत मानिय ॥
खत झूटे लिखि खलन नृपहिँ दिन इक बताये ॥
मूरख सच्चे मन्नि गडे ओगुन बहु गाये ॥
केसव सु मंत्रि बुलवायकेँ कुनृप तास अपहास करि ॥
अक्खी कुमंत्रि ए दल लखहु सुनि केसव लिय नैंन भरि ।८।

॥ दोहा ॥

अक्खी केसव अबहि नृप, निश्चय करहु निदान ॥
जो ए दल मेरे लिखे, लेहु ततो मम प्रान ॥ ९ ॥
कूरम तब निश्चय करिय, निकसे पत्र असत्य ॥
बिनु आगस जो मारतो, होतो ससचिव हत्य ॥ १० ॥
तदपि कुम्म लिय सचिवपन, केसव करिय वकील ॥
पठयो दक्खिन नन्ह पैँहँ, सिखंई मन्नि कुसील ॥ ११ ॥
नैंटानी उपटंक इक, हरगोबिंद स नाम ॥
कियउ मुसाहब बनिक वह, कूरम नृप हित काम ॥ १२ ॥

---

* चतुर १ उम्मेदसिंह और माधवसिंह के लिये २ पत्र ॥ ७ ॥ ३ कहना करके ४ दुष्टों ने ५ ये पत्र ॥ ८ ॥ ६ इनका कारण ॥ ९ ॥ ७ विना अपराध ८ सचिव सहित मारा जाता ॥ १० ॥ ९ तोभी ईश्वरीसिंह ने १० सिखाई हुई बात मानकर ११ खोटे स्वभाववाले ने ॥ ११ ॥ १२ नाटाणी उपटंक (पदवी) वाला वैश्य ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

पुत्ती इक[1] तिहिँ गेह रूप जुब्बन गुन मत्ती[2] ॥
बत्ती बय छबि तास[3] पास कूरम नृप पत्ती[4] ॥
कत्ती[5] सम सुनि कढिग छेकि पंच[6] हि सर छत्ती ॥
दुत्ती[7] दासिय भेजि प्रेमपासिय गर घत्ती[8] ॥
लंपटहिँ काम[9] जुत्ती लगत रत[10] उत्ती चिर चंड[11] रय ॥
सुत्ती समीप चाही सुनक[12] कुत्ती जिम कत्ती[13] समय ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मगन पुब्ब अनुरागमैं[14], लगन मिलन द्रुत लग्गि ॥
कुम्म पुरंदरके[15] किरी[16], अंदर बम्महँ[17] अग्गि[18] ॥ १४ ॥
दूतीजन पठवाय द्रुत, सौम[19] उपाय प्रमारि ॥
आनी नृप ढिग अंगना[20], बानी बिनय[21] बिथारि ॥ १५ ॥
राजकाज भुल्ल्यो रसिक, छई मदन सिर छाँह ॥

---

१ उस हरगोविंद के घर में उसकी पुत्री रूप, यौवन और गुणों में २ मस्त थी उस की अवस्था और शोभा की ३ वार्ता कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) के पास ४ प्राप्त हुई (पूगी) ५ वह वार्ता सुनते ही तरवार के समान कामदेव के पांचों ६ बाण [यथा "द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाभिधम्॥ उन्मादनं च कामस्य बाणाः पंच प्रकीर्तिताः"] छाती को छेदकर निकल गये ७ दूती दासी का भेजकर प्रेम की पासी गले में ८ घाली इस लंपट के ९ कामदेव की जूती लगते ही १० रत क्रीड़ा में उस चिर वेग (बहुत समय तक स्खलित नहीं होनेवाला) और ११ भयंकर वेगवाले ने जैसे १२ कुत्ता, कुत्ती को १३ कार्तिक मास के समय में चाहे तैसे उस हरगोविंद की पुत्री को समीप बुलानी चाही॥ १३ ॥ १४ पूर्वानुराग (मिलने से पहिले की प्रीति) में मस्त होकर १५ कछवाहों के इन्द्र के १६ गिरी १७ जैसे अहल्या के कारण इन्द्र और ब्राह्मण (गौतम ऋषि) में गिरी थी तैसें अथवा अहल्या के कारण इन्द्र के और सरस्वती के कारण ब्रह्मा के श्राप की अग्नि पड़ी थी वोही अग्नि ईश्वरीसिंह के पड़ी अर्थात् उक्त दोनों स्त्रियों से व्यभिचार करने के कारण दोनों देवों को श्राप से खिन्न होना पड़ा था तैसे ही ईश्वरीसिंह को भी इसी कारण प्राण देना पड़ा १८ अग्नि ॥ १४ ॥ १९ मिलने का २० उस स्त्री को २१ विशेष नम्रता की वाणी फैलाकर ॥ १५ ॥

कूरम डारी कंठ अब, बनिक सुताके बाँह ॥ १६ ॥
रत्ति[1] जु तिय नृपढिग रहत, प्रात जात निज गेह ॥
दिन बिच तिहिं देखैं बिनाँ, दुमन[2] रहैं थकि देह ॥ १७ ॥
प्यारीकोँ दिन बिच प्रकट, जो बुल्लैं निज पास ॥
जनक[3] तास तो जानिकैं, बिरचै राज्य बिनास ॥ १८ ॥
बिनु देखैं निमिख न बनैं, देखनैं दुल्लभ दीह[4] ॥
यातैं बिरचि उपाय इक[5], लोपी लज्जा लीह[6] ॥ १९ ॥
जैपुर पिक्खन[6] व्याज[7] करि, प्यारी पिक्खन काज ॥
बनवाई महलन बुरज, तुंगनकी सिरताज ॥ २० ॥
जातैं सब जैपुर नगर, दिट्ठि परत अध[8] आय ॥
तहँ प्यारिय जाय तहँ, छन्न मंदन इम छाय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

संक कृत नभ बसु सोम१८०४ बिसद बाहुल्ल[9] पड़िवा१पर ॥
दरसन हित कोटेस गयउ श्रियद्वार[10] उमँगि अँर[11] ॥
करन रान अनुकूल पत्त[12] लिखि भेजि उदैपुर ॥
खुल्लिय माधव सहित धरा संगर[13] थंभन धुर ॥
सुनि पत्त[14] रान माधव सहित मुदित होय आयहु मिलन ॥
गुन३ कोस एह सम्मुह गयउ मिलिय प्रीति अनुकूल मन॥२२॥

॥ दोहा ॥

तीन३हि नृप नय[15]रीति तकि, रचि मिलाप पटु प्यार ॥
हरिमंदिर एकत्त[16] हुव, करन मंत्र श्रीद्वार ॥ २३ ॥
कहिय रान कोटेस प्रति, बचन तुमारो सोध[17] ॥

॥ १६ ॥ १ रात्रि में यह स्त्री २ उदास ॥१७॥ ३ उस स्त्री का पिता॥१८॥ ४ दिन में ५ सीमा ॥ १९ ॥ ६ मिस ७ ऊँचापन की ॥ २० ॥ ८ नीचे ॥ २१ ॥ ९कार्तिक सुदि एकम १० नाथद्वारै ११ शीघ्र १२ पत्र१३युद्ध करके१४पत्र॥२२॥ १५नीति की रीति को देखकर १६ इकट्ठे ॥ २३ ॥ १७ झूठा

बदले पुब्बहि[1] इक्क बनि, अद्दरिकैं अघ[2] ओघ ॥ २४ ॥
यातैं अबलग रावरो, बनैं न मन बिस्वास ॥
कोटापति यह सुनि कहिय, हुव पलटैं अपहास ॥ २५ ॥
अब गोवर्द्धननाथ यह, इष्ट साखि[3] धर आँहि ॥
कबहु न बदलैं सपथ[4] करि, अैसैं कहिय उमाहि ॥ २६ ॥
सपथ अक्खि इम रान कर, बचन दैन लगि हड्ड ॥
अटकि[5] रान तब हड्ड कहँ, अक्खिय दे[6] असि अड्ड ॥ २७ ॥
तुमरी बुंदिय आत कै, कै इनकौ[7] जयनैर ॥
तातैं लेहु रु देहु तुम, बचन दोहु[8] तजि बैर ॥ २८ ॥
मैं परमारथ तक्कि मन, करत दुहुँन[8] उपकार ॥
यातैं लैन न उचित अरु, दैनहिं बचन उदार ॥ २९ ॥
यह कहि दोउन[8] हत्थ गहि, दयो बचन निज रान ॥
सुनि माधव[1] कोटेस[2] मिथ, दिय लिय बचन निदान[9] ॥३०॥
रान बचन तिनको नलिय, तिनकौं दिय गहि तेग ॥
तिम भट सविवनकोहु तँहँ, बचन दिवायउ बेग ॥ ३१ ॥
किय रहस्य श्रियद्वार इम, अधिपन मन धन अप्पि ॥
मरहट्ठन चिंतिय मिलन, जैपुर सैन[10] रन थप्पि ॥ ३२ ॥
रान वकील खुँमान[11] तब, रानाउत किय त्यार ॥
मरहट्ठन ढिग मुक्कलन, उभय[2] भुम्मि उपकार ॥ ३३ ॥
माधवहू तस संग दिय, निज वकील नरनाह[12] ॥
गोगाउत हम्मीर कुल, प्रेमसिंह कछवाह ॥ ३४ ॥
माधव दम्म द्विलक्क्ख२०००००दिय, हुलकर हित तस संग ॥

१पहिले और२पापका समूह॥२४॥२५॥३साक्षीधर है४सौगन शपथ करके॥ २६ ॥ ५कोटा के महाराव को रोककर ६ तरवार बीच में दी॥२७॥ ७माधवसिंह को ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ परस्पर (दोनों ने) ९ कारण सहित ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १० सं ॥३२॥ ११खुमाणसिंह॥३३॥१२हे राजा रामसिंह वा नरनाथ (माधवसिंह)ने॥३४॥

उभय२ वकीलन भेजि इम, आये निज निज दंग[1] ॥ ३५ ॥

॥ षट्पात् ॥

रान वकील खुमान१ प्रेम१ माधव वकील दुव२ ॥
नगर कालपी जाय सेन दक्खिन सम्मलि हुव ॥
दुवहि लक्ख २००००० दै दम्म[2] तुष्ट[3] हुलकर मलार किय ॥
जैपुर समर सहाय तनय खंडुव तस मंगिय ॥
सुनि यह मलार सुत सज्ज करि रन सहाय लगि मुक्कलन
राणांजि रामचंद्र२ सु तबहि अक्खिय उचित सहाय नन[4]३६
रामचन्द इम कहिय धरहु श्रुति[5] कथ मलार ध्रुव ॥
अप्पन[6] पति श्रीमंत अग्ग जयसिंह मित्र हुव ॥
जैपुर सन हित करन बचन तिन दिय कूरम कर ॥
वह तुम मेटत अज्ज धनिय कृत[7] भुल्लि लोभ धर ॥
ईस्वरीसिंह सम्मलि सबहि हैं पति किंकर तुम रु हम ॥
समुझाय रान माधव सबन दण्डहु अरिन प्रचंड[8] दम॥ ३७ ॥
धंक्कि[9] हुलकर यह सुनत मुछि असिबर कर मंडिग ॥
अधर कंप अंकुरिग[10] तानि मुच्छन घन तंडिग[11] ॥
कहिय अग्ग जयसिंह लिखित हत्थन[12] करि अप्पिय ॥
रानाउति भव[13] पुत्त थिर सु जैपुर पति थप्पिय ॥
जयसिंह बचन यह रक्खि हम माधव सिर छत्रहिं धरत ॥
लग्गत यहै न अच्छी तुमहिं कुटिल लुब्धि[14] अनुचित करत३८
राजामल कर कवलं[15] बहुत चक्खिय तुम स्वानन[16] ॥
जातैं अटकत जंग विरचि नय हीन बिधानन[17] ॥

१ अपने अपने नगरों में ॥ ३५ ॥ २ रुपये देकर ३ प्रसन्न ४ सहाय देना उचित नहीं है ॥ ३६ ॥ ५ कहना सुनो ६ अपना ७ स्वामी के कार्य को भूल कर ८ भयंकर दंड से ॥३७॥ ९ क्रोधित होकर१०होठ में कंप होनेलगा ११गर्जना की१२अपने हाथों का किया लेख१३राणावति से उपजा हुआ पुत्र १४ लोभी ॥ ३८ ॥१५ग्रास (निवाला)१६कुत्तों ने १७ नहीं करने योग्य कार्य करके

तुम जावहु तिन संग हम सु माधव सहाय हुव ॥
कहि इम अक्खिय कुच्च धमकि आनक निसान[1] धुव ॥
दल सुभट पंच५ मरहट्ठ मिलि दुहुँ२ दिस रिस मोचंन[2] करिय
परगनाँ पंच५ माधव अरथ दैन अक्खि हित अनुसरिय ।३९।
रामचंद्र प्रति कहिय बहुरि हुलकर मल्लारहु ॥
बंटि दिवावत अवनि[3] कछुक माधव हितकारहु ॥
तिम बुंदिय रहि है न लग्गि संभर[4] हित लैहैं ॥
अब बरजहु जो एस देस तिल[5]मत्त न दैहैं[6] ॥
यह भन्नि सवन पठये तबहि निज वकील जैपुर सँजव[7] ॥
साँहस मिटाय सामहिँ करन समुझावन कूरम कितव[8]४०।

॥ दोहा ॥

रामराय१ सुनसी निज सु, रामचंद्र पठवाय ॥
निम्मराज२कटकया यह सु, पठयो हुलकर राय ॥ ४१ ॥
तिन जाय रु कूरम नृपहिँ, बुंदिय छोरन अक्खि ॥
पंच५ परगनाँ अनुज हित, बंटिदैन रस रक्खि ॥ ४२ ॥
इत हुलकर अप्पन तनय[9], खंडू नामक वीर ॥
पठयो माधव रांन[10] प्रति, हित सहाय हमगीर ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सजि अनीकैं[11] दरकुंच चलिय खंडुव मलार सुंव[12] ॥
बजि आनक बंबीलैं[13] मचकि बिखरिय दरार भुव ॥
काकोदर[14] फन फटिय कोल दंतुलि बररक्किय ॥
घुररक्किय बपु कमठ चोट रीढ[15]क चररक्किय ॥

१ नगार बजाकर २ दोनों ओर का क्रोध छुडाया ॥ ३९ ॥ ३ भूमि ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) के ५ तिल मात्र ६ शीघ्र ७ हठ छुडाकर मेल करने के लिये ८ ईश्वरीसिंह ठग को समझाने को ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ९ अपने पुत्र को १० माधवसिंह और राणा जगत्‌सिंह के पास ॥४३॥ ११ सेना १२ मलार का पुत्र १३ धौंसा (नगारे) १४ शेषनाग के १५ पीठ

गढगढन बत्त फुट्टिय सहज बढि बिचार भूपन बिदित ॥
मल्लार सुवन जावत लरन माधव रान सहाय हित ॥ ४४ ॥
इम खंडुव दरकुच्च आय कोटा मिलान दिय ॥
महाराव लखि समय जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
चारन भूपतिराम मुख्य निज सचिव संग करि ॥
दिय अनीकं तिन सत्थ धीर सुभटन हरोल धरि ॥
पुनि मिलिय आय नृप रान पँहँ बुंदीसहु तँहँ बुल्लिं लिय ॥
सजि सेन लरन माधव सहित तजि मेवार प्रयान किय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीशपुरोहितदयारामसहितराणाचतुर्म ४ न्त्रिमन्त्रणसचिवदेवकर्ण १ भवानीदास १ परिवर्त्तनजयपुरसचिवमरणपैशून्यप्रेरितप्रभुप्रज्ञाकेशवदासगौणाऽधिकारप्रापणनष्टाणयुपटङ्किवणिग्घरगोविन्दमुख्यसचिवीभवनतत्पुत्री१श्वरीसिंह२मतङ्गमिथुनपरस्त्रीपुरुषसङ्गदोषगर्त्तपतनधर्मनिगडत्रोटनराणा१माधवसिंह२कोटेश३श्रीद्वारसमागमननारायणनिलयशपथशंसनमहाराष्ट्रसाधनसाधकजगत्सिंह १ माधवसिंहा २ऽधिकारिगमनतन्महाराष्ट्रसम्मिलनराणाज्ञि १ रामचन्द्र २ मल्लार

॥४४॥१ मुकाम २ सेना ३ बुला लिया ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुंदी के राजा के पुरोहित दयाराम सहित महाराणा का चार मंत्रियों से सलाह करना और देवकरण को दूर करके भवानीदास को प्रधान बनाया १ जयपुर के सचिव (राजामल) का मरना और चुगली करने वालों की प्रेरणा की बुद्धि से स्वामी का केशवदास को छोटा अधिकार देना और नाटाणी पदवी वाले बनिये हरगोविन्द का सचिव होना २ उस हरगोविन्द की पुत्री और हाथी रूपी ईश्वरीसिंह इन दोनों का, परस्त्री से पुरुष के और पर पुरुष से स्त्री के संग के दोष से, धर्म रूपी जंजीर को तोड़ कर खड्डे में गिरना ३ राणा जगत्सिंह, कछवाहा माधवसिंह और कोटा के पति का नाथद्वार में मिलना और ईश्वर के मंदिर में सौगन करना ४ मरहठों के साधन के अर्थ राणा जगत्सिंह और माधवसिंह के अधिकारियों का जाना और उन का मरहठों से मिलना ५

३ वाक्यविसरीकरणपुनस्सम्मिलनपक्षद्वय २ दूतजयपुरप्रेषणहुल-
करपुत्रखण्डूराणासहायगमनकोटासैन्यसहितबुंन्दीन्द्रतस्सम्मिलनं
विंशो २० मयूखः ॥ २० ॥३०१॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सक कृत नभ बसु सोम१८०४ मास फग्गुन पख उज्जल॥
नृप माधव उम्मेद सहित खंडुव चढि सब्बल ॥
रान कटक सब संग लहि रु दरकुच्च चलायउ ॥
अति गरूर जनु गरुर अहिन उप्पर उफनायउ ॥
उततैंहु सुनत कछवाहको चंडे कटक सम्मुह चलिय ॥
दिस दिसन बत्त फुट्टिय दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय॥१॥

॥ दोहा ॥

नट्टानी उपपद बनिक, हरगोबिंद चमूप ॥
चउ४ अवयव दल लै चल्यो, भिरन उदैपुर भूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगि तोपन लगि लाय मचिग दुवर दल मिलि संगर ॥
इत मेवारन मुकुट इत सु ढंकन ढुंढाहर ॥
राजमहल पुर सीम भीम प्रतिभट भट भिंटन ॥
हय उठाय हरवल्ल बढिग दुवर दिस अरि बिंटन ॥

राणजी, रामचन्द्र और मल्लार के वाक्यों का परस्पर भेद करना और फिर सामिल होकर मरहठों के दोनों पक्षों का अपने वकीलों को जयपुर भेजना ६ हुलकर के पुत्र खंडू का राणा की सहाय पर जाना और कोटा की सेना सहित बुन्दी के पति के सामिल होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ एक ३०१ मयूख हुए ॥

१ सेना सहित २ मानों गरुड़ ३ भयंकर सेना ॥ १ ॥ ४ सेनापति ५ हाथी, घोड़े, रथ, पैदल, इस चार अंगोंवाली सेना को लेकर चला ॥ २ ॥ ६ युद्ध ७ भयंकर शत्रुओं के ८ वीर मिलने को

जिम विप्र निमंत्रन सुनि चलत इमहि अग्गि जाठर जगिय॥
साकिनी प्रेत खेचर सकति लाभ असन आवन लगिय ॥३॥
खेत्रपाल खिलखिलिय मिलिय नारद महती रैव ॥
काली गन किलकिलिय भिलिय बनि सैदृस आनि भव॥
पिलिय अग्र दुवर दलन झिलिय असिं बाढ बाढ झरि ॥
गिलिय गोद गिद्धनिन खिलिय खूबिय हिय अच्छरि ॥
बढि अंधकार छादित बियत व्यवहित बिरचि पतंग पहु ॥
लुट्टिय हरोल हुलकर भटन कूरम कटक बहीर बहु ॥ ४ ॥
हय उठाय हुलकर समेत हल्लनपति हंकिय ॥
अतिबल तेग उताल झरत टोपन झननंकिय ॥
कतिक मारि भुव छाय ढारि ढंढ्ढर ढुंढारन ॥
पोखे नृप पलचरन बहुल पल मेद बिथारन ॥
असि बाढ चक्खि इक बेर अरि लग्गे प्रतिमग नीर लजि॥
मिलि मिलि सिचान आवत मनहु पारावत गन भरकि भजि ५
जिम पारद मिलि अग्गि पिक्खि निज कटक होत इम ॥
सेनापति गज सहित वनिक मंड्यो अंगद तिम ॥
झुल्ल्यो रे निरलज्ज भजत मुच्छन मुँह धारत ॥
वनिक बैन यह सुनत फिरे कूरम अति आरत ॥
लिय सदन बिंटि पुनि वनिक गज पै न लगत अग्गैं चरन
जोगिंद चित्त सविकल्पं जिम रहिय रुक्कि पिक्खत मरन ।६।

जठराग्नि॥३॥२महती नामक वीणा का शब्द करके ३ इन कहे हुओं के तुल्य बरावर)४शिव५तरवारों के बाढ पर तरवारें६प्रज्वलित हुए७आकाश में८सूर्य भु को८छुपादिया॥४॥१०अस्थिपंजर (हाडों के पिंजर)११मांस खानेवालों को २ बहुत १३ मांस और चरबी फैलाकर १४ उलटे मार्ग१५कपोतों का समूह ॥ ५ ॥ १६ अग्नि से पारा उडै जैसे१७मुख पर१८पीड़ित१९परन्तु२०योग शा स्त्र में दो प्रकार की समाधि लिखी है जिन में एक तो सविकल्प समाधि है जिस में अद्वैत का भान होने पर भी द्वैत भासता है, जैसे किसी विष्णु, शिव आदि देव का अधिष्ठान करके समाधि लगाई जाती है उस योगी का चित्त उस

तिमिर घोर तत मध्य पार अप्पन भट भान न ॥
माधव[2] के दलमाँहिँ पिक्खि पचरंग निसानन ॥
जैपुरके तिन्ह जानि रान दल[3] भजिग भीत अति ॥
कोटा दल पुनि भजिग सहित चारन सेनापति ॥
तँहँ भयउ सोर कोटा भजिग सुनि पित्थल बुल्ल्यो सु चहि
इम सुजन ओहि कोटा अखिल तिन ठहैं भग्गो न कहि ७
कोकिलपुर पति कुमर भटन पित्थल चूड़ामनि ॥
महाराव उमराव विदित बुल्ल्यो अंगद वनि ॥
चारन मग्गनहार भज्यो कारज अचिज्ज नहिँ ॥
पै हम हड्डन पयन आडडुंगर अवलंबहिँ ॥
यह अक्खि सेन भज्जत मुरथो जिम अनिमिष उलटे उँदक
झपटाय बाजि पैंबि जिम परयो कुंढाहर सिर धारि धक ।८।
भजत सेन लखि सजव पिछि लग्गिय जैपुर दल ॥
मुरि पित्थल तिम मध्य खग्ग झारिय रचि मंडल[12] ॥
जिम बिरेकँ[13] ओषधिय उदर इम मथिय सत्रु सब ॥
कतिक कंपि लकतकँत[14] कतिक छक्कत बक्कत बँब[15] ॥
सँव्यापसव्य[16] करि श्राद्ध बिच जजमानहिँ जिम करत द्विज ॥
तिम क्रिय अनेक परबस कुमर समर बिथारिय नाम निज९
जिम नर तिम सैंलोट गिरत हैवर तिम गैवर ॥

देव को छोड़ कर आगे नहीं पढता, और दूसरी निर्विकल्प समाधि है जो चैतन्य स्वरूप पर ब्रह्म में लगाई जाती है सोही मोक्ष का साधन है ॥ ६ ॥ १ विस्तार के २ माधवसिंह कछवाहे की सेना में ३ राणा की सेना ४ कोटा की सेना भगी ५ पृथ्वीसिंह ६ सब कोटा हमारे भुजों पर है ॥ ७ ॥ ७ कोयलापुर के पति का ८ आडावळा नामक पर्वत लटकता है ९ मच्छी १० उलटे पानी में ११ वज्र के समान ॥ ८ ॥ १२ चक्र (गोलकुंडा) १३ दस्त लाने वाली दवाई पेट को मथै जैसे १४ धूजकर देखते हैं १५ अवाच्य शब्द (कलराने का शब्द) १६ सव्य और अपसव्य ॥ ९ ॥

जिम तोमर तिम खग्ग बिहसि झारत कुमार बर ॥
लटकत उरझि रकाब कतिक भटकत[1] प्रमत्त गति ॥
खटकत हड्डन बाढ मनहुँ चटकत गुलाब तति[2] ॥
घुम्मत अचेत घायन कतिक कतिक आय पायन परिय ॥
कछवाह कटक सब अजब सुव[3] गजब[4]सिंह गड्डरि करिय॥१०॥
तुट्टि तुट्टि सिर उडत कढत सर[5] फुट्टि बक्कत्तर ॥
रुहिर[6] छिंछि नभ चढत बढत कलकल[7] धर अंबर ॥
काली खप्पर भरत फिरत सिव नच्च बिसारद[8] ॥
महती[9] तुंबा सिर लगाय घुम्मत इत नारद ॥
पित्थल अनीक फारत बढिग मरद उतारत गजन मद ॥
डाकिनि डरात फारत बदन[10] किलकारत भैरव भयद[11] ॥११॥
घनैं रिपुन रमनीन[12] झारि कंकन कुबेस[13] किय ॥
घनैं रिपुन रमनीन[14] निंब बंटन पखान[15] दिय ॥
घनैं हयन घन घाय कियउ मँहगे सोदागर ॥
घनैं गजन सिर फारि रंग मुत्तिन[16] किय आगर[17] ॥
भुजदंड भीरि बासुकि उरग मंदर[18] असि गहि उच्च मन ॥
पित्थल कुमार नागर[19] कियउ ढुंढाहर सागर मथन ॥१२॥
पहर इक्क१इम कुमर लरिग धारन धपाय धक ॥
फट्टिग सिर चोफार बदन चोफार लोह छक ॥
मनहुँ बीर विधि[20] परखि हरखि अद्वैत[21]२ छाप दिय ॥

१ बावले होकर फिरते हैं २ पंक्ति ३ अजबसिंह के पुत्र ४ गजब करने वाले सिंह ने ॥ १० ॥ ५ बाण ६ रुधिर की ७ कोलाहल ८ नृत्य में निपुण ९ महती नामक नारद की वीणा का १० मुख ११ भयंकर ॥ ११ ॥ १२ स्त्रियों के १३ खोटा (विधवापन का) वेस १४ बहुत शत्रुओं की स्त्रियों को घावों पर बांधने के अर्थ नींब बांटने को हाथों में १५ पत्थर दियें. युद्ध में १६ मोतियों के १७ ढेर (समूह) १८ मंदराचल रूपी तरवार को लेकर १९ विष्णु ने ॥ १२ ॥ २० ब्रह्मा ने परीक्षा करके २१ ऐसा दूसरा वीर नहीं है ऐसी छाप दी

इम सोभित छकि कुमर परयो पलचार दान प्रिय ॥
आयुहि समत्थ असु[1] थिर रहिय बीरनिंद वपु[2] बिप्फुरिय ॥
अच्छरि उमाहि आइय बरन चउमुख[3] लखि लज्जित मुरिय १३
इम हुलकर१ बुंदीस १ उभय२ कूरम दल[4] अंतर ॥
झारत खग्गन[5] झपटि दपटि बिथुरात[6] दिगंतर॥
इत पहिलैं दल भजिग ताहि सुनिकैं जैपुरपति ॥
करि आयउ दरकुंच गजब डारत सबेग गति ॥
इत बहुरि हड्ड१हुलकर१ असिन[5] दल सत्त्रुन पुनि ठिल्लि[6] दिय ॥
तँहँ परिय रत्ति निसतारि[7] तँम डुव२दिस मुररि मिलान[8] दिय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

खेत खोजि बुंदीस नृप, हेरिय पित्थल जाय ॥
सिबिका धरि आनिय सिविर[9], बैद्यन कथित बिधाय[10] ॥१५॥
हुलकर हड्ड दुहूँन२ पुनि, कियउ मंत्र मिलि रत्ति[11] ॥
अप्पन जीत भजंत अरि, प्रभु अनुक्रोसं[12] प्रपत्ति[13] ॥ १६ ॥
अब आवत जैपुर नृपति, सजि पुनि कटकँ[14] पसारि ॥
यातैं नहिँ रहनौं उचित, मुरि चल्लहु मेवार ॥ १७ ॥
कहि यह प्रातहि कुंच करि, चलि हुलकर१ चहुवान[15]२ ॥
सब भोजन जुत साहिपुर, दिन्नैं आनि मिलान[16] ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पके उत्तरायणे सप्तम ७राशौ हड्ड-उम्मेदसिंह १ कूर्म्ममाधवसिंह २ हुलकरखराडू ३ कोटो ४ दयपुर

१ प्राण २ शरीर पर वीरनिद्रा (मूर्छा) बढी ३ चार मुखवाला (ब्रह्मा) जानकर पीछी फिर गई [ब्रह्मा सब का पिता है इस कारण]॥ १३ ॥ ४ सेना ५तरवारों से६शत्रुओं की सेना को हटा दी७अंधेरा फैलाकर८मुकाम किये॥१४॥ ९ डेरे में१०वैद्यों का कहना करके॥१५॥११रात्रि में१२यह ईश्वर की दया से१३ जय प्राप्त हुई है॥१६॥१४सेना का विस्तार॥१७॥१५उम्मेदसिंह१६मुकाम ॥१८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा उम्मेदसिंह, कछवाहा माधवसिंह, हुलकर खंडू और कोटा व उदयपुर की सेना का हुंदा-

५ कटककुशलाहडगमनकूर्म्मसैन्यसहितसचिवहरगोविन्दाऽभिमुख्य
प्रपतनवाशिष्ठीसरिदुपकण्ठराजमहलपुरसीमासङ्गरभवनबुंदेन्द्र १
हुलकर २ प्रहरणापरपलायनाऽनन्तरगोनर्दीयोक्तचित्तद्वितीय२ वृत्ति
थम१ वृत्तिनिष्ठकोटो १ दयपुर २ पृतनाकान्दिशीकीभवनमहा-
विबन्धुकुमारप्रत्यटनप्रचुरशस्त्रपुद्गलपूतीकरणाऽनन्तरकूर्म्मराजाऽ
गमनतत्समस्तपरपक्षमेदपाटसाहिपुराऽऽगमनमेकविंशो २१ मयू-
खः ॥ २१ ॥ ३०२ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

यह उदंत[1] अपहार सब, सुनिय रान[2] जगतेस ॥
ठयो कटक सहाय पुनि, बल निज निकट बिसेस ॥ १ ॥
तखत १ रान जयसिंह सुव, बाबा निज पटु बीर ॥
पुनि कुसाल १ भिंडरपुर[3] प, सगताउत धुर धीर ॥ २ ॥

हड़ में जाना १ कछवाहे की सेना सहित सचिव हरगोविन्द का संमुख आ-
ना २ बनास नदी के समीप राजमहल की सीमा में युद्ध होना १ बुन्दी के
राजा और हुलकर के शस्त्रों से शत्रुओं के भागने के पीछे पतंजलि मुनि की
पतंजल योग सूत्र में) कही हुई द्वितीय चित्त वृत्ति के समान उदयपुर की
सेना का और प्रथम वृत्ति के समान कोटा की सेना का भागना (पतंजलि
मुनि ने योगसूत्र में चित्त की पांच वृत्तियां कही हैं जिन से द्वितीय वृत्ति का
नाम 'विपर्यय' है इस का अभिप्राय मिथ्या ज्ञान होना है और प्रथम वृत्ति का
नाम 'प्रमाण' है जिस का अभिप्राय प्रत्यक्ष ज्ञान होना है) अर्थात् उदयपुर की
सेना तो माधवसिंह का पांच रंग का निशान देखकर जयपुर के निशान की
भ्रांति से भागी और उदयपुर की सेना को भागती हुई देखकर कोटा की से-
ना प्रत्यक्ष ज्ञान होने से भागी, महाराव के भाइयों के कुमर का फिर कर ब-
हुत शस्त्रों से शरीर को पवित्र करने पीछे कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का
आना और उस के सब शत्रुओं का मेवाड़ में शाहपुरा नगर में जाने का इ-
क्कीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ दो ३०२ मयूख हुए ॥
१ वृत्तान्त ॥ १ ॥ २ राणा जयसिंह के पुत्र तखतसिंह को ३ भींडरपुर का पति ॥ २ ॥

रायसिंह ३ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
पुनि बुंदीस पुरोहित सु, दयाराम४ चित चाह ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम च्यारि४न कारि मुख्य रान*पृतना पुनि पिल्लिय ॥
†सजव साहिपुर आय मुदित निज दल सह मिल्लिय॥
उततैं ईस्वरिसिंह पिछ्छि दब्बत द्रुत आयउ ॥
भिल्लहड़ा पुर लुट्टि कहर मेवार मचायउ ॥
धनवंत बनिक कारा[१] पटकि कुप्पि नगर श्रीहत[२] करिय
बाटिका[३] मनहुँ अहिवल्लरिन[४] चपल आनि बस्तनं[५] चरिय ।
मेवारन किय मंत्र सुनत यह बत्त नीति सह ॥
कटक प्रचुर कछवाह अलप अप्पन अनीक[६] यह ॥
हुलकर१ कोटा २ एहु उभय२ बिस्तर[७] बिनु आये ॥
बित्त[८] रहित बुंदीस अवनि[९] हित प्रसभ[१०] असमाये॥
यातैं न संपरायहि[११] उचित रहिहै अवनि लरैं[१२] न तिल॥
सकुटुंब सकल नृप[१३] जुत करहिं कुंभिलमेरु निवास किल[१४]।५।
तखतसिंह यह सोधि जान लग्गो कूरम[१५] प्रति ॥
सुनि यह खंडुव साम अखि[१६] कुप्प्यो हुलकर अति ॥
बुल्लयो पुनि भुज ठोकि सजव आये संगर[१७] भ्रम ॥
अब जो साम उपाय ततो तुम माँहिं नाँहिं हम ॥
सुनि तखतसिंह हुलकर कथित दयाराम तँहँ मुक्कलिय ॥
अक्खिय वहै न नय[१८] समयपटु[१९] समुझावहु कहि प्रचुर[२०] प्रिय ।६।

॥ ३ ॥ * फिर सेना भेजी † शीघ्र १ कैद में २ लक्ष्मी हीन ३ वाड़ी (वगीची) में ४ नागरबेल को ५ बकरों ने चरी ॥ ४ ॥ ६ अपनी सेना ७ विना विस्तार के ८ धन रहित ९ भूमि के अर्थ १० नहीं समावै ऐसा हठ किया ११ युद्ध १२ लड़ने से भूमि तिलमात्र नहीं रहैगी १३ महाराणा सहित १४ निश्चय ही गहन प्रदेश कुंभलगढ में जाकर बसेंगे ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह के पास १६ क्रोध करके १७ युद्ध के भ्रम से १९ हे समयचतुर यह (युद्ध करने को) १८ नीति नहीं है २० बहुत प्यारी बातें कह कर ॥ ६ ॥

तबहि जाय *भूदेव कहिय छुंदीस पुरोहित ॥
तुम दिल्लिय †तिय जार कुमर खंडुव चिंतहु चित ॥
अवसर कोप इहाँ न ‡स्वामि साहुव कुल रानाँ ॥
तुरकनतैं तिन बेर खुट्टि सब गयउ खजानाँ ॥
सज्जहिँ जु अज्ज रन§कुम्मसह तो तुम ढिगहु अनीक¶मित॥
कछुदिन बिहाय दल इक्क करि बहुरि सत्रु जित्तहि बिदित॥७॥

॥ दोहा ॥

ओरुदावत इम फुछि सठ, सुनि दिल्लिय तिय नाम ॥
आल्यो[२] इमहिँ तटस्थ[३] करि, करहु बिप्र सब काम ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि[१] सत्वर यह बिप्र आनि अक्खिय तखतेसहिँ ॥
हुलकर सम्मत आहि मिलहु तुम कुम्भ नरेसहिँ ॥
तबहि जाय तखतेस अरज कूरम प्रति अक्खिय ॥
मरहट्ठन आदेस[६] कहहुँ इहिँ दिन किहिँ नक्खिय ॥
तसमात धारि खंडुव कथित तुम भुव हम पत्ते लरन ॥
तिहिँ हेतु आहि यह दोस तैस नृप लुट्टहु मेवार नन ॥ ९ ॥
[१२]नति पूरब यह सुनत कुम्भ अनुकंप[१३] बिहसि किय ॥
भिल्लहड़ापुर बनिक[१४] धनिक पक्करे ति छोरि दिय ॥
उपालंभ[१५] लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
किय पच्छो दरकुंच गरद रवि ढंकि घुदिर[१६] गति ॥
[१७]सुचि पक्ख चैत बिक्रम सक[१८] ग पंच गगन वसु चंद्र१८०५मित

---

*ब्राह्मण ने †दिल्ली रूपी स्त्री के उपपति ‡तुम्हारे पति के कुल वाले राणा थे §कछवाहे के साथ ¶सेना थोड़ी है १सेना एकत्र करके ॥७॥ २किनारे (अलग) रखकर ॥८॥ ३शीघ्र ४है ५ ईश्वरीसिंह से ६ हुक्म ७ किसने डाला है ८इस कारण ९ खंडू का कहना करके १० तुम्हारी भूमि में हम लड़ने को प्राप्त हुए ११ यह दोष खंडू का है ॥ ९ ॥ १२ नम्रता पूर्वक १३ दया १४ धनवान् बनियों को पकड़े थे छोडदिये १५ ओलंभा १६ मेघ के समान १७ शुक्ल पक्ष १८विक्रम के शाक

नृप किय प्रवेस जैपुरनगर मेवारन आक्रमि मुदित ॥ १० ॥

॥ रोला ॥

जगतसिंह इत रान खास इक रूपमल्ल१ हय ॥
साखति पुरट२ समेत रुचिर कुल जात मनोरथ३ ॥
इक खासा तरवारि१ भूप संभेर हित भेजिय ॥
रान सचिव भट लै रु पहुँचि बुंदिय अनीक५ जिय ॥ ११ ॥
भिंडरपुर पै६ खुसाल१ तँखत जयसिंहरान सुत२ ॥
नगर सादड़ीनाह रायसिंह३हु विचार जुत ॥
दयाराम४ पुनि द्विजनि८ इहबुन्दीस पुरोहित ॥
आये ए नृपअग्ग९ सचिव च्यारि४हु नय सोहित१० ॥
इन हय१ असि १करि नजरि बीरपन बिरुद किथा११ ॥
प्रीति सहित सुनि बचन लैन भूपति अवधारिय१२ ॥
स्वीकरि पुनि निज सुभट बीर बुंदिय दिस पिल्लिय१३ ॥
तिन आप रु निज बिखय ठोकि कूरम चर१४ ठिल्लिय ॥१३॥
हो हाकिम यहँ बनिक सचिव जैपुर कुल बंधव१५ ॥
थानसिंह थूं१६ उचित लैन पटु१७ दैनपटु न लव१८ ॥
सो निकस्यो करै१९ लैन नियति२० बल नृपदल२१ पिक्ख्यो ॥
लिन्नों पकरि निलज्ज सपथ२२ बंदन तब सिक्ख्यो ॥ १४ ॥
कारा सहि कति काल दम्म पुनि तीस सहँस३००००दिय॥
तब छोर्यो वह ग्रसित जानि दुल्लभ मन्नत जिय ॥

में प्राप्त अर्थात् वैक्रमीय १ घेरने से प्रसन्न होकर ॥ १० ॥ २ सुवर्ण को। ३ सुंदर कुल में उत्पन्न, मन के वेगवाला ४ उम्मेदसिंह के अर्थ ५ बुन्दी की सेना में ॥ ११ ॥ ६ भींडर का पति कुशालसिंह ७ तखतसिंह ८ द्विजन्मा (ब्राह्मण)९उम्मेदसिंह के आगे १०शोभित११॥१२॥विचार किया१२भेजे१३ अपने देश में१४नौकरों को ॥ १३ ॥१५जयपुर के सचिव के कुल का भाई १६ थूकने के (धिक्कार के) उचित १७ लेने में चतुर १८ देने में लेश मात्र भी चतुर नहीं था १९ हासिल लेने को २० भाग्य के बल से २१ उम्मेदसिंह की सेना ने देखा २२ सौगन करना और नमस्कार करना ॥ १४ ॥

बिन बुंदिय सब बिखय अमल वसु८ मास आरोह्यो ॥
नृप ५ट बहुरि निकासि मुलक कूरम दल मोह्यो ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

इत पुनि रान बिचारि, गोवरधन गोस्वामि प्रति ॥
मुदित मंडि मनुहारि, पठये दलँ श्रिपद्वार पहुँ ॥ १६ ॥
तुम बल्लभ कुल दीप, बुल्लहु यँहँ कोटेस अब॥
मिलि हम उभय२ महीप, स्वमत धर्म मग संचरहिँ ॥१७॥
गोस्वामिय लिखि पँत्त, बुल्ल्यो तब कोटेस द्रुत ॥
आयो निठ्ठिन अँत्त, जानि रान सम्मत बिफल ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

रान कहाई मिलनकी, नट्यो तबहि कोटेस ॥
कहिय बस्लि तुम सार्भ किय, सहिय कुम्म नरेस॥ १९ ॥
मिलनसैंहु रस नहिँ तुमहु, करत अल्प सतकार ॥
अरथीं बिनु आदर रहित, मिलत कोन मतिदार ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ शीषोंद तखतसिंह१कुसालसिंह२झल्लारायसिंह३द्विजदयाराम ४सचिवचतु-ष्टय४सहितराणासैन्यसहाया ऽर्थसाहिपुराऽऽगमनकूर्मराजमेदपाटप्र विशनभिल्लहड़ापुरलुण्टनतद्दलविद्रुतोदयपुरसचिवसामविचारणाकु-पितहुलकरखण्डूनुनयनजायसिंहिक्रुच्छामनतत्स्वपुरप्रतिप्रविशनद्द्वे

१देश में॥ १५॥ २पत्र३राजा ने ॥ १६ ॥ ४आप के धर्म के मार्ग में ५चलेंगे ॥१७॥ ६ पत्र ७ यहां ॥ १८ ॥ ८ खेद करके ॥ १९ ॥ ९ धन की याचना करने वाले के विना न्यून आदर से कौन १० बुद्धिमान् मिलता है ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, शीषोदिया तख-तसिंह, कुशालसिंह, झाला रायसिंह, ब्राह्मण दयाराम, इन चारों सचिवों के सहित, राणा की सेना की सहायता के अर्थ शाहपुरा में आना १ कछवाहों के राजा का मेवाड़ में प्रवेश करके भीलहड़ा पुर को लूटना २ उस के सेना से डर कर उदयपुर के सचिव का साम उपाय करने से कोपे हुए खंडू की प्रार्थना करना और जयसिंह के पुत्र के क्रोध को मिटाना और उस का कूच

न्द्रोपायनीभूताऽर्वरूपमल्ल१कान्तकृपाणा२पुरस्सरराणाचतु४स्साचिवबुन्दीशशिबिराऽऽगमनगृहीतनिवेदितोपायनसम्भरस्वभटबुन्दीविषयप्रेषणानट्टाणिस्थानसिंहनिग्रहणातद्दण्डद्रव्यग्रहणबुन्दीमात्ररहितदेशस्वीकरणराणाऽऽनीतश्रीद्वारगोस्वामिगोवर्द्धनमहारावाऽऽह्वयनकोटेशतन्मिलनाऽल्पसत्कारसूचनं द्वाविंशो२२मयूखः॥२२॥३०३॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

*तसमात अब तुम †रान ‡बुंदिय तुल्य अद्दर जो करो ॥
तबही मिलै रु बहोरि जो नहि साम कूरमसौं धरो ॥
पहिलौंहि दै हरि अग्ग बचन रु फुट्टि जैपुरमैं मिले ॥
तसमात नाँहिं बिसासहै तुम इष्टसौंहैं सबै गिले ॥ १ ॥
सुनि रान तब कछु घट्टि बुंदियँ तुल्लय अद्दर स्वीकर्यो ॥
अब अप्पै सम्मुह इक्क गद्दिय बैठिहौ यह उच्चर्यो ॥
हम मत्थ हत्थ लगायहैं लघु खास कग्गँर मंडिहैं ॥
अबतैं सनेह बढै जु अप्पन सो कदापि न खंडिहैं ॥ २ ॥
कोटेस तब सुनि एह रानहिं मेल स्वीकरि बुल्लये ॥

करके अपने पुर में प्रवेश करना ३ हाडा की भेट करने को रूपमल्ल नामक घोड़ा, सुन्दर तरवार, आदि सहित राणा के चार सचिवों का बुन्दीश के डेरे पर आना और नजर किये हुए नजराने को लेकर उम्मेदसिंह का अपने वीरों को बुन्दी के देश में भेजना ४ नाटाणी थानसिंह को पकड़ कर उस से दंड के रुपये लेना और एक बुन्दी को छोड कर देश को अपना करना ५ राणा की प्रार्थना से नाथद्वारे में गुसांई गोवर्धनलाल का कोटा के महाराव को बुलाना और राणा से मिलने में अल्प सत्कार होने की कोटा के पति की सूचना करने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तीन ३०३ मयूख हुए ॥

* इस कारण से † हे राणा ‡ बुन्दी की बराबर आदर करो तो १ इस कारण से २ इष्टदेव के सौगन ॥ १ ॥ ३ बुन्दी से कुछ घटकर ४ आदर स्वीकार किया ५ आप ६ मस्तक के हाथ लगाकर मुजरा करेंगे ७ खास रुक्के में अपने को छोटा लिखेंगे ८ कभी नहीं तूटेगा ॥ २ ॥ ६ मिलना स्वीकारकरके बुलाये

तब रान पुनि श्रियद्वार आय मिले रु मंत्रहु खुल्लये ॥
रु सदैव सम्मलि होनके पुनि पत्र दोउन२ मंडये ॥
चढि गाम ढिंकोला दुहून२ रेंकाब जाय रु छंडये ॥ ३ ॥
तब ही जु साहिपुरा चमू सु समस्त जाय मिली तहाँ ॥
बुंदीस डेरन रान१ खंडुव२ भीमनंद३ गये जहाँ ॥
तब इंद्रगढ१ खत्तोलि२ बलवनि३ आदि तीन३ मिलायकैं ॥
पुनि रानसों मिलि भूप बैठिय इक्क१ गद्दिय आयकैं ॥ ४ ॥
घटिका उभै२ हि सभा रही मनुहारि मोदमई भई ॥
पुनि पान गंध निवेदि सर्बन सिक्ख डेरनकों दई ॥
खंडू१ रु माधव२ तत्थही पलटाय पग्घ सखाभये ॥
पुनि तत्थतैं चढि सर्बही गुलगाम पाँरहलों गये ॥ ५ ॥
खारी नदी तट दैं मिलान सबैं घने दिन ठ्हाँ रहे ॥
तब कुम्म बीरहु सज्जव्है दरकुंच सम्मुह उम्महे ॥
त्रय३ कोस अंतर दै मिलान यहै कहाइय रानपैं ॥
क्यों बैन चुक्की करारके पुनि सज्जहुव घमसानपैं ॥ ६ ॥
तुम भ्रात नाथ पटा जु पावत सोहि माधवकों मिलैं ॥
घर रीति चूकि रु अप्प क्यों अब कोल बैन कहे गिलैं ॥
तब रान अक्खिय अप्प जानत रीति घरघर भिन्नहै ॥
तुमरे पिता जयसिंह राज्य सबैहि याकँहँ दिन्नहै ॥७॥
हम किद्द नाथ प्रसन्न ज्यों तुम त्योंहिं माधवकों करो ॥
निज तात मंडित पत्र अक्खर लुप्पि लोभ न अद्दरो ॥
इहिं रीति होत जबाब जानि रु कुप्पि खंडुव उच्चरो ॥
रन काज मोहि बुलायकैं अब सामकी तुम जो धरी ॥ ८ ॥

---

१ घोड़ों से उतरे अर्थात् मुकाम किया ॥ ३ ॥ २ सेना ३ भीमसिंह का पुत्र महाराव दुर्जनशाल ॥ ४ ॥ ४ दो घड़ी ५ इत्र ६ पगड़ी बदल कर ७ ग्रामका नाम है ॥ ५ ॥ ८ मुकाम ॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ नाथसिंह को हमने प्रसन्न किया वैसे तुम माधवसिंह को प्रसन्न करो १० तुमारे पिता जयसिंह के लिखे हुए

तुमतैँहिँ संगर सज्जि तो हम प्रीति रीति बिगारिहैँ ॥
कछवाह *हिंतु नतो लरो हरवल्ल हम असि झारिहैँ ॥
तँहँ रान बत्त †कुबेर१ ओ तखतेस२ तैँ यह अक्खई ॥
अब अप्प साम करो न ह्याँ रन बुद्धि खंडुवकी भई ॥ ९ ॥
तब रान आदि समस्त फोजन सज्ज जुज्झनकी करी ॥
रननंकि तंतिन सिंधवी झननंकि पक्खर घुग्घुरी ॥
सुनि कुम्म सत्रुन सज्ज होत बिचारि खंडुव भीरकौँ ॥
जय जानि संसय झुक्कल्यो हरनाथ ‡नारव बीरकौँ ॥ १० ॥
कहि मास कत्तिय१ §मग्गर२ वा इतहू उदैपुर आयहैँ ॥
अरु अप्प माधव१ ओ उमेद२दुहून२लाय मिलायहैँ ॥
तँहँ नग्गनाजुत पिक्खि बुंदिय इङ्ग भूपहिँ अप्पिहैँ ॥
दसलक्ख १०००००० रुप्पय देस माधव अत्थ दै थिर थप्पिहैँ ॥११॥
यह बत्त नारव आयकैँ नृप रान आदिनतैँ कही ॥
कोटेस ताहि सिराहि बुंदिय स्वीय हाकिमकी चही ॥
सुनि एह दुज्जनसल्लकौँ तब बीर खंडुव निंदयो ॥
इहिँ रीति दोउनकैँ बिरोध बिसेस बैनन ठहै भयो ॥१२॥
दुरभिच्छ कारन सेनमैँ मन१ घास रुप्पय१को बिकैँ ॥
अरु अन्नकोहु महर्घताकरि लोक निछिनकैँ टिकैँ ॥
बलि नित्य दम्म हजार बारह१२००० रानकै ठैपयमैँ लगैँ॥
पुनि होत साम जबाब जो निमटैंहि जावनकी थँगैँ ॥ १३ ॥
कोटेसके दलकेन तत्थ अनीति मंडि मरोरतैँ ॥
तृन सकँट जाय रु रानके दल माँहिँ लुट्टिय जोरतैँ ॥
तब कुम्म बैन कहे जु मन्नि रु रान अक्खिय है भलैँ ॥

॥ ८ ॥*से †कुबेरसिंह ॥ ९ ॥ ‡ नरूका ॥ १० ॥ § मार्गशिर में १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ११ ॥२ नरूके ने ३ अपना हाकिम रहने की ४ वचनों का ॥ १२ ॥ ५ महँगाई से ६खरच में ७ठहरे ॥१३॥ ८सेना वालों ने ९घमंड से १० घास के गाडे

तब देहु पैं अबतौंहि हाकिम तत्थ*मामक मुक्कलैं ॥ १४ ॥
यह बत्त कूरम स्वीकरी तब रान †आयस त्यौं दयो ॥
नगरी बसी पति चौंडवंसिय ‡मेघ१ छुंदिय भेजयो ॥
टोडा महाजन टेकचंद१ पठाय रान खुसीभयो ॥
यह जानि माधव१ मित्र खंडुव१ कुंच दोडन२को ठयो ॥१५॥
करि कुम्म §दुम्मन रानतैं निज धाम रामपुरा लयो ॥
कति दीह खंडुव तत्थ रहि पुनि बप्पके ढिग पुग्गयो ॥
इत कुंच ईस्वरिसिंह हू निज धाम जैपुर त्यौं किये ॥
कोटेस भेजि वकील आक्खिय मोहि छुंदिय दीजिये ॥ १६ ॥
तब लै वकीलहिं संग कूरम स्वीयै पत्तन संचरयो ॥
रु कही तजो अब रान संगत तो करैं तुम उद्धरयो ॥
नहितो वँ कत्तिय मासमैं तुमतैंहु संगर जोरिहैं ॥
पहिलैं करी जिम धूमि तोपन नैर चम्मलि बोरिहैं ॥ १७ ॥
कोटेस१ रान१ रु भूप१ ए३ इत उप्परे गुलगामतैं ॥
पुर धुंधरी तट दै मिलान रहे निसा सुख सामतैं ॥
तँहँ जा पुरोहित रानके ढिग हो सु संभरै मंगयो ॥
तब दयाराम जु बिप्र रानहु भूपकौं हिततैं दयो ॥ १८ ॥
निज बिप्र लै दुव२ हड्ड भूपति नंदगाँम गये तबैं ॥
बुंदीस चम्मलि वारही रहि सगतपुर गढमैं जबैं ॥
तँहँ सचिव हरजन हड्डकौं सिविका समप्पिय संभरी ॥
अरु देसमैं तहसील कारन सिक्ख ताहि दई खरी ॥ १९ ॥
अचलेस१ माधानी सहित तब देस हरजन१ संचरयो ॥
सीलोरपुर ढिग कुम्म सुभटन जाय रन तिनसौं करयो ॥

* हमारे ॥ १४ ॥ † हुक्म ‡ मेघसिंह को ॥ १५ ॥ कछवाहे जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह को § उदास करके १ बाप (पिता) के पास ॥ १६ ॥ २ अपने पुर में गया ३ राणा का साथ छोड दो तो ४ अब ॥ १७ ॥ ५ उम्मेदसिंह ६ उम्मेदसिंह ने पुरोहित दयाराम को मांगा॥ १८ ॥ ७ कोटे का उपनाम है ८ उम्मेदसिंह ने पालखी दी ॥ १९ ॥ ९ माधवसिंहोत हाडा

अचलेसके *गुटिका लगी पर दोहु२ सत्रुन ।नाँजये ॥
पुनि फोज जैपुरतैं चली तब छोरि भूपतिपैं गये ॥ २० ॥
सक बेद नभ बसु सोम१८०४ भद्दव कृष्णअष्टमि८ जंगभो॥
पुनि भूप आन उठाय जैपुर सैन बुंदिय संगभो ॥
रन काज भूप बहोरि बीर दलेल१ नाहर मुक्कले ॥
रन आय बुंदिय किन्न पै बपु घाय दोउन२ कैं छले ।२१
तबही सगतपुर बुल्लिकैं उपनाह दोउन२ कै कियो ॥
आसोजमैं सुत ईडरेचिय कै भयो सु नही जियो ॥
इत ज्येष्ठ सालमनंद दिल्लिय छोरि जैपुर पुग्गयो ॥
भट ताहि कूरम रक्खि बुंदिय सीम माँहिं पटा दयो ॥२२॥
पुनि मग्गमैं नृप कुम्म बुंदिय आय दीह घने रह्यो ॥
कोटेसकेर वकीलतैं यह वैन परिखदमैं कह्यो ॥
हम संग दुरजनसल्ल होय रु भ्रात माधवपैं चलो ॥
यह नाँहिं तो रन सज्ज होय रु लैन हम कँहँ मुक्कलो ।२३।
कोटेस यह सुनि इक्कठो निज सेन पत्तनमैं करयो ॥
लगवाय बाहिर मोरचे गढ जाल तोपनको जरयो ॥
उत एह माधवहू सुनी तब छोरि रामपुरा सँरयो ॥
दल संग लै निज भीत व्है कढि नैर कर्रावन परयो ।२४।
इत कुम्म बुंदिय दोहु२ भ्रातन माँहिं हित बिसतारयो ॥
परताप१ कौं रु दलेल१ कौं इक१ थाल भोजन कारयो ॥
सु दलेल ठीक गिनी न छोरिय अन्न आमय व्याजतैं ॥
पुनि कुंच दुंदुभि बज्जयो नृप कुम्मको रन साजतैं॥ २५॥

---

*गोली लगी परंतु । नहीं जीते ॥ २० ॥ २१ ॥ १ इलाज ॥ २२ ॥ २ मृगशिर मास में ३ ईश्वरीसिंह ४ सभा में ५ हमारे भाई माधवसिंह पर ६ हम को युद्ध के अर्थ कोटे बुलाने को किसी को भेजो (इसकी नांहीं करने पर युद्ध करने को हम कोटे आवेंगे) ॥ २३ ॥ ७ चला ८ पुर का नाम है ॥ २४ ॥ ९ कराया १० रोग के मिस से ॥ २५ ॥

सुनि ताहि फौज वहीरसो सब *नंदगाम दिसा चली ॥
अरु कुम्महू किय विष्णु पूजन अप्पि †पुप्फन अंजली ॥
तिहिंबेर दिल्लिय साहके फरमान लग्गिय बेगही ॥
तुम कुम्म आवहु छिप्र ह्याँ लरनो इराननतैं सही ॥ २६ ॥
इक साह अहमद है पठान जु साह[2]नादर मारिकैं ॥
ईरानपति बनि लंघि अटक रु आत इत धक धारिकैं ॥
तस्स[3]मात आवहु आतही रनथंभ दुग्गहि पायहो ॥
अरु जित्ति अहमदसाहकौं दिल्लीस तोर[4] बढायहो ॥ २७ ॥
तजि नंदगामहिं बंचि जो द्रुत[5] कुम्म दिल्लिय त्यौं चढ्यो ॥
परताप१ ओर दलेल१ सोदर दोहु२ संगहि लै बढ्यो ॥
मथुरा गये तब रोगको मिस कैं[6] दलेल तहाँ रह्यो ॥
पहिलैंहि अन्न तज्यो हुतो अब प्रान छोरनही चह्यो। २८ ।
गंगोद[7] मिट्ठिय पान कैं रु विभूति[8] विप्रन देदई ॥
भल रीति देह दलेलनैं तजि तत्थही गति सो लई ॥
परताप अग्रज तास[9] जुत कछवाह दिल्लिय पुग्गयो ॥
अरजी निवेदि रु तत्थ हठ रनथंभ आवनको लयो ॥ २९ ॥
तब साह दैहिं नदैहिं यों कछुहू न[10] कुंम्महिं उच्चर्यो ॥
तँहँ कुम्म अक्खि वजीरसौं हठ सोहि पावनको धर्यो ॥
सुनि[11] कुम्महिंतु वजीर अक्खिय नाँहिं अप्प भरोसहैं ॥
चलिहो न जो तुम तो कहा यह साहके सिर दोसहैं ।३०।
यह अक्खि अहमदसाह साहतनूज[12] संग वजीरव्है ॥
किय कुच्च कुम्महि छोरि जोरि अनीकैं[13] जुज्झन वीरव्है ॥

---

*कोटे की तर्फ †पुष्पांजलि देकर अर्थात् पुष्प चढाकर १शीघ्र॥२६॥२नादरशाह को मारकर ३ इस कारण ४ प्रताप ॥ २७ ॥ ५ शीघ्र ६ करके ॥ २८ ॥ ७ गंगाजल८ ऐश्वर्य ९ दलेलसिंह के बडे भाई सहित ॥ २९ ॥ १० ईश्वरीसिंह से कुछ नहीं कहा ११ ईश्वरीसिंह से कहा कि युद्ध आप के ही भरोसे पर नहीं है ॥ ३० ॥ १२ दिल्ली के बादशाह के पुत्र अहमदशाह के साथ १३ सेना

तब कुम्भ *स्वीय अमात्य[1] सौं कथ गेह चालनकी कही ॥
सुनि मंत्रि अक्खिय संग चल्लहु गेहकी न अबैं रही ॥३१॥
तब कुम्भ संगहि कुच्चकैं दल[2] पिट्ठि-जावन अहर्‌यो ॥
दरकुंच हंकि मुकाम यौं सतलजके तटपैं पर्‌यो ॥
तँहँ कुम्भ हिंतु[3] वजीर चिंतिय आदितैं मम बैरहै ॥
गहि याहि दंडहिं बेगही अब नाँहिं यँहँ जयनैरहै ॥ ३२ ॥
सुहि कुम्भ भीरु निसीथमैं[4] सुनि छोरि डेरनकौं भज्यो ॥
दरकुंच रत्ति रु दीह कैं जयनैर लौ रु दुर्‌यो लज्यो ॥
परताप सालमनंद संगहि आय जैपुरमैं मर्‌यो ॥
अरु जो नरायनदास खत्रिय लै हलाहल[5] सो मर्‌यो ॥३३॥
यह बीर खत्रिय अग्गही दुवबीस२२ संगर जित्तयो ॥
संधा[6]न भाजनकी हुती पर स्वामि संग भज्यो गयो ॥
तस लाज लै बिख आतही तिहिं बीर बिंग्रह[7] छोरयो ॥
सुनि कुम्भ सोच घनौं लयो पर काकतैं बल नाँ ठयो॥३४॥
सुतसाह[8] अहमदसाह साहइरानतैं इत संजुरयो[9] ॥
यह जानि दिल्लिप ईसनैं निज हत्थ कग्गर[10] अंकुरयो ॥
सुनि पत्र दक्खिन देसमैं श्रियमंत अंतिकैं[11] मुक्कल्यो ॥
तुम भीर[12] आवहु ह्याँ इरानिन देस दिल्लियको दल्यो ॥३५॥
श्रियमंत नन्ह जु बंधिकैं इक लक्ख१०००००बाहिनि[13] लै चढ्यो॥
बजि बंब आनक त्यौं अचानक घोर[14] कोसनलौं बढ्यो ॥
हयके चलाचल लै तरारन व्योम[15] धारनकौं[16] धरैं ॥
घुमडी घटा अनुकार[17] बारन[18] गज्ज डारन बिथ्थरैं ॥ ३६ ॥

---

*अपने १सचिव से ॥ ३१ ॥ २ सेना के पीछे ३ से ॥३२॥४आधी रात्रि में ५विष खाकर ॥ ३३ ॥६इस के युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा थी परंतु यहां स्वामि के साथ भगा ७ शरीर को छोडा ॥ ३४ ॥८बादशाह का पुत्र ९जुड़ा (युद्ध किया) १० पत्र लिखा ११ श्रीमंत के पास भेजा १२ सहाय ॥ ३५ ॥ १३ सेना १४ शब्द १५ आकाश १६ घोड़ों की गति को१७सदृश १८ हाथी ॥ ३६ ॥

उडि धूलि धोरनि अक्क धूंधरि चक्कचक्किय बिच्छुरे ॥
लगि अद्रि घुम्मन झुम्मिके गज जानि मैगल अंकुरे ॥
चढि संग गायकवाल१ औ परमार२ सज्जित संधिया ३ ॥
हठदार हुल्लकर४ घुंसल्या५ मतिवार कर्न्नैलकी क्रिया ॥ ३७ ॥
तजि नैर पुणिग्राम सज्जि यों श्रियमंत उत्तर हंकयो ॥
भुव भीर पक्खर छाय सेलन ओघ अंबर ढंकयो ॥
दरकुंच उत्तरि नर्म्मदा तिमही अवंतिय लंघये ॥
अरु हे जु रीमपुराहि माधव बुहिल्ल संगहि ते लये ॥ ३८ ॥
असवार पंचहजार५०००सों तब कुम्म सम्मिलि यों भयो ॥
तँहँ कुम्म डेरनपैं मलार प्रधान नन्हहिं लै गयो ॥
जयसिंह मंडित पत्रकी समुझाय बत्त निवेदई ॥
पुनि नैर बुंदिय लैनकी तिहिं बुद्धि दुद्धरकै दई ॥ ३९ ॥
गज१ बाजि२ माधव भेट किन्न सु लै रु संगरपैं छल्यो ॥
इत कुम्म केसवदास खत्रिय नन्ह सम्मुह मुक्कल्यो ॥
तिहिं साम ईस्वरिसिंहसौं श्रियमंत स्वीकृत कारयो ॥
दरकुंच कैं पुनि लंघि चम्मलि सेन अग्ग प्रचारयो ॥ ४० ॥
इम जाय जैपुर सीममैं नगरी निवाइय उत्तरे ॥
रु वकील बुंदियभूपके ढिग हे तिन्हैं चलतेकरे ॥
लिखि पत्र संग दये रु भूपहिं बेग आनहु यों कह्यो ॥
तब छिप्र[१२] चारन दान[१३] आय प्रयान भूपतिको चह्यो ॥ ४१ ॥
दल[१४] नन्हके रु मलारके सब पुब्ब[१५] प्रीति निवेदये ॥
तब चाहि भूप सिराहि चारनकों रु चालनकौं भये ॥

---

१ सूर्य २ दिग्गज ३ गायकवाड़ (मरहठों की जाति विशेष) ४ युद्ध की क्रिया में चतुर ॥ ३७ ॥ ५ भालों के समूह से आकाश ढकगया ६ उज्जैन ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ७ यहां ८ मेल स्वीकार ९ कराया ॥ ४० ॥ १० विदा किये ११ उम्मेदसिंह को १२ शीघ्र १३ दान नामक चारण ने ॥ ४१ ॥ १४ पत्र १५ प्रीति पूर्वक

सक पंच अंबर अठ इक१८०५ रु चैत उज्जल द्वादसी१२ ॥
रविवारु नाड़िय पिंगला२ जलतत्वपैं जब उल्लसी ॥ ४२ ॥
क्रम पंच दक्खिन अंघ्रिकें[1] तब दै रु भूपति हैं[2] चढ्यो ॥
तजि नैर मधुकरदुग्गकौं धक धारि बुंदियपैं बढ्यो ॥
तहँ पोदकी[3] तजि बाम दक्खिन ओर सुव्वहि उत्तरी ॥
करि उंद्ध[4] सुंडि रु कन्नपैं धरि गज्जि सम्मुह भो करी[5] ४३
दिस सांत[6] बुल्लिय फिक्करी[7] अनुकूल पिंगलिका[8] भई ॥
इम सौंन[9] बुंदिय लैनके वनि प्रीति भूपतिकौं दई ॥
तब लंघि चम्मलि संभरी[10] दरकुंच उत्तर हंकये ॥
सुनि आत तात[11] मलार१ खंडुव पुत्र१ सम्मुह ह्वै गये । ४४
त्रय३ कोस पैं मिलि जाय प्रीति बढाय सम्मलि लै मुरे ॥
श्रियमंतहू मिलिकैं प्रबोधियें[12] बंब जित्तनके धुरे ॥
सुत[13] साह अहमदसाहनैं इत जंग सत्रुनतैं रच्यो ॥
हरिमंथ[14] आष्ट्रके[15] रौंव[16] त्यौं तरकाव तोपनको मच्यो ॥ ४५ ॥
अतलादि भू पुट धुज्जिकैं फनमाल पन्नग चंपयो ॥
अति चंड गोलन तापतैं ब्रह्मंड झोलन कंपयो ॥
रु बजीर संगर[17] होत माँहिं निमाज कारन उत्तर्यो ॥
मंनसूर[18] तोपन स्वामिनैं[19] इहँ स्वामिद्रोहैं रजू कर्यो ॥ ४६ ॥

॥४२॥ १ दाहिने चरण के २ घोड़े पर ॥४३॥ ३ शकुनचिड़ी (रूपारेल) ४ सुंड को ऊंची करके कान पर धरकर ५ हाथी गर्जना करके सामने हुआ ॥४३॥ ६ शान्त दिशा में ७ फेकरी (स्यालनी) बोली (इसके बोलने के शकुनों का यह क्रम है कि जिस वार में बोले उस वार को पूर्व दिशा में रखकर दिशा दिशा प्रति उलटे क्रम वार से रखते जावैं अर्थात् पूर्व से आग्नि, दक्षिण आदि सो जिस वार में जिस दिशा में बोलैं वहां क्रूर वार का क्रूर फल और शान्त वार का शान्त फल मानते हैं ८ कोचर पक्षी ९ शकुन १० उम्मेदसिंह ११ पिता मल्लार और पुत्र खंडू ॥ ४४ ॥ १२ समझाया १३ बादशाह का पुत्र १४ चनों का १५ भाड़ में तड़कने का १६ शब्द होवै तैसे तोपों का शब्द हुआ ॥ ४५ ॥ १७ युद्ध होते समय —१८ मनसूरअली १९ तोपों के पति (दरोगे) ने ॥४६॥

बंल[1] तोप स्वीय वजीरकौं हनि अप्प[2] तंत्थ बजीरभो ॥
सुतसाह अहमदसाह यह लखि कौंल[3] चिंत रु धीरभो ॥
कहि माफ आगंसहै[4] परंतु अबैं इरानिनकौं हनौं ॥
सुनि यौं सहादत पुत्तहू[5] मनसूर जंग रच्यो घनौं ॥ ४७ ॥
बहु बार तोपन मार दै रु इरानको दल जित्तयो ॥
इतही महानद[6] लंघि अहमदसाह भीरु भज्यो गयो ॥
सुतसाह अहमदसाह तब जयपाय दिल्लिय संचर्‌यो ॥
मनसूरकौंहि वजीर दिल्लिय ईसहू तबही करयो ॥ ४८ ॥
पुनि साह चिंतिय जै भयो मरहट्ठ क्यौं अब बुल्लनैं ॥
पठवाय कग्गर[8] मंडि अक्खिय नाँ[9] बे आवहु इयाँ घनैं ॥
मिलनौंहि होय हजूर तो दल तुच्छ लै यँहँ आवनौं ॥
नहितो लगे तुमरे ति[10] दम्महि लै रु दक्खिन जावनौं ॥ ४९ ॥
श्रियमंत कग्गर बंचि जो दल तुच्छकी नहिं स्वीकरी ॥
स्वय सेन दम्म लगे ति[11] लै करि देस जावन अद्दरी ॥
तब साहनैं दुवबीस लक्ख २२०००००लगे ति रुप्पय मुक्कले ॥
दलमाँहिं नन्ह निदेसँहू[12] तब देस चालनके चले ॥ ५० ॥
तँहँ नन्ह हिंतुं[13] मलार अक्खिय वत्त बुंदिय भुल्लई ॥
अरु भुल्लि माधवकौं कहा तुम सौंक जैपुरतैं लई ॥
सुनतैंहि ईस्वरिसिंहपैं तब नन्ह कँग्गर[14] मुक्कल्यो ॥
तुमनैं कहा सिंसु[15] जानि पुव्व कुमार खंडुवकौं छल्यो ॥५१ ॥
सुनि पंत्त[16] ईश्वरिसिंह बुज्झि रु पुव्व वत्त सु स्वीकरी ।'
रु लिखी भई पहिलै सुही तबतैंहि है मन अद्दरी ॥

---

१ तोपों के बल से अपने वजीर को मारकर २ तहां आप वजीर होगया. समय ३ विचार कर ४ अपराध ५ सहादतखां का पुत्र ॥ ४७ ॥ ६ बडी नदी को ७ गया ॥ ४८ ॥ ८ पत्र ९ अब १० जितने रुपये लगे हों वे लेकर ॥ ४९ ॥ ११ ते (वे) १२ आज्ञा ॥ ५० ॥ १३ से १४ पत्र १५ बालक जान कर पहिले ॥ ५१ ॥ १६ पत्र

जु उमेद१ माधव१सौं कही सु सही भलैं तुम कीजिये ॥
इरि सौंह[1] है मुहि अप्प मन्नि रु कुंच दक्खिन कीजिये॥५२॥
सुनतैंहि यह तब नन्ह आपस कुंच दुंदुभिको दयो ॥
रु कही नरेसहिँ हंकि मंडहु आन देस मिल्यो गयो ॥
सु कही मलारहु भूप संभर भुम्मि चालतही लहो ॥
यह व्है न तो हमसंगहैं जयनैर जित्तन उम्महो[2] ॥ ५३ ॥
सुहि मन्नि मंत्र उमेद १ माधव १नन्ह सम्मिलिही चढे ॥
दल भार ओकन ओक[3] ओकन लोक सोकनमैं बढे ॥
कुसलेसनाम रूलायके पति खास हैं[4] पठयो तवै ॥
पति जानि माधवकौं रु अक्खिय अप्पकै बसहैं सबै ॥ ५४॥
सु लयो रु सत्थहि सर्ब हंकिय लंघि जैपुर गाम के ॥
लखि लक्ख १००००० दक्खिन सेनकौं अरि ओदके ढिग धामके॥
इलके प्रयान अमान हत्थिन दान पॅद्धति सिंचई ॥
बढि फैन गैलन भीति सैलन[6] रीति कॅंदुककी लई[7] ॥ ५५ ॥
दल भेट मारुत फेटलै प्रतिमग्ग[8] हारुत[9] भग्गयो ॥
बन जंतु घोरन ओर ओरन प्रान छोरन लग्गयो ॥
करि-यौं प्रयान मिलान आनि बनासके तटपैं कर्यो ॥
तह भूप डेरन आय हुलकर नेह नूतन[11] बिस्तर्यो ॥ ५६ ॥
सिरुपाव दोय महर्घ[12] ओ हय खास दोय२ निवेदये ॥
पुनि भूप परिकर[13] सर्वकौं सिरुपाव उच्च दये नये ॥
रु कही चलो हम सत्य संध[14] स्वदेस आनि बिधारिहैं ॥
न बनैं जु तोहु समर्थहैं ततकाल जैपुर मारिहैं ॥ ५७ ॥
पुनि कुचकैं कढि नैर बाबिर्य[15] सीम क्षुदिय संचरे ॥

१ईश्वर के सौगन॥५२॥२उम्मेदसिंह से कहा॥५३॥३घर घर में४घोड़ा॥५४॥५मस्त हाथियों के डाण से मार्ग सींचे गये६पर्वतों ने ७गेंद की॥५५॥सेना की फेट से ८पवन ९ हाहाकार शब्द करके भगा १० मुकाम ११ नवीन ॥ ५६ ॥ १२ महँगे (बहुमूल्य) १३ सब परगह को१४सत्य प्रतिज्ञा वाले हैं सो ॥ ५७ ॥ १५ नगर का

मरहट्ठ लुट्टन इंद्रगढ़ लखि[1] श्रील पूरब त्यौं टरे ॥
दरसाल[2] दम्म हजार सोलह१६००० बज्जधर[3]गढपैं करे ॥
ति चढे हि हायनं[4] पंच५तैं नहिं देव[5] दक्खिनके भरे ॥ ५८ ॥
त[6]स्समात बाँसव[7]दुग्गकौं मरहट्ठ लुट्टन उम्महे ॥
सु उमेद१ माधव१ जानि द्वै२ तिन्ह अड्ड आनि खरेरहे ॥
श्रियमंत आन दई रु[8] अक्खिय कोल दम्म दिवायहैं ॥
अरु नाँहिं स्वीकृत एह तो हनिकैं हमैं दल[9] जायहैं ॥ ५९ ॥
इम रोकि सर्बन दोहु२ सत्थहि आनि डेरन पुग्गये ॥
तँहँ दम्म बासवदुग्गके दसही हजार१०००० चढे दये ॥
रु कराय माफ हजार सत्तरि७०००० भूप ताहि बचायकैं ॥
लक्खैरिका पुर सीम किन्न मुकाम सर्बन आयकैं ॥६० ॥
तबही तहाँ सन बाघ संतुव स्वीय बीर मलारनैं ॥
पठयो वहै पुर लैन भूपति आन फेरन कारनैं ॥
तँहँ कुम्म हाकिम है तिन्हैं जुरि जंग संतुवतैं करयो ॥
सुरि बाघ संतुव जो उँदंत[10] मलारतैं सब उच्चरयो ॥ ६१ ॥
सुनतैंहि हुलकर खिज्जि बुंदिय भूपतैं कहि मुक्कली ॥
नहिं सिक्ख सुभटन देहु तुम हम सैन जैपुरपैं हली ॥
यह अक्खिकैं श्रियमंतसौं द्रुत सिक्ख संगरकौं लई ॥
सुनि निंदि[11] कुम्महिं नन्हहू खिजि सिक्ख जैपुरपैं दई।६२।
अरु दैन सत्य बिसास नन्ह उमेद डेरनपैं गयो ॥
बिसवास भूपहि प्रीति पूरब बैन मंजुल[12] बुल्लयो ॥
बँल[13] बीर बीस हजार२००००तैं तुम संग एह मलारहे ॥

नाम है १ धनवान् लोग पूर्व दिशा को चलेगये २प्रतिवर्ष ३ इन्द्रगढ पर ४पांच वर्ष से ५ देवसिंह ने ॥ ५८ ॥ ६ इस कारण ७ इन्द्रगढ को ८ रुपये ९ सेना हमको मारकर जावेगी ॥ ५९ ॥ १० वृत्तान्त (हाल) ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ११ ईश्वरीसिंह की निन्दा करके ॥ ६२ ॥ १२ मनोहर १३ सेना

सुहि लै रु अप्पहिं भुम्मि अप्पहिं कुम्म कट्ठ कुठारहै ।६३।
यह अक्खि दै गज बाजि भूपहिं नन्ह इंकनकों भयो ॥
रु मलारहू तिय गोतमा जुत पुत्र दक्खिन भेजयो ॥
यह गोतमा मरहट्ठ पुंगव भोजराज सुता हुती ॥
जामातकों सुत हीन जिहिं सब द्रव्य दै रु रची नुती ॥६४॥
तब गोतमा सु मलार ब्याहिय जो पतिव्रतमैं रही ॥
तिहिं तास चूरिय चूनरी बल तैं इती प्रभुता लही ॥
सु पतिव्रता१ अरु पुत्र खंडुव१ नन्ह संगहि मुक्कले ॥
लै हजार असी८००००चमू चढि नन्ह दक्खिनकों चले॥६५॥
तब तीन३ हड्ड१ मलार१ माधव१ नन्हके पहुँचानकों ॥
हुव संग पट्टनि चम्मली तट दिन्न आनि मिलानकों ॥
तहँ नन्ह केसवदास खत्रिय बुल्लि कुंम्म अमात्यकों ॥
तस हत्थ हुलक्कर हत्थ दै कहि याहि ठिल्लि न ब्रात्यकों।६६।
यह सूद्र पै इहिं बुद्धि बिप्रन बुद्धि दैन समत्थहै ॥
अरु तूहु पंज्ज ततोपि यासन प्रीतिलायक अत्थहै ॥
सुनि यों मलारहु अक्खई हम स्वामि उक्त सचेतहैं ॥
इहिं भूप पै तिहिं कुम्म दैन कही सु मूढ न देतहैं ॥ ६७ ॥
तसमात तास अमात्य जो यह कुम्म सम्मति भिन्नहै ॥
अबही ततो पतिके कहैं हम लाय छत्तिय लिन्नहै ॥
परं पत्र यासनं लेखि देहु समस्त बुंदिय छोरिवे ॥

१आपको भूमि देवेगा२यह मलार कछवाहे रूपी काष्ठ पर कुठार है॥६३॥३मलार की स्त्री का नाम है ४उत्तम मरहठे ५जमाई को, जिस भोज पुत्रहीन ने ६स्तुति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ७ कछवाहे ईश्वरीसिंह के सचिव को बुलाकर ८ इस संस्कार हीन (शूद्र) को ठेलना (हटाना) मत अर्थात् दूर मत करना ॥ ६६ ॥९यह (केशवदास खत्री) शूद्र है परन्तु यह१०ब्राह्मणों को बुद्धि देने में११समर्थ है१२तू भी शूद्र है१३इस कारण भी१४इससे १५स्वामी के कहने में १६ परंतु इसका राजा १७ईश्वरीसिंह ने॥६७॥ १८इस कारण १९परंतु २०इससे

सुनि एह केसवदास लिखि दिय नेह नूतन जोरिबे ॥ ६८ ॥
सु मलार भूपहिं दिन्न ओ सब नन्हकों पहुँचायकैं ॥
लक्खैरि पत्तनहीं बहोरि मुकाम मंडिय आयकैं ॥
लिखि दल्ल[1] उदैपुर[1] जोधपुर[2] कोटा[3]हु हुलकर प्रेषये[2] ॥
सब सेन भेजहु अत्थ छिन्नहिं श्रील[3] जैपुर देसये ॥ ६९ ॥
लक्खैरिका बिच रक्खि निज भट आन भूपति मंडई ॥
करि यों चढे सब कुंच कैं खुरघात छोनियँ[4] खंडई ॥
मग माँहिं बुंदिय ग्राम आयउ तेहु भूपतिके करे ॥
दरकुंच सज्जित सेन कैं जयनैर सम्मुह उप्परे ॥ ७० ॥
कइलासलों यह बत्त[5]है सिवहू जरद्दवँ आरुहे ॥
डमरूकं[6] डाकिनि लै भजी सुनि प्रेत हंकिय सामुहे ॥
कलिकँार[7] मोदित ह्वै हसे किलकारि[8] जुग्गिनि उच्छली ॥
गहकाय गिद्धनि गोदकों चहकाय चिल्हनिहू चली ॥ ७१ ॥
डगमग्गि सैलन सानुतैं[9] बनजंतु गैलँन[10] बिक्खरैं ॥
फनमाल पैन्नग[11] पट्टरी सन नच्चि भू नट उच्छरैं ॥
लहरैं हिंडोरन भोक निंदत नीर सिंधुन सेतु भै[12] ॥
बिथुरैं मवासन आसपासन बास नासन हेतु भै ॥ ७२ ॥
रु कबंध रक्खस[13] नारि सन्निभ[14] नारि कच्छपकी धसी ॥
[illegible]लिका अगत्थियँ[15]की फटैं तिम दंतुली किरिकी[16] नसी ॥

॥ ६८ ॥ १ पत्र २ भेजे ३ धनवान् ॥ ६९ ॥ ४ भूमि खुदी ॥ ७० ॥ ५ [illegible]ल पर चढे ६ वाद्य विशेष ७ युद्ध करानेवाला (नारद) ८ [illegible]सन्नता की [illegible]ली बोलकर ॥ ७१ ॥ ९ हिलतेहुए पर्वतों के शिखरों से बनजंतु १० मार्गों [illegible] में बिखरते हैं ११ शेषनाग की फणमाला रूपी नट नाचकर उछलता है, हिंडो[illegible]रे के झोकों की निन्दा करती हुई समुद्र की लहरें किनारों को १२ भय करती [illegible]है, आसपास के मेवासों (चोर और लुटेरों के घरों) में वा[illegible]न के नाश कर[illegible] का भय होता है ॥ ७२ ॥ और जैसे रामचंद्र के युद्ध में कबं[illegible] नामक १३ [illegible] राक्षस की गरदन शरीर में घुस गई थी तिसके १४ सदृश कमठ [illegible] शरीर में घुसगई १५ अगस्त्य पुष्प की कली फटै तैसे १६ वराह की

भय बग्ग कंपित छाग ज्यौं दिगनाग त्यौं मद मोचये ॥
भटभर्ग भासत आत्मभू[3] झट सर्गनासत[4] सोचये ॥ ७३ ॥
खुर धूलि धुंधरि नाँहिं प्राचिय[5] त्यौं अवाचिय[6] सुज्झई ॥
तिमही प्रतीचिय[7] औ उदीचिय[8] भान बीचिय[9] उज्झई ॥
पवमान[10] थक्किय अक्क[11] ढक्किय चक्क[12] चक्किय[13] बिच्छुरे ॥
पहुमी मुरक्किय सत्त७ खंड फिराव चक्किय त्यौं फुरे ॥ ७४ ॥
सुरलोक कुक्किय रास[14] रुक्किय तान चुक्किय अच्छरी ॥
जिय भीरु[15] मुक्किय क्यौं बचैं सब नीर सुक्किय मच्छरी[16] ॥
इम सेन हंकत सत्रु संकत केस कंकतके[17] भये ॥
प्रतिभा[18] झमंकत बाजि डंकत भुम्मि ढंकत हल्लये ॥ ७५ ॥
भट कुंकुमी[19] करि चैल[20]के प्रभु गैल जित्तन उम्महैं ॥
कति बाजि[21]राजन झारि ताजन[22] भाजि आजिनकौं[23] चहैं ॥
कति उच्चरैं सिर कुम्मको[24] धनु[25] खेत्र लोष्ट[26] बिधायहैं[27] ॥

दंतुली फटी, जैसे १ सिंह के भय से २ बकरी कंपै तैसे दिशाओं के हस्ति धृजकर मद छोडने लगे और वीरों का तेज देखकर ३ ब्रह्मा ४ संसार नाश का शीघ्र सोच (चिन्ता) करने लगे ॥ ७३ ॥ घोड़ों के खुरों की धूल धुंध होकर ५ पूर्व ६ दक्षिण ७ पश्चिम और ८ उत्तर दिशा नहीं दी और इन दिशाओं ने सूर्य की ९ किरणों को छोड दी तथा सूर्य की किर ने इन दिशाओं को छोड दी १० पवन थककर ११ सूर्य छिप गया और चकवा चकवी बिछुड़ गये, भूमि के सातों खंड मुडकर १३ धरती के सम फिरने लगे ॥ ७४ ॥ स्वर्ग लोक में कूक होकर १४ नृत्य रुक गया और अप्स राएं गाना भूल गईं, जिसप्रकार सम्पूर्ण जल सूख जाने पर १६ मच्छी नहीं बच सकती इसप्रकार १५ कायरों ने जीव छोडे, इसप्रकार सेना के चलने से शत्रु डरकर जैसे १७ कांगसी (कंघी) में केस होवैं तैसे होगये उस सेना के वीर १८ बुद्धि को चमकाते हुए, घोड़ों को कुदाते हुए और भू को ढकते हुए चले ॥ ७५ ॥ कितने ही वीर १९ केसरिया २० वस्त्र करके स्वामि के सन्मुख शत्रुओं को जीतने को उत्साह युक्त हुए, कितने ही २१ घोड़ों को २२ चाबक मारकर दौड़कर २३ युद्ध चाहते हैं, कितने ही कहते हैं कि [illegible] में २४ कछवाहे (ईश्वरीसिंह) के मस्तक को २५ धनुष से २६ ढकल ([illegible] के ढेले) के समान २७ करेंगे और कितने ही कहते हैं कि युद्ध रूपी भ्रमर ([illegible]सि) में जय-

कति यों कहैं रन मौरमैं जयनैर नाव भ्रमायहैं ॥ ७६ ॥
कहुँ उच्चरैं मम बैल ईश्वरिसिंह पिट्ठि अरोहिहैं ॥
कहुँ सिंहको न कहंत ओगुन चित्रकारनकोहि हैं ॥
कहुँ सिंहनी जयसिंहकीहु भज्यो तरच्छुहि यों बदैं ॥
कहुँ यों पलायन मांसदै बल जंत्र रुक्कहिँ दुर्मदैं ॥ ७७ ॥
इम बीर बुल्लत बीर खुल्लत सेन पिल्लत संचरे ॥
उनियार नागरचारमैं गलबै नदीतट उत्तरे ॥
दखिनीन तँहँ सेन जे नरूकन गाम ते सब लुट्टये ॥
तिनमाँहिं फूलहता बच्यो नृपके प्रताप न व्हाँ गये ॥ ७८ ॥
परिन्यों नरेस अमात्य हरजन हड्ड पुत्त दलेलव्हाँ ॥
तसमात फूलहता बच्यो नृप कानि रक्खिय मेलव्हाँ ॥
बनहटा जाय मुकाम किय पुनि कुंच करि उनियारतैं ॥
राजाउतनके ग्राम लुट्टत बीर हंकि बिधारितैं ॥ ७९ ॥
कति दंडि छंडत मान खंडत आन मंडत अप्पनी ॥
टोडा१ रु मालपुरा२रु टौंक३ छुराय माधव कैयो धनी ॥
यह जानि ईश्वरिसिंह अक्खिय जे दये ति हये सबैं ॥
सुनि यों मलार कह्याय पच्छिय नाँ बिसास रह्यो अबैं ८०

पुर रूपी नाव को भ्रमावेंगे ॥ ७६ ॥ कोई कहता है कि ईश्वरीसिंह को मेरे बैल की पीठ पर १ चढाऊंगा, कहीं पर कहते हैं चित्राम का सिंह कुछ पराक्रम नहीं करता यह सिंह का दोष नहीं किन्तु यह दोष २ चितेरे का ही है अर्थात् ईश्वरीसिंह केवल चित्राम का सिंह है, कहीं पर कहते हैं कि जयसिंह की सिंहनी ने ३ घघेरे (दोगले) सिंह का ही सेवन किया है, कहीं पर कहते हैं कि ४ मांसभोजियों को मांस देकर ५ सेना रूपी यंत्र से उस (ईश्वरीसिंह) के दुर्मद को रोकेंगे ॥ ७७ ॥ इसप्रकार बोलते हुए और ६ वीर रस को खोलते हुए सेना को बढाकर वीर ७चले ८ नागरचाल देश में उणियारा नामक नगर में ९ तहां से दक्षिणियों ने॥७८॥१० उम्मेदसिंह की अदब से ॥७९॥ ११ माधवसिंह को वहां का स्वामी (मालिक) किया १२ चार परगने माधवसिंह को और बुंदी का राज्य उम्मेदसिंह को पहिले दिये थे वे अब भी दिये

तब कुम्म *कग्गर मुक्कके चहुवान भूपहिँ फोरिबे ॥
ति उमेद बंचि रु नाँ मुर्यो पटु जंग दुद्धर जोरिबे ॥
पुनि कुंच मंडि रु पिप्पलूपुर जाय बाहिनि उत्तरी ॥
उमराव तीन३न आयकैं तँहँ भीर माधव की करी ॥८१॥
जगतेस१ लंबपुरेस ज्ञान२ तथा सिवापुरको धनी ॥
पुनि त्यौंहि जालम३ डोढरीपति उल्लस्यो बढती अनी ॥
खंगार बंसिय कुंम्मके उमराव बंधव तीन३ये ॥
असवार पंद्रहसै१५०० लियँ मिलि तत्थ माधवके भये ।८२।
पुनि पिप्पलू सन कुच्चकैं बढि सैन जैपुर त्यौं सरी ॥
तँहँ बोधिपादपके तरैं इक घात संभरतैं टरी ॥
तस छिन्न कल्प हुती जु साख सु तुट्टि भूपतिपैं चली ॥
लखि ताहि हट्ठनको सिरोमनि बाँजि फेंकि कढयोबली ८३
द्विज दान भोजन ता निमित्त अनेक आदरतैं करे ॥
सब सेन सम्मलि हंकिकैं पुनि जाय फागिय उत्तरे ॥
चढिकैं तहाँ सन दूसरेदिन दक्खि जैपुरकी मही ॥
पुर नाम लावलदान जाय मुकाम मंडिय वेगही ॥ ८४ ॥
रहतैं घनैं दिन बित्तये तँहँ मंत्र जित्तनको भयो ॥
दल भीर च्यारि हजार४००० तत्थहि रानको द्रुत पुग्गयो ॥
तिहिँ माँहिं सालम रानबंसिय संभु१ भारत भ्रातहो ॥
रु भवानिदास प्रधान पुत्र गुलाब२ कायथ जातहो ॥ ८५ ॥
पुनि मेघ३ बेघम नाह भूप उमेद४ साहिपुरा पती ॥
जसवंत५ देवगढेस त्यौं बिथुरात आहव उन्नती ॥
इम आदि लै दल रानके भट भीर हुलकरकी भये ॥
पुनि द्वैहजार२००० कबंधके भट आनि तत्थहि पुग्गये ॥८६॥

---

* पत्र ॥ ८१ ॥ १ लांवा नामक पुर का पति २ ज्ञानसिंह ३ खंगारोत ४ ईश्वरीसिंह के ॥ ८२ ॥ ५ पीपल के वृक्ष नीचे ६ तूटी हुई ७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८ मेघसिंह ९ युद्ध में १० जोधपुर के राजा

तिनमाँहिं मालिक दूदहर भैर[1] सेर[2]१ मेरतिया जथा ॥
मनरूप२सचिव रु ऊदहर कल्ल्यान१ सेर४ उभै२ तथा ।
तँहँ अप्प[3] अप्प बिथारि आयस[4] ढारि डेरन उत्तरे ॥
इम पिक्खि[5] सूरन आनि हूरन पुब्बही मनतैं बरे ॥ ८७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ राणाबुन्दीसत्कारदेश्यकोटासत्कारोररीकरणपुनःश्रीद्वारमहारावसहितमिलनाऽनन्तरजगत्सिंह १ दुर्जनशल्ल २ ढिङ्कोलानिवसथशिविरन्यसनखण्डू १ पेतभूपद्वय २।३ रावराट्शिविराऽऽगमनतदनुखण्डू १ माधव १ मैत्रीविधानाऽखिलसैन्यनिर्याणखारीनदीतटमपतनतदभिमुखकूर्म्मराजागमनश्रुतसामखण्डूकोपकांक्षणातत्सम्मतिसर्वसन्नद्धीभवनकूर्म्मराजाऽऽगामिकार्तिकसानुजविभाग १ बुन्दीत्यजनलिखितहुल्लकरकरदापननिन्दितमहारावश्रीषोढसेनाऽन्तरातृणशकटलुण्टनराणाचुण्डाउत्तमेघसिंह १ वणिक्टेकचन्द्र २ बुन्दी १ टोडा २ प्रेषणरुष्टखण्डू १ माधवसिंह २ रामपुरप्रतिगमनज्येष्ठजायसिंहि

॥ ८६ ॥ १ भड़ (उमराव) २सेरसिंह ३ अपना ४हुक्म देकर ५इसप्रकार वीरों को देखकर युद्ध होने से पहिले ही अप्सराओं ने आकर मन से उन को वरे ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा का बुन्दी के सत्कार के पराकर कोटा का सत्कार स्वीकार करना, जिस पीछे नाथद्वारे में महाराव से मिलने के अनंतर राणा जगत्सिंह और महाराव दुर्जनशाल का ढींकोला नामक ग्राम में डेरा करना १ खंडू सहित दोनों राजाओं का रावराजा के डेरे पर आना और जिस पीछे खंडू और माधवसिंह का मित्र होना २ सब सेना का वहां से निकलकर खारी नदी के किनारे मुकाम करना और उसके सम्मुख कछवाहों के राजा का आना ३मिलाप होना सुनकर कोप की इच्छावाले खंडू की सलाह से सब का सज्जित होना४राजा ईश्वरीसिंह का आगे आनेवाले कार्तिक मास में अपने छोटे भाई का पंट और बुन्दी छोड़ने का लिखित (तहरीर) हुलकर के हाथ में देना ५ निन्दा युक्त महाराव का उदयपुर की सेना के भीतर घास के गाड़े लूटना ६ राणा का चूँडावत मेघसिंह और वैश्य टेकचंद को बुन्दी और टोडे भेजना ७ क्रोधित खंडू और

जयपुरप्रविशनतन्महारावबुन्दीमार्ग्गणाराणाभूपत्रय३धुंधरीग्रामाऽऽ
गमनहड्डेन्द्रपुरोधोदयारामाऽऽनयनग्रामसगतपुरसम्भरेशसचिवह -
रजनोपयोगिनीशिविकासमर्प्पणतत्स्वामिदेशरणकरणरावराड्द्वि-
तीय २राज्याऽऽत्मजोद्गमनसुभटीकृतसालमिप्रतापसिंहकूर्म्मराजबु-
न्द्यागमनकोटा १ रामपुर २ जयविचारणप्रताप १ दलेल २ सौ-
हार्द्दकरणतदनुजान्नत्यजनप्राप्तयवनेंद्रपत्रेश्वरीसिंहदिल्लीगमनदलेल
सिंहमथुरादेहत्यजनकूर्म्मेशरणस्तंभदुर्ग्गप्रार्थनतदनङ्गीभवनेरानोप.
मानप्रत्यन्तेन्द्राऽहमदशाहयुयुत्सुसपरिकरदिल्लीशकुमाराऽहमदशाहक
रतोयाऽभिमुखनिर्याणसरिच्छतद्रुशिविरसंस्थापनयवनसचिवकूर्मस
बन्धनविचारणतद्भयत्यक्तवाहिनीवैभवसहड्डप्रताप १ खत्रिनाराय-
णदास २प्रद्रुतेश्वरीसिंहस्वपुरसमाविशनप्राप्तदिल्लीशदोर्लिपिपत्रसि-
तारेश्वरसचिवराजनन्होत्तरदिगाऽऽगमनमाधवसिंहतत्सङ्गसाधनजय

माधवसिंह का रामपुरे पीछा जाना और जयसिंह के बड़े पुत्र (ईश्वरीसिंह) का जयपुर में प्रवेश करना ८ उससे महाराव का बुंदी मांगना और राणा सहित तीनों राजाओं का धुंधरी नामक ग्राम में आना ९ उम्मेदसिंह के पुरोहित दयाराम को लाना और सगतपुर नामक ग्राम में उम्मेदसिंह का सचिव हरजन के उपयोगी पालकी देना और उसका स्वामी के देश में युद्ध करना १० रावराजा की दूसरी राणी के पुत्र होना ११ सालमसिंह के पुत्र प्रतापसिंह को उमराव बनाकर राजा ईश्वरीसिंह का बुन्दी आना और कोटा व रामपुरे को जीतने का विचार करना १२ प्रतापसिंह और दलेलसिंह दोनों भाइयों में मित्रता करना और दलेलसिंह का अन्न छोडना १३ जिसपीछे दिल्ली के बादशाह का पत्र आने से ईश्वरीसिंह का दिल्ली जाना दलेलसिंह का मथुरा में शरीर छोडना और ईश्वरीसिंह का रणथंभ नामक गढ मांगना और उसका अस्वीकार होना १४ ईरान [म्लेच्छ देश] के पति अहमदशाह से युद्ध करने की इच्छावाले उसके उपमान परगह सहित दिल्ली के पति के पुत्र अहमदशाह का निकलकर शतद्रू नदी के पास डेरे करना और दिल्ली के वजीर का कछवाहे ईश्वरीसिंह को कैद करने का विचार करना १५ उसके भय से सेना को और वैभव को छोड़कर हाडा प्रतापसिंह और खत्री नारायणदास सहित भागेहुए ईश्वरीसिंह का जयपुर में घुसना १६ दिल्ली के बादशाह के हाथ का लिखा हुआ पत्र पाकर सितारे के पति के सचिव नन्ह का उत्तर दिशा में

पुरजनपदनिवाईनगरदाक्षिणात्यपृतनाप्रपतननन्द १ मल्लार २ वर्णादूत
हूतबुंदीन्द्राऽऽगमनयवनद्वय२ शतद्रुयुद्धभवननालीयंत्राध्यक्षमनसूर
स्वसचिवमारणपरसैन्यपलायनयवनेशमहाराष्ट्रागमवारणाव्ययद्रव्य
द्रम्महाविंशति २२ लक्षप्रेषणातिरस्कृतकूर्म्मराजनन्दप्रस्थानतत्परि-
करेन्द्रगढलुण्ठनविचरणकुपितोम्मेदसिंह १ माधव १ दाक्षिणात्य
वारणानृपदेशाध्यक्षशत्रुरणकरणातन्नन्दबुन्दीन्द्रशिविराऽऽगमनतत्स
मल्लारप्रतिप्रेषणस्वपदंदक्षिणागमनोम्मेदसिंह १ माधवसिंह २
सहायीभूतहुल्लकरोदयपुर १ योधपुर २ कोटा ३ सैन्यसमाऽऽह्वयन
कूर्मजपनदलुण्ठनटोडा १ मालपुर २ टोंक ३ नयनसमाहूतसैन्यत्र
य ३ संमिलनं त्रयोविंशो २३ मयूखः ॥ २३ ॥ ३०४ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नगर लहानौंही सुन्यौं, साह मुहुम्मद नास ॥
सक सर नभ बसु ससि१८०५समा, मेचक सावन मास ।१।

आना १७ उसके साथ माधवसिंह का आना और जयपुर के देश निवाई नाम नगर में दक्षिण की सेना का मुकाम करना और नन्द और मल्लार के पद: से बुलाये हुए बुन्दी के पति का आना १८ दोनों यवनों का शतद्रू नदी पर युद्ध होना और तोपों के अफसर मनसूरअली का अपने वज़ीर को मारना और शत्रु सेना का भागना १९ बादशाह का मरहठों की सेना का आना रोकफर लगेहुए खरच के बाईस लाख रुपये भेजना २० ईश्वरीसिंह का तिरस्कार करके नन्द का गमन करना और उसकी परगह का इन्द्रगढ को लूटने को जाना और क्रोध युक्त उम्मेदसिंह और माधवसिंह का दक्षिणियों को रोकना २१ उम्मेदसिंह के देश के अधिकारियों से शत्रु के युद्ध करने के कारण नन्द का बुन्दी के पति के डेरे पर आना और उसकी सहाय पर मल्लार को भेजना २२ नन्द का दक्षिण में जाना और उम्मेदसिंह माधवसिंह की सहाय पर हुल्लकर का उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना को बुलाना २३ कछवाहे के देश को लूटना और टोडा, मालपुरा और टोंक को प्राप्त करके बुलाई हुई तीनों सेनाओं के शामिल होने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ चार ३०४ मयूख हुए ॥

१ दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना २ कृष्ण पक्ष ॥ १ ॥

ताको सुत बैठो तख्त, अहमदसाह अनूप ॥
वह मनसूरअली सचिव, रक्ख्यो पुनि अघरूप[1] ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिनहि मुकामनतैं मलार निज भट गंगाधर ॥
सहँस अठ८०००दल संग दै रु पठयो जैपुर पर ॥
तिहिं जाय रु जयनैर द्वार अर्ररन[2] तोमर हनि ॥
बुलवाये प्रतिबीरैं[3] भीरु[4] अब सम्मुख होहु भनि ॥
कोटके निकट मालिन कुटिय[5] बाटिन सहित प्रजारे दिय
कूरमहु तुंग[6] प्रासाद चढि यह चरित्र आतुँर[7] लखिय ॥ ३ ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह कटक पिल्ल्यो तिन उप्पर ॥
सेखाउत सिवसिंह बिदित निकस्यो बीरनवर ॥
यह कूरम निज असन[8] बेर दुंदुभि[9] बजवावैं ॥
लक्खन रंक जिमाय प्रीत ओदंन[10] तब पावैं ॥
तिहिं खुल्लि अर्रर[11] जयनैरके संजव[12] बाजि सम्मुह कियउ ॥
मरहट्ठ भटन जयकारैं[13] मिलि दुसह मार खग्गन दियउ ॥ ४ ॥
सीकरपतिको लोह कटक दक्खिन सिर बज्ज्यो ॥
घरिय दोय२ घमसाँन[14] मुकति गंगाधर भज्ज्यो ॥
पंच५ कोस पहुँचाय मुरयो प्रतिमैंग[15] सेखाउत ॥
जाय निवेदिय बिजय नृपहिं बंदीनँ[16] बिरुद स्रुत ॥
अरु कहिय जो न आपुन चढहु तो सत्रुन सैंन[17] हारिहैं ॥
नृप कहिय जैंट्ट[18] अप्पन मिल रु संगर वहुरि सुधारिहैं ॥५॥

१पापी को॥२॥२दरवाजे के किवाड़ों पर भाले मारकर३शत्रुओं को४हे कायरो ५.ब-गीचियों सहित मालियों की झूँपड़ियें जला दीं६ऊँचे महल पर७पीड़ित होकर॥३॥ ८.अपने भोजन करते समय ९ नगारा १० अन्न ११ कपाट खोलकर १२ शीघ्र १३जय करनेवाला॥४॥१४ युद्ध १५ उलटे मार्ग (पीछा) आकर ईश्वरीसिंह को विजय निवेदन किया १६ भाट लोगों से स्तुति को सुनता हुआ १७ से १८ भरतपुर के जाट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पठये यह कहि भरतपुर, कग्गर जट्ट समीप ॥
आयहु सूरजमल्ल इत, मंडत जुद्ध महीप ॥ ६ ॥
गद्दिय ढिग लै बैठिहैं, तुमहिं बीर अति आघ ॥
हिम दक्खिन सिर होहु अब, दुपहर जेठ निदाघ ॥
इम कग्गर द्रुत बंचिकैं, चढिग जट्ट रविमल्ल ॥
जयपत्तन दरकूंच जँव, आयो कटक उफल्ल ॥ ८ ॥
नगर लदानांतैं कियउ, इत सब दलन प्रयान ॥
सावन उज्ज्वल भूत१४ सक, मिलि सर नभ धृति १८०५ मान॥ ९ ॥
इठ पूरब हुलकर रचे, बगरू नगर मुकाम ॥
तँहँ सन लियउ मलार तब, दसहजार१०००० दंमदाम ॥ १० ॥
रानकँटक अंतर गयउ, पुनि दक्खिन दलराय ॥
भिन्न भिन्न सब भट किये, मोदित डेरन जाय ॥
साहिपुरेसहिँ आदिदै, सबहि रान उमराव ॥
इक्क१ इक्क१ हय नजरि करि, धुल्ले लरन बढाव ॥१२॥
तदनंतर मरुधर कटक, पहुँच्यो हुलकर नाथ ॥
अभयसिंह भट बर अखिल, संबोधे हित साथ ॥ १३ ॥
खासा दुव२ हय दुव२ हयी, साखति पुरट समान ॥
चारु करभ सु बिनीत चउ४, पीन रु रँजत पलान ॥ १४ ॥
त्यांहि क्रमेलक दिग्घ तनु, भारवाह पंचास५० ॥

॥ ६ ॥ दक्षिणियों रूपी १ बरफ के ऊपर २ ताप (घाम) अथवा ग्रीष्म ऋतुका ॥ ७ ॥ ३ सूर्यमल्ल ४ शीघ्र ॥ ८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष ॥ ९ ॥ ६ दंड के रुपये ॥ १० ॥ ७ राणा की सेना के भीतर गया देशी प्राकृत के मतानुसार 'ए' और 'ई' को 'इय' और 'औ' और 'व' को 'उव' होता है सो छंद रचना में उपयोगी होने के कारण ग्रहण किया है ८ सेनापति मल्लार ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ जिसपीछे १० सबको ११ निमंत्रित किये ॥ १३ ॥ १२ घोड़ियां १३ सुवर्ण की १४ सुन्दर ऊँट १५ श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए १६ पुष्ट १७ चांदी के ॥ १४ ॥ १८ बड़े शरीरवाले ऊँट १९ भारबरदारी के

मरुपति एते५८ मुक्कले, प्रिय सखं१ हुलकर पास ॥१५॥
ते सब अत्थ निवेदये, सेरसिंह१ मनरूप२ ॥
इक१ इक हय पुनि अप्पनें, अप्पे भेट अनूप ॥ १६ ॥
तिनहि सु३कामन पंचसत५००, कोटाके असवार ॥
आये सम्महि आँहुरन, चिंतत विजय विचार ॥ १७ ॥
अखयराम१ कायत्थ अरु, नगर नागदह नाथ ॥
माधानी४ मोहन कुलज, जोधर२ मुक्ख दल साथ ॥ १८ ॥
तिनहूको सनमान किय, हुलकर डेरन जाय ॥
इक१ इक घोटक५ अप्पये, प्रचुर६ प्रीति उन पाय ॥ १९ ॥

॥ रुचिरा ॥

तहँ माधव इक कपट बिचारिय अग्रज७ परिकर फोरनकों ॥
कन्ह१ वकील बहुरि गोगाउत२ मिलि कूर्म८ मन मोरनकों ॥
प्रतिउत्तर९ समुझै तिम कंग्गर जैपुर सचिवन नाम१० रचे ॥
दे चरं११ हत्थ कहिय अग्रज चर१२ इनहिं लखैं तब मोदमचे१३ ॥ २० ॥
यहसुनि चर दल लहि जैपुर गंत१४ जानि परायनं हत्थ परचो ॥
ईश्वरिसिंह हु लखि तिन पत्रन ठहै अति आकुल सोक करचो ॥
जिन अभिधान१५ लिखे उन पत्रन तिन प्रति अक्खिय तुमहु पढो ॥
हरगोविंद प्रमुख१६ सुनि लुल्लिय उन छल किय तुम लरन चढो॥२१॥
ईश्वरिसिंह स सुनि गहि मोन रु जट्ट सहित दलौं१७ लरन सजे ॥

१सखा (मित्र)॥१५॥२यहां निजर किये॥१६॥३युद्ध करने को॥१७॥४माधाणिसंघात हाडा॥ १८ ॥ ५ घोड़ा ६ बहुत प्रीति पाकर ॥ १९॥७बड़े भाई (ईश्वरीसिंह की परगह को फोड़ने के लिये माधवसिंह ने एक कपट रचा ८ कछवाहों का मन मोड़ने के लिये ९ उनके पहिले के भेजे हुए पत्रों के उत्तर समझे जावैं ऐसे जयपुर के सचिवों के नाम१०पत्र रचे ११ हलकारे के हाथ १२ ईश्वरीसिंह का नौकर देख लेवै तब हर्ष होवै ॥ २० ॥ १३ गया १४ पैलों के हाथ में १५ जिन के नाम १६ आदि ॥ २१ ॥ भरतपुर के जाट सहित लड़ने को १७ सेना सजी

हेस[1] हयन वारन गन ब्रुंहित[2] बंबक[3] संबंक[4] बहुल बजैं ॥
इत वगरव बुधसिंह सुवन नृप संमुद[5] कबंधन[6] सिविर गयो ॥
कारव मुदित मिले नति पूरव घोटक इक१इक१ भेट भयो ॥ २२ ॥
इत पंडित पहुँच्यो गंगाधर पुनि पुर अँररन[7] सेल हनैं ॥
पुरजन पकरि सहर[8] बहिरागत बिदित बिडारिय मुंडि घनैं ॥
ईस्वरिसिंह सु सुनि सज्जित करि तीस सहँस ३०००० निज क-
टक चल्यो ॥
संगहि जट्ट अधिप रविमल्लहु[9] बाहिनि गाहिनि[10] हंकि बल्यो ॥२३॥
सक सर नभ बसु ससि १८०५ सम्मित सँम[11] भद्द असित गत दो-
जिर[12] दिनाँ ॥
किरि रद[12] तुट्टि छुट्टि सत्त रु नृप बैतुमति[13] कुट्टिय समय बिनाँ ॥
हाक प्रचुर[14] दिस दिस प्रतिहारन हयन हजारन[15] जूहजुरे ॥
असह[16] अचानक अनउपमानक घन रव[17] आनक निकर[18] घुरे ॥२४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ लदानापुरसन्निहितशिविरसमस्तसैन्यदिल्लीशशाहमुहम्मदमरणश्रवणशूरसचिवतत्कुमाराऽहमदशाहयवनेन्द्रीभवनमल्लाराष्टसहस्र८०००सैन्यसहितसेनापतिगङ्गाधरजयपुरप्रेषणतत्तोरणाऽररतोमरप्रहारणावाह्याऽऽर

१घोड़ों का हींसना २हाथियों के समूह की गर्जना ३ नगारे और ४ताले बहुत बजे ५ हर्ष सहित ६ राठोड़ों के डेरे गया ॥ २२ ॥ ७ किवाड़ों पर भाले मारे ८ शहर से बाहिर आयेहुए पुर के मनुष्यों को पकड़ कर प्रसिद्ध मुंडन कराके निकाल दिये ९ सूर्यमल्ल १० शत्रुओं को मर्दन करनेवाली सेना को लेकर ॥२३॥११समा (वर्ष) पराक्रम छूट कर१२वराह के दंत तूटे १३नृपि द्वारपालों की १४ बहुत हाक १५ हजारों घोड़ों के समूह जुड़े नहीं सहाजावे ऐसा१६उपमान रहित अचानक१७मेघ की गर्जना के समान नगारों का१८समूह बजा ॥ २४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, लदाना नगर में सब सेना का डेरा करके दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना सुनना और शूर व सचिवों का उस के कुमर अहमदशाह को बादशाह करना १ मल्लार का आठ हजार सेना सहित सेनापति गंगाधर को जयपुर भेजना और उस का

मादिप्रज्वालनजायसिंहितत्सहायाऽर्थस्ववंशीयसेखाउतशिवसिंहनि
स्सारणातत्तुमुलरणागङ्गाधरपलायनसेखाउत्तप्रतिगमनस्वयंनिष्क्रस-
नौचितनिगदनकूर्म्मराजभरतपुरपत्रप्रेषणातदधीशजट्टेन्द्रसूर्यमल्ला-
ऽऽनयनगद्दिकास्पृक्कृतदुपवेशनस्वीकरणाविदितवर्णादूतसूर्यमल्लजय
पुरागमनसचमूमल्लार १ बुन्दीन्द्र २ माधवो ३ दयपुर १ योधपुर २
कोटा ३ सैन्यपगरूपुरप्रपतनतद्दराडद्रव्योद्धरणाहुलकरसर्व्वसार्थसै-
न्यमुख्यसम्मननमित्रमरुराजप्रेषितहयकरभादिद्रव्यमल्लाराङ्गीकर-
णासूतसिद्धभविष्यस्वागतोचितकोटाकटकाऽऽगमनमाधवसिंहप्रति-
बचनव्यंजककौहक्यपत्रजयपुरप्रेदनप्रेषणातत्सद्दूतपरप्रत्यक्षीभव-
ज्जायसिंहिवक्षकाविवेचनमोहनहरगोविन्दादिपारवाञ्छक्यप्रकटीकरण
समानकालाऽधिकरणाहड्डेन्द्र १ गङ्गाधरसंगतमरुसैन्यशिविर २ जय
पुरा२ऽयाऽऽगमहयोपायनपुरकवाटध्वंसननागरमुराडनाक्रन्दन३प्रहरणा

नगर के द्वार के कपाटों पर भाला मारना २ बाहर के बाग आदि को जलाना और जयसिंह के पुत्र का उनकी सहाय के अर्थ अपने वंशवाले शेखावत शिवसिंह को भेजना ३ उसके भयंकर युद्ध से गंगाधर का भागना और शेखावत का पीछे आकर ईश्वरीसिंह के बाहर निकलने की उचित वार्ता कहना ४ ईश्वरीसिंह का भरतपुर पत्र भेजना और वहां के पति जाटों के राजा सूर्यमल्ल को बुलाना ५ गादी को छूतेहुए बैठने के स्वीकार के पत्र को जानकर सूर्यमल्ल का जयपुर आना ६ सेना सहित मल्हार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह और उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना का बगरू पुर में मुकाम करना और वहां से दंड के रुपये लेना ७ हुलकर का सब के साथ सेना के मुख्य सरदारों का सन्मान करना और मल्लार का अपने मित्र मारवाड़ के पति के भेजेहुए घोड़े, ऊँट आदि द्रव्य को स्वीकार करना और आगे आये हुओं का आदर किये करके आगे के उचित सत्कार के लिये कोटा की सेना में आना ८ माधवसिंह का, प्रति उत्तर जाना जावै ऐसा छल का पत्र जयपुर भेजना और वो उसके दूत से प्रत्यक्ष होकर जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का उस ठग के विचार से मोहित होना और हरगोविंद आदि का शत्रु का छल प्रकट करना ९ एक ही समय में हाडाओं के राजा (उम्मेदसिंह) और गंगाधर के साथ मारवाड़ की सेना के डेरों में और जयपुर के आगे आना, हाडा के तो घोड़ा नजर होना और गंगाधर का पुर का कँवाड़ों को तोड़ना १० नगर के लोगों

श्रवण ४ जट्टसूर्यमल्लाऽनूनेश्वरीसिंहाऽरातयनीकाऽभिमुखनिस्सरणंचतुर्विंशो २४ मयूख: ॥ २४ ॥ आदित: ॥३०५॥

॥शुद्धव्रजदेशीयाप्राकृतभाषा ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२ बरनतैं सरस्वतीको सरबस्व,
बेदिजाको बस्त्रज्यौं दुसासनके करतैं ॥
छंद छप्पईतैं ज्यौं प्रपंचित प्रसर पुंज,
बीज बसुधातैं बेरे बुंदैं बारिधरतैं ॥
बारिधितैं बीचिं मारतंडतैं मरीचि मित ॥
तरल तरंगा स्रोत गंगा गिरिबरतैं,
गोतमतैं न्याय राजराजतैं ज्यौं रांय ऐसैं
कूरम कटक कढ्यो जैपुर नगरतैं ॥ १ ॥
आवतही पंडित प्रधान तंते गंगाधर,
फोरेसे चखाय लोह मुरयो तजि खेतुहैं ॥
लागो पीठि कूरम बिनाश्रम बिजय जानि,

का मुंडन करना, उनका रोना और पकड़ना सुनकर जाट सूर्यमल्ल के साथ ईश्वरीसिंह का शत्रु सेना के सम्मुख निकलने का चौबीसवां २४ मयूख हुआ और आदि से तीनसौ पांच ३०५ मयूख हुए ॥

अब आगे छोटी वस्तु से बड़ी वस्तु के निकलने की उपमा देते हैं कि बावन वर्णों (अक्षरों) से सरस्वती का सर्वस्व (संसार भर की सम्पूर्ण विद्या निकला जैसे और दुश्शासन के हाथ से १ द्रौपदी का वस्त्र निकला जैसे और छप्पय छंद से २ रचाहुआ ३प्रस्तार का समूह निकला जैसे "छप्पय छन्द का प्रस्तार बहुत बड़ा होता है" ४ पृथ्वी से सम्पूर्ण वस्तु का बीज निकला जैसे मेघ से ५ शरीर और जलकण निकले "जैसे मेघ से मच्छी मैंडक आदि असंख्य जीवों की सृष्टि होती है" समुद्र से ६ लहरें निकलैं जैसे और सूर्य से ७ किरणें निकलैं जैसे, हिमालय पर्वत से ८ चपल तरंगवाली गंगा की धारा निकली जैसे, गौतम मुनि से न्याय (न्यायशास्त्र) और जैसे, ९कुबेर से१०धन निकला तैसे जयपुर नगर से कछवाहे ईश्वरीसिंह की सेना निकली ॥ १ ॥ बिना ही श्रम बिजय मिलना जानकर ११ कछवाहा ईश्वरीसिंह पीठ लगा

*मद्दन समेतु सज्ज संगर सचेतुहैं ॥
†बिड़िस वपाके लोभ लीन ‡महामीन जैसें,
डोरि ऐंचिवेतैं नीर तीर आनि लेतुहैं ॥
जैपुरनरेस आनि डारयो यों मलारपैं ज्यों,
डाकिनिके डेरा डावरेकों डारि देतुहैं ॥ २ ॥
आवत सुनत ढुंढाहरको कटक इत,
अपर अनीक हिय पंकज खिलतुहैं ॥
बुंदीपति १ माधव २ मलार३ असवार होत,
सिसकतु सेस अंग कच्छप गिलतुहैं ॥
सिंधू राग लागें खैंचि खागें अनुरागें आनि,
हाडे तानि बागें बढि आगैंकों भिलतुहैं ॥
नयन गुलाबी आबी छत्रनमैं छाबी भूमि,
एडिनकी दाबी नाँ अँगूठन मिलतुहैं ॥ ३ ॥
बान नभ अष्ट भू १८०५ समान सकं विक्रमके,
भद्दव चउत्थी४ स्याम६ भालन भिलनकों ॥
नैर बगरूके खेत पंचों५ सेन सज्ज करि,
मंड्यो मगरूर हंकि सम्मुह मिलनकों ॥
आसिक अनीके बींद अच्छरि बनीके फन,
फोरत फनीके धार धारन झिलनकों ॥
हाडा छत्रधार १ और माधव२ मलार३ लागे ॥

*जाड़ों सहित युद्ध पर सचेत होकर सजा सो † कांटे (कटिये) में लगाई हुई चरबी के लोभ से लगनेवाला ‡ बडा मच्छ खैंचने से जैसे जल के किनारे आजाता है तैसे गंगाधर रूपी कटिये ने जयपुर के राजा को मल्लारराव के पास ऐसे ला डाला जैसे डाकिनी के डेरे पर बचे को ला डाल देते हैं ॥ २ ॥ १शत्रु की सेना के २ प्रीति करके गुलाब से (लाल) नेत्रों की ३शोभा ४ छाईहुई ५ जिस भूमि को एडी से दबाई यह अंगूठे को नहीं मिलती अर्थात् पीछे पग नहीं लगते ॥ ३ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ घमंड ८ शेषनाग के ६ छत्र धारण करनेवाला

राहु[1]ह्वैकैं कूरम कलानिधि गिलनकौं ॥ ४ ॥
चढत चमूकैं चौंकि चंडी चहकाय गन,
गिद्धि गहकाय खरे खेत्रपाल खिल्ली[2]पैं ॥
तरल[3] तुखार सार[4] पक्खर अपार नाद,
प्रचुर प्रसार जो न झंतकार झिल्लीपैं ॥
घुमंडि घटाले हल्ल हुलकरवाले बीर,
झाले भुज भाले चाले दीठि मन मिल्लीपैं ॥
कूदत कलावा[5] नागपेच लपटावा देत,
कूरमपैं[6] झावा देत दावा देत दिल्लीपैं ॥ ५ ॥
प्रथम मिलाप रचि तोपनको ताप,
कपिलेस[7] कैसो साप बाप[8] कालको बिथार्‍यो त्यौं ॥
करकि कराल[9] सोरझाल बिकराल फैलि,
फाँलन[10] बिसाल ज्वालमाल जग जार्‍यो त्यौं ॥
गोलनके गोन पीलुं[11] मत्त पौन पैंते[12] करि,
तीनौं भौंन तत्ते करि प्रलय प्रसार्‍यो त्यौं ॥
नालिन[13]को नाद यौं निहार्‍यो बगरूके जंग,
मंदर[14]को मार्‍यो ज्यौं पयोनिधि[15] पुकार्‍यो त्यौं ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

परत पलीते घोर जाम[16] जुगर बीते छूटि,
फैरनपैं फैर नर हैवर[17] मरत जात ॥
सिलगत सोर ओर ओर जातवेद[18] जोरि,

(राजा) १ कछवाहे रूपी चन्द्रमा को ॥ ४ ॥ २ फूलकर (प्रसन्न होकर) ३ चपल घोड़े ४ तरवार ५ हाथियों के कंधों पर हो हो कर कूदते हैं ६ गोल कुंडा ॥ ५ ॥ ७ कपिलदेव के शाप के समान ८ काल का भी पिता "अधिकता बताने में बाप को बताने की लोकोक्ति है" ९ भयंकर १० लंबी छलांगों से ११ मस्त हाथियों को पवन के १२ पत्ते के समान करके १३ तोपों का शब्द १४ मंदराचल का मारा हुआ १५ समुद्र ॥ ६ ॥ १६ दो प्रहर १७ घोड़े १८ अग्नि के

जिलह जैलूसी जंबूदीपकी जरत जात ॥
जंग बगरूके घोर कोसन पहुमि रुंधि,
धूम धीरनीकी धुंधि धूसर परत जात ॥
सक्खी करि सूर जैसमक्खी तोप लक्खी गज,
मक्खीपर लैलै काल चक्खीसी करतजात ॥७॥
गान नँव गोले घमसानिन उडानन लै,
धानन किसानन त्यौं प्रानन लुनतैं जात ॥
दाहन दुसह अवगाहन बिजप बेद,
चंड कछवाहन सिपाहन चुनत जात ॥
दगि दगि दौव ताव अतुल अलाव लगि,
झगि इकतौर झार भारसी भुनत जात ॥
तौकैं तिन तोपन अवाजन सुनत त्यौंही,
तोपनके ताकेहूँ अवाजन सुनत जात ॥ ८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

रची बगरू इम तोपन रारि, झगे अय गोलक पावक झारि ॥
भये कँचमाल मई सब भोन, गिरैं बहु बारन गोलन गोन ॥ ९ ॥
उडैं बर हैवर त्यौं असवार, बहैं जम मग्ग कि नैर बजार ॥

बल से १ शोभा २ शोभा की सामग्री (सजावट) ३ शब्द ४ सूरज को साक्षी करके ५ समक्ष (संमुख) ६ लाखों रुपयों के हाथियों को अथवा काले हाथियों को "तोप, बंदूक का निशाना काले रंग का ही करते है" ॥ ७ ॥ ७नवीन८युद्ध में९कारसे लोक धान को काटे जैसे १० प्राणों को काटती है ११ शीघ्रता से विजय का थाह लेती हुई१२अग्नि१३तुलना रहित अग्नि का समूह १४ निरन्तर१५उन तोपों को देखते हैं सो१६उन तोपों की ताक (सिस्त) में आये हुओं की अवाज (शब्द) मात्र ही सुनते हैं कि वह भी थे॥८॥ १७लोहे के गोले १८सब घर कचनार मय (लाल) होगये (कचनार का रंग लाल होता है अथवा मरनेवाले मनुष्यों की अधिकता से सब भूमि केशों की मालामई होगई) गोलों के चलने से बहुत१९हाथी गिरते हैं ॥ ९ ॥ इसी प्रकार श्रेष्ठ२०घोडे और घोडों

उड़ैं दगि सोर झलाझल अब्भ, गिरैं सुनि गज्जत गब्भिनि गब्भ॥१०
हलैं भुव पन्नग सीस हजार, मचैं किरिं तुंड मचक्कन मार॥
नचैं जिम मारुत बारिधि नाव, भयो इम छोनिय तंडव भाव॥११॥
भये जड़ जोगिय छुट्टि समाधि, बढ्यो सब ओर प्रजागर व्याधि॥
भन्यों बिधि लोक बनावन भार, करी हरिसों हुत जाय पुकार १२
लगैं अंप गोलक मंडत लोप, उड़ैं ध्वजदंड मयूरन ओप॥
थरत्थर भू जिम पोमिनि नीर, सरैं जिम ग्रीखम तप्त समीर॥१३॥
उड़ैं हय अंभ भ्रमैं गति चक्र, मनों इन्द्र पच्छन कट्टिय सक्र॥
रचैं बहु खेल मलंगत रुंड, बनैं चैंतुरी परि मुंडन मुंड॥१४॥
छिकैं गज मत्त चिकारिन मारि, दरी गिरि सन्निभ होत दरारि॥
उड़ैं बहु सूर गरूर अघाय, बिनाँ श्रम हूरन लुंबत जाय॥१५॥
कढैं जित गोलक बेग बिथार, बनैं तित आयत पंथ बजार॥

के सवार उडते हैं, जम का मार्ग बहता है सो मानों नगर का बजार बहता है, बारूद झलाझल करके १ आकाश में उडता है सो गर्जना सुनकर २ गर्भिणियों के ३ गर्भ गिरते हैं॥१०॥ शेष के मस्तक के हजारे पर भूमि हिलती है और ४ वाराह की तुंडा पर मचकों की मार लगती है, जिस प्रकार ५ पवन से ६ समुद्र में नाव नचै तिस प्रकार ७ भूमि के नचने का भाव हुआ॥११॥ समाधि छूटकर योगी मूर्ख होगये (ज्ञान शक्ति नहीं रही) चारों ओर ८ जागरण का रोग बधा "चिंता के कारण निद्रा नहीं आवै उसका नाम प्रजागर है" ब्रह्मा ने ९ लोक बनाने का भार कहा और १० शीघ्र जाकर विष्णु से पुकार करी॥१२॥ ११ लोहे के गोले लगकर नाश करते हैं और मयूरों की शोभा ले ध्वजा दंड उडते हैं, जैसे पानी में१२पद्मिनी (कुमुदिनी) धूजै तैसे भूमि धूजती है और ग्रीष्म में १३ चलै ऐसा १४ गरम पवन चलता है॥१३॥ घोड़े उडकर १५ आकाश में गोलाकार फिरते हैं सो मानों १६ इन्द्र ने इनकी पांखें काटडाली हैं "इन्द्र ने घोड़ों की पांखें काटीं सो कथा पुराणों में सविस्तर है" रुंड कूद कर कई खेल करते हैं और मस्तक पर मस्तक पड़कर १७ चबूतरियें (चूँतरियें) बनती हैं॥१४॥ मस्त हाथी१८चीस मार मार कर छिदते हैं और१९पर्वत की गुफा के२०सदृश दरारें होती हैं, अपार घमंड वाले बहुत वीर उडते हैं और विना ही परिश्रम अप्सराओं के जा लूमते हैं॥१५॥२१गोले जिधर वेग फैलाकर निकलते हैं उधर ही२२चौड़े लंबे बजार बन-

गड़ैं भुव तोप चरक्खन *चक्क, लगैं कढि गोलक देत ललक्क ॥१६॥
जगैं कति पुंज पताकन ज्वाल, झगैं जिम †मारुत होरिय झाल ॥
मच्यो बगरूपुर ‡उल्मुक मेह, गिरैं बहु §सोध ¶अटालक गेह॥१७॥
हसैं नचि थेइन ×पन्नगहार, डरावत डाकिनि देत डकार ॥
अनंतहिं नागिनियाँ उचरंत, कहो किम सेक्स घमंकत कंत॥ १८ ॥
नही परिरंभन[2] स्पृष्टक[3] आदि८, नही उपगूहन घोर अनादि ॥
ललाटक आदिक चुंबन[4]८ नाँहिं, नवीन बनैं रसना[5] रन नाँहिं॥१९॥
॥ बननाँहि१रननाँहि२ अन्त्यानुप्रासः१॥
नकक्खहिं लै[6]८नख अप्पत नाह, उठैं नहिं क्यों रति केलि उछाह
न गूढक आदि८ बनैं रदनोद[7], मनैं[8] किम नाथ घनी तिय मोद॥२०॥
न ठहै परिरंभन[9] आदिहि च्यारि४, नक्यों तव दुक्ख लहैं हम नारि
कही यह नागिनि सेसहि[10] कत्थ, बच्यो तब नागिं प्रिया मरि बत्थ२१
इतैं भुव बुंदियको अधिराज१, उतैं हठ जैपुर भूपति१ आज ॥
लरैं दुव२ सज्ज चमू रचि लाम[11], धुजैं इहिं कारन अप्पन धाम२२
सुन्यों इमनागिनि संगर सोर, रही चुप रुक्किय मोहन[12] गोर ॥
कहैं रसना जिम दोय हजार२०००, परैं तिम नागिनिकों[13] दुख प्यार

जाते हैं, तोपों के चरखों के *पहिये भूमि में गड़ते हैं और ललकार करते हुएं गोले निकलते हैं ॥ १६ ॥ कितने ही ध्वजाओं के समूह जलते हैं सो मानों † पवन से होली की झाल जगती है, बगड़ू पुर में ‡ अंगारों (निर्धूम अग्नि) की वर्षा हुई जिससे §बहुत महल ¶ छतें और घर गिरे ॥ १७ ॥ × शिव नाचते हैं १ शेषनाग से सर्पिणियां कहती हैं ॥ १८ ॥ २ आलिङ्गन ३ वात्स्यायन कृत काम सूत्र में स्पृष्टक आदि आठ प्रकार के आलिंगन लिखे हैं जिस का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोड़दिया है ४ चुंबन भी वहीं पर आठ प्रकार के लिखे हैं५कटिमेखला का बजना अथवा लहँगे का नाड़ा खोलने का युद्ध ॥ १९ ॥ ६नखक्षत भी काम शास्त्र में आठ प्रकार का लिखा है सो हे पति काख में लेकर नखक्षत क्यों नहीं देते७ वहीं पर गूढक आदि आठ प्रकार के दन्त क्षत हैं८ हे पति आपकी बहुत स्त्रियें मोद कैसे मानें ॥ २० ॥ ९ भुजों से भीड़ना ये परिरंभ भी काम सूत्र में चार प्रकार के लिखे हैं १०शेषनाग ने कहा ॥ २१ ॥ ११ पंक्ति रच कर ॥ २२ ॥ १२ मैथुन का भय (अन्यसंभोगिता का दुःख) मिटा अथवा मूर्छा का भय मिटा १३ प्यार के कारण ॥ २३ ॥

बराहहिं *सूकरिका इत छुल्लि डिगे किम दंतुलि टारत डुल्लि ॥
कह्यो तब तुंड टिकैं नहिं कोल, बयो सुहि †कुम्भ ‡दुली प्रति बोल ॥
भये अघलोकहु यौं §भर भीत, बनैं ब्रहमंड मनौं विपरीत ॥
भरे इम द्वै२ दल खग्गन खेरि, लयो मरहट्ठन कूरम घेरि ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

दंगत छई दुहुँ२ओर तोप पट ¶मदन वितानन ॥
आतपै हुव तपि अर्क्क चर्क्क हुव स्वेदित आननं ॥
इहिं अंतर आसारं मुदिर उज्झलि अति मंडिय ॥
वहि सुख सीतल बात खेद आतपँ भव खंडिय ॥
दुव२ घटिय होय दाता जलदं गाढ कृपनपन पुनि गहिय ॥
पहु राम तद्दिन बगरू पहुमि बाहि रुहिरं सम्मलि बहिय॥२६

॥ दोहा ॥

मरहट्ठे रुक्कत मुदिर, जुरे बहुरि जुज्झार ॥
इक ऊँचे थल पर चढे, माधव३ हुल्लर मलार३ ॥ २७ ॥
तोप तहाँ सन त्रिगुन खट ६।१८, माधवकी चलवाय ॥
कूरमपतिके गज निकट, गोले लग्गिय जाय ॥ २८ ॥
गो इतनैं रवि चरमगिरि, सायं समय विधाय ॥
भीमनिसा आगम भयो, दिस दिस तिमिर दिखाय ॥ २९ ॥

---

*वराह की स्त्री †कमठने भी ‡उसकी स्त्री (कमठी) से यही वचन कहा ॥ २४ ॥ §भार से ॥ २५॥ ¶मोम के१वस्त्रों के तने हुए डेरों में२सूर्य तपकर३घाम (गरमी) हुई जिससे४सेना के५मुख पर पसीना होगया इसी बीच में मेघ ने उज्झल कर ६ बहुत मेघ धारा बरसाई जिस से शीतल पवन चलकर७ ताप से उत्पन्न हुए दुःख को मिटाया ८ उस मेघ ने दो घड़ी तक दानीपन करके फिर कृपणता करी (बंध होगया) ९ हे प्रभु रामसिंह उस दिन बगरू की भूमि में पानी और १० रुधिर सामिल ही बहा ॥ २६ ॥ ११ मेघ के रुकते ही ॥ २७ ॥ १२ अठारह (छै को तीन से गुणा करने से १८ होते हैं) ॥ २७॥ २८॥ १३ सूर्य अस्ताचल पर गया १४ संध्या समय १५ करके १६ भयंकर रात्रि का ॥ २९ ॥

फिर नकीब तब दुवर२ दलन, अक्खिय रोकहु जंग ॥
मन सूरन सो सुनि मुरे, आयासित[1] लखि अंग ॥ ३० ॥
बुट्ठि तिमिर[2] करि सबन नहि, लद्धो डेरन राह ॥
लरत हुते तत्थहि[3] रहे, तजिं तजि तुरंग[4] सिपाह ॥ ३१ ॥
तीन३ तीन३ दिनको असन[5], रक्ख्यो कतिन[6] लगाय ॥
तिहिं करि भूखे तृप्त हुव, सूर१ सप्ति[7]२ समुदाय ॥ ३२ ॥
बग्गडोरि बाजीनकी, गहि गहि करन[8] कराल ॥
सज्जहि रहि बैठे सबन, कढ्यो जामिनि[9] काल ॥ ३३ ॥
माधवहू इक ग्राममैं, रहि कर्पुक[10] गृह रत्ति ॥
बदलि नाम तापैंहँ बचे, वितई निंद बिपत्ति ॥ ३४ ॥
कवच१सेज्क१उपधान[11]२कर२, पहुमि३पृथुल[12] पल्लयंक३ ॥
सुत्तो तँहँ जयसिंह सुवें[13], असि४ कामिनि[14]४धारि अंक ॥३५॥
सोवन१ न्हावन१ असन१को, कहाँ कोसा[15]का तीन३ ॥
बुंदीसहु इक खेत बिच, खिनंदा[16] कीनी खीन ॥ ३६ ॥
हुलकरके पहुँची हठन, इक१रावटी आनि ॥
बित्ती कठिन बिभावरी[17], चटकन हुव चहकानि ॥ ३७ ॥
नित्य नियम मंड्यो नृपति, उट्ठि सबन सन अग्ग ॥
एते बिच पिक्ख्यो अडर, माधव आवत मग्ग ॥३८॥

॥ षट्पात् ॥

सक गुन नभ धृति१८०३समय मित्र माधव खंडुव हुव ॥
बदली दोउन पग्घ धरि सु रक्खी डब्बन धुर्व[18] ॥

१परिश्रम सहित ॥ ३० ॥ २वर्षा के अंधेरे से ३तहां ही ४घोड़ों से उतर कर ॥ ३१ ॥ ५भोजन ६कितने ही लोगों ने ७घोड़ों के समूह ॥ ३२ ॥ ८हाथों में ९रात्रि का समय ॥ ३३ ॥ १०करसे के घर में रात बिताई ॥ ३४ ॥ ११हाथ है सो ही तकिया हुआ १२भूमि ही बड़ा पलंग (सेज) १३सुत १४खड्ग रूपी स्त्री को अंक में लेकर ॥ ३५ ॥ १५डेरा (तंबू) १६रात्रि बिताई ॥ ३६ ॥ १७रात्रि ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १८निश्चय

इहिँदिन वह उष्णीस[1] कुम्भ[2] आयउ धारन करि ॥
जपि नृप किंतु[3] जुहार इक्क तरु तर गय उत्तरि ॥
द्विज दयाराम पठयो नृपति पुच्छन कछु कछवाह पहँ ॥
तिहिं जाय लखिय जयसिंह सुव चब्बत दर्इ[4] मउठ तहँ॥ ३९॥

॥ दोहा ॥

ऐसोहू आवत समय, घोर मचत घमसान ॥
भूपति हू निज भूखकों, देत मोठ बलिदान ॥ ४० ॥
इतहु हड्ड नृप नित्य करि, वैश्वदेव करवाय ॥
जथालाभ[5] लै अन्न अरु, हज्ज्यो कवच सुभाय ॥ ४१ ॥
इहिं अंतर जैपुर अधिप, चढ्यो चमूजुत चंड ॥
अभ्रमुपति[6] पर इंद्र सम, बैठो सजि वेतंड[7] ॥ ४२ ॥
इत उमेद१ माधव२ अरहि, हय चढि सम्मलि होय ॥
हुलकर ढिग आये हुलसि, दलहिं[8] प्रचारत दोय२ ॥ ४३ ॥
नृप मलार हरवल्ल[9] ह्वै, जयपुर सम्मुह जंग ॥
कुंत[10] अमात असव्य[11] कर, फेरत तरल तुरंग ॥ ४४ ॥
परे पलीते तोप परि, अतुल दगी अरराय ॥
वासव[12] केधौं[13] वज्र लै, घल्लैं अद्रिन[14] धाय ॥ ४५ ॥

॥षट्पात्॥

तोपन लग्गत अग्गि त्यों[15] लि रीढक्क वररक्किय ॥
दररक्किय किरि[16] दह कमठ खुप्परि कररक्किय ॥
पृतनाँ[17] बिचकरि पंथ कढत गोले सक सक करि ॥
मनहुँ संघ मायूर[18] धसत कानन[19] केकाधरि[20] ॥

१ पगड़ी २ माधवसिंह उम्मेदसिंह ३ ले जुहार करके ४ भुने हुए मोठ चाबता था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ जैसा मिला तैसा ॥ ४१ ॥ ६ ऐरावत पर इंद्र बैठे तैसे ७ हाथी पर बैठा ॥ ४२ ॥ ८शीघ्र ही ९ सेना को ॥४३॥ १०भाला ११दाहिने हाथ में ॥ ४४ ॥ १२मानों१३इंद्र ने वज्र लेकर पर्वतों पर१४ चोट लगाई ॥ ४५ ॥१५शेषनाग की पीठ१६वराह की दाढ१७सेना में१८मयूरों का समूह १९ वन में २० केका नामक बाणी को धारण करके

मल्लार पिछि कोटा चमुप हो मोहनसिंहोत भट ॥
यह जोध नागदहपुर अधिप गोला लगि गय विहित[1] वट ।४६।
ऐसे कठिन अनेह[2] कहिय माधव मलार कँहँ ॥
हम किहिंठोर रहैं सु त्वरित सुनि दिय उत्तर तँहँ ॥
देखहु वह कुंदीस वीर किहिं ठोर विहारत ॥
ललितं[3] सेफ नहिं लाल इहाँ निकसत असु[4] आरत ॥
मेरेहि कहँ रहनों जु मत आनि रहहु तो मम उदर[5] ॥
सुनि यह सिटाप माधव सलज हुव प्रदोष[6] पंकज[7] कँहर ॥४७॥

॥ दोहा ॥

इत तंते गंगाधर सु, दूजीर आनिय बनाय ॥
पैलीघाँ[8] सन उडि परिय, जैपुर दल बिच जाय ॥ ४८ ॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर हय गरक करे कूरम दल अंतर ॥
रिठिनि[9] बज्जिग रिठ भीसं[10] गज्जिग रज्जिग[11] भर ॥
फटत टोप चोअफार कटत करिकी तरबूजन ॥
खरं[12] खुरतारन खुदत धरनि धारनं[13] लगि धूजन ॥
भयकार सुंड मुंडन भिरत रुंड फिरत बन बंन्हि[14] रुख ॥
भ्रामरी[15] दसा भीरुन भई सिद्धा[16] सूरन समर सुख ॥ ४९ ॥
तंतेकी तरवारि बिखम जैपुर दल वग्गी ॥

---

१ उचित मार्ग (स्वर्ग) को गया ॥ ४६ ॥ २ समय में ३ सुंदर ४ पीडित होकर प्राण निकलते हैं ५ मेरे पेट में ७ सन्ध्या समय के जुलम से ६ कमल होवैं तैसे ॥ ४७ ॥ ८ परली तरफ से ॥ ४८ ॥ ९ निरन्तर प्रहारों पर प्रहार १० भयंकर गजर्ना करके वीर ११ शोभायमान वा रजो गुण युक्त हुए १२ तीखी खुरतालों से खुद कर १३ घोड़ों की दौड़ से भूमि धूजनेलगी १४ वन में अग्नि फिरे तिस प्रकार रुंड फिरते हैं १५ ज्योतिष में भ्रामरी दशा दुखदाई मनीजाती है सो कायरों की हुई और १६ सिद्धा दशा सुखदाई मानते हैं सो युद्ध में वीरों को

तड़ित[1] जानि अति तेज सुदिर[2] भद्दव झगमग्गी ॥
घेरयो रचि घमसान तुमुल हुव २ पहर कहर[3] तप ॥
नैंक[4] डिगन नन दियउ ईश्वरीसिंह अनेकप[5] ॥
कूरमन तबहि यह छल करिय दल नकीब सुक्कलि द्रुतहि ॥
झंडे रुपाय दीरघ दये करहु मुकाम मुकाम कहि ॥ ५० ॥
तहि१ कहि२ अन्त्यानुप्रासः १॥

॥ दोहा ॥

यह लखि हुलकर कटक अब, जानी कुम्म न जाय ॥
सउचादिक बपु[6] कर्म सब, भट सु निबेरहु भाँय[7] ॥ ५१ ॥
तब तनाय इक१ रावटी, तजि कटिबंध[8] मलार ॥
नित्य नियम बपु कर्म निज, बिरचन लगि तिहिँ बार ॥५२॥
पौरानिक[9] द्विज बुल्लि पुनि, इंद्रदत्त अभिधान[10] ॥
व्यासासन बैठारि तिहिँ, सुनत भागवत गान ॥ ५३ ॥
अँपर[11] भटन उतरन समय, अक्खिय दूतन आय ॥
उतरयो नहिँ कूरम अधिप, जानैं हम भजिजाय ॥ ५४ ॥
हुलकर तब सुभटन कहिय, उतरहु कोउ न अज्ज ॥
कूरम हम जान्यौं कितव[12], लोस न बुल्लत लज्ज ॥ ५५ ॥
तंतेकौं सुक्कलि तबहि, रोक्यो जैपुर राह ॥
इतनैं दुंदुभि बज्जि अँर[13], कढि चल्लिय कछवाह ॥ ५६ ॥
सुनत एह हुलकर सु पहु, द्रुतहि उघारे देह ॥
तुरग चढ्यो पटगेह[14] तजि, मंडत आयुध मेह ॥ ५७ ॥

सुखदाता हुई ॥ ४६ ॥ १ बिजुली २ भाद्वा के मेघ में ३ जुलम वा क्रोध से तप कर के ४ ईश्वरीसिंह की सवारी के हाथी को ५ शीघ्र ॥ ५० ॥ ६ शरीर के कार्य ७ रीति पूर्वक ॥ ५१ ॥ ८ कमरबंधा खोलकर ॥ ५२ ॥ ९ पुराण बांचने वाले इंद्रदत्त १० नाम के ब्राह्मण को बुलाकर ॥ ५३ ॥ ११ अन्य वीरों के ॥ ५४ ॥ १२ छली ॥ ५५ ॥ १३ शीघ्र ॥ ५६ ॥ १४ डेरा छोडकर ॥ ५७ ॥

॥ नराच: ॥

चढ्यो मलार लै तुखार नोहजार९००० नच्चते ॥
धंपे प्रबीर तानि तीर जंग धीर जच्चते ॥
बजे निसान स्वान जे दिसा दिसान बित्थरे ॥
चमंकि पारि चिक्करी डिगे रु दिक्करी[3] डरे ॥ ५८ ॥
हजार पंच५००० सेन देस क्लेस काज मुक्कली ॥
रुमापुरी[4] समीपलौं गये ति लूटते बली ॥
हजार अंक ९००० [5]ई लियें मलार उप्परयो इतैं ॥
जितैं जितैं चलात खात खग्गतैं तितैंतितैं ॥ ५६ ॥
बुलैं नकीब इक्कसै१०० हुलैं[6] हरोल हक्कै ॥
तुलैं तुरंग तँक्खरे[7] धरा धुजात धक्कै ॥
उमेद१ माधवेस२हू सजे दुरूह[8] सत्थव्है ॥
करिंध्वजाभ[9] कुंम्भपैं[10] पिले प्रचारि पैत्थव्है[11] ॥ ६० ॥
करीनके[12] कॅलाप के[13] कॅलाप केतुके खुले ॥
चले सँमग्ग[14] खूब खग्ग सेन अग्ग संकुले ॥
खिचैं कमान बीच बान दंडितुंडे[15] दंतव्है ॥

नौ हजार नाचते हुए घोड़े लेकर मल्लार चढा और धैर्य के साथ युद्ध में जचे (ठहरे) हुए वीर१दौड़े वहां नगारों के२शब्द बजकर दिशा दिशाओं में फैलगये जिससे ३ दिग्गज डरकर चीख मार अपने स्थान से हट गये ॥ ५८ ॥ पांच हजार सेना ढुंढाहड़ देश में क्लेश फैलाने को भेजी गई जिसके वीर लूटते हुए ४ सांभर पुर तक पहुंच गये और इधर मल्लार भी नौ हजार ५घोड़े लेकर उठा सो जिधर जिधर वह गया उधर उधर तरवार से शत्रुओं को भक्षण ही करता गया ॥ ५९ ॥ ललकार के साथ६अगली सेना को बढाते हुए सौ नकीब बोले और ७ ताते (चपल) घोड़ों को उठाकर भूमि को धक्के देकर धुजाने लगे जहां उम्मेदसिंह और माधवसिंह भी ८ कठिनाई से तर्कना में आवे इस प्रकार सज कर मल्लार की साथ हुए सो मानों १० ईश्वरीसिंह रूपी ९ कर्ण पर ११ अर्जुन के समान ललकारते हुए बढे ॥ ६० ॥ १२ कितने ही हाथियों के समूह पर १३ ध्वजाओं के समूह खुले १४ सभी खड्ग खूब चले और सेना के अग्रभाग में भरगये जहां १५ यमराज के मुख के दंत होकर कमानों के

करैं कटार केक पार *देवदार कंतह्वै ॥ ६१ ॥
झरैं तुरंग फेट भंग पंच५ रंग झंडके ॥
खिरैं †खलीन खग्ग खीन दुंदुभीन खंडके ॥
कटैं कपाल भिन्न भाल अंखि लाल उच्छरैं ॥
वटैं बिसाल ग्रीव गाल [illegible] जत्रु जाल त्यों फटैं ॥ ६२ ॥
कुकैं हुकैं फुकैं कलेज कुंम्म के रुकैं लुकैं ॥
सुकैं करीन३ दान तान गान अच्छरी चुकैं ॥
छिकैं चिकैं किरीट केक ओट घोटकी४ टिकैं ॥
थकैं जकैं इकैं कितेक बाढ वन्हि५कैं सिकैं ॥ ६३ ॥
जगैं प्रकोप अंक६ ओप केक तोप त्यों दगैं ॥
झगैं बिसाल सोर झाल दीपमालसी लगैं ॥
जचैं सु मल्ल जंग के तुरंग तापमैं तचैं७ ॥
रचैं लकारि रारि के डकारि डाकिनी नचैं ॥ ६४ ॥
गजैं गरूर पूर सूर कूर नूर के तजैं ॥

बीच में पाण खिचते हैं और कितने ही वीर * अप्सराओं के पति होकर कटार पार करते हैं ॥ ६१ ॥ जयपुर के कई पचरंग झंडे घोड़ों की फेट से टूट कर गिरते हैं और खड्गों से कटकर कई † लगामों और कई नगारों के टुकड़े गिरते हैं, कपाल कटते और ललाट से भिन्न होकर लाल नेत्र उछलते हैं और लंबी गर्दनों के टुकड़े होते हैं और इसी प्रकार गाल और १ हंसुलीं की हड्डियें कटती हैं ॥ ६२ ॥ २ कई कछवाहे कूकते कई हूकते कई कलेजों को फूंकते और कई छुपते हैं इस जगह ३ हाथियों के दान सूख कर अप्सरायें गाने में तान चूकती हैं कई मुकुट छिद कर मस्तक से डिगते हैं और ४ घोड़ों की आड में टिकते हैं कितने ही थककर गिरते हैं और कई आगे बढकर ५ तरवार की धार रूपी अग्नि में सिकते हैं ॥ ६३ ॥ ६ सूर्य की उपमा के समान वीर लोग कोप में जलते हैं त्यौंही तोपें चलती हैं तहां पारूद की बडी ज्वाला प्रज्वलित होती है सो दीपमाला के समान दीखती है कई मल्ल युद्ध की याचना करते हैं सो घोड़ों की ताप में ७ जलते हैं अर्थात् पैदल होकर मल्ल युद्ध करते समय घोड़ों की टाप से मारे जाते हैं अथवा ताप में घोड़े जलते हैं कई वीर ललकार कर युद्ध करते हैं और डाकिनियां डकार लेकर नाचती

सजैं रंजैं भजैं न नीरके अनीरके भजैं ॥
तनैं प्रहार लुत्थि लार मार मार के भनैं ॥
घनैं घुमाय घोर घाय बायमत्तसे बनैं ॥ ६५ ॥
थपैं प्रयान प्रान केक ज्ञान कानपैं जपैं ॥
बिसार ज्यौं अपार बग्ग धारसंमुहैं धपैं ॥
छपैं छलंगि छोनि हैं दुसार संगि गैं दबैं ॥
फबैं अगोट चंड चोट ढाल ओट के ढबैं ॥ ६६ ॥
सनंकि चौंकि चिल्हनी भनंकि गिद्धनी भ्रमैं ॥
खमैं घटाग खाग भोगिभाग नागके नमैं ॥
करैं अनेक दाव केक पाव अग्गही परैं ॥
झरैं प्रसून भूरि भीर बीर अच्छरी बरैं ॥ ६७ ॥
मिलैं अभीत जंपि जीत पीलु बीतें दे पिलैं ॥
खिलैं सयान खेचरी अयान भूचरी मिलैं ॥

हैं ॥ ६४ ॥ कई वीर पूर्ण घमंड से गर्जना करते हैं तहां कायर लोग नूर छोडते हैं कई वीर सजेहुए १ शोभित होते हैं और २ पराक्रम वाले नहीं भगते किंतु पराक्रम हीन भगते हैं प्रहारों को ३ फैलाकर लोथों के साथ कई मुंड मार मार करते हैं [यहां लोथ के साथ मुंड का ऊपर से अध्याहार होना है] बहुतेरे घोर घावों से घूमकर ४ बायड़े (बादी में आनेवाले, पवन लगकर शीत में आनेवाले) के समान थकते हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही प्राणों का प्रयाण होते समय उनके ५ कानों में गीता शास्त्रोक्त ज्ञान सुनाते हैं इसी प्रकार तरवारों के अपार वेग को भूलकर उन (तरवारों की ६ धाराओं के सन्मुख ७ दौड़ते हैं. ८ घोड़े सलंग लगाकर भूमि को छाते हैं और बछियों से दोनों बाजू कूद कर ९ हाथी दबते हैं. आगे की भयंकर चोट से शोभित होकर कई ढालों की आड से ठहरते हैं ॥ ६६ ॥ चीलहें चौंक कर उडती हैं और गिद्धनियें पंखों को बजा कर भ्रमती हैं. घटा की अग्नि (बिजुली) रूपी तरवारें १० चमकती हैं और शेषनाग के ११ फणों का भाग झुकता है. कई वीर अनेक दाव करते हैं और उनके पैर आगे ही पड़ते हैं १२ फूलों की बहुत भीड़ (बहुत फूल) बरसती है और अप्सराएं वीरों को बरती हैं॥६७॥कई वीर विजय होना कहकर निर्भय होकर मिलते हैं तहां १३हाथियों को १४ हूलकर

खसैं नसैं अनेक सूर केक हुल्लसैं हसैं ॥
घिसैं कितेक नाक केक [1]नाक जायकैं बसैं ॥ ६८ ॥
थरत्थरी थिरा[2]हु पिक्खि तेगकी तरत्तरी ॥
बरब्बरी लगै न जास फग्गकी [3]घुरत्तरी ॥
छगच्छगी छछक्क उह्ह [illegible] ...अकी डगड्डगी ॥
झगज्झगी [illegible] [4]दवाग्ग दग्गि नाकलौं [6]ठगट्ठगी ॥ ६९ ॥
[illegible] खरीखरी अघाय खाय के परे [9]करी करी ॥
घरीघरी घुमाय जाय डाकिनी डरीडरी ॥
लजेलजे लुकैं लुभाय भीरु के भजे भजे ॥
सजेसजे सिपाह लेत मारदै मजे मजे ॥ ७० ॥
बटेबटे पिसाच [10]बुक्क फिप्फरे फटे फटे ॥
कटेकटे गहैं कलेज नाँ गहैं नटेनटे ॥
[11]सचीसची भिरैं सम्हारि [12]बाहिनी बचीबची ॥
नचीनची फिरैं निहारि जुग्गिनी जचीजची ॥ ७१ ॥

रहाते हैं सोते हुओं पर खेचरियां (देवी की मांस खानेवाली दासियां) प्रसन्न होती हैं और भूचरियां (देवी की दासियां विशेष) भयानक होकर मिलती हैं अनेक शूर सिसकते और मरते हैं और कई प्रसन्न होकर हंसते हैं कितने ही भूमि पर नासिका को घिसते और कितने ही १ स्वर्ग में जाकर बसते हैं ॥ ६८ ॥ तरवारों की तड़ातड़ को देखकर २भूमि धुजने लगी जिस तड़ातड़ की बराबर फाग की ३ डंडेहर (गेहर) भी नहीं लगती रुधिर की पिचकारियां छिड़कने लगीं और४वराह की दाढ हिलने लगी ५दावाग्नि लग कर झगझगाहट करने लगी जिसको देखने को ६स्वर्ग पर्यंत ७टगटगी लगगई अर्थात् अनिमेष होकर देखने लगे ॥ ६९ ॥ योगिनियें खड़ी खड़ी गिरे हुए ९ बहुत हाथियों को खाकर ८ तृप्त होने लगीं घड़ी घड़ी में घूमकर मारे जाने के भय से डाकिनियें डरी डरी जाने लगीं कितने ही कायर जीने के लोभी होकर भगने लगे और कई लज्जित होकर छुपने लगे सजेहुए सिपाही मार देकर मजा लेने लगे ॥ ७० ॥ फटेहुए फेफरों और१०बूकों (गुरदों) को पिशाच बांटने लगे और फटेहुए (वीरों के) कलेजों को लेने लगे किंतु देने में इनकार करनेवालों (कायरों) के कलेजे नहीं लेते १२ बची हुई सेना ११ इकट्ठी होकर

धकेधके लरात लोह छोहमैं छकेछके ॥
थकेथके गिरैं कुथाल ढालतैं ढकेढके ॥
कढे कढे किरंत क्लोम बक्त्र के बढेबढे॥
गढेगढे गडंत गिद्ध लुत्थिपैं चढेचढे ॥ ७२ ॥
सिचीसिची अनेक [illegible] आंखि सोनमैं सिचीसिची ॥
भिचीभिची भुजा भ्रमंत अंतरी [illegible] [illegible]चीं ॥
कुपेकुपे जुरैं कितेक रंगमैं रुपेरुपे ॥
लुपेलुपे लखात पाप धारतैं धुपेधुपे ॥ ७३ ॥
अनीअनी अरैं घटा कि घुम्मरी घनीघनी ॥
जनीजनी लुभात आत अच्छरी बनी बनी ॥
भईभई भनैं बिभिन्नं के करैं दईदई ॥
नईनई रचंत रारि जोध जे जईजई ॥ ७४ ॥
मुरेमुरे मरैं कुभाँति देखिबे दुरेदुरे ॥
लुरेलुरे बजंत बंब ढोलके दुरेदुरे ॥
हिलेमिले बढैं कितेक खीजमैं खिलेखिले ॥
झिलेझिले झुकैं अनेक संगितैं सिलेसिले ॥ ७५ ॥

सम्हल कर भिड़ने लगी तहां याचना करती हुई योगिनियां नाचती हुई फिर-ने लगीं॥७१॥ १क्रोध में उफनेहुए वीर बढ बढ कर शस्त्र लड़ाने लगे और थके हुए वीर ढालों से ढकेहुए २ बुरी तरह से गिरने लगे निकली हुई ३तिल्लियां और कटेहुए४मुख बिखरने लगे और लोथों पर चढेहुए गिद्ध गाढे गडने लगे॥७२॥ सिचेहुए अनेक नेत्र५रुधिर में सिंचने लगे भिंची हुई भुजाओं में भ्रमतीं हुई६आंतें ७खिंचने लगीं कई वीर युद्ध में रुपकर कोप करके जुड़नेलगे तहां तरवारों की धाराओं से धुप कर पाप लुपेहुए दीखनेलगे ॥ ७३ ॥ सेना की अणी से अणी (अग्रभाग) अड़ती है सो मानों ८ घुमडी हुई घटाएं जोर से भिड़ती हैं प्रत्येक अप्सरा९दुलहिन बन बन कर आती है सो विवाह की वार्ता होचुकी ऐसा कहती है और १० कई कटे हुए दैव दैव पुकारते हैं विजय पानेवाले वीर नया नया युद्ध रचते हैं ॥ ७४ ॥ पीछे मुड़नेवाले कई ११ छुप छुप कर देखने के लिये बुरी तरह से मरते हैं १२ लुढकतेहुए ढोल और नगारे बुरे बुरे बजते हैं. कितने ही क्रोध में१३फूले हुए वीर हिल मिल कर बढते हैं और १४ बर्छियों से बिधे हुए कई वीर ठहरते ठहरते झुकते हैं ॥ ७५ ॥ मल्हार रूपी

ग्रसेत्रसे फिरैं मलार राहुके ग्रसेग्रसे ॥
लसेलसे लखैं तमास धुज्जटी हसेहसे ॥
हेकहे जुरैं कितेक चंडिका चहेचहे ॥
हेबहे फिरैं बपा सु गिद्धनी गहेगहे ॥ ७६ ॥
झटक्कि इक्क इक्कको पटक्कि वज्रलौं परैं ॥
खटक्कि खग्ग खुप्परी अटक्कि पग्घ उत्तरैं ॥
रक्कि छत्ति देखि यौं भरक्कि जैपुरे भजैं ॥
रक्कि संधि कंकटी बरक्कि बाढ के बजैं ॥ ७७ ॥
चक्कि सेस संकुली भचक्कि भुम्मि बिक्खरैं ॥
चक्कि पिट्ठि कामठी गचक्कि पंकमैं गिरैं ॥
सेलग्गि सोरकी सिखा फुलिंग फैलते बमैं ॥
नोज्ञ मुंड मालिका रचैं रु कालिका रमैं ॥ ७८ ॥
खिरंत दंत कंत के करंत इंत दिग्गजी ॥
गिरंत शृंग मेरु की भरंत स्वास भाभजी ॥
कुपीट खीन के धुनीन कोपके कृसानुहे ॥

राहु के ग्रसेहुए कई पुरुष १डरेहुए फिरते हैं. २ उल्लास युक्त होकर ३ शिव हंसते हुए तमाशा देखते हैं चंडी के चाहे हुए ऊपर कहेहुए कई वीर जुड़ते हैं गिद्धनियों से गहीहुई ४ मज्जा यहीं यहीं फिरती है ॥ ७६ ॥ एक दूसरे को झटका देकर वज्र के समान पड़ते हैं खोपरी पर ५तरवार खटक कर उसके अटकने से ६ पगड़ी उतरती है. इस प्रकार देखने से छाती फट कर जैपुरवाले भगते हैं ७ कवच की संधि कड़क कर तरवार की धारा के बजने से टूटती है भूमि बिखरे ॥ ७७ ॥ शेषनाग के पीठ की ८ हड्डी लचक कर भचक लगने से ९ कमठ की पीठ चमक कर १० कीचड़ में गिरती है. बारूद की ज्वाला ... सिलग कर फैलते हुए ११ अग्नि कणों को १२ उगलती है १३ ... शिव के अर्थ सुंदर मुंडमाला रचकर काली क्रीड़ा करती है ॥ ७८ ॥ १४ पतियों के दंत खिरने से १६ दिशाओं की हथनियां १५ खेद करती हैं श्वास भर कर गिरते हुए वीरों ने मेरु पर्वत के शिखरों के गिरने की १७कांति धारण की अथवा सुमेरु के शिखर गिरने से उस सुमेरु की सभा (देवसभा) भगी उस युद्ध में लगी हुई २० अग्नि के कोप से कई १९ नदियां १८पानी से क्षीण

दुरयो बितान धुंधि भानु दीह सीतभानुव्है ॥ ७९ ॥
रजोमई तमोमई भटालि भीर भू भई ॥
बिमान जाल देवतान ताल रीझिकैं दई ॥
धसैं छुरी दुसार बीर पार नीर धारसी ॥
स्वसैं उतंग के परे मतंग भुल्लि सारसी ॥ ८० ॥
समुद्र सत्त७ लै हिलोर ओरओर उप्फनैं ॥
भनैं सिराह चंद्रभाल काल कल्पको बनैं ॥
अनंत माँहिं अंत लै उडंत चिल्ह चंगव्है ॥
हनंत हत्थ अंग के भनंत मत्थ भंगव्है ॥ ८१ ॥
बितंडे[11] बाटिकान[12] दंत[13] हस्तिदंत उप्परैं ॥
किरे सु कुंभ[14] कोहले[15] पलांडु घंट निक्करैं ॥
कटंत सुंडि कक्करी[16] प्रवृत्ति पाथ[17] पीनके ॥
किलासनास[18] ईषिका रु आलु अंखि कीनके ॥

होगई. धुंधि के १ फैलने से सूर्य छुपकर दिन के २ चंद्रमा ... होगया ॥ ७९ ॥ ३ वीरों की पंक्ति की भीड़ से भूमि पर धूल और ... छागया. विमानों के ४ समूहों में से देवताओं ने प्रसन्न होकर ताली ... समः ... अंधेः ... बजा. वीरों की छुरियां जल की धारा के समान दोनों तरफ पार होती हैं ... पड़े हुए ऊँचे ५(*) हाथी ६ प्रसन्नता की(†)बोली भूलकर सिसकते हैं ... सातों समुद्र हिलोरे लेकर चारों दिशाओं में उफनते हैं ७ ... कतने ही करते हैं और ८ प्रलय का समय बनता है ९ आकाश में आंतें ले... ाईं ॥ ८० ॥ १० पतंग (गुडी) होकर उडती हैं. हाथ अंगों को काटते हैं अथवा ... ॥घ प्रशंसा कायर छाती कूटते हैं और कई मस्तक कटहुए भी बोलते हैं॥ ८१ ... किर चीलहें रूपी १२बगीचों में हाथियों के दन्त उखड़ते हैं सोही १३मूले ह... री दिकितने ही १४कुंभस्थल गिरते हैं सोही कूष्मांड (कोळे) हैं १५घंटा है सो ... ॥ ११हाथियों कटती हैं सोही १७पानी की पिलाई हुई पुष्ट १६काकडियों हैं १८ ...ते हैं

(*) लीलावती में गणेश को मतंगानन लिखा है और शारदी नाममाला में हाथी का नाम मतंग लिखा है यथा—'मतङ्गः कुंजरः करी'॥

(†) डिंगळ भाषा में हाथी की प्रसन्नता की बोली का नाम सारसी है और मतांतर से सुंड के इधर उधर फटकारा लगाने को भी सारसी कहते हैं.

कटिल्ले कर्णिकावली भटा हृदावली भये ॥
अरिष्ठके अपष्ठ वृंद क्लोम कंद उन्नये ॥
बनैं अरी पलास कान अंदु नागबल्लरी ॥
कलेज पीलुपर्णिका कसेर तोरई करी ॥ ८३ ॥
बनात यौं अनेक प्रेत साक व्यंजनावली ॥
कृपान या प्रकार मारकी मलारकी चली ॥
कहैं कितेक हाय माय गाय काय के गहैं ॥
लहैं कषाय लाय के घुमाय घाय के सहैं ॥ ८४ ॥
चहैं बँ आय जैपुरेस गैपुरेसँ साँकरैं ॥
मलार भीमसेनकी गलार गंजि को लरैं ॥
इतैं प्रबुद्ध रामभूप क्रुद्ध जुद्ध यौं मच्यो ॥
सुनौं समस्त प्रीति कैं उतैं जु रीतिकैं रच्यो ॥ ८५ ॥

फलविशेष) के समान हाथियों के नेत्रों के गोलों का नाश होता है और आंख की पुतलियां ही आलू हैं ॥ ८२ ॥ १ सुंड के अग्र भागों की पंक्ति ही करेलों की पंक्ति है २ हृदयों की पंक्ति है सोही बैंगन हैं ३ लहसुन के समान ४ अंकुश का अग्रभाग है ५ तिल्ली ही जमीकन्द है ६ हाथियों के कान ही अरुइ (अरबी) के पत्ते हैं ७ जंजीरें ही नागरबेलें हैं ८ कलेजे ही पीलुपर्णी (दाख की बेलें) हैं और हाथी की पीठ की लंबी हड्डी (रीढ या बांसे का हाड) ही तोरही (तुरइ, तोरमी वा तोरी) है ॥ ८३ ॥ इस प्रकार कई प्रेत ९ भोजन के पदार्थों की पंक्तियां बनाते हैं. मल्लारका १० खड्ग इस प्रकार की मार के साथ चला तहां कितने ही 'हायमाता' और कितने ही 'मैं तेरी गव हूं' ऐसा कहते हैं और कई वीर शरीरों को पकड़ते हैं और कई वीर अग्नि के ११ कडुएपन को सहते हैं और कितने ही घाव सहते हैं ॥ ८४ ॥ १३ हस्तिना पुर के पति (दुर्योधन) रूपी जयपुर के पति को १२ अब सकड़ाई में लिया तब वहां भीमसेन रूपी मल्लार की गर्जना को दबाकर कौन लड़े अर्थात् कोई नहीं लड़ सका १४ हे बुद्धिमान् राजा रामसिंह इधर तो क्रुद्ध होकर इस प्रकार का युद्ध मचा और उधर (दूसरी ओर) जिस प्रकार युद्ध मचा सो प्रीति पूर्वक सुनो (इन छंदों में प्रायः 'खरीखरी गरीगरी, धके धके, थके थके' आदि एकार्थ वाची दो दो शब्द आये हैं सो अपने अपने विषय की अधिकता बताने के लिये वीप्सा के अर्थ में हैं) ॥ ८५ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत जैपुर मग रुक्कि त्वरितं तंते गंगाधर ॥
उद्धत बग्गन ऐंचि हंकि सम्मुह दिय *हैवर ॥
†मंडलग्ग झारि मार लुत्थि पर लुत्थि बिलग्गिय ॥
मित्र मित्र मनु मिलिय बहुत सहि सहि ‡बिरहग्गिय
तरवारि तरक्कि बज्जत §तुमुल भरक्कि मुंड भेजा कढं
भीरुन अनार कन जिम ¶उदक उतरि उतरि बीरन चढत
पुनि पुनि कंपत पहुमि बाढ पुनि पुनि रन बज्जत ॥
पुनि पुनि छुट्टत प्रान गिरत पुनि पुनि भट गज्जत ॥
पुनि पुनि भिरत पटैत किरत पुनि पुनि झारि कंकट[1] ॥
निज जय पुनि पुनि भनत बनत पुनि पुनि वट उब्बटं[2] ॥
पुनि पुनि कपाल फुट्टत पिहुल[3] भरं[4] आलुकं[5] पुनि पुनि मयउ ॥
आमेरनृपति अंधकं[6] उपम गंगाधरं[7] गंजन गयउ ॥ ८७ ॥
सीकरपति सिवसिंह तमकि[8] आयउ हरोल तब ॥
मध्य जट्ट रविमल्ल[9] ओट चंदोल कुंम्म[10] अब ॥
सेखाउत सिर प्रथम धार झारिय गंगाधर ॥
अतुल तुमुल उल्लसिय हसिय नारद हर हरहरें[11] ॥
फुल्लिंगें[12] कुपित आंखिन फुरत जुरत मत्त दुवर सिंह जिम ॥
असि झारि रचिय सेखाउतहु पुरुखारथ पारथ प्रतिमें[13] ।८८।

॥ दोहा ॥

---

* घोड़े † मण्डलाग्र (खड्ग) ‡ विरहाग्नि § भयंकर ¶ दाड़िम के कणों के समान कायरों का पानी उतर कर वीरों को चढता है ॥ ८६ ॥ १कवच गिरते हैं २मार्ग और बिना मार्ग ३ बहुत कपाल ४ भार ५सर्प (शेष) को ६ अंधक राक्षस रूपी आमेर के राजा ईश्वरीसिंह को मारने के लिये ७ शिव रूपी तांत्या गंगाधर गया ॥ ८७ ॥ ८क्रोध करके ९ सूर्यमल्ल जाट बीच में होकर १० ईश्वरीसिंह इन की आड में चंदोल में (पीछे) हुआ ११ अट्टाट्टहास्य करके १२ अग्निकण १३ अर्जुन के सदृश ॥ ८८ ॥

मरहट्ठों ी सीकर नाहकौं, तीन३ कठिन तरवारि ॥
ुमर गिरे घायल त्रिसय३००, मरे सट्ठि६० बहु मारि॥८९॥
न लखिसक्यो घन अंतरित, अक्कहु पहुँच्यो अस्त ॥
तब मुरि मुरि भट उत्तरे, सिविरैन निर्जन समस्त ॥ ९० ॥
कमलपत्र लगि संकुचन, घूकन मंडिय घोर ॥
ायंकृत्य बिधान सब, रचन लगे दुहुँ ओर ॥ ९१ ॥
अक्कर१ माधव२ इहु२हू, करि कालोचित कर्म ॥
ट्ठि बहुरि लैलै असन, मिले कहन रन मर्म ॥ ९२ ॥
कति मरहट्ठ प्रसारकौं, बिचरे पुब्बहि बीर ॥
मग जैपुर तिन कौं मिली, आवत रसति अधीर ॥ ९३ ॥
ताकी संग जु हे तिनहिं, आनैं गहि बल अंत ॥
हुलकर सन अक्ख्यो हुलसि, आपन रसति उदंत ॥ ९४ ॥
जब हुलकर जे रसति जन, आनैं अंननि उतारि ॥
श्रवन१ नक्क२ तिनके सरिसें, बट्टि रु दिन्न बिडारि ॥ ९५ ॥
करन बंध मग रसति क्रम, इत मलार किय एह ॥
पंच सहँस५००० दल उत पिल्यो, खुरन बिथारत खेह ॥९६॥
संभरपुर लग तिहिं सजव, ढुंढाहर लिय लुट्टि ॥
इम जैपुर जनपद असह, फोजन हौरव फुट्टि ॥ ९७ ॥
इत बगरू निसैं आगमन, हुलकर पैं छल हेरि ॥
कूरम नहिं कढिजानकौं, दियउ छवीनौं फेरि ॥ ९८ ॥

मिघ मेघ से छायाहुआ २ सूर्य भी उस युद्ध को नहीं देख की संस्ताचल को पहुंचा ३ डेरों में ४ अपने सब लोगों सहित ताते। ५ समय के उचित कार्य ६ भोजन ॥ ९२ ॥ ७ तृण काष्ठ लकड़ी) आदि लाने को ८ पहिले ही गये थे ॥ ९३ ॥ ९ वृत्तान्त रसद लानेवाले लोकों को गाड़ियों से उतार कर लाये ११ क्रोध सहि- और नाक काट कर निकाल दिये॥९५॥ सेना १२ भेजी ॥९६॥ १३ देश में ाकार शब्द ॥ ९७ ॥ १५ रात्रि के आने पर १६ शत्रु का छल देख कर ीसिंह नहीं भागजावै इस कारण ॥ ९८ ॥

जामिक[1] जन जागत रहे, सेन इतर[2] रहि सोय ।
इहिं अंतर अंभून[3] उफनि, तूटन लग्गे तोय[4] ॥ ९९
पानी छुट्टत उदयपुर, आनि चमक्किय अक्क[5] ॥
कालोदित[6] उठि कृत्य करि, चढे बहुरि हुव चक्क ॥

॥ षट्पात् ॥

हुलकर इत हय चढिय व्यूह[9] कंकट करि निज बल
उत जैपुर अधिराज चढिग गजराज चलाचल ॥
ए उत्तर मुख अडर वे सु दक्खिन मुख ओपत ॥
खुंदि धरनि खर खुरन उरन आयुध आरोपत ॥
झरि बाढ बाढ दव गाढ झगि छिति उल्मुक[13] लगि उच्छ
गांडिव बजाय डारिय गजब जनु[13] पांडव खांडव ज्वलन[14]॥१

॥ दोहा ॥

ततेकौं करि मुख्य तहँ, समर भार धरि सीस॥
इक्क अनी चंदोल[15] पर, पठई हुलकर ईस ॥ १०२ ॥
जैपुरपति चंदोल जहँ, हे नारव[16] कछवाह ॥
गंगाधर तिन बिच गरजि, प्रबिस्यो प्रचुर[17] सिपाह ॥१०

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर धसि गयउ काटि चंदोल नरूकन ॥
किन्नें टूकन टूक कुंत असि सर बंदूकन ।
कतिक बचे भाजि कढिय उदधि[18] कूरम दल अंतर ॥
मकर अग्ग जिम मीनें[19] त्रसित तिम लखत दिं[illegible] समा[illegible]

---

१ पहरायत २ अन्य ३ मेघ जड़ कर ४ जल गिरने लगा॥९९॥ ५ उदयाचल है २ [illegible] ॥ ७ उदय समय के कार्य ८ चक्र (सेना ॥ १०० ॥ ९ व्यूह रचना [illegible] कवच युक्त की ११ चलाते हुए पर्वत के समान हाथी पर १२ अंगारे [illegible] अग्नि) १३ मानों अर्जुन ने खांडव वन में १४ अग्नि डाली ॥ १०१ ॥ १५ पीछे सेना पर ॥ १०२ ॥ १६ नरूका १७ बहुत सिपाहों से ॥ १०३ ॥ १८ कछव समुद्र रूपी सेना में नगर (घड़ियाल) से १९ मच्छी डर कर जावै तैसे.

क़ूरम हरोल केतनं द्विरद जिहिँ अग्गैं कटिगय सजव[2] ॥
तंते तुरंग तते तमकि भयो अरिन बिच प्रलय भवँ॥१०४॥

॥ दोहा ॥

सेना अंतर व्यूह बिच, लुट्टे सकट सलील[5] ॥
ख्वां तोपन कानमैं, कठिन अयोमय[6] कील ॥ १०५ ॥
ज्यैंपो कटक तंते मरद, मनु गोपी दधि मट्ट ॥
क़ूरम लखि बुँल्ल्यो चकित, जब हरोल सन जट्ट ॥१०६॥

॥ षट्पात् ॥

तबहिं जट्ट रविमल्ल पलटि आयो सहाय पर ॥
जिम गज संकट जानि चपल पन आनि चक्रधर ॥
अडर भरतपुर ईस तिमहि हंक्यो रन तंडंत ॥
मंडत आयुध मेह खूब खंडन अरि खंडत ॥
अति जोर हरत मरहट्ठ[10] असु रोरें[11] करत खगराज रँय[12] ॥
[13]हैंनन प्रहार लघु तूँल[14] बिधि गंगाधर सु पलाँय गय ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

सह्यो भलैंही जट्टनी, जाय अरिष्ट[16] अरिष्ट ॥
जिहिँ जाठरं[18] रविमल्ल[19] हुव, आमेरंनको[20] इष्ट ॥ १०८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूरजमल्ल सजोर मुंररि मारे मरहट्ठे ॥
मिलत बँभ्रु[21] फन मेटि नाँग[22] आतुर गति नट्ठे ॥

दूसरे की सेना में निशान के हाथी थे जिन से भी आगे चढ गये २शीघ्र ३गंगाधर प्यादे ताते घोड़ों को खींचकर ४शिव ॥ १०४ ॥ ५ लीला (खेल) सहित ६ ले- बढार कीलें ॥ १०५ ॥ ईश्वरीसिंह ने चकित होकर सूर्यमल्ल जाट को हरावल साथ बुलाया ॥ १०६ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ गर्जना करता हुआ १० प्राण कर भय १२ गरुड़ के वेग से १३पालखा के प्रहार से तुच्छ १४रूई की भांति १५ हु गया॥१०७॥ हे जाटनी तू ने १६सूतिकागृह (जापे के घर) में जाकर भले ही १७ ... रेष्ठा कि जिस के १८ उदर में १९सूर्यमल्ल २०आमेरवालों का इष्ट हुआ ...ों के साथ विष्णु भगवान् की फेट होते ही २२काली नाग

परे कुआपै पंचास५० अष्ट उत्तर सत१०८ घायल ॥
दीनों दक्खिन ठेलि तुमुल[2] कीनों रिस तायल[3] ॥
भय टारि नरूकन थप्पि थिर पुनि कूरम चंदोल पर ।
हरवल्ल अप्प आयउ हुलसि मिहिर[4]मल्ल गहि जय गुमर[5]चक्क

॥ दोहा ॥

बहुरि जट्ट मल्लार सन, लरन लग्यो हरवल्ल ॥ निज बल
अंगद ह्वै हुलकर अर्यो, मिहिर[6]मल्ल प्रतिमल्ल मल्ल ॥
रदन[7] मध्य रसना रहत, इम संकट कछवाह ॥
अंतर चाहत साम[9] अब, लेत न रन जय लाह ॥ १११ ।

॥ षट्पात् ॥

धरनि फट्ट धसमसत कंपि कसमसत कुलाचल[10] ॥
दिस दिस लोहित[11] लिपत दिपत जुज्झत दोऊ दल ॥
इहिं अंतर आसार[12] प्रचुर पुनि रचिय पयोदन[13] ॥
चहलपहल[14] चतुरंग दहल[15] पानिय चहुँ४कोदन[16] ॥
बुल्ल्यो मलार तहँ दुव२ नृपन पर अप्पन नहिं सुधि परत
तुम अलप सत्थ मम ढिग रहहु भटन भिन्न रक्खहु लरत ।११२।

॥ दोहा ॥

बुंदियपति१ यह सुनि बचन, सत१०० सादिय[17] लिय संग ॥
हरजन२ इतर[18] अनीकलै, रह्यो भिन्न रुपि रंग ॥ ११३ ॥
हयसत१०० रक्खे माधवरहु, लै इतरन जय लीन ॥

आतुर होकर आगा तैसे भगे १ मुरदे २ भयंकर युद्ध ३ क्रोध में तपा हुआ ४ सूर्यमल्ल विजय का ५ घमंड करके ॥ १०९ ॥ ६ सूर्यमल्ल से प्रतिमल्ल मल्हार राव लड़ने लगा ॥११०॥ ७ दांतों के घेरे में जीभ रहै तैसे ईश्वरीसिंह से घेरे में रहा ८ मन में ९ साम उपाय (मिलाप) ॥ १११ ॥ १० पुराणों के मत से जिस पर्वत का पृथ्वी के चारों ओर घेरा है उस का नाम कुलाचल है ११ रुधिर से पोती हुई दीखती है १२ बहुत मेघ धारा १३ मेघों ने १४ सेना पंक से भीग कर तर होगई १५ पानी का भय १६ चारों दिशाओं में हुआ ॥ ११२ ॥ १७ असवार १८ अन्य सेना को लेकर ॥ ११३ ॥

सिवाई२हु सिवब्रह्महर, कुम्भ पृथक रन कीन ॥ ११४ ॥
लँव१ सिवा१ अरु टोडरी१, अधिप मिले त्रय३ आनि ॥
तिन्ह गोगाउत प्रेम३ लै, पृथक जुरयो असि पानि॥११५॥
एक१ हड्ड कूरम उभय२, अनुक्रम बंटि अनीक ॥
स्वामिन हुलकर संग करि, मंड्यो पृथक समीक ॥ ११६ ॥
ज्योंहिं उदैपुर२ जोधपुर१, कोटा३ के दल३ क्रुद्ध ॥
भिन्न भिन्न रहिकैं भिरे, जैपुरपति सन जुद्ध ॥ ११७ ॥
हुलकरढिग दुव२ भूप रहि, तुमुल रच्यो गहि तेग ॥
पानी आयुध पैजे करि, लुट्टन लग्गे बेग ॥ ११८ ॥
भीजी पग्घ सु दूर करि, दै आबिक पट टोप ॥
हुक्का पीवत हुलकरहु, कलह खरो अति कोप ॥ ११९ ॥

॥ मत्तमृगेन्द्र ॥

खिल सतरंजकी सारि अनुकारँ मल्लार१ निज बीर अग्गैं बढावैं ॥
[illegible]हु१ प्रतिमल्ल हरवल्ल रचि हल्ल हमगीर बरनीर बुंदी चढावैं॥
[illegible]डु सामंतहर नाम हरजन२ सु नृप सचिव लै सेन इक ओर जुज्झैं॥
[illegible]घ आसार१ भयकार अंधार मिलि अप्पन रु पार नहिं नैंक सुज्झैं१२०
सेवाईसिंह१ कछवाह सिवब्रह्महर माधवामात्य इक ओर जुट्टे ॥

[illegible]शिवब्रह्म के वंश वाला ॥११४॥२लांवा और सेवा ये दोनों नगरों के नाम हैं ॥ [illegible]सिंह ॥ ११५ ॥ जुदा ४ युद्ध रचा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ५होड (प्रतिज्ञा) करके [illegible]८ ॥ ६ ऊन वस्त्र का ॥ ११९ ॥ जैसे सतरंज के खेल में एक प्यादी के दूसर[illegible] का जोर बना रहता है तब वह आगे बढती है (जोर बना रहने से अगली प्याद[illegible] मारी नहीं जाती) इसीके ७ सदृश मल्लार ने अपने वीरों को आ[illegible]के बढायें [illegible] [illegible]डा उमेदसिंह ८ उद्धत मल्ल होकर हरोल में (आगे) हिम्[illegible] साथ [illegible] [illegible] करके बुंदी को श्रेष्ठ नीर चढाता है और सामंतसिंह के [illegible] हरजनरा[illegible] [illegible]क हाडा उमेदसिंह का सचिव सेना लेकर एक ओर [illegible] ९ मेघ [illegible] [illegible]धारा से १० भयंकर अंधेरा होकर अपना और पराया [illegible] [illegible]२० ॥ ११ माधवसिंह का मंत्री शिवब्रह्मपोता सेवाईसिंह

तीन ३ कछवाह खंगारह लैरु इत गोगेहर प्रेम२ करवालें कुट्टैं ॥
रान जगतेस कँटकेस इत संभु१ अरु साहिपुर भूप उम्मेद२ रुप्पे
सचिवि गुलाब३ अरु देवगढ कंत जसवंत४ पुनि बेघम पँ मेघ५
कुप्पे ॥ १२१ ॥

जोधपुर सेनपति सेर१ अरु सेर२ मनरूप३ कल्यान४समसेर झा
यौं अखैराम१ कोटेस कटकेस रन मेंस मन सेस फन पेसि
कुंत असि हत्थ मिलि बत्थ कौंति सत्थ गाति पंत्थ तैंति मत्थं वखा
व अँत्थ अप्पैं ॥
भीम अनुकौंरि गज पारि धक धारि कति मारि तरवारि थि
रारि थप्पैं ॥ १२२ ॥

नीर अरु छीर निभ धीर कति बीर हमगीर मिलि तीरंकरि भीरटा
काल बिकराल कति ज्वाल दग लाल अरि साल भरि फाल ग
जढालें ढारैं ॥
भीरु भय देत गिलि गोदं पल लेत अति हेत करि खेत बिच प्रेतन

एक ओर लड़नेलगा तीन १ खंगारोत कछवाहों को लेकर २ इधर गोगाव
प्रेमसिंह ३ तरवार मारनेलगा राणा जगत्सिंह के ४ सेनापति शंभुसिंह औ
शाहपुरा का राजा ५ उमेदसिंह ये दोनों इधर खड़े हुए ६ राणा के सचिव क
पुत्र गुलाबसिंह और देवगढ का पति जसवंतसिंह ७ बेघम का पति मेघसिं
ये सब क्रोधित हुए ॥ १२१ ॥ जोधपुर की सेना का पति शेरसिंह दूस
मनरूप और कल्याणसिंह ये सब तरवार मारने लगे इसी प्रकार कोटा के
का सेनापति अखैराम युद्ध में ८ मैंदे के समान होकर अपने मन से शेष
के फणों को ९ पीसने लगा १० भाले और तरवारें हाथों में लेकर ११
वाथों के साथ मिलकर १२ अर्जुन की भांति १३ माथों की पंक्ति
देते हैं और कितने ही भीमसेन १४ सदृश हाथियों को गिरा तपाछु
आतु गार मार कर स्थिर युद्ध को स्थापन करते हैं ॥ १२२ ॥ तिमह
सूर्यमल्ल होकर पानी और दूध के १५ सदृश मिलते हैं और सिंह से
शान लक टाते हैं कितने ही भयंकर काल के और अग्नि के समानों के
घेरे में रहा ओं के लाल होकर १८ मलंग लगाकर १९ हाथियों की ध्वजा
से जिस पर्वत अत्यंत स्नेह करके २० मज्जा और मांस लेकर प्रेत युद्ध
रुधिर से पोती
से भीग कर तर
लवार १८ अन्य

स ताजि आस जिय स्वास हिय लास करि खास रन रास न-
र नास मच्चैं ॥ १२३ ॥
ोर च[1]ोर अति घोर बरजोर रचि सोर तँचि[3] दोर भटमोर सज्जैं
ोहँ[4] घद्रोह झलि कोह[5] कैलि छोह छलि जोहँ[6] संदोहँ[7] बहु
लोह बज्जैं ॥
कड्ढ बलि सिद्ध लगि लिद्ध बिनु संक पंख पंक बिच
कंक कुद्दैं ॥
…लैन सुरैं न रन औनँ[12] कति बैन थकि नैन मुद्दैं १२४
बिच लोहँ[13] को[14] भुव नेह पुनि मेहँ[15] बिच मेह बिनु छेह छुट्यो
ं घन पाज गुरु[16] खप काज व्रजराजपर जानि सुरराजँ[17] रुट्यो
ः श्रुति धारि नृपरुद्धुरितारि अति बारि[20] करि रारि तरवारिरुक्की
छपद मास आरिद बिलास पंखलास[22] नव ग्रास मय आस
मुक्की[23] ॥ १२५॥

॥ दोहा ॥

…रमैं यों तँहँ प्रचुर रूर, परयो अचानक आय ॥

…आस को छोड कर जीव की आशा से हृदय के भीतर श्वास १
…है और युद्ध के खास नृत्य में मनुष्यों का नाश होता है ॥ १२३ ॥
…पूर्वक २ चारों दिशाओं में भय रच कर ३ बारूद में जलकर
…दौड़ चलते हैं ४ घेरा घाल कर द्रोह को झेल कर ५ युद्ध में
…करके, क्रोध में उभल कर ६ जोधों (वीरों) के ७ समूह बहुत
…हैं ८ बहुत गिद्ध तैयार हुए ९ बलिदान को हैं और १० मांस
…निडर कंक पक्षी कूदते हैं दोनों सेना की ११ पंक्ति जय लेने के
…से नहीं छुड़ती और कितने ही वीर १२ मार्ग में वचन थक कर नेत्रों
…रते हैं ॥ १२४ ॥ इतने में १३स्वाद लेकर १४भूमि की सेभ पर १५शस्त्रों
…अछेह मेह बरसा सो मानों मेघ की पाज बांध कर १६बडी गर्जना
…ने को व्रजराज पर १७इंद्र ने क्रोध किया सो हे १८ पाप के शत्रु
…सिंह सुनो कि अत्यंत १०पानी से तरवारों की लड़ाई रुकगई इस
…भादवे में मेघ के विलास से २२ मांस की आशावालों ने नई
…समय आशा २१ छोड़ी ॥ १२५ ॥

सूरन सय[1] अरु हयन पय, भये चलत जड़ भाय ॥ १२६

रोकि रैटक[2] तब दुवर कटक, पत्ते सिविरन[3] निष्टि

अमित भटन छोरी सजवें, असि मुष्टि रु हय पि

छट्ठी[6] दिवस बिताइ इम, बहुरि बिताई रत्ति ॥

दक्खिन दल सप्तमि[7] दिवस, सजन लगे पुनि र

एह सुनत आमेरपति, व्याकुल किन्न बिचार ।

मरहट्ठन रोकी रसति, मंड्यो प्रसभ[8] मलार ॥

जनक लई सँधा करि जु, देय सु बुंदी न

गंगाधरकोँ सुल्क[9] दै, मोरहु अप्पन

कूरमपति यह मंत्र करि, खत्री के

दम्म बहुत तस संग दै, पठयो तंते

राजामलसुत जाय तँहँ, गंगाधर लिय फो

दई सौंक छन्नैं दुलभ, माया करि मन मोरि ॥ १

अरु अकल्ली तुमरे लगे, फोज खरच जे दम्म ॥

दैहैं नृपतिनतैं द्विगुन, करहु साम हित कम्म[10] ॥

बुंदीकी बत्त न बदहु, भरि धन सकटैं[11] सुभाय ॥

कुंच करावहु कटकके, हुलकर पति समुझाय ॥

गंगाधर यह सुनि गयो, खर जैंर[12] जूती खाय ॥

कह्यो मलारहिँ कुम्भ पति, बहु धन देत सिटाय

अब न सुनहु उम्मेदकी, लेहु अतुल बँसु लाह[13] १

जग कहिहैं हुलकर जबर, दंड्यो जैपुर नाह ॥ १३

हुलकरकी यह सुनत हुव, बिगरि बुद्धि बिपरीत ॥

हाथ ॥ १२६ ॥ २ युद्ध करना ३ डेरों में कठिनाई से प्राप्त हुए ४ ... सप्ति (घोड़े) ॥ १२८ ॥ ५ छठ ॥ १२९ ॥ पिता (जयसिंह) ने ७ प्र... यह बुन्दी ८ देने योग्य नहीं है ९ रिसवत देकर ॥ १३० ॥ १३१ ... कार्य ॥ १३३ ॥ ११ श्रेष्ठ रीति से छकड़े भर कर ॥ १३४ ॥ ... अन्य ... गया ॥ १३५ ॥ १३ धन का लाभ ॥ १३६ ॥ १

धरन लग्यो गनिका धरम, जानी अप्पन जीत ॥ १३७ ॥
ीर चहुँ४ अ ...नि द्वैसत२०० सुभट पति, बालकृष्ण द्विज बीर ॥
ोहैं घलि ...आकर सयन निकाय को, जामिक जंपैं धीर ॥१३८॥
...याके दलबिच प्रकट, करि करि गुंमर मलार ॥
कहुँ गि ...म कहि आये नन्हतैं, लोभी कितव मलार ॥ १३९ ॥
...ी संधा करि चलिय, कैसो मंत्र बिधाय ॥
...ों तुमकों संतत, हैं धिक हुलकर राय ॥ १४० ॥
...५२ लैन ... करज किय, रचि दल बीस हजार२०००० ॥
बिच लेहैं करिसे ... मेदकों, खुल्ले बिनुहि बिचार ॥ १४१ ॥
... घन पाज गुरु गाज ... भु नन्हसों, नीचे करिहो नैन ॥
... श्रुति धारि नृपरामें ... तुमहिं, लोभ देत कछु लैन ॥ १४२ ॥
... पद मास इस ... अप्पन ताको कह्यो, धारहु नन धरि धीर ॥
...ह पूरबिया यह कहत, बलहि सिराहयो बीर ॥ १... ॥
...मन गो पलटि मलारको, लग्गत बचन प्रतोद ॥
...तेकों बुल्लि रु त्वरित, बुल्ल्यो लरन बिनोद ॥ १४४ ॥
... करत ...नि गंगाधर वह कितव, तजिहैं बुंदिय देस ॥
...कर चल्यारि४ अनुज हित परगनैं, दैहैं कुम्भ नरेस ॥ १४५ ॥
...ों के ...दीसहिं बुलवाय पुनि, ताके डेरन जाय ॥
...प्रेष्यजाते ...१ तखत दुव२ बैठिहैं३, सँम सतकार बिधाय ॥ १४६ ॥
... ...का उचित निवेदिहैं४, कहि कहि नृप उपटंक ॥
दूसरे ... तो अप्पन दल कुंचहैं, नहि तो जंग निसंक ॥ १४७ ॥
...सभी अंखि निहारि तव, तंते त्रसित बिसेस ॥

साथ ... के घर का २ पहरायत बोला ॥ १३८ ॥ ३ घमंड ॥ १३९ ॥ ४ प्रतिज्ञा ... करते हो ६ प्रतिज्ञा को ७ निरंतर ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ ८ ... ९ सेना ने उस की प्रशंसा की ॥ १४३ ॥ वचन रूपी १० चाबुक ... ११ बुलाकर ॥ १४४ ॥ १२ हे ठग १३ माधवसिंह के अर्थ ॥ १४५ ॥ ... ४ बराबर का १५ करके ॥ १४६ ॥ १४७ ॥

अक्खी केसवदाससौं, करहु मलार निदेस ॥ १४८ ॥
सुनि खत्री निज स्वामिकौं, जबहि सुनाई जाय ॥
हित माधव१ उम्मेद२को, करनौंही अब न्याय ॥ १४९ ॥
कोपत हुलकर भिनु करैं, अंखिन धकत२ अलाव ॥
रसति बंध पहिलैं करी, अब प्रानन पर दाव ॥ १५० ॥
ईश्वरिसिंह सिटाय सुनि, भयो अमासस३ि भाय ॥
गंधनकुल४ को ग्रास करि, उरग५ जानि अकुलाय ॥ १५१
सबहि वत्त स्वीकृत करिय६, जैपुरपति भय जानि ॥
संधि बिधाय मलार सन, मिलन बिचार प्रमानि ॥ १५२ ॥
अक्खी केसवदाससौं, सब उनकी स्वीकार ॥
अब कछु अक्खी७ अप्पनी, मानहु वत्त मलार ॥ १५३ ॥
हुलकर१ अरु हमर२ लोगकी, वत्त समच्छ८ करैंन१ ॥
जो कहनी सु वकील जन, बदैं परोक्ष९हि बैन ॥ १५४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अपनैं डेरन प्रथम दहु१ हुलकर१ दुव२ आवैं ॥
पलटि पग्घ मल्लार हमहिं बड मित्र बनावैं३ ॥
कुंच करनके काल बंबं१० पहिलैं तिन्ह बज्जैं४ ॥
पिच्छैं हमहि चढाय चढहु इम वेहु न लज्जैं११ ॥
सुनि केसवदास मलार सन कहिय आनि कूरम कथित१२॥
हुलकर समस्त स्वीकार करि चाह्यो मिलन प्रसन्न चित ।१५५।

॥ १४८ ॥ १४९ ॥ माधवसिंह और उमेदसिंह का हित १ नहीं करने से हुलकर क्रोध करता है २ नेत्रों में अग्नि जलती है ॥ १५० ॥ ३ अमावास्या के चन्द्रमा के समान ४ छछुंदरी को पकड़ कर ५ सर्प घबरावै, तैसे (छछुंदरी को पकड़ कर छोड़ देने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है) ॥ १५१ ॥ ६ करके ॥ १५२ ॥ ७ हमारी कही हुई ॥ १५३ ॥ ८ रोबरू ९ पीठ पीछे कहै ॥ १५४ ॥ उनका१० नगारा पहिले बजै ११ लज्जित नहीं होवैं १२ ईश्वरीसिंह का कहा हुआ ॥ १५५ ॥

सप्तमि७ अष्टमि८ नवमि९ दसमि१० एकादसि११ बित्ती ॥
द्वादसि१२के दिन मिलन थप्यो हुलकर करि कित्ती ॥
दल सन तंबू दूर तवहि इक्क१ कुम्भ तनायो ॥
मंत्र केखिक्कोर२ पृथक्क मंडि अप्पहु तँहँ आयो ॥
दै पिट्ठि इक्क१ तकिया दरित पृथुल दिलीचा रुचिर पर॥
परिखद बनाय जयसिंह सुव बैठो लै ढिग सुभट वर ॥१५६॥

॥ दोहा ॥

इत हड्ड६ रु हुलकर२ उभय२, सुपहु भीरि सन्नाह ॥
मिटन जैपुर भूपकौं, बिदित चले चढि बाँह ॥ १५७ ॥
लये उदैपुर१ जोधपुर२, कोटा३के भट संग ॥
उभय हत्थमैं हत्थदैं, जीति पधारे जंग ॥ १५८ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

तंसे गंगाधर१ सेटू खइराड़१ संतू बाउला१ तीनौं३ही हुलकरके उमराव हरोल भये ॥
अरु विजयके मदमत्त चोतरफ आतंक डारत तमासगीर लोकनकौं हटात गये ॥
प्रथमतो उदैपुर१ जोधपुर१ कोटा१की सेनाके सिरदार दोय२ दोय२ मल्लारनैं मिलिबेकौं अनुक्रमतैं पठाये ॥
तब साहिपुराधीस रानाउत उम्मेदसिंह१ देवगढनाथ चुंडाउत राउत जसवंतसिंह२ बेघमपति चुंडाउत राउत मेघसिंह३ सनवाड़पति सेनानी भारतसिंहको कनिष्ठ सोदर रानाउत संभूसिंह ४ प्रधान भवानीदासको पुत्र गुलाबसिंह५ त्यौंही रध्याँ पति दूदाउत्त मेरतिया रट्ठोर सेरसिंह१ उद्दाउत्त रट्ठोर सेरसिंह२ कल्याणसिंह ३

---

१ ईश्वरीसिंह ने २ सलाह करने का डेरा जुदा रचा ३ केवल ईश्वरीसिंह की पीठ से दबाहुआ एक तकिया लगा कर ४ बडे सुंदर दलीचे पर ५ सभा ॥ १५६ ॥ ६ कवच कस कर ७ घोड़ों पर चढकर ॥ १५७ ॥ ८ मल्लार और उम्मेदसिंह दोनों हाथ में हाथ देकर॥ १५८ ॥ ९ भय १० छोटा सगा भाई

भंडारी मनरूप४ तथा वख्सी कायस्थ अखैराम१ इत्यादिक ईश्वरीसिंहतैं सत्कारसहित मिलि आये ॥ १५९ ॥

दोहा—तदनंतर नृप छह्१ अरु, हुलकर२ करि हथजोरि ॥
प्रविसे प्रतिसीरा वलज[2], तरल[3] तुरंगन छोरि ॥ १६० ॥
जुरत दिट्ठि जै नृपतिहू, हुलसि उठ्यो करि हेत ॥
सम्मुह पायँदाज लौं, आयो विनय[4] उपेत ॥ १६१ ॥
मत्थैं हत्थ लगाय मिलि, मोद परस्पर मानि ॥
इक्क दिलीचा ऊपरहि, इम बैठे अप्प आनि ॥ १६२ ॥
ईश्वरिसिंह१ प्रतीचि मुख, प्राची मुख ए दोय२ ॥
कछुक काल संलाप[6] करि उठे जोह सब धोय ॥ १६३ ॥
मंत्र[7] कोठिका माँहि पुनि, प्रविसे त्रय[8]३ द्वय२ पास ॥
हुलकर१ कूरम२ छह्३ अरु, तंते१ केसवदास२ ॥ १६४ ॥
बुंदीपति प्रति उच्चरिय,जैपुर भूपति जत्थ[9] ॥
दूर रहो कछु कालतो, मंत्र रचैं इम अत्थ ॥ १६५ ॥
तब नृप बुल्ल्यो करत तुम, मरहट्ठी संलाप[10] ॥
मैं अबोध[11] अनभीत[12] मैं, निर्धरक[13] मंत्रहु आप ॥ १६६ ॥
अखिल पहँ इ तत्थहि रह्यो, संभरराज स्वतंत्र ॥
केसव१ कुम्भ१ मलार१ किय, मरहट्ठी बिच मंत्र ॥१६७॥
तदनु[14] पग्ग निज कुंकुमी[15], लैकैं हुलकर ईस ॥
हीरनके सिरपेच जुत, धरी कुम्भ नृप सीस ॥ १६८ ॥

॥ १५९ ॥ १ कनात के २ कोट में घुसे ३ चपल घोड़ों को छोड़कर ॥ १६० ॥ ४ नम्रता सहित ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ ५ पश्चिम दिशा में मुख करके रहा और ये दोनों पूर्व दिशा में मुख करके साम्हने बैठे ६ वार्तालाप ॥ १६३ ॥ ७ मंत्र करने के डेरे में ८ तीन राजा और दो पासवान (पास रहने वाले) ॥ १६४ ॥ ९ यहाँ ॥ १६५ ॥ १० मरहठी भाषा में वार्ता करते हो जिस को ११ नहीं समझता १२ और इस भाषा को नहीं पढा १३ निर्भय सलाह करो ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १४ जिस पीछे १५ केसर के रंग की ॥ १६८ ॥

हुलकर सिर अपनो धरी, त्योंही कूरम राय ॥
धरिय रक्खि दोउन दई, उज्जन माँहिं धराय ॥ १६९ ॥

मराय१ धराय२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

इतर कुसुंभी१ कुम्भ२ धरि, निसद१ पग्ग मल्लार ॥
अंत्र निलय बिच मित्र हुव, इम दुव२ मुदित अपार ॥ १७० ॥
च्यारि४ परग्गन माधवहिं, बुंदी नृपहिं दिवाय ॥
हुलकर कूरम हत्थको, लिन्नों पत्र लिखाय ॥ १७१ ॥
बहुरि चले उठि सिक्ख करि, हुलकर१ अरु चहुवान२ ॥
कूरम पायंदाज तक, चल्यो तबहु पहुँचान ॥ १७२ ॥
इम प्रविसे दोऊ२ अहर, निज निज डेरन आय ॥
कहि पठई दूजे२ दिवस, कुम्भहिं हुलकर राय ॥ १७३ ॥
अब बुंदीपतिके, अरध, भेजहु टीका भूप ॥
सुनि यह लिय जयसिंह सुव, पुनि अभिमान अनूप ॥ १७४ ॥

पादाकुलकम् ॥

कूरम पच्छो एह कहाई, मिटन तुम आवे यँहँ भाई ॥
तबतो वे आये तुम पिच्छैं अब उमेद आवन हम इच्छैं ॥१७५॥
सुनि इह१रु हुलकर२हठ साह्यो, बेर इक१आवन निरबाह्यो
तुमहिं उचित आवन अब तातैं, दिवस भयो इक१राह दिखातैं ॥
यह साहस दुहुँओर बढ्यो अति, पृथक तनाय थूल बुन्दीपति ॥
रह्यो तहाँ कूरम मग हेरत, टरत जात दिन टेरत टेरत ॥१७७॥
बीच भयो तंते बिसटालो, घरबिधि वत्त कुम्भ श्रुति घालो ॥
कुम्भ कही सुनिपे गंगाधर, अब जो तुम आनहु यँहँ संभर १७८
तब भवदीय हितूपन जानैं, मल्लारहु उचितहि जो मानैं ॥

॥१६९॥ईश्वरीसिंह ने तो१कसूमल (कसूंबे के रंग की दूसरी प्रगड़ी पाँधी) २श्वेत ३ सलाह के स्थान में ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ ४हे भाई ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥५हठ जुदा६डेरा तनवा कर७बुलाते बुलाते ॥ १७७ ॥८आपका

गंगाधर दुहुँ२ओर खिसानौं, इत उतके संकुच[1] अकुलानौं ॥ १७९ ॥
अंबुज[2] मनहुँ तरनि अर्द्धोदय[3], अरध कपाट खुल्यो जिम आलय[4] ॥
सोवत कछु कछु जगत स्वप्न सम, बानिक[5] बयससंधि[6] बनितोपम[7] ॥
तंते रह्यो पंच५ दिन ऐसैं, कहैं तोरि हित इत उत कैसैं ॥
गंगाधर कर जोरि छठे६ दिन, अक्खी नृपहिं सुनहु संभर इन[8] ॥१८१॥
सेवक अरज मन्नि हित सत्थैं, इक आसान करहु मम मत्थैं ॥
जैपुरपति केवल हठ जानैं, प्रीति रीति नहिं जड़ पहिचानैं ॥१८२॥
बहुरि तुम्हैं निज सिविरैं[9] बुलावत, उत्तर ताको सोहि न आवत ॥
अक्खी नृपति जाय हम आये, लुप्पि ताहि क्यौं पुनि हठ लाये१८३
उचित नाँहि पुनि पुनि जीवन अब, वरजत हुलकर आदि सुमति[10] सब
यह सुनि विप्र नयन जल आयो, द्यूत ठग्यो सो दीन दिखायो१८४
निगरनतैं[11] श्रुति[12] स्वपच[13] निकासी, पर्यो कि हरिन किरातन[14] पासी
तंतेकौं इम देखि दुखित तब, अधिपति हृदय सदयतर[15] भो अब१८५
दयाराम१ निज बुद्धि पुरोहित, चारन महडू दान१ ज्ञान चित ॥
भेजे दुव२हुलकर ढिग भूपति, अक्खी द्विज तंते सकुचत अति १८६
पुनि कूरम ढिग हमहि पठावत, यह द्विज नम्र दुखित अकुलावत ॥
कूरम हठ लखि हम हठ साहैं, दुक्खित द्विज लखि जावन चाहैं१८७
कहिय रुचत तुमहीं अब कैसी, तंते तकत दीनता ऐसी ॥
सुनि हुलकर उत्तर तब दिन्नौं, जावहु जो कितवन[16] हठ किन्नौं१८८

१ संकोच से ॥ १७९ ॥ ३ आधा सूर्य उदय होते समय २ कमल होवै तैसे ४ घर ५ बनाव ६ बालपन के जाने और यौवन के आने की संधि में अर्थात् वय संधि के बनने पर ७ स्त्री के समान ॥ १८० ॥ ८ हे चहुवाणों के पति ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ ९ अपने डेरे पर ॥१८३॥१० श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ १८४ ॥११ गले से१२वेद को १३ चांडालने निकाला अर्थात् जैसे चांडाल अपने गले से वेद का उच्चारण करके (अधिकारी नहीं होने के कारण) अथवा छंदरत्नावली में होम के धूम को निगरण लिखा है सो चांडाल होम करके संकट में पड़े तैसे१४भीलों की पास में १५अत्यन्त दयावान् ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ ॥१८७॥१६ठगों ने ॥१८८॥

यह सुनि द्विज१चारन१जुग२आयो, नृपकोँ हुलकर *कथित सुनायो।
सुनि चहुवान सेन निज साजी, कसि कटिबंध चल्यो चढ़ि बाजी ॥ १८९ ॥
संग भये हुलकर भट सारे, †बाड़व पर दल सिंधु बिहारे ॥
ढुंढारे पिक्खन जन आये, धन्न्य धन्न्य कहि बिरुद बढाये ॥१९०॥
इम कूरम डेरन तोरॅन गय, प्रबिसन लग्गे तत्थ चढे हॅय॥
तबहि द्वारपालन कर जोरे, अक्खी अरज जात नहिँ घोरे ॥१९१॥
यह तोरॅन डोढी करि मानहु, अग्ग बहुरि डोढी नहिँ जानहु ॥
पाउसॅ१रन२ कारन दुव२पाये, यातैं रॅखत पुखत नहिँ लाये ।१९२।
अग्ग ईश्वरिसिंह बिराजत, जवनी ओट बीच नहि राजत ॥
बिराजत१ हिराजत२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
जावत तुरग चढेँ द्रग जुरिहैं, तो संकोच परस्पर घुरिहैँ ॥१९३॥
अँतर द्वार गिनहु इहिँ यातैँ, त्यागहु महाराज हय तातैँ ॥
सुनि नृप रीति निपुन तजि बाजी, प्रबिस्यो द्वार लियेँ भट राजी१९४
जैपुरपति भट अलप सत्थ जँहँ, तक्यो नृप सम्मुह परिखद तँहँ ॥
इक१जसवंत१झलायपति कुमर, अरु दलेल२धूलापुर ईश्वर १९५
मर१श्वर१अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥
तिम हरनाथ३ नरूका राउत, अजितसिंह४ कूरम सेखाउत॥
सुभट निकट इत्यादि छसातहि, जैपुरपति उठ्यो नृप जातहि१९६
पायंदाज अवधि सम्मुह सेरि, रीति उचित दुव२ हत्थ मत्थ धरि
सभा प्रबिसि अप्रतिहत सासन, बैठे उभय२ एकहि आसन।१९७।

* कहना ॥ १८९ ॥ † शत्रु की सेना रूपी समुद्र पर बड़वाग्नि रूप से चला ॥१९० ॥ १ बाहर के द्वार पर २ घोड़े पर चढा हुआ जाने लगा ॥ १९१ ॥ ३ इस द्वार को ४ वर्षा के और युद्ध के कारण ५ पुष्ट सामग्री ॥ १९२ ॥ ६ कनात की आड बीच में नहीं दीखती है ॥ १९३ ॥ ७ भीतर की डोढी ८ वीरों की पंक्ति ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ ९ चल कर १० नहीं रुकनेवाले हुकम से ॥ १९७ ॥

पान१ रु अतर२ निवेदि परस्पर, किय संलाप घटी इक१ हितकर
उठि करि सिक्ख भूप पुनि आयो, पहिलैं जिम कूरम पहुँचायो १९८
तंते तरँ्सु पठायो हुलकर, कूरम प्रति अक्खी तिहिं[२] दरबर ॥
अब टीँका नृप कुम्म पठावहु, पुनि बुंदीपति डेरन आवहु ॥१९९॥
सुनि टीँका पठयो तब कूरम, इक१ मद्दामृग[३] इक२ तुरंगम ॥
इक१ सिरुपाव इक१ मनि भूखन, पठये दै इम संग सचिव जन २००
तिन टीँका नृप अत्थ निवेदिय, संभर नाथ बिहसि स्वीकृत किय॥
दैन लगे बसुँ[४] कूरम दासन[५], सो न लयो रु गये जिम सासन[६] ॥२०१॥
दूजेर दिन कूरम भूम बाँधन, संभर सिविर गयो हित साधन ॥
अग्गैं रीति मिलनकी अक्खी, पद्धति सोहि अत्थ मिलि रक्खी २०२
दुव२ सिरुपाव दोय२ हय दिन्नैं, इक१ इकही जैपुरपति लिन्नैं ॥
मानिकराम व्यास नृपको तब, झुल्ल्यो हित[८] अर्पित रक्खहु सब२०३
तोहु न हत्थ द्वितीयन२ घल्ल्यो, अतर१ पान२ लहि कूरम चल्ल्यो ॥
हुलकर डेरन जाय मिल्यो पुनि, सुनत मत्त बुंदीन बिरुद धुनि ॥२०४॥
हितपूरब[९] बैठे इक१ आसन, सुख सह होन लग्यो संभासन ॥
कूरम तत्थ करार न राख्यो, लोभ उदंतै[११] समक्षहि[१२] भाख्यो ॥२०५॥

॥ दोहा ॥

कूरम नाम मलूक१ इक, पंचायण कुल जात ॥
आमेर पैं[१३] अरप्यो वहै, बखसि गाम बहु ब्रात[१४] ॥ २०६ ॥
बुंदीपुर आयत्त[१५] पुर, मैनोली अभिधान ॥
सहित परग्गन सो दयो, थिर कूरम तिहिं थान ॥ २०७ ॥

॥ १९८ ॥ १ जिसके पीछे २ दड़पड़ (शीघ्र) ॥ १९९ ॥ ३ हाथी ॥ २०० ॥ ४ धन ५ कछवाहे के सेवकों को ६ ईश्वरीसिंह की आज्ञानुसार कुछ न लेकर पीछे गये ॥ २०१ ॥ ७ मिलाने का ॥ २०२ ॥ ८ स्नेह के साथ नजर किये हुए ॥ २०३ ॥ ॥ २०४ ॥ ९ स्नेह पूर्वक १० लोभ की वार्ता सम्मुख नहीं करने का करार किया था सो नहीं रक्खा लोभ का ११ वृत्तान्त १२ स्वयं ही कहा ॥ २०५ ॥ १३ आमेर के पति ने १४ धन का समूह ॥ २०६ ॥ १५ बुन्दी नगर के अधीन पुर ॥ २०७ ॥

तार्को बत्त मलार सन, कूरम कहिय बहोरि ॥
रक्खी सोहि मलूक हित, अवनि ओर दिय छोरि ॥२०८॥
सुनि मलार अक्खी कुपित, किन्नौं तुमहिं कसार ॥
बत्त समक्खहि लोभकी, क्यों व करत छलकार ॥ २०९ ॥
वसुमति बुंदिय देसकी, लेसहु तुमहिं मिलैंन ॥
कोविद रहत करारमैं, ठेले इहु ठिलैंन ॥ २१० ॥
आतर१ पान२ यह अक्खि दै, कूरमकों दिय सिक्ख ॥
सुनहु राम नृप यों रही, प्रपितामहकी तिक्ख ॥ २११ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ उम्मेदसिंहचरित्रे सजट्टसूर्यमल्लकूर्मराजपरसैन्याऽभिमुखनिस्सरणकृतपलायनव्यासगंगाधरतत्कुलाकरनिकटाऽऽनयनमहारणरचनमेघाऽऽसाराऽन्तराऽपिनालीयन्त्रचलनतद्दिन ४ निर्याणयथास्थितसर्वकालक्षेपणमाधवाऽऽदियथाप्राप्तभक्ष्याद्यशनद्वितीय २ दिनयुद्धभवनकोटाभटयोधसिंह १ मरणगंगाधरयोधनप्रकटीकृतप्रपातमिषकूर्मराजनिस्सरणविदिततद्वृत्तमल्लारो १ म्मेद२ माधव ३ सज्जीभवनेश्वरीसिंहाऽवरोधनगंगाधरजैपुरमार्गाऽवरोधनतद्देशलुण्टनाऽऽर्थपंचसहस्र ५००० सैन्यप्रेषणभटप्रतिभटद्वहस्तसमिद्विरचनतन्ते १ सेखाउत १

॥ २०८ ॥ १ लोभ की बार्ता अब सम्मुख क्यों करते हो ॥ २०९ ॥ १ भूमि २ चतुर ॥ २१० ॥ २११ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट सूर्यमल्ल और ईश्वरीसिंह का शत्रु की सेना के सम्मुख निकलना १ व्यास गंगाधर का भागकर उनको कुलकर के समीप लेजाना २ महा युद्ध का रचना और मेघ धारा में भी तोपों का चलाना ३ उस दिन घोड़ों की डोरें लियें यथास्थित समय विताना ४ माधवसिंह आदि का मिल गया जैसा भोठ आदि को भोजन करना ५ दूसरे दिन युद्ध होकर कोटा के भट योधसिंह का मरना और गंगाधर के युद्ध प्रकट करने से भुकाम करने के मिष से ईश्वरीसिंह का निकलना ६ इस के विदित होने पर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का सज्ज होकर ईश्वरीसिंह को रोकना ७ गंगाधर का जयपुर के मार्ग को रोकना और ईश्वरीसिंह के देश लूटने के अर्थ पांच हजार सेना को भेजना ८ भट

सत्तीकरणाद्वितीय २ दिनसमापनपुनःषष्ठी ६ दिनयोधननिगृहीतजयपुरप्रसारजननासाऽऽदिकर्त्तनतदनोऽन्नाद्यशनवस्तुलुण्टनप्रेषितपृतनासम्भरपुरपर्यन्तजयपुरजनपदनिर्द्धनीकरणगंगाधरलास्वमारणानालीयन्त्राऽवरुद्धीकरणतत्सहायजट्टसूर्यमल्लयोधनतन्तेपलायनतृतीय ३ दिनसमापनत्रस्तकूर्म्मराजहुलकरकथितस्वीकरणजयसिंहग्रस्तबुन्दीत्यजनमाधवाऽर्थदेशचतुष्टय ४ विसर्ज्जनाऽन्योऽन्यशिविराऽऽगमनहुलकर १ कूर्म्म २ मैत्रीमयबुन्दीश १ जयपुरेश-२ यथामर्य्यादोपायनमिथोनिवेनदग्रहणमल्लारपुनर्लुब्धजायसिंहिभर्त्सनं पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ २५ ॥ ॥ २०६ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

दूजे दिन बजि प्रथम कुंच दुंदुभि हुलकर दल ॥
बजि जैपुर बल बीच हुव सु बंदिन कोलाहल ॥
पहिलैं चढि कछवाह लग्यो निज पत्तन पद्धति ॥

और प्रतिभटों का बड़ा युद्ध करके लंबे गंगाधर का सेखावत (सीकर के राव राजा) को घायल करना और द्वितीय दिन का समाप्त होना ९ फिर छठ के दिन युद्ध होकर जयपुर की रसद लानेवाले लोगों को पकड़ कर नाक आदि काट कर उनके छकड़ों से अन्न आदि भोजन की वस्तु को लूटना १० भेजी हुई सेना का सांभर नगर तक जयपुर के राज्य को निर्धन करना ११ गंगाधर का नल्कों को मारकर तोपों में कीलें लगाना और उनकी सहाय पर सूर्यमल्ल का युद्ध करके गंगाधर के भागने पर तीसरे दिन का समाप्त होना १२ डर कर कछवाहों के राजा का हुलकर का कहना स्वीकार करना १३ जयसिंह की लीहुई बुन्दी को छोड़ना, माधवसिंह के अर्थ चार देश देना और ईश्वरीसिंह, मल्लार और उम्मेदसिंह का परस्पर डेरों में आना १४ हुलकर और ईश्वरीसिंह का मित्र होना और बुन्दी के पति व जयपुर के पति दोनों का मर्यादा पूर्वक भेट देना लेना १५ फिर लोभ करनेवाले जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) को मल्लार के धमकाने का पच्चीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ ३०६ मयूख हुए ॥

१ बाजों (बाजों) का २ अपने पुर के मार्ग

मनि जिम उरग गुमाय नम्यो न करैं फन उन्नति ॥
खट वसु तुरंग ससि १७८६ सक गिल्यो जयसिंह सु बुंदिय जहर ॥
ईश्वरीसिंह तस सुत असह लई, घुम्मि ताकी लहर ॥ १ ॥

दोहा—ढुंढारे इम ढुंढि रन, गंजे प्रसभ गलार ॥
सत्य कियो संकल्प निज, माधव१ हड्ड२ मलार ३ ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

या रीति जनक जयसिंहनैं संधा करि स्वीय करी अचला ईश्वरीसिंह आतंकतैं छोरि आयो ॥
अरु बुंदीके दुर्ग तारागढमैं नरूके कछवाह सिपाह रक्षक रक्खेहे तिनकौं कढाववेकौं तिनके स्वामि नारव लदानौं नगर नाथ कुमार१ तथा हरनाथसिंह२ इनके उभय२कौं अग्गैं करि लेजायवेको उदंत हुलकरसौं कहायो ॥
तब जैपुरपतिके प्रस्थानके समय ए दोऊ२ नरूके कछवाह लार लेवेकौं मल्लारनैं बुलाये ॥
अरु वे आदेस अधीन होय न आये तब सत्तसय ७०० सादी स्वकीय सेनाके संगही पानिप करि प्रेरिवेकौं पठाये ॥ ३ ॥
जहाँ मरहट्ठनकौं जोरदार जयी जानि जैपुरको जोध जुग२ साहसी सूबेदारको संग भयो ॥
जब जयके मदमत्त महिमंडल मंडन उम्मेदसिंह१ माधव२ मल्लार३ कूंच करि देवगाँम बघेरा आनि मुकाम दयो ॥
तहाँतैं सेना रक्खत रसालेकौं तो टोडानगरको राह चलायो ॥
अरु इन तीन३नके अभयसिंह धन्वधराधीस तीर्थगुरु पुष्कर राज हो तासौं मिलिवेको उत्साह आयो ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पिता २ प्रतिज्ञा करके ३ भूमि ४ अरु ५ नरूका ६ वृत्तान्त ७ हुक्म के आधीन ८ सवार ९ बलात्कार से ॥ ३ ॥ १० देवगांव और बघेरा ये दोनों जुदे जुदे गांव हैं परन्तु दोनों एक ही स्वामी के अधिकार में होने के कारण दोनों का नाम शामिल लेते हैं ११ सामग्री (सामान) १२ मारवाड़

॥ दोहा ॥

हुलकर१ कूरम२ हहु नृप३, सेन अलप लै संग ॥
पत्ते पुक्खर तित्थगुरु, मरुपति मिलन उमंग ॥ ५ ॥
अभयसिंह चिरकालतैं, हो पतनी जुत तत्थ ॥
मिलि तासौं बगरू बिजय, अक्ख्यो सवन समत्थ ॥ ६ ॥
सुता नृपति जयसिंहकी, नाम बिचित्रकुमारि ॥
लये परगनाँ अनुज तस, किय मंगल हित कारि ॥ ७ ॥
महिमानी करि मुदित मन, रट्ठोरन अधिराज ॥
हुलकर१ सालक१ हहुनृप१, बुल्ले३ जिम्मन काज ॥ ८ ॥
राजगढेस किसोर१निज, भ्रात सहित मरुपाल१ ॥
माधव१ संभर१ च्यारि४ मिलि, किय भोजन इक१थाल९ ॥
हुलकर१मरुपति१के हु हो, पग्ग सखापन अग्ग ॥
सोहु जिमायो रक्खि ढिग, सम्मदैं पूरि समग्गैं ॥ १० ॥
बिनस्यो बाजेराय तब, मद्य तजो मल्लार ॥
अभयसिंह पायो इहाँ, प्रसभ मंडि अति प्यार ॥ ११ ॥
इक१इक१गज दुव२दुव२अरब, इक१इक१ बर सिरुपाव ॥
इक१ इक१भूखन नगजटित, दिय तीन३न करि चाव ॥१२॥
लै तिन तीन३हि मरुप जुत, आये पुनि अजमेर ॥
अभयसिंह निंदा इहाँ, किन्नी सोदर केर ॥ १३ ॥
बखतसिंह मामक अनुज, पहिलैं दिल्लिय पत्त ॥
जवनन दल हमसन लरन, आनत सुनियत अत्त ॥ १४ ॥

---

२ पुष्कर १ गये ३ तीर्थगुरु ॥५॥ ४ बहुत समय से ५ स्त्री सहित ॥ ६ ॥ ६ उसके छोटे भाई माधवसिंह के परगने ॥ ७ ॥ ७ राठोड़ों का पति ८ अपने साले माधवसिंह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ पाघ बदल भाई पन १० हर्ष से पूरित ११ समग्र अथवा मार्ग सहित (रीति पूर्वक) ॥ १० ॥ १२ बाजेराव मरा मह्लार १३ अत्यंत स्नेह से हठ करके ॥ ११ ॥ १४ घोड़े १५ श्रेष्ठ ॥ १२ ॥ १६ सगे भाई) की ॥ १३ ॥ १७ मेरा छोटा भाई १८ यवनों की सेना ॥ १४ ॥
सौ ३०६ १ वायों (बा०

बनैं जंग तो वेगही, हुलकर करहु सहाय ॥
सुनि मलार स्वीकार किय, बहु सतकार बढाय ॥ १५ ॥
तदनु तीन३ अजमेर तजि, लग्गे बुंदिय राह ॥
बिचतैं पलटि भनायपुर, गो संभर नरनाह ॥ १६ ॥
ही सपत्न जननी१ तहाँ, अरु ऊदाउति नारि२ ॥
मिलि तिनसौं पच्छो मुरयो, बुंदी बिलसन धारि ॥ १७ ॥
मिलि माधव१ मल्लार २ सन, पुनि किय सैजव पयान ॥
तीन३न सरित बनास तट, दिन्नैं आनि मिलान ॥ १८ ॥
उज्ज्वल पख ईसमास लँहँ, छुट्टे जलद कराल ॥
चढी सरितकी ओट करि, पलटे पच्छे खाल ॥ १९ ॥
दल विच जल गलदन्नं बढि, बिथरयो डेरन बोय ॥
पानी१पवन२ तुषार३ करि, मरे मनुज सत दोय२०० ॥२० ॥
दूजे२दिन आवाँ नगर, पत्ते जल भय पाय ॥
टोडा त्यौं पठयो जु दल, मिल्यो सु तत्थहि आय ॥ २१ ॥
सुखतैं रहि नवरत्त९ सब, तीन३न बितये तत्थ ॥
अष्टमि८ दिन मल्लार इक्क१, मंगायो महमत्त ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दूतन दिस दिस दोरि इठन हेरयो इक्क१ कासर ॥
तीन३ तीन३ बल बक्र पँटल गति संग पिट्ठिपर ॥
अरुन अंखि अतिकोप दिपत उँल्मुक्क दमकावत ॥
स्वास नाँस[12] सननंकि धरनितल पयन धुजावत ॥

॥ १५ ॥ १ जिस पीछे ॥ १६ ॥ १७ ॥ २ शीघ्र ॥ १८ ॥ ३ आश्विन मास. भयंकर ४ मेह बरसा ५ नदी के पानी की रोक से नाले पीछे मुड़े ॥ १९ ॥ ६गले पर्यंत ७ ठंढ से ॥ २० ॥ २१ ॥ ८ मदमस्त ॥ २२ ॥ ९ महिष (भैंसा) १० पीठ पर छाये हुए तीन तीन बलवाले टेढे सींग ११ अंगीरे के समान आंखें चमत्का हुआ १२ नाकों से श्वास बजकर

नहि सहन महन ओरन नदन गवल जानि उद्धत अरिय ॥
मानहु बिढाय कालहिं कुपित संजमनी सन उत्तरिय॥२३॥

॥ दोहा ॥

आन्यौं अडर झुलाय वह, देवी हित बलिदैन ॥
झारी असि हुलकर झपटि, लगी जैनमत लैन ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिगन लगि समसेर तरकि तुट्टी हुलकर कर ॥
तब जरंत गुन तोरि चल्यो दारुन छुटि दुद्धर ॥
देखत यह हय दपटि झपटि संभर असि झारिय ॥
सिगन जुगल समेत वंस सह पिट्ठि विदारिय॥
अरराय मंह सु इम खाय असि पाय उलटि कटि खुलि पर्यो ॥
हुव लखि अचिज्ज मरहट्ठ दल इत देविय बलि अहर्यो २५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-दसिंहचरित्रे प्रस्थापितकूर्म्मराजमल्लारो १ म्मेद २ माधव ३ पुष्करा-ऽऽगमनमरुराजाऽभयसिंहमिलनाऽनन्तरत्रय३ प्रत्यागमनदृष्टभखाय-पुरबुंदीन्द्र १ सहितहुलकर २ कूर्म्म ३ वाशिष्ठीतटप्रपतनाऽकाला-ऽऽसारवर्षणशिविरसंप्लवनमितमानवमरणसर्वसैन्याऽऽवांपुरनिवस-

१ अपने से बडे किसी अन्य का नाद सहन नहीं करता इसी कारण मानों २ दोनों सींग ऊपर अडे हैं ३ यमराज को छोडकर क्रोधित हो ४ यमराज की पुरी से उतरा है ॥ २३ ॥ ५ भैंसा ६ जैनियों के मत (अहिंसा धर्म) को लेने लगी अर्थात् उस भैंसे का कंधा नहीं कटा ॥ २४ ॥ ७ वह भैंसा रस्सी तुडा कर ८ दोनों सींगों सहित ६ बांसे के हाड सहित १० महिष ॥ २५ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में ईश्वरीसिंह का प्रस्थान कराकर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का पुष्कर आना १ अभयसिंह से मिले पीछे तीनों का पीछा आकर भखायपुर को देख कर बुन्दी के पति सहित हुलकर और कछवाहे (माधवसिंह) का बनास नदी के किनारे मुकाम करना २ बिना समय मेघ धारा के वर्षने से डेरों में जल भर कर थोडे मनुष्यों का मरना और सब सेना का आंवां नामक नगर में

नाऽऽश्विनोत्तरनव ९ रात्रपूज्यपूजनविधानबुन्दीन्द्रतिरस्कृतमल्लारमण्डलाग्रमहामहिषनिपातनविश्वेश्वरीबलिनिवेदनं षड्विंशो २६ मयूखः ॥ २६ ॥ ॥३०७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

किन्नौं बुंदिय तजनको, कातिय बिसद करार ॥
यौं बहु दिन आवाँ रहे, माधव१ हडु२मल्लार३ ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

कन्यां३ कौं रवि भुग्गि अंस तुल७के लिय पंद्रह१५ ॥
प्रतिदिन सीत प्रगल्भ होत बालन बिनु दुस्सह ॥
आवाँपुर इहिं काल हडु१हुलकर२ अरु माधव३ ॥
दीपि अमा३० करि दान अन्नकूटक किय उच्छव ॥

धव१ छव२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

मिलि तत्थ विप्र गंगाधर१ सु खत्री केसवदास२जुत ॥
करि मंत्र आनि भूपहिं कहिय सुनहु बलबुध सिंह सुत॥२॥

पादाकुलकम् ॥

कासी बिच सुरजन नृप सँभर, रचिय राजमंदिर निकाय बर॥
सो पंडित सूरजनारायन, मंगत रहन काज द्विज थुति मन॥३॥

यन१ मन२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

वह आलयं निज काम न आवैं, पुराय बढैं जो वह द्विज पावैं॥

निवास करना १ आश्विन के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि में पूजन योग्य (देवी) पूजन के उचित बुन्दी के पति का मल्लार के खड्ग का तिरस्कार करनेवाले महिष को मारना और देवी के बलि देने का छब्बीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ सात ३०७ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक सुदि पक्ष में २ इस कारण ॥ १ ॥ सूर्य ने ३ कन्या संक्रांति को भोगकर ४ प्रबल ५ स्त्रियों के बिना ६ दीवाली की अमावास्या का दीपदान करके ॥ २ ॥ ७ चहुवाण ८ श्रेष्ट महल (मकान) ९ स्तुति के मन से ॥ ३ ॥ १० स्थान

सुनि नृप कहिय पुण्य तीरथ थल, है नहिं *देय बिचारि
लखहु भल ॥ ४ ॥

सूरजनारायन द्विज †उद्भट, अद्वितीय तिन दिनन हुतो पट ॥
खट ६ नास्तिक ‡प्रतिभट बनि खंडैं, मत खट ६ आस्तिक दृढ
करि मंडैं॥ ५ ॥

सौत्रांतिकन१ समूल उखारैं, वैभाषिकन२ सजोर बिडारैं ॥
योगाचारन३ लखत उडावैं, माध्यमिकन४ मिलि गरब गुमावैं६
जैनन५ जाल राहु गति ग्रासैं, लोकायतिकन६ मुंडि निकासैं ॥
व्यास१ अरु बेदांत बिचारन, गोनर्दीय२ योग अवधारन ॥७॥
दूजो कपिल३ सांख्य बिच सोहैं, मीमांसा जैमिनि४ मति मोहैं
द्विज पर अपर न्याय बिच गोतम५, वैशेषिक वादी कणाद६
सम ॥ ८ ॥

कासी बिच पंडित यह ऐसो, करैं बाद जासों बुध कैसो ॥
अग्गैं यह तंते गंगाधर, गोन्हावन कासी तीरथ बर ॥ ९ ॥
जवनन जानि गहन दल पेर्‍यो, पंच५कोसि अंतर तिन हेर्‍यो
तंते तब सूरजनारायन, रक्ख्यो सरन छिपाय प्रीति पन ॥१०॥
पुनि छन्नैं दक्खिन पहुँचायो, यह उपकृत तंते उर आयो ॥
पुनि राजामल्ल मित्र सु पंडित, अग्र रह्यो हित हुँन२अखंडित॥११॥
जब जयसिंह नगर ढुंढिय लिय, सालमसूनु ग्रंथ पुनि अप्पिय
तबहिं राजमंदिर तीरथ थल, मित्र द्विजहिं दिन्नैं राजामल॥१२॥

---

* देने योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ † ब्राह्मण के कुल में जन्म लेनेवाला ‡ छःहों नास्तिकों का शत्रु होकर खंडन करता था, इन छहों नास्तिकों के नाम छठे छन्द में बताते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ दिगंबर, २चार्वाक ये छहों भेद नास्तिकों के हैं, अब आगे छः आस्तिक बताते हैं १ वेदान्त के विचारने से दूसरा वेदव्यास ४ पतंजलि के समान योग को धारण करता है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ पंडित ॥ ९ ॥ ६पकड़ने को सेना भेजी ७काशी की पुण्य भूमि की सीमा पांच कोस की है ॥ १० ॥ ८ उपकार ९ वह पंडित राजामल का मित्र था ॥ ११ ॥ १० साल-

तबतैं रही बिप्रकै वह भुव, अब उम्मेद लई बुंदिय धुव ॥
केसव१ अरु गंगाधर२ यातैं, बुल्ले नृपहिं दिवावन बातैं ॥१३॥
पच्छपात इनको नृप जान्यौं, पुनि वह तीरथ थान प्रमान्यौं ॥
द्विज वह पात्र कह्यो बुंदीपति, पै किम होय *अदेय दैन मति१४
तब दोउन१हुल्लकर प्रति अक्खो, रहैं टेक यह प्रभु तब रक्खो
सुनि मल्लार बुल्ल्यो जिनकी भुव, तिनके दयैं बिनाँ न मिलैं धुव ॥ १५ ॥
तब दोउन१ छन्नैं छल किन्नौं, हुल्लकर नाम पत्र लिखि लिन्नौं
ताहीकी मुद्रा मुद्रित करि, पठयो दल पंडित हित अनुसरि॥१६॥
तिहिं बुध लखि हुल्लकर दल आयो, बहुरि राजमंदिर अपनायो
नृप यह कथ चिरकाल माँहिं सुनि, जब जानी तब छिन्निलयो पुनि ॥ १७ ॥
भट सेटूखड़राड़ सु हुल्लकर, बुंदियपुर अग्गहि पठयो बर ॥
तिहिं करार अवसेस न धारयो, कूरम झंडा तारि बिडारयो ।१८।
संगर बहरकें मंडि सुहाई, फेरी पुर उम्मेद दुहाई ॥
जैपुर सचिव तत्थहो जाकैं, धूजत सँतत परी डर धाकैं ॥ १९ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

झंडा तूटतही जैपुरके सूरवीर बुन्दी हे तिननैं अपनी चढी तलब को लैबो बिचार्यो ॥

अरु वनिक जादूदास नाटानीको भानेज आमेर अधीस ईश्वरीसिंह उहाँ अमात्य रक्ख्योहो तापैं त्रास डार्यो ॥

तब वह वनिक घरके सूरनतैं घबराय वनिताके वस्त्र धारि छन्नैं

मसिंह के पुत्र दलेलसिंह के अर्थ ॥ १२ ॥ १३ ॥ * नहीं देने योग्य में देने की बुद्धि कैसे होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ हुल्लकर की छाप लगाकर २ पत्र ॥ १६ ॥ उम्मेदसिंह ने यह३कथा४बहुत समय पीछे सुनी ॥ १७ ॥५करार के दिन बाकी हैं सो नहीं सोचा ॥ १८ ॥१चढ़ुवाण की ध्वजा२निरन्तर३भय ॥ १९ ॥ ६ स्त्री के

कहि आवाँनगर गयो ॥

अरु खत्री केसवदाससौं अपनी आपत्तिको उदंत कहत भयो ॥२०॥

कही सेटूखइराड़ करारके दिन अठ८ *अवसेसहै †तथापि आमेर ईसको झंडा तोरिहारयो ॥

अरु यह जानि अपनैं सूरबीरन चढ्यो इक लेवेकौं मोमैं त्रास पारयो

यह सुनतही खत्री केसवदास मलारतैं रूठि चल्यो ॥

तब नीठिनीठि पच्छो मनाय हुलकरनैं सुतर सवार तत्कालही बुन्दी मुक्कल्यो ॥ २१ ॥

तानैं जाय नगरमैं बहोरि कछवाहनको केतन रुपायो ॥

यह देखि चोतरफके लोकनके बुंदी आयवे मैं संदेह आयो ॥

तदनंतर करारके दिन पूरे होत आवाँ नगरतैं हुलकरको प्रयान भयो ॥

अरु उंर्जन ग्रहगनके अवदात अर्द्धकी अष्टमी ८ के अह दंग दुवलान मिलानं दयो ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन दुवलानतैं, किन्नौं सवन प्रयान ॥
संभरकौं हुव सकुन सुभ, थिर रक्खन निज थान ॥ २३ ॥
बाम दिसा रहि राजसुक१, बुल्ल्यो सोदित बानि ॥
लावक१ क्रकर२ चकोर३ ए, अग्रेसर हुव आनि ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

ताम्रचूड़१ हुव बाम बाम बुल्लिय प्रसन्न खर३ ॥
गंधनकुल४ पुनि खंनक५ बाम हुव भोलि[12] ६ मधुर स्वर ॥
गहकि बाम गोमायु[13] ७ बाम सारस ८ पँलि[14] बुल्लिय ॥

॥ २० ॥ *बाकी है †तोड़ी ॥ २१ ॥ १ झंडा २ लेना का ३ कार्तिक मास की ४ आधे शुक्ल पक्ष की ५ दिन ६ मुकाम ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ७ राजसुआ नामक पक्षि विशेष ८ लावा और तीतर आगे को बोले ॥ २४ ॥ ९ मुरगा १० छछुन्दरी ११ चूहा १२ ऊंट १३ शृगाल (गीदड़) १४ पुनि

सवली९ टिट्टिभ१० सुखद बाम हुल्लि रु हित खुल्लिय ॥
गोबंत्स११ पुष्पसूची१२ बहुरि एहु पच्छिं हुव२ बाम हुव ॥
दिस सव्य भयो पारावत१३हु दैन भूपहित धाम ध्रुव॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बायस१४ हुल्लिय बाम पुनि, हुल्लिय बाम तुरंग१५ ॥
बाम बग्घ१६ मृगराँज१७बलि, हुव तरच्छु१८ हित संग॥२६॥

॥ षट्पात् ॥

फेंट१ बिहंग अपसव्य भयउ अपसव्य कपिंजर२॥
पिंगलिका३ अपसव्य भैरद्वाज४हु बिहंग बर ॥
दक्खिन हुव पुनि दहिकें५ भासद दक्खिन रवें भासत॥
सलिल पूर अपसव्य कलस७ अतिलाभ प्रकासत ॥
दिस बाम हिंतु दक्खिन सरल तारा उत्तरि पोदक्किय१ ॥
सुभ सकुन होत इत्यादि सब चाहुवान भूपति चलिय॥२७॥

॥ दोहा ॥

हुलकर१ माधव२ हड्ड नृप३, हंके संत्वर तत्त ॥
पुर बुंदिय प्राकारकें, बाहिर डेरन पंत ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नृप तद्दिन भोजन निम्माये, बुंदिय बिप्र सबहि जिम्माये ॥

---

१ टीटोड़ी २ पक्षि विशेष ३ पक्षि विशेष ४ पक्षी ५ कपोत भी बाम दिशा में हुआ ॥ २५ ॥ ६ बाघ (सिंह विशेष बघेरा) ७ सिंह और चीता बांयां हुआ ॥ २६ ॥ ८ फेंट नामक पक्षी ६ दाहिना हुआ १० चातक (पपीहा) ११कोचर पक्षी दाहिना हुआ१२भरदुल (पक्षि विशेष १३अग्नि (लाय) १४ग्रीध १५शब्द से शोभित हुए१६दाहिनी ओर जल पूरित घड़ा१७बाम दिशा से दक्षिण दिशा में१८काली चिड़ी सीधी उतरी और१९शकुनचिड़ी (रूपारेल) भी दाहिनी उतरी तारा और पोदकी आदि जितने शकुन यहां लिखे हैं इनका वर्णन 'वसंतराज' नामक शकुन शास्त्र में बडे विस्तार से लिखा है उतना यहां नहीं लिखा जासक्ता इस कारण पाठक लोग वहां देखें यह सटीक छपगया है ॥ २७ ॥ २० शीघ्र २१ डेरों में पहुंचे ॥ २८ ॥ २२निर्माये (बनवाये)

हुलकर पुनि नारव हरनाथहिँ, कहि कहहु किल्ला सन साथहिँ२९

॥ दोहा ॥

नारव हिय चाही नहीं, भट कहनकी बत्त ॥
बाहिर प्रीति दिखाय बलि, पठयो अनुचर तत्त ॥ ३० ॥
ताकी संगहि बाउला, संतू दिय मल्लार ॥
तारागढ पर जाय ते, छुल्ले कढन बिचार ॥ ३१ ॥
किल्लाके सुभटन कहिय, हम निकसन जब ठैंहिँ ॥
नारव हरनाथहिँ लखहिँ, बहुरि चढयो ईक लैंहि ॥ ३२ ॥
तब संतू पच्छो मुरयो, कहिय मलारहिँ आय ॥
नारव यह वंचक निपट, भटनन कहत जाय ॥ ३३ ॥
दिन्नी संतुव संग तब, हुलकर तुपक हजार१००० ॥
इन जाय रु हरनाथ वह, लिन्नों पकरि लँबार ॥ ३४ ॥
तिनकी संगहि कैद तब, नारव किल्ला जाय ॥
भीतरके कहे सुभट, खल परतंत्र खिसाय ॥ ३५ ॥
माँहिँ बीर उम्मेदके, रक्खे बिजय बिथारि ॥
आयो संतुव पुनि अधर, संभर आन प्रसारि ॥ ३६ ॥
सित कत्तिय द्वादसि१२ दिवस, कह्यो कूरम सत्थ ॥
रक्खे इह्व नरेसके, सबठाँ सुभर समत्थ ॥ ३७ ॥
झंडे संभरके गडे, पर केतन करि पात ॥
आन फिरी उम्मेदकी, दिस दिस बिजय दिखात ॥ ३८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तेरसि१३ दिन अभिषेक मुहूरत, मन्न्यों सबन श्रेष गँणाकन मत
बेणीराम भट्ट कोटा सन, आयो करन बेद बिधि सासन ॥३९॥

---

१ नरूके हरनाथसिंह को ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २ चढी हुई तनखा ॥ ३२ ॥ ३ बहुत ठग है ॥ ३३ ॥ ४ लबाळी (बहुत झूठ बकनेवाला) ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ नीचे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६शत्रु की ध्वजा को गिराकर ॥ ३८ ॥ ७ ज्योतिषियों के मत से

सहित अथर्व त्रयी१के पाठक, आनैं संग बिप्र बुध आठक८ ॥
सम्मुह जाय भूप वंदन किय, उन सिराहि मंगल आसिख दिय४०

॥ दोहा ॥

लौ गुरु डेरन आय नृप, बारसि रत्ति बिताय ॥
प्रात चढत रवि इक्क१ पहर, प्रविस्यो नगर सुभाय ॥ ४१ ॥
हुलकर१ माधव२ संग हुव, जैपुर सचिव समेत ॥
चहुवानन पति इम चल्यो, निज अभिषेक निकेत२ ॥ ४२ ॥
मंड्यो बनि३कन नगर मनि१, बँसन२ कँनक३ बिसतार ॥
बिरह टारि धृति१८ बरसको, किय बुंदिय शृंगार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे आवापुरसर्वनिवसनकात्तिकत्यत्ययनगंगाधर १ केशवदास २ शास्त्रिशिरोमणिसूर्य्यनारायणराजमन्दिरदापनकथनतद्बुन्दीन्द्राऽनूरीकरणतन्ते १ खत्रि२कौहक्यतदर्प्पणमल्लारसेटूबुंदीप्रेषणातदकालकूर्म्मकेतनत्रोटनबुन्दीन्द्रध्वजाऽऽरोपणपलाइतनट्टाणिभागिनेयोक्तकुपितकेशवदासनिस्सरणहुलकरतदनुनयनपुनःपुरजयपुरपताकीकरणसमयान्तसर्वप्रस्थानदृष्टशुभशकुनबुन्द्याऽऽगमन

॥ ३९ ॥ १ तीनों वेदों के ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ अपने अभिषेक के स्थान में॥ ४२ ॥ ३ बनियों ने ४ वस्त्रों और ५ सुवर्ण को फैला कर ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में सबका आवां नगर में ठहर कर कार्त्ती बिताना और गंगाधर व केशवदास का शास्त्रि शिरोमणि सूर्य नारायण के अर्थ राज मंदिर देने को कहना और बुन्दीपति के अस्वीकार करने पर तंते गंगाधर और खत्री केशवदास का उस को छल से देना १ मल्लार का अपने उमराव सेटू खैराड़ा को बुन्दी भेजना और उसका बिना समय कछवाहे की ध्वजा तोड़ कर बुन्दी के पति की ध्वजा रोपना २ भागे हुए नाटाणी के भानजे के कहने पर क्रोध करके निकले हुए केशवदास को हुलकर का पीछा लाना और बुन्दी नगर को फिर जयपुर की ध्वजा युक्त करना ३ करार के समय के अंत पर सब के गमन समय शुभ शकुनों को देखकर बुन्दी आना ४ मल्लार का बल पूर्वक नरूके को गढ से

मल्लारबलात्कारदुर्ग्गनारवनिस्सारणसूच्चूलसम्भरविजयकेतुस्थापनसंप्रदायगुर्वागमनकार्त्तिकशुक्लत्रयोदशी १३ दिनद्वितीय २ प्रहरमुखसाहित्यसहितप्रभुपुरप्रविशनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥३०८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद अधिपति लखत, निज पुर रुचिर निकेत ॥
पहुँच्यो अग्ग प्रजानकौं, दिट्ठि[१] प्रसादहिं देत ॥ १ ॥
जहँ समरखंधी[२] हन्यौं, नृप नारायनदास ॥
वहै थान अभिसेकको, राजमहल आवास ॥ २ ॥
तिहिं मंदिर नृप जायकैं, निज कटिबंध निवारि ॥
किय बिधान बिप्रन कथित, बेद निकेत[३] बिचारि ॥ ३ ॥

अथसंक्षिप्तोऽभिषेचनविधिः ॥

तिल सरिसव[४] संभारतैं, पहिलैं नृपहिं न्हवाय ॥
अधिपति जय उच्चार किय, गणक१ पुरोहित राय२ ॥ ४ ॥
तदनंतर द्विजवर उभय२, जीवन१ क्षितुवरास१ ॥
इतरासन[६] बैठे नृपहिं, स्वजन दिखाये ताँम ॥ ५ ॥
नृप तिन जनन बिसासि अरु, बंधन सुरभी[८] छोरि ॥
संभरपति[९] छुल्ल्यो अभय, बिप्रन उचित बहोरि ॥ ६ ॥

निकाल कर चहुवाण की ऊँची ध्वजा को स्थापन करना^ संप्रदाय के गुरु के आगमन से कार्त्तिक शुदि तेरस के दिन दोपहर के आदि में सब सामग्री सहित राजा के पुर में प्रवेश करने का सत्ताईसवां२७मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ आठ ३०८ मयूख हुए ॥

१ दृष्टि से प्रसन्नता देता हुआ ॥ १ ॥ जहां पर बुन्दी के राजा नारायणदास ने २ समरखंधी नामक यवन को पहिले समय में मारा था ॥ २ ॥ ३ वेद का स्थान ॥ ३ ॥ अब संक्षेप से अभिषेक की विधि कहते हैं ४ सरसों (धान्य विशेष) ५ सलूह से ॥ ४ ॥ ६ दूसरे आसन पर ७ तहां अपने लोकों को दिखाये ॥ ५ ॥ ८ गौ का बंधन छोड कर ९ चहुवाणों का राजा उम्मेदसिंह ॥६॥

पुनि तँहँ साक्री[1] सांति किय, पुरोहित स उपवास ॥
बिसद माल उपवीत इहिं, भूखन सोभित भास ॥ ७ ॥
उचित मंत्र करि बेदि लिखि, विधिवत होम बिधाय[2] ॥
पढ़ँ पंच५ गन नाम तिन्ह, सुनहु राम[3] नरराय ॥ ८ ॥
शर्मवर्म१ अरु स्वस्त्ययन२, आयुष्य३ अभय४ नाम ॥
स्वापराजित५ जु पंचम सु, ए पंच५हि प्रभु राम ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कलस बहुरि संपातवान[4] किय, पुरट[5] मय रु सुंदर दरसन प्रिय ॥
नृप सित[6]भूखन लेप माल्य लहि, तदनु[7] वन्हि सँन[8] दक्खिन दिस रहि ॥ १० ॥
देख्यो वन्हि निमित्त[9] बिचारन, उठ्यो प्रसन्न सिखा[10] करि धारन ॥
स्नानसाल[11] पुनि नृपहिं आनि द्विज, सौरभतैल[12] न्हवायो नृप निज ११

॥ दोहा ॥

सोध्यो पर्वत अग्रकी, मिट्टीतैं नृप मत्थ[13] ॥
नांकु[14] अग्रको मृत्तिका, लाई श्रवनन[15] तत्थ ॥ १२ ॥
हरिमंदिरकी मृत्तिका३, नृप उमेद मुख लाय ॥
इंद्रध्वज[16] थल मृत्तिका४, ग्रीवाँ[17] दिन्न लगाय ॥ १३ ॥
राजअजिर[18]की मृत्तिका५, हिय लाई करि खंड ॥
गजरद[19] उद्धृति मृत्तिका६ सोधे दुवर भुज दंड ॥ १४ ॥

---

१ इन्द्र की शान्ति की ॥ ७ ॥ २ करके ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ घड़े को धारा युक्त किया (अर्थात् घड़े से राजा पर जल डाला) ५ सोने का ६ हीरों का आभूषण ७ जिस पीछे ८ अग्नि से ॥ १० ॥ ९ अग्नि का शकुन देखा १० ज्वाला धारण करके उठा ११ स्नान करने के महल में १२ सुगंधिवाले तैल (इत्र) से ॥ ११ ॥ १३ राजा के मस्तक को १४ उदेई के बामले की मिट्टी १५ कानों के लगाई ॥ १२ ॥ १६ वर्षा ऋतु में इन्द्रधनु खड़ा होवै उस स्थल की अथवा वर्षा के निमित्त यज्ञ किया होवै उस स्थल की मिट्टी १७ गरदन के लगाई ॥ १३ ॥ १८ राज्य के आंगन (चौक) की १९ हाथी के दांत से

मिट्टी७ आनि तड़ागकी, सोधी पिट्ठि समस्त ॥
नदि संगमकी मृत्तिका८, लाई उदर प्रसस्त ॥ १५ ॥
नदी कूल दुव२ मृत्तिका९ पंसुलीन दुहुँ ओर ॥
मिट्टी१० गनिका द्वारकी, लाई कटि नृप मोर ॥ १६ ॥
गजसालाकी मृत्तिकी११, ऊरू उभय२ सुधराय ॥
गोसालाकी मृत्तिका १२, दुव२ नलकीलन लाय ॥ १७ ॥
आनि मंदुरा मृत्तिका१३, पंडी जुगल२ पखारि ॥
रथ अरिउद्धृत मृत्तिका १४, लै दुव२ चरन सुधारि ॥ १८ ॥
सर्ब अंग पुनि सर्ब ए१४, मिश्रित करि लिपटाय ॥
पंच५ गंव्य घटतैं बहुरि, दीनौं स्नान कराय ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

भद्रासैन बैठो पुनि भूपति, लगे पढन द्विज बेद महामति ॥
च्यारि ४ बरन मंत्र सचिव च्यारि ४ जँहँ, करन लगे अभिसिक्त भूपकँहँ ॥ २० ॥
पूरब१दिस रहि दयाराम द्विज, सघृत कनक घट१सिंच्यो नृप निज॥
हरदाउत नाहर २ दक्खिन २ रहि, सिंच्यो राजत दुग्ध कलस २ गहि ॥ २१ ॥
पटु गोबिंद३बनिक रहि पच्छिम३, सिंच्यो सदधि ताम्र घट३लै तिम॥
रहि उत्तर ४ हरजन ४ दासी सुत, सिंच्यो लै मिट्टी घट ४ जल जुत ॥ २२ ॥

उठीहुई ॥ १४ ॥ १ तलावकी ॥ १५ ॥ २ नदी के किनारों (ढावों) की कमर के ३ लगाई ॥ १६ ॥ ४ जंघाओं के ५ पैरों की नलियों के लगाई ॥ १७ ॥ ६ हय शाला की ७ दोनों पींडियों के ८ रथ के पहिये से उठी हुई ॥ १८ ॥ ९ मिला कर १० घृत, दूध, दही, खांड और सहत (मधु) इन के सामिल का नाम पंचगव्य है ॥ १९ ॥ ११ सिंहासन पर १२ ब्राह्मणादि चार वर्ण से उत्पन्न १३ अभिषेक युक्त ॥ २० ॥ १४ घृत से भरेहुए सुवर्ण के घड़े से १५ नाहरसिंह दूध से भरेहुए १६ चांदी के कलश से ॥२१॥ १७ दही से युक्त तांबे के घड़े से

रक्खहु*अग्नि †सदस्यन उच्चरि, पुनि द्विज घट‡संपातवान करि॥
राजसूय अभिसेक मंत्र कहि, सिंच्यो नृपहिँ पुरोहित हित चहि २३
पुनि ल्है बेदीमूल पुरोहित, आय नृपति ढिग सुभ मति सोहित॥
सत१०० छिद्रक संपातवान घट, लै पुनि सिंचिय नृपहिँ विहित
बट[1] ॥ २४ ॥

सर्वौषधि१जल[2] पुनि सिर सिंचिय, गंध उदक[3]अभिसेक बहुरि किय॥
तदनंतर बीजाअभिसेक[4] हुव, पुष्पन४ सिंच फलन५सिंच्यो ध्रुव२५
रतनन६ पुनि कुसजलन[5]७ सिंचि द्विज, बहुरि कुसन मार्जित[6] किय
नृप निज॥

मृग१बेदी पुनि बिप्र मुदित मन, नृप सिर कंठ लगायो रोचँन[7] २६
च्यारि४ बरन जल बहुरि रीति करि, सरित१ तड़ाग२ कूप३ जल
४ घटभरि॥

कल्पित ठानि च्यारि[8]४सागर जल, सिंच्यो नृपहिँ निगम[9] मारग भल
गंगा१अरु जमुना२गिरि निर्झर[10]३, इत्यादिक जल पूरि कलस बर
सिंच्यो नृपहिँ समोद समस्तन, दास भाव पुनि करन लगे जन२८
काहू सचिव छत्र१ गहि लिन्नौं, काहू चमर२ मोरछल३ किन्नौं॥
बेत्र लकुट[11]४ कतिकन कर धारे, बंदिन[12] नाना बिरुद बिथारे॥२९॥
भई संख नउबत्ति गान ध्वनि, द्विजन सिराह्यो नृपहिँ बेद भनि॥
कनक कलस पुनि गैणक[13] धारि कर, सिंच्यो भूपहिँ अक्खि मं-
त्र बर॥ ३० ॥

॥ २२ ॥ †यज्ञ करने वाले ऋत्वजों ने कहा कि * अग्नि रक्षा करो यह कहकर फिर ब्राह्मण ने ‡ घड़े को धारा युक्त किया ॥ २३ ॥ १ उचित मार्ग से ॥२४॥ २ सब औषधियों से युक्त ३ सुगंधि के जल से ४ बीजों का अभिषेक ॥ २५ ॥ ५ डाभ के जल से ६ अभिषेक ७ गोरोचन ॥ २६ ॥ ८ चारों समुद्रों के जल की कल्पना करके ९ वेदमार्ग से ॥ २७ ॥ १० पर्वत के झरने का ॥ २८ ॥ ११ बेत की लकड़ी (छड़ी) १२ भाटों ने ॥ २९ ॥ १३ ज्योतिषी ने ॥ ३० ॥

प्राय:संस्कृतशब्दमात्रामिश्रितभाषा ॥
ते कछु छंदन बिबिध बनाये, सुनहु राम नृप नृपन सुहाये ॥
सिंचहु सब सुर तोहि नरेश्वर, ब्रह्मा बिष्णु२ तथैव महेश्वर ॥ ३१॥
रेश्वर१हेश्वर२ अन्त्यानुप्रास:१ ॥
वासुदेव१ अरु संकर्षण२ पहु, प्रद्युम्न ३ रु अनिरुद्ध ४हु सिंचहु ॥
इंद्र१ अग्नि२ यम३ निर्ऋति४ पाशी५, पवन ६ धनद ७ कैलासबिलासी८ ॥ ३२ ॥
ब्रह्मा९सेस१०दस१०हि दिकपालक, रक्खहु तोहि भूप अरिसालक॥
रुद्र१ धर्म२ मनु३ दक्ष४ रु रुचि५ मुनि, श्रद्धा६ भृगु७ अत्रि८ रु वशिष्ठ९ सुनि ॥ ३३ ॥
सनक१० सनंदन११ सनतकुमार १२हु, पुलह१३ पुलस्त्य१४ मरीचि१५ तथा पहु ॥
कश्यप१६अरु अंगिरा१७प्रजापति, ए सिंचहु नृपतोहि महामति ३४
अग्निष्वात्त१ प्रभाकर२ ज्योंही, पुनि क्रव्याद३ बर्हिपद४ त्योंही ॥
राज्यपा५रु उपहूत६सु काली७, अग्नि पितर सिंचहु मणिमाली३५
लक्ष्मी१ बेदी२ सची३ ख्याति४ पुनि, अनसूया५ स्मृति६ संभूति७हु सुनि ॥
क्षमा८ प्रीति९ सन्नति१० स्वाहा११ तिम, स्वधा१२ एहु मातरें सिंचहु इम ॥ ३६ ॥
लक्ष्मी१ क्रिया२ कीर्ति३ धृति४ पुष्टि५हु, मेधा६ बुद्धि७ सांति८ बपु९ तुष्टि१०हु ॥
लज्जा११ सिद्धि१२ तथा बसु१३ यामी १४, अरुंधती१५ लंबा १६ नृप नामी ॥३७ ॥
भानु१७मुहूर्ता१८विश्वा१९साध्या२०,मरुत्वती२१हु बहुरि आँराध्या

१ कुछ छन्दों में २ देवता ३ इसी प्रकार ॥ ३१ ॥ ४ वरुण ५ कुबेर ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ ६ मनु ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ७ आराधन की हुई

संकल्पा२इत्यादि*धर्मतिय, सिंचहु संभर तोहि सुजसप्रिय ॥३८॥
दिति१ दनु२ अदिति३ अरिष्टा४ अरु मुनि ५, कद्रू ६ क्रोधवशा ७
प्राधा८ सुनि ॥
विनता९ सुरभि१० रु कपिला११ काला१२, इतिमुख सिंचहु क
श्यप बाला ॥ ३९ ॥
पुनि बहुपुत्र सुपुत्रा भामा१, करहु बिजय तव बहुरि सप्यामा१ ॥
बिजय कृशाश्व बधू१ बिरचहु उत, सुप्रभा१जया२प्रदर्शना३जुत ।४०॥
तिनकौ पुत्र१हु बिजय बढावहु, सिंचहु भूप तोहि हित लावहु ॥
भानुमती१रु बिशाला२त्यौं पुनि, मनोरमा३रु बाहुदा४ख्या४सुनि४१
सिंचहु इती अरिष्टनेमि तिय, पार्थिव तोहि बढावहु हित हिय ॥
बहुला१ त्यौंहि रोहिणी२ राधा३, अनुराधा४ऐंद्री५हतबाधा ॥४२॥
मूल६ रु दुव२आषाढा८ ज्यौंही, अभिजित९ श्रवण १० धनिष्ठा
११ त्यौंही ॥
वरुण तारका१२ भाद्रपदा१४ दुव२, रेवती १५ रु दस्रभ १६ भर-
णी१७ धुव ॥४३॥
बिजय बिथारन काज तोहि पहु, सुधामयूख प्रिया ए सिंचहु ॥
मृगी१हरि२रु मृगचर्मा३सुरभा४, पूता५कपिला६दंष्ट्रा७सुलभा८ ।४४॥
श्वेतभद्रचारिका९ पुलस्त्य तिय, इती सोहि सिंचहु पुहवीप्रिय ॥
श्येनी१अरु भासी२क्रौंची३तिम, धृतराष्ट्री४पंचमी सुकी५तिम।४५॥
दिनकर सूत अरुनकी ए तिय, सिंचहु हडु तोहि करि हित हिय॥
आयति१नियति२रात्रि३निद्रा४हु४, सव संस्थानँ हेतु ए सिंचहु ।४६।
सेना१उमा२सची३रु वनस्पति४, धूमोर्णा५ गौरी६ शिवा७निरति८
ज्योत्स्ना९ बुद्धि १० नंदिनी११वलया १२, आनृस्पा१३हु तेरहौं १३

*धर्म की स्त्रियां ॥ ३८ ॥ १ इत्यादि २ कश्यप की स्त्रियां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥
३ हे राजा ४ पीड़ा मिटानेवाली ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ५ चंद्रमा की स्त्रियें ॥ ४४ ॥
॥४५ ॥ ६ सूर्य के सारथि ७ स्थिति के कारण ॥ ४६ ॥

सद्द्या ॥ ४७ ॥

इती कालके अवयव जानहु, ते तव सिर अभिसेचन तानहु ॥
रवि१ ससि२ कुज ३ बुध ४ गुरु५ कवि६ सनि ७ तम१८, सिंचहु ए ग्रह नव६ आहिक९ सम ॥ ४८ ॥
स्वायंभुव१ स्वारोचिष२ औत्तम३, तामस४ रैवत ५ चाक्षुष ६ छम
वैवस्वत७ सावर्णि८ दक्षसुत९, ब्रह्मसुत१० रु मनु धर्म सुत ११हु नुतं ॥ ४९ ॥
रुद्रपुत्र१२ पुनि रौच१३भौत्य१४पहु, ए मनु तोहि चतुर्दश१४सिंचहु॥
विश्वभुक१ रु विश्वप२ चित्र३हु सुनि, पहुरि सुशांत४ सुमुख विभु ५ त्यों पुनि ॥ ५० ॥
मनोजव ६ रु ओजस्वी७ बलि८ जुत, एकतम९ रु अंतिक१०पुनि वृप११ नुत ॥
कृतिधामा१२ रु दिविस्पृक१३ सुचि१४ पहु, देवपाल६ ए चउदह १४ सिंचहु ॥ ५१ ॥
अरु रेवंत१ कुमार२ रु वर्चा३, बीरभद्र४ नंदी५ हु सुवर्चा ॥
रुवर्चा१सुवर्चा२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
पुरोजवाख्य६ विश्वकर्मा७पहु, सुरन सुरूप तोकों ए सिंचहु॥५२॥
आत्मा१ रु असुमान२ दक्ष३हु जिम, हविष४ गविष्ठ५माक्षा६पट्ट ७ ऋत८ तिम ॥
सत्य६रु आह्व१०नरेसँ सुद्वजस, सिंचहु देर अंगिरस ए दस१०॥५३॥
क्रतु१ रु दक्ष२ वसु३ सत्य४ काल ५ मुनि ६, रोचमान७ धृतिमान८ मनुज९ पुनि ॥
विश्वेदेव काम१०जुत दस१०मित, हृद्व नृपति सिंचहु ए करि हित५४
मृगव्याध१रु सर्प्प२रु निर्ऋति३ जिम, अजैकपात४ रु अहिर्बुध्न्य५

॥४७॥ १समय क २ राहु १ केतु ॥४८॥ ४ समर्थ ५ स्तुति योग्य ॥४६॥ ५० ॥ ६ देवोंकी रक्षा करनेवाले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ७ शुद्ध यशवाले राजा ॥५३॥ ५४ ॥

तिम ॥

पुष्पकेतु ६ बुध ७ भरत८ मृत्यु ९ पहु, किंकिणि १० स्थाणु ११
रुद्र ए सिंचहु ॥ ५५ ॥

भावन१—-—२सुजन्य३सुजन४जिम, धाजरु ५यसुत६सुवर्णवर्ण७तिम
प्रसव८द्व९भावप१०ऋतु११ए पहु, भृगु अभिधान देवता सिंचहु॥५६॥

मन१ मरु२ माण३ अपान४ हंस५ हय६, नारायण ७ रु जगद्धित
८ रन९ नय१० ॥

द्विविश्रष्ट११बिभुचिति१२तोकोँ पैहु, इते साध्य संज्ञक सुर सिंचहु५७

धाता१मित्र२अर्यमा३दृगजग, पूषा४शक्र५अंश६वरुण ७हु भग८ ॥
त्वष्टा ९ विवस्वान १०, सविता ११ पहु, बिष्णु १२ बहुरि बारह १२
रवि सिंचहु ॥ ५८ ॥

एकज्ज्योति१द्विज्ज्योति२जथा, त्रिज्ज्योति३चतुज्ज्योति४पुनितथा ॥
पंचज्ज्योति५ एकशक्र६हुभल, इंद्र७द्विशक्र८त्रिशक्र९ महाबल ।५९।

अतिसक्रुत १० रु मित ११ सम्मित १२ अमित१३ हु, ऋतजित १४ स-
त्यजित१५रु सुषेण १६पहु ।।

श्येनजित१७रु अतिमित्र १८ मित्र१९ जिम, पुरुजित २० धाता २१
अपराजित२२ तिम ॥ ६० ॥

ऋत२३ऋतवान २४ बिधृत २५ ध्रुव२६ज्योँहीँ, वरुण २७ विदारण
२८ ईदृश २९ त्योँहीँ ॥

अन्यादृश३० एतादृश३१ जानहु, क्रीडन३२ मुनि३३ अमिताशन ३४
मानहु ॥ ६१ ॥

शक्ति३५ महातेजा३६ हु सरभ३७ जुत, महायशा३८ क्षिप३९ धा-
तुरूप४० नुतं ॥

भीम ४१ सहद्युति ४२ अतिउक्त ४३ सुनयं, अनाधृष्य४४ वपु ४५

॥ ५५ ॥ १ नाम ॥ ५६ ॥ २ हे प्रभु ३ साध्य नामवाले ॥ ५७ ॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ स्तुतियोग्य ५ श्रेष्ठ नीतिवाले ॥ ६२ ॥

वास४६ काम४७ जय४८ ॥ ६२ ॥
पुनि विराट४९ए इंद्र मित्र पहु, नव जलधि४९मित मरुतगन सिंचहु
चित्रांगद१ रु चित्ररथ२ जैसैं, चित्रसेन ३ वीर्यवान तैसैं ॥ ६३ ॥
ऊर्णायु४ अनघ५ उग्रसेन६ पुनि, सोम७ सूर्यवर्च्चा८ तृणपप९सुनि
दिविश्चित्र१० धृतराष्ट्र११ कार्णि १२ जिम, कलि १३ अंगिरा १४
दुराध१५ हंस१६ तिम ॥ ६४ ॥
वृषपर्वा१७ नारद१८ पर्ज्जन्य१९ हु, हाहा२० हूहू२१ विश्वावसु२२
पहु ॥
ताम्रक२३ सुरुचि२४ हु गंधर्वन गन, ए नृप सिंचहु तोहि मोद
मन ॥ ६५ ॥
आहूती१ रु शोभयंती२ जिम, वेगवती३ अरु आप्लुवती४ तिम ॥
ऊर्क५ रु वेकरि६ वभ्रु७ अमृतरुचि८, भू९ रुट१० भीरु ११शोचयं-
ती१२ सुचि ॥ ६६ ॥
भिन्न जाति एते अच्छरि गन, सिंचहु तोहि नरेस कित्तिधन ॥
अनुत्तमा१ रंभा२ विश्वाची३, मनोवती४ मेनका५ घृताची६ ॥६७॥
सहजन्या७ रु स्वरूपा८ जैसैं, सुकेसी९ रु पर्णाशा१० तैसैं ॥
क्रतुस्थला११ पुंजिकस्थला१२पुनि, प्रम्लोचा १३ रु पूर्वचित्ती १४
सुनि ॥ ६८ ॥
सामवती१५ रु पंचचूडाख्या१६, अरु उर्वशी१७ अनुम्लोचाख्या १८
चित्रलेखिका१९ विद्युत्पर्णा२०, तिलोत्तमा२१ रु सुगंधि २२ सुव-
र्णा ॥ ६९ ॥
सुवपु२३ अदृश्यलक्ष्मणा२४ हेमा२५, मिश्रकेशि२६ अमिता २७
आहेमा२८ ॥
आहेमा१ आहेमा२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१उनचासकी गिनती वाले ॥६३॥६४॥ २गन्धर्वों का समूह॥ ६५ ॥ ६६॥ ३कीर्ति
ही है धन जिस के ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४ श्रेष्ट वर्ण (रंग) वाली ॥ ६९ ॥ ७० ॥

रुचिका२९ सुव्रता३० सुबाहु३१ जैसैं, सरस्वती३२ रु सुघोषा३३
तैसैं ॥ ७० ॥

बहुरि पुंडरीका३४ रु सुदारा३५, सुगधा३६ रु सुरसा३७हु ³सुता ॥
कामला३८रु सूनृतालया३९ज्यौं, वासोली४० ¹हंसपादी४१त्यौं॥७१॥
सुमुखा४२ रतीलालसा४३ इति पहु, ²अच्छी तोहि अच्छरी सिंचहु
दैत्यराज प्रल्हाद१ बिरोचन२, धन्वी बाणा३तथा कीरतिधन ॥७२॥
इत्यादिक लौ दैत्य दिव्य जल, सिंचहु तोहि हहुभूपति भल ॥
बिप्रचित्ति१ आदिक सब दानव, सिंचहु तोहि मंत्रजित मानव॥७३॥
हृत्प१ प्रहेस२ व्पास३ पुरुषादन४, पौरुषेय५ शैलेंद्र६वध७ रसन८
विद्युत९ सूर्प१० सुकैशी११ मखहा१२, सिंचहु ए आद्यराक्षस
तहा॥ ७४ ॥

बलि सुसिद्ध१ मणिभद्र२ सुमन३ जिम, नंदन४ अरु कंडूति५ शंख
६ तिम ॥
मणिमान७ रु बसुमान८ मंदरस९, पिंगाक्ष १० रु प्रद्योत ११ म-
हाजस ॥ ७५ ॥

चतुर१२ भीम१३सर्वानुभूति१४यम, पद्मचंद्र१५अरु मेघवर्ण१६सम॥
भूतिमान१७ केतुमान१८ त्यौं बर, श्वेत१९ बिपुल२०त्यौं भव्य२१
प्रभाकर२२॥ ७६ ॥

मौलिमान२३ प्रद्युम्न२४ जयावह, कुमुद२५ बलाहक२६ पद्म २७
पद्म सह ॥
बिजयाकृति२८ बलाहक२९सु बीर३०हु, पद्मनाभ३१ शतजिव्ह३२
सुगंध३३ हु ॥ ७७ ॥

रहु१ धहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हिरण्याक्ष ३४ पहु पौर्णमास, सम सिंचहु राजवृद्ध ए सत्तम ॥
शंख१ रु पद्म२ मकर३ कच्छप४ जिम, कुंद५मुकुंद६ रु महापद्म७

१श्रेष्ट नेत्रोंवाली ॥ ७१ ॥२ उत्तम ॥ ७२ ॥३मनुष्यों को सलाह में जानने वाला
॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

७ तिम ॥ ७८ ॥

नील८खर्व९ए आय महानिधि, सिंचहु नवएहि बिचारि बेदबिधि
एकवक्त्र१सूचीमुख२ज्यौंही, छगल३बिषाद४ उलूखल५ त्यौंही ७९
दुष्पूरण६ ज्वलनांगारक७ पुनि, कुंभमात्र८ उपबीर ९ पांसु१० पुनि
चक्रखंध११ रु अकर्ण१२ महामन, पात्रपाणि१३ बिपुलक१४ ओ
स्कंदन१५॥८०॥

बहुरि बितुंड१६ प्रतुंड१७ इती पहु, तोहि पिसाच जातीहू सिंचहु ॥
पुनि नाना मुख बाहु सिरोधर, दांत बिशुध अट्टाल सून्यघर॥८१॥
तेहु चतुष्पद पर शिवके गन१, सिंचहु तोहु इह धरनीधन ॥
महाकाल१ नरसिंह२ अग्ग करि, सब मातर३ सिंचहु सुभ जल
भरि ॥ ८२ ॥

ग्रहस्कंद१ नामक बिशाख२ सह, नैगमेय३ ए सिंचहु गुहग्रह ॥
डाकिनि१योगिनि१खेचर१ भूचर१, सिंचहु तोहि समस्त नरेश्वर ८३
गंधकुमार१ विष्णु२ अरु अरुड़३ हु, अरुणि४ महाखग्ग बिनत ५
गरुड़६हु ॥

संपाती७ जुत ए सुपर्ण सब, सिंचहु नृप उम्मेद तोहि अब ॥८४ ॥
शेष१ अनंत२ बासुकि३ रु बामन४, कुंभ५ अंजनोत्तम६तक्षक७गन
सुपर्णारि८ ऐरावत९अहिबर, महापद्म१०कंबल११रु अश्वतर१२।८५।
महानील१३ धृतराष्ट्र१४ बलाहक१५, एलापत्र१६ खड्ग१७ कर्को-
टक१८ ॥

महाकर्ण१९ गंधर्व२० सनस्विक२१, पुष्पदंत२२ नहुष२३ रु पद्म
२४ कुलिक२५॥८६॥

खररोमा२६ रु कुमार२७ धनंजय२८, शंखपाल२९ अरु पाणि३०
गरल[३] मय ॥

॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १ राजा ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ २ श्रेष्ठ सर्प ॥ ८५ ॥ ८६ ॥
३ विष ॥ ८७ ॥

इत्यादिक सब आय नाग वर, सिंचहु तोहि महीप धर्मधर ॥८७॥
ऐरावत१ अरु कुमुद२ पद्म३ जिम, पुष्पदंत ४ वामन ५ अंजन ६ तिम ॥
सुप्रतीक७ अरु नील८ इते पहु, सुभठाँ तोहि महागज रक्खहु ८८
विधिहंस१ रु शिववृषभ२ प्रीति धरि, उच्चैश्रवा३ हय रु धन्वंतरि१
कौस्तुभ१ शंख१ चक्र१ त्रिशिखाख्य२ हु, बज्र३ रु नंदक४ अस्त्र२ समारुपहु ॥ ८९ ॥
अवनिप तोहि संचिक्कैं ए सब, बिजय बिथारहु तावकीन अब ॥
वृद्धशाखा १ तप १ यश १ दम १, सत्य १ दान १मख १ब्रह्मचर्य१ शम१॥ ९० ॥
आयु१ रु चित्रगुप्त१ ए जेते, सिंचहु तोहि कहे श्रुति तेते ॥
दंड१ रु पिंगल२ मृत्यु३ काल४ पहु, अंतक ५ वालखिल्य ६ जय मंडहु ॥ ९१ ॥
दिग्गो च्यारि४ सुरभि१पुनि ज्योंही, सब गायन जुत सिंचहु त्योंही
व्यास१ नाकुभँव२ शमन३ पराशर४, देवल५ पर्वत६ भार्गव७ तप पर ॥ ९२ ॥
जाबालि८ जमदग्नि९ योगेश्वर१०, कराव११ कुशारणि१२ वेदवाह १३ बर ॥
शुचिश्रवा१४ गाधेय१५ रु बर्द्धन १६, शूलक्कछप १७ अत्रि १८ रु कात्यायन१९ ॥ ९३ ॥
बिदूरथ२० रु एकत२१ बलाक२२ द्वित२३, गौतम२४ भरद्वाज२५ कुटिमृड२६ त्रित२७ ॥
शांडिल्य२८ रु मौद्गल्य२९ रु गालव३०, वृहदश्व३१ रु इभसुत ३२ सारंगव ३३ ॥९४ ॥

॥ ८८ ॥ १ नामवाले ॥ ८९ ॥ २ तुम्हारी ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ३ वाल्मीकि ॥ ९२ ॥ ४ याज्ञवल्क्य ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

यवक्रीत३४ जयजानु३५ घटोदर३६ रैभ्य३७ आत्मधामा३८ जैमि-
नि३९ वर ॥

कुंभज४०[1] दुंदु४१ रु मृदु४२ शुचि४३ तपमय, इध्मबाहु४४ मृप ४५
बहुरि महोदय४६ ॥ ९५ ॥

एते मुनि अभिसेक रक्खि रति, सिंचहु तोहि उमेद महीपति ॥
पृथु१ दिलीप२ दुक्खंत३[2] भरत४ अथ, मुन५ ककुत्स्थ६ युवनाश्व७
जयद्रथ८ ॥ ९६ ॥

अनेना९ रु मांधाता१० ज्यौंही, शत्रुजित११ रु मुचकुंद१२ हु त्यौंही
पुरूरवा१३ इक्ष्वाकु १४ रु यदु १५ पुनि, अंबरीष १६ नाभाग तथा
सुनि ॥ ९७ ॥

भूरिश्रवा१७ महाहनु१८ पुरु१९ जिम, वृहदश्व२० रु सुद्युम्न२१ भू-
प तिम ॥

भूरिद्युम्न२२ तथा प्रद्युम्न२३हु, संजय२४ पुनि इतिमुख नृप सिं-
चहु ॥ ९८ ॥

परजन्यादि मेघ१ नाना तरु२, ओषधि३ रत्न४ अनेक बीज५ वर॥
पुरुष अभ्रमेयांग१ भूत सर५, भू१ जल२ तेज३ अनिल४ अरु अं-
बर५ ॥ ९९॥

मन१ बुद्धि२ रु अव्यक्तात्मा३ पहु, एहु तोहि इहन पति सिंचहु ॥
रूपभौम १ अरु शिलाभौम २ जिम, पातालाख्य ३ नीलमृत्तिक-
४ तिम ॥ १०० ॥

पीत५ रक्त६ सित७ असित८ भौम सब, अभिसिंचहु इत्यादि तो-
हि अब ॥

जंबू१ शाक२ क्रौंच३ कुश ४ पुष्कर५, प्लक्ष ६ शाल्मली ७ देहु
स्वाम्य वर ॥१०१ ॥

---

१ अगस्त्य ॥ ९५ ॥ २ दुष्यन्त ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ३ इत्यादि ॥९८॥ ४ (श्रेष्ठ)॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥ १०१ ॥

उत्तर कुरु१ ऐरावत२ अघहृत, केतुमाल३ भद्राश्व४ इलावृत५ ॥
त्यों हरिवर्ष६ किंपुरुष७ भारत८, रम्य९खंड सिंचहु हित धारत१०२
इंद्रद्वीप१ कसेरु२ तथा पुनि, ताम्रवर्ण३ रु गभस्तिमान४ सुनि ॥
नागद्वीप५ सौम्य६ गंधर्व७हु, वरुण८ अभय९ ए द्वीपहु सिंचहु१०३
हेमकूट१ हिमवान२ निषध३ गिरि, नील४ श्वेत५ अरु शृंगवान६ फिरि
मेरु७ गंधमादन८ महेंद्र ९ जिम, माल्यवान १० अरु मलय११ सह्य१२ तिम ॥ १०४ ॥
शुक्तिवान१३ गिरि ऋक्षवान१४ पुनि, विंध्याचल१५ गिरि पारियात्र १६ पुनि ॥
इत्यादिक सब पुण्य महीधर[२], सिंचहु तोहि महीपति संभर॥१०५॥
ऋक्१ यजु२ साम३ अथर्व४ च्यारि४ श्रुति, सिंचहु तोहि प्रसन्न पाय नुति[३] ॥
इतिहास१ धनुर्वेद२ आयु३ पहु, पुनि गंधर्व४ शिल्प५ उपवेदहु १०६
शिक्षा१ कल्प२ व्याकरण३ ज्योंही, ज्योतिष४ छंद५ निरुक्त६ हि त्योंही ॥
सिंचहु अंग बेदके ए खट६, तोहि भूप उम्मेद विहित बट[४] ॥ १०७॥
ए खट६ अंग रु बेद च्यारि४।१० पुनि, मीमांसा११ स्मृति१२ न्याय १३ तथा सुनि ॥
अरु पुराण१४ बियाहु चतुर्दस१४, सिंचहु ए नृप तोहि महाजस१०८
पांचरात्र१ अरु बेद पाशुपत, कृतांत पंचक५ सांख्य४ योग५ मत ॥
बिबिध शास्त्र इत्यादि नरेश्वर, सिंचहु तोहि दिव्य जल घट कर
गायत्री१ गंगा२ गांधारी३, जय बुल्लहु महाशिवा४ नारी५ ॥
सुर१ दानव२ गंधर्व३ यक्ष४ पुनि, राक्षस५ पन्नग६ मुनि७ मनु८ गो९ सुनि ॥ ११० ॥

---

१ पाप को हरनेवाला ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ २ पर्वत ॥ १०५ ॥ ३ स्तुति पाकर ॥ १०६ ॥ ४ उचित मार्ग से ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

देवनकी माता१० पुनि ज्योंही, देवनकी पतनी११ सब त्योंही ॥
द्रुम१२रु नाग१३ दैत्य१४ रु अच्छरि गन१५, अस्त्र१६ शस्त्र१७ राजा१८ अरु बाहन१९ ॥१११॥
ओषध२० रत्न२१ काल२२अवयव२३जिम, स्थानक२४पुराय आयतन२५ सब तिम ॥
जीमूत२६रु जीमूतबिकार२७हु, उक्त अनुक्त बिजय बिसतारहु११२
लवणोद१ रु दुग्धोद२ घृतोदक३, दधिमंडोद४ तथा मद्योदक५ ॥
त्योदक१ द्योदक२ अन्त्यानुप्रासः१॥
इक्षुरसोद६ रु सुद्धोदक७ वर, गर्भोदक८ सिंचहु ए सागर ॥११३॥
बहुरि च्यारि४सागर निज जल करि, सिंचहु तोहि कनक मय घट भरि ॥
प्रयाग१नैमिष२प्रभास३पुष्कर४, उत्तरमानस५तथा ब्रह्मसर६ ।११४।
नंदकुंड७ गयशीर्ष८ पंचनद९, कालोदक१० रु स्वर्गमार्गप्रद११ ॥
त्योंहि अमरकंटक१२ भृगुतीरथ१३, कलिकालाश्रम१४ अग्नितीर्थ१५ अथ॥ ११५ ॥
गोतीर्थ१६रु तृणबिंदुकृताश्रम१७, जंबूमार्ग१८रु तंडुलिकाश्रम१९
स्वर्ग२० कपिल२१ तीरथ अरु वातिक२२, त्यों आगस्त्य२३महासर२४ खंडिक२५ ॥ ११६॥
अंगद्वार२६ कुमारीतीरथ२७, कुशावर्त्त२८विल्वक२९ अघहरकथ
नील१ रैवत२ रु अर्बुद३ पर्वत३०, शाकंभरी३१ सुगंधी३२ मुनिमत ॥११७॥
कुब्जाम्रक३३ भृगुतुंग३४ रु कनखल३५, धारा३६ कुंभा३७ कपिलाश्रम३८ भल ॥
अग्नतुंग३९ अरु चमसोद्भेदन४०, अश्वगंध४१ कालंजर४२ विनशन४३॥११८॥

१देवताओं की ।२स्त्रियाँ३वृक्ष॥१११॥११२॥॥११३॥११४॥११५॥११६॥११७॥११८॥

रुद्रक४४ अग्नि४५ केदार४६ मोच४७ जिम,महालय४८रु बदरीआ-
श्रम४९ तिम ॥
नंद५० ससितीरथ५१ रवितीरथ५२, वासवतीरथ५३ नासत्यक
५४ अथ ॥ ११९ ॥
वरुण५५ वायु५६ वैश्रवण५७ तीर्थ पुनि, द्रुहिण५८ईश५९ यम६०
अनल६१ तीर्थ सुनि ॥
विरूपाक्षतीरथ६२पवित्र जिम,धर्मतीर्थ६३अप्सरितीर्थ६४हुतिम १२०
॥ रुचिरा ॥
ऋषि६५ वसु६६ साध्य६७ मरुत६८ आदित्यक६९ रुद्र७० अंगिरस
७१ तीर्थ जिते ॥
विश्वेदेवतीर्थ७२ भृगुतीर्थ७३ रु ब्रह्मप्रस्रवण७४ सकल तिते ॥
मानससर७५ वाराहसरोवर७६ सालिग्राम हरोवर७७हू ॥
कामाश्रम७८ रु सपूर्व७९सुपुत्रा८०रपौहित्रिकूट८१ महावरहू॥१२१॥
चित्रकूट८२कतुसार८३ विष्णुपद८४ कापिल८५ वासुकि८६ तीर्थ
महा॥
सिंधूत्तम८७ सूर्पारक८८ कुंभक८९ पुंडरीक९० अविमुक्त९१ तहा
तपोद्वार९२ सिंधूदधिसंगम९३ गंगासागरसंगम९४हू ॥
अच्छोदक९५ रु बिंदुसर९६ मानस९७ फल्गुतीर्थ९८सु मनोरमहू॥
लौहित्यक९९ कुंभावसुंद१०० पुनि धर्मारण्यक१०१ पुनि नमने॥
वस्त्रापथ१०२ रु छागलेयक१०३ तिम बदरीपावन१०४ भव्यमने
वन्हितीर्थ१०५ अरु मेषतीर्थ१०६ नृप इह सप्तऋषितीर्थ१०७जुपै॥
पुष्पन्यास१०८ कार्णाश्रव१०९ हंसपद११० अश्वतीर्थ १११मणिमंथ
११२सुपै ॥ १२३ ॥
॥ हीरकम् ॥
दिविका ११३ अरु इंद्रमार्ग११४ स्वर्णबिंदु११५ सिष्टजो ॥

॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

आह्लक्क११६ ऐरावत११७ करबीर११८हु इष्ट जो ॥
भोगयश११९ वणिक१२० नागम१२१ ऋणमोचनकाख्य१२२हू ॥
पापमोचनिक१२३ उद्वेजन१२४ संपूज्याख्य१२५हू ॥ १२४ ॥
काख्यहू१ ज्याख्यहू२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
देवह्लसर१२६ घृतसर१२७ दधिसरवर१२८ नाम जे ॥
सिंचहु इत्यादि सकल तीरथ सुख धाम जे ॥
मंडहु जय ए नरेस मेटहु अघसर्वकौं ॥
तावकं विथराय तेज खंडहु अरि वर्गकौं ॥ १२५ ॥
॥ हरिगीतम् ॥
गंगा१ रु न्हदिनी२ न्हादिनी३ सीता४ रु चक्षु५ नदी जथा ॥
तिम कांचनाक्षी६ सुप्रभा७ रेवा८ रु सिंधु९ न्हदा१० तथा ॥
अघओघ अंकुस पावनी११ विमलोदका१२ पुनि जानिये ॥
क्षिप्रा१३ रु शोण१४ रु तर्प१५ सरयू१६ चंद्रभागा१७ मानिये ।१२६।
धूमा१८ सरस्वति१९ ओघनादा२० गंडकी२१ रु इरावर्ता२२ ॥
पीता२३ बिशाला२४ मानसी२५ रंभा२६हु सुद्ध सुह्लावर्ता ॥
केशा२७ सुवेशा२८ देविका२९ रु सिवा३० विभागा३१ पावनी ॥
यमुना३२ देवन्हदा३३ बितरता३४ कौशिकी३५पुनि सुनि मनी१२७
चर्मण्वती३६ रु विदर्भिका३७ कुंती३८ रु अच्छोदा३९ धुनी ॥
तपती४० रु निर्विंध्या४१ तृतीया४२ वंदना४३ श्रुतिमैं सुनी ॥
सुरसा४४ रु इक्षुमती४५ अवंती४६ धूतपापा४७ गोमती४८ ॥
पुनि शोण४९ इक्षुकि५० वेदमाता५१ बाहुदारु५२ सरस्वती५३॥१२८॥
श्येनी५४ रु पर्णाशा५५ कुमुद्वति५६ वेदघुर्घुरदा५७ तथा ॥
पुनि सदानीरा५८ त्यौंहिं बेणुमती५९ रु देवस्मृति६० तथा ॥
मंदाकिनी६१ रु पलाशिनी६२ रु पिसाचिकी६३ पुनि पिप्पली६४॥
त्रपिका६५ दशार्णा६६ सिंधुरेखा६७त्यौंहिं करतोया६८भली ।१२९।

१ नामक ॥ १२४ ॥ २ तेरा ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ ३ नदी ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

दूजी२ कुमुद्वतिका६९ शिनीवाली७० कुहू७१ पुनि मंजुला७२ ॥
चित्रोपला७३ अरु चित्रवर्णा७४ शुक्तिम७५ मीला७६ वाकुला ७७॥
तापी७८ कपू ७९ अमला८० पयोष्णी८१ मंदगा८२ निषधावती ८३
वेणा८४ सिता८५ दूजी२हु निर्विंध्या८६ रु भीमा८७दुर्गती ८८॥१३०॥
तोया८९ रु वैतरणी९० महागोरी९१ रु गोदा९२ मंगला९३॥
नृसमा९४ रु भीमरथी९५ रु जंबू९६ कृष्णवर्णा९७ सज्जला ॥
पुनि तुंगभद्रा९८हू तरंगिनि मंदगा९९ रु भयंकरा १०० ॥
वात्या१०१रु कावेरी१०२ रु कृतमाला१०३हु मुक्तिद संबरा ।१३१।
पुनि ताम्रपर्णी१०४ पुष्पभद्रा१०५ उत्पलावति१०६ मद्रनी १०७
त्रिदिवालया १०८ अरु वंशधीरा १०९ लांगुली११० सुभगा घनी
सुकुलावती१११ ऋषिका११२ रु ऋषिकुल्या११३ रु बरबेगा ११४
लया ११५ ॥
दूजी २ पयोष्णी ११६ मंदबाहिनि ११७ कालबाहिनि ११८ त्यों
दया ११९ ॥ १३२ ॥
व्योमा १२० रु देवी १२१ त्यों २ बिशाला १२२ कंपला १२३ रु
सुवाहिनी१२४ ॥
दूजी२हु करतोया१२५ रु वेत्रवती१२६ सुभद्रा१२७हू गिनी ॥
ताम्रा १२८ रु अरुणा १२९ सुमकारा १३० अद्रिका १३१ रु हिर-
ण्मई१३२ ॥
पुनि२सुमकारा१३३दूसरी इषमा१३४रु अश्ववती१३५नई ॥१३३॥
आलोपला१३६ अरु आयगा१३७भासी१३८रु संध्या१३९भूप जे ॥
शाला१४० रु बड़वा१४१मालिका१४२वलयावती १४३हु अनूपजे
रु महेंद्रवाणी१४४ बाहुदा१४५ दूजी२रु नीलोद्गतकरा१४६ ॥
बनवासिनी१४७ नंदा१४८ रु परनंदा१४९सुनंदा१५० अघहरा।१३४।
वसुवासिनी१५१ पुनि आपगा इत्यादि सब यँहँ आयकैं ॥

॥ १३० ॥ १ नदी ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

जल पाप नासकं बिबिध निज निज दिव्य घट भरि लायकैं ॥
उम्मेद नृप बर तोहि सिंचहु मंत्र इहिं गति लुल्लिकैं ॥
संपातवान हिरण्य घट गहि सिंचयो हित खुल्लिकैं ॥ १३५ ॥
वह कलस बर सब मिश्र जल जुत सर्व ओषधि१ जल भरयो
सबगंध२ बीज३ प्रसून४ फल५ मणि६ नीर पूरित जो करयो ॥
सित सूत्र वेष्टित कंठ जो सितवस्त्र कर्त्तन चित्रयो ॥
पुनि छीर वृच्छलतातपत्रक सुद्ध हाटक जो भयो ॥ १३६ ॥
वह कलस लै तब गणक पुंगव उक्त मंत्र सुनायकैं ॥
सिंच्यो नरेसहिं स्वस्ति पढि इम वेद रीति बिधायकैं ॥
पुनि गंधतैलन अंग उब्बटि सुद्ध न्हानहु मंडयो ॥
सित वस्त्र धरि छवि मुकुर१घृत२बिच देखि जो द्विजकों दयो१३७
दधि१ दुव्व२ चंदन३कुंकुमा४ दिक द्रव्य मंगल भूपलै ॥
हरि पूजि हाटक मूर्त्तिमैं उपचार अष्टि१६ अनूपलै ॥
मधुपर्क१ भूखन२वस्त्र३कैं गणक१रु पुरोहित२ पूजये ॥
पुनि बिप्र इतरहु पूजिकैं उनकेहु आशिष व्हाँ लये ॥ १३८ ॥

॥ दोहा ॥

बिहित पट्ट१ बिप्रन तदनु, बंध्यो नृपति ललाट ॥
बंध्यो पुनि मनिगन जटित, नृप सिर मुकुट२सुघाट ॥१३९॥
वृष१ मार्जार२ तरच्छुकी, बहुरि सिंहकी खाल ॥
तर ऊपर क्रमतैं तबहि, डारी मंच बिसाल ॥ १४० ॥
तिन ऊपर उत्तम वसन५, दीनों बिसद६ बिछाय ॥
पुरोहित सु तिहिं मंच पर, दयो नृपहिं बैठाय ॥ १४१ ॥
द्वास्थ दिखाये पुनि नृपहिं, सचिव१ पौरजन२ ज्ञात ॥
बनिक३ प्रकृति इत्यादि सब, कहि कहि किति सुहात१४२

१धारायुक्त२सुवर्ण का घड़ा॥१३५॥३वृक्ष की लताओं के छत्र सहित॥१३६॥४कांच लै॥१३७॥१३८॥१३९॥५चीते की॥१४०॥६श्वेत॥१४१॥७द्वारपाल ने८समूह ॥१४२॥

आम१वसन२गज३हय४कनक५, गो६अज७अवि८गृह९आप्पि ।
गणक१ पुरोहित२उभय३पुनि, पूजे नृप हित थप्पि॥१४३॥
त्योंहिं तीन३ ऋक१ साम२,यजु३, पाठक पूजे बिप्र ॥
गोरस१ मोदक२ करि बहुरि, सबहि जिमाये छिप्र ॥ १४४ ॥
रजत१ कनक२ गो३ वस्त्र४ तिल५, अन्न६पुष्प७प.ल८हेम९
भूमि१० दान इत्यादि सब, दिग विप्रन हित छेम ॥ १४५ ॥
पुनि करि अग्गि प्रदच्छिना, धनुख१ बान२ कर धारि ॥
परसि पिट्ठि नृप१ धेनु२ की, गुरु बंदन उच्चारि ॥ १४६ ॥
तदनु बिहित लच्छन लाखित, जातिमान हय लाय ॥
सर्वौषधि जल कलस करि, दीनों सुबिधि न्हवाय ॥१४७॥
वस्त्र१ कनक२ भूखन३ बितरि, पढे पुरोहित मंत्र ॥
करहु श्रवन तिन अर्थ कछु, संभर राम स्वतंत्र ॥ १४८ ॥
तू जय हय१ तू राजहय२, आद्य३ इंदिराजात४ ॥
जिम यह राजा१ नरनपति, तू२ जिम हयन सुहात ॥ १४९ ॥
आरोहैं गंधर्व जिम, नित्य तोहि नरनाह ॥
तिम रक्खहु नरनाहकों, सदा पूज्य बरवाह ॥ १५० ॥
नृपहिं दिखावहु स्वप्नकरि, आवैं जबहि अरिष्ट ॥
पुनि रक्खहु सब हय धरयो, यह भर तोपर शिष्ट ॥ १५१ ॥
अबतैं यह नृप भक्ति करि, आवहिं तेरे अग्ग ॥
गंध१ माल२ अनुलेप३ करि, पूजहिं प्रीति समग्ग ॥ १५२ ॥
स्वस्तिवचन१ आशिष२ बिबिध, बिप्रनकेहु पढाय ॥
तोहि इह नृप पूजिहैं, पट्टोचित हयराय ॥ १५३ ॥
मघवा१ रक्खहु पूर्व१ तैं, दक्खिन२ तैं यम२ तोहि ॥ ... पति मानने

१ भेड़ (मींढा) ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ २ अग्नि की ॥ ...हां में नीचे ॥ ४ ॥ ... इन्द्रनाथ ने तिलक किया
॥ १४८ ॥ ३ लक्ष्मी से उत्पन्न ॥ १४६ ॥ ४ हे श्रेष्ठ घो...
॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १इन्द्र

पच्छिम३ उत्तर४तैं सदा, बरुन३ संभुसख४ सोहि ॥ १५४ ॥
सब दिसतैं रक्खहु सबहि, पूज्यो हय इहिं राह ॥
गवाक१ पुरोहित२ भूपकौं, बहुरि चढायो बाह ॥ १५५ ॥
तदनंतर बारन बिहित, आन्यौं रचि, सनमान ॥
मंत्र सुनाये गवाक्ष वर, ताके दक्खिन कान ॥ १५६ ॥
नृपको गजपति होहु तू, श्रीगज कीनौं भूप ॥
गंधादिक पूजा सदा, लहिहै तू जयरूप ॥ १५७ ॥
नृपकों रक्खहु नागपति, रन१ नगर२ गृह३ सब ठाम ॥
तजि पसुभावहिं दिव्यता, ले हुव पीलुललाम ॥ १५८ ॥
ऐरावतगजको तनय, नाम अरिष्ट सिराहि ॥
देवासुर रनमैं सुरन, कीनौं श्रीगज चाहि ॥ १५९ ॥
तोबिच ताको तेज सब, आवहु नागन नाह ॥
नृपहिं चढायो पूजि इम, इभ पर बिहित उछाह ॥ १६० ॥
गवाक्ष१ पुरोहित२ सचिव३ भट४, भये गजन चढि संग ॥
होय महापथ[3] निज नगर, फिरे अतीव उमंग ॥ १६१ ॥
देवालय जहँ जहँ मिले, तहँ तहँ पूजन कीन ॥
परिकर जुत प्रासाद पुनि प्रविस्यो भूप प्रवीन ॥ १६२ ॥
सचिव१ भटा२ऽऽदिन बिबिध बसुँ, दान१ मान२ सनमानि ॥
बिप्र जिमाये अयुत १०००० मित, आमनाय बिधि आनि १६३
दीन१ अनाथ२ हिं दक्खिना, बिबिध उचित बहु दत्त ॥
सिक्ख सबन दिय स्वस्ति सुनि, भूप असन किय तत्त १६४
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेद-

सिंहचरित्रे ... [illegible]

१ घोड़े पर ॥ १५५ ॥ २ उचित हाथी ॥ १५६ ॥ १५७॥१५८॥ ३ राज मार्ग (बाजार) में ॥ १६१ ॥१६२॥४ धन से५वेदविधि
१धारायुक्त२सुवर्ण का च७
॥१३७॥१३८॥१३९॥ (चीते ...) चम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र

सिंहचरित्रेबुन्दीप्रविष्टहड्डेन्द्राऽभिषेकविधिवर्णनमष्टाविंशोमयूखः ॥
॥ २८ ॥आदितः ॥ ३०६ ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पंच गगन धृति १८०५ सकसमय, वाहुलें पक्ख वॅलच्छ ॥
रतिपति तिथि१३ नृपकैं भयो, अभिसेचन इम अच्छ ॥ १ ॥
पुनि किन्नौं जिन जिन तिलक, अभिसेचनके अंत ॥
क्रम सन तिन नामन कहौं, सुनहु राम छितिकंत ॥ २ ॥
प्रथम पुरोहित निज तिलक, किन्नौं क्रितुव१ नाम ॥
तदनंतर उपदेस गुरू, बिरच्यो बेणिपराम२॥ ३ ॥
तदनु तिलक मल्लार३ किय, पुनि माधव४ कछवाह॥
इहिं दिन इन गद्दिय अधर, रहि किय रीति निबाह ॥ ४ ॥
साहिपुरप उम्मेद५ नृप, पुनि किय तिलक प्रबीन ॥
रानाउत संभूद बहुरि, रान सेनपति कीन ॥ ५ ॥
तदनु कहैं मल्लारकैं, किय नारॅव हरनाथ७ ॥
खत्रिय केसवदास८ किय, सुमति बहुरि हित साथ ॥ ६ ॥
देवगढप जसवंत९ पुनि, मेघ१० बेघमप तत्थ ॥
कोटापति कटकेस पुनि, अखैराम११ कायत्थ ॥ ७ ॥
बहुरि करोलीपति सचिव१२, सोपुर भूप वकील१३ ॥
किन्न तिलक इन हे उभयरे, हुलकर संग सु लीन॥ ८ ॥
साहिपुरेसहिं आदि लैं, सोपुर सचिव समेत ॥

में, बुन्दी में प्रवेश होने और हाडों के इन्द्र के अभिषेक की विधि के वर्णन का अट्ठाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ नव ३०९ मयूख हुए.॥

१ कार्तिक २ शुक्लपक्ष ३ ज्योतिष में कामदेव को तेरस तिथि का पति मानते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ४ मंत्रोपदेश करनेवाले गुरु ने ॥ ३ ॥ ५ गद्दी से नीचे ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ६ जिस पीछे मलार के कहने से ७ लड़के हरनाथ ने तिलक किया ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

नजरि निछावरि किन्न इन, अतिहित बिनय उपेत ॥ ९ ॥
तदनंतर नृप उट्ठिकैं, दम्म निवेदि हजार १००० ॥
कुलदेवी१ पूजन कियउ, रचि खोड़स१६ उपचार ॥ १० ॥
पीतांबर हरि२ पूजि पुनि, भेट निवेदन ठानि ॥
गिरि नितंब[2] खासा महल, तहँ संसद[3] किय आनि ॥ ११ ॥
दुव२ हय दुव२ सिरुपाव इक१, गज मनिभूखन एक१ ॥
किन्नैं इमद् नृपकों नजरि, हुलकर१ बिनय बिवेक ॥ १२ ॥
याही मितद् जयसिंह सुव, माधव२ उच्छव मानि ॥
किन्न नजरि बुंदीसकी, प्रीति उचित पहिचानि ॥ १३ ॥
संतू १पुनि हुलकर सुभट, इक१ हय इक१ सिरुपाव ॥
कँटक इक्क१पुनि कनकको, किन्न नजरि करि चाव ॥१४॥
इक१ इक१ सिरुपाव हय, इक१ इक१ नजरि बिधाय ॥
रामराव२ हुलकर सचिव, अरु तंते२ द्विजराय ॥ १५ ॥
सेटू४ मुख हुलकर भटन, किन्न नजरि इहिं रीति ॥
प्रेम१ सिवाईसिंह२ मुख, माधव भट सप्रीति ॥ ॥ १६ ॥
इमहि नजरि निज भटनकी, लै नृप संभरवार ॥
पठये डेरन सिक्खदै, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ १७ ॥
उदयनैर१ कोटा२ कटकं, हुलकर आयस पाय ॥
पत्ते पुनि निज निज पुरन, तेरसि१३ रत्ति बिताय ॥ १८ ॥
दिवस चउद्दसि१४ गोठि करि, बिबिध भंति बुंदीस ॥
उभय२ जिमाये कँटक जुत, माधव१ हुलकर ईस ॥ १९ ॥
सह कुटुंब पहिरावनी, हुलकरकी नृप कीन ॥
दुव२ बाजी सिरुपाव दुव२, इक१ गज अप्पि नवीन ॥२०॥

॥ ९ ॥ १ जिस पीछे ॥ १० ॥ २ पर्वत के शिखर पर ३ सभा ॥ ११ ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ ४ कड़ा (कंकण) ५ सुवर्ण का ॥ १४ ॥ ६ किया ॥ १५ ॥ ७ आदि ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ ८ सेना ९ आज्ञा पाकर ॥ १८ ॥ १० सेना सहित ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नव९ हीरन सिरुपेच१ सुभायक, रंग गुलाब जटित मधनायक ॥
बुधसिंह जु आलम सन लिन्नों, सो नृप यहँ मल्लारहिं दिन्नों॥२१॥
इक१ बारन तंते२ द्विजकों दिय, इक१ त्योंहीं संतू२ हित अप्पिय
रामराव ३ मल्लार सचिव हित, गज रुप्पय दिय पंच ५०००. सहँस
मित ॥ २२ ॥
इतनैंहीं सेटू४ हित अप्पे, थिर ए च्यारि४ खीयें करि थप्पे ॥
रामराय सुत आनँदराव५हिँ, इक१अब्बहि दिय इक१सिरुपावहिँ२३
पूरबिया द्विज बालकृष्ण६हित, हय१सिरुपाव१दम्म द्वैसत२००मित॥
हुलकर दूत स्वामि७ हित दीनैं१, इक१ इक१हय सिरुपाव नवीनैं २४

॥ दोहा ॥

अश्वनके अनुचर सहित, सबको इम सतकार ॥
बुंदीपति करि करि बिबिध, किय प्रसन्न मल्लार ॥ २५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अग्गैं वल्लभ कुल दीक्षा ही सोतो गोस्वामि गोपीनाथनैं मंत्र देबेकों न आय मिटाई ॥

तब रामानुज दीक्षा लै रू रनपंडित महारावराजा उम्मेदसिंह ऐसैं आमेरके उदरतैं बुंदी कढाई ॥

अब तखत बैठतही देस १ मैं जयश्रीरंगनाथ कहिबेकों हुकम चलायो ॥

अरु पल २ महुरछापन ३ मैं प्रीतिपूर्बक श्रीरंगनाथ नामधेय४ लिखायो ॥ २६ ॥

अरु अग्गैं अपनैं पिता पितामहादिकनकों दान करी पृथ्वी

॥ २१ ॥ १ हाथी ॥ २२ ॥ २ अपने करके ३ घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥
४ नाम॥ २६ ॥

समस्त संप्रदाननकौं खोजि खोजि बुलाय दीनौं ॥

अरु अपनी आपत्तिमैं सूरबीर सुभटादिक समस्त स्वामिधर्मी सेवामैं रजू रहे तिनकौं ग्राम १ गज २ बस्त्र ३ बाजि४नकी बख-सीस कीनीं ॥

उनके अभिधानैं रावराजेंद्र रामसिंह सुनिबेकौं सावधानी करिये ॥

अरु प्रपितामहके बितरण्य बारिधिकौं बिद्वज्जन बानीके तरंडै करि तरिये ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डा हरजन१ सचिव हित, दे सिबिका गज दास ॥
हिंडोली पुरसौं दयो, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ २८ ॥
देव नत्ति सिवसिंह सुत, भारत२ हित बुंदीस ॥
पत्तन१खेड़ा२सौं पटा, दयो सहँस चालीस४०००० ॥ २९ ॥
अमरसिंह रट्ठोर सुत, अभय३सिंह हित तत्त ॥
पटा सहँस छत्तीसको ३००० , पुर अलोद३जुत दत्त ॥ ३० ॥
नाथाउत पित्थल तनय, जयसिंहहि४ चहुवान ॥
पटा हजार पचीस२५०००जुत, नगर दयो निम्मान ॥ ३१ ॥
बंधु भवानीसिंह५ भट, महासिंह हर हेत ॥
बीसहजार२०००० पटा दयो, धोवड़२५ ढंग समेत ॥ ३२ ॥
सेरसिंह६ सामंतहर, हड्डा अरथ अनूप ॥
पटा सहँस धृति१८००० जुत दयो, भजनेरी६पुर भूप ॥ ३३ ॥
हरदाउत हिंदू सुतज, नाहर७कौं हित संग ॥
पटा सहँस पंद्रह१५०००सहित, दियउ पगारा७ ढंग ॥ ३४ ॥
तोक८ महासिंहोत हित, प्रथित दिखावत प्यार ॥

१ दान लेनेवालों को २ नाम ३ दान रूपी ४ समुद्र को विद्वान् लोगों की बाणी रूपी ५ नाव से ॥ २७ ॥ २८ ॥ ६ देवसिंह का पोता ७ पुर ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ८ विदित

द्रंग जैतगढ८सौं दयो, पंटासु पंति१०हजार १०००० ॥३५॥
दसरथसिंह९ प्रयाग सुत, महासिंह सु कुलीन ॥
अठ सहँस८०००को तिहिं पटा, सुहरनि९पुर समदीन ॥३६॥
सुहुकमहर मरजाद सुत, भट नगराजन अत्थ१० ॥
पंच सहँस५०००को दिय पटा, नगर मोठसम१० सत्थ ॥३७॥
बुद्धि सिवाईसिंह११ भट, अमर कबंधज ताहि ॥
पंचसहँस ५००० को दिय पटा, चंद्रवाट११पुर चाहि ॥ ३८॥
पंचोली माथुर प्रथम, मयाराम१२ कायत्थ ॥
दियउ ग्राम बहु द्रव्य जुत, सह सिरुपाव समत्थ ॥ ३९ ॥
पटा स्याम धात्रेय१३ हित, दै मिति तीन हजार३००० ॥
तारागढ निज दुग्गको, किन्न सु किल्लादार ॥ ४० ॥
महडू चारन दान१४ हित, संभर प्रीति प्रकासि ॥
सहँस पंच५०००क ग्राम दिय, ठीकरिया१४बरवासि२ ॥४१॥
स्वीय भट्ट जगराम सुत, बुद्धि भवानी१५राम ॥
मुद्रा दोय हजार२००० मित, दयो सहँसपुर गाम ॥ ४२ ॥
इत्यादिक सब सेवकन, दै धन धाम उदार ॥
करन बिदा मल्लारकौं, बलि किय चित्त बिचार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ आदिरावराजमाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणं हड्डेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजनपूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुल्लकर १ कूर्म्म २ प्रभृतिगज १ हय २ भूषण ३ बस्त्र ४ ऽऽदिनिवेदनतत्स्वस्वशिविरप्रेषणसर्वसम्भोजन

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में पुरोहित और संप्रदाय गुरु, मल्लार, माधवसिंह आदि का रावराजा के मांगलिक तिलक आदि करना १ हड्डेन्द्र का विष्णु और कुलदेवी का पूजन आदि करके उचित महल में जाकर हुलकर और माधवसिंह कछवाहा आदि

गज १ हय२ भूषण३ वस्त्रा ४ ऽऽदिससैन्यमल्लारसत्करणसमात्त रामानुजसम्प्रदायव्यवहारमुद्राऽऽदिश्रीरंगाऽभिख्योल्लेखनपूर्वपुरुषदत्तसमर्पणस्वपार्श्वकरसुभट१ सुसचिव २ सुभृत्या ३ ऽऽदिमेदिनीमुखवितरणतन्मननमेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥ ॥ ३१० ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इहिँ अंतर मरुपति अनुज, बखतसिंह छक छाय ॥
दिल्ली सनँ लहि जवन दल, अग्रैज दब्बन आय ॥ १ ॥
अभयसिंह आतुर तबहिँ, पठये बुंदिय पत्र ॥
संभर सहित सहायकोँ, आवहु हुलकर अत्र ॥ २ ॥
हुलकर हड्ड नरेस प्रति, अक्खिय पत्र उदंत ॥
सुनि बुंदिय धव सज्ज हुव, सह मलार हुलसंत ॥ ३ ॥
जननिन१ रानिन२ हू तिहिँत, दिन्नेँ कटक पठाय ॥
गंगराड़१ कोटानगर२, बंसबहाल३ भनाय४ ॥ ४ ॥
सज्जि अप्प हुलकर सहित, किय बुंदिय सन कुच्च ॥
मरुपतिसोँ सत्वर मिले, उभय२ करन जय उच्च ॥ ५ ॥
रामपुर सु माधव गयो, बुंदिपतैँ इहिँ बेर ॥
ए दुव२ मरुपति भीर इम, आये पुर अजमेर ॥ ६ ॥

का हाथी, घोड़े, आभूषण, वस्त्र आदि नजर करना २ उनको अपने अपने डेरों में भेजकर सबको भोजन कराना ३ हाथी, घोड़े, भूषण, वस्त्र आदि से सेना सहित मल्लार का सत्कार करना ४ रामानुज संप्रदाय को ग्रहण करके व्यवहार की छाप में श्रीरंग का नाम लिखाना ५ अपने पुरुषाओं के दान को देकर अपनी परगह के उमराव, श्रेष्ठ कामदार, श्रेष्ठ सेवक आदि को भूमि आदि देने के स्मरण कराने का उनतीसवां २९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ दश ३१० मयूख हुए ॥

१ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) का छोटा भाई २ दिल्ली से ३ बड़े भाई को दबाने आया ॥ १ ॥ ४ चहुवाण उम्मेदसिंह सहित ॥ २ ॥ ५ पत्र का वृत्तान्त कहा ६ पति ॥ ३ ॥ ७ उनको बुलाने को सेना भेजी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बखतसिंह सम्मुह बहुरि, तीन३न किन्न प्रयान ॥
रक्खि निकट पैर दल दयो, संभर नगर मिलान ॥ ७ ॥
तँहँ हुल्लकर कछु रीति कहि, रहोरन समुझाय ॥
अग्रज१कौ अरु अनुज२कौ, दिन्नौं सैाम कराय ॥ ८ ॥
दूजेर दिन इक्क बत्त हुव, बुंदिय कटकबिहान ॥
सुपहु राम दिज्जे श्रवन, नय मति धर्म निधान ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम्

अग्गैं इक्क१ संकरगढ स्वामी, बुंदिय भट रानाउत नामी ॥
तिहि सिवसिंह मंडि रन राउत, बक्कर पुर पैं हन्यौं कन्हाउत ॥१०॥
सो सिवसिंह हुतो नृप सत्थहि, अरिसुत राजसिंह गय तत्थहि ॥
करत प्रात संध्या बुंदियपति, सिवसिंह सु निजनाथ रक्खि रति ॥ ११ ॥
डेरासन संभर ढिग आवत, राजसिंह वह मिल्यो रिसावत ॥
हनि सिवसिंहहिं तुपक झारि खल, गो भजि राजसिंह मारवदल ॥१२॥
साहिपुराधिप अनुज सहोदर, हो सिरदारसिंह मरुपति भैंर ॥
कन्हाउत तस सरन गह्यो तब, यह उदंत बुंदीस सुन्यौं अब ॥१३॥

॥ दोहा ॥

उट्ठि उघारे देह नृप, संध्या तजि गहि संगि ॥
हय अरोहि हंक्यो भनहु, अँग पर इंद्र उमंगि ॥ १४ ॥
चलन लगे भट संग निज, तिनकों सपथ दिवाय ॥
अप्प पटी दै अश्वकों, लिय कन्हाउत जाय ॥ १५ ॥
सत्थ सहित पिक्खतरह्यो, रानाउत सिरदार ॥
राजसिंह कन्हाउत सु, मारयो संभरवार ॥ १६ ॥

---

१ शत्रु की सेना को समीप रख कर २ सांभर में मुकाम किया ॥ ७ ॥ ३ मिलाप ॥ ८ ॥ ४ प्रभात समय ॥ ९ ॥ ५ बाकरां नामक पुर के पति ६ कान्हावत शाखा के शीषोदिया क्षत्रिय को ॥ १० ॥ ११ ॥ ७ उम्मेदसिंह के पास ८ मारवाड़ की सेना में ॥ १२ ॥ ९ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का छोटा सगा भाई १० मारवाड़ के पति का उमराव ॥ १३ ॥ ११ पर्वत पर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इम रिपु हंनि बरछी चुवत, आयो पुनि निज ऐन ॥
रह्यो लखत रट्ठोरको, चित्र लिख्योसो सेन ॥ १७॥

॥ षट्पात् ॥

यह कराल उद्घोष[१] उठ्यो पृतना त्रय[३] अंतर ॥
दुव[२] दिस दुंदुभि बज्जि भीरु गण भज्जि दिगंतर ॥
हड्ड[१] कबंध[२]न हयन जंग पक्खर जब डारिय ॥
सुनि हुलकर यह सोर भयो उपदेसक भारिय ॥
नृप अभयसिंह[१] उम्मेद[१] नृप समुझाये दुव[२]नीति सन ॥
कहि देसकाल आगम कलित कियउ साम करि हित कथन १८

॥ दोहा ॥

तदनंतर दक्खिन गयउ, रचि दरकुंच मलार ॥
निज पत्तन बुंदिय तरफ, आयउ संभरवार ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हरदाउत नाहर मग अंतर, महिमानी मंडिय बिधिसौं वर ॥
नगर पग्गरा थंभि नृपति तब, जिम्मि गोठि आयउ बुंदिय अब २०
माघ वलक्ख पच्छ जय मत्तो, दक्खिन द्वार होय पुर पत्तो ॥
घर घर मंगल गान भयो घन, लग्गे लोग बधाई बंटन ॥ २१ ॥
पिच्छैं सन जननी दुव[२] आई, पतनी तीन[३] सुहाग सुहाई ॥
यह रानिन पत्तिकी हित आवरि, किन्नी बिधिजुत नजरि निछावरि २२
अब उमेद नृप नीति जमाई, गई प्रजा सु बुलाय बसाई ॥
मैनन तें उपद्रव मेटिय, बारह१२ खेटं दबाय स्ववस किय ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥१७॥ १भयंकर हाक२तीनों सेनाओं में३विदित ॥१८॥ ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) "हम ऊपर लिख आये हैं कि प्राचीन समय में सांभर नगर में राज्य करने के कारण चहुवाणों को संभर, संभरी, संभरीक, संभरेश, संभरिया, संभरवार, संभरवाल आदि कहते हैं" ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ शुक्लपक्ष ॥ २१ ॥ ६ स्नेह की पंक्ति से ॥ २२ ॥ ७ मैनों का चोरी करने का उपद्रव ८ खेड़े (ग्राम) ॥ २३ ॥

बुंदिय नागर बिप्र इक[1], सरबेश्वर अभिधान ॥
चोरे चोरन दम्म[2] तस, सहँस सत्त ७००० परिमान ॥ २४ ॥
कुतवाल सु बसु[3] चोर जुत, खोज्यो भूप[4]तिराम ॥
छन्नैं[5] नृपहिं निवेदयो, छत्रमहल सुख धाम ॥ २५ ॥
सो धन संभर ख्यात करि, सरबेश्वर हित दीन ॥
श्रील[6] सेठ यह नीति लखि, लगे बसन हित लीन ॥ २६ ॥
चोरन१ जारन दुसह दुख, धर्म धरन१ सुख पूर ॥
राज्य बिगारे कितव[7] जन१, कंपन लग्गे कूर ॥ २७ ॥
जब बुंदिय जयसिंह लिय, कति सठ सेवक[8] तत्थ ॥
रसना[9] रत ग्रासहिं रहिय, न हुव बुंद्द नृप[10] सत्थ ॥ २८ ॥
ते अब दुद्दर नृपहिं तकि, लूम[11] अँराल हलात ॥
भीतैं[12] आय हाजरि भये, बुंदी मंडल[13] ब्रात ॥ २९ ॥
मोरे[14] वृद्ध प्रपितामहहु, मिलि आये तिन माँहिं ॥
कहत सकुचि रविमल्ल[15] कवि, इम सागस[16] हम आँहिं[17] ॥ ३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु[18] राम महिपाल धर्मधन, स्मृति[19] जाकों बरजत अग्गैं सन ॥
एरुखनकों अनुचित पद मैं दिय, कग्हु माफ अपराध यहेक्रिय ३१
हाजरि सब इम बशीभूत हुव, धामचंड[20] उम्मेद तपत ध्रुव ॥
फग्गुन असित माँहिं तदनंतर, कोटा गय उम्मेद धरावर[21] ॥ ३२ ॥

१नाम रुपयों ने उसके रुपये चोर लिये ॥ २४ ॥ ३ चोर सहित धन को ४ हे राजा रामसिंह ५ राजा की नजर किया ॥ २५ ॥ ६ धनवान् सेठ ॥ २६ ॥ ७ छली मनुष्य ॥ २७ ॥ ८ तहां कितने ही मूर्ख सेवक ९ जिव्हा में ग्रास की प्रीति करके १० राजा बुधसिंह की साथ नहीं हुए ॥ २८ ॥ ११ बांकी (टेढी) पूँछ को हिलाते हुए १२ भय से १३ कुत्तों के सहृह बुन्दी में आकर हाजर हुए ॥ २९ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल कहते हैं कि १४ मेरे १५ सूर्यमल्ल कवि कहने शरमाता है १६ इस कारण हम अपराध युक्त१७ हैं ॥ ३० ॥ १८ हे राजा राम-सिंह १९ धर्मशास्त्र ॥ ३१ ॥ २० सूर्य २१ भूपति ॥ ३२ ॥

महाराव सन मिलि हित किन्नौं, बहुरि आप बुंदिय रस लिन्नौं ॥
दुज्जनसल्ल सु कुहक[1] असूई[2], बुंदिय लेत पर्यो दुख कूई[3] ॥ ३३ ॥
जानी इन अक्खी सुहि किन्नी, जैपुर दव्वि पहुमि निज छिन्नी॥
अब उमेद बुंदिय भुग्गैं नन, ऐसे मंत्र रचहि मिलि अप्पन ।३४।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रेसहायीकृतदिल्लीसैन्यज्यायोजयनिनीपुकबन्धवखतासिंहाऽऽगमनतन्निरोधाऽर्थधन्वेशाऽभयसिंहाऽऽहूतहड्ड १ हुलकरा २६-जमेरगमनमल्लारवखतसिंहनिवारणशातितसम्भगेशसुभटशंकरगढस्वामिशीषोदिशिवसिंहवप्तृवैरोज्जिहीर्पुत्रकरपतिकन्हाउत्तराजसिंहधन्वध्वजिनीशरणसम्पादश्रुतशात्रवसमात्तशक्त्येकाकिबुन्दीन्द्रतन्मारणशमितैतद्वाहिनीद्वय २ विरोधहुलकरदक्षिणागमनरावराणिनजपुरप्रविशनचौराद्युपद्रवाऽपाकरणप्रस्थितप्रजाप्रत्यागमनमिलितमहारावपुनःप्रभुबुन्दीप्रविशनकोटेशकौहक्यकलनं त्रिंशो ३० मयूखः ॥ ३० ॥ आदितः ॥ ३११ ॥

१ठग २ असूया करनेवाला "गुणेन दोषारोपोऽसूया" अथवा "परगुणेषु दोषाविष्कारे" दूसरे के किये गुण में दोष लगाने को असूया कहते हैं ३ दुःख के कुए में गिरा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्रमें दिल्ली की सेना को सहायक करके बडे भाई को जीतने की इच्छावाले राठोड वखतसिंह का आना १ उस को रोकने के अर्थ मारवाड़ के पति अभयसिंह के बुलाने से हाडा (उम्मेदसिंह) और हुलकर का अजमेर जाना और मल्लार का वखतसिंह को मना करना २ चहुवाणों के पति के उमराव शंकरगढ के स्वामी शीषोदिया शिवसिंह को पिता के वैर की इच्छा से मारनेवाले बाकर के पति कान्हावत राजसिंह का मारवाड़ की सेना की शरण लेना सुनकर शत्रु को वश में करके बरछी से अकेले बुन्दीश का उसको मारना ३ इन दोनों सेनाओं के विरोध को मिटा कर हुलकर का दक्षिण में जाना ४ रावराजा का अपने पुर में प्रवेश करके चोरों के उपद्रव को मिटाना और गईहुई प्रजा का पीछा आना ५ महाराव से मिलकर फिर प्रभु (उम्मेदसिंह) का बुन्दी में आना और कोटा के पति की इन्द्रजाल की गणना का तीसवां ३० मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ ग्यारह ३११ मयूख हुए ॥

॥ गीर्व्वाणभाषा ॥ इंद्रवंशा ॥

एवं समालोच्य सधीसखैस्समं कोटेश्वरः सज्जनशल्यभूपतिः ॥
दालेलिकृष्णं प्रति नैनवास्थितं प्रीतिच्छदम्प्रेषितवान्स्वदोर्लिपिम्॥१॥
तस्मिन्नुदन्तन्नधमेन लेखितं कूर्म्मादयोऽनूनरहस्यकोविदाः ॥
भो रावराजेन्द्र तवाऽभिषेचनं कर्त्तुं समुद्युक्तधियो वयं स्थिताः ॥२॥
श्रीमन्तनन्हाह्वकुमारिकेश्वरं घोराभिसम्पातशताङ्गधूर्वहम् ॥
कार्य्ये पुरस्कृत्य कृपाणपाणयः श्रेयो गमिष्याम उपायपद्धलाः॥३॥
सन्नह्य सेनां मदवन्मतङ्गजामुत्फुल्लसत्प्रोथलसत्तुरङ्गमाम् ॥
राणाञ्जिसंध्यासुनदण्डनायकां धूल्ल्युत्करांतर्हितकञ्जबान्धवाम्॥४॥
आकर्णमाकर्षितकाण्डकार्मुकांञ्चिस्फारसन्त्रस्तसपत्नसञ्चयाम्॥५॥
आनद्धकान्तायसवर्मबाहुलां चाकचक्यवच्चन्द्रकचन्द्रकाज्झलाम् ॥
सन्देशहारोक्तिगृहीतनिश्चयां विख्यातयाना१ऽऽसन २ सन्धि ३ विग्र-
हाम्॥४॥

इस प्रकार मंत्रियों के साथ विचार करके कोटा के पति सज्जनों के शाल रूप राजा ने "कोटा के महाराव का नाम दुर्जनशाल था परन्तु उम्मेदसिंह के विरुद्ध कार्य करने से कवि ने सज्जनशल्य लिखा है" नैणवा नगर में स्थित दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को अपने हाथ का लिखा प्रीति पत्र भेजा ॥ १ ॥ उस अधम ने उस में वृत्तान्त लिखा कि हे रावराजेन्द्र तुम्हारे अभिषेक करने में कछवाहा आदि सब पूर्ण गुप्त भेद जाननेवाले हम, अच्छे प्रकार से दत्तचित्त होकर स्थित हैं॥२॥कन्याकुमारिका क्षेत्र के पति नन्ह नामवाले श्रीमन्तको, कि जो भयंकर प्रहारोंवाले युद्ध रूप रथ की धुरा को धारण करने वाला है कार्य में आगे करके, हाथ में तरवारें धारण करके उपाय से कल्याण को प्राप्त होवेंगे ॥ ३ ॥ मस्त हाथियोंवाली और फूलेहुए फुरनों (नासिका) वाले उत्तम घोड़ों वाली सेना को सजकर, कि जिसमें सिंधिया का पुत्र राणोजि सेनापति है और जिसने धूलि के समूह से सूर्य को ढकादिया है ॥ ४ ॥ धनुष को कान तक खींचकर टंकार करने से भयभीत किया है शत्रुओं के समूह को जिसने फ़ौलाद के कवच और दस्ताना बांधे सुवर्ण के चकाचोंधी देनेवाले चंद्रमा युक्त ढालोंवाली ॥ ५ ॥ हलकारों के कथन से निश्चय करनेवाली प्रसिद्ध यान, आसन, संधि, विग्रह, द्वैध और आश्रय इन नीति के छहों गुणों के विशाल

हेषा७ऽऽश्वपोप्लल्लासविलासवैभवां सङ्ग्रामवित्सादि१ निषादि २
सौभगाम् ॥६॥
शौण्डीर्यसन्दानितशूरशात्रवां प्राप्तापदन्तोपविविक्तमन्त्रणाम् ॥
प्रेंखोलदुच्चूलितवैजयन्तिकां धारारयोद्भूतसमस्तसागराम् ॥ ७ ॥
शाक्तीक१याष्टीक२विनोदबन्धुरां नैस्त्रिंशिक ३ प्रासिक४धान्वि५दु-
र्द्धराम् ॥
प्रोद्दण्डदुस्फोट१कुठार२पट्टिशां३ जेष्याम-उम्मेद१मलार२यामलाम्
॥ ८ ॥ इतिकुलकम् ॥
तूर्णं व्यतीत्येपदहर्गणान्त्रयं निर्जित्य संख्ये बुधसिंहजाऽन्वयम् ॥
दास्याम उन्मार्जितसर्वकण्टकं बुन्द्याऽऽधिपत्यं भवते निरंकुशम् ॥९॥
ईर्ष्यापरः सालमनप्तरि च्छदं क्षिप्रं लिखित्वेति सभीमनन्दनः ॥
श्रीमन्तमन्त्रिण्यथ रामचन्द्रकेऽलेखीद्द्वितीयं दलमात्तकिल्बिषः॥१०॥
॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥
पुण्येशाऽमात्ययोर्बाढं रामचन्द्र१मलार२योः ॥

वैभववाली और युद्ध को जाननेवाले घोड़ों के सवार और हाथियों के सवारों के ऐश्वर्यवाली ॥ ६ ॥ पराक्रम से वीर शत्रुओं के समूह का बांधनेवाली तीसरे के कान में सलाह को नहीं जाने देनेवाली कंपित वस्त्र की ध्वजावाली (विजय करनेवाली सेना का झंडा ही खुला रहता है) और अपने प्रवाह के वेग से समुद्रों को कंपायमान करनेवाली ॥ ७ ॥ बरछी और लाठी से लड़नेवालों से सुंदर, तरवार, भाला और धनुष धारण करनेवालों से दुस्तर और उग्र घाव करनेवाले कुठार और कटारियोंवाली, ऐसी सेना से उम्मेदसिंह और मल्लार दोनों को जीतेंगे ॥ ८ ॥ थोड़े मास बिताकर शीघ्र युद्ध में बुधसिंह के वंश और इनकी उपासना करनेवालों (सम्बन्धियों) को जीतकर सब कांटे उखेड़ कर अंकुश रहित बुन्दी का स्वामीपन आपको देवेंगे ॥ ९ ॥ ईर्षा में तत्पर होकर सालमसिंह के पोते को ऐसा पत्र शीघ्र लिखकर उस पाप को ग्रहण करनेवाले भीमसिंह के पुत्र ने इसके आगे श्रीमन्त के मन्त्री रामचन्द्र को दूसरा पत्र लिखा ॥ १० ॥ पूना के स्वामी के मंत्रि रामचन्द्र और मलार में जैसे एक हथनी पर दो हाथियों के विरोध होवै तैसे पहिले इन दोनों

अजायत पुरा वैरं कणेशवामिभयोर्यथा ॥ ११ ॥
तदालोच्य महारावः पूर्वस्मिन्नलिखद्दलम् ॥
निन्द्यं कृतं मल्लारेणार्पितोम्मेदाय बुन्दिका ॥ १२ ॥
भवेद्यदि मदायत्ता तदायत्ता वयं तव ॥
कूर्माद्यखिलराजानः स्यामाऽऽज्ञाकारिणो वयम् ॥१३॥
एतच्छ्रुत्वा दलोदन्तं कोटाऽधीश्वरलेखितम् ॥
लिलेख नन्हमन्त्रीत्थं रामचन्द्रस्तदुत्तरम् ॥ १४ ॥
आत्मनोऽयं स्वतन्त्रत्वं पज्जः ख्यापयितुं ननु ॥
अयुक्तमकरोन्नीचैर्मल्लारो मातृशासितः ॥ १५ ॥
न भोक्तुमुचितो बुन्द्याः स्कन्धवारम्मनोरमम् ॥
देवानांप्रिय उम्मेदसिंहहानाम्भोग्यमस्थिभुक् ॥ १६ ॥
उदयद्रङ्कपृथ्वीभुग्जगत्सिंहमतं विना ॥
कार्येऽस्मिन्नाऽस्मदादीनां श्रीमंतोऽनुसरेद्वचः ॥ १७ ॥
राणेश्वरविभित्सुस्त्वं नन्हे लेखय तद्दलम् ॥
बुन्द्यां कोटेडधीनायां प्रीताः स्म इति सत्वरम् ॥ १८ ॥

में हुआ ॥ ११ ॥ इस बात को विचार कर महाराव ने पहिले (रामचन्द्र) को पत्र लिखा कि उम्मेदसिंह को बुन्दी देने का कार्य मल्लार ने निन्दा के योग्य किया है ॥ १२ ॥ वह बुन्दी जो मेरे आधीन होवे तो कछवाहे आदि हम सब राजा निश्चय ही तुम्हारे आज्ञाकारी होकर तुम्हारे आधीन होवें ॥१३ ॥ कोटा के पति के लिखेहुए इस पत्र के वृत्तान्त को सुनकर नन्ह के मंत्रि रामचन्द्र ने उस का उत्तर इसप्रकार लिखा ॥ १४ ॥ उस नीच मूर्ख और शूद्र मल्लार ने अपनी स्वतंत्रता प्रसिद्ध करने को निश्चय ही यह कार्य अयोग्य किया है ॥१५॥ जैसे सिंहों के भोगने योग्य को कुत्ता भोगने योग्य नहीं होता तैसे रमणीय राजधानी बुन्दी को भोगने योग्य मूर्ख उम्मेदसिंह नहीं है ॥ १६ ॥ उदयपुर की पृथ्वी को भोगनेवाले राणा जगतसिंह की सलाह के विना इस कार्य में हम लोगों के वचन श्रीमन्त (नन्ह) नहीं मानेगा ॥ १७ ॥ महाराणा को भेदने (फोडने) की इच्छावाले तुम वह पत्र नन्ह के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी कोटा के पति के शीघ्र आधीन होने में हम प्रसन्न हैं ॥ १८ ॥ शीघोद के पत्र से और

शीर्षोद्धवर्णाद्गतेनाऽप्यस्माकं सम्मतेन च ॥
करिष्यत्येव पुरायेशो बुन्दीन्दौर्जनशाल्यकीम् ॥ १९ ॥
वर्णादूतं विदित्वैवं रामचंद्रेण चालितम् ॥
राणादीन् सम्मते नेतुं तच्चक्रे भैमिरुद्यमम् ॥ २० ॥

॥ उपजातिः ॥

इतस्स बुन्दीपतिरात्तधर्मा चाणक्य१कामन्दक२वाक्यवर्मा ॥
शर्माऽऽश्रयोऽर्थिव्रजदत्तभर्मा स्वाध्यायसाध्याऽयसहायकर्मा ॥ २१ ॥
वृद्धश्रवाः१ सन्बलगोत्रपालस्तथा तपस्तक्षतयाऽनुपेतः ॥
अशीर्णपादो ह्यपि धर्मराजो२ राजा३पि दोषाकरताविहीनः ॥ २२ ॥
श्रीदो४प्यखर्वः सबलो५ऽपि सौम्यः शिवो६ऽविरूपाक्षयुगाऽव्ययरत्नः ॥

हमारी सलाह से पूना के स्वामी बुन्दी का निश्चय ही दुर्जनशाल की (तुम्हारी) करेंगे ॥ १९ ॥ ऐसे रामचन्द्र के भेजेहुए पत्र को जानकर भीमसिंह के पुत्र ने महाराणा आदि को अपने पक्ष में लाने का वह उद्यम किया ॥ २० ॥ इधर वह बुन्दी का पति (उम्मेदसिंह) धर्म को ग्रहण करनेवाला, चाणक्य और कामन्दक के वचन रूपी कवच वाला, ब्राह्मणों के आश्रयवाला और याचकों के समूह को सुवर्ण देनेवाला, वेद और पुराणों के पठन पाठन से सिद्ध होनेवाली शुभदायी विधि की सहायता से कर्म करनेवाला ॥ २१ ॥ और वृद्धों की सुनने वाला (इन्द्र) होने पर भी बल और गोत्र का पालन करनेवाला था. यहां बल और गोत्र शब्दों में श्लेष है, अर्थात् इन्द्र पक्ष में बल (दैत्य) और गोत्र (पर्वत) इन का वह भेदन करनेवाला है और बुन्दीन्द्र के पक्ष में बल (सेना) और गोत्र (कुटुंब अथवा जाति समूह) जिनकी यह पालना करनेवाला है और इसीप्रकार तप को काटने से अनुपेत [युक्त नहीं] है, अर्थात् तप करनेवाला है और वह इन्द्र तपस्वियों के तप को काटनेवाला है. अशीर्णपाद होकर भी धर्मराज है अर्थात् धर्म के चरण तो युग युग प्रति क्षय होते जाते हैं और इनके चरण अक्षय हैं और राजा होने पर भी दोषाकर अर्थात् दोषों की खान नहीं है. राजा नाम चन्द्रमा का है सो दोषाकर अर्थात् रात्रि को करनेवाला है ॥ २२ ॥ कुबेर होने पर भी निधि रहित है अर्थात् कुबेर तो लक्ष्मी का संचय करनेवाला है और यह उडानेवाला है कुबेर पक्ष में खर्व निधि और राजा पक्ष में खर्व छोटे मनवाला अर्थात् कृपण. बलवान् होने पर भी सौम्य है, शिव होकर भी

अभीष्टमेनो७ऽपि निरस्तजाड्यो दरन्न भेजे पुरुषोत्तमोऽपि॥ २३ ॥
अनूनवाणः कमनोऽपि साङ्गः सत्यप्रियो भास्वदलीकशाली १०॥
यद्यप्युदारो दृढमुष्टिदण्डो११ विरोचनो१२ऽप्यश्वदनन्तसप्तिः ॥ २४ ॥
अनेकदंशोऽपि सपर्शुपाणिः सत्स्वर्णकायो१४ऽपि न चक्रिशत्रुः ॥
अनाश्रयाशः शुचि१५रेव साक्षादजिह्मगो भूमिभुजङ्गभोगी१६॥२५॥
प्रचण्डसद्दण्डजितारिपक्षः षाड्गुण्य६शक्तित्रय३तत्वदक्षः ॥

विरूपाक्ष [क्रूर दृष्टिवाला] नहीं है तीन नेत्र होने से शिव का नाम विरूपाक्ष है और पुर तथा यज्ञ की रक्षा करनेवाला है [शिव त्रिपुर के और दक्ष के यज्ञ के नाश करनेवाले हैं] अभीष्टमेन होने पर भी मूर्खता नहीं है अर्थात् इच्छानुसार माननेवाला मूर्ख होता है और यह इष्ट को माननेवाला बुद्धिमान् है पुरुषोत्तम होने पर भी दर का सेवन नहीं करता है. "पुरुषोत्तम" श्रीकृष्ण के पक्ष में दर [शंख] और पुरुषों में उत्तम उम्मेदसिंह के पक्ष में दर [भय] वाची है ॥ २३ ॥ कामदेव होकर भी अनून [बहुत] वाणोंवाला और अङ्ग सहित है. [कामदेव पंच बाणवाला और अंग रहित है. सत्यप्रिय होकर भी भासनशील [श्रेष्ट वक्ता] है और उधर युधिष्ठिर सत्यप्रिय होने पर भी अश्वत्थामा के वध के अर्थ झूठ बोलनेवाला था अथवा अप्रिय वक्ता था. उदार होने पर भी दंड देने में दृढमुष्टि (कृपण) है सूर्य होकर भी उत्तम अनेक घोड़ों वाला है (सूर्य केवल सात घोड़ोंवाला ही है) ॥ २४ ॥ पर्शुपाणि होकर भी अनेक कवचधारियों (क्षत्रियों) वाला है पर्शुपाणि अर्थात् परशुराम तो क्षत्रियों का नाश करनेवाला था और यह फरसी (शस्त्र विशेष) हाथ में रखनेवाला होकर भी क्षत्रियों को रखनेवाला है स्वर्णकाय होकर भी चक्री का शत्रु नहीं है अर्थात् स्वर्णकाय गरुड़] तो चक्री [सर्प] का शत्रु है और उम्मेदसिंह स्वर्ण सदृश शरीरवाला होकर चक्री [विष्णु] का शत्रु नहीं है शुचि होकर भी आश्रय का नाश करनेवाला नहीं है अर्थात् शुचि [अग्नि] तो आश्रय का नाश करता है और यह शुचि [पवित्र] आश्रय की रक्षा करता है भोगी होने पर भी अजिह्म (सरल) है अर्थात सर्प भूमि का पति नहीं होने पर भी वक्रगति [टेढा चलनेवाला है और यह सीधा होने पर भी भूमि रूपी वेश्या को भोगनेवाला पति है [वेश्या के पति का नाम भुजंग है] ॥ २५ ॥ शास्त्र विहित उचित भयंकर दंड से शत्रु पक्ष को जीतने वाला सन्धि विग्रहादि छहों गुण और प्रभुशक्ति, मंत्र शक्ति, उत्साह शक्ति इन तीनों शक्तियों के मर्म में निपुण, अपराध करनेवाले दुष्टों

कृतापराधान्निर्नियम्य दुष्टान् राज्यं चकारापरकार्त्तवीर्यः ॥ २६ ॥
व्यतीत्य वीरः शिशिरं१ वसंतं२ तथैव चोष्णोपगमं३ गुणज्ञः ॥
प्राप्तासु वर्षासु४ परोपकारी व्यधत्त बुन्द्यां विविधान्विनोदान् ॥ २७॥
अनोकुहैरंकुरितैस्तृणौघैस्तत्राडशैलो रुचिरो बभूव ॥
जाताः समस्ता हरिता हरित्काः शृंगारशालिन्यवनी रराज ॥ २८ ॥
अलंकृतोदग्दिगुदारधारा कादम्बिनीकालहरित्कडारा ॥
ववर्ष वातोच्छलदम्बुराराननल्पकल्पप्रकटप्रसारा ॥ २९ ॥
चिरायभूभूविरहोपघाती पानीयपानीयपुरःप्रपाती ॥
तापं तडित्वांस्तपनस्य तर्जन्नप्लावयद्भूमिमतीव गर्ज्जन् ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे सहायीभूतमहारावनयनपुरबुंद्युद्धरणपत्रप्रेषणादालिकृष्णाऽनुनयननदनुमल्लारस्पर्द्धिरामचंद्रोपयोगिकरणप्राप्ततत्पत्रराणाऽऽदिसम्मेलनोद्यमनबुंदींद्रवर्षर्तुविनोदविहरणमेकत्रिंशो मयूखः

को विवेरना स दमन करके मानों दूसरे कार्तवीर्य ने राज्य किया ॥ २६ ॥ इस वीर ने शिशिर, वसन्त और इसीप्रकार निश्चय ही ग्रीष्म को बिताकर परोपकारी वर्षा के प्राप्त होने पर गुणों को जाननेवाले उस [उम्मेदसिंह] ने बून्दी में नाना प्रकार के विलास किये ॥ २७ ॥ तहां वृक्षों के अंकुरों से और तृणों के समूहों से आडावला नामक पर्वत मनोहर हुआ सब दिशा हरी होकर शृंगार युक्त भूमि शोभायमान हुई ॥ २८ ॥ जिसने उत्तर दिशा को भूषित की है ऐसी काले, हरे और पीले रंग की और पवन से उछलते हुए जल के समूहवाली प्रलय के समान अधिक है प्रत्यक्ष विस्तार जिसका ऐसी उदार धारावाली मेघमाला वर्षी ॥ २९ ॥ बहुत समय से पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले विरह का नाश करनेवाले आगे आगे अत्यन्त पानी गिरानेवाले, ग्रीष्म के संताप को डरानेवाले मेघ ने बहुत गर्जना करके भूमि को डुबाई ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में महाराव का सहायक होकर नैणवापुर में बुन्दी दिलाने का पत्र भेज कर दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह से प्रार्थना करना १ जिस पीछे मल्लार की बराबरी करनेवाले रामचन्द्र को उपयोगी करना और उसका पत्र पाकर राणा आदि को मिलाने का उपाय करना २ बुन्दीन्द्र का वर्षा ऋतु में विनोद पूर्वक

॥ ३१ ॥ आदितः ॥ ३१२ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पाउस आगम उदित, अतुल अभ्र आसार[1] ॥
अंकूरन भुव[2] अच्छादियं, किय पूरन कासार[3] ॥ १ ॥
यँहँ अग्गैं गुनगोरि दिन, होतो उच्छव पूर ॥
बुद्धं[4] सहोदर जोधके, बूडत वह हुव दूर ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अब सावन अवदांत[5] तीज३दिन, उच्छव किय विख्यात हड्ड[6] इँन[7] ॥
रानीजनन सुघाट सुहाई, पारबती प्रतिमा बनवाई ॥ ३ ॥
बहुविधि भूखन बसन बनाये, प्रीति उपेतं[8] ताहि पहिराये ॥
दै पट्ट संग अलंकृत[9] दासी, नाम तीज वह प्रकट निकासी ॥ ४ ॥
गई जैतसागर तडाग[11] तट, भूपहु पत्त[12] तंत्त सब लै भट ॥
इक्क ओर देवी संसद[13] जँहँ, भूप सभा इक ओर बनी तँहँ ॥ ५ ॥
वारसुंदरिन[14] नटन बनायो, अतुल[15] मेघ आलाप उठायो ॥
वलि[16] तँहँ घटिका दोयर बिताई, पुनि देवी महलन पधराई ॥ ६ ॥
तदनु नरेस सेवकन हित हिय, मादक[17] बस्तु मद्य[18] बिनु बंटिय ॥
त्योंहीं कुसुमन[19] हार किलंगी, सोभित अतर पान तिन संगी ॥ ७ ॥
दै इम सबन चढ्यो बुंदीपति, आयो महलन मन प्रसन्न अति ॥

बिहार करने का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ बारह ३१२ मयूख हुए ॥

१ मेघधारा से २ भूमि को छाई ३ तलाव ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह के सगे छोटे भाई जोधसिंह के डूबने से गुनगोरि का उत्सव मिटगया ॥ २ ॥ ५ शुक्लपक्ष की ६ हाडा क्षत्रियों के पति ने ७ श्रेष्ठ डोळ (आकृति) की ॥ ३ ॥ ८ सहित १० भूषणों से युक्त ॥ ४ ॥ ११ तलाव के किनारे १२ तहां प्राप्त हुआ १३ देवी की सभा ॥ १४ वेश्याओं ने नृत्य किया १५ तुलना रहित मेघराग का १६ पुनि ॥ ६ ॥ १७ नशे की वस्तु १८ विना मद्य (दारू) के बुन्दी के राजाओं में वर्तमान महाराव रामसिंह के सिवाय केवल बुधसिंह ने ही मद्य पिया था १९ फूलों के ॥ ७ ॥

दूजे दिनहु यहै बिधि ठानी, पच्छे चढत परयो घन[1] पानी॥ ८ ॥
पहुँच्यो निष्ठि निजालय[2] संभर, फुट्टि तड़ाग[3] चल्यो इहिं अंतर ॥
बिक्रम सक खट नभ बसु बसुमति१८०६, अतुल बिरांव[4] अचानक भो अति ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

स्रावन बिसद चउत्थि४ तिथि, रत्ति घटिय दुव२ जात ॥
जल न जैतसागर झिल्यो, उडिय सेतु अरंरात ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अति[6] जंव फुट्टिय सेतु[7] मनहुँ तोपन गन छुट्टिय ॥
के लग्गत सतकोटि कूट पब्बय जनु तुट्टिय ॥
बुरजन आंज उडाय फोरि कोसन फटकारे ॥
मगबिच बिटप मिले सु हीन[11] बल्कल करि डारे ॥
निम्न[12]हु निवान मुंदिय सकल बिकल[13] नंक रुकि रुकि रहैं॥
प्राकार[14] पृथुल अटकैं न जल तों पत्तन[15] बहु जन बहैं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम फुट्टत सर सेतुको, सुन्यों अचानक स्वान[16] ॥
कछुक काल अचिरज रह्यो, पुनि किय सबन प्रमान ॥ १२ ॥
प्रात ताल ऐसो लख्यो, हुव सब वैभव हानि ॥
मानहुँ[17] बनिक धनाढ्य घर, लुट्यो रंकन आनि ॥ १३ ॥
जोधसिंह जिहिं मध्य थित, बूड्यो अग्ग प्रमत्त ॥
जो सब अंग उपांग जुत, कढ्यो तरंडक[18] तत्त ॥ १४ ॥

१ मेघ का तथा अत्यन्त ॥ ८ ॥ २ अपने महल में ३ तालाव [illegible]
४ शब्द ॥ ९ ॥ ५ अरड़ाट शब्द करके पाळ तूटी ॥ १० ॥ ६ अत्यन्त वेग [illegible]
७ पाळ ८ मानों वज्र लगने से पर्वतों के शिखर तूटे ९ समूह १० म[illegible] से
जो वृक्ष आये उन्हें त्वचा ११ (छाल) हीन करदिये. सब १२ गहरे ज[illegible] से
को १३ मगर १४ बडे कोट से १५ नगर के ॥ ११ ॥ १६ [illegible] ॥ १२ ॥ १७ [illegible] शयों
नवान बनिये के घर को ॥ १३ ॥ १८ नाव ॥ १४ ॥ [illegible]

लिन्नी छुंढिय जानि इत, उदपनेर जगतेस ॥
पठये पत्र उमेद प्रति, लिखि हित बिहित[1] बिसेस ॥ १५ ॥
अक्खी हमहु प्रसन्न अति, अब हळुन[2] अधिराज ॥
अरहि इहाँ सन आयहै, टोंकाके सब साज ॥ १६ ॥
कोऊ कोबिद[3] सचिव निज, भेजहु सत्वर[4] अत्थ ॥
हिय उपज्यो कछु पुच्छि हम, संसय तजहिं समत्थ ॥ १७ ॥
नृपति पुरोहित मुक्कल्यो, दयाराम सुनि एह ॥
पहुँचि बिप्र तब दुवर नृपन, संध्यो सरस सनेह ॥१८॥
अभयसिंह मरुभूपको, इत आयउ अवसान[5] ॥
निज भट सब बुल्ले निकट, होत कलेवर[6] हान ॥ ॥ १९ ॥
अक्खी अब मम जात असु[7], इत सोदर[8] बखतेस ॥
मोछतही होवन लग्यो, अग्गैं[9] धन्व नरेस ॥ २० ॥
सो सठ अब मेरे मरत, नागोरहिं रक्खैं न ॥
मारि बिडारहिं मम सुतहिं, लइहिं जोधपुर ऐन ॥ २१ ॥
रामसिंह मम पुत्र यह, है कुपुत्र मति हीन ॥
यासों तुम सब पलटिहो, रहिहो नाहिं अधीन ॥ २२ ॥
कुल कुठार कंटक यहै, पापी खल पहिचानि ॥
तुमहु कहाँतक रक्खिहो, कूर नृपहिं[10] मम कानि[11] ॥ २३ ॥
तातैं जो अवरहि तकहु, तो पहिलैं कहि देहु ॥
याहि[12] दिवावहु इतर कछु, वाँहि[13] जोधपुर एहु ॥ २४ ॥
नहिं तो जो अब इँहि[14] मिलैं, पिच्छैं सोहु मिलैं न ॥
पुच्छन यह बुल्ले[15] तुमहिं, अब मुहि बढत अचैन ॥ २५ ॥

१उचित॥१५॥२शीघ्र ही॥१६॥३चतुर४शीघ्र॥१७॥१८॥५अन्त६शरीर का नाश होते समय॥ १९ ॥ ७ प्राण ८ सगाभाई ९ मेरे होते ही आगे मारवाड़ का पति होने लगा था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥१०मूर्ख राजा को११मेरी अदब से ॥ २३ ॥१२ इस को कोई अन्य परगना दिला दो१३बखतसिंह को ॥ २४ ॥१४रामसिंह को इस समय मिलता है सो भी पीछे नहीं मिलेगा १५ बुलाये हैं ॥ २५ ॥

मेरतिया उपटंकि इक्क, दूदाउत रठ्ठोर ॥
बुल्ल्यो सुनि रय्यांपुरप[1], सेरसिंह भट मोर[2] ॥ २६ ॥
हम हत्थिन ठिल्लैं सुजन, घल्लैं अद्रिन बत्थ ॥
खंडैं दक्खिन खग्ग बल, मंडैं रन बिनु मत्थ ॥ २७ ॥
तिन जीवत कातर[3] बचन, नन अक्खहु नरनाह ॥
कुलकुठार भवदीय[4] सुत, तदपि करहि निरबाह ॥ २८ ॥
अधम तऊ यह कुमर पै[5], जो यह कन्या होय ॥
सोपैं भुग्गहिं जोधपुर, हम छत त्रास न होय ॥ २९ ॥
यह सुनि नृप बुल्ल्यो बहुरि, इतर[6] भटन सन एस ॥
कैसी भाँसत[7] सबनकौं, अक्खहु मोहि असेस ॥ ३० ॥
चंपाउत रठ्ठोर तहँ, नगर आउवा ईस ॥
कुसलसिंह बुल्ल्यो, सुनहु, इक्क मम धन्व अधीस[8] ॥ ३१ ॥
ऐसी भासत कुमरकी, करिहैं नीचन संग ॥
उचितनको आदर घटैं, रंगैं अनुचित रंग ॥ ३२ ॥
सोतो हम सहिहैं सबहि, पै डेरन परवाय ॥
दुदुंकारि[9] रु कढ्ढैं हमहिं, ततो रह्यो नहिं जाय ॥ ३३ ॥
यह उदंत हुव जोधपुर, सुनहु भूप चहुवान ॥
अभयसिंह तजि तनु तंदनु[10], कियउ महाप्रस्थान[11] ॥ ३४ ॥
रामसिंह बैठो तखत, कुलहिं कलंकित कार[12] ॥
जानतहे ताकौं जगत, वहहि लयो आचार ॥ ३५ ॥
इक ढढ्ढी[13] अंत्यज अधम, असी नाम अघरूप ॥
वह बाँदक[14] कंडोलको, मित्र कियउ मरुभूप[15] ॥ ३६ ॥

---

१ रियांपुर का पति २ मौड़ (मुकुट) ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ कायर वचन ४ आप का पुत्र ॥ २८ ॥ ५ परन्तु ॥ २९ ॥ ६ दूसरे उमरावों से ७ कैसी दीखती है ॥ ३० ॥ ८ हे मारवाड़ के पति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ९ धिक्कार देकर निकालदेवें तो ॥ ३३ ॥ १० जिसपीछे शरीर छोडकर ११ स्वर्ग गया ॥ ३४ ॥ १२ करनेवाला ॥ ३५ ॥ १३ ढाढी विशेष १४ ढोली १५ मारवाड़ के पति ने ॥ ३६ ॥

भगिनी ताकी भावँती, नाम सुरूपा नारि ॥
रानिन पर पटरागिनी, करि रक्खी गृह डारि ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिन विपरीत जोधपुर केरे, तातैं बिधि ऐसे नृप हेरे ॥
सूरिनको सतकार न रक्खैं, सूरन सन अनुचित जड़ अक्खैं ॥३८॥
नहिं सचिवन दासन सनमानैं, अरु बालिस नीचन हित आनैं ॥
मरुपति मित्र मृत्यु जब पायो, सुनि टीका मल्लार पठायो ॥ ३९ ॥
गो तिहिं संग मत्त इक्कबारन, परिखात प्रबल श्रवत मद धारन ॥
अभयसिंह सुत कौतुक आयो, सो गज निज गज संग लरायो ४०
हुल्लकरके इभतैं निज हारयो, तब सठ मारन ताहि बिचारयो ॥
तोप दगाय हनहु इहिं अक्खयो, जग्गू बिप्र निठि कहि रक्खयो ।४१।
बखतसिंह नागोर धराधन, निज धात्री पठई कछु कारन ॥
बुल्लि रु तास बसन उतराये, बुंलि धरि सेकिम छगल चराये ।४२।
चंपाउत वह कुसल इक्क दिन, आयउ सभा जानि रामहिं इन ॥
तास पिठि इक दास पठायो, अधोबल्ल करि सैन कढायो ॥४३॥
तू वपु खर्व कह्यो पुनि तासों, बढ़ै न तव बिक्रम लघु स्वासों ॥
सो पै दुस्सह कुसल रह्यो सहि, अभयसिंह आदेस चित्तचहि ॥४४॥
बहु अनुचित इम अधम बनावैं, कवि लोलाहु कहत अलसावैं ॥
सुनहु राम संभर असुस्वामी, बिथरी इम मरुपति बदनामी ।४५।
बखतसिंह सुनि मोद बढावैं, लैन जोधपुर दाव लगावैं ॥

---

१ उसकी बहिन २ रुचिकारक (रूपवती) ३ पटरानी ॥३७॥ ४ पंडितों का वीरों ५ से ॥३८॥ ६ मूर्ख ॥३९॥ ७ हाथी ८ तिरछी बात करनेवाला अथवा पकीहुई कमर का ॥ ४० ॥ ९ अपना हाथी ॥ ४१ ॥ १० नागोर का राजा ११ अपनी धाय को १२ योनि में १३ सूला धरकर १४ उस सूले के पत्ते बकरे को चराये ॥ ४२ ॥ १५ रामसिंह को स्वामी जानकर कुशलसिंह सभा में आया १६ धोवती ॥ ४३ ॥ १७ तू छोटे लिंगवाला है १८ कुत्ते से भी छोटा १९ कुशलसिंह २० अभयसिंह का हुकम ॥ ४४ ॥ २१ कवि की जिव्हा भी २२ प्राणनाथ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे पितृव्यकल्पवनगतगुणगौरीमहोबुन्दीन्द्रश्रावणश्यामशुक्लप्रथमशिवादिनोऽत्सवस्थापनतदपरदिवससङ्घटयात्राऽनन्तरजैतसागरमहातड़ागजलसेतुत्रोटनराणाजगत्सिंहविहितवर्णदूतबुंध्याऽऽगमनाऽवगतदत्तोदन्तरावराट्पुरोहितदयारामोदयपुरप्रेषणाधन्वधरेशाऽभयसिंहमहापरिणामव्याधिवर्द्धनस्वकुपुत्रसमयसामन्तस्वीकरणाऽकरणनिश्चयनसेरसिंहसर्वसहनाऽङ्गीकरणकुशलसिंहोचिताऽनुचितनिवेदनकाबन्धराजकायत्यजनतत्तनुजरामसिंहपट्टप्रापणतदुचिताऽनादरणांत्यजनसहचरीभवनपरिभावकपीलुमारणविचारपितृव्यकधात्रेयीविवस्त्रीकरणकुशलसिंहाऽधोवस्त्रकर्त्तनप्रतिपुरुषतन्निन्दाप्रसरणं द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥ ३१३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, काका के मरने से गयेहुए गुणगौर के उत्सव को बुन्दी के पति का सावन मास की शुक्लपक्ष की तीज के दिन उत्सवस्थापन करना १ उसके दूसरे दिन समूह के गये पीछे बड़े तलाव जैतसागर के जल का पाल को तोड़ना २ राणा जगत्सिंह के उचित पत्र का बुन्दी में आना जानकर पत्र के उत्तर में रावराजा का पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना ३ मारवाड़ के पति अभयसिंह को कालरोग के बढने पर अपने कुपुत्र के समय (राजापन के समय) का स्वीकार, न करने के विचार से अपने उमरावों को बुलाकर निश्चय करना ४ शेरसिंह का सब सहन करने को स्वीकार करना और कुशलसिंह का उचित अनुचित निवेदन करना ५ राठोड़ों के राजा का शरीर छोडना और उस पुत्र रामसिंह का पाट पाना ६ उसका उचित लोगों के अनादर का करना और अन्त्यज लोगों का साथ करना ७ अनादर करनेवाले हाथी को मारने का विचार और काका की धाय को नग्न करना ८ कुशलसिंह की धोती (धोवती) काटने से मनुष्य२प्रति उस की निन्दा फैलने का बत्तीसवां ३२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तेरह ३१३ मयूख हुए ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इन बुन्दीस मंत्र इक धार्‌यो, सहर सितारा गमन बिचार्‌यो ॥
संग लयो निज दीप[१]सहोदर, भजनेरीपति सेर[२]सुभट बर ॥ १ ॥
छड्डा पुनि नाहर[३] हरदाउत, अरु दलेल [४] हरजन अमात्य सुत ॥
इत्यादिकन सहित नृप हंकिय, सुनि प्रयान दिस दिस अरि संकिय ॥ २
नृपहिं चलत कोटेस निवार्‌यो, तउ न रुक्यो छल तास निहार्‌यो ॥
सक खट नभ धृति १८०६ भद्द बिसद तँहँ, बुंदिय रक्खि सचिव
हरजन कँहँ ॥ ३ ॥
पति संभर चल्ल्यो दक्खिन प्रति, रहि वेघम इक[१]रत्ति महामति ॥
दरकुंचन इम पत्त अवंतिय, श्राद्ध अपरपक्ख[६]ग तत्थहि किय ॥४॥
हंके पुनि लग्गत नवरत्ते, अष्टमि ८ दिन रेवा तट पत्ते ॥
तँहँ दक्खिन पति चोकीदारन, मंग्यो कर वह सरित उतारन ॥५॥
सुनि नृप कहिय हम न कर देहैं, जब उन अक्खिय पार न जैहैं
तब तिन्ह भूप पिटाय बिडारे, पोतन करि निजतंत्र[११] पधारे ॥ ६ ॥
श्रीओंकार१ ईस दरसन करि, मांधाता२ जुत पूजि पयन परि ॥
रेवा नदि पुनि लंधि वडे रंय[१२], पत्त नगर बुरहानपुराह्वय[१३] ॥ ७ ॥
जोतिलिंग सिव१अरचन मंडिय, विश्वकर्म प्रतिमा२दरसन किय ॥
पुर अवरंगाबाद गये पुनि, गोदावरी बहुरि न्हाये धुनि ॥ ८ ॥
श्राद्ध१[१५]वपन२उपवास३बिहित सब, बिरचि अग्ग बुन्दीस चलिय तब
उर्ज्ज[१६] असित इम गय धरि नय[१७] धुर, बापगाँव नामक हुलकरपुर ९
पुण्यापुर[१८] मल्लार हुतो तब, खंडू नृप सतकार कियो सब ॥

---

१ दीपसिंह ॥ १ ॥ २ कामदार का पुत्र ॥ २ ॥ ३ मना किया ४ सुदि ॥ ३ ॥ ५ बुंढिसालू६दूसरे पक्ष में गयेहुए "ज्योतिष में शुक्लपक्ष को द्वितीय मानते हैं" ॥ ४ ॥ ७ नर्मदा के किनारे ८ नदी उतारने का ॥ ५ ॥ ९ निकाल दिये १० नावों का ११अपनेआधीन करके॥६॥१२वेग से१३बुरहानपुर नाम का॥ ७ ॥ १४ नदी में ॥८॥ १५मुंडन१६कार्तिक वदि में१७नीति के धुरको धारण करके ॥९॥१८ पूना में

सम्मुह जाय बधाय रु लिन्नैं, हय सिरुपाव निवेदन किन्नैं ॥१०॥
मुदित रची दिन प्रति महिमानी, दुलभ सिकार अनेक दिखानी॥
अहे[1] कति रहत मलारहु आयो, बिबिध हेत मिलि दुहुँन २बढायो ११
बुंदिय[2] खबरि गई नृपपैं तब, सचिवन अग्गैं दुखित प्रजा सब ॥
हरजन धन छिन्नत नन हारैं, बनिकन दै अभिसाप[3] बिगारैं ॥१२॥
चोरनतैं मिलि द्रव्य चुरावैं, खोसि खोसि सबको बसु[4] खावैं ॥
सुनि उदघोस[5] कियो नृप निश्चय, निकस्यो सत्य तबहि मंड्यो नय
भजनेरीपति सेरसिंह भट, हरजनकौं पकरन पठयो झट ॥
तिहिं आप रु माठुंदा पत्तन, हड्डा घेरिलयो वह हरजन ॥ १४ ॥
कोटेस[6]हिं तिहिं तबहि कहाई, भजनेरी[7] पैं गहत सुहिं[8] भाई ॥
अप्पहि दये संग इनके हम, करहु सहाय स्वदासन हे छम ॥१५॥
कोटापति सुनि करि त्वरिताई[9], छतनौं[10] दैन सहाय पठाई ॥
जो पहुँचे न इते बिच करि जय, गहि हरजनहिं सेर बुंदिय गय १६
तारागढ कारा[11]बिच डारयो, बंधन लहि तब दर्प बिसारयो ॥
बापगाँवँ मल्लार जुद्धजित, निज कन्न्या उपयम[12] मंडिय इत ॥१७॥
बुन्दीसहु बहुधन खरच्यो जहँ, लगनकाल इक बत्त सुनी तहँ ॥
अगहन मास बिसद अह[13], तज्यो छत्रपति साहू बिग्रह[14] १८
हुलकर घर अति सोक तास हुव, सुता बिवाहि चलन चिंत्यो ध्रुव
अनुंज[15] बापगाँवँहि नृप रक्खिय, हरजन पुत्र अरज यह अक्खिय१९
द्वैरदिन सिक्ख मोहि नृप दीजै, त्वरित[16] आनि मिलिहौं दिन तीजै३
द्वैरदिन सिक्ख ताहि तब दिन्नौं, कछु न संक भजिजावन किन्नौं२०
इत हड्ड१ रु हुलकर२ अनुरत्त[17], पहिलैं दुव२ पुण्यपार्पुर[18] पत्ते ॥

॥ १० ॥ १ कितने दिन ॥ ११ ॥ २ बुन्दी की ३ झूठा दोष ॥ १२ ॥ ४ धन ५ हाका ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६ कोटा के पति को ७ भजनेरा का पति ८ हे समर्थ ॥ १५ ॥ ९ शीघ्रता १० सेना ॥ १६ ॥ ११ कैद में १२ विवाह ॥ १७ ॥ १३ दिन १४ शरीर ॥ १८ ॥ उमेदसिंह ने अपने १५ छोटे भाई दीपसिंह को बापगांव में ही छोडा ॥ १९ ॥ १६ शीघ्र ॥ २० ॥ १७ प्रीति सहित १८ पूनामें

होतहँ सचिव सदासिव हितमय, नन्ह पितृव्य[1]क सीमा जित नय[2]२१
संभरपति सम्मुह वह आयो, दिन दस१० रक्खि सनेह दिखायो ॥
इन हरजन सुत बापगाँव रहि, जनकहिँ सुनि पक्करयो विरोध चहि२२
नृप[3] अनुजहिँ फोरन किय दुर्नय, फुट्टयो नहिँ तब भजि कोटा गय ॥
इत संभर१ हुलकर१ पुराया सन, पत्ते उभय२ सितारा पत्तन॥२३॥
हहहिँ आत सुनत हरखायो, सम्मुह नन्ह कोस इक१ आयो ॥
डेरा काफरखोह दिवाये, पुनि महिमानी साज पठाये ॥ २४ ॥
साहू भूप मरयो बिनु संतति, पृथुल[4] राज्य किम रहैँ बिनाँ पति॥
साहू पितामही[5] तारा तँहँ, अरु प्रधान श्रीमंत नन्ह जँहँ ॥ २५ ॥
मंत्र विचारि पनालागढ सन, राम बुलायउ संभा नंदन[6] ॥
अग्गैं नृप सिवराज कर्ण निभ[7], भूखन कविहिँ दये बावन५२ इभ[8]२६
संभा हुव ताको लघु सोदर, दिन्नौं जाहि पनालागढ बर॥
ताकै सुत यह रामनाम हुव, सो अब किय‌उ सितारापति ध्रुव २७
राजाराम१ वहुरि संभरपति१, मिलिवाये दुव२ नन्ह महामति ॥
बैठे दुव२ इक१ तखत बरब्बर, चले दुर२ओर मोरछल१चामर२८
डोले त्रय३ पुनि नन्ह मँगाये, राजाराम बिवाह रचाये ॥
साहू पट्ट राम इम बैठो, इत इक लरन घूँसल्या पैठो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कहि अग्गैं श्रीमंत द्विज, बाजेराय प्रधान ॥
रघू नाम भट घुंसल्या, पठयो हिंदुसथान ॥ ३० ॥
तिहिँ जनपद[9] गुड़वान१ अरु, खानदेस२ लिय जित्ति ॥
हाकिम पंडित भासकर, रक्रव्यो तँहँ करि कित्ति ॥ ३१ ॥
पच्छो पुनि दक्खिन गयो, मृत सुनि बाजेराय ॥

१काका २ नीति से ॥ २१ ॥ ३ राजा के छोटे भाई सेरसिंह को ॥ २२ ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ ४ बड़ा ॥२५॥ साहू की ५ दादी. संभा का ६ पुत्र ७ सदृश ८ हाथी
॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ९ देश ॥ ३१ ॥

सोव रह्यो श्रीमंत सुत, नन्ह न जानैं न्याय ॥ ३२ ॥
नन्ह हुकम लै छन्न तब, कतिक पिसुन भट ओर ॥
खानदेस गुड़वानमैं, आये बनि वरजोर ॥ ३३ ॥
तत्थ रघू भट भासकर, मार्‌यो इन करि जंग ॥
अप्पन थानाँ रक्खि तँहँ, पार्‌यो देस प्रसंग ॥ ३४ ॥
वत्त यहै सुनि घुंसल्या, तबतैं धरत विरोध ॥
अब आयउ श्रीमंतसों, जुद्ध रचन सजि जोध ॥ ३५ ॥
हुलकर पति तँहँ बीच परि, दोउरन बैर मिटाय ॥
आनि रघू१ श्रीमंतकै, दिन्नों पयन लगाय ॥ ३६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणेसप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रेबुन्दीन्द्रसितारापूःप्रस्थानतिरस्कृतमहाराष्ट्रमहिमरेकलजोल्लङ्घनप्रतितीर्थस्नानप्रत्यर्चाऽर्चनविहितविधेयसम्भरेशमल्लाराऽधिष्ठानबापग्रामप्रविशनखण्डूसन्मुखाऽऽगमनाऽऽदितत्सत्करणश्रुततदुदन्तहुलकराऽऽगमनहड्डेन्द्रहरजनाऽमात्यदेशदुःखश्रवणप्रेषितस्वभ्रातृसेरसिंहवश्यवेष्टनहरजनाऽऽहूतकोटाकटकपूर्वभजनगरीभर्त्तृनिगृहीतबुंदीपुटभेदनताराडुर्गप्राकारप्रवेशनोम्मेदसिंहहुलकरसुताविवाहबहुवसुवितरणातत्पश्चलोचल्लमराडलमर्दकशीर्षोद्दसितारास्वामिसाहूश्म-

१ बालक ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दीन्द्र का सितारा नगर को प्रस्थान करना, मरहटों की महिमा का तिरस्कार करके नर्मदा को उल्लंघन करना, करने योग्य हरेक तीर्थ में स्नान और हरेक मूर्ति का पूजन करके रावराजा का मल्लार के स्थान बापगांव में प्रवेश करना, खंडू का सन्मुख आने आदि से उसका सत्कार करना, राजा के समाचार सुनकर हुलकर का आना, हड्डेन्द्र का हरजन के दिये देश के दुःख को अमात्यों से सुनकर अपने भाई सेरसिंह को भेजकर हरजन को पकड़ने के लिये घेरना, हरजन की बुलाई कोटा की सेना के आने से पहिले अजनेरी के पति (सेरसिंह) से पकड़ेहुए (हरजन) को बुन्दी नगर के तारागढ के किले में कैद करना, उम्मेदसिंह का हुलकर की बेटी के विवाह में

शानसदनसमासादनश्रवणापैत्र्यर्णापकरणाव्याजनीताऽवसरहार जनिकोटाऽऽगमनप्रहृष्टपुरपापुरसदाशिवसत्कृतमल्लारो१म्मेदसिता रासम्प्रापणश्रीमन्तसन्मुखाऽऽगमनपनालापतिरामराजाऽधिपत्याऽभिषेचनतबुन्दीन्द्रसम्मिलनतदेकाऽऽसनसन्निविशनन्हरामराव-विवाहनमहाराष्ट्रमण्डनसितारेशसुभटरणरसिकरघूपूर्वाऽपमानसूचनतत्कुपिततद्योधनाऽऽगमनमल्लारतद्विग्रहपरासनरघूश्रीमन्तचरणापातनं त्रयस्त्रिंशो३३मयूखः ॥ ३३ ॥ आदितः॥३१४॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—हरजन पुत्त दलेल इत, कोटा जाय प्रमत्त ॥
पठये लिखि नृप अनुज प्रति, बापगाँव इम पत्त ॥ १ ॥
अप्प रहहु मम संग अरु, कोटा आवहु दीप¹ ॥
तो बुंदिय पुर तखत धरि, मन्नैं तुमहिं महीप ॥ २ ॥
दीपसिंह ए पत्र द्रुत², पठये अग्रज पास ॥
लखि तिन्ह मंद दलेलको, सुपहु तज्यो बिसवास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगर सितारा नीच हुछ नाहर हरदाउत ॥
निज नृप सम्मति बिनुहिं जानि अप्पहिं सु जुद्ध जुत ॥

बहुत द्रव्य देना, वहांके मुसल्मानों के मंडल को मारनेवाले सीसोदिया सितारा के स्वामी साहूका मरघट में घर करना (मरना) सुनना, पिता के ऋण को दूर करने के मिस से अवसर पाकर हरजन के पुत्र का कोटे आना, सदाशिव से सत्कार किये हुए मल्लार और उम्मेदसिंह का पूना देखकर सितारे जाना; श्रीमन्त का सन्मुख आना, पनाला के पति रामराजा का राज्याभिषेक होना, उससे बुन्दी के राजा का मिलना, मरहठों के मंडन सितारा के स्वामी के सुभट रणरसिक रघूके पूर्व अपमान को सूचित करना, उसका कुपित होकर युद्ध करने को आना, मल्लार का उसके वैरको मिटाना, रघूको श्रीमन्त के चरणों में गिराने का तेतीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३३। और आदि से तीन सौ चौदह मयूख समाप्त हुए ॥३१४॥

॥ १ ॥ १ हे दीपसिंह ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥

हुलकर प्रति किय अरज अग्ग नभ बसु सत्रह१७८०सक ॥
टोडा लिय जयसिंह डारि मिच्छन पर ओदक ॥
आवाँ१ पुरी रु दुन्नी१ उभय२ थान लये हमरेहु तब ॥
टोडा सु दिन्न तुम साधवहिँ तो बखसहु मम भुवहु अब ॥४॥

॥ दोहा ॥

कुप्प्यो हुलकर सुनत यह, सोर रह्यो पुर छाय ॥
अक्खी नृप कहते हमहिँ, तो बनतोहु उपाय ॥५॥
इम सन भिन्न प्रबुद्ध२है, बिगराई निज बत्त ॥
अनि इम नाहरतैं भयो, बुंदियभूप बिरत्त३ ॥६॥
अग्गैं नन्न्ह अमात्य इत, रामचंद्र अघरत्त ॥
रानहि सम्मलि लैनकौं, पठये कोटा पत्त४ ॥ ७ ॥
दुत बिश्वेश्वरनाम द्विज, निज वकील कोटेस ॥
उदयनैर पठयो तबहि, फोरन रान नरेस ॥ ८ ॥
तानैं मिलि जगतेसको, लिन्नौं मन पलटाय ॥
दक्खिन देस प्रधानपैं, दिय इम पत्र लिखाय ॥९॥
दै बुंदिय उम्मेद हित, अनुचित हुलकर कीन ॥
करहु कथित५ कोटेसको, तो हम सर्व अधीन ॥ १० ॥
जोलौं ए दल६ दूत लै, निकसैं नैर बिहाय ॥
तोलौं अक्खिय रान प्रति, दयाराम द्विजराय ॥ ११ ॥
कोटेसहिँ जानहु कुहक७, मिल्यो सु जैपुर माँहिँ ॥
सुनिहो रंचक दिननमैं८, है तुमतैं हित नाँहिँ ॥ १२ ॥
सु सुनि रान चलमति कहिय, कछु दिन परख बिधाय९ ॥
दक्खिन पत्र पठायहैं, तोलग देहु धराय ॥ १३ ॥
भैंसरोर पति स्वसुरहो, चुंडाउत भट लाल ॥

भय ॥ ४ ॥ ५ ॥ २समझदार होकर ३विरक्त ॥६॥ ४पहुंचा ॥७॥८॥९॥ ५ कहना ॥ १० ॥ ६ पत्र ॥ ११ ॥ ७ कपटी ८ थोड़े दिनों में ॥ १२ ॥ ९ करके ॥ १३ ॥

ता पँहँ कृष्ण[1] दलेल सुत, इत दिय पत्र उँताल[2] ॥ १४ ॥
पत्र रावराजोपपद, रानाँको लिखवाय ॥
सो मम ढिग भेजहु स्वसुर, प्यारे अवसर पाय ॥ १५ ॥
इम लिखि पठयो उदयपुर, अप्पन वनिक वकील ॥
सोहु मिलायो रान सन, करि हट लाल कुसील[3] ॥ १६ ॥
लघुमति[4] पत्र लिखाय दिय, कृष्ण कथित परिमान ॥
जल कुल्ल्या[5] जिम रान मन, फेरयो फिरत अजान ॥ ॥१७॥
बखतसिंह नागोर पति, इत सठ मंडि मरोर ॥
दिल्ली दल[6] बुल्ल्यो[7] बहुरि, दैन जोधपुर जोर ॥१८॥
अरजी अहमदसाह सुनि, पुनि पठयो बल[8] पूर ॥
जवन सलावतखान जहँ, सेनानी[9] करि सूर ॥ १९ ॥
कूरम ईश्वरिसिंहकी, तनयाँ सन बिख्यात ॥
रामसिंह मरुराजको, पहिलैं[10] सगपन जात[11] ॥ २० ॥
यातैं आवत जोधपुर, सुनि छिल्लिय दल सोर ॥
कुम्महिं मरुपति भीरकों, बुल्ल्यो गिनि बरजोर ॥ २१ ॥
तब कूरम आमेर पति, उत्तर पठयो एह ॥
फोज खरच भेजहु ततो, आवहिं भीर सनेह ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप करते सहाय सुनि बिपति परस्पर ॥
फौजखरच लेते न जदपि होतो भर संगर[12] ॥
जामाता[13] सन कुम्म मेटि रीति सु धन मंगिय ॥
तब मरुभूप सनेम[14] लक्ख१५००००दम्मन भरनाँ दिय ॥

१ कृष्णसिंह २ शीघ्र ॥ १४ ॥ १५ ॥ ४ बुरे स्वभाववाला ॥ १६ ॥ ४ तुच्छ बुद्धिवाले (बदमाश) ने ५ नहर ॥ १७ ॥ ६ सेना ७ बुलाई ॥ १८ ॥ ८ सेना ९ सेनापति ॥ १९ ॥ १० पेटी से ११ हुआ था ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ १२ युद्ध का भार १३ जमाई से १४ आधे सहित एक लाख अर्थात् डेढ लाख

सजि तब अनीक जयसिंह सुव कोटा भेजिय [1]कग्गरहिँ ॥
हम संग होय जवनन हनहु तो बुंदिय तुम बस करहिँ २३
यह कहाय करि कुंच चल्यो मरुपति सहाय पर ॥
मरुपतिसौं अति मोद मिल्यो तीरथगुरु [2]पुक्खर ॥
नगर मेरता [3]तदनु जाय दोउनरमिलान दिय ॥
इत दिल्ली दल ईस उदयपत्तन [4]दल भेजिय ॥
हम संग होहु जगतेस नृप सह माधव सेवा[5]नुरत ॥
[6]अग्रजहिँ मारि अप्पहिँ हनहु तो [7]अँनुजहिँ जैपुर तखत ।२४।
यह सुनि सज्जिय रान होन दिल्लिय दल सम्मलि ॥
इत कोटा अधिराज कुम्भ कग्गर वंचिय वलि ॥
हुव तयार तव हड्ड करन कूरम किंकर पन ॥
बुंदिय लोभ बिधाय रचन दिल्लिय दलतैं रन ॥
पुरजन कितेक कछु काम तँहँ कोटाके गय उदयपुर ॥
तिन कहिय जात कोटेस सजि जैपुर सम्मिलि दल [10]प्रचुर २५
दयाराम द्विज तबहि रान यह सुनत सिराह्यो ॥
अक्खिय हम सन हेत नाँहि कोटेस निबाह्यो ॥
यह सुनाय वे पत्र लिखे दक्खिन पहुँचावन ॥
दिन्नैं ते द्विज हत्थ प्रीति बुंदियपर लावन ॥
द्विज दयाराम ते दल [11]सँकल सहर सितारा मुकलिय ॥
तब उभय हड्ड हुलकर [12]तमकि [13]कग्गर बंचत कोप किय ।२६।

॥ दोहा ॥

पुनि मल्लार खिजि नन्नह पर, रुठि चल्ल्यो निज देस ॥
सुनत नन्नह अड्डो फिर्यो, बुल्ल्यो बिनय बिसेस ॥२७॥

---

१ पत्र ॥ २३ ॥ २ पुष्कर में ३ जिसपीछे ४ पत्र भेजा ५ सेवा में प्रीति करके ६ ईश्वरीसिंह को ७ माधवसिंह को ॥ २४ ॥ ८ पति ९ बुन्दी का लोभ करके १० बहुत सेना ॥२५॥ ११ लघु पत्र १२ खिजकर १३ पत्र बाचते ही ॥२६॥२७॥

छमहु कोप मल्लार छमं, सुनहु बत्त मम एक ॥
सचिव अष्ट८ यह मुख्यहे, अग्गैं विहित बिबेक ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

श्रीपतिराव१ हुते सबमैं इनं, प्रतिनिधिको उपपद पायो जिन ॥
तिन मुख अग्गैं मम प्रपितामह, बिश्वनाथ१ बितये अनेक अह २९
बाला २ हुव पुनि बिश्वनाथ सुत, तेहु रहे मुख अग्ग बिनय जुत ॥
श्रीपति संग पेसें रहिबे सन, तिनहिं पेसवा कहन लगे जन ॥३०॥
बाजेराय३ भये बालासुत, मामक जनक पेसवा नय जुत ॥
श्रीपतिराव मरे प्रतिनिधि जब, तुम पंचन हमरो जस किय तब ३१
श्रीपतिकी तब मुख्य सचिव गति, बाजेरायहिं दई छत्रपति ॥
अंक छाप जिम खनितँ उघारे, सो तुम सुनहु गद्यकरि सारे ॥३२॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान बाजेराय बालाजी पंडितप्रधान ए अंक छापमैं खुदाय हमारे पिता पेसवा बाजेराय छत्रपतिनैं मुख्य प्रधान कीनैं ॥

अरु उनके देहांतके अनंतर श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान नन्हांजीबाजेराय पंडितप्रधान ए अंक सितारेश्वरनें छापमैं खुदाय दीनैं ॥

तदनंतर जब छत्रपति साहू परलोक गये ॥
तब पनालागढसों पितृव्यक संभाके पुत्र राजाराम आयकैं सिताराके अधीस भये ॥ ३३ ॥
अब वेही अंक नईछापमैं राजारामके नाम सहित खैनाये ॥
सो सब इत्यादिक अभ्युदयके फल तुम पंचननैं प्रसंसापूर्वक

१ समर्थ ॥ २८ ॥ २ पति ३ कायम मुकाम का ४ दिन ॥ २९ ॥ ५ स्वाधीन रहने से ॥ ३० ॥ ६ मेरे पिता ॥ ३१ ॥ ७ खुदवाकर ८ आगेवाले गद्य छन्द से ॥ ३२ ॥ ९ पीछे १० जिसपीछे ११ काका ॥ ३३ ॥ १२ खुदाये १३ ऐश्वर्य

मिलाये ॥

तुमहीनैं हैदराबादके नबाब निजामनमुलककौं जेर करि रूपयेमैं सिक्का अपने अंककौ खुदाय जागीरी पटामें हैदराबादही पच्छो उनकौं दिवाय बंदगी सितारेकी कराई ॥

अरु गुजरातको मालिक दामा गायगंवाल साठिहजार६०००० सेनाको सिरदार फिराऊ भयो ताकौं कैदकरि दंडलै रु गुजरात कौं अपनैं अधीन बनाई ॥ ३४ ॥

तुमारे प्रतापतैं इत्यादिक अभ्युदय देखि सबननैं सितारेकौं कुमारिकेश्वर कह्यो ॥

तिनके रूठि गयें रामराजाके राज्यमें स्वामिधर्मी सचिव कोन रह्यो ॥

ऐसो आदेस श्रीमंतको सुनि हुलकरनैं दयाराम द्विजके पठाये दैल दिखाये ॥

अरु कही कोटादिक्क कूर बुंदीससों बैर करैं सो पापिष्ठ पंडित रामचंद्रके सिखाये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत पत्र श्रीमंत करि, रामचंद्र पर रीस ॥
सज्जित हिंदुसथानपर, किन्नों हुलकर ईस ॥ ३६ ॥
कछुदिन पहिलैं नन्न्हसों, रामचंद्र कहि बत्त ॥
संध्याको अधिकार सब, छिन्न्यों पिसुन प्रमत्त ॥ ३७ ॥
निंदा बहुरि मलारकी, कहि कहि कितव कुढारें ॥
अप्पहिं हिंदुसथानपर, हुव मालिक हुसियार ॥ ३८ ॥

१ इस शब्द का अपभ्रंश गायकवाड़ हुआ है अर्थात् ये लोग पहिले गऊओं के चराने से गायकवाले कहाते थे ॥ ३४ ॥ २ जिस देश में वर्ण व्यवस्था है उसका नाम कुमारिका है ३ पत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ चुगल ॥ ३७ ॥ ५ बुरी भांति ॥ ३८ ॥

अब ताको यह कपट लखि, नन्ह दयो सु निवारि ॥
किय तयार मल्लार कँहँ, बंलि विस्वास बधारि ॥३९॥
राजोरा सटवा १ तबहि, हुलकर निज उमराव ॥
दस हजार १०००० दल संगदै, पठयो अग्ग सचाव ॥ ४० ॥
अक्खी तुम पहिलैं चलहु, दब्बहु हिंदुसथान ॥
चातुरमास बिताय हम, आवहिं कटक अमान ॥ ४१ ॥
तब सटवा दरकूंच करि, लंघि नगर उज्जैन ॥
आयो सुनि दिस दिस उठिय, ओदैक भूपन ऐन ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटागतहारजनिदलेलसिंहबुन्दीन्द्रसोदरदीपसिंहभेदनपत्रलिखनं१ष्टाऽनुजप्रेषितत्पत्रसितारासंस्थितरावराडमात्यविश्वासत्यजननिजपुराऽऽवा १ दूणयु २ क्करणाहरदाउत्तनाहरसिंहमल्लारविज्ञापनकोपतत्तदनूरीकरणश्रुतेनहड्डेन्द्रस्वभटकुत्सनसम्भवगतश्रीमन्ताऽमात्यपण्डितरामचन्द्रराणाभेदनपत्रकोटेशविप्रविश्वेश्वरोदयपुरप्रेषणाबिभित्सुमायामूढराणाबुन्दीदुर्जनशल्यदापनपत्रालिखनप्रस्थितःतद्द्विजदयारामनिवारणदालेलिश्वशुरचुंडाउत्तलालसिंहजामातृ–

१ पुनि ॥ ३६ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ भय ३ राजाओं के घरों में ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, कोटा में गये हुए हरजन के पुत्र दलेलसिंह का बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह को फोड़ने का पत्र लिखना १ छोटे भाई के भेजे हुए उसके पत्र को देखकर सितारा में ठहरे हुए रावराजा का अमात्य का विश्वास छोडना २ अपने पुर आँवाँ और दूणी के निकालने की हरदाउत नाहरसिंह का मल्लार से अरज करना और उसका क्रोध सहित अस्वीकार करना सुन कर हड्डेन्द्र का अपने उस उमराव की निन्दा करना ३ श्रीमन्त के अमात्य रामचन्द्र का राणा को फोड़ने का पत्र प्राप्त करके कोटा के पति का ब्राह्मण विश्वेश्वर को उदयपुर भेजना और उसकी माया में मूर्ख राणा का दुर्जनशाल को बुन्दी देने की सम्मति का पत्र लिखकर भेजने में ब्राह्मण दयाराम का रोकना ४ दलेलसिंह के श्वशुर चूंडा लालसिंह का जमाई के अर्थ राणा से रावराजा

हितराणाशवराट्पदपत्रलेखननागोरपुरेशराष्ट्रोड़बखतसिंहस्वसहायदिल्लीसैन्याऽऽह्वयनतद्गीतयोधपुरेशराष्ट्रोडरामसिंहस्वीयश्वशुरकूर्मराजाऽऽह्वानानीतसार्द्धलक्ष १५०००० मुद्रासितजामातृद्रव्यसमाहूतमहारावप्रस्थितजयसिंहिपुष्करक्षेत्रजामातृमिलननृपद्वय २ मेरतापुरपत्तनापालनप्राप्तदिल्लीशसेनानीपत्रराणाजिगमिषुभवनश्रुतकोटेशशत्रुभावराणापूर्वलिखितदयारामाऽर्पणपुरातत्सितारामेषणश्रीमन्तश्रुतैतदुदन्तकुपितयियासुहुलकर १ हड्डेन्द्रा २ ऽनुनयनज्ञातरामचन्द्रकौहक्यनन्हतदधिकारमल्लाराऽऽर्पणमल्लारस्वभटसटवाहिंदुस्थानागमनं चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ आदितः ॥३१५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत कोटापतिको बहिकायो, बुंदिय लरन कृष्ण वह आयो ॥
दै घेरा तोपन रन मंडिय, खोमैं बैरण कँपिसिर कछु खंडिय ॥ १ ॥
लग्गे कहन सेस दिग्गज गन, बिरचहु बाहुज नास बिरंचन ॥

के पदका पत्र लिखाना४ नागोर पुर के पति राठोड़ बखतसिंह का अपनी सहायको दिल्ली की सेना को बुलाना और वह सुनकर जोधपुर के पति राठोड़ रामसिंह का अपने श्वसुर कछवाहा राजा (ईश्वरीसिंह)को बुलाना५ जमाई से डेढ लाख रुपये लेकर कोटा के महाराव को बुलाकर जयसिंह के पुत्र का पुष्कर क्षेत्र में जमाई से मिलना ७ दोनों राजाओं का मेड़ता नगर में मुकाम करना और दिल्ली के सेनापति का पत्र पाकर राणा का जानेकी इच्छा वाला होना और कोटा के पति का शत्रु भाव सुनकर पहिले लिखे पत्रों का दयाराम को देना८ उसका उन पत्रों को सितारापुर भेजना और श्रीमन्त का उस वृत्तान्त को सुनकर कोप से जानेवाले हुलकर और उम्मेदसिंह को नहीं जाने देना ६ रामचन्द्र का छल जानकर नन्ह का उसका अधिकार मल्लार को देना और मल्लार और अपने उमराव सटवा का हिंदुस्थान में आने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से तीन सौ पन्द्रह मयूख समाप्त हुए ॥ ३१५ ॥

१कृष्णसिंह२खोम(बुरज)३कोट४कांगुरे ॥१॥ ५क्षत्रियों का नाश करो६हे ब्रह्मा

इनको बीज रहैं छिति जोलौं, रंचक चैन इमै नहिँ तोलौं ॥२॥
दिस दिस यह कोलाहल अद्भुत, बुंदिय इम विंटिय दलेल सुत ॥
नहिँ नृप*तदपि कढ्यो अंतर[1] दल,चालुक[1]कायथ[2]हत्थ चलाचल

॥ षट्पात् ॥

सोलंखी संग्रामसिंह १ जोराउर नंदन ॥
कायथ मोजीराम २ कढे अरि करन निकंदन[3] ॥
मारे के रन अपर झारि निर्भर[4] समसेरन ॥
देर न किय दालेलि[5] भज्यो भीरुक तजि डेरन ॥
नैनवा मग्ग लिय रुक्कि इन तब सु जाय कोटा रहिय ॥
कोटेस हिंतु दै द्रुत कटक करहु भीर अब इम कहिय॥४॥

॥ दोहा ॥

गो बुंदिय तुमरे कहैं, आयो रैखत[6] लुटाय ॥
बल बिनु बैर न बाहुरत, सँत्वर[7] देहु सहाय ॥ ५ ॥
दुजनसल्ल उत्तर दयो, दिवस भीरके ए न ॥
कछुक काल छन्नैं रहहु, सटवा आत ससैन[8] ॥ ६ ॥
राजोरा दरकुंच रचि, कोटा सन लहि दंड ॥
द्रुत पहुँच्यो अजमेर दिस, मंडत अमल अखंड ॥ ७ ॥
खत्री केसवदासकै, पठये सटवा पत्र ॥
बखतसिंह सन बैर तुम, अनुचित करहु न अत्र ॥ ८ ॥
कूरम मति केसव कहिय, बरजत तुमहिं मलार ॥
जो चहिहैं अब जंग तो, ढहिहैं सब ढुंढार ॥ ९ ॥
बरज्यो इत बखतेसहू, मरहट्ठन भय मानि ॥
लै बहु धन मरुपाल[9]सौं, बुल्ल्यो न लरन बानि ॥ १० ॥

॥ २ ॥ * उम्मेदसिंह नहीं था तोभी १ भीतर की सेना निकली २ चपल ॥ ३ ॥ ३ नाश ४ निर्भर (बहुत) ५ दलेलसिंह के पुत्र ने ॥ ४ ॥ ६ सामग्री ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ सेना सहित ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ मारवाड़ के राजा से

सुनि तब ईश्वरिसिंहहू, खटवा[1] नीति सुनाय ॥
क्यों पुनि पुनि दिल्लिय कटक, बालिस[2] लेत बुलाय ॥ ११ ॥
हुलकरको यह सुनि हुकम, तब नबाब डरि तत्त ॥
सफ्दर खान सलावतहु, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥ १२ ॥
कुम्महिँ जानि सहाय कर, रामसिंह मरुराय ॥
केसव हठि रोक्यो कलह, इहिँ कारन अकुलाय ॥ १३ ॥
सम्मति हरगोविंदकी, लै कवंध नृप राम ॥
कुम्महिँ अक्खिय केसवहु, है यह स्वामि हराम ॥ १४ ॥
माधव१ अरु उम्मेद२ सों, याकै प्रीति अँजस्र[3] ॥
छन्नैं आवत जात छई[4], घनें गये इम घस्र[5] ॥ १५ ॥
कोउक पत्र फरेब करि, लिपि ताकी लिखवाय ॥
तैसोही लिखि कुम्मको, दिन्नों बिदित दिखाय ॥ १६ ॥
सु लखि पत्र जयसिंह सुव[6], मन्नी सत्यहि मुग्ध[7] ॥
बुल्लि[8] सभा अंतर बन्यों, केसव उप्पर क्रुद्ध ॥ १७ ॥
केसव अक्खिय जोरि कर, इतरनको छल एह ॥
असु[9] कीजै तनु अंतरित, निकसैं जो मम लेहँ[10] ॥ १८ ॥
मन्नी तदपि न मातृमुख[11], सुनहु राम नृप हाय ॥
करि हठ दिन्नों केसवहिँ, पापी गैरल[12] पिवाय ॥ १९ ॥
बुल्ल्यो तँहँ जयसिंह सुव, हे पाँमर[13] मतिहीन ॥
मिलि तैंही मल्लारसैं, खर जैपुर किय खीन ॥ २० ॥
च्यारि४ परग्गन सोदरहिँ, हड्ड२ हिँ बुंदिय देस ॥
कितव[14] दिवाये प्रसभ[15] करि, वाको फल सहि एस ॥ २१ ॥

॥ १० ॥ १ मल्लार के उमराव खटवाने बख्तसिंह को मना किया २ मूर्ख ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ३ निरन्तर ४ पत्र ५ दिन ॥ १५ ॥ १६ ॥ ६ सुत ७ मूर्ख ने ८ बुलाकर ॥ १७ ॥ शरीर से ९ प्राण दूर करे १० लेख ॥ १८ ॥ ११ तो भी उस मूर्ख ने नहीं मानी १२ जहर पिलादिया ॥ १९ ॥ १३ नीच ॥ २० ॥ १४ हे ठग १५ हठ करके

कहाँ सहायक१ तव कुमति, मूरख वह मल्लार ॥
वाहि बचावन प्रान अब, बुल्लहु क्यों न लवार ॥ २२ ॥
सुनि अक्खिय केसव सुमति, स्वामि हनैं जब दास ॥
त्राता कोन द्वितीय२ तँहँ, गिलत सिंह गज ग्रास ॥ २३ ॥
केसव केसव ध्यान करि, पुनि पुनि बिरचि प्रनाम ॥
गहि भाँजन पिन्नौं गरल, रटि अच्युत हरि राम ॥ २४ ॥
लेत जहर आवत लहर, नील नँहन४ यह भाखि ॥
बिनु आगस५ जो देत बिख, सो पावत श्रुति साखि ॥ २५ ॥
इम कहि इक१घटिका अवधि, केसव छोरयो काय ॥
बहुलँ७ छिन्नि ताको बिभव, लाई कूरम८ लाय ॥ २६ ॥
आयो जैपुर कुम्भ इम, मंत्री पटु निज मारि ॥
सटवा यह बदनीति सुनि, बिबिध लिखिय बिसतारि ॥२७॥
सुनि हुलकर श्रीमंतसों, अक्ख्यो यह अपराध ॥
हठ पूरब लिन्नों हुकम, बिरचन जैपुर बाध ॥ २८ ॥
हुलकर१ हड्ड २ रु नन्न्ह ३ पुनि, तजिग सितारा तत्त ॥
सक हय नभ धृति १८०७ चैत्र सित, पुन्यापत्तन पत्त ।२९॥
तनय स्वीय उपवीत तँहँ, बलि निज अनुज बिवाह ॥
पुण्या किय श्रीमंत प्रभु, अति हित उभय उछाह ॥ ३० ॥
महिमानी उम्मेदकी, बहु श्रीमंत बनाय ॥
प्रीति सहित अनुकूल पन, दिन दिन अधिक दिखाय ॥३१॥
रामचंदके कथित करि, संध्याको अधिकार ॥

॥ २२ ॥ १ रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ केशवदास ने २ श्रीकृष्ण का ध्यान करके ३ पात्र लेकर विष पीगया ॥ २४ ॥ ४ उस नीले नखोंवाले ने यह कहा "जहर खानेवाले के नख नीले होजाते हैं" ५ अपराध ६वही पीछा पाता है यह वेद की साक्षी है ॥ २५ ॥ ७ बहुत ८ कछवाहे ने लाय लगाई ॥२६॥२७॥ ॥ २८ ॥ ६ पूना नगर में प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

भयो खालसै किन्न अब, ताकी अरज मलार ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनहु नन्ह हम अग्ग लियउ मालव जवनन सन ॥
तब पत्तन उज्जैन महाकालेस निकेतन१ ॥
परमार सु आनंद१ मैं२ रु संध्या३ राणांजिय३॥
तीनन३ तजि हिय गांठि सत्य इहिं रीति सपथ२ किय ॥
इक१चित्त स्वामि कारिज्ज करहिं अरु जो होवहिं काल बसि ॥
तो तास सुतन जीवैं सु जन हिय लगाय पालहिं हुलसि॥३३॥

॥ दोहा ॥

यह करार जो भुल्लि अरु, चलिहैं कुमति कुचाल ॥
ताहि महाकालेश्वरहु, प्रगट करहिं पैमाल ॥ ३४ ॥
हमरे हुव संधा३ यह सु, जानत तुमहु अजेय ॥
रामचंदके कथित करि, संध्या नहिं अपमेय४ ॥३५॥
रुप्पय पैंसठि लक्ख ६५००००० तब, दै मलार बिच रक्खि ॥
संध्या सन श्रीमंत लिय, सेनापति तिहिं रक्खि ॥ ३६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकरको श्रीमंत कथित५ किय, संध्या जया६ लगावन निज हिय॥
नाम चमारगौंद तस पत्तन७, आयउ ताहि मनावन अप्पन ॥ ३७ ॥
लै तिहिं संग गये पुराया जब, रचिय मंत्र हुलकर १ संध्या२ तब ॥
हिन्दुसथान माँहिं अप्पन दुव२, स्वामी नन्ह तयार करे ध्रुव॥३८॥
रह्यो परंतु उहाँको बहुतर८, बित्त हायनिक९ रामचंदकर ॥
जो न रहैं अप्पन बस यह धन, तो करैंहि वह दुष्ट दुष्टपन ॥ ३९॥

१ मंदिर में २ सोगन किये थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३ प्रतिज्ञा ४ अपमान (अनादर) करने योग्य ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ कहना ६ जया नामक सिन्धिया का ७ सिन्धिया के पुर का नाम चमारगोंदा था ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ अत्यन्त ९ वार्षिक (सालाना) धन ॥ ३९ ॥

यह तब दुहुँन२ नन्हपति अक्खिय, आब्दिक[1] कर अपनैं[2] कर रक्खिय ॥
श्रीमंतहु यह अरज मन्नि लिय, हिंदुसथान अधीन दुहुँन२ किय४०

॥ दोहा ॥

तबतैं हिंदुसथानकी, खरनीको कर सर्व ॥
हुलकर संध्याऽधीन[3] हुव, आब्दिक वित्त अँखर्व[4] ॥ ४१ ॥
सिक्खदैन श्रीमंत पुनि, संभर डेरन आय ॥
तरल निवेदे दस १० तुरग, करटी[5] दुव२ अतिकाय ॥
भूखन मनिन अनर्घ[6] दुव२, दस १० सिरुपाव उदार ॥
दिन्नी बुंदिय सिक्ख इम, करि संभर सतकार ॥ ४३ ॥
सक[7] मुनि नभ बसु इंदु १८०७ सम, सावन पंचमिस्याम॥
बुंदिय आयो करि बिजय, धरनीपति निज धाम ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटेशप्रेरितदालेलिकृष्णसिंहबुन्दीवेष्टनरावराट्सुभटसोलंखिसंग्राम १ कायस्थमोजीराम २ तदभिभवनकृष्णसिंहकोटासहायप्रार्थनदुर्ज्जनशल्यतदनङ्गीकरणराजोरासटवावखतसिंहे २ श्वरीसिंह २ युद्धवारणश्रुतपैशून्यकूर्म्मराजखलिकेशवगरलदापनजा

१ सालाना खिराज २ अपने हाथ में ॥ ४० ॥ ३ आधीन ४ बहुत धन ॥४१॥ ५ हाथी ॥ ४२ ॥ ६ अमूल्य ॥ ४३ ॥ ७ विक्रम के शकं का सम्वत् ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में कोटा के पति की प्रेरणा से दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का बुन्दी घेरना और रावराजा के भट सोलंखी संग्रामसिंह और कायस्थ मोजीराम का उस के सम्मुख होना १ कृष्णसिंह का सहाय के अर्थ कोटा के पति की प्रार्थना करना और उसका अस्वीकार करना २ राजोरा सटवा का बखतसिंह और ईश्वरीसिंह का युद्ध रोकना और चुगली सुनकर कछवाहों के राजाका केशवदास को जहर देना १ यह वृत्तान्त जानकर हुलकर का जयपुर को

ततदुदन्तहुलकरजयपुरध्वंसिनीनन्हाऽऽज्ञानपनतदनुश्रीमन्त १ हु २ हुलकर ३ पुण्यापुराऽऽगमनकृततनयोपवीता १ऽनुजविवाहो २ ऽसवनन्हमल्लारवचनाऽनुकूलसन्ध्याजयासेनाऽधिकाराऽर्पणमल्लार१ जया २ हिंदुस्थानप्रेषणाेरीकरणनन्हबुन्दीन्द्रशिविरागमनतुरगदश क १० करटियुग २ मणिभूषणद्वया २ ऽऽदिनिवेदनरावराड्बुन्द्या ऽऽगमनं पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ आदितः ॥ ११६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापति संकल्प सब, करे नियति प्रतिकूल ॥
रामचंद्र सन हित रच्यो, मोघ भयो सु समूल ॥ १ ॥
पलटायो जगतेस पुनि, सावधान हुव सोहि ॥
बुंदी पठयो कृष्ण कों बलि, भजि सु पराजित मोहि ॥ २ ॥
जैपुर सम्मलि पुनि जुरन, लग्गो करन प्रयान ॥
बरज्यो सटवा कुम्भ तब, थकि बैठो निज थान ॥
ऐसो अनुचित ईरखा, किन्नौं जड़ कोटेस ॥
न फल्यो उद्यम नीचको, सोक रह्यो अवसेस ॥ ४ ॥
उदयनैर सन रान इत, दयाराम द्विज संग ॥
पठयो टौंका उपकरन, अनुसरि प्रीति उमंग ॥ ५ ॥

नाश करने की नन्हकी आज्ञा लेना और जिसपीछे श्रीमन्त, उम्मेदसिंह और हुलकर का पूना नगर में आना ४ पुत्र की जनेऊ और छोटे भाई का विवाह करके नन्ह का मल्लार के वचनों के अनुकूल सिन्धिया को जया नामक सेना का अधिकार देना और मल्लार व जया को हिन्दुस्थान में भेजना मंजूर करना ५ नन्ह का बुन्दी के राजा के डेरे आना और दश घोड़े, दो हाथी, दो जड़ाऊ भूषण आदि भेट करना और रावराजा का बुन्दी आने का पैंतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से तीन सौ सोलह मयूख हुए ॥३१६॥

१ भाग्य ने उलटे कर दिये २ निरर्थक ॥ १ ॥ ३ कृष्णसिंह को ॥ २ ॥ ३ ॥
४ पाके ॥ ४ ॥ ५ सामग्री ॥ ५ ॥ ३

हाटक साखति उभय२ हय, मैदकल इक१ मातंग ॥
सूचीमुखं सिरपेच इक१, दुव२ सिरुपाव सुरंग ॥ ६ ॥
टीकाको यह साज दिय, दयाराम द्विज सत्थ ॥
परंपरा दसतूर पुनि, सुनिये राम समत्थ ॥ ७ ॥
अग्गैं सुपहु सुभांड सुत, नृप नारायनदास ॥
रन रानाँ संग्रामकी, टारी दुस्सह त्रास ॥ ८ ॥
मंडूपुरप नबाबको, इक्का भट लिय मारि ॥
संभरको सीसोद तब, बहु आसान बिचारि ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम रान संग्राम भीर करि, बाबरको बहु कटक हन्यों लरि ॥
च्यारि अग्ग चालीस४४घाय सहि, बिजय कियो बुंदीस धर्म वँहि१०
इक्का सुगल पहै पुनि मार्‌यो, अपनैं सिर उपकार बिचार्‌यो ॥
भटन सहित यह मंत्र रान किय, बिनई पुनि बुंदीसहिं बुल्लिय ११
तुम हमतैं कछु भेट अब्द प्रति, इच्छत लेहु रक्खि निज उन्नति॥
रचि तब नर्म कह्यो संभर पहु, पट्टिस१खग्ग१ कोसं दुव२पेसहु१२
बेर तीन३ हायन बिच लैहैं, तब तुम पर इहुन हित व्हैहैं ॥
भेजहु प्रथम बिजयदसमी१० दिन१, पुनि गुनगोरि३ दिवस२ आ-
हुँठ इन ॥ १३ ॥
बरसगांठि दिन३ बहुरि पठावहु, तो हमहेत गिनैं तुमरो वहु ॥
यह नृप नर्म रान स्वीकृत किय, अवरहु प्रीति रीति इम बंधिय१४
हाटकं साज उपेतं इक्क१ हय, इक्क१ तरवारि सुद्धि तिहिं सनिसय॥
इक्क१ निखंग इक्क१ बिसिखांसन, चीरा इक्क१ मूल्ल मिति जास न१५

१ सुवर्ण की २ मस्त हाथी ३ हीरों का ॥ ६ ॥॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ धर्म धारण करके ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ हंसी करके ६ कटार और खड्ग के दो म्यान भेजो ॥ १२ ॥ ७ हे आहड़ नगर के पति अथवा अहाड़ा क्षत्रियों के पति "आहड़ पुर में राज्य रहने के कारण शीशोदिया क्षत्रियों को अहाड़ा तथा आहड़ा कह॰ ते हैं"॥१३॥१४॥ ८ सुवर्ण के साज ९ सहित १० धनुष ॥१५॥

असि१ पट्टिस१ के कोस२ सहित चहि, इक१ सिरुपेच इते८ भेजन कहि ॥
तबतैं चली रीति वह आई, सो रानहिं नहिं मिटत सुहाई ॥१६॥
दथाराम द्विज तत्थ रान अब, टीँका संग ए८हु पठये सब ॥
बुंदिय रान सचिव१ द्विज २ लाये, बिजयदसमि १० दिन नजरि कराये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उज्ज[1] अमावसि निस तदनु[2], चौकीदारन फोरि ॥
तारागढ सन कढि गयउ, दुरजन वह छल जोरि ॥ १८ ॥
इत दक्खिन अब वे उभय२, मुनि नभ धृति१८०७इसमास॥
हुलकर संध्या सज्ज हुव, लगि दिगविजय हुलास ॥ १९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बिजयदसमि१० दिन बीर सेन हंकिय सागर सम ॥
संध्या तहँ हुलकरहिं कहिय कछु काम गेह मम ॥
मैं चमोरगौंडा प्रवेसि वह करि द्रुत आवत ॥
अप्प चलहु इत अग्ग अवनि सत्रुन अपनावत ॥
यह कहि जया सु गय निज नगर इत मल्लार हंकिय कटक
दिस बिदिस बल फुट्टिय दुसह रचहिं कोन दक्खिन रटक२०
हुलकर सुत जुत हंकि लंघि चम्मलि इत आयउ ॥
वृत्त सुनत बुंदीस जाय सम्मुह गृह लायउ ॥
अरु इध नभ धृति१८०७अब्द मास अगहन पख उज्जल ॥
दुहुँन रनैनवा जाय भिंटि तोपन किय कंदल ॥
तब सठ दलेल सुत कृष्णा वह अंतहपुर तजि भज्जि गय ॥
इक्क१ रु मल्लार२ ताकी तियन पठई पीहर बिरचि नय ।२१।

४ ,४।१कार्तिक मास की२जिसपीछे ॥१८॥३आश्विन मास में ॥१९॥४सिन्धिया ५ पुर का नाम है ५भूमि ॥२०॥६वृत्तान्त७युद्ध किया८जनाने को छोडकर॥२१॥

॥ दोहा ॥

नगर समीधी१ नैनवा२, करउर३ ए सब लिन्न ॥
तिनमें नृप बुन्दीस तब, अमल अप्पनों किन्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटेशयत्ननिष्फलीभवनराणातिलकोपहारबुन्दीप्रेषणहरजनकारानिष्कसनमल्लारहिंदुस्थानाऽऽगमननयनपुरयुद्धकरणदालेलिपलायनबुन्दीन्द्रतद्भूम्युद्धरणं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥
आदितः ॥ ३१७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ निःशाणी ॥

इम सुत भीरु दलेलका तजि तियन पैलाया ॥
ताके देस असेसमैं नृप अमल बिधाया ॥
पुनि हुलकर संभर सहित अमरख उफनाया ॥
खत्री केसव वैरपैं जयनैर चलाया ॥
फट्टी पन्नग संकुली फन पलटि फिराया ॥
खुल्ले नैंन महेसके नवँ माल लुभाया ॥
लग्गा बावन५२ संगही रन कौतुक आया ॥

॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कोटा के पति का यत्न निष्फल होना १ राणा का तिलक की सामग्री बुन्दी भेजना २ हरजन का कैद से निकलना ३ मल्लार का हिन्दुस्थान में आना "सामान्य रीति से सभी भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्थान है परन्तु विशेष करके भारत वर्ष के पूर्वी प्रान्त को हिन्दुस्थान कहते हैं" नैणवा पुर में युद्ध करना और दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का भागना तथा बुन्दी के पति का उसकी भूमि लेने का छत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३६। और आदि से तीन सौ सत्रह ३१७ मयूख हुए ॥

१ भागा २ किया ॥ १ ॥ ३ शेषनाग की सांकल (पीठ की लंबी हड्डी) फटी ४नवीन मुंडमाला का लोभ लगने से शिव के नेत्र खुले युद्ध का खेल देखने

जाल बनाया जुग्गिनी कर ताल बजाया ॥ २ ॥
गिद्धनि चिल्हनि गैनमैं गन के गेहकाया ॥
धूरि बिलग्गी भानुकैं सब भानु छिपाया ॥
शृंग मचक्के मेरुके धर खंड धुजाया॥
हाक नकीबनकी मची दल डांक लगाया ॥
सुनि आवत दक्खिन कटक कूरम अकुलाया ॥
दुत कग्गर बुंदीसपैं लिखवाय पठाया ॥
छंडी छोनिय रावरी हम साम बनाया ॥
हुलकर सम्मलि होय क्यों अब दंड उपाया ॥ ४ ॥
किन्नौं प्रथम करार जो नहिँ नैंक मिटाया ॥
अब कैसे अपराधपैं मल्लार कुपाया ॥
केसव आयस नाँ किया इम झारि गिराया ॥
दास तदपि आमेरका इनका न नसाया ॥ ५ ॥
अग्गैं रंचक दोसपैं अतिदंड न गाया ॥
समुझावहु तुम संभरी हुलकर हठ आया ॥
एकाँकी अब अप्पका अवलंब बनाया ॥
ए कग्गर आमेरका सुनसीन सुनाया ॥ ६ ॥
बिनय भरे सुनि बैन ए संभर सकुचाया ॥
मंत्र बिरचि मल्लारतैं हिय गूढ खुलाया ॥
हुलकर अक्खी भूपतैं नहिँ बैर सिवाया ॥
दक्खिन निंदा अद्दरी बलि दर्प्प बढाया ॥ ७ ॥
मारत केसवदासकों उन बैन लगाया ॥

को बावन वीर संग हुए योगिनियों ने समूह बनाकर हाथ की ताली बजाई।२। गिद्धनियों और चीलहों के समूह १ आकाश में २ प्रसन्नता की बोली बोले ३ लगी ४ सूर्य की किरणों के धूलि लगकर सब ५ सूर्य को छिपा दिया ६ सेना को क्रोध दिलाया ॥ ३ ॥ ७ पत्र ८ भूमि ॥ ४ ॥ ९ केशवदास ने हुक्म नहीं माना इस कारण ॥ ५ ॥ १० अकेले आपका ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिहिं बलतैं बुंदी बहुरि चउ४ देस गुमाया ॥
सो हुलकर तेरो कहाँ अब अंतक आया ॥
ऐसैं कहि अपराध बिनु पटु सचिव नसाया ॥ ८ ॥
ताहीके हठ दोसपैं इत मैं चलि आया ॥
मारनका नहिं मंत्र पैं अति दर्प छकाया ॥
यातैं रुप्पय दंडका लैहैं मनभाया ॥
बुंदीपति सुनि बैन ए प्रतिबैनं लिखाया ॥ ९ ॥
कूरम हम तुमरैं कहैं हुलकर समुझाया ॥
पै पिसुननकी मन्निकैं तुम दर्प दिखाया ॥
यातैं आयस नन्हका लहि कटक चलाया ॥
केसवदास बिनासका इन ओगुन गाया ॥ १० ॥
मारनका नहिं मंत्र पै धन लैन धकाया ॥
प्रत्यागत इच्छैं नहीं एहू हठ आया ॥
यातैं अप्पहु अप्पहू दम दम्म सिवाया ॥
लै तिनकौं टरिजाँहिंगे दल खरच दुखाया ॥ ११ ॥
ए कग्गर कूरम सुनत इत मंत्र उपाया ॥
देनाँ दम्म न उचित करि लरनाँ चित लाया ॥
अक्खी हरगोविंदसौं रनही मन भाया ॥
वीरन बुल्लहु बेगही दल सजवं सुहाया ॥ १२ ॥
कूरम याकी कन्यका रक्खी करि जाया ॥
यातैं हरगोविंदहू अवसर यह पाया ॥
बुल्ल्यो मेरी जेबमैं दल लक्ख १००००० सजाया ॥
जब चाहैं तब लीजिये भट संगर भाया ॥ १३ ॥

१काल ॥ ८ ॥ २उत्तर ॥ ९ ॥ ३चुगलों की ४घमंड ५नन्ह का हुकम लेकर ॥ १० ॥ ६पीछा जाना नहीं चाहता ८ आपभी ९ दंड के रुपये ७ दो ॥ ११ ॥ १०शीघ्र ॥ १२ ॥ ११ हरगोविन्द नाटानी की कन्या को १२स्त्री ॥ १३ ॥

मरहट्ठे मन भीरु है जब बाजि उठाया ॥
तबही पायन लग्गिहै ओदक[1] अकुलाया ॥
तुम आमैर अधीसव्है सिर छत्र धराया ॥
वे अनुचर द्विज दीनकों इत आत सिखाया ॥ १४ ॥
भिच्छा[2] मंगनहारका जिन ओदन[3] खाया ॥
ते प्रभुकौं पहुँचै नहीं अति त्रास डराया ॥
कहाँ जेठ दिनंकर[4] कहाँ खद्योत[5] खिसाया ॥
कहाँ सिंह गजरिपु कहाँ किंखि[6] दुब्बल काया ॥ १५ ॥
कहि कहि हरगोविंद इम कूरम बहिकाया ॥
हरिनारायन पुत्र निज पक्ख १५ पुँब्ब[7] सिखाया ॥
सब जैपुर पतिके सुभट सुत संग दिवाया ॥
सेखावाटी मुल्कमैं पहिलैंहि पठाया ॥ १६ ॥
अच्छे तोप तुरंग गन सब तत्थ चलाया ॥
कूरम जब मंग्यो कटक[8] मंडी तब माया[9] ॥
सो ढिग लक्ख १००००० अनीक है यह छंद्म[10] रचाया ॥
दक्खिनका उत पत्रदै बल[11] बेग बुलाया ॥ १७ ॥
आवैं जितनैं अंतरँगैं[12] इम दिवस गुमाया ॥
इततैं हुलकर हड्ड नृप दरकुंच चलाया ॥
जैपुरतैं लय३ कोसपैं निज दल उतराया ॥
झिलि[13] झलाँनाँ[14] कुंडपैं झंडाल झुकाया[15] ॥ १८ ॥
नट्टानी[16] तब सचिव निज कछवाह बुलाया ॥

१भय से ॥१४॥ जिसने२भिक्षा मांगनेवाले(ब्राह्मण)का३अन्न खाया४ज्येष्ठ मास का सूर्य५जुगनू (आगिया). दुर्बल शरीरवाला ६बन्दर ॥१५॥७एक पक्ष पहिले ही ॥ १६ ॥ ८ सेना ९ इन्द्रजाल १०छल ११सेना ॥ १७ ॥ १२बीच में १३ ठहर कर (प्रसन्नता पूर्वक ठहरनेको डिंगल भाषा में झिलना कहते हैं) १४झलाना नामक कुंड पर१५झंडे खड़े किये(डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊंचा करने को अथवा खड़ा करने को झुकाना कहते हैं) ॥ १८ ॥ १६ नाटानी जाति का वैश्य

बुल्ल्यो तैं तव जेबमैं दल लक्ख १००००० बतायो ॥
वाकों कह्हु पार अब अरि अंतिक आया ॥
विनु उद्यम तेरे कहैं दिन वीस बिताया ॥१९॥
बुल्ल्यो हरगोविंद तब तुम आखु लगाया ॥
तिन कट्टी मम जेब ओ बल सब बिखराया ॥
नट्टानी यह जंपिकैं निज गेह पलाया ॥
इत आमेर अधीसकों अब त्रास दबाया ॥ २० ॥
हय अंबर धृति १८०७ पोस बदि नवमी९ दिन पाया ॥
तास निसाके जाम जुग२ नृप निट्ठि गुमाया ॥
जानी बनिक बिरोधकैं भावी बिगराया ॥ २१ ॥
छन्नैं गरल अमत्र इक मतिमंद मँगाया ॥
सुतो ताको पान करि हुव२ नैंन मिचाया ॥
काहू नहिं जानी यहै नृपनैं बिख खाया ॥
खात समैं इक पत्रमैं इम अंक लगाया ॥ २२ ॥
सुनिये संभर मात जे अनुचरन उठाया ॥
ईश्वर लेहँ मिटैं नहीं जुग जुग जे गाया ॥
प्याला केसवदासकों पाया सुहि पाया ॥
असैं लिखि आमेरपति इम बेर बिहाया ॥ २३ ॥
जानी सचिवन मात जब पुर द्वार लगाया ॥
इत खंडू हुलकर तनय नृप डेरन आया ॥
अक्खी चढि अप्पन चलैं भट लै मन भाया ॥
बाहिरतैं लखि आयहैं पुर सुनत सुहाया ॥ २४ ॥

---

१ सजीव ॥ १९ ॥ २ चूहे ३ भगा ॥ २० ॥ ४ उस दिन की रात्रि के दो पहर कठिनाई से विताये ॥ २१ ॥ ५ जहर का ६ पात्र ७ मूर्ख ने ॥ २२ ॥ ८ हे चहुवाण रामसिंह सुनो ९ सेवकों ने १० लेख ११ जो विष का प्याला केशवदास को पिलाया सो ही पीछा १२ मिला १३ शरीर छोडा ॥ २३ ॥ २४ ॥

सह खंडू नृप संभरी चढि तबहि चलाया ॥
संग लये भट तीन सत३०० निज परख गिनाया ॥
जैपुरके प्राकार[1] ढिग रहि तुरग विहाया ॥
इक अटा[2] चढिकैं सकल पुर त्यौं दृग लाया ॥ २५ ॥
जैसैं जैपुर सिल्पमत जयसिंह बसाया ॥
भेदी कोउक अंग[3] ते कहि भिन्न बताया ॥
यह कूरम सचिवन सुनी दुव२ देखन आया ॥
तब पुर दक्खिन द्वारका द्रुत अरर[4] खुलाया ॥ २६ ॥
सिविका[5] हरगोविंद१ चढि बाहिर कढि धाया ॥
विद्याधर१ त्योंही बहुरि दुव२ सम्मुख चलाया ॥
आय निकट बुंदीससौं सब वृत्त कहाया ॥
जैसी बिधि गर[6] रत्तिमैं नृप गरल चखाया ॥ २७ ॥
दोहू२ सचिवनकौं सुनत इन सँपथ[7] कराया ॥
तब सच्ची गिनि सेनमैं यह वृत्त[8] पठाया ॥
सो सुनि हुलकर सैन लै जैपुर ढिग आया ॥
करि मुकाम प्राकार तट निज थूंल[9] तनाया ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुलकर१ हड्डेन्द्र२जयपुरप्रस्थानप्राप्तकूर्मराजपत्ररावराजमल्लाराऽनुनयनकथितकेशवदासवैरहुलकरजैपुरगमनमंत्रिहरगो-

१कोट के पास रहकर घोड़ों से उतरे २ छत पर चढकर सब नगर देखा ॥२५॥ ३ नगर के उन अंगों को ४कपाट ॥ २६ ॥ ५ पालखी पर६राजा ने विष खाया ॥ २७ ॥ ७ सौगन कराये ८ वृत्तान्त ६ डेरा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में, हुलकर और हाडा क्षत्रियों के इन्द्र का जयपुर पर गमन करना १ कछवाहों के राजा का पत्र पाकर रावराजा का हुलकर से विनय करना २ कहे हुए केशवदास के वैर पर हुलकर का जयपुर जाना ३ मंत्री हरगोविन्द का पीठ पीछे सेना को निकाल कर जयसिंह के पुत्र को विश्वास देना ४ शत्रु

विन्दपरोत्थसैन्यनिष्कासनजायसिंहिविश्वसनज्ञातशत्रुसामीप्यसैन्य रहितपीतगरलकूर्म्मराजदेहत्यजनबोधसिंहि १ मल्लारि २ जयपुर वहिर्दर्शनजयपुरस्सचिवतत्सम्मिलनहुलकराऽऽह्वानप्राकाराऽधःप्टत नापातनं सप्तत्रिंशो ३७ मयूखः ॥ ३७ ॥ आदितः ॥ ३१८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पोस असित दसमी१० दिवस, इम जयपत्तन आय॥
पुनि प्रबंध अपनों करन, लिय बुंदीस बुलाय ॥ १ ॥
अक्खी तुम जावहु नृपति, लखि पुर राजनिकाय ॥
अंतहपुर जुत अप्पनौं, ज्ञामिक देहु जमाय ॥ २ ॥
तब पुर अंतर जाय नृप, धरि चोकी सब ठाम ॥
कहिय आय मल्लार प्रति, भये नृपहिं खट६ जाम ॥ ३ ॥
उचित दाह कछवाहको, अब न विलंब बिधेय ॥
इते काल रंक न रहैं, श्रुति अक्खत सुहि श्रेय ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनि हुलकर कछु सोक सहित हुव, जैपुर सचिव बुलाये वे दुव२॥
हरगोविंद१ बहुरि बिद्याधर१, तिनहिं कह्यो दाहहु नृप सत्वर५
तब तिन अरज मलारहिं किन्नौं, चोकी तुम अप्पन धरि दिन्नौं॥
कोस सबहि नहिं हत्थ हमारैं, किहिंठाँ सन उंपकरन निकारैं६

को समीप जानकर सेना रहित कछवाहे राजा का जहर पीकर शरीर छोड़-ना ५ बुधसिंह के पुत्र और मल्लार के पुत्र का जयपुर को बाहर से देखना ६ जयपुर सचिवों का उनसे मिलना और हुलकर को बुलाना और कोट के नीचे सेना का पड़ाव करने का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३७॥ और आदि से तीन सौ अठारह ३१८ मयूख हुए ॥

१ पादि ॥ १ ॥ २ राजमन्दिर (महल) ३ जनाना सहित ४ अपने पहरायत ॥ २ ॥ ५ राजा को मरे छः पहर होगये हैं ॥ ३ ॥ ६ वेद कहता है सो ही श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ खजाने ९ किस जगह से १० सामग्री ॥ ६ ॥

इन आच्छिय हम सन लै जावहु, नहिँ*निदेस किम कोस खुलावहु
यह सुनाय निज कोसनतैं तब, सामग्री हुलकर पठई सब ॥७॥
ताहि संग बनिक[1] रु विद्याधर[1], लै तब उभय[2] गये पुर अंदर ॥
राज्य बडो कछु काम न आयो, हुलकरतैं खंपन नृप पायो ॥८॥

॥ दोहा ॥

महलन बिच निष्कुट[2] रुचिर, जयनिवास अभिधान[3] ॥
किन्न दाह कछवाहको, तिहिँ ढिग विहित विधान[4] ॥ ९ ॥
बिगरी ईश्वरिसिंह मति, बरस इक[1] पहिलैंहि ॥
सुपहु राम सोंपे सुनहु, नर कहे इम व्हैंहि ॥ १० ॥
मत्त भयो जयसिंह सुव, जैपुर गद्दिय पाय ॥
खान[1] नाम इभपाल[5] इक, किन्नौं सचिव बढाय॥ ११ ॥
जवन वहै उनमत्त भो, नृपको हेत निहारि ॥
अति अनीति लग्गो करन, पर नारिन घर डारि ॥ १२ ॥
कूरम आसव[6] पान करि, इकदिन बुल्ल्यो[7] वाहि ॥
मंदिर श्रीगोबिंदके, चित कछु मंत्रन[8] चाहि ॥ १३ ॥
बरज्यो इतरन[9] तदपि तहँ, किन्नों कुम्भ अज्ञान ॥
आधोरनके[10] हत्थतैं, पानकरसको[11] पान ॥ १४ ॥
पुनि वासों गलबाँहँ करि, फिर्‌यो निरंकुस होय ॥
जब आसव मद उत्तर्‌यो, सोच्यो तब सठ रोय ॥ १५ ॥
दिवाकीर्ति[12] इक दैधिषव[13], बारी संस्तुव२ नाम ॥
सोहु बढायो सचिव करि, दै सिविका गज गाम ॥ १६ ॥

---

*हुकम ॥ ७ ॥ १ मुरदे को ओढाने (ढकने) का वस्त्र ॥ ८ ॥ २ गृहवाटिका (घर का बगीचा) ३ नाम ४ उचित विधि से ॥ ९ ॥ १० ॥ ५ महावत को ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ६ मद्य पीकर ७ उस महावतको बुलाया ८ सलाह करने की इच्छा से ॥ १३ ॥ ९ अन्य लोगों ने मना किया तोभी १० हाथी के महावत के हाथ से उस मंदिर में ११ मद्य पान किया ॥ १४ ॥ १२नाई १३अविवाहिता(नातेवाली)

अंत्यज लोक अनेक इम, रक्खे ढिग पटु जानि ॥
मरयो सु कूरम लै गरल, यँहँ दक्खिन भय आनि ॥ १७
*बारनारि इक रूप[1] वसु, मन्त्री तिय करि मेल ॥
सोहु जरी रचि सहगमन, जयनिवास गृह[2]वेल ॥ १८ ॥
दूजेदिन हुलकर तनय, किन्नौं खंडुव वत्त ॥
कूरम गृह सुंदर सुनत, पातुरि बहु गुन रत्त ॥ १९ ॥
लखि अच्छी तिनमाँहिंसौं, चुनि चुनि कल्हि मँगाय ॥
घर इम सुग्गन रक्खिहैं, गिनत समर्थ न न्याय ॥ २० ॥
यह उदंत[3] अवरोध[4] गत, सुनि पातुरि भय पग्गि ॥
एकादसि[5] वासर जरी, एकादस ११ लहि अग्गि ॥ २१ ॥
रानिनहू यह भय सुनत, इक गृह सोर बिछाय ॥
सबन विचारी उडनकी, करन प्रान बिनु[6] काय ॥ २२ ॥
तब आतुर नाजर जनन, अक्खी बाहिर आय ॥
जो न बनैं सँत्वर जतन, रानी जन उडि जाय ॥ २३ ॥
आये हुलकर संग यँहँ, माधवकेहु वकील ॥
वनिक कन्ह कोविर्द[8] बहुरि, कूरम प्रेम कुसील[9] ॥ २४ ॥
तिन यह सुनि हुंदीस प्रति, अक्ख्यो अनुचित कर्म ॥
भूप सुनत अति कोप भरि, धरयो लरन भट धर्म ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

[10]असनायित हरि अंग मनहुँ बिच्छिय[11] अल[12] मारिय ॥
[13]सगर सापन असह अंखि जनु कपिल[14] उघारिय ॥

स्त्री का पुत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ *वेश्या रूप ही है १ धन जिसके २ घर (महलों) के बाग में ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ३वृत्तान्त ४जनाने में गया ५ एकादशी के दिन ॥ २१ ॥ ६ शरीर को विना प्राण करने के लिये ॥ २२ ॥७शीघ्र उपाय नहीं होवेगा तो ॥ २३ ॥ ८ चतुर ९ खोटे स्वभाववाला ॥ २४ ॥ २५ ॥ मानों १० भूखे सिंह के शरीर में ११ वीछू ने १२डंक मारा किंवा १३ सगर के पुत्रों को श्राप देने को १४ कपिलदेव ने नेत्र खोले, मानों कालिका ने शुंभ असुर के ऊपर

काली मनहुँ कराल सुंभ उप्पर त्रिसूल लिय ॥
दलन जंभ दंभोलि[1] पकरि पलट्यो कि सचीप्रिय[2] ॥
श्रीवत्सधर[3] कि सिसुपालके अंतिम आगस[4] उज्झलिय ॥
इम भूप सुनत खंडुव अनय करखि[5] मुच्छ बुल्लिय बलिय२६
सुनहु वत्त मल्लार सल्ल मिच्छन[6] उर अप्पन ॥
पठये तुम पुणपेस[7] धर्म हिंदुन दृढ थप्पन ॥
अनय अज्ज[8] इक सुनिय तनय भवदीय[9] कहत यह ॥
नृप जैपुर पति नारि गेह डारहिं करि अग्गह[10] ॥
सब ठाम लज्ज एकहि समुझि अब खंडुव वरजन उचित॥
उनमाँहिं हमहु नहिंतो अबहि इहुन हिय तुमतैं न हित ॥२७॥

॥ दोहा ॥

हैं हमरी बेटी बहिनि, उनके आलय[11] माँहिं ॥
त्योंही समझहु चतुर तुम, उनकी हम घर[12] आँहिं ॥ २८ ॥
अज्ज बिपत्ति जु एक बिच, सो दूजे बिच सोहि ॥
मनुजनको[13] तब जब मरन, तो बर[14] अवसर कोहि ॥ २९ ॥
हम सिर तुम आसान किय, इन पर डारि चपेट ॥
जो समुझहु कृतघन हमहिं, तो बुंदिय वह भेट ॥ ३० ॥
यह अनीति जो नीति करि, मन्नैं हमहु प्रमत्त ॥

भयंकर त्रिशूल लिया, किंवा जंभासुर को मारने के लिये १ वज्र पकड़ कर २ इन्द्र पलटा, किंवा ३ श्रीकृष्ण शिशुपाल के अंतिम ४ अपराध पर चढे "श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को वरदान दिया था" कि शिशुपाल हमारे सौ अपराध करेगा तबतक हम उसको नहीं मारेंगे सो युधिष्ठिर के यज्ञ में एक सौ एक अपराध करने पर उसको मारा था इस प्रकार बुंदी का राजा (उम्मेदसिंह) खंडू की अनीति को सुनकर मूंछ ५ खेंचकर वह बलवान् बोला ॥ २६ ॥ ६ यवनों के उर में साल हैं ७ पूना के पति ने ८ आज एक अनीति सुनी है ९ आप का १० आग्रह ॥ २७ ॥ ११ घर में. हमारे घर में १२ हैं ॥ २८ ॥ १३ मनुष्यों को. अवसर का मरना ही १४ श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अखिल दिखावैं अंगुलिन, बिक्ख बिक्ख कहि बत्त ॥ ३१ ॥
धरम चलावत नयधरैन, तुम सहाय भुव लीन ॥
अधरम करि लैबो उचित, पाक दमनँ पदवी न ॥ ३२ ॥
सोदरतैंहु सखा अधिक, सो कूरम तुम सूर ॥
यातैं खंडुव मात वे, तिनकौं तक्कत कूर ॥ ३३ ॥
नृपति अंखि सची निरखि, जानी यह मरिजाय ॥
हित करि हुलकर हड्डकौं, लिन्नौं हृदय लगाय ॥ ३४ ॥
काल देस आलोच करि, चित्त धरम दृढ चाहि ॥
तरज्यो अप्पन पुत्रकौं, संभर नृपहि सिराहि ॥ ३५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कूर्म्मराजमरणाज्ञानाऽनन्तरहड्डेन्द्रपूर्वकमहाराष्ट्राजामिकजयपुरदत्तगादत्तस्वोपहारहुलकरकूर्म्मराजदाहनतत्पूर्वाऽनाचारकथनैकवारस्त्रीतत्सहगमनमल्लारिकूर्म्माऽन्तःपुरलुट्टनमननश्रुततदुदन्तैकादश ११ भुजिष्याज्वलननिवसनसर्वराज्ञीजनवन्हिविशनविचारणाज्ञाततद्वृत्तान्तहड्डेन्द्ररोषाऽरुणीभवनमल्लारशिक्षादानवाक्प्रतोदप्र

१नकटा नकटा कहकर ॥३१॥ धर्मको चलाने और२ नीतिको धारण करने को बुंदी की भूमि पीछी ली है ३ बुढापा ४ बिगाड़ने की पदवी लेना उचित नहीं है।३२। ५ सगे भाई से भी मित्र अधिक होता है सो ईश्वरीसिंह और तुम पाघ ,बदल कर सखा हुए हो ६ इस कारण ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ७ विचार कर ८ धर्मकाधा ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कछवाहों के राजा के मरने का ज्ञान हुए पीछे हड्डेन्द्र आदि का मरहठों के पहरायत रखना १ हुलकर का सामग्री देने से कूर्मराज का दाह होना और उसके पहिले के दुराचारों का कहना २ उसके साथ एक वेश्या का सती होना३ मल्लार के पुत्र का कछवाहे के जनाने को लूटने का विचार करने का वृत्तान्त सुनकर ग्यारह पासवान स्त्रियों का अग्नि में प्रवेश करना और सब राणियों का अग्नि में प्रवेश करने का विचार करना ४ यह वृत्तान्त जानकर हड्डेन्द्र का क्रोध में लाल होना और मल्लार को शिक्षा देने रूपी वचनों के चाबुक से समझाये हुए हुलकर का हड्डेन्द्र को हृदय लगाना ५ अपने पुत्र खंडू को

दंडाधितहुलकरहड्डेन्द्रहृदयाऽऽश्लेषणास्वपुत्रखरडूतर्जनमष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥ आदितः ॥३१९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि अक्खिय मल्लार प्रबिसि जैपुर बुंदियपति ॥
कूरम सचिवन कहहु मोद रक्खहु लासहु मति ॥
प्रकट जाय प्रच्छन्न कुम्म नृप तियन कहावहु ॥
धन्य सती तुम धरम सोहु हम तियन सिखावहु ॥
कछु बोधहीन खंडुव कहिय आगसँ बखसहु मोहि यह ॥
निजनाथ मित्र मम सिर निडर सासन करहु सखीन सह॥१॥

॥ दोहा ॥

सुनि इम हड्ड नरेस तब, बिस्वासे सब जाय ॥
अक्खी डरहु न नैक अब, हम तुम संग सहाय ॥ २ ॥
तबहि पाय बिस्वास तिन, प्रतिउत्तर दिय एह ॥
उपकारहि अपकार पर, नृप तुम किन्न सनेह ॥ ३ ॥
स्वापतेय अब दंडको, मंगहिं यह मल्लार ॥
कछुक घटावहु जतन करि, सोपै संभरवार ॥ ४ ॥
कोटि पंच५०००००००हुल्लकर कहे, लैन दम्म हठ लाय ॥
बुल्ल्यो तँहँ नृप करि बिनय, जुलम सह्यो किम जाय॥५॥
बहुत बेर दक्खिन दलनँ, कूरम दंडित कीन ॥
लखि श्रद्धा बसु लीजिये, इन्ह गिनि निबल अधीन ॥ ६ ॥

धमकाने का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३८॥ और आदि से तीन सौ उन्नीस ३१९ मयूख हुए ॥

१ डरो मत २ जनानी ड्योढी पर ३ विना विचार से ४ अपराध ५ मैं तुम्हारे पति का मित्र हूं सो निर्भय होकर मेरे मस्तक पर आज्ञा करो ॥ १ ॥ २॥ ३ ॥ ६ धन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ सेना ने ८ धन ॥ ६ ॥

कारिज[1] पर खरचत कला[2], मूलहिं रक्खि समग्ग[3] ॥
अरथ[4] पटुनकी रीति यह, अक्खी ह्वन अग्ग ॥
कला बढत पुनि मूलकरि, मूल मिटैं सु मिटाय॥
जैसें रंजका[5] मूल जुत, लयो न पुनि लहराय[6] ॥ ८ ॥
जातैं पुनि बहु उप्पजहिं, ऐसो रक्खि उपाय ॥
अक्खहु हम श्रद्धा उचित, हठ तजि हुलकर राय ॥ ९ ॥
हम मन्नहिं आसान यह, देखहु सक्ति उदार ॥
कुल्ल्या[7] जल होय न कबहु, पूरन पारावार॥ १० ॥
तब निहारि भूपति बिनय, काल१ देस१अरु काज१ ॥
दम्म कोटि इक१००००००० दंडके, रक्खे हुलकर राज ॥११॥
तीन३ अंस श्रीमंतके, चोथो४ निज करि चित्त ॥
ऐसे क्रम आमैर सन, बँटन मंग्यो बित्त ॥ १२ ॥
कतिक दम्म[9] मनि गन कतिक, भूखन कतिक नवीन ॥
करि किम्मति गज हय कतिक, दंड माँहिं तब दीन ॥१३॥
वारी संभुव१ खान२ बेलि[10], पीलु[11]पाल पकराय ॥
दम्म घटे तिनमैं दये, हरगोबिंद कहाय ॥ १४ ॥
कीलितैं[12] तब दोऊन२ करि; लै लक्खन हठ लग्गि॥
कोटि अंक१००००००० पूरन कियउ, प्रकट लोभ बस पग्गि
इत माधव कछु अध्वभैंव[13], खेद उदैपुर टारि ॥
पत्तो पत्तन रामपुर, पाय परग्गन च्यारि४॥ १६ ॥
निज पतनी रट्ठोरि लिय, दोहँद[14] लच्छन धारि ॥

१कार्य पर२व्याज(सूद)खरच करते हैं३समग्र४धन में चतुर लोकों की ॥७॥ मूल रहने से ही व्याज बढता है और मूल के मिटने से व्याज (सूद) उसके साथ ही इस तरह मिटजाता है जैसे ५ रजके (घास विशेष) को मूल सहित ले लेने से फिर ६ हरा नहीं होता ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ नहर के पानी से ८ समुद्र नहीं भरता॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ कितनेक तो रुपये ॥ १३ ॥ १० पुनि ११ महावत को ॥ १४ ॥ १२ कैद करके ॥ १५ ॥ १३ मार्ग से पैदा हुआ ॥ १६ ॥ १४ गर्भ

कूरम उच्छव[1] तास किय, अष्टम८ मास उतारि ॥ १७ ॥
यातैं हुल्लकर संग इत, आयो नहिँ कछवाह ॥
कन्ह१ रु प्रेम१ वकील दुव२, लखनैं[2] पठाये लाह ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

ईश्वरिसिंह निपात सुनत हुल्लकर दैल[3] मुक्कलि ॥
बुल्लिय माधव बेग बंचि पत्र सु आयो चलि ॥
संगानेर समीप रह्यो कति दिन मुकाम करि ॥
बारह१२ दिवस बिताय गयो जयनेर गर्ब भरि ॥
सुनि आत कटक जयपुर सहिन बुंदियपति१हुल्लकर२बलिय
जद्दव नरेस३ खंडुव४ सजव हत्थिन चढि सम्मुह हलिय॥१९॥

॥ दोहा ॥

जद्दव नृप गोपाल जँहँ, नगर करोली नाह ॥
मंत्र करन मल्लार सन, आयो मिलन उछाह ॥ २० ॥
वह१ अरु खंडुव इक्क१ इभैं[4], बैठि चले तिहिँ बेर ॥
प्रथम कहे ते२ रहि पृथक, फैलत फोजन फेर ॥ २१ ॥
मिले परस्पर मन मुदित, सबै बिहित[5] सतकार ॥
इक्क१ अनेकँप[6] आरुहे, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ २२ ॥
कुम्भ कह्यो न मुहूर्त्त अब, प्रबिसैं नहिँ पुर पोरि ॥
अब प्रबिसहु हुल्लकर कहिय, सँध्या आत बहोरि॥ २३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इम कहि नगर प्रवेस करायो, निज महलन माधव नृप आयो ॥
पहुँचावन मल्लार-आदि सब, गये जलेबचोक लगि ए तब ॥२४॥
चढे गजन डेरन पुनि आये, बलि उत्तरि कटिबंध[8] बिहाये ॥

१ उत्सव ॥ १७ ॥ २ लाभ देखने को ॥ १८ ॥ ३ पत्र भेज कर ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ एक हाथी पर ॥ २१ ॥ ५ उचित ६ एक हाथी पर माधवसिंह और मल्लार चढे ॥ २२ ॥ ७ फिर जया नामक सिंधिया आता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ कमरबंधे खोले

हुलकर निज बुल्ले जोमिक[1] जन, माधव अमल कियो जयपत्तन[2]२५

दोहा-संध्या पुनि राणोजि सुत, सजि दुद्दर बहु सैन ॥
जयपत्तन आयो जया, अति जव छंकत ऐन[3] ॥ २६ ॥

॥ गीतिका ॥

सुनिकैं जया जयनैर आवत हड्ड १ कूरम २ हू चढे ॥
दलमैं नकीवन दोरि आरव[5] जान संम्मुहके[4] पढे ॥
सह भूप जद्दव १ पुत्र खंडुव २ लै मलार १ हु संक्रम्यौं[6] ॥
इम च्यारि ४ चक्कन[7] चालतैं भय च्यारि ४ चक्कनमैं भ्रम्यौं[8]२७
मुदपाय मुत्तियडुंगरी तक जाय सम्मुह ए मिले ॥
सब पुच्छि मंगल माँहि माँहिं बहोरि पत्तन त्यौं पिले ॥
अरु चंदपोरि मुकाम अप्पन दै जया तँहँ उत्तर्‌यो ॥
पुनि मंत[9] मित्त[10] मलारतैं दम[11] बित्त बंटनको कर्‌यो ॥ २८ ॥
तबही मलार पचीस लक्ख२५०००००लये ति[12] दोउ२न बंटये
श्रियमंतके पुनि पंचसप्तति लक्ख७५०००००दक्खिन प्रेरये ॥
अरु जैपुरेस दुहून २ सौं महिमानि जिम्मनकी कही ॥
सुनिये महीपति राम जो इक१ हाँ चही इक१ नाँ चही ॥२९॥

दोहा-हुलकर १ बत्त सु अद्दरिय, पै संध्या १ किय नाँहिं ॥
छुल्ल्यो जैपुर देत बिख, मिट्ठी[13] कहि खिनमाँहिं ॥ ३० ॥
देखि रीत बुंदीसकी, आरंभत तुम एह ॥
पै हड्ड अकपट प्रथित[14], गाढ कुहक[15] यह गेह ॥ ३१ ॥

हुलकर ने जयपुर के खजानों पर अपने १ पहरायत रक्खे थे सो बुलालिये २जयपुर में ॥२५॥ ३मार्ग को ॥ २६ ॥ ५ सम्मुख जाने के ४ शब्द पढे ६ चला ७ चतुरंगिणी सेना के चलने से ८ चारों दिशाओं में भय फैला ॥ २७ ॥ ९ मंत्र. अपने १० मित्र मलार से जया ने ११ दंड के धन को बांट लेने के लिये कहा ॥ २८ ॥ १२ते (वे) ॥ २९ ॥ १३ मीठी वार्ते कहकर ॥ ३० ॥ १४ कपट रहित प्रसिद्ध हैं १५ जयपुर का घर बडा छली है ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदर[1] कहँ जयसिंह अग्ग हालाहल अप्पिय ॥
मारे पुत्र[2] रु मात[3] तदपि पप्पिय[4] नन तप्पियं[4] ॥
मानें हनिय मारूफ[5] जलधि[6] बिस्वास निमँज्जत ॥
ढुंढाहरके ढोल बिदित याही गति बज्जत ॥
तातैं न हमहि निश्चय तुलत स्वागत हम मन्न्यौं सकल ॥
कछु बित्त तुरग पुनि भेट करि कुंच करावहु छोरि छल ॥३२॥
तदनंतर मरहट्ट ढंग[8] अंतर[9] दूजे दिन ॥
क्रय[10] बिक्रय कछु करन बहुत प्रविसे संका बिन ॥
तिनकी बंधन तोरि इक्क १ बड़वाँ[11] पुर आई ॥
सो सेखाउत सठन छन्न ग्रह बंधि छुपाई ॥
लखि ताहि खुल्लि लावन लगे उन तब झारिय खग्ग झँर[12]॥
यह इक्क मचिग पत्तन अखिल अरु द्वारन लग्गे अँरर[13] ॥३३॥
सुनत सोर गहि सजव लोक पत्थर असि लट्ठन ॥
पुरके मिलि मिलि प्रचुर लगे मारन मरहट्ठन ॥
है जन च्यारि हजारि ४००० च्यारि तिनके बिभाग करि ॥
अंस तीन ३ असुहीन[14] भये लवं[15] इक १ घाय भरि ॥
बाहिर गये ति पुरजन बहुत भजत हनैं दक्खिन भट्टन ॥
बुंदीस कटक आय रु बचे करि कितेक अतिजंव[16] अटन ॥३४॥

॥ दोहा ॥

आनत बाँमी[17] अप्पनी, दक्खिन लोक अदोस ॥

१सगे भाई विजयसिंह को २जहर दिया था ३तो भी पापी ४तृप्त नहीं हुआ ५मानसिंह ने ६ विश्वास रूपी समुद्र में ७डूबते हुए को ॥३२॥ ८जिस पीछे ९नगर में १०लेन देन को ११घोड़ी बंधन तुड़ाकर शहर में चली आई १२ शीघ्र तरवार चलाई १३दरवाजों के किवाड़ लगगये ॥ ३३ ॥१४तीन पांती के मारेगये १५एक पांती के घायल हुए १६ शीघ्रता से भगकर ॥ ३४ ॥ १७ अपनी घोड़ी लाने में

अपराधी जैपुर जनन, रच्यो *अलीकहि रोस ॥ ३५ ॥
मनुज समर्थनके मरत, तक्क्यो माधव त्रास ॥
भावी निज चिंतत भयो, संतत[1] हारि निसास ॥ ३६ ॥
हुलकरराज समीपहो, कुम्म[2] सचिव इहिं काल ॥
प्रान बचन पायन पर्यो, बनिक सु कन्ह बिहाल ॥ ३७ ॥
देखि ताहि हुलकर सदय[3], बुंदिय सचिव बुलाय ॥
अक्खी संभर पास इहिं, धरहु जिवावन जाय ॥ ३८ ॥
दक्खिन जन नहिं[4]तो दुमन, अब आयसं इच्छै न ॥
ढुंढत जन ढुंढारके, हनत फिरत रुकिहै न ॥ ३९ ॥
मयाराम१ कायत्थ तब, दयाराम२ द्विजराज ॥
पत्ते लै बुंदीस प्रति, कन्ह जिवावन काज ॥ ४० ॥
संध्या कुप्पित[5] एह सुनि, बिरचन[6] जैपुर बाध ॥
बहु माधव थप्पिय बिनय, अप्पिय तब अपराध ॥ ४१ ॥
प्रचुर[7] बित्त लिय दंड पुनि, अरु पठई कहि एह ॥
यहँ[8] भेजहु घायल अखिल, दाह करहु मृत[9] देह ॥ ४२ ॥
जन हजार१००० घायल जबहि, दल पठाय सब दिन्न ॥
तिन सहँस३०००कुणपन त्वरित, क्रम्म उचित बिधि किन्न ४३ ॥
गढके गोलंदाज इक१, दिन्नी तोप दगाय ॥
निज रुचिसों कि निदेससों, जानी सो नहिं जाय ॥ ४४ ॥
फुरत[10] वन्हि पर[11] फोजमैं, लग्गयो गोलक लोल[12] ॥
बहुरि तास बिग्रह बढ्यो, कूरम चुक्यो कोल ॥ ४५ ॥
कुंच तबहि दुव२ सेन करि, संध्या१ हुलकर१ सत्थ ॥

---

* झूठा क्रोध रचा ॥३५॥ १निरंतर ॥३६॥ २माधवसिंह का कामदार॥३७॥ ३ दया सहित ॥ ३८ ॥ ४ हुकम नहीं चाहते ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ सिंधिया कोपित हुआ ६नाश करने को ॥ ४१ ॥ ७फिर दंड का बहुत धन लिया ॥ ४२ ॥ ८सेना में भेज दिये ९ मुरदों का ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० अग्नि लगते ही ११ पराई (मरहठों की) सेना में १२ चपल गोला लगा ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

अंकरोर जाय रु भये, संगर रचन समत्थ ॥ ४६ ॥
धुज्जि तबहि जयनैर धंव, संध्या१ हुलकर१ पास ॥
गोलंदाजहिँ लै गयो, आतुर नम्र उदास ॥ ४७ ॥
बुल्ल्यो इहिँ किय हुक्म बिनु, है मम दोस यहै न ॥
दोऊ२ तुम सागस दमन, नमनैं किये हित नैन ॥ ४८ ॥
बिनय पिक्खि दोउश्न बहुरि, दुव लक्ख२०००००हि लिय दम्म ॥
आगसैं किन्नों माफ वह, कारिय कुंच जय कम्मैं ॥ ४९ ॥
आयो तब करि सिक्ख इत, निजपुर संभर नाह ॥
टौंका जैपुर बुक्कलिय, रक्खि सनातन राह ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीशकूर्म्मशुद्धान्तत्रासध्वंसनकोटि १००००००० द्रम्म कूर्म्मदण्डदापनरामपुरेशमाधवसिंहपत्नीरट्ठोडिदोहदलक्षणसीमन्तोत्सवकरणप्राप्तमल्लारपत्रतज्जयपुराऽऽगमनराज्यप्रापणाऽनन्तरसन्ध्याजयाऽऽगमनकूर्म्मगृहभोजनानङ्गीकरणवड़वानिमित्तबहुलमहाराष्ट्रजनमरणातत्क्रुद्धहुलकर १ सन्ध्या२ पुनर्दण्डनयनकूर्म्मनिजनालीयन्त्रप्रेरकतन्निवेदनपुनर्नीतलक्षद्वय २००००० द्रम्मदक्षिणसैन्य

१जयपुर का पति ॥४७॥ तुम दोनों २ अपराधी को दंड देनेवाले हो ३ हित के नेत्रों से मैंने नमस्कार किया है ॥ ४८ ॥ ४ अपराध ५ जय करने को ॥४९॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में बुन्दी के पति का कछवाहे के जनाने के त्रास को मिटाना और कछवाहे को दंड के कोड़ रुपये देना १ रामपुरा के पति माधवसिंह की स्त्री राठोड़ी का गर्भ के आठ मास का उत्सव करना २ मल्लार का पत्र पाकर उस (माधवसिंह) का जयपुर आना और राज्य पाये पीछे जया नामक सिंधिया का आना ३ कछवाहे के घर में भोजन करने का अस्वीकार करना और घोड़ी के कारण बहुत मरहठों का मरना, उस क्रोध से हुलकर और सिंधिया का फिर दंड लेना ४ कछवाहे का अपनी तोप को चलानेवाले को नजर करना, फिर दो लाख रुपये लेकर दक्षिण की सेना का गमन और रावराजा का बुन्दी आना [illegible]की सामग्री जयपुर भेजने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥३९॥

प्रस्थानरावराडूबुन्दीऽऽगमनतिलकोपहारजयपुरप्रेषणामेकोनचत्वारिंशो ३९ मयूखः ॥ ३९ ॥ आदितः ॥३२०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत मनसूरअली अभिधानक, अहमदसाह बजीर अचानक ॥
पठयो कटक रचन घमसानन, हनन फुरक्काबाद पठानन ॥ १ ॥
नवलराय कायथ सेनानी, तिँहिँ इत जाय रारि तब तानी ॥
बंगस खानमुहम्मद बीबी, गज्जैं उतहु धरैं न गरीबी ॥ २ ॥
अवलोपन नहिँ नैंक उघारैं, राज्य फुरक्काबाद सम्हारैं ॥
नवलराय तिँहिँ सन किन्नौं रन, नारि सबल बस तदपि भई नन।३।
कायथ तब करि सपथ संधि किय, दै बिसास दल तास लुट्टि लिय
बीबी तिँहिँ दुव२मास हारि बलि, किन्नों आनि बजीर हिंतु कलि४
नवलराय कायत्थ हन्यौं तब,सहँस पचास५००००कटक लुट्ट्यो सब
लखि यह भीरु बजीर पँलायो, अति आतुर दिल्लिय पर आयो ॥५॥
कछु रुप्पय तिँहिँ दैन कहाये, बलि सहाय मरहट्ट बुलाये ॥
राजा जुगलकिसोर१ भट्ट जन, बहुरि दिवान रामनारायन१ ॥६॥
ए दुवँ२ लैन दक्खिनिन आये, सन्ध्या१ हुलकर१ संग सिधाये ॥
भूँति अवेरि जानि बीबी भय, प्रविसी जाय कमाऊ पब्बय ॥ ७ ॥
लहि बजीर सैन खरच एहु तब, बीबी बिंटन उतहि गये सब ॥
रामसिंह इत धँन्वधरापति, इकदिन कहिय लैन सिर आपति ।८।
भट रट्ठोर सभा जब आवत, तिनके लोचन मोहि डरावत ॥
लगत बुरे मोकौं सठ सारे, कैसी बिधि अब जाय निकारे ॥९॥

और आदि से तीन सौ बीस ३२० मयूख हुए ॥
१नामवाला२युद्ध करने को सेना भेजी ॥१॥२॥ ३अोपन ४तोभी ॥३॥ ५ सौगन करने ६ बजीर से युद्ध किया ॥ ४ ॥ ७ भागा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ऐश्वर्य अवेर कर कमाऊं का पर्वत ॥ ७ ॥ ६ बजीर से १० मारवाड़ का पति ॥ ८ ॥ ६ ॥

ढढ्ढी अमिय कह्यो बनि संक्खी[1], तुमरे जनकै[2] यहै इन्ह अक्खी ॥
चैंपाउत कुसलेस कह्यो तब, यह सुत अधम भयो तोहू अब १०
जब डेरन परवाय हमारे, दुदुकारहिँ तब कढहिँ निकारे ॥
सुहि इनको करि बेग बिडारहु[3], ठहै विलंब तो इन करि हारहु ।११।
अनुर्ग[4] पठाय अनयँ[5] सुहि धारयो, डेरन पारि कुसल्ल[6] दुदुकारयो ॥
अँर[7] चढि तब नागोर गयो यह, मन्न्यौं सुनि बखतेस महामह[8] ॥१२॥
सम्मुह पठयो बिजयसिंह सुत, जिहिँ लिय कुसल बधाय बिनय जुत
कथन यहै बखतेस कहायो, आये तुम सु जोधपुर आयो ॥१३॥
बढ्यो तबहि दोरहू दिस विग्रह, चाहैं करन परस्पर निग्रह[9] ॥
रामसिंह सन सबहि रिसाये, इतर भटहु निज निज घर आये ॥१४॥
इक्१ बदल्यो न सेर१ दूदाउत, रह्यो अनादरहू सहि राउत ॥
सेना बहुरि उभय२ दिस सज्जिय, बंब पंणव[10] आनक रन बज्जिय१५
चलत बेर मृत[11] सेर तुरंगम, किय सब अरज दैन हय नृप सँम[12] ॥
बुल्ल्यो मरुप[13] उचित तुमरे हय, हेरहु रँजक[14] कुलालन आलय ।१६।
भीखम[15] धुर धोरी अँचत भर, सेर सुपैं सहि भो अग्रेसँर[16] ॥
जान्यौं नृप मतिमंद न जानैं, पै हम स्वामिधर्म पहिचानैं ॥१७॥
चले उभय पुनि कटक खेत चढि, पटके बाजि भटन हरि हरि पढि
हल्लिय आँलुक[17] भोग हजारा, धुज्जिय पहुमि तुरंगम धारा[18] ॥१८॥

१साक्षी बनाकर२तुम्हारे पिता ने ॥१०॥ ३ निकालो ॥११॥४नौकर को भेजकर ५वही अनीति की६कुशलसिंह को धिक्कार दिया"डिंगलभाषा में धिक्कार देकर अनादर पूर्वक निकालने को दुदुकारना कहते हैं" ७ शीघ्र चढकर बखतसिंह ने ८ बडा उत्सव माना अथवा बडा उत्सव करके इसका मान किया ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ९कैद ॥ १४ ॥१०नगारे, मर्दल और ढोल बजे ॥ १५ ॥११चलते समय सेरसिंह का घोड़ा मरगया तब १२ राजा रामसिंह से घोड़ा देने की अर्ज की इस पर १३ मारवाड़ का राजा बोला कि तुमारे उचित घोड़ा तो १४ धोबी और कुम्हारों के घर में हेरो ॥ १६ ॥ १५ भीष्म की धुर को धारण करनेवाला (खैंचनेवाला) धोरी, वीर शेरसिंह उसको भी सहकर १६ आगे हुआ ॥ १७ ॥ १७ शेषनाग के फणों का हजारा हिला अर्थात् हजार फण हिले १८ घोड़ों की

दसन लगे तुट्टन दिगदंतिन, तुमुल राग सिंधुव हुव तंतिन ॥
कंकट फटत धाढ करवालन, मुंडन खोजि रचत हर मालन ॥१९॥
रुंड नचत कति रविहिं रिझावत, आयुध तजि बत्थन कति आवत
कतिकन फट्टत हृदय कलेजे, भिदत मत्थ कढ्ढत कहुँ भेजे॥ २० ॥
अंखि तिरत सोनितैं कहुँ अच्छी, मनहु श्रोत्त बिच रोहितैं मच्छी।
सायक कहुँ लगि नाभि सुहावत, पिंडुल लट्ठि कैल्हुव छबि पा-
वत ॥ २१ ॥
एडी कटि कटि कहुँक उछट्टत, फाँक नागरंगकँ जनु फट्टत ॥
ओठ कहुँक कटि कटि भुव आवैं, बिंब मनहु असि घन बरसावैं२२
कहुँक दंत गिरि रोचि प्रकासैं, भूमि मनहु हीरैंन गन भासैं ॥
नयन गडी कहुँ मुच्छ निहारैं, मीन बदंनै बनसी छबि मारैं ॥२३॥
इत कहुँ रीढ़क भिन्न उलट्टत, कैंदली छदन दंड जनु कट्टत ॥
कहुँक झरत करतैं करभनैं कुल, महिला जनन ऊरु जनु मंजुल२४

दौड़ से भूमि धूजी ॥ १८ ॥ दिग्गजों के दांत तूटने लगे, तांतों में भयंकर सिंधवी रागिणी हुई २ तरवारों की धाराओं से १ कवच फटे, महादेव मुंडों को खोज कर माला बनाने लगे ॥ १९ ॥ कई रुंड नचकर सूर्य को प्रसन्न कर ते हैं और कई वीर शस्त्र त्याग कर बाहुयुद्ध करते हैं और कितनों ही के हृदय और कलेजे फटते हैं एवं कइयों ही के मस्तक फूट कर भेजे निकलते हैं ॥ २० ॥ कितने ही सुंदर नेत्र ३ रुधिर में तिरते हैं सो मानों जल के प्रवाह में ४लाल मच्छी तिरती है. कहीं पर नाभि में तीर लगकर शोभा देता है सो मानों ६कोल्हू (घाणी) में ५ मोटी लाठ शोभा देती है॥ २१ ॥ कहीं पर एडियां कट कर उछलती हैं सो मानों ७नारंगी की फांकें फटती हैं, कहीं पर होठ कट२ कर भूमि पर गिरते हैं सो मानों ९ तरवार रूपी मेघ ८मूंगे बरसाता है ॥२२॥ कहीं पर दन्त गिरकर १०प्रकाश करते हैं सो मानों भूमि पर ११हीरे दीखते हैं नेत्रों में गडीहुई मूछें दीखती हैं सो मानों मच्छी के१२मुख में कांटा शोभा देता है ॥ २३ ॥ कहीं पर कई वीर १३ पीठ कट कर उलटते हैं सो मानों १४ केल के दंड पर से पत्र कटते हैं, कहीं पर हाथों से१५गुदे कटते हैं "मणिबंधा-दाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः" इत्यमरः॥ सो मानों १६स्त्रियों की सुंदर जंघायें

लोला कहुँक पुरीतति[2] लोहित, सलिल अरुन अलगर्द[3] कि सोहित
अवनि लसैं धमनीगन[4] ऐसे, कुवलय[5] नाल घनात्यय[6] कैसे ॥२५॥
आंखि कातिक भुव लसत गिरी इम, रुचिर कोकनद[7]की पखुरी जिम।
बिच तारा[8]चल असित[9] बिराजत, लखत मरंद[10] मत्त अलि लाजत२६
भुव कहुँ क्लोम[11]१ कलेजा२ भासत, पाउस[12] जनु छत्राक प्रकासत ॥
लोटत सिर कहुँ छत्र बिलाये, ढबतन[13] जनु नारेल ढुराये ॥२७॥
उरझी कहुँक सिखा कटि ऐसैं, जालअसित[14] रेसम भव जैसैं ॥
भिरि कहुँ टोप बजत असि भारी, झल्लरि हरिमंदिर जनु झारी॥२८॥
संचर छुरिका[15] धसत सुहानी, पिचकारिन छुट्टत जनु पानी ॥
लोहित फलक[16] तिरत कहुँ डोलत, कमठ विसेस कि सलिल कि-
लोलत ॥२९॥
पार निकसि पट्टिस[17] छबि पावत, दट्ठ मनहुँ जम लंपन[18] दिखावत॥

हैं ॥ २४ ॥ कहीं पर रुधिर में १ चपलता युक्त २ आंतें पड़ी हैं सो मानों लाल पानी में ३ जल के सांप शोभा देते हैं अथवा कटी हुई जीभें और आंतें ही जल सर्प हैं भूमि पर ४ नाड़ियां ऐसी शोभा देती हैं मानों ६ शरद ऋतु में ५ श्वेत कमल (गडूल, नीलोफर) की नालियां हैं ॥ २५ ॥ कटेहुए कई नेत्र भूमि पर ऐसे शोभित होते हैं मानों सुंदर७कमलकी पंखुडियें हैं उन कटे हुए नेत्रों में ६ श्याम रंग की चपल ८ नेत्रों की पुतलियां विशेष शोभती हैं जिनको देखकर १० पुष्परस से मस्त भँवरे लज्जित होते हैं ॥ २६ ॥ पृथ्वी पर कहीं ११तिल्ली और कलेजे पड़े हुए दीखते हैं सो मानों १२ छत्रोटे(वर्षा ऋतु में उगनेवाली ढालें, छत्राक) दीखते हैं. कहीं पर छत्रों का नाश होकर मस्तक लुढकते हैं सो मानों लुढकाये हुए नारियल १३ नहीं ठहरते हैं ॥ २७ ॥ कहीं पर शिखाएं (चोटियां) कट कर ऐसी उलझी हैं मानों १४ काले रेशम की बनी हुई जाली है. कहीं पर टोप से भिड़ कर तलवार ऐसी बजती है जैसे विष्णु के मंदिर में झालर बजे ॥२८॥१५छुरी चलकर घुस कर ऐसी शोभती है मानों पिचकारी से पानी छूटता है, कहीं पर लोहू में तैरती हुई १६ ढालें फिरती हैं मानों जल में कछुए आदि क्रीड़ा करते हैं ॥ २९ ॥१७कटारी पार निकल कर ऐसी शोभा देती है मानों यमराज१८अपने मुख में दाढ़ दिखाता है कहीं

सरपूरन कहुँ गिरत सराश्रय, उडत कि पिच्छैं छोरि सिखि आश्र-
य ॥ ३० ॥

खग्ग कहुँक हड्डन खटकावैं, बढई तरु कि कुठार बजावैं ॥
दंसन अटकत तेग दुधारी, कट्टैं बन जनु कूर कवारी ॥ ३१ ॥
कहुँक देत सिरसौं सिर टक्कर, दुवर उद्धत जनु भिरत पृथूदर ॥
कहुँ गुटिका गन धसत कपालन, जनु सिरघा मविसत मधुजा-
लन ॥ ३२ ॥

दमकत इली तनुत्र बिदारैं, मृगर्पति बाल कला छबि मारैं ॥
तोमर धसत कुंजरन तिक्खे, सैलन बेध वेणु जनु सिक्खे ॥३३॥
जुट्टे इम नागोर जोधपुर, धोरी कुसल सेरैं अंचत धुर ॥
खोजन चंपाउतहिँ खिजायो, अरिदल मध्य सेर धसि आयो ॥३४॥
इक १ जंबूर लग्यो याके उर, फारि कढ्यो सु दुसह रीढक १
फुर २ ॥
इहिँ छत मोह लहत दूदाउत, आयउ कढि उततैं चंपाउत ॥३५॥

तीरों से भरेहुए १भाथे ऐसे गिरते हैं मानों मयूर अपने आश्रय से २पूंछें छोड कर उडते हैं ॥ ३० ॥ कहीं हड्डियों पर तलवारें खटकती हैं सो मानों खाती वृक्ष पर कुठार बजाता है, ३ कवचों में दुधारे खड्ग अटकते हैं सो मानों घर छाने के काष्ठों के बेचनेवाला मूर्ख वन काटता है ॥ ३१ ॥ कहीं पर मस्तक से मस्तक टक्कर मारते हैं सो मानों दो निरंकुश ४ मींढे भिड़ते हैं कहीं गोलियों के समूह कपालों में धसते हैं सो मानों ५ मधुमक्खियां ६ छत्ते में घुसती हैं ॥ ३२ ॥ कवच फाटकर ७ तरवार चमकती है सो मानों द्वितीया का ८ चन्द्रमा शोभा देता है ९ हाथियों के शरीरों में तीखे भाले घुसते हैं सो मानों १० बांस के वृक्ष पर्वतों को फोड़ना सीखते हैं ॥ ३३ ॥ इस प्रकार नागोर और जोधपुरवाले लड़े जिनमें धुर को खैंचनेवाले धोरी कुशलसिंह और ११ सेरसिंह थे जिनमें शेरसिंह क्रोध करके चांपावत कुशलसिंह को हेरने के लिये शत्रु की सेना में घुस आया ॥३४॥ जिसकी छाती में नहीं सहने योग्य एक जंबूर का गोला लगा सो १२ पीठ और १३ ढाल को फोड़कर निकलगया १४ इस घाव से दूदावत्त शेरसिंह मूर्छा को प्राप्त होगया उस समय उधर से निकलकर चांपावत कुशलसिंह आया ॥३५॥

दाउत १ पाउत २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

*सुज्जमल्ल तब सेर सहोदर, बुल्ल्यो †कुसलहु आत भ्रात वर ॥
सावधान हुव सेर यहै सुनि, पक्करि खग्ग सम्मुह हंक्यो पुनि॥३६॥
दुहुँन२ धीरता मिलत दिखाई, नागफेन मनुहारि बनाई ॥
तदनु सेर बुल्ल्यो रन तंडत, मुच्छ कॅचन उद्धत कर मंडत ॥३७॥
अब इत आवहु कुसल अखारैं, जहर जरैं न तुमहिं वह जारैं ॥
बीज दुसह अग्गैं तुम बाये, अब चक्खहु तिनकैं फल आये॥३८॥
झपटि सेर इम कहि असि झारिय, फारि टोप मस्तक सब फारिय
छोहित कुसल सँगि इत छुट्टिय, फवत सेर छत्तिय लगि फुट्टिय३९
बेर दुहुँन २ तिहिं बेर बिहाये, पुंण्यलोक इच्छित तिन पाये ॥
सुभट मेर दुहुँओर पंचसत५००, घायल परे अट्ठसत८००घुम्मत४०
सेरकहिय अग्गैं नरपति सन, प्रबिस्यो त्रिदिवैं निशहि वहै पन॥
केलि इम बखतसिंह जय किन्नौं, लगि हठ आनि जोधपुर लिन्नौं४१
बैठि तखत जय पटह बजाये, साज बहुरि रनकाज सजाये ॥
हुव यह रन नव नभ धृति १८०९ हायन, पाप रांम किय हारि पलायन ॥ ४२ ॥
जिहिं ढिग इक्क पुरोहित जग्गुव १, हठी द्वितीय २ खीमसर पति१ हुव ॥
मरहट्ठन सन नृपहिं मिलावन, अब किय दुहुँन२ कमाऊँ आवन४३

तब शेरसिंह के छोटे भाई * सूर्यमल्ल ने कहा कि हे श्रेष्ठ भाई † कुशलसिंह आता है यह सुनकर शेरसिंह सावधान हुआ और खड्ग लेकर सन्मुख चला ॥ ३६ ॥ १ अमल की २ जिसपीछे ३ युद्ध में गर्जना करता हुआ ४ मूछों के केशों को हाथ से ऊंचे करता हुआ शेरसिंह बोला ॥३७॥३८॥ यह कहकर ५ शेरसिंह ने दौड़कर तरवार चलाई ६ क्रोधित कुशलसिंह की ७बरछी ॥३९॥ ९ उसी समय ८ दोनों ने शरीर छोड़े १० स्वर्ग ॥ ४० ॥ ११ स्वर्ग में गया १२ युद्ध में ॥ ४१ ॥ १३ विजय के ढोल १४ संवत् में २१ पापी रामसिंह १६ भागा ॥ ४२ ॥ १७ पर्वत का नाम है ॥ ४३ ॥

जया१ मलार२ गये सम्मुह जब, आन्यौं*सिविर रामसिंहहिं अब
संध्याकों तँहँ कुमति सुहाई, मूढ †मरुपसन किय मित्राई ॥४४॥
पग्ग पलटि कहि तब सुख पैहैं, ‡द्रुत जब तुमहि जोधपुर देहैं ॥
इत जगतेस रानके आमय, बढ्यो अतीव असाध्य जराबय ॥४५॥
कुमर प्रताप हुतो कारा तब, इहिं ग्राहक भट च्यारि ४ मिले अब
नाथ१ रान जगतेस सहोदर, झल्ला राघवदेव२ पापपर ॥ ४६ ॥
भारतसिंह३ रान दल स्वामी, देवगढप जसवंत४ हरामी ॥
बुल्लिय चउ४ अब मंत्र बिचारहिं, किय अप्पन तब कैद कुमारहिं
कारामैंहि प्रतापकेहु सुव, राजसिंह अभिधान कुमर हुव ॥
आयो रानकोहि अवसान न, पै संसय अपनैंहू प्रानन ॥ ४८ ॥
सो नृप होय बैर अनुसरिहै, कुलजुत कंदन अप्पनों करिहै ॥
वाँहि छन्न यातैं बिख अप्पहु, थिर यह नाथ भूप करि थप्पहु॥४९॥
बैर बिचारि यहै च्यारिन४ बकि, साहिपुरप५ पंचम५ लिय सम्मलि
सोचि रान जगतेस यहै सुनि, पठयो हुकम बिचारि नीति पुनि५०
जो तुम स्वामिधरम हित जानत, पंच५हि भट मम हुकम प्रमानत
जबैंजुत तो चढि चढि घर जावहु,इहि नहि अंत्थ बिरोध रचावहु५१
कछुन तिन पठयो दल यह कहि, चढि चढि घरन गये तब पंच५हि
तदनु बसु ख धृति १८०८ सक बिक्रम कृत, मास जेठ जगतेस
रान मृत ॥ ५२ ॥

---

* डेरे में † मारवाड़ के पति से ॥ ४४ ॥ ‡ शीघ्र १ रोग २ वृद्धावस्था से ॥ ४५ ॥ ३ कैद में ४ पहिले कुमर प्रतापसिंह को पकड़ा था वे ५ राणा जगत्सिंह का सगा भाई नाथसिंह ६ परम पापी ॥ ४६ ॥ ७ सेनापति ॥ ४७ ॥ ८ कैद में ही ९ सुत १० नाम ११ केवल राणा का ही अन्त नहीं आया है परन्तु अपने प्राणों का भी सन्देह है ॥ ४८ ॥ १२ नाश १३ कुमर प्रतापसिंह को १४ नाथसिंह को ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १५ जल्दी से १६ यहां ॥ ५१ ॥ इनको निकालने को १७ सेना भेजी १८ जिसपीछे ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणेसप्तम७राशावुम्मेदसिंह चरित्रे दिल्लीशसचिवप्रेषितससैन्यसेनानिकायस्थनवलरायफुरक्काबाद पतिबङ्गसयवनमुहुम्मदखानबीबीयुद्धकरणकृतसमकायस्थतद्विभव लुण्टनदत्तमासद्वया ऽन्तरबीबीनवलरायमारणहारितरणविभवयवने न्द्रसचिवमनसूरअलीपलायनदत्तवाहिनीव्ययवसुदिल्लीशहुलकर१सं- ध्या२ऽऽह्वानप्रद्रुतबीबीकमाऊपर्वतप्रविशनदक्षिणसैन्यतद्वेष्टनमरुपति रामसिंहस्वभटचम्पाउत्तकुशलसिंहनिष्कासनतन्नागोरेशबखतसिंह सम्मिलनभ्रातृज१पितृव्यक२महारणभवनसोढस्वामितिरस्कृतिसेर सिंह१कुकृत्यकुपितकुशलसिंह२मरणविजितबखतसिंहयोधपुरप्रभूभ वनपलायितरामसिंहकमाऊकुण्डलनजया१मल्लार२प्रार्थनकृतमैत्रीभा वसंध्यामरुपसहायाऽङ्गीकरणनिष्कासितदुष्टभटमहारुग्णराणाजग त्सिंहमरणं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥ आदितः॥३२१॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के च रित्र में, दिल्ली के वजीर के भेजे हुए सेना सहित सेनापति कायथ नवलराय का फुरक्काबाद की मालिक बंगस यवन मुहम्मदखान बीबी से युद्ध करना और मिलाप करके कायस्थ का उसका वैभव लूटना १ दो मासबीचमें देकर बीबी का नवलराय को मारना, युद्ध का वैभव छोडकर बादशाह के वजीर मनसूरअली का भागना २ सेना के खरच का धन देकर बादशाह का हुलकर और सिन्धिया को बुलाना और बीबी का भागकर कमाऊँ पर्वत में जाना ३ दक्षिण की सेना का उसको घेरना ४ मारवाड़ के पति रामसिंह के उमराव चाँपावत कुशलसिंह को निकालना और उसका नागोर के पति बखतसिंह से मिलना ५ भतीजे और काका के बडा युद्ध होना और स्वामी के तिरस्कार को क्षमा करनेवाले शेरसिंह और कुकृत्य से कोपेहुए कुशलसिंह का मरना६ विजय किये हुए बखतसिंह का जोधपुर का पति होना और भागे हुए रामसिंह का कमाऊँ पर्वत को घेरनेवाले जया और मल्लार से प्रार्थना कर ना ७ सिन्धिया का मित्रता करके मारवाड़ के पति की सहाय स्वीकार करना ८ दुष्ट उमरावों को निकालनेवाले राणा जगतसिंह का मरने का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और आदि से तीन सौ इकीस ३२१ मयूख हुए॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यह सुनि बुंदिय सोक उपज्जिय, जामें[1] च्यारि४नउबत्ति न बज्जिय॥
इत भट सलूमरिप चुंडाउत, रानां करन कुमारहिं[2] राउत ॥ १ ॥
कारा[3] जाय प्रतापहिं कढ्ढिय, बहु भय सुनत ग्राहकन बढ्ढिय ॥
सो अब रान उदैपुर स्वामी, नैय जुत भयो छत्रधरि नामी ॥ २ ॥
जेर कियो परताप जनकैं जब, ताको खान पान सह्‌न तब ॥
अमरचंद पूरबिया इक१ द्विज, निकट वहै रक्‌ख्यो सेवक निज॥३॥
सेवा जिहिं तनमन धन सझी, अंतर किन्न घरी नहिं अझी ॥
अब नृप होय प्रताप बिप्र वह, सचिव मुख्य किय अतुल प्रीति सह४
सिविका१ गज२ ताजीम३ समप्पिय, थिर सु बिप्र ठाकुरकहि थप्पिय
मन्नत बंदि निलय सेवन मति, अमरचंद बसि रान भयो अति ।५।
बलि वे ग्राहकं च्यारि४ बुलाये, लेस खिज्यो नहि हृदय लगाये ॥
इकदिन अंभ्र अंभ्र घुमडे अति, कहिय प्रताप तबहि काकों प्रति६
सुनहु जनकैं सासन अनुसारी, मचक जाँनु जिहिं दिन तुम मारी॥
सो रीढंक संधिग अब सल्लत, घन जब होत तबहि दुख घल्लत।७।
यह नृप सहज सरलपन अक्खी, रिस गिनि नाथ हृदय धरि रक्खी
आतुर सठ नाहक अकुलायो, स्वीयँ नगर बग्घोर सिधायो ॥ ८ ॥
सक नव नभ धृति १८०९ समय होत सठ, हिय भय धारि बिरचि
अनुचित हठ ॥
पुत्र भीम जुत नाथ पॅलायो, अतिजव नगर सादड़ी आयो॥९॥

१ पहर २ कुमर प्रतापसिंह को राणा करने के लिये ॥ १ ॥ ३ कैद में जाकर ४ कुमर को पकड़नेवालों को ५ नीति युक्त ॥२॥ ६ प्रतापसिंह के पिता को कैद किया तब ७ ब्राह्मण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ८कैद घर (जेलखाने) में सेवा की जिसको मानकर ॥ ५ ॥ ९ पकड़नेवालों को १०आकाश में ११मेघ १२ नाथसिंह ॥६॥ १३हे पिता की आज्ञा के साथ चलनेवाले १४घुटने की १५ पीठकी सन्धि में गई हुई ॥७॥ १६सीधेपन से कही १७शीघ्र १८अपने नगर बागोर गया ॥ ८ ॥ १९ भागा ॥ ९ ॥

तँहँ टिक्यो न करि पुनि त्वरिताई, देवलिया पहुँच्यो गरदाई ॥
उम्मट घर तदनंतर आयो, व्याहन सगपन तत्थ विधायो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

उम्मटकी कन्या उभय, परनि पिता१ अरु पुत्र२ ॥
बुंदी पुर आये बहुरि, तक्कत नृपहिँ तनुत्र ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नव नभ धृति १८०९ समय श्राम श्रावन यँहँ आये ॥
देवपुरा लग समुख जाय बुंदीस बधाये ॥
चलन दम्म सत चारि ४०० दये संभर नृप दिनप्रति ॥
बारह१२ बासर रक्खि बिदा किय बखसि बाजि कति ॥
तब नाथ१ भीम२ जनक रु तनय आये दुव२ ढुंढार इत ॥
माधव१ नरेस बखतेस२ जँहँ हे सम्मलि कछु काज हित ॥

॥ दोहा ॥

बखतसिंह१ मरुईस अरु, माधव१ जैपुर ईस ॥
मरहट्टन मेटन अमल, उभय२ मिले अवनीस ॥ १३ ॥
मालपुरा सन इक१ मिंजल, भूपोलाव तड़ाग ॥
पंहु कछवाह१ कबंधपति२, जत्थ मिले जय लाग ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूनु सहित सीसोद नाथ तिन प्रति प्रयान किय ॥
सुनि माधव१ बखतेस२ जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
तदनु मरुप बखतेस छली तत्थहि बपु छोरयो ॥
न्याय रहित सठ नाथ मिलत माधव मन मोरयो ॥

---

१ शीघ्रता २ कुमर प्रतापसिंह को जहर देने की इच्छावाला ३ नरसिंह गढ ॥ १० ॥ ४ उम्मेदसिंह को रक्षक देखकर ॥ ११ ॥ ५ श्रावण मास में ६ बुन्दी की चलन के ७ दिन ॥ १२ ॥ १३ ॥ ८ तलाव ९ प्रभु ॥ १४ ॥ १० पुत्र सहित ११ मारवाड़ के राजा छली बख्तसिंह ने वहीं पर शरीर छोड़ा नाथसिंह ने १२ माधवसिंह के मनको मोड़ दिया

कछवाह कहिय सीसोद सन करहिं तुमहिं मेवार पति ॥
परताप नाँहिं नृपता उचित गहहु ताहि तुम पुव्वगति[1]॥१५॥

अग्ग रान जगतेस अति, कूरम माधव काज ॥
कोटि१००००००० दम्म निज खरच किय, रोकन जैपुर राज१६

ऊरुजे हरगोविंदके, कहैं सु उपकृत भुल्लि[2] ॥
कूरम नृप कृतघन भयो, लैन उदैपुर बुल्लि ॥ १७ ॥

बरज्यो जदपि कलाय पति, कुसलसिंह कछवाह ॥
मन्त्री तदपि न मंदमति, अघ हिय धारि अथाह ॥ १८ ॥

नाथ भीर कूरम नृपहिं, सुनि भारत जसवंत२ ॥
राघवदेव३ उमेद४ ए, मिले आनि दृढ मंत ॥ १९ ॥

कनक[5] छत्र धरि नाथ सिर, चामर बिसद[6] ढुराय ॥
मिलि इतनैं रानी मुलक, लूटन लग्गे आय ॥ २० ॥

बखतसिंहके मरत इत, बिजयसिंह अवनीस[7] ॥
तखतजोधपुरको लह्यो, सुभग छत्र धरि सीस ॥ २१ ॥

याही बरस उमेद नृप, स्वीय सहोदर दीप[8] ॥
परिनायो सावर नगर, मंडि उछाह महीप ॥ २२ ॥

सगताउत सगतेसकी, कन्या अनुप कुमारि ॥
दुलहनि दीप बिबाहि तब, आयो निलय[9] पधारि ॥ २३ ॥

इत बुंदीस उमेदकी, संतत[10] सुहागिनि नारि ॥
ऊदाउति रानिय लयो, दोहद[11] लच्छन धारि ॥ २४ ॥

ताके अष्टम८ मासको, उच्छव मंडि अनंत ॥
समरसिंह नृप कुल सकल, किय इक्कत मतिमंत ॥२५॥

तदनंतर नव ख धृति१८०९ सक, माघ त्रयोदसि१३ सेत[12] ॥

---

१ जैसे पहिले पकड़ा था तैसे फिर पकड़लो ॥ १५ ॥ १६ ॥ २ वैश्य के उपकार भूलकर ॥ १७ ॥ १८ ॥ ४ भारतसिंह और जसवंतसिंह ॥ १९ ॥ ५ सुवर्ण का ६ स्वेत चमर ॥ २० ॥ ७ भूपति ॥ २१ ॥ ८ दीपसिंह को ॥ २२ ॥ ९ अपने घर ॥ २३ ॥ १० निरन्तर ११ गर्भ ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ शुक्ल पक्ष की

अजितसिंह नृपकै कुमर, हुव सुभ अंक उपेत ॥ २६ ॥
जातकरम तब तास किय, निगम उक्त रचि न्याय ॥
नांदीमुख सुख श्राद्ध करि, लक्खन दिन्न लुटाय ॥ २७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कुमारप्रतापसिंहराणापट्टप्रापणनिजसेवकविप्राऽमरचन्द्रसचिवीकरणस्वनिग्राहकसुभटचतुष्क ४ समाऽऽश्वासनराणाकर्तृकमृत्युभ्रान्तपलायितसमुतपितृव्यकनाथसिंहबुन्द्या ऽऽगमनबुन्दी[illegible]सत्कृतनाथसिंहजयपुरजनपदस्थकूर्म्मराजमाधवसिंह १ कबन्धराज[illegible]खतसिंह२सम्मिलनकृतकु[illegible]पाऽजितसिंहमरणजायसिंहिकृत[illegible]थसिंहसहायार्थोदयपुरदापनाऽभ्युपगमनश्रुतैतद्भारतसिंहाऽऽदिचतुष्टय४ नाथसिंहसहायीभवनच्छत्रचामराऽऽदितदर्पणराणाराष्ट्रमेदपाटलुण्ठनबाखतसिंहिविजयसिंहयोधपुरगद्दिकोपविशनबुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहसावरपुरेशशीर्षोदशक्तिसिंहकन्योद्वहनरावराड्

१ राजा उम्मेदसिंह के ॥ २६ ॥ २ आदि ॥ २७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, कुमर प्रतापसिंह का राणा के पाट को पाना और अपने सेवक ब्राह्मण अमरचन्द को सचिव करना १ अपने पकड़नेवाले चारों उमरावों को विश्वासना और राणा से मृत्यु का सन्देह करनेवाले काका नाथसिंह का पुत्र सहित भागकर बुन्दी आना २ बुन्दी के पति से सत्कार किये हुए नाथसिंह का जयपुर के देश में स्थित कछवाहे राजा माधवसिंह और राठोड़ राजा बखतसिंह से मिलना ३ पाप करनेवाले मारवाड़ के पति अजीतसिंह के पुत्र (बखतसिंह) का मरना ४ जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) का कृतघ्नी होकर नाथसिंह की सहाय के अर्थ उदयपुर देने का स्वीकार सुनकर भारतसिंह आदि चारों का नाथसिंह की सहाय होना और उसको छत्र चमर आदि देकर राणा के राज्य मेवाड़ को लूटना ५ बखतसिंह के पुत्र विजयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना और बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का सावरपुर के पति शीशोदिया शक्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना६ रावराजा की राणी ऊदावति का गर्भ धारण करना और उनके आठ मास (आगरणी) का महोत्सव किये पीछे उसके राज कुमार अजीतसिंह के जन्म का इकताली

ाइयूदाउत्तिदोहदलक्षणधरगातत्सीमन्तमहोत्सवाऽनुष्ठानसमयान्त तद्राजकुमाराऽजितसिंहोद्गमनमेकचत्वारिंशो ४१ मयूखः ॥ ४१ ॥ आदितः॥३२२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतर[1] सक ख ससि धृति १८१०, बिसद चतुर्दसि राध[2] ॥
सोदर दीप सिकार गय, बिरचि भ्रात हित बाध ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

मृगयाँ मिस प्रच्छन्न प्रात कढि दीप सहोदर॥
कोटा गय चल बुद्ध अप्प१ इक१ हय इक१ अनुचर ॥
कोटापति सुनि सचिव झल्ल मदनेस पठायो ॥
लैबेकों नटि दीप नगर तबतो नहिं आयो ॥
कायत्थ अखैराम सु बहुरि आय याहि पुर लैगयउ॥
पुनि जाहि कुमर पदवी महल दुजन सल्ल रक्खत भयउ॥२॥
इत यह सुनि बुंदीस लैन निज सचिव पठाये ॥
तबहु दीप नटि तिनहिं तरजिं पच्छे पहुँचाये ॥
गागरनीपुर अभयसिंह रठोर सुता सुनि ॥
परनि ताहि द्रुत जाय दीप आयउ कोटा पुनि ॥
बुंदीस हिंतु नाहक बिमन कछु दिन तत्थ अतीत करि ॥
गो पुनि संबाम पुर इंद्रगढ देव कथित हढ चित्त धरि ॥३॥

॥ दोहा ॥

अभयसिंह रट्ठोरको, देवसिंह हो भौम ॥

सवां मयूख समाप्त हुआ ॥४१॥ और आदि से तीन सौ बाईस३२२मयूख हुए॥

१ जिस पीछे २ वैशाख सुदि ३ भाई से विरोध करके ॥ १ ॥ ४ शिकार के मिस से ५ दीपसिंह ६ झाला मदनसिंह को भेजा ॥ २ ॥ ७ धमकाकर ८ पुत्री ९ से १०उदास११चिताकर१२स्त्री सहित१३देवसिंह का कहना ॥३॥१४चहिनोई

पतनीके परतंत्र तिहिँ, किन्नौं अनुचित काम ॥ ४ ॥
पत्तन कोटा दीप प्रति, पठये यागति पत्र ॥
तुमकों बुंदिय हौंस जो, आवहु तो द्रुत अत्र ॥ ५ ॥
तुमरे उप्पर तनकहू, अग्रज अनुकंपा न ॥
मंत्र करन हमसौं मिलहु, थप्पहिँ ज्यों नृप थान ॥ ६ ॥
ए कग्गर सुनि इंद्रगढ, पहुँच्यो दीप प्रमत्त ॥
अग्रज हिंतु बिरोध इम, तक्क्यो बालिसँ तत्त ॥ ७ ॥
करि अनिष्ट बुंदीसको, देवसिंह धरि द्वेस ॥
पठयो जैपुर दीपकों, विग्रह रचन विसेस ॥ ८ ॥
सुनि माधव जैपुर सुपहु, आवत हड्ड उमाहि ॥
पठयो सम्मुह दीपके, सचिव मुख्य हरसाहि ॥ ९ ॥
कूरम गद्दिय कोन पर, बैठारयो सबिनोद ॥
पटा हजार पचास५०००० को, दयो नगर उकड़ोद ॥ १० ॥
आवत अंतरद्वारँतक, चामर तास चलाय ॥
इम बुंदीपतिको अनुज, रक्ख्यो जैपुर राय ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तदनंतर नभ चंद्र अष्ट अचला १८१० मित हायन ॥
माधवँ दिल्लिय ढंग पत्त बनि प्रीति परायन ॥
सासन अहमदसाह दयो करि सोहि दिखायो ॥
कछु बासरँ तँहँ कड्ढि सिक्ख लहि आलय आयो ॥
रघुनाथराय श्रीमंत सुत नन्ह अनुज जंवनेस जुत ॥
मग माँहिँ मिलत सम्मति रचिय हँरगोविंदहिँ गहन द्रुत॥१२॥

---

१ स्त्री पराधीन ॥ ४ ॥ २ बुन्दी की चाहना है तो ॥ ५ ॥ ३ कृपा नहीं है ॥६॥ ४ सूर्ख ने ५ तहां ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ भीतर की डोढी तक ॥११॥ ७ माधवसिंह ८ प्राप्त हुआ ९ दिन १० बादशाह सहित ११ जयपुर के सचिव हरगोविन्द को शीघ्र पकड़ने के लिये ॥ १२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिल्लिय गमन कुम्म जब किन्नौं, बुंदियपुर कग्गर[1] तब दिन्नौं ॥
कोऊ भट मम संग पठावहु, हितमैं नृप अंतर जिन लावहु ॥१३॥
तब भगवंतसिंह माधानी[2], पठयो भूपति प्रीति प्रमानी ॥
लै दिल्लिय माधव घर आयो, रक्ख्यो[3] सचिव लोभ कछु छायो॥१४

॥ दोहा ॥

सिद्ध भयो नहिँ लोभ सो, सिक्खदई खिजि साह ॥
हरगोबिंद अमात्यहू, लग्गो जैपुर राह ॥ १५ ॥
रक्षक ताकी संगही, माधानी भगवंत ॥
नन्ह अनुज मगमैं मिलत, अमरख[4] किन्न अनंत ॥ १६ ॥
पकरन हरगोविंदकौं, बिंट्यो कटक[5] बिथारि ॥
भूप सुनहु भगवंत भट, तँहँ झारी तरवारि ॥ १७ ॥
मारि बहुत मरहट्ठ भट, जित्यो दुद्धर जंग ॥
कुम्म सचिव गहन न दयो, आन्यों जैपुर ढंग ॥ १८ ॥
इत संध्या१ हुलकर१ उभय२, अचल[6] कमाऊ छोरि ॥
जट्टनके कुंभेरगढ, लग्गे लरन बहोरि ॥ १९ ॥
खंडू हुलकर पुत्रके, गोली लग्गिय मत्थ[7] ॥
ततकालहि अकुलाय तिहिँ, तज्यो कलेवर[8] तत्थ ॥ २० ॥
लै तब ताके वैरमैं, कोटि इक्क दमं दम्म[9] ॥
दिल्लीपर दोऊ२ चढे, करन नन्ह जप कम्म[10] ॥ २१ ॥
जवनईस[11] सत्वर[12] जबहि, सुनि यह अहमदसाह ॥
मरहट्टन सम्मुह चल्यो, सजि निज कटक सिपाह ॥ २२ ॥

१ पत्र ॥ १३ ॥ २ माधोसिंहोत हाडा ३ हरगोविन्द को वहीं रक्खा ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ ४ क्रोध ॥ १६ ॥ ५ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ पर्वत ॥ १९ ॥
७ मस्तक में ८ शरीर ॥ २० ॥ ९ दंड के रुपये १० नन्ह के विजय की कामना से ॥ २१ ॥ ११ बादशाह १२ शीघ्र ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नभ ससि धृति१८१० समय प्रचुर लै दल दिल्लियपति॥
सन्ध्या हुलकर समुख अनखि हंक्यो सत्वर गति ॥
मिलत सेन दुव२ मचिग कलह दारुन करवालन ॥
लुत्थिन लुत्थि बिलग्गि ढंकि छोनिय गज ढालन ॥
चलि चउ४प्रकार आयुध चपल बज्र अचल जिम रीठ बजि॥
दक्खिन अनीक जित्यो दुसह भीरु गयउ जवनेस भजि२३

॥ दोहा ॥

अहमदसाह पलाय इम, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥
खानकलीज हराम खल, पकर्यो स्वाँमि प्रमत्त ॥ २४ ॥
नयन फोरि जवनेसके, कारा पटक्यो कूर ॥
आलमगीर स नाम इक१, साह कियो बनि सूर ॥ २५ ॥
अग्गहि खानकलीज इहिं, खिन्नौं नादर बुल्लि ॥
अंध बंध अहमद कियो, खल बिरोध अब खुल्लि ॥ २६ ॥
मरहट्ठे दब्बत मुलक, दिल्लिय पत्ते दोरि ॥
कछु दम दम्म कलीज दै, किन्नों साम बहोरि ॥ २७ ॥
अंबर ससि धृति१८१०अब्द इम, कितव कलीज कुचाल ॥
गद्दी आलमगीरकों, बैठार्यो मति बाल ॥ २८ ॥
कछु सिवाय धन भेट करि, निलज कलीज नबाव ॥
मरहट्ठे दुव२ मुक्कले, जेर करन पंजाब ॥ २९ ॥
मारकें नादरसाहको, अहमदखान पठान ॥

---

१ बहुत सेना लेकर २ तरवारों से ३ हाथियों के निशानों से अथवा हाथियों के गिरने से भूमि ढकगई ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त, और यन्त्रमुक्त, ये चारों प्रकार के चंचल आयुध चल कर ५ पर्वत पर ॥ २३ ॥ हे ॥ ६ पकड़ कर ७अपने स्वामी (बादशाह) को ॥ २४ ॥ ८ कैद में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ माधव। १० बुद्धि में बालक ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ नादरशाह को मारनेवाला सचिव हरा।

उततैं वह उत्तारि अटक, आयो कटक अमान ॥ ३० ॥
जिहिं जनपद पंजाबमैं, लिन्नों अमल जमाय ॥
हाकिम निज धरि वाहुरयो, इतको अमल उठाय ॥ ३१ ॥
तिनसों मरहट्ठन तबहि, रची जाय द्रुत रारि ॥
उत किन्नों दिल्लिय अमल, थानाँ अपर बिडारि ॥ ३२ ॥
कतिक नगर पंजाबके, लुट्टि सहित लाहोर ॥
मरहट्ठे जय मत्त मन, आये जैपुर ओर ॥ ३३ ॥
मिलन काज मल्लारसों, नय पट्ठु हड्ड नरेस ॥
बुंदीसन करि कुच्च बलि, पत्तो जैपुर देस॥ ३४॥
माधव१ हड्ड२मलार३ अरु, संध्या४विहितै बिबेक ॥
मिलि च्यारिन४ सम्मलि रहत, कड्डे दिवस कितेक ॥३५॥
हरजन पुत्त दलेल तँहँ, हो जैपुरपति तत्थ ॥
लाय हृदय नृप१ ताहि लौ, आयो निलय समत्थ ॥ ३६ ॥
नृप माधव२ गो जयनगर, हुलकर३ दक्खिन देस ॥
रट्ठोरन उप्पर चल्यो, संध्या४ कुपित बिसेस ॥ ३७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिं चरित्रे बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहनिष्कसनतत्कोटागमनगागरणीशरट्ठोडाऽभयसिंहकन्योद्वहनेन्द्रगढेशदेवसिंहभेदितचित्तदीपसिंहजयपुरप्रेषणासत्कृतहड्डेन्द्राऽनुजदिल्लीगतकूर्म्मराजमाधवसिंहप्रत्यागमनाऽन-

॥ ३० ॥ १ देश में ॥ ३१ ॥ २ अन्य थाने निकाल कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३उचित ॥ ३५ ॥ ४ बुन्दी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का निकल कर कोटे जाना और गागरणी के पति राठोड़ अभयसिंह की पुत्री से विवाह करना १ इन्द्रगढ के पति देवसिंह का फोड़े हुए चित्त से दीपसिंह को जयपुर भेजना और हाडों के पति के छोटे भाई का सत्कार करके दिल्ली गये हुए कछवाहे राजा माधवसिंह का पीछा आना २ इस के पीछे आनेवाले सचिव हरगोविन्द को पकड़ने के

न्तराऽऽगच्छत्सचिवहरगोबिन्दनिग्रहणनिमित्तश्रीमन्तनन्हानुजरघुनाथराययुद्धकरणजितयुद्धमाधोसिंहहड्डभगवन्तसिंहहरगोविन्दजयपुरानयनत्यक्तकमाऊगिरिहुलकर १ संध्या २ जट्टदुर्गकुम्भेरवेष्टनतत्समरमल्लारपुत्रखण्डूमरणानीतकोटिद्रम्म १००००००० तद्वैरोद्वर्तजया १ मल्लार २ दिल्लीशाऽहमदशाहविजयकलीजखानस्फोटितनयनयवनेशकाराक्षेपणतद्गद्दिकाऽऽलमगीरोपवेशनदत्तदमद्रव्यदाक्षिणसैन्यपञ्जाबप्रेषणपरास्तीकृतनादरघ्नदिल्लीशाऽधीनीकृतपञ्जाबहुलकर १ संध्या २ जयपुरजनपदाऽऽगमनहड्डेन्द्र १ कूर्म्मेन्द्र २ तत्सम्मिलननीतिहारजनिदलेलसिंहरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमाधवसिंहजयपुरप्रविशनमल्लार १ दक्षिणागमनस्वमित्ररामसिंहसहायीभूतसंध्याजया २ तद्योधपुरदापनार्थसज्जीभवनं द्विचत्वारिंशो ४२ मयूखः ॥ ४२ ॥ आदितः ॥३२३॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ षट्पात् ॥

कारण श्रीमंत नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराय का युद्ध करना और युद्ध जीतनेवाले माधोसिंहोत हाडा भगवंतसिंह का हरगोविंद को जयपुर लाना १ कमाऊँ पर्वत को छोड़कर हुलकर और सिन्धिया का जाट के कुंभेर गढ को घेरना और उस युद्ध में मल्लार के पुत्र खंडू का मरना ४ उस के वैर में क्रोड़ रुपये लेकर जया और मल्लार का दिल्ली के पति अहमदशाह को विजय करना ५ कलीजखां का बादशाह के नेत्र फोड़कर कैद करना और उसकी गद्दी पर आलमशाह को बिठाना ६ दंड का धन देकर दक्षिण की सेना का पंजाब में भेजना और नादरशाहके मारनेवाले को हराकर पंजाब को दिल्लीश के अधीन करके हुलकर और सिन्धिया का जयपुर के देश में आना ७हाडों के इन्द्र और कछवाहों के इन्द्र का उनसे मिलना और हरजन के पुत्र दलेल सिंह को लेकर रावराजा का बुन्दी आना और माधवसिंह का जयपुर प्रवेश करना ८ मल्लार का दक्षिण में जाना और अपने मित्र रामसिंह का सहायक होकर जया नामक सिन्धिया का उसको जोधपुर देने के अर्थ सज्जित होने का बयालीसवां मयूख समाप्त हुआ ।४२। और आदि से तीन सौ तेईस मयूख हुए॥

रूपनगर नृप राजसिंह जब देह त्याग किय ॥
सूनु ज्येष्ठ सामंतसिंह तब तास तखत लिय ॥
अनुज बहादुर बहुरि भ्रात सामंत निकारयो ॥
लिन्नी गद्दिय छिन्नि छत्र अप्पन सिर धारयो ॥
सिरदारसिंह निज सुत सहित नृप सामंत बिपत्ति सहि ॥
लिय तबहि आय संध्या सरन रांम मरुप जिम दीन रहि॥१॥

॥ दोहा ॥

सक नभ ससि धृति १८१० समयही, उदयनैर इत एह ॥
रान प्रतापहु रोगबस, तजत भयो निज देह ॥ २ ॥
तब जो कारामाँहिं हुव, राजसिंह सुत तास ॥
सो नृप भो दस१० बरस बय, पै नहि नीति प्रकास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

रूपनगर नृप ससुत संग सामंतसिंह १ अब ॥
त्योंहीं मरुपति रामसिंह१ दोउन२ इम लै तब ॥
संध्या सेनहिं सज्जि चल्यो इनके अरि मारन ॥
दोउन२ निज भुव दैन बिदित निज किति बिथारन ॥
सुनि एह बहादुरसिंह इत बिजयसिंह सम्मलि गयउ ॥
मेरता नगर दुव२ दल मिलत सक सिव धृति संगर भयउ।४।

॥ दोहा ॥

बिजय बहादुर१ उभय२ उत, इत सामंत१ रु राम ॥
संध्या३ दुहुँन२ सहाय कर, कलि मंडयो जय काम॥ ५ ॥

॥ सारङ्गः ॥

संध्या जया अो बिजैसिंह रट्ठोर, यों मेरता खेत जुट्टे बडे जोर ॥

१ बडा पुत्र २छोटे भाई बहादुरसिंह ने ३ मारवाड़ के पति रामसिंह की भांति ॥ १ ॥ २ ॥ ४ कैद में ॥ ३ ॥ ५ पुत्र सहित ६ युद्ध हुआ ॥ ४ ॥ ७ युद्ध रचा ॥ ५ ॥ जया नामक सिंधिया और जोधपुर के राजा विजयसिंह राठोड़ ने

भारी मच्यो सेसके सीसपै भार, भो*कुंडली सो†फटाडारि फुंकार६
बाराहकी दढ्ढमैं पीरव्है पूर, होनैं लग्यो ‡कामठी पिट्ठिको चूर ॥
कंपे सबैं §दिक्करी ×चिक्करी पारि, धुज्जी ¶धरित्रीहु भै कल्पको धारि७
आदित्य आभा गई धूलितैं ढंकि, लोकेस अट्ठों परे सोकमैं संकि॥
घाँघाँ बढ्यो धूमकी धार अंधार, उलंघिबे सेतु लग्गे अकूपार॥८॥
यों सस्त्र संबाहिनी बाहिनी बेग, दोऊ२ मिली ओ चली उज्जली
तेग ॥
आकर्ण ऐंचे करैं चाप टंकार, सन्नद्ध संधा करैं जुट्टि जुज्झार९
फट्टैं गिरैं तुंड मूर्द्धा अलीकाऽऽलि, कट्टैं कढैं नेत्र ओ उच्छटैं पौलि
भ्रूपक्ष्म ओ कूर्प बुट्टैं मनों मेह, लोला करैं के कटी नासिका लेह
छोनी छवैं गल्ल ओ संखके तोम, सोहैं गिरे रत्तमैं मौसुरी लोम ॥
तुट्टैं उडैं तालु त्यों दढ्ढ ओ दंस, कट्टै कृकाटी कहों कंधरा अंस ११

मेड़ताके खेत में इस प्रकार बड़े बल से युद्ध किया और शेष के मस्तक पर बड़ा भार मचा. वह * सर्प † फणों को धारण करनेवाला. वाराह की दाढ में पूर्ण पीड़ा होकर ‡कमठ की पीठ का चूर्ण होने लगा और §दिशा के सब हाथी ×चीख मारकर धूजे, ¶ पृथ्वी भी १ प्रलय का भय करके धूजी ॥ ७ ॥ २ सूर्य की कांति धूलि से ढकगई, आठों लोकपाल भय भीत होकर शोक में पड़े धुएं की धारा से ३ दिशा दिशाओं में अंधेरा बढगया और ४ समुद्र भी सीमा लांघने लगा ॥ ८ ॥ इस प्रकार ९ शस्त्रों से अंगों को मर्दन करनेवाली दोनों सेना ६ घटा के वेग से चली जहां उजली तरवार चलने लगी ७ कान तक खैंचे हुए धनुष टंकार करते हैं और सज्जित हुए वीर युद्धकरके नहीं भगने की या विजय की ८ प्रतिज्ञा करते हैं ॥ ९ ॥ मुख ९ मस्तक १० ललाटों की पंक्तियां फट कर गिरती हैं, नेत्र कट कर निकलते हैं और ११ कानों के अग्र भाग उछटते हैं १२ भौंहें और १३ कुहनियां मेघ के समान बरसती हैं, कितनी ही कटीहुई १४ जिव्हाएं नासिका को १५ चाटती हैं ॥ १० ॥१६गाल और १७ ग्रीवा के १८ समूह से भूमि ढकती है और रुधिर में गिरेहुए १९ मूछों के केश शोभा देते हैं इसी प्रकार तालुआ, दाढ और २० दांत टूटकर उड़ते हैं, कहीं पर २१ गले का मणिया (घांटी) गर्दन और २२ कंधे कटते हैं ॥ ११ ॥

केते चिरैं कंकटी खग्गकी धार, जुज्झार केते करैं पार कट्टार ॥
कड्ढैं कहाँ वीर मातंगके दंत, फट्टैं कहाँ पेट औ उच्छटैं अंत ।१२।
नच्चैं कहाँ विप्फुरे घुम्मि के रुंड, जच्चैं कहाँ धुंज्जटी मालकौं मुंड॥
डोलैं कहाँ डाकिनी रत्तसौं मत्त, मीडैं कहाँ जुग्गिनी गत्तसौं गत्त१३
जुट्टैं कहाँ जोध के मल्ल संग्राम, फुट्टैं कहाँ फीलमैं कुंत उद्दाम ॥
कुक्कैं कहाँ भीरुव्है सेस कंकाल, हुक्कैं कहाँ हायकैं घाय बेहाल१४
दग्गैं कहाँ लोपकौं तोप बंदूक, लग्गैं कहाँ उच्छलैं फाल मंडूक॥
चक्खैं कहाँ गीद गिद्धी बडी चाह, अक्खैं कहाँ साकिनी वाह वाह ॥ १५ ॥
कुद्दैं कहाँ एकही पायतैं रुंड, मुद्दैं कहाँ नैन के भू गिरे मुंड ॥
वज्जैं कहाँ माधुरी नारदी बीन, पुज्जैं कहाँ कालिका लै बपा पीन ॥ १६ ॥
फेरैं कहाँ भूप हे¹¹ छत्रकी छाँह, गेरैं कहाँ अच्छरी कंठमैं बाँह ॥

कितने ही १ कवच धारण करनेवाले खड्ग की धारा से चिरते हैं और कई योधा कटारों को पार करते हैं, कहीं पर वीर लोग २ हाथियों के दंत निकालते हैं और कहीं पर पेट फटकर आंतें उछलती हैं ॥ १२ ॥ कितने ही क्रोधित रुंड घूम कर नचते हैं और कहीं पर मुंडमाला बनाने को ३ शिव मस्तक मांगते हैं कहीं पर डाकिनियां रक्त से मत्त होकर फिरती हैं और कहीं पर योगिनियां ४ शरीर से शरीर को रगड़ती हैं ॥ १३ ॥ कितने ही वीर कहीं पर मल्लयुद्ध करते हैं, कहीं पर ५ हाथियों में ६ रुकावट रहित भाले फूटते हैं, कितने ही कायर ७ अस्थि पंजर बाकी रह कर कूकते हैं और कहीं पर हाय हाय कहके व्याकुल होकर कूकते हैं ॥ १४ ॥ कहीं नाश करने को बंदूकें और तोपें चलती हैं जिनके लगने से कहीं पर ८ मैंड़क की छलांग के समान उछलते हैं कहीं पर गिद्धनियां बडी चाह से मांस खाती हैं और कहीं पर शाकिनियां प्रशंसा करती हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर रुंड एक पैर से कूदते हैं, कितने ही मुंड ९ भूमि पर गिरतेहुए नेत्र बंद करते हैं, कहीं पर १० नारद की मधुर वीणा बजती है और कहीं पर पुष्ट मज्जा लेकर वीर लोग काली को पूजते हैं ॥१६॥ कहीं पर राजा छत्र की छांह में ११ घोड़े फेरते हैं, कहीं पर अप्सराएं वीरों के कंठ में भुज डालती हैं, कहीं पर वीर आगे बढकर तलवार मारते हैं और कहीं पर

मारैं कहों अग्गठहे खग्ग सामंत, हारैं कहों उसरैं[1] दंत हाहंत ।१७।
झूमैं कहों कुंभिके[2] कंठसों जाय, घुम्मैं कहों बीर के तीरके घाय
रंगैं कहों जोध के रैत्तमैं[3] मुच्छ, मंगैं कहों प्रेतनी गोदके[4] गुच्छ ।१८।
गैमत्थ[5] चोफार फट्टैं कहों तत्त, मानो जगन्नाथके भत्तके पत्त[6] ॥
बज्जैं कहों वृत्त सारंग[7] बिरंकार[8], उड्डैं कहों सोरके जोर अंगार ।१९।
खज्जूरिसे तुट्टि झंडे झुकैं लोल, जंगी बजे गोमुंका भेरिका[11] ढोल॥
हुल्ले फिरैं निट्ठिकैं भिन्न वेतंड[12], फल्ले फिरैं फेरवी[13] कोक[14] फेरंड[15] ॥२०॥
बानैत केते भरैं भूतको बत्थ, सोहैं घनैं मारते संकुले[16] सत्थ ॥
फट्टैं कहों उच्छटैं चौंर औ छत्र, पापी छकैं भैरवी लोहिताऽमत्र[17]२१
यौं मेरता खेत मंड्यो महाजुद्ध, जुट्टे भले दक्खिनी कालसे क्रुद्ध ॥
संध्या जैया[18] भ्रात यौं दत्त गो दौरि, नवखी बिजैसिंहकी फौज झ-
झोरि ॥ २२ ॥
दै मार रट्ठोर डारे घनें कुट्टि, औ तोपखाना खजाना लये लुट्टि ॥
संध्या यहै जंग जित्ते बडे जोर, भज्ज्यो बिजैसिंह गो दुग्ग[19] नागोर२३

हारेहुए १ खेद से हाहाकार करते हैं ॥ १७ ॥ कहीं पर वीर लोग २हाथियों के कंठ से जा लगते हैं, कहीं पर बाणों के घावों से घूमजाते हैं, कहीं पर ३ रुधिर से मूछें रंगते हैं और कहीं प्रेतनियां ४ चरबी के समूह मांगती हैं ॥ १८ ॥ उस युद्ध में कहीं पर ५ हाथियों के मस्तक चार फांक होकर फटते हैं सो मानो जगन्नाथ के भात के ६ पात्र फूटते हैं, कहीं पर गोलाकार हुए ७ धनुष का ८ शब्द होता है और कहीं पर बारुद के बल से अंगारे उड़ते हैं ॥ १९ ॥ कहीं पर खजूर के समान ९चपल झंडे टूटते हैं और कहीं युद्ध संबंधी १० गोमुखे (वाद्यविशेष) ११ नौबत और ढोल बजते हैं १२कटेहुए हाथी हूलने से नाठ फिरते हैं और १३ गीदड़नियां (स्यालनियां) १४ वृक (भेड़िये) और १५गीदड़ फूलेहुए फिरते हैं ॥ २० ॥ कितने ही बानाबंध (युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले) भूतों को बाथों में भिरते हैं और १६ भरेहुए (अवकाश रहित) बहुत साथ को मारतेहुए शोभा पाते हैं, कहीं पर चँवर और छत्र कटकर गिरते हैं और देवी १७लोहू से भराहुआ पात्र पीकर तृप्त होती है ॥ २१ ॥ १८ दत्ता नामक जया सिन्धिया का भाई मारता हुआ गया ॥ २२ ॥ १९ विजयसिंह नागोर के गढ में भागगया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

विजयसिंह मरुभूप भजि, गयो नगर नागोर ॥
जाय बहादुरहू दुरयो, रूपनगर रट्ठोर ॥ २४ ॥
प्रथम विजयसिंहहिं दमन, जया तबहि बरजोर ॥
तोपन जाल कराल रचि, गढ विंट्यो नागोर ॥ २५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेदसिंहचरित्रे रूपनगराऽधिराजसामंतसिंहस्वाऽनुजबहादुरसिंह१विग्रहविस्तरणकलुषिकुहककनिष्ठनिष्कासितससूनवग्रजसन्ध्याजयाशरणाऽऽसादनमेदपाटेशराणाप्रतापसिंहमरणतत्सुतराजसिंहोदयपुरपट्टप्रापणरामसिंह १ सामन्तसिंह २ जया ३ योधपुर १ रूपनगरो २ द्धरणाऽर्थप्रस्थानश्रुतेतत्सबहादुरसिंह १ मरुपविजयसिंह २ सन्मुखाऽऽगमनमेरतानगरमहाऽऽयोधनविरचनलुण्टितवैरिविभवजयाजयाऽनुष्ठानपलायितविजयनागोरदुर्गप्रविशनम्लानमुखबहादुरसिंहरूपनगराऽऽगमनप्रस्थितपार्ष्णिपीडनजयानागोरकोट्टाऽऽवरणाभिवर्णनं त्रिचत्वारिंशो ४३ मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः ॥३२४॥

॥ २४ ॥ १ दृढ देनेको ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, रूपनगर के पति सामन्तसिंह और छोटे भाई बहादुरसिंह का विग्रह बढना और पापी छली छोटे भाई के निकाले पुत्र सहित बडे भाई का सिन्धिया जया की शरण लेना १ मेवाड़ के पति राणा प्रतापसिंह का मरना और उसके पुत्र राजसिंह का उदयपुर का पाट पाना २ रामसिंह और सामन्तसिंह सहित जया का जोधपुर और रूपनगर के निकालने के अर्थ गमन सुन कर बहादुरसिंह सहित मारवाड़ के पति विजयसिंह का सम्मुख आना ३ मेड़ता नगर में बड़ा युद्ध करना और शत्रु के वैभव को लूटकर जया के जय करने से भागकर विजयसिंह का नागोर के गढ में प्रवेश करना और मलीन मुख बहादुरसिंह का रूपनगर में आना ४ एडी दबाते हुए जया का गमन करके नागोर को घेरने का तियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से तीन सौ चौईस ३२४ मयूख हुए॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—बुंदी नृप उम्मेद इत, रामानुज मत धारि
देस बिथारी रीति दृढ, संमदाय[1] अनुसारि ॥ १ ॥
प्रतिमा इक१ श्रीरंगकी, दक्खिन हिंतु मँगाय ॥
सिव धृति१८११मित[2] सक सुक्र[3] बदि, एकादसि११तिथि पाय२
मंदिर महलनमाँहिं रचि, सिल्प बिबिध मत सक्त[4] ॥
बिरचि प्रतिष्ठा निगम बिधि, वह थप्पी अति भक्त ॥ ३ ॥
तबतैं यह श्रीरंगको, अतुल पट्ट उच्छाह ॥
जेठ असित[5] एकादसी११, होत राम नरनाह ॥ ४ ॥
याहि बरस १८११ को उज्ज[6] सित, छट्ठी६[7]बासर पाय ॥
भूप भुजिष्याहू[8] जन्यो, सुत गुमानजुत राय[9] ॥ ५ ॥
नाम तास सिवसिंह दिय, जातक[10] द्विजन बिचारि ॥
तदनंतर जो वृत्त हुव, सुनहु भूप हित धारि ॥ ६ ॥
सक जगती धृति१८१२माघ सित, सुक्र[11] बार स्मर[12] दीह१३ ॥
ऊदाउति रानिय जन्यौ, कुमर बहादुरसीह ॥ ७ ॥
अजितसिंह१ अरु यह कुमर, सोदर हुव२ सु कुमार ॥
बाल छपाकर[13] जिम बढत, दिन दिन अधिक उदार ॥ ८ ॥
विजयसिंह मरुपाल इत, रुंद्ध[14] नगर नागोर ॥
संध्याको संकट सहत, कछु न जनावत जोर ॥ ९ ॥
बरस इक्क१ घेरा रह्यो, तोपन लग्गो ताप ॥
संध्या नहिं जावत सह्यो, दुपहर जेठ दिवाँप[15] ॥ १० ॥
व्याकुल तब बखतेस सुत, चूक बिचारिय चित्त ॥

॥ १ ॥ १ से २ प्रमाणवाले सम्वत् में ३ ज्येष्ठ वदि ॥ २ ॥ ४ नाना प्रकार के समर्थ मतों से ॥ ३ ॥ ५ वदि ॥ ४ ॥ ६ कार्तिक सुदि ७ दिन ८ राजा की पासवान स्त्री ९ गुमानराय ॥ ५ ॥ १० जन्म ॥ ६ ॥ ११ ज्येष्ठ मास १२ कामदेव के दिन (तेरस के दिन) को ॥ ७ ॥ १३ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ १४ नागोर में घिरकर ॥ ९ ॥ १५ सूर्य ॥ १० ॥

दुवर *इंदे पड़िहार द्रुत, बुल्ले दे बहु †वित्त॥ ११ ॥
अग्गैं सन इंदे रहत, मरु ‡जनपदके माँहिं ॥
चूक करनमैं जे चतुर, न करैं मरतहु नाँहिं ॥१२॥
पावैं मरुपतिके पटा, बिनु सेवा रहि गेह ॥
काम परैं जब चूकको, अप्पैं तब निज देह ॥ १३ ॥
करैं यहहि सेवा कठिन, जब तब संभव होय ॥
§इतर काल कहुँ घरन, खिजे देत[1] असु[1] खोय ॥ १४ ॥
अग्गैं जिन सुमियानगढ[2], बिजड़ जवन लिय मारि ॥
मरत डरे नहिं नैंक मन, बिरच्यो चूक बिचारि ॥ १५ ॥
अभयसिंह मरुईसको, पुनि निज आयस[3] पाय ॥
पीलू१ लखपति१ दक्खिनी, दुवर दिय मारि गिराय ॥१६॥
कोलौं हम या गति कहैं, इंदनको आचार ॥
जे रचि बाजी जीवकी, खेल्हे अजब खिलहार ॥ १७ ॥
तिहिं कुलके दुवर वीर तब, इंदे बुल्लिय अत्थ[4] ॥
कह्यो हनहु संध्या कुटिल, तिन प्रति धन्वप[5] तत्थ[6] ॥ १८ ॥
सुनत जयाकी सेनमैं, उभय[7] बनिक बनि आय ॥
बनिज बिथारयो बंचकनँ, बिपणि[8] बजार बनाय ॥ १९ ॥
दुवर हि लरे पुनि इक्क दिन, समुझत क्रीत[9] हिसाब ॥
कल्पित कछु अपराध करि, खिजि खिजि होत खराब ।२०।
बकत परस्पर जैन बनि, उभयर तित्थगर आन ॥
पलटत पायन धौत[10]पट, होत पदत्र[11]न हान ॥ २१ ॥
सिथिल[12] पग्घ[13] सिरतैं सरकि, उरम्मी कंठन आय ॥

* इंदा शाखा के पड़िहार क्षत्रिय † धन ॥ ११ ॥ ‡ मारवाड़ देश में ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ § अन्य समय १ प्राण ॥ १४ ॥ २ सुमियाणा में ॥ १५ ॥ ३ हुकम
॥ १६ ॥ १७ ॥ ४ यहां बुलाये ५ मारवाड़ के पति ने ६ तहां ॥१८॥ ७ ठग
ने ८ दुकान ॥ १९ ॥ ९ क्रय करने (मोललेने) का हिसाब समझने को ॥२०
१० धोवती ११ जूतियों का दान (प्रहार) ॥ २१ ॥ १२ ढीली १३ पघड़ी

कलम गई गिरि काननतैं, मुख गल्ल स्वास न माय ॥ २२ ॥
इक्क कहैं कहिहौं अबहि, गिनि रक्खी मैं गूढ ॥
*मोदक खावत मात तब, मारयो †उंदुरु मूढ ॥ २३ ॥
जपैं ‡इतर तेरे जनक, छल्लो §जिनोदित छोरि॥
मक्खी दस१० घृत माहितैं, नक्खी जियत निचोरि ॥ २४ ॥
गहत इक्क पत्थर गड्यो, देवेकों करि दाव ॥
खैंचत बिटपन१ इक्क खिजि, घल्लत गालिन घाव ॥ २५ ॥
जिम तिम बिरचत करि जतन, अधोबात२ उतसर्ग ॥
लखि इत उत बिहसन लगे, बल३ दक्खिन भट बर्ग ॥ २६ ॥
इक मारत मुट्ठी उछरि, खिजि इक दंतन खात ॥
संध्याकी डोढी गये, लरत प्रहारत लात ॥ २७ ॥
धोति४बसन अंतर दुहुँन५, कछि कछि दृढ कोपीन ॥
दुव२ असिधेनु दुराय६ तँहँ, लरन भये इम लीन ॥ २८ ॥
लरत बनिक कौतुक लखत, उलटयो कटक अपार ॥
प्रहसन७ रूपक जिम प्रचुर, प्रकटयो हास्य प्रचार ॥ २९ ॥
स्मित१कति जन कति जन हसित२,बिहसित३कतिक बनात

॥ २२ ॥ * लड्डू खाते समय † चूहे को ॥ २३ ॥ ‡ दूसरा कहता है कि तेरे पिता ने § जिन (अर्हन्त) के कहने को छोडकर अर्थात् अर्हन्तों के कहेहुए अहिंसा धर्म को त्यागकर ॥ २४ ॥ १ वृक्षों को ॥ २५ ॥ २अपशब्द (गुदा के पवन) का निकालना ३ दक्षिण की सेना के ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४धोती के भीतर ५ छुरियें ६ छुपाकर ॥ २८ ॥ ७ हास्य के नाटक के समान बहुत ॥ २९ ॥ रसतरंगिणी में हास्य रस के बारह भेद लिखे हैं सो हम भी रसतरंगिणी के सातवें तरंग के अनुसार लिखते हैं कि हास्य रस दो प्रकार का है जिन में एक तो स्वनिष्ठ (अपने आप हसना) और दूसरा परनिष्ठ (दूसरे का हसना) जो उत्तम मध्यम अधम पुरुषों में रहकर छः प्रकार का है। जिनमें छः प्रकार का स्वनिष्ठ और छः प्रकार का परनिष्ठ मिलकर बारह भेद हुए हैं। उत्तम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ दोनों में स्मित और हसित होता है। और मध्यम पुरुषों में स्वनिष्ठ, परनिष्ठ, बिहसित और उपहसित होता है।

कतिक करत वक्रोष्टिका४, कति अतिहास५जनात ।३०।
अट्टहास६ कतिकन उदित, आच्छुरितक७ कति अंग ॥
कतिकन अवहसित८ रु कतिन, परि उपहसित९प्रसंग ।३१।
कहुँ दृग बिकसन संकुचन, ओठ फुरकनहु उप्पि ॥
बढ्यो प्रेमथदेवत निसेंद, रस संध्या दल रुप्पि ॥
करत दंतधावन करम, जया पँटालय जत्थ ॥
कौतुक यह अक्ख्यो कतिन, तासोँ जाय रु तत्थ ॥ ३३ ॥
बनिक लरत देखे बहुत, मुष्टी मल्लकँ मार ॥
पै इक रारि अपुव्व प्रभु, दरसनीय६ निज द्वार ॥ ३४ ॥
देखत जन पकरत उदर, दुस्सह हसन दुखात ॥
कौतूहल यह लखनको, जुरे छुँरँ नहिँ जात ॥ ३५ ॥
संध्याके सिर यह सुनत, अंतकँ छायो आय ॥
बुल्ल्यो तब बुल्लहु वनिक, निरखि निवेरैं न्याय ॥ ३६ ॥
इम भाखत सँहँसन अनुर्ग, दंभिन लाये दोरि ॥

तथा अधम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ, अपहसित और अतिहसित होता है इनमें थोड़े से कपोल फूलने, दन्त नहीं दीखने और नेत्रों के प्रान्त से अच्छी तरह देखने को स्मित कहते हैं कपोलों का फूलना और थोड़े से दांतों का दीखना, इस हास्यको हसित कहते हैं। समय के अनुसार जिस हास्य में उत्तम शब्द होवें, मुख का सुकड़ना और मुख पर लाली दीखै,उसको विहसित कहते हैं नासिका फूलना, टेढी दृष्टि होना गरदन का सुकड़ना और स्पष्ट शब्द होना इसको उपहसित कहते हैं। उद्धत होवे, नेत्रों से अश्रुओं का उदय होवे, मस्तक हिलता होवे, अत्यन्त स्पष्ट शब्द होवे, उसको अपहसित कहते हैं। अत्यन्त उद्धत, बहुत आंसु आवे, बहुत अत्यन्त शब्द होता होवे पासमें होवे उसको पकड़लेवे, हाथ से ताल बजावे जिसको अतिहसित कहते हैं ॥३०॥३१॥यहां कहीं तो लक्ष्य से हास्य को बताया है और कहीं लक्षणसे बताया है सो पाठक लोग जान लेवें १ शिव है देवता जिसका और २ श्वेत है रंग जिसका ऐसा हास्य सिन्धिया की सेना में खड़ा हुआ ॥ ३२ ॥ ३ दातण (दतुन) करता था ४ डेरे में ॥ ३३ ॥ ५ दन्त मारकर ६ देखने योग्य ॥ ३४ ॥ ३५ । ७ काल ॥ ३६ ॥८नौकर ॥ ३७ ॥

लातन नख दंतन लरत, झुकत गये झंझोरि ॥ ३७ ॥
अति समीप जावत अटक, प्रतिहारनं[1] किय पूर ॥
रारि तदपि[2] अदभुत रचत, दंभी न रहे दूर ॥ ३८ ॥
कहत इक्क अपराध करि, मारत यह पुनि मोहि ॥
इतर[3] कहत संध्या अधिप, करत न्याय सबकोहि ॥ ३९ ॥
तू सठ तोलत छद्म[4] तकि, लुट्टि अजानन लेत ॥
घटिकादिक[5] मनके धरत, दानन ऊनित[6] देत ॥ ४० ॥
पुनि कहि इम दंतन पयन, लरे नखन रिस लाय ॥
तालिन दै संध्या तकै, गालिन देत गिनाय ॥ ४१ ॥
कढ्ढि छुरिन जावत निकट, दई जया उर दोरि ॥
गटकत हिय कालिक[7] गई, फोरी पंजर फोरि ॥ ४२ ॥
देत समय बुल्लो दुवरहि, होत अचानक हाक ॥
कहिये संध्या न्याय करि, को हममाँहिं कजाक[8] ॥ ४३ ॥
भाखि यह रु सत्वर[9] भजत, मार्‌यो इक[10] असि मार ॥
कढिगो इक रोवत कुहंक, इक्कहु यह अंधार ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कोलाहल हुव कटक मरत संध्या कुल इनके ॥
भये रुदनके राग छिपे[11] दुंदुभि छत्तिनके ॥
बिजैसिंह मरुईस सुनत किय मोद सिवायो ॥
अभयसिंह सुत अधम पिहुल[12] आतुर दुख पायो ॥
सक दुव मृगांक वसु इक१८१२समय धिट्ठन इम छलवेस धरि ॥
मरुपालैं[13] साल संध्यामय सु कढ्ढयो इंदनं[14] जतन करि ।४५।

---

१ द्वारपालों ने निकट जाने से बहुत रोका २ तोभी ॥ ३८ ॥ ३ अन्य ॥ ३९ ॥ ४ छल ५ पंचसेरी आदि ६ कमती ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ७ हृदय और कलेजे को निगल कर शरीर को हलकेपन से फोड़कर गई ॥ ४२ ॥ ८ युद्ध करनेवाला छली हममें कौन है ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र १० छली ॥ ४४ ॥ ११ शीघ्र १२ बहुत १३ मारवाड़ के पति को १४ ईंदा क्षत्रियों ने ॥४५॥

॥ दोहा ॥

जया तनय जनकू जबहि, पट्ट जनकको पाय ॥
विंटि रह्यो नागोर बलि, तोपन रारि, रचाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीश्वरनिजाऽऽलयरचितसुमन्दिरश्रीरङ्गप्रतिष्ठापननिजराज्ञ्यूदाउत्यौरसराजकुमारबहादुरसिंहोद्गमनकुमारशिवसिंहभुजिष्याजठरजन्मप्रापणनागोरदुर्गस्थराठोडविजयसिंहव्याकुलीभवनतत्प्रेषितकृतवणिग्वेशेन्दोपटङ्किप्रतिहारद्वय २ जयामारणप्राप्तजनकाऽधिकारतत्पुत्रजनकूनागोररणरचनं चतुश्चत्वारिंशो ४४ मयूखः ॥ ४४ ॥ आदितः ॥३२५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

विजयसिंहकौं विंटि कैंलह जनकू व्याकुल किय ॥
करि तब संधि कबंध दम्म दसलक्ख१०००००० दंड दिय ॥
जनक लयो अजमेर अब सु पच्छो डरि अप्प्यो ॥
बलि संभरपुर घंट थान दायादहिं थप्प्यो ॥ १ ॥
निलय जयाके नाम विविध मंजुल बनवाये ॥
मेरता१ रु नागोर२ लरजि बहु दम्म लगाये ॥

---

१ फिर नागोर को घेरा ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, बुन्दी के पति का अपने महलों में बनाये हुए श्रेष्ठ मंदिर में, श्रीरंग की प्रतिष्ठा करना और अपनी राणी ऊदावति के उदर से राजकुमार बहादुरसिंह का जन्म होना १ कुमर शिवसिंह का दासी के पेट से जन्म पाना ६ नागोर के गढ में स्थित राठोड़ विजयसिंह का व्याकुल होना और उस के भेजे बनियों के वेशवाले ईंदा पदवीवाले दो पड़िहारों का जया को मारना ३ पिता का अधिकार पाकर उसके पुत्र जनकू का नागोर में युद्ध रचने का चमालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥४४॥ और आदि से तीन सौ पचीस ३२५ मयूख हुए ॥

२युद्ध में३भाई(दायभाग पानेवाले) रामसिंह को ॥१॥४मकान५सुन्दर ६धूजकर

करि जनकू अब कुंच अनखि पच्छो पुरि आयो ॥
रूपनगर सन रारि बिरचि रट्ठोर दबायो ॥ २ ॥
सकुचि बहादुरसिंह मन्नि अतिबल सरहट्टन ॥
आनि मिल्यो डर आनि प्रकट दिखराय नस्रपन ॥
रूपनगर खाली कराय सामंतहिँ दिन्नोँ ॥
योँहि कृष्णगढ अप्पि कुंच जनकू पुनि किन्नोँ ॥ ३ ॥
काका दत्ता संग बहुरि समसेरबहादुर ॥
सुत बाजेरायसोँ एह जनम्योँ जवनीउर ॥
इन दोउनर जुत उलटि धँप्यो जनकू दक्खिन धर ॥
छुंदिय आवत भूप जाय सम्मुह लायो घर ॥ ४ ॥
सबको करि सतकार मंडि मंजुल महिमानी ॥
संभर दिय पुनि सिक्ख बिहित हित मय कहि बानी ॥
कोटापति इत कुमति अधिक चक्खी आकूती ॥
बाजीकरन बिनोद आनि खंडन रत ऊती ॥५॥
तास नसा करि तबहि खेदहुव देह खपावन ॥
अतिजगती धृति १८१२ अब्द श्रावँ बरखा ऋतु आवन ॥
बेलर्क कृष्णबिलास उपाधि करि देह बिहायो ॥
सचिव झल्ल मदनेस बेग तब अजितँ बुलायो ॥ ६ ॥
द्विज इक दानतिराय संग अनता पठयो द्रुत ॥
बिष्णुसिंह नँती सु अजित बुल्लयो पित्थल सुत ॥
याकोँ तब द्विज एह लँघुहि अनता सन लायो ॥
अब्द पचास५० अवस्थ वृद्ध गद्दिय बैठायो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ २ ॥ १ बहादुरसिंह को ॥ ३ ॥ २ मुसलमानी के उदर से ३दौड़ा (शीघ्रता से गया) ॥ ४ ॥ ४ सुन्दर ५ घोड़े के समान मैथुन करने को वैद्यक में बाजी करण कहते हैं ६ क्रीड़ा ॥ ५ ॥ ७ श्रावण मास ८ कृष्णबिलास नामक बाग में ९ अजितसिंह को ॥ ६ ॥ १० पोता ११ पृथ्वीसिंह का पुत्र १२शीघ्र ही ॥७॥

इत सम्भ्या उज्जैनतैं, यह सुनि दत्ता आय ॥
कोटा विंटिय अनख करि, सेना अयुत१००००सजाय॥ ८ ॥
बुल्ल्यो हमरे हुकम बिनु, अजितसिंह हुव ईस ॥
अप्पहु यातैं दंड अब, श्रीमंतहि गिनि सीस ॥ ९ ॥
मुद्रा बारह लक्ख १२००००० मित, दिल्ली तब सहि दंड ॥
दक्खिनको फैल्यो दुसह, ऐसो तेहर अखंड ॥ १० ॥
आयो इत उत्तरि अटक, उद्धत कटक अमानैं ॥
मारक नादरसाहको, अहमदसाह पठान ॥ ११ ॥
सक अतिजगती धृति १८१२ समा, व्यापत समय बसंत ॥
किन्नौं जिहिँ मथुरा कतल, हत्या पैंर सठ हंत ॥ १२ ॥
आतप कातर पुनि गयउ, ग्रीखम लग्गत गेह ॥
मनुज हजारन मारिकैं, ओतु स्वुननँ जुत एह ॥ १३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुर मकसूदाबाद१ ललामक, सुहि मुरसिदाबाद१ जुग२ नामक ॥
बंगदेस अंतर तद्वासक, जवन सिराजुद्दौला सासक ॥ १४ ॥
जिहिँ इंग्रेज जमत इत जानैं, पुनि करि अमल बढत पहिचानैं ॥
सचिव कोहु तस पुर ढाका सन, धुंत अछुत्त लै भज्यो बहु धन॥१५
सुपैं रह्यो अंग्रेजन सरनैं, बल जिनको सब सिर जग बरनैं ॥
इत्यादिक हेतुन नब्बाब यह, सजि पैठो कलकत्ता साग्रह ॥ १६ ॥
जित्ति पुर सु सहसन सेनाजुत, दुर्ग फोर्टविलियम१ लिन्नौं द्रुत ॥
पुर जिहिँ रस चउ ससि१४६मित पाये, जे अंग्रेज प्रबलपकराये१७
अति संकट कारा ते अटके, पै माये न तदपि तहँ पटके ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १ प्रताप ॥ १० ॥ २ अमाप ॥ ११ ॥ ३ परम हिंसा ४ दुःख ॥ १२ ॥ ५ गरमी (धूप) से कायर ६ बिल्ली ७ कुत्तों सहित ॥ १३ ॥ ८ वहां का रहनेवाला ९ हाकिम ॥ १४ ॥ १० उसका कोई सचिव ११ वह धूर्त अछूता धन लेकर भगा ॥ १५ ॥ १२ आग्रह सहित ॥१६॥ १३ कलकत्ते के किले का नाम है ॥ १७ ॥ १४ बडे सकड़े (तंग) कैद घर में डाले, परन्तु उसमें नहीं

इहिं*संकट कैदी व्याकुल अति, गुन रवि १२३ मित दबि मरे कीटगति ॥ १८ ॥

जियत बचे तेईस२३ प्रात[२] जिम, मंदराज यँहँ सुद्धि[३] सुनी इम ॥
तब कर्नैल क्लैव१साहब तह, सज्जि लरन नवसत१०९गोरनसह१९
सत पंद्रह१५००मित अवर सिपाहन, द्रुत आयो अहितन हियदाहन
आश्रम ससि बसु ससि १८१४ सक आगम, समर रच्यो सुचि[५] ४ गिम्ह[६]२ समागम ॥ २० ॥

कलकत्ता जित्ति सु अरि काढे, बलि नवाब उत्तर दल[७] बाढे ॥
सत्त अयुत७००००बल सह अग्रेसर[८],सज्यो नवाब पलासी[९] संगर२१
भिरत भज्यो सु काल[१०] तोपन करि,लह्यो बिजय अंग्रेज अतुल लरि
अमल कंपनीको तादिन[११] उत,देस बंग[१२] बिच कछुक जम्यो द्रुत२२

॥ दोहा ॥

इंद्रगढाधिप देव इत, पाप कुमाय प्रमत्त ॥
नृपके सोदर दीप पँहँ, पठये जैंपुर पत्त ॥ २३ ॥
यह उदंत[१३] तिनमैं लिख्यो, अब डरि भूप उमेद ॥
अप्पहि[१४] लैन अमात्यकौं, भेजहि लखि द्रुत भेद ॥ २४ ॥
मनहु मनायें मति सुमति[१५], रक्खहु धीरज रंच ॥
बिन्नति इम दक्खिन बिखय[१६], पठई नीति प्रपंच ॥ २५ ॥
कछु वसु[१७] नजरि निवेदिकैं, लै श्रीमंत निदेस ॥
अप्पहिं हम करिहैं अरहि[१८], बुंदीनगर नरेस ॥ २६ ॥

माये तो भी उसमें जबरी से डाले * इस सकड़ाई में १एक सौ तेईस अंगरेज कीड़ों की तरह दबकर मरगये ॥ १८ ॥ २ प्रभात समय ३ खबर॥१९॥ ४ शत्रुओं के हृदय जलाने को ५ आषाढ ६कृष्णपक्ष, यह मरुभाषा के गेम से गिम्ह हुआ है जिसका अर्थ पाप है और पाप का रंग श्याम है ॥ २० ॥ ७ सेना उत्तर दिशा में बढाई ८ आगे होकर ९ पलासी नामक नगर में ॥ २१ ॥१०काल रूपी तोपों से ११ उस दिन १२ बंगाले में ॥२२॥२३॥१३ वृत्तान्त १४ आपको ॥२४॥ १५ हे बुद्धिमान् १६ देश में ॥ २५ ॥ १७ धन १८ शीघ्र ही ॥ २६ ॥

भावी वसि ए भूपके, पाये दूतन पत्र ॥
नृप उमेद देवहिं गिन्यों, ए सुनि पाप *अमत्त ॥

॥ गीतिका ॥

इत सक्करी धृति १८१४ अब्द लग्गत सेन दक्खिनतैं चली ॥
रघुनाथ१ माल्लिक नन्ह सोदर ओ मलार२ बढे बली ॥
दल आत बुंदियके समीप नरेस सम्मुह जातभो ॥
महिमानि दै इक१ रत्ति रक्खि रु देव पत्र दिखातभो ॥ २८ ॥
रघुनाथ पल्ल मल्लार संजुत बंचिकैं नृपकैं कह्यो ॥
तुम ईस मारहु देवसिंहहि पाप पापिय ज्यो चह्यो ॥
करि कुंच यों कहि दक्खिनी जयनैर छोनिंय संचरे ॥
गढ भोम नामक बिंटि कोपन जाल तोपनके जरे ॥ २९ ॥
कछवाहके भट ते भजे सब भोमदुग्गहिं छोरिकैं ॥
इन आन मंडिय अप्पनी ततकाल जो गढ तोरिकैं ॥
पुनि टौंक पत्तन घेरि घत्तन देस जैपुरको दल्यो ॥
कछवाह माधव भूप सो सुनि आंजिकौं नहिं उज्झल्यो ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जयावैरनिमित्तजनकूदण्डितविजयसिंहदमदम्मलक्षद शक १०००००० सहिताऽजमेरदङ्गमहाराष्ट्रनिवेदनसम्भरपुरविभाग रामसिंहाऽर्पणमेरता १ नागोर २ सन्ध्यासद्मनिर्मापनप्रास्थितजनकूरूपनगरभारक्षेपणतत्पुरसामन्तसिंहीयकरणबहादुरसिंहाऽर्थकृष्ण

*पाप का पात्र ॥ २७ ॥ २८ ॥ १ माल्लिक हो सो २ जयपुर की भूमि में गये ॥ २९ ॥ ३ युद्ध को ४ नहीं चढा ॥३०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, जया के वैर के कारण विजयसिंह को दंड देकर जनकू का दंडके दश लाख रुपयों सहित अजमेर नगर मरहट्ठों की भेट करना और रामसिंह को बंट में सांभर पुर देना १ मेड़ता और नागोर में सिंधिया के मकान बनाकर गमन कर के जनकू का रूपनगर पर भार डालना और उस पुर को सामन्तसिंह का

गढदापनबुन्दीदक्षिणायियासुससैन्यसन्ध्याभोजनकोटेशदुर्जनशल्य
मातुलानीमत्तमृत्युप्रापणसाचिवाऽऽदितत्पट्टाऽनतेशाऽजितसिंहबन्धन
तन्निमित्तसन्ध्यादत्तद्वादशलक्ष १२००००० कोटादण्डदम्मसक्षुद्र
आलङ्घितकरतोयानादरषाहमारकपठानाऽहमदषाहकुमारिकागमन
मथुरामहापुरीप्राणिमात्रप्राणवियोजनसोदरदीपसिंहसम्बन्धिदेवसिं
हविरचितवर्णदूतबुन्दीन्द्रदर्शनसमल्लारनन्हाऽनुजरघुनाथरावोदगाग
मनदर्शितदेवसिंहदलसम्भरेशतत्सम्मनननीतभौमदुर्गमहाराष्ट्रजयपु
रदेशदलनं पंचचत्वारिंशो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः ॥३२६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नृप उमेद करउर नगर, इत गय अवसर पाय ॥
देव१ रु दोलतसिंह१ कुवर२, इहाँ जनक सुत आय ॥ १ ॥
नीति जुत लग्गे नृपति पय, बैठे मिसल बिचारि ॥
कह्यो भूप तुम हित करन, स्वामि धरम अनुसारि ॥ २ ॥
इंद्रगढेश्वर देव इह, बुल्ल्यो अन्नृत[3] बनाय ॥

करके बहादुरसिंह को कृष्णगढ देना २ दक्षिण की इच्छावाले सिन्धिया का सेना सहित बुन्दी में भोजन करना और कोटा के पति दुर्जनसाल का भांग (माजुम) में मस्त होकर मरना ३ सचिव आदि का उसका पट्ट (सिरपेच). "प्राचीन काल में पांच आमली के सरपेच को राज्य चिन्ह मानते थे" सचिव आदि का उसका पट्ट अणता नगर के पति अजितसिंह के बांधना और उसके कारण सिन्धिया के दिये दंड के बारह लाख रुपये कोटा से लेना ४ अटक नदी लांघ कर नादरशाह के मारनेवाले पठान अहमदशाह का आर्यावर्त में आकर मथुरा में प्राणी मात्र के प्राणों का वियोग करना (मारना) ५ छोटे सगे भाई दीपसिंहके सम्बन्धी देवसिंह के रचेहुए पत्रों को बुन्दी के पति का देखना और मल्लार व नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराव का उत्तर दिशा में आना ६ देवसिंह के पत्र दिखाकर चहुवाणों के पति का उनका सन्मान करना और भोमगढ को लेकर मरहठों की सेना का जयपुर के देश को पीसने का पैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४५॥ और आदि से तीन सौ छाईस ३२६ मयूख हुए ॥

१ पिता और पुत्र ॥ १ ॥ २ नम्रता सहित ॥ २ ॥ ३ झूठ बोला

सेवक हम प्रभुके सकल, करैं हुकम मन काय ॥ ३ ॥

॥ मनहंसः ॥

सुनिकैं इतेक नरेस वे दल धुल्लिकैं,
उनकों दये उनके लिखे सब खुल्लिकैं ॥
तिन्ह बंचि देव सिटाय नाँ कछु बुल्लयो ॥
तब भूप कुप्पि निदेस मारनको दयो ॥ ४ ॥
रु कही दयो हय नाँहिं सो हम भुल्लये ॥
तुमनैं तथापि बिरोध बीज इते बये ॥
कहि यों हन्यों वह देव सोक सँम्हारतैं ॥
पकरयो सु दौलतसिंह खग्ग निकारतैं ॥ ५ ॥
करि कैद बुंदिय दुग्ग ताकँहँ पेसयो ॥
अरु अप्प इंद्रगढाख्य पत्तनमैं गयो ॥
निज आन मंडिय रक्खि हाकिम व्हाँ भले ॥
उनके वधूजन नैनवा सब मुक्कले ॥ ६ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

नृपनैं इम पत्तन इंद्रगढाख्य लयो, रहिकैं कछु बासर केतन गड्डि दयो ॥
पुनि लैन परग्गनकों पृतना पठई, भट ता बिच मुख्य सु तोक भयो बिजई ॥ ७ ॥
ध्वजिनी यह बुंदिय आंन रचंत फिरैं, भट कोउ न तासन सत्रु दकालि भिरैं ॥
सुनिकैं यह खत्तउली पति आतभयो, नृपके दलपैं सहसा रतिवाह दयो ॥ ८ ॥
वजि हक्क ललक्क बढी धमचक्क मची, निसमैं चउसट्ठि ६४ अचानक

॥३॥ १पत्र मंगाकर २हुकम ॥४॥ पहिले ३ घोड़ा नहीं दिया था सो तो ४तोभी ५शोक करते हुए को ॥ ५ ॥ ६ इन्द्रगढ नामक पुर में ७ लीजन ॥ ६ ॥ ८ कुछ दिन रहकर ९ ध्वजा रोप दी १० सेना ॥ ७ ॥ ११ सेना १२ अचानक ॥ ८ ॥

आय नची ॥

तजि निंद रु तोकहु लै समसेर चल्यो, सु मनों बड़वानल सागरपैं उफल्यो ॥ ९ ॥

उमड्यो जनु कन्ह[1] कुसस्थलके रनपैं, पटक्यो वपु[2] सत्रुनकी सम सेरनपैं ॥

हनुमंत किलंकहिं लैन मलंगि बढ्यो, कपिलेश्वरके मुखतैं जनु साप कढ्यो ॥ १० ॥

इम तोक रजोगुनमैं छकि रंग[3] रुप्यो, लखिकैं तिहिं खत्तवली[4] दल जात लुप्यो ॥

बखतावर त्यों मुहुकम्म कुलीन[5] बली, भट सम्मुह जाय रची धम चक्क भली ॥ ११ ॥

बिनु घोटक[6] दोउन२ की तरवारि बही, कबलों सु कही नृप राम न जात कही ॥

तरकैं समसेर बिदारि बकत्तरकों, उछटैं सिर तुट्टि निरंतर अंबरकों[7]

फटि टोप गिरे बिखरे दसतान दिपैं, लगि लोहित[8] छुट्टि छछक्कन छोनि[9] छिपैं ॥

बरछीन कितेक महाबल बेध करैं, कमनैत कितेक कलंबन[10] प्रान हरैं ॥ १३ ॥

तरवारि तनुत्रनमाँहिं[11] दुरैं दमकैं, चुभि भद्द बलाहकैं[12] ज्यों न्हादिनी[13] चमकैं ॥

उछटैं गल गाल रु भाल कपाल कटैं, बिनु मस्तक केक कबंध कराल अटैं ॥ १४ ॥

भिरिकैं इम संहरि सत्रुनके भट के, बखतावर१ तोक२ बनैं बट-के बटके ॥

॥९॥१कन्नोज के २ शरीर को शत्रुओं की तरवारों पर पटका ॥१०॥ ३ युद्ध में ४ खातोली की सेना ५ कुलवाले ॥११॥ ६ विना घोड़ों के ७ आकाश में ॥१२॥ ८रुधिर की९भूमि १०बाणों से ॥१३॥११कवचों में१२भादवे के मेघ में१३बिजुली

गिरितैं हुव२ बुंदियकी पृतना विगरी, पहुँची भजि संभर भूपति पैं सिगरी ॥ १५ ॥

पुनि इङ्गनके पति सेन घनी पठई, इतही तिहिं बुंदिय आन फिराय दई ॥

कर लैन लगे फिरि हाकिम बुंदियके, हठ सोधे भये सब सत्रुन के हियके ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

अनघोरा१ अरु ढीपरी२, लै रु अमल निज कीन ॥
ग्राम इंद्रगढके सकल, किय इत्यादि अधीन ॥ १७ ॥
ग्राम ढीपरी माँहिं गढ१, बंध्यो नृप रन बंट ॥
त्योँहिं इंद्रगढ अद्रिपर३, रच्यो दुर्ग्ग चतुअट्ट४ ॥ १८ ॥
कृत्रिम इक१ आयत कियउ, महलन मध्य निवान ॥
वलि विंस्फासनि देविगिरि, सुभग रचे सोपान६ ॥ १९ ॥
सँदानित७ पुनि देव सुत, दोलतसिंह जु कीन ॥
तारागढ तहँ असु८ तजे, आमय९ कछुक अधीन ॥ २० ॥
नृपति पठाई नैनवा, याकी मात रु नारि ॥
याकैं तहँ हुव पुत्र इक१, सोहु मरयो गँद१० धारि॥ २१ ॥
इत नृप बुल्ल्यो११ देवको, भक्तराम तव भ्रात ॥
दयो कृपाकरि इंद्रगढ, जाहि अब्द त्रय जात ॥ २२ ॥
कछु यह हम भावी कह्यो, वलि क्रमतैं अव वत्त ॥
इम नृप लीनौं इंद्रगढ, घल्लि घत्त१२ पर घत्त ॥ २३ ॥
वेद इंदु धृति१८१४ अब्द विच, माधव१३ माधव१४ मास ॥
खत्तोली पतिहू दयो, इम नृप दल१५ सिर त्रास ॥ २४ ॥

---

१ सेना ॥ १५ ॥ २ व्यर्थ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पर्वत पर ४ चौ बुरजा (चार बुरजवाला) ॥ १८ ॥ ५ बनाया हुआ मोटा ६ पगथिये (सीढियें ॥ १९ ॥ ७ कैद ८ प्राण ९ रोग के अधीन ॥ २० ॥ १० रोग ॥ २१ ॥ ११ शीघ्र बुलाया ॥ २२ ॥ १२ घात पर घात ॥ २३ ॥ १३ वसन्त ऋतु १४ वैशाख मास में १५ सेना पर ॥ २४ ॥

तोक्क महासिंहोत तहँ, जैतगढाधिप जोध ॥
तिल तिल तेगन तुट्टयो, रचि बहु सत्त्रुन रोध ॥ २५ ॥
अपराधीकों मारि इम, नृप आयो निज नैर ॥
जैपुर पर मल्लार इत, बंध्यो दुव्वर वैर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीशकरवरनगरगमनसमाहूतदर्शिततत्पत्रेन्द्रगढेशदेवसिंहमारणतदीयतनुजदौलतसिंहदुर्गकारान्क्षेपणतत्स्त्रीजननयनपुरप्रेषणरावराजेन्द्रगढगमनतद्भूमिशासनाऽर्थससैन्यतोकसिंहप्रेषणखातोलीशतत्सौलिकरचनतोकसिंहबखतावरसिंहमरणबुन्दीपृतनापलायनपुनःप्रेषितभटदेवसिंहदेशस्वीकरणडीपरी १ न्द्रगढ २ चतुरट्टदुर्गनिपाना ऽऽदिविन्ध्यवासिनीगिरिसोपानादिसमनुष्ठानसन्दानितदौलतसिंहकाराकलेवरहानजाततत्पुत्रनयनपुरमरणरावराजबुन्द्याऽऽगमनमल्लारजयपुरवैरबन्धनं षट्चत्वारिंशो ४६ मयूखः ॥४६॥ आदितः ॥ ३२७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ जैतगढ का पति ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दी के पति का करवर नगर में जाना, बुलायेहुए उसके पत्र दिखाकर इन्द्रगढ के पति देवसिंह को मारना १ उसके पुत्र दौलतसिंह को गढ में कैद करना और उसकी स्त्रियों को नैणवा पुर में भेजना २ रावराजा का इन्द्रगढ जाना और उसकी भूमि को आधीन करने के अर्थ अपनी सेना सहित तोकसिंह को भेजना २ खातोली के पति का उस पर रतिवाह देना और तोकसिंह व बखतावरसिंह का मरना ३ बुन्दी की सेना का भागना और फिर भेजेहुए वीरों का देवसिंह के देश को लेना, डीपरी और इन्द्रगढ में चार बुरजोंवाला गढ, जलाशय, विन्ध्यवासिनी के पर्वत पर सीढियें आदि करना ४ कैद कियेहुए दौलतसिंह का कैद में मरना और उसके जन्मेहुए पुत्र का नैणवानगर में मरना ५ रावराजा का बुन्दी आना और मल्लार का जयपुर से वैर करने का छियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से तीन सौ सत्ताईस मयूख हुए ॥३२७॥

॥ षट्पात् ॥

अक्खी माधव अग्ग हमहु जैपुरपति व्हैहैं ॥
तवहि रामपुर तुमहिं दुवं२ हि हुलकरपति दैहैं ॥
वरस सत्त७ गय वित्ति भंग२ कूरम नहि दिन्नैं ॥
यातैं हुलकर सज्ज कटक जैपुर पर किन्नैं ॥
माधव नरेस सुनि भीत मन दम्म लक्ख ग्यारह११०००००दये
बनि नम्र परग्गन जुत बहुरि ए दुव२ पत्तन अप्पये ॥

॥ दोहा ॥

पत्तन चन्द्राउतनको, रामपुरा१ सह देस ॥
जो लिन्नों जयसिंह सो, किन्नौं हुलकर पेस ॥ २ ॥
टौंक नगरके प्रांत ढिग, दूजो२ रामपुरा१ सु ॥
कहियत रायवसंतको, वह दिन्नौं डरि आसु[३] ॥ ३ ॥
दुव१ पुर जनपद[३] सहित दै, तब मेट्यो इम त्रास ॥
दक्खिनको दल टारि दिय, माधव[४] माधव[५] मास ॥४॥

॥ हरिगीतम् ॥

सक बान चन्द्र भुजंग भू १८१५जयनैर यौं जनकू बढयो ॥
सन्ध्या जया सुत सेन सज्जि रु देस दक्खिनतैं चढयो ॥
गोदावरी नदि लंघि त्यौं अवरंग पत्तन लंघयो ॥
बुरहान पत्तन लंघि वेग मिलान मेकलजा दयो ॥ ५ ॥
ओंकार ईसहिं पुज्जि यौं जनकू अवंतिय उत्तरयो ॥
गढ भैंसरोर मुकाम दै दरकुंच हंकत जो परयो ॥
सुनि एह बुंदिय भूप तत्थहि जायकैं हित मंडयो ॥
महिमानि जिम्मत जाहु यौं कहि नेर लावनकौं भयो ॥६॥
तँहँ इंद्रगढपति देवकी तिय पत्र विन्नति मुक्कली ॥

---

१ दोनों रामपुरे ॥ १ ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥ ३ देश सहित ४ माधवसिंह ने
५ वैशाख मास में॥४॥ ६ इधर ७ अवरंगाबाद ८ नर्मदा नदी पर ॥ ५ ॥ ६ ॥

अरु यौं लिखी तुम अद्ध१ छोनिय लेहु पिक्खहु२ जो भली ॥
तिँहिँ बंचिकैं जनकू कहे कटुबैन बुंदिय भूपसों ॥
हमरो सहाय बनायकैं तुम निक्खसे दुख कूपसौं ॥ ७ ॥
हमरो निदेस लयैं बिनाँ तुम इट्ठ३ अप्पन नाँ करो ॥
उनकौं ब अप्पहु इंद्रगढ निज राज्य प्रभुपन४ जो धरो ॥
सुनि हड्ड बुल्लिय पेसवा तुमरे जु प्रानन ईसहै ॥
तिनकौं सुनाय करी कही सुनि रावरी इत रीसहै ॥ ८ ॥
करनों तुम्हैं हितमाँहिँ अहितहि तो ब हम घर जायहैं ॥
तुम सज्जि आवहु जंगकौं अब हड्ड हत्थ दिखायहैं ॥
आयो यहै कहि भूप बुंदिय साज संगरके भये ॥
सुनि यों मलार१ रु नन्ह भ्रात२ निवारि दोउन२कों दये ९
जनकू जया सुत कुंच कैं तब पत्त जैपुर बेगहीं ॥
कछु दम्म माधव दंड दै डारि नम्रता गति के गही ॥
पुनि सुक्कतालन जीवखाँ सन जायकैं जनकू लरयो ॥
नहिँ तत्थ मिच्छ रुहिल्लसों मरहट्ठ भार सह्यो परयो ॥ १० ॥
लय३ अब्दसों रनथंभ गिरि इत फोज दक्खिनकी लरैं ॥
बिच साहके भट सज्ज ते नहिँ दुग्ग छोरन अहरैं ॥
लरतैं परंतु छतीस३६ मास बिताय व्याकुल वे भये ॥
खंडारि जैपुर दुग्ग ही ढिग तत्थ कग्गर प्रेसये५ ॥ ११ ॥
कछवाह सेवक साहको६ इम ताहि हम गढ अप्पिहैं ॥
मरिजाहिँ पै मरहट्ठकौं रनथंभमैं नहिँ थप्पिहैं ॥
तुम छन्न आवहुँ रत्तिमैं७ हम दुग्गतैं कढि जायहैं ॥
पचरंग केतन८ कुम्भ भूपतिकोहि अत्थ रुपायहैं ॥ १२ ॥

१आधी भूमि २अच्छी देखो सो लो ॥७॥ ३ अपना चाहा हुआ (भला) ४अपने राज्य का स्वामीपना चाहते हो तो ॥८॥९॥१०॥ ५ पत्र भेजा ॥११॥ ६कछवाहा बादशाह का सेवक है इस कारण ७ रात्रि में छुप कर आओ ८ ध्वजा ॥१२॥

खंडारि मुख्य अनोपसिंह हुतो पचेवरिको धनी ॥
खंगार[1] वंसिय वंचि जो दल[2] रत्ति गो सजिकैं[3] अनी ॥
लखि साह सेवक ताहि तब रनथंभ अंतर[4] लेगये ॥
तिंहिं झारि खग्गन नन्ह वीर भजाय बाहिरके दये ॥ १३ ॥
कढि साहके भट वर्ग दिल्लिय जाय वृत्त[5] निवेदयो ॥
इम बान भू धृति१८१५ पोस सित रनथंभ कूरमकै गयो ॥
संभार[6] खान१ रु पान२के तँहँ कुम्म संचित के करे ॥
बारूद१ सीसक२ वित्त३ रक्खि तड़ाग जीरख उद्धरे ॥१४॥

॥ दोहा ॥

बहुरि दुग्ग रनथंभ ढिग, जयपुर छबि अनुसार[7] ॥
निज नामक माधव नगर, रचयो बिबिध बिसतार ॥ १५ ॥
हुलकर पँहँ पठयो हुकम, सुनत एह श्रीमंत ॥
दुर्ग लेहु रनथंभ द्रुत[8], अब करि जैपुर अंत ॥ १६ ॥
तंते वह पठयो तबहि, दै हुलकर दल[9] संग ॥
गंगाधर दरकुंच गति, जित्तन आयो जंग ॥ १७ ॥
जनपद[10] नागरचाल जिहिं, क्रमि[11] पत्तन कक्कोर ॥
कीनों जैपुर कटकसौं, जुद्ध तुमुल बरजोर ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अतिजव हयन उठाय धरयो परदल[12] गंगाधर ॥
मंड्यो आयुध मेह दुरयो बढि खेह दिवाकर[13] ॥
खुंदि पहुमि हय खुरन दुरन लग्गे सागर जल ॥
लग्गे पव्वय[14] गुरन मुरन अतलादि महीतल ॥
काहुको भयो नहिं जय कलह[15] पै बहु भट कटि कटि परिग

१खंगारोत२पत्र३सेना सजकर४भीतर ॥१३॥५यह वृत्तान्त (हाल) अरज किया ६सामग्री ॥ १४ ॥ ७ सदृश ॥ १५ ॥ ८ शीघ्र ॥ १६ ॥ ९ सेना ॥१७॥१० देश११ जाकर ॥ १८ ॥ १२ शत्रु की सेना में १३ सूर्य १४ पर्वत १५ युद्ध में

इम पहुमि लुत्थि छादित मनहु बनिजकार[1] टंडा ढरिग ।१९।

॥ दोहा ॥

सुभट मरे रन पंचसत५००, इत उतके अनुरत्त[2] ॥
घाय दुसह लग्गे घनैं, गंगाधरके गत्त[3] ॥ २० ॥
जैपुर बड उमराव जुग२, परे भिन्न तजि प्रान ॥
सत्यासी८७ तिनके सुभट, मरे इतर[4] छकि मान[5] ॥ २१ ॥
जोधसिंह१ अभिधान[6] इक१ नाथाउत कछवाह ॥
मिसल दाहिनीको मुकुट, चोमू पत्तन नाह ॥ २२ ॥
बगरूपति दूजो२ बहुरि, कूरम चतुरसुजोत ॥
रन गुलाबसिंहहु रह्यो, बाम मिसल उद्योत ॥ २३ ॥
ए२ उमरावन अग्रणी, जैपुरके गिरि जात ॥
भये न सम्मुह इतर भट, दुर्मन[7] भाव दिखात ॥ २४ ॥
इत तंते गंगाधरहु, घन खग्गन सहि घाय ॥
तब मुररयो दक्खिन तरफ, करन अनामय काय[8] ॥ २५ ॥
समा अष्टि धृति१८१६ प्रमित सक[9], लग्गत ऋतु हेमंत ॥
अगहनमैं ए कुम्भ हुव२, हुव गतप्रान लरंत ॥ २६ ॥
इत गंगाधरकों मुरयो, सुनि हुलकर मल्लार ॥
जैपुर पर हंक्यो जबहि, पैहु[11] रचि कटक प्रसार ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दक्खिनधरको थंभ चढयो हुलकर जैपुरपर ॥
दरकुंचन करि दोर अवनि[12] दब्बत डारत डर ॥
जनपद[13] नागरचाल प्रथम बिंट्यो उनियारा ॥
भयो चकित भोगीस[14] धरनि फुट्टत हय धारा[15] ॥

मानों[1]बनजारों की बादल पड़ी है ॥१९॥[2]प्रीति युक्त [3]शरीर में ॥२०॥ [4]अन्य [5]इज्जत में छक कर ॥ २१ ॥ [6] नाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ [7] उदासीनता ॥ २४ ॥ [8] शरीर को नैरोग्य करने को ॥ २५ ॥ [9] सम्वत [10] विक्रम के शक का ॥ २६ ॥ [11]प्रभु ॥२७॥ [12]भूमि [13]नागरचाल देश में [14] शेषनाग [15]घोड़ों की दौड़से

सिरदारसिंह *नारव नमित †सयन जोरि लग्गो पयन॥
तिहिँ दंडि गमन अग्गैं कियउ हुल्लकर लगि जैपुर अयन२८
कुसथल सुत फतमल्ल तास हुव रतनसिंह सुत ॥
ताको इक लघुपुत्र नाम विक्रम साहस जुत ॥
जगतसिंह रट्ठोर हिंतु सहसा रचि संगर ॥
छिन्नि नगर बरवाड़ भगो पति अप्प बंधि घर ॥
इहिँहेतु आय मल्लार इत तापन ताप चलायकैं ॥
रट्ठोर अमल पच्छो रचिय गो कछवाह पलायकैं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

दक्खिन१ जैपुर२ बैर सुनि, जगतसिंह अभिधान॥
सुत कबंध सिवसिंहको, बैठो लै निज थान ॥ ३० ॥
तब कूरम रतनेस सुत, राजाउत करि रारि ॥
छिन्नि नगर बरवाड़ लिय, दिय रट्ठोर निकारि ॥ ३१ ॥
यातैं हुल्लकर भीर करि, वह कछवाह भजाय ॥
जगतसिंह बरवाड़ पुर, बहुरि दयो बैठाय ॥ ३२ ॥
सक रस ससि बसु ससि१८१६ बरस, आम बलच्छ सहस्य॥
हुल्लकर सन बुंदीसहू, गो कछु करन रहस्य ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशावुम्मेद सिंहचरित्रे माधवसिंहपूर्वप्रतिजातरामपुरद्वय२ मल्लारोपायनीकरण सन्ध्याजनकूदग्दिग्गमनसम्मुखप्रस्थितरावराहूतान्मिलनप्राप्तदेवसिं-हपत्नीविज्ञप्तिपत्रसन्ध्याहहुन्द्रकुत्सनतत्कुव्लुन्थ्यागतबुन्दीशसमिदीह

---

* नरूका † हाथ जोड़ कर १ मार्ग ॥ २८ ॥ २ से ३ इस कारण ४ आगया ॥ २९ ॥ ५ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ६ मास ७ छुदि ८ पौष ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, माधवसिंह का पहिले के दियेहुए दोनों रामपुरों को मल्लार की भेट करना और जनकू नामक सिंधिया का उत्तर दिशा में आना १ सम्मुख जाकर राव राजा का उस से मिलना और देवसिंह की स्त्री.की अरजी पाकर सिन्धिया का

नश्रुतेतद्रघुनाथराय १ मल्लार २ युयुत्सुद्वय २ निवारणानीतजयपुरद
मद्रम्मजनकूशुक्रतालयुद्धविजयनरुहिल्लनजीवखानपलायनदिल्लीश
दुर्गेशदुर्गरक्षस्थम्भकूर्म्मराजनिवेदनजयपुरदक्षिणाविरोधवर्धनश्रीम
न्तशासितहुल्लकरगङ्गाधराऽऽदिपुरतःप्रेषणातज्जैपुरसैन्यसमायोधन -
माधवसिंहमुख्यसुभटनाथाउतयोधासिंह १ चतुर्भुजोतगुलाबसिंहा २
ऽदिमरणाक्षतक्षुणणगंगाधरदक्षिणाऽदिगमनश्रुतेतद्धुल्लकराऽगमनत
न्नारुसरदारसिंहदमनराजाउत्तविक्रमोद्धृतबरवाड़पुरराठोड़जगतसिंहा
ऽऽर्पणासम्मतमल्लारमन्त्रणबुंदीन्द्रबरवाड़पूर्गमनं सप्तचत्वारिंशो ४७
मयूखः ॥ ४७ ॥ आदितः॥३२८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

लिय अजितसिंह१ पट्टप कुमार, लघु पुत्र बहादुर२ बहुरि लार ॥
बुंदीस मिल्यो बरवाड़ जाय, सम्मुह मलार आयो सुभाय ॥१॥
करि उभय२ रहे दिन दुव२मुकाम, तँहँ सुनिय सुद्धि पंजाब धाम॥

हाडों के पति को धमकाना २ उससे कुद्ध होकर बुन्दी में आये बुन्दी के पति को युद्ध की इच्छावाला सुनकर रघुनाथराव और मल्लार का युद्ध की इच्छा वाले उन दोनों को रोकना ३ जयपुर से दंड के रुपये लेकर जनकू का शुक्रताल के युद्ध में विजय करना और रुहिल्ला नजीवखान का भागना ४ दिल्ली के बादशाह के गढ के पति कारणतभँवरको कछवाह राजा(माधवसिंह) को देना और जयपुर और दक्षिण का विरोध बढना ५ श्रीमन्त के हुक्म पाये हुए मल्लार का गंगाधर आदि को आगे भेजना और उसका जयपुर की सेना से युद्ध करना ६ माधवसिंह के मुख्य सुभट (उमराव) नाथाउत योधासिंह और चतुर्भुजोत गुलाबसिंह आदि का मरना और घावों से क्षीण गंगाधर का दक्षिण आदि में जाना ७ यह सुनकर हुल्कर का आना और उसका नरूके सरदारसिंह को दंड देना८ राजाउत विक्रमसिंहके लिये बरवाड़ पुर को राठोड़ जगतसिंह को देने और मल्लार से सलाह करने को बुन्द्रीन्द्र का बरवाड़ जाने का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४७॥ और आदि से तीन सौ अट्ठाईस मयूख हुए ॥ ३२८ ॥

१ श्रेष्ठ रीति से ॥ १ ॥ २ खबर

सजि सेन खानअहमद पठान, उल्लंघि अटक आयो *अमान॥२॥
पंजाब अमल अप्पन जमाय, दक्खिनके हाकिम दिय उठाय ॥
यह सुनत किन्न हुलकर प्रयान, चढि संग भयो नृप चाहुवान॥३॥
†सिसु जानि सिखावन सुतन नीति, लायो सु दिखावन राजनीति
वय सप्त७ बरस जेठो कुमार, लघु पुत्र अब्द चउ४ बेस धार॥४॥
तिनकौं पुनि बुंदिय सिक्ख दिन्न, मल्लार संग नृप गमन किन्न ॥
मल्लार चट्टसू आदि नेर, लुट्टे जैपुरके बिरचि बैर ॥ ५ ॥
पंजाब अमल मंडत पठान, जयनेर१ छोरि किय उत प्रयान ॥
इक बंधु२ महासिंहोत तत्थ, किय तुपक झारि निस बिच अनत्थ३॥६॥
सुहरनिपति दसरथसिंह सुप्त४, किन्नौं प्रयागसुत प्रान लुप्त ॥
खोज्यो वह मारक५ सुनत भूप, सु मिल्यो न भज्यो परि त्रासकूप७
करि तदनु६ हड्ड१ हुलकर२ प्रयान, पुर कोटपुत्तली दिय मिलान ॥
किय सेन पठानन सास सज्ज, श्रीमंत विजय रन करन कज्ज ॥८॥
गाजुद्दीखाँ इत है८ हराम, मारयो प्रभु आलमगीर नाम ॥
यह सुनत मुलक पंजाब छोरि, इत नादरध्न९ आयो सु दोरि ॥ ९ ॥
तब त्रास निजामनमुलक पाय, मरहठ्ठ सकल बुल्ले सहाय ॥
जित तित हुतो सु दक्खिन अनीक१०,सब दिल्लिय आयो चहिसमीक११
उततैं सु खानअहमद पठान, आयो सवेग दिल्लिय अमान ॥
सुनि हुलकर आक्खिय नृपहिं एह, भुव करत रंग तुम जाहु गेह११
गो बुंदिय तब संभर नृपाल, आयो मलार दिल्लिय उताल ॥
संकरदा पत्तन लूट ठानि, सज्ज्यो पठान सन जंग जानि ॥ १२ ॥

* प्रमाण रहित ॥ २ ॥ ३ ॥ † बालक जानकर अपने पुत्रों को नीति सिखाने के लिये ॥४॥ ५ ॥ १ जयपुर को छोड़कर २ भाई ३ अनर्थ ॥ ६ ॥ ४ सोतेहुए को ५ मारनेवाले को ॥ ७ ॥ ६ जिसपीछे ७ मुकाम किये ॥ ८ ॥ ८ नादरशाह को मारनेवाला ॥ ९ ॥ ९ यह पदवी है १० सेना ११ युद्ध ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

जनकू३ हु जयासुत सुनत आय, दत्ता३ हु सैन आयो सजाय ॥
संभासुत४ आयो बहुरि सूर, *जव मंडि लरन संध्या जरूर॥ १३ ॥
अरु सठ †कलीज निज धर्म हीन, आलीगोहर दिल्लीस[1] कीन ॥
दै पुनि मरहट्ठन कोटि १०००००००‍ दम्म[2], किय तिन सहाय निज
बिजय कम्म[3] ॥ १४ ॥
दिल्ली दल१दक्खिन दल२दुरंत[4], मिलि इक्क१ सज्यो अव बिरचि मंत[5]
बज्जिग निसान[6] जितत्तित बिसेस, सज्जिग प्रवीर दल दव्वि देस१५
हुव बिबिध तोप सज्जित हरोल, लहरात धुजा फहरात लोल ॥
मृगराजमुखी[7] कति लंबमान[8], बाराहमुखी कति वर बिधान ॥१६॥
बिखधरमुखी[10] कति तंति[11] बिसाल, करिराज[12] मुखी कति अति
कराल ॥
सिंदूर[13] लेपन लोहित सुहात, दगि प्रलय काल ततखिन दिखात१७
कति कांत[14] लोहमय पृथुलकाय[15], सुभ रीति सुल्वमय[16] कति सुहाय
केय सबल धातुमय सज्ज केक, इम पुनि गुब्बारै[17] संचय अनेक१८
आरूढ निठुर[18] चरखन असेस, बिकराल ज्वाल जंनु[19] काल बेस ॥
अंगार बमत खिन खिन अपार, हुव सज्ज छार गढ करनहार।१९।
मेलि दगत दिसा दैवंत[20] मिटाय, सतकोटि[21] नाद सज्जित सिटाय ॥
दुवसत २०० हरोल जिन्ह बेलदार, कुद्दाल हत्थ मग सुद्धकार[22]२०
सत दुव२०० कुठारधारक सु अग्ग, मेटत तरु रोधक[23] रचत मग्ग॥

*वेग रचकर।१३।†मूर्ख कलीजखां १दिल्ली का पति किया २रुपये ३काम ।१४। ४दूर है अन्त जिसका ५मंत ६नगारे ॥१५॥७चपलव्यासिंहमुखी ८लंबे प्रमाणवाली । १६ ॥ १० सर्पमुखी ११ लंबी पंक्तिवाली १२हस्ती के मुखवाली १३सिंदूर से शोभायमान लाल मुखवाली ॥ १७ ॥ १४ सुन्दर लोह की १५ बडे शरीरवाली १६ तांबे की १७ तोप विशेष (गुब्बारा) ॥ १८ ॥ १८ कठोर चरखों पर १९ मानों ।१९॥२०दिक्पालों सहित दिशाओं को मिटाती है; अथवा दिशाओं की मूर्ति को मिटाती है २१ वज्र का शब्द २२ मार्ग साफ करनेवाले ॥ २० ॥ २३ रोकने

ते तोप खिनहु अटक्कन न देत, लैजात *अद्रिसिर †मलप लेत।२१।
भुव धसत चक्क चरखन ‡अपार, त्रिसती३०० इम तोपन हुव तयार
दुव२ दलन लक्ख १००००० घोटक दुरूह[1], सत्वर फिराक भंति[2] भंति समूह ॥ २२ ॥
जरजाल[3] सज्ज पखराल[4] जीन, नखराल चाल रय[5] फाल लीन ॥
नतगोधि[6] चपल चपला[7] समान, केतक कलीन उपमान कान।२३।
खुर रजतपत्र[8] कृत नटन खेल, मनु ससि[9] कलंक खुरतार मेल ॥
प्रतिक्रमन[10] खेह उट्ठत अनूप, धरनी कि रच्छकन[11] देत धूप ॥ २४ ॥
जे वैद्य पराजय[12] रोग जाल, अरु बिजय सिद्धि साधन उताल ॥
अरि[13] पवन पिक्खि जित्यो असेस, व्यालहु[14] जिन सेवत यालवेस।२५।
धुनि[15] सीस लखत जिन फाँद धाप, प्राकार[16] रचन छोरत धराप[17] ॥
लखि जिन मलंग तिरछी लजंत, कुलटा कटाच्छ डारन तजंत॥२६॥

वाले वृक्षों को * पर्वत के ऊपर † कूदते हुए ॥ २१ ॥ ‡ भयङ्कर दोनों सेनाओं में १ कठिनाई से तर्कना में आवैं ऐसे लाख घोड़े तयार हुए जिन घोड़ों के समूह शीघ्रता के साथ २ भांति भांति से फिरते हैं ॥ २२ ॥ ३ जरी की जालियों और ४ पाखरोंवाले जीनों से सजे हुए नखरावाली चाल में और ५ वेग के साथ फांदने में लीन ६ झुके हुए ललाटवाले और ७ बिजली के समान चपल और केतकी की कली के समान कानवाले ॥ २३ ॥ ८ चांदी के पत्रोंवाले खुरों से नाचने का खेल करते हुए और जिनके खुरों से खुरताल का मेल है सो मानों ९ चंद्रमा से कलंक का अथवा राहु का मेल है १० उन घोड़ों के चलने से उपमा रहित खेह उठती है सो मानों भूमि अपने ११ रक्षकों (घोड़ों) को धूप देती है ॥ २४ ॥ जे (घोड़े) १२ पराजय (हार) रूपी रोग समूह के वैद्य और विजय रूपी सिद्धि के शीघ्र साधनेवाले १३ शत्रु देखकर सम्पूर्ण पवन को जिन्होंने विजय किया है १४ सर्प भी बाल (केशवाली) के वेश में जिन की सेवा करते हैं ॥२५॥ १५ मस्तक धुनकर जिसको देखते हैं उसीको दौड़कर फांद जाते हैं १७ वे भूमि के पति (घोड़े) १६ कोट की रचना को छोड़कर फांद जाते हैं जिनकी मलंग देखकर कुलटा स्त्री तिरछी कटाक्ष डालने में लज्जित होकर छोड़ती है अर्थात् तिरछी कटाक्ष की शीघ्रता छोड़ती है ॥ २६ ॥

छेकत दयाल उड्डान आनि, जावत सह्यो न भुव कंप जानि ॥
कसि कसि अराल कोदंड कंध, व्यर्थी करंत ज्या जेरबंध ॥२७॥
बिच ग्रीव हेम शृंखल बिराजि, सोहत सुहि तरतक छबिहिं साजि
मिलि यालन जूरा लंबमान, बहु भल्ल अजब सुहि इक्क बान२८
गुन होत सिथिल ज्यों गति गहीर, त्यों त्योंहि खिचत यह जानि तीर ॥
इह छबि कलाप पृथु बालहस्त, सोहत हय धन्वी इम समस्त२९
बर नेत्रछादिनी दिय बखानि, जवनी जजि सालिग्राम जानि ॥
बजि प्रोथन प्रबिसत गंधवाह, दुरिजात पराजित जनु सदाह॥३०॥
स्वचरन समेटि मलपत सुहात, जनु टारि मेदिनी मर्मजात ॥
आवर्त्त फिरत कति अति उताल,जलनिधि अनीक सुहि भ्रमन जाल

१भूमि का कंप(धूजना)सहन नहीं होने के कारण मानों दया करके उड़ने जाते हैं, धनुष रूपी २ टेढे कंधे को खींच खींच कर जेरबंध रूपी ३ प्रत्यंचा को व्यर्थ करते हैं ॥ २७ ॥ गरदन के बीच में ४ सुवर्ण की सांकल शोभा देती है सोही उस धनुष की ५ मूंठ शोभायमान है और याल का लंबा ६ जूड़ा (केसपास) है सो बहुत भालोंवाला अपूर्व बाण है ॥ २८ ॥ गंभीर गति में ज्यों ज्यों ७ प्रत्यंचा ढीली होती जाती है त्यों त्यों ही ८ मानों वह तीर खिचता है ९ बडा बालछा (पूंछ) है सो ही उस धनुष का पूर्ण शोभावाला १० भाथा है ११ इस प्रकार के धनुषवाले सब वे घोड़े शोभायमान हैं ॥ २९ ॥ प्रशंसा करके श्रेष्ठ१२उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) "यथार्थमें इस का नाम अंधारी है परन्तु विरुद्ध लक्षणासे लौकिक में उजाली कहते हैं" लगाई है सो मानों सालिग्राम की पुजा में १३ कनात लगाई है, उन घोड़ों के १४ फुरणों (नासिकाओं) में घुसकर १५ पवन बजता है सो मानों वह पवन पराजित होकर १६दाह युक्त छिपता है "यहां बजने के कारण सदाह लिखा है अर्थात् कूकता हुआ छिपता है" ॥३०॥ १७ अपने चरणों को सिमेटकर छलांग लेते हुए ऐसे शोभा देते हैं मानों १८ भूमि के मर्म स्थानों को बचाकर जाते हैं कि कहीं इस के चोट नहीं लगजावे कितने ही घोड़े शीघ्रता पूर्वक १९ गोलकुंडा (चक्राकार) फिरते हैं सो ही २० सेना रूपी समुद्र में भ्रमियों का समूह है ॥ ३१ ॥

पल्लटत दराज गति बाज पूर, जम जैनक[1] दर्प दारक जरूर ॥
आवृत[2] वपु रोमन छबि अँखर्व[3], सेवत कि चित्त रय पढन सर्ब ।३२।
दिल्ली१रु सितारा२मिलि दुरूहैं[4], जिन किय तयार इम बाजि जूहँ[5]
सतदोय२००द्विरंद[6] किय सज्ज संग, अँदुक[7] प्रलंब अँचत अभंग ३३
वारिधि[8] जिहाज जिम लगत बात, हंके इम पयपय भुव हलात ॥
गतिमंद भरत मद अवर[9] गात, बिजँया[10]ऽभिसिक्त कटका हिबनात
पृथुकुंभ[11] सिरी करि पिहित[12] पीन, कंचुकि उरोज जनु थगित[13] कीन
रन नगर उच्च अँट्टाल[14] रूप, अतिसय बिसाल उच्छ्रय[15] अनूप ॥३५॥
दुव२कुंभ कुंभ सिखरक दिपंत, मंजुलध्वज[16] लंबित केतुमंत ॥
जिन रक्खि बाम दक्खिन जरूर, सूँतहि[17] सिखाय टरिजात सूँर[18] ३६
घुम्मत घुमंडि घन सघन घोर, जावत मिटात पँवमान[19] जोर ॥
सुंडा फटकारत नभ सुहात, जिहिँ त्रास संकि सिसुमार जात ३७
भननंकि भ्रमर कुंभन भ्रमंत, किय पँत्रभंगि[20] तिय कुच कि कंत ॥

पूर्ण लंबी गति से घोड़े पलटते हैं सो अवश्य १ यमराज के पिता का घमंड मिटाते हैं २शरीर के केशों की भ्रमरियों की ३बड़ी शोभा है सो मानों सब के कथन में वे चित्त के वेग को धारण करती है अर्थात् चित्त का वेग घोड़े से आगे नहीं बढ़ता इसीकारण भ्रमरी रूप से उसी शरीर में गोलाकार फिरता है ॥ ३२ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे ५ घोड़ों का समूह ६ हाथी ७ लंबी जंजीरें ॥ ३३ ॥ पवन लगने से ८ जैसे समुद्र में जहाज हिलै तैसे पग पग प्रति भूमि को हिलाते हुए चले ९ अधम अथवा पिछले शरीर से मंद मंद मद (जल) झरता है सो मानों सेना का १० विजय होने का अभिषेक करता है ॥ ३४ ॥ ११ बड़े और पुष्ट कुंभस्थलों को सिरी (मस्तक भूषण) से १२ ढके हैं सो मानों कांचली से कुचोंको१३ढके हैं. युद्ध रूपी नगरकी१४बुरजें अत्यन्त लंबी और उपमा रहित१५ऊंची हैं ॥३५॥ दोनों कुंभ कलश हैं सो तो सुमेरु पर्वतके शिखर हैं और सुंदर१६ध्वजाहै सो ही उसके ऊपर का केतुमान नामक खंड विशेष है१७सारथिको सिखाकर१८सूर्य बायां दहिना रखकर टलजाता है॥३६॥१९पवनका ॥३७॥२०मानों पति ने स्त्री के कुचों पर कस्तूरी आदि लेपन

पच्छिन हटात बमथून[1] पूर, गज्जत गुसैल[2] मंडत गरूर ॥ ३८ ॥
आटोप[3] रचत अंगुलि उठाय, काकोदर[4] भोग कि काल काय ॥
भासत कलाप[5] ग्रीवा प्रभान, मंदरगिरि[6] बासुकि घेर मान ॥ ३९ ॥
दोलायमान[7] श्रवर्नन[8] दिखात, गिद्ध कि जटायु पच्छन हलात ॥
अंदुक[9] प्रलंब जो व्है न अंग, मारैं मलंगि बाँजिन[10] मलंग ॥४०॥
जंजीर जबर जिनके सुहात, पद्धति हल पद्धति[11] रचत जात ॥
साजि डाकदार[12] हुव बिंटि संग, मारत बहु बेगुक[13] रचि मलंग ।४१।
दुति स्याम मुक्त कँच[14] दरस देत, पव्वय रहेकि गरदाय[15] प्रेत ॥
बारूद बिहित[16] चरखी बिसाल, जे करत डरत मग चित्र[17] जाल ।४२।
मग मत्त चरन डारत मरोर, अदभुत दिखात गति ओर ओर ॥
बारूद पूर्ण[18] जिम चलत बान, इम चलत स्वैर[19] जिततित अमान४३
इक१निमिख निवर्त्तन[20] अंतराय, दूजो[21]२न बनत निकटहि दिखाय॥
पच्छिम सन पूरब पलटि जाय, व्है बायु[22] लेत नैर्ऋत निराय[23] ॥४४॥
सत दुव २०० इम जंगम अद्रि सज्जि, बैल[24] हुव तयार रनतूर बज्जि

की रचना की है १ सुंड के जल कणों से २ गुस्से (क्रोध) में होकर ॥ ३८ ॥ ३ सुंड के अग्रभाग को उठाकर मस्तक पर टोप वा छत्र करते हैं सो मानों ४ काले शरीरवाला सर्प फण करता है ५ गरदन पर कलावा दीखता है सो ६ मंदर नामक पर्वत के वासुकि सर्प के घेरे के समान है ॥ ३९ ॥ ७ हिलते हुए ८ कान दीखते हैं सो मानों जटायु पक्ष हिलाता है जिन के शरीर पर लंबी ९ जंजीर नहीं होवे तो मलंग लगाकर १०घोड़ों की मलंग को दबादेवैं ॥ ४० ॥ जिनके बडे जंजीर, हल (लांगल) के मार्ग के समान ११मार्ग करते जाते शोभा देते हैं १२सांटमार सज्जित होकर उनको घेर कर साथ हुए सो मलंग लगाकर १३भाले मारते चले ॥ ४१ ॥ उन सांटमारों की १४केश रहित काली कांति दीखती है सो मानों पर्वत को प्रेत १५घेर रहे हैं १६ बारूद की बनी बड़ी चरखियों से डरकर मार्ग में १७आश्चर्य करते हैं ॥ ४२ ॥ जैसे बारूद का १८ भरा हुआ बाण स्वतंत्र होकर जाता है तैसे १९ स्वतंत्र होकर इधर उधर जाते हैं॥ ४३ ॥२०पलटने में वे हाथी एक निमेष से२१दूसरा निमेष(क्षण) नहीं होने देते और समीपही दीखते हैं २२ वायु दिशा में होकर नैर्ऋत दिशा को २३समीप लेते हैं ॥ ४४ ॥ २४ सेना में तयार हुए ॥४५॥

जवनन कुरान पढि किय निमाज, जुरि हिंकिय आरुहि बाजिराज
स्व वजीर निजामनमुलक सत्थ, सब साह सेन सज्जिग[1] समत्थ॥
इत हुव मलार१दत्ता२तयार, संभा३सुत जनकू४ रन सिंगार।४६।
जल गंग न्हाय करि दान जत्थ, पढि विष्णुकवच दस नाम[2] पत्थ॥
साजि यौं बनि दिल्लिय दल सहाय, लहि काल चले कर मुच्छ लाय॥ ४७॥
इततैं दरकुंचन भरि उडान, पहुँचपोहि आय दिल्लिय पठान॥
दलकौं पुर बाहिर कढत देर, नहिं मिलत भई दल[3] अपर नेर।४८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेद सिंहचरित्रे स्वसुतद्वय २ सन्धि १ यान २ विग्रहा ३ ऽऽदिशिशिक्षयिषुबुन्दीन्द्रबरवाड़पुरगमनसम्मुखसमागतमल्लारसम्मिलनश्रुतपठानअहमदषाहप्राप्तपंजाबप्रास्थितहुलकरसम्मतपरस्पप्रेषितपुत्रराव राट्सहप्रयाणान्यक्कृतजयपुरजनपदलुण्टनहुलकरसहायीहडेशसुप्त शिविरस्थसुभटसुहरणीशदशरथसिंहसनाभिशस्त्रमरणाकोटपुत्तलीसैन्यशिविरस्थापननवाबगाजुद्दीखानस्वामिदिल्लीशाऽऽलमगीरमारण

---

१ सजी ॥ ४६ ॥ २ अर्जुन के दश नाम ॥ ४७ ॥ सेना को नगर से कढते देर लगी परन्तु ३ सेना रूपी दूसरे नगर में मिलते देर नहीं लगी ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, अपने दोनों पुत्रों को सन्धि, यान, विग्रह आदि सिखाने की इच्छावाले बुन्दीन्द्र का बरवाड़ पुर में जाना और सामने आये हुए मल्लार से मिलना १ अहमदशाह पठान को पंजाब में आया हुआ सुनकर, हुलकर की सलाह से पुत्रों को घर भेजकर रावराजा का हुलकर के साथ जाना और जयपुर देश का अनादर करके लूटना २ हुलकर के सहाई हड्डेंद्र के डेरे में सोते हुए अपने उमराव सुहरणवाले दशरथसिंहका अपने सापिंडाभाईके शस्त्रसे मरना और कोट पूतली में सेना का डेरा होने पर नवाब गाजुद्दीखांका दिल्ली के स्वामी बादशाह आलमगीर को मारने की खबर सुनना ३ इस कारण से पंजाब को छोड़कर अहमदशाह का दिल्ली के मार्ग को लेना ४ बुन्दी के पति को बुन्दी भेजकर

समाकर्णितैतत्पक्षपञ्जाबा ऽहमदपाहदिल्लीसरणिसमासरणबुन्दीप्रेषितबुन्दीन्द्रलुण्टितसङ्करदापुरमल्लार १ जनकू २ दत्ता ३ ऽऽदिदिल्लीसहायीभवननिवेदितमहाराष्ट्रोपायनीभूतदण्डद्रम्मकोटिगाजुद्दीखाना ऽऽलीगोहरदिल्लीगद्दिकोपविशनसज्जितसकलपुरप्राकारपिस्पर्शयिषुपठानपृतनाप्रश्लेषणमष्टचत्वारिंशो ४८ मयूखः ॥ ४८ ॥ आदितः ॥३२९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लहलहमजनूँको ललित, तकिया बाहिर तत्थ ॥
मंडि मरन दुव दल मिले, सज्जन भ्मारि समत्थ ॥ १ ॥
सक रस ससि बसु ससि१८१६सिसिर, आगम उदित अनेह
संकर२पँहँ पठयो ३समर, न्यूँता ४नूतन नेह ॥ २ ॥
५पृतना इम मिलतैं प्रथम, लग्गी तोपन लाय ॥
रसना६ इक१ सततीन३०००रव, जे किम बरने जाय ॥ ३ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दग्यो तोप संदोह छोनी दरारी,बढयो धूम आवाज घाँघाँ बिथारी॥
फबैं लोल गोला करी१० कुंभ फुट्टैं, पताकानके पुंज टुट्टैं बिछुट्टैं ॥४॥

और संकरदा पुर लूटकर मल्लार, जनकू, दत्ता आदि का दिल्ली का सहाय होना, मरहठों की भेट के दंड के क्रोड़ रुपये नजर करके गाजुद्दीखां का आली गोहर को दिल्ली की गादी पर बिठाना ५ सब का सज कर पुर के कोट से पठानकी सेना को पीसने की इच्छावालोंका सेनासे मिलने का अड़तालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥४८॥ और आदि से तीन सौ उनतीस३२९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ शिव के पास ३ युद्ध का ४ नवीन स्नेह से ॥ २ ॥ ५ सेना. ग्रंथकर्ता कहते हैं कि मेरी एक ६जिव्हा से ७ तीन सौ तोपों के शब्द क्योंकर कहेजावैं ॥ ३ ॥ तोपों के ८ समूह के चलने से भूमि फटी और उन तोपों का धुआं बढ कर ९ दिशा दिशाओं में आवाज फैली शोभायमान चपल गोलों से१०हाथियों के कुंभस्थल फूटते हैं और ध्वजाओं के समूह टूटकर गिरते हैं।४।

बनैं फेरपैं फेर ज्यौं वाक्पवादी, गिरैं चोटसैं लोट सादी निसादी ॥
उडैंबाजि आयास धारा बिसारैं, बिमानावली बीच आयास डारैं ।५।
जगैं घोर अंधारमैं सोर ज्वाला, मनौं भद्दके अब्दमैं बिज्जुमाला ॥
हलैं सेसको ज्यौं फँटाको हजारा १०००, सिदैं त्यौं मही कान्त कल्पाभिसारा ॥ ६ ॥
लगैं चोटपैं चोट मातंग लोटैं, उडैं पत्ति जोटैं बचैं कोन ओटैं॥
घनैं घुम्मि घाँघाँ झुकैं हत्थि घोरे, बनैं ज्वालमाला अकूपार बोरे७
कछू काल दै तोप यौं रारि किन्नी, लरे फेरि लै खग्ग है बग्ग लिन्नी॥
धमंकी धरा बाढकैं बाढ बज्ज्यो, बढ्यो वीरको भीरुको नीर लज्ज्यो८
मिले दुग्ध पानीय ज्यौं जोध मत्ते, कला ऐंदवीसे चले काल कत्ते॥
कटैं कुंभ बाहित्थ सुंडा कलावा, कहाँ रुंड घुम्मैं अटैं देत कावा९

१ शास्त्रार्थ करनेवाले के वा नैयायिक के वचनों के समान तोपों के फैर होते हैं जिनकी चोट से २ घोड़ों के सवार और ३ हाथियों के सवार लुढकते हुए गिरते हैं घोड़े अपनी पांचों धाराओं (गतियों) को भूलकर ४ आकाश में उड़ते हैं सो ५ विमानों की पंक्ति में भ्रम पटकते हैं ॥ ५ ॥ उस भयंकर अंधारे में बारूद की झाल जलती है सो मानों भादों (भादवे) के ६ सजल मेघ में विजुली का समूह चमकता है "यहां सामान्य तथा शार्द्र शब्द के कहने पर भी विजुली के संबंध से मेघ का ग्रहण है" ज्यों शेषनाग के ७ फणों का हजारा (हजार फण) हिलता है त्यों भूमि ८ भीजती है और १० प्रलय के समान ९ लोह (शस्त्र) चलता है अर्थात् खड्ग चलते हैं ॥ ६ ॥ चोट पर चोट लगने से ११ हाथी लोटते हैं और १२ पैदलों के जोड़े उड़ते हैं सो किसकी आड़ में बचें. बहुत घूम कर टाम टाम हाथी घोड़े झुकते हैं और १३ अग्नि रूपी समुद्र में डुबोए हुए बनते हैं अर्थात् जलते हैं ॥ ७ ॥ कुछ समय तोपों से इस प्रकार युद्ध करके फिर तरवारें लेकर वीरों ने घोड़ों की बागें उठाई जिससे भूमि धूजनेलगी और बाढ पर बाढ बजनेलगा वहां वीरों का पराक्रम बढनेलगा और कायर लज्जित होनेलगे ॥ ८ ॥ मस्त वीर पानी और दूध के समान मिलगये और १४ इन्द्र संबंधी (वज्र वा बिजुली) की भांति काल रूपी खड्ग चले अथवा द्वितीया के चन्द्रमा की कलावाले (उज्वल और टेढे) काल के समान खड्ग चले हाथियों के १५ कुंभस्थल, ललाट के अधोभाग शुंड और कलावे कटते हैं और कहीं पर रुंड घूमते और फिर कर गोलकुंडा लगाते

छिकैं *कंधरा जीन बाजीन छुट्टैं, फबैंलीन जालीनमैं †संगि फुट्टैं॥
उडैं अस्थि ‡संघात के ओर ओरैं, छजै मेघ मानों घनैं§ग्राव छोरैं१०
कटैं उच्छटैं टोप जाली करक्कैं, फटैं पेट नागोद फैलैं फरक्कैं ॥
कढैं नैन छोरैं न लग्गी कनीनी, लसैं षट्पदी फूल ज्यौं संगलीनी११
बरक्कैं झरैं कंधरा अंस बाहा, उडैं मूर्द्ध मज्जा दहीसार आहा ॥
दिपैं बीर सुंडिज्ज जुज्झैं दिखावैं, परैं सस्त्रमैं सस्त्र छेटी न पावैं१२
व्यवच्छेद धन्वीनके दंस बेधैं, नमंती जुरैं कोटि द्वैधा निसेधैं ॥
तकैं सूरहू दूरवेधी तमासा, उडैं बाज के बाजके प्रान आसा।१३।
गिनैं लस्तकैं सत्रु व्है दूर गंठ्या, लहैं ऐंचि नीरैं सुपैं मन्नि लंठ्या
निहारो यहै चापमैं रीति नंठ्या, सुनैंही बनैं भीरु सैंठ्याऽपसठ्या१४
बजैं पत्रणा सोक त्यों भै बिथारैं, महातूणकी पूर्णता दीप्ति मारैं

हैं ॥ ९ ॥ * घोड़ों के कंध कटकर जीन खुलते हैं और कवचों में लीन होकर फूटीहुई † पंक्तियां शोभती हैं. कितने ही ‡ हड्डियों के समूह चारों ओर उड़ते हैं सो मानों मेघ बढ़कर बहुत § पत्थर (ओले) बरसाता है ॥ १० ॥ टोप कट कर उछलते हैं और कवच कड़कते हैं, १ पेट का कवच (पेटी) फटकर पेट फैलता और फुरकता है. नेत्र की पुतली को नहीं २ छोड़कर नेत्र निकलते हैं सो फूल के साथ में ३ भ्रमर की शोभा लेती है ॥ ११ ॥ ४ गरदन ५ कंधा और बाहू कटकर गिरते हैं ६मस्तक का भेजा उड़ता है सो ही ७प्रशंसा योग्य ७मक्खन है वीर लोग ९ पराक्रम को युद्ध करके दिखाते और प्रकाशित होते हैं और छेटी नहीं पाकर शस्त्र पर शस्त्र पड़ते हैं ॥ १२ ॥ १० धनुषधारियों के छोड़ेहुए बाण ११ कवचों को काटते हैं और धनुष की दोनों कोटियां (नोकें) नम कर मिलती हैं जो१२दो होने (जुदायगी) का निषेध करती हैं शूर लोक१३ दूर से वेधन करने का तमाशा देखते हैं और १४ कितने ही घोड़े १५ सिकरे (पक्षी विशेष) के बलकी आशासे उड़ते हैं ॥ १३ ॥ १६ धनुष की मूठ तो शत्रु को दूर मानती है और १७ प्रत्यंचा उनको खैंच कर १८ छेदन करने के योग्य मानकर समीप लेती है. धनुष में यह १९ नवीन रीति देखो कि२०सुनते ही कायर बायें दाहिने होजाते हैं अर्थात् सन्मुख नहीं ठहर सकते॥ १४ ॥ ज्यों २१बाणों की सनसनाहट बजती है त्यों भय फैलता है और २२ बडे भाथे की

डसैं कर्त्तरी सिंजकों आनि ज्योंज्यों, तितिच्छूटरैं दुष्टतैं साधु त्योंत्यों
नछोरैं तऊ तामसी वृत्ति धारैं, ज्यका कुप्पि ताकों तबैं दूर डारैं॥
परैं हीन संग्राह के चर्म पंती, भली जो बिनाँ अंघ्रि दौलेय भंती१६
वहैं सूल१ छूरी२ इली३ त्यों बरच्छी४, छवैं सालभी पंति ज्यों
तीर५ पच्छी ॥
दिपैं भू खंलूरी बनी कोस द्वैद्वै२, हलैं मत्त घाँघाँ खरैं रुंड ठ्हैठ्है१७
महा तारमैं प्रेत आलाप मारैं, नचैं जोगिनी लोंन भैरों उतारैं ॥
हसैं डाकिनी साकिनी घुम्मि हल्लैं, घनी रासमैं घुम्मरी घेर घल्लैं१८
जगी ज्वाल ज्यों कंतके देत जारैं, मरी यों डरी दिग्गजी चीह मारैं
अमा इंदुको रूप आदित्य धारयो, चिकै चक्क चक्कीन हाहा
उचारयो ॥ १९ ॥
फटैं खग्ग लग्गे बजे टोप फोरैं, घरयारी मनों प्रातकी घात घोरैं॥

पूर्णता प्रकाश करती है ज्यों ज्यों १तरवारैं आकर २प्रत्यंचा को काटती हैं त्यों त्यों दुष्ट से ३ क्षमाशील साधु टलै इस प्रकार वे धनुषवाले तरवारवालों से हटते हैं ॥ १५ ॥ तोभी ४ तमोगुणी वृत्ति को धारण करके वे तरवारोंवाले धनुषवालों को नहीं छोड़ते तब ५प्रत्यंचा साधु के समान क्रोध करके उनको दूर डाल देती है. रुंड से हीन होकर ६ढालों की पंक्तियां पड़ी हैं सो मानों बिना ७ पैरोंवाले सुंदर ८ कछुओं की तरह हैं. जिस प्रकार शूल, छुरा, तरवार और बर्छी चलती है तिसी प्रकार ९टिड्डियों की पंक्ति के समान बाण रूपी पक्षी आते हैं. वह भूमि दो दो कोस तक१०शस्त्राभ्यासकी भूमि(अखाड़ा) बनकर शोभती है जहां पर दिशा दिशाओं में मस्त होकर खड़े हुए रुंड बजते हैं ॥ १७ ॥ प्रेत ११ बड़े उच्च स्वर से गाते हैं, योगिनियां नाचती हैं और भैरव उन पर नौन (निमक) उतारते हैं. डाकिनियां और शाकिनियां घूमकर हंसी के साथ चलती हैं और नृत्य में बहुतेरी घूमर का घेर घालती हैं ॥१८॥ जली हुई ज्वाला ज्यों ज्यों १२ पतियों के दंतों को जलाती हैं त्यों त्यों डरी हुई दिशा की हथनियां मरी मरी कहकर चीखें मारती हैं. सूर्य ने १३ अमावास्या के चंद्रमा का रूप धारण किया अर्थात् सूर्य नहीं दीखा जिससे चूक (भूल) कर १४ चकवा चकवियों ने हाहाकार किया ॥१९॥ तरवारें लगने से फटे हुए टोप बजकर ऐसे शोभा देते हैं मानों घड़ियाल बजानेवाला प्रभातकी

मचे कोप१उच्छाह२थायी नमावैं,तथाहास२वीभच्छ४सोभावतावैं२०
बिधाता बढी सृष्टितैं दर्प छंड्यो, मनों मोति बिक्रेय बाजार मंड्यो
कुहू रत्तिमैं झंपि गिद्धी किलोलैं, डुबे सिंधु अंधार जे भोर डोलैं२१
घनें बान जोधानके उद्ध चारैं, मनों पूजिवे अच्छरी फूल डारैं ॥
बढैं मारपैं मार बिस्फार बानी, भयंकार आचार मंडैं भवानी॥२२॥
बनें बावरीकुंभ बानैंत बुल्लैं, सतीकेरं नारेर व्है खीज खुल्लैं ॥
अनी प्रान के जानके होत सूनी, पुकारैं बढो रे बढो यों चमूनी२३
मरे रे मरे भीरु कुक्कैं पलावैं, खरे रे खरे बीर अक्खैं टिकावैं॥
अरैं संगि के संगितैं अग्र ऐसैं, जुरे वैदुषी कोटि द्वै२तिक्ख जैसैं२४
घनें बीर छुत्तनकों भीरु धावैं, बकैं जीत भोरे बनीमैं बनावैं ॥
बिदूं दारि दंतीनैं बेधैं बरच्छी, अधो व्है चलैं अस्त्रकी रेल अच्छी२५

घड़ियाल बजाता है. वीर रस मचकर उसका स्थायी उत्साह नहीं समाता इसी प्रकार हास्य और १बीभत्स रस भी शोभा दिखाते हैं ॥ २० ॥२ ब्रह्मा ने बढी हुई सृष्टि का ३ घमंड छोडा और मृत्यु के ४ बेचने का बाजार रचा ५नष्टचंद्रा अमावास्या की रात्रि में झंप लेकर गिद्धनियां किलोलें करती हैं और ६ अंधेरे रूपी समुद्र में डुलकर भ्रमि रूप फिरती हैं ॥ २१ ॥ बहुत से वीरों के बा णा ७ ऊपर चलते हैं सो मानों उन वीरों का पूजन करने को अप्सराएं फूल डालती हैं, मार पर मार होकर ८ धनुष के शब्द की वाणी बढती है अर्थात् धनुष का शब्द होता है और देवी रक्त पीने का भयंकर आचार रचती है ॥ २२ ॥ बाणबंध ९ पागल स्त्री के घड़े के समान होकर बोलते हैं और १० सती के हाथ के नारियल रूप होकर क्रोध करते हैं "पागल स्त्री मटका और सती का नारियल ये दोनों शीघ्र नष्ट होजाते हैं" सेना के प्राण जाने से वह सूनी होती जाती है और ११सेनापति 'बढो बढो' पुकारते हैं ॥२३॥ कायर 'मरे मरे' कहकर १२भगते हैं और वीर लोग 'खड़े रहो खड़े रहो' कहकर उन्हें टिकाते हैं. १३ एक बरछी का अग्रभाग दूसरी के अग्रभाग से ऐसे मिलता है जैसे शास्त्रार्थ करनेवाले तीव्र १४ पंडितों की दो कोटि जुड़े ॥ २४ ॥ कई सोते (कटे) हुए वीरों को भगनेवाले कायर ढूँढते हैं और अपनी बनी हुई आपत्ति में भोले स्वभाववाले बककर जीत बनाते हैं १६ हाथियों के १५ पीतवानों (कुंभस्थलों के मध्यभागों) को विदारण करके बरछियां बेधती हैं सो १७ नीचे को १८रुधिर की उत्तम धार बहती है ॥ २५ ॥

सुही नारि वक्षोज द्वै२ मैं बिसाला, मनों बित्थरी लंब मानिक्य माला ॥

लगे सुंडिपैं स्याह के सेल हल्लैं, किधों कन्ह कालीयपैं घूमं घल्लैं२६

भये रंग१ कुल्हू१ भये लोहि२ भाले२, बलीवर्द३ भो वीर३ जी ४ इच्छु४ जाले ॥

किते पत्ति घोरेनकों मुंड मारैं, मनों धेनु ऊधन्य वच्छा अहारैं २७

कहीं अच्छरी सूरकों मंडि माली, बनावैं गरैं बाँह गावैं बिसाली॥

कहीं भिन्न कुंभीनँ लोही छछक्कैं, किधों तिंदुतैं फाल फुल्लिंग तक्कैं ॥ २८ ॥

भनंकार भैकार [12]भेरी बिथारैं, घटा भद्दकी जानि निर्घोस डारैं ॥

कहीं टोपकों खंडि खंडाँ[13] खटक्कैं, गुलाबी कली प्रात मानों च टक्कैं ॥ २९ ॥

छिदे केक कुंभीनतैं कंन्न[15] छुट्टैं, ति ज्यों वाततैं तालतैं पत्तन[16] तुट्टैं॥

कहीं क्रुद्ध बुक्केनकों [17]मींडि तोरैं, मनों [18]सूपमैं [19]सूद निंबू निचोरैं३०

सो ही स्त्री के १कुचों के भीतर मानों मानिककी लंबी माला फैली है. हाथी की सुंड पर कितने ही काले रंग के २भाले हिलते हैं सो मानों कालीनाग पर श्रीकृष्ण ३ घूमर लगाते हैं ॥२६॥ यह ४ युद्ध ही कोल्हू (घाणी) हुआ जिसमें भाले तो ५लाठ हैं और वीर रस इस कोल्हू में चलनेवाला ६ बैल और ७जीव ही इक्षु (गन्नों) के समूह हुए८कितने ही पैदल घोड़ों के मस्तक की टक्कर मारते हैं सो मानों९गौ के स्तनों को बछड़ा पीता है॥२७॥ कहीं पर शूरों को अप्सराएं माला युक्त बनाकर गलबाहीं डाल कर लंबे स्वर से गाती हैं और कहीं कटेहुए १० हाथियों से लोहू की पिचकारियां उड़ती हैं सो मानों ११ तींदू वृक्ष से अग्निकण उड़ते हुए दीखते हैं ॥ २८ ॥ १२ नौबत भयकारी शब्द फैलाती है सो मानों भादों की घटा गाजती है कहीं पर टोप को काट कर १३ खांडा(सीधी तलवार) खटकता है सो मानों प्रभात समय में १४ गुलाब की कली चटकती है॥ २९ ॥ कई हाथियों से कटेहुए १५कान छूटते हैं सो मानों पवन से ताड़वृक्ष के १६पत्ते टूटते हैं कहीं पर क्रोधित हुए वीर वृक्कों गुरदों को तोड़कर १७ मसलते हैं सो मानों १८ दाल में १९ रसोईदार नींबू निचोड़ता है ॥ ३० ॥ कहीं पर बैठेहुए वीर बहुत घावों से घूमरहे हैं और कहीं पर दौड़ कर क्रोध से लोथ लगती है

कहों बीर बैठे घनें घाय घुम्मैं, झपट्टैं कहों लुत्थितैं लुत्थि झुम्मैं ।
अहारैं कहों ऐंचि गोमायु अंती, प्रहारैं मनों पन्नगी मार पंती ॥३१॥
कढैं डाकिनी लिप्त लोही कलेजो, रँगे पट्ट ज्यों मट्टतैं रंगरेजी ॥
हबक्कैं कहों घाय बुल्लैं हजारैं, मनों तेगके ताप आक्रंद सारैं ३२
बिनोदैं कहों कंक बुल्लैं बनावैं, मनों बंदि ईरानको जै मनावैं
तमंके इत संग दिल्ली सितारे, उमंगे उतैं मिच्छ ईरानवारे ॥३३॥
दुहूँ ओर यौं हत्थ अच्छे दिखाये, घने हत्थि त्यौं सत्ति औ पत्ति घाये
सितारा रु दिल्ली थके दैव सारैं, मची आन ईरानकी भाँन मारैं ३४
छस्यो लोह संभा तनें १ देह छुट्यो, तथा बीर दत्ता २ पस्यो तेग तुट्यो ॥
जयानंद३कै जोरके घाय लग्गे,भिदे दक्खिनी ए३घने हारिभग्गे३५
अछूती अनी इक्क मल्लार१ कढ्यो, बली देस ईरानको जोर बढ्यो
दुयो भज्जिकैं खान गाजुद्दि दिल्ली,पराजै भयो जुद्धकी हाँसपिल्ली

॥ दोहा ॥

पुनि तजि खान कलीज तजि, आलीगोहर साह॥
हुव सरनागत जट्टको, लग्गि भरतपुर राह ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मिले अवर दिल्लीपतिके तब, सत्रुनमाँहिं नबाब सुभट सब ॥
इक हाफिज रहमुतुल्ला१ सठ, बिरचि हरास सुजादोला२ हठ ॥३८॥

कहीं पर १गीदड़ आंत को खैंचकर खाते हैं सो मानों मयूर २ सर्पों की पंक्ति को मारता है ॥ ३१ ॥ कहीं डाकिनियां लोहू से लिपे हुए कलेजे ऐसे निकाल ती हैं जैसे रंगरेज रंगेहुए वस्त्रों को माट से निकालता है कहीं पर हजारों घाव 'हबक् हबक्' बोलरहे हैं सो मानों तरवार के ताप से ३ कूकते हैं॥ ३२ ॥ कहीं ४ विलास करते हुए कंक पची बोलते हैं सो मानों ५ भाट लोग ईरान का जय मनाते हैं इधर दिल्ली और सितारा के ६ साथियों ने क्रोध किया और उधर ईरान के यवन उत्साह युक्त हुए ॥ ३३ ॥ ७ सांति घोड़े ८ पैदल ९ भाग्य के आधीन होकर१०कांति ॥ ३४ ॥ ११संभा का पुत्र ॥३५॥३६॥३७॥३८॥

बहुरि नजीमुद्दोला३ वालिस, पुनि सादूल्लाखान४ मिलन मिस ॥
अहमदखान पठान माँहिं इम, जुलमी मिलि सब भये दास जिम३९

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेऽहमदपाहरणविजयनसम्भासुत १ दत्ता २ वीरशय्याशयनजनकू ३ त्ततप्रापणसपरिकरमल्लार ४ निष्कसनकान्दिशीककलीजखानभरतपुरजट्टशरणग्रहणहाफिजरहमुत्तुल्ला१ नबावसुजाउदोला२ अनजीमुद्दोला ३ साहुल्ला४ऽऽदिदिल्लीशपरिकरसपत्नपठानपाहभेदोपायविषयीभवनमेकोनपंचाशत्तमो ४९ मयूखः ॥ ४९ ॥ आदितः ॥३३०॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दल बिगर्‌यो दिल्लीसको, मरहट्ठन गत मान ॥
बच्यो इक्क१ हुलकर बली, जित्यो अहमदखान ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जित्यो अहमदखान साह नादरको मारकँ ॥
दिल्ली दक्खिन दंडि बढ्यो निज जय विसतारक ॥
अंतरवेदी आदि विखय मंडत अप्पन बस ॥
प्रबिस्यो पूरबमाँहिं रचत स्वाधीन हुक्कम रस ॥
गंगा रु जमुन विच गयउ जब कलह विजय कौतुक करत॥

१ मूर्ख ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में अहमदशाह का युद्ध में विजय होना और संभा के पुत्र दत्ता का मारा जाना १ जनकू का घायल होना और परगह सहित मल्लार का निकलना २ कलीजखां का भाग कर भरतपुर में जाट का शरण लेना३ हाफिज रहमुत्तुल्ला, नबाव सुजाउद्दोला, नजीमुद्दोला, सादुल्ला आदि दिल्ली के पति की परगह का शत्रु पठान अहमदशाह के भेद उपाय से उसके वश में होने का उनचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥४९॥ और आदि से तीन सौ तीस ३३० मयूख हुए
॥ १ ॥ २ मारनेवाला ३ देश

भूपाल प्राच्य हाजिरि भये सब अधीन हित अनुसरत॥२॥

॥ दोहा ॥

आलीगोहर साह इत, तुरकन पति हत तोर ॥
आहवें जय ईरानको, जानि भयो गत जोर ॥ ३ ॥
संध्याकौं संग्रामतैं, इत मल्लार उठाय ॥
भिसँकनको आचरि भनित, दिन्नें घाय दबाय ॥ ४ ॥
पठयो कग्गर नन्द प्रति, द्रुत लिखि दक्खिन देस ॥
इहाँ पराजय अप्पनौं, सबविधि भयउ असेस ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत तमकि श्रीमंतसेन पठयो बहोरि सजि ॥
सेनानी निज सूनु रच्यो बिश्वासराव१ रजि ॥
निज काका पुनि निडर धीर चीमा१ अभिधानक ॥
भट दोउन२ सिर भीर अरपि दिय हुकम अचानक ॥
अँर जाहु पुत्र काका उभय२ दलहु जंग ईरान दल ॥
सत्तरि हजार ७०००० तुम संग भट खंडहु गाढ असेस खल ६
सुनि चीमा१ बिश्वासराव१ दुव२ लै दल दुद्धर ॥
मुदित चले मरहट्ट अवनि मिच्छन अँर उद्धर ॥
नाना रंग निसान उदित बज्जिग ध्वनि आयत ॥
कुंभिन नाना केतु खुल्लि हंकिय खेटायत ॥
पक्खर प्रसार छादित पहुमि प्रचुर कुंत अंबर पिहितं ॥
आवाज मुलक फुट्टिय असह्य बढत सेन संगर बिहितं ॥७॥
नागराज फन फटत कमठ दृढ पिट्ठि करक्कत ॥
गिरत मार तजि गह्ल दह्ल बाराह बरक्कत ॥

१पूर्वदिशा के राजा ।२।३।२युद्ध में३वैर्यों का कहा करके ।४।४पत्र५शीघ्र ॥५॥६सेना[illegible]ति७अपने पुत्र को किया८प्रीति करके९चीमा नामवाला१०शीघ्र ।६।११यवनोंके [illegible]से भूमि का उद्धार करने के लिये१२खेटा (युद्ध) करनेवाले१३बहुत भालों से [illegible]काश को ढका१४युद्ध करने को॥७॥शेषनाग के फण फटकर कमठकी दृढ

डरि दिग्गज डगमगत लगत वेपथु[1] लोकेसन ॥
छुट्टिग छितिपन[2] महल दहल फट्टिग सब देसन[3] ॥
मेवास[4] त्रास संकित दुमद हेरत सब आलोचि[5] हिय ॥
चतुरंग प्रचुर दक्खिन चढत किहिं सिर कोप कृतांत[6] किय८
गिरिन चूर मिलि ग्राव[7] धूरि अंबर[8] संकुलि थट ॥
मिटि दुग्गम मेवास[9] बनत पद्धर वट उब्बट ॥
अति अलात झरि अग्गि[10] लग्गि फैलत हय नालन ॥
तरु तालन तुंगत्व[11] ढह्यो जावत गज ढालन[12] ॥
बजि मंडु[13] १ बंब२ प्रतिबीं[14]दका३पटह४विजय मर्दल५पणव[15]६॥
रस वीर बढत सिंधुह रुचिर राग अतुल आलाप रव[16] ॥९॥
फोजन लगि लगि फेट मुरत प्रतिहत रय मारुत[17] ॥
मिच्छन थर थर मुलक होत घरघर डर हारुत[18] ॥
वन्य सत्व[19] दल बीच रहत थकि थकि हत रंहस[20] ॥
महुरैं[21] सलिल मिलाप तकत चंदोल पंक[22] तस ॥

पीठ तूटी, भार पड़ने से गाढ छोड़कर बाराह की दाढ तूटी, दिशा के हाथी डरकर हिलने लगे, लोकपालों को १ कंप होने लगा २राजाओं से महल छूटने लगे, दशों दिशाओं में ३ भय फैलगया, इस सेना की त्रास से शंका होकर ४लुटेरों के घरों में उदासीनता हुई और अपने हृदय में सब लोग यह५विचारने लगे कि दक्षिण की बहुत सेना चढ़ती है सो ६ यमराज ने किस पर कोप किया है ॥ ८ ॥ पर्वतों का चूर्ण होकर ७ पत्थर पिसकर उनकी धूलि के समूह से आकाश ८ भरगया, चारों ओर लुटेरों के ९ दुर्गम घरों का नाश होकर मार्ग और अमार्ग सीधे होगये, घोड़ों की नालें लगकर अत्यंत १० अग्नि झड़ी, तालवृक्षों की ११ ऊंचाई के समान १२हाथियों के झंडे गिरनेलगे १३वाद्य विशेष, नगारे, १४ मांगलिक बाजे, पटह नामक बाजे, मर्दल और १५ ढोल बजकर वीर रस बढ़ा और सुंदर सैंधवी रागिनी के बडे आलाप का १६ शब्द हुआ ॥ ९ ॥ फौजों की फेट लगने से १७ पवन का वेग रुकने लगा, म्लेच्छों का मुल्क धूजकर भय से घर घर में १८ हाहाकार शब्द हुआ वन के १९ जीव २० हतवेग होकर थक थक कर सेना के बीच में रहनेलगे जिस २१ सेना के आगेवालों को पानी मिलता है उसी के पीछेवालों को २२कीचड़

संतनुतनूज[1] रन तल्प सम नभ सुहात तोमर निकरं[2] ॥
कै नभ निखंग[3] रक्खिय कुपित श्रीमंतहिं रन करन सर॥१०॥

॥ दोहा ॥

मरहट्टन दल इम अमित, मत्थ घसत ब्रह्मंड ॥
हिंदुसथान प्रविष्ट हुव, अरिगन हनन अखंड[4] ॥ ११ ॥
अहमदखान पठान इत, बढिगो अंतरवेद ॥
दिल्लिय पहुँचे दक्खिनी, खलन प्रसारन खेद ॥ १२ ॥
दिल्लियपुर प्रविसे दुसह, मरहट्टे छक मत्त ॥
आलीगोहरकौं अटकिं[5], छितिप भये[6] धरि छत्त ॥ १३ ॥
नन्ह पित्तृव्यक[7]सूनु[8]सन, मिल्यो आनि मल्लार ॥
अक्खिय दिल्लिय करहु अब, सुद्ध धरम अनुसार ॥ १४ ॥
मुगलनके तब सब महल, धोरन लिन्न छुपाय ॥
गव्यपंच[9] जल गंग करि, दिय दिल्लिय छिरकाय ॥ १५ ॥
वास्तुकर्म[10] अरु हवन[11] बलि, सुरपूजन[12] करि सूर ॥
धारि निगम[13] हिंदुन धरम, प्रेरयो दिल्लिय पूर॥ १६ ॥
ग्रीखम ऋतु मुनि ससि धृति१८१७ग, इम बनि दिल्लिय ईस॥
दल सज्जित किय दक्खिनिन, रचि सत्रुन सिर रीस ॥१७॥
अहमदखान पठान उत, बहुदिन अंतरबेद ॥
रह्यो अमल अप्पन रचत, भूपन डारत भेद ॥ १८ ॥
दिल्लीपति इत दक्खिनी, हुव सो सुनि हुसियार ॥

मिलता है १ भीष्म की शरशय्या के समान भालों के २समूह से आकाश शोभित होता है किधौं वह आकाश भालों से ऐसा दीखता है कि मानों श्रीमन्त ने क्रोध करके आकाश को ३ भाथा बनाकर उस में भाले रूपी बाण रक्खे हैं ॥ १० ॥ ४ सब ॥ ११ ॥ १२ ॥ आलीगोहर नामक बादशाह को ५ रोककर ६ आप दिल्ली के राजा हुए ॥ १३ ॥ नन्ह के ७काका के ८ पुत्र से ॥ १४ ॥ ९ पंचगव्य से ॥ १५ ॥ १० नांगल (वास करने का मुहूर्त) ११ होम १२ देवपूजन १३ वेद के अनुसार ॥१६॥१७॥१८॥

पलटयो अहमदखान पुनि, कुल हिंदुन खय कार ॥ १९ ॥
सप्त चंद्र धृति१८१७ मान सक, माघ सिसिर लहि मेल ॥
मकर प्ररोहत अहिमकर, आये तुरुक अठेल ॥ २० ॥
पृतनालक्ख१०००००पठानकी,दिल्लीकी दुव२०००००लक्ख
जाय मिली सब इकत्रुर३०००००,तमकि उठावन तैक्ख२१

॥ पादाकुलकम् ॥

वढि इततैं बिस्वासराव१ बलि, चीमा२ अरु जनकू३ मलार४चलि ॥
नैन मिलत असिबर करि नग्गे, लरन खान अहमद सन लग्गे।२२।

॥ प्लवङ्गमम् ॥

मिलि इततैं मरहट्ठ व्रात रन बित्थरयो, उततैं अहमदखान नक्खि हय उप्परयो ॥
वादी प्रतिवादी कि व्याकरन१ न्याय२ के, कल्पक रचि रचि कोटि भिरे पटु भायके ॥ २३ ॥

॥ चञ्चला ॥

यौं इरान१ दक्खिनी१ मिले चलाय द्वैर अनिक ॥
सस्त्रके प्रहार घोर बित्थरे मच्यो समीक ॥
उत्तमंग उच्छरैं कटैं कपाल भूरि भाल ॥
केक भिन्न व्है गिरैं सिपाह के भिरैं कराल ॥२४॥
अच्छरीनके छपे वितान रूप लैं विमान ॥

॥ १९ ॥ १ मकर संक्रान्त पर चढ़ा २ ठंढ नहीं करनेवाला (सूर्य) ॥२०॥ ३ ताखे (घोड़े) उठाते हुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ इधर से मरहट्ठों के ४ समूह ने मिल कर युद्ध फैलाया और उधर से अहमदखां घोड़े उठाकर चला सो मानों ५ व्याकरण और ६ न्याय के वादी और प्रतिवादी ७ कल्पना की हुई कोटि रचरच कर ८चतुरता की रीति से भिड़े ॥ २३ ॥ इस प्रकार ईरानी और दक्खिणी दोनों सेनाओं को चलाकर मिले शस्त्रों के घोर प्रहार फैलकर ९ युद्ध हुआ जिसमें१०मस्तक उछलनेलगे कपाल और ११ बहुत ललाट फटनेलगे कितने कट कर गिरने लगे और कई सिपाही भयंकर युद्ध करनेलगे ॥ २४ ॥ अप्सराओं के विमान १२ चंदुए की तरह छागये चीलहें, गिद्ध और सिचान

चायसौं रहे किलोलि चिल्ह१ गिद्ध२ ऱ्यों सिचान३ ॥
जुग्गिनीनकी जमाति आनिकैं नची जरूर ॥
साकिनीनके समूह उल्लसे सिराहि सूर ॥ २५ ॥
सिंहकौं अरोहि कालिका रु बैलकौं महेस ॥
आप संगही खरे बनैं तमासगीर बेस ॥
दान सुक्कि दिक्करी करंत चिक्करी पुकारि ॥
सेस औ बराह कुम्म होसकौं रहे बिसारि ॥ २६ ॥
रत्तमैं भरे कबंध मत्त के फिरैं उताल ॥
भूमिके तनूज जानि आनि ए नचैं बिसाल ॥
काचकी चुरी समान होत खंड खंड केक ॥
उल्लटैं प्रहार भीरु ही फटै हटैं अनेक ॥ २७ ॥
कालखंज१ उच्छटे कटे गिरंत प्लीह२क्लोम३ ॥
होत खग्ग अग्गिमैं सुमार हीन प्रान होम ॥
जौ तजैं अनेक भीरु भज्जिबो बिचारि जंग ॥
ज्यौं निमग्ग बारि प्रान त्रानकौं गहैं तरंग ॥ २८ ॥

पक्षी उत्साह से किलोलें करने लगे. योगिनियों की जमात निश्चय ही नाचने लगीं और शाकिनियों के समूह वीरों की प्रशंसा करके हर्ष युक्त हुए ॥ २५ ॥ कालिका सिंह पर और महादेव बैल पर १ चढकर आये और साथ ही अधिक तमासबीन बनकर खड़े रहे २ दिशाओं के हाथी मद सूखकर चीख मार कर पुकारने लगे. शेषनाग, वाराह और कच्छप चेत भूलगये ॥ २६ ॥३ रुधिर में भरेहुए कई मस्त ४ कबंध (बिना माथे के क्रियावान् धड़) शीघ्रता से फिरनेलगे सो मानों कई ५ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) आकर नाच करते हैं और कई वीर काच की चूड़ी के समान टूक टूक होते हैं और ६ कई कायर प्रहारों से उलटते हैं और हृदय फट कर हटजाते हैं ॥ २७ ॥ ७ कलेजे उछटते हैं और कटेहुए ८ तिल्ली और ९ फेफरे गिरते हैं १० खड्ग रूपी अग्नि में ११ गणना रहित प्राणों का होम होता है अनेक कायर युद्ध से भगना विचार कर १२ जीव छोड़ते हैं जैसे १३ पानी में डूबता हुआ प्राण की रक्षा के लिये १४ उसी पानी की लहर को पकड़ता है ॥ २८ ॥

*प्रोथ१ त्यों हय †च्छटा२ कटैं ‡निगाल३ §कश्य४ पीनं ॥
होत अंग हीन ह्वै गिरैं ¶बिभंग तंग१ जीन२ ॥
खग्गघात द्वार ह्वै चलैं अनेक रत्त खाल ॥
बप्प माय उच्चरैं फिरैं अनेक भै बिहाल ॥ २९ ॥
मंद केक भीरु भज्जि यों टरैं सहै न मार ॥
ज्यों कपीस मालकोसमैं ऋकार१ ओ पंकार२ ॥
केक बीर हत्थकों भले दिखात खग्ग आनि ॥
षड्ज अंत्य मूर्च्छना बिलावली बनात जानि ॥ ३० ॥
टंकरैं अमाप चाप बानको बनैं बितान ॥
कालको निदान लैन ज्या लगैं प्रबीर कान ॥
के चलैं कृपान१ सांगि२ कुंत३ त्यों छुरी४ कटार५ ॥
कंकटी कराल सूर छिन्न ह्वै गिरैं कुठार ॥ ३१ ॥
हत्थदे मही कितेक घुम्मिकैं उठैं हकंत ॥
छाक कापिसायनी मनों गमार लै छकंत ॥
कालसे कराल खात के फिरैं छुटे कलंबै ॥
बैंक बिंब चक्र के चलैं मनों कि सक्क संबै ॥ ३२ ॥

---

*फुरने †गरदन ‡कंठ और §पुष्ट कमर, इन अंगों से हीन होकर कटेहुए घोड़े और ¶विशेष भंगहुए तंग और जीन गिरते हैं तरवारों के घावों के द्वारा रुधिर के अनेक नाले चलते हैं तहां भय से अनेक लोग बेहाल होकर 'बाप' 'मा' ऐसे उचारते फिरते हैं ॥२९॥ इस प्रकार कई १मूर्ख और कायर भगकर ऐसे टलजाते और मार नहीं सहते हैं जैसे २हनुमान के मत के मालकोष राग में ३ ऋषभ और४पंचम स्वर टलजाते हैं कई वीर तरवार के अच्छे हाथ ऐसे दिखाते हैं मानों५षड्ज स्वर की अंतिम मूर्छना ६बिलावल रागिनी को बनाती है ॥३०॥ प्रमाण रहित धनुषों की ७ टंकार होकर बाणों का ८ बितान बनाता है और ९समय का कारण पूछने को १० प्रत्यंचा वीरों के कानों से लगती है कितने ही तलवार, बरछी, भाला, छुरी और कटार चलते हैं जिनसे ११कवच धारण करनेवाले भयंकर वीर कटकर १२ कुरी भांति गिरते हैं ॥ ३१ ॥ कितने ही वीर १३ भूमि पर हाथ देकर घूमते हुए उठकर चलते हैं सो मानों १४मद्य की छाक लेकर गवार छकते हैं कई १५बाण छूटकर काल के समान भयंकर होकर खाते फिरते हैं और कई१६टेढे बिंबवाले चक्र चलते हैं सो मानों इंद्र का१७वज्र है॥३२॥

उत्तमंग१ कंधरा२ गिरैं अतीव बाहु३ अंस४ ॥
बंस५पिट्ठि पंसुली लगी मनौं कि पत्र बंस ॥
तेगके प्रहार केक रत्तके६ रचंत ताल ॥
सीसव्है सरोज७ तत्थ कुंतलावली८ सिवाल ॥ ३३ ॥
धीर के करीन९तें मलंगि झंप यों धरंत ॥
कूंट१०तें कि केहरी नदी कि तेहरी करंत ॥
बख्तहीन व्है किते दुरैं करीनि११ पाय बीच ॥
नाथ श्रावकीन१२के मनौं कि थंभ१३ भोन नीच ॥ ३४ ॥
व्यंजनावली१४ पिसाच सूंद१५ के करैं बिसाल ॥
पाहुनी बुलात न्यौंति जुग्गिनीन खेत्रपाल ॥
छुट्टिजात केन१६के गुमान बान पोन१७ छ्वैहि ॥
लब्धवर्ण१८ अग्ग ज्यौं कुकाव्य१९ छिन्न भिन्न व्हैहि ॥ ३५ ॥
होत सूर सोगुनैं उछाहमाँहिं दै प्रहार ॥
दैन लैन भिन्न पैं२० बढै कि बावनावतार ॥
होत अंग हानि पै कितेनके रुकै न पानि२१ ॥

बहुत १ मस्तक २ गरदन, भुज और ३ कंधे गिरते हैं और ४ पीठ की हड्डी के लगीहुई पांसुली गिरती है सो मानों ५ बांस के लगा हुआ पत्ता गिरता है तलवार के प्रहार से कई ६ रुधिर के तालाव बनते हैं जिन में मस्तक तो ७ कमल और ८ केशों की पंक्ति शैवाल (सैंवाल) है ॥ ३३ ॥ कई धीर लोग ९ हाथियों से ऐसे कूदते हैं जैसे १० पर्वत से सिंह और तीन छलांग मारती हुई नदी कूदती है कई वस्त्र हीन होकर ११ हाथियों के पैरों में छुपते हैं सो मानों १२ जैनियों के देवता १३ मकानों के थंभों के नीचे स्थित होरहे हैं ॥ ३४ ॥ १५ रसोई पकानेवाले कई पिशाच १४ भोजन के पदार्थों की बडी पंक्ति बनाते हैं चेत्रपाल न्योंता देकर योगिनियों को पाहुनी बुलाते हैं बाणों के पवन को १७ छूते ही १६ कइयों के घमंड ऐसे छूट जाते हैं जैसे १८ पंडित के आगे १९ खोटा काव्य छिन्न भिन्न होजाता है ॥ ३५ ॥ प्रहार देने में धीर लोग सौगुने उछाहवाले होजाते हैं जैसे देने और लेने में वावन अवतार के २० पैर बढते हैं अंग की हानि होने पर भी कितनों ही के २१ हाथ ऐसे नहीं रुकते जैसे यून (जुए) के खिलाड़ी हारने में भी मिठास जानकर

जानि झारिमैं मिठास थूनके खिल्लार जानि ॥ ३६ ॥
अद्धफार ह्वै गिरैं किते तुखार खग्ग ऊंति ॥
बंटि लेत भ्रात द्वै मनों कि बप्पकी विभूति ॥
केतु रत्त लिप्त के करीनपैं करैं प्रकास ॥
लाखरंग भास राधमासमैं मनों पलास ॥ ३७ ॥
डाकिनी कितीक बीर अंत्र लेत कंठ डारि ॥
मालिनी बिडारि ज्यों प्रमत्त लेत माल धारि ॥
के प्रबीर धीर कट्टि सत्रुकों नये प्रकार ॥
चित्रकार बुद्धिमैं करैं ति चित्र चित्रकार ॥ ३८ ॥

प्रकार१ त्रकार२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

के गदा प्रहारकैं हनैं सकोप मत्थ इट्ठ ॥
लोहकार कूटपैं मचैं मनों कि लोह रिट्ठ ॥
प्रेत के प्रतप्त गोदकों सिरात बंक्क पोन ॥
लेत के प्रबीर ब्याहि अच्छरी उतारि लोन ॥ ३९ ॥
रंगमांहिं बंदि के अनंदि बंदि देत रंग ॥
पिक्खि जंग जो रह्यो अनूरु रुक्कि कैं पतंग ॥

खेलनू से नहीं रुकते ॥ ३६ ॥ १ कितने ही घोड़े तलवार की २ क्रीड़ा में ऐसे आधे कटकर गिरते हैं जैसे पिता के ३ ऐश्वर्य को दो भाई बांट लेते हैं कई हाथियों पर ४ रुधिर से पुती हुई ध्वजाएं प्रकाश करती हैं सो मानों ५ वैशाखमास में लालरंग से ढाक प्रकाशित होता है ॥ ३७ ॥ कितनी ही डाकिनियां वीरों की आंतें कंठ में ऐसे डाललेती हैं जैसे मस्त मालनियां फूलों की माला ६ निकाल कर धारण करलेती हैं कई धीर वीर शत्रु को नवीन रीति से काटते हैं सो ७ चितेरे की बुद्धि में ८ चित्राम करने का आश्चर्य कराते हैं ॥ ३८ ॥ कितने ही गदा का प्रहार ९ इच्छानुसार मस्तक पर करते हैं सो मानों १० लुहार की ११ ऐरण पर १२ लोह मुद्गरों का निरंतर प्रहार होता है कई प्रेत १३ तपे हुए मांस को १४ शुष्क [illegible] पवन से ठंडा करते हैं और कई वीरों को अप्सराएं नौंन (निमक) उतार कर ब्याह लेती हैं ॥ ३९ ॥ १५ युद्ध में कई १६ भाट प्रसन्न होकर १७ नमस्कार करके आशीषें देते हैं अर्थात् प्रशंसा करते हैं, जिस युद्ध को १८ सूर्य १९ अरुण नामक सारथि को रोक कर देख रहा है. कई तरवार

केक तंग मारदै हरैं करीन उत्तमंग ॥
तोरि शृंग मेरुके चलैं मनौं कि धारगंग ॥
के प्रसन्न गूदतैं अघाय होत गिद्ध कंक ॥
त्यौं प्रछन्नद्वारके प्रवेस खर्ब ठ्है निसंक ॥
हत्थि घाय फारमैं दुरैं कितेक भीरु हंत ॥
ब्रध्नको उगान जानि चोर ज्यौं दरी बसंत ॥ ४१ ॥
कुब्ज१ अंध२ खंज३ ठ्है नचैं पिसाच हास काज ॥
साकिनी बढाय दंत के करैं विरूप साज ॥
ईसके हिये गयेहु सीस के कहैं उतारि ॥
नाथ लेहु धारि नैंक जुद्धदंतकौं निहारि ॥ ४२ ॥
सैव्य स्वीय रत्त डारि टोपमैं कितेक सूर ॥
होय नम्रगात आत मात कालिका हजूर ॥
होत सत्व छोरि एकवारके किते महीप ॥
दीपिका करैं न तैलहीन ज्यों दसा प्रदीप ॥ ४३ ॥
दोयर प्रेत अंतलै फिरैं कहौंक घेर देत ॥

मारकर हाथियों के मस्तक काटते हैं सो मानों सुमेरु का १ मस्तक तोड़ कर गंगा की धारा चलती है ॥ ४० ॥ कितने ही गिद्ध और कंक २ मांस से तृप्त होकर प्रसन्न होते हैं जैसे ३खिड़की के द्वार में ४ छोटे शरीर वाला शंका रहित प्रवेश करता है तैसे वे मांसभोजीपची मृतक हाथी आदि के शरीरों में प्रवेश करते हैं कई कायर घायल हाथियों के५घावों में ऐसे छुपते हैं जैसे६सूर्य का उदय होना जानकर चोर ७ गुफाओं में घुसते हैं ॥ ४१ ॥ कई पिशाच हास्य करने को ८कुबड़े, अंधे और ९ खोड़े होकर नाचते हैं कितनी ही शाकिनियां दांत बढाकर कुरूप साज बनाती हैं, १०शिव के हृदय पर (मुंडमाला में) गयेहुए भी कई मस्तक कहते हैं कि ११ हे नाथ हमको उतार कर कुछ१२दांतों का युद्ध भी देख लो "क्योंकि खाली मस्तक केवल दांतों का ही युद्ध करसकता है" ॥ ४२ ॥ कई वीर अपना १३तुर्त का रुधिर टोप में डालकर १४ झुककर कालिका माता के सामने आते हैं. कई राजा एक ही वार में १५पराक्रम छोड़ देते हैं जैसे तैल से हीन १६दीपक में १७ वत्ती प्रकाश नहीं करती ॥ ४३ ॥

खेतकार¹ लट्टिबे लगैं जरीब जानि खेत ॥
जंगमैं मलंग केक मल्ल व्है लगात जोध ॥
रंग² माँहि रंग³ लै करैं कितेक जोध रोध ॥ ४४ ॥
सत्रुकंठ दंत दै पिवंत रक्त केक सूर ॥
गड्डरी पछारि सारदूल ज्यों घनें गरूर ॥
मेघव्है मिले अनीक द्वै⁵ प्रकोप बात⁶ मेल ॥
खग्ग त्यों कटार२ कुंत३ सांगि४ बान५ बुंद⁷ खेल ॥ ४५ ॥
के करीन⁸ अंग लीन सस्त्रके करैं प्रकास ॥
भानु⁹ अंधकारमैं करैं अनेक जानि भाँस ॥
सोरकी सिखा सिलग्गि जोरकी सु गज्जि जात ॥
औरकी कहाँ कितीक घोर¹¹की घटा दबात ॥ ४६ ॥
होत जंग यौं लही समस्त दक्खिनीन हारि ॥
उद्यमी कहा करैं न दैव¹² भद्र आनुसारि ॥
वित्थरे¹³ घुमंडिकैं इरान मिच्छ¹⁴ जै बनाय ॥
खीजमैं भये गये घनैं अरीन प्रान खाय ॥ ४७ ॥

कुण्डलिका

कहीं पर आंत लेकर दो प्रेत घेरा देते फिरते हैं सो मानों १ खेती करनेवाले लाटने के लिये खेत में जरीब लगाते हैं कई युद्ध में मल्ल होकर कूदते हैं और २युद्ध में ३ प्रशंसा पाकर कई वीर दूसरों को रोकते हैं ॥ ४४ ॥ कई वीर शत्रु के कंठ में दांत लगाकर ऐसे रक्त पीते हैं जैसे ४ सिंह बडे घमंड से भेड़ को पछाड़ कर रक्त पीता है. क्रोध रूपी ६ पवन के मिलने से मेघ रूप होकर जैसे दोनों ५ सेना मिली तैसे ही तलवार, कटार, भाला, बरछी और बाणों की ७बूंदों से खेलहै ॥ ४५ ॥ कितने ही ८ हाथियों के अंगों में लीन हुए शस्त्र प्रकाश करते हैं सो मानों अंधकार में अनेक ९ सूर्य १० प्रकाश करते हैं. बारूदसे अग्नि लगकर जोरकी गर्जना करती है सो और की क्या कहूं ११भयंकर घटा की गर्जनाको दबाती है॥४६॥ इसप्रकार होते हुए युद्ध में दक्षिणियों की हार हुई सो१२भाग्य शुभ नहीं हो तो उद्यमी क्या करै१४ईरान के म्लेच्छ जीतकर घुमंड कर१३फैले और क्रोध में होकर बहुत शत्रुओं के प्राण खागये॥४७॥

पानिप करि जुज्झे प्रबल, इम दक्खिन ईरान ॥
करन अजय दूरीकरन, करन बिजय मतिमान ॥
करन बिजय मतिमान, रँगँ कुरुखेत जंग रुचि ॥
रुचिधर अहमदखान, जयो हुत अरि कृपान सुचि ॥
न सुचि भजे मरहट्ठ, न सुचि भज्जे स्यानिपँ करि ॥
निपँ करि लये बधाय, गये अच्छरि पाँनि पकरि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

चीमाके सिरकी चटकँ, खोजि कँटक रन खेत ॥
हारयो करि आयास हर, हारयो तदपि न हेत ॥ ४९ ॥
जया तनय संघपा जिमहि, जनकू अमरख जग्गि ॥
न मिल्यो रंचक पँलचरन, गो तरवारिन लग्गि ॥ ५० ॥

॥ षट्पात् ॥

तनय नन्हके तिमहि बीर बिस्वासराव बढि ॥
नक्खे तुँरग निसंक पानँ पकरहु पठान बढि ॥

---

*ऊपर कहीहुई रीति से १पराक्रम करके२हाथों से पराजय को ३दूर करने और ४विजयकरने को दक्षिणी और ईरानी दोनों बुद्धिमान प्रबलता पूर्वक ऐसे लड़े जैसे बुद्धिमान् ५कर्ण और६अर्जुन ने कुरुक्षेत्र के७युद्ध क्षेत्र में ८रुचि पूर्वक युद्ध किया था ९ क्रान्ति को धारण करनेवाले अमदखान ने तरवार रूपी १०अग्नि में शत्रुओं को होम करके जय किया, इधर मरहठों ने भी ११ शृंगार रस का सेवन नहीं किया और१२बुद्धिमानी करके१३मृत्यु से नहीं भगे "माघ काव्य के टीकाकार ने शुचि शब्द का अर्थ मृत्यु लिखा है" जिनको स्वर्ग में १४ कलश बंधाकर देवताओं ने वधा लिये और वे मरहठे अप्सराओं के १५हाथ पकड़कर गये ॥ ४८ ॥ चीमा के मस्तक के १६ टुकड़े को १७ सेना के युद्धक्षेत्र में हेरकर शिव १८ परिश्रम करके थक गये १९ तोभी उस (मस्तक के टुकड़े) से स्नेह नहीं छोडा अर्थात् उसके नहीं मिलने पर भी हेरते ही रहे ॥ ४९ ॥ २० मांस खानेवालों को कुछ नहीं मिला ॥ ५० ॥ २१घोड़े डाले अर्थात् शत्रु की सेना में घोड़े उठाये, यहां विरुद्ध लक्षणासे घोड़े उठाये ऐसा अर्थ होता है"२२हाथों में

* ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के मत से कुण्डलिया छन्द में दोहे के अन्तिम चरण को पलटाने में अर्थश्लेष नहीं होवे तो उसको पुनरुक्ति मानते हैं जिसका ही उदाहरण यह कुण्डलिया है ॥४८॥

होरी जिम हुरियार निडर झारी अँसि नागिनि ॥
करी बहुत लरि कुमर दुँजन तिय दुसह दुहागिनि ॥
सुरलोक रंभ अच्छरि सहित गंधर्बन गीत सु गयो ॥
श्रीमंत सुवन हारि न समुझि तरवारिन तिल तिल भयो ५१

॥ दोहा ॥

रामराव१ नारुव२ रघुव३, बाला४ त्र्यंबक५ बीर ॥
रामचंद६ अंबा७ रतन८, सखाराम९ हमगीर ॥ ५२ ॥
इत्यादिक उमराव सब, दक्खिनके तजि देह ॥
नाक गये बंधन नवल, नाक कलत्रन नेह ॥ ५३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेलब्धजया ऽहमदखानसमस्थलीसंविशनानिवारितजनकूक्षतमल्लारपराजयपत्रदक्षिणप्रेषणश्रीमन्तनन्हसुतविश्वासराव१ पितृव्यकचीमा २ मुख्यसप्ततिसहस्र ७०००० सैन्यप्रेषणतदालीगोहरनिग्रहणदिल्लीशुद्धसंस्करणश्रुतैतदहमदखानाऽऽगमनदिल्ली १ रान २ सेनैकपमहाराष्ट्रसैन्यमहारणभवनससामन्तविश्वासराव १ चीमा २ जनकू ३ मरणयवनजयसंवर्द्धनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥५०॥ आदितः ॥ ३३१ ॥

पठानों को पकड़ा ऐसा कहकर १ होली के दिनों में फाग (गेहर) खेले जैसे २ नागणी रूपी तरवार ३ शत्रुओं की स्त्रियों को ४ अप्सरा को बांई तरफ लेकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ स्वर्ग में ६ नवीन ७ स्वर्ग की स्त्रियों से ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में जय पाकर अहमदशाह का अन्तरवेद में जाना और जनकू के घाव मिटाकर मल्लार का हारने का पत्र दक्षिण में भेजना १ श्रीमन्त नन्ह का पुत्र विश्वासराव और काका चीमा को मुख्य करके सत्तर हजार सेना को भेजना और उसका आलीगोहर को पकड़कर दिल्ली को शुद्ध करना सुनकर अहमदखां का आना २ दिल्ली और ईरान की सेना का एक होकर मरहटों की सेना से घड़ा युद्ध करना और उमरावों सहित विश्वासराव, चीमा, जनकू का मरना ३ यवनों की जय होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से तीन

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं जिम हुलकर प्रथित[1], बच्यो आयु बल एक ॥
जाय भरतपुर जट्टकै, किन्नों घायन सेक ॥ १ ॥
छोरि कलीजहु भरतपुर, सुनि मल्लारहिँ आत ॥
गयो हैदराबाद भजि, आलयँ[2] निज अकुलात ॥ २ ॥
किय स्वागत मल्लारको, मुदित जट्ट रविमल्ल[3] ॥
रक्खतँ[4] द्रव्य सब नजरि करि, ढक्यो दक्खिन ढल्ल[5] ॥ ३ ॥
तब हुलकर कछु दिवस तँहँ, रहि रचि कटक नवीन॥
भंडअटेरपुरादि सब, लूटि भदावर लीन ॥ ४ ॥
पुनि मगके गुरु[6] लघु नृपन, दंडत बिजय दिखाय ॥
गागरनी अभमल्ल गढ, जब करि बिंध्यो जाय ॥ ५ ॥
कछुक रारि रट्ठोर करि, दयो उचित पुनि दंड ॥
परि पायन मल्लारके, सह्यो हुकम अखंड ॥ ६ ॥
हुलकर बहुरि प्रयान करि, कोटा जनपदँ[7] आय ॥
दिन कछु घाँटँ[8] मुंकुददर, रह्यो मुकाम रचाय ॥ ७ ॥
अहमदखान पठान इत, दक्खिन जित्ति दुरंत ॥
आलीगोहर साह पुनि, किय दिल्लिय तिय कंत[9] ॥ ८ ॥
मुख्य वजीर नबाब करि, लखनेऊ नगरेसँ[10] ॥
मुगलन राज्य जमाय गो, लंघि अटक निज देस ॥ ९ ॥
इत दक्खिन श्रीमंत सुनि, स्वीय पराजय सोर ॥
चढि सत्वर अप्पुन चल्यो, जवननँ[11] डारन जोर ॥ १० ॥

सौ इकतीस ३३१ मयूख हुए ॥

१ प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ अपने घर ॥ २ ॥ ३ सूर्यमल्ल जाट ने ४ सामग्री ५ दक्षिण की ढाल को रक्खा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ बडे छोटे ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ कोटा के देश में ८ मुकुंदरा के घाटे में ॥ ७ ॥ ९ दिल्ली रूपी स्त्री का पति ॥ ८ ॥ १० लखनऊ नगर का पति ॥ ९ ॥ ११ यवनों पर ॥ १० ॥

पट्पात् ॥

संध्या जनकू पट्ट दयो केदारराव[1] कँहँ ॥
अरु दत्ताके पट्ट धर्यो माहजि[2] प्रबीर तँहँ ॥
क्रम सन नाती[1] पुत्र[2] अडर राणांजीके ये ॥
दासी औरस दुव[2] हि सचिव धन मन करि सेये ॥
सजि संग सुभट इत्यादि सब क्रम प्रपंच जित्तन कर्यो ॥
श्रीमन्त नन्द बिरचन बिजय दिल्लिय उप्पर उप्परयो ॥११॥

॥ दोहा ॥

दक्खिनके बिपरीत दिन, हुकम बिगारन हार ॥
दइव[3] इंगरेजन उदित, करत अबहि करतार ॥ १२ ॥
करत मिजल श्रीमंत कछु, बढि बपु रोग बिसेस ॥
प्रानन तजि परलोक गत, साहू सुत सचिवेस[4] ॥ १३ ॥
तब मरहट्ठन धुरि तखत, निज प्रभुके सिर नाय ॥
सुत जेठो श्रीमंतको रक्ख्यो माधवराय ॥ १४ ॥

॥ रुचिरा ॥

बुल्ल्यो[5] इत बुंदीस नृपति निज दीप[6] अनुज जयनैर रह्यो ॥
अपकृत[7] तास सकल बिस्मृत[8] करि होय सदय अति हेत चह्यो ॥
रुप्पय लक्ख१०००००पटा जुत रैनरस[9] रसिक कापरनि नगर दयो
परिखंद[10] बिरचि बुलाय वचन पट्ट अप्पि अभय हिय लाय[11] लयो॥१५॥

॥ हीरकम् ॥

जैपुर नृप माधव इत बारित[12] कर जानिकैं ॥
नरव[13] सिरदारसिंह बिंटिय द्रुत आनिकैं ॥

---

१ पोता २ पहला तो दासी (पासवान) का और दूसरा विवाहिता स्त्री का पुत्र ॥ ११ ॥ ३ भाग्य ॥ १२ ॥ ४ सचिवों का पति ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ बुलाया ६ दीपसिंह को ७ अपकार सब ८ भूलकर ९ युद्ध के रसका रसिक १० सभा करके ११ हृदय से लगा लिया ॥१५॥ १२ खिराज नहीं देना जानकर १३ नरू का

कारन[1] रनथंभ अग्ग दक्खिन जयनैर ए ॥
हमरो हमरो उचारि कुप्पिग रचि बैर ए ॥१६॥
जैपुर उमरावन सन[2] माधव तब यौं कही ॥
दक्खिन सन मेल कोउ मम भट न करो सही ॥
नारव सिरदार तदपि[3] हुलकर पति भिंटयो ॥
सम्मुह कर जोरि गो रु रक्खन निज भू नयो[4] ॥ १७ ॥
मन्नि सु अपराध कुप्पि कूरम अब आयकैं ॥
बिंटिय उनिंयार[5] मार तोप मचकायकैं ॥
संबत धृति अङ्क अवनि१८१८ पाउस गत कालमैं ॥
बिह्वल हुव नारव इम संगर विकरालमैं ॥ १८ ॥
रन करि कछु काल बहुरि नारव भय संधिकैं ॥
माधव महिपालके पय लग्गिय सय[6] बंधिकैं ॥
दै कछु दम दंम्म[7] स्वामि आयसं[8] सिर रक्खयो ॥
हो तुम असुनाथ[9] दास हैं हम इम अक्खयो ॥ १९ ॥

॥ चुलिआला ॥

उदयनैर नृप रान रान इत, राजसिंह दिय छोरि कलेवर ॥
सह अंतहपुर पुर सकल, तहँ सहसा[10] हुव त्रास घोरतर[11] २०
सोलह आदिक तब सुभट[12], अंतहपुर प्रच्छन्नद्वार[13] गत ॥
रानिन प्रति बिन्नति रचिय, मंडि उचित व्यवहार धर्म मत२१
अक्खिय नृप परतापको, अन्वय[14] किय ईकलिंग[15] नष्ट अब ॥
पुच्छत हम यातैं प्रकट, सोलह१६ अरु बत्तीस३२ प्रमुख[16] सब२२

---

१ रणथंभ (रणतभँवर) के कारण ॥ १६ ॥ २से ३ तोभी ४ अपनी भूमि रखने को नमा ॥ १७ ॥ ५ उणियारा को घेरा ॥१८॥ ६हाथ बांधकर ७ दंड के रुपये ८ आज्ञा ९ प्राणनाथ ॥ १९ ॥ १०अचानक ११ अत्यन्त घोर ॥ २० ॥ १२ उमराव १३जनानी ड्योढी पर जाकर ॥ २१ ॥१४वंश १५मेवाड़ के राणा के इष्टदेव का नाम एकलिंग महादेव है १६आदि "मेवाड़ में बड़े दरजे के उमरावों की गणना सोलह और दूसरे दरजे के उमरावों की गणना बत्तीस है" ॥२२॥

जो रानिय आधान जुत, हो कोउक तो काल निहारहिं ॥
यह नहि तो अरिसिंहकों, बैठारन इम पट्ट विचारहिं ।२३।
उत्तर तब अवरोध सन, प्रकट सुनि रानीन पठायउ ॥
नहि दोहदलच्छन छिपत, क्यों तुम यह संदिग्ध कहायउ२४
सुभटन यह उत्तर सुनत, रान प्रताप कनिष्ट भ्रात तब ॥
गहिय पति अरिसिंह किय, परिपाटी व्यवहार सहि सब२५
अरिसिंहहु तब अरज यँहँ, पठई नृप परताप तियन प्रति ॥
तुम धारत आधान तो, रंचक नहिं मम राज्य माँहिं रति२६
राज्यसिंह संतति रहत, ओहि मात सब दासहि जानहु ॥
नृपता यह मम जोग्य नहिं, पटु अँप्पहु नहिं छद्म प्रमानहु२७
पठई रानिन अक्खि पुनि, अब तुम नृप अरिसिंह उदयपुर॥
करहु नाँहिं संदेह कछु, धरहु राज्य अधिकार भार धुर २८
इत माधव जयपुर अधिप गिनि विगरे मरहट्ठ छोभ गहि ॥
उनको हो निज ढिग अमल,किय सु देस स्वाधीन उचित कहि२९
सत्वर यह कटु वच सुनि, जयपुर सिर मरहट्ठ सजे जब ॥
पठयो बुंदिय पत्र लिखि, त्वरित दरित कछवाह भूप तब ३०
करन भीर यह कालहै, पृतना निज मम पास पठावहु ॥
मरहट्ठन सन मंत्र रचि, वा उनको यह कोप उठावहु ॥३१॥
संभर पति इम पत्र सुनि, अजितसिंह निज पुत्र भेजिदिय॥
सहँसपंच५०००दल संग करि,कुम्म कथित स्वीकारसकल किय३२
सक विक्रम धृति १८१८समय, कुमर अजित इम बीर सिलह करि ॥

---

१ गर्भ सहित २ समय देखे ॥२३॥ ३जनाने से ४ गर्भ छिपा नहीं रहता५संदेह युक्त ॥ २४ ॥ ६ राणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ७ परस्पर का ॥२५॥ ८ प्रीति ॥ २६ ॥ ९ हे माताओं १० आप भी चतुर हो सो ११ छल मत जानो ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १२ शीघ्र १३ कडुई बात सुनकर १४ डरकर ॥ ३० ॥ १५ समय है ॥ ३१ ॥ १६ कछवाहे (माधवसिंह) का कहना ॥ ३२ ॥

नव९ हायन बय बिच निडर, भीर गयो जयनेर हरख भरि¹ ॥ ३३ ॥
सुनि माधव अति जव समुख, अग्ग रीति सब लंघि रु आयउ ॥
मुत्तिय डुंगरि वार मिलि, बिबिध सद्दि सतकार वधायउ ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेदसिंहचरित्रे आयुर्बलाऽवशिष्टमल्लारभरतपुराऽऽगमनतद्भीतकलीजखानहैदराबादपलायनस्वीकृतजट्टोपायनलुण्टितभदावराऽऽदिदेशदण्डितगागरणीशाऽभयसिंहहुलकरकोटाजनपदमुकन्ददरघट्टप्रपतनपठानाऽहमदखानाऽलीगोहर्दिल्ल्यर्पणसुजाउद्दोलावजीरीभवनाऽहमदखानेरानगमनश्रुतस्वपराजयजनकू१ दत्ता ९ स्थानाऽऽपन्नकेदाररा-व १ माहजि २ सहितदिल्लीविजयाऽर्थप्रस्थितश्रीमन्तमरणतत्सुतमाधवरायपितृपट्टप्रापणबुन्दीन्द्रसमाहूतसोदरदीपसिंहाऽर्थकापरणिनगरदानकूर्मराजमाधवसिंहमल्लारमिलनसाऽऽगसनारवसरदारसिंहनगरोणियारावेष्टनतच्चरणपतनदण्डद्रव्यनिवेदनशीर्षोद्दराजोदपुरेशराणाराजसिंहमरणपितृव्यकाऽरिसिंहतद्गद्दीनिविशनज्ञातनिर्बलमहाराष्ट्र-

---

१ वर्ष ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशिमें उम्मेदसिंह के चरित्र में आयुर्बल के बाकी होने से मल्लार का भरतपुर आना और उसके भय से कलीजखां का हैदराबाद भागना १ जाट की दी हुई भेट को स्वीकार करके भदावर आदि लूटकर गागरनी के पति अभयसिंह का दंड देकर हुलकर का कोटा के देश, मुकन्दरा के घाट में मुकाम करना ७ पठान अहमदखां का आलीगोहर को दिल्ली देना और सुजाउद्दोला का वजीर होना २ अहमदखान का ईरान में जाना और अपना पराजय सुनकर जनकू और दत्ता के स्थानापन्न केदारराव और माहजी सहित दिल्ली को विजय करने के अर्थ प्रस्थान किये हुए श्रीमंतका मरना और उसके पुत्र माधवराव का पिता का पाट पाना ४ बुन्दीश के बुलाये हुए सगे भाई दीपसिंह के अर्थ कापरण नगर का देना और कछवाहे राजा माधवसिंह का हुलकर से मिलने के अपराध से नरूके सरदारसिंहके नगर उणियारा को घेरना और उसके चरणों में पड़कर दंड का धन नजर करना ५ सीसोदियों के राजा उदयपुर के पति राणा राजसिंह का मरना और उसके का अरिसिंह का गद्दी बैठना ६ मरहठों को निर्बल जानकर जयपुर के पति

जयपुरेशतद्देशस्वीकरणश्रुतेतत्सज्जदक्षिणसेनाऽऽगममाधवसिंहबुन्दी सहायप्रार्थनरावराजमहाराजकुमाराऽजितसिंहजयपुरप्रेषणसंमुखाऽऽगतजायसिंहितत्सन्मननमेकपञ्चाशत्तमो ५१ मयूखः॥ ५१ ॥ आदितः॥ ३३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह मिलि कुमर इम, माधव सन सह मोद ॥
पहुँच्यो डेरन आनि पहु, बिरचत लरन बिनोद ॥ १ ॥
किय अपुब्ब[1] माधव कहिय, बुंदिय पति यह बत्त ॥
सुनि स्न पट्टप स्वीय[2] सुत, यँहँ पठयो अनुरत्त[3] ॥ २ ॥
कारन पाय बिसेस कछु, दक्खिन दल किय देर ॥
माधव सुनि रक्ख्यो मुदित, कुमर इहु नृप केर ॥ ३ ॥
क्रीड़ा बहु आखेट[4] क्रम, दिन दिन सहल दिखाय ॥
सम्मुह रक्ख्यो तखत सिर,[5] पुनि महलन पधराय ॥ ४ ॥
दयाराम तँहँ इहु द्विज, किय बिन्नति करजोरि ॥
जयहरि[6] लिय लिखवाय जब, नृप[7] सन लिखित निहोरि ॥५॥
सुत व्हैहैं जु समप्पिहैं, हम तुमकों कछवाह ॥
धरहिं अंक[8] दायाद ध्रुव, चिंति रावरी चाह ॥ ६ ॥
लयो जनक[9] तुमरे लिखित, उचित दैन अब एह ॥
नृप संभर अनुकूल गिनि, सद्दहु बिहित[10] सनेह ॥ ७ ॥

का उनका देश लेना यह सुनकर सजकर दक्षिण की सेना का आना ७ माधवसिंह का बुन्दी से सहाय की प्रार्थना करना और रावराजा का राजकुमार अजितसिंह को जयपुर भेजना ८ जयसिंह के पुत्र का उसके सन्मुख आकर सन्मान करने का इक्कावनवां ५१ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से तीनसौ बत्तीस३३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपूर्व २ अपने पाटवी पुत्र को ३ प्रीति करके भेजे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ शिकार ५ तखत के ऊपर सम्मुख ॥ ४ ॥ ६ जयसिंह ने ७ राजा बुधसिंह से ॥५॥ ८ किसी भाई को गोद रख लेवेंगे ॥ ६ ॥ ९ तुम्हारे पिता ने १० उचित ॥७॥

हो मुहुकमसिंहोत तँहँ, निडर हुइ नगराज ॥
आश्रित कूरम ईसके, करन स्वामि जय काज ॥ ८ ॥
बुल्ल्यो सोहु बिलंब अब, न करहु हित पहिचानि ॥
जैपुरपति यह सुनि सजव, अप्प्यो लिखित सु आनि ॥ ९ ॥
दक्खिन कटक बिलंब लखि, जानि सबन बिनु जोर ॥
राजकुमारहिँ सिक्ख दिय, माधव कूरम मोर ॥ १० ॥
जाय पटालय[2] जनक[3] जिम, किय कुमार सतकार ॥
अक्खिय हित बिच अंतर न, इत उत गिनहु उदार ॥ ११ ॥
इम कहि इक१ गज दुव२ अरव, दुव२ सिरुपाव सु साज ॥
नग भूखन इक१ रुचिर नव, किअ नजरि हित काज ॥१२॥
अरु दलेल उमराव निज, धूलाउप्प समत्थ ॥
लछमन ताको पुत्र लघु, पहुँचावनि दिय सत्थ ॥ १३ ॥
दयाराम तँहँ अरज किय, कूरम प्रति पटु प्यार ॥
किय तुम भेट कुमारकी, संभरपति[4] सतकार ॥ १४ ॥
नियम गिन्यौ हित माँहिं नहिँ, यातैं यह दुव एह ॥
पै अब संभर भूपतैं, आर्द्ध[5] लिखावहु लेह[6] ॥ १५ ॥
जयपुरके दफतर जबहि, लिय माधव लिखवाय ॥
सुनहु राम छितिपाल सो, सुनिबे योग्य सुभाय ॥ १६ ॥

॥ रोला ॥

संभरपतिके सम्मुह कोस इक१ आवहिँ कूरम ॥
कुमर सम्मुख अधकोस सु पुनि आवहिँ सनेह सँम ॥
कूरम डेरन हुइ जात तोरन[7] लग आवहिँ ॥
कुमरहि पायंदाज अंत रहि मिलि लै जावहिँ ॥ १७ ॥
नृपति परस्पर द्वैरहि मिलत मस्तक कर आनैं ॥

= ॥ १ शीघ्र ॥ ९ ॥ १० ॥ २ डेरे जाकर ३ पिता के जैसे ॥ ११ ॥ ४ ... ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ बुन्दी के राजा को देने का सत्कार कुमर को दिया ॥ १४ ॥ ६ ... राजा से कुमर के आधा लिखवाओ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ से द्वार तक ॥ १७ ॥

कुमर होय अति नम्र यहहि आचार[1] प्रमानैं ॥
जानु जोरि नृप जुगल२ रहैं इक्क१ तखत बर०बर[2] ॥
बैठें सनमुख कुमर इक्क१ तखतहि हित तत्पर ॥ १८ ॥
चमर मोरछल होय उभय२ भूपन ऊपर जँहँ ॥
कुमर दास[3] कर रक्खि रहैं तस पिट्ठि खरो तँहँ ॥
पानदान सन पान भूप निजहत्थ[4] उठावहिं ॥
कुमरहिं अप्पहिं नृप सु स्फाल्लि दुव२ हत्थन[5] पावहिं ॥१९॥
अंग लगावहिं अतर उभय२ नृप उभय२ करनैं करि ॥
कुमर अंग कर इक्क१ अतर लावहिं हित अनुसरि ॥
पायंदाज प्रदेस अवधि भूपहिं पहुँचावहिं ॥
कुमरहिं गच्छिय छोरि सिक्खदें सिविरैं[6] पठावहिं ॥ २० ॥
इक्क१ गज दुव२ सिरुपाव अरब दुव२भूपहिं अप्पहिं ॥
कुमरहिं दुव२सिरुपाव अस्व दुव२ दै हित थप्पहिं ॥
इक भूखन जिहिं अग्घ[7] अप्पि भूपहिं हित धारहिं ॥
कुमरहिं ता सन अद्ध अग्घ दै मोद विथारहिं ॥ २१ ॥
कूरम इनके सिविर आत इम एहु करैं सव ॥
लीनी यह लिखवाय स्वीय दफतर माधव तब ॥
संवत धृति धृति१८१८ समय माघ पांडुर पंचमि५ दिन ॥
इम बुंदिय निज नैर आय प्रविस्यो कुमरन[8] इन॥ २२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हड्डराजकुमारजयपुरसुखनिवसनमाधवसिंहजयसिंहले

१ ऊपर लिखाहुआ आचार (दोनों हाथ मस्तक के लगाना)- २ घुटने मिलाकर ॥ १८ ॥ ३ कुमर का नौकर हाथ में रखकर ४ अपने हाथ से ॥ १९ ॥ ५ दोनों हाथों से ६ डेरे भेजेंगे ॥ २० ॥ ७ जिसका मूल्य (कीमत) देवेंगे और उससे आधा कुमर को देकर ॥२१॥ ८ उम्मेदसिंह कुमरों का पति ॥२२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हाडों के राजकुमार का जयपुर में सुख से निवास करना और माधवसिंह का जयसिंह के लिखाये बुधसिंह के लेख को पीछा देना१ बुन्दी के पति के

खितबुधसिंहलेखमत्यर्पणबुन्दीन्द्रसत्काराऽर्द्धरीतिराजकुमारसत्कारलेखजयपुरलेखमन्दिरलेखनप्रीतिपूर्वककृतस्वसुभटसार्थाऽजितसिंहबुन्दीप्रतिप्रस्थापनं द्विपञ्चाशत्तमो५२मयूखः ॥ ५२ ॥ आदितः३३३

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

संबत नव ससि धृति १८१९ समय, माधव कोउक काज॥
आयो गढ रनथंभ तँहँ, बुल्ल्यो संभरराज ॥
सचिव तास आये समुझि, गो बुंदियपति तत्थ ॥
पुर खंडारि समीप हुव२, सुपहु मिले हित सत्थ ॥ २ ॥
संभरनृपके कुम्भ सन, सुभट मिले इकसठ्ठि ६१ ॥
उभय२ मिलत नृप अरिनको, नूर गयो सब नठ्ठि ॥ ३ ॥
दिय लिय गज तुरगादि सब, किय कछु दीह मुकाम ॥
इत बुंदिय नृप अंगना, सुरूप गई सुरधाम ॥ ४ ॥
पहिलैं सक खट ख धृति १८०६ पर, लहि प्रतिपद१ वैसाख॥
ईडरपतिजा भोगिनी, मरी सु मेचक पाख ॥ ५ ॥
पुनि सत्तह धृति १८१७ साल पर, अगहन मेचक पाय ॥
ऊदाउति गतअसुँ भई, छट्ठी६ दिन गर्द छाय ॥ ६ ॥
अब बसु ससि धृति १८१८ अब्दके, पुण्णिम१५ चैत अनेह
महिषी हड्ड महीपकी, दिय फल्लिय तजि देह ॥ ७ ॥
खबरि तास खंडारिही, पहुँची संभर पास ॥
नृप हुव लखि अनुचित नियति, अंतर कछुक उदास ॥८॥

सत्कार से आधी रीति राजकुमार के सत्कार की जयपुर के दफतर में लिखवाना २ प्रीति पूर्वक अपने उमराव को साथ करके, बुन्दी के कुमर अजितसिंह को पीछा बुंदी भेजने का बावनवां ५२ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि से तीन सौ तेतीस ३३३ मयूख हुए ॥

१ माधवसिंह २ बुलाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३स्त्री ॥ ४ ॥ ४ ईडर के पति की पुत्री ५ छोटी रानी ॥ ५ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ गतप्राण ८ रोग छाकर ॥ ६ ॥ समय १० पाटवी राणी ॥ ७ ॥ ११ भाग्य के ॥ ८ ॥

सुपहु दुहुँन[2] तत्थहिं सुन्यों, अब दक्खिन दल[1] आत ॥
केदार[1] रु माहजि[2] कैमिग, घल्लन संध्या घात ॥ ९ ॥
सुनि माधव जयपुर गयउ, आयउ स्वपुर उमेद ॥
दिस दिस मचि दक्खिन दहल, भूपन सिखवत भेद ॥१०॥

॥ रोला ॥

इत संध्या उज्जैन आय मालव निज वस किय ॥
अयन दोय[2] रहि तत्थ दाव मरुधर जित्तन दिय ॥
चिंति जयाको वैर चंड सजि कटक चलाये ॥
यँहँ सब नृपन वकील इष्ट[3] सद्धन द्रुत आये ॥ ११ ॥
इम सबेग अजमेर पत्त रन खुल्लि पैताकन[4] ॥
बिजयसिंह सन बिजय लैन किय मंत्र कैजाकन[5] ॥
यह सुनि मरुधर ईस भीरु बुंदिय पुर भूपति ॥
बुल्ल्यो दै[6] दल बिहित मडि मंत्रन जुज्झन मति ॥ १२ ॥
इत अति धृति धृति१८१९अब्द, असित सुँचि[7] छट्ठि[8] अरक जुत
भूप भुजिष्यों[9] बहुरि जनिंग[10] संग्रामसिंह सुत ॥
बलिं[11] मरुपति दल बीच हड्ड हंकिय सहाय हित ॥
सम्मुह आयउ बिजयसिंह चाहत प्रमोद चित ॥ १३ ॥
दिय डेरा बुंदीस सूरसागर तड़ागें[12] तट ॥
दक्खिन दलकी देर भनत भूपाल तिमहि भट ॥
यँहँ वकील अजमेर भेजि मरुराज साम सन ॥
अट्ठलक्ख दे दम्म द्रोह मिट्टयो मरहट्ठन ॥ १४ ॥
तव दव्वन ढुंढार चल्यो दक्खिन दैल[13] सत्वर ॥
लुट्टिय पुर मोजाद चारु आपनें[14] धन चैत्वर[15] ॥

---

१ सेना २ चले ॥९॥१०॥ ३ वांछित साधने के लिये ॥११॥ ४ युद्ध की पताका खोलकर ५ युद्ध करनेवालों ने ६ पत्र देकर बुलाया ॥ १२ ॥ ७ आपाढ वदि ८ अदीतवार सहित ९ दासी (पासवान स्त्री) १० जना ११ पुनि ॥ १३ ॥ १२ तलाव के किनारे ॥१४॥ १३ सेना शीघ्रचली १४ बिकी का बजार १५ चौहटा

स्वीय पितृव्यक सुता बुल्लि ईडरपुर सन यँहँ ॥
उदयकुमरि अभिधानं[2] मरुप[3] व्याहन संभर कँहँ ॥ १५ ॥
अतिधृति धृति १८१६ आषाढ नवमि९ अवदातॉ[4] लग्न पर ॥
बुंदीसहिं सविनोद दई दुलहनि विवाहि वर ॥
रक्ख्यो निज आवास[5] नृपहिं सनमानि पक्ख त्रय३ ॥
हुव प्रतिदिन मुद दुहुँनर दोजिर सितपक्ख चँद्रोदय[6] ॥१६॥
पुँटभेदन[7] मोजाद इत सु कोटेस सचिव गय ॥
अखैराम कायत्थ मिलन मरहट्ठन अघ मय ॥
संध्या माहजि श्रवनं[8] पिसुन पूरे अवसर लहि ॥
संभर मरुप सहाय होन कारन अनेक कहि ॥ १७ ॥
दै कछु छन्नैं दम्म मोरि जित तित माहजि मन ॥
बुंदिय उप्पर बेग प्रथितं[9] आन्यौं कराय पन ॥
कटक अचानक मुररि चाहि हड्डन दंडन चित ॥
अनी विविध उम्महिय[10] बुंदिर भद्दव लहरू मित ॥ १८ ॥
द्रंग आत दक्खिनिन सुनत मरुधर तजि संभर ॥
आयो बुंदिय औरहि[11] सज्यो दुग्गर चहि संगर ॥
पुटभेदन[12] प्राकार सज्जि चाहत अरि आगम ॥
मानहु चातक मत्त सघन घन भद्द समागम ॥ १९ ॥
चित माहजि लहि चाह दोरि इत वपु[13] दक्खिन दल ॥
बुंदिय सहसा[14] चिंटि कियउ तोपन कलकलकल[15] ॥
अखैराम दल[16] अप्पि सजव बुल्ल्यो कोटसहिं ॥

---

१ अपने काका की पुत्री को बुलाकर २ नाम ३ मारवाड़ के राजा ने ॥ १५ ॥ ४ सुदि ५ अपने महलों में ६ शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के उदय के समान ॥ १६ ॥ ७ मोजाद नामक पुर में ८ उस चुगल ने माहजी सिंधिया के कान भरे ॥ १७ ॥ ९ विदित १० भादवे के मेघ की लहरों के समान ॥ १८ ॥ ११ शीघ्र १२ नगर के कोट को ॥ १९ ॥ १३ दक्षिण की सेना रूपी शरीर से दौड़कर १४ अचानक १५ अत्यन्त कोलाहल १६ पत्र देकर कोटा के पति को

सत्रुसल्ल दल सुनत चल्यो दब्बत द्रुत देसहिं ॥ २० ॥
अनतापुरपति अजित[2] प्रथम जो हुवकोटापति ॥
पट्ट तास[3] यह पाय आय बुंदिय रन किय अति ॥
संध्याके भरि श्रवन वन्यों जैपकार[4] तास बल ॥
जिह्मग[5] लहि दुंखु[6] जानि आखु मारत मारत अल[7] ॥ २१ ॥
इस माहजि अपनाय वेढि माधवहर बुंदिय ॥
संध्याकौं साबातं[8] सौरकौं कूल[9] ज्वलन किय॥
दक्खिन१ पूरब२ दुव२हि तरफ तापन मचि तोपन॥
कुल गोलन[11] प्राकार लगे कोपन रैंय[12] लोपन ॥२२॥
थाल सलिलौं[13] गति थरकि मही डुंगर डगमग्गत ॥
अतल वितल बसवानैं[14] लजि सुतलप[15] पय लग्गत ॥
बनि बनि प्रानन पिसुंन[16] बीररस बाढत नारद ॥
धमि धमि तोपन धूम सहज छावत घन सारद[17]॥ २३ ॥
तुट्टत निज सिर त्वरितं[18] सूर न चहैं रु चहैं सिव ॥
इत मारन अरि अतुल उत सु हिंसन अनिच्छ[19] इव॥

शीघ्र बुलाया १ पत्र सुनते ही ॥ २० ॥ २ अजितसिंह ३ इस (शत्रुशाल) ने उस (अजितसिंह) का पाट पाकर उस सिन्धिया के बल से ४ जय करनेवाला हुआ ५ मानों सर्प को चूहे को पकड़ा हुआ जानकर ६ बिच्छू ७डंक मारता है सर्प के मुख में चूहा होने के कारण अपने मरने का भय छोडकर बिच्छू उस सर्प के डंक मारता है" ॥ २१ ॥ ८ माधवसिंह हाडा के वंशवाला बुन्दी को घेर कर ९ सिन्धिया रूपी बारूद के १० किनारे में आग लगाई "यहां सिन्धिया की अति प्रबलता दिखाने को वीप्सार्थ में साबात और सोर दोनों एकार्थवाची शब्दों का प्रयोग किया है" गोलों के समूह ११ कोट का १२ क्रोध के वेग से लोप करने लगे ॥ २ ॥ थाल में भरेहुए १३जल की भांति १४वास करनेवाले लज्जित होकर १५ सुतल के पति के पैरों लगते हैं १६ प्राणों की चुगली करके १७ शरद ऋतु के बद्दल ॥ २३ ॥ १८ शीघ्र तूटे हुए अपने मस्तकों को वीर नहीं चाहते और रुंडमाल करने को शिव चाहते हैं, इधर (बुन्दीवाले) शत्रुओं को मारने में तुलना रहित हैं और उधर हिंसा करने में १९ इच्छा रहित की भांति हैं.

काली खप्पर कतिन गोद[1] गत तदपि नटन[2] गहि ॥
पीवनदेत न पलल करहु उपवास पचन कहि ॥ २४ ॥
सुरभि[3] पराग समान खेह रवि मधुप[4] दगन खिरि॥
अंधी करत अनूरु[5] सहित कर्दम[6] बिधाय[7] किरि॥
ताराग‍ढ सिर तोप लौंन[8] कचमाल उतारत॥
बंदी गिद्धनि[9] बुल्लि सूर गति गिरिहिं[10] सिंगारत॥ २५ ॥
अंक[11] गलिन जिम अटत तिमिर[12] फारत गोले तिम ॥
तोप अदितिके तनुज[13] करहिं संख्या पावन[14] किम ।
देत निसैनिन दोरि सूर आरोहत कपिसिर[15]॥
इतके असि आघात[16] बढ्ढि डारत तिन्ह बाहिर ॥ २६ ॥
तकि तकि छिद्रन तोपदार वेधत अगु गोलन ॥
पब्बय[17] तिनके पात[18] फुक्कत घुम्मत फक्फोलन॥
धमकि खनंकत धूजि पैंथुल्ल[19] बलभिन पर खप्पर ॥
बिथुरत जरि बाजार छार टप्पर कठछप्पर ॥ २७ ॥
भीरुन[20] मुख छबि भाँति नटत जल द्रंग निवानन ॥

---

१ कालिका के खप्पर में गया हुआ वीरों का मांस २ नृत्य करके उसको रुधिर नहीं पीने देता है सो मानों उससे कहता है कि यह रुधिर पाचन (हजम) नहीं होवेगा सो उपवास कर ॥ २४ ॥ ३ वसन्तऋतु के पुष्प रज के समान धूलि सूर्य रूपी ४ भ्रमर के नेत्रों में खिरकर ५सूर्य के सारथिको अंधा करती है और रुधिर है सो वराह को ६ कीचड़ सहित ७ करता है ८ केसों की माला को काटती है "लुञ् छेदने" इस धातु से, लोन का अर्थ काटना है" ९ गीधों रूपी भाटों को बुलाकर १० बुन्दी के पर्वत तक वीरों की तरह श्रृंगार कराता है ॥२५॥ ११जैसे सूर्य १२अन्धेरे को फाड़ता है तैसे गोले गलियों में फिरते हैं १३ तोप रूपी अदिती के पुत्र (देवों रूपी गोलों) की संख्याको कैसे १४पासक्ते हैं अर्थात् जैसे देवताओंकी गणना नहीं होसक्ती तैसे ही गोलों की गणना भी नहीं होसक्ती १५कंगुरों पर चढते हैं १६तरवारों के प्रहारों से ॥ २६ ॥ १७पर्वत १८उन गोलों के पड़ने से १९बडी मियालों (घरके छाने के वक्र काष्ठ) पर ॥ २७ ॥ २०कायरों के मुख की शोभा नष्ट होवे तैसे नगर के निवाणों का जल नष्ट होता है

सोदागर[1] रसवीर रच्यो बिक्रय[2] इम प्रानन ॥
बिरहिनि[3]के उर बिविध भये तपि तपि भुवमंडल ॥
कै[4] जिम मनि रविकांत फरस ग्रीखम दाहक फल ॥ २८ ॥
अट्ट[5] रु गोपुर उडत थंभ मंडप थहरावत ॥
गगन गिद्ध[6] गति ग्राँव लोल चढत रु लहरावत ॥
माघ त्रयोदसि१३असित[7] अंक सासि धृति१८१९संक अंतर ॥
माहजि[8]कों मिलवाय सज्यो बुंदिय इम संभर ॥ २९ ॥
सुनि यह दैन सहाय कटक पठयो कूरमपति ॥
कह्यो हड्ड जय करहु हेतिबल[9] करहु सत्रु हति ॥
पामँडहेडापुरप होय कूरम सेनानी ॥
राजाउत द्वारकादास आयो अभिमानी ॥ ३० ॥
साहिपुरप उम्मेदं[10] त्योंहिं पठयो सहाय दल ॥
सुत लघु मालिमसिंह बिरचि सेनेस[11] महाबल ॥
बिजयसिंह मरुराज जदपि बुंदिय रन जान्यों ॥
भेजी तदपि न भीर मूढ कृतघन पन मान्यों ॥ ३१ ॥
अट्ठ पहर इत हड्ड भूप कटिबंध न खोलत ॥
पलपल बिच प्राकार[12] भटन ललकारत डोलत ॥
सुत हुव पृथ्वीसिंह भूप जैपुरपतिके जहँ ॥
तास बधाई जंग होत आई बुंदिय तहँ ॥ ३२ ॥
उच्छव ताको अतुल सुनत संभर नरेस किय ॥
मरन मंडि रन तुंमुल[13] वहुत दिन किय निसंक हिय ॥

---

१ वीर रस रूपी सौदागर ने इसप्रकार प्राणों का २ व्यापार रचा ३ विरहिणी स्त्रियों के हृदय के समान भांति भांति से ४ अथवा जैसे ग्रीष्मऋतु में सूर्यकान्त मणि का फल फर्श (बिछोना) दाहनेवाला होवै तैसे ॥ २८ ॥ ५ बुरजें और शहर के दरवाजे ६ आकाश में गीधों की भांति चपल पत्थर चढकर लहराते हैं ७ कृष्ण पक्ष ॥ २९ ॥ ८ जयपुर के राजा माधवसिंह ने ९ शस्त्रों के बल से ॥३०॥ १० उम्मेदसिंह ने ११ सेनापति करके ॥३१॥ १२ कोट पर ॥३२॥ १३ भयंकर

जान्यौं तुट्टत नाँहिं नेर बुंदिय साहजि जब ॥
अहरि साम[1] उपाय पत्र पठयो नृप प्रति तब ॥ ३३ ॥
कोटापतिको कथित मन्त्रि संगर पँहँ मंड्यो ॥
अप्प मिलहु अब आय छुद्र[2] साहस हम छंड्यो ॥
सुनि नृप अरि[3] कृत साम चिंति नय मिलन बिचारिय ॥
साधानी भगवंत दुग्ग रक्ख्यो रखवारिय ॥ ३४ ॥
अक्खिय हमकौं मारि नगर घरि लेन बिचारहिं ॥
तो भाई मरि तुमहु छेहु पुनि सूबेदारहिं ॥
साहजि हितु मिलाप कियैं नृप निकसि यहै कहि ॥
आयउ तोरन[4] अवधि समुख संध्यालु तोर[5] लहि ॥ ३५ ॥
हथजोरी करि हुलसि जाय बैठे परिखद[6] हुवर ॥
सापराध[7] संध्या[8] समेत हट्टुन बिनोद हुव ॥
करन जोरि तब कहिय नम्र साहजि आगस[9] निज ॥
सुनि हित सुत संभरहु बिकंच[10] किन्नैं दृग बारिज[11] ॥ ३६ ॥
अक्खिय तुम कोटेस कुटिलको क्यों न इष्ट[12] किय ॥
सुनि जोरे तस सपैन[13] पिक्खि पुनि नृप बुल्लिय प्रिय ॥
खरनीके कछु दम्म चढे आदिक गिनि दिन्ने ॥
हित अन्योन्य[14] बढाय बिदा मरहट्टन किन्ने ॥ ३७ ॥
याहि बरस १८११ बुंदीसकेर सिरदारसिंह सुव ॥
ईडरपतिजा[15] उदयकुमरि रानी औरस[16] हुव ॥
चैत्रमास मुख असित[17] पक्ख संगत अष्टमि दिन ॥
उच्छव तिहिं दिन अतुल[18] बहुरि बिरचिय हड्डुन ईन[19] ॥ ३८ ॥

युद्ध ॥३३॥ १कहना मानकर २तुच्छ हठको ३शत्रु के कियेहुए मिलाप को नीति से विचारकर ॥३४॥ ४द्वार पर्यन्त ५प्रताप को लहकर ॥३५॥ ६सभा में ७अपराधी ८सिन्धिया सहित ९अपना अपराध १०प्रफुल्लित किये ११नेत्र कमल ॥३६॥ १२अनुकूलता (चाहाहुआ) अर्थात् भलाई १३दोनों हाथ जोड़े १४परस्पर ॥३७॥ १५ईडर के पति की पुत्री के १६उदर से १७कृष्ण पक्ष १८बहुत १९हाडाओं के पति ने ॥३८॥

कोटेसहु आनन बिगारि अतिसय सिटाय हिय ॥
अखैराम सठ सचिव सहित कोटा प्रवेस किय ॥
बिजयसिंह मरु ईस लुब्धि इत हड्ड महीपति ॥
दीपकुमरि निज बहिनि ताहि ब्याहिय मंजुल मति ॥३९॥
सक कृति धृति१८२०मित समाँ राध अवदान दसमि१० दिन
अति हित करि उच्छाह लगन सद्धिय कबंध इन ॥
साल प्रकृति धृति १८२१ समय तीज३ फग्गुन सुदि बासर ॥
ईडरपति लघु सुता दीप सोदर ब्याह्यो वर ॥ ४० ॥
जोधपुरहि यह बिजयसिंह मरुपाल ब्याह किय ॥
नाम भवानकुमरि बहिनि उच्छव करि ब्याहिय ॥
याहि बरस १८२२ श्रीमंत माधवहु देह बिहायो ॥
पट्ट नरायनराव अनुज ताको तब पायो ॥ ४१ ॥
तिहिं काका रघुनाथराव पर बैर बिथारिय ॥
तानैं भजि तव सरन इंगरेजन द्रुत धारिय ॥
सक इहिं१८२१ कथित समीप साह आलम ४९१२दिल्ली पति
दिय इंग्रेजन अर्थ तीन३ सूबा सहाय मति ॥ ४२ ॥
बंगाला१ रु बिहार२ तथा उड्डीसा३ ए त्रय३ ॥
इनमैं तव अंग्रेज भये हाकिम जमात जय ॥
सूबा त्रय३ सिर साह रुद्ध निज गति जव जानी ॥
इस्तमरारी अंकि दई इनकौं दीवानी ॥ ४३ ॥
प्रथम रुहेला सचिव नजीवुद्दौलाके भय ॥
दिल्लीतैं भजि साह बंगं अंतर वचित्रे गय ॥
कछु हायन लहँ कहि मरयो सुनि कथितँ रुहेला ॥

---

१ मुख बिगाड़कर २ श्रेष्ठ बुद्धिवाली ॥ ३९ ॥ ३ सम्वत् ४ वैशाख सुदि ५ राठौड़ों के पति ने ६ दिन ७ उम्मेदसिंह का सगा भाई दीपसिंह ॥४०॥४१॥ ८ इस कहेहुए सम्वत के समीप ॥४२॥ ९ अपनी गति रुकीहुई जानी जब ॥४३॥ १० बंगाले में ११ कुछ वर्ष १२ नजीवुद्दौला रुहेला को मरा सुनकर

लहि मरहट्ठ सहाय बिश्यो[1] दिल्लिय लखि बेला[2] ॥ ४४ ॥
नजफखान जिहिं नाम जवन सो किय वजीर जब ॥
सक[3] लिपि अंतर ननहु अधिक प्रभु राम२०३।४ इहाँ अब ॥
सिवप्रसाद मुनसी जु[4] आहि अधुना[5] अंग्रेजन ॥
जिहिं दुव२ ग्रंथ बनाइ बिदित किन्ने छापा सन ॥ ४५ ॥
जिनमैं इक भूगोल आदि[6] हस्तामल१ जानहु ॥
तहँ इन्ह सूबा तीन३ मिलन सूचित १८२१ सक मानहु ॥
ताहीनैं इतिहासतिमिरनासक२ प्रबंध[7] किय ॥
तामैं पावन पट्ट साह आलम ३९।४को सक लिय ॥ ४६ ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ कितो अंतर अब इक्खहु ॥
ओरनमैं इहिं रीति परत अंतर प्रभु पिक्खहु[8] ॥
मुद्रित किय इक१ ग्रंथ बिदित पंडित बंसीधर ॥
सो भारतवर्षीय आदि इतिहास३ नाम पर ॥ ४७ ॥
तामैं बैठन तखत साल आलम ४९।१ सक सूचिय ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ प्रमित जानहु पुहवीपिय[9] ॥
बढि१ घटि२ अंतर विविध लेखकारहि[10] इम लावत ॥
है तस[11] दोस न हमहिं लेख अनुसार लिखावत ॥ ४८ ॥
परि इम बत्त प्रसंग अन्यठामहु कहि आये ॥
बर्त्तमान अब वृत्त[12] सुनहु प्रभु सवन सुहाये ॥
जट्ट जवाहिरमल्ल याहि छायनें[13] १८२१ प्रकुप्पि अब ॥
लुट्टी दिल्लिय जाय साह धन कोस सहित सब ॥ ४९ ॥
अग्ग जनक[14] रविमल्ल मरयो दिल्लिय रन अंतर[15] ॥

---

१ प्रवेश हुआ २ समय देखकर ॥४४॥३ सम्वतों के लेख का अन्तर सुनो ४ है ५इस समय में अंगरेजों का ॥४५॥६भूगोल है आदि में जिसके ऐसा हस्तामल अर्थात् भूगोलहस्तामल ७ ग्रन्थ ॥४६॥८देखो ॥४७॥९हे भूपति १० लिखनेवाले ११ इसका दोष हमको नहीं है क्योंकि हम लिखेहुए के अनुसार लिखते हैं ॥ ४८ ॥ १२ वृत्तान्त१३ इसी वर्ष में ॥ ४९ ॥ १४इसका पिता सूर्यमल्ल१५युद्ध में

ताको बैर[1] बिधायँ करिय यह जट्ट जवाहर ॥
इत मेवारे भटन सठन तसकरपन[2] धारयो ॥
बुंदिय जनपद[3] बीच बिबिध बसु[4] हरन बिचारयो ॥५०॥
कुप्पि तबहि बुंदीस सेन सज्जिय तिन उप्पर ॥
लये पकरि सीसोद झारि असिबर निज तसकर[5] ॥
निवसथ[6] टहला१ मंगटला२ टिंटहरा३के पति ॥
कन्हाउत ए कैद किये अवरहु सागस[7] कति ॥ ५१ ॥
मुंडित डड्डी मुच्छ करि रु डारे काराघर[8] ॥
परयो पयन सगताउत स्यामपुरेस जोरि कर ॥
सु सुनि रान अरिसिंह सचिव पठयो निज बुंदिय ॥
कन्हाउतन छुरान काज उपाय सन तिन किय ॥ ५२ ॥
सुनि नृप तिनकी अरज चोर कारा[9] बाहिर किय ॥
श्रद्धामित सबसौंहि दम्म[10] दंसके[11] अलुब्ध लिय ॥
यह रानाँ अरिसिंह कथित करि दुष्कर कीनी ॥
नतो नृपहिं नहिं लोभ धर्म रीतिहि चित चीनी ॥ ५३ ॥
झंझोली१ बीखरनि२ नैर बँक्करपुरा[12]३दि सब ॥
सद्दन लग्गे संभरेस आदेस नम्र तब ॥
इम संभर उम्मेद मुलक तसकर सब मेटिय ॥
कलिजुग बिच नय[13] धर्म कर्म पांडव[14] नृप ज्यौं किय ॥ ५४ ॥
दोहा—अमरगढप १ बक्करपुरप२, कन्हाउत इन्ह आदि ॥
सगताउत पुरबीखरनि१, झंझोला२ऽऽदि प्रमादि ॥ ५५ ॥
तदनंतर खइराड़के, मैनन[15] किय अति मान ॥
लुट्टन बुंदिय देस लगि, थिर उज्जर[16] किय थान ॥ ५६ ॥

---

१ बैर करके २ चौरपन ३ बुन्दी के देश में ४ धन ॥ ५० ॥ ५ अपने चोरों को ६ ग्राम ७ अपराधी ॥ ५१ ॥ ८ कैद में ॥५२॥ ९ कैद से १० दंड के रुपये ११ लोभ रहित ॥ ५३ ॥ १२ बाकरां १३ नीति १४ युधिष्ठिर के समान ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ १५ खैराड़ प्रदेश के मीणों ने १६ ऊजड़ (शून्य) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

हिंडोलीपुर आनि किय, मिलि मैनन अति रारि ॥
चैनसिंह हम्मीरहर, नत्थू सुत लिय मारि ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे निजदुर्गरणस्तम्भगतकूर्म्मराजमाधवसिंहहड्डेन्द्राऽऽह्वयनप्रीतिजिगमिषूम्मेदसिंहविपन्मित्रसम्मिलनकौर्म्ममृगयाऽऽदिखेलनरावराजनिजमहिषीझल्लीराज्ञीमृत्युश्रवणश्रुतागच्छद्दक्षिणसैन्यमाधवसिंहजयपुरप्रविशनबुन्दीन्द्रबुन्द्यागमनसन्ध्याकेदारराव १ माहजि २ मालववशीकरणविचारितयोधपुरेशविजयसिंहविजितीकरणाऽजमेरद्रङ्गाऽऽगमनसहायार्थाऽऽहूतहड्डेन्द्रगमनधन्वेशसन्ध्यादण्डद्रम्माऽष्टलक्ष८००००० निवेदनजयपुरजनपदाऽऽगतमाहजिमोजाबादनगरलुण्टनरावराजमरुपतिपितृव्यकेडरपुरेशराठौड़रायसिंहसुतोदयकुमारीयोधपुरविवाहनकोटेशसचिवकायस्थाऽक्षयराममोजाबादपुराऽऽगमनश्रावितमरुपतिसहायकारणबुन्दीन्द्रदत्तप्रच्छन्नद्रव्यकायस्थमाहजिबुन्द्यानयनश्रुतैतत्सज्जीभूतबुन्दीन्द्रस्वपुराऽऽगमनसमागतकोटेशशत्रुशल्यसहितसन्ध्येशहड्डेशसङ्ग्रामसुखाऽनुभवनकूर्म्मराजस्वसुभ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में, अपने गढ रणस्थंभ में गये हुए कछवाहों के राजा माधवसिंह का हाडों के पति को बुलाना और प्रीति की इच्छावाले उम्मेदसिंह का आपदा के समय मित्र से मिलना१ कछवाहे का शिकार आदि खेलना और रावराजा का अपनी पाटवी राणी झाली का मरना सुनना २ दक्षिण की सेना का आना सुनकर माधवसिंह का जयपुर में प्रवेश करना और बुन्दी के पति का बुन्दी आना ३ सिन्धिया केदारराव, माहजी का मालवा देश को आधीन करना और जोधपुर के पति विजयसिंह को जीतना विचार कर अजमेर नगर में आना४ सहाय के अर्थ बुलायेहुए हड्डेन्द्र का जाना और मारवाड़ के पति का सिंधिया को दंड के आठ लाख रुपये देना ५ जयपुर के देश में आयेहुए माहजी का मोजाबाद नगर को लूटना और रावराजा का मारवाड़के पति के काका ईडरपुर के पति राठौड़ रायसिंह की पुत्री उदयकुमारी को जोधपुर में विवाहना६ कोटा के पति के सचिव कायस्थ अक्षयराम का मोजाबादपुर में आना और मारवाड़ के पति की सहाय जाने का बुन्दीन्द्र का कारण सुनाकर छाने धन देकर कायस्थ का माहजी को बुन्दी लाना सुनकर सज्ज होकर बुन्दी के पति का अपने पुर में

ट्ठारकादाससाहिपुरेशोम्मेदसिंहस्वकनिष्टसुतमालिमसिंहबुन्दीसहा
यार्थप्रेषणाकृतघ्नमरुपतिकिमप्यप्रेषणायुद्धयद्रावराड्जयपुरेशपुत्रपृथ्वी
सिंहोद्भवश्रवणाज्ज्ञातदुर्गदुर्गत्वमाहजिमस्याहूतबुन्दीन्द्रसम्मिलननीता
ऽऽब्दिककद्रव्यतत्प्रस्थानहड्डेन्द्रभोगिन्यौरसकुमारसरदारसिंहोद्भवनस
म्भरराजस्वभगिनीदीपकुमारीराठोड़राजविजयसिंहविवाहनसम्भर-
दीपसिंहस्वाऽग्रजराज्ञ्यनुजाभवानकुमारीयोधपुरोद्वहनश्रीमन्तमाधव
रायमरणातदनुजनारायणरावश्रीमन्तीभवनपितृव्यरघुनाथरावनि
ष्काशनतदिंगरेजशरणभरतपुरेशजट्टजवाहरमल्लदिल्लीलुण्टनसी
मासमीपस्थराणासामन्तबुन्दीदेशविरोधनरावराट्तत्सर्वनिग्रहणारा-
णाऽरिसिंहप्रार्थनामुक्तदुष्टस्वाधीनीकरणमैणागणबुन्दीदेशलुण्टन
हिंडोलीशहम्मीरवंश्यहड्डचैनसिंहमारणं त्रिपञ्चाशत्तमो५३ मयूखः॥

आना ७ आयेहुए कोटा के पति शत्रुशाल सहित सिन्धिया के पति और हाडों के पति का संग्राम के सुख को अनुभव करना ८ कछवाहों के राजा का अपने उमराव द्वारकादास और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का अपने छोटे पुत्र मालमसिंह को बुन्दी की सहाय में भेजना और किये उपकार को भूलनेवाले मारवाड़ के पति का कुछ नहीं भेजना ८ उस युद्ध में रावराजा का जयपुर के पति के पुत्र पृथ्वीसिंह के जन्म को सुनना और गढ का नहीं मिलना जानकर शाहजी का बुन्दी के पति को बुलाकर मिलना ६ सालाना खिराज लेकर उस का जाना और हड्डेन्द्र की छोटी राणीके उदर से कुमार सरदारसिंह का जन्म होना १० चहुवाणों के राजा का अपनी बहिन दीपकुमरि को राठौड़ों के राजा विजयसिंह को व्याहना और चहुवाण दीपसिंह का अपने बडे भाई की राणी की छोटी बहिन भवानकुमारी से जोधपुर में विवाह करना ११ श्रीमन्त माधवराव का मरना और उस के छोटे भाई नारायणराव का श्रीमन्त होना, काका रघुनाथराव को निकालना और उसका अंगरेजों की शरण लेना १२ भरतपुर के पति जाट जवाहरमल्ल का दिल्ली लूटना और सीमा के समीप रहनेवाले राणा के उमरावों का बुन्दी के देश में विरोध करना, रावराजा का उन सबको पकड़ना और राणा अरिसिंह की प्रार्थना से उन दुष्टों को छोडकर स्वाधीन करना १३ मैणों के समूह का बुन्दी के देश को लूटना और हिंडोली के पति हम्मीरसिंह के वंशवाले चैनसिंह को मारने का तिरपनवां ५३ मयूख समाप्त हुआ॥ ५३ ॥

५३ ॥ आदितः ॥३३४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

तब संभर-नृप तमकि सेन मैंनन सिर सज्जिय ॥
बैरिन झारन बाढ गाढ रव[1] पणव गरज्जिय ॥
हरिणा निजकवि[2] ग्राम लंघि घेरयो द्रुत ऊमर ॥
मैंने द्वैसत २०० मारि थान किन्नौं तरऊपर ॥ १ ॥
पुनि खेड़ा लिय घेरि दुष्ट तँहँ हनिय इक्कसत१०० ॥
बहुरि लुहारी बिंटि अडर लुट्टी रन उद्धत ॥
सजव[3] कुप्पि च्यारिसत ४०० मारि मैंनैं जय मंडिय ॥
गंढोली[4] पुनि ग्राम खुंदि खग्गन सब खंडिय ॥ २ ॥
दारिम रंग[5] दुकूल सत्थ धवपत्त[6] किलंगिय ॥
दुवर[7] गव्यां कोदंड जुरत डुडू[8] कारि जंगिय ॥
बंसुरि भयद[9] बजात पिट्ठि[10] दुवर धरत निखंगन ॥
डारत फोजन फारि मारि कट्टार तुरंगन[11] ॥ ३ ॥
इम मैंनैं रन करत हनिय द्वै सत२०० गड्ढोलिय ॥
आयो बुंदिय बिजय मंडि बंदियैं[12] जस बोलिय ॥
मैंननके सिर मैंनिनैंके[13] सिर दये करंडैन[14] ॥
बधाई गवावत लायो पुरलग तिन रंडैन[15] ॥ ४ ॥

और आदि से तीन सौ चौतीस मयूख ३३४ हुए ॥
१ बडे शब्द से ढोल बजा २ आप के कवि (सूर्यमल्ल) का ग्राम ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ४गाडोली ॥ २ ॥ ५ दाड़िम के रंग के वस्त्र ६ मस्तक पर धोकड़ा वृक्ष के पत्तों की किलंगी ७ दो प्रत्यंचा के धनुष ८ मैणों के लड़ाई करने का साङ्केतिक शब्द है ९ भयंकर १० भाथे ११ घोड़ों को कटारियों से मारकर ॥ ३ ॥ १२ भाटों की यश की बोली करवाकर उन मैणों के मस्तकों को १३ मैंणियों के मस्तकों पर१४टोकरों (छबलियों) में भरवाकर१५उनकी रांडों को बुंदी लाया॥४॥

करंडन१ नरंडन२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
सक आकृति धृति समय१८२२ भयो यह रन *सरदागम॥
सेवन सब सीमार लगे रचि सनेति समागम ॥
याहि बरस१८२२के माघ मास द्वादसि१२सेचक्क जुत ॥
दीपसिंहकै भयो नाम सुरताणसिंह सुत ॥ ५ ॥
करि अग्गैं कोटेस कथित साहजि यह रन किय ॥
नाथाउत उद्योतसिंह तब अरिन मिलन किय ॥
रनकिय१ लनकिय२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
नगर पगाराँ छोरि स्वामि मन्नैं मरहट्ठन ॥
सत्रु होय किय सम्भर लूटि लीनैं कछु रैठन ॥ ६ ॥
यांको काका बखतसिंह मन्न्यौं तब भूपति ॥
दयो पगाराँ ताहि मंडि सनमान महामति ॥
अब सु विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं उद्योत सु आयो ॥
नगर पगाराँ लैन भूप प्रति कथन कहायो ॥ ७ ॥
बुंदीपति तब कुप्पि सुभट पठये तिहिं मारन ॥
मार्यो आनि बजार मध्य कहि तिन अघ कारन ॥
याहि विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं हुलकर वपु छोरिय ॥
तब तस नाती मालराव इंदोर तखत लिय ॥ ८ ॥
सुनि यह टीँका साज भूप पठयो तह हित घन ॥
दुव२ हय दुव२ सिरुपाव इक्क१ गज इक१ मनि भूखन ॥
संकृति धृति१८२४ मित साल मालरावहु हुलकर मृत ॥
तब ताको दायाद नाम तक्कू गद्दिय धृत ॥ ९ ॥
रुप्पय अतिकृति लक्ख२५०००००दये श्रीमंत अरथद्रुत ॥

* शरद ऋतु के आने पर १ नम्रता सहित सुख से आना २ कृष्णपक्ष सहित ॥ ५ ॥ ३ राष्ट्रों (देशों) को ॥ ६ ॥ ७ ॥ ४ पाप करनेवाला ५ उसके पोते ॥ ८ ॥ ६ पुत्र ॥ ९ ॥

इम गद्दिय इंदोर लही तक्कुव सु मंत्र जुत ॥
रूपनगरपुर सुता भूप सामंतसिंह घर ॥
नाम किसोरकुमारि इत सु व्याह्यो नृप सोदर[1] ॥ १० ॥
संकृति धृति१८२४मित साक बिरचि उच्छव बहु दिन तक
व्याह बहादुरसिंह कियउ यह दुलहि पितृव्यक्क[2] ॥
याहि साल१८२४ बिच नृप सपत्न जननी कछु गद[3] लहि ॥
बंसबहाला पतिजा[4] बपु दिय छोरि व्याधि सहि ॥ ११ ॥
बुंदीपति मासुरि[5] बिहीन बनि प्रेत करम किय ॥
द्विजन सु भोजन दान दै रु निगमोक्त[6] सद्धि लिय ॥
संकृति धृति मित याहि साल इत जट्ट जवाहर ॥
जैपुर ऊपर जोर दैन मंड्यो डारन डर[7] ॥ १२ ॥
याको भ्रात सु अग्ग नाम नाहर कछु कारन ॥
आयो जैपुर सरन नारि निज[8] बिपति निवारन ॥
याकै ही इक१ युवति[9] रूप गुन अधिक अपूरब ॥
ताहि जवाहर जट्ट लैन तक्कयो कामुक[10] जब ॥
इंहिं तब जैपुर आय सरन कूरम पतिको लिय ॥
माधव[11] नगर निवाई को परगनाँ ताहि दिय ॥
नाहरसिंह बिताय काल कछु तत्थ गयो मरि ॥
तबहि जवाहर कहिय लैन ताकी वह सुंदरि ॥ १४ ॥
सो सुनि माधव ताहि भरतपुर लग्यो पठावन ॥
बुल्ली तब जट्टनिय उचित है नहिं मम जावन ॥
मोकों वह गृह डारि कूर रक्खहिं बनिता[12] करि ॥

---

१ राजा का सगा भाई दीपसिंह ॥ १० ॥ २ दुलहन के काका ने ३ रोग ४ बांसवाड़ा के पति की पुत्री ॥ ११ ॥५डाढी मूछों के बालों बिना (चौर) होकर ६ वेद का कहाहुआ ७ भय डालने को ॥ १२ ॥ ८ अपनी स्त्री की ९ यौवन वँती स्त्री १० कामी ॥ १३ ॥ ११ माधवसिंह ने ॥१४॥ १२स्त्री करके रक्खेगा

यातैं भेजहु नाँहिं सती जानहु हित अनुसरि ॥ १५ ॥
तवहि भरतपुर मंडि पत्र माधव पठवायो॥
याकौं आवन उहाँ इष्ट नहिं नैंक सुहायो ॥
जट्ट जवाहरमल्ल सु सुनि पठयो प्रतिउत्तर ॥
मम वंधव महिलाहिं तुम सु चाहत रक्खन घर ॥ १५ ॥
यह सुनि जैपुर ईस मन्नि अभिसाप असह मति ॥
निकसाई वह नारि गई बिख खाय उचित गति॥
इहिं कारन अब अतुल बैर गहि जट्ट जवाहर ॥
जैपुर उप्पर जोर दैन सज्जे दल दुद्धर ॥ १७ ॥
बिजयसिंह यह जानि जट्ट जैपुर चढि आवन ॥
आयो पुष्कर अरहिं मिलन अरु मंत्र बनावन ॥
उदयपुर रु आमेर ज्यौंहिं बुंदिय मंडैंजिम ॥
समता गिनि सतकार स्वकर लिखि दल पठयेइम ॥ १८॥
जट्ट जवाहरमल्ल अडर अति वल हो तुम जव ॥
लियउ आगरा१ छिन्नि दव्वि दिल्लिय प्रदेस२ सब ॥
अब हमसौं तुम आय मिलहु पुष्कर विधाय वल ॥
इक्क तखत बैठिहैं जेर करिहैं अरि मंडल ॥ १९ ॥
इम संकृति धृति १८२४ अब्द बंचि दल जट्ट जवाहर ॥
ऊँज पुण्णिमा१५ दिवस मिलन आयो द्रुत पुष्कर ॥
मरुपति ताके सिविर प्रथम पहुँच्यो लहि सासन ॥
सिर कर धरि समकाल उभय२ बैठे एकासन ॥ २० ॥
चमर मोरछल छत्र लगे होवन दोउन२ पर ॥
पुनि मरुपतिके सिविर जट्ट दर्प्पित गय दुद्धर ॥

॥१५॥ १प्रिय २स्त्री को ॥१६॥ ३झूठा दोष ॥१७॥४जाट का ५शीघ्र६घरापर का ७अपने हाथ से ८पत्र ॥१८॥९सेना रचकर ॥१९॥ १०कार्तिक की पूर्णिमा को११ एक समय में दोनों माथे के हाथ लगाकर१२एक गद्दी पर बैठे ॥२०॥१३घमंड से

*समताको सतकार कियउ [†]पूरब जिम मरुपति ॥
पलटि पग्ग रट्ठोर जट्ट हुव [१]सुहृद [२]कुसंगति ॥ २१ ॥
तदनु जोधपुर नाह पत्र पठये जयपत्तन ॥
मिल याहि गिनि तुमहु मिलहु बैठहु इक आसन ॥
तब कूरमपति तमकि एह पठयो प्रतिउत्तर ॥
मित्र होय किम सुद्ध जट्ट जैपुरको किंकर ॥ २२ ॥
सेवन आत सदैव पिक्खि हमरे परवानाँ ॥
मम समताके मित्र रावराजा१ तुम२ रानाँ३ ॥
सु सुनि जट्ट दिय पत्र ओलिं जैपुर लिखि आडी ॥
दोय२ परगना देहु हमहिं खोहरी१ पहाडी२ ॥ २३ ॥
रचहु न तो अब रारि तुमहिं दंडन हम तक्कत ॥
सुनि पठयो निज सेन कुम्भ अर्ककहिं रज ढक्कत ॥
तब माउंडा खेत मिले जट्ट रु जैपुर दल ॥
फैलिय हेतिन फाग राग सिंधुन कोलाहल ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमैणाविजयप्रस्थानतद्ग्रामोमर १ खेडा २ लुहारी ३ गड्डोल्या ४ऽऽदिविध्वंसनहतनवशत ९०० मैणागणपुनःस्वपुराऽऽविशनसोदरदीपसिंहकुमारसुरताणसिंहोद्भवनसंभरराजचालुक्यनाथाउत्तोद्योतसिंहमारणतत्पितृव्यकवखतसिंहपगारॉंपुराऽर्पणा

---

*बरापर का [†]पहिले के माफिक १मित्र २खोटी संगति से अर्थात् क्षत्रियों से जाटों के मित्र होने की संगति नहीं है ॥२१॥२२॥ ३आडी ओळी (पत्रकी आयुर्दा) में ॥२३॥ ४सूर्य को ५ सेना ६ शस्त्रों का फाग ७सिंधवी (बडा) राग का ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दी के पति का मैनों को विजय करने को गमन करके उन के गाम ऊमर, खेड़ा, लुहारी, गाडोली, आदि का नाश करना और नो सौ मैनों के समूह को मारकर अपने पुर में प्रवेश करना १ सगे भाई दीपसिंह के कुमर सुरताण सिंह का जन्म होना और चहुवाण राजा का सोलंखी नाथाउत उद्योतसिंह

हुलकरमल्लारराववद्वत्यजननप्तृमालरावतदधिकारप्रापणबुन्दीन्द्र-टीकोपाख्यतत्सत्कारप्रेषणमालरावमरणाऽनंतरदत्ताऽतिकृतिलक्ष २५००००० द्रम्मतद्दायादहुलकरतक्कूहुलकरपुरेन्दोरगद्दिकोपविशन बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहरूपनगराऽधिराजराठोड़सामन्तसिंहसुताकिशोरकुमारीविवाहनरावराट्सपत्नजननीमरणातत्प्रेतक्रियाऽनुष्ठानपूर्वोदन्तविरुद्धवैरजट्टेन्द्रजवाहरमल्लजयपुरजिगीषुभवनपुष्करक्षेत्राऽऽगत मरुपतिविजयसिंह १ समाहूतजवाहरमल्लसजातीयनृपसमसत्कारसम्मिलनकृतजट्टतिरस्कारजयपुरसैन्य १ जट्टसैन्य २ माउण्डाग्रामरङ्गसम्मिलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूखः ॥५४॥ आदितः३३५॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कटक ईस कछवाहको, बूलापुर पै दलेल१ ॥
लघु सुत लछमन२ जुत लग्यो, खंडन मंडव खेल ॥ १ ॥
दल बखसी गुरुसाहि१ हुत, सचिव बीर हरसाहि २ ॥

को मारना २ उस के काका दलेलसिंह को पगारां पुर देना, हुलकर मल्हारराव का मरना और पोते मालराव का उस का अधिकार पाना ३ बुन्दीन्द्रका उस को टीका नामक सत्कार भेजना और मालरावके मरे पीछे पच्चीस लाख रुपये देकर उसके पुत्र तक्कू का हुलकर के पुर इंदोर कीगद्दी पर बैठना४ बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का रूपनगर के पति राठोड़ सामन्तसिंह की पुत्री किशोरकुमारी से विवाह करना और रावराजा की सौतेली माता का मरना, उस की विधि पूर्वक क्रिया करना४ पहिले वृत्तान्त के कारण वैर बंध कर जाटों के पति जवाहरमल्ल का जयपुर को जीतने की इच्छावाला होना और पुष्कर क्षेत्र में आये हुए मारवाड़ के पति विजयसिंह का जवाहरमल्ल को बुलाकर अपनी जाति के राजाओं के बराबर सत्कार करके मिलना ५ जाट का तिरस्कार करके जयपुर की और जाट की सेनाओं का माउंडा ग्राम के युद्ध क्षेत्र में मिलने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५४॥ और आदि से तीन सौ पैंतीस ३३५ मयूख हुए ॥

१ सेनापति २ पति ॥ १ ॥ ३ फौजबख्शी

एहु खरे खत्री उभय२, चंड करन रन चाहि ॥ २ ॥
इततैं जट्टहु उप्परयो, तोपन बिरचत ताप ॥
भट फिरंगि डारत भयो, समरू कापिलि साप ॥ ३ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

करकि करकि कोप तरकि तरकि तोप,
लरकि लरकि लोप करनलगी ॥
करखि करखि कत्ति परखि परखि पँत्ति,
हरखि हरखि सत्ति हरन लगी ॥
सँमर लखन आय अँमर गगन छाय,
भ्रमर सुमन भाय निकर जुरे ॥
सरजि सरजि सोक लरजि लरजि लोक,
बरजि बरजि ओक दिगन दुरे ॥ ४ ॥
बढिग त्वरित बीर पढिग दरित पीर,
चढिग सरित सीर रुहिर रची ॥
सिलत उरन सेल मिलत फुरन मेल,
ठिलत खुरन ठेल मलप मची ॥
पिलत धुरन पेल भिलत छुरन भेल,
खिलत सुरन खेल लखन लगे ॥

१भयंकर युद्ध करने की चाह से ॥२॥ २कापिलदेव का श्राप ॥ ३ ॥ कोप सहित गर्जना कर करके तोपें चल चल कर ३गिरा गिरा करलोप करनेलगीं ४तलवारें खेंच खेंच कर ५ पैदलों की परीक्षा कर करके प्रसन्न हो हो कर ६ शक्ति हरने लगी ८ देवता ७ युद्ध देखने को आ आ कर और आकाश में छा छा कर ९ पुष्पों पर भ्रमरों की भांति उनके १०समूह जुड़गये १२ लोग धूज धूज कर ११ शोक उत्पन्न कर करके १३ घर छोड़ छोड़ कर दिशाओं में घुस गये ॥४॥ वीर १४शीघ्र बढे और १५डरनेवाले पीड़ा के वचन बोले१६चढीहुई नदी के समान १७रुधिरकी धारा चली भाले छातियोंको फोड़ते हैं१८घोड़ोंके फुरने मिलते हैं और खुरों की टक्करों से हटाते हुए मलंग लेते हैं १९आगे (धुर) वालों की मदत पर भेजते हैं और२०छुरियों से भिलजाते हैं सो प्रसन्न होकर २१देवता

हरखि हरखि हूर परखि परखि पूर[1],
करखि करखि सूर रखन लगे ॥ ५ ॥
गहत गँवरि[2] गैल वहत गिरिस[3] बैल,
सहत भरन[4] सैल कहत फटैं ॥
चहत भटन चैल[5] दहत मनु कि तैल,
महत [6]फवत फैल अगनि [7]अटैं ॥
त्रि[8]र्कसि लि३कसि तेग बि[9]कसिं त्रिकसि बेग,
निकसि निकसि नेगं[10] असुन लहैं ॥
रपटि रपटि रौजि[11] झपटि झपटि ओजि[12],
दपटि दपटि बाजि[13] गजन गहैं ॥ ६ ॥
[14]सैरत जहर सूक टरत [15]अहर टूक,
करत [16]कहर कूक ककुप[17] करी ॥
खिसकि खिसकि हत्थ चिसकि चिसकि मत्थ,
सिसकि सिसकि सत्थ दुरत दरी[18]॥
छलत विसिख[19] छाय घलत त्रिसिख[20] घाय,

खेल देखते हैं "देवता शब्द स्त्री लिंग है परंतु लोक रूढि से पुल्लिंग लिखाजाता है" अप्सराएं प्रसन्न हो हो कर १ पूर्ण परीक्षा कर करके वीरों को खैंच खैंच कर रखनेलगीं ॥ ५ ॥ २ पार्वती को साथ में लेकर ३ महादेव बैल पर चढते हैं जो वीरों के ४ भाले सहते हैं और अपना फटना कहते हैं फिर मरे हुए वीरों के ५ वस्त्र तैल के समान जलते हैं और बडे फैलाव से ६ शोभित होकर ७ अग्नि फिरती है ८ तीन तीन तलवारें कस कर ९ प्रफुल्लित हो हो कर और १० भाले शीघ्र पार निकल निकल कर प्राण लेते हैं वीरों की ११ पंक्तियां दौड़ दौड़ कर १२ युद्ध में शीघ्र शीघ्र १३ घोड़े दौड़ा दौड़ा कर हाथियों को पकड़ते हैं ॥ ६ ॥ १४ शेषनाग चलायमान होकर टलता है और १५ अधरों (ओठों) को काटता है १६ इस जुल्म से १७ दिशाओं के हाथी कूक मारते हैं. हाथ फिसल फिसल कर, माथे दूख दूख कर साथवाले कई सिसक सिसक कर १८ गुफाओं में घुसते हैं कई १९ बाणों को खाकर पढते हैं और २० त्रिशूलों का घाव

कलत निसिख काय भटनकिते ॥
पकरि पकरि पाय जकरि जकरि काय,
नकरि नकरि हाय जपत जिते ॥ ७ ॥
भचकि भचकि मुंड लचकि लचकि सुंड,
मचकि मचकि रुंड उछटि कटैं ॥
भरकि भरकि भेट खरकि खरकि खेटैं,
धरकि धरकि पेट फलक फटैं ॥
खटकि खटकि खग्ग चटकि चटकि अग्गँ,
लटकि लटकि कग्ग मुखन झरैं ॥
अटकि अटकि इद्ध गटकि गटकि गिद्ध,
छटकि छटकि बिद्ध बिसिख धरैं ॥ ८ ॥
भटकि भटकि घुम्मि झटकि झटकि झुम्मि,
पटकि पटकि भुम्मि घुटन घसैं ॥
बटकि बटकि गुंडें मटकि मटकि तुंडें,
रटकि रटकि झुंडें हुलासि हसैं ॥
बिरचि बिरचि बान सिरचि सिरचि मान,

घालते हैं जो १ तीखे त्रिशूल कई वीरों के शरीरों में घुसते हैं तहां कई वीर औरों के पैरों को पकड़ पकड़ कर और २ शरीरों को बांध बांध कर हाय ३नहीं करके बोलते हैं ॥ ७ ॥ मस्तकों की टक्कर लगा लगा कर, हाथियों की शुंडों को नमा नमा कर रुंड मचक मचक उछलते फिरते हैं मिलने से चमक चमक ४ ढालों पर कड़के (शब्द) होकर पेट में धकधकी लगकर ५ ढालें वा आकाश फटता है ६तरवारों के खटके हो हो कर और ७अग्रभागों के टुकड़े हो हो कर ८काग लटक लटक कर मुखों से झड़ते हैं गिद्ध ९बहुत अटक अटक कर खाते हैं १०पेघेहुए कई गिर गिर कर भी ११बाणों को धारण करते हैं ॥८॥ घूमते हुए वृथा फिर फिर कर कई बहुतों को खैंच खैंच कर लगते हैं और एक दूसरेको भूमि पर पटक पटक कर १२घुटनों से रगड़ते हैं १३तरवार आदि के म्यान टूट टूट कर १४मुख को मटका मटका कर दौड़ दौड़ कर वा टक्करें लगा लगा कर प्रसन्न हो हो कर वीरों के कई १५समूह हँसते हैं १६बाणों को रचरच (चला चला) कर सिरची सिरची के १७ समान कानों के टुकड़े टुकड़े गिराने लगे था

किरचि किरचि कान किरन लगे ॥
ललकि ललकि लोल झलकि झलकि हाल,
खलकि खलकि खालें फिरन लगे ॥ ९ ॥
झनकि झनकि झोंरें सनकि सुरभि सौंर,
भनकि गुटिनं भौंर भ्रमन लगे ॥
तरस खंपद खेत परस रंपद प्रेत,
दरस भंपद देत दमन लगे ॥

॥

॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जयपुर दल अरु जट्ट दल, रचि कछु तोपन रारि ॥
खैंचि मिले पुनि असिन इम, झुकि झुकि धारन झारि ॥११॥

॥ प्रकृतिः ॥

सचिव मुख्य खत्री हरमाहि१, अरु बखसी गुरुसाहि९उँगाहि ॥
मिलि अधिवीरें जट्ट बहुझारि, तूटि गिरे भारत तरवारि ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

धूंलापुरप दलेल सुपहु कूरम सेनानी ॥
अति जंव हयन उठाय मिल्यो जट्टन बिच मानी ॥
सिविका दंड समान करे वहु अरि नारिन कर ॥

---

१ गिरनेलगे और २ क्रोध में लाल हुए ललकारें कर करके ३ वर्तमान में (युद्ध में) बढ बढ कर ४ नाले बहा बहा कर या बह बह कर कई वीर फिरने लगे ॥ ९ ॥ ५ गुच्छों पर झनकार कर करके ६ वसंत ऋतु में भ्रमरों के उडने का शब्द होवे तैसे ७ गोली रूपी भ्रमर भ्रमने लगे और युद्ध क्षेत्र में ८ नाश को देनेवाले प्रेत स्पर्श करने से धुजा धुजा कर ९ वेग के साथ १०भयङ्कर दर्शन देकर दंड देनेलगे ॥ १० ॥ ११ तलवारों को खैंचकर ॥ ११ ॥ १२ [illegible] करी १३ वीरों के पति ॥ १२ ॥१४ धूला पुर का पति दलेलसिंह १५ सेनापति१६ वेग से १७ पालखी के डांडे के समान (चूडियों रहित)

सिर ताको लहि सुभग हुलासि किन्नौं[1] भूखन हर ॥
संक्रमि निसंक तोपन सम्मुख कातर[3] बैंच रंच न कह्यौ ॥
भल भल दलेल जयनैर भट रन बिच बनि तिल तिल रह्यो१३

॥ दोहा ॥

लछमन४ याको पुत्र लघु, राजाउत रचि रीस ॥
अधिक उथप्पिय अरिन असु, सिवहिं समप्पिय सीस ॥१४॥

॥ पादाकुलकम् ॥

साँवलदास वंसि सेखाउत, नाम गुमान५ वंदि[4] बिरुदन नुत ॥
सो बढि नगर पचाहर स्वामी, निडर लरयो मस्तक बिनु नामी१५
सीकरपति सिवको कनिष्ठ सुत, जुरयो तिनहिं बुधसिंह६हरख जुत
उर[6] दुंदुभि करि बहु अरि नारिन,तृन गिनि वँपु लग्गो तरवारिन१६
सेखाउत झुंझनु पत्तन पति, नवलसिंह७ भज्यो दिखात नति॥
सेखाउत सिवदाससिंह८ पुनि, धानुंती पति परयो खग्ग धुनि १७
सेखाउत खुंडरा गाम ईन, रघुनाथ९हु तुट्टयो तरवारिन ॥
ईटावा पति तिम नाथाउत, नाहरसिंह१०परयो रन राउत ॥१८॥
महासिंह११कलमंडा नायक, सुरतानोत परयो घन घायक ॥
जयपुरके इत्यादि सुभट बहु, परे बिहाय देह संगर पँहु[11] ॥ १९ ॥
खग्गन अमित जट्ट भट खाये, भीरु बचे तिन्ह मारि भजाये ॥
छिज्जत कटक जट्ट पय छुट्टे, तेगँन[12] पिक्खि सिपाहन तुट्टे॥ २० ॥
समरू[13] रह्यो फिरंगी सम्मुह, तोप तड़ितें[14] झारत अरि भूरुहँ[15] ॥

१शिव ने प्रसन्न होकर२चलकर३कायर वचन ॥१३॥१४॥ ४ भाटों के बिरुदों में स्तुतियों योग्य ॥१५॥५शिवसिंह का ६छातियों रूपी नगारे ७शरीर को ॥१६॥ ८ नम्रता दिखाकर ॥ १७ ॥ ९ पति ॥ १८ ॥ १० बहुतों को मारनेवाला ११ युद्ध के प्रभु ॥ १९ ॥ १२ तरवारों से सिपाहों को टूटे हुए देखकर जाट भागा ॥२०॥१३समरू को सामान्य रीति से फिरंगी लिखा है नहीं तो यह फरासीसी था १४ तोप रूपी बिजुली से १५ शत्रुओं रूपी वृक्षों को गिराकर

कर

चला,

गोलन कूरम कटक गिरायो, प्रभुहिं भरतपत्तन पहुँचायो ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

तखत१ छत्र२ अरु तोप३ कोस४ लुट्टे कछवाहन ॥
भरतनैर गय भज्जि जट्ट मरवाय सिपाहन ॥।
जित्ते कूरम जोध नाग जट्टन गिनि नाहर ॥
समरू ठट्टै न जु संग जाय पक्करैहिं जवाहर ॥
संक्रुति भुजंग ससि १८२४ मान सक हेमंतक यह जंगहुव
जयनैर बिजय जट्टन भजन भई बिदित आवाज भुव॥२२॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७राशावुम्मे-दसिंहचरित्रे जयपुरसैन्य १ जट्टजवाहरमल्ल २माउण्डामालाऽभि-सम्पाताऽनुष्ठानमाधवसिंहसेनानीसपुत्रदलेल १ सचिवखत्रिहरसा-हि २ गुरुसाहि ३ सुभटसेखाउतगुमानसिंह ४ बुधसिंहा ५ऽऽदि-मरणजट्टेन्द्रपलायनहतश्रीसामन्तफिरङ्गिसमरूसमायोधनकूर्म्मराज-विजयवर्द्धनच्छत्रकोशाऽऽदिजट्टवैभवलुण्ठनं पञ्चपञ्चाशत्तमो५५ मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः॥३३६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा

१कछवाहे की सेना को गिराकर अपने स्वामी को भरतपुर पुगाया॥ २१ ॥
२ खजाना ३ भरतपुर ४ जाट को हाथी जानकर, सिंह रूपी कछवाहे लड़े ५ हेमन्त ऋतु में ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में जयपुर की सेना और जाट जवाहरमल्ल का माउंडा के खेत में युद्ध करना१ माधवसिंह के सेनापति पुत्र सहित दलेलसिंह, सचिव खत्री हरसाहि और गुरुसाहि, सुभट सेखावत गुमानसिंह, बुधसिंह आदि का मरना २ जाटों के पति का हतश्री होकर भागना फिरंगी समरू का युद्ध करना ३ कछवाहे राजा का विजई होना और छत्र, खजाना आदि जाट के वैभव को लूटने का पचपनवां मयूख समाप्त हुआ॥५५॥ और आदि से तीन सौ छत्तीस ३३६ मयूख हुए॥

इहिं रन दैन सहाय इत, बडो तनय बुंदीस ॥
पठयो जैपुर *पुब्बही, मारन जट्ट महीस ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

राजकुमर रनमाँहिं नाँहिं माधव जावन दिय ॥
जात भई पुनि जानि काल[1] अवसर उच्छव किय ॥
[2]नाहरगढ आमैर आदि निज दुर्ग दिखाये ॥
नाना महल सिकार बिरचि अति लाड बढाये ॥
पुनि माघ बिसद[3] पंचमि५ दिवस सहि[6]०गजन आरुहि[4] संभट[5]
बुंदीस कुमर जुत फाग बिधि मंडिय डारि गुलाल थट ॥२॥
कूरम नृप पुनि कहिय बुल्लि बुंदीस पुरोहित ॥
राजकुमारहिं रक्खि चहत व्याहन मेरो चित ॥
अंक[6] कलाप अधीस सुता लैं[7]लगन दिखावहिं ॥
बनि हम स्वसुर बिबाहि चतुर कुमरहिं पहुँचावहिं ॥
द्विज दयाराम सुनि किय अरज है अतुलित भूपदीप हित ॥
पै इम न होय उपयम[8] प्रथम बुंदिय[9] सैन व्याहन उचित ॥३॥

॥ दोहा ॥

रहि तदनंतर सिसिर ऋतु, फग्गुन खेलत फाग ॥
कूरमपति संभर कुमर, अति मंडिय अनुराग[10] ॥ ४ ॥
बलि[11] मधु[12] मास बसंत बिच, बहुबिध हरख बिधाय[13] ॥
कुमरहिं लाड अनेक करि, रक्ख्यो कूरम राय ॥ ५ ॥
अतिकृति धृति१८२५ हायन[14] लगत, पुरिसाम१५चैत्रिके[15] पाय॥

---

* पहिले ही ॥ १ ॥ १ समय "यहां समयवाची दो शब्द वीप्सा अर्थ में है. अर्थात् समय समय पर वा बहुत वेर उत्सव किया है" २जयपुर के गढ का नाम है ३ शुद्धि ४ चढकर ५ उमरावों सहित ॥ २ ॥ ६ गोद लेकर ७ आप का स्नेह ८ पहला विवाह ९ से ॥ ३ ॥ १० प्रीति ॥ ४ ॥ ११ पुनि १२ चैत्र १३ करके ॥ ५ ॥ १४ वर्ष १५ चैत्र मास की

कूरमपति लहि राग कछु, *विग्रह दिन्न विहाय ॥ ६ ॥
ताको सुत जेठो तबहि, पित्थल बैठो पट्ट ॥
अजितसिंह हित सिक्ख अब, दिन्नौं तिहिं विधि बट्ट ॥ ७ ॥
इक१ नग भूखन द्विरद इक, दुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
करि इम नजरि कुमारकी, भन्यौं[1] गिनहु हित भाव ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अजितसिंह बुंदीसकुमर इम चलिय सिक्खकरि ॥
संगानेर सिकार खिल्लि ह्वंकिय रंहसं[2] धरि ॥
रहिय चाटसुवं[3] रत्ति बहुरि दरकुंच बिरचि द्रुत ॥
बुंदी आयउ बीर समर पंडित भट संजुत ॥
परि जनकं[4] पयन मंडियप्रनति कुसल पुच्छि आसिखकहिय
अभिमन्यु लखत हरिभाम[5] इम गुरु प्रमोद भूपहु गहिय ९

॥ दोहा ॥

तदनु[6] कुमर उपयम[7] उचित, लखि नृप लगन लखाय ॥
पठयो व्याहन कृष्णगढ, बहुल[8] बरात बनाय ॥ १० ॥
अतिकृति धृति१८७५ सक आगमन, सज्यो लगन सुढार॥
तीज३ राध अवदात तिथि, उदित बार अंगार[9] ॥ ११ ॥
सुपहु बहादुरसिंहकी, कन्न्या सुज्जकुमारि[11] ॥
अजितसिंह बुंदीस सुत, नवल[12] बिवाहिय नारि ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दंपति[13] नल१ दमयंति२ पुत्र[14]१ पाटलि[15]२ नितांत[16] प्रिय ॥

---

*शरीर छोड़ दिया ॥ ६ ॥ ७ ॥ १कहा ॥ ८ ॥ २ वेग (शीघ्रता) से ३ चाटसू में रात को रहा ४ पिता के पैरों में पड़कर ५ श्रीकृष्ण के बहिनोई (अर्जुन) की भांति ॥ ९ ॥ ६ जिस पीछे ७ विवाह के उचित ८ बहुत ॥ १० ॥ ९वैशाख सुदि १० मंगलवार ॥ ११ ॥ ११सूर्यकुमारी १२ नवीन ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति और स्त्री) १४ जैसे पुत्र नामक राजा १५ पाटली नामक रानी १६ निरन्तर

मनहु सची२ [1]मघवान१ [2]कन्हैं१रुक्मिनि२ मिलाप किय ॥
बासवदत्ता२ [3]वैच्छराज१ [4]गिरिजा२ गंगाधर१॥
[5]अवनिसुता२ [6]रघुइंद१दुल्लहि [7]संज्ञा२ रु दिवाकर१ ॥
रोहिनि२ [8]सुधागु१[9]पंचेषु२रति१[10]पिल्लिप्पिल्ला२[11]वैकुंठपति१ ॥
रट्ठोरि२ हड्ड२ [12]रमनियँ [13]रमन इम मंडिय [14]अनुराग अति ।१३।

॥ दोहा ॥

जात [15]भुजिष्या जठर भव, स्वीय नाम संग्राम ॥
सोहु सुता सिरदारकी, व्याह्यो संगहि बाम॥ १४ ॥
अभयकुमरि [16]अभिधान यह, जननि भुजिष्या जात॥
इम बिबाहि आये उभय२, बुंदिय बिदित बरात ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि१८२५ बरस इत [17]सुक्र मास मरुपति जेठो सुत ॥
फतेसिंह अभिधान गयो व्याहन कोटा द्रुत ॥
महाराव तनया सु रान जगपति [18]तनयोजा ॥
हड्डी दुलहनि हत्थ रुचिर गहि [19]दुल्लहराजा ॥
आयो सु तदनु बुंदिय नगर नृप रक्खिय अति लाड करि॥
बासर बिताय पंद्रह१५प्रमित बिदा करिय हित अमित धरि१६
याहि बरस१८२५ आसाढ [20]बिसंद अष्टमि८ [21]रविबासरैं ॥
सुपहु भुजिष्या [22]सूनु नाम सिवसिंह बीरबर ॥

---

१ इन्द्र और इन्द्राणी २श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ३ राजा वत्सराज और उसकी राणी वासवदत्ता ४ शिव और पार्वती ५ सीता और ६ रामचन्द्र ७ सूर्य और सूर्य की स्त्री संज्ञा ८ चन्द्रमा और रोहिणी ९ पांच बाणोंवाला (कामदेव) और रति ११ श्रीविष्णु भगवान् और १० लक्ष्मी का मिलाप हुआ तैसे राठोड़ी और हाडा १२दुलहन १३ दुलहे की १४ प्रीति रची ॥ १३ ॥ १५ पासवान के उदर से जन्म पानेवाला ॥ १४ ॥ १६ नाम ॥ १५ ॥ १७ ज्येष्ठ मास में १८ राणा जगतसिंह की पुत्री की पुत्री १९ बींद राजा ॥ १६ ॥ २० शुक्लपक्ष की २१ आदित्यवार २२ राजा की पासवान का पुत्र

मरुपति विजय खवासि सुता[1] आव्हय पद्मावति ॥
जाय नगर जोधपुर परनि आयो जिम रतिपति[2] ॥
मेवार मुलक इत दंद[3] मचिलैन दुरित फल[4] समय तहिं ॥
अरिसिंह रान सैंन[5] भट[6] अखिल फुट्टे कछुक फरेब कहि १७

॥ दोहा ॥

उद्धत गिनि अरिसिंहकों, मिलि सुभटन किय मंत्र ॥
काहूको इक१ आनि सिसु, सो किय रान स्वतंत्र ॥
रानी झल्लिपके उदर, राजसिंह सन[7] जात ॥
रतनसिंह अभिधान[8] यह, किन्नों इम विख्यात ॥ १९ ॥
झल्ला भट जसवंत१ निज, गोघुंदा पुर नाह ॥
तनया[9] व्याहिय अग्ग तस, राजसिंह हित राह ॥ २० ॥
सुत ताको यह थप्पि सिसु, रतनसिंह रचि नाम ॥
मातामह[10] जसवंत१ हुव, करन मूढ अघ[11] काम ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

गोघुंदापति झल्ल मिल्यो जसवंत१ मंदमति[12] ॥
सगताउतन[13] समेत पाप मुहुकम२ भिंडर पति ॥
देवगढप जसवंत३ सूनु[14] राघव[15]१ निज संजुत ॥

१ नाम २ कामदेव ३ उपद्रव ४ पाप का फल ५ राणा अरिसिंह से ६ सब उमराव ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ राणा राजसिंह से हुआ ८ (*) नाम ॥ १९ ॥ ९ पुत्री ॥२०॥१०नाना ११पाप का कार्य ॥ २१ ॥ १२मूर्ख १३सगताउतों सहित १४ पुत्र १५ राघवदेव सहित

(*)मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में लिखा है कि राणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब राणी झाली को गर्भ था परन्तु अरिसिंह के भय से उसने गर्भ होने से नांहीं करदी, जिसपीछे रत्नसिंह का जन्म हुआ तब उसको गुप्त रखकर रत्नसिंह का नाना गोघूंदे का राजा जसवंतसिंह गोघूंदे लेगया और मेवाड़ के कई उमराव सरदार उन में मिलगये, यहां तक उन सर्दारोंका कोई अधर्म नहीं था परन्तु वह रत्नसिंह बाल में ही मरगया तब उन सरदारों ने अरिसिंह की क्रूरता के कारण किसीके बालक को लाकर रत्नसिंह नाम से रखदिया और रत्नसिंह का मरना प्रसिद्ध नहीं किया यह मेवाड़ के उन सरदारों का अधर्म... [illegible] पर

फतैसिंह चहुवान४ दुंग कुष्ठार ईसं हुत ॥
बेघम पुरेस भट मेघ५ बलि अग्रेसर ए पंच५ हुव ॥
वय बाल जाय किन्नौं अधिप धरि गढ कुंभिलमेरु ध्रुवं २२

॥ दोहा ॥

देवपुरा हो तँहँ बनिक, किल्लादार बसंत१ ॥
सोहु मिल्यो सिसु नाँहिं सठ, हानि धरम करि हंत ॥२३॥
समरसिंह राउल नृपति, दिल्लिय जाय उदग्ग ॥
भँगिनी पृथ्विपराजकी, पृथा बिवाह्यो अग्ग ॥ २४ ॥
तब ताके दायज दिये, एहु बनिक चहुवान ॥
रहे हुकम अँनुगत सदा, अब पलटे अघवान ॥ २५ ॥
जँहँ रानाँ अरिसिंहनैं, धरे द्रम्म कृति लक्ख२०००००० ॥
तेहु न दिन्नैं द्रोह तकि, प्रबल बंधि परपक्ख ॥ २६ ॥
रायसिंह१ झल्ला सुभट, नगर सादड़ी नाह ॥
देलवाड़ पति झल्ल पुनि, राघवदेव२ सचाह ॥ २७ ॥
पत्रन सन ए दुव२ मिले, भट लहि कछु सिसुं भेट ॥
उभय२ रहे अरिसिंहसैं, सलूमरि१ रु आमेट२ ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

उदासिन भट ईतर रहे प्रकटन अँनिमिख बसि ॥
कपटबाल लै संग सुभट उलके आयुध कसि ॥

१ कोठारिया नगर का पति ॥ २२ ॥ २उस दैश्य की जाति है ३खेद है ॥२३॥
४ (*)पृथ्वीराज की बहिन ॥ २४ ॥ ५ हुकम के आधीन ६पापी ॥ २५ ॥ ७शत्रु का पक्ष ॥ २६ ॥ ८ झाला ॥ २७ ॥ ९ पत्रों से १० रत्नसिंह से भेंट (नजराना और अर्थात् फौज खर्च) ॥ २८ ॥ ११अन्य उमराव तटस्थ रहे १२स्वामी के वश होकर राठोड़ अथवा निरंतर देखते रहकर

पासवान(*)हम ऊपर लिख आये हैं कि राउल समरसिंह और पृथ्वीराज चौहाण के समय में सौ वर्ष का अन्तर आस में १८२२ समरसिंह का पृथा से विवाह करना सर्वथा मिथ्या है. यह मिथ्या कथा कपोलकल्पित नवीन शुक्लपक्ष की रजरासा के कारण प्रसिद्ध हुई है॥

उदयनैर दिय आनि घेर तोपन कराल घन ॥
फैरन पर रचि फेर ज्वाल व्याकुल किय पुरजन ॥
तुट्टत निपान फुट्टत निलय गढन गाढ छुट्टत गहन ॥
प्राचीनबरहि पुत्रन मनहु तजिय वँन्हि बिटपन दहन ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जट्टरणकूर्म्मविजयसहायार्थबुन्दीन्द्रपूर्वप्रेषितराजकुमाराऽजितसिंहजैपुरनिवसनयुयुत्सुतन्माधवसिंहाऽवरोधनजट्टजयाऽनन्तरनानाविलासविलसन द्विजदयारामकुमारश्वशुरीभवितुकामजायसिंहिसम्बोधनसमनन्तरतच्चैत्रपूर्णिमा१५ माधवसिंहमरणपृथ्वीसिंहजयपुरगद्दिकोपविशनविहितव्यवहारोम्मेदसिंहिबुन्द्यागमनराधाऽवदाततृतीया ३ सदासेविभ्रातृसंग्रामसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंहकृष्णगढविवाहनशुक्रमासलग्नमरुराजविजयसिंहकुमारफतैसिंहको

१अग्नि से २ उपजलाशय (खेली आदि निवान) ३ मकान ४प्रचेताओं ने मानों वृक्षों को जलाने को अग्नि छोडी (यह कथा भागवत में इस प्रकार है कि प्राचीनबर्हि के पुत्र प्रचेता तप करने को गये थे तब पीछे से नारद के उपदेश से प्राचीनबर्हि भी वन में तप करने को चलागया इस कारण देश में अराजकता होकर संपूर्ण पृथ्वी को वृक्षों ने ढक ली, तदनंतर प्रचेता जब तप करके पीछे आये तब अग्नि फैलाकर उन वृक्षों को जलाया)॥२६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट के युद्ध में सहाय देने के अर्थ बुन्दी के पति के पहिले भेजे हुए राजकुमार अजितसिंह का जयपुर में रहना और उस युद्ध की इच्छावाले को माधवसिंह का रोकना१ जाट से विजय हुए पीछे अनेक प्रकार के विलास करना और ब्राह्मण दयाराम का कुमर के श्वशुर होने की कामनावाले जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) को समझाना२ उस सम्वत् के पूर्ण हुए पीछे चैत्र मासकी पूर्णिमा को माधवसिंह का मरना और पृथ्वीसिंह का जयपुर की गद्दी पर बैठना ३ उचित व्यवहार के साथ उम्मेदसिंह के पुत्र का बुन्दी आना और वैशाख सुदि तीज को सदैव सेवा करनेवाले भाई संग्रामसिंह और महाराज कुमार अजितसिंह का कृष्णगढ विवाह करना ४ ज्येष्ट मास के लग्नपर मारवाड़के राजा विजयसिंह के कुमर फतहसिंह का कोटा के पति की पुत्री से

टेशसुताविवाहनंभोजिष्येयबुंदीन्द्रकुमारशिवसिंहभोजिष्येयीधन्वेश
बाखतसिंहसुतोद्वहनमेदपाटदेशस्वामिसामंतविग्रहवर्द्धनराणाराज
सिंहव्याजपुत्ररत्नसिंहकुम्भिलमेरुदुर्गप्रकटभिवनगोघुन्देशझल्लाजस
वंतसिंह १ स्वकुलसहितभिण्डरेशसगताउत्तमुहुःकर्म्मसिंह२ सपुत्र
देवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंह३ कुठारेशचाहुवाणफतेसिंह ४ वेघ
मेशचुंडाउत्तमेघसिंह ५ दुर्गाऽध्यक्षवणिग्वसन्तरामा ६ ऽऽदिच्छद्म-
शिशुप्राकट्यसेवनसादडीशझल्लारायसिंह१ देलवाडेशझल्लाराघवदे
व२ प्रच्छन्नशिशुस्वामित्वस्वीकरणोदयपुरचमूवेष्टनतत्तोपरणारा
रिसिंहव्याकुलीभवनं षट्पञ्चाशत्तमो ५६ मयूखः ॥ ५६ ॥
आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत हुलकर तक्कू अडर, आयो हिंदुसथान ॥
आगम पख फग्गुन असित, सक अतिकृति धृति१८२५मान।१।
तक्कू पँहँ बुंदीस तव, सब टींका विधि साजि ॥

विवाह करना और बुन्दी के पति के दासीसुत शिवसिंह का मारवाड़के पति बखतसिंह के पुत्र (विजयसिंह) की पासवान की पुत्री को विवाहना५ मेवाड़ देशमें स्वामी और उमरावोंमें विरोध बढना, राणा राजसिंहके झूठे पुत्र रत्न-सिंह का कुंभलमेर के किले में प्रसिद्ध होना१ गोघुंदा के पति झाला जसवन्तसिंह, अपने कुल सहित भींडर पुर के पति सगतावत मुहुकमसिंह, पुत्र सहित देवगढ के पति चुंडाउत जसवन्तसिंह, कोठारिया के पति चहुवाण फतहसिंह, वेघम के पति चुंडाउत मेघसिंह, और किलेदार बनिया वसन्तराम आदि का छलवाले बालक को प्रकट करना ७ सेवा करने को सादड़ी के पति झाला रायसिंह, देलवाड़े के पति झाला राघवदेव का छिपेहुए बालक का स्वामीपन स्वीकार करना ८ सेना से उदयपुर को घेरना और उस तोप युद्ध से अरिसिंह के व्याकुल होने का छप्पनवां ५६ मयूख समाप्त हुआ ॥५६॥ और आदि से तीन सौ सैंतीस ३३७ मयूख हुए ॥

१ फागण बदि ॥ १ ॥

पठई कुल पहिरावनी, *बलि भूखन१ गज२ बाजि३॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि बरस१८२५ बिच अजितसिंह बुन्दीस कुमारहु ॥
सुनि जनपद निज सोर बिंत्त लुट्टन सैंनन बहु॥
चढ्यो कुपित चहुवान जनक आदेस पाय जँहँ ॥
बारह १२ खेटँन बिंटि ताप दिय अतुल उग्र तँहँ ॥
करि कैद अखिल तसकर कुमति कारा बिच डारिय कुमर
जय द्विरद बंधि आलान भुज धन्न्य धन्न्य हुव सकल धर३

॥ दोहा ॥

इंद्रकुमरि१ अरु ब्रजकुमरि२, जननि भुजिष्या जात॥
दुहिता निज बुन्दीस हुव२, व्याहिय इत विख्यात॥ ४ ॥
अजितसिंह मरु ईसको, सुत लघु हो जु किसोर ॥
सुभमति तास खवासि सुत, जैतसिंह१ रन जोर ॥ ५ ॥
बुल्लि राजगढसन बिदित, वाहि अतुल उच्छाह ॥
दुहिता व्रजकुमरि सु दई, रचि बिबाह हित राह ॥ ६ ॥
नगर करोली नृप तनय, कुसलसिंह दासेयं ॥
सुत ताको जयसिंह२ सो, पुनि बुल्ल्यो प्रभु प्रेयं ॥ ७ ॥
इंद्रकुमरि ताकँहँ दई, अखिल सिद्धि अवधान ॥
दायज द्रव्य अनेक दिय, चित्त उदधि चहुवान ॥ ८ ॥
बहुरि बहादुरसिंह१ अरु, स्वीय कुमर सिरदार२ ॥
गग्गरौंड़ व्याहे उभय२, लगन रीति इक१ लार ॥ ९ ॥

---

*पुनि ॥ २ ॥ १ अपने देश में २ सैनों के बहुत धन लेने का ३ पिता के हुकम में ४ खेड़ों को घेरकर ५ चोरों को ६ कैद में ७ जय रूपी हाथी का ८ भुजों रूपी हाथी बांधने के खंभे से बांधकर ९ सब भूमि में ॥ ३ ॥ पासवान माता से १० उत्पन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ पुत्री ॥ ६ ॥ १२ दासी का पुत्र १३ स्वामी का प्यारा ॥ ७ ॥ १४ सब मनोयोग्य (वांछित) साधकर ॥ ८ ॥ १५ गागरोन ॥ ९ ॥

बिक्रम सक पंचीस धृति १८२५, पंचमि५ माघ *बलच्छ ॥
†दनुजपुरोहित बीर दिन, उदय रासि लिय अच्छ ॥१०॥
बखतसिंह रावत सुता, चंद्रकुमरि१ अभिधान ॥
परनि बहादुरसिंह१ लिय, तिय झल्लिय मतिमान ॥ ११ ॥
जोराउर राउत सुता, अभयकुमरि२ गुन[1] फार ॥
दुलहनि अंचल[2] गंठि दै, सो ब्याहिय सिरदार ॥ १२ ॥
कुमर बहादुरसिंह१ हित, दयो तदनु नृप दाय[3] ॥
नगर गोठड़ा जुत पटा, असी सहँस ८०००० मित आय[4] १३
सुत कनिष्ठ सिरदार हित, दिय तदनंतर दाय ॥
पुरी दुधारी जुट पटा, अग्र लिखित८०००० मित आय १४
सक अतिकृति धृति१८२५प्रमित समें,पिक्खि उचित नृप पास॥
थंभायत[6] छठ्ठो६ कियउ, मानिकराम सु ब्यास ॥ १५ ॥
प्रथम पुरोहित१ ब्यास२ पुनि, ए उत्तम दुव२ जानि ॥
त्योंही चारन३ भट्ट४ ए, दुव२ मध्यस्थ बखानि ॥ १६ ॥
वारिय५ तिम ढँम्मामि६ क्लि, उभय२ अधम ए आहि ॥
बेहत[8] वृत्ति बुंदीसकी, थंभायत खट६ चाहि ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

रान भटंन[10] इत रचि फरेब रतनेस रान किय ॥
सजि प्रचंड निज सेन उदयपुर आनि बिंटि लिय ॥
अधिक रान अरिसिंह जंग सन हुव ब्याकुल जब ॥
जालम[11]१ झल्ला करि वकील पठयो अवंति[12] तब ॥
अरु अगरचंद२ महता बनिक इन दोउन२ द्रुत जाय तित॥

* शुक्लपक्ष † शुक्रवार ॥ १० ॥ ११ ॥ १ गुणों की समूह २ वस्त्र की गांठ देकर (गंठजोड़ा करके) ॥ १२ ॥ ३ दायभाग (भाईबंट) ४ आमद ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ५ सम्वत् ६ नेगी (नेग पानेवाला) ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ ढोली ८ हैं ९ पाते हैं ॥१७॥ १० राणा के उमरावों ने ११ झाला जालमसिंह को १२ उज्जैन भेजा

पठवाये अरज श्रीमंत पँहँ लिय आदेस[1] सहाय हित ॥१८॥

दोहा—सुनत अरज श्रीमंत लिखि, दिय कग्गर[2] उज्जैन ॥
राघव१ दोला२ रानकी, करहु भीर सह सैन ॥ १९ ॥
पायगिया मरहट्ठ तब, राघव१ लखि पँहु पत्त[3] ॥
जिमहिं वीर दोला२ जवन, ते दुव२ साजिय तत्त ॥ २० ॥
पंद्रह सहँस १५००० अनीक पति, दोउन२ सुँकर[4] दिखाय ॥
झल्ला जालमसिंह लै, इंकिय रान सहाय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप अनिरुद्ध समय झल्ला भट माधव[5]१॥
तजि जनपद[6] गुजरात इत सु आयो चलि अति जव[7] ॥
सब कुटुंब निज संग द्विरद१ सिबिका२ रथ३ जेवर४ ॥
बुंदिय आवत वेर गयो सम्मुह नृप संभर ॥
सिर कर लगाय मिलि प्रीतिसन रक्खिय तब कछुदिन रहिय
पुनि जान अरज किय तब सुपहु डेरा जाय रु सिक्ख दिय२२

॥ दोहा ॥

कोटा माधव झल्ल गय, तदनु दिष्ट[8] अनुसार ॥
रामसिंह कोटेस यह, रक्खिय सह सतकार ॥ २३
रामसिंह जाजाव मरयो, भीम भयो जब भूप ॥
वानैंहू माधव यहै, रक्खयो हित अनुरूप ॥ २४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

माधवके सुत मदनसिंह२ हुव, दुज्जनसल्ल सु सचिव किन्न ध्रुव॥
दुज्जनसल्ल मिच्चु[9] जब पायो, तिहिं अनतासन आजितं[10] बुलायो२५

१ हुकम लिया ॥ १८ ॥ २ पत्र ॥ १९ ॥ ३ स्वामी का पत्र देखकर ॥ २० ॥ ४ अपने श्रेष्ट हाथ दिखाकर ॥२१॥ ५ माधवसिंह ६ देश ७ शीघ्र ॥२२॥ ८ भाग्य के अनुसार ॥ २३ ॥ २४ ॥ ९ मृत्यु १० अजितसिंह को ॥ २५॥

पृथ्वीसिंह३ मदन झल्ला सुत, सत्रुसल्ल सन्न्यो सु मोद जुत ॥
सत्रुसल्ल बिनु सुत वपु तजि दिय, तब तस अनुज[1] गुमान पट्ट लिय ॥ २६ ॥
पृथ्वीसिंह झल्ल सुत जालम४, यह ठहैं जाहिर जग[2] आलम ॥
ताकै कछु कोटापतिसौं तब, अनख भई सु रह्यो न तत्थ अब २७
छोरि गुमानसिंह कोटा पति, उदयनेर आयो प्रपंच मति ॥
सु अरिसिंह रानहु सनमान्यौं, अति हित जाय ससुख पुर आन्यौं२८
तखतसिंह जयसिंह रान सुव, ताके सुत अज्ञात[3] नाम हुव ॥
ताकी सुता व्याहि जालम कहँ,इम सनमानि रान रक्खिय तहँ२९
दयो राज्य उर्पटंक[4] मुदित मन, पुनि पर चित्ताखेड़ परग्गन ॥
सो जालम यहँ रान सहायक, लै मरहट्ठ कटक रन लायक[5]॥३०॥
छोरि अवंति स्वामि हित छायो, अगरचंद महता जुत आयो ॥
अगरचंदको जनक[6] अग्ग जब, बीकानैर नृपहिं विख[7] दै तब ॥३१॥
मंडिलगढ[8] तिय जुत भजि आयो, ताको सुत यह रान वधायो ॥
इत रानहु रन हित कटि[9] बंधी, रक्खे जवन सहँस खट६००० संधी[10]
॥ दोहा ॥
आये दल[11] उज्जैनतैं, सुनि मरहट्ठ सहाय ॥
पुरतैं रानहु पिल्लयो[12], दल निज जित्तन दाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुल्लकरतक्कूदगागमनबुन्दीन्द्रतत्सत्करणमहाराजकुमाराऽजितसिंह १ मैणागणविध्वंसनेरावराड्भौजिष्येयीसुताद्वय २ भौ-

१छोटा भाई ॥२६॥२संसार में॥२७॥२८॥३जिसका नाम मालूम नहीं हुआ॥२९॥ ४राज की पदवी ५ श्रेष्ठ ॥ ३० ॥ ६ पिता ७ जहर ॥ ३१ ॥ ८ मांडलगढ में ९कमर बांधी १० सिन्ध देश के यवन ॥ ३२ ॥ ११ सेना १२ सेना भेजी ॥३३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हुलकर तक्कू का उत्तर दिशा में आना और बुन्दी के पति का उसका सत्कार करना १ महाराज कुमार अजितसिंह का युद्ध में मैनों को मारना

रिध्येयरठ्ठोड़जैतसिंह १ यादवजयसिंह २ विवाहनराजकुमारवहादुरसिंह १ सरदारसिंह २ गर्गराटोद्वाहनाऽनन्तरकुमारद्वय २ दायविभाजनव्यासमाणिक्यरामपरस्परभिक्षुकपञ्चक ४ समानसन्मनच्छलबालसेनावेष्टनव्याकुलराणाऽरिसिंहश्रीमन्तसहायप्रार्थनझ्झाजालमसिंह १ वणिगगरचन्द्र २ प्रेपणज्ञाततद्विज्ञप्तिपत्रश्रीमन्तमहाराष्ट्रराघव १ यवनदोला २ ऽरिसिंहसहायप्रस्थापनझ्झाजालमसिंहप्रपितामहाऽऽगमाऽऽदिपूर्वोदन्तवर्णनवणिगगरचन्द्रजनकमहापापत्वसूचनसमात्तश्रीमन्तसहायराणाऽरिसिंहस्वसैन्यप्रेषणं सप्तपञ्चाशत्तमो ५७ मयूखः ॥ ५७ ॥ आदितः ॥३३८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पुर सलूमरि पति भीम भ्रात पेहाड़१ लै दल निक्खस्यो ॥
अरु फतेसिंह२ हु चोडहर आमेटपुर पति उल्लस्यो ॥
घाणोर पति रट्ठोर बीरमदेव३ संगहि सज्जयो ॥
रट्ठोर अक्खयसिंह ४ तिम वधनोर पुर पति गज्जयो ॥१॥

और रावराजा की दो पानवान की पुत्रियों को पासवानिये राठोड़ जैतसिंह और जादव जयसिंह को विवाहना २ राजकुमार बहादुरसिंह और सरदारसिंह को गर्गराट पुर में विवाह करने पीछे भाईबंट देना और व्यास माणिकराम को परस्पर पांच याचकों में बराबर मानना ३ झूठे (फरेबी) बालक की सेना से घिर कर राणा अरिसिंह का श्रीमन्त से सहाय के अर्थ प्रार्थना करना और झाला जालमसिंह और महता अगरचंद को भेजना ४ इन की अरजी जानकर श्रीमंत का मरहठा रघू और दोलामियां को अरिसिंह की सहाय में भेजना ५ झाला जालमसिंह के प्रपितामह के आने आदि पहिले वृत्तान्त का कहना और बनिये अगरचन्द के पिता के महापाप की सूचना करना ७ श्रीमन्त की सहाय पाकर राणा अरिसिंह का अपनी सेना भेजने का सत्तावनवां ५७ मयूख समाप्त हुआ॥५७॥ और आदि से तीन सौ अड़तीस ३३८ मयूख हुए ॥

१ पहाड़सिंह ॥ १ ॥

बेनहड़ापति नृपरायसिंहहु ५ रानवंसिय उज्झल्यो ॥
उम्मेद६ साहिपुरेस भूप सुजानवंसिय उज्जल्यो ॥
बिंझोलि पति सुभकर्ण७ त्यौं परमार असिवर संग्रह्यो ॥
बलि चौंडवंसिय भैंसरोर पुरेस मानहु८ उम्मह्यो॥२॥
इत्यादि सूर सिपाह संधिन लै उदैपुरतैं कढे ॥
सह झल्ल जालमसिंह दक्खिन बीर वे उततैं बढे ॥
दुहुँ ओर आत अनीक॑ लखि सिसुँकौं सहायक लै भजे॥
चित्तोरकौं कछु भेद सौं लहि दुग्गमैं दृढ व्है सजे ॥ ३ ॥
दोला मियाँ१ मरहट्ठ राघव२ ए उदैपुरमैं रहे ॥
छलबालके प्रतिपाल जे तिनके न नैंक भये चहे ॥
इहिं बीच माहजि संधिया पहुँच्यो अवंतिय आनिकैं ॥
तिहिं जानिकैं सिसु पँच्छके भट भीरँ लैन प्रमानिकैं ॥४॥
चित्तोर ऊरुज सुरतसिंहहि दै रु लै सिसुकौं चले ॥
सुनि आय सम्मुह संधिया इन्ह लैगयो सु चहे फले ॥
तिन बाल माहजि अंकमैं धरि द्वो सरराय यहै कही ॥
सुनि यौं उदैपुर दैनकी इहिं बत्त माहजिहू चही ॥ ५ ॥
दोला१ रु राघव१ हे उदैपुर व्हाँ यहै तिनमैं सुनी ॥
सिसुपक्ख लग्गिय संधिया अब सेन सज्जहु सोगुनी ॥
हम जायकैं छल मंत्रमैं तिहिं लै रु सत्वर मारिहैं ॥
गहि बाल जो अरि रावरो तिहिं कैद आलय डारिहैं ॥६॥
दृढ मंत्र राघव१ रान२ कै इत यौं उदैपुरमैं भयो ॥

१ श्रेष्ठ तरवार पकड़ी २ मानसिंह भी ॥ २ ॥ ३ सेना ४ रत्नसिंह को ॥३॥ छल से बनाये हुए बालक रत्नसिंह की ५ पालना करनेवाले ६ उज्जैन में ७ रत्नसिंह के पक्ष के उमराव ८ सहायता ॥ ४ ॥ ९ वैठय १०रत्नसिंह को ११ गोद में रखकर ॥ ५ ॥ १२ बालक (रत्नसिंह) के पक्ष पर १३ माधजी को शीघ्र मारेंगे ॥ ६ ॥

सब दच्छ[1] दूतन भेजिकैं यह जानि माहजिहू लयो ॥
दोला[?] रु राघव[?] के कुटुंब हुते अवंतिय[2]मैं जहाँ ॥
करि कैद पुत्र कलत्र[3] कोपित संधियाहु सज्यो तहाँ ॥७॥
यह जानि ये[4] अरिसिंहको दल लै उदैपुरतैं चले ॥
खुरतार बाजिन मार मत्थ हजार[5] आलुक्कके हले ॥
फहरात लोहित[6] रंग केतन[7] मत्त हत्थिनपैं धरे ॥
वर्ट१ अंबर२ जंबु३ कदंब४ ज्यौं कुमुदादि अद्रि[8]नपैं खरे ॥८॥
डगमग्गि सैलन[9] शृंग[10] त्यौं भर[11] भंग तुट्टन के लगे ॥
सब औन[12] संकत सैन इंकत नैन संकरके जगे ॥
चढि सिंह कालिय संग चालिय गैन गिद्धनि बित्थरी ॥
पहुँची अवंतिय यौं चमू अरु हल्ल कित्तनकौं करी ॥ ९ ॥
उततैंहु माहजि सज्ज व्है सिसु[13]पच्छके भट लै चढयो ॥
जिम जेठ सूरज ताव यौं तरकाव तोपनको बढयो ॥
दुहुँ ओरके रन बाजि कुंजर[14] अंभ[15]मैं उडनैं लगे॥
खिल्ल[16] सोक गोलन तोक[17] घायल घुम्म लैन घनैं लगे १०

उडनैंलगे१ घनैंलगे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अतलादि भू फुट व्है थरत्थर नीर सिंधुनतैं छल्यो ॥
दिगधेनु[18] च्यारि४हु ऐंन[19]लौं चिक्कि फेन आननमैं फल्यो ॥

---

१ दच्च (चतुर) २ उज्जैन में ३स्त्रियों को ॥७॥ ४ये (रघु और दोला) दोनों अरि-सिंह की सेना लेकर ५सर्प (हजार फणों के सम्बन्ध से यहां शेषनाग जानना चाहिये। ६ लाल रंग की ७ ध्वजायें ८ जैसे ये चारों वृक्ष सुमेरु के शिखर ९ कुमुद आदि पर खड़े हैं तैसे ॥ ८ ॥ १० पर्वतों के शिखर ११ भार से १२स्थान ॥ ९ ॥ १३ रत्नसिंह के पक्ष के उमरावों को लेकर १४ हाथी १५ आकाश में १६धाकी के गोळों की शोक से १७बालक (रत्नसिंह) के घहुन घायल वा घा-यलों के समूह घूमने लगे ॥ १० ॥ १८ दिशा की हथनियें (दिग्गजों की स्त्रियें) "यह युद्ध दक्षिण में हुआ इससे चार दिशाकी हथनियों को कष्ट होना लिखा और उत्तर आदि चार दिशा की हथनियें इस कष्ट से बाहर रहीं" १९ हरिण

चउसट्ठि६४ जुग्गिनि जंग चत्वर रास मंडत रंगमैं ॥
महती बजावनहारहू कलिकार घुम्मत संगमैं ॥ ११ ॥
आखाढ मारुत खेह सम्मित धूम छादित लोक भो ॥
तम थोक रोकन ओकं ओकन कोकं कोकिन सोकभो॥
जल बात पोमिनि पात ज्यौं भुव सेसके सिरपैं नचैं ॥
कालीय पन्नग भोगपैं जदुनाथ तंडव ज्यौं रचैं ॥ १२ ॥
हनुमान पावकं लंक ज्यौं दिय ज्वाल ज्यौं नभ वित्थरैं ॥
नगरी अवंतियमें हु मानव जूह रक्खस ज्यौं जरैं ॥
सिप्रा नदी लगि तोय तुट्टन नक्र झख गन आवटे ॥
जिम लोह कप्पर तैलमैं गन पूंपके खग लावटे ॥१३॥
इम होत लोलन जंग गोलन सेन माहजिकी खंची ॥
छैलबालकी तब फौज होय हरोल रारि भली रची ॥
कछुकाल तोपन ज्वाल यौं रचि बग्ग बाजिनकी लई ॥
दुहुँर ओर धीर प्रबीर मिलि भट भीर सस्त्रनकी भई ॥१४॥

के समान चकित होकर, मुख में झाग होने लगे, चौसठ ही योगिनियों ने १उस युद्ध के२चौक (क्षेत्र) में युद्ध में आकर ३नृत्य रचा महती नामक वीणा को ४बजानेवाला और५युद्ध करानेवाला नारद मुनि उसके साथ में घूमने लगा ॥ ११ ॥ आषाढ के ६ पवन से रज उड़ी जिसके ७ सदृश धूम से लोक छागया ८ उस अंधेरे के समूह ने ९घर घर को रोकदिया जिससे १० चकवा चकवियों को शोक हुआ जैसे पानी में ११ पवन लगने से १२ पद्मिनी (कुमोदनी) हिलै तैसे शेष के मस्तक पर भूमि नची अथवा कालीनाग के १३फणों पर १४श्रीकृष्ण ने नृत्य किया त्यों नची ॥ १२ ॥ जिसप्रकार हनुमान ने लंका में १५ अग्नि लगाई तिसप्रकार आकाश में अग्नि फैली उस अग्नि से उज्जैन में राक्षसों के समान मनुष्यों का १६ समूह जलने लगा और १७सिप्रा नदी का पानी तूटकर मगर मच्छ ऐसे उबले जैसे तेल से भरे लोहे के १८ कड़ाह में १९ पुवों का समूह अथवा २० लावा पक्षी उबलें ॥ १३ ॥ इसप्रकार २१ चपल गोलों से युद्ध होते माहजी (माधोराव) सिंधिया की सेना २२ भागी तब २३ रतनसिंह की सेना ने आगे होकर अच्छा युद्ध किया २४ घोड़ों की बागें

छलवालको दल संधिया लहि वीच सत्रुनकैं भयो ॥
वरमाल लै ततकाल अंबर जाल अच्छरिको छयो ॥
कटि मुंड१ तुंड२ कलाप३ कंठ४ ललाट५ के किरने लगे ॥
वलि मत्त पीवन रत्त फेरवं फेरवी फिरनैं लगे॥ १५ ॥
भट अैंचि कानन देत बानन लेत प्रानन सोधिकैं ॥
अति कोप छुट्टत रोंप फुट्टत टोप संजुत गोधिकैं ॥
तरवारि बाहुलं लग्गि होत उपेंद्र मंदिर भल्लरी ॥
नस जाल लुंबत देह दारितैं जानि अंबर वल्लरी ॥ १६ ॥
उलटैं तुखार प्रहारतैं असवार ऊरध उच्छटैं ॥
फरकैं कलेज रु फिफ्फ फलतैं द्वार छत्तिनके फटैं ॥
घँटके बनैं बटके लगे भटके उडैं भट के नये ॥
लटके परैं अटके रकावन रूप के नटके भये ॥ १७ ॥
कटि धार मारन भद्र बारन मत्थ मुत्तिय उच्छलैं ॥
घन कँल्पके घरका महा जरका मनों करकां चलैं ॥

उठाई ॥ १४ ॥ १ रत्नसिंह की सेना को लेकर सिन्धिया शत्रुओं के बीच में हुआ उस समय तुरंत वरमाला लेकर अप्सराओं का समूह २ आकाश में छागया वहां कितने ही मस्तक ३ मुख, हाथियों का कलावा, कंठ, ललाट ४ गिरने लगे ५ फिर मस्त होकर रुधिर पीने को ६ स्याल (गीदड़) ७स्यालनियां (गीदड़ानियां)फिरने लगीं ॥१५॥ वीर लोग कान तक खेंचकर बाण छोड़तेहैं सो हेर कर प्राणों को हेरते हैं अत्यन्त कोप से छूटे हुए ८ बाणों से टोप सहित ९ ललाट फूटते हैं१०दस्तानों पर लगकर तलवार ११विष्णु के मंदिर की भालर के समान बजती हैं १३कटे हुए शरीरों से १४ आकाश की वेल के समान१२ नसों का समूह लटकता है ॥१६॥ प्रहार होने से१५घोड़े उलटते हैं और सवार १६ऊपर उछलते हैं छाती के कपाट फट कर कलेजे और फेफड़े फैलते हैं कितने ही वीरों के १८खड्ग लगकर १७ शरीरों के टुकड़े होते हैं रकाबों में अटक कर कई वीर नट के रूप के समान होते हैं ॥ १७ ॥ तलवारों की मार से भद्र १९ जातिवाले हाथियों के मस्तक फट कर मोती उछलते हैं सो मानों २० प्रलय के मेघ के घर से मोटी भड़ी के २१ ओले गिरते हैं गोलियों के

भहनात गोलिन व्रात के ऋतुराजमैं अलिराज ज्यौं ॥
असि केक मारत झुंड झारत दब्बि तित्तिर बाज ज्यौं ॥१८॥
छिकि पार तोमर लार लोहित धार हत्थिनतैं परैं ॥
अरुनोदका रसकी नदी जनु मंदराचलतैं ढरैं ॥
ध्वजदंड खंड उडैं अनेक मयूर सावन मास ज्यों ॥
हय जीन ज्वालनमैं जरैं दव जेठ पब्बय घास ज्यों ॥ १९ ॥
फटि घाय सोनित गैंनमैं चढि जात जावक जंत्र ज्यों ॥
भखि प्रेत बीरनके बसा गल खैंचि डारत अंत्र ज्यों ॥
अति जोरतैं दुहुँ ओर घोर कटार कंकटपैं बजैं ॥
हमगीर धीरनको बढैं तँहँ नीर भीरुनको लजैं॥ २० ॥
असवार केक उडाय अब्बनैं हत्थि होदनपैं अरे ॥
पवमानके रंय भौनके हय मानसोत्तर ज्यौं खरे॥
प्रसरैं फुलिंग झरैं सु पावक हेति हेतिनसौं घसैं ॥
लगि अंत लुंबत पंसुली जनु नाग चंदनपैं लसैं ॥ २१ ॥

१समूह२वसंत ऋतु में३भ्रमरों की भांति चलते हैं और कई तलवार मारकर समूहों को गिराते हैं और बाज पक्षी तीतर को दबावै तैसे दबाते हैं ॥ १८ ॥ ४ भाले पार फूट कर हाथियों से रुधिर की धारा गिरती है सो मानों मंदराचल से ५ अमरस की नदी चलती है. कई ध्वजा दंड कटकर श्रावण मास के मयूरों के समान उड़ते हैं और ६ ज्येष्ठ मास की अग्नि में जैसे ७ पर्वत का घास जलै तैसे घोड़ों के जीन अग्नि में जलते हैं ॥ १९ ॥ घाव फटकर १०. जावक के फुहारे के समान ९ आकाश में ८ रुधिर उछलता है, वीरों की ११ चरबी खाकर भूत गले में आंतें डालते हैं दोनों ओर से बडे बल से भयंकर कटार १२ कवचों पर बजते हैं जहां हमगीर और धीरों का पराक्रम बढता और कायरों का लज्जित होता है ॥ २० ॥ कई सवार १३ घोड़ों को उड़ाकर हाथियों के होदों पर अड़ते हैं सो मानों पवन के १४ वेगवाले १५सूर्यके घोड़े सुमेरु पर्वत पर खड़े हैं१७शस्त्रों से शस्त्र घिस कर अग्नि गिरकर१६अग्निकण फैलते हैं आंत पंसुलि के लगकर ऐसी लटकती है जैसे चंदन पर १८ सर्प शोभते हैं ॥ २१ ॥

गिरि ढाल लोहितैं[1] ताल चक्र कुलालके[2] निभ[3] के भ्रमैं ॥
तिनपैं परैं फटि तुंड[4] के कटि मुंड जे कुट[6] ज्यों जमैं ॥
निकसैं अलोहित[7] सान[8] दीर्घक लंब रीढक[9] तोरिकैं ॥
मनु फारि सैवल[10] मंजरी सफरी[11] उडैं जल छोरिकैं ॥ २२ ॥
भट सत्थ के दुव हत्थलौ अरि मत्थ पौं पटकैं गदा ॥
सु[12] मकी निकारन लठ मारनकी गँवारनकी अंदा[13] ॥
भट प्रान छुट्टत स्वास तुट्टत के गिरे हिचकीभरैं ॥
तुतरात बैन फिरात नैन किरातलैं[14] मृग ज्यों करैं ॥ २३ ॥
कति झारि कत्तिनकों[15] निरीप[16] भिराय छत्तिनकों भिलैं ॥
मनु मित्र हंतैं[17] हेवाल[18] के चिरकालके[19] बिछुरे मिलैं ॥
गुटिका१ रु गोलक२ सिल्प कोबिद[20] केक मंडत चातुरी ॥
गिलिखा[21] बजार बनायकैं बिधिसौं बसावत जैपुरी[22] ॥ २४ ॥
बिडरात[23] गात डरात दंतन हुँत[24] भूत हसे परैं ॥

ढालें गिरकर १ रुधिर के तलाव में २ कुम्हार के चाक के ३ स-दृश भ्रमती हैं जिन पर कई फटेहुए ४ मुख और कटेहुए ५ मस्तक गिरते हैं सो ६ घड़ों के समान जमते हैं ८ सान से चढ़ी हुई तरवारें ९ लंबी पीठ को तोड़कर ७ बिना लोहू लगे साफ निकलती हैं सो मानों १० शैवाल की मंजरी को फाड़ कर जल को छोड़कर ११ मच्छी उड़ती है ॥ २२ ॥ कई वीरों के समूह दोनों हाथोंसे शत्रुओंके मस्तकों पर गदा पटकते हैं १२ सो ग्रामीण लोगों के मकी (धान्य विशेष) निकालने में लठ्ठ मार ने की १३ तरह दीखते हैं वीर लोग श्वासं टूटकर प्राण छूटते समय गिरकर हिचकियां लेते हैं और तुतलाते हुए वचन बोलकर १४ शिकारी के आगे मृग के समान नेत्र फेरते हैं ॥ २३ ॥ कितने ही १५ तलवारें चलाकर १६ समीप लेकर छातियां भिड़ाकर मिलते हैं सो मानों १७ मिलने के हर्षके अथवा वियोग के खेद के १८ वृत्तान्त से १९ बहुत समय के बिछड़े हुए मित्र मिलते हैं कई गोलियां और गोले शिल्प विद्या के २० पंडित होकर चतुराई रचते हैं और २१ गलियां और बाजार बनाकर २२ विधि पूर्वक विजय की पुरी बसाते हैं अथवा जयपुर के समान पुरी बसाते हैं ॥ २४ ॥ २३ डरावने शरीरों से और दांतों से डराकर २४ बुलाये

पट्ट स्वाद हेरत क्षेत्रपालक नेत्र जे निकसे परैं ॥
उडिजात के बिनु पग्घ मस्तक लंब *मान सिखा धरैं ॥
खनि मालिनी जनु गैंद खेल सपत्र सूरनके करैं ॥ २५ ॥
सरैं ईतिकारक सालभी तति रूप अंबर उल्लसैं ॥
भँर भीतिकारक कालभी तति जंग गोलनकौं ग्रसैं ॥
कति बेंध्य जानन पुंख बानन बात काननतैं करैं ॥
अपसव्य हत्थ सँगठ्यकौं तहँ सँव्य कातर उच्चरैं ॥ २६ ॥
गज गात ठेलन संगि सेलन गात पैठत यों लसैं ॥
जनु वज्र संगहि बीजुरी धकि स्याम बद्दलमैं धसैं ॥
अरिसिंह१ माहजि२ के उभै२ दल यों अवंतिय आहुरे ॥
बल जानि सत्रुनको उदैपुरके लजे अब बाहुरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चम उदैपुरकी चली, जीवनतैं हित जानि ॥
संग लगे माहजि सुभट, प्रबल दिखावत पानि ॥ २८ ॥
मेवारे दल माँहिंसौं, तुरग मुरे तहँ नोएन ॥

हुए वा हू हू करके भूत हंसते हैं चतुर क्षेत्रपाल स्वाद हेरते फिरते हैं जिनके नेत्र निकले पड़ते हैं कई मस्तक लम्बे * माप की (लंबी) चोटीको धारण किये हुए पगड़ी विना होकर उड़ने हैं सो मानों मालिन २ पत्रों सहित ३ सूरण [कन्द विशेष] को १ खोदकर गैंद खेलती हैं ॥ २५ ॥ ५ ईति करनेवाली ६टीडियों की पंक्ति के रूप से आकाश में ४ बाण उड़ते हैं ७ वीरों को ८ भय देनेवाले ९ काल की पंक्ति के समान गोले युद्ध में उन्हें ग्रसते हैं कई १० मारने योग्य जानने के लिये बाणों के ११पंख कानों से बात करते हैं और १३प्रत्यंचा सहित १२ दाहिने हाथ को १४ बायां हाथ [बांमें हाथ] पीछे रहने के कारण कायर कहता है ॥ २६ ॥ हाथियों के १५ शरीर को ठेलने के लिये १६ बरछियों और भालों के १७ समूह घुसते हुए ऐसे शोभा देते हैं कि मानों वज्र के साथ बिजुली चलकर काले बद्दलमें घुसती है१८उज्जैन में इसकारण माहजी और अरिसिंह की सेना लड़ी तहां उदयपुर की सेना लज्जित होकर १९ भागी ॥ २७ ॥ २० हाथ ॥ २८ ॥ मेवाड़ की भगी हुई सेना में से

जिम भचक्र पच्छिम चलत, ग्रह गन पूरव गोन ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक राघव१ मरहट्ठ जवन दोला२ द्वितीय जँहँ ॥
झल्ला जालमसिंह३ चोंड वंसिय पहाड़४ तँहँ ॥
साहिपुरप उम्मेद५ मान६ भट भैंसरोर पति ॥
अक्खय७ वीरमदेव८ उभय९ रट्ठोर मरन मति ॥
परमार सुभट सुभकर्ण१० पुनि ए मुररे दल भजत सन ॥
नव९सफर जानि अतिबल निडर गहर श्रोत किय प्रतिगमन ३०
साहिपुरप उम्मेदसिंह१ असिवर हद झारिय ॥
खूब बिरचि रन खेल प्रचुर मरहट्ठ प्रहारिय ॥
करि उज्जल सीसोद कुलहिं तिल तिल मितें तुट्टिग ॥
रविमंडल बिच होय लाइ सुरपुर सुख लुट्टिग ॥
तिमही पहाड़२ भट चोंड हर ईसहिं देन न अद्दरिय ॥
दल फारि मारि मरहट्ठ बहु कलह सीस रज रज करिय ३१

॥ दोहा ॥

दोला१ राघव२ एहु दुव२, सत्रु बहुत संहारि ॥
पृथुल रारि बिच कटि परे, अतुल मारि तरवारि ॥ ३२ ॥
इक१ परमार कबंध उभ२, टरे कछुक छतवान ॥
मरहट्ठन लिन्ने पकरि, जालमसिंह रु मान ॥ ३३ ॥

नौ (*)घोड़े इस तरह पीछे मुड़े जैसे१संपूर्ण तारा मंडल तो पश्चिम को जाता है और उनमें से (‡)नौ ग्रह पीछे पूर्व को जाते हैं ॥ २९ ॥ २ पहाड़सिंह३उम्मेदसिंह ४मानसिंह ५अक्षयसिंह ६ मच्छ ७ गहरे श्रोते में ८ उलटे चले ॥ ३० ॥ ९ बहुत१०तिल तिल माफिक११स्वर्ग का१२शिव को मस्तक देना स्वीकार नहीं किया१३युद्ध में ॥ ३१ ॥ १४बड़े युद्ध में ॥ ३२ ॥१५घायल१६मानसिंह को ॥३३॥

(*)यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से घोड़ों के सवार जानने चाहिये ॥

(‡ नौ ग्रहों की सामान्य गति तो संपूर्ण तारा मंडल के साथ पश्चिम में जाने की है परंतु विशेष गति से नौ ही ग्रह प्रतिदिन पूरब की ओर हटते जाते हैं ॥

बिगरयो दल अरिसिंहको, जिरयो माहजि जंग ॥
सिसु पक्खी हरखे सुभट, आवन राज्य उमंग ॥ ३४ ॥
दम्म[1] लक्ख१००००० अरु बीस२० गज, तोप छतीस३६ नवीन
लूटमाँहिं माहजि लये, तुरग सहँस पुनि तीन ३००० ।३५।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे ज्ञातससहायसमागताऽरिसिंहसैन्यछलबालसहिततत्पक्षसुभटभेदोपायचित्तौड़दुर्गप्रविशनमाहज्यवन्त्यागमनश्रुतैतच्छलपक्षसन्धपाशरणग्रहणमाहजिदोला १ राघव २ पुत्रकलत्राऽऽदिनिग्रहणातत्सहायराणाऽरिसिंहसैन्य १ सन्ध्यासहायच्छलशिशुसैन्य २ शिप्रातटमहारणकरणशाहिपुराऽधिराडुम्मेदसिंह १ सलूमरीशभीमाऽनुजपहाड़सिंह २ यवनदोला ३ महाराष्ट्रराघव ४ मरणपरमार १ कबन्ध २।३ सक्षतीभवनझालाजालमसिंह १ चुंडाउतमानसिंह २ काराऽऽपसनराणासैन्यपलायनच्छलपक्षसहायीभूतमाहजिविजय

---

१ रत्नसिंह के पक्षवाले ॥ ३४ ॥ २ रुपये ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र में सहाय पर आईहुई और अरिसिंह की सेना को जानकर छलवाले बालक सहित उसके पक्ष के उमरावों का भेद उपाय से चित्तौड़ के गढ में घुसना १ माहजी का उज्जैन आना सुनकर उन छल पक्षवालों का उसकी शरण लेना २ माहजीका दोला और रघु के पुत्र और स्त्रियों आदि को कैद करना और उनकी सहाय पर राणा अरिसिंह की सेना और सिंधियाकी सहायता से रत्नसिंह की सेना का शफरा नदी के किनारे महा युद्ध करना ३ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह, सलूमर के पति भीमसिंह के छोटे भाई(*)पहाड़सिंह, यवन दोला और मरहटा राघव का मरना और पँवार और राठोड़ का घायल होना, झाला जालमसिंह और चुंडावत मानसिंह का पकड़ा जाना, राणा की सेना का भागना ४ छलपक्ष की सहाय करनेवाले माहजी का विजय पाना और शत्रु के डेरों का वैभव लूटने का अठावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५८॥ और आदि से

(*)सलूमर के रावत भीमसिंह को महाराणा अरिसिंह ने जहर देकर नाहरमगरे में मार डाला तब उसका छोटा भाई पहाड़सिंह भीमसिंह के पाट बैठ गया इसकारण इस समय वह सलूमर का ही रावत था यहां सलूमर के पति भीमसिंह का छोटा भाई लिखा सो अनुचित है ॥

न्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगीरादिषड् ६ भाषावेशसुभ्रूभुजङ्ग-
काव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-
त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणमुख्यविसूर्यमल्ल
विहितवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे रावराडुम्मेदसिंहचरित्र
समयसमानाधिकरणकोदन्तवर्णनं सप्तमो ७ राशिस्समाप्तः॥ ७ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभ-
क्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलावतंस
शाहपुराप्रतोलीपात्र-सुयोग्यपितुरवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः
शृङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैरा-
ज्ञाकारिभिरात्मजैः केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहै-र्विगत-
भाव्याधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्त-
काव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवै

अर्थात् पूर्ण विद्वान् छहा पदर्शवाले, महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री-
रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के
पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिए) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के च-
रणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारण गण के सूर्य, चण्डी-
दान के पुत्र, मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभा-
स्कर नामक महाचम्पू के उत्तरायण में रावराजा उम्मेदसिंह के चरित्र के समय
के बराबर है अधिकार जिनका ऐसे वृत्तान्तों के वर्णन का सातवां राशि
समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

श्रीयुतनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म
मूर्ति-वीर-उदार-सोदावारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोळ
पात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता
ओनाड़ (अनड़) सिंह के पुत्र ने, पंडिता शृंगार बाई नामक माता से पाया है
जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी
पुत्र केशरीसिंह, किशोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में
होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज
श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त

ष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोरासादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजाधिराजोपटंकिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीयगुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीव दान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्मा-श्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रै-र्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां सप्तमो राशिः समाप्तः ॥७॥

विद्वानोंके शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणा वत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंहवर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजाधिराज जशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढी हुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में सप्तम राशि समाप्त हुआ ॥७॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथाऽष्टमराशिप्रारम्भः ॥

॥ शुद्धाऽपभ्रंशभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जयइ गणेसु गयाणणु१ वाणी२ हिमकुंदचंद्रिमाधवला ॥
एइ करावहिं कव्वं ताह असरिसु थवणु हउं करउं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रणसूरा मणउज्जला जणवल्लह अपमाणु ॥
अम्हारा णमउं जण गुढकरिकव्वनिहाणु ॥ २ ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

(अनुष्टुब्युग्मविपुला)

तुरीयां४ यः सदाऽपश्यज्जाग्र१त्स्वप्न२सुषुप्तिषु ॥
आत्मारामं स्वरूपारं चंडीदानं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

॥ संस्कृत अनुवाद ॥

जयति गणेशो गजाननो वाणी हिमकुन्दचन्द्रिकाधवला ॥
एते कारयतः काव्यं तयोरसदृशं स्तवनमहं करोमि॥ १ ॥
रणशूरा मनस्युज्ज्वला जनवल्लभा अप्रमाणाः ॥
वयं नमामो ये गूढाकृतिकाव्यनिधानाः ॥ २ ॥

गज के मुखवाले गणेश और बरफ, मोगरा और चन्द्रिका के समान उज्ज्वल सरस्वती का जय होवै (सर्वोत्कर्षेण वर्तताम्) ये ही काव्य कराते हैं जिनकी मैं समानता रहित स्तुति करता हूं ॥ १ ॥ युद्ध में वीर; मन के उज्ज्वल, जनों के प्यारे और प्रमाण रहित, उनको मैं नमस्कार करता हूं जो गूढरचना के काव्यों के खजाने हैं ॥२॥ जो सदा जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से तुर्यावस्था को देखते थे अर्थात् समाधि दशा में रहते थे उन ब्रह्मानन्द स्वरूप चण्डीदान नामक मेरे पिता को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥

मुनिदृगधृति१८२७मितसकसमय,अजितसिंह१९९१२नरनाह
छत्र धरयो निज जनक छत, लहि सिंहासन लाह ॥ ४ ॥
भ्रातन संजुत भूपके, ब्याह१ प्रजा३दिक वत्त ॥
कतिक भूत भावी कतिक, पीढिन क्रम जिम पत्त ॥ ५ ॥
घनाक्षरी–उपयम च्यारि४ कीनें भूपति अजितसिंह१९९१२,
तिनमैं लहैं द्वै२ सुत नियति उदर्क ताम ॥
कृष्णगढ जाइ ब्याही पहिलैं१ बहादुरकी,
कन्या रठउरि रानी सूरजकुमरि १९९११ नाम ॥
राजाउत कित्तिसिंह दुहिता द्वितिय२ ब्याही,
सो शृंगारकुमरि ११९१२ सतीमनि कहाय धाम ॥
तीजी३ ताहि निर्गममैं परनी भनायपुर,
सो अमानकुमरि १९९१३ दलेल सुता अभिराम ॥ ६ ॥
विष्णुसिंह राउलकी कन्या वंसवर्त्टपुर,
बखतकुमारि१९९१४ नाम चोथी४ परन्यौं बिदित ॥
भूपतिकै रानी पहिली१मैं सुत जेठो१ भयो,
सो प्रताप२००११ सिसुहि मरयो जो पाइ आयु मित ॥
सीसोदिनी आहाडी चतुर्थ४ रानी जंपी जास,
बिष्णुसिंह२००१२ दूजो२ चिरंजीव भयो पुराय चित ॥
एक१ चंद्रशोभा१ ही खवासि जानें स्वांमी अंत,
राजाउति रानी २१ संग होम्यौं अंग हेरि हित ॥ ७ ॥
ब्याह तीन३ कीनैं भूप अनुज बहादुर१९९१३नैं,

१ पिता के होते ही छत्र धारण किया २ सिंहासन का लाभ लेकर ॥ ४ ॥ ३ सन्तान आदि की ४पहिले हुई और कितनी ही आगे होनेवाली ५प्राप्त ॥ ५ ॥ ६ आनेवाले समय के भाग्यफल से ७ उसी मार्ग में ॥ ६ ॥ ८ बांसवाड़ापुर (बांसवहाला) ९थोड़ी आयु पाकर १०पति (अजितसिंह) के मरने पर ॥ ७ ॥

पाये सुत पंच५ रु सुता दुव२ जस प्रकास ॥
१झाला बखतेसकी सुता सो गर्गराटपुर,
पत्नी बडी१व्याही चंद्रकुमरि१६९।१ अभिरूपा तास ॥
राठउरि दूजी२ राजकुमरि१९९।२ विवाहो वीर,
बीकानेर भूप गजसिंहकी सुता जो आस ॥
सूरजकुमरि१९९।३ तीजी३ जादवी अमरदुर्ग,
भैरवादिचंद्र सुता परन्यो सवय १ भास२ ॥ ८ ॥
ताही जादवीके रामसिंह२००।१ बलवंत२००।२ बलि,
दलपतिसिंह२००।३ चोथो४ सामंतादिसिंह२००।४ सुत ॥
ताहीको द्वितीय२ नाम जीवन२००।४ बखानैं जग,
जानों पंच५ पंचम५ कनिष्ट सेरसिंह२००।५ जुत ॥
ताहीके सुताहे २ तहँ ———— कुमरि१ जेठी१,
———— कुमार दूजी२ जे न परनी प्रेनुत ॥
भ्राता बलवंत२००।२ सम थान हेरि हारयो हंत,
इंद्र१कों कै देतो व्याहि चंद्र२कों कै जाइ उत ॥ ९ ॥
भूपति अजा१९९।२के भ्रात तजि३ सरदार१९९।३ व्याह,
च्यारि४ करि पाये सुत तीन३ सुता इक्क१ सह ॥
झाली नानतेकी बडी१ पतनी विवाहयो एह,
जोरावर कन्या अभैकुमरि१६९।१ स नाम सह ॥
बीकानैरपुरकी विवाहयो वर दूजेर व्याह,
नाम इंद्रकुमरि१९९।२ अनंद सुता मंडि मह ॥

१नाम२थी३भैरव है आदि में जिसके ऐसा चन्द्र अर्थात् भैरवचन्द्र॥८॥ ४साम-न्तसिंह५विशेष स्तुति योग्य६भाई बलवन्तसिंह उनका विवाह करने को बराबर का स्थान हेरकर थकगया सो खेद की बात है कि वह इन्द्र को विवाहना चाहता था कि चन्द्रको विवाहना चाहता था॥९॥७अजितसिंह के८झाली९उत्सव रचकर

तीजी३ उनियारेकी नरूकी सरदार सुता,
बखतकुमारि१९९।३ नाम व्याही बिद उक्त ग्रेह ॥ १० ॥
बाधनवारेकी बहुरि, उदयभानुकुलधारि ॥

दोहा

अखयसिंह तनया बरी, चोथी४ सुवय कुमारि१९६।४ ।११।
जेठो१ सुत जेठी१ जन्यौं, ईश्वरिसिंह२००।१ सनाम ॥
दूजी२ दुव२ सुत इक१ सुता, तितय३ जन्यौं विधि ताम१२
क्रमकरि इह दूजो२ कुमर, देवीसिंह२००।२ उदार ॥
तीजो३ पृथ्वीसिंह२००।३ यह, भो व्यलु सिसु गद भार१३
याहीकै इक१ अंगजा, जेठी१ सब३ तें जोहि ॥
खूबकुमरि१ निज जनक खिन, सोपुर व्याही सोहि ॥१४॥
गोर राधिकादास नृप, जो परन्यौं जस जुत्त ॥
इक१ खवासि सरदार१९६।४कै, हुव ताकै दुव२ पुत्त ॥१५॥
नाम पहार१ सुरूप२ जे, जेठो१ अज्जहु आहि ॥
पहु अप्पहु काका कहत, जथा कुलक्रम जाहि ॥ १६ ॥
दीप१९८।६ तनय सुरतान१९९।६ हुव, नगर कापरनि नाह ॥
बधू उभय२ तानैं बरी, लह्यो प्रजा चउ४ लाह ॥ १७ ॥
प्रथम१ कूरमी१ रामपुर, राजाउत्ति२ द्वितीय२ ॥
नाम गुलाबकुमारि१ तस, हुव जेठी१इक१धीय ॥ १८ ॥
सो व्याही नरउर नृपहिं, ताके सोदर तीन३ ॥
औरस राजाउत्ति२ कै, प्रकटे सुनहु प्रवीन ॥ १९ ॥
सुत जेठो१ सामंत२००।१हुव, दूजो२सगत२००।२ स नाम ॥

१कहेहुए दिन ॥१०॥२राठोड़कुल("कर्मध्वज" इति पाठान्तरम्)॥११॥३बड़ी स्त्री मे ४तहां॥ १२ ॥ ५ रोग के भार से बालक ही मरगया ॥ १३ ॥ ६ पुत्री ७ अपने पिता के समय ॥ १४ ॥ १५ ॥ ८ आज भी है ९ हे प्रभु (रामसिंह) आप भी उस को काका कहते हो ॥ १६ ॥ १७ ॥ १० कछवाही ११ पुत्री ॥१८॥१९॥

तिनको अनुज प्रयाग२००।३कुँवर,अनुज अंसुत मृत तास२०
नृपके भ्रात खवासि भव, जिहिँ सिवसिंह१ सुभाइ ॥
बिजैय सुता पद्मावती१, वरी जोधपुर जाइ ॥ २१ ॥
तास अनुज संग्राम २ वर, वरी कृष्णगढ ढंग ॥
अभयकुमरि ११२ सरदाँरजा, निज अँग्रज नृप संग ॥२२॥
अनुजन जुत अजमल्ल१९९।२ के, पहु इम ब्याइ१प्रजा२दि ॥
गँदित सूत१ भावी३ गिनहु, अब वर्त्तन२ क्रम आदि ॥२३॥
सूचित१८२७ सक्क अजमल्ल १९९।२ इम, पायो बुंदिय पट्ट ॥
पट्ट श्रीजित उम्मेद१९८।४ पहु, बह्यो पुरातन बँट्ट ॥ २४ ॥
तदनंतर सूचित १८२७ सक्कहि, श्रीजित सावन मास ॥
पतनी जुत पुष्कर गयो, न्हावन प्रीति प्रकास ॥ २५ ॥
नगर कृष्णगढ पति गयो, श्रीजितकौं तँहँ लैन ॥
आयो तव चहुवान इत, अधिप बहादुर ऐंन॥ २६ ॥
महिमानी अति रचि मुदित, सनमानिय सह सत्थ ॥
मिल्यो रान अरिसिंहहू, हुतो संकुचितँ तत्थ ॥ २७ ॥

॥चर्चरिका ॥

सिक्खकैं चहुवान श्रीजित मग्ग बुंदियको लयो,
होय जैपुर सीम आनि मिलान नासरदा दयो ॥
राजसिंह हमीरदेव कुलीन नासरदा पुरी,
कुम्भको कँटकेस हो सु मिल्यो रची हित चातुरी ॥ २८ ॥
अद्दरी महिमानि ओ रद्दि रत्ति संभर हंकयो,

१ विना पुत्र मरा ॥ २० ॥ २ विजयसिंह की पुत्री ॥ २१ ॥ ३ सरदारसिंह की पुत्री ४ अपने बडे भाई अजितसिंह के साथ ॥ २२ ॥ ५ कहा हुआ ६ अब आदि से क्रम पूर्वक वर्तमान वार्ता है ॥ २३ ॥ ७ प्राचीन मार्ग में चला ॥ २४ ॥ ८ स्त्री सहित ॥ २५ ॥ ९ घर ॥ २६ ॥ १० सिन्धी यवनों की तनखाह देने के संकोच युक्त ॥ २७ ॥ ११ मुकाम १२ कछवाहे का सेनापति ॥ २८ ॥

मोदसौं दरकुंच मंडत आनि आश्रममैं ठयो ॥
यौं उदैपुर देसमैं अति दंद संधिननैं कस्यो,
दै जरीब समस्त ग्रामनमैं चढयो हक्क जो भस्यो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

इत सक मुनि दृग धृति १८२७ प्रमित, सप्तमि७ पोस मिलाप॥
अजितसिंह नृपकै भयो, पहिलैं कुमर प्रताप ॥ ३० ॥
सकुचि रान अरिसिंह इत, रह्यो कृष्णगढ जानि ॥
आये संधी उदयपुर, ढूंक निज लैन मनानि ॥ ३१ ॥
बडो रान अरिसिंहको, सुत हम्मीर कुमार ॥
सो गहि आन्यौं निज निलय, बिरचि अनीति अपार ॥ ३२ ॥
तदपि न हक्क रुप्पय मिले, संधी तब करि मंत्र ॥
दै जरीब कर देसतैं, लग्गे लैन स्वतंत्र ॥ ३३ ॥
अजितसिंह बुंदीस इत, पुनि सुनि मैंनन दोर ॥
सेना निज चतुरंग सजि, चढ्यो बिडारन चोर ॥ ३४ ॥
सक मुनि लोचन धृति १८२७ समय, सित पख फग्गुन श्याम॥
नगर टौंकड़ा जाय निज, किन्नैं कटक मुकाम ॥ ३५ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

तहाँतैं चढ्यो संभरी पट्ट ताँजी, बढी सेन भेरीनपैं रीठ बाजी॥
भयो भारतैं जंत्रको ईच्छु भोगी, बन्यों खीन ठैंपालीनतैं बिपंयोगी॥३६

१ बुन्दी में केदारेश्वर के मन्दिर पर जहां अपना आश्रम था. इधर उदयपुर के देश में सिंधी यवनों ने २ उपद्रव किया ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३ अपनी तनखाह को ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ तोभी तनखाह के रुपये नहीं मिले ५ देश से हासिल लेने लगे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६ फाल्गुन सुदि ॥ ३५ ॥ वहां से चहुवाण (अजितसिंह) ७ पाटवी घोड़े पर चढा तहां सेना पढकर ८ नौबतों पर निरंतर प्रहार हुए और भार पड़ने से १० शेषनाग ९ चरखी (घाणी) के सांठे (गन्ने) के समान होगया और चीण होकर ११ सर्पिणियों से १२ वियोगी होगया ॥ ३६ ॥

मापरापरशिविरवैभवलुण्टनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूखः ॥ ५८ ॥

आदितः ॥३३९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—नदलैं जालमसिंहकैं, सट्ठि सहँस ६०००० दै दंम्म[1] ॥
मित्र इक्क मरहट्ठनैं, टारयो कैद कुकम्म[2] ॥ १ ॥
चुंडाउत छुट्यो न वह, भैंसरोर पति मान ॥
छलसिसु जान्यों छिप्रहीं[3], रहिंहौं व्है अब रान ॥ २ ॥
दोला१ राघव१ दुहुँनके, लीनें सीस कटाय ॥
रोपे नगर अवंति बिच, सेलन अग्र चिपाय ॥ ३ ॥
उदयनैर उप्पर बहुरि, सज्जिय माहजि सैन ॥
उतकृति धृति १८२६ आखाढ बिच, लग्ग्यो पत्तन लैन ॥४॥
रसना जिम संकट रदन[4], जरि इम तोपन जाल ॥
संध्या खिजि विंटिय शहर, करि रन दमन[5] कराल ॥ ५ ॥
भैंसरोर पति मान तँहँ, विधि कछु कैद बिहाय ॥
जामिकं[6] दिट्ठि बचायकैं, दुरयो उदैपुर जाय ॥ ६ ॥
बहुत काल घेरा रह्यो, भयो उदयपुर त्रस्त ॥
संध्याको घन बुंट्ठि[7] करि, बिगरयो बिभव समस्त ॥ ७ ॥
सेन खरच छलबालसौं, मंग्यो माहजि तत्थ ॥
देहु उदयपुर उन कहिय, लेहु उचित तुम अत्थं[8] ॥ ८ ॥
सुनिय रान अरिसिंह यह, अनख परस्पर होत ॥
कथितं[10] दंड स्वीकारि कहिय, पकरि लेह छलपोतं[11] ॥ ९ ॥

तीन सौ उनचालीस ३३९ मयूख हुए ॥

१ रुपये २ कुकर्म ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ही ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥४दाँतों के घेरे में ५दंड देने को ॥ ५ ॥ ६ पहरायतों की नजर बचाकर ॥ ६ ॥ ७ मेघ की वृष्टि से ॥ ७ ॥ ८ रत्नसिंह से ९ अर्थ (धन) ॥ ८ ॥ १० सिंधिया ने कहा जितना ११ छलबाल (रत्नसिंह) को ॥ ९ ॥

जब माहजि पकरन जतन, किय सो सुनि तत्काल ॥
किल्ला कुंभिलमेरु गय, सह परिकर वह बाल ॥ १० ॥
दंड रान अरिसिंह दिय, भूखन दम्म तुरंग ॥
अवसेसन हित ओलि दिय, झल्ला जालम संग ॥ ११ ॥
जालमकौं माहजि जबहि, आयउ लै उज्जैन ॥
बरस याहि१८२६ऋतु सरद बिच, सज्जित अतुलित सैन१२
महाराव कोटा पुरप, नृप गुमान यह जानि ॥
मोच्यो जालम दम्मदै, परिकर स्वीय प्रमानि ॥ १३ ॥
इत रक्खे अरिसिंहनैं, संधी जवन सिपाह ॥
च्यारि लक्ख४००००० तिनके चढे, इक रुप्पय नय राह१४
फोरे कुंभिलमेरु के, फुट्टे संधिय नाँहिं ॥
पै इक मंगन दंद किय, मुलक उदैपुर माँहिं ॥ १५ ॥
दम्म भये नहिं दैनकौं, तब अरिसिंह सिटाय ॥
आयो व्याहन रीति कछु, संधिनकौं समुझाय ॥ १६ ॥
सुता बहादुरसिंहकी, परनि कृष्णगढ ढंग ॥
रान संकि तत्थहि रह्यो, संधिन दंद प्रसंग ॥ १७ ॥
तदनंतर मुनि नेत्र धृति१८२७, बुंदिय नगर नरेस ॥
भयो उदास प्रवृत्ति सन, बढि वैराग्य बिसेस ॥ १८ ॥
राध बिसद द्वादसि१२ रुचिर, रविबासर सुभ रूप ॥
अजितसिंह जेठो कुमर, किन्नौं बुंदिय भूप ॥ १९ ॥
प्रथम पुरोहित किय तिलक, निज कर झितुवराम ॥

१ परगह सहित ॥ १० ॥ २ बाकी रहे जिनमें जालमसिंह को ओल (रुपयों के एवज की कैद) में दिया ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ छुड़ाया ४अपनी परगह वाला जान कर ॥ १३ ॥ ५तनखाह के ६ नीति के मार्ग से ॥१४॥७यहां कछवा से कुंभिल मेरुवालों को जानना चाहिये ८ उपद्रव ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ९ डरकर ॥ १७ ॥ १० जिसपीछे ११ कर्म मार्ग से ॥ १८ ॥ १२ वैशाख सुदि ॥ १९ ॥

बहुरि व्यास आसिख विहित, रचि किय मानिकराम॥२०॥
निज कटिको[1] असिवर नृपति, बंधायउ निज हत्थ ॥
नृपता[2] दै निज पुत्रकौं, हुव बिरत्त[3] मन तत्थ ॥ २१ ॥
रक्ख्यो नगर बडोदिया, निज परिकर व्यय[4] काज ॥
श्रीजित पद अप्पुन[5] गहिय, तजिदिय पद नरराज[6] ॥ २२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जाके काज बिपति बिताई बहु कष्ट सहि,
द्वैर द्वैर दिन माँहिं मेटि जाठर दुसह दाह ॥
मरन बिचारि मारि मारि तरवारि झारि,
झंडे पचरंग जंग मंडे चहुवान नाह ॥
जैपुरकौं जीति नीति दुलभ दिखाई सब,
भूपन दिखाई भूप आदि रजपूती राह ॥
श्रीजित सहर बुंदी अष्टमं[8] उमेद मनु,
कासी जानि लीनी तंनुकासी जानि लीनी वाह ॥ २३ ॥

दोहा–इंद्रगढप उमराव तँहँ, भक्तराम१ अभिधान ॥
पुनि खतोली नगर पति, रतनसिंह चहुवान ॥ २४ ॥
वलवनपति मालम३ बहुरि, बैरिसल्ल भव बंस ॥
ज्योंही भरतसिंह४ जँहँ, खेड़ानगर वतंस ॥२५॥
दुर्गसिंह५ सुहुकम कुलज, अंतरदा नगरेस ॥
महासिंह गजसिंह६ जिहिं, पुर जज्जाउर पेस[11] ॥ २६ ॥
तिमहि भवानीसिंह ७ तँहँ, धोवड़ पत्तन नाह ॥

॥ २० ॥ १ अपनी कमर का २ राजापन देकर ३ विरक्त ॥ २१ ॥
४ खर्च के लिये ५ अपना पद श्रीजित रक्खा ६ राजा का पद छोड़दिया ॥२२॥
७ पेट की ८ उम्मेदसिंह रूपी आठवें मनु ने ९ बुन्दी को ही काशी जान ली
और राज्य छोड़ने में उस बुन्दी को १० तृण के समान जान ली सो प्रशंसा है
॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ११ आधीन ॥ २६ ॥

भगवंत८ सु सीलोर पति, साधानी हित चाह ॥ २७ ॥
सेरसिंह९ सामंत हर, भजनैरी पुर भान ॥
महासिंह हर बीर पुनि, थानाँ पुर प खुमान१० ॥ २८ ॥
तिम समुद्रसिंह११हु सुभट, सुहरनि पति बरबीर ॥
नगर जैतगढ नाह पुनि, बाघसिंह१२ रन बीर ॥ २९ ॥
भट खुसाल१३ सामंत हर, नगर नादनाँ ईस ॥
मिसल दाहिनीके मिले, भट इत्यादि बत्तीस ॥ ३० ॥
बाम मिसल उमराव बलि, सोलंखी जयसीह१ ॥
नाथाउत निम्मान पति, पित्थल सुत नय[१] लीह ॥ ३१ ॥
नाथाउत बखतेस२ बलि, नगर पगाराँ मोर ॥
अभयसिंह३ अमरेस सुत, पति अलोद रट्ठोर ॥ ३२ ॥
इत्यादिक सुभटन[२] नजरि, किन्नैं हय सिरुपाव ॥
पठये टीँका नृपन पुनि, सुनि यह वत्त सचाव ॥ ३३ ॥
उदयनैर अरिसिंह१ नृप, पित्थल२ जयपुर ईस ॥
बिजयसिंह३ रट्ठोर बलि, जनपद धन्व[१] अधीस ॥ ३४ ॥
कोटापुर प गुमान४ नृप, छन्न कितव छल जाल ॥
इमहि करोली पुर अधिप, जद्दव मानिकपाल५ ॥ ३५ ॥
बीकानैर अधीस बलि, सुरतसिंह६ नरनाह ॥
रामसिंह७ नैषध[४] अधिप, नरउरपति कछवाह ॥ ३६ ॥
भूप बहादुरसिंह८ तिम, कृष्णगढप रट्ठोर ॥
गोरबंस अवतंस[५] पुनि, सोपुर नृपति किसोर९ ॥ ३७ ॥
इत्यादिक सब नृपनके, टीँका गज१ हयराज२ ॥
मनिभूखन३ सिरुपाव४ मिलि, सह आये सुभ साज ॥३८॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ नीति के मार्ग में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ २ उमरावों ने ॥ ३३ ॥ १ मारवाड़ देश का पति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ निषध देश का पति ॥ ३६ ॥ ५ मुकुट ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सुनि टीका श्रीमंतहू, दयो नरायनराव१ ॥
हुलकर तकू१ संधिया, माहजि२हू भल भाव ॥ ३९ ॥
इम श्रीजित उम्मेद यँहँ, किय नृप ज्येष्ठ कुमार ॥
लयो महाराजोपपद, बहादुर१ रु सिरदार ॥ ४० ॥
रक्खे कछु निज ढिग सुभट, नाम सुनहु जिन नाह ॥
इक१ थाँनाँपतिको अनुज२, बिक्रम१ सुमन३ सिपाह ॥४१॥
बैरिसल्ल कुल उद्धरन, सुभट नाम सोभाग२ ॥
भट किसोर३ नाथाउत सु, अति जिहिँ रन अनुराग ॥४२॥
दयानाथ४ रासू५ दुव२हु, महासिंह कुल जात ॥
बीर खुसाल६ निहाल७ बर, हर सामंत सुहात ॥ ४३ ॥
झल्ला वीर दलेल सुन, चंद्रसिंह८ जय५ चोर ॥
वीर सिवाईसिंह९ वलि, अमरचंद रट्ठोर ॥ ४४ ॥
हड्ड खजूरीको बहुरि, दोलतसिंह१० स नाम ॥
ए निज ढिग रक्खे सुभट, श्रीजित बिहित६ बिराम७ ॥ ४५ ॥
बुंदियतैं ईसान दिस, कोस इक्क१ मतिमान ॥
सिव केदार निकेत८ तँहँ, रहन बिचार्यो थान ॥ ४६ ॥
महलनमैं उम्मेद २०० नृप, मंदिर उभय२ बनाइ ॥
श्रीरंग१ रु आनंदघन२, प्रभु दिन्नें पधराइ ॥ ४७ ॥
तिनके ढिग उत्तर४।७ तरफ, नाना मुकुर९ निकेत ॥
रुचिर चित्रसाला३ रची, सब सुभ चित्र समेत ॥ ४८ ॥
प्राची१ दिस तस हिट्ठ१० पुनि, नाना द्रुमन११ निवास ॥

॥३९॥१महाराजकी पदवी बहादुरसिंह और सरदारसिंह ने ली॥४०॥२छोटा भाई ३श्रेष्ठ मनवाला ॥ ४१ ॥ जिसको युद्ध से बहुत ४प्रीति थी॥४२॥४३॥५विजय को चोरनेवाला ॥ ४४ ॥ ६उचित ७प्रवृत्ति के उपराम में ॥ ४५ ॥ ८ केदार नामक शिव का मंदिर ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ९काचमहल ॥ ४८ ॥ १०उस के नीचे ११नाना भांति के वृक्षों का

क्रीड़ा उपवन[1] नाम करि, बिरच्यो रंगबिलास४ ॥ ४९ ॥
ताके उत्तर४।७ प्रांत पर, तीन३ निलय[2] किय तत्थ ॥
अच्छवाट१।५अरु असनघर२।६, मुकुर महल[3]३।७तिन मत्थ५०
तारागढ बिच हरि सदन१।८, आयत[4] कोस२।९ निवान ३१०।
बिष्णुसिंह२०।२।२ नृप चरित बिच, रचित कहे त्रय३थान५१
कृत गनेसघंटी[5]१।४।११कहिय, चोथी४ ताहि चरित्र ॥
नव्य[6] अधो[7] महलन निलय, बरनत सुनहु विचित्र ॥ ५२ ॥
राजमहल प्रासाद सन, दक्खिन२।३ दिस थिर थान ॥
तीन बनाये भूप तिन्ह, अब जानहु अभिधान[8] ॥ ५३ ॥
रुचिर निबकोराउला१।१२। इक बहु महल उपेत ॥
तस दक्खिन२।३ दूजो२ अतुल, जँहँ कुलदेवि निकेत[9]२।१३ ॥५४॥
कहत राउला कूपको३।१४, तासों दक्खिन२।३ तत्थ ॥
तीन३नमें प्रासाद तति[10], सब अति उन्नति[11] सत्थ ॥ ५५ ॥
तिन्ह तोरन[12] बाहिर तहाँ, गोल्हाबापिय पास ॥
तीरथिया हयकी रची, प्रतिमा१।१५ अट्ट[13] प्रकास ॥ ५६ ॥
सिव केदार समीप किय, तीजे३ आश्रम[14] बास ॥
तँहँ बिरच्यो उत्तर ४।७ तरफ, उपबन[15] देवविलास।१।१६।५७।
तास ढिगहि सिखिकोन[16]२ तँहँ, रचित कुंड२।१७ अभिराम ॥
तासों लागि अवाच्य[17]२।३ तट, धवल तुंग[18] निज धाम ॥ ५८ ॥
जो सिकारबुरज३।१८हि बजत, आलय प्रचुर[19] उपेत ॥

---

१ बगीचा ॥ ४९ ॥ २ मकान ३ काचमहल इन के ऊपर है ॥ ५० ॥ ४ मोटा ॥ ५१ ॥ ५ गणेशघाटी ६ नवीन ७ नीचे के महलों में ॥ ५२ ॥ ८ उन के नाम ॥ ५३ ॥ ९ मंदिर ॥ ५४ ॥ १० महलों की पंक्ति ११ ऊंचेपन सहित॥ ५५ ॥ १२ उनके दरवाजे के बाहर १३ बुरज पर चौड़े ॥५६॥ १४वानप्रस्थ १५बाग ॥५७॥ १६ अग्नि कोण में १७ दक्षिण के किनारे १८ श्वेत रंग का ऊँचा अपना महल ॥५८॥ १९ बहुत मकानों सहित

आमति१ जीवन२ अप्प इह, निवस्यो रुचिर निकेत[2] ॥५९॥
तँहँ गुलाबबाटी[3]१।१९ तिमहिं, मारुति छत्री२।२० मंजु ॥
कुल्या[4]३।२१ग्रावन जटित किय, कुंड मिलित चित कंजु[5]६०
बहुरि मंदुरा[6]४।२२आदि बहु, थप्पे काति लघु थान ॥
बैखानस[7]३तँहँ बास करि, बिलस्यो निगम बिधान ॥ ६१ ॥
जो खवासि नृपकै निपुन, कही रूपरसराय ॥
तस नामहु इक१ बाग तँहँ, चतुर रच्यो जस चाय ॥ ६२ ॥
सिव केदार समीप सो, बज्जहिं रूपबिलास१।२३ ॥
नदी बानगंगा निकट, इत दक्खिन[9]२।३ तट आस ॥ ६३ ॥
बेघम नृप बुधसिंह१९९को, चौंरा१।२४ रुचिर रचाइ ॥
किन्नौं जस व्यय अतुल करि, मँह[10]१सह दान२मचाइ ।६४।
बुंदीतैं चहुँ४घाँ बिदित, मृगया[11] बुरज महीप ॥
बिरची तिनमैं सुभ बुरज१।२५, दिस प्राची सब दीप[12] ॥६५॥
बहुरी३।२६ कोठा३।२७ आदि इम, बहु पुर निकट१बनाइ ॥
दूर२हु भीमलता३।२८ दि सुब, पट्टु मृगया रस पाइ ॥ ६६ ॥
सत्रुसल्ल१९६।१ तजिकैं सुपहु, व्यय औसी करि बित्त[13] ॥
काहूनैं न रचे निलय[14], इम उदार चाहि चित्त ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे

१ बुद्धि पर्यन्त और जीवन पर्यन्त आप यहां २ सुन्दर मकान में (*) रहा ॥ ५९ ॥ ३ गुलाबवाड़ी ४ पत्थरों की जड़ी हुई नहर, ५ बहते हुए जलवाली ॥ ६० ॥ ६ हयशाला ७ उस वानप्रस्थ ने ८ वेद विधि से विलास किया ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ९ छुआ ॥ ६३ ॥ १० उत्सव सहित ॥ ६४ ॥ ११ शिकार की १२ पूर्व दिशा में सब को प्रकाश करनेवाली है ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ १३ धन खरच करके १४ मकान ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशि में, उम्मेदसिंहके चरित्र

(*)रावराजा उम्मेदसिंह अंत समय में केदारेश्वर में ही मूर्छित होगये थे जिस के बाद उनको महलों में लेगये परंतु जब तक बुद्धि(होस)रही तब तक वे केदारेश्वर में ही रहे इसी कारण यहां आमति जीवन कहा है.

दसिंहचरित्रे मित्रमहाराष्ट्रझल्लाजालमसिंहकारामोक्षणमाहजिबा-
हिन्युदयपुरवेष्टनचुण्डाउतमानसिंहकौहकृयान्तःपुरप्रविशनज्ञातलु
लुप्सारुष्टमाहजिसपक्षच्छलडिम्भकुंभिलमेरुदुर्गगमनराणाऽरिसिंह
माहजिदण्डद्रम्मा ऽर्पणाखिलद्रम्माऽवधिझल्लाजालमसिंहसार्थीक
रणावत्तद्रम्मकोटेशगुमानसिंहतन्मोचनासंधिभृत्याद्भयशङ्किताऽरि-
सिंहबहादुरसिंहसुतोद्वाहनिमित्तकृष्णगढनिवसनरावराडुम्मेदसिंह
महाराजकुमाराऽजितसिंहाऽर्थराज्याऽर्पणास्वयंश्रीजिदुपटङ्कधारण
सर्वभूभृट्टीकोपाख्यव्यवहारप्रेषणास्वल्पसार्थसहितश्रीजित्केदारेश्वर
स्थाननिवसनमेकोनपञ्चाशत्तमो ५९ मयूखः ॥ ५९ ॥
आदितः ॥ ३४० ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिंद
मुखरितचरणाचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवा
णचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजे

में, मरहठे मित्र का झाला जालमसिंह को कैद से छुड़ाना और माहजी का सेना से उदयपुर को घेरना १ चुंडाउत मानसिंह का छल से पुर के भीतर जाना और लोभ से माहजी को क्रुद्ध जानकर पच सहित छलेबालक का कुंभलमेरु के गढ में जाना २ राणा अरिसिंह का माहजी को दंड के रुपये देना और बाकी के रुपयों की अवधि पर्यन्त झाला जालमसिंह को साथ देना ३ कोटा के पति गुमानसिंह का रुपये देकर जालमसिंह को छुड़ाना ४ सिन्धियों की तनखाह के द्रव्य से डरकर अरिसिंह का बहादुरसिंह की पुत्री के विवाह के कारण से कृष्णगढ में निवास करना ५ रावराजा उम्मेदसिंह का महाराज कुमार अजितसिंह के अर्थ राज्य देना और अपना श्रीजित् की पदवी धारण करना ६ सब राजाओं का टीका नामक व्यवहार भेजना और थोड़े साथ सहित श्रीजित् के केदारेश्वर स्थान में निवास करने का उनसठवां ५९ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५९ ॥ और आदि से तीन सौ चालीस३४० मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पुष्प रस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले

छटा मेलसौं सेल आकास छाये, मनौं सत्रमैं डब्भ ठड्ढे न माये ॥
रचैं चाप टंकार संका रचावैं, मनौं पिंजनी तूल झुंझु मचावैं।३७।
चमंकैं जुरी टोप सन्नाह आली, किधौं संग कादंबिनी रंग काली
रजैं यौं ध्वजा मत्त हाथीन राखी, सरूके खरे संखपैं जानि साखी३८
बिजैकौं नकीबावली अग्ग बोलैं, हिये हेत फुल्लैं रु हुल्लैं हरोलैं ॥
लगे संग दम्मामि सिंधू लगावैं, जथा कोप उच्छाह थाई जगावैं३९
कुंसामैं तुले जात यौं बाजि कंधे, बढैं चाप चिल्लान ज्यौं ऐंन बंधे॥
उडैं ओझकै छाँह उँचेष्ट होती, करैं कैंतरी होड हल्लैं कनोती।४०।
जगैं ग्रावपैं नाल फुल्लिंग ज्वाला, मनौं गोचरी होत खद्योत माला॥
फबैं पोथ फुल्लेनमैं स्वास फुक्कैं, किधौं ग्राम्यहुक्की तंपेहीन फुक्कैं४१
फुंदाकू तथा गारुरू हत्थ पोयो, परयो बैलके नासमें नत्थ पोयो ॥

आकाश में छायेहुए भाले ऐसी शोभा देनेलगे मानों १ यज्ञ में खड़े किये हुए डाभ (दर्भ) नहीं समाये, धनुप की टंकार करके भय रचाते हैं सो मानों २रुई में पिंजण ३ झणकार करती है ॥ ३७ ॥ टोप और कवचों की जुड़ी ४ पंक्ति चमकती है सो मानों सेना के साथ काले रंगवाली ५ घटा चली है और मस्त हाथियों पर ध्वजा ऐसी शोभा देती है मानों पर्वतों पर सरूके ६ वृक्ष खड़े हैं ॥ ३८ ॥ विजय करने को ७ छड़ीदारों की पंक्ति आगे बोलती है जिनके हृदय स्नेह से फूलकर हरोल को ८ आगे बढाते हैं ९ दमामी (ढोली) साथ लगकर बड़े राग के दोहे लगाते हैं और प्रशंसा के योग्य रौद्र रस के स्थायी क्रोध और वीर रस के स्थायी उत्साह को जगाते हैं ॥३९॥ १० लगामों में तुले हुए ११घोड़ों के कांधे ऐसे जाते हैं मानों१२धनुप की प्रत्यंचा में बंधे हुए, १३ हरिण जाते हैं अथवा धनुप की प्रत्यंचा में हरिणों को बांधने जाते हैं १४ऊंची होती हुई छाया को देखकर चमक कर उडते हैं और हिलते हुए कान १५ कतरणी की बराबरी करते हैं ॥४०॥ १६पत्थरों पर खुरतालें लगकर अग्नि कणों की ज्वाला उडती है सो मानों जुगनुओं (आगियों) की पंक्ति उडती १७ दीखती है. फूले हुए फुरणों में श्वास चलता हुआ शोभा देता है सो मानों १९बिना टिकड़ी (सुलफे) का १८ ग्रामीण लोगों का हुका फूकता है ॥ ४१ ॥ अथवा जैसे २१कालबेलिये के हाथ में पकड़ा हुआ २० सर्प फुंकार करे तैसे तथा जैसे वृषभ (बैल) की २२ नासिका में २३ नाथ (नाककी रस्सी) पोई होवे

उदै अक्कको चक्क यौं सज्जि आयो लये बिंटि मैनाँ मनो
मेघ छायो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

मैंननके सब खेट इम, बिंटिलये नृप जाय ॥
सुनत वेहु सज्जित भये, बल खल अतुल बढाय ॥ ४३ ॥

॥ षट्पदी ॥

कर मक्खर कोदंड उभयर मक्खर गुन ओपित ॥
उपासंग दृढ उभयर पिट्ठि पूरन आँरोपित ॥
कटि अय कठिन कटार वेसन दारिमं मसि रंगिय ॥
सिखिचंद्रक धवपत्र कालितें सिर ललित किलंकिय ॥
अपिहितं कपाल फैंटा गरद कहिकहि डुडुवं लरन किलं ॥
बंसिय बजात अपसव्य कर किलकारत आये कुटिल ४४
स्योस्यों करि सिव सुमिरि भये सन्नुद्ध मैंनन गन ॥
इततैं संभर भटन बाजि पटकिय मिलाय मन ॥
उततैं तीरन ओघ संगि इततैं घट सारत ॥
हनन सेन उत हक्क इत सु पक्करन उच्चारत ॥

और यो फुंकार करे तैसे करते हैं १ सूर्य के उदय होते ही इसप्रकार की २ सेना सजकर आया और जैसे मेघ छावै तैसे छाकर मैनों(मीणों) को घेरलिया ॥ ४२ ॥ १ सब खेड़ों को घेरालिये ॥ ४३ ॥ उन मैंनों के हाथ में ४ मक्कर [बांस] के धनुष और ५ बांस की ही दो दो प्रत्यंचा शोभायमान हैं ७ बाणों से भरे हुए पीठ पर दो दृढ ६ भाथे लगेहुए ८ कमर में कठिन लोह का कटार और १० दाड़िम की स्याही में रंगे हुए ९ वस्त्र, मस्तक पर ११ मयूर के पंखों और धोकड़ा के वृक्षों के पत्तों की अथवा धावड़ा नामक वृक्षों के पत्तों की १२ लगाईहुई सुंदर किलंगियें १३कपाल नहीं ढकैं ऐसे गोलाकार बंधेहुए मस्तक पर फैंटे जो१५निश्चय ही१४डूडू शब्द कहकर लड़नेवाले (खैराड़ के मीणों का युद्ध प्रारंभ करने का यह सांकेतिक शब्द है १६ दहिने हाथ से वंशी बजाते हुए वे कुटिल किलकारी करके आये ॥ ४४ ॥ १७ स्योस्यो नाम से शिव का स्मरण करके १८ मीणों का समूह १९ उधर से तीरों का समूह २० इधर से बरछियें

कटि रुंड मुंड लंप पय किरत गिरत चाप जीवा जटित ॥
खननंकि वाढ आयुध खिरत फिरत तूंन जित तित फटित४५
उलटिजात असवार पलटि तुक्खार प्रवीरन ॥
ए खंडत तिन्ह अनखि जुलम मंडत वे तीरन ॥
जाम जुगल२ इम जुज्झि निवल अव खल सिर नावत ॥
परे आनि नृप पयन सयनँ जोरत अकुलावत ॥
पहु अजितसिंह यह रन प्रथम करि इम मैंनन जेर किय ॥
लुटवाय खेट बारह१२लये बरस अढारह१८ वय बलिय४६

॥ दोहा ॥

चोरी गोवध आदिके, मैंनन लिखित कराय ॥
सबके सस्त्र गिरायकैं, दिय कृषिकर्म लगाय ॥ ४७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशावजितसिंहचरित्रे सपत्नीकश्रीजिदुम्मेदसिंहपुष्करस्नानभूपबहादुरसिंहतत्कृष्णगढाऽऽनयनश्रीजि १ द्राणा २ ऽरिसिंह२ सम्मिलननासरदामार्गनिजाऽऽश्रनाऽऽगमनबुन्दीन्द्रप्रथम १ महाराजकुमारप्रतापसिंहोद्भवनज्ञातकृष्णगढराणाऽतिवासरुद्धतत्पट्टपपुत्रहम्मीरसिंहसन्ध्युपाख्ययवनशीपोंहभूमिभागधेयानिग्रहस्वभृत्यास्वापतेयाऽऽदानरावराडजित–

शरीरों को वेधती हैं १ हाथ पग गिरते हैं २ प्रत्यंचा से जड़ेहुए ३ फटेहुए आधे फिरते हैं ॥ ४५ ॥ ४वीरों के घोड़े पलटकर ॥ ३८ ॥ ५दो पहर पर्यन्त इस प्रकार लड़ कर ६ मस्तक झुकाकर ७ हाथ जोड़ कर ८ बारह खेड़े लुटवालिये ॥ ४६ ॥ ९ खेती के काम में लगादिये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, स्त्री सहित श्रीजित् का पुष्कर स्नान करना और कृष्णगढ़ के राजा बहादुरसिंह का उसको कृष्णगढ लाना १ श्रीजित् का राणा अरिसिंह से मिलना और नासरदा के मार्ग से अपने आश्रम को आना २ बुन्दीपति के प्रथम राजकुमार प्रतापसिंह का होना और राणा का कृष्णगढ में अत्यन्त रहना जानकर उसके पाटवी पुत्र हम्मीरसिंह को रोककर सिंधी नामक यवनों का शीपोदियां की भूमि का हासिल ले अपनी तनखा का धन लेना ३

सिंहपुनर्मैंणागणविध्वंसनशस्त्राभ्यासपूर्वकस्तेय १ गोवधा२ऽऽदिरो धतल्लेखलेखनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३४१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्गैं बिनु अपराध जोरजुत, ग्राम सुहाके इक सगताउत ॥
हन्यौं इहि तस बैर चिंति यँहँ, तमकि भूप अव दल हंकिय तँहँ ॥१॥
मानपुरा१ रु सुहा१ निवसथ दुव२, मारि बिडारि बिजय लिन्नौं ध्रुव
बहु सीसोद पक्करि करि बिनु मद,आयउ पुर थानौं निज जनपद।२।
तँहँ नरेस किय यह बिचार मन, इततैं नाँहिं रुकत गैनैंजन ॥
यातैं कहुँक बिहित गढ बंधैं, इत तातैं चोरन चित रंधैं ॥ ३ ॥
बिल्लहटा१ मेवारँ ग्राम जँहँ, पिक्खयो उचित बनायो गढ तँहँ ॥
रानाँ सन यह वत्त कहाई, इततैं रुक्कंत न तेय उपाई ॥ ४ ॥
यातैं यह तुमरो निवसथ लिय, हम तँहँ दुष्ट दमन गढ बंधिय॥
अपरं लेहु हमसौं तुम या सम, करहिं रुद्ध यातैं तसकरक्रम ॥ ५ ॥
बिल्लहटा इम गढ बंधायउ, गढपति रक्खि रु बुंदिय आयउ ॥
बसु लोचन धृति १८२८ सक तदनंतरँ, एकादसि ११ ससि राध त्रि सद पर ॥ ६ ॥
गो नृप वंसवहाला व्याहन, सुहृद जन्य सजि अतुल उछाहन ॥
राउल पृथ्वीसिंह सुता प्रिय, बखतकुमारि अभिधान व्याहि लिय

रावराजा अजितसिंह का फिर मैनों के समूह को नाश करना और शस्त्रों के प्रहारों से नाश करके चोरी और गोवध आदि रोकने का उनका लेख लिखाने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीनसौ इकतालीस ३४१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्राम २ अपने देश में ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ चोरी करनेवाले ॥ ४ ॥ ४ ग्राम ५ दूसरा ६ चोरों का चलना ॥ ५ ॥ ७ जिसपीछे ८ वैशाख सुदि ॥ ६ ॥ ९ मित्रों की बराती (जनेती) सजकर १० नाम ॥ ७ ॥

लगन दिवस बिलहटा सिर हुत, चढे जाजपुरके रानाउत ॥
सुनि श्रीजित चिंतिय विचार चित, कुंदिय भूप गयो ब्याहन हित॥८॥
इत सु लैन बिलहटा आये, रानाउतन बिरोध रचाये ॥
नृप संधा बिगरैं सु न अच्छी,श्रीजित सोचि चढ्यो तब कच्छी॥९॥
श्रीजित संग चढी खिल सेना, मानहु सत्थ हिमालय मेना ॥
परे जाय रानाउत दल पर, कतल मची जनु काल प्रलयकर॥१०॥
चलन लगे सर संगि तुपक असि,लगे फिरन गोमायु गिद्ध लसि॥
भेजा भचकि उडत आकासहिं,लोल रचत कंदुक जनु लासहिं॥११॥
ओपित धनुख बान संधित इम, उत्तरकुरु बिच अमरनदी जिम ॥
ब्रह्मपुरी जिम पुंख बिराजत, सैलन पर संपर्व सर साजत ॥ १२ ॥
भल्ल उदधिसंगम गति भासैं, ताहि लखत भीरुन गन त्रासैं ॥
तुपकें चलाय भरत हठि हेरत, गोखी बिच कि बीज कृखि गेरत॥१३॥
परत मरत कति मात पुकारत, अकुलावत कुक्कत अति आरत ॥

१बीलहटा ग्राम पर॥८॥२ राजा की प्रतिज्ञा३घोड़े पर चढा॥९॥ अजितसिंह की बरात में गये पीछे४बाकी बची जो सेना श्रीजित् (उम्मेदसिंह)के साथ चढी सो मानों हिमालय के साथ मेना नामक उसकी स्त्री हुई ॥१०॥ तीर, बरछी, बंदूक और तरवारें चलनेलगीं ५ गीदड़ शोभित होकर फूलने लगे, मस्तकों की टक्कर होकर आकाश में उडते हैं सो मानों ६ चपल गैंद ७ नाच करते हैं ॥ ११ ॥ धनुष में संधान किया हुआ बाण ऐसा शोभा देता है जैसे ८ उत्तरकुरु देश में ९ गंगा नदी शोभा देती है "उत्तरकुरु धनुष के आकार टेढा है" १० काशी पुरी के समान उस (गंगा रूपी) बाण के पंख शोभा देते हैं अर्थात् पंख तो काशी पुरी है और गंगा के मार्ग में आनेवाले पर्वतों के समान ११ गांठों सहित बाण शोभा देता है अर्थात् तीर की गांठें ही पर्वत हैं ॥ १२ ॥ १२ तीर की भाल (फल) है सो ही गंगा का और समुद्र का संगम दीखता है जिसको देखते ही पाप के समान १३ कायरों का समूह डरता है "यहां गंगा के योग से पाप की तर्जना ऊपर से की जाती है" १४ बंदूक को चलाकर हठ पूर्वक पीछी भरते हैं सो मानों १५ ऊरे (बीज डालने की बांस की नळी) में खेती का बीज डालते हैं ॥ १३ ॥ गिरते हुए और मरतेहुए कितने ही लोग माता माता पुकारते हैं और अत्यन्त १६ पीडित होकर कूकते हैं मेत नेत्रों रूपी

चक्खत प्रेत नयन *शृंगाटक, निधरक रचत अछकछक नाटक१४
फटिफटि निकसि †झोम फहरावत, ‡दर्पी मह रसना कि दिखावत॥
ऊरध होत बहत §असि ऐसैं, जान्हवि धार मेरु सिर जैसैं ॥१५॥
प्रभु श्रीजित अरि बहु इम पारे, बनिजारन टंडा जनु डारे ॥
सेननसहित [1]अयुत रानाउत, देखि हत्थ तजि [2]रखत भजे द्रुत ।१६।

॥ दोहा ॥

बहु सीसंक[3] बारूद बलि, तुपक [4]नालि जंबूर॥
इत्यादिक सगुन सिबिर, सकल छिन्निलिय सूर॥ १७ ॥
बिल्लहटाके दुर्ग बिच, रखत वहै सब रक्खि ॥
पहुँच्यो आश्रम गेहपतिहि, अप्पहु भरि यह आक्खि॥
करि उपयम दुलहनि सहित, अजितसिंह इत भूप ॥
भैंसरोरगढ कुंभकारि, आयो रूप अनूप॥ १९ ॥
जो माहजि उज्जैन रन, गइयो चौंडहर मान ॥
तिहिँ अहिमानी भंसम करि, रक्ख्यो तहँ चहुवान ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्ग रान जगतेस चौंडहर, सलूमरीस कुबेर सहोदर ॥
लाल नाम सोलह[12]१६सम थप्प्यो, अरु तिहिँ भैंसरोरगढ अप्प्यो२१
भो नृप जब अरिसिंह छत्र धरि, तब वह लाल बुलायो अहरि ॥

* सिंघाड़े चलते हैं और पूर्ण तृप्त होकर निर्भयता से नाटक करते हैं ॥१४॥ पेट फटफट कर † तिल्ली बाहर निकलती है सो मानों ‡ कामी महिष (भैंसा) जीभ दिखाता है "कामी भैंसा भैंस के मूत्र स्थान को सूंघकर जीभ निकाला करता है" § तरवारें ऊंची होकर ऐसी बहती हैं मानों सुमेरु के शिखर से गंगा की धारा बहती है ॥ १५ ॥ श्रीजित् ने इस प्रकार बहुत शत्रु मारे सो मानों बनजारों ने बालध डाली है १ दश हजार २ सामग्री छोडकर ॥ १६ ॥ ३ शीशा ४ तोपें ॥ १७ ॥ ५ बीलहटा के किलेदार से कहा कि ६ ये सामान भर कर देना ॥ १८ ॥ ७ विवाह ८ दुलह ॥ १९ ॥ ९चूंडावत मानसिंह १०हठ करके ॥ २० ॥ ११ आगे १२ लालसिंह को सोलह उमरावों के समान ॥ २१ ॥

अक्खी पुर बग्घोरं पधारहु, मं.मक नाथ पितृव्यक मारहु ।२२।
पुरबग्घोर सुनत गो पापी, धिग्करि द्रोह मिलनको थापी ॥
नाथ कहिय तुमरो बिस्वास न,पठवहु कहि आवहु मम पास न२३
सिव इकलिंग लाल तव दिच दिय, कपटी पुनि अंदर प्रवेस किय॥
नाथं करत सिव पूजन पायो, लाल तास सिर तोरि गिरायो २४
ताको सुत यह भैंसरोरपति, मानसिंह अभिधान भीरुं मति ॥
इहिं कारि हठ रक्खो नृप आवत, पुनि सु डरयो गढबिच पधरावत

॥ दोहा ॥

सामग्री तब गोठिकी, दिन्नी सिंविर पठाय ॥
गृह न दिखायो बंहम बस, जिन इनके गढ जाय ॥ २६ ॥
सरिता चम्मलि बंभनी, दोउन२ संगम तत्थ ॥
अट्ठोत्तरसत १०८ धेनु दिय, संभर नाह समत्थ ॥ २७ ॥
चढि प्रातहि दरकुंच रचि, रनपट्टु संभर राय ॥
सक वसु दग धृति १८२८ सुंक्रसैं, प्रविस्यो बुंदिय आय।२८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशावजितसिंहचरित्रे स्मृतपुरातनबन्धुवैररावराजमानपुर १ सुहा २ ग्रामेशाऽऽदिशीसोदनिग्रहणस्वराष्ट्रधाणापुराऽऽगमनराणाग्रामविझहटास्वदुर्गबन्धनतत्स्पर्द्धिग्रामानिविविदिषुराणाऽलुनयनकुन्त्यागतप्रस्थितरावराड्वंशवहालापुरेशशीसोदराउलपृथ्वीसिंहदुहितोद्वहनपश्चाद्राणाउत्तसैन्य

१पागोर में जाकर २ मेरे काका नाथसिंह को मारो ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ लालसिंह ने ४ नाथसिंह ॥ २४ ॥ ५ कायर ॥ २५ ॥ ६ डेरों में भेजदी ७ सन्देह से ८ यह गढ कहीं इनके न चलाजावे ॥ २६ ॥ ९ चामल और पावणी नदी के संगम पर ॥ २७ ॥ १० ज्येष्ठ मास में २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्रमें, पहिले का भाई का वैर याद करके रावराजा का मानपुरा और सुहा के पति शीसोदियों को पकड़ना और अपने देश धाणापुर में आना १ राणा के ग्राम पीलाहटा में अपना गढ बांधना और उसकी बराबर का ग्राम निश्चय

विल्लहट्टावेष्टनश्रुतशात्रवश्रीजितत्समायोधनकृतविजयस्वाश्रमाऽऽगमनस्वीकृतचुण्डाउत्तमानसिंहसत्कारसम्भरेशस्वपुरप्रविशनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥

आदितः ॥ ३४२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ऋतु पाउस अंतर *तदनु, नृपकै कुमर प्रताप ॥
कृष्णगढप दौहित्र वह, गत हुव रोग अमाप ॥ १ ॥
तदनंतर याही बरस १८७८, सित दसमी१० इसमास ॥
पतनीजुत श्रीजित चल्यो, प्राची तीरथ आस ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम गयो केसवपुरपट्टनि, न्हान१ दान२ किय तत्थ उचित भनि॥
इसके अंत ग्रहन ससिके पर, सुबरन१ भूमि२ दये पुनि संभर॥३॥
इंदगढाधिप भक्तराम जँहँ, आयो मिलन लैन संभर कँहँ ॥
प्रसभपुब्ब करजोरि अरज करि, स्वीय निलय लैगो हित अनुसरि ॥ ४ ॥
तँहँ श्रीजित दुव२ रत्ति बिताई, पुनि ब्रजभूमि हंकि द्रुत पाई ॥
गिरि गोवर्द्धन दीपमाल दिन, न्हान२दान२किय कथित द्दुइन॥५॥

ही खेड़े ने को राणा का विनय करना २ बुन्दी आकर प्रस्थान करके रावराजा का पांखबाड़ा पुर के पति सीसोदिया रावल पृथ्वीसिंह की पुत्री से विवाह करना और पीछे से राणावतों की सेना का पीलहट्टा को घेरना सुनकर उन शत्रुओं से श्रीजित् का युद्ध करना और विजय करके अपने आश्रम में आना३ चुंडावत मानसिंह का सत्कार स्वीकार करके रावराजा का अपने पुर(बुन्दी) में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ और आदि से तीन सौ बियालीस ३४२ मयूख हुए ॥

*जिसपीछे॥१॥१आश्विन मास में२पूर्वदिशा के तीर्थों की आशा से ॥२॥३आसोज सुदि पूर्णिमा को ॥३॥४हठ पूर्वक५अपने घर॥४॥६द्वाडाओं के पति ने ॥५॥

पुनि मथुरा करि उचित रीति सब, अतुल दान वृंदावन किय अब
पुनि दरकुंच कडामानिकपुर, सुरतटिनी न्हायो संभर सुर ॥ ६ ॥
करि उपवास१ दान२ विधि संजुत, दरकुंचन पहुँच्यो प्रयाग द्रुत॥
वपन३१ न्हान२ उपवास३ दान४ विधि, करि अरु कृपन लयो कासी निधि ॥ ७ ॥
चेतसिंह कासीपुर भूपति, लैगो सम्मुह आय महामति ॥
तँहँ निज धाम राजमंदिर रहि, चतुर समस्त उचित सद्धिय चहि।८।
अजितसिंह बुंदीस भूप इत, आयो नगर इंद्रगढ धरिहित ॥
तब सम्मुह कल्ल्यानखेट तक, भक्तराम पहुँच्यो भट नायक॥९॥
लैगो नृपहिं बधाय निजालय, रक्ख्यो अति सतकारि निपुन नय॥
तँहँ जेठो भट भक्तराम सुत, कुमर नाम सनमान बिनय जुत।१०।
ताहि बुलाय भूप हड्डन पति, अभ्युत्थान दयो अद्दरि अति ॥
यह नवीन किन्नौं नृप आदर, आयो रहि दिन पंच५निज नगर।११।
उदयनेर इत संधी जवनन, हँक लिय चुकि मेवार मुलक सन ॥
छर्लासिसुमैं न मिले करि मानहिं, लैन गयो ति कृष्णगढ रानहिं१२
कछुदिन रान बिसास न किन्नौं, पुनि संधिनको आसय लिन्नौं॥
तब अरिसिंह चल्यो निज देसहिं, स्वसुरहु गो पहुँचान नरेसहिं१३
निज जनपद रानहिं प्रबिसायो, तब रट्ठोर कृष्णगढ आयो ॥
इत जसवंत देवगढ स्वामी, हुव छँलवाल सहाय हरामी ॥ १४ ॥
पृथ्वीसिंह भूप कूरमपति, निज दौहित्र जानि रचि विन्नति ॥
सुत लघु सहित जाय जैपुर सठ, अरिसिंहहिं मारन मंड्यो हठ१५
राजसिंह हम्मीरदेव हर, सेनापति फोरयो तँहँ सत्वर ॥
जट्टनकौं तजि कछुक अनख लहि, समरू हुतो फिरंगी तत्थहि१६

१गंगा नदी २ देव ॥ ६ ॥ ३ मुंडन ४ उस कृपण ने काशी रूपी निधि को ली ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ५ अपने घर ॥ १० ॥ ६ ताजीम ॥ ११ ॥ ७ तनखाह ८ रत्नसिंह में ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अपने देश में १० रत्नसिंह की सहाय ॥१४॥१५॥१६॥

सो पठयो अरिसिंहहिँ मारन, कुप्पि चल्यो समरू रन कारन ॥
दै कछु दम्म मिलाय ताहि लिय, रान[१]रु समरू[२]भये मित्रप्रिय१७
रान साम पंडेर ग्राम करि, भरतपुरहि पुनि गो सु गर्व भरि॥
इत अरिसिंह उदैपुर आयो, संधिनजुत निज अमल जमायो ॥१८॥
भीम[१] सलूमरि नाह हुकम लहि, चुँडाउत आयो किल्ला चहि ॥
कछु छलकरि सिं[२]सु सचिव डरायो, खाली गढ चित्तोर करायो१९
तदनु[३] रान पठयो बुंदिय दल, बिल्लहटा तुम लयो अप्प बल ॥
रक्खन ताहि चित्त जो लावहु, तो यँहँ सेवन अनुज[५] पठावहु॥२०॥
रुप्पय लक्ख१०००००पटा तिहिँ दै हैं, बिल्लहटाहु[६] दत्त गिनि लैहैं॥
यह सुनि नृप निज अनुज बहादुर, पठयो दै भट संग उदयपुर२१
काका अर्ज्जुनसिंह रान तँहँ, पठयो सम्मुह सुनत हड्ड पँहँ ॥
दै तिहिँ पटा सुभट निज थप्प्यो, बिल्लहटासु तदँपि[७] नहिँ अप्प्यो२२

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमहाराजकुमारप्रतापसिंहदेहत्यजनश्रीजित्प्राची तीर्थयात्राप्रस्थानहड्डेन्द्रेन्द्रगढगमनभक्तरामकुमरसन्मानसिंहाऽर्थाऽभ्युत्थानाऽर्पणानीतभृत्याद्रम्मसन्धियवनकृष्णगढगमनराणाऽरिसिंहमेदपाटाऽऽनयनजयपुरगतसपुत्रदेवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंहराणानिपातविचारणाफिरङ्गिसमरूमेदपाटप्रेषणातदरिसिंहमैत्रीकरणा

॥ १७ ॥ १८ ॥ १ सलूमर का पति भीमसिंह २ रत्नसिंह के सचिव को ॥ १९ ॥ ३ जिसपीछे ४ पत्र ५ छोटे भाई को नौकरी करने भेजो ॥ २० ॥ ६ दियाहुआ गिन लेवेंगे ॥ २१ ॥ ७तो भी बीलहटा नहीं दिया ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशिमें, अजितसिंहके चरित्र में, बुन्दीपति के कुमर प्रतापसिंह का मरना और श्रीजित् का पूर्व दिशा के तीर्थों को जाना १ हाडाओं के पति का इन्द्रगढ जाना और भक्तराम के कुमर सन्मानसिंहको ताजीम देना२ तनखाह के रुपये ग्रहण करके सिन्धी यवनों का कृष्णगढ जाना और राणा अरिसिंह को उदयपुर लाना ३ पुत्र सहित जयपुर गये हुए देवगढ के पति चुंडावत जशवंतसिंह का राणा को मारने

सलूम्मरीशचुण्डाउत्तभीमसिंहचित्रकूटस्थछलपत्त्रनिष्कासनराणा
बिल्लहटाऽर्थबुन्दीवर्णदूतप्रेषणरावराट्सोदरबहादुरसिंहोदयपुरप्र-
स्थापनतद्बिल्लहटावर्जितपटोपटङ्किग्रामादिप्रापणं तृतीयो३ मयूखः॥
॥ ३ ॥ आदितः ॥३४३॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुंदीस भूप रानिनजुत, इक दिन ससक[1] सिकार गयो द्रुत ॥
ताल[2] जोधसागर उपबन[3] जँहँ, ससग्राहक[4] हो ग्रावबाट[5] तँहँ ॥ १ ॥
बनवाई बग्गुरि[6] ताके मुख, सह अवरोध[7] रह्यो तँहँ सह सुख ॥
घेरयो दासिन बिपिन[8] पिछि रन, उठि उठि आन लगे तब ससगन ॥ २ ॥
कछुक काल कौतुक इम किन्नों, अवरोधहिं आयसं[9] पुनि दिन्नों ॥
उपबन तब आये बनिताजन, अप्प चल्यो पुनि इक्क अडर मन ॥ ३ ॥
बल्लभदास १ अनोपराम दुव २, नाजर संग इतर कोउ न हुव ॥
खर्ब[10] तुरग आरूढ नरेश्वर, उपबन[11] ओर चल्यो हंकत अर ॥ ४ ॥
इक १ गहिलोत गुलाब नाम सठ, लाल अनुज[12] तँहँ किय अपुब्ब हठ ॥
जामिक[13] दिट्ठि बचाय रु आयो, धर्व[14] अंतर रहि बिसिख[15] चलायो ॥ ५ ॥
फुट्टो वह कर वाम कलाई, चहुवानहु तब संगि चलाई ॥

का विचार करना और सलूमर के पति चुंडाउत भीमसिंह का चीतोड़ में स्थित छलचाल के पत्र को निकालना २ राणा का बीलहटा के अर्थ बुन्दी पत्र भेजना और रावराजा का अपने सगे भाई बहादुरसिंह को उदयपुर भेजना उसको बिल्लहटा के बिना, पट्टा उपटंक ग्राम आदि मिलने का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और आदि से तीनसौ तितालीस ३४३ मयूख हुए ॥

१ खरगोशों की २ तलाव ३ बाग ४ खरगोशों को पकड़ने का ५ पत्थरों का कोट ॥ १ ॥ ६ वागर (फंदा) ७ जनाना सहित ८ वनको ॥ २ ॥ ९ जनाने को आज्ञा दी ॥ ३ ॥ १० छोटे घोड़े पर चढ़कर ११ बाग की तरफ शीघ्र चला ॥ ४ ॥ १२ लालसिंह के छोटे भाई ने १३ पहरायतों की नजर बचाकर १४ धोकड़ों के वृक्षों के भीतर रहकर १५ बाण चलाया ॥ ५ ॥

अरिकै भजत लगी सु पिट्ठि पर, रीढक*[1]रपटि धसी तिरछी धर६
परि पुनि उट्ठि [2]त्वराकरि लज्ज्यो, बाट सु [3]ऊरुदघ्न चढि भज्ज्यो ॥
नृप हय [4]खर्ब रुक्यो सु कोट करि, पिट्ठि लग्यो तव कूदि सलपभरि७
सजव गयो अरि दै तरु अंतर, [5]उपवन त्यों सुररयो तव संभर ॥
याको भ्रात लाल [6]अभिधानक, हो मालिक [7]मृगया सब थानक।८।
ताको नृप कोउक [8]हेलन पर, कटवायो अग्गैं दक्खिन कर ॥
तास अनुज यँहँ बैर बिचारिय, तमकि तीर संभर कर मारिय ॥९॥
बिक्रम सक वसुद्दग धृति१८२८हायन, असित माघ बिच छन्नउपायन
सीसोदक गहिलोत गुलावसु, प्रविसि प्रदोसकाल तिंहिं वन पसु१०
[10]बालिसं मारि भूप कर बानहिं, [11]तिमिर सहाय गयो निज थानहिं॥
[12]तदनु झलाय भनाय नगर हुव, २ इह्व नृपति संबंध बिदित हुव११
[13]जनकं पितृव्यक जोध सुता जँहँ, थूहनि रन व्याही [14]कूरम कँहँ ॥
ताकी धाइ [15]पुत्रसुत मति वर, पट्टु सुखराम नाम नय तत्पर ॥१२॥
नृप किय सुकरुय सचिव गुज्जरवह, इम बुंदीस वितावत सुख [16]अह
पुनि लग्गत नव द्दग धृति १८२९ संवत, [17]आरवाँर एकादसि ११
संगत ॥ १३ ॥
[18]राधमास अवदात पक्ख पर, पुर झलाय व्याहन गो संभर ॥
अनुज बहादुर उदयनेर सन, [19]आँसु बुलाय संग लिय अप्पन।१४।
इम दुल्लह सज्जित बरात जुत, पुर झलाय प्रमुदित पहुँच्यो द्रुत ॥
चढि राजाउत सुतन चलाये, उभय २ कोस सम्मुह सब आये१५

*बांसे की हड्डी पर फिसल कर१भूमि में ॥६॥२शीघ्रता करके३जवा पर्यन्त ऊंचे मार्ग पर चढकर४राजा का घोड़ा छोटा था इस कारण ॥७॥ ५ बाग को६लालसिंह नामक ७शिकार के सब स्थानों का ॥८॥ ८ अपराध पर ॥ ९ ॥ ९ सन्ध्या समय ॥ १० ॥ १० मूर्ख ने ११ अंधेरे की सहाय से १२जिस पीछे॥११॥१३पिता (उम्मेदसिंह) के काका जोधसिंह की पुत्री१४राजा जयसिंह को१५उसकी धाय का पुत्र, श्रेष्ठ बुद्धिवाला ॥ १२ ॥ १६ दिन १७ मंगल वार ॥ १३ ॥ १८ वैशाख सुदि १९ शीघ्र बुलाकर ॥ १४ ॥ १५ ॥

कीरतिसिंह झलायनाथ सुत, बखतावर १ अभिधान प्रीति जुत॥
अभयसिंह २ ईसरदा स्वामी, भैरवसिंह ३ सुहाड़प नामी॥ १६ ॥
नृपहिं बधाय लैगये पत्तन, घरघर उच्छव अतुल भये घन ॥
अंध स्वसुर समुख न इम आयो, पुनि दुल्लह तोरन पधरायो ।१७।
नीरांजन आदिक तदनंतर, विधि करि व्याह लई दुलहनि वर ॥
अंध स्वसुर पद्धति बड पावन, करी अरज इलकाब बढावन ।१८।
अग्गैं लिखत राजश्री ठाकुर, धाम नाम पुनि तंदनु काम धुर ॥
तुम जामात अरज चित लावहु, महाराजपद पत्र लिखावहु ॥१९॥
लखि तँहँ नृपहु स्वसुर नंति अति प्रिय, महाराज श्रीठाकुर पद दिय
इम शृंगारकुमरि अभिधान सु, चल्यो व्याहि बुंदिय चहुवान सु२०
स्वसुर पुरोहित कृपाराम कँहँ, बहुधन१ कुंडल २ कर्टक३दये तँहँ॥
पुनि दरकुंच चल्यो छेकत पथ, सरित बनास बनहटा निवंसथा२१।
अर्बुदंजा इम लंघि जुद्ध जय, प्रविस्यो नागरचाल वडे रय॥
सुनि पुर नगर भ्रात संभर पहु, सम्मुह गो नारवें सिरदारहु ।२२।
द्वि २ सिरुपात्र दुव २ हय इक्क १ भूखन, नृपकी नजरि निवद्दि मुदित मन ॥
निस इक१ रक्खि दई महिमानी, उनियारेसैं प्रीति पहिचानी।२३।
पुनि बदि जेठ चउत्थि४ चलायो, अतिजव दुर्ग नयनंपुर आयो ॥

॥ १६ ॥ १ श्वसुर अन्धा था इस कारण ॥ १७॥ २ आरती ३ बड़ी पद्धति पाने के लिये ॥ १८ ॥ ४ जिसपीछे मुख्य काम की वार्ता ५ तुम जमाई हो इस कारण ॥ १९ ॥ ६ नम्रता ॥ २० ॥ ७ कानों में पहनने के मोती ८ कड़े ९ग्राम से॥२१॥ १०(*) बनास नदी ११ नरूका ॥२२॥ १२ उणियारा के पति ने ॥ २३ ॥१३नैणवा.

(*) हम ऊपर लिख आये हैं कि अर्बुद (आबू) पर्वत से निकलनेवाली बनास नदी पश्चिमवाहिनी होकर पश्चिम के समुद्र में अन्य नदियों में होकर मिलती है. और यह बनास नदी कुंभलगढ़ के पास ऊनावड़ ग्राम के पास से निकल कर पूर्ववाहिनी होकर चामल नदी में और फिर जमुना, गंगा में होकर पूर्व समुद्र में मिली है ॥

दुलहनि स्वपुर तहाँसन भेजिय, ब्याहन अप्प भनाय गमन किय।२४।
उदयभान सम्मुह तब आयो, पुनि लहि कोल निलय पधरायो ॥
नव दुव२ धृति १८२९ सक जेठ दसमि १० दिन, असित पक्ख
बुध वार हहु इनं ॥ २५ ॥
भूप दलेल सुता हुलसित हिय, बखतकुमरि अभिधान ब्याहि लिय॥
पुनि पुष्कर आयो संभरपति, महादान किय न्हाय महामति।२६।
करि पुनि कुंच कृष्णगढ आयो, पै निज स्वसुर तत्थ नहिँ पायो॥
बिरदसिंह सालक सम्मुह गय, अति प्रवीन बिद्या गुन आलय।२७।
रहि कछु दिवस भाम पुनि हंकिय, दरकुंचन आयो पुर बुंदिय ॥
पुर बाहिर राजाउति रानी, तबलग रही प्रीति पहिचानी ॥ २८ ॥
अब दुलहनि दुव२ सहित नरेस्वर, किय प्रवेस बुंदियपुर अंदर ॥
याहि बरस१८२९ कोटेस गुमानहु, ब्याहन गो बेघम लै दलबहु।२९।
मेघ तनूज प्रतापकुमारी, कोटा परनि गयो छलकारी ॥
कासी सन श्रीजित इत हंकिय, गयो जाय पितरन सद्गति दिय।३०।
पुनि किय बैजनाथ सिव दरसन, बरदवान पहुँच्यो प्रसन्न मन ॥
ताके नृप मंडी महिमानी, श्रीजित कीरति सबन सुहानी॥ ३१ ॥
पहुँच्यो पुनि बालेसुरबंदर, तँहँ मरहट्ठ भटन मंग्यो कर ॥
बढ्यो कलह तब सस्त्र प्रहारे, सत्रु सिपाह अट्ठन मित मारे ॥३२॥
पुनि द्रुत होय जिहाजपुर चालिय, बलि वेतरनी न्हाँन१ दान२ किय॥
नाभिगया पुनि पितर तृप्त करि, कटक होय गय जगदीस नगरि३३
प्रथम मारकंडेयाश्रम जहँ, इंद्रद्युम्न श्राद्धपुनि किय तँहँ ॥
बहुरि महोदधि न्हाय श्राद्ध करि, पुरुसोत्तम परसे पुनि श्रीहरि ।३४।

१ वहांसे दुलहन को बुन्दी भेजा ॥ २४ ॥ २ समय पाकर घर में पधराया ३ झाडाओं के पति ने ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ साला ॥ २७ ॥ ५ बहिनोई ॥ २८ ॥ ॥२९ ॥ ६ मेघसिंह के पुत्र प्रतापसिंह की कन्या ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ हासिल ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ८ मार्कंडेय के आश्रम ॥ ३४ ॥

दिन दुव२ वेर नयन सुख लिन्नों, पुनि प्रयान कछुदिन रहि किन्नों ॥
न्हाय स्वेतगंगा अघ जालन, अतिजव होय अढारह१८नालन।३५।
आयो तदनु रामगढ पत्तन, मिल्यो भूप ताकोहु मुदित मन ॥
बहुरि होय कासी वेखानस, धुरख्यो विंध्यवासिनी मानस ॥ ३६ ॥
पुष्पदंत जँहँ साप मुक्त हुव, किन्नों तँहँ देवी दरसन ध्रुव ॥
तीरथराज होय पुनि सत्वर, चित्रकूट सेवन करि संभर ॥ ३७ ॥
होय ओंडछा झाँसी आयउ, नरउर बहुरि मिलान लगायउ ॥
रामसिंह कूरम नरउरपति, मिल्यो आय सम्मुह मंजुल मति।३८।
श्रीजित नजरि तुपक इक१किन्नी, महिमानीहु उचित बिधि दिन्नी॥
पुनि केसवपट्टनि मिलान दिय, कथित रीति तँहँ न्हान१दान२किय३९
एकादसि ११ नव दुव धृति १८२९ सक मित, आश्रम निज आयो भद्दव सित ॥
बाहुल गो वेघम पुनि तपबँल, मातामही न्हवाय गंगजल ॥ ४० ॥
बलि पुष्कर हित गमन बिधायउ, अतिजव हंकि कृष्णगढ आयउ॥
महिमानी रट्ठोर भूप दिय, मन्नि ताहि पुष्कर मंजन किय ॥ ४१ ॥
हैं अजमेरु स्वीय आश्रम बलि, अगहनमैं आयो अतिजव चलि ॥
सुत बुंदीपतिकैं तदनंतर, विष्णुसिंह अभिधान भयो वर ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे भ्रातृकरच्छेदवैरोज्जिहीर्षुशीशोदगुलाबसिंहबुन्दीन्द्रबाहुवाणवेधनतदन्धकारसहायपलायनसचिवीकृतगुर्ज्जरसुखरामराव

॥ ३५ ॥ १ जिसपीछे २ वानप्रस्थ (उम्मेदसिंह) ३ मन ॥ ३६ ॥ ४प्रयाग ॥ ३७ ॥ ५ मुकाम ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ कार्तिक मास में ७ तपस्वी ८ नांनी को ॥ ४० ॥ ९ गमन किया १० स्नान किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्रमें, भाई के हाथ कटाने के वैर को लेने की इच्छावाले शीशोदियागुलावसिंह का बुन्दी के पति के भुज को बाण से वेधना और उसका अन्धेरे में भागना १ गूजर सुखराम को सचिव करके रावराजा का भलाय के पति राजाउत

राड्भ्हलायपुरेशराजाउत्तकूर्म्मकीर्त्तिसिंहसुताविवहनवर्द्धितश्वशुरसत्कारस्वीकृतनारवशरदारसिंहस्वागतबुन्दीप्रेषितनवोढपरिणीत — भणायपुरभपरठ्ठोड़दलेलसिंहदुहितृकपुष्करस्नातगृहीतशालविरुदसिंहस्वागतद्वयूढरावराड्बुन्दीप्रविशनकोटेशगुमानसिंहवेघमपुरपतिचुण्डाउत्तशीर्षोद्दसिवाईमेघपौत्रीपरिणायनजगदीशाऽवधिसेवित — प्राचीतीर्थश्रीजित्स्वाऽऽश्रमाऽऽगमनाऽनन्तरगङ्गोदकमातामहीस्नापनकृष्णगढमार्गाऽनुष्ठितपुष्करस्नानपुनराश्रमाऽऽगमनरावराड्राजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनं चतुर्थो ४ मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३४४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नव दुव धृति१८२९पोस बदि, द्वादसि१२ मंगल वार ॥
विष्णुसिंह बुंदीसकै, प्रकट्यो राजकुमार ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

यह दौहित्र उदार, बंसबहालाधीसको ॥
अमरं[1] अंस अवतार, अजितसिंह नृपकै भयो ॥ २ ॥
श्रीजित तदनु[2] सप्रीति, गंगाजल उच्छव कियउ ॥

कछवाहे कीर्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना और श्वशुर का सत्कार बढाकर नरू के सरदारसिंह के स्वागत को स्वीकार करके, दुलहन को बुन्दी भेजकर भणाय के राठोड़ दलेलसिंह की पुत्री को विवाह कर, पुष्कर का स्नान करके साले विरुदसिंहका स्वागत ग्रहण करके दो रानियें व्याहेहुए रावराजा का बुन्दी में आना २ कोटा के पति गुमानसिंह का वेघम के पति चुंडावत सिवाई मेघ सिंह की पोती परनना ३ जगदीश पर्यन्त के पूर्व के तीर्थ करके श्रीजित् का अपने आश्रम में आना, जिसपीछे नांनी को गंगाजल से स्नान कराना और कृष्णगढ के मार्ग से पुष्कर स्नान करके फिर आश्रम पर आना ४ रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह के होने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से तीन सौ चवालीस ३४४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ देव अंश ॥ २ ॥ २ जिस पीछे

निज कुटुंब रचि नीति, कोटादिक एकत्र किय ॥ ३ ॥

दोहा–अस्थिपालको जनन सब, बुंदिय लिन्न बुलाय ॥
पठये करि पहिरावनी, पुनि गंगोदक पाय ॥ ४ ॥
तदनंतर फग्गुन असित, सक नव दुव धृति१८२९ मान ॥
देस सम्हारन काज इत, किय अरिसिंह प्रयान ॥५॥
बुन्दी जनपदके निकट, पुर संकरगढ नाम ॥
आय तत्थ अरिसिंह नृप, किन्नौं कटक मुकाम ॥ ६ ॥
श्रीजितपँहँ पठई अरज, लिखि निजकर नृप रान ॥
तुम अनिच्छहो रैजऋषि, बिहित योग बिज्ञान ॥ ७ ॥
हम सेवक दरसन चहत, अधिक रहत जिय आस ॥
सुनि श्रीजित गो हिय हुलसि, सजव रान नृप पास ॥८॥
आय समुख अरिसिंहहू, लैगो सिविर बधाय ॥
त्यागी नहिँ बैठो तखँत, श्रीजित बिधि समुझाय ॥ ९ ॥
चोकाउप्पर भिन्न रहि, किय संलाप सनेहु ॥
अक्खिय तँहँ अरिसिंह इम, बिल्लहटा तजि देहु ॥ १० ॥
ताहि साटि बुंदीससौं, लेहु इतर तुम ग्राम ॥
अथवा रुप्पय आयमित, श्रीजित कहिय सुधाम॥ ११ ॥
तदनु सिक्ख करि संभरी, अप्पन आश्रम आय ॥
अक्खिय इम बुंदीससौं, मिलहु रानसौं जाय॥ १२ ॥
स्वीय सचिव इत रानहू, अमरचंद अभिधान ॥
बंभन बुंदिय सुक्कल्यो, पधरावन चहुवान ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ १ अस्थिपाल के वंश (सम्पूर्ण हाडाओं) को ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ देश के समीप ॥ ६ ॥ ३ हे राजऋषि तुम इच्छा रहित हो सो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ डेरे में ५ गादी पर नहीं बैठा ॥ ९ ॥ ६ आसन पर जुदा रहकर ७ स्नेह से बात की ॥ १० ॥ ८ बदले में ९ अन्य १० आमदनी के माफिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अग्गैं कुमर प्रताप ढिग, कारामैं[1] जगतेस ॥
सेवन रक्ख्यो बिप्र सो, हंक्यो दक्खत देस ॥१४॥
अमरचंद्र कहि मुक्कलिय, अनय[2] सुरथपुर आय ॥
मेरे सम्मुह दर्प तजि, आवहु संभरराय ॥ १५ ॥
दयो सुनत बारूदमैं, मानहु खदिर[3] दमंग ॥
सजि तनुत्र निर्मोक सम, भो नृप कुपित भुजंग[4] ॥ १६ ॥
हुकम पठायो बिप्रपँहँ, रे कातर बिपरीत ॥
सिंहनकी समता करत, फेरव[5] होत फजीत ॥ १७ ॥
सु सुनि बिप्र खिजि तब कहिय, है दर्पित[6] बुंदीस ॥
पहिलैं पिक्खहिँ जाय तिँहिं, बहुरि दिखावहिँ रीस ॥ १८ ॥
इम बिचारि आयो सु द्विज, व्है सिबिका आरूढ ॥
कोउन सम्मुह मुक्कल्यो, मन्नि भूप तिँहिं मूढ॥ १९ ॥

॥ षट्पदी ॥

संधी[9] भट लिय संग बडे कमनैत बहादुर ॥
तोड़े सिलगत तुपक पकरि प्रबिसे बुंदिय पुर ॥
बंर्म१० टोप२ बाहुलं३न जटित सब अमरचंद जुत ॥
चिंतत रन मन चंड रुके गंजपारि[12] आय द्रुत ॥
संधी तथापि[13] संतपंच५००लै हठ करि द्विज परिखद[14] गयउ ॥
अभिमन्यु तनय[15] जनु कलि कुमति तच्छक पर तंडत भयउ२०

॥ दोहा ॥

अमरचंद्र आसिख दयो, रक्खि बडो मगरूर ॥

१ कैद में ॥ १४ ॥ २ अनीति ॥ १५ ॥ ३ खैर वृक्ष की अग्नि (यह अग्नि तेज बहुत होती है) ४ सर्प की कांचली के समान कवच सज कर वह राजा सर्प के समान कुपित हुआ ॥ १६ ॥ ५ गीदड़ ॥ १७ ॥ ६ घमंडी है ७ जिसको पहिले जाकर देखोगे ॥ १८ ॥ ८ पालखी पर चढकर ॥ १९ ॥ ९ सिंधी यवनों को १०कवच ११ दस्ताना १२ हाथी पोल पर रोके १३ तोभी १४सभा में गया १५ मानों कलियुग की कुमति से परीक्षित ने तक्षक नाग पर गर्जना की ॥२०॥

उद्यो नहिँ भूपति अनखि, सु लखि महाबल सूर ॥ २१ ॥
सचिवन सुभटन निठिकारि[1], बिन्नति सेनति सुनाय ॥
कलह घटावन प्रसभँक्रम[2], दिन्नोँ नृपहिँ उठाय ॥ २२ ॥
तदपि मिसल मरजाद तजि, वैठन लग्गो बिप्र ॥
डोढीरच्छकँ[3] ओर तब, छोहि लख्यो नृप छिप्र ॥ २३ ॥
सैन समुझि बुंदीसकी, तानैं द्विज ढिग आय ॥
दे करँ[4] बगल उठाय द्रुत, दयो मिसल बैठाय ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे रावराड्राजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनश्रीजिद्गङ्गोदकोत्सवकरणराणाऽरिसिंहस्वदेशाऽटनतच्छ्रीजित्सम्मिलनशीर्षोदस्वसचिवामरचन्द्रबुन्दीप्रेषणतदरुंतुदविप्रकटुप्रलपनं पञ्चमो ५ मयूखः॥५॥
आदित॥३४५॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ स्वागता ॥
तत्समीक्ष्य कुपितोऽमरचन्द्रः कोपयन्निव नरेन्द्रमवोचत् ॥
ग्राममर्पयतु बिल्लहटाख्यं सन्धिमेत्य भजतादरिसिंहम् ॥१॥
अन्यथा सपदि सन्ध्युपटङ्कैः शस्त्रसूरियवनैस्तदमीभिः ॥

॥ २१ ॥ १ नम्रता पूर्वक २ हठ के क्रम से ॥२२॥ ३ द्वारपाल की ओर क्रोध करके देखा ॥ २३ ॥ ४ बगल में हाथ देकर ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह का होना और श्रीजित का गंगाजल का उत्सव करना १ राणा अरिसिंह का देशाटन करना और श्रीजितका उनसे मिलना २ शीषोद का अपने सचिव अमरचन्द को बुन्दी भेजना और उस ब्राह्मण का मर्म वेधनेवाले वचनों का कहने का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पैंतालीस ३४५ मयूख हुए ॥

उस बात को देखकर क्रोध में आया हुआ अमरचन्द, राजा को क्रोध करानेवाले वचन बोला कि बिल्लहटा नामक ग्राम देदो और सन्धि (मिलाप) करके अरिसिंह (अड़सी) की सेवा करो ॥ १ ॥ नहीं तो ये सिन्धी पदवीवाले यवन शस्त्रविद्या में पंडित, केश पकड़ कर नीचा मुख करके तुम्हारे राजापन को

न्यङ्नमव्य सकचग्रहमास्यं नीयते तत्र नृपत्त्वमपास्य ॥२॥
एवमादिभिररुन्तुदवाक्यैः क्रुच्छरासनविसृष्टकलम्बैः ॥
बुन्दधीशहृदयं परिभिद्य प्रस्थितस्सहसाऽमरचन्द्रः ॥ ३ ॥
कोपितस्तदनु संभरराजः पन्नगेश्वर इवाङ्घ्र्युपगूढः ॥
विप्रवाक्यकरणो ह्यरिसिंहः कारकं प्रथममेवममंस्त ॥४॥
तत्र शूरसचिवैर्नृपवर्यो बोधितः समयवेल्लनविद्भिः ॥
सन्धनीय उदयादिपुरेशो रावराडनुदिनं भवतेति ॥ ५ ॥
विप्र एव कुटिलो बलशंसी विग्रहं विरचयंस्तदवादीत् ॥
स्वामिशासनमृतेऽनयमूर्त्तिं राज्यभारकलितोद्धतदर्प्पः ॥६॥
गम्यतामवनिराडरिसिंहं सज्जनो ह्यनुचितं स न कर्त्ता ॥
सन्निशम्य सचिवोक्तमवाच्यं तर्ज्जयिष्यति तमेव सरोषम्॥७॥
एवमादिवचनैरवनीशश्चालितः सचिवयोक्तृभिरार्य्यैः ॥
कम्पयन्स दिगिभार्णवभूमिं लुम्पयन्नवटकापथशैलान्॥८॥

दूर कर, शीघ्र लेजावेंगे ॥ २ ॥ इत्यादि क्रोध रूपी धनुष से छोड़े हुए बाणों के समान मर्म वेधन करनेवाले वचनों से, बुन्दीपति के हृदय को घायल करके वह अमरचन्द यकायक (अचानक) उठचला ॥३॥ जिसपीछे जैसे पैर से दबाया हुआ सर्प कुपित होवे तैसे चहुवाण राजा कुपित हुआ और वह अरिसिंह ब्राह्मण (अमरचन्द) का कहा करनेवाला, प्रथम कहनेवाले का करनेवाला अर्थात् जो पहिले कहै उसी को माननेवाला हुआ ॥ ४ ॥ तब समय की उलटा पलटी को जाननेवाले उमराव और कामदारों (अहलकारों) ने श्रेष्ठ राजा को समझाया कि हे रावराजा आपको उदयपुर के स्वामी से सदैव सन्धि (मिलाप) करना उचित है ॥ ५ ॥ राज्य के भार से (सचिव होने से) आया है बड़ा घमण्ड जिसको, अपने पराक्रम को जनानेवाला, अनीति की मूर्ति, ऐसे कुटिल ब्राह्मण ने ही, विना स्वामी की आज्ञा के लड़ाई को रचकर ऐसे वचन कहे हैं ॥ ६ ॥ हे महाराज आप अरिसिंह के समीप चलिये, वह सज्जन है सो अनुचित नहीं करेंगे, किन्तु अमात्य के कहेहुए कुवचनों को सुनकर क्रोध से उस (अमरचन्द) को ही धमकावेंगे ॥७॥ अमात्यों के कहेहुए इत्यादि वचनों से, राजा चलायमान होकर, दिग्गज और समुद्रों के साथ पृथ्वी को कंपाता हुआ, खड्डे, कुमार्ग और पर्वतों का नाश करता हुआ ॥ ८ ॥ ऊपर को बढ़ीहुई

छादयन् रविमुदग्ररजोभिः सादयन्हयखुरैरतलादीन्॥
ल्हादयन्नतुलसैन्धवरागैर्नादयन्निजभटान्हरिगर्जम् ॥९॥
पेषयन्नुपलपादपगुल्मान्प्रेषयन्स्वपृतनां युधि जेतुम् ॥
श्लेषयन्भरमहीन्द्रफणाभिः प्रेषयन्नखिलदिक्ष्वतिभीतिम् १०
स्पन्दयन्नधरकच्छपपृष्ठं स्पन्दयन्गिरिषु खानिजधातून् ॥
नन्दयन्स हितबान्धववर्गान्क्रन्दयन्नहिततस्करदुष्टान्॥११॥
जृम्भयन्धनुरुदारकरेण स्तम्भयन्विशिखविद्धविहङ्गान् ॥
दारयन्नवनिदारकदंष्ट्रां कारयन्पलभुजां मुदमुच्चैः ॥१२॥
घोषयन्समरवादनवर्यान्पोषयन्पथि समागतदीनान् ॥
मोषयन्नसिरुचाऽचिरभाभां शोषयन् गमनधूलिभिरब्धीन्१३
साधयन्स्वजनसङ्गरवृत्तिं बाधयन्परजनाननकान्तिम् ॥
सोऽरिसिंहशिविरं तरसेत्थं रावराडजितसिंह इयाय ॥ १४ ॥

धूलि से सूर्य को ढकता हुआ, घोड़ों के खुरों से अतल आदि लोकों को दुःखी करता हुआ, अत्यन्त सिन्धवी रागों (वड़ेरागों) से हर्ष करताहुआ, सिंहगर्जना से अपने वीरों को नाद कराता हुआ ॥ ९ ॥ पत्थर, वृक्ष और लताओं को पीसता हुआ, युद्ध जीतने के अर्थ अपनी सेना को चलाता हुआ शेषनाग के फणों से भार को मिलाता हुआ, सब दिशाओं में भारको भेजता हुआ ॥ १० ॥ भूमि से कच्छप की पीठ को रगड़ता हुआ, पर्वतों की खानों में उत्पन्न होनेवाली धातुओं को बहाता हुआ, हित के साथ बान्धव वर्ग (सम्बंधियों के समूह) को आनन्द देता हुआ, शत्रु, चोर और दुष्टों को रुलाता हुआ ॥ ११ ॥ दहिने हाथ से धनुष को खैंचता हुआ अथवा वह उदार, हाथ से धनुष को खींचता हुआ, बाणों से छिदे हुए पक्षियों को स्तंभन करता हुआ सूवरों की दाढों को तोड़ता हुआ अथवा वराह की दाढों को तोड़ता हुआ, मांसाहारियों को बड़ा हर्ष कराता हुआ ॥ १२ ॥ युद्ध के श्रेष्ठ बाजों को बजवाता हुआ, मार्ग में आएहुए दीनों का पोषण करता हुआ, तरवार की सुन्दर और चञ्चल कान्ति को छकाताहुआ, चलने की धूलि से समुद्र को सुखाता हुआ ॥ १३ अपने लोगों की युद्धवृत्ति को साधता हुआ, शत्रुओं के मुख की कान्ति को मिटाता हुआ, इसप्रकार वह रावराजा अजितसिंह अरिसिंह के डेरे को चला ॥ १४ ॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

आगच्छन्तं शिविरमधुना बुन्द्यधीशं निशम्य,
द्रागभ्यागात्सभटसचिवः सोऽपि राणोऽरिसिंहः ॥
आनन्दोत्कं सुमिलनमभोभोदूद्वयोर्भूमिभर्त्रो-
र्वीरांश्चान्यानुभयत इतान्मेलयाञ्चक्रतुस्तौ ॥ १५ ॥

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

प्रथममिन्द्रगढाधिपतेः सुतो रणपटुः सनमानसमाह्वयः१॥
तदनु माधववंशमहार्णवोद्भवशशी भगवंत२इति स्फुटः ॥ १६ ॥
अथ च धोवडपत्तनपात्मजः समिति भैरवभैरवभैरवः३ ॥
इतिमुखा अरिसिंहमहीभृताप्यजितसिंहभटा मिलिताः सुखम्॥१७॥

॥ उपजातिः ॥

अथाऽपरे तत्र सलूम्परीशश्चुण्डाउतोभीम१उपेत्य पूर्वम्॥
आमेटनाथश्च ततो द्वितीयो वीरः फतेसिंह२उदारभावः॥१८॥
बिजोल्यिशास्ता परमारजातिर्नीतिप्रपञ्ची शुभकर्णनामा३॥
इत्यादयः सम्भविनः पृथक् तेऽरिसिंहवीरा मिलिता नृपेण॥१९

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

बुन्दी के पति का अपने डेरे आना हुआ सुनकर उमराव और मन्त्रियों सहित वह राणा अरिसिंह भी शीघ्र सन्मुख आया, उन दोनों राजाओं का सुन्दर मिलाप आनन्द को बढानेवाला हुआ और उन दोनों राजाओं ने दोनों ओर के वीरों को परस्पर मिलाये ॥ १५ ॥ प्रथम तो इन्द्रगढ के पति का पुत्र, युद्ध में चतुर सन्मानसिंह, पीछे माधवसिंह के वंश रूपी समुद्र से उत्पन्न हुआ चन्द्रमा के समान भगवन्तसिंह, जिसपीछे धोवड़ा नगर के पति का पुत्र युद्ध में भैरव के समान स्पष्ट भयङ्कर भैरवसिंह ॥ १६ ॥ इत्यादि अजितसिंह के उमराव आनन्द पूर्वक महाराणा अरिसिंह से मिले ॥ १७ ॥ अब दूसरी ओर के, सलूम्बर का स्वामी चुण्डावत भीमसिंह, दूसरा आमेट का पति बड़ा पराक्रमी वीर फतहसिंह ॥ १८ ॥ और तीसरा बींजोल्यां का पति पँवार जातिवाला नीति में चतुर शुभकर्ण, इत्यादि महाराणा अरिसिंह के मिलने योग्य उमराव अजितसिंह से पृथक् पृथक् मिले ॥ १९ ॥ इस प्रकार जीतने में नहीं आवे ऐसा

बुन्दीशोऽजितसिंह१ एवमजितो भूपोऽरिसिंहस्तथा,
राणोट्टङ्कितो मिथोऽमिलदिह श्रीचाहुवाणेश्वरः ॥
स्मृत्वा तत्सचिवोक्तवाक्यकुलिशं नोपायनं चाप्यदा-
न्नाङ्घ्रिस्पर्शमपि व्यधान्नवयमाऽहीन्दु१८२९प्रमाणे शके२०
पञ्चम्या ५ सहितेऽवलक्षशकले श्यामे तपस्याऽऽह्वये,
सम्मिल्येत्थमुभावथो विविशतुः स्वं स्वं निचोलालयम् ॥
मुद्राः कृष्णगढाऽधिपस्य सुतया शीर्षोद्हराड्याऽनुजा-
भर्त्रे बुन्द्यधिपाय पञ्चशतकं ५०० खाद्यैः समं प्रेषिताः।२१।
राणाऽपि द्रविणं खखेन्द्रिय ५०० मिता मुद्रास्तथा प्रेषिताः,
पश्चात्फाल्गुनशुद्धषष्ठ६दिवसे चातुर्भुजो रावराट् ॥
सुत्रामेव बलाऽऽलयं पटगृहं प्राप्तोऽरिसिंहस्य सो-
भ्युत्थानादिविधेयरीतिरचनैः सत्कारितः स्वागतैः ॥ २२ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

पश्चाद्रहोमन्त्रणदूष्यमागाद्राणा१सनाढ्याऽमरचन्द्र१युक्तः ॥
शम्भू३सनाम्ना सनवाडभर्त्रा राणाउतेनाऽपि तथा समेतः ॥२३॥

बुन्दी का पति अजितसिंह और तैसे ही शत्रुओं पर सिंह रूप राणा पदवी को धारण करनेवाला अरिसिंह (अड़सी) दोनों परस्पर मिले, इस मिलाप में चहुवाणों के ईश्वर रावराजा अजितसिंह ने उस अमात्य (अमरचन्द) के वज्र रूपी वचनों को स्मरण करके न तो राणा का नजराना किया और न चरण स्पर्श किया यह मिलाप सम्वत् अठारह सौ उनतीस१८२९फाल्गुन सुदि पञ्चमी को हुआ, इस प्रकार दोनों मिलकर अपने अपने डेरों में गये और कृष्णगढ़ के अधिपति की पुत्री जो सीसोदिया (अरिसिंह) की राणी थी, उसने अपनी छोटी बहिन के पति बुन्दी के पति अजितसिंह के अर्थ मिठाई के साथ पांच सौ रुपये भेजे ॥ २० ॥ २१ ॥ तैसे ही राणा ने भी पांच सौ रुपये भेजे जिसपीछे फाल्गुन सुदि छठ के दिन चहुवाण रावराजा जैसे इन्द्र, बलिराजा के स्थान पर प्राप्त होवै तैसे राणा अरिसिंहके डेरे पर प्राप्त हुआ और ताजीम आदि उचित स्वागत से सत्कार पाया ॥ २२ ॥ तिसपीछे एकान्त में सलाह करने के निमित्त, सनाढ्य जाति के प्रधान अमरचंद, सनवाड़ के पति राणा उत शंभूसिंह के साथ राणा अरिसिंह जुदे डेरे में गये॥ २३॥

बुन्दीपुरीन्द्रो२ भगवंतसिंहं१ माधाणिहड्डं समिदुग्रवीर्यम् ॥
सीलोरसङ्कपतिं सुनीतिं सत्कोकिलग्रामपुरानिवासम् ॥ २४ ॥
वीरं द्वितीयं२ सनमानसिंह२ हड्डेन्द्रसल्लोतपदोपटङ्कयम् ॥
श्रीभक्तरामस्य कुमारवर्यं संयोधिनं चेन्द्रगढाऽधिपस्य ॥ २५ ॥
दाधीचवंशध्वजमार्यवन्द्यं व्यासं तृतीयं३ द्विजमुख्यमन्त्रम् ॥
गोपालरामाभिध३मासताहं सैतत्त्रयं३ मंत्रगृहे निनाय ॥ २६ ॥
तत्र स्थितानां घटिका१ व्यतीता राणाऽरिसिंहेन सुगन्धतैलम् १॥
स्वर्णाभपर्णोत्तमवीटकाश्च स्तम्बेरमः१ स्वोच्छ्रयशङ्कितार्कः॥२७॥
॥ उपजातिः॥
निरस्तमूल्ये परिधानपूर्णे लोके स्फुटे ये सिरुपावर्वाच्ये२॥
तुरङ्गमौ२ द्वौ२ जितवातवेगौ मण्यादिभिः सञ्जटिता च भूषा१।२८।
इत्याद्यथाऽर्हाऽर्हणमुख्यमानैर्निवेदितं भूपतयेऽजिताय ॥
सत्कारितः सोऽजितसिंहवर्म्मा स्थूले स्वकीयं समुपाजगाम ॥ २९ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित—

तहां पर बुन्दीपति अजितसिंह ने युद्ध में उग्र प्रतापी सीलोर नगर के पति को जो पहिले कोकिल (कोइला) ग्राम में रहता था उस माधोसिंहोत हाडे भगवन्तसिंह और ॥ २४ ॥ दूसरे वीर इंद्रगढ के पति श्रीभक्तराम के पुत्र योद्धा इन्द्रमल्लोत्त पदवीवाले सन्मानसिंह को ॥ २५ ॥ और तीसरे प्रामाणिक आर्यों के पूज्य बडी सलाह देनेवाले दाधीचवंश की ध्वजा व्यास गोपालराम इन तीनों को उस सलाह करने के डेरे में लिये ॥ २६ ॥ वहां पर एक घड़ी भर समय व्यतीत हुआ जिसपीछे राणा अरिसिंह ने, इत्र (अंतर) सुवर्ण के वरक लगे पान बीड़े, अपनी ऊंचाई से सूर्य को शङ्कित करनेवाला (इसकी ऊंचाई की आड से अंधेरा नहीं होजावे ऐसी शंका करानेवाला) एक हाथी अमूल्य वस्त्रों से पूरित लोक में सिरुपाव के नाम से प्रसिद्ध दो सिरुपाव, वायुके वेग को जीतनेवाले दो घोड़े, और मणियों का जड़ाहुआ एक भूषण ॥ २७ ॥ २८ ॥ इत्यादि, बडे मान के साथ राजा अजितसिंह के भेट किये इसप्रकार सत्कार पाकर वह अजितसिंह अपने डेरे आया ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में, अजितसिंह के

सिंहचरित्रेऽमरचन्द्रविल्लहटानिमित्तकटुतरभाषणाभविष्यत्सन्धियवनत्रासोद्देशनकोपितरावराट्तत्पत्यागमनसचिवसुभटोक्तबुन्दीन्द्राणासैन्यसाधेयशङ्करगढगमनसम्मुखाऽगताऽरिसिंहसम्मिलनसुभटादिमिथोमेलनचरणाऽपिस्पर्शात्सम्भरोपायनाऽढौकनस्वस्वशिविरविशनसपत्नीकशीर्षोद्दहट्टेशाऽर्थमुद्रापञ्चशती ५०० प्रमुखस्वागतवस्तुप्रेषणारावराड्द्वितीय २ दिनराणापटाऽऽलयगमनसत्रय ३ सद्वय २ भूपद्वय २ मन्त्रणाराणासुगन्ध १ पर्ण २ गज ३ वाजि ४ वस्त्र ५ भूषण ६ हड्डेन्द्रनिवेदनतत्स्वसिविरागमनं षष्ठो ६ मयूखः ॥६॥
आदितः॥३४६॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥इन्द्रवज्रा ॥

राणाऽरिसिंहोऽपि दिने द्वितीये२ बुन्दीन्द्रदौकूलनिवासमागात्॥
सत्कारितोऽनेन च सर्वभावैस्तद्वत्समुत्थानसुभाषणाद्यैः ॥ १ ॥

॥ उपजातिः ॥

चरित्र में, अमरचन्द का बीलहटा ग्राम के कारण अत्यन्त कड़ुए वचन कहना और आगे आनेवाले समय में सिन्धी यवनों का भय देना १ रावराजा को क्रोध करा कर उसका पीछा जाना और बुन्दी के पति का उमरावों और मंत्रियों के कहने से राणा की सेना से घिरेहुए शंकरगढ में जाना२ सन्मुख आये हुए अरिसिंह से मिलना और उमराव आदि को परस्पर मिलाना ३ चहुवाण का राणा के चरणों का स्पर्श नहीं करके नजराना नहीं करना और दोनों का अपने डेरों में जाना ४ स्त्री सहित राणा का हाडाओं के पति के अर्थ पांच सौ रुपये आदि स्वागत(महमानी)के पदार्थों का भेजना५ रावराजा का दूसरे दिन राणा के डेरे जाना और बुन्दी के तीन और उदयपुर के दो जनों सहित दोनों राजाओं का सलाह करना६ राणा का इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण, हड्डेन्द्र को देना और उसके अपने डेरे में आने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ ॥६॥ और आदि से तीन सौ छियालीस ३४६ मयूख हुए ॥

दूसरे दिन राणा अरिसिंह भी बुन्दीपति के डेरे आये और अजितसिंह ने भी उसी रीति से ताजीम, सुन्दर संभाषण आदि से सब प्रकार से सत्कार किया ॥ १ ॥ और प्रीति बढाने के अर्थ बुन्दी के पति अजितसिंह ने एक बात

प्रीत्येधनायाऽकुरुताऽन्यदेकं बुन्दीश्वरो हस्तयुगे२ वसूनाम् ॥
थेलीतिशब्दस्फुटबुद्ध्यमानद्वयं२ गृहीत्वा ह्यरिसिंहदेहात् ॥ २ ॥
उत्तार्य तस्यैव च सेवकेभ्यो ददद्यथेन्द्रः कृतसत्रकार्यः ॥
द्रव्यं सुखं घ्रेय१ मथाऽपि चर्व्यं ताम्बूल२ मिद्धं पुरटप्रकाशम ॥३॥
निवेदयामास गजं१ सुदन्तद्वयं२ वियद्दर्शनघूर्णनेन ॥
संकेतयन्तं समरेऽसुहानेर्भुञ्ध्वन्तु नाकीयसुखं यथेच्छम् ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

मद्दन्तकीलद्वय२सेवनेन तिष्ठन्तु वा क्षेपयितास्मि नाके ॥
सञ्चालयंतं श्रवणौ विशालौ दाचाग्र्यसम्पातिरिवाऽऽत्मपक्षौ ॥५॥

उपजातिः ॥

अश्वौ२तथा क्षिप्रगतौ हि वायोः पृष्ठस्थितत्वादिव निर्बलत्वम् ॥
संसूचयंतौ खरहेषणेन प्रसन्नवस्त्राणि३ तथा नवानि ॥ ६ ॥
हीराद्यमूल्योत्तमरत्नभूषा४ मित्यादि संगृह्य च सम्भरेशात्॥
अथाऽऽज्ञया सैन्ययुतोऽरिसिंहः स्वयं निचोलालयमेप आयात् ॥७॥

यह की कि अपने दोनों हाथों में धन (रुपयों) की थैली जिसका स्पष्ट नाम है लेकर अरिसिंह के शरीर पर ॥ २ ॥ उतार (नोछावर) कर, राणा अरिसिंह के ही सेवकों को, जैसे इन्द्र यज्ञ समाप्त करके देवै तैसे दी, तिस पीछे सुख पूर्वक गन्ध लेने योग्य इत्र, चबाने योग्य सुवर्ण के वरक लगे हुए पान बीड़े ॥ ३ ॥ और श्रेष्ठ दो दांतोंवाला एक हाथी दिया, वह हाथी आकाश की ओर देखकर मस्तक घुमाता था सो मानों यह संकेत [इसारा] करता था कि युद्ध में मरकर स्वर्ग का यथेच्छ सुख भोगो ॥ ४ ॥ मेरे इन दोनों दांतों रूपी कीलों के सेवन से ठहरो तुमको मैं अभी स्वर्ग में फैंक देता हूं और यह संकेत करके अपने दोनों बड़े कानों को गीध पक्षी संपाति की भांति दिखाता था ॥ ५ ॥ तैसे ही वायु के समान शीघ्र चलनेवाले और अपने से पीछे रहजाने के कारण वायु की निर्बलता को अपने तीखे हींसने से सूचना करनेवाले दो घोड़े और सुन्दर नवीन वस्त्र ॥ ६ ॥ हीरा आदि रत्नों से जड़ाहुआ उत्तम मूल्य का भूषण (सिरपेच) इत्यादि चहुवाण (अजितसिंह) से लेकर, सीख लेकर सेना सहित अरिसिंह अपने डेरे गया ॥ ७ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

आगत्य च प्रेषितवान् स्वकीयं दूतं स यत्राऽजितसिंहभूपः ॥
संदेशहारेण तदा यदुक्तं तच्छ्रूयतां रामधराऽधिनाथ ॥ ८ ॥

॥ उपजातिः ॥

चुण्डाउतो बेघमपुर्यधीशः समाख्यया नाम सिवाइमेघः१ ॥
अन्यस्तथा शंकरदुर्गनाथो२ राणाउतः स्वामिविरोधचञ्चुः ॥ ९ ॥
कन्हाउतो रामपुरश्च कोजू३स्तथा तृतीयो३ऽमरदुर्गभर्त्ता ॥
राणाउतश्चापि जलिंघरीशो४द्वेषानुगः साहसिकश्चतुर्थः४ ॥ १० ॥
चत्वार४एते भवदीयपक्षान्निरस्तशङ्का गणयंति नो नो ॥
वशेऽस्मदीये विनियोजनीया धूर्त्ताः खलास्ते भवता नियम्य ॥११॥
श्रुत्वेति दूतोक्तमुदारसत्त्वः श्रीरावराडाविरचीकथत्तम् ॥
चुण्डाउतैर्वेघमपत्तनेशैः कृतोऽस्मदीयो बहुधोपकारः ॥ १२ ॥
विस्मृत्य युष्माभिरतस्तदागः सम्मेलनीयः स सिवाइमेघः ॥
वयं हि मध्यस्थपदं दधानास्तमानयेम प्रसभं पुरस्तात् ॥ १३ ॥
राणाउतः शंकरदुर्गनाथः१ कन्हाउतश्चाऽमरदुर्गदुर्गी२ ॥

डेरे आकर राजा अजितसिंह के पास अपना दूत भेजा, उस दूत ने जो आकर कहा सो हे भूपति रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ वेघम का पति चुण्डाउत सिवाई मेघसिंह, दूसरा शंकरगढ का पति राणावत, स्वामी से विरोध करना ही है धन जिसके "व्याकरण में चञ्चु और चणप् प्रत्यय धन अर्थ में होते हैं" ॥ ९ ॥ तीसरा अमरगढ का पति, राम शब्द से पहिले है कोजू जिसके अर्थात् कोजूराम कान्हावत, चौथा द्वेष के साथ रहनेवाला हठी राणाउत जलिंघरी का पति ॥ १० ॥ ये चारों आपके पक्ष से निडर होकर हमको नहीं मानते हैं इस कारण आप इन दुष्ट धूर्तों को पकड़कर हमारे वश में करो ॥ ११ ॥ दूत के कहे हुए ये वचन सुनकर बडे पराक्रमी श्रीरावराजा ने स्पष्ट कहा कि वेघूं के पति चूंडाउतों ने हमारे पर बहुत उपकार किये हैं ॥ १२ ॥ इस कारण आप भी उसके अपराध को भूलकर सिवाई मेघसिंह के साथ मिलाप कर लो, हम बीच में पड़कर उसको बलात्कार (जबरीसे) आप के सामने ले आवेंगे ॥ १३ ॥ और शंकरगढ के पति राणाउत और अमरगढ के गढवाला [पति] कान्हाउत्त, ये

उभाऽवमू नः शरणागतौ तद्वयं न तद्विप्रियमाचरामः ॥ १४ ॥
अन्हाय यूयं कुरुत प्रकामं तौ जेतुमाजौ प्रततं प्रयत्नम् ॥
जलंधरीशं यमने यदीच्छा चमूं प्रयच्छंतु न मेत्र पक्षः ॥ १५ ॥
मत्कोट्टपालोऽपि गमिष्यतीतः सार्द्धं तया केशवरामनामा ॥
विजित्य तत्रत्यजनान् सलीलं निस्सारयिष्यत्युत नात्र चित्रम् ॥१६॥
श्रुत्वेति राणाः परिपंथिभावं गतोप्यऽमात्यं त्वमरादिचंद्रम् ॥
सम्प्रेषयामास जलिंधरीशं चतुःसहस्रेण४०००बलेन युक्तम् ॥१७॥
सकोट्टपालोऽपि नियोजितः संजगाम वेगादरिसिंहसिद्ध्यै ॥
जलिंधरीदुर्गनिवासिनो नॄन्निस्सारयामास ददौ च दुर्गम् ॥१८॥
राणाउताश्चाऽपि यथाप्रतिष्ठं प्रवेशिता बुन्ध्यवनौ सकांताः ॥
पश्चादपृष्ट्वाऽजितसिंहभूपं राणा गतः शंकरदुर्गभूतः ॥ १९ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

खैरूणसंज्ञं पुरमध्यसंस्थं दग्ध्वाऽगमत्सोऽमरदुर्गभूमिम् ॥
वुध्वेति बुंदीपतिमाप्तकोपं सर्वेऽवदन्यत्रगतस्स राणाः ॥ २० ॥

दोनों हमारे शरण आये हैं इसकारण हम दोनों का बुरा नहीं करेंगे ।१४॥ आप उन दोनों को युद्ध में जीतने का उपाय शीघ्र करो और जलिंधरी को [यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से जलिंधरी के पति का ग्रहण है] कैद करने की इच्छा है तो इसमें मेरा पक्ष नहीं है ॥ १५ ॥ केशवराम नामक मेरा कोतवाल भी उस सेना के साथ जावेगा सो वहां के लोकों को लीला (सहज) से जीत कर निकाल देवेगा इस में कोई आश्चर्य नहीं है॥१६॥ यह सुनकर राणा ने शत्रु भाव को प्राप्त होकर उस प्रधान अमरचन्द को चार हजार सेना के साथ जलिंधरी भेजा ॥ १७ ॥ अरिसिंह की कार्यसिद्धि के अर्थ भेजाहुआ वह कोतवाल भी शीघ्र गया और जलिंधरी के गढ में रहने वाले मनुष्यों को निकाल कर गढ देदिया ॥ १८ ॥ और राणाउतों को प्रतिष्ठा के साथ निकाल कर स्त्रियों सहित बुन्दी के देश में प्रवेश कराया पीछे राजा अजितसिंह से बिना पूछे ही, राणा शंकरगढ की भूमि से गया ॥१९॥ फिर मार्ग में आये हुए खैरूणा नामक ग्राम को जलाकर वह राणा अमरगढ की भूमि में गया, इस बात को जानकर क्रोध में हुए बुन्दीपति को सब (उमराव और सचिवों) ने कहा कि जहां राणा गया है ॥ २० ॥ वहां हम लोगों

॥ उपजातिः ॥

गंतव्यमस्माभिरपीति वाक्यं निराकृतं भूपतिनाऽतु मेति ॥
न स्मः कदैवाऽनुचरास्तदीयाः पृष्टागतं नापि कुतोऽनुसारः ॥२१॥
योग्योस्मदीयो भवतीति वाचं ब्रुवन्नपीयाय भृशोक्त एभिः ॥
यातेन तत्राऽमरदुर्गभूमिं स्थितं समीपेऽमरचंद्रनाम्नः ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे राणाबुन्दीन्द्रशिविरागमनरावराट्तद्देहवसुधानीद्वयो २ त्तारणसुंगध १ ताम्बूल २ गज १ वाजि २ वस्त्र३ भूषा४ऽऽदिनिवेदनप्राप्तस्वपरस्त्यप्रेषितदूतराणाबेघम १ शंकरगढा २ऽमरगढजलिघरीशाऽदिनिग्रहणाऽर्थकथनहड्डेंद्रतदनूरीकरणजालिघरीविध्वंसनाऽबोधितबुंदीशराणाऽमरगढगमनस्वसुभटसचिवनितांतोक्तरावराट्तदनुकरणं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितः ॥३४७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥

को भी चलना चाहिये, इन वचनों का राजा अजितसिंह ने निषेध किया कि हम उनके कभी अनुचर (नौकर) नहीं हैं जो वे तो विना पूछे ही गये और हम उनके साथ लगे रहे ॥ २१ ॥ यह बात हमारे योग्य नहीं है, ऐसे वचन बोलता हुआ उन उमराव और सचिवों के अत्यन्त कहने से तहां अमरगढ की भूमि में अमरचन्द के पास ठहरा ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, राणा का बुंदीपति के डेरे आना और रावराजा का [राणा] के शरीर पर दो धन की थेलियों का नोछावर करना१ इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण आदि नजर करना और राणा का अपने डेरे आकर अपना दूत भेजकर बेघम, शंकरगढ, अमरगढ, जलिघरी के पति आदि को पकड़ने के अर्थ कहलाना और हाडा के पति का उसको अस्वीकार करना २ जलिघरी का नाश करके बुन्दी के पति को विना जताये राणा का अमरगढ जाना३ अपने उमराव और सचिवों के अत्यन्त कहने से उनके सदृश करने[अमरगढजाने]का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥७॥ और आदि से तीनसौ सैंतालीस३४७ मयूख हुए ॥

अत्रापि यातोऽमरचंद्रशर्मा पुरो नृपस्याऽस्य तथाप्यतुष्टः॥
दृष्ट्वैवमाशु प्रजगाद बुंदीपतिर्मया गम्यत अद्य बुंदी ॥ १ ॥
श्रुत्वेतिभूपोऽप्यमरेंदुना द्रागवीवदत्प्रेषित अद्य दूतः ॥
यदुच्यते तेन विधाय कार्यं तद्गम्यतां स्वं नगरं यथेच्छम् ॥२॥
ततो गतौ स्वस्वनिकेतनं तौ संप्रैषयद्दूतमथोऽरिसिंहः ॥
उक्तं च तेन स्फुटमेत्य भूपं निवेद्यतां बिल्लहटाख्य आशु ॥ ३ ॥
ग्रामोऽस्मदीयस्तत एतु बुंदीं निशम्य धीरोऽजितसिंह इत्थम् ॥
अचीलपत्तत्र तु दुर्गमेकं कृतं मया चौरनिरोधनाय ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

तद्वप्रदेशे स्वशयान्मयाऽपि क्षिप्ता शिलाऽयासभृता प्रसह्य ॥
तस्मात्क्षमध्वं बलचौरसंघाद्देशे वयं वोऽवनमाचरामः ॥ ५ ॥
ग्रामोऽपरस्तद्द्विगुणो यथेच्छं संगृह्यतां वा नियमो विधेयः ॥
एतावतो वित्तसमुच्चयस्य प्रत्यब्दमस्ति ग्रहणेन तुष्टिः ॥ ६ ॥

॥ उपजातिः ॥

श्रुत्वेति न स्वीकृत एषु पक्षो राणाऽरिसिंहेन कदाऽपि कोऽपि॥

यहां अमरगढ में भी अमरचन्द शर्मा इस राजा अजितसिंह के सामने गया तोभी इसको देखते ही अप्रसन्न होकर बुन्दी के पति ने कहा कि मैं आज ही बुन्दी जाता हूं ॥ १ ॥ यह सुनकर महाराणा ने भी अमरचन्द द्वारा शीघ्र ही कहलाया कि आज दूत भेजा है सो वह जो कहे उस कार्य को करके पीछे यथेच्छ अपने नगर को जाओ ॥ २ ॥ तिसपीछे दोनों अपने डेरे में गये तब अरिसिंहने दूत भेजा उसने राजा ने स्पष्ट कहा कि हमारे बीलहटा नामक ग्राम शीघ्र नजर करो तब बुन्दी जाओ, यह सुनकर धीर अजितसिंह ने कहा कि वहां पर तो मैंने चोरों को रोकने के अर्थ किला बनवाया है ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इस देश में दुष्ट चोरों का समूह होने के कारण मैंने इसके कोट की नीम में बडे परिश्रम और हठ के साथ अपने हाथ से पत्थर डाले हैं इस कारण से क्षमा करो हम आपकी प्रीति चाहनेवाले हैं ॥ ५ ॥ इस से द्विगुण[दुगना] दूसरा ग्राम आपकी इच्छा होवे सो लेवें वा कोई ऐसा नियम कर लेवें कि प्रतिवर्ष इतने रुपये लेने से आप प्रसन्न होवेंगे ॥ ६ ॥ यह सुनकर राणा अरि

उक्तं च नास्मत्कथनेन यर्हि प्रदीयते सन्धिभिरात्तशस्त्रैः ॥ ७ ॥
निवेद्यतां संवसथः स एवेत्येवं वचो जातविवृद्धमन्युः ॥
श्रीरावराजाऽजितसिंहवर्मा तदा बभूव प्रलयाऽर्कचण्डः ॥ ८ ॥
ततश्च तद्वत्सर १८२९ एव चैत्राऽसिते दले पूर्व१दिनेऽवशिष्टे ॥
घटीत्रये३ घोटसुखाऽनुभूत्यै बहिर्जगामोद्धतदर्पराणाः ॥ ९ ॥
अर्वाधिरूढश्चहुवाणभूपोऽप्यगाच्च तत्रैव महेन्द्रकल्पः ॥
हत्वा शशौ द्वौ२ स्वबलेन युक्तौ तारागणैश्चन्द्रमसाविवान्यौ॥१०॥
सुरैः सुरेशाविव शुद्धसत्वौ समुद्यता आगमनाय सद्म ॥
तथाऽऽहवेच्छू अमलायताक्षौ यथाऽऽगतौ दिग्विजयाय सज्जौ ॥

॥ मालिनी ॥

हतदिनपतिकान्त्योः सङ्गमोऽसम्भविष्णु
स्तरणिज इव लोकेऽपूर्वजन्येकहेतुः ॥
अपिच पदकृतोऽपि भ्रान्तिकृत्पण्डितानां

सिंह ने इनमें से एक भी बात को स्वीकार नहीं की और कहा कि यदि हमारे कहने से नहीं देते हो तो उस गाम को शस्त्रधारी सिन्धियों से देना, इन वचनों से बड़े क्रोध में आया हुआ रावराजा अजितसिंह प्रलय के प्रचण्ड सूर्य के समान हुआ ॥ ७ ॥ ८ ॥ जिस पीछे उसी सम्वत् १८२९ में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन दो पहर में (मध्यान्ह में) तीन घड़ी दिन बाकी रहे घमंड के साथ राणा घुड़दौड़ करने को बाहर गये ॥ ९ ॥ घोड़े पर चढकर इन्द्र के समान रावराजा भी वहीं गया वहां दो खरगोशों को मारकर अपनी अपनी सेना के साथ जैसे तारागण के साथ चन्द्रमा होवे तैसे ॥ १० ॥ जैसे देवताओं के साथ इन्द्र होवे तैसे, निर्मल बड़े नेत्रोंवाले, दिग्विजय के अर्थ तैयार होवे तैसे युद्ध की इच्छावाले दोनों राजा डेरे आने को तैयार थे ॥ ११ ॥ हत की है सूर्य की कान्ति जिन्होंने उन दोनों का संगम असंभव वाला है, यमराज की भांति लोकों में अपूर्वता का एक कारण है, देखो पदों में संगम किया है सो भी पण्डितों को भ्रांति करनेवाला है, क्योंकि भू धातु से इष्णुच् प्रत्यय वेद में होता है सो यहां लोक में किया है यही भ्रांति करनेवाला है "कौमुदी कर्ता भी इसके समाधान में 'निरंकुशाः कवयः' यही लिखते हैं" निश्चय

मृगपतिरपि सङ्गादत्र यातो मुधैकः ॥ १२ ॥
भवति विपुलताऽतो ह्यर्थसङ्कल्पनातो
विविधबुधमनस्सु प्रत्ययानां तथाहि ॥
तदुभय २ नृपतिभ्यां क्षिप्रदेशान्तरित्वे
व्यवहृत इह बोध्ये द्वन्द्वलाभः प्रतिष्ठाम् ॥ १३ ॥
इतिमतिशतकारी तत्त्वबोधैकहारी
सुरपुरपटुनारीकामनासम्प्रचारी ॥
सकलसकलधारी स्वर्विहारोपकारी
समजनि जनिताऽरिव्रातनिःशेषकारी ॥ १४ ॥
अवददमलबुद्धिर्बुन्द्यधीशो महात्मा
भवितरि दिन एता वांभविष्याहं तु ॥
गमनमिह विधेयं तथ्यमाज्ञाप्य राज
न्निति विविधवचांसि प्रश्रुतान्यश्रुतानि ॥ १५ ॥
नरपतिररिसिंहः कारयामास नैवं

अजितसिंह रूप सिंह के साथ से अरिसिंह अकेला वृथा आया ॥१२॥ जैसे पण्डितों के मन में विविध अर्थ की कल्पना से प्रत्ययों की विपुलता होती है, तैसे ही इसके अर्थ की कल्पना से विपुलता होती है. बोध्य (जनाने योग्य)को व्यवहार में लाने से दोनों का लाभ और प्रतिष्ठा होती है, जिसको दोनों राजाओं ने दूसरे देश में फेंक दिया है॥ १३ ॥ इसप्रकार सैकड़ों मति (बुद्धि) करनेवाला, तत्त्वबोध (ज्ञान) का हरण करनेवाला, स्वर्ग की चतुर स्त्रियों की कामना का प्रचार करनेवाला, सम्पूर्ण रीति से, सगुण शिव को धारण करनेवाला, तथा सब कलाओं से युक्त सबको धारण करनेवाला, जो जन्म से ही शत्रु हैं उनके समूह को निश्शेष (नाश) करनेवाला ॥ १४ ॥ निर्मल बुद्धिवाला महात्मा बुन्दी का पति बोला कि मैं तो आगामि दिन[कल] को जानेवाला हूं सो हे महाराज यहां पर ठीक आज्ञा देकर जाओ इत्यादि अनेक वचनों को सुने अनसुने किये और न दोनों नेत्रों से राजा अजितसिंह को देखा. तिस पीछे राणा के किसी सेवक चत्री ने कठोर वचन कहा कि आगामि दिनमें तुम्हारा जाना कैसे होवेगा ॥ १५ ॥

न च नयनयुगेनाऽदर्शि भूपोऽपि तेन ॥
तदनु परुषवाचं क्षत्रियः कश्चिदूचे,
कथमुत गमनं स्यादागतोऽस्ति त्वदीयम् ॥ १६ ॥
उदयपुरनरेशो निर्बलो बुध्यते किं
तदनु च रणशीलाः सिन्धिनः किं न दृष्टाः ॥
नयनपथमुपेतैर्दुस्सहं भीरुहड्ड
त्वयि सति यवनैस्तैरावृतेऽधोदुकूले ॥ १७ ॥
समलशमलमुक्ति चक्रिष्यस्यपि द्रा-
गिति कटुतरवाग्भिस्तर्जयन्तं स्वकीयम् ॥
नहि नहि वचनानां पात्रमेषां धरारा-
डिति किमपि स नोचेऽक्षाऽरिसिंहश्च शृण्वन् ॥ १८ ॥
निजनिलयमुपेतं मुक्तपन्थानमारा-
दुदयपुरनरेशं प्राऽवदद्बुन्दधीशः ॥
भवति जिगमिषाऽतः श्रीमता मुक्तिमिच्छं-
स्थित इह पुर एवाऽस्मीति चाऽन्यच्चकार ॥ १९ ॥
यवननयप्रवृत्तो यः शिरःस्पर्शरूपो-
मुजरविति करेणा क्रीयतेऽकारि सोऽपि ॥

॥ १६ ॥ क्या उदयपुर के राजा को तुम निर्बल जानते हो, क्या इन के स्वामिधर्मी सेवक सिन्धियों को नहीं देखे हैं, जिनको देखने से ही भय लगै ऐसे उन यवनों से जब घिराजावेगा तब हे कायर हाडा तू शीघ्र धोवती में सूत्र सहित विष्टा कर देवेगा, इत्यादि बहुत ही कटु वचनों से डरानेवाले अपने मनुष्य को, उस अरिसिंह ने साक्षात् सुन कर भी यह नहीं कहा कि यह राजा ऐसे वचनों का पात्र नहीं है ॥ १७ ॥ १८ ॥ अपने डेरे जाने के अर्थ मार्ग को छोडनेवाले उदयपुर के राणा से बुन्दी के पति ने समीप होकर कहा कि मेरी जाने की इच्छा है इसी कारण श्रीमानों की आज्ञा चाहनेवाला मैं आगे को खड़ा हूं, यह कह कर दूसरा काम यह किया ॥ १९ ॥ जो यवनों की नीति से प्रवृत्त हुआ है और मस्तक के हाथ लगा कर किया जाता है जिसको मुजरा

तदुपरि नहि दृष्ट्याऽदर्शि पृष्ठि विधाय
प्रचलितमतिवेगेनाऽरिसिंहेन मत्तम् ॥ २० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे राणाप्रासभपविल्लहटामार्गणरावराट्तद्विडवीतरदेयीकरणभूपद्वय २ विरोधीभावभजनबहिर्वाजिविनोदनसम्भरेशस्वप्रस्थाननिमित्तशिष्टाचारश्रावणराणास्वदृष्टिपरिवर्त्तनतदेकतमारुन्तुदाऽऽयुधिकभृत्यविप्रलपनश्रुततद्रावराट्क्रुद्धीभवनसप्तमो ८ मयूखः ॥८॥
आदितः॥३४८॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

ततः क्रोधसंज्वालिताक्षो महात्मा बभूवाऽजितो भूपतिर्भूतकम्पः ॥
यथा भीमसेनोऽभवद्धार्त्तराष्ट्रेत्वृत्रवेन्द्रः प्रभुर्वृत्रदैतेय आदौ ॥ १ ॥
यथा यज्ञपत्ने ध्रुवः पर्शुरामो यथा हैहयेन्द्रे लसद्दोस्सहस्रे ॥
यथा वासुदेवो हरिर्दामघोषौ यथा चण्डिका दैत्यसम्राजि शुम्भे॥२॥

कहते हैं, वह मुजरा भी किया जिस पर भी दृष्टि नहीं दी और वह अरिसिंह रावराजा को पीठ देकर मत्त के समान चला ॥ २० ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, अजितसिंहके चरित्र में, राणा का हठ पूर्वक बीलहटा नामक ग्राम मांगना और रावराजा का उस के सदृश (बराबरी) दूसरा ग्राम देना स्वीकार करना १ दोनों राजाओं का विरोध भावको प्राप्त होना और बाहर घोड़ों की क्रीड़ा करना २ रावराजा का अपने घर (बुन्दी) जाने के निमित्त शिष्टाचार सुनाना और राजा का अपनी दृष्टि को फेरना ३ एक शस्त्रधारी नौकर का मर्म वेधन करनेवाले विरोध के वचन बोलना, और उनके सुनने से रावराजा के क्रोधित होने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥८॥ और आदि से तीन सौ अड़तालीस ३४८ मयूख हुए ॥

तब तो क्रोध से प्रज्वलित नेत्रोंवाला महात्मा राजा अजितसिंह जीवों को कंपानेवाला हुआ, जैसे दुर्योधन पर भीमसेन, आदिदैत्य वृत्रासुर पर इन्द्र, सहस्रबाहु पर परशुराम, दमघोष के पुत्र (शिशुपाल) पर वसुदेव के पुत्र

तथाशक्तिहेतिः पुरोऽश्वं प्रसार्याऽरिसिंहाऽभिवक्त्रं चचालाथ वीरः ॥
स्वयं शक्तिघातेन युद्धप्रगल्भो भुवौ पातयामास निष्प्राणराणाम् ३
नराकारमेघाद्दिवोद्दीप्रशम्पा ततश्चैव वा चण्डधाम्नो मरीचिः ॥
यथा वन्हिकुण्डाच्च काली कराला तथा निःसृता शक्तिरुद्भिद्य राणां ४
ततः खड्गमाकृष्य बुन्दीनरेन्द्रे जिहिर्षौ शिरोऽरिप्रतीहार एकः ॥
भुजे साङ्गदे प्राऽहरत्स्वर्णयष्ट्या कराभ्यां बलात्कारतो रावराजः ॥
तदाघातभङ्गस्य दोऽसिस्तदीयश्च्युताऽध्वाछिनन्नाऽरिसिंहोत्तमाङ्गम् ५
तथा वीक्ष्य तद्भक्तरामिः कुमारोऽहिनत्पात्यमानं कृपाणेन राणाम्

॥ आर्या ॥

एवं जाते राणाजयसिंहसुतप्रतापसिंहस्य ॥
पौत्रो दौलतसिंह१पुत्रो यः श्यामसिंहस्य ॥ ७ ॥

॥ गीतिः ॥

(श्रीकृष्ण) और दैत्यराज शुंभ पर चण्डिका ॥२॥ तैसे शक्ति (बरछी) शस्त्रवाला प्रबल वीर युद्ध में निपुण राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह के मुख के आगे घोड़े को बढ़ा कर अरिसिंह के सामने चला और बरछी की घात से प्राण रहित राणा को भूमि पर पटका ॥ ३ ॥ वह शक्ति (बरछी) जैसे मनुष्य के शरीर रूपी मेघ से विजुली, प्रचंड सूर्य से किरण और अग्निकुण्ड से कराल ज्वाला निकलै तैसे राणा को छेद कर निकली ॥ ४ ॥ फिर खड्ग निकाल कर बुन्दी का राजा, राणा का मस्तक काटना चाहता था, इतने में राणा के एक द्वारपाल छड़ीदार ने दोनों हाथों से बल पूर्वक सोने की[सुवर्ण की] छड़ी रावराजा के भुजबन्ध सहित हाथ (*) पर मारी ॥ ५ ॥ उस छड़ी की चोट से तरवार हाथ से छूट गई और राणा का मस्तक नहीं कटा, यह देखकर भक्तिराम के कुमर सन्मानसिंह ने पड़े हुए राणा पर तरवार मारी ॥ ६ ॥ ऐसा होने पर राणा जयसिंह के पुत्र प्रतापसिंह का पोता और श्यामसिंह का पुत्र महाराज पदवी

(*) मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि राणा अरिसिंह के बरछी मारकर रावराजा अजितसिंह पीछा फिरा उस समय महाराणा के छड़ीदार ने सोने की छड़ी रावराजा के ललाट पर मारी जिससे रावराजा अचेत होगया और घोड़े के हाने पर मस्तक लगगया इस मूर्छित दशा में रावराजा को घोड़ा ले भगा और इसी चोट के कारण थोड़े ही समय पीछे रावराजा का देहांत होगया.

स महाराजोट्टङ्की तुमुलं युध्वाऽसिभिर्व्यभूत्तिलशः ॥
शम्भूसिंह२श्च तथा सनवाडेशोऽत्र भारताऽवरजः ॥८॥
एतौ२ नाकिनिकेतं प्राप्तौ राणाउतौ समं भर्त्रा ॥
वैश्यश्छोगालालो३ऽनुजजः सचिवस्य कृष्णगढ़भर्त्तुः ॥९॥
एतेषु हतेषु त्रिषु राणां त्यक्त्वा प्रदुद्रुवुश्चाऽन्ये ॥
राणप्राणाऽपहर्नीं शक्तिं१ स्वामुज्जहार बुन्दीशः ॥ १०
अर्व्वंतं२ च तदीयं नीत्वाऽगच्छत्स्वकीयशिविरभुवम् ॥
श्रुत्वैतदमरचन्द्रो नेतुं कुणपानियाय सैन्ययुतः ॥११॥
बुन्दीप्रज्जम्बूरैर्न्यवर्त्ततसप्टत्सनाढ्यविप्रं तम् ॥
तन्मारणकृतबुद्धिः पुनर्जगामाऽजितोभिमुखमेषाम् ॥१२॥
द्वाभ्यां२ प्रसह्य रुद्धो दत्वा नृपभावसिंहशपथाऽऽदि ॥
सीलोर१धोवडेड्भ्यां२ भगवन्त१भवानिसिंह२ नामभ्याम्१३
प्रस्थापितश्च बुन्दीमेताभ्यां प्रसभमजितसिंहनृपः ॥
सम्प्राप्तः स निशीथे स्वपुरि ससैन्योऽरिसिंहमाहत्य॥ १४ ॥

को धारण करनेवाला दौलतसिंह खड्ग से घोर युद्ध करके तिल तिल प्रमाण कटा, तैसे ही भारतसिंह का छोटा भाई सनवाड़ का पति शंभूसिंह भी कटा ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ये दोनों राणावत अपने स्वामी के साथ स्वर्ग स्थान को पहुँचे और कृष्णगढ के मन्त्रि के छोटे भाई का पुत्र वैश्य छोगालाल भी मारागया ॥ ९ ॥ इन तीनों के मारेजाने पर और सब राणा को छोड़कर भागगये, तब बुन्दी के पति ने राणा के प्राण लेनेवाली अपनी बरछी को निकाली ॥ १० ॥ और राणा के घोड़े को लेकर अपने डेरों की भूमि में गया, यह सुनकर अमरचन्द सेना सहित उन मृतक शरीरों को लेने को आया ॥ ११ ॥ तब बुन्दी की सेना के जम्बूरों से सेना सहित उस सनाढ्य ब्राह्मण को रोका और उसको मारने की बुद्धि करके अजितसिंह फिर सामने गया ॥ १२ ॥ जिसको सीलोर के पति भगवन्तसिंह और धोवड़ा के पति भवानीसिंह, इन दोनों ने राजा भावसिंह के सौगन आदि देकर हठ से रोका और इन्हीं दोनों ने बलात्कार पूर्वक उसे बुन्दी पहुँचाया, इसप्रकार वह राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह को मारकर सेना सहित आधी रात्रि के समय बुन्दी प्राप्त हुआ कं५।

तौ२ बुन्दीश्वरसुभटौ स्थित्वा तत्रैव वैभवं स्वीयम् ॥
नेयं नेयं नेयं यातौ त्यक्त्वा पटालयाऽद्यन्यत् ॥१५॥
ते सन्धिनस्तु यवना गताः क्वचित्तद्दिने समाजोत्काः ॥
सुभटाश्च पूर्वमेव च्छलवालकपक्षपातिनो भिन्नाः ॥ १६ ॥
अतएवाऽमरचन्द्रो बुन्दीसैन्ये गते ससेरय निशि ॥
अरिसिंहवपुरधिष्ठाप्यनूयानं स्वं रुदन् ययौ शिविरम् ॥१७॥
हड्डेश्वरशिविराद्धं विलुण्ठ्य दूष्याऽऽदिकां तदवशिष्टाम् ॥
अरिसिंहतनुं तत्पटसदने संस्थाप्य शोकमारेभे ॥ १८ ॥
राज्ञ्याः सप्त७भुजिष्याः सत्यो मनभावनाऽदयस्तत्र ॥
तौर्यविनोदनवत्योऽतिष्ठन् रात्रौ सजीवमिव परितः ॥१९॥
प्रातश्चित्यारोहे कुणपं मनभावनेदमुक्तवती ॥
यदि निजकृतफलमेतत्तदस्तु यदि चान्यथा प्रभो तर्हि ॥२०॥
त्वां वयमिव विलपन्त्यो भस्मीभूता भवन्तु तन्नार्यः ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ वे दोनों बुन्दीपति के उमराव वहीं ठहर कर, लेने योग्य अपना वैभव लेकर, डेरे आदि अन्य वस्तुओं को छोड़कर आये ॥ १५ ॥ वे सिन्धी यवन तो उस दिन सभा से इष्टलाभ के लिये कालक्षेप करने को(नमाज़ पढ़ने को) कहीं चले गये थे, और छलबाल (रत्नसिंह) के पक्ष के उमराव पहिले से ही जुदे थे ॥१६॥ इस कारण बुन्दी की सेना के चले जाने पर अमरचन्द रात्रि में वहां जाकर अरिसिंह के शरीर को पालकी में रखकर स्वयं रोता हुआ डेरे में गया ॥ १७ ॥ और रावराजा की डेरे आदि समृद्धि को लूटकर अरिसिंह के शरीर को उस डेरे में रखकर शोक करने लगा ॥१८॥ वहां पर मनभावन को आदि लेकर राणा की सात पतिव्रता पासवान स्त्रियां, नाच गान कराती हुईं जैसे राणा जीता होवे तैसे रात्रि में उस राणा को चारों ओर से घेरकर बैठी रहीं ॥ १९ ॥ प्रातःकाल में राणा के शरीर को चिता पर रखते समय मनभावन ने कहा कि, हे स्वामी यदि अपनी ही करनी का यह फल है तब तो ठीक ही है, नहीं तो जैसे हम आप को रोती हैं तैसे ही हे प्राणनाथ! जिसने बिना अपराध आप की यह दशा की है उसकी स्त्रियां भी ऐसे ही

येनैवेदृगवस्था प्राणेश्वर ते ह्यनागसो विहिता ॥ २१ ॥
मनभावनेत्थमुक्त्वाऽऽरुरोह चितिकां षडा६ऽऽलिजनसहिता॥
सह जग्मुरनुप्रेष्ठं साध्व्यः साल्हादमुच्चगायन्त्यः ॥२२॥
नवनेत्रेभकु१८२९सङ्ख्ये शकवर्षे विक्रमाद्धराभर्त्तुः ॥
प्रतिपदि१ माधवशुक्ले मुहूर्त१शेषेऽन्हि हड्डपतिरेवम् ॥२३॥
शक्त्या हतोऽरिसिंहस्तदश्वमारुह्य बुन्दिकाऽगामि ॥
वैखानसेन पित्रा स भर्त्सितो नयविदाऽनुनीतश्च ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे रावराड्राणाऽरिसिंहनिपातनतद्द्वास्थस्ववाहुयष्टिप्रहरणाभाक्करामिखड्गराणाभेदनवैश्यदोलतसिंह१ शम्भूसिंह२ मरणभृशभटोक्तसमात्तराणाहयधृतस्वशक्तिसम्भेरशबुन्द्यागमनभगवन्तसिंह१ भवानीसिंह २ नेयवैभवानयनभीर्वमरचन्द्रकुणपस्वशिविरप्रापणभुजिष्यासप्तक ७ राणासहगमनं नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

विलाप करती हुई भस्म होओ ॥२०॥२१॥ मनभावन इसप्रकार कहकर छहों सखियों के साथ चिता पर चढ़ी. और वे सातों ही पतिव्रताएं हर्ष के साथ उच्च स्वर से गाती हुई अपनेपति के साथ गईं ॥ २२ ॥ इस प्रकार विक्रम राजा के सम्वत् अठारह सौ उनतीस १८२९ के चैत्र कृष्ण एकम के दिन दो घड़ी दिन बाकी रहे, इस प्रकार राणा को बरछी से मारकर, राणा के घोड़े पर चढ़कर हाड़ों का पति बुन्दी आया और उस रावराजा को नीति के जानने वाले वानप्रस्थ पिता(उम्मेदसिंह)ने धमकाया और नीचा दिखाया ॥२३।२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें अजितसिंहके चरित्र में, रावराजा का राणा अरिसिंह को मारना और उनके द्वारपाल का अपने हाथ पर छड़ी की मारना १ भक्कराम के पुत्र का खड्ग से राणा को भेदन करना और एक वैश्य और दोलतसिंह व शंभूसिंह को मारना २ उमरावों के बहुत कहने से राणा के घोड़े को लेकर, अपनी बरछीको निकालकर चहुवाणों के पति का बुन्दी आना २ भगवन्तसिंह और भवानीसिंह का लाने योग्य वैभव को लाना ३ कायर अमरचन्द का मृतक शरीर को अपने डेरे में लाना और सात पासवानों का राणा के साथ सती होने का नवमां ९मयूख समाप्त

आदितः॥३४९॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

सैन्ययुतोऽमरचन्द्रस्तार्तीयं३ कर्म भूपतेः कृत्वा ॥
गत्वोदयपुरमनुचितमेतादिति श्रावयांबभूवाऽसौ ॥१॥
काष्र्णगढी तद्राज्ञ्यासन्नप्रसवा तु मण्डिले दुर्गे ॥
गत्वा सुतं प्रसुषुवे मासद्वय२जीवितो मृतः सोपि ॥२॥
जननी तदाऽतिदुःखात्कृष्णगढं गतवती जनकवसतिम् ॥
द्वेराज्ञ्या२वेकादश११सह जग्मुरुदयपुरेऽपि च भुजिष्याः॥३॥
अन्या चैका१ महिषी पितृभवने श्रूयतां कथा तस्याः ॥
राजसमुद्रसमीपं मोह्याख्ये भट्टियादवग्रामे ॥ ४ ॥
आऽमरसिंहाद्राणाः परिणीताः सर्व एव भट्ट्याणीः ॥
ताः सर्वाः सह जग्मुर्निजपतिमङ्के निवेश्य पाविज्य ॥ ५ ॥
तत्रत्यभट्टितनयामत एव विवाह्य सोऽरिसिंहोऽपि ॥
न्यस्याऽत्रैव नवोढामित आयातो हतोऽजितेनैवम् ॥ ६ ॥

हुआ ॥ ६ और आदि से तीन सौ उनचास ३४९ मयूख हुए ॥

अमरचन्द, राणा के तीसरे दिन का कृत्य करके सेना सहित उदयपुर गया और उसने यह अनुचित सुनाया ॥१॥ उस राणा अरिसिंह की कृष्णगढवाली राणी समीप ही बालक जननेवाली (पूर्णगर्भा)थी जिसने मांडलगढ में जाकर पुत्र जना सो दो मास का होकर मरगया ॥ २ ॥ तब अत्यन्त दुःख से उस बालक की माता अपने पिता के घर कृष्णगढ गई, और उदयपुर में भी दो राणियां और ग्यारह पासवान स्त्रियें सती हुईं ॥ ३ ॥ एक राणी पिता के घर में सती हुई जिसकी कथा सुनो कि राजसमुद्र के समीप मोही नामक ग्राम भाटी शाखा के यादव क्षत्रियों का है ॥ ४ ॥ वहां राणा अमरसिंह से लेकर सभी राणा वहांके भाटियों की पुत्रियें व्याहे थे सो सभी अपने अपने पतियों के साथ सतियां हुईं ॥ ५ ॥ इसीकारण से उस गामवाले भाटी की पुत्री के साथ वह राणा अरिसिंह भी विवाहा था सो विवाह करके उस नई दुलहन को वहीं छोडकर आया था और इसप्रकार अजितसिंह से मारागया

सा सहं जगाम मोहयामवगतपतिमृत्युर्यादवी साध्वी ॥
निजकुलपरम्पराया न निरस्ता सा तया कुरङ्गदृशा ॥ ७ ॥

॥ मत्तमयूरम् ॥

आगत्येत्थं सम्भरराजः स्वनिकेतं यद्यन्नीतं येन जनेनाऽरिहरिस्वम्
चेतोवेगं तस्य विना पट्टतुरंगं तस्मै तस्मै तत्तददादुद्यदुदारः ॥ ८ ॥
भेदोपायैर्दानविमिश्रैरथ कोटाद्वाराऽध्यचान्क्ष्माऽमितलोभी परिभिद्य
युद्धप्राक्तद्देशजिगीषोः पुनरासीद्बुंदीभर्त्तू रोगविशेषो विस्फोटः ॥९॥
शान्तेऽप्यस्मिन्दैववशादायुरणिम्ना भागेऽतीते पञ्च५मुहूर्त्ते दिवसस्य
पूर्णा१५ऽऽरुपायां काव्यद्धतिथौ माधवमासि त्यक्त्वा देहं स्वर्गामि॥
यायाऽजितसिंहः ॥ १० ॥
श्रुत्वा राज्ञी तत्त्वथ शृङ्गारकुमारी१ शृंगाराख्या द्रंगझलायाऽधिपपुत्री
दौहित्री चोम्मेदहरेः साहिपुरेशस्याऽन्यातन्वीभूपभुजिष्याशशिशोभा

या ॥ ६ ॥ वह पतिव्रता यादवी अपने पति की मृत्यु सुनकर मोही नामक ग्राम में सती हुई ऐसे उस मृगनयनी ने अपने कुल की परम्परा को नहीं छोडी ॥ ७ ॥ इसप्रकार रावराजा ने अपने स्थान पर आकर, जिस जिस मनुष्य ने अरिसिंह का जो जो धन लिया था, उस उस मनुष्य को, मन के वेगवाले एक खासा घोड़े के सिवाय, वह वह द्रव्य उस उदार ने दे दिया॥ ८ ॥ तिस पीछे पृथ्वी लेने का बडा भारी लोभी, अजितसिंह दान और भेद दोनों मिले हुए उपायों से कोटा के द्वारपालों को अपने में मिलाकर उस देश को जीतना चाहता था कि युद्ध से पहिले बुन्दी के पति अजितसिंह को शीतला (चेचक) का रोग हुआ ॥ ६ ॥ वह रोग भी शान्त होगया था परन्तु प्रारब्ध वश छोटी अवस्था में ही वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शुक्र वार के दिन दस घड़ी दिन चढे अजितसिंह शरीर को छोडकर (‡)स्वर्ग गया ॥ १० ॥ तिसको सुनकर झलाय के पति की पुत्री और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह की दोहिती शृंगार

(‡)इसवंशभास्कर में रावराजा की मृत्यु चेचक (शीतला) के रोग से होना लिखा है.इसमें हम नहीं कह सकते कि किसका लिखना सत्य है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और वंशभास्कर के कर्त्ता सूर्यमल्ल दोनों ही पूर्णसत्यवक्ता थे जिनमें मिथ्यात्व का दोष किसी पर नहीं लगा सकते परन्तु निश्चय नहीं कि इस बात का सत्य इतिहास किसको मिला है ॥

व्योमाऽग्नेभेन्दु१८३० प्रमिते विक्रमशाके पूर्णा१५शौक्रे६ऽह्न्यव
शिष्टेऽन्तिमयामे ॥
चित्याऊढे कीलकराले हविराशे हुत्वा देहं द्वे हि सहायान्निजभर्ता
अनुष्टुप्युग्मविपुला ॥

पद्भ्यां गत्वाऽर्द्ध१/२ गव्यूतिं केदारेश्वरसन्निधौ ॥
करवीरं महाघोरं ते २ भर्त्रा सह जग्मतुः ॥१३॥
तयोस्तु सहगामिन्योर्हाहाकारो महानभूत् ॥
अकाराडमरणो राज्ञो रुरुदुः स्थावरा अपि ॥ १४ ॥
श्रीजित्तत्र महासत्त्वः सर्वा आश्वासयत्तदा ॥
प्रकृती रावराजास्ता निर्नाथा बालभूभुजः ॥१५ ॥
मनागुत्साहमानीताः श्रीजिता संविदा स्वया ॥
अभिमन्यौ मृते सेना यथा स्वा धर्मभूभृता ॥ १६ ॥

युक्त शृंगारकुमारी नामक राणी और दूसरी चन्द्रशोभा नामक पासवान स्त्रियें दोनों अपने पति अजितसिंह के साथ, विक्रम के संवत् अठारह सौ तीस १८३०में वैशाख सुदि पूर्णिमा शुक्रवार के दिन एक पहर दिन बाकी रहे चिता पर चढके अग्नि की कराल ज्वाला में अपने शरीरों को होम करके सती हुईं ॥११॥ १२ ॥ वे दोनों बुन्दी से एक कोस पर केदारेश्वर के समीप घोर श्मशान तक पति के साथ पैदल गईं ॥ १३ ॥ इस प्रकार राजा अजितसिंह के अचानक और बिना अवसर के मरने से और उन दोनों के सती होने पर बडा भारी हाहाकार हुआ और स्थावर पदार्थ भी रोये ॥१४॥ तब वहां पर राज्य की संपूर्ण प्रकृति (राज्य के अंग) को बडे पराक्रमी श्रीजित (उम्मेदसिंह) ने विश्वास दिया और उस बालक राजा (विष्णुसिंह) की उस अनाथ प्रकृति को अपने ज्ञान से थोड़ा सा उत्साह दिया जैसे अभिमन्यु के मरने पर अपनी सेना को युधिष्ठिर ने, वृषसेन के मरने पर कर्ण ने, लक्ष्मण के मरने पर कुरुपति (दुर्योधन) ने, इन्द्रजित् और कुंभकर्ण के मरने पर रावण ने, त्रिशिरा के मरने पर त्वष्टा ने, विरोचन के मरने पर प्रल्हाद ने, चित्रांगद के मरने पर धर्म भीष्म ने आश्वासन किया तैसे वानप्रस्थ धर्म साधनेवाले श्रीजित् ने परिजनों का आश्वासन किया और वे सब लोग राजा विष्णुसिंह की इच्छा करनेवाले नगर में आये ॥ १५ ॥ १६ ॥

कर्णेन वृषसेनेऽस्ते कुरुभर्त्रेव लक्ष्मणे ॥
दशास्येनेव वा ऽपत्योरिंद्रजित्कुम्भकर्णयोः ॥ १७ ॥
त्वष्ट्रा त्रिशिरसि प्रेते प्रल्हादेन विरोचने॥
चित्राङ्गदे तथा पाण्डौ गाङ्गेयेनेव धन्विना ॥ १८ ॥
वैखानसेन विश्वस्ताः सर्वे परिजनाः पुरम् ॥
प्राविशन्विष्णुसिंहस्य क्ष्माभृतो वृद्धिमीप्सवः ॥ १९ ॥
एवं दैववशाद्राजन्स युष्माकं पितामहः ॥
एकविंशे२१ प्रविष्टेऽब्दे जन्मतो विग्रहं जहौ ॥२०॥

दिष्टायत्तत्वाद्धारणस्याप्यसूना-
मल्पायुष्कत्वादीशितुर्भुन्दिकायाः ॥
वोढुर्भूभारं सर्वसब्दद्वयाऽन्त-
र्नायुः स्थानादेर्निर्मितिः क्वापि जाता ॥ २१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे कृततृतीया३ ऽहकर्माऽमरचंद्रोदयपुरगमनप्रसूतच्युतपुत्राराणाभोगिनीकृष्णगढगमनतदितरभोगिन्येकादशको ११ दयपुराऽनलप्रविशनतदन्याभट्टयाणी १ पितृगृहज्वलनभस्मीभवनविस्फोट--

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हे राजा रामसिंह ! इसप्रकार प्रारब्ध के वश से वह आपके पितामह (दादे) ने जन्म से इक्कीसवां वर्ष लगते ही शरीर छोड़ा ॥ २० ॥ प्राणों का धारण करना दैव (भाग्य) के आधीन होने से और सब भूमि के भार को उठानेवाले (अजितसिंह) के अल्पायु होने से इन दो वर्षों में स्थान आदि नहीं बने अर्थात् राज्याधिकार मिलने से दो वर्ष ही आयु रही जिसमें स्थान आदि का निर्माण नहीं हुआ ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के (. चरित्र में, तीसरे दिन का कार्य करके अमरचन्द्र का उदयपुर जाना१ मराहुआ सकता कि किसे करनेवाली राणा अरिसिंह की छोटी राणी का कृष्णगढ जाना२ ... स्कर के कर्त्तापद की अन्य ग्यारह स्त्रियों का उदयपुर में सती होना३ भट्टि ... परन्तु निश्चय नं. सती होना ४ शीतला (चेचक) के रोग से रावराज ... टियानी का पिता

कामयरावराडऽजितसिंहदेहत्यजनसभुजिष्याचन्द्रशोभाराजाउत्तिराज्ञीसहगमनश्रीजित्सर्वसमाऽऽश्वासनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥
आदितः ॥ ३५० ॥

समाप्तं चेदमजितसिंहचरित्रम् ॥

शरीर छोडना ५ पासवान चन्द्रशोभा सहित राजावती राणी का सती होना ६ श्रीजित का सब को आश्वासन करने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और अजितसिंह चरित्र समाप्त होकर आदि से तीन सौ पचास ३५० मयूख हुए ॥

इति अजितसिंहचरित्रं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथविष्णुसिंह२००१२चरित्रम् ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह१९९१२ बपु तजत इम, हुव बुंदिय हाकार ॥
बिजय प्रपंच सु हुव बिफल, आयु नियति अनुसार ॥ १ ॥
जो कछु दिन पुनि जीवतो, पहु तो अवसर पाइ ॥
कोटादिक छिति निकटकी, लेतो स्वभुज लगाइ ॥ २ ॥
सु नृप उदधि सूरत्वको, सत्रुन बर्द्धक सोक ॥
सुक्र ६ वार बैसाख २ सित, पुंरिक्षम १५ गो परलोक॥३॥
अजितसिंह१९९१२के पट्ट अब, विष्णुसिंह२००१२बय बाल॥
बैठायो श्रीजित१९८१४ बिदित, भाँवित बिधि भूपाल॥ ४ ॥
सक नभ गुन धृति१८३० सुक्रमैं, ससि२एकादसि११सीर ॥
बिष्णुसिंह२००१२ नव९पक्ष बय, बुंदी पँहु हुव वीर ॥५॥
पंच ५ घटिय मध्यान्ह पर, अधिक जात अभिसेक ॥
सद्धिय निज कुलरीति१ सह, बिधि२ग्रह सुमह३ बिबेक॥६॥
प्रथम पुरोहित१व्यास२ गुरु३, इन्ह त्रिक३किय अभिसेक॥
बलि गुरु३।१किय उपदेस बिधि, कुसलानंद३।१हि एक॥७॥
तिम इन तीन३न किय तिलक, श्रीजित१।४स्वकर वहोरि
माधानी२२।२६भगवंत१९९१।१।२।५पुनि, किन्न तिलक बिधि जोरि८
चारन१ भट्ट२न भेट किय, पहिलै१ हय१।२ सिरुपाव २।३।४
भेट बहुरि सद्धिय भटन, अनियत सो क्रम भाव ॥ ९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

---

१ भाग्य के अनुसार है ॥ १ ॥ २ समीप की भूमि ॥ २ ॥ ३ वीरता का समुद्र ॥ ३ ॥ ४ संस्कार विधि से॥४॥ ५ ज्येष्ठ मास, सोमवार ६ साढे चार मास की अवस्था में ७ बुन्दी का राजा हुआ ॥ ५ ॥ ८ श्रेष्ठ उत्सव॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

घोरे१सिरुपाव२ करे उपदा तबहि तत्थ,
पहिलैं पितृ०यक बहादुर१९६।३।३औ सरदार१९९।४।४॥
पीछैं सिवसिंह५ पीछैं संग्रामादिसिंह पीछैं,
माधव१९३।२पिनाती भगवंत७रीति अनुसार॥
इंद्रगढ८ बलवनि९ जज्जाउर१० आँतरदा११,
खेरा१२ धोवरा१३के भये नजर बिधेय वार॥
कोटापति१४ हूके द्वै२ तुरंग सिरुपाव द्वै२ ही,
आये भये भेट पुनि औहैं बडो उपहार॥ १०॥

॥ दोहा ॥

किय उपदा सचिवादिकन, पुनि दम्म१ रु सिरुपाव२॥
अधसौध१न इम सद्धि अँग, सौध२न आन्यौं साव॥११॥
व्याह१ मंजार२ नृप बिष्णु२००।२ के, भावी सब क्रम भाइ॥
कहत इकट्ठे जे जुदे, ठाँठाँ संभव ठाइ॥ १२॥
तँहँ तिय१ अट्ठ८ खवासि२ त्रय३, संतति अट्ठ८सुहात॥
पंच५ रु सुत इक१ पुत्रिका, जँहँ ए रानिन जात॥ १३॥

॥ षट्पात् ॥

नगरी बीकानेर भूप आनंद अंकै भव॥
संज्ञा करि गजसिंह१ धरत तँहँ छत्र धराधँव॥
सुता तास सिसु सैंवय पद्मकुमरी२००।१ स नाम पहु॥
व्याह्यो प्रथम१ विवाह वितँरि, धन१ पट१ भूखन३ बहु॥
बालहि भई सु१ पुनि कालवस, वलि दूजी२ जहाँनि वरि॥

१ नजर २ काका ३ माधवसिंह के वंशवाला ४ उचित समय ५ सामग्री ॥ १० ॥ ६ नीचे के महलों में ७ पर्वत ऊपर के महलों में ८ बच्चे,को ॥ ११ ॥ ९ सन्तान १० आगे आनेवाले समय में ॥ १२ ॥ ११ इतने तो रानियों से हुए ॥ १३ ॥ १२ गोद लियाहुआ १३ नाम से १४ भूपति १५ विष्णुसिंह के समान अवस्थावाली १६ देकर

रानी बिदग्ध[1] आनी रैमन[2] कमनं[3] करोलिय क्रित्ति करि१४

॥ रोला ॥

तुँर[4] समपाल तनूज पालमानिक[5] आदि२ पहु,
नगर करोलिय नाह ललित ताकी कन्या लहु[6] ॥
अमृतकुमारि२००१२ अभिधान[7] व्याह दूजेर नृप व्याहिय,
अतुल त्याग बसु अप्पि अतुल जस रस अवगाहिय ॥१५॥

॥ घनाक्षरी ॥

कोटापति मंत्री झल्ल[8] जालम्म सुता[9] सु तीजी३,
नानता नगर व्याही अजब कुमारि२००१३ नाम ॥
सोपुर नगर गोर भूपति किसोर सुता,
सुरहि कुमारि२००१४ चोथी४ रानी बरी अभिराम ॥
रानी भटियानी लाडकुमरि२००१५ मँगाइ डोला,
पंचमी५ बिबाही बीर भोज सुता बपु बाम[10] ॥
डोला आनि कन्याको प्रयाग सिंह रानाउत,
सूरजकुमारि२००१६ सो बिबाही छट्टे उपयाम[11] ॥ १६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

व्याही सप्तम७ व्याह बलि, डगडोलीस गुमान आइ इत ॥
आश्रय पाइ अधीसको, बिनत ठानि संबंध हेरि हित ॥ १७ ॥
नंदकुमरि२००१७ तस नंदिनी, बिधि संजुत सीसोदनीहु बरि ॥
नृप रानी आनी निलय, सप्तमी७ सु कुंवरीहि व्याह करि॥१८॥

॥ घनाक्षरी ॥

कृष्णागढ ढुंग भूप अष्टम८ बिबाह बरि,

---

१ चतुर २ पति ले ३ सुन्दर कीर्ति करके ॥ १४ ॥ ४ शीघ्र ५ माणिक्यपाल ६ लघु ७ नाम ॥ १५ ॥ ८ झाला जालमसिंह की पुत्री ९ सुन्दर १० वाम अंग से ११ विवाह में ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

कीनी वाम अंगज प्रताप नृपकी कुमारि ॥
स अमानकुमरि२००१८ स नाम प्रभु माता सती,
आनी वरि अष्टमी८हु रानी रीति अनुसारि ॥
कुंच्छि खनि जाकी रत्न दीपक प्रकास करैं,
आपसे उदार अहो टोटो रूप तम टारि ॥
पात्र१के सनेह२के दसा३के परतंत्रनपै,
भासकँ सबन भासैं धर्म१ नीति२ जस धारि ॥ १९ ॥
अष्टम८ बिवाह जिहिँ लग्न नृप कीनौं एह,
सोही लग्न साधि तब व्याह कीनौं मर्म तात ॥
प्रभुकी सवित्री१ प्रभु कविकी संवित्री२ पुनि,
आई इक१ काल ऊढों पाइ किति अवदात ॥
सुद्धकुल आठ८ ए विवाह भये संभरके,
जिनमैं छ७तोकें सुत पंच५ सुता इक जात ॥
दूजी२ सुत जेठे१२ इंद्रसिंह२०११ रु अनुज२०१२ द्वैहीर२,
बाल्पहीमैं कुमर मरे ए विधिके बिघात ॥ २० ॥

॥ चूडालदोहा ॥

इंद्रसिंह२०११को जो अनुज, सूचित इह जहाँनि२ जन्यौं सुत॥
नामहु तास न परि सक्यो, सिसुतम सो हुव देह हीन हुत २१
क्रम तीजो३ इम नृपतिकै, तनय भयो बलदेवसिंह२०१३ तह॥

१रामसिंह की माता २जिसकी खान रूपी कूंख में ३आप (रामसिंह) जैसे दीपक रूपी रत्न ४ टोटा रूपी अन्धेरे को टालनेवाले, वह दीपक तो पात्र ५ तेल और ६ बाटी (बत्ती) के परतन्त्र है, परन्तु यह रामसिंह रूपी दीपक धर्म, नीति और यश को धारण करनेवाला सब को ७ प्रकाश करनेवाला स्वतन्त्र दीखता है "यहां परन्तु शब्द के योग से स्वतन्त्रता का ग्रहण है" ॥ १९ ॥ ८ मेरे (सूर्यमल्ल) के पिता ने ९ रामसिंह की माता और १० कवि (सूर्यमल्ल) की माता ११ विवाही हुई एक ही समय में आई, उज्वल कीर्ति पाई १२ बालक ॥ २० ॥ १३ अत्यन्त बालक ही शीघ्र मरगया ॥ २१ ॥

जो चोथी४ रानी जनित, अनसु[1] भयो सिसुभावमैंहि यह॥२२॥
पटु अष्टम८ रानी प्रसव, अप्प[2] भयो प्रभु राम२०१४ बंस[3]इन ॥
मितिक्रम अत्र चतुर्थ४मत, दीपित किय जिन नाम रत्ति[4] दिन२३
पंचम५सुत सप्तमि७प्रसव, हुव गोपाल२०१५सु[5]पथ्यपथिक हुव॥
समुझावन तिहिँ प्रभु[6] सु नय, धारी तँह प्रतिकूल बन्यौ धुव२४
आसापूरनि अंबिका, मंदिर ढिग कँर्णा[7]दि भटन मिलि ॥
दिष्ठिकैद[8] तब तिहिँ दयो, खग्गा१दिक सब छिन्नि नर्म[9] खिलि२५
तास इवेली भेजि तिहिँ, पुनि सूचिय अब लेहु बंस पथ ॥
कुलपतनी[10] आदर करहु, करहु न गनिका संग निंद्य कथ॥२६॥
दिय प्रबोध प्रभु इम दुलभ, तदपि मूढ प्रतिकूल भाव तकि ॥
करि मेहन[11] छेदन कुमति, छीवै[12] रह्यो अपकित्ति सुरा छकि ।२७।

॥ दोहा ॥

भई सुता इक१ भूपकै, तीजी३ औरस तँाम[13] ॥
सोहु मरी बिधिबस सिसुहि, न परि सक्यो तस नाम ।२८।

॥ षट्पात् ॥

सुंदरसोभा१ सुघरराय२ —— क्रमसरंगं३ सह ॥
कँमन[14] खवासिनकोहु अवनिपतिकै हुव त्रिक३ यह ॥
तीजी३ बिधिकरि तत्थ लह्यो सुत बिनयसिंह१ लहु ॥
पातुरिगन तिम प्रथित बिबिध पटु हुव नृपके बहु ॥
जिनमाँहिँ नयनसोभा१ जनित रूपकुमरि१।२ कन्या रुचिर
संतान अठ्ठ८ लहि इन सहित सँमह[15] तप्यो नृप सबन सिर २९

१ प्राण रहित ॥ २२ ॥ २ आप (रामसिंह) ३ वंश का पति, इस क्रम से चौथा है ४रात्रि और दिनको प्रकाशित किया ॥ २३ ॥ ५बुरे मार्ग का चलनेवाला हुआ ६ आपने श्रेष्ठ नीति धारण की ॥ २४ ॥७कर्णसिंह आदि८नजरकैद९हसी करके प्रफुल्लित होकर ॥२५॥१०कुलस्त्री का॥२६॥११लिंग को काटकर अपकीर्तिरूप१२मद्य में छककर१२मस्त रहा॥२७॥१३तहां ॥२८॥१४सुन्दर१५ उत्सव सहित॥२९॥

काका नृपको कथित वीर अभिधान बहादुर१९९१३
तास तनय बलवंत२००१२ प्रथित थित थान गोठपुर[1] ॥
ज्ञानकुमरि२००१ अभिधान इक्क१ परन्यौं भटयानिय ॥
अत्थहि डोला भ्रात स्याम तनया जग जानिय ॥
तस प्रसव तीन३ प्रकटे सुतहि जे धौंकल२०११ फतमल्ल२०१२ जह
तिन्ह अनुज भोम२०११३ तीजो३ तनय आयतिं[2] होहि प्रमत्त यह ॥३०॥

॥ दोहा ॥

भटियानी सालम सुता, दौलतकुमरि२००१ सनाम ॥
बलवंता२००१ नुज[3] एक१ इम, व्याह्यो दलपति२००१३ बाम ॥३१॥
सिंधु भयो सूरत्वको[4], इक्क१ नारीव्रत एह ॥
रन सहाय खिच्चिन खिरयो, तिल तिल दलपति२००१३ देह ॥३२॥
सेरसिंह२००१५ याके अनुज, लहि डोला इक१ नारि ॥
सुता वरी खुसहालकी, जो आनंदकुमारि२००१ ॥ ३३ ॥
हुव ताकै सुत दुव२ सहज[5], जे जय२०११ बिजय२०१२ सनाम॥
जामिज[6] बीकानैरके, रठोरन प्रभु राम२०१४ ॥ ३४ ॥
अनुज बहादुरसिंह१९९१३ को, सूचित जो सरदार१९९१४ ॥
ढंग दुघारी थान तस, दुव२ हुव कथित कुमार ॥३५॥
व्याही ईश्वरिसिंह२००१ तँहँ, जेठे१ सुत चउ४ नारि ॥
अजब कबंधज[7] अंगजाँ, प्रथम१ गुलावकुमारि२००१ ॥ ३६ ॥
दूजी२ जादवमेघजा, फतैकुमरि२००१२ निज कीन ॥
तीजी३ ता२००१३ ही नाम करि, चालुक नाथ कुलीन ॥३७॥
इनमैं ईश्वरिसिंह२००१के, जानी भूत प्रजा न[8] ॥

१ गोठड़ा पुर २ भविष्यत् काल (आगे आनेवाले समय) में ॥ ३० ॥ ३ बल-
वन्तासिंह का छोटा भाई ॥३१॥ ४ वीरता का समुद्र ॥३२॥३३॥ ५ साथ जन्मेहुए
(जोड़ला) ६ भानेज ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ अजयसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
८ सन्तान हुई नहीं जानी

जान्यौं तनय खवासि जनु, इक१ लछमन१ अभिधान॥३८॥
ईश्वर२००।१ को भ्राता अनुज, देवीसिंह२००।२ द्वितीय२॥
जो व्याह्यो इक१ जादवी, धरि मह सुंदर धीय॥ ३९ ॥
बिष्णुकुमरि२००।१ नाम जु बिदित, जात प्रजा चउ४जास॥
संभू२०१।१अरु सिवदान२०१।२सुत,ए जेठे१।२दुव२आस ४०
कन्या गोवर्द्धनकुमरि१, क्रम गोविंदकुमारि२॥
मरी अनूढा ए उभय२, अप्पन बिधि अनुसारि॥ ४१ ॥
इक१ खवासि भव अंगजा, इनकी अनुजा आहि॥
परिनाई तुम राम२०१।४ प्रभु, दंग जोधपुर जाहि॥ ४२ ॥
वृद्धिकुमरि१ अभिधान जो, सो परन्यौं सरदार॥
अत्थहि आय खवासि भव, नृप तखतेस कुमार॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

संभू२०१।१तैं जेठो सहज, नाम तास —— २०१।१ ॥
सोहु कुमर दुव२ बरस रहि, भयो कालके साथ॥ ४४ ॥
पंचम५संकरसिंह२०१।५ पुनि, सो कनिष्ट सिवदान२०१।२॥
कछुक दिननके अंत करि, सोहु भयो अवसान॥ ४५ ॥
लावक गाँम इलेसकी, सुहुकमजा वह नारि॥
परनी संभूसिंह२०१।१ प्रथं, मानहु चंद्रकुमारि१॥ ४६ ॥
सोलंखी रतनेसजा तखतकुमारि२ अभिधान॥
बारि आनी संभू२०१।१ बहुरि, दूजी२ पुर दुबलान॥ ४७ ॥
पुनि व्याही हम्मीरपुर, बिष्णुसिंह नपुजात॥
आनंदादिकुमारि३ इम, सुरतानोत सुनात॥ ४८ ॥

॥ ३८ ॥ १ छोटा भाई ॥ ३९ ॥ २ हुए ॥ ४० ॥ ३ विना विवाही ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
॥४३ ॥ ४४ ॥ ४ अन्त ॥ ४५ ॥ ५ लावा ग्राम के भूपति की ६ प्रसिद्ध ॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥ ७ पुत्री ॥ ४८ ॥

भूप भ्रात पुर कापरनि, पति सामंत२००१ प्रवीन ॥
ब्याह तीन३ बिरचे बिदित, तनय लहे तहँ तीन३ ॥ ४९ ॥
पतनी यह परन्यों प्रथम१ रूपनगर रठ्ठोरि१ ॥
दूजी२ राजाउत्ति२ इम, बहहु बरी पटजोरि ॥ ५० ॥
पुनि तीजी३ सिवराजपुर, पति कबंध चंदेल ॥
दुहिता तस परन्यों दुलह, मंजु सबय लहि मेल ॥ ५१ ॥
तीजी३कै जेठो१ तनय, हुव बलदेव२०११ सनाम ॥
दूजी२कै कृष्णा२०१२रु बिरुद२०१३, तनय भये दुव३ताम
ब्याह१ प्रजा२ भावी बिदित, सूचे इह क्रमसंग ॥
बर्तमानमैं देहु बलि, अब श्रवैं३ श्रवन उमंग ॥ ५३ ॥
सूचित१८३० सक बुंदी सुपहु, बिष्णुसिंह२००२ सिसुबेस॥
जनक छत्र धरि सीस जो, इम हुव भुव अखिलेस४ ॥ ५४ ॥
इत पहिलैं नृप अजित१९९२नैं, सीम अमरगढ माँहिँ ॥
अरिसिंहहिँ परलोक दिय, बिल्लहटा५ दिय नाँहिँ ॥ ५५ ॥
सुत जेठे१ अरिसिंहके, व्है अधिपति हम्मीर१ ॥
संध्या६ हँपैं पठये सचिव, बुंदिय दव्वन बीर ॥ ५६ ॥
ज्योंही बेघम आदि जे, मिले कँपटसिसु मध्य ॥
दक्खिनको भर दैन चहि, बंछे तिनकँहँ बध्य ॥ ५७ ॥
भीम सलूमरि नाहको, भ्राता अर्जुन१ नाम ॥
अपर१० बनिक२ ए दुव२ गये, माहजि कटक मुकाम ॥५८॥
संध्या माहजि तिँहिँ समय, पूरब करि बस प्राय ॥
आवतहो अजमेर इह, इत पिक्खन ठ्येंय११ आय२ ॥ ५९ ॥

॥४९॥५०॥ १ चन्देला राठोड़ ॥ ५१ ॥ २ तहां ॥ ५२ ॥ ३ सुनने में कान दो ॥ ५३ ॥ ४ बुन्दी की सब भूमि का पति ॥ ५४ ॥ ५ बीलहटा ग्राम नहीं दिया ॥ ५५ ॥ ६ सिन्धिया के पास ॥ ५६ ॥ ७ रत्नसिंह में ८ भार ९ मारनेयोग्य (मारनेचाहे) ॥ ५७ ॥ १० दूसरा ॥५८॥ ११ खरच और आमद देखने को ॥५९॥

तँहँ वकील ए रानके, पहुँचे बिनय पसारि ॥
सोरचो इत कछु दम्म दै, बेघम मंडन रारि ॥६०॥
दरकुंचन तब नैंनपुर[1], आयो माहजि तत्त ॥
सचिव मुख्य सुखराम पँहँ, पठये बुंदिय पत्त ॥ ६१ ॥
बिल्लहटा१ बुंदीस लिय, अनुचित करि अति गर्ब ॥
मारचो पुनि अरिसिंहकोँ, यामैं ओगुन सर्ब ॥ ६२ ॥
तुरगादिक[2] अरिसिंहको, आयो बिभव१ जितोक ॥
बिल्लहटा२ जुत देहु अब उनको है वह ओक[3] ॥ ६३ ॥
धाइभ्रात सुखराम तब, नैंपयटु[4] समय निहारि ॥
बिल्लहटा१ जुत रॉन हय२, दिन्नौं विहित बिचारि ॥ ६४ ॥
कोटापति तनु[6] त्याग किय, इत गुमान२०४।२ लहिखेद ॥
पट्ट सु पायो तस तनय, उचितरीति उम्मेद२०५।१ ॥ ६५ ॥
झल्ला जालमसिंह तिँहिँ, मुख्य सचिव किय तत्थ ॥
राज्यकाज प्रकट१ रु पिहित[7]२, सब सौंपे तस हत्थ ॥ ६६ ॥
असह रोग उपदंस[8] जुत, पहिलैं इक१ पंननारि[9] ॥
नंटन[10] निपुन कोटानगर, आई लोभ बिचारि ॥ ६७ ॥
नृप गुमान२०४।१ अग्गैं नची, भाव१हाव२सह भास ॥
बिगरचो मन कोटेसको, न लखैं लोलुप[11] नास ॥ ६८ ॥
मन्न्यौं नहिँ गनिका सु मंत[12], तदपि बुलाइ निकेत[13] ॥
लगि कुकर्म उपदंस[14] लहि, इम हुव अब सु अचेत ॥ ६९ ॥
नृप गुमान२०४।१को जो अनुज, सो तँहँ नाम सरूप२०४।३

॥ ६० ॥ १ नैणवा पुर में ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ २ घोड़ा आदि ३ स्थान ॥ ६३ ॥ ४ नीति चतुर ने ५ राणा का घोड़ा ॥ ६४ ॥ ६ शरीर छोड़ा ॥ ६५ ॥ प्रसिद्ध और ७ गुप्त ॥ ६६ ॥ ८ आतसक गरमी सहित ९ वेश्या १० नृत्य में ॥ ६७ ॥ ११ अत्यन्त लोभी (काम का लोभी) ॥६८॥ १२ वेश्या ने राजा का वह मत स्वीकार नहीं किया १३ तोभी अपने स्थान पर बुलाकर १४ गरमी का रोग लिया

भेज्यो जालम झल्ल भनि, भूप होहु हनि भूप[1] ॥ ७० ॥
तब नृप मारयो बंधि तिहिं, नीच गरल उपनाह[2] ॥
भूरिमायु दमनक भयो, सचिव झल्ल सचाह[3] ॥ ७१ ॥
रानिनपँहँ पठई अरज, इत जालम लिखि एस ॥
तुमरे देवर नृप हन्यों, बन्यों चहत बसुधेस[4] ॥ ७२ ॥
सुनि रानिन किय सूचना, जसकर्णहिं निज जानि ॥
ताकि कछु बिधि धावेये तुम, मारहु तिंहिं खल मानि[5] ॥ ७३ ॥
सचिव मुख्य जसकर्ण सुनि, इम रानिन आदेस[6] ॥
उँपबन[7] माँहिं सरूप२०४।२ वह, दुष्ट हन्यों कहि द्वेस ॥ ७४ ॥
अब उम्मेद२०५।१ गुमान२०४।२, सुत कोटपपति हुव ताहि ॥
इक१ दिवस इकंत लै, जालमें कहिय सराहि[8] ॥ ७५ ॥
अहो अखिल प्रभुके अनुग[9], अरु प्रभु मानन ईस ॥
पै अब इक१ अनुचित प्रबल, सचिव कुपित निज सीस[10] ॥ ७६ ॥
मोसों यह जसकर्ण मिलि, बदत गूढ तजि बट्ट[11] ॥
मारैं नृप उम्मेद२०५।१कों, अप्पैं अँपरहिं पट्ट[12] ॥ ७७ ॥
जिहिं सठ झाका रावरे, मारे बिदित बकारि ॥

॥ ६९ ॥ १ राजा गुमानसिंह को मारकर तुम राजा होजाओ ॥ ७० ॥ २ मल्लमपर्दा में जहर देकर ३ यहां झाला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ के समान हुआ "पञ्चतन्त्र और हितोपदेश के सुहृद्भेद में यह कथा है कि संजीवक नामक बैल और पिंगलक नामक सिंह की बढती हुई मित्रता को काटकर, दमनक नामक गीदड़ ने इनमें विरोध बढाकर पिंगलक से संजीवक को मरवाया, और इनके विरोध का आपने लाभ उठाया" ॥ ७१ ॥ ४ भूपति होना चाहता है ॥ ७२ ॥ ५ जसकरन नामक धायभाई को अपना जानकर कहा कि हे धायभाई ॥ ७३ ॥ ६ आदेश (आज्ञा) ७ बाग में उस सरूपसिंह को दुष्ट कहकर मारा ॥ ७४ ॥ ८ जालमसिंह ने कहा ॥ ७५ ॥ ९ सब आप के सेवक हैं परन्तु आश्चर्य है कि १० आप के ऊपर सचिव जसकरन क्रोधित है ॥ ७६ ॥ स्वामिधर्म का ११ मार्ग छोड़कर १२ दूसरे को पाट देवें ॥ ७७ ॥

न गिनैं सो *उचितानुचित, तुल्लि रह्यो तरवारि ॥७८॥
बदत यहहि नृप मति बदलि, सजि भट कछुक स्वतंत्र ॥
कुजस करन त्यौं जसकरन, मारन मंडिय मंत्र[1] ॥७९॥
तकि खिंन जालम झल्ल तिम, ह्वै जसकरन सहाय ॥
कही तुमहिं मारन कुमति, यह नृप करत उपाय ॥८०॥
यातैं तुम निकसहु अबहि, पुनि हम औसर[2] पाइ ॥
नृपको कोप निवारिकैं, लैहैं बिदित बुलाइ ॥ ८१ ॥
इम संजीवक१ बैल यह२, निकसायो[3] डर डारि ॥
भयो झल्ल१ दमनक भरुज२,[4] पिंगल१ नृप२हिं निहारि[5]॥८२॥
साहजि लोभ अधीन इत, सेना अतुल सजाइ ॥
रान वकीलनके कहैं, लग्गे बेघम जाइ ॥ ८३ ॥
सजाइ१ मजाइ२ अन्त्यानुप्रासः ॥
सक नभ गुन धृति१८३०मित[6] समा, मलिंन२प्रौष्ठपद[7]मास॥
बेघम संध्या बिंटिकैं, तोपन डार्‌यो त्रास ॥ ८४ ॥
सुनि यह इत बुंदीसके, बहुत सज्ज करि बीर ॥
श्रीजित कहि सुखरामसौं, भेजे बेघम भीर ॥ ८५ ॥

॥ राजसवतिका ॥

चतुर[8] राउत देव कर्‌यो पहिलैं निज तात[9]पैं जो उपकार नयो ॥
जन बुंदीके१ आप निबाहे जथा दृढ चित्त स्वकीय[10]२न कष्ट दयो
अपनैं घर जासौं अहो पट[11]१ अन्न२को भोगह अल्पहि[12] अर्घ भयो॥

---

* उचित और अनुचित नहीं गिनता ॥ ७८ ॥ १ जसकरन को मारने का मंत्र रचा ॥ ७९ ॥ २ समय देखकर ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ३ संजीवक नामक बैल के अनुसार जसकरन को निकलाया ४ यह झाला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ हुआ ५ पिंगलक नामक सिंह के समान राजा उम्मेदसिंह को देखकर ॥८२॥८३॥ ६ सम्वत् ७ भादवा बदि ॥८४॥८५॥ ८ चतुर राउत देवसिंह ने ९ अपने पिता बुधसिंह पर १० अपने लोगों को कष्ट दिया ११ वस्त्र १२ थोड़े मूल्य का

यह श्रीजित २हीहित चित्त इहाँ प्रतिकारी बरूथैं उहाँ पठयो।८६।

॥ दोहा ॥

पाइ मेघ१ बेघम पतिहु, भट इतके निज भीर ॥
सजि गढ पुत्र प्रताप२ सह, विरच्यो संगर बीर ॥ ८७ ॥
रन संकट बहुदिन रह्यो, खिरन लगे गढ खंड ॥
जालम कोटा सचिव जब, दै बिच ओड्यो दंड ॥८८॥
दम्म लक्ख खट६००००० दैन करि, हीन वित्तें तँहँ होइ॥
गढ सिंगोली१ रत्नगढ२, दये परगनाँ दोरइ ॥८९॥
संध्याकै अबलगँ सुपै, रहत उभय२ प्रभु रामँ२०१।४ ॥
वली अरिन दव्वे बहुरि, धाम न आये धाम ॥९०॥
पुर बेघम इम हीन परि, दै दंम सूचित देस ॥
मेटि विरोध रु किय मुदित, बुंदिय कित्ति बिसेस ॥ ९१ ॥
श्रीजित इत बुंदीसके, वीरन सबन बुलाइ ॥
सूचौ है उत्तानसय, प्रभु तुमरो बिधिपाइ ॥ ९२ ॥
सुखरामहिं किय निज सचिव, अजितसिंघ१९९।१ तुम ईस॥
तिहिं मन्नहु प्रभु तुल्य तुम, सासन निवहहु सीस ॥९३॥
वीर भवानीसिंघ१ बलि, माधानी२२।२६ भगवंत२ ॥
दुव२ तुम याके पास दुव२, मगमैं चलहु सुमंत ॥ ९४ ॥
सूनु बहादुरसिंघ१९९।२सौं, अक्खिय बहुरि उदग्ग ॥
राज पितृव्यक तुम रहहु, मगमैं याके अग्ग ॥९५॥

१लज्जा से हित चिन्तकर श्रीजित् ने २उपकार का पलटा देनेवाली सेना बेघम भेजी ॥ ८६ ॥ ३ सवाई मेघसिंह ॥ ८७ ॥ ४ दंड भेला (स्वीकार किया) ॥ ८८ ॥ ५ धनहीन ॥ ८९ ॥ ६ इस समय भी ७ हे स्वामी रामसिंह ८ स्थान पीछे बेघम के घर में नहीं आये ॥ ९० ॥ ९ दंड में सूचना किये हुए देश देकर ॥ ९१ ॥ १०सीधा सोनेवाला (ऊंचे हाथ पैर करके सोनेवाला) अर्थात् अत्यन्त बालक ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ११ अपने पुत्र १२हे राजा के काका ॥९५॥

मिलत न जैसो महतपन, करत राज्यको काम ॥
तैसो लहि धात्रेय तिम, सचिव बढ्यो सुखराम ॥९६॥
अतिहित जालम झल्ल इत, बुंदीपतिहिं *बिखान ॥
माधानी१।२।६ भगवंतकों, पुनि कोटा लैजान ॥ ९७ ॥
दुव२ सामंत रु सचिव दुव२, इक१ मरहट्ट अराल ॥
कोटा रक्खिय माहजि जु, लैन अब्द कर लाल ॥ ९८ ॥
सो पंचम५ जालम सुहृद, ए पठये कहि एह ॥
कोटा१ बुंदिय२ नृपनकौ, संधहु परम सनेह ॥९९॥
नाथ१नाम गैंता नगर, ईसजु हिरदाउत्त२०।२४ ॥
दूजो२ भटवारेस भट, संभूर इँदसलुत्त२५।२९ ॥१००॥
देवकरन१।३ भूसुर सचिव, अरु कायस्थ निहाल२।४ ॥
इम पंचन ५ मरहट्ठ यह, सुहृद झल्लको लाल ॥ १०१ ॥
मिले सचिव सुखरामसौं, ए सब बुंदिय आइ ॥
पुनि लग्गे श्रीजित पयन, बिनँत सनेह बढाइ ॥ १०२ ॥
करिये इत १ उत२ एक१ता, सूचत हम हित सोधि ॥
स्वीकृत किय श्रीजित सुन सु, पटु सुखराम प्रबोधि॥१०३॥
भगवंतहिं पुनि तिन भनिय, कोटा पठवन कज्ज ॥
सिक्खदैन तिहिं श्रीजितहु, सामग्री किय सज्ज ॥ १०४ ॥
दंती एक१ तुरंग दुव२, सिंचय१ बिभूखन सत्थ ॥
दैन सिक्ख इत्यादि दै, ताहि बिचारिय तत्थ ॥ १०५ ॥
सो कृतघ्न[11] भगवंत सुनि, छन्नैं परिकर[12] सज्जि ॥

॥ ९६ ॥ * दिखाने को ॥ ९७ ॥ १ डेरा २ लाला नामक मरहठे को खालाना खिराज लेने को कोटा में रक्खा ॥ ९८ ॥ ३ जालमसिंह के चार मित्र पहिले थे और पांचवां यह हुआ ॥ ९९ ॥ ४ भटवाड़ा का पति ५ इन्द्रसालोत ॥१००॥ ६ ब्राह्मण ॥ १०१ ॥ ७ विशेष नम्र ॥ १०२ ॥ ८ समझाकर ॥१०३॥१०४॥ ९ हाथी १० वस्त्र ॥ १०५ ॥ ११ किये उपकार को भूलनेवाला १२ परगह

हित दिखान कोटेसकों, गयो पैरोक्षहि भज्जि ॥ १०६ ॥
श्रीजित सूचित क्यों कितव, अनुचित किन्नी एह ॥
इहाँ विभव जो तस अखिल, गिनि भेजहु तस गेह ॥१०७॥
सस्य फलित सीतोरके, करजुत तबहि प्रकास ॥
रह्यो विभव भगवंतको, पठयो सब तिहिं पास ॥ १०८ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आयो जबही तैं सहाँ तैं सु गिनि मुख्य आप,
राख्यो भगवंत पास श्रीजित सुहृद रीति ॥
काज निज राज्यके जनाइ सब ताकौं करे,
पायो काहुनैं न सो पटा दिय निपुन नीति ॥
साध्यकारि बुन्दी१ कोटा२ एक१ता करन समैं,
गाइ कछु गूढ ह्वाइ बुंदी१की कुजस गति ॥
कोटा२ कौं दिखाइ निज पच्छको अहो कुटिल,
भजि भगवंत गयो चोरलौं भजत भीति ॥ १०९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहविवाहसन्ततिवर्णनसन्ध्याकथनविल्लहट्टाग्रामादिराणवैभवप्रत्यर्पणधात्रीभ्रातृजसकर्णघात्यस्वरूपसिंहविषदानमृताग्रजकोटापतिगुमानसिंहात्मजोम्मेदसिंहपट्टासादनभल्लजालमसिं

१ पीठ पीछे भगकर ॥ १०६ ॥ २ छली ॥ १०७ ॥ ३ पकी हुई खेती ॥ १०८ ॥
४ हृदय के साथ ५ मित्र की भांति ६ शठता (मूर्खता) ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, विष्णुसिंह के विवाह और सन्तान आदि का कथन १ सिन्धिया के कहने से बीलहटा ग्राम आदि राणा के वैभव को पीछा देना कोटा के पति गुमानसिंह का धायभाई जसकरण से मारेजाने वाले अपने छोटे भाई सरूपसिंह से जहर से माराजाकर उसके पुत्र उम्मेदसिंह का पाट बैठना ३ झाला जालमसिंह का कोटा के राजा और मंत्री में दमनक नामा गीदड़ के समान भेद कराना ४ सिंधिया का राणा हम्मीरसिंह ८ के कथन से पेघम से युद्धकरके दंड में

हकोटापतितन्मन्त्रिमध्यदमनकशृगालसमभेदकरणाराणाहम्मीर-सिंहकथनकृतबेघमयुद्धसन्ध्याश्रान्तद्वयग्रहणाकोटाबुन्दीपरस्परैकता भवनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३५१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सुनिये इत पहिले समय, कोटा अधिप किसोर१९७५ ॥
जेठे दुव२ सुत टारि जिन्हँ, राज्य१ न दिय दिय रोर२ ॥१॥
किय तीजो३सुत उचित कहि, राज्य बिभागी राम१९८१३॥
तास ³अग्रजन संततिन, किय अब बिग्रह काम ॥ २ ॥

॥ रोला ॥

अब माधानी२२१२६ देवसिंह१ रविमल्ल ज्येष्ठ१ सुत ॥
कुल किसोरसिंघुत्त ५ जुरन रन धारि दर्प्प जुत ॥
कोटापति सन पलटि, रह्यो आटोनि नगर यह ॥
तापर जालम तमकि ⁴आजि जित्तन किय आग्रह ॥ ३ ॥
सूँसामहत१ स नाम रक्खि इक जोध फिरंगिय ॥
तीससहँस३००००मित ताहि दम्म मासिक धुव करि दिय॥
याकहँ पुर आटोनि भेजि अक्खिय अरि भंजहु ॥
आइ समुख ⁵अंकुरहिं गैल ते पर तिम गंजहु ॥ ४ ॥
जाइ फिरंगिय जत्थ तोप बल्लन पुर त्रासिय ॥
सह कुटुंब वह देवसिंह निस अद्ध निकासिय ॥
सक नभ गुन धृति१८३०समय आइ तिम तिहिं अनियारा॥
चिंतिय बिबिध प्रपंच दैन जालम उर आरा ॥५॥

दो परगने लेना और कोटा बुन्दी में परस्पर एकता होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से तीन सौ इकावन ३५१ मयूख हुए ॥

१ भय दिया ॥ १ ॥ २ रामसिंह को ३ बड़े भाइयों की सन्तान ने ॥ २ ॥ ४युद्ध जीतने को हठ किया ॥ ३ ॥ ५ सन्मुख आकर खड़े होवे तो ॥४॥ ६करोत ॥५॥

जालम उर[1] वह जत्थ भयो पत्थर सम भासत ॥
भेदक[2] आरा आदि कुंठ हुव विफल मकासत ॥
धात्रेय सु जसकर्ण प्रथम गय दंग जोधपुर ॥
तिहिँ बुलाइ इहँ तत्थ अधम बंधिय जुग[3] उद्धुर ॥ ६ ॥
जतन चल्यो नन जत्थ जाइ उभय२ हि तव जैपुर ॥
चुंडाउत्तन चाहि रहे तिन्हँ बस धारक धुर[4] ॥
तिन्ह प्रति अक्खिय तत्थ प्रेरि हमकौं हरोलपर ॥
करहु अप्प निज काम हनहु परपच्छ[5] चुंडहर ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चुंडाउत्तन यहहि चहि, पाइ दुव२हि निज पच्छ ॥
चिंत्यो अब कूरम निचय, दलिहैं हम दंमदच्छ[6] ॥ ८ ॥
सक ससि गुन धृति१८३१इत असित२,भोग तीज३तिथि भद्द[7]
रहउरि श्रीजित रमनि[8], छोरयो वपु गद[9] छद्द ॥९॥
तदनंतर बुन्दीसकों, सचिव मुख्य सुखराम ॥
कतिय८ पुरिग्राम१५ दिन गयो, पट्टनि केसव धाम ॥१०॥
पट्टनि वट तीजो३ हुतो, संध्याकै तिहिँ काल ॥
तातैं झल्ल सखाहु तहँ, हो मरहट्ठ सु लाल ॥ ११ ॥
सो सम्मुह सुखरामकैं, इक्क१ कोस लग आइ ॥
लैगो पट्टनि समय लहि, परम प्रमोद दिखाइ ॥ १२ ॥
असित२ मग्गसिर[10]९ दोजि२, दिन तदनु मिलन हित तत्त ॥
जालम झल्लहु प्रीति जुत, पुर कोटा सन पत्त ॥ १३ ॥

---

१ हृदय २ भेदने (काटने) वाले करोत आदि भोठे (तीक्ष्णता रहित) होगये ३ दृढ जुग बांधा अथवा निर्भय होकर जुग बांधा ॥ ६ ॥ ४ धुर को धारण करनेवाले देवगढ़ के चुंडावत के वश में जाकर वह देवसिंह रहा ५ शत्रुओं को ॥७॥ ६ दंड देने में चतुर कछवाहों के समूह से ॥८॥ ७ भादवा ८ श्रीजित की स्त्री ने ९ रोग छाकर शरीर छोडा ॥ ९ ॥ १० ॥११॥१२॥ १० मृगशिर वदि॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि सम्मुह सुखराम१ लाल मरहट्ठ२उभय२ गय ॥
मिलि पुटभेदन प्रबिसि[1] आइ केसव हरि आलय[2] ॥
सपथ[3] करन तँहँ सचिव दुव२ हि लै कर तुलसीदल ॥
लगे परसपर दैन बदत दोउ२ न इक१ मन१ बल२ ॥
तजि संक बैरिसल्लोत२६।३ तँहँ खेरापति भारत कहिय ॥
तुम भरुज फेरु दमनक तरह[4] जुग२बंधहु तजि छद्म जिय।१४।

॥ दोहा ॥

शनि१नसौं रु सुरूप२०४।३।२सौं, जसकर्षा२ हु सौं जेम ॥
मिलि मारे नृप४ सह निखिल[5], तुम न मिलहु इह तेम ॥१५॥
अक्खिय सुनि जालम अनखि, समुझि करत हम सौंह[6] ॥
क्यौं फुरकावत तुम कुटिल, भीरुनकी गति भौंह ॥१६॥
इम अगहन९ बदि१ दोजि२ दिन, दुव२सचिवन हित रक्खि
करे सपथ एकत्व१ के[7], दै केसव बिच सक्खि ॥१७॥

॥ षट्पात् ॥

गयो तदनु कोटेस सचिव जालम१कोटा चढि ॥
दूजे२ दिन सुखराम२ गयो तत्थहि बिनोद बढि ॥
द्रुत उततैं भूदेव देव१ मरहट्ठ लाल२ दुव२ ॥
ग्राम दोसपुर अवधि आत सुनि सम्मुह आतहुव ॥
सक इंदु अग्गि धृति१८३१गत समय तिथि चउत्थि४अगहन९असित२
डेरा दिवाइ उपवन निकट[8] हुलासि दिखायउ परम हित॥१८॥

॥ दोहा ॥

बहु बर फल१ मिष्टान्न२ बहु, सतदुव२००रुप्पय३सत्थ ॥

---

१ पुर में प्रवेश करके २ विष्णु के मंदिर में ३ सौगन करने को ४ दमनक नाम गीदड़ की तरह ॥ १४ ॥ ५ सब ॥ १५ ॥ ६ सौगन ॥ १६॥ ७ एकता के ॥ १७ ॥ ८ बाग के पास ॥ १८ ॥

मुक्खय सचिवकी रीति मित, पठये डेरन तत्थ ॥ १९ ॥
*परिखद गो तिथि पंचमिय५, सुखराम सु धात्रेय ॥
महाराव उम्मेद२०५।१सौं, मिलन भयो हितमेय ॥२०॥
जे आदरके सुभट जँहँ, हे बुंदिय सन संग ॥
तेहु मिले कोटेससौं, अपिहित विहित उमंग ॥२१॥
छठी६ दिन परिखद बहुरि, गयो सचिव सुखराम ॥
जुद्ध गज१न मल्ल२न जहाँ, पिक्खे कौतुक काम्र ॥ २२ ॥
सुखरामहिँ पुनि सिक्ख दिय, सप्तमि ७ दिन कोटेस ॥
सिरुपेच१ रु सिरुपाव२ सह, हय३ दिय खास सुहेस ॥ २३ ॥
बहुरि झल्ल१ मरहट्ठ२ के, आलय क्रम सन आइ ॥
दोउ२नतैं सिरुपाव१।२ हय३।४, प्रीति रीति मित पाइ ॥२४॥
पुनि सुखराम सुकाम किय, नगर नाँनता आनि ॥
तस संगहि पठयो तिलक, महाराव हित मानि ॥ २५ ॥
वहँहि लाल१ मरहट्ठ अरु, पुर गैंतापति नाथ २ ॥
लैं टीका सुखरामसौं, मिले चलन सब साथ ॥ २६ ॥
दुव२ तुरंग सिरुपाव दुव२, इक्क१ गज भूखन एक१ ॥
बुन्दी आइ निवेदि यह, इन किय प्रनति अनेक ॥ २७ ॥
नाथ१ हिँ लाल२हिँ नाम प्रति, इक१इक१हय१।२सिरुपाव३।४
दे बुन्दिपपति सिक्ख दिय, सचिवन कथन स्वभाव ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याही सक इक गुन धृति१८३१अंतर, परयो मार लखनेऊ ऊपर
टेक अमोघ रुहिल्लन टोला, दुखित करयो सु आसिफुद्दोला २९
तब नवाब समुचित लखि त्रायक, किय अंग्रेज स्वकीय सहायक

॥१९॥*सभा में१स्नेह के साथ ॥२०॥ २ प्रसिद्ध और उचित उमंग से ॥२१॥२२॥ ३ श्रेष्ठ हींसनेवाला घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ४ जिन का हठ खाली नहीं जावै ऐसे रुहिल्लों के समूह ने ॥ २९ ॥ ५ उचित रक्षक देखकर

जब नबाब दिय मुख्य जिलाका, इनहिँ बनारस नगर इलाका३०
लखनेऊ पति प्रथम दब्बि लिय, रंग कासिका सो अब इम दिय
पट्टु कंपनी देस वह पायो, अमल बढत तबतैं इत आयो ॥ ३१ ॥
इहिँ नबाब या१८३१ ही सकमैं इत, फैजाबाद रहनसों तजि हित
पुर लखनेऊ रहन समुझि प्रिय,करि थिति सोहि राजधानी किय३२
दोहा—चरन द्वारकाधीसके, इत परसन चहुवान ॥
याही सक अगहन१ असित२, श्रीजित किय प्रस्थान॥३३॥
दरकुंचन अजमेरु१ व्है, अरु श्रीपुष्कर२ न्हाइ ॥
अग्ग चलत मरुईसके, सचिवन अटके आइ ॥ ३४ ॥
करी अरज रट्ठोर नृप, रक्खत मिलन उमंग ॥
सुनि श्रीजित गो जोधपुर३, सत्थ अलप लै संग ॥ ३५ ॥
मरुप आइ सम्मुह मिलि रु, पुर लैगो पधराइ ॥
रहि कछु दिन पुनि सिक्ख लहि, पहुँच्यो सत्थहिँ आइ ३६
तदनंतर हंकत सजव, दिय संचोर४मिलान ॥
धरनधिर५ दरसन कियउ, पुनि अविरत प्रस्थान ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

बावगाम ६ अभिधान नगर पहुँचिय पुनि श्रीजित ॥
ताके नृप चहुवान नाम गजसिंघ ठानि हित ॥
महमानी बिधि मंडि मन्नि सम्मद सुचिमानस ॥
करे नजर हय दोइ२ ते न रक्खे वैखानस३॥
झंझाम७ होइ दरकुंच तिम आडेस्वर८ विश्राम लिय ॥
बलिँ ईस जजर्न बरनाँ९बिरचि तीकड़१०जाइ मिलान दिय॥३८॥

---

१ अपने जिले का॥३०॥ २ काशी नगर ॥ ३१ ॥३२॥३३॥ ३ मारवाड़ के राजा के ॥३४॥३५॥३६॥ ४ निरन्तर गमन किया ॥ ३७ ॥ ५ उज्वल मन से हर्ष रचा ६ वानप्रस्थ (श्रीजित) ने ७ फिर ८ महादेव का पूजन करने को ॥ ३८ ॥

तीकड़१० सन करि कुंच चल्यो प्रातीच्यं मग्ग चलि ॥
नगर मोरवी ११ जात मिल्यो जद्दव सम्मुह चलि ॥
जाड़ेचा नृप वग्घसिंह रक्खन निस हठ किय ॥
तदपि रह्यो नहिँ तत्थ जानि मग मिजल अल्प जिय ॥
कछु दूर वग्घ१ पहुँचाइकेँ कति हय१ आयुध२ भेट किय॥
लै इक्क सक्कि तिनमाँहिसोँ जाइ टकार१२मिलान दिय।३९।
चढि टकार१२ सन चलत इक्क जद्दव मग अंतर ॥
राजकोट१३ पुर नाह बंस जाड़ेच्च धुरंधर ॥
नाम कुंभ किय नजर आइ सम्मुह सु न रक्खिय ॥
तदनु बीरपुर१४जाइ सिँबिर रचना हित अक्खिय ॥
रहि रत्ति बहुरि हंक्किय सजव इक१ मुकाम मग मध्य करि
रैवत१५गिरीस तीरथ रुचिर परसन पत्तो प्रीति धरि ॥४०॥

॥ दोहा ॥

जूनाँगढ१५ डेरा विरचि, अप्प चढ्यो गिरि आइ ॥
रैवत१५ के सब पुन्यथल, पिक्खे सम्मँद पाइ ॥ ४१ ॥
हनुमतधारा१ होइ द्रुत, अंबा२ दरसन कीन ॥
परसी ओघड़पादुका३, पुनि गिरि चढत प्रवीन ॥ ४२ ॥
बहुरि दत्त आत्रेयके, कुंड४ आचँमि१ रु न्हाइ२ ॥
परसी ताकी पादुका५, अचर्ल शृंग सिर जाइ ॥ ४३ ॥
पांडव छली ६ आइकेँ, तँहँ धन गुप्त चढाइ ॥
न्हाइ अपरस्मृतिकुंड७ पुनि, पत्तो डेरन आइ ॥ ४४ ॥
जूनाँगढ१५ सन चढि सजव, दरकुंचन चहुवान ॥
सरित गोमती१६ जाइ किय, माघ११ अमा३० दिन न्हान४५

१पश्चिम दिशा के मार्ग २मिजल छोटी जानकर ३बरछी ॥३९॥४डेरा करने को कहा ५ पर्वतों का पति (पर्वतराज)॥ ४० ॥ १ हर्ष पाकर ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ७ आचमन करके ८ पर्वत के शिखर पर जाकर ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

श्राद्ध सहित उपवास करि, डेरा तत्थहि रक्खि ॥
ज्योतिर्लिंग शिव११ जजनं[1]किय, अप्प जाइ हित अक्खि४६
सनि७ वासर जुत माघ११सित१, तिथि चउत्थि४बट तत्थ ॥
पूजि नागनाथेस[2] पुनि, आयो डेरन अत्थ ॥ ४७ ॥
तिथि सप्तमि७ कुज[3] दिन तदनु, रामहड़ा१७ पुर जाइ ॥
दूजे२दिन चढि पोतैं[3] किय, सागर१८ गमन सुभाइ ॥४८॥
[4]मज्जन संखुद्धार१९ करि, जात निसा इक१ जाम[5] ॥
द्वारकेस हरि २० दरस किय, किय तँहँ च्यारि४सुकाम ४९
[6]रवि१जुत द्वादसि१२माघ११सित१, पुनि चढि नाव पधारि॥
गोपीपल्वल१ न्हान हित, पहुँच्यो विहित बिचारि ॥ ५० ॥
डेरन दिस साँसि[7]दिन सुरयो, घटिय पंच५ निस जात ॥
[8]काबाभिध तँहँ [9]वन्य जन, घल्लत हुव मग घात ॥ ५१ ॥
गहन दुरपासन तुंग[10] गिरि, बिच [11]कापथ अति घोर ॥
श्रीजित सन काबन सरिसैं[12], रचिय तत्थ रन रोर[13] ॥ ५२ ॥

॥ छप्पात् ॥

तरि इच्छित कर तौन बिसम मम मंतुं[14]कार बनि ॥
काबनके अधिराज रचिय घमसान नगम्मनि[15] ॥
अद्दिन चढि दुहुँ२ ओर तुपक१ तीर२ सु झुकि झारत ॥
इंकिय न गिनंत[16] हहु६१ कलह सुभटन हलकारत ॥
गोलि१न दुरसार कुट्टत तुरग बान२बिसंत[17] बिल उरग[18] जिम॥
चोटन सिपाह घोटन[19] गिरत पारावंत[20] लोटन प्रतिम ॥५३॥

१पूजन किया ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ २ मंगलवार ३ नाव में चढकर ॥ ४८ ॥ ४ स्नान ५पहर रात जाने पर ॥ ४९ ॥ ६ आदित्य वार सहित ॥ ५० ॥ ७ सोमवार के दिन ८ काबा नामक ९ वन मनुष्य ॥ ५१ ॥ १० दोनों ओर ऊंचा पर्वत ११ बीच में बुरा मार्ग १२ क्रोध सहित १३ भयंकर युद्ध रचा ॥ ५२ ॥ १४ अपराध करनेवाला १५ नगम्मनि नामक काबों (लुटेरों) के पति ने १६ उनको नहीं गिनकर १७ घुसते हैं १८सर्प के समान १९घोड़े २०कबूतर लोटने के सदृश॥५३॥

संगव्है राउतके[1] चेर सो सुनि दोरि कही निजस्वामिसौँ सत्वर॥७॥
मानि[2]ते सेसह्यो राउत पै सुनि दर्प्पको[3] वैन कह्यो जसवंत[4] सु॥
[5]वंहसोँ ताकहँ पीछो बुलाइ वंच्यो नहिँ तोवस मो सुत धी वसु ॥
जेठो१ कुवेर१ छमाजुत पै[6] लहुरो सवसोँ यह लाल अहो अँसु ॥
रावरे लैन बिधी रचिहै पुनि धीजिहोतो अव छीजिहो ज्यौँ पसु।८।
राउत वैन ए राउतके सुनि आयो निगूढ बिरोध सम्हारिकैँ ॥
[10]राउत अंत अनंतर रान कुवेर गिन्यौं तिहिँठाँ सतकारिकैँ ॥
भो अरिसिंह उहाँ जव भूप करयो जसवंत सुमंत्री बिचारिकैँ॥
केहरि सूनुनसौँ[11] यौँ कह्यो तुम कह्हु काल स्वगेह सिधारिकैँ।९।
साँझ हवेली सलूमरिकी यह सासन[12] राउत१ रान२को आवत॥
रातिसो काटी दुखी रहिकैँ कहिकैँ खल सो नृपको बहिकावत॥
लै सब भ्रातन प्रातही लाल[13] महा ठिग ड्योढी गो सोक मचावत॥
ऐसैँ दई नृपकौँ अरजी क्षमिहै हम ह्वै[14] प्रभुके पय पावत ॥१०॥
स[15]धँके जावनको नहि सोक पै जैहैँ अहो प्रभुकौँ लखि जीवत ॥
वज्रसे ए सुनि लालके वैन वढ्यो सवके मन धोका चढ्यो वत॥
सोदर माँहि बुलाये सबै मिलवे लगी सीख तहैँ छलके मत ॥
स्याल[16] सो मारिच चूरन लेस छुवाइकैँ नैनन रोयो वृथा छत ।११।
पूछैँ[17] घनी हिचकी भरि पापि[18] कह्यो अब दासतो जावत गेहकौँ ॥

भार देता है १ रावत केशरिसिंह के चाकर ॥ ७ ॥ २ केशरिसिंह के प्राण कुछ ही बाकी थे तोभी ३ मार्ग में से जसवन्तसिंह को ४ कहा ५ हे बुद्धिमान मेरे पुत्र तुम्हारे भरोसे पर नहीं हैं ६ परंतु यहां छोटा पुत्र लालसिंह ७तुम्हारे प्राण लेने की आरचर्य युक्त ८ विधि रचेगा ॥ ८ ॥ ९ जसवंतसिंह, केसरिसिंह के ये वचन सुनकर निश्चय ही गुप्त वैर विचार कर आया १० केशरिसिंह के मरे पीछे ११ केशरिसिंह के पुत्र से ॥ ९ ॥ १२ जसवन्तसिंह और महाराणा का हुक्म १३ बड़ा ठग लालसिंह १४ स्वामी के चरण छू (स्पर्श) कर ॥ १० ॥ १५ घर जाने का १६ वह गीदड़ (ठग) मिरच का चूर्ण थोड़ा सा नेत्रों के लगा कर विना घाव रोया ॥ ११ ॥ १७ बहुत पूछने पर १८ पापी ने

नैक *विविक्त मिलैंतो †निदान दिखाइ कहैं सुभ व्है प्रभु देहकों॥
भीत ‡मनोवस सो सुनि भूप निगूढले[1] पूछे जनावत नेहकों ॥
लंबे निसास कह्यो तब लाल महा ठिग छोरत अश्रुन मेहकों ॥१२॥
जो प्रभु मंत्री करयो जसवंत सो बालिस[2] स्वामिसौं द्रोह विचारत॥
पुण्यसौं आपसो पाये प्रभू हम पाये[3] सबै सुख यामें निहारत ॥
पापिनी जीभतो काटीपरैं पर पापी स्वघातपैं[4] हाथपसारत ॥
नाथके[5] आनि पितृव्यक नाथ धनी करिहै यौं कहै हमैं[6] मारत॥१३॥
पायो हुतो इस[7] लेख प्रमानको वृष्टिमैं भिंजन्न सुतो बिगरयो गयो ॥
सत्यकरैं हम रावरे सौंह नतो स्रुरनौं[8] जो प्रबोध[9] परयो गयो ।
हेरतहे पुनि पैबो प्रमान इतेनिच काढिही दैवो अरयो गयो ॥
पेखिबो यातैं चहयो प्रभुको रु कहयो प्रभुतो अब[10] रंपात[11] करयो गयो ॥१४॥

यामैं प्रमान लखो बँ यहै जसवंतसौं गूढ कहो तुम जाइकैं ॥
पापी पितृव्यक[12] वग्घपुरेस निपातहु नाथ[13] बिसास बढाइकैं ॥
जो तुम यौं न करो जब तो हमरे तुमनौं[14] यौं गिनैं हम हाइकैं ॥
एह करैं जसवंत तो आप कृपाजन देहु हमैं निकसाइकैं ॥१५॥
दासनकों[15] अथवा दै निदेस निहारहु नाथ पितृव्य निपातितें[16] ॥
चामर१ छत्तरन लैवे चल्यो मन जाको अहो अधमाधम सम्मित[17] ॥

---

* एकान्त † इस रोने का कारण दिखाकर ‡ मन में भय वस कर १ एकान्त में लेकर ॥ १२ ॥ २ वह मूर्ख ३ हमने इसीमें सब सुख पाये हैं ४ आप को मारने पर ५ आप के काका नाथसिंह को स्वामि बनावेगा ६ इसकारण हमको काढता है ॥ १३ ॥ ७ इसके प्रमाण का लेख (पत्र) पाया था सो तो वृष्टि में भीज कर बिगड़गया ८ कानों में ९ प्रसिद्ध किया गया ॥ १४ ॥ १० अब ११ गुप्त रीति से १२ पापी बागोर के पति हमारे काका १३ नाथसिंह को मारो १४ तुम हमारे नहीं हो ॥ १५ ॥ १५ चाकरों (हम) को हुकम देकर १६ नाथसिंह को मराहुआ देखो १७ नीच के सदृश

स्वामिको सासनहीं सिर लै हम मारैं पिताहुकौं धार नहीं हित ॥
भीम कुबेर तनैहू भन्यौं यह काका कह्यो सुहि जान्यो असंकित१६
मनस्वी हुतो अरिसिंह तथापि सिख्यो सुहि केहरि नंत्तियकी सुनि ॥
आसु हवेली पठाइ इन्हैं चलचेत न सोच्यो सुनी निहचै चुनि ॥
जो निज काका१ तथा जसवंत परस्पर मित्रहे हेरी सुपै पुनि ॥
देवगढेस गिन्यों बदल्यो नृप नंदसौं मल्लिपनाग जथा मुनि ॥१७॥
सो जसवंत हुतो मन सुद्धहि चित्तहु स्वामिसों द्रोह न चाहत ॥
एक सलूमरि पैं अनरूयो१ बहुरयौं हित नाथके साथ निबाहत२॥
कालके जालमैं यौं उरझ्यो सकली अरिसिंह भली न समाहत
जालमँ कोटा रच्यो बिधि जो सु उदैपुर भो उलटी अवगाहत१८
जसवंत बिविक्त बुलाइ जहाँ अरिसिंह भन्यौं मम काका अहो ॥
प्रतिकूल रहैं रु चहैं प्रभुता तिनकौं तुम गंजि इनौं१ कि गहो२॥
जसवंत कह्यो प्रभु आप जहाँ कछु द्रोह प्रतीति प्रमान कहो ॥
नहितो बिपरीत पितृव्य नहैं बहिके कहुँ क्यौं गुरुहत्या वहो १९
अरिसिंह कह्यो बिनु मंतुहु एह कह्यो हमरो तुम ज्यौंत्यौं करो॥
प्रतिकूल तुम्हैं नहि जानिपरैं हम जानत यातैं कलेस हरो ॥
जसवंत कह्यो हम मित्र जहाँ इम सासन मोहिकौं क्यौं दै अरो
यह ओरकौं सौंपिकैं मेरो उहाँ ध्रुव सूचन जानिकैं कारा धरो२०
सुनिकैं यह राउतकी अरिसिंह स्वपच्छमैं जानि सलूमरिके ॥

१ कुबेरसिंह के पुत्र भीमसिंह ने भी कहा ॥१६॥ २ अरिसिंह धीर था तोभी ३ केसरीसिंह के पोते की बात सुनकर ४ चलायमान चित्तवाले महाराणा ने ५ नन्द नामक राजा से चाणक्य मुनि बदला था जिस प्रकार ॥ १७ ॥ ६ नाथसिंह से स्नेह रखता था ७ जालमसिंह झाला ने कोटा में रची थी वह रीति ॥ १८ ॥ ८ जसवन्तसिंह को एकान्त में बुलाकर ९ आश्चर्य युक्त १० उदय पुर का स्वामीपन चाहता है ११ बड़ा पाप लेते हो ॥ १९ ॥ १२ बिना अपराध हैं तो भी १३ कैद करो ॥ २० ॥

जसवंतसौं भाख्यो नमानों जहाँ करिहैं न स्वपच्छमैं केहरि[1]के ॥
तनि व्याज[2] बिसास यों सिक्ख दै ताकों बलिष्ठ[3] सहायहुमैं बरिके
बलिं[4]वा ठिगकौं ढिग आप बुलाइ कह्यो अरि[5]मारि तथा औंरिके २१
मत आपुनों जो न चहैं मनसौं सुहि सत्रुको पच्छ[6] समाहनौंहै ॥
बलि बग्घपुरेस[7]के संग बली व्है[8] हरैं उतकों सुपे हाहनौंहै ॥
यह देवगढेसहु छली[8] अमात्य बनीपैं बिगार निवाहनौंहै ॥
तुममाँहिसौं जो फटि सूचैं[9] तिन्हैं दुखदा[10]ता सुपै दव दाहनौंहै२२
पहु रान बिसासके यौं चउ पंच दुहुधाँ[11] पटु लालके संग दये॥
जसवंतसौं छानैं प्रबोधि[12] यों जे पहु बग्घपुराधिपपैं[13] पठये ॥
वह धर्म्म बिचच्छनैं[14] नाथ अहो भयहीन हुतो तँहँ सज्ज भये ॥
पठई कहि भूपतिके पैंठये[15] इह आपे करैं कछु मंत्र अये ।२३।
वह बग्घपुराधिप नाथ उहाँ क्रम नित्यसमै सिवपूजा करैं ॥
इहिं ताही समै ढिग आवनकी पठई कहिनौंतो[16] बिलंबपरैं ॥
इक लालकौं आवनदेहु इहाँ हठ जानि यौं नाथहु भाख्यो हरैं[17]
सठ जान्यौं मिल्यो यह ईंछसमै[18] बहुमैं हम घातककयौं डरैं२४

१ केसरीसिंहवालों के पक्ष में तुमने निकाल देने की कही सो नहीं करेंगे २ झूठा विश्वास फैलाकर ३ बलवान ४ फिर उस ठग लालसिंह को पास बुलाकर ५ शत्रु (नाथसिंह) और उसके पक्षवालों को मारो ॥ २१ ॥ ६ शत्रु के पक्ष का कपड़ना है ७ बागोर के पति के साथ ८ छली ९ नाथसिंह को सूचना करदेवे तो १० दुःखदाई है जिसको भी अग्नि में जलाना है ॥ २२ ॥ ११ देवगढ के रावत जसवन्तसिंह और बागोर के महाराज नाथसिंह, इन दोनों ओर से चतुर अर्थात् उक्त दोनों ओरवालों को यह छल नहीं जतलाने वाले को जसवन्तसिंह के छाने १२ समझाकर १३ बागोर के पति के ऊपर १४ चतुर १५ महाराणा के भेजेहुए ॥ २३ ॥ १६ इस कहने में तो विलंब होता है परन्तु उसने शीघ्रता की, अथवा लालसिंह ने कहलाया कि आप से कहना है जिसमें विलंब होता है १७ धीरे से कहा १८ अनुकूल (चाहाहुआ) समय ॥ २४ ॥

खिनमैं तँहँ जाइ महाखलकी बलकी मनसुद्धपैं तेग बही ॥
सिर चाहत सूरको मानि मनों सिरपैं सिवकी रुचि जाइ रही॥
सु महीप उमेद१९८४प्रभुत्वे समैं क्रम प्रस्तुतठौंर सब वत्त कही
अब जैपुर राज्य उदंत इहाँ चहि सूचन सो पुनरुक्त चही ॥२५॥
दोहा–काका घातक सोहि करि, लघु१ गुरु२ संगत लाल ॥
भैंसरोरगढ दै भये, कुहकैं सु रान कृपाल ॥ २६ ॥
जिम चमके जसवंतकौं, निजखिन पाइ निकारि ॥
भय बिरहित अरिसिंहभो, ध्रुव भीमहिं निज धारि ॥ २७ ॥
भाखी जिम पहिलैं भये, सहित रान संग्राम१ ॥
जगत२ पता३ अरु राजहँरि४, ते न बचे बिधि तार्म॥ २८ ॥
पंचम५ अब लहि पट्टकौं, भो अरिसिंह भुवाल ॥
सोपै जानहु प्रभु सुमति, क्रम समं भूतहि कालं ॥ २९ ॥

॥ राजसवतिका ॥

केहरि१को सुत जेठो कुबेर२ नहो तँहँ भीम१सु हो तस नंदन
ताको पितृव्य छली इम तत्थ महाखल लाल कहायो महामन
जैपुर व्याही सुता जसवंत सुही अवलंब बिचारि कियें सन ॥

१ रावराजा उम्मेदसिंह के राजापन के समय में क्रम पूर्वक २ प्रकरण के स्थान पर आगे की सब बात कही है ३ अब यहां जयपुर राज्य का वृत्तान्त चाह कर फिर इस बात को कहना चाहा है ॥ २५ ॥ ४ काका के मारनेवाले उस लालसिंह को छोटे से बडा बनाया अर्थात् छोटे उमरावों में था जिसको बडे (सौलह) उमरावों में किया ५ उस ढग पर राणा कृपालु हुआ ॥ २६ ॥ ६ भय से दूर हुआ, निश्चय ही सलूंबर के राउत भीमसिंह को अपना जानकर ॥ २७ ॥ ७ राजसिंह ८ तहां ये नहीं रहे ॥ २८ ॥ ९ क्रम से १० भूत काल (गत समय) ही जानो ॥ २९ ॥ केशरीसिंह का बडा पुत्र कुबेरसिंह उस समय नहीं था, उस का पुत्र भीमसिंह ही था, जिसका काका लालसिंह इस प्रकार ११ धीर कहलाया १२ उपाय से

भीत उहाँ पहुँच्यौ भयतैं सुत राघवदासकौं सौंपि धरा धन[1]॥३०॥
सूनुगुपाल पुरोगे[2] समेत घनैं भय गो जसवंत सुताघर[3] ॥
पुत्री[4] समेत उभै२सुत पुत्रीके[5] आपुनैं जानि प्रधान बन्यों अैर[6] ॥
यौं अरिसिंह सलूमरि सासक भीम प्रधान करयो निज दै भर॥
आपुनैं ओरँ गिन्यों[7] नहि याहित[8] पंच रु रानार रचे न परस्पर॥३१॥
याहितैं पीछैं बिरोध उठयो सिसुपै[9] प्रकटयो वह रत्नसनामक॥
कुंभिलमेरु निवास करयो रु धरयो बटि अर्द्ध२ धरा१धन२धामक३॥
व्है गयो नास हजारनको रन दक्खिन२।३तैं दुव२बेर बिनासक[10]॥
सो तिम पीछैं हन्यों अरिसिंह भयो नृप हंम्म[11] बढे भट भ्रामकों[12]।३२।
जैएरहो तबतैं जसवंत समाश्रैय[13] पाइ सुता१रु सुतासुत[14]२ ॥
रानीहू राखि पिताँ[15]ही प्रधान भुजा तस राज्यको भार दयो द्रुत[16]॥
ओ इक१ बिप्र१ महावत२ इक१ उभैर भुज१।२ ए रु रह्यो सिर

२।३ राउत ॥

राज्यको काज सिसु[17]प्रजारानिप१जो करैं सो सब या त्रिक३संजुत
ए कछवाहनके उरमैं नहिं मावत तीन३ जुते धुर नायक ॥
च्यारि४नकों इम कैद चहैं दुर्बिधा[18] बटि द्वैर२द्वैर२जथा दुखदायक ॥

---

१ अपने पुत्र राघवदास को देवगढ का ठिकाना और धन देकर ॥३०॥२ पहिले गयेहुए अपने पुत्र गोपालसिंह सहित३पुत्री के घर (जयपुर) गया४अपनी पुत्री [माधवसिंह की राणी] और ५ पुत्री का पुत्र दोहिते पृथ्वीसिंह और प्रताप-सिंह सहित अपना जानकर ६ शीघ्र ७ दूसरे को अपना नहीं समझा ८ इसीकारण मेवाड़ के पंच सरदार और राणा अरिसिंह परस्पर नहीं राचे [रंगे] ॥ ३१ ॥ ९ कृत्रिम बालक रत्नसिंह भी पैदा हुआ १०. नाश करनेवाला ११ हम्मीरसिंह राणा हुआ १२ धूर्त्त उमराव बढे ॥ ३२ ॥ १३ श्रेष्ठ आश्रय पाकर १४ बेटी और दोहितों का १५ पिता जशवंतसिंह को ही सचिव रखकर १६ शीघ्र १७ बालक सन्तानवाली रानी ॥ ३३ ॥ चारों का १८दो भाग करके यथासंख्य से दुःखदायक कैद किया चाहते हैं जिनमें राजा पृथ्वीसिंह की

न्यारे नरेस प्रसू१रु नरेस२ ए भिन्न करैं हगकैद अभापक ॥
विप्र१३ रु मिच्छ१४ छली बलसौं धरि कारा करैं निज कज्ज
विधायक ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

दिट्ठिकैद विच ए दुरघाँ, रानी१ अरु नृप २ रक्खि ॥
द्विज१ रु मिच्छ२ कारा दुवरहि, सठ डारहिं सब सक्खि३५
नाँनाँ१ मंत्री नृपतिको, सुत२ जुत ताहि निकासि ॥
क्योंन अमल अपनों करैं, तेगन बल खल त्रासि ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

राजाउत१ नाथाउत२ थंभ राज्यके जे थिर,
प्रीत बनि अर्थपैं दिखाइ हठवारी प्रीति ॥
रानी१ अरु राजा२ भिन्न भिन्न दुव२ ठाम रोहि,
नाँनाँ१अरु माँमाँ२द्वैरनिकासिवो सम्रुझि नीति ॥
विप्र१रु महावत२कों भिन्न ठाँ निगडबंधि,
आपुनों सम्हारि राज्य टारहिं अरिनईति ॥
ऐसी सोचि कूरम बिचारैं निज दाव आयो,
जानैं भाव आयो मुख्य रहिहैं सवन जीति ॥ ३७ ॥
माधवमहीप लघुता१सों गुरुता२मैं लाइ,
आगैंखुसहालीराम१ सो द्विजं[12] खँडेलवार ॥
मंत्री करि मान्यों पुनि रानीसों कह्यो मरत,

१माता और राजा को २नजर कैद जुदे करदेवें और खुशालीराम बोहरा और ३फीरोजखां महावत को ४कैद करके विधान पूर्वक अपना कार्य करैं ॥ ३४ ॥ ५ नजरकैद ६ कैद ॥ ३५ ॥ ७ राजा के नाना देवगढ के रावत जशवंतसिंह को पुत्र सहित निकाल कर ८ तरवारों के बल से ॥ ३६ ॥ ६ रोककर १०कैद करके ॥ ३७ ॥ ११ राजा माधवसिंह ने १२ खुशालीराम ब्राह्मण को छोटे से

नग्न (नग्न) होकर भागा ११ ५-
के मार्ग में ॥ ५५ ॥ १४ पर्वत के दांता ...
चारों से १७ पैदल १८ रुधिर १६ तालावों में जाना चाहता है ॥ ५२ ॥

याके बस दुर्ग१ रु खजानाँ२ नीति अनुसार ॥
दूरकरि या१कों नहिं ओर२ कों उचित देबो,
यातैं हुतो ताही के अधीन उक्त अधिकार ॥
त्यौं फीरोज२ नाम सु महावत बढायो तानैं,
द्रव्य कर लावन हुतो सो तहसीलदार ॥ ३८ ॥
राजसिंह ३ नामक हमीरदेव कूरमके,
बंसमैं हुतो जो लघुपंतिबिच वारगीर ॥
नासरदानैर दै बढायो सोहु माधवनैं,
सेनानी बनायो स्वामिधर्मके सछुम्कि सीर ॥
माधवके मरत उतारयो अधिकार याको,
पीछैं सब ओर लखी प्रसरी प्रजाहिं पीर ॥
सेखाउत पीछो लै मनोहरपुरहिं सजे,
सोहि तब सेनानी बहोरि कीनौं गिनि वीर ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामिधर्मपन दर्प सठ, राखतहो यह राज ॥
राजकाज बिगरत रह्यो, लोपि वहहु वह लाज ॥४०॥
राजाउत वाहि न रुचत, देखि पट्ट दायाद ॥
वह३।१ न रुचत राजाउतन, बहुरा२ जुत नुत वाद ॥ ४१ ॥
कीरतिसिंह म्कलायको, ईस जु पुब्ब अनेह ॥
बहुरी द्विज किय हीन बल, वैर बहत अब एह ॥ ४२ ॥

बडा बनाकर १ गढ २ हासिल का धन लाने को ३ छापना भार आप उठाने-वाला छोटा नौकर था ४ सेनापति ॥ ३९ ॥ यह ६ मूर्ख ७ राजसिंह स्वामिधर्मिपन का घमंड रखता था ॥ ४० ॥ ८ जयपुर के पाट के दायभागी होने के कारण राजावत उसको नहीं रुचते थे ९ पडोरा खुशालीराम सहित १० स्तुति के वचनों से राजावतों को नहीं सुहाते थे ॥ ४१ ॥ ११ पहिले समय में १२ वह वैर रखता था ॥ ४२ ॥ ... पृथ्वीसिंह की

अग्गैं श्रीजित अडर१ वहुरि सत्रुन रन रुक्कियर२ ॥
अग्गैं श्रावन५ [1]श्राम१ भ्फरन उत्तर४।७ घन भ्फुक्कियर२ ॥
अग्गैं [2]मारुति१ जांववान वहुरि सु विरुदायउ२ ॥
अग्गैं वनपति [3]सरभ१ वहुरि अल आर्लिय लगायउ२ ॥
अग्गैं [5]सुरेस विक्रम अतुल१ कर [6]दर्धाचिकीकस लयो२ ॥
इक्कल [7]गराह सिंहन असह१ वलि कुँकुर गन बिंटयो२ ॥५४॥
जदपि क्रोध१ लोभा२दि तजे बुंदीपुर संगहि ॥
सहसा तदपि मिलाइ दयो जुज्भन विधि जंगहि ॥
कावन अनुचित कहिय पुराप [8]जत्ता फल१ पावहु ॥
[9]मत्तां२ दै सब हमहिं [10]अंदल तरु होइ पलावहु ॥
इहिं [11]प्रसभ दुष्ट करि दुव२अनिय [12]सैलन चढि दुहुँ२श्रोर सन
मग [13]द्रोनि चलत श्रीजित मुदित रन दुव२ दिस लग्गे करन॥५५॥
गिरि [14]दंतक डगमगत टोल टोलन लगि टक्कर ॥
तुट्टत लघु तरु१ [15]तंवर२ रुंड डंकत भरि डक्कर ॥
आनि मिलत कति [16]असिन वहुरि भज्जत चढि पब्वय ॥
पँत्ति लगत तिन्ह पिट्ठि जाइ मारत धारत जय ॥
उत्तरि दुव२ओर [17]अद्रिन [18]रुहिर द्रवित द्रोनि बट्ट सु वहत ॥
पाउस प्रभाव जनु वुट्टि जल चलि खालन [19]तालनि चहत॥५६॥
अति साहस लखि अरिन तुपक श्रीजित अब भ्फल्लिय ॥

आगे ही १ श्रावण मास था और फिर उत्तर दिशा का मेघ झुका आगे ही २ हनूमान था और फिर जांववान ने विरुदाया आगे ही३केसरीसिंह था और ४फिर विच्छू ने डंक लगाया पहिले ही अतुल पराक्रमवाला५इंद्र था और फिर ६ हाथ में वज्र लिया ७ आगे ही सिंहों को असह होनेवाला एकल सूअर था और फिर कुत्तों ने घेरा ॥ ५४ ॥ ८यात्रा के ९ मात्रा (धन) १० विना पत्तों का वृक्ष (नग्न) होकर भागो ११ हठ १२पर्वतों पर १३ दोनों पर्वतों की छेटी (नके) के मार्ग में ॥ ५५ ॥ १४ पर्वत के दांतों ऊंचे उभरे हुए पत्थर १५ टूंठ १६ तरवारों से १७ पैदल १८ रुधिर १९ तालावों में जाना चाहता है ॥ ५६ ॥

दै पब्बय पर दिट्ठि[1] घात मालिक[2] सिर घल्लिय ॥
सेस[3] नगम्मनि१ आयु तास भिन्नन गुटिका हुव ॥
भट तस ढिग हुव२ भेदि भक्खि कालिकें[4] पविसी भुव ॥
पहुँचे ति२ हड्ड६१ हैवर[5] पयन रय हत बिमत निरस्त[6] रटि ॥
मनु मद्य मत्त आये उभय२ आधोरँन[7] इभसन उलटि ॥५७॥

॥ दोहा ॥

इक्क१ ओर कानन अधिप, हुतो नगम्मनि१ तत्थ ॥
सो श्रीजित सय[8] लखि सफल, भीरु भज्यो सह सत्थ॥५८॥
तास पितृव्यक[9]२ अपर[10]२ दिस, सज्ज हुतो रन सीर ॥
गोलिन ओलन गैंव[11] वह१, वरस्यो घन२ विधि वीर५९
भट चालुक खदिरौट[12] तँह, निज हय गिरत निहारि ॥
कानन पति काका हन्यो, रचि दलेल अति रारि ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

काननपति काका सु हुतो गिरि सिर दक्खिन२।३ दिस ॥
ताकै चालुक तुपक लगी नव९ घटिय जात निस ॥
आइ परयो सु अचेत उलटि अधभुम्मि[13] अधोमुख ॥
मनु पट्टी सन मलपि नटी उलटी रयकी[14] रुख ॥
सिर तास कट्टि मारकें[15] सुभट कंदुक[16] कौतुक करन लिय ॥
इम हड्ड६१माघ११सित१मदन अह१३कानन सन रन बिजय किय६१

॥ गीतिः ॥

कानन पतिको काका१ मरतहि खिलें[17] मंद भीरु भज्जि गये ॥

१दृष्टि २ काबों के मालिक पर ३ उस नगम्मानि की आयु बाकी थी जिससे ४ कलेजा खाकर ५ हाडा के घोड़े के पैरों में ६ मारे ऐसा कहकर ७ महावत ॥ ५७ ॥ ८ हाथों को सफल देखकर ॥ ५८ ॥ ९ उसका काका १० दूसरी ओर ११ प्रत्यञ्चा (यहां लक्षणा से बाण जानने चाहिये) ॥ ५९ ॥ १२ खैराड़ नामक देश सम्बन्धी (खैराड़ा) ॥ ६० ॥ १३ नीचे की भूमि पर १४ वेग से १५मारनेवाले श्रेष्ठ वीर ने १६गेंद का खेल करने को ॥ ६१ ॥ १७बाकी के मूर्ख

श्रीजित जस रन एका, पूरन ससि विस्तरी जय पताका ॥६२॥
*नृप दस१० †सागस मारे, करि घायल बीस२० पाकुल बिडारे
तिन ‡कुखापनके न्यारे, मस्तक लै संग डेरन पधारे ॥ ६३ ॥
हुलसि विरचि रन हितको, अमराभिध१ सिलहदार श्रीजितको
इक१ मरयो वह इतको, आहीर उदार समर समुचितको॥६४॥
बाकी लुत्थि२हु आनी, ३वतुरग कुसहालचंद सोमानी ॥
श्रीजितको सो मानी, प्रधानहो कित्ति यौं तिंहिं प्रतानीं ॥६५॥
तीन३ मरे इत१के इय, चालुक्य दलेल१ सिवजि२ इनके द्वै२।
तीजो३ तथा जथा रयं, गंगाधर१।३ अग्निहोत्रि भूसुरको ॥६६॥
सत्त७सुभट गोलि१नसौं, सायक२सौं इक्क१।८इक्क१।९असिवरसौं
ए९घायल हुव तिनसौं, श्रीजित लै सब सम्हारि सिविर चल्यो६७
बीट नगर पति यह सुनि, भूप फतेसिंह कुसल पुच्छनकौं ॥
दूत पठाइ रु पुनि पुनि, सूँची लेजाहु सो भट सहाई ॥६८॥
सो नहि मन्नि रु श्रीजित, अक्खिय तुमरे कहाँ कहाँ रहिहैं ॥
तदनंतर सत्थ सहित, रामहड़ा पुर मुकाम आइ परयो ॥६९॥
तँहँ बीटपुर नृपतिके, भट ८रामहड़ेस आइ रु इम भनी॥
मस्तक तस्कर तंतिकै, देहु व तुमरे न कामहे तासौं ॥७०॥
सुनि यह बिन्नति श्रीजित, दुष्टनके छिन्न सीस दस१० दिन्ने ॥
रामहड़ा१ पतिसौं हित, करि इम प्रतिपंथ अब क्रम्यो प्रांची ७१

॥ दोहा ॥

रामहड़ा१ पुर व्है चल्यो, इम निज आश्रम ओर ॥
कावन पुनि मग रन करत, रचिय असंगल शोर ॥ ७२ ॥

॥ ६२ ॥ * युद्ध में † अपराधी ‡ खुरदों के ॥ ६३ ॥ १ अमरा नामक॥ ६४ ॥ २ लोथ (मृतक शरीर) ३ आदर पाया हुआ ४ फैलाई ॥ ६५ ॥ ५ इसीप्रकार येगवाला ६ ब्राह्मण का ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ७ कही ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ८ रामहड़ा के पति ने ९चोरों की पंक्ति के ॥ ७० ॥ १०पूर्व दिशा को चला ॥७१॥ ११सय॥७२॥

दुव२ घायल इत१के भये, इक१उतको धुर धाइ ॥
आर३ चउद्दसि१४ माघ११सित, रहिय गोमती२ आइ ॥७३॥
बुध४ पुण्णिम१५ दूजे२ दिवस, रक्खिय तत्थ मिलान ॥
भयउ चंद उपराग तहँ, दये उचित सब दान ॥७४॥
वह तत्थहि काबन अधिप, नम्र नगम्मनि१ आइ ॥
श्रीजित अग्गैं जोरि सँय, परयो पाय खिंनपाइ ॥ ७५ ॥
अक्खी यह कुल पूरुखन, विरचि अग्ग रन बाद ॥
अर्जुनसे लुट्टे इहाँ, तबतैं यह मरजाद ॥ ७६ ॥
अब सरनागत रावरे, इह सुनि उचित विचारि ॥
सत१०० मुद्रा१ सिरुपाव २ सह, दिय श्रीजित हित धारि७७
नदी गोमती२ सौं तदनु, बाबाके मठ३ आइ ॥
क्रमि दामोदर दरस१ किय, रान४ मुकाम रचाइ ॥ ७८ ॥
श्राद्ध पिंड तारक५विरचि, दान निगम बिधि दत्त ॥
जद्दव नृप जाड़ेचके, नयेनगर ६ पुनि पत्त ॥७९॥

पादाकुलकम् ॥

जाम जैनन जाड़ेचा जादव, नयेनगर६ जसकण्णां१ धराधँव॥
सम्मुह नांइसक्यो सु बालवय, सचिव आइ इक १ कोस जोरि सँय ॥ ८० ॥
तनि आदर लैगो पुर वह तब, महारूप१ अभिधान सुसाहब॥
रत्ति१रहि सु मानी महमानी, मानी बहुरि न आग्रह मानी८१
महमानी१ ग्रहमानी२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
जामि तत्थ जसकण्णां जनककी, साधन संजम रीति सनककी
पुब्ब समय याको हुव सगपन, सहर जोधपुर रामसिंह सन८२

१ मंगलवार ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ २ हाथ जोड़कर ३ समय पाकर ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ४ वंश ५ भूपति ६ नहीं आ सका ७ हाथ जोड़कर ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८ बहिन ९ सनक मुनि के समान योग साधती थी ॥ ८२ ॥

मूढ़ै वहुरि तिहिँ राज्य गुमायो, पति ओर न यानैं तउ पायो ॥
निज भ्राता१ दिनैं जदपि निहोरिय, तउ न अन्य२ब्याहन मन मोरिय८३
तब गतदेस३ मूढ वह हो तँहँ, पठयो तस डोलाहि रॉम४ पँहँ ॥
जुहि इहिँ ब्याहि तथा जड़ जान्यौं, पुनि लै व्रत यह धर्म प्रमान्यौं८४
पति अपमान इहाँ मन पावत, सोदर घर इम हमहिँ सुहावत ॥
यह कहि नयेनगर वह आई, पति संगति वहुरि न तिहिँ पाई॥८५॥
तिहिँ महमानी प्रसभ तनायो, मन्नी नहिँ पै दुख न मनायो ॥
कच्छी हय जसकर्ण भेट किय, रचत प्रसभ तिनमैं इक१रक्खिय८६
नयेनगर६ बल्लभकुल नामी, हे नत्थेस नाम गोस्वामी ॥
करि तिन्ह दरसन१ भेट २ जथा क्रम, दूजे२ दिनहि चढयो सु अरिंदम ॥ ८७ ॥
बदि २ तँपस्य १२ नवमी ९ जिहिँ बासर, पहुँच्यो पुर मोरवी ७ धर्म पर ॥
तास अधिप सूच्यो सु वग्घ तँहँ, करत भयो हठ पुनि भोजन कँहँ॥ ८८ ॥
महमानी श्रीजित सु न मन्निय, लँचामैं चउ४ काचपात्र लिय ॥
दरकुंचन बदि२ त्रयोदसी१३दिन, आइ रह्यो झंझाम ८व्रतिन ईन८९

घनाक्षरी ॥

जाँतमेर याही पुर कीनोंही मुकाम जब,
चोरननैं चोरयो पल्लीवाल वहुरेको बैल१ ॥
श्रीजित करायो सब रीति अब ताको सोध,
जनन जनाई गहि राख्यो तिहिँ कूटगैल ॥

१मूर्ख २उस स्त्री के भाई आदि ने ॥८३॥३गये हुए देशवाले४रामसिंह के पास ८४ ॥ ५ इस कारण भाई का घर सुहाता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ६ शत्रुओं को दंड देनेवाला ॥८७॥७फाल्गुन ॥ ८८ ॥८भेट (नजराने) में ९ व्रत (नियम) वालों में सूर्य ॥ ८९ ॥ १० जाते समय ११ पर्वतों के संगम के मार्ग (नाके) में

ऐसे हैं वह अजहु चलाइ मन नामी चोर,
जामिक[1] जमाइ फौर[2] फेरहु परिधि फैल ॥
दाव रावरेमैं परिजाइजो असह दुष्ट,
खूटिजाइ तौतो धनिकनको रतहु खैल[3] ॥ ९० ॥
सिबिरके जामिक जमाये गूढ श्रीजितनैं,
चित्तहिं चलाइ पैठो रातिमैं वहहि चोर ॥
चालुक्क दलेल४ खदिराटे५ गुटिका चलाइ,
मारि सुहि लीनों महा चोरनको सिरमोर ॥
लीनों सिर काटि सो दिखायो पुरलोकनकों,
आइ तिन सूची यह सोही दुष्ट नहिं ओर ॥
पीछैं दरकुंच धरनीधर९ पधारि पंथ,
व्है संचोर१० सहर जरूर पहुँचे जालोर११ ॥ ९१ ॥
दूजे२दिन लागो मधु१ मासको असित२ आदि१,
मानों इम जालोर११हि होला१५।१फुल्लडोल१।२ मह ॥
जालउर११ तैं चढि द्वितीया२ दिन धारि जब,
अध्वनीन पल्ली१२ पुर आये अपर्बुद्ध अह ॥
भेजे तँहँ पत्र जोधपुरतैं बिजय भूप,
गेही[10] व्है पधारो गेह थानि इहाँ पानिग्रहैं[11] ॥
मानी सो न मानी[12] दरकुंच मधुं[13] मेचक२की,
एकादसी११ कीनी आइ पुष्कर१३ समस्त सह ।९२।
दरसन१ न्हान२ दान३ तत्थ करि ताही दिन,

१पहरायतों के २ समूह का घेरा ३ दुःख मिटजावै ॥ ९० ॥ ४ डेरे के पहरायत ५ खैराड़े सोलंखी ने गोली चलाकर ॥ ९१ ॥ ६ चैत मास के वदि पक्ष का प्रथम दिन ७ यह मार्ग चलनेवाला पालीपुर में ८ वहीं जानेहुए दिन में ९ राजा विजयसिंह ने १०वानप्रस्थ से गृहस्थी होकर ११ यहां विवाह ठान (कर) के घर जाओ १२ चल मानवाले ने यह बात नहीं मानी १३ चैत्र वदि ॥ ९२॥

मग्ग कछु लंघि मकड़ावली१४ करि मुकाम ॥
दंतधृति१८३२ संबतके चैत१ सित१ आदि१ द्यौंस,
आये इम आपुनैं बरोदिया१५ नगर नाम ॥
रामनवमी ९ के दिन बुन्दी१६ आइ रंच रहि,
धारी रहिबेकी ठानि केदारेस ढिग धाम ॥
बाग१ कुंड२ महल बडे जबै बनाइबेकौं,
दीनौं आप सासन हजारन खरचि दाम ॥९३॥

आर्यागीतिः ॥

इहि बिधि पच्छिम३।५बारी, जात्रा करि बानप्रस्थ३ पनमैं जानैं ॥
बसुधातल बिस्तारी, निर्मल निज कित्ति चंद्रिका इक१ न्यारी ९४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णु सिंहचरित्रे आटोणकोटाकटकपराजितकोटानिष्कासितकोटाबन्धु देवीसिंहधात्रीभ्रातृजसकर्णसहितजयपुरगमनश्रीजिद्राज्ञीराष्ट्रकूटा तनुत्यजनकोटाबुन्दीमन्त्र्यैकमत्यकरणरुहिल्लभीतलखनऊपतिन – ब्वाबस्वसहायार्थांगरेजकाशीपुरप्रदानत्यक्तफैजाबादलखनऊस्वरा– जधानीविधानकृतद्वारकाधीशदर्शनश्रीजित् (उम्मेदसिंह) बुन्दीप्र– त्यागमनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः ॥ ३५२ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ शीघ्र ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें विष्णुसिंह के चरित्र में कोटा के राजवी, देवसिंह का आटोंण में कोटा की सेना से हारकर, कोटा से निकालेहुए जशकर्ण धायभाई सहित जयपुर जाना १ श्रीजित की स्त्री रा- ठोड़ी का शरीर छोड़ना और कोटा व बुन्दी के मंत्रियों का एकता करना २ रुहेलों से घबराकर अपने सहायक अंगरेजों को लखनऊ के नबाव का, काशी पुर देना और फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ को अपनी राजधानी करना ३ श्रीजित (उम्मेदसिंह) का द्वारकाधीश के दर्शन करके पीछे बुन्दी में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ॥२॥ और आदि से तीनसौ बावन३५२मयूख हुए॥

॥ दोहा ॥

जत्ता[1] श्रीजित करन जब, पच्छिम३।५ किय प्रस्थान ॥
तब बुंदी पठयो तिलक, मरुपति विजय समान ॥१॥
इक१ मनि भूखन इक्क१ इभ, दुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
इम टीका पठयो इहाँ, समता[2] रीति स्वभाव ॥२॥
तिलक निवेद्यो आइ तिन, विष्णुसिंह२००१२ नृप अग्ग ॥
दिन्नी हय१ सिरुपावदै, उनको सिक्ख उदग्ग ॥३॥
भूत कथा कछु भाखिपत, पहु[4] अब पाइ प्रसंग ॥
जिम उदंत मेवार हुव, सुनिये तिम हित संग ॥४॥

॥ राजसवत्तिका ॥

अग्गैं उदैपुर रान संग्रामकै धात्री तनै[5] नगराज सुसाहब ॥
केसरीसिंह सलूमरि सासक जो भन्यौं सो भट मुख्य हुतो जब ॥
विग्रह ता१के तथा नगराज२कै बोलनमैं बढतो परिगो तब ॥
मूँछनवारी सिवा[6] कहतो इम राउतकों नगराज मरयो अब ॥५॥
राउतकी करि काँनि तथापि कह्यो तस मानि करयो हित रानतो
सोमरिबे लग्यो केसरीसिंह पटुत्व[7] न पुत्रनमैं पहिचानतो[8] ॥
गो जसवंतहु देवगढेस जहाँ हित पुच्छन संभव जानतो ॥
केसरीसिंह कह्यो तब ताहि रह्यो अब रानकै तूही प्रधानतो ॥६॥
पाटव[9] नाँ ममपुत्रनमैं तिन मूढनकी अब लाजहै तोकर[10] ॥
सो सुनिकैं बिसवास बढाइ घरीक रह्यो जसवंत चल्यो घर ॥
पंथमैं भाख्यो नहै निज पूत भरोचित यौं अब देत हमैं भर[11] ॥

१ यात्रा ॥ १ ॥ २ बराबर की रीति से ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ हे राजा रामसिंह ३ अब कुछ कथा गयेहुए समय की कहता हूं ॥ ४ ॥ ५ धाय का पुत्र ६ मूंछोंवाली स्याळनी (गीदड़नी) ॥ ५ ॥ ७ अदय ८ पुत्रों में चतुर पना नहीं देखता था (अपने पुत्रों को चतुर नहीं जानता था) ॥ ६ ॥ ९ चतुरपन १० इन मूर्खों की लज्जा तुम्हारे हाथ में है ११ अपने पुत्रों का भरोसा नहीं है इस कारण हमको

पै अतिवृद्ध झलायपति, आयु बितावत ऐन ॥
बखतावर१ तस सुत तकत, लहि खिन बैर सु लैन ॥४३॥

॥ घनाक्षरी ॥

विप्र बहुरा जो खुसहालीराम१ मारुयो बुध,
अहित झलायको हुतो जिहिं प्रसभ आनि ॥
माधव महीपतिकौं गेरि निज सम्मतिमैं,
कीनौं सत्रुसाल२ तुल्य सुभट बढाइ कानि ॥
काका बखतावर१ को हो यह सैता२ कुमति,
जानैं तिय खीचि१३निपैं लाभ सु दुलभ जानि ॥
पतिके नियोग लैं झलाय उपमेयपन,
पाइ रांखी राखी खुसहालीराम द्विज पानि ॥ ४४ ॥
पिप्पलदा १ यातैं राजधानीकौं बितरि पुरी,
सत्रुसाल द्विजनैं कर्यो इम झलाय साल ॥
दाबि बलसौं सो बलसौं जो तिन दाब्यो देस,
कीर्ति हरि कीनौं विधि विधिसौं तब विहाल ॥
माधवके मरन अनंतर समय मत्त,
जैपुर पसारि बखतावर कुंहक जाल ॥
ठानि बहुरेको पकराइबो स्वमति ठीक,
चिंतैं हनिडारिबो जथातथ अहित चाल ॥ ४५ ॥
राजाउत१ नाथाउत२ इनकै सदा विरस,

१घर में ॥ ४३ ॥ २ चतुर ३ खोटी बुद्धिवाला शत्रुशाल ५ झलाय के पति की जिसको उपमा लगे ऐसे शत्रुशाल अपने पति की ४आज्ञा लेकर खीची जाति की स्त्री ने खुशालीराम ब्राह्मण के हाथ में ६ राखी रक्खी (राखी [illegible] ॥ ४४ ॥ इस कारण पीपलदा नाम राजधानी ७ देकर ८ खुशाली [illegible] १० शत्रुशालको झलायें का शाल कर दिया, जिस देशको झलायवालों [illegible] सहित दबा लिया था उसको इसने बल से दबाकर ६ कीर्तिसिंह को [illegible] में तो १० बखतावरसिंह ने जयपुर में ठग जाल फैलाकर ॥ ४५ ॥

हो तिम फल्यो सु लखो दिष्ट फल हाइ हाइ ॥
ए उभैर कहुँक एक१ ओकेहु बनत अन्य२,
औसैं प्रभु राज्यकों नसैबे लगे अनखाइ ॥
नाथाउत चोमूँपति पहिलें समैं अनखि,
जैपुर बिहाइ कर्‌यो जोधपुर वास जाइ ॥
चोमूँके ठिकानैं तब नेरव प्रताप चहि,
बैठार्‌यो नरूका राजगढ पुर वे बढाइ ॥४६॥
एक१ मुख्य बैठक हुरठाम भई वाहिनतैं,
चोमूँपति पीछैं आइ आपुनैं वहहि चाहि ॥
वंछत भयो मन नरूकेको बिगार करि,
त्योंही जयनैरतैं निकास्यो भ्रम डारि ताहि ॥
तुरगी कितेकनसौं जट्टके निवसि तानैं,
दिल्ली देखि बूडत समीपके सुहृर्द दाहि ॥
लोलुपनैं द्वे१हिघाँ बिचारिराख्यो लहु लोभ,
जैपुरसौं जानैं त्यौं न जैपुरके जानैं जाहि ॥४७॥
जैसैं झल्ल जालम भो कोटामैं मैंहाकुहक,
नेरव प्रताप तैसैं जैपुरको चिंति नास ॥
अंतर१ मिलाइकैं झलायके कुमर१ आदिं,
बाहिर२ बढाइ सोधैं बहुतनकै बिसास ॥
भूपतिको विद्यागुरु राजा जो बजत भट्ट,

१भाग्य के फल से २ एक घर में भी ३ अपने स्वामी के राज्य को ४ छोडकर ६ राजगढ के पति ५ नरूके प्रतापसिंह को बढाकर चोमूं की बैठक पर बिठा ...या ॥ ४६ ॥ ७ उस प्रतापसिंह ने कितने ही सवारों से जाट के भरतपुर में १ यात्रा ॥ ८ नजीक के मित्रों को जलाकर उस ९ लोभी ने १० दोनों ओर छुछ कथा गये ने कोटा में झाला जालमसिंह ११ महाछली हुआ तैसे १२ नरूके स्याली (गीदड़ ने जयपुर का नाश विचारा १३ झूठा
पने पुत्रों को चतुर
ज्जा तुम्हारे हा… में है

भेज्यो सो सदासिव मुसाहबी करन भास ॥
वाहीकों निमित्त राखि विप्र१ रु महावत२कों,
कैद करिबेको फंद डार्‌यो पाइ अवकास ॥ ४८ ॥
वात न रहत बंध तीजे३के श्रवन बिसैं,
जानि सोही विप्र१ रु महावत२ हवेली जाइ ॥
अंतेउरडोढी जसवंत५कों पिहितै आनि,
भूत१ भावी२ रानीको सुनायो सब समुझाइ ॥
भट१ अरु राजाउत्त२ नारव३ मिलि रु भये,
रोधक हमारे१ रहिहैं जे राज्य बिगराइ ॥
जेपुरकी सीमामैं न चुंडाउत राखिहैं२ जे,
पुत्र१सों न तुम२कों मिलैहैं३ कारा पटकाइ ॥ ४९ ॥
सोहि सुनि रानी हठ आनि इन्ह सम्मतिसों,
नारथ प्रताप१ सीख देकैं पठयो निकेत ॥
राख्यो भट विद्यागुरु२ ताहीके निलय रुंद्ध,
संगी तास सचिव३ कितेक रोके समेत ॥
पंथहीसों पीछो मुरि आयो सुनि सो प्रताप,
पैठन दयो न पुरमैं तब अघउपेत ॥
केते देस जैपुरके लूटि१ अपनाइ२ केते,
दुष्ट गो निजालय अनेकनकों दुखदेत ॥५०॥
जैपुरतैं कटक प्रताप पर भेज्यो जब,
बाहिर१ तो सासनैं दिखैबो छलसों बिचारि ॥

---

१ मुसाहबी करना प्रकाश(प्रसिद्ध) करके २ कारण ॥४८॥ ३ तीसरे के कान में घुसीहुई ४जनानी डोढी पर रावत जसवंतसिंह को ५छाने लाकर ६हमारे कैद करनेवाले७कैद में डालकर ॥४९॥८इनकी सलाह से९नरूका प्रतापसिंह को १० उसके घर भेजा ११उसीके घर में बंध रक्खा १२उसीके साथ रोके १३पाप सहित पापी को १४अपने घर गया ॥५०॥ १५प्रतापसिंह पर सेना भेजी १६प्रसिद्ध में तो

अंतर२मैं सारे कछवाहन अरुचि आनि,
नारवसौं नेह कैं रची जिन कपट डारि ॥
चुंडाउत१ विप्र२ रु महावत३ बिगारे चढ़ि,
पापिननैं लाख बीस २०००००० मुद्राको खरच पारि ॥
आपनी१ पराई२ कछु न गिनी पकरि आँट,
धूंगिडारी धरनि खिजे गजकी धक धारि ॥ ५१ ॥
जैपुर सुभट ऐसैं राजगढ़दुर्ग जाइ,
वासर कितेक लरे मोर्यैंहि विरचि व्याजैं ॥
प्रत्युत दिखाइकैं प्रतापको बलिष्टपन,
कूरमन कूँरन बिगार्यो निज स्वामि काज ॥
दीसिबेलगी ब पुर१ देस२के प्रजादिकन,
राखिहैं जो तीनों३ उक्त पहिले सचिव राजैं ॥
नारवके सम्मत बिनाँ तो निबहैन नैंक,
ऐसे उपद्रवमें अधीसको बिभव आज ॥ ५२ ॥
दोहा—नारव जैपुर आनिबो, करिबो तस अनुकूल ॥
दुखटारिबो तव देसको, मान्यौं मंगल मूल ॥ ५३ ॥
सिसु समान हारे समुझि, रानी१ अरु नररायर ॥
ओंकार्यो नारव इहाँ, दै दलैं सबन सहाय ॥ ५४ ॥
नारव तब प्रतिभू चहयो, सेखाउत नवलेस१ ॥
पुर झलायको कुमर२ पुनि, नृप लिपिका दल लेस३॥५५॥

आज्ञा दिखाई १ नरूके प्रतापसिंह से स्नेह करके २ बीस लाख रुपयों का ३ खिजे हुए हाथी की धक को धारण करके ॥ ५१ ॥ ४ छल करके कितनेक दिन ५ झूंठी लड़ाई लड़े ६ उलटा प्रतापसिंह का बलवानपना दिखाकर ७ मूर्ख अथवा झूठे कछवाहों ने ८ अब पुर के और देश के प्रजा आदि को दीखने लगी कि ऊपर कहे हुए पहिले तीनों सचिवों को राखेंगे तो ९ राज्य में नरूके (प्रतापसिंह) के विना ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १० नरूके को बुलाया ११ पत्र देकर ॥ ५४ ॥ १२ जमानत देनेवाला जामिन चाहा १३ राजा का लिखाहुआ छोटा सा पत्र ॥ ५५ ॥

वखेस १ लखेस २ अन्त्यानुप्रासः १॥
तब जैंपुरतें काढ़ि तिन्हिं, कुल्लथा नाम्ब नीच ॥
बहुरा१ पठयो दैन बलि, वहु आदर२ मग बीच ॥ ५६ ॥
पस्यो बुलानों सद पैठुन, मान्व इम जयनैर ॥
पुनि तदिष्ट करनों परयो, बीसरि मंतु१रु बैर ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे सलूम्बरेशकेशरिसिंहान्तिमसमयकुशलप्रश्नप्रयातदेवगढेशज सवंतसिंहवाक्कलहवर्द्धनतन्निमित्तकृतकुहककेसरिसिंहपुत्रलालसिंह जसवन्तसिंहमेदपाटनिष्कासन १ जसवंतसिंहजयपुरगमनराणारि सिंहादेशनिहतनग्घोरपतिमहाराजनाथसिंहलालसिंहमहाभटपदग्रह णा २ स्वपक्षसमानीतस्वपुत्री (जयपुरेशमाधवसिंहराज्ञी) दौहित्र (जयपुरेशपृथ्वीसिंह) जसवन्तसिंहजयपुरसचिवीभवनकूर्मतद्विरोध वर्णन ३ जयपुरामात्यमिथोद्वेषसभैकासनहेतुचोमूँराजगढविद्वेषराज गढेशनारवप्रतापसिंहजयपुरनिष्कासन ४ राजगढप्रयातजयपुरसैन्य

॥ ५६ ॥ १ चतुरों को २ इसप्रकार नरूके को जयपुर में बुलाना पड़ा ३उसका चाहाहुआ ४ अपराध और वैर भूलकर ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में, सलूम्बर के पति केशरीसिंह के मरते समय आराम पूछने को गये हुए देवगढ़ के पति जसवंतसिंह में वचनों का विरोध बढ़ना और उसी कारण से केशरीसिंह के पुत्र लालसिंह का ठग विद्या करके जसवंतसिंह को मेवाड़ से निकलवाना १ जसवंतसिंह का जयपुर जाना और राणा अरिसिंह की आज्ञा से लालसिंह का घाणेराव के पति महाराज नाथसिंह को मारकर बड़े उमरावों की पदवी लेना २ राउत जसवंतसिंह का अपनी पुत्री (जयपुर के राजा माधवसिंह की राणी) और दोहिते (जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह) को अपने पक्ष में लेकर जयपुर का सचिव होना और कछवाहों से उसका विरोध बढ़ना ३ जयपुर के सचिवों का परस्पर द्वेष और सभा की एक बैठक होजाने के कारण चोमूँ और राजगढ़ में द्वेष होना और राजगढ़ के पति नरूके प्रतापसिंह का जयपुर से निकालाजाना ४ राजगढ़ पर गई हुई जयपुर की सेना के छलयुद्ध से नरूके प्रतापसिंह का बलवानपना प्रसिद्ध होकर उसको जयपुर में बुलाने

च्छलयुद्धनारवप्रतापसिंहबलवत्त्वप्रथनतज्जयपुराव्हानं तृतीयो मयू-
खः ॥ ३ ॥ आदितः ॥ ३५३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा–इम [1]प्रताप नारव वहै, आयो जैपुर अत्थ ॥
[2]ईष्ट प्रसारयो आपुनौं, तिम बिन्नति लखि तत्थ ॥ १
याकी सम्मति पाइ इन, कैद महावत१ किन्न ॥
यातैं साहस दम्म [3]अर, लक्ख सप्त ७०००००भरि लिन्न ।२।
हे बहुरार२ को चहत हित, भट नाथाउत भीर१ ॥
अरु यह [4]पटु२ इम उब्बरयो, [5]नाविक जह द्रह नीर ॥ ३ ॥
कीरतिसिंह कुमार अरु, धूलापति रघुनाथ२ ॥
राजाउत दोउ२न, रच्यो [6]सेस विरोधिन साथ ॥ ४ ॥
चुंडाउत जसवंत इक१, राउत [7]देवँगढेस ॥
[8]राजगढेस प्रताप इत, आन्यौं जैपुर एस ॥ ५ ॥
दोउ२न इन करवाइ दिय, मन इन दोउ२न मेल ॥
पै फुट्टे खप्पर [9]प्रतिम, खलन मिलन मय खेल ॥ ६ ॥
करि नारव [10]प्रमुखन कथन, कारातैं [11]खिलै काढि ॥
गेह जाइ बिद्यागुरुहि, लायो नृप [12]ईभ चाढि ॥ ७ ॥
[13]प्रथित [14]प्रताप प्रतापको; बढिगो इम जिहिं बेर ॥
कोऊ कछुहु सकै न कहि, जिन [15]सिंह१हिं गज२ जेर ॥८॥

का तीसरा मयूख समाप्त हुआ।३। और आदि से तीनसौ तेपन३५३मयूख हुए॥
१ नरूका प्रतापसिंह २ अपना पांछित ॥ १ ॥ ३ दंड के रुपये शीघ्र ॥ २ ॥ ४ वह चतुर भी था इस कारण ५ जैसे नाववाला गहरे जल से बचै तैसे बच गया ॥ ३ ॥ ६ बाकी के विरोधियों का साथ किया ॥ ४ ॥ ७ देवगढ के पति ने ८ राजगढ के पति प्रतापसिंह को ॥ ५ ॥ ९ फूटेहुए खप्पर के सदृश ॥ ६ ॥ १० नरूके आदि का कहना करके ११ बाकी की कैद से निकाल कर १२ हाथी पर चढाकर राजा लाया ॥ ७ ॥ १३ प्रसिद्ध १४ प्रतापसिंह का प्रताप १५बहुत बुड्ढे सिंह को हाथी दबालेवै जैसे "जिनः,अतिवृद्धे॥ इति शब्दार्थचिन्तामणिः"

घनाक्षरी—पायो पटा जैंपुरको नारव प्रताप तासों,
बहुरि बिसेस पाई नित्य मुद्रा पंचसत५०० ॥
किर्तिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
बैर अरिसिंहको मिटाइदैबो मंडि मत ॥
जैंपुरही मंत्रमैं लै चुंडाउत्त जसवंत,
पत्र बुंन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
रानाँ रत्नसिंहकौं बिबाहो कुल कन्या जाम,
जाजपुरदैहैं लिखि प्रत्युत ए ह्वै प्रनत ॥ ९ ॥
सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
बंचिकैं पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
पीछैं नृप छोरयो देह यातैं मुरि मग्राहीसौं,
आयो परकूलतैं बनास लंघि बिप्र यह ॥
सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
आयो अब जैंपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
पै अब स्वसा१ जुत स्वसापति२ अभाव पाइ,
बदल्यो कुमार बखतावर बिरोध वह ॥ १० ॥
भूतहूमैं भूत यो बिरोध बीज जानौं जब,
भूँपतिनैं इंद्रगढ ईस१ हन्यौं पुत्र२ जुत ॥
ताकी तिय जोधीनैं झलायपति भाइनैंज,
लोभसौं बुलाइ ताहि दैकैं अर्द्ध९ भूमि द्रुत ॥
संध्याकहँ सेसैं इंद्रगढकी अवनि अर्द्ध,

---

१ रुपये २ वहिन का पति ३ बुंदी का राजा अजितसिंह था तब राणा अरिसिंह को मार डालने का बैर मिटादेना चाहा था ४ उलटे नम्र हो कर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अब वहिन सहित वहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ उम्मेदसिंह ने ८ भानेज को ९ शीघ्र आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

दैकैं भेजि ताकौं पहु ठानि जनकूं *प्रस्तुत ॥
इंद्रगढ ऐसैं भक्तराम सौं छुराइ एह,
बापघर गागरनी जाइबैठी जो †बिँसुत ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥

कीरतिसिंह झलायको ठाकुर लै इम आधी१स्वमातुलकी महि॥
सन्ध्या जयासुत जो जनकू तिहिं दै तिम आधी२बिरोधइतैं वहि॥
इंद्रगढाधिप व्है छिति अर्द्ध१मैं आपनौं थानौं जमाइ छली अहि ॥
हायन च्यारि४लौं ऐसैं रह्यो कछु३मातुलीकौं न रह्यो इहाँ यौं कहि१२
जैपुरको भटवाराके खेत अनीक४ भज्यो जब कोटासौं हारिकैं ॥
वाही प्रचंड उपद्रवमाँहिं झलायके झूठे ठयेहि निकारिकैं ॥
बुन्दीको पाइ सहाय बली पहु भक्त५ रु राम२ ए द्वैरहिग पारिकैं ॥
नाम कहावतहो निज जो सो भयो पुनि नाह५ सिपाह सम्हारिकैं१३

॥ दोहा ॥

सक धृति धृति१८१८सम्मित समय, भटवारे सन भज्जि ॥
माधव नृपको दल मुर्यो, रहे अबहु जिहिं लज्जि ॥ १४ ॥
तब झलायपति६थप्प तिन्हँ, अरिन गंजि पुनि एस ॥
भक्तराम बुन्दीस भट, इम हुव इंद्रगढेस ॥ १५ ॥

घनाक्षरी ॥

तबतैं झलायपति बुन्दीसौं बिरचि बैर,
कूर रह्यो पुर इत फंद डारिबो करत॥
बुन्दीपुर आपुनी सुता जब बिबाही धूरि,
मुखपैं गिराइ तबतैं भो हितही धरत ॥

---

*विशेष स्तुति करके † बिना पुत्रवाली ॥ ११ ॥ १ अपने मामा की भूमि २ अर्ध, चार वर्षतक रहा ३ वहां मामों का कुछ नहीं रहा ॥ १२ ॥ ४ सेना ५ भक्तराम, इन्द्रगढ के पति का नाम ही कहाता था सो पति होगया ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ६ झलाय के पति के स्थापन कियेहुए शत्रुओं को मारकर ॥ १५ ॥

जामाता१ सुता२ द्वेर३ ठहरे न पीछैं दिष्ट जब,
पीछो प्रतिकूल भयो जो खल रुषार्जरत ॥
इंद्रगढ ईस देवसिंहको पिनोती इहिं,
दंभसौं प्रकास्यो परलोकहुसौं नाँ डरत ॥ १६ ॥

पादाकुलकम् ॥

देवसिंह　दोलतसिंह　हुव२हि, बुंदीपति मारे बिरोध बहि॥
दोलतसिंह　बंधूकै मिसकरि, पीछैं सुत हुव इहिं साहस परि१७
इंद्रगढेस देव　　तिय जन सब, काढे नयननगरतैं जब तब॥
जिम यह छद्म बनैं तिम बंचक, राखि किमहु कहुँ पाप प्रपंचक॥१८।
अब भ्कलाय यह ठँपाज बनायो, दोलतसिंह　तनर्यभव पायो ॥
पै हम करते प्रकट तबहि तो, याकह मुनि हनते अरि अंहि तो१९
जुव्वन बय सत्रह१७ संमं भो जब, इंद्रगढेस रँयात हुव यह अब ॥
रतनसिंह प्रकट्यो जिम रानाँ, वह सोलह१६बिच पाव१हि आनाँ२०
तिम एँसहु झूठो प्रकटायो, बलि तिहिं कुहक भ्कलाय बुलायो ॥
भूँतहुमैं४ पुनि भूत प्रमानहु, जथा लेखँ बत्त सु इम जानहु ॥ २१ ॥
भागनगर१ दक्खिन२१३ पुर भाख्यो, अब हैदराबाद२ अभिलाख्यो॥
जाको पति दिल्लीससचिव जो, सठ गाजुद्दीखान नामसो ॥२२॥
जिहिं इत नादरसाह बुलायो, पुत्रहु तास नाम सुहि पायो ॥
अपराधी दिल्लीको सो यह, जट्टन सरन रह्यो कछुदिन जह ॥ २३ ॥
वेचि वेचि भूखन१ मनि२ गन के, किय निर्वाह ठानि कँनकनकें ॥

१जमाई २ भाग्य से ३ क्रोध से जलता है ४ पोता को छल से प्रसिद्ध किया ॥ १६ ॥ ५ दोलतसिंह की स्त्री के छल से इस हठ पर पुत्र हुआ ॥ १७ ॥ ६ छल ॥ १८ ॥ ७ छल ८ दोलतसिंह के पुत्र ने जन्म पाया है ९ पापरूप सर्प ॥ १९ ॥ १० वर्ष का ११ इन्द्रगढ का पति प्रसिद्ध हुआ ॥ २० ॥ १२ इसको भी १३ अब यह गये समय में भी गये समय की बात जानो १४ जैसी लिखी हुई मिली तैसी ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ १५ एक एक बिखेर कर ॥ २४ ॥

आलीगोहर तव दिल्लीपति, जट्टनपर आन्यौं अमरख अति ॥२४॥
जब सु नवाब निकास्यो जट्टन, जैपुर आइ रह्यो सह निजजन ॥
खरच गंठि निज तत्थहु खायो, बहु मनि१ भूखन२* निचय बिकायो २५
जैपुरपर तिम साह खिज्यो जब, ताहि कूरमन सिक्ख दई तब ॥
वह नवाब दक्खिन२।३तब आयो, पुन्यापति जिहिं स्वभट बनायो
पटा लक्खत्रय ३०००००‌ द्रम्म प्रमानक, दिय बुंदेलखंड बिच थानक ॥
असनमात्र२ सोंपै लिखवायो, बिनुचाकरी पटा इम पायो ॥२७॥
कछुदिन रहि कोटा अति आग्रह, आइ नवाब झलाय टिक्यो वह
कीरतिसिंह सोहु बहिकायो, बलि तँहँ तब तुं फितूर बुलायो २८
संग नवाब बंधु१ लै बल२ सह, मंडि झलाय ईस अतिसय मँह॥
आइ समुह बैठाइ ताहि इभ५, निज हठ मानि फितूर१ सत्य६ निंभ२९
इम झलाय उच्छव जुत आन्यौं, जदपि तास बिस्मय जग जान्यौं
भ्रष्ट तदपि ताजुत करि भोजन, सज्ज कर्‍यो भुवलैन प्रसभ सन
कटक नवाबकोहु संगी किय, इंद्रगढेस बंधु बलि बुल्लिय ॥
रत्नसिंह खातोली२ पुरपति, कूँतक७ भीर भेजे निज भट कति ३१
अवरहु कति निमहोला२ आदिक, मिले भीर तस खिलतुप्रमादिक
जाइ इंद्रगढके भट१ परिजन२, मिले वहुत छल स्वामी चहि मन ३२
कृष्ण१९९।१ दलेल१९८।२ पुत्र मुहुकम१९४।५ कुल, पुर करवर को लोभ दै बिपुल ॥
मतिहत सोहु बुलाइ मिलायो, बढते ग्राम लैन बहिकायो ॥३३॥
पहिलैं खल याकोहि पितामह, सालम१९७।१ रह्यो झलाय भीतिसह

---

*समूह ॥ २५ ॥ १ पूना के पति ने अपना उमराव बनाया ॥ २६ ॥ २रोटी खरच के लिये ॥ २७ ॥ ३ उस इन्द्रगढ के झूठे दावीदार को ॥ २८ ॥ ४ उत्साह (उत्सव) ५ हाथी पर ६ सत्य के सदृश ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७उस करतबी की सहाय ॥ ३१ ॥ ८ बाकी के वास्ते ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

राजाउतन प्रीतिकरि रक्ख्यो, उपकार सु चिंतहु मन अक्ख्यो३४
कूरमा१९९१ सु चिंति नैंन नीचे करि, संगी भयो कुइक मत अ-
नुसरि ॥
पहिलैं देवसिंह माधानी२२१२६, तजि आटोंनि कढ्यो अभिमानी३५
आइ सु प्रथम ढंग उनियारा, दुर्ग ककोर रक्खि सुत१ दारा२ ॥
उनियारा सासक सिरदारहु, विरचि प्रीति सतकारयो जिहिं बहु३६
पीछैं गो यह ढंग जोधपुर, धात्रेयहिं मिलि धरत भयो धुर ॥
उदयकर्ण धात्रेय तनै वह, तह सूचित जसकर्ण हुतो तह ॥३७॥
ए दुवर मिलि जैपुर पुनि आये, तँहँ प्रधान चुंडाउत पाये ॥
तोलौं जैपुर ठहरिसके दुवर, पीछैं नारव कथन प्रबलहुव ॥३८॥
भट्ट सदाशिव नृप विद्यागुरु, फैल्यो तास प्रपंच उहाँ उरु ॥
सम्मति चलन रुच्यो सीसोदन, देख्यो कहुँ ओर न अनुमोदन३९
देवसिंह१ जसकर्ण२ तबहि दुवर, हेरि उपाय स्फलाय आतहुव ॥
तँहँ फितूर संगी हुव तेहू, लुंटक लोक कुहकें खिल केहू ॥४०॥
इम दससहँस १०००० बंधि बल अप्पन, सज्ज फितूर भयो इत
संप्पन ॥
सुनि बुंदीहु भेजि भट श्रीजित, इंद्रगडेस सौंव हित किय इत४१
भक्कगाम सासक तँहँ अतिभट, थिरत सज्ज इच्छैं रन प्रतिभट ॥
देवसिंह१ जसकर्ण२ चह्यो मन, पहिलैं कोटा देस बिगारन॥४२॥
अरु नवाब कोटा जब आयो, पै तब आदर उचित न पायो ॥

॥ ३४ ॥ १ झूठे (ठग) के मन की साथ ॥ ३५ ॥ २ स्त्री ॥ ३६ ॥ ३ कोटा का धायभाई जोधपुर में था जिससे ॥ ३७ ॥ ४ लड़के प्रतापसिंह का ॥ ३८ ॥ ५ विशाल (बहुत) ६ अपनी पुष्टि करनेवाला ॥ ३९ ॥ ७ इन्द्रगढ के झूठे दावेदार की साथ ८ लुंटक (लुटेरे) ९ पाकी के ठग ॥ ४० ॥ १० सर्पन (चलन) ११ पालक का हित किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

इहिँ[1] तिहिँ अनख मंडि[2] अनुमोदन, कोटादेस चह्यो तिम तोदन[3] ४३
यह सुनि सज्जि महारावहु उत, जालम झल्ल सचिव निज संजुत
प्रबिस्यो सिविरं[4] सजव कढि पुरतैं, यह बुंदिय सुनि हित अंकुरतैं ४४
सुखराम जु धालेय[5] मुसाहब, सजि गो भीर वाहिनी[6] लै सब ॥
एक१निसाहि पर्‌यो गिच अंतर, प्रातहि जाइ मिल्यो हित तत्पर ४५
सुखराम सु कोटेस सराह्यो, झुल्ल्यो हद एक१त्व निबाह्यो ॥
सचिवँ[7] सचिव झल्लहु सतकारिय, बल्लि सत्रुन दिस चढ़न बिचारिय ॥ ४६ ॥
उततैं सज्जि फितूरहु आयो, बर्ल[8] नवाब बल मुख्य बनायो ॥
संग नवाब सचिव जिहिँ बल जुत, आयो देसहिँ करत उपद्रुत[9] ४७ ॥
कोटा दिष्टं[10] बालिष्ट बन्यौं जँहँ, ठहरि सक्यो न नवाब बल सु तँहँ
पुन्यापति सन छिति इहिँ पाई, लक्खतीन३०००००द्रम्मनँ[11] ठकुराई
जो बुंदेलखंड जनपदमैं[12], होनलगे बैं[13] विघ्न तस हदमैं ॥४९॥
यह लहि सुद्धि[14] नवाब सचिव वह, सूचितं[15] देस गयो निज बल सह
अमल कर्‌यो जिहिँ जबहि जाइ उत, सिटिगो तबहि देव १९८।१ सुत छल सुत[16] ॥ ५० ॥
भंगी[17] धाँरि बिगारि सबै सुख, रही न तब सु गई फटि रुखरुख[18] ॥
बलबिनु ह्वै अलि[19] बिनु जिम बिच्छिय, इमनव बदल बिनुछल इच्छिय ५१

१ इस कारण २ पुष्टता करके ३ व्यथन (दुःखी) करना चाहा ॥ ४३ ॥ ४ डेरों में ॥ ४४ ॥ ५ धायभाई ६ सब सेना लेकर ॥ ४५ ॥ ७ बुन्दी के सचिव का कोटा के सचिव झाला ने सत्कार किया ॥ ४६ ॥ ८ नवाब की सेना का बल ९ व्याकुल ॥ ४७ ॥ १० कोटा का भाग्य बलवान हुआ ॥ ४८ ॥ ११ रुपयों की १२ देश में १३ अब ॥ ४९ ॥ १४ खबर १५ सूचना कियेहुए देश में १६ देवसिंह के पुत्र दौलतसिंह का वह छली पुत्र मिटगया ॥ ५० ॥ १७ मांगीहुई धाड़ (लुटेरे) १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ जैसे डंक विना बिच्छू होवे तैसे नवाब की सेना विना होकर ॥ ५१ ॥

अनालंब[1] इम होइ अचानक, भज्यो फितूर चकित मित[2] भानक ॥
देवसिंह१ जसकर्ण२ दुमन दुव२, हुलकर तक्कू तंत्र[3] जाइ हुव॥५२॥
नाणांक[4] नित्य दुहुरन कछु करि दिय, इक१ ग्रामहु खिचि१३न भू अप्पिय ॥
जुग२हिं रक्खि वनिता१ सुता२दि जँहँ, करतभये मालिक तक्कू कँहँ ॥ ५३ ॥
जड़मति कृष्ण१९८।१ दलेल११७।२ जु जायो, पुर सु करौली चकित पलायो ॥
नृप मानिक्यपाल रक्ख्यो नन, सुमुझि करन बुंदिय धिंव सगपन[5]५४
जैपुर आइ टिक्यो सु कृष्ण१९८।१ जब, वह फितूर खातोली गय अब ॥
रत्नसिंह खातोली सासक, आइ समुख छल स्वामि उपासक।५५।
कुल निज लुब्ध मानि वह कृत्रिम, आन्यौं करि उच्छव पुरमैं इम॥
भाजन[6] इक१दुहु२न किय भोजन, सिद्ध जतन तदपि न हुव सो जन५६
महाराव उम्मेद२०५।१ मुदित मन, सनमान्यौं सुखराम प्रीति सन
इक१ करेनु[7] अरु खास तुरग इक१, तिम सिरुपाव इक१ इम दै त्रिक३ ॥ ५७ ॥
दिय महमानी तदनु सिक्ख सह, आयो बुंदिय पाइ सुजस यह ॥
संबत लगत दंत धृति १८३२ सम्मित, यह उदंत हुव राधर[8] मास इत ॥ ५८ ॥
महिपति भून[9] इहाँलग मानहु, जुरत वर्त्तमान२सु अब जानहु ॥

१विना आधार२थोड़े बोधवाला३आधीन ॥५२॥४रुपये ॥५३॥५बुन्दी में वेटी का सम्वन्ध करना जानकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ६ एक पात्र में ॥ ५६ ॥ ७हाथी ॥ ५७ ॥ ८ वैशाख मास में ॥ ५८ ॥ ९ हे राजा यहां तक गयेहुए समय का वृत्तान्त

कुमर रूलायको सु अब यातैं, बुंदी हित[1] न चहैं[1] रु*बिघातैं२॥५९॥
नृप बुंदीस पुरोहित जो निज, पठयो जैपुर दयाराम द्विज ॥
सहित मिल्यो सु रूलाय कुमर सन, मिलतहि नहि दीस्यो पहिलोमन
करि बाहिर[1] छित लोकलज्ज करि, अंतर[2]भयो सछद्म नयो अरि॥
चुंडाउत जलवंतसौंहु तब, मिल्यो विप्र सूच्यो आसय सब ॥ ६१ ॥
राउत कह्यो रान रतनेसहिँ, व्याहहु[2] मेटहु बैर विसेसहिँ ॥
कह्यो बिप्र बुंदिय नहि कन्या, व्याहहिँ तदपि अंक[3] लहि अन्या६२
पै तुम भुल्लि सवन भ्रम पार्‌यो, विदित रानघर[4] चलन बिसार्‌यो॥
रानन रीति अवहु सब साहहु, व्याह इक्क १ अन्यत्र[5] बिवाहहु।६३।
कूरम[6] नृप भवदीय सुतासुत, जाम्मिन[7] करहु२रक्खि चित्र हितजुत॥
बिजयसिंह बलि मरुप[8] मिलावहु३, पंति[9] असन फेला तुम पावहु६४
अग्ग बचन किय सोहु सुमिरि उर, मभु१ रु पंच२ लिखिदेहु जा-
जपुर५ ॥
अरु रतनेस पच्छपाती अब, सँपथ[10] हमहि लिखिदेहु तुमहु सब।६५।
सो इम रतनसिंह हम स्वामी, नरपति राजसिंह सुत नामी ॥
सहिप प्रताप पुँलसुत[11] मानहु, जिम जगतेस प्रनत्तिय[12] जानहु ॥६६॥
सुद्ध जैनन[13] दुव२ पक्ख सुहावहिँ, हम तिन्हँ फेलि[14] तुम लखत पावहिँ
यामैँ होइ किमहु कछु अंतर, हम १ तुम२ बिच तो गंगा१ हरि २
हर३ ॥ ६७ ॥
उतके पंच देहु लिखि तुम यह६, राघवदास रावरे सुतसह॥

जानो, अब आगे वर्तमान वृत्तान्त जुड़ता है * विशेष घात करता है ॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥ १ छल सहित ॥ ६१ ॥ २ राणा रत्नसिंह को व्याहकर ३ और कन्या को गोद लेकर ॥ ६२ ॥ ४ राणाओं की रीति ५ एक व्याह दूसरी जगह करदो ॥ ६३ ॥ ६ जयपुर का राजा आपका दोहिता है ७ जमानत देनेवाला (प्रतिभू) ८ मारवाड़ के पति को ९ पंक्ति में रत्नसिंह का उच्छिष्ट भोजन करो ॥ ६४ ॥ १० सौगन लिखदो ॥६५॥ ११ पोता १२ पनाती (पड़पोता) ॥६६॥ १३ वंश १४ उच्छिष्ट

ए खट६ बत्त प्रथम हम इच्छैं, परिनावहिं रानहिं इन पिच्छैं॥६८॥
तुम छित्वर चालुक तब धरिधुर, पठ्यो बुंदिय देन जाजपुर ॥
सुमिरन है कि बचन विसरायो, अब सुहि सत्य करन खिन आयो६९
रावत कह्यो जोधपुर१ जैपुर२, पुनि बुन्दी३ अरु मुख्य उदैपुर ४॥
सो बुन्दी ३ सूचित तीन ३ न सम, छितिप उदैपुर ४ पच्छ करन
छम ॥ ७० ॥

जैपुर१ दैपुर २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तिन्ह सहाय हमरी सुधरैं सब, ते किम अन्य सहाय चहैं तब ॥
पुनि जोलौं संसय जन पावैं, निजहु कोन तोलौं परिनावैं१ ॥७१॥
को इनकौं ठिल्लैं इत कूरम१, कोन कबंध२धीर उत धूरम ॥
जो बलिष्ठ इनके जुग२ जानहु, तुम१ हम२ जुग२हु क्यों न तिम
मानहु ॥ ७२ ॥
इन्ह२सहायसाहँसहमउज्झहु२।३, बचि तुल्यरु तुल्यहिंक्योंबुज्झहु॥
आदिम कथित तजहु त्रय३ बातैं, विरचहि हम अंतिम त्रय३बातैं७३
प्रभुकी फेलिं पंतिविच पावहिं१, लेख जाजपुर दैन लिखावहिं२ ॥
सपथ लेख हम पंच समप्पहिं३, यह लिक३सिद्ध दिखावैं अप्पहिं७४
सूचिय विप्र तबहि व्है संलग्न, भेद भेद प्रतिभेद तनै भय ॥
पै हम सिरहि भार जो पटकहु, इक१ तुम करहु तो न तँहँ कट-
कहु ॥ ७५ ॥
झल्ल१प्रमार२कबंध३रु सँभर४, चउ४कुल मुख्य भटनमैं नव९घर

॥ ६८ ॥ १ समय ॥ ६९ ॥ २ समर्थ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ धुर को धारण करनेवाला ॥ ७२ ॥ ४ इनकी सहायता लेने का हठ छोड़दो ५ ऊपर कही हुई छः बातों में से आदि की तीन छोड़दो, अन्त की तीन बातें हम करेंगे ॥ ७३ ॥ ६ स्वामी (रत्नसिंह) का उच्छिष्ट ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७ चहुवाण ८ मेवाड़ के उमरावों में इन चार कुलों में नौ ठिकाने मुख्य हैं. झालों में देलवाड़ा और गोघूँदा, पँवारों में बीझोल्यां, राटोड़ों में बदनोर और घाणेराव,

शान सदा परिनैं१परिनावैं२, तुम पक्खी भट तेहु कहावैं ॥ ७६ ॥
त्यौं पुनि इक्क१ सलूमरिकौं तजि, सब तुम रत्न सहाय रहे सजि॥
कति तन१ सौं धन२ सौं मन३सौं कति, यहहि पक्ख चाहत मत उन्नति ॥ ७७ ॥
तो असगोत्र कहे नव४तिनमैं, व्याहहु प्रथम१।१पिसुन जिंम विनसैं
पीछैं करि स्वीकृत त्रय३प्रत्यय, भर हम भुजन देहु तोहु न न भय
इह नृप तुम दौहित्र१रु अर्भक२, तुमरो कथन तास जननी तक्र३
तोहुन तिन दोहु२न लै बिच तुम, सलिल मध्य रहि जिम सार स सुम ॥ ७९ ॥
इक्क१हमरेहि सहाय चहत यह, तदपि हहु८१सुन भर भेजैं तह॥
चउ४ प्रत्यर्थ ए सुनि चुंडाउत, पठये लिखि रु देवगढ जवे जुत८०
पितापत्र राघव यह पायो, पुनि द्रुत कुंभिलमेरु पठायो ॥
भिंडरपति मुहुकम्म सुरूप तह, सगतावत्त हुतो परिकर सह ।८१।
दलतिंहिं संगी भटन दिखायो, इम कुहकन प्रतिपत्र लिखायो ॥
व्याह १ जाजपुर २ दुरवहि बिहाये, अमकर फोर्सं १ सपथ २ मनभाये ॥ ८२ ॥
दुव २ लिखि ठिगन विधेय रक्खि दुव२, हित बहु लिखि इम छंद भेजत हुव ॥
कृष्ण१ प्रमार जु बेघमत्रासी, पठयो पुब्बहु दुरदिसु उपासी॥८३॥

चहुवाणों में बेदला, कोठारिया और पारसोली ये उमराव तुम्हारे (रत्नसिंह के) पक्षवाले हैं ॥ ७६ ॥ १ रत्नसिंह की ॥ ७७ ॥ २ जिस कारण से, चुगली करनेवाले ३ विशेष नमें ४ आपके स्वीकार किये हुए सबूत ॥ ७८ ॥ ५ यह जयपुर का राजा तुम्हारा दोहिता और बालक है ६उस बालक की माता तक ७ कमल का फूल ॥ ७९ ॥ ८ विश्वास ९ शीघ्र ॥ ८० ॥ १० परगह सहित ॥८१॥ ११ पत्र, साथ के उमरावों को दिखाया १२ ठगों ने, उत्तर में पत्र लिखाया १३ रत्नसिंह का उच्छिष्ट खाना और सौगन खाना ॥ ८२ ॥ १४ पत्र ॥ ८३ ॥

छुल्लि सो१हि पठयो तिन बुंदिय, पुनि मत्पय हित सुख्य बंधु प्रिय॥
सगताउत्त विजैपुर सासन, बखतबंधु सिवनाथ२मिलत मन ॥८४॥
जैंत पउत्त रु अचल तनय जो, दयो प्रमार संग गैतदय जो ॥
इतको विप्र रह्यो जैपुर उत, दुवर सूचितँ आये बुंदिय द्रुत॥८५॥
दोउ२न सचिवहिँ पत्र दिखायो, सुखराम सु पिक्खत छल पायो॥
जो विविँक्त श्रीजितपुनि जान्यौं, पुनि सम्मत सुभटन पहिचान्यौं८६
कपट जानि रक्ख्यो सँमुचित कहि, सगताउत्त इहाँ सिवनाथहि ॥
कृष्ण१ प्रमार संग पठयो द्विज, नत्थूनाम विसासपात्र निज ॥८७॥
कछुदिन रक्खि देवगढ तिनकँहँ, पठये कुंभिलमेरु कृँतक पँहँ ॥
भिंडर आदि भटहु तब भोनँन, हे रु नहे तँहँ इच्छितहो नन ॥ ८८ ॥
भूप कृतक भेजे दुवर भिंडर, किय मुहुकम्म सोहि मिस छल कर॥
तिँहिं निज पक्ख भटन मत लै तँहँ, करि सुहि लिँपि पठये दोउ२
न कँहँ ॥ ८९ ॥
प्रथम१ विवाहन१ न इम जाजपुर२, कथित करन सुहि जुग२ अघ
अंकुर ॥
व्याह जाजपुर रक्खि सेस वलि, छलिन पुव्व जिम पठये पुनि छलि९०
ए उभय२हि बुन्दी जब आये, द्विज१ प्रमार२ मँतिमुष्ट दिखाये ॥
श्रीजित प्रति सुखराम मुसाहब, अरज करि रु छल जानि प्रकट
अब ॥ ९१ ॥
पत्र पुरोहित दयाराम प्रति, सुहि जैपुर पठयो छल सम्मति ॥
अरु सूचिय निश्चय भो अब इम, रान रतन कुलवर्जितँ कृत्रिम९२

॥८४॥ १निर्दय २सूचना कियेहुए ॥८५॥ ३एकान्त में ॥८६॥ ४ ठीक है यह कह कर ॥८७॥ ५ कृत्रिम (रत्नसिंह के पास ६ अपने घरों पर थे ॥ ८८ ॥ ७ लेख ॥ ८९ ॥ ८ पाप खड़ा होकर ९ मेवाड़ के उमरावों में रत्नसिंह का प्रथम विवाह कराना और जहाजपुर का देना बाकी रखकर (अस्वीकार करके) १० छल करके ॥९०॥ ११ठगाई हुई बुद्धिवाले दीखे ॥९१॥ १२कुल रहित और फरेबी है ॥९२॥

ओर न कोहु सुता जिहिँ अप्पैँ, इम अप्पन वंचन थिति थप्पैँ ॥
प्रासन फेलि१ लिखन सत्पसपथ२, अंगीकरत एहि हुवरते अथ९३
पुनि नटिजाइ तहाँ को प्रत्यय४, कै खल करैँ छोडि कुल अत्यय
पापकरन अवधि न पापिनकै, अंत्यज फेलि त्याग नहि तिनकै९४
कूटँ सपथ वंचक क्यौँ न करैँ, धी अपरन वंचन सपथ धरैँ ॥
दल वंचत यातैं अब हे द्विज, न करहु तुम सगपन सन्नति निज९५
महाकितव मन्नहु मेवारन, कितवं भाव दृढ हुव वहु कारन ॥
यातैं स्वीकृत कछुहु न अक्खहु, राउत फंद टारि पय रक्खहु॥९६॥
जो जैपुर पहिलो हित जानहु, तो इतसौँहु अधिक पुनि ठानहु ॥
इम द्विज प्रति सुखराम कहाई, हुत मेवारन लिक्खि दिखाई ।९७।

॥ दोहा ॥

सगताउत सिवनाथ१सौँ, नगर विजैपुर नाह ॥
कृष्णसिंह२ प्रामार कुल, पहिलैं कथित सिपाह ॥ ९८ ॥
हित बहिरादर इन दुहुन, रुचिमित्त कछु दिन रक्खि ॥
बुंदीसन दिय सिक्ख बलि, उचित जथागमँ अक्खि ॥९९॥
दयाराम बुंदीस द्विज, जैपुर इत खिन जानि ॥
बुंदी पठवन तिलक विधि, पुच्छिय उचित प्रमानि ॥१००॥
भेजैँ अब अब इम भनत, कछवाहन चिरं कीन ॥
बिच बिच पारे बिघ्न बहु, नियति नवीन नवीन ॥१०१॥

---

१ ठगने को २ उच्छिष्ट भोजन करना और सौगन करना ३ स्वीकार करते हैं ॥ ९३ ॥ ४ क्या विश्वास है ५ कुल का नाश ६ अन्त्यज का उच्छिष्ट खाना ॥ ९४ ॥ ७ झूठे सौगन, ठगनेवाला क्यों नहीं करैगा ८ दूसरों की बुद्धि ठगने को ॥ ९५ ॥ ९ ठगपन ॥ ९६ ॥ १० फैलाना ॥ ९७ ॥ ११ पहिले कहे हुए ॥ ९८ ॥ १२ बाहर के आदर से १३ फिर आना यह कहकर ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १४ विलंब १५ भाग्य ने ॥ १०१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे नारवप्रतापसिंहपट्टातिरिक्तजयपुरराज्यप्रतिदिनपञ्चशतमुद्राग्रहणेन्द्रगढकृत्रिमपतिप्रादुर्भवन १ दिल्लीन्द्रयवनाप्रसत्तिनिष्कासितहैदराबादनव्वाबगाजुद्दीखांभरतपुरजयपुरनिवासाप्राप्तिहेतुप्राप्तबुन्देलखण्डपुण्यपत्तनपतिसुभटीभवन २ उक्तनव्वाबसहायससैन्यकृत्रिमदायादेन्द्रगढाक्रमणकोटाजनपदलुण्टन ३ प्राप्तबुन्दीसेनासहायकोटापतिशत्रुसम्मुखागमनश्रुतस्वदेशोपद्रवनव्वाबगमनहेतुकृत्रिमदायादपलायन ४ मेदपाटकृत्रिमराणारत्नसिंहबुन्दीविवाहहेतुमेदपाटसुभटयत्नकरणातत्कैतवप्रादुर्भावबुन्दीशास्वीकरणं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३५४ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उक्त रान हम्मीर सुत, भो जु उदैपुर भूप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, नरूके प्रतापसिंह का पट्टा के सिवाय जयपुर के राज्य से पांचसौ रुपये नित्य लेना और इन्द्रगढ के फरेबी पति का प्रकट होना १ हैदराबाद के नवाब गाजुद्दीखां का दिल्ली के बादशाह की अप्रसन्नता से निकाला जाकर, भरतपुर और जयपुर में नहीं ठहरने देने के कारण बुन्देलखंड का प्रान्त पाकर पूना के पति का उमराव होना २ इस नवाब को सहायक करके फितूरी दावीदार का सेना लेकर इन्द्रगढ पर आना और कोटा का देश लूटना ३ कोटा के पति का बुन्दी की सहायक सेना पाकर शत्रुओं के सन्मुख निकलना और अपने देश में विघ्न सुनकर नवाब के चलेजाने के कारण छली दावीदार का भागना ४ मेवाड़ के कृत्रिम राणा रत्नसिंह का बुन्दी सम्बन्ध करनेका मेवाड़ के उमरावों का उपाय करना और उनका छल प्रकट होजाने के कारण बुन्दी से अस्वीकार करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ चौपन ३५४ मयूख हुए ॥

वय सैसव[1] सो भय वहैं, रहैं समय अनुरूप ॥१॥
कछु दूरहु पुरतैं निकसि, उपवन१ मृगया२ ऐन ॥
सह भोजन३ मह संक्रमन४, क्रीड़ा कछुहु करैन ॥२॥
कृत्रिम रानाँ रत्न करि, सब पलटें सामंत[4] ॥
तातैं रक्खत त्रास तिन्हँ, हास बिलासहु हंत[5] ॥३॥
इक१ सलूमरि पुर अधिप, अपर२[6] कुरावड़ ईस ॥
भीम१ रु अर्जुन२ नाम भट, इच्छैं दुवर सु अधीस ॥ ४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सासक सलूमरिके केहरी मरत कह्यो,
देवगढ नाह जसवंतहिं वलिं बुलाइ ॥
मेरे सुत मूढ माने तिनमैं लघुहु लाल,
काढिदैहैं केतो खल तोकहँ१ कैं जैहँ खाइ ॥
कुहकसौं कुहक पिताजो कही सोही करि,
नाथहिं निपाति अरिसिंह उर इष्ट आइ ॥
राउतके तनय अचानक यौं राउतकौं,
काढ्यो उत्तमर्णा१[11] अधमर्णा२[12] ज्यों सब बिकाइ ॥५॥
देवगढ दुर्ग सो पै ताकै रहतो न तँहँ,
[13]जेठे१ जसवंत सुत राघव प्रगल्भ जब ॥
देवगढदुर्गमैं रह्यो सो लरिबेकौं दच्छ[14],
सम्मत पिताको पाइ स्वीयभट सज्जि सब ॥

---

१ बालक अवस्था ॥ १ ॥ २ बाग और शिकार के स्थानों में ३ उत्सव में जाना ॥ २ ॥ ४ उमराव ५ हास्य विलास का नाश अथवा खेद है ॥ ३ ॥ ६ दूसरा ॥४॥ ७ पीछा बुलाकर ८ छली से, छली के पिता ने ९ अनुकूल १० रावत केशरीसिंह के पुत्र ने रावत जसवंतसिंह को ११ ऋण देनेवाला (बहोरा) १२ ऋण लेनेवाले (धुरिये) को ॥५॥ १३ जसवंतसिंह का बड़ा पुत्र राघवदास बुद्धिमान् १४ दक्ष (चतुर)

तापैं उदैपुरतैं अनीक भीम[1] अर्जुन[2]नैं,
भेज्यो तँहँ केते भनैं तेहु आये भ्रात तब ॥
पैन जय पायो चक्र मैत्युत पलायो मरिबो,
न भट मानैं व्हाँ क्रियाको फल होइ कब ॥ ६ ॥

॥ राजसवत्तिका ॥

सोलह१६ बीरनमैं अरिसिंहके पच्छभो एक१ सलूमरिको पति१।
अर्जुनसिंह कुरावड़ ईम२ बतीस[3]३२नमैं रह्यो मुख्य महामति ॥
काज बडो इक१ यानैं कर्यो स्मृतिमैं न फुर्यो सो कथा क्रम संगति ॥
है कथनीय सो जात कह्यो इम ओरहु ठाँ क्रम तूटी कथाकति७
बेढ्यो उदैपुरकौं बलतैं जब माहजि संध्या महाबल जाइकैं ॥
भो पुरमाँहिं महा दुरभिच्छ व्हाँ प्राभृत लीजे कह्यो भय पाइकैं
मद्यप सालक माहजिको बिलसैं परनारिन नित्य बुलाइकैं ॥
साहसैं बात बिगारिदै सो उत१की इत२ साहँस ऊपर आइकैं॥८॥
बाहिर माहजिके बैलमैं लहि अर्जुन कोउक मित्र पटालैंय ॥
ओरहि आप अजस्र उहाँ दम दैबो कहैं सु चहैंनहि निर्दय ॥
रत्नके पच्छमैं राचिरह्यो वह सालक संध्याको आगम अँत्यय ॥
एक उँपायन को न उपाय भयो जिहिं अग्ग बिसेस छयो भय ॥९॥

१ भीमसिंह और अर्जुनसिंह दोनों भाई २ सेना उलटी भागी ॥ ६ ॥ ३ इस समय यह ठिकाना सौलह उमरावों में है ४ कथा के क्रम के साथ याद नहीं आया ५ वह कहने योग्य है इस कारण कहा जाता है ६ इसप्रकार अन्य जगह भी कितनी ही कथा तूटगई है ॥ ७ ॥ ७ सेना से उदयपुर को घेरा जब ८ भेट ६ माहजी का साला १० दंड की वार्ता ११ हठ करके ॥ ८ ॥ १२ सेना में १३ अर्जुनसिंह १४ किसी मित्र के डेरे में१५निरन्तर१६दंड देना कहै सो १७ फितूरी राणा रत्नसिंह के १८ शत्रु का नाश करनेवाला तथा दंड के आगम की १९ भेट (फौजखरच) देने का कोई उपाय नहीं हुआ ॥ ९ ॥

जानिकैं अर्जुन लंपट जाहि निसागम नारिको वेस बनाइकैं ॥
पूगिबो सीखि छली पहिलैं जिम लज्जित त्यौं तेममैं तहँ जाइकैं ॥
ठानि प्रमादी महाठिगनैं नखरेसौं निरंतर प्याले पिवाइकैं ॥
संहारि ताहि पटालय स्वीय अतिस्वैर आइ परयो मिस पाइकैं ॥१०॥
लोटि कबूतर लोटनलौं सु पिचंडमैं व्याजके सूल प्रसारिकैं ॥
ज्यों निज प्रान प्रयानँ जनाइ रह्यो अति आतुरतै छल धारिकैं॥
दीनौं स्वकीयन दांत्रनसौं जठरांश तदीय प्रतीकहि जारिकैं ॥
एकही दाहनको उपचार बन्यौं दृढ प्रत्यय सत्य उबारिकैं ॥११॥
आदिम जामिनि जाम गये पहिलें पहिलें पटुकृत्य सबै करि ॥
स्वोदर दाहत स्वीय सखाहु लख्यो विधिसौं बिलख्यो बिधिसौं लरि ॥
हारिकैं दाह अनंतरहू जिम अंग थकें तिम नैंन पलैं जरि ॥
रीति घटी सब सौं रही तब निंद लही छलसिंधु बढै तरि॥१२॥
हारवैं भो अरुनोदय होतहि स्वामिको सालक काहू बन्यौं कहि॥
स्वामिनी अन्न तज्यो सुनिकैं व्रत मारनहारके मारनको बहि ॥
मांहजि कोपि तहाँ तियतंत्र उठाइ फँटा जिम पुच्छ दब्यो अहि ॥

१ सन्ध्या समय स्त्री का वेश करके २ अन्धेरे में, लज्जित स्त्री के समान जाकर ३ उसीके डेरे में उसको मारकर ४ अपने डेरे में शीघ्र आकर ॥ १० ॥ ५ लोटन कबूतर के समान लोटकर ६ पेट में मिसकी पीड़ा बताकर ७ अपना प्राण जाता बताकर ८ घबराकर ९ अपने सेवकों ने दांतुली से १० उसके पेट के ११ अवयव (हिस्से) को जलाया १२ एक जलाने का इलाज ही १३ सत्यता को बचाने का विश्वास हुआ ॥११॥१४ रात्रि की पहिली प्रहर जाने से पहिले १५ उस चतुर ने सब कार्य किया १६ उसका पेट जलाते समय उसके मित्र ने भी देखा १७विधि (रीति) से लड़कर विधि से रोया १८ नेत्रों की पलकें बन्द करके १९ बाकी २० उस छल के समुद्र को तिरकर ॥ १२ ॥ २१ सूर्य उदय होते ही हाहाकार शब्द हुआ २२ माहजी की स्त्री ने २३ नियम धारण किया २४ फण